110475

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

110475

Regd. No. L. 1240.

२] वैशाख १९७८—मई १९२१ [खण्ड २, संख्या १

ज्योति

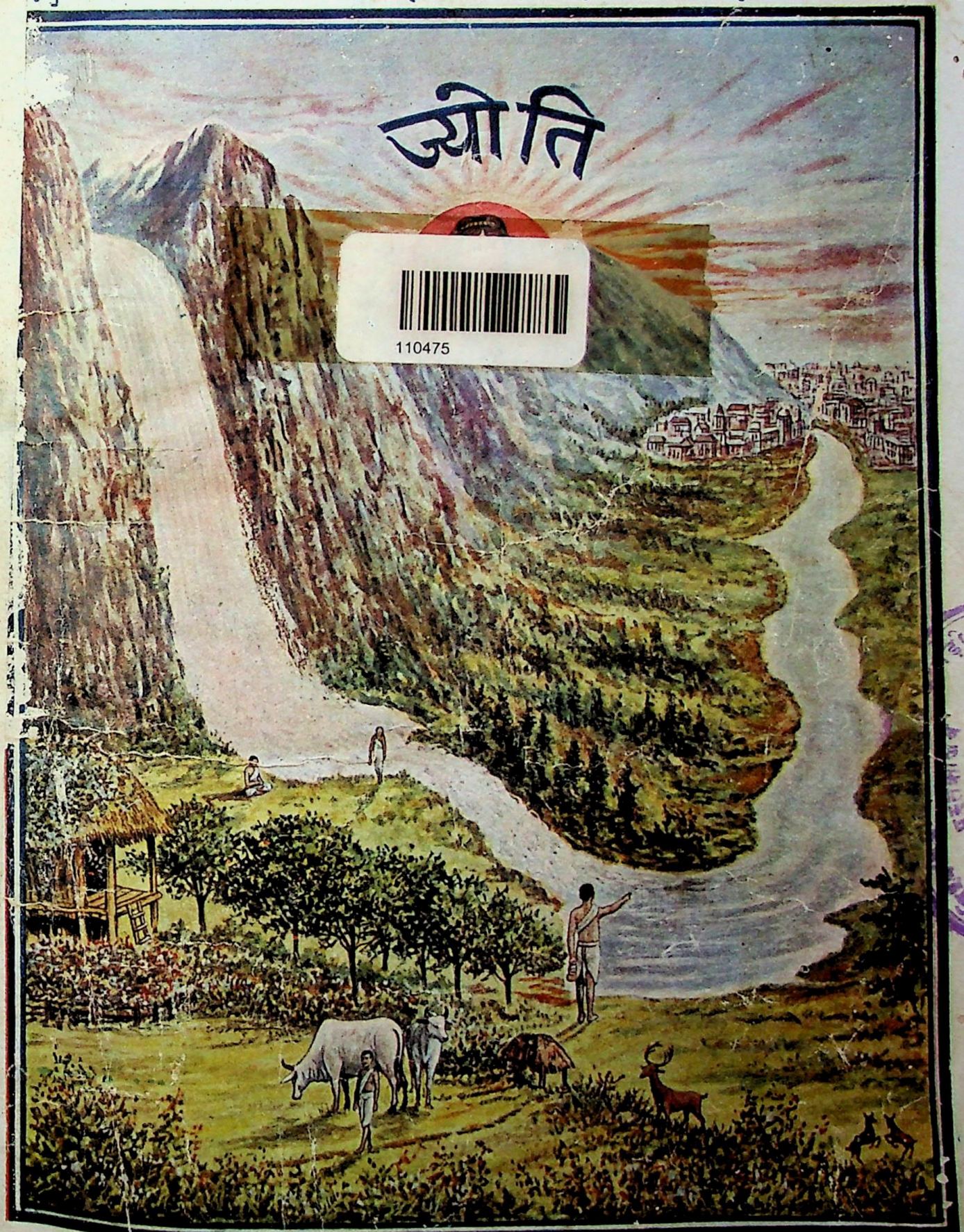

110475

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों के ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय-सूची।

	विषय	पृष्ठ
१	स्वागत [कविता] लेखक-श्रीयुत् पं० रूपनारायण पाण्डेय [कविरत्न]	१
२	भविष्य का बीज-लेखक श्री. दा. सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, औंध जि. सतारा।	२
३	स्वागत गीति [कविता] लेखक-श्रीयुत् गयाप्रसाद 'श्रीहरि'	४
४	स्वराज्य और भारतीय महिलओं का कर्तव्य-लेखक श्रीयुत् पंजाब केसरी, लाला लाजपतराय जी	५
५	विचित्र स्वप्न [कविता] लेखक-श्रीयुत् हरिशंकर भट्ट	६
६	आर्य्य समाज का भविष्य-लेखक प्रो. रामदेव जी सम्पादक "वैदिक मैगज़ीन"	८
७	मिलन-सुख [कविता] लेखक-श्रीयुत् पं० रामनरेश त्रिपाठी	१३
८	संक्षिप्त कर्मयोग अथवा गीतामृत-ले० श्रीयुत् गोपाल दामोदर तामसकर एम.ए.	१३
९	विहाग [कविता] ले०-श्रीयुत् पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	१६
१०	त्याग-ले०-"मंजुलिका"	१६
११	प्यारा-भारतवर्ष [कविता] लेखक-श्रीयुत् गंगाप्रसाद विद्यार्थी	२१
१२	यूनानी दर्शन का दिग्दर्शन-ले०-सुधाकर एम. ए.	२२
१३	देश-भक्ति [कविता] ले०-'विनोद' शंकरव्यास	२५
१४	रुक्मिणीहरण नाटक-अनुवादक श्रीयुत् मेघाव्रत जगजीवन	२५
१५	होली [कविता] ले०-श्रीयुत् गौरीशंकर 'शर्म्मा'	२९
१६	कन्याओं की पाठविधि में विज्ञान का स्थान-ले०-श्रीरामजी नारायण डी. एस. सी.	३०
१७	प्रतिवाद [कविता] ले०-"किरीट"	३५
१८	हमारी मञ्जूषा	३५
१९	कुसुमोद्यान	३८
२०	विचार प्रवाह	४१
२१	वनितविनोद	४९

ज्योति के नियम

ग्राहकों के लिये।

१. ज्योति प्रति अंग्रेजी मास की १५ को ग्र के पास पहुंचा करेगी।

२. डाक व्यय सहित भारत के लिये इस मूल्य ४॥) और छे मास के लिये २॥) बी. पी. व्यय ≡) अलग है प्रति अंक का मूल्य ॥) है। से बाहर विदेश के लिये इसका वार्षिक मूल्य ६) है। मैनेजर ज्योति लाहौर के नाम आना चाहिये।

३. पुरानी प्रतियां जो मिलसकेंगी उनका मूल्य संख्या ॥) से कम नहीं होगा।

४. पते के परिवर्त्तन की सूचना पत्र के नि से १५ दिन पूर्व मैनेजर को मिलनी चाहिये।

५. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जा

लेखकों के लिये

६. लेख पढ़ने योग्य अक्षरों में हाशिया छो एक ओर ही लिखे जाने चाहियें। लेखों के बढ़ाने, छापने न छापने का अधिकार सम्पादक है। जो लेख प्रकाशित नहीं किये जासकेंगे वह और पता साथ होने पर लौटा दिये जावेंगे।

८. लेख कविता समालोचना के लिये पुस्तकें परिवर्त्तन के पत्र सम्पादिका ज्योति लायलपुर के पर आने चाहियें।

मूल्य तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र प्रबन्ध ज्योति लाहौर के पते पर आने चाहिये।

विज्ञापन दर यह होगी।

प्रतिमास।

पूर्ण पृष्ठ या दो कालम १०) आधा पृष्ठ या एक कालम चौथाई पृष्ठ या आधा कालम ३) चौथाई कालम टैटिलपेज का तीसरा पृष्ठ १२) टैटिल का अन्तिम पृष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

H.L
YUGANTAR.
Gr. K. V.
Lib
HARDWAR

वर्ष २ | वैशाख १९७८—मई १९२१ | संख्या १

स्वागत।

ले०—श्रीयुत् पं० रूपनारायण पाण्डेय [कविरत्न]

स्वागत ते नव वर्ष, हर्ष उत्कर्ष बढ़ाओ।
सुखदायक हो हमें तुम्हारा आना, आओ॥
दुर्गति, दुर्मति, द्रोह, दुःख, दारिद्र्य मिटाओ।
भारत में भर भव्य-भाव, भय भ्रांति भगाओ॥
स्वातंत्र्यहीन साम्राज्य भी, सभी तरह से त्याज्य हो।
शुभ शांति प्रेम का राज्य हो, हम को प्राप्त स्वराज्य हो॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

HARDWAR
Lib
G.K.V.
1961

ज्योति

ओ३म् व्यवात्ते ज्योतिरभूदप त्वत्तमो अक्रमीत्॥

वर्ष २ | वैशाख १९७८—मई १९२१ | संख्या १

स्वागत।

ले०—श्रीयुत् पं० रूपनारायण पाण्डेय [कविरत्न]

स्वागत ते नव वर्ष, हर्ष उत्कर्ष बढ़ाओ।
सुखदायक हो हमें तुम्हारा आना, आओ॥
दुर्गति, दुर्मति, द्रोह, दुःख, दारिद्र्य मिटाओ।
भारत में भर भव्य-भाव, भय भ्रांति भगाओ॥
स्वातंत्र्यहीन साम्राज्य भी, सभी तरह से त्याज्य हो।
शुभ शांति प्रेम का राज्य हो, हम को प्राप्त स्वराज्य हो॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भविष्य का बीज।

ले०—श्री० दा० सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल, औंध जि० सातारा

—:०:—

वेद की दृष्टि से जगत में एक ही नियम कार्य कर रहा है और इस नियम के 'ऋत और सत्य' ये दो दांये और बांये अङ्ग हैं। इस नियम का आधार आत्मा है, इस कारण आत्मा का नाम भी [नि--] "यम" वेद में प्रसिद्ध है।

सब संसार को नियम में रखने वाला, नियम में चलाने वाला, और नियमानुसार सब को परिणाम तक पहुंचाने वाला ही आत्मा नि-यम स्वरूप होने से "यम" नाम से वेद में वर्णित है। उस एक अद्वितीय आत्मा का ही नियम सदा, सर्वत्र और सब को शिरोधार्य है। कोई भी उस के नियम का उल्लंघन नहीं करते और न कर भी सकते हैं।

यह नियम जैसा भूत काल में था वैसा ही वर्तमान काल में है और इसी प्रकार भविष्य में अबाधित रहेगा। अणु रेणु से लेकर महान लोक लोकांतर तक इस के आधीन हैं, व्यक्ति और समाज इस को तोड़ नहीं सकते राष्ट्र और संघ इस के वश में ही हैं।

हमारी दृष्टि से व्यक्ति, कुटुंब, नगर, प्रांत, जाति, संघ, राष्ट्र, साम्राज्य, महा राज्य, सार्वभौम समाज, जगत्, संसार आदि परिछेद से एक से दूसरा बड़ा और दूसरे से पहिला छोटा है। परन्तु उक्त नियम की दृष्टि से वह बात नहीं है। उक्त नियम के पास बड़े का बड़ेपन और छोटे का छोटेपन पूर्णतया नष्ट हो जाता है। वह नियम अपनी ही कसौटी से छोटे के छोटेपन की और बड़े के बड़ेपन की पर्वाह न करता हुआ सब का निरीक्षण और परीक्षण करता है। इसी कारण वैदिकधर्मी मनुष्य के मन में पूर्ण निश्चय होता है कि "वहां बड़ों का पक्षपात नहीं होगा और छोटों का निरादर भी नहीं, क्योंकि वहां छोटा और बड़ा यह भेद भाव ही नहीं है।"

वेद में विविध रूप से यह ही नियम प्रकट किया गया है, यही वेद की सत्यता अथवा त्रिकालाबाधकता है। यद्यपि नियम मूलतः एक ही है तथापि अवस्था भेद से उसके स्वरूप भिन्न होते हैं। इस दृष्टि से पाठक देखेंगे तो उन को पता लग जायगा कि वेद प्रारम्भ से अंत तक उस एक ही नियम का प्रतिपादन करता हुआ उस के विविध अंशों को बता रहा है। सब ही अंश विचारणीय हैं, और जब कभी इन अंशों का स्वरूप सब जनता के हृदय में विकासित होगा तब ही इस जनता की पूर्णता होगी। इस लेख में एक ही अंश का विचार करना है। भविष्य का बीज कहां रहता है? भविष्य काल में जो हमारी उन्नति होती है उस का बीज कहां है? कौन किस समय उस को बोता है और जल सिञ्चन करके कौन उस का पोषण करता है? इस का विचार करना है।

सब ही मनुष्य भविष्य की आशा से जीवित रहते हैं। यदि किसी मनुष्य को पूर्णतया निराशा हो जाय, तो उसकी मृत्यु भी उसी समय अवश्य हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि मनुष्य का भविष्य मनुष्य के आधीन रहे तो निश्चय से मनुष्य अपनी उन्नति उत्साह से कर सकेगा। क्या हम भविष्यकालीन अपनी उन्नति का बीज देख सकेंगे? हां, यदि आप वेद के उपदेश को स्वीकार करें तो आप अपने "भविष्य का बीज" देख सकते हैं। देखिए वेद कहता है कि—

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं।
उता मृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥

ऋ० १०।७०।२

[यद् भूतं] जो भूत काल था, [यत् च] और जो [भाव्यं] भविष्य काल आवेगा [इदं सर्वं] वह सब वर्तमानकालीन [पुरुषः एव] पुरुष ही है। अर्थात् आप वर्तमानकालीन पुरुष में भूत काल का परिणाम देख सकते हैं और भविष्य काल का बीज भी वहां ही है।

वर्तमान काल की अवस्था में भूत काल के पुरुषार्थ का परिणाम और भविष्य काल की भवितव्यता का बीज है। वेद कहता है कि "पुरुष ही यह सब है कि जो भूत व्यतीत हुआ और जो भविष्य आवेगा।"

"वर्तमान काल में भूत काल का फल और भविष्य काल का बीज है।" यह वैदिक नियम सार्वकालिक और सार्वदेशिक है। इस नियम की सार्वभौमिकता आप जहां चाहिये वहां देख सकते हैं। किसी वृक्ष का फल देखिए, आप को पता लग जायगा कि वह फल पूर्व ऋतु का परिणाम है और भविष्य के वृक्ष का बीज है। मनुष्य के जीवन में आप देखिए कि आज का दिन गत दिन के व्यवहार का परिणाम और आगामी दिन की अवस्था का बीज बता रहा है। यदि कोई मनुष्य आज अजीर्ण से बीमार है तो आप निःसन्देह कह सकते हैं कि गत दिन उस ने अधिक भोजन और कुपथ्य सेवन किया था, तथा आज के व्यवहार से आप जान सकते हैं कि उस की कल अवस्था कैसी रहेगी। क्योंकि वर्तमान समय में गत समय के व्यवहारों का परिणाम देखा जाता है, और भविष्य की अवस्था का बीज वहां ही होता है। वर्तमान अवस्था का बीज भूत काल में था, वह ही परिपक्व होकर आज दिखाई देता है, इसी प्रकार भविष्यकालीन अवस्था का बीज वर्तमान अवस्था में है, जो परिपक्व होगा और भविष्य में दिखाई देगा।

नियम एक ही है, इस लिये जो बात व्यक्ति में है वह ही जाति में और राष्ट्र में भी है। व्यक्ति का छोटापन और जाति का बड़ापन उक्त नियम के सामने कोई चीज़ ही नहीं। जाति की आज अवस्था देखिए। इसी वर्तमान अवस्था में उसी जाति के भूतकालीन कर्मों का फल आप देख सकते हैं, तथा उसी जाति के भविष्य का बीज भी उसी में आप देख सकेंगे। जो जाति पराधीनता के कष्टों में तप्त हो रही है, उस को देख कर आप समझ सकते हैं कि उस जाति ने भूत काल में अपनी स्वाधीनता कायम रखने के लिये आवश्यक स्वार्थ-त्याग नहीं किया था। तथा उस जाति के वर्तमानकालीन प्रयत्न देखने से आप जान सकते हैं कि उस जाति का भविष्य काल कैसा होगा। समाज और राष्ट्र के विषय में भी यही नियम है। "भूत काल का परिणाम और भविष्य काल का बीज इस वर्तमान काल में है।" पाठको! देखिए कि यह नियम कैसा व्यापक और सार्वभौमिक है।

मंत्र के उत्तरार्ध में कहा है कि, "[यत् अन्नेन अति रोहति] जो भोगों से अत्यंत बढ़ता है उस [अमृतत्वस्य ईशानः] अमर पन के सुख का वह स्वामी है।" अर्थात् वर्तमानकालीन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुष उस सुख का सदैव अधिकारी है कि जो सुख भोगों से बढ़ता है।

यद्यपि भूत काल के बुरे कर्मों का फल वर्तमान काल में कष्टों के रूप से भोगना ही पड़ता है तथापि उस अवस्था में यह आशा स्थिरता से मन में धारण करनी चाहिये कि—

[१] मैं अपने उत्तम भविष्य काल की अवस्था का बीज अपने अन्दर धारण कर रहा हूँ।

[२] अपना जैसा चाहिये वैसा उत्कृष्ट भविष्य काल बना सकता हूँ, इस में मुझे कोई भी प्रतिबन्ध नहीं कर सकता।

[३] क्योंकि मैं अमृतत्व का अधिकारी हूँ अर्थात् मैं अमृत का स्वामी ही हूँ।

इस उपदेश से हरएक व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है, और जाति, देश और राष्ट्र भी इसी उपदेश से अपनी उच्चता स्थापित कर सकता है। "भविष्य का बीज वर्तमान में है।" जो हम वर्तमान में बोते हैं वह ही हमें भविष्य में प्राप्त होता है। इस लिये जो स्वातन्त्र्य चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वे इस वर्तमान काल में स्वातन्त्र्य के बीज अपनी भूमि में बोयें, और अपने जीवन से उस का वृक्ष बनावें।

यह उपदेश हर एक अवस्था में स्मरण रखने योग्य है। "मैं अपने भविष्य काल को बनाता हूं।" प्रिय पाठको! ध्यान में रखिए कि "आप के वर्तमान काल में आप ही के भविष्य काल का बीज आप ही बो रहे हैं। फिर सोचिये तो सही कि आप के भविष्य का जिम्मेवार कौन है?" क्यों आप अपने और अपने समाज के भविष्य के लिये दूसरों को दोष दे रहे हैं? भूतकाल में आपने ही जो बोया था वह ही आपके पास इस समय है और इस समय जो बोया जा रहा है वह ही भविष्य में आपको मिलेगा। आप ही अपने अमृत के स्वामी हैं। अपने अंदर अपने भविष्य का बीज देखिए, और अपना वैयक्तिक, सामाजिक, जातीय और राष्ट्रीय कर्तव्य कीजिए।

स्वागत गीति।

लेखक—श्रीयुत् गयाप्रसाद 'श्रीहरि'।

ज्योति? तव स्वागत है शतवार॥
तेरे जन्म दिवस के मुद में होती जय जय कार॥ध्रुव०॥
यह द्वितीय है वर्ष तुम्हारा, करते पर उपकार।
किस विधि, क्या मैं करूं गुण, स्तुति, क्या दूं प्रिय उपहार॥१॥
तन, धन, सब कुछ तुझ पर वारूं, तू है प्राणाधार।
पहनाऊं तव मृदुल गले में सुमन सुमन का हार॥२॥
पावन प्रेम नेम जल का मैं कर पादार्घ्य प्रकार।
बैठाऊं निज हृदय देवि को हृदय सिंहासन डार॥३॥
मल कर देशोद्धार धूलि को धूनि अहिंसाधार।
असहयोग योगी है भारत, तेरे प्रेम के भार॥४॥
भारत की प्रिय रङ्गभूमि में तव अपूर्व सञ्चार।
मङ्गलान्त स्वातन्त्र्य सुनाटक "श्री हरि" हो इकवार॥५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वराज्य और भारतीय महिलाओं का कर्तव्य।

ले०—श्रीयुत् पंजाब केसरी, लाला लाजपतराय जी।

इस समय देश में जो लहर जातीय-हित और देश पूजा की चल रही है उसमें हमारी स्त्री जाति बहुत ही हमारी सहायता कर सकती है। स्त्रियों के भाव ऐसे कोमल और शुद्ध होते हैं कि उनके समक्ष सत्य और धर्म के लिये अपील करना मनुष्यों की अपेक्षा अधिक फलदायक होता है। हमारे इतिहास में यह बात कई बार प्रत्यक्ष हो चुकी है कि हमारी जाति की स्त्रियों में मनुष्यों की अपेक्षा अधिक धार्मिक भाव है। कोई स्त्री यह नहीं चाहती कि उसके पति, पुत्र, भाई या अन्य किसी को किसी प्रकार का दुःख हो। अपने आप को दूसरों की सेवा के लिये बलिदान कर देना यह हमारी देशीय स्त्रियों का एक सुन्दर भूषण है। मगर जब उनको यह समझाया जाय कि देश और धर्म का हित यह चाहता है कि उनके पति देश की सेवा में बलिदान होने के लिये उद्यत हो जांय तो वे भी साहस पूर्वक इस बात को स्वीकार कर लेती हैं। हमारी महिलाएं इस समय कई प्रकार से देश की सेवा कर सकती हैं। जिस सेवा के लिये मैं उनसे याचना करता हूं वह यह है कि वे अपने पुत्र और पतिओं को धर्मयुद्ध में जाने से और कष्ट उठाने से कभी न रोकें बल्कि उनको और भी प्रोत्साहित करें कि वे धर्म और देश के मार्ग में जो भी कष्ट आवें उनको सहर्ष स्वीकार करें।

प्राचीन समय में हमारी स्त्रियां अपने पुरुषों को अपने ही हाथों से शस्त्र पहना कर युद्ध में भेजती थीं। हमारा यह युद्ध शस्त्रों का का नहीं है—यह आत्मा का है। इस युद्ध में हम किसी को दुःख देने का या किसी की जान लेनी की चेष्टा नहीं करते। ऐसे युद्ध में हमारी महिलाओं को चाहिये कि वे अपने पुरुषों को हृदय से प्रेरणा करें।

कई बार ऐसा होता है कि पुरुष इस भय से कि हमारे बाल बच्चों का क्या होगा धर्मके मार्ग पर चलने से शंका करने लगते हैं परन्तु अगर देवियां हीं अपने पुरुषों को साहस दें तो फिर उनकी यह शंका शीघ्र ही निवारण हो सकती है।

दूसरी बात जो हमारी महिलाऐं कर सकती हैं वह यह है कि वे आप मोटा खावें, मोटा पहिनें और सादा जीवन व्यतीत करना स्वीकार करें। यह समय देश में शोक और कष्ट का है। इस समय हमारी देवीओं का कर्तव्य है कि वे यथाशक्ति सब प्रकार के आभूषण और आरामों को किनारे रखकर देश के लिये बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करें।

स्वदेशी के प्रचार में और विदेशी वस्तुओं के तिरस्कार में हमारी स्त्रियां बहुत कुछ सहायता कर सकती हैं। यह समय रेशम और मखमल पहिनने का नहीं है। इस समय खद्दर और कम्बल से ही गुज़ारा करना चाहिये। इस सम्बन्ध में हमारी स्त्रियां अगर अपना पूरा बल लगावें तो मर्दों को मदिरा पीने से और देश के शत्रुओं की सहायता करने से रोक सकती हैं। बहुत से पुरुष अपने कुटुम्ब के लिये धर्म-विरुद्ध कार्रवाई करके बहुत सा धन संचय करते हैं। स्त्रियों का कर्तव्य है कि वे अपने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२३)

भानु-भूधर-ओट में थे हंस रहे।
कमल-कलिका हेतु ही थे छिप रहे॥
है रुलाता औ हँसाता है वही।
प्रेम करता है जिसे कोई कभी॥

(२४)

प्रेम-मय-लीला-मनोहर भानु की।
देखकर कुछ हँस पड़ी पङ्कज-कली॥
अश्रु-विंदु कपोल पर इक गिर गया।
बूँद में चोहज़क़न यों भर गया॥

(२५)

प्रेम-क्रीड़ा देखकर अलि हँस पड़ा।
हँस मानस का मगर चुप था खड़ा॥
देख लीला प्रकृति की क्रीड़ा-मयी।
आँख मेरी भी स्वयं ही खुल गई॥

(२६)

आ गये गुरु-देव भी तत्काल ही।
सब कथा मैंने स्वयं उनसे कही॥
हँस कर कहा-"जो आज देखी सिंहनी।
है वही मम-देश-भारत-मेदिनी"॥

(२७)

"सूत का फिर क्या प्रभो! आशय रहा।
लोह का कटना रहा अद्भुत महा॥
लोह कैसे सूत से कट जायगा।
बज्र कसे फूल से फट जायगा॥"

(२८)

"चक्र धर की विश्व-लीला है यही।
है असंभव विश्व में कुछ भी नहीं॥
देश को ही मुक्त करने के लिये।
आज अद्भुत खेल थे प्रभु ने किये॥

(२९)

"है सुदर्शन स्वयं जब चरखा बना।
चक्रधर के कृपा-रस में अति सना॥
बेदना की तब घटा फट जायगी।
शृंखला भी पैर से कट जायगी॥

(३०)

भेद बतला कर मुझे वे चल दिये।
सुरसरी स्नान करने के लिये॥
शीघ्र ही मैं भी वहां से घर गया।
चित्त-पट पर दृश्य कर अंकित नया॥

आर्यसमाज का भविष्य।

[१]

ले०—प्रो० रामदेव जी सम्पादक "वैदिक मैगज़ीन"।

इस से पूर्व कि हम आर्यसमाज के भविष्य पर कोई सम्मति स्थिर कर सकें यह आवश्यक है कि इसके भूत पर भी एक दृष्टि डालें।

संसार का धार्मिक इतिहास हमें बतलाता है कि जब कभी कोई बड़ी धार्मिक व नैतिक लहर चली वह अपना कोई न कोई स्थिर प्रभाव मनुष्य जाति व उसके किसी भाग की विचार शैली अथवा रीति रिवाज पर छोड़ गई है। ऐसे बहुत से धर्म और विचार प्रवाह हैं जो इस समय मृत व मृतप्रायः हैं तथापि उनका सिक्का संसार की शिक्षा और सभ्यता पर विद्यमान है। बौद्ध मत यद्यपि इस समय भारत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष में शक्तिहीन है तथापि उसका स्थिर प्रभाव हिन्दुओं के भिक्षुसंघ पर है। आर्यों के शास्त्रानुसार ब्राह्मण के अतिरिक्त और कोई सन्यास ग्रहण नहीं कर सकता किन्तु आजकल लाखों वैश्य और शूद्रकुल उत्पन्न सन्यासी दिखलाई देते हैं जो जनता की श्रद्धा और पूजा के पात्र बन रहे हैं। यह दाय भाग है जो बौद्ध सभ्यता मरती हुई भारत को दे गई। सब आश्रमों और सब वर्णों से भिक्षु बनाने की प्रथ इस देश में बुद्ध भगवान ने ही चलाई थी। बाममार्ग का शासन भी कभी आर्य जाति पर था। बुद्ध के समय में सारा देश बाममार्गी था। बाम मार्ग निर्जीव हो गया किन्तु विवाह के समय अश्लील गीतों, देवर और भौजाई, साली और बहनोई के बीच में अपवित्र उपहास और बंगाल में पितामह और पोती के पारस्परिक हंसी ठट्ठा के रूप में वह अपने विषैले संस्कार छोड़ गया है।

यदि इस दृष्टि से आर्यसमाज के कार्य को देखा जाय तो पता लगेगा कि महर्षि दयानन्द की शिक्षा ने न केवल भारतवासियों को किन्तु विदेशी धर्माचार्यों की दृष्टि को भी बदल दिया है। देखने वाले देख रहे हैं कि आर्यसमाज का प्रचार विचारों की एक नई लहर चला रहा है जिसका प्रभाव सब मुख्य धर्मों, दार्शनिक विचार समूहों और आध्यात्मिकवादों पर है।

पहिले सनातनधर्म ही को लीजिये। कोई समय था जब कि सनातनधर्म सभाऐं बाल-विवाह कुरीति का पोषण करती थीं और "स्त्रीशूद्र नाधीयताम्" इति श्रुतिः के वाक्य की सत्यता स्थापित करने में यत्नवान थी। आज आर्यसमाज के प्रचार का यह परिणाम हुआ है कि आर्यों के गुरुकुलों के मुकाबले में सनातनियों ने ऋषिकुल खोला है जिसके अन्तः वासी विद्यार्थियों को २० वर्ष की आयु तक अविवाहित और ब्रह्मचारी रहना पड़ता है और सनातन धर्म की ओर से स्थान २ पर कन्या पाठशालाऐं खुल रही हैं। केवल यही नहीं किन्तु सनातनधर्मियों की अपने धर्म की व्याख्या रूप में जो पुस्तकें छपती हैं उनमें स्पष्ट रूप से आर्यसमाज के सिद्धान्तों का उल्लेख है। राय बहादुर श्रीशचन्द्र विद्यार्णव की लेखनी से इंग्लिश भाषा में हिन्दूधर्म-प्रश्नावली (A Catechism of Hindu Dharma) के नामसे एक पुस्तक निकली हुई है। उसमें हिन्दूधर्म का जो रूप बतलाया गयाहै वह ऋषि दयानन्दकी शिक्षा ही का सार है। सनातनधर्मावलम्बी बहुत से देव और देवियों को मानते हैं और सबकी पूजा करना आवश्यक समझते हैं। आर्यसमाजी केवल एक ईश्वर की उपासना करते हैं और तमाम देवताओं को ईश्वर के गुणात्मक भाग समझते हैं। अपने पुस्तक के पृष्ठ ९वें पर राय बहादुर बसु आर्यसमाज के सिद्धान्त का समर्थन करते हुए अपनी स्थापना के पक्ष में महानिर्वाणतन्त्र के द्वितीय अध्याय से निम्न लिखित श्लोक उद्धृत करते हैं:—

तस्मिंस्तुष्टे जगत् तुष्टं प्रीणिते प्रीणितं जगत्।
तदाराधनतो देवि सर्वेषां प्रीणनं भवेत्॥
तरोमूलाभिषेकेण यथा तद् भुजपल्लवा।
तृप्यन्ति सदनुष्ठानात् तथा सर्वेऽमरादय॥
यथा गच्छन्ति सरितोवरोनापि सरित्पतिम्।
तथार्च्चारीनि कर्म्माणि तद्दुद्दिश्यानि पार्व्वति॥

अर्थात् यदि परमात्मा प्रसन्न हो जाय तो सब प्रसन्न हो जाते हैं यदि वह तुष्ट हो तो सब की तुष्टी हो जाती है। परमात्मा की आराधना से तमाम देवताओं की आराधना हो जाती है। जिस प्रकार वृक्ष के मूल पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जल डालने से तमाम शाखायें और पत्ते तृप्त हो जाते हैं इसी प्रकार परमात्मा की तुष्टी से सब देवता तुष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार तमाम नदियां समुद्र में पड़ती हैं उसी प्रकार तमाम अर्चनादि परमात्मा तक पहुंचते हैं।

आर्य्यसमाज मूर्त्तिपूजा का खण्डन करता है। रायबहादुर जी इस का महानिर्वाणतंत्र के १४ वें अध्याय में निम्नलिखित श्लोको द्वारा खण्डन करते हैं।

बालक्रीड़नवत सर्वं, रूपनामादिकल्पनम्।
विहाय ब्रह्मनिष्ठोयः, स मुक्तो नात्र संशयः॥
मनसा कल्पिता मूर्त्तिः,नृणांचेन् मोक्षसाधनी।
स्वप्नलब्धेन राज्येन, राजानो मानवास्तदा॥
मृच्छिलाधातुदार्वादि मूर्तावीश्वर बुद्धयः।
क्लिश्यन्तस्तपसा ज्ञानं विना मोक्षं न यान्ति ते॥

जो कोई परमात्मा का भक्त है और जो कल्पित रूप नाम को त्याग ब्रह्मनिष्ठ हो गया है वह निःसन्देह मुक्ति को प्राप्त होता है। यदि कल्पित मूर्तियां मोक्ष का कारण होतीं तो तमाम लोग जिन्होंने स्वप्न में राज्य की उपलब्धि की है राजा हो जाते, जो लोग मिट्टी, पत्थर, धातु व लकड़ी की बनी हुई प्रतिमा में ईश्वर की बुद्धि करते हैं वे वृथा तप से अपने आप को सताते हैं क्योंकि बिना ज्ञान के उन्हें मुक्ति कदापि नहीं प्राप्त होगी।

आर्यसमाज का विश्वास मन्दिरों और आवाहनादि में नहीं है और न आर्यसमाज खाने पीने के मामले में बहुत प्रतिबन्धों का पोषक है। महानिर्वाणतन्त्र के निम्नलिखित श्लोकों द्वारा वे आर्यसमाज का पक्ष समर्थन करते हैं—

पूजने परमेशस्य नावाहन-विसर्ज्जने।
सर्वत्र सर्वकालेषु साधयेद् ब्रह्मसाधनम्॥
अस्नातो वा कृतस्नानो भुक्तोवापि बुभुक्षितः।
पूजयेत् परमात्मानं सदा निर्म्मलमानसः॥
अनेन ब्रह्ममन्त्रेण भक्षपेयादिकं च यत्।
दीयते परमेशाय तदेव पावनं महत्॥
पक्वं वापि न पक्वं वा मन्त्रेणानेन मन्त्रितम्।
साधको ब्रह्मसात् कृत्वा नोच्छिष्टादिविवेचनम्॥
नात्र वर्ण विचारोऽस्ति नोच्छिष्टादि विवेचनम्॥
न कालनियमोऽप्यत्र शौचाशौचं तथैव च।
यथाकाले यथादेशे यथायोगेन लभ्यते।
ब्रह्मसात् कृतनैवेद्यमश्नीयाद् विचारवान्॥
अगीतं श्वयचेनापि श्वमुखादपि निसृतम्।
तदन्नं पावनं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥
यदि स्यान्नीचजातीयमन्नं ब्रह्माणि भावितम्।
तदन्नं ब्राह्मणैर्ग्राह्यमपि वेदान्तपारगैः॥
जाति भेदो न कर्तव्यः प्रसादे परमात्मनः।
योऽशुद्धबुद्धिं कुरुते स महापातकी भवेत्॥

अर्थात परमेश्वर की पूजामें किसी आहवान और न विसर्जन की आवश्यकता है। ब्रह्म उपासना सर्वत्र और सर्वकाल में हो सकती है। स्नान किया हो या नहीं किया हो भूखा हो या व्रत रक्खा हो जिसका मन निर्मल है वह परमात्मा की पूजा कर सकता है। जिस भोज्य या पेय पदार्थ को ब्रह्ममंत्र को पढ़ के परमात्मा को अर्पण कर दिया गया है वह पावक बन जाता है चाहे वह पक्व हो अथवा अपक्व उसे अपने मित्रों और सम्बन्धियों के साथ बैठ कर खा लेना चाहिये। ऐसे में न वर्ण का विचार होना चाहिये और न शौच अशौच का। चाहे कोई काल हो अथवा कोई स्थान हो ऐसा भोजन निःशंक हो खा लेना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चांडाल के द्वारा लाया हुआ या कुत्ते के मुख से गिराया हुआ भोजन पवित्र है और देवताओं को भी अलभ्य है। चाहे किसी नीच जाति को मनुष्य का भोजन क्यों न हो पर यदि वह ईश्वर को अर्पण किया जाय तो पवित्र है और उसे ब्राह्मणों के धर्माचार्यों को भी अवश्य खाना चाहिये। ईश्वर को अर्पण करने में किसी को वर्ण या जाति की भिन्नता नहीं करनी चाहिये।

आर्य समाज शुद्धि का पक्षपाती है और अपना दर्वाज़ा हिन्दू मुसल्मान ईसाई सब के लिये खोले हुए है।

निम्नलिखित श्लोकों द्वारा इसी पुस्तक में इस सिद्धान्त का प्रचार किया हुआ है:—

किरातहूणान्ध्र पुलिन्द पुक्कसाआभीरकंका यवनाः खसादयः।

येऽन्ये च पापायदपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः॥

चाण्डालं यवनं नीचं मत्वा स्त्रियमवज्ञया।

कौलं न कुर्य्यात् यः कौलः सोऽधमो यात्यधोगतिम्॥

शताभिषेकात् यत् पुण्यं पुरश्चर्य्याशतैरपि।

तस्मात् कोटि गुणं पुण्यमेकस्मिन् कौलिके कृते॥

अर्थात् परमात्मा में शरण लेने से किरात यवन इत्यादि पापी जातियां शुद्ध हो जाती हैं। कौल लोग तीर्थ रूप हैं क्योंकि उनके सम्बन्ध से म्लेच्छ और पामर लोग भी शुद्ध हो जाते हैं। जो हिन्दू यवन नीच चण्डाल स्त्री को हिन्दू नहीं बनाता वह नर्क में जाता है। सैकड़ों अभिषेकों से जितना पुण्य होता है उससे सहस्र गुणा पुण्य उसको मिलता है जो एक हिन्दू बनाता है।

स्वामी विवेकानन्द एक प्रसिद्ध सनातन-धर्मी थे। किन्तु उन्होंने भी अपने एक व्याख्यान में स्पष्ट कहा है कि प्राचीन आर्यों की नाईं आज कल के हिन्दुओं को भी चाहिये कि विदेशियों और म्लेच्छों को ब्राह्मण और ऋषि बना डालें।

ऋषि दयानन्द का प्रभाव केवल हिन्दुओं पर ही नहीं परन्तु अन्य धर्मों पर भी पड़ा है। सर सैय्यद अहमद मुसलमानों के एक धर्माचार्य हुए हैं। यह सब को ज्ञात है कि वह ऋषि दयानन्द के प्रिय मित्र और परम भक्त थे। उन्होंने जो तफ्सीरउल कुरान नाम से कुरान पर जो भाष्य लिखा है उस में उन्हीं सिद्धान्तों का प्रयोग किया है जिन के द्वारा ऋषि दयानन्द ने वेद भाष्य किया है। ऋषि दयानन्द ने वेदभाष्य करने में निम्न लिखित सिद्धान्तों से काम लिया है:—

(क) वेद की गाथाओं को अलंकार रूप में लिया है।

(ख) सृष्टि नियम के विरुद्ध जो अर्थ प्रचलित हैं उनको स्वीकार नहीं किया।

(ग) तर्क को भी ऋषि माना है।

(घ) देवताओं को चेतन शरीर धारी नहीं माना है किन्तु उनको परमात्मा की शक्ति माना है। सर सैयद ने फिरश्तों को कुदरत की ताकतें माना है। मेराज के चमत्कार को एक स्वप्न माना है। अन्य दो विषयों के सम्बन्ध में हम उनकी पुस्तक में से एक दो धर्म देते हैं।

(१) "वाक्यात ख़िलाफ़त् कानूने फ़ितरत के वक़ू का सबूत अगर गुहाहान रिवायत भी गवाही दें तो मुहालात से हैं।"

(२) "अगर किसी हदीस में ऐसे अमूर बियान हों जो एक तरह पर बदाहते अक़्ल के बरख़िलाफ़ हों और एक तरह पर नहीं, और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अगले उलमा और सहाबा की रायें मुख्तलिफ़ हों कि कोई इस तरफ़ गया हो और कोई उस तरफ, तो बमूजिब असूल इल्मे हदीस के लाज़िम है कि उस सूरत को अख्तयार किया जावे जो बदाहत या अक्ल के मुख़ालिफ़ नहीं है।

जिस समय ऋषि दयानन्द ने अपने सिद्धान्त का प्रचार आरम्भ किया उस समय वेदार्थ के विषय में यूरोपियन विद्वानों के साथ दो बड़े मतभेद थे। यूरोपियन विद्वान वेदों में बहु देव पूजा बतलाते थे और वेद मंत्रों को जांगली और असभ्य लोगों के गीत बतलाते थे। ऋषि दयानन्द का मत यह था कि अग्नि वायु इत्यादि परमात्मा ही के भिन्न २ नाम हैं और वेद सत् विद्याओं की पुस्तक होने से अपौरुषेय है। प्रोफेसर मैक्समूलर ने यूरोपियन विद्वानों के मत का समर्थन अपनी पहिली पुस्तकों में किया। India; What can it Teach us ? के लिखने से पूर्व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका उनके हाथ में पड़ गयी। उसके पढ़ते ही उनके विचारों में परिवर्तन आरम्भ हो गया। कहां तो वे वेद के ऋषियों को जांगली कहते थे और कहां उस पुस्तक में उनकी ही लेखनी से निम्न लिखित शब्द निकले:—

"We must simply keep our pre-conceived notions of what people call primitive humanity inabeyance for a time, and if we find that people three thousand years ago were familiar with ideas which seem novel and 19th century like to us, well, we must somewhat modify our conception of the primitive savages....."

अर्थात् यदि पुरातन लोग ऐसे विचारों से परिचित थे जो हम को नवीन और १९वीं शताब्दी के प्रतीत होते हैं तो हम को पुरातन लोगों के विषय में अपने विचार बदलने होंगे। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऋषि दयानन्द ने वेद मन्त्र उद्धृत किये हैं जिनमें सृष्टि उत्पत्ति का दार्शनिक शब्दों में वर्णन है। उन मंत्रों और उनके अर्थ को पढ़कर प्रो. मैक्समूलर ऐसे मुग्ध हुए कि अपनी पुस्तक Six Systems of Philosophy में चिल्ला उठे:—

"These startling outbursts of philosophic thought seem indeed to require the admission of a long-continued effort of meditation and speculation before so complete a rupture with the old conception of physical gods could have become possible .....nor must we forget that there always have been privileged individuals whose mind was untrammelled by the thought of the great mass of the people, and who saw and proclaimed, as if inspired by a power not themselves, truths far beyond the reach of their fellowmen" इसका सारांश यह है कि इस सूक्त में जैसे आश्चर्यजनक दार्शनिक विचार वर्णित हैं उनको देख कर तो ख्याल होता है कि इन विचारों के प्रचारकों की बुद्धियों को उनके अतिरिक्त और किसी शक्ति ने प्रेरा था।

अग्नि वायु इन्द्र इत्यादि स्वतन्त्र देवता नहीं हैं किन्तु परमात्मा ही के भिन्न २ नाम हैं इस सिद्धान्त को प्रो० मैक्समूलर ने मुक्त कंठ से स्वीकार कर लिया है वह लिखते हैं:—

Still it was achieved, and whatever is the age when the collection of our Rigveda Samhita was finished, *it was*

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

before that age that the conviction had been formed that there is but one., One being, neither male nor female, a being raised high above all the conditions and limitations of personality and of human nature *and nevertheless the being that was really meant by all such names as Indra, Agni, Matarisvan* nay *even by the name of Prajapti, Lord of creatures.* In fact the Vedic poets had arrived at a conceptionof God-head which was reached once more by some of the Christian philosophers of Alexandaria, but which even at present is beyond the reach of many who call themselves Christians.

—:o:—

मिलन-सुख।

ले०—श्रीयुत् पं० रामनरेश त्रिपाठी।

शरद के शशि की कल कांति का।
कह नहीं सकता यश अंध है॥
भ्रमर गुंजन की ध्वनि मोहिनी।
वधिर को न लुभा सकती कभी॥
अमृत में कितना सुख स्वाद है।
कह सके मुख क्या रसना बिना॥
यदि नहीं मन में अनुराग है।
मिलन का सुख तो किसको मिले!॥

संक्षिप्त कर्मयोग अथवा गीतामृत।

ले०—श्रीयुत् गोपाल दामोदर तामसकर एम. ए.

परिच्छेद १ ला।

पर्वत पर।

सर्व शक्तिमान् प्रभु की सृष्टि की अगम्य और अति मनोहर शोभा देखते देखते मैं पर्वतश्रेणी के सौम्य परन्तु विषम भूप्रदेश का चढ़ाव चढ़ने लगा। सामने दीखने वाली वस्तुओं का प्रतिबिम्ब नेत्रों द्वारा अन्तःकरण पर पड़ता जाता था। ढोंगी लोगों से भरे हुए प्रदेश का तिरस्कार आनेके कारण और हिमालय का अतुल सृष्टि सौन्दर्यमय और जनोपद्रव रहित साम्राज्य प्रदेश देखने की उत्कण्ठा से मैं एक ही दिन में बहुत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रास्ता तयकर चुका था। उस प्रवास के श्रम के कारण मेरे अवयव श्रान्त हो गये थ, तथापि इच्छित प्रदेश में पहुंच जाने के कारण अन्तः-करण में आनन्द उत्पन्न हुआ था, उससे मैं अपने शरीर का ख्याल भूल गया था, पर यह आनन्द बहुत देरतक बना न रहा चहुंओर की अप्रतिम शोभा मेरे अन्तःकरण को बहुत देर तक प्रसन्न न रख सकी। कंकड़ और कंटक के रास्ते से खुले पैर चलने के कारण वे अब नाजुक हो गये थे। एक भी कंकर अथवा पहाड़ी घास का सिरा चुभने से बैठ जाना पड़ता था। तब मेरी आंखें उस विस्तीर्ण और आश्चर्यमय ईशकृति से उठ कर मेरे रास्ते की ओर लग जाती थी इस प्रकार धीरे धीरे मैं और थोड़ा चढ़ाव चढ़ गया। अब तो भूख ने खूब सताया। सूर्य सिर पर तपने लगा। मेरे खुले सिर पर धूप बड़े जोर से लगने लगी इस कारण अपने पास का दुपट्टा सिर पर ले मैंने लपेट लिया और क्षणभर खेड़ रह चारों ओर दृष्टि फेंकी तो जिस टेकड़ी पर चढ़ रहा था, उसके सिरे पर एक घनी झाड़ी मुझे दिखाई पड़ी। तब इधर उधर न देखते खूब ताकत भर जल्दी जल्दी पैर रखते उस झाड़ी के पास पहुंचने का मन में निश्चय कर मैं आगे बढ़ा। लगभग आधा पौन घण्टा चलने पर मुझे उस अमृतोपम घनी छाया का सेवन करने को मिला और मैं वहां घड़ी भर हाथ पांव पसार कर पड़ा रहा। कुछ देरतक आंखें लगाकर अचेतन सा लेटा पड़ा रहा। उस घनी छाया की ठण्डी के कारण मेरी थकावट दूर हुई और मैंने आंखें खोलीं। बीच की अचेतन स्थिति के कारण मैं पिछली बातें सब भूल गया और 'मैं कहां आया हूं? यह अपरिचित प्रदेश कौनसा है?" इत्यादि अनेक प्रश्न मेरे मन में उद्भूत होने लगे। इस प्रकार कुछ काल आश्चर्य्य में व्यतीत होने पर मेरी स्मृति जागृत होने लगी। उससे, योगी होने की इच्छा से घर छोड़कर आये समय से हिमालय की इस टेकड़ी पर आने तक का सब इतिहास मेरे ज्ञानचक्षु के सामने खड़ा हुआ। मेरी उत्कंठा फिर उत्कट हुई। "अनेक ग्रन्थों में लिखे अनुसार इस पर्वतराज की शांत और एकान्त खोह में रहकर अभ्यास के बल योग-मार्ग में प्रवीणता प्राप्त किये हुए योगिराज क्या मुझे मिलेंगे? क्या उनकी मुझपर कृपा होगी? और क्या इतने सहे संकट कुछ भी सफल होंगे?" ऐसे अनेक प्रश्न मेरे आशा-पूर्ण मन में उठने लगे।

निःसत्व हुए अवयवों ने पेट के द्वारा अपनी फ़र्याद मन रूपी राजा पास पहुंचाई। तत्काल प्रजावत्सल और न्यायी राजा के समान स्वतः की उन्नति का विचार छोड़ प्रजारक्षण की ओर यह राजा ध्यान देने लगा नेत्ररूपी प्रधानों ने इस अवधि में सूक्ष्म निरीक्षण से उस टेकड़ी के एक शृंग से उछल कर कूदने वाले निर्झर की ओर दृष्टि पहुंचाई। उधर जानेका हुकम शरीर को पैर करने लगे और उधर वे उसे ले गये। मैंने उस निर्झर की एक छोटी सी धार में स्नान किया सन्ध्या-वन्दन के बाद सूर्य्योपासना की। अपने साथ के गीता ग्रन्थ को वन्दन किया, और क्या खाऊं इस तलाश में लगा। ग्राम वासियों ने कभी न देखे होंगे ऐसी नाना प्रकार के फलों से लदे झाड़ प्रथम ही दिखलाई पड़े। प्रचण्ड क्षुधा के वश होने के कारण विचार करने को को समय था ही कहां। फल तोड़ २ जठराग्नि अर्पण करने लगा और वह फर्याद दूर हुई यानी सब अवयव फिर ताजे हो गये। फल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खाने पर और पानी पीने पर "ये फल तो विषैले तो न होंगे?" यह डर कुछ कालतक मेरे निरुद्योगी मन में प्रवेश करने लगा। मरने के डर से मेरा मन अस्वस्थ नहीं हुआ, पर इतने कष्ट उठाने पर भी इच्छा पूरी होने से पहले यह देह छोड़ना पड़ेगा इस विचार से मन में भय उत्पन्न हुआ। इस विचार को दूर करने के लिये भगवद्गीता खोल कर पढ़ने लगा प्रथम ही यह श्लोक पढ़ाः—

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनंजरा।
तथा देहान्तरप्राप्ति र्धीरस्तत्र न मुह्यति २, १३॥

लगभग दो तीन साल पहले अंग्रेज़ी पांचवीं कक्षा से संस्कृत का थोड़ा सा ज्ञान हो जाने के कारण मैंने गीता का पाठ करना प्रारम्भ किया था। तदनन्तर संस्कृत साहित्य की मधुरता का परिचय पाने पर काव्य, नाटक, चंपू वगैरः का अव्याहत व्यासंग व्युपत्ति वगैरः का अच्छा ज्ञान हो जाने पर गीता के तो मैंने कितने भी पारायण किये थे। इस श्लोक को इसके पहले मैंने कई बार पढ़ा था। बिना अर्थ समझे मैं कभी आगे न बढ़ता था। इस प्रकार आज भी मैं अर्थ करने लगा। ऐसा जान पड़ा कि आज कुछ नया ही प्रकाश मन में प्रकाशित हो रहा है, "बाल्य, तारुण्य और वार्धक्य ये तीन अवस्थायें देहको प्राप्त होने पर दूसरा देह प्राप्त होना भी देहीकी चौथी अवस्था है। इसके लिये (यानी देह-त्याग के लिये) चतुर को मोह उत्पन्न नहीं होता। "देहिनोऽस्मिन्" इस श्लोक का इस प्रकार मैं अपने मन में अर्थ करने लगा। बाल्य में प्रारम्भ किये कार्य तारुण्य में हम चला सक्ते है, उसी प्रकार तारुण्य में प्रारंभ किये कार्य वार्धक्य में हम चला सक्ते हैं। फिर इस देहको छोड़ जाने पर अपनी ही चौथी अवस्था में क्या पूर्व देह में प्रारंभ किये कार्य चालू रखने की हम में शक्ति न होनी चाहिये? इस प्रश्न का उत्तर मेरी मनोदेवता "अवश्य रहेगी" यही देने लगी। फिर मेरा कार्य आधा ही रह जावेगा इस बात का डर रहने का कारण कौन? इस श्लोक से मुझे आज तक पुनर्जन्म की ही प्रतीत होती थी। पर आज किसी चमत्कारिक स्फूर्ति से 'जन्म मृत्यु और पुनर्जन्म' ये तीनों देही की संलग्न अवस्थायें हैं, और पहले दोनों के बीच के काल में देही जिस सीढ़ी पर खड़ा रहता है उसके आगे की सीढ़ी पर वह तीसरी अवस्था में जाने पर ही चढ़ता है। इस नये तत्त्व का प्रकाश मेरे मन में उदय हुआ।

इस अर्थ की सहायता से मैं अपनी चिंता दूर कर आनन्दित होने का प्रयत्न करने लगा। पर न जाने क्यों, ज्यों ज्यों मैं ज़्यादा प्रयत्न करता त्यों त्यों मेरा अनभ्यस्त मन विरुद्ध दिशा को ही जाता और उन फलों के विषैले पन के विचार से ज़्यादा ही डरने लगता। पुनः पुनः "जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः" यह तत्त्व मानने वाला मन डरे, और 'ध्रुव जन्म मृतस्य च' इस चरण का अर्थ मेरे मन पर प्रतिबिम्बित न हो, इसका मुझे आश्चर्य होने लगा।

उस दिन शाम तक किसी प्रकार का दण्ड या अवयवों की ऐंठन इत्यादि कुछ भी विकार न दिखाई दिये। तब मन को शांतता प्राप्त हुई। तदनन्तर हर रोज त्रिकाल स्नान संन्ध्या करना, प्रकृति की सुन्दरता देखना, वन्य फलों से क्षुधा को शांत करना, और गीता का पारायण करता था। स्नान सन्ध्या का काल छोड़ बाकी समय नियमित कार्य में खर्च नहीं होता था। भूख लगे तब खाना, लहर उठी वैसे भटकना, और बाकी समय में विचार करना या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीता पढ़ना इस प्रकार इच्छानुसार काल बिताता था।

दिन गिनने की ओर मेरा ख्याल न रहने के कारण मैं नहीं बतला सकता कि इस स्थिति में मेरे कितने दिन गये। रात को वहांकी प्रकृतिक घास पर लेट जाता, पर वहां की प्रचंड सर्दी का प्रतिकार करने के लिये और व्याघ्र सिंहादि हिंस्र पशु पास न आवें इस डर से खूब अग्नि प्रज्वलित कर रखता, और सोने के पहले "मुझे किसी योगिराज की भेंट हो" यह प्रार्थना करने को न भूलता था। इस प्रकार अनेक दिन व्यतीत हुए पर एक बहुत महत्व का दिन प्राप्त हुआ। उसकी बात मैं आगे देता हूं।

——:०:——

विहाग।

लेखक—श्रीयुत् पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

धन धन भारत भूमि पुनीत।
पूरन ब्रह्म प्रगटि जहँ खायो।
मांगि मांगि नवनीत ॥
जन्ममयो जहँ शिल्प कलाको।
साहित अरू संगीत ॥
सभ्य बने भूमंडल वासी।
सीख जहाँ की कारीत ॥
होत जहां बहुरंगी ऋतु है।
गर्मी वर सासीत ॥
फूट बैर की बान त्यागिके।
बनहु परस्पर मीत ॥

त्याग।

लेखिका—"मंजुलिका"।

(१)

"क्यों लते! मुझे स्वीकार करोगी न, कुछ संकोच तो नहीं? आज बोलती क्यों नहा?" पास ही शिलाखण्ड पर बैठे हुवे विनयने बड़ी नम्रता और उत्सुकता से कहा।

जब से विनय अब की छुट्टियों में आया है प्रायः प्रत्येक अवसर पर ही अपने प्रेम पुञ्ज का परिचय सुवाचित आराधना सुन्दरी बाला के कर्ण कुहरों में सिंचन किया करता था, किन्तु पार्श्व में बैठी हुई बाला के निरुत्तर होने के कारण मानों उसका हृदय उछलता जाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था। उत्सुकता प्रतिक्षण उसे अपनाने के लिये मर्य्यादा उल्लंघन करने का प्रयत्न करती थी।

सुन्दरी का वह उज्वल मुख, बिम्ब ओष्ठ, विशाल नेत्र, मानों विधाता की एक अद्भुत रचना थी। उसके कमर तक लटकते हुवे काले केश, क्षीण कटि, सुकोमल अंग एक एक बहु मूल्य नीलाम्बर से परिवेष्टित थे।

युवक यद्यपि कोई ऐसी बहुल्यता से सुसज्जित न था तथापि उसकी प्रत्येक भावना से मानों चञ्चलता टपकती थी। उसकी महीन ग्रीष्म कालीन चुनी हुई कलकतिया धोती, रेशमी कमीज़ पर लटकती हुई सुवर्ण चेन, टेढ़ी मांग पतली लचकदार चांदी की मूठ वाली छड़ी मानों साक्षात् कामदेव को भी पराजित कर रही थी।

किन्तु सुन्दरी का ध्यान अन्य दिनों की भांति इधर बिल्कुल न था। वह शिला खण्ड पर बैठी हुई बांयें मञ्जुकर पर कनक सम अधर को आश्रय दिये हुवे सुचारु नेत्रों से अस्ताचल के लज्जास्पद ढीठ कार्य्य का निरीक्षण कर रही थी।

आतप का सम्पूर्ण दिवस समस्त संसार को तपा २ कर तरसाना, प्रातः से संध्या तक अपनी देदीप्यमान रश्मियों द्वारा अठखेलियों का आनन्द लूटना, तनिक न हिचकना, न तनिक दया करना, और फिर भूले हुवे पथिक की भांति तृषित नेत्रों से अवनत मुख प्रियतमा संध्या का आश्रम ढूंढ़ते हुवे लौटना तथा विरहिनी संध्या अपने प्राणेश के उन सब अपराधों को क्षमा कर उसके आलिंगन में अपने को लवलीन कर देना लता के मन में बड़ा प्रभाव डाल रहे थे। स्वार्थ और निःसीम त्याग का घोर संग्राम छिड़ रहा था। मूक होते हुवे भी उस का हृदय अविश्रान्त नदी की भांति पल पल में तरंगें ले रहा था।

विनय बड़ा क्षुब्ध हो रहा था उसकी सारी वाक्चातुरी व्यर्थ ही व्यय हो रही थी। यदि लता एक भी शब्द मुख से निकालती तो उसको ढ़ाढ़स होता। विनय ने बड़े अनुनय से कहा "लते क्या आज मौन व्रत ही रहेगा? बाल्य काल से हमारी मैत्री है अतः ऐसी आशा न थी। एक बार अपने मुख सरोज से आशा फलवती करो।"

लता ने उसकी विनय माधुरी का तनिक भी ध्यान न करते हुये कहा "सुकुमारी का क्या बनेगा?"

"सुकुमारी! सुकुमारी से इससे क्या तात्पर्य्य?" उसने घबड़ाहट से पूंछा लता ने बड़ी नम्रता से कहा—"मैं समझती हूं तुम अवश्य जानते हो। विनय! अपने हृदय से पूंछो और सरला बाला के जीवन की ओर निहारो।" किन्तु उसका शब्द बड़ा गम्भीर था प्रसन्नता और हास्य की झलक भी न थी, उसने विनय की ओर दृष्टिपात भी न किया।

"प्यारी लता! सुकुमारी से मेरे विवाह की बात तो थी और मैंने वचन भी दिया था, किन्तु"—

"किन्तु क्या? विनय! यह क्यों नहीं कहते कि यद्यपि तुम उसे प्यार करते हो उस के अपरिमित रूप लावण्य पर मुग्ध हो उसे प्रेम का वचन दे चुके भी हो तथापि पिता से भयभीत होकर प्रतिज्ञा तोड़ने पर कटिबद्ध हो।"

"हां हां यह बात तो कुछ अंशों में सत्य है। कभी मैंने सुकुमारी से विवाह करने की बात सोची थी किन्तु देवेन्द्र बाबू निर्धन है। मेरे सम्बन्धी गण कब यह मानते हैं कि मैं ऐसे स्थितिहीन निर्धन पिता की कन्या से सम्बन्ध करूं अतः मैं निःसहाय हूं।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"तुम लोग बी. ए और एम. ए की परीक्षायें देकर भी ऐसे कापुरुष रहते हो ? सुकुमारी एक भद्र पुरुष की कन्या उसकी जैसी अप्सरा-तुल्य सुयोग्य पत्नी सहस्रों में ढूंढ़ने से मिलेगी" उसने मानों ग्लानि पूर्वक विनय की ओर दृष्टि फेर कर कहा। "प्रेम से विवाह करना धन से विवाह करने से कितना गुरुतर है। एक बार देवेन्द्र बाबू से हाँ करके और सुकुमारी को प्रेम पाश में बांध कर अब धन के लिये झगड़ा करना कैसी नीचता है (कठोरता से) शोक सुकुमारी तुम्हें बड़ी पूज्य दृष्टि से देखती है।"

विनय सहसा लाल होकर उठ खड़ा हुवा-"सुकुमारी ने मुझे आराध्यदेव बनाया है यह मैं जानता हूं। उसका मुझ पर अटल प्रेम है और वह मुझे अयोग्य नहीं समझती"।

लता के सुन्दर मुख पर एक विषाद मिश्रित मुसक्यान छागई। विनय की ओर निहार कर उसने कहा-"यदि सुकुमारी जानती कि तुम मेरे परिग्रह के गाहक हो ? विनय तुमने इसमें भूल की यदि....."।

विनय ने खिज कर कहा-"मैं तुम्हारी बातें नहीं समझता"।

"मैं यह कहती हूं कि तुमने सत्य मार्ग का अवलम्बन नहीं किया। किन्तु डरो मत मैं उससे कुछ न कहूंगी।" ऐसा कहते २ उठ खड़ी हुई।

विनय चञ्चलता से पास के वृक्षों की पत्तियों को तोड़ मरोड़ रहा था कभी अपनी पतली छड़ी को छोटे २ पौदे, घास के संहार में निरन्तर इधर उधर मार रहा था, अन्त में उदासी से बोला-"तो तुम मुझे अस्वीकार करती हो न, यही समझूं ?"

लता ने चलते २ कहा-"यदि भूल न की होती तो इस प्रेम-परिचय के लिये बड़ी अनु गृहीत होती।" विनय एक टक उसकी माननी-मूर्ति की ओर देखता ही रह गया।

लता और सुकुमारी में पहिले से जान पहिचान थी। जब लता के पिता शहर में रहते थे तब देवेन्द्र बाबू पड़ोस में आकर रहे थे और विनय के पिता भी नयी २ प्रैक्टिस करते थे। तभी से इनकी मैत्री की नीव पड़ी थी। लता के पिता शहर बाहर कोठी में आकर रहने लगे कन्याओं ने यौवन प्राप्ति करली सम्मिलन भी कठिन हो गया।

उसदिन दो पहर को लता शहर गई थी, वहां सुकुमारी से भी मिलने चली गई। वहीं सुकुमारी और विनय के प्रणव सम्बन्ध की बात तथा विनय के उस नीच व्यवहार की बात भी उसे ज्ञात हुई। विनय के पिता ने दस हज़ार रुपिया दहेज़ में चाहा देवेन्द्रबाबू विचारे ५०) के नौकर वही उनका गृहस्थी का ख़र्च देंतो कहां से दें। मकान गिरवी रख। उधार ले लड़की को ऐसे सुन्दर एम. ए. वर को देने का उद्योग करते थे किन्तु सुकुमारी ने उन्हें ऐसा करने से रोकदिया। सुकुमारी के रूप लावण्य से मुग्ध होकर विनय ने सोचा था कि पिता को समझा लूंगा किन्तु उनकी दृष्टि पहिले से ही धनवती लता के ऊपर थी अतः उन्होंने विनय को सम्बन्ध करने पर वाध्य किया। उसने भी कोई ख़ास आपत्ति न की क्योंकि लता से उसकी घनिष्ट मित्रता थी। विनय ने देवेन्द्रबाबू से कह दिया कि पिता नहीं मानते किन्तु सुकुमारी से यह कहने का साहस न हुवा जिसके पास बैठकर प्रेम पयोधर की झाड़िया बान्ध देते थे, जिसका मुख देखते ही शरीर में बिजली दौड़ने लगती थी, जिससे हृदय प्रेम करता है उसे फिर किस प्रकार निराश करें ?

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Digital Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

सुकुमारी के पिता की बैठक के सामने थोड़ीसी खुली जगह थी, वहीं पर पक्का कुआँ बना हुवा था। देवन्द्र बाबू को फूल पत्ति का बड़ा शौक था, सुतरां उस छोटे से स्थान को नाना भांति के सुगिन्धत पुष्प विटपों से सजा रक्खा था। और यह छोटी सी वाटिका सुकुमारी रूपी पारिजात पुष्प की देख रेख में निरन्तर प्रफुल्लित रहती थी। मौलश्री के छायादार पादप से अन्तर्हित एक कोने में सुकुम ने अपने एक शिला खण्ड निर्माण किया था, उसकी बड़ी प्यारी वस्तु थी। सखियों सहित प्रायः वह इसी स्थल में के लिकौतूहल किया करती थी। किन्तु सुकुमारी अब चिन्ता शीला हो गई है, उसका मनोहारी हास्य विलुप्त हो गया है, मुक्त सदृश समुज्वल मुख मुर्झाये हुए कमलदल की भांति निर्जीव प्रतीत होता है। अन्यमनस्क सी होकर वह लता का हाथ पकड़े वहां चली तो गई परन्तु बलवती नदी के सन्मुख छोटे से बन्द की भांति उसका प्रतिवन्ध टूट गया और लता की गोद में सिर रख वह अश्रुमोचन करने लगी "इसी शिला खण्ड पर बैठकर उन्होंने कितनी बार प्रेमालाप किया था। जिस दिन से वे विमुख हुये मैं इस पर नहीं बैठती। अब क्या कभी फिर उनके दर्शन होंगे?" सुकुम ने बड़े अस्फुट क्षीणस्वर में कहा। लता को विनय के इस अमानुषिक कार्य्य पर बड़ा शोक हुवा उसने दो एक कटु वाक्यकहे जिन्हें रोककर सुकुम ने कहा—"वहिन उन्हें कुछ न कहो वाटिका के सारे पुष्पों को देवार्चना का सौभाग्य क्या प्राप्त होता है? कितने वृक्ष परही मुर्झा जाते हैं। उनका क्या दोष। अपने माता पिता की इच्छा के प्रतिकुल कार्य्य वे कैसे करें?"

इतना यथेष्ठ था। लता ने और कुछ न पूंछा, उसे सान्त्वाना देना मानों अग्नि में घृता हुति देना था। उसका हृदय स्वयं भर आया और वह झट चली आई। उद्यान में एकाग्र चित्त शिला खण्ड पर बैठी हुई लता के हृदय पर यही सब विचार उस समय प्रौढ़ाकर रहे थे जब विनय ने प्रवेश किया था।

आज दूसरा दिवस था। प्रातः काल से लता किसी की बाट जोह रही थी, बार २ सड़क की खिड़की से खड़ी २ झांकती थी। अभी सवेरा बहुत था कोई आता जाता न दिखता था "क्या व्रजभूषण जी न आवेंगे?" कहते २ वह एक आराम कुरसी पर बैठ गई।

जबसे लता के पिता मरे वह इन्हीं सज्जन की देख रेख में रहती थी। व्रजभूषण जी ने अपना मामा का सम्बन्ध निकाल कर कई बार लता को अपने यहां रखना चाहा परन्तु वह सहमत नहीं हुई। कई दूर की बुढ्ढी स्त्रियों के साथ वह पिता के अन्तिम निवास स्थान उपवन परिवेष्टित बंगले में ही रहती थी।

व्रजभूषण जी नामी वकील थे, धन ज़मीन इत्यादि की देखरेख भी वही करते थे।

कल रात्रि लता ने उन्हें बुला भेजा। अभी सूर्य्य की प्रखर किरणें भी नहीं प्रसरित हुई थी कि लता को पुकारते हुवे वे आपहुचें। लता मनही मन अपनी बात उन्हें किस प्रकार समझाऊंगी सोच बिचार रही थी।

व्रजभूषण जी पुत्र पौत्र परिपूर्ण वृद्ध पुरुष थे। लता से पितृवत् वर्तते थे बड़ी उत्सुकता से उन्होंने कुशल क्षेम के बाद कहा-"बेटी! क्या आवश्यक कार्य्य है? कुछ कष्ट तो नहीं?"

अवनत मुख लता ने क्षीण स्वर से कहा "मामा जी बाबू जी ने सारी सम्पत्ति का अधिकार मुझे ही दिया है न? मैं उसे जो चाहूं कर सकी हूं?"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्रजभूषण ने बड़े विस्मय से कहा–'हाँ बेटी, धन ज़मीन सब तुम्हारी ही है और किसी का कुछ दखल नहीं। किन्तु–बेटी।"

लता बीच से ही बोली "मामा जी! शोक है कि परमात्मा ने मुझे आवश्यक्ता से अधिक दिया है। और विचारों के पास थोड़ा सा भी नहीं है। अतः मेरी एक प्रबल इच्छा है क्या आप उस अनुरोध को पूरा करने में सहायता देंगे? मैं एक कन्या के पाणिग्रहण की आर्थिक कठिनता को सुगम बनाना चाहती हूं, किन्तु यह किसी को ज्ञात नहीं।"

व्रजभूषण जी ने कहा–"लेकिन" पर लता ने इस बार भी उनकी नचलने दी और आध घण्टे तक हिसाब किताब लिखापढ़ी पक्की कर दी।

व्रजभूषण जी उसका त्याग देख अवाक् एवं स्तम्भित रह गये।

(४)

सखि! तुम सचमुच मेरी मातृ-तुल्या पूज्यनीया हो मैं किस भांति तुम्हारा धन्यवाद करूं! "ऐसा कहते २ सुकुमारी ने आकर लता को गाढ़ आलिंगन किया। सुकुमारी के प्रफुल्लित मुख का चुम्बन करते हुवे लता ने बड़प्पन से कहा–"तुम मेरी छोटी बहिन हो, तुम्हें सुखी करना मेरा धर्म ही था, इसमें क्या कोई बड़ी बात थी!"

"क्यों तुमने इतना धन जो मुझे दे डाला है। अब वे प्रसन्नता से मुझे ग्रहण करेंगे। अब कोई आपत्ति न होगी।"

लता ने हंसकर कहा–"तुम लोग सुखी हो-ओ यही मेरा अभीष्ट है जीवन का प्रेम धन से कहीं अधिकतर है।

किन्तु सुकुमारी को अपनी प्रसन्नता में इस बात का अपने सिवाय कुछ मतलब न सूझा।

"सखि! तुम धन्य हो। मानवी नहीं देवी हो।" ऐसा कह कर उसे फिर आलिंगन किया।

(५)

विवाह खूब धूम धाम से हो गया। वहीं बैठे लता के कानों में विवाह के बाजे गोल आतशबाज़ी, स्त्रियों का मधुर आलाप वेदमन्त्रों का गान मानों भर रहा था। कई निमन्त्रण आये किन्तु लता विवाह में सम्मिलित न हुई।

आज वर बधू उसके यहां आमन्त्रित थे। उनको विदा करने के पश्चात् पञ्चमी के क्षीण चन्द्र के धुंधले आलोक में लता अकेली वहीं उसी शिलाखण्ड पर बैठ गयी। नेत्र युगुल से अश्रुमोचन करते २ उसके मुख सरोज से उसी जन शुन्य स्थान में स्पष्ट निकल गया–"और विनय! इतने दिनों से मैं तुम्हें किस प्रकार प्यार करती थी। जब से नितान्त बालिका थी धूल में दोनों इकट्ठा खेलते थे तुम्हारी ही मूर्ति प्रेम मन्दिर में स्थापना की थी। किन्तु बीच में अत्यन्त सुन्दरी सुकुमारी सम्मिलित हो गई और उसके लावण्य पर मुग्ध हो गये, मेरी चाहना केवल धन के लिये ही रह गयी।

अच्छा भाग्य से तुम सुकुम के लिये ही बने थे। यद्यपि विचलित पथानुगामी होकर तुम उसे खोने ही लगे थे कि जगदीश्वर की की कृपा से मैं बचा सकी।

वह स्तब्धमूर्त्ति की भांति वहीं बैठी रही। संसार उसके लिये प्रेम शून्य और जीवन निःसार प्रतीत होता था।

चन्द्रदेव लज्जा के मारे मुख छिपाये चले जारहे थे। अन्धकार अपनी विजय पताका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फहराता चला जाता था। लता ने एक बार मुख ऊंचा करके देखा-"प्रियको सुखी करने में भी सुख है पता नहीं कितनों को ऐसी आवश्यक्तायें होगी। मेरे जीवन का भविष्य लक्ष्य असहायों की सहायता करना ही होगा कहते २ दृष्टि से विलीन हो गई॥

—o—

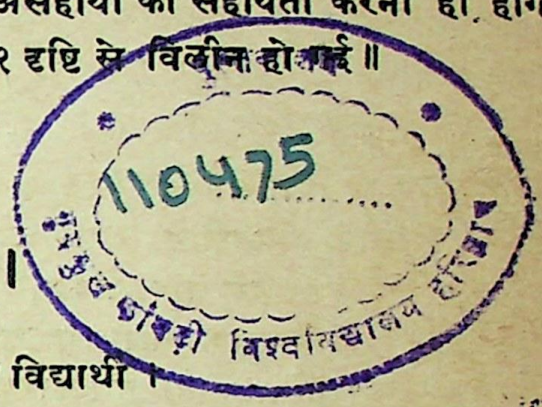

प्यारा-भारतवर्ष।

लेखक—श्रीयुत् गंगाप्रसाद विद्यार्थी।

प्यारा भारतवर्ष हमारा। टेक—

(१)

जय जय प्यारा, देश हमारा,
प्रकृति सवांरा, विमल नज़ारा,
महि मण्डल का मोहक तारा,
श्री जगदीश दुलारा।
प्यारा भारतवर्ष हमारा॥

(२)

नन्दन वन सम, शोभा दम दम,
छिटके थम थम, परम अनूपम,
अति लज्जित होता देख इरम[1],
छवि--गुण-सौख्य--पिटारा।
प्यारा भारतवर्ष हमारा॥

(३)

उत्तर राज शुभ हिम शृङ्गा,
मध्य किलोलति यमुना 'गङ्गा',
रवि शशि तेज चमत्कृत अङ्गा,
धरम धुरीण उदारा।
प्यारा भारतवर्ष हमारा॥

(४)

अति वल शाली, जग मुख लाली,
प्रेम-पंथ गामी वर हाली[2],
विश्व वाटिका का प्रिय माली,
जय जग जीवन सारा।
प्यारा भारतवर्ष हमारा॥

(५)

जग में जुग जुग जिया करै तू,
सुष्टु अमी रस पिया करै तू,
सुखद सुकृत नित लिया करै तू,
करि स्वछन्द विहारा।
प्यारा भारतवर्ष हमारा॥

—

(१) 'आद' का नकली स्वर्ग जो दशछाद ने मुल्के 'शाम' में बनाया था। (२) हाली=हल चलाने वाला अर्थात् किसान।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यूनानी दर्शन का दिग्दर्शन।

(१)

(प्रो० सुधाकर एम. ए.)

भारत वासियों के लिये यूनान देश के प्राचीन दर्शन शास्त्र के इतिहास का अध्ययन अत्यन्त मनोरञ्जक तथा हृदयाल्हादक प्रतीत होता है। कारण यह है कि वहां के दार्शनिक विचारों की भारतीय दार्शनिक विचारों के साथ अनेक अंशों में समता दिखलाई देती है। भारत दर्शन का घर था यह सर्वमान्य मत है। यहीं से दार्शनिक सिद्धान्तों के बीज लोकलोकान्तरों में जाकर अङ्कुरित हुए, वहां फूले और फले। यूरोपीय दर्शन का इतिहास इस कथन की साक्षी देता है परन्तु जो देश भारतवर्ष का इस अंश में अधिक ऋणी है वह यूनान देश है। प्राचीन काल में भारतवर्ष का यूनान देश के साथ कब, कैसे, और किस प्रकार, का सम्बन्ध जुड़ा। यह इतिहास के विद्यार्थियों को भली प्रकार विदित है। यहां पर इस विषय की विवेचना न करके हम पाठकों के सन्मुख यूनान देश के प्रसिद्ध विचारकों के दार्शनिक मत प्रकाशित करने का प्रयत्न करेंगे॥

प्रस्तावना:—यूनान देश का अति प्राचीन दर्शन बाह्य जगत की आलोचना तक ही परिमित रहा है। उस समय के यूनानियों के सन्मुख सब से बड़ा प्रश्न यह था कि इस दृष्टि गोचर जड़ जगत का मूल कारण क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में जो कुछ स्थापनाएं उन्हों ने प्रस्तुत की। उन से उनकी बुद्धि चातुर्य टपकता है। उनकी अनूठी कल्पनाएं नवीन विज्ञान के साथ ठोकर खाती है। सारे भौतिक जगत को अनेक गतिशील परमाणुओं से बना हुआ स्वीकार करना, तथा वैज्ञानिक विधि से गणित का सम्बन्ध जोड़ना आदि कई कल्पनाएं एस स्पष्ट शब्दों में वर्णन की गई हैं कि मानो उन्नीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों द्वारा उनका प्रतिपादन किया गया है। उनकी कल्पनाएं यद्यपि परिणाम रूप में नवीन प्रतीत होती हैं तथापि वैज्ञानिक निरीक्षण तथा परीक्षण का जो वर्तमान काल के मुख्य साधन हैं उनमें समावेश कम देखने में आता है। इसी लिये यूनानियों की वैज्ञानिक विवेचना उनको किसी क्रियात्मक लाभ उठाने के योग्य नहीं बना सकी। यतः आज कल के विज्ञान की स्थिति निरीक्षण तथा परीक्षण के आधार पर है अतः यह वर्तमान काल के लोकों के लिये अनेक प्रकार से लाभकारी सिद्ध हो रहा है॥

जो वैज्ञानिक कल्पनाएं बाह्य जगत के सम्बन्ध में घड़ी गई उनका उस समय के प्रचलित मिथ्या धार्मिक विश्वासों पर खूब प्रभाव हुआ। विचार शक्ति हमेशा से मनुष्य की धार्मिक सङ्कीर्णता की विरोधी रही है। संसार का इतिहास सर्वांश में इसकी पुष्टि करता है। जो धर्म वैज्ञानिक विचारों को अपनी स्थिति के लिये हानि कारक समझ कर बल पूर्वक अपने क्षेत्र से बाहिर रखता है उसका मनुष्य को विचार-स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाने पर उतना ही बल पूर्वक विरोध देखने में आया है। यही अवस्था यूनान देश में उपस्थित हुई,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिसकी पराकाष्ठा सुकरात के जीवन में हम दिखलाएंगे। स्वतन्त्र विचारों ने यूनान में जहां धार्मिक विश्वासों को ठेस लगाई, वहां अनेक राजनैतिक घटनाओं को भी उपस्थित किया। जिनके द्वारा प्रजावाद के विचार अधिक प्रचारित होने लगे। और प्राचीन राजकीय संस्थाएं जिन में प्रजा को सामान्य अधिकार भी न थे। धीरे २ मिटने लगे। सर्व साधारण लोगों को ज्ञान पिपासा बढ़ने लगी। धार्मिक विश्वासों, सामाज तथा आचार सम्बन्धी कल्पनाओं की खुलमखुल्ला आलोचना होने लगी। जहां पहले ब्रह्माण्ड के वैज्ञानिक खोज यूनानी दार्शनिकों को आकर्षित करती थी। वहां अब मनुष्य का आचरण उसकी धर्म-जिज्ञासा तथा आत्मा के विकास सम्बन्धी प्रश्नों का विवाद तत्कालीन समालोचकों को अभिमत होने लगा। इसीलिये उस समय का का नाम दर्शन के इतिहास में मानवीय आलोचना का काल रक्खा गया है॥

अतितार्किक—इस मानवीय आलोचना के प्रवर्तक अतितार्किक थे। यह सम्प्रदाय उस समय की राजनीतिक अवस्थाओं का फल था। प्रत्येक देश में उसकी वर्तमान अवस्थाओं के अनुसार उसकी आवश्यकताओं का निर्णय होता है और उन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये वे अवस्थाएं ही साधनरूप सामग्री उत्पन्न कर देती है। यूनानी लोग जिनको कुलीन होने का अभिमान था प्रायः अपने देश के राष्ट्रीय जीवन में भाग लेना अथवा सौभाग्य तथा गौरव समझते थे। उस जीवन की सफ़लता का दारोमदार व वाक् वदुता तथा वक्तृत्व शक्ति पर समझते थे। जिन में यह शक्ति पाई जाती थी वही लोक सामाजिक तथा देश सम्बन्धी कार्यों में अधिक प्रभाव प्राप्त कर लेते थे। अतः उस समय इस प्रकार के व्यक्ति तैय्यार करने के लिये आवश्यकता अनुभव होने लगी। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये ही अतितार्किकों के सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। यह लोक अपने समय के कुलीन वर्ग के शिक्षित थे। यद्यपि अतितार्किक शब्द कुछ समय के पश्चात् बुरे अर्थों में प्रयुक्त होने लगा, परन्तु प्रथमतः इसका प्रयोग ऐसे मनुष्यों के लिये ही होता था जो युनानी बच्चों की तर्कणा शक्ति का शिक्षण करते थे। अतितार्किक लोक लोक धनाढ्य पुरुषों के लड़कों को पर्याप्त धन की राशि शुल्क के रूप में लेकर पढ़ाते थे। स्थान स्थान पर उनको साथ लेजा कर उनकी भाषण शक्ति को बढ़ाते थे। अधिकांश उनकी शिक्षा का लक्ष्य यही रहता था कि उनके शिष्य अपने वक्तृत्व बल से अपने देश निवासियों को प्रभावित कर सके तथा उनके राष्ट्रीय जीवन में अपना अनुगामी बना सकें। अतितार्किकों की विचार परिपाटी में सत्यासत्य के प्रश्न का स्थान ही न था। वे अपने शिष्यों को इस योग्य बना देना मुख्य अर्थ समझते थे जिससे वे प्रत्येक स्थापना के पक्ष और विपक्ष दोनों को न्यायप्राप्त सिद्ध कर सके। इस प्रकार के बिचार शैथिल्य का यह परिमाण हुआ कि धर्म्म, समाज और राजनीति के प्रश्नों की चर्चा करते समय वे किसी मण्डनात्मक प्रवृति से प्रवृत न होते थे प्रत्युत वर्तमान काल के वकीलों के सदृश अपने पक्ष का आन्दोलन तथा समर्थन येन केन प्रकारेण अभीष्ट समझते थे। लाल को पीला और पीले को लाल सिद्ध कर दिखाना यह उनके बाएं हाथ का खेल था इसलिये राजनीतिज्ञ प्रायः विजय के भावों से प्रेरित होकर प्रजा के कार्यों में भाग लेते थे। ऐसी दशा में उस समय के यूनानी राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं में सत्य का अनुराग कम होने लगा। ज्ञान के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुशीलन में खोज तथा निष्पक्षता की वृद्धि जो प्राचीन यूनानियों में पाई जाती थी वह इस सम्प्रदाय के विचारों के फैलने से घटने लगी उलटा सीधा तर्क न केवल राजनैतिक प्रश्नों पर ही चलने लगा, अपितु आचार सम्बन्धी समस्याएं तथा सामाजिक, धार्मिक, विषयों की आलोचना भी उसी का शिकार बनने लगीं पीछे आने वाले अतितार्किक तो यहां तक बढ़ गए कि उनके मतानुसार धर्म, कर्म सत्य,असत्य पुण्य, पाप, सब कुछ वैयक्तिक लाभ की दृष्टि से ही देखा जाने लगा। वे लोग यह कहने लगे कि धार्मिक जिज्ञासा केवल बाह्य आडम्बर है। धार्मिक शङ्काएं वैयक्तिक जीवन की उन्नति के मार्ग में नहीं ठहरनी चाहिएं। बाहूबल ही न्याय की स्थापना करते है। Might is Right नहीं नहीं यही एक मात्र न्याय है। मनुष्य को सर्वदा अपने लाभालाभ की दृष्टि से ही सब प्रश्नों का फैसला करना चाहिए॥

प्रोटैगोरस—सब से प्रथम और प्रसिद्ध अति तार्किक प्रोटैगोरस था। उसका समय लगभग १४८०-४११ ईसा से पूर्व बतलाया जाता है। पूरे चालीस वर्ष यह अनथक प्रचारक अपने शिष्यों को घूम घाम कर जीवन साफल्य की शिक्षा देता रहा। अपनी आजीविका के लिये उनसे पर्याप्त धन ग्रहण करता था, धन लेकर पढ़ाना उस समय यूनान देश में अति घृणित कार्य समझा जाता था। भारतवासियों के समान यूनानी लोग विद्या को बेचना महा-पाप समझते थे। अति तार्किक लोकों के घृणास्पद होने का एक बड़ा कारण यह भी था कि वे शिक्षा को बेचते थे। प्रोटैगोरस की शिक्षा इस समय जो कुछ मिलती है। वह उसके कथनों के रूप में मिलती है। देवी देव-ताओं के सम्बन्ध में उसका यह कथन है कि उनकी आलौकिक सत्ता के विषय में हम कुछ नहीं जान सकते। जीवन इतना अल्प है कि उसे इन कठिन समस्याओं में व्यय करना उचित है इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह विचार को अधिकतया क्रियात्मक रूप देने का अभि-लाषी था। उसकी यह नीति एक हद तक प्रशंसनीय है। परन्तु इस नीति का जो प्रयोग उसने धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में किया उसके कारण वह तत्कालीन राज्याधिकारियों के कोप का पात्र बना। वे लोक उस पर यहां तक क्रूर दृष्टिपात करने लगे, कि उन्होंने उस पर अभियोग चलाने का संकल्प दृढ़ कर लिया। परन्तु वह अपने देश से भाग निकला और सिसली जाता हुआ मार्ग में उसका देहान्त होगया। उसका एक और कथन जो सामाजिक स्थिति को ढीला करने वाला था। वह यह है "Man is the measure of all things" मनुष्य ही सब पदार्थों का मापक है इसके यह अर्थ लिये जाने लगे कि मनुष्य को जो कुछ अपने लिये अभीष्ट हो वही श्रेष्ठ है और वही ग्राह्य है अर्थात् सत्यासत्य का निर्णय उसके अपने ही लाभालाभ हिताहित की दृष्टि से होना चाहिये। मनुष्य के अपने लाभालाभ के अति-रिक्त कोई ऐसा सार्विक निर्णायक नहीं मिलता जिससे किसी निरपेक्ष सत्य का प्रतिपादन हो सके। कोई भी स्थापना सर्वांश में सत्य सिद्ध नहीं होसकती यह विचार अपने स्वरूप में वही है जो आधुनिक सापेक्ष वादियों ने प्रचलित किया है। प्रोटैगोरस के इस सिद्धान्त ने यूना-नियों की उस समय की सामाजिक स्थिति को बहुत ढीला कर दिया। यूनानियों में व्यक्तिवाद का प्रवाह जोर पकड़ने लगा। सामाजिक बन्धन धीरे २ शिथिल पड़ने लगे। यूनानी समाज की इस बिखरती हुई विचार शृङ्खला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को फिर से स्थिर करने तथा अतितार्किकों के भयानक प्रवाह को रोकने के लिये सुकरात महोदय का जन्म हुआ है। सुकुरात ने जिन सार्वत्रिक नियमों तथा व्यापक सिद्धान्तों पर व्यक्ति और समाज की समुन्नति आश्रित रहती है उनके प्रचारार्थ अपना सारा जीवन लगा दिया। उन सिद्धान्तों की व्याख्या तथा उनके प्रचार में सुकरात के बलिदान का विवरण हम अगले अङ्क में करेंगे॥

——

देश-भक्ति।

ले०—'विनोद' शंकर व्यास।

गोला गिरे बन्दुक चले किन्तु,
देश भक्त को कुछ परवाह नहीं।
रण भूमि में स्वतन्त्रता के लिये,
मर जावें पर निकले आह नहीं॥

पराधीन नहीं रहेंगे चाहे,
प्राण तक भी चले जांयगे।
स्वतन्त्रता के युद्ध में मर कर,
भी तो स्वतन्त्र हो जावेंगे॥

दासता से मुक्त करो हे प्रभु,
नहीं तो मरना ही भला है।
इस वीर पञ्जाब के विषम आह से,
सारा तन अब तक जला है॥

रुक्मिणि हरण नाटक।

अंक दूसरा। प्रवेश तीसरा।

[स्थान-कुण्डिनपुर का राजमहल।]

रुक्मैया-[प्रवेशकर] उसकी मजाल क्या है मजाल ? बेड़ा पार।

प्रारब्ध-[स्वगत] भर दरिया में सारा जहाजी बेड़ा खुँवार; तो भी वाह रे नाक कटे जमान के जमादार ?

शिशु-सभी ओर ऐसे ही दिये रखना समाचार।

प्रारब्ध-गिरने पर भी ऊंची टांग करने हारा मेरा यार ?

रुक्मैया-लोगोंको तो उलटा ही समझा रक्खा है।

प्रारब्ध-[स्वगत] मूंछ मरोड़ते रहो न ? लेकिन तुम्हारे अमावस्या के उजाले जैसे मुंह ही बता रहे हैं कि तुमने कैसे पराक्रम किये हैं।

शिशुपाल-इस कमबख्त प्रारब्ध ज्योतिषी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का एक भी भविष्य सच नहीं निकला।

प्रारब्ध-[स्वगत] तुम्हारा भूत प्रतिकूल उसमें मेरा भविष्य क्या करे?

रुक्मैया-सच बात है प्रारब्ध? तेरे झूठे भविष्य के लिये तुझे क्या सज़ा करूं?

प्रारब्ध-[स्वगत] कमबख्ती आई [प्रगट] भले मार डालो तुम्हारे फूटे हुए प्रारब्ध को मार डालो। किन्तु याद रखना कि मैं बहुत कामका हूं बाकी मेरा एक भी भविष्य अब-तक झूठा नहीं हुवा? अन्तिम घड़ी में भी मैं और मेरा पंचांग आपके साथ थे इसलिये आपका बेड़ा गारत होने से बचा।

रुक्मैया-बतला कि तेरा कौनसा भविष्य सच निकला।

प्रारब्ध-इस टचली अंगुली के टेखे परसे गिनते जाओ। प्रथम तो यह कि सिद्धि भक्ति को ही व्याही और तुम कोरे ठनठनाते रह गये सो रह ही गये। क्यों? कैसे परखा। धोये हुए मूले के जैसा धवल तथा दोपहर के सूरज जैसा उज्वल है कि नहीं?

शिशुपाल-पर उस भक्ति का कहीं भी पता नहीं उसका क्या?

प्रारब्ध-यह तो अब भूत पिशाच की बात है मेरे भविष्य की नहीं—

रुक्मैया-तब स्वयंबर में कृष्ण कैसे आ पहुंचा?

प्रारब्ध-यह तो महाशयजी? आप भी मुझे भूत की बात पूंछ रहे हो भविष्य की नहीं। मैंने कब भविष्य कहा था कि कृष्ण बाहर से आ पहुंचेगा।

रुक्मैया-पर तूने तो नहीं ही कहा था न?

प्रारब्ध-अब भी खड़े खड़े भूतके जैसे वर्तमान को नहीं ही कहता हूं कि कृष्ण वहां कहीं से नहीं आ पहुंचा था वह तो वहां भूत रूप से विद्यमान था ही सो वह भूत की बात मैं अपने अविष्य में किस प्रकार कह सकता हूं? न हो और आवे उसका नाम भविष्य मेरे मेहरबान? तुम सब इस प्रकार भूत भविष्य कालका व्याकरण भी कैसे भूलजाते हो?

कृष्ण-पर कृष्ण वहां गुप्त वेश में हाज़र था यह तुमने कैसे नहीं बताया?

प्रारब्ध-लेकिन महाराज? हमारे पंचांग का काम वर्त्तमान वस्तु बतलाने का है ही नहीं वह तो है आंख का विषय अक्कल का नहीं।

शिशुपाल-सचमुच वह कृष्ण हमको अन्धा बना गया।

प्रारब्ध-नहीं जी महाराज? आंखें होते हुवे ऐसे कहा जाय? सच बात तो यह है कि दर्शन शास्त्र के नियमानुसार आंखों का विषय है रूप और वह है श्वेत यानी देख जा सके। बाकी कृष्ण अर्थात् काला और वह रूप नहीं होने से तुम्हारी आंखें नहीं देख सकतीं। वह बर्फ के पहाड़ जैसा शास्त्र सिद्धान्त यहीं साबित होता है।

रुक्मैया-इस लड़ाई में भी तो तूने हमको जीतने का भविष्य कहा था पर वह निकला उलटा॥

प्रारब्ध-मेरा भविष्य उलटा तो ब्रह्माण्ड उलटा मनुष्य बुद्धि का परदा उलटा। कौन कहता है कि तुम हारे हो? लड़ाई के कुनेह से बहादुरी पूर्वक मुकरर किये हुये जगह पर तुम पीछे हटे हो, बाकी तो तुम जीते हो। डूबती ज़िन्दगी की सच्ची बाजी जीते हो। हां अगर तुम लड़े होते तो देखना था, पर यह तो जहाजी फौज के सामने जहाजी फौज लड़ी और डूबी। वह जहाजी फौज के भाविष्य की विमा की बात है। तुम्हारी जिन्दगी के भविष्य के नियमानुसार तो मेरे ज्योतिष ने यहीं ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुमको खड़े के खड़े सही सलामत उतार दिया है।

रुक्मैया-कमबख्त की बात तो सही है हां?

प्रारब्ध—अरे चमकती हुई बिजली सी? [स्वगत] आंख के अन्धे और गांठ के पूरे सो इनका ही नाम।

शिशुपाल-अच्छा अब तो हमारे भेजे हुये दूत के साथ यूनान के महाराज काल यवन के पास यह हमारा संदेशा लेकर जा, और और उसको तीन करोड़ लश्कर के साथ यहां बुला ला।

प्रारब्ध-जी सरकार?

रुक्मैया-आह? अब देखा जायगा? फिर वह कृष्ण कहां जावेगा?

प्रारब्ध—(स्वागत) तुम्हारा घाट घड़ने? किया प्रारब्ध का होगा। (जाता है)

रुक्मिणी—(प्रवेश कर) रुक्मी भैय्या? तुम्हें पिताजी बुलाते हैं।

रुक्मैया—हां चलो। उस कृष्ण की मजाल क्या है मजाल! [जाता है।]

[रुक्मिणी भी जाने लगती है कि पीछे से रुक्मिणी का अंचल पकड़ कर]

शिशुपाल—आकाश की चन्द्रिका? तेरे सुधा झरण समान नयन में से मुझ रंक चकोर पर एक दो कटाक्ष के बिन्दु तो गिरा?।

रुक्मिणी--शिशुपाल? पर नारी रूप तलवार की धार पर हाथ रखते हुये विचार करना उचित है। मैं चन्द्रिका हूं कृष्णचन्द्र की? तेरे लिये अग्नि की ज्वाला हूं।

शिशुपाल—नहीं २ मेरी फूल की माला।

रुक्मिणी—फूल की माला उस भगवान की तेरे लिये तो नागन हूं विकराला। पर तुझे अनेक स्त्रियां हैं तो भी मेरे तिरस्कार का प्रहार खाने के लिये तू क्यों मेरे पीछे लगा है।

शिशुपाल—

पूंछो पतंग को कि दिये में क्यों जलता है।
क्यों सर्प भला तान पर मुरली के मरता है॥
तज सिन्धु स्वातिबिन्दु को चातक तरसता है।
बन्द होकर पद्म में मधुकर क्यों झुरता है॥१॥

रुक्मिणी—

जलना नहीं पतंग? बत्ती हूं मैं कृष्ण की।
मरना न सर्प? मोरली मैं कृष्ण अधर की॥
चातक? न तरस, स्वाति हूँ मैं कृष्ण की।
झुरना न भृङ्ग? कमलिनी मैं कृष्ण सूर्य्य की॥

इसलिये तू अपनी स्त्रियों से ही संतोष मान और उसमें ही तेरा कल्याण है।

शिशुपाल—सुन्दरि? पर तुझ चन्द्रिका को देखते ही मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे वैभव आकाश में मेरी सब रानियां मन्द्रतेजवाली तारावली जैसी हैं। मेरी विलास रात्रिएं उनसे सुशोभित नहीं हो सकतीं किन्तु तुझ चन्द्रिका से ही।

रुक्मिणी—चुप, विषयी धूमकेत? तेरी बकवाद रूप कटारी को अपनी जीभरूप म्यान में ही रख। मैं कई बार कह चुकी हूं कि इस चन्द्रिका का स्नेह सुधाझरणा श्री कृष्णचन्द्र के चरण में ही अर्पण हो चुका है। तुझ जैसे अनेक पत्नीधारी कामी को आज मैं चन्द्रिका और कल कोई और दीखें तो वह चन्द्रिका—

शिशुपाल—नहीं नहीं-चन्द्रमुखी? संसार में दो चन्द्रिका हो ही नहीं सकतीं।

रुक्मिणी—विषयवासनारूप मदिरापान करने वाले को नजर नजर पर अनेक चन्द्रिका।

शिशुपाल--मैं शपथ खाकर कहता हूं कि तुझे व्याहते ही मैं उन सब रानियों को त्याग देने को तैय्यार हूं।

रुक्मिणी--शरम है तुम जैसे विश्वास-घाती को कि विवाह की पवित्र प्रतिज्ञा को ऐसे समुद्रतरङ्ग जैसे विषय की तरङ्ग में बहा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देते हो। और बिचारी निराधार एक पतिव्रत-धारी अबलाओं को निराशा तथा निःश्वास की ज्वाला में जलती रखते हो!

शिशुपाल—अरे इस शिशुपाल जैसे खान-दानी को ब्याहने के लिये तो सैंकड़ों कन्याएं सामने चली आती हैं। मेरा प्रेम प्राप्त करने के लिये अनेक प्रकार की मेहनत तथा खुशा-मद करती हैं। और साथ में दहेज तिलक आदि में लाखों रुपये नगद तथा माल मिलकत आती हैं तो भी कुछ गिनती नहीं। जब तुझ को तो मैं कुछ भी दिये बिना ब्याहने को तैय्यार होगया हूं, तो यह तू अपना सद्भाग्य समझ।

रुक्मिणी—प्रेम तथा पत्नीयों का विनिमय (बदला) करने वालों को हजारों धिक्कार!! प्रेम स्वर्ग का धन है जो अमूल्य तथा अक्षय्य है। जब कि सोना चांदी संसार की नाशवान् क्षणिक दौलत है जो अनन्त प्रेम खजाने को कभी खरीद ही नहीं सकती तो जो अर्धाङ्ग होने वाली है तथा जिसे जीवन का सर्वस्व समझना है उस पवित्र पत्नी के लिये निर्लज्जता तथा निर्दयता से दुकानदारी का सौदागिरी भाव करना, नीच स्वार्थ पूर्ण लेन देन का हिसाब लेना और प्रेम तथा दिल को पैसों की शरत पर खरीदना इसके जैसी विवाह तथा प्रेम के नाम को कलंक लगाने वाली और दूसरी कौन सी बात हो सकती है?

शिशुपाल—किन्तु मैं तो मेरे सम्पूर्ण राज्य-महासागर के चन्द्रमा जैसा यह मुकुट उलटे तेरे चरण पर चढ़ाने को तत्पर होता हूं।

[मुकुट चरण पर रखता है]

रुक्मिणी—जाजा-कामी? पर मैं तो श्रीकृष्ण चरण के कदम २ पर सैंकड़ों चन्द्रमा और स्वर्गखजाना देखती हूं और इसी लिये इस तेरे क्षणिक संसारी मुकुट को इस तरह ठोकर से उड़ाती हूं। [ठोकर से उड़ाती है]

शिशुपाल—ओह? बस मेरे अपमान की पराकाष्ठा!! अभिमानिनी रुक्मिणी? इस तेरे दुराग्रह के दाह से तेरे कृष्ण तृण को जल कर भस्म हो जाने का समय अब नजदीक आगया है।

रुक्मिणी—श्रीकृष्ण जैसे सदाचारी ब्रह्म के तेज जैसे प्रतापी ब्रह्मचारी को जलाने जाते समय तुम जैसे कामी विषयी काष्ठ ही स्वयं जलकर खाक हो जायंगे क्योंकि श्रीकृष्ण धर्म स्वरूप हैं और जहां धर्म है वहीं विजय है।

गायन

'यतः सुधर्मस्ततो जयः।' यह सत्य वचन तुम याद रखो।

अरु 'जस बोवो फल तस पावो' अचल नियम यह याद रखो।

कांटा न किसी को चुभा, यदि पुष्प सा खिला।
देना न किसी को जहर, यदि अमृत से फला।
न डाल किसे अग्नि में, तृणराशिसा है तू।
डुबा न किसी को अरे, मिट्टी का ढेला तू॥

नेकी का फल अच्छा चखना,
कुकर्म का फल बुरा चखो।
नहीं तरोगे भवसागर तुम,
पापशिला गर बांध रखो॥

[प्रस्थान]

——:०:——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होली।

लेखक—श्रीयुत् गौरीशंकर शर्म्मा।

आर्य्य जन! युगकर जोर मनावैं ॥ टेक ॥

बन्धनमुक्त हेतु मैय्या के समर भूमि में जावैं। हंसते २ स्वतन त्यागदें मन में मैल न लावैं ॥
अहो पुरुषार्थ दिखावैं ॥ १ ॥

दमन-नीति के दावानल को देखि नहीं घबड़ावैं। हो प्रह्लाद सदृश सत्य-व्रत पालैं वीर कहावैं ॥
सतत 'मोहन' गुण गावैं ॥ २ ॥

बन मुर्दार न श्वान सरिस हो लेटपेट दिखलावैं। टुकड़ोंसम थोथी उपाधियों हेतु न हाथ बढ़ावैं
न मृग-जल में भरमावैं ॥ ३ ॥

परांधीनता व्यूह भेदको अभिमन्यू बनि जावैं। या ते पावैं वीर गति अथवा विजय-ध्वजा फहरावैं
न पीछे पैर हटावैं ॥ ४ ॥

हिंदू मुसलिम युग्मसहोदर पक्की ग्रंथि लगावैं। 'जुगफूटाकिनष्ट होगोटी' जनता को समझावैं ॥
कण्ठ से कण्ठ मिलावैं ॥ ५ ॥

हिलमिलकर सबबंधु परस्पर थलस्वतंत्र यह धावैं डगमग होती भारतनैया को किनारे पहुंचावैं
तभी सच्चा सुख पावैं ॥ ६ ॥

चक्र-सुदर्शन सम चरखों का कर प्रचार दिखलावैं। देशविरुों से तनढँकि कर देश दारिद्रनशावैं
स्वत्व फिर निश्चय पावैं ॥ ७ ॥

क्षत्रशाल प्रताप शिवा की जब संतान कहावैं। बनैं भीरुकायर तब कैसे? आगे कदम बढ़ावैं
न जननी कूंख लजावैं ॥ ८ ॥

दो बल, बुद्धि, विभव प्रभु 'शर्म्मा' हिलमिलि विनय सुनावैं। हिंदी हिन्दू हिंद देशकी जय२कार मनावैं
राष्ट्र-गायन नित गावैं ॥ ९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्याओं की पाठविधि में विज्ञान का स्थान ।

ले०—श्री रामजी नारायण डी० ऐस० सी०

"स्त्री शूद्रो नऽधीयतां" कुछ ही काल पहिले भारतीय जन समाज का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त था। इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हुए भारतीय अपने निज मुख से स्वीकार करते थे कि वे कितने पतित और नीच हो गये हैं; रसातल के कौन से गढ़े में जा गिरे हैं। किसी देश तथा जाति की उन्नति को जांचने के लिये वहां की स्त्रियों की दशा—शारीरिक, आत्मिक और मानसिक—एक उच्चतम कसौटी है। स्त्रियों का समाज में क्या स्थान है, निज धर्म को सफलता पूर्वक पालन करने के लिये वह इन्हें क्या सुगमतायें प्रदान करता है यही प्रश्न है जिन के उत्तर से हम उस समाज की सभ्यता को नाप सक्ते हैं। यह निर्विवाद है कि संसार की रचना पर स्त्री जाति का बड़ा गहरा प्रभाव है, और हो भी क्यों न जब कि स्त्रियों के विना संसार शब्द ही निस्सार है। परन्तु सृष्टि के इन अटल नियमों की अवहेलना करते हुए हिन्दू समाज ने स्त्रियों को इतना तुच्छ और तिरस्कृत समझना आरम्भ कर दिया था कि जिस का कोई प्रमाण नहीं। पितृ-ग्रह में बालिका का जन्म एक अपशकुन समझा जाता था, उस के पालन पोषण और खान पान में उस सावधानता की आवश्यक्ता नहीं थी जो कि पुत्र के लिये परमावश्यक मानी जाती थी। पराधीनता उस के जीवन की सहचारिणी थी जो किसी ने दे दिया सो खा लिया, पी लिया और पहन लिया, जहां मां बाप ने चाहा व्याह दिया, जैसा सास ससुर ने चाहा उसके जीवन का लक्ष्य बना दिया। पति-व्रत धर्म की शिक्षा बड़े ज़ोर शोर से दी जाती थी परन्तु स्त्री-व्रत धर्म कहीं सुनाई न देता था। निज सम्मति रखने और उस के अनुसार काम करने का उस का कोई अधिकार नहीं। ऐसी अवस्था में यदि समाज "स्त्री शूद्रो नऽधीयताम्" का सिद्धान्त प्रति पादन करे तो आश्चर्य ही क्या है। यही कारण है कि आज से तीस चालीस वर्ष पहिले स्त्री और शिक्षा यह दोनों शब्द इकट्ठे सुनकर कानों पर हाथ धरे जाते थे। यह अवस्था थी जब कि आर्य-समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया। इतिहास लेखक को यह मानने में किञ्चित भी कठिनता न होगी कि दयानन्द मनुष्य समाज में उसके भिन्न २ अङ्गों के स्वाभाविक अधिकारों का एक सबल पोषक था और यही कारण है कि वह स्त्री शिक्षा का बड़ा भारी अनुयायी था। मातृ-शक्ति की हीन दशा देख कर उस के साधु हृदय पर चोट लगी और उसका दृढ़ विश्वास हो गया कि जब तक आर्य-जाति इन पर किये गये अत्याचारों का प्रायश्चित्त नहीं करती उस की उन्नति की आशा दुराशा मात्र है। इसी लिये उस ने विवेक, इतिहास, और धर्म-शास्त्र का सहारा लेकर यह बतलाया कि स्त्रियों के भी कुछ निज अधिकार हैं और उन की रक्षा किये विना किसी समाज का जीवन कण्टक रहित नहीं हो सक्ता। शिक्षा प्राप्त करने के लिये उन का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुषों का। दयानन्द के इसी प्रबल उद्योग का फल है कि आज स्त्री शिक्षा के विरोधी मृत प्रायः बन रहे हैं। पञ्जाब में जहां कहीं भी आर्य-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाज हैं वहां छोटी मोटी कन्या पाठशाला भी अवश्य है। और अब इन का अनुकरण कर के अन्य सोसाइटियें भी कन्या पाठ-शालायें खोल रही हैं। दयानन्द की इस बलवती शिक्षा का प्रभाव केवल पञ्जाब पर ही नहीं वरन सारे भारत पर पड़ा और यह उनकी चलाई प्रतिक्रिया का ही फल है कि आज समस्त भारत में स्त्री शिक्षा के लिये एक बड़ा भारी ज़ज़बा मौजूद है। निस्सन्देह उस ज़ज़बे के और भी कई कारण हैं परन्तु यह एक मुख्य कारण है।

आज कल स्त्री शिक्षा का विरोध नहीं होता, वरन उस का प्रचार किया जाता है हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी उस के पोषक हैं। सभी चाहते हैं कि उन की कन्याओं को शिक्षारूपी अमृत का पान करने का सौभाग्य मिले। उन को क्या पढ़ाया जाये और किस प्रकार पढ़ाया जाये यह अभी अनिश्चित है, पाठ विधि के विषय में शिक्षण सुधारकों में बड़ा भारी मत भेद है। कन्या पाठ-शालाओं की पाठ विधि पर आलोचना करना इस लेख का उद्देश्य नहीं हम केवल यही चाहते हैं कि पाठ विधि चाहे कुछ ही हो उस में विज्ञान की शिक्षा को पूरा २ स्थान दिया जाये। पाठ विधि के अन्य विषयों के सम्बन्ध में चाहे मत भेद हो, परन्तु जहां तक हम समझते हैं—विज्ञान को कन्याओं की शिक्षा का एक अङ्ग बनाने के विषय में कोई विरोध देखा या सुना नहीं गया। यह सत्य है कि विज्ञान के लिये कोई विरोध नहीं परन्तु यह भी मानना पड़ेगा कि अभी तक विज्ञान को शिक्षा का एक मुख्य आवश्यक अङ्ग भी नहीं समझा जाता।

प्रथम इसके कि हम इस विषय पर विचार करें कि विज्ञान की शिक्षा देना क्यों आवश्यक है हमें यह जानना चाहिये कि विज्ञान है क्या? इस शब्द के संस्कृत में जो अर्थ हैं उस पर विचार न करके केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि आजकल यह अंग्रेजी भाषा के (Science) शब्द के पर्यायवाची अर्थों के प्रयोग में लाया जाता है। सजीव और निर्जीव प्रकृति किस प्रकार अपना कार्य करता है, किन नियमों के आधीन यह संसार चल रहा और किस प्रकार उन नियमों के ज्ञान द्वारा संसार में सुख की मात्रा बढ़ाई जा सक्ती है इन्हीं के वास्तविक ज्ञान और उसकी खोज का नाम ही विज्ञान है। अपने सुभीते के लिये हम विज्ञान को दो भागों में विभक्त करते हैं, 'जीव विज्ञान और भौतिक विज्ञान'। सृष्टि के नियम अटल और एक रस हैं, सूर्य्य प्रति दिन प्रातः पूर्व दिशा से उदय होता है। यह सृष्टि का नियम है और इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सक्ता। यह असम्भव है कि सूर्य पूर्व को छोड़कर पश्चिम से उदय होने लगे अथवा ताप के स्थान में शीतलता की वर्षा करने लग पड़े। एक और उदाहरण ली जिये। यदि जल को अग्नि द्वारा गर्म किया जाय तो वह भाफ बनकर उठ जाता है यदि इस वाक्य को रोका जाय तो यह बल पूर्वक निकलने का यत्न करती है और हम भाफ के इस बलको अपने काम में लासक्ते हैं। अग्नि द्वारा जलके भाफ बनने का जो नियम है हम उसे किसी प्रकार भी बदल नहीं सक्ते। यह नियम सदा एक सा रहा है और रहेगा मनुष्य का बालक मनुष्य ही होगा, कुत्ता, बिल्ली अथवा अन्य कुछ नहीं। इस सृष्टि नियमों की अटलता संसार का मुख्य स्वभाव है। इन नियमों की सत्यता में किसी को सन्देह नहीं हो सक्ता। इस सत्य की खोज ही विज्ञान की देवी के पुजारी का एक मात्र कर्तव्य है। कि-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गस्ले के शब्दों में "प्रकृति असत्य वादिनी नहीं, विज्ञान द्वारा जाने हुए संसार के नियमों में कोई खटपटी नहीं। सत्य की खोज और सत्य की रक्षा के लिये एक वैज्ञानिक अपना सर्वस्व अर्पण करने को तैय्यार है।"

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मी समाऽवशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥
अद्यैव वा मरण मंस्तु युगान्तरे वा।
न्यायात्पथा प्रवचलन्ति पदं न धीरा ॥

इस श्लोक में धीर पुरुष के सब लक्षण एक वैज्ञानिक में घटते हैं। वह सत्य का उपासक और सत्य का प्रेमी किसी भी प्रलोभन से सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होता। कोई भी मैनका विश्वामित्र के हृदय को चलायमान नहीं कर सक्ती। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि विज्ञान में रत मनुष्य कभी कोई गलती नहीं करता। अशुद्धि करना मनुष्य का साधारण स्वभाव है। प्रश्न यह है कि एक वार असत्य को सत्य जानकर क्या फिर भी वह उस छोड़ने को तैय्यार रहता है या नहीं? एक लेखक ने क्या ही सुन्दर शब्दों में एक वैज्ञानिक के हृदय के भाव प्रगट किये हैं।

"यदि परमात्मा अपने दायें हाथ में 'सर्व्वतम सत्य' को ले और बांये हाथ में सत्य की ओर सदा जाने वाली महती आकांक्षा को लेकर-चाहे उसके साथ यह शर्त लगी हो कि मैं सदा गल्ती करता रहूंगा-कहे कि "इन दोनों में से चुनलो" तो मैं दीनता से उसके बायें हाथ के आगे सिर झुका दूंगा और कहूंगा कि "प्रभु यही दीजिये क्योंकि अभिमिश्रित सत्य केवल आपके लिये ही है"।

बस यह सत्य की खोज ही विज्ञान है। इस अवस्था में कौन ऐसा धीर होगा जो यह कहने का साहस रखता है कि सत्य प्रेम बालकों के लिये आवश्यक है परन्तु बालिकाओं के लिये नहीं। यदि कन्याओं को लड़कों की भांति जल, वायु, अन्न इत्यादि की आवश्यक्ता है तो उनकी भांति सत्य के वायु मण्डल में विचरना भी उनके लिये वैसा ही अनिवार्य्य है। यह ठीक है कि प्रत्येक बालक और बालिका वैज्ञानिक नहीं बनसक्ते और न शिक्षा का यह उद्देश्य है परन्तु प्रत्येक बालक और बालिका के कोमल हृदय पर विज्ञान की रीति (Method) का प्रभाव डालना परम आवश्यक है। किन तरीकों से सत्य की खोज की जाती है और किन उपायों द्वारा सत्य तक पहुंचा जाता है इनकी शिक्षा बालक के विकसित होते हुए हृदय के लिये सदैव लाभदायक होगी, विशेष कर हमारी लड़कियों की अवस्था में कई कारणों से यह अधिक हितकर सिद्ध होगी।

(१) पौराणिक कहानियें चाहे कितनी ही मनोहर हों और चाहें उन्हें कितने ही सुन्दर दृष्टान्त के रूप में वर्णन किया गया हो परन्तु यह निर्विवाद है कि एक बालक के मस्तिष्क में उनके वास्तविक रूप में समझने की शक्ति नहीं। वह उनके सदैव सीधे शब्दार्थ (Literal) करेगा। अपनी नानी और दादियों से कथा सुनने की रुचि प्रायः संसार की प्रत्येक जाति के बालक में पाई जाती है। जहां लड़के अपने गृहों की चार दीवारी से बाहर निकल कर संसार का अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेने के कारण उने पहिले पड़े हुए "मिथ्या" संस्कारों को मिटा सक्ते हैं वहां लड़कियों के लिये यह सुविधा नहीं। यही कारण है कि युवती और वृद्धा हो जाने पर भी उनका ज्ञान उसी प्रकार भ्रममूलक बना रहता है जैसा कि बचपन में होता था। पृथिवी शेषनाग के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिर पर ठहरी हुई है; रावण के दस शीश थे; राक्षसों के सिर में सींग होते थे, गंगा शिवजी के सिर पर उतरी थी; चेचक एक राक्षसी देवी है जो कि विशेष पूजा और जादू टोने द्वारा प्रसन्न की जा सक्ती है; समुद्र मथन, इत्यादि घटनाओं को हमारी मातायें और बहिनें अक्षर २ सत्य मानती हैं और इसका मुख्य कारण उनकी धर्म में असीम श्रद्धा और बचपन में धर्म कथाओं के रूप में इन घटनाओं का श्रवण ही है। यदि छोटी आयु से ही उन्हें विज्ञान की शिक्षा दी जाय और प्रत्येक घटना के वास्तविक कारण जानने पर बल दिया जाय तो उनके मन की अवस्था ऐसी हो जायगी कि वे प्रत्येक घटना के स्वाभाविक कारण को जानने के लिये उत्सुक रहेंगी और उनके मनको चैन न पड़ेगा जब तक कि वे वास्तविक कारण न पालें। जब उनको पाठशाला में तजरुबा करके दिखला दिया जाय कि अग्नि का गुण गर्मी पहुंचाना है और यह एक प्राकृतिक नियम है जिसके विरुद्ध प्रकृति कदापि नहीं चलती तब जब कभी भी उनको इसके विरुद्ध कोई कथा सुनाई जायगी उनका मन उसकी सत्यता को अस्वीकार कर देगा। वे ऊट पटांग मनघड़न्त बातों को सत्य मानने में संकोच करने लगेंगी। उनका मन भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी के भ्रममूलक सिद्धान्तों से स्वयं हट जायगा और प्रकृति को वास्तविक रूप में देखने लग पड़ेगा।

(२) इसका यह स्वाभाविक परिणाम होगा कि उनकी सृष्टि एक नियम में बन्धी हुई दिखाई देगी। यह नियम जिसमें कि समस्त संसार ओत प्रोत है एक वास्तविक स्वरूप धारण कर लेगा। नियम का होना नियन्ता को साक्षात् कराने में सहायता देगा। न्यून से न्यून इतना तो अवश्य होगा कि परमात्मा सम्बन्धी जो भिन्न और एक दूसरे के विरोधी विचार फैले हुए हैं उन सबको एकसा प्रमाणिक और सत्य पर निर्भर मानने में संकोच होगा। इससे विवेक की शक्ति बढ़ेगी और प्रत्येक सांसारिक कार्य में बुद्धि, विवेक, मनन इत्यादि मानसिक शक्तियों का प्रयोग करने का अभ्यास होगा।

(३) अपने निज हाथों द्वारा परीक्षा करने और स्वयं सोच कर कार्य को कारण से जोड़ने से जो शिक्षा मिलेगी वह गृह कार्यों को उत्तमता से पूरा करने में सहायक होगी। उत्तम भोजन स्वच्छ वस्त्र, शुद्ध आचार का मनुष्य के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, शरीर में जाकर भोजन किस प्रकार हज़म होता है, किस प्रकार उसका रुधिर बनता है, उसमें से क्या २ वस्तु मल मूत्र द्वारा शरीर बाहर फेंकता है; भिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों में शारीरिक [Metabolic] क्रिया के लिये भिन्न २ आवश्यक रासायनिक अंग किस २ परिमाण और किस रूप में विद्यमान हैं, यदि किसी एक वस्तु विशेष में उनकी कमी है तो तो वह कौनसी दूसरी वस्तु मिलाने से पूरी हो सक्ती है, इन पदार्थों को अग्नि द्वारा पकाने से इनमें क्या २ परिवर्तन होते हैं, धीमी आंच का क्या प्रभाव पड़ता है और तेज़ का क्या; दूध को गरम करके क्यों पीना चाहिये और कितना गर्म करना चाहिये; भिन्न २ पशुओं के दूध में क्या २ भेद है इत्यादि २ बातों का ज्ञान प्रत्येक स्त्री को होना आवश्यक है और यदि हमारी कन्याओं को इनका ज्ञान विज्ञान के आधार पर दिया जाय तो वे पाक विद्या में कितनी निपुण हो सक्ती हैं यह स्वयं सिद्ध है। स्नान करना क्यों आवश्यक है, त्वचा के छिद्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बन्द हो जाने से शारीरिक क्रियाओं में क्या भेद हो जाता है और उनका स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है इत्यादि बातों का ठीक २ ज्ञान होने से वे शुद्धता और स्वच्छता के वास्तविक स्वरूप को समझ कर जहां वे उदाहरण के लिये-संयुक्त प्रान्त की छूतछात और चौके इत्यादि के व्यर्थ बखेड़ों से बच सकेंगी वहां पंजाबी गृहों की हानिकारक स्वच्छता से अनमने पन से पैदा होने वाली हानियों को भी रोक सकेंगी।

ऊपर हमने संक्षेप से यह बतलाने का प्रयत्न किया कि किस प्रकार बाल्यकाल में दी हुई विज्ञान की शिक्षा हमारी कन्याओं को सुगृहिणी और सुमाता बनने में सहायता दे सकती है, किस प्रकार वे उनके द्वारा जाति की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति में सहायक बन सकती हैं। अब दूसरा प्रश्न यह है कि इस शिक्षा को किस प्रकार हमारी कन्या पाठशालाओं की पाठ-विधि में समावेश किया जा सकता है। विज्ञान का समुद्र महान है उसकी थाह पाना असम्भव है। अल्पज्ञ मनुष्य और अनन्त ब्रह्माण्ड। एक जन्म क्या यदि हम अनेक जन्म भी इसकी खोज में लगादें पर्याप्त न होंगे। यूरुप के प्रसिद्ध फिलासफर सैनिके (Seneca) का कथन है "कि प्रकृति अपने मन्दिर के गुप्त रहस्यों को एक बार ही खोजने की हमें आज्ञा नहीं देती। हम समझते हैं कि हम भीतर पहुंच गये हैं, परन्तु वास्तव में हम अभी दहलीज पर ही हैं। जिस प्रकार एक पर्वत शृंखला की चोटी पर पहुंचने से ज्ञात होता है कि अभी अनेक शृंखलायें और हैं इसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक नियम को जानने पर पता लगता है कि अभी तो हमने आरम्भ ही किया है"।

"हम जानते थे कि इल्म से कुछ जानेंगे,
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी"॥

सो यह तो हो नहीं सक्ता कि हमें कन्याओं को 'वैज्ञानिक' बनाना है। जिस व्यक्ति विशेष में यह शक्ति होगी वह स्वयं वैज्ञानिक बन जायगा उसके रास्ते में रुकावट डालने का किसी का अधिकार नहीं। हमारा प्रयोजन केवल इतना होना चाहिये कि पाठशालाओं में कन्याओं को क्रमबद्ध प्राकृतिक विज्ञान और जीवविज्ञान की प्रारम्भिक शिक्षा अवश्य मिले। हमारे विचार में पांचवी श्रेणी से आरम्भ करके रसायन शास्त्र, भौतिकी, वृक्षशास्त्र तथा जीव-शास्त्र के परीक्षणों द्वारा मुख्य २ सिद्धान्त बताये जायें और समझाने के लिये उदाहरण और परीक्षण ऐसे हों जिनको कि कन्यायें अपने घरों पर साधारणतया देखती हैं। पाक-शाला से रसायन शास्त्र और भौतिक विज्ञान सम्बन्धी कितने ही परीक्षण बड़ी सुगमता से मिल सके हैं। प्रारम्भिक वृक्ष शास्त्र (Botany) का ज्ञान भी होना परम आवश्यक है। फिर शरीर रचना (Physiology) का कुछ २ ज्ञान देना चाहिये। पन्द्रह वर्ष की आयु के पश्चात् प्रसूति शास्त्र का ज्ञान देना आरम्भ होना चाहिये। यह सत्य है कि आजकल ऊपर दी हुई वैज्ञानिक शिक्षा के लिये क्रमबद्ध पुस्तकें नहीं। परन्तु इनको बनाना पड़ेगा। स्त्री शिक्षा के कितने ही विज्ञान से हित रखने वाले और विज्ञान का ज्ञान रखने वाले सज्जन हैं। यदि वे मिल कर और सोच विचार कर इस कमी को पूरा करना चाहें तो कठिन न होगा। आज कल जब कि कन्याओं के लिये विशेष विश्व-विद्यालय बनाने का प्रश्न बड़े जोरों पर है, हम इन संस्थाओं के संचालकों से बड़े जोर से अपील करेंगे कि कन्याओं की वैज्ञानिक शिक्षा के महत्वपूर्ण प्रश्न को यूं ही न छोड़ दें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतिवाद।

ले०—"किरीट"

नभ से नील कमल यह बोला,
"है रहस्य कुछ तुम को ज्ञात?।
मुझ से आभा निकल बनाती,
है नीला समस्त तव गात"॥
बोला गगन—"किन्तु जब करती,
निशा कालिमा तुम्हें अदृश्य।
तब भी मेरा यह नीलापन,
रह जाता है कैसे दृश्य?"॥
भारत ने यह कहा 'ब्रिटेन' से,
सुन कर यह अद्भुत संवाद।
तुम ने भी तो सदा किया है,
नील कमल के सदृश प्रमाद॥
कहते हो 'भारत को मैंने,
सभ्य किया देकर विज्ञान'।
पर मैं कितना ज्ञानवान था,
जब तुम थे हबशी अज्ञान॥
तब मैं समझ चुका था जितना,
नहीं समझते तुम अब भी।
मेरे गुरु बनने का गौरव,
मूढ़, चाहते हो तब भी!!॥

हमारी मञ्जूषा।

प्रताप पुस्तकमाला की कुछ एक पुस्तकों की समालोचना हम पहिले दे चुके हैं शेष की यहां देते हैं:—

त्रिशूल तरंग—प्रकाशक श्रीयुत शिवनारायण मिश्र वैद्य पृष्ठ ११२ मूल्य ॥)। प्रताप में महाशय त्रिशूल की भावपूर्ण और धार्मिक कवितायें छपती रही थीं। यह उन्हीं ओजस्विनी कविताओं का संग्रह है। कवितायें राजनैतिक और देश-भक्ति से पूर हैं। भाषा हिन्दी और उर्दू मिश्रित सरल और साफ है।

चेतसिंह और काशी का विद्रोह—प्रताप पुस्तक माला की तेरहवीं पुस्तक, पृष्ठ सं० ८१ मूल्य ।=)

इस पुस्तक को पढ़कर बाल्यकाल में पढ़ी हुई भारत इतिहास सम्बन्धी एक घटना का पुनः स्मरण हो आता है। परन्तु इस के पढ़ने से जो मन पर प्रभाव पड़ता है वह उस पहिले प्रभाव से कहीं भिन्न है। स्कूलों में बालकों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती कि वे सत्य असत्य की जांच कर सकें और हमारी ऐतिहासिक पुस्तकें भी विदेशियों द्वारा लिखित होने के कारण एक विशेष रंग में रंगी होती हैं। हम समझते हैं कि इस प्रकार की विवेचनात्मक पुस्तकें हमारे युवक और युवतियों को अवश्य पढ़नी चाहियें।

पुस्तक में वारनहेस्टिंग्ज़ गवर्नर जनरल और चेतसिंह महाराजा बनारस के झगड़े का पूरा २ वर्णन किया गया है। लेखक ने दोनों पक्ष बड़ी उत्तमता से सामने रखे हैं। इस विवरण को पढ़कर यह मानना पड़ता है कि वारनहेस्टिंग्ज ने अन्याय किया। पुस्तक रोचक तथा पठनीय है यद्यपि इस के पाठ से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक भारतीय हृदय को दुख अवश्य होता है।

साम्यवाद—लेखक एक ग्रेजुएट, पृष्ठ संख्या ८५ मूल्य ।=)। आजकल शिक्षित समाज में साम्यवाद की खूब चर्चा है। इस छोटी सी पुस्तक में साम्यवाद क्या है, इस की कब और किस प्रकार उत्पत्ति हुई, किस प्रकार इस का विकास हुआ और आजकल भिन्न भिन्न देशों में इस की क्या स्थिति है इन्हीं बातों का वर्णन है। एक अध्याय में साम्यवादियों के मुख्य २ महापुरुषों का संक्षिप्त जीवन, उनके विचार और उनके कार्य्यों का भी वर्णन किया गया है। अपने विषय की यह एक प्रारम्भिक पुस्तक है।

रूस की राज्य-क्रान्ति—लेखक श्रीयुत रमा शंकर अवस्थी, सहकारी सम्पादक प्रताप, पृष्ठ संख्या २३१, रेशमी कपड़े की सुन्दर जिल्द और २३ चित्रों से सुभूषित पुस्तक।

इस पुस्तक को छाप कर व्यवस्थापक प्रताप पुस्तकालय ने बड़ा परोपकार किया है। दीन हीन दुखित अत्याचार पीड़ित और अन्यायों द्वारा पददलित रूस की राज-क्रान्ति इस शताब्दी की सब से बड़ी घटना है। अपने महत्त्व के कारण यह घटना साथ साथ होने वाले महायुद्ध से कहीं गुरुतर और महान है। वर्तमान समय के इतिहास में यह निर्विवाद है कि रूस की राज्य-क्रान्ति ने समस्त संसार के विचार प्रवाह को जितना हिलाया और एक विशेष रीति और मार्ग पर चलने के लिये बाधित किया है उतना और किसी घटना ने नहीं। जहां महायुद्ध द्वारा प्राप्त शान्ति अशान्ति का एक मुख्य केन्द्र बनी हुई है वहां यह क्रान्ति संसार की पीड़ित और पराधीन जातियों के लिये उत्साह और आशा का स्वप्न दिखलाती है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने विवेचनात्मक दृष्टि से रूस देश के निवासियों के रहन सहन के ढंग, उनकी शासन पद्धति और उसके दुष्परिणाम बड़ी सरल रीति से दर्शाये हैं। राजनैतिक असन्तोष क्यों और कैसे फैला और उस ने क्या २ रूप धारण किये, क्रान्ति के जन्म के तत्कालीन क्या कारण थे और क्या घटनायें इस की सहायक हुईं, क्रान्ति की सफलता इत्यादि बड़ी सुन्दरता से वर्णन की गयी हैं। क्रान्ति का महत्व, उसका प्रसार और सफलता के पश्चात् क्रान्ति के नेताओं ने किस प्रकार अपने साम्यवाद विचारों को प्रजा सुख के हेतु शासन द्वारा क्रिया में लाने का यत्न किया, उस से रूस में क्या प्रभाव पड़ा और प्रजा ने उसका किस प्रकार स्वागत किया—इत्यादि विषयों का बड़ा रोचक विवरण पुस्तक में मिलता है।

पुस्तक संग्रहणीय है और हम लेखक को ऐसी उत्तम पुस्तक लिखने पर बधाई देते हैं।

फ़िजी में मेरे २१ वर्ष—लेखक श्रीयुत तोताराम सनाढ्य प्रकाशक श्री शिवनारायण मिश्र प्रताप कार्यालय कानपुर, पृष्ठ १२ मूल्य॥)

इस पुस्तक की उपयोगता और जनप्रियता इसी से जानी जा सक्ती है कि इसका यह तीसरा संस्करण है। उपनिवेशोंमें भारतीय जनता की दशा से कुछ भी परिचय रखने वाले श्रीयुत तोताराम जी के नाम से अपरिचित न होंगे। यह कहना अत्योक्ति न होगा कि यह इन्हीं के उत्साह और परिश्रम का फल है कि आज हमारा ध्यान विदेशस्थित अपने पीड़ित भाई बहिनों की ओर जा रहा है। जहां तक हम समझते हैं यह पुस्तक उस विषय की पहिली पुस्तक है और जिस मार्मिक और रोमाञ्चक भाषा में लेखक ने भारतीयों को फिजी में दीन दशा, उनके मनुष्यत्व पर पाश्विक आघात, उनकी बहिनों और स्त्रियों पर किये गये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पैशाचिक अत्याचार इत्यादि विषयों में निर्भीक और कठोर आलोचना की है यह इसी का फल है कि हमारे नेताओं का इस ओर ध्यान गया और उन्हें फ़िजी सरकार के इस अमानुषी व्यवहार के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठानी पड़ी यह पुस्तक फ़िज़ी द्वीप का संक्षिप्त वर्णन, वहां के आदिम निवासियों की अवस्था, वहां के अंग्रेज़ शासकों के कारनामे, गन्ने के खेतों के मालकों की राक्षसी प्रकृति, हमारे भारतीयों का वहां पर सामाजिक, राजनैतिक, तथा शिक्षा सम्बन्धी इत्यादि दशा का जीता जागता फोटो है।

——०——

चित्रशाला प्रेस, पूना से हमें दो चित्र प्राप्त हुये हैं। पहला चित्र महात्मा गान्धी का है। चित्र रंगीन बढ़िया और मोटे कागज़ पर बना है। उसका आकार १५×३० इन्च और मूल्य केवल ॥) है। महात्मा जी आज कल अपना फोटो नहीं उतारने देते इसी कारण यह तस्वीर उनके युवा अवस्था के फोटो पर से बनाई गयी है। सिर पर खद्दर की टोपी है। तस्वीर बहुत उत्तम बनी है और सर्वथा इस योग्य है कि भारत वासियों के घरों की शोभा को बढ़ा सके। दूसरा चित्र असहयोग के मुसलमान नेताओं अर्थात अली बन्धुओं का है। इसका आकार १०×१४ है और मूल्य केवल एक आना। यह चित्र हाफटोन ब्लाक से नीले रंग में तय्यार किया गया है; चारों ओर पीला सुन्दर बेल बूटे का हाशिया है। तस्वीर बहुत साफ़ और सुन्दर बनी है।

हमारे सहयोगी।

चैतन्य-चन्द्रिका—पिछले सात मास से नियम पूर्वक श्री कृष्ण चैतन्य गोस्वामी के सम्पादकत्व में नियम पूर्वक पटना नगर से प्रकाशित हो रही है। फाल्गुण का अंक हमें प्राप्त भी है। इस में छोटे बड़े सब २३ लेख हैं और ७ चित्र हैं। आरम्भ का शची-नन्दन श्री गौर सुन्दर का चित्र खूब बढ़िया बना है। माता की गोद में छोटा बालक बड़ा ही लुभायमान लगता है। चेहरे की मन्द मुस्कान माता के हार्दिक आनन्द को चित्ताकर्षक रूप में प्रगट करता है। दूसरा दुष्यन्त और शकुन्तला का रंगीन चित्र भी बहुत अच्छा बना है। इस अंक में कितने ही सुपाठ्य लेख और कवितायें हैं, विशेष कर श्रीयुत कन्नोमल जी का "दार्शनिक विचारों के तारतम्य", श्री पूर्णेन्दु नारायणसिंह जी का "चैतन्यदेव और राष्ट्रीयता" और श्री नागार्जुन कौषाम का "साहित्य और राष्ट्र निमार्ण" पर बड़े उत्तम लख हैं। हिन्दी साहित्य की वृद्धि के लिये श्रीकृष्ण गोस्वामी जी का उद्योग सराहनीय है। परमात्मा करे हमारा सहयोगी दिनों दिन उन्नति करे॥

श्री शारदा—जबलपुर से प्रकाशित होने वाली श्री शारदा के जीवन का दूसरा वर्ष आरम्भ होने पर हम हार्दिक बधाई देते हैं। इस एक वर्ष में श्री शारदा ने अपने लेखों की उत्तमत्ता और चित्रों की सुन्दरता से अपने लिये हिन्दी प्रेमियों के हृदय में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। इसके लेख गवेषणापूर्ण, मनोरञ्जक तथा मौलिकता का आश्रय लिये होते हैं। मध्यभारत में हिन्दी प्रचार तथा देश सुधार में श्री शारदा बड़ा उत्तम कार्य्य कर रही है।

संसार—यह राजनतिक मासिक पत्र प्रायः १ साल से कानपुर से प्रतिमास प्रकाशित होता है। लेख भावपूर्ण और सामायिक विषयों पर होते हैं। प्रत्येक अंक में एक चित्र भी रहता है। पत्र होनहार और हिन्दी पाठकों के अपनाने योग्य है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

इंग्लैण्ड में स्त्रियों के कार्य।

एक अंग्रेज़ देवी का कथन है कि "श्रमजीवी दल के कुशल पुरुषों के अनुमान के अनुकूल विलायत में इस समय ५०००,००० स्त्रियां औद्योगिक धंधों में लगी हुई हैं और विचारणीय विषय यह है कि गत ६० वर्षों में उद्योग धंधों में लगी हुई स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से बहुत बढ़ चढ़ कर है। साप्ताहिक मजदूरी जो इन्हें मिलती है वह सात शिलिङ्ग है। पसीना बहा करने योग्य काम का $\frac{2}{3}$ भाग इस देश में स्त्रियां कर रही हैं। स्त्रियों का जीवन-रक्त जो कि सन्तान रक्षा द्वारा जाति को मिलना चाहिये वह हमारे सिले सिलाये कपड़े तैय्यार करने में, मलमलों को धोने व इस्तरी करने में, लेस और क़सीदा बनाने में, परों, फूलों और नकली सम्बूर बनाने में जिन से हम अन्य स्त्रियें अपने शरीर को सजाती हैं, नकली खुराक तैय्यार करन, दियासलाई की डब्बियों और पिन की डब्बियों पर कागज़ चिपकाने, हमारे सामान और चटाइयां तैय्यार करने इत्यादि कामों में खर्च हो रहा है। अब प्रश्न यह नहीं है कि क्या हमारी स्त्रियें इन कामों के योग्य हैं? किन्तु प्रश्न यह है कि क्या इंग्लैण्ड में श्रमदल की अवस्था पुरुषों या स्त्रियों के योग्य भी है?"

उपरोक्त वाक्य से पता लगता है कि विलासिता की प्रायः प्रत्येक वस्तु स्त्रियों के खून से तैय्यार हो रही है और स्त्रियां ही अधिकांश में उन्हें बर्तती हैं। यदि स्त्री जाति को अपनी विलासप्रियता की हानि किसी प्रकार समझाई जा सके तो पाश्चात्य देशों में औद्योगिक धन्धों में लगी हुई जीवन संघर्ष के मलिन, पवित्रता के नाशक वायु में पलने वाली स्त्रियों की दशा बहुत शीघ्र सुधर सक्ती है। अतः पूर्वीय और पाश्चात्य सभी देशों में स्त्रियों की उचित शिक्षा और आचार व्यवहार के ज्ञान की वृद्धि के उपाय शीघ्र होने चाहिये। स्त्रियों की दशा अन्य किसी प्रकार के उपायों से सुधर नहीं सक्ती।

एल्बर फैल्ड के अद्भुत घोड़े

[Elberfeld Horses]

बार्लिन में बीस पच्चीस वर्ष हुए एक विलियम वान आस्टन नामक मनुष्य था। उसे मनुष्यों से घृणा थी किन्तु वह बड़े विचित्र मनमाने काम करता था। उसने अपनी कुछ थोड़ी जायदाद पशुओं की ज्ञान वृद्धि करने में लगा दी थी। उस ने घोड़ों को शिक्षा देना प्रारम्भ किया किन्तु उस का कुछ निश्चित परिणाम न निकला। सन् १९०० में वह एक रूसी घोड़े चतुर हन्स नामक का स्वामी बना और अपने दिव्य धैर्य्य द्वारा उस घोड़े की शीघ्र ही आश्चर्य्यमयी उन्नति कर दिखाई। पहिले उसे दायें, बायें, ऊपर, नीचे इत्यादि साधारण बातों का ज्ञान सिखा कर उसे गणित का ज्ञान सिखाने लगा। एक मेज़ पर पहिले एक दो फिर कई छोटी गोलियां रक्खीं और हन्स को लाकर उस के पास झुक कर गोलियों की संख्या का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उच्चारण कर कर के उस के खुरों द्वारा भी उतनी वार खट खट करवाई। थोड़े दिनों बाद गोलियों के स्थान में काले तख्ते पर संख्या लिख कर वैसे ही करता रहा जिस का परिणाम बड़ा विचित्र हुआ। घोड़े ने केवल गिनना ही नहीं सीखा वरन अपने आप संख्या निकालना और छोटे २ प्रश्न करना भी सीख लिया। लेकिन हन्स केवल सवाल ही नहीं जानता था अन्य कई बातें भी उसे मालूम थीं वह पढ़ सक्ता था, वह बाजा भी जानता था। उस की स्मरणशक्ति बड़ी विचित्र थी, वह प्रति सताह के प्रत्यक दिन की तारीख़ बता देता था। सारांश यह कि चौदह वर्ष के स्कूल जाने वाले लड़के को जो कुछ ज्ञान होता है उतना उसे भी था।

जब इस बात की खबर लोगों को लगी तो दर्शकों के झुण्ड वहां पहुंचने लगे समाचार-पत्रों में यह बात आई और इस विचित्र दृश्य में विश्वास और अविश्वास रखने वाले दोनों दलों में झगड़ा होने लगा। १९०४ में मनो विज्ञान के तथा शारीरिक ज्ञान के प्रोफ़ेसरों जूओलाजिकल बाग़ के अधिष्ठाता, सर्कस के मैनेजर, जानवरों के अस्पताल के डाक्टरों, अश्वारोही सेनापतियों की एक कमेटी बैठी। उसने कोई धूर्तता न पाई परन्तु किसी ने व्याख्या भी देने का साहस न किया। इसके बाद जर्मनी के बड़े मनोवैज्ञानिकों की एक दूसरी कमेटी हुई। उसने बड़ा लम्बा चौड़ा विवरण निकाला और यह सिद्ध किया कि घोड़े को कोई ज्ञान न था न उसे संख्या या अक्षर ही आते थे और न उसे बूझना व गिनना ही आता था। किन्तु वह अपने स्वामी के अदृश्य सूक्ष्म तथा अजान में किये हुये इशारों की पालना करता था। विचारे वान आस्टन ने अपने तजुर्बे की सत्यता के विषय में बहुत कुछ कहा परन्तु किसी ने न सुना निदान इसी शोक में उसका ७१ वर्ष की आयु १९०९ में स्वर्गवास हो गया।

मरते समय उसने अपने एक धनाढ्य शिष्य—काल नामक व्यक्ति—जिस पर उसका बहुत विश्वास था, जिसने पिछले दिनों में वान आस्टन की बातों में बड़ी दिलचस्पी दिखलाई थी और घोड़े की शिक्षा में भाग भी लिया था—को बसीयत द्वारा वह घोड़ा दे दिया। क्रान्त ने स्वयं भी मुहम्मद और ज़रीफ़ नाम के दो अरबी घोड़े और खरीदे। इनकी शक्ति हन्स से भी बढ़कर निकली और पुनः सनसनी फैली। क्रान्त अपने घोड़ों के साथ बड़ी देरतक प्रेम से बातें करता और उन्हें प्रत्येक सिद्धान्त और व्याख्या को बार २ समझाता था चाहे उस दसबार क्यों न करना पड़े। निदान १५ दिन के बाद मुहम्मद ने जोड़ बाकी शुद्ध तरह से करना सीख लिया उसने इकाई दहाई भी सीख ली, धन और ऋण के चिन्हों को भी समझ लिया। चार दिन के बाद उसने गुणा और भाग भी शुरू कर दिया। चार महीने के अन्तर में उसने वर्ग मूल और घनमूल निकालना सीखा और शीघ्र ही क्राल के बनाये नियम के अनुकूल पढ़ना भी सीख लिया।

ज़रीफ़ का ज्ञान भी उसी प्रकार था लेकिन उच्च गणित में मुहम्मद से कम था। इस प्रकार मुहम्मद और ज़रीफ़ दोनों उनके सामने बोले हुये शब्दों को बता देते थे, अपने दर्शकों के नाम के हिज्जे करदेते थे, जो प्रश्न उनसे पूंछे जाते थे उनका ठीक २ उत्तर दे देते थे और कभी २ अपने आप आलोचना तथा आक्षेप भी कर दिया करते थे। ये केवल प्रथम श्रेणी के गणितज्ञ ही नहीं थे-क्योंकि वे कठिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से कठिन भिन्न और मूल निकालने में सिद्ध-हस्त थे-किन्तु उन्हें शब्द भेद रंगभेद तथा गन्ध भेद भी मालूम था। वे घड़ी में समय देखकर बतादेते थे, रेखा गणित की शकलें पहिचानते थे और चित्रों को भी पहिचानते थे।

वैज्ञानिकों की कमेटी पर कमेटी बैठनी शुरू हुई और उन्होंने परिणाम निकाला कि यह कार्य्य बड़े निष्कपटता से किया गया है और यह मनोविज्ञान में बड़ी सनसनी फैलाने वाली घटना है जिसकी व्याख्या करना कठिन है। मैटर लिंक, जिसकी पुस्तक में यह वर्णन आता है, कहता है कि केवल घोड़े ही नहीं अन्य जानवर भी पाये गये हैं जिनके सम्बन्ध में ऐसी ही आश्चर्य्यमयी घटनायें देखी गई हैं। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के पास इसके स्पष्ट करने का कोई साधन अब तक नहीं मिला। हमारे शास्त्रों के अनुकूल तो यह बात बिलकुल साधारण बन जाती है क्योंकि जो पुनर्जन्म को मानने वाले हैं वे बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि जो प्राणी जैसे कर्म करता है तदनुकूल ही जन्म पाता है। यदि कोई बड़ा विद्वान हो किन्तु उसके कर्म पाशविक हों तो मरने के पश्चात् वह उन्हीं संस्कारों को लेकर पुनः पैदा होगा उसकी योनि पशु होगी किन्तु ज्ञान रहेगा। पौराणिक गाथाओं में कइयों में शुक काग भुशुण्ड इत्यादि के रूप में यह बात प्रत्यक्ष रूप से वर्णित हैं।

योरूप के विद्वान पहिले तो पुनर्जन्म को नहीं मानते थे लेकिन ऐसी २ घटनाओं को देखकर उनके दिलों में सन्देह होने लग पड़ा है और कई लोग पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार करने लगे हैं।

पाश्चात्य धीरे २ पूर्व की ओर आ रहा है। अब ऐसा समय आने वाला ही है जब कि वैदिक सभी सिद्धान्त पाश्चात्य दार्शनिकों को खींच कर वैदिक धर्म की ओर लावेंगे और वैदिक धर्म दिग्विजयी होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

लार्ड रेडिंग की नीति।

शिमला म्युनिस्पैलिटी के अभिनंदनपत्र का उत्तर देते हुए नये वाईसराय महोदय ने एक महत्त्वपूर्ण वक्तृता की। उस में आप ने कहा कि महात्मा गांधी के कतिपय अनुयाई उन के स्पष्ट आदेश के विरुद्ध फ़साद और झगड़ा करने से टलते नहीं। आप ने यह भी कहा कि कोई भी शासकमण्डल ऐसी क्रियाओं को रोके विना अपने कार्य को भलीभांति नहीं कर सकता। जो लोग मूढ़ प्रजा को ऐसे नीच कर्म करने के लिये उत्तेजना देते हैं उनके विरुद्ध अभियोगों का चलना भी एक स्वाभाविक बात है। हम वाईसराय महोदय के इस विचार से सहमत हैं कि भारतवासियों को अपने आन्दोलन को हिंसात्मक और द्वेषपूर्ण नहीं बनाना चाहिये। धर्म-युद्ध को आसुरी बनने से बचाना चाहिये। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि जो लोग असहयोग को हिंसात्मक बनावें उन को दण्ड देना भी सरकार का कर्तव्य हो जाता है, किन्तु हम वाईसराय महोदय से एक प्रार्थना अवश्य करेंगे और वह यह कि भारतवर्ष जैसे बड़े देश में आश्चर्य्य की बात यह नहीं है—हम इस बात को इनकार नहीं करते यह लज्जा और दुःख की बात है—कि कभी २ मूर्ख लोग फ़साद कर देते हैं और अदूरदर्शी जुशीले प्रजा को भड़का देते हैं। चमत्कार हम को यह प्रतीत होता है कि ऐसी दुर्घटनायें कितनी थोड़ी होती हैं। आयर्लैण्ड के नेताओं की नीति भी अहिंसात्मक असहयोग की थी किन्तु वहां के नेता लोग हिंसा को रोकने में असमर्थ रहे यद्यपि आयर्लैण्ड भारत की अपेक्षा बहुत छोटा देश है। महात्मा गांधी के लिये यह बड़े अभिमान और गौरव की बात है कि उन्होंने ३२ करोड़ मनुष्यों के हृदयों को इतना प्रभावित और मोहित किया है कि साधारणतया उनकी आज्ञा का निरादर नहीं होता। इस का कारण केवल महात्मा जी का अपूर्व चरित्र और तप ही नहीं है किन्तु साथ ही भारतीय प्रजा की धर्मपरायणता भी है। सफ़ेद चादर पर छोटा सा दाग़ भी बड़ा भद्दा लगता है। इस लिये हम आशा करते हैं कि हमारे देशवासी ऐसे आत्म-संयम का प्रमाण देंगे जिस के कारण कि यूरोप और अमेरिका के राजनैतिक भारतवर्ष को अपना गुरू स्वीकार करेंगे।

लार्ड रेडिंग महाशय ने अपने भाषण में यह भी कहा था कि यदि भारतवासी और अंगरेज़ों में कोई पारस्परिक मतभेद है तो वे परस्पर सहानुभूति से दूर हो सकते हैं। यदि सहानुभूति की पर्याप्तमात्रा भारतीय शासन में होती तो असहयोग की आवश्यकता ही क्यों पड़ती? यदि लार्ड रेडिंग भारतवासियों और अंगरेज़ों की स्थिति में समानता का युग ले आवें तो इतिहास में उन का नाम ब्रिटिश साम्राज्य के सब से बड़े निर्माता के रूप में स्वर्णीय अक्षरों में लिखा जावेगा।

समाचार पत्रों में छपा है कि महात्मा गांधी शिमले गए हैं। क्या हम आशा करें कि भारत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के नेता व ब्रिटिश सामाज्य के प्रतिनिधि का यह मङ्गलमिलाप दोनों जातिओं के हित का कारण बनेगा ? यदि इंगलैण्ड भारत को स्वराज्य दे दे तो वह एक ऐसा मित्र प्राप्त कर लेगा जो उस की रक्षा और सहायता में प्राण तक न्योछावर करने को सदा प्रस्तुत रहेगा।

स्वराज्य के वास्तविक रूप को समझो।

आत्मनिर्णय का अधिकार उसी जाति को है जिस ने अपनी आत्मा की रक्षा की हो। राष्ट्र की आत्मा पूर्व इतिहास और पूर्व गौरव का ही नाम है। जब तक किसी जाति के लोगों में अपने पूर्वजों के तेजोमय कार्य और उन के उच्च चरित्र की स्मृति रहती है तब तक समझना चाहिये कि उस की आत्मा जीवित और जाग्रत है और उस की पराधीनता और परतन्त्रता का युग नश्वर है। यही कारण है कि जब एक जाति दूसरी जाति को अपने आधीन करती है तो वह उस जाति के विजयस्तम्भों और गौरव चिन्हों को प्रजा की दृष्टि से ओझल कर के अपनी शक्ति और अपने महत्त्व के दृश्य उन के समक्ष रख कर उन की कल्पना शक्ति को जकड़ना चाहती है। यह प्रवृत्ति बड़ी २ बातों में भी प्रकाशित होती है और छोटी २ बातों में भी इस की झलक आती है। जब रोमन लोगों ने इङ्गलैण्ड, फ्रांस, स्पेन और अफ्रीका को अपने आधीन किया था तो उन्होंने भी इसी नीति का अवलम्बन किया था। इन देशों की शिक्षा को अपने हाथ में लेकर नव-युवकों के मन में मन से राष्ट्रीय अभिमान को हटा कर उस में रोमन गौरव के अंकुर बो दिये थे। उस का परिणाम यह हुआ कि इन सब जातियों के शिक्षितवर्ग अपने भावों, विचारों, भाषा, वस्त्र, खानपान इत्यादि में रोमन बन गये थे। रोमन नाम उन्होंने अपने रखने आरम्भ किये और रोमन पदों के लिये वे मरते थे। रोमन सर्कार की नौकरी यदि उन को मिल जाती थी तो वे अपना जीवन सफल समझते थे। एक दूसरे के साथ बहिन और भाई, पति और पत्नी इत्यादि पत्र-व्यवहार भी लैटिन भाषा में करने लगे। लैटिन ही शिक्षा का माध्यम बन गया। इस प्रकार जब विजित जातियों की आत्मा ही का लोप हो गया तो फिर उन को आत्मनिर्णय का स्वप्न काहे को आना था। रोमन लोगों की दासता ही उन को प्रिय लगने लगी। इन सोने की बेड़ियों और रेशम की हथकड़ियों को हटाना उन को कठिन सा हो गया।

हमें शोक से देखना पड़ता है कि यही अवस्था भारतवर्ष की हो रही है। भारत-वासियों को भी भारतीय भाषा पसंद नहीं आती। अपने भारतीय नाम को बिगाड़ कर उनको योरोपीयन बनाने में गौरव समझते हैं। पं० श्यामलाल Mr. S. Laul बनना चाहते हैं। दीवान हरिशंकर के मस्तिष्क में Mr. H. S. Devan बनने की धुन समा रहती है। हमारे सड़कों और वाटिकाओं के नाम पतंजली घंटापथ और लीलावती वाटिका नहीं है किन्तु Mayo Road और Curzon Garden है। हमारे कालेजों के नाम Sydnham College और Queen Victoria College। एक बंगाली महाशय ने अपनी लड़की का नाम रिपनबाला रक्खा था। हमारे कुत्तों तक के नाम विलायती हैं। जून के महीने में हम कोट, पतलून, कालर, नकटाई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डासन के बूट डारे फिरते हैं। शुद्ध और स्वच्छ चौके को छोड़ कर दफ्तर की गन्दी मेज़ पर हमें खाना ज्यादा पसंद है। पत्रव्यवहार हम अंगरेजी में करना चाहते हैं। अपनी जननी को माता, भगिनी को बहिन और भार्या को धर्मपत्नी कहते हुए हम लजाते हैं किन्तु Mother, Sister और Wife के शब्द नि:संकोच हमारे मुंह से निकल पड़ते हैं। भारत की आत्मा का ही लोप हो रहा है तो फिर स्वराज्य और आत्मनिर्णय शब्दों के अर्थ ही क्या रहते हैं।

जिन लोगों ने भारतवर्ष में विदेशी शिक्षा प्रणाली चलाई थी वे इस रहस्य को समझते थे जैसा कि निम्न लिखित उदाहरणों से स्पष्ट हो जावेगा।

सन् १८५३ में सर चार्ल्स ट्रैवलन (Sir Charles Trevelyan) ने लिखा है:—

What we are doing is not to enter into an unseemly and irritating conflict with the upholders of this ancient system (Hinduism) but to give an entirely new key to the natives, opening to them a very superior knowledge. The first effect of this introduction to a new system is to destroy entirely the influence of the ancient system upon their minds. In most instances they are never even initiated in it. It is a great truth that the rising generation becomes a whole nation in a few years and that if we desire to make any effectual change in the character of the people we must take them when they are young and train them in the way we should have them go. All of our money will then be well laid out, we shall have no prejudice to contend with; supply minds to deal with; and we shall raise of class of influential intelligent youth who will in the course of a few years become the native propagators of our system with little or no assistance from us.

अर्थात् हम लोग प्राचीन प्रथा के पोषकों के साथ कोई चिड़ाने वाला और असंगत युद्ध नहीं करना चाहते किन्तु भारतवासियों को एक नई कुंजी देना चाहते हैं जिसके द्वारा उनके लिये एक उच्चतम ज्ञान के किवाड़ खुल जावें। इस नई प्रथा के चलाने का पहिला परिणाम यह होगा कि उनके मनों से प्राचीन प्रथा का प्रभाव सर्वथा उठ जावेगा। कई अवस्थाओं में प्राचीन प्रथा में उनका प्रवेश ही नहीं होगा। यह एक बड़ी सचाई है कि नवयुवक थोड़े वर्षों में समग्र जाति बन जाते हैं। यदि हम किसी जाति के चरित्र में चिरस्थाई परिवर्तन करना चाहें तो हमें चाहिये कि उसके नवयुवकों में मानसिक विकास और चरित्र संगठन को अपने हाथ में ले लें और उनको जैसा बनाना चाहते हैं बना लें। इस काम पर जितना भी हमारा रुपया लगेगा वह ठीक लगेगा। कोई स्थिर पक्षपात हमारे बाधक न होंगे। कोमल हृदयों से हमारा वास्ता पड़ेगा और हम तीव्र बुद्धि और प्रभावशाली युवकों की एक ऐसी श्रेणी खड़ी कर देंगे जो थोड़े ही वर्षों में बिना हमारी सहायता के हमारी प्रथा को फैलाने में यत्नवान होते दीखेंगे।

हम यह नहीं कहते कि इस समय भी ब्रिटिश सरकार की यह नीति है। हो सकता है कि ब्रिटिश सरकार यह समझ गई हो कि भारतीय सभ्यता की समाप्ति नहीं हो सकती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और योरोपियन और भारतीय सभ्यता के मेल में ही कल्याण है। हम यह भी नहीं कहते सभी ब्रिटिश शासकों की यह सदा नीति रही है किन्तु हम इतना अवश्य कहेंगे कि मकाले ने भारतवासियों को इस मार्ग पर डाल दिया। उसकी नीयत बुरी न हो किन्तु रास्ता अशुद्ध था। जो बात उसने अपनी दृष्टि में भारत के भले के लिये की थी वह भारत की स्वतन्त्रता में बाधक हो रही है। यदि हम स्वराज्य चाहते हैं तो हमें अपने स्वत्व को स्थिर करना चाहिये; यदि आत्मनिर्णय चाहते हैं तो अपनी सुशुप्त आत्मा को जगाना चाहिये। सच्चा स्वराज्य-वादी वही है जो केवल स्वदेश उत्पन्न मनुष्यों का ही शासन नहीं चाहता किन्तु स्वदेश की भाषा, खानपान प्रणाली, वस्त्र इत्यादि सबका प्रभुत्व फिर से लाना चाहता है। यदि भारतीय स्वराज्य चाहते हो तो भारतीय सभ्यता को पुनर्जीवित करो। अपनी संस्थाओं की फिर से स्थापना करो। अपनी सड़कों, अपने विद्यालयों अपने औषधालयों और अपने संस्थागारों के नाम भारतीय रक्खो। स्मर्ण रक्खो कि मौत का दिन मनाना विदेशी रीति है। कोई नहीं जानता कि कृष्ण और राम किस तारीख को मरे थे किन्तु जन्माष्टमी और कृष्णाष्टमी सभी लोग मनाते हैं। आगे को भी हमें फिर से अपनी जयन्तियां मनानी चाहिये। किसी शुरु अवसर पर और किसी यज्ञ और धर्म कार्य में कोट पतलून वाले महाशय को कोई स्थान नहीं होना चाहिये। ऐसी सहस्रों बातें हैं जिन के किये बिना हम सच्चे भारतीय और भारतीय स्वराज्य के पक्षपाती नहीं बन सकते।

पाश्चिम सभ्यता और स्त्री जाति।

कहा जाता है कि पश्चिमी सभ्यता में स्त्री जाति का स्थान बड़ा उच्च है। यदि स्त्रियों को अलंकृत खिलौना बनाना और यह समझना कि वे इतनी कोमल हैं कि चिक भी नहीं उठा सकतीं और अपने लिये अपनेआप कुर्सी भी नहीं रख सकतीं उनको उच्च स्थान देना है तब तो यह स्थापना ठीक हो सकती है, किन्तु यदि स्त्री जाति के आदर के यह अर्थ हैं कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान आत्मिक व मानसिक क्षेत्र में उन्नति के समान अवसर दिये जावें तो मानना पड़ेगा कि सभ्यता का राग रागनेवाले योरूपियन लोग अभी तक इस अंश में असभ्य ही हैं। प्राचीन भारत में स्त्रियों को सन्यास और उपदेश का पूर्ण अधिकार था। गार्गीय ने ब्रह्मचर्य्य से ही सन्यास ले लिया था। कई स्त्रियां वेद की ऋषिकाएं भी हुई हैं। इंगलैण्ड की (Oxford और Cambridge) ऐसी बड़ी २ यूनीवर्सिटयों ने थोड़े ही दिन हु स्त्रियों को B. A. और M. A. का पद देन स्वीकार किया है। आज से १ वर्ष पूर्व इंगलैण में कोई स्त्री पादरी नहीं बन सकती थी अब भी जिन स्त्रियों को यह अधिकार मिलत है बच्चों और स्त्रियों में ही धर्मोपदेश क सकती हैं और वह भी उस समय जब कि के पुरुष पादरी उपस्थित न हो। अब फ्रांस फैसला हुआ है कि स्त्रियों को पादरी बना जाय किन्तु वे केवल लोगों के घरों में जाक प्रचार करें, पढ़ावें, थोड़े लोगों में व्याख्य दें किन्तु धर्मोपदेश का काम असाधार अवस्थाओं में ही करें। हां, स्विटज़रलैण्ड एक ईसाई सम्प्रदाय ने ५६ सम्मतिओं मुकाबले में ७८ सम्मतिओं से यह अध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री उपयोगी स्त्रियों द्वारालिखित लेखों का संग्रह।

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१—स्त्री जगत्—	५०
२—लहरियादार शिशु गतिका (ले०श्रीमती ओ३म्वती देवी)	५१
३—ग्रह प्रबन्ध	५२
४-पातिव्रत धर्म्म—(ले० श्रीमती केसर कुंवरि देवी)	५५
५-मनुष्य का वास्तविक धन क्या है ?	५७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री जगत् ।

(१) आजकल लगभग सारे मनुष्य अपनी कन्याओं को संस्कृत की शिक्षा दिला रहे हैं और यह जानने के लिये कि हमारी कन्याओं को कितनी संस्कृत की योग्यता है कोई परीक्षा दिलवाते हैं यथा शास्त्री, विशारद, इत्यादि परन्तु जब कांग्रेस ने "असहयोग" का नियम पास किया है तब कन्याओं के असहयोगी पिता अपनी कन्याओं को कौनसी परीक्षाएँ दिलवायें इस विचार में चिन्तित थे परन्तु अब पञ्जाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की शिक्षा सम्मति ने उन की चिन्ता को दूर करने का यत्न किया है। इस पञ्जाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की शिक्षा सम्मति ने संस्कृत की पाठ-विधि और संस्कृत परीक्षाएँ नियत करने का निश्चय किया है। इस कार्य्य के लिये हम शिक्षा सम्मति को बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि इस प्रयत्न का परिणाम शीघ्र ही निकलेगा।

(२) हमारी पाठिकाएं देखेंगी कि इस वर्ष के पहिले अङ्क में मिठाई बनाने की विधि भी दी गई है और कुछ गृहप्रबन्ध के नोट भी दिये गये हैं और सब प्रकार से "वनिता विनोद" को उन्नत बनाने का यत्न किया गया है। आशा है कि सब बहिनें इस से लाभ उठावेंगी।

यदि कोई बहिन "वनिता विनोद" को उन्नत बनाने के लिये कोई अन्य उपाय सोचेंगी तो उस पर भी विचार किया जावेगा।

(३) हमें यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने श्रीमती सरोजिनी नायडो को अपना प्रधाना चुना है। इस कार्य्य के लिये हम कांग्रेस कमेटी को बधाई देते हैं और साथ ही श्रीमती सरोजिनी नायडो को भी बधाई देते हैं और हमें विश्वास है कि श्रीमती जी अपनी कवितापूर्ण ललित भाषा में सुभाषित व्याख्यानों से बम्बई प्रांत को जगा देंगी।

(४) महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने बम्बई में जब आर्य्य-समाज के नियम बनाये थे तब उन में यह लिखा था कि स्त्री पुरुष दोनों ही आर्य्य-समाज के सभासद हों और दोनों ही मिल कर कार्य्य करें। किसी भी धर्मसंस्था में यह नियम नहीं है कि स्त्री और पुरुषों की समाजें अलग २ हों। हिन्दुओं के मन्दिरों में, न मुसल्मानों की मसजिदों में, न ईसाइयों के गिरजों में, न सिक्खों की धर्म-शाला में न कथाओं में कहीं भी यह प्रथकता नहीं दीखती। परन्तु आर्य्य-समाज में पता नहीं कि यह प्रथा किस ने चलाई है परन्तु हर्ष की बात है कि अब यह प्रथा धीरे २ हटने लगी है। संयुक्तप्रान्त की आर्य्य-प्रतिनिधि सभा में कुछ स्त्रियें मेम्बर हैं और अन्तरङ्ग सभा में भी हैं और मई के प्रथम सप्ताह में लाहौर में भी श्रीमती पार्वती जी ने आर्य्य-समाज में प्रवेश किया है और आशा करनी चाहिये कि शीघ्र ही आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पञ्जाब में भी स्त्रियें पर्याप्त संख्या में प्रविष्ट होंगी।

(५) यह जान कर किस देशभक्त का हृदय प्रफुल्लित न होगा कि स्त्रियों में भी उन्नति के चिन्ह दिखलाई पड़ते हैं। रावलपिण्डी में एक प्रान्तीय कान्फ्रेंस हुई थी और साथ ही एक स्त्रियों की भी सभा हुई थी जिस में श्रीमती खलीज़ा बेगम बी० ए० ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। श्रीमती खलीज़ा बेगम बी० ए० तथा श्रीमती पार्वती जी के व्याख्यान प्रशंसनीय थे और प्रधाना जी केवल सभा ही के लिये बन्नू से आई थीं। परन्तु केवल व्याख्यानों से ही स्वराज्य की सहायता ठीक नहीं हो सक्ती स्वराज्य में सहायता स्त्रियां दो प्रकार से कर सक्ती हैं एक तो चरखा कातने से और दूसरा स्वदेशी का व्रत करने से अपने पतिओं से भाइयों से पुत्रों से स्वदेशी का व्रत स्त्रियां ही करवायेंगी तभी देश की उन्नति होगी। आशा है कि सब बहिनें शीघ्र ही चरखा कात कर और स्वदेशी व्रत द्वारा स्वराज्य प्राप्ति में सहायका बनेंगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

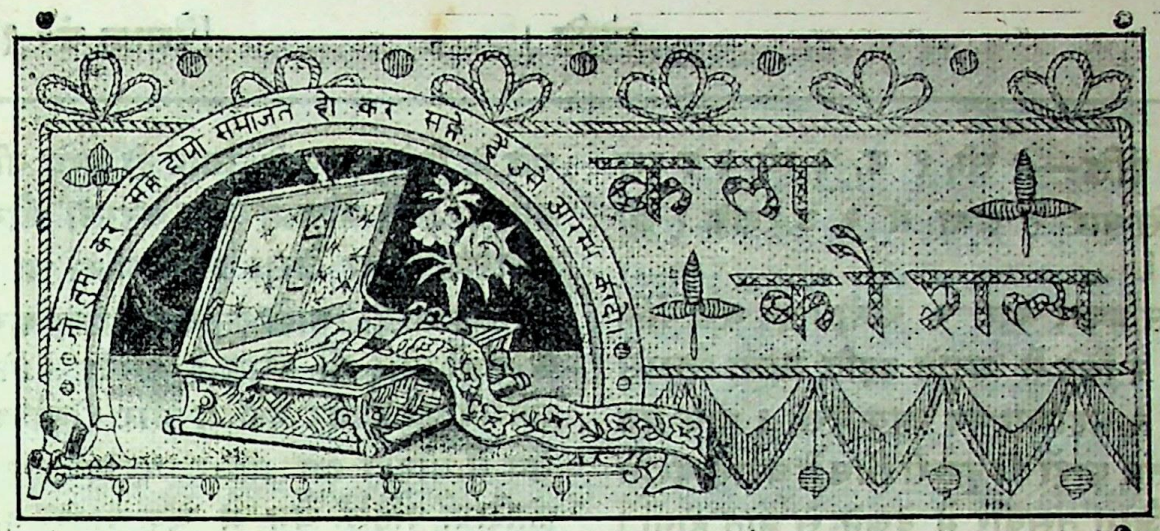

लहरियादार शिशु गतिका ।

यह सुन्दर छोटी सी गतिका टेढ़ी २ लहरियादार नमूने से बड़ी सरल रीति से बीनी जाती है । यदि पियाजी वा फ़िरोज़ी सफ़ाई से बनावे तो सफ़ेद ऊन की बहुत अच्छी रहे ।

आवश्यक वस्तुऐं २ हड्डी की १२ नं० की सलाइयां और आधी छटांक "मरीनो" ऊन वा जो मिल सके मोटा हो तो अधिक, महीन हो तो थोड़ा ।

आरम्भ में ४४ फ़न्दे चढ़ाओ । पहिला और अन्तिम फ़न्दा हमेशा सादा बीनो । इस प्रकार बीच में ४२ फ़न्दे रहा करेंगे ।

१ पंक्ति—सारी सीधी ।

२ पंक्ति—१ सी ३ सी, ३ उल्टा इस * चिन्ह से बार २ बनाओ, १ सी अन्त में ।

३ पंक्ति—१ सी, १ उ, ३ सी, ३ उ इस * चिन्ह से बार २ बनाओ अन्त में केवल २ उ, रहेंगे, १ सी ।

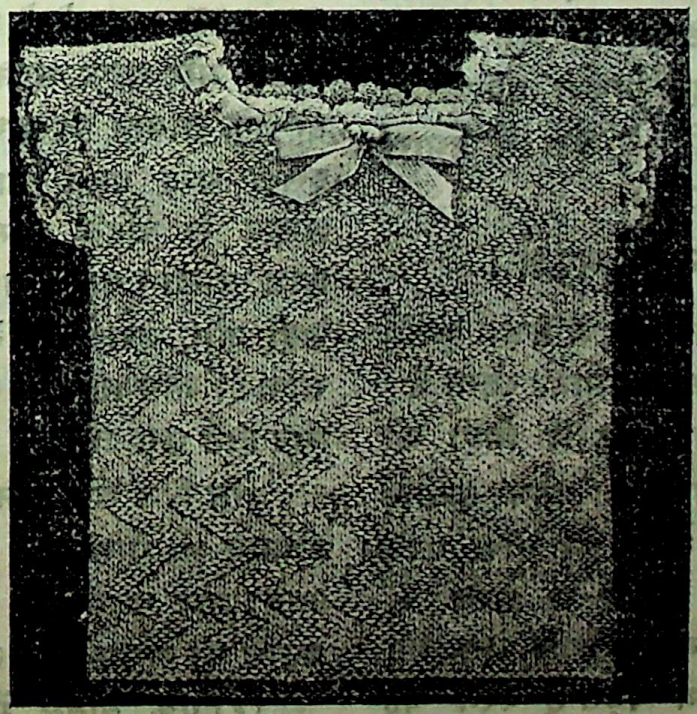

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

४ पंक्ति—१ सी, १ उ, ३ सी, ३ उ इस चिन्ह से बार २ अन्त में २ उ रखके १ सी करना।

इस प्रकार बार २ बीनो। हर एक पंक्ति में एक २ सिरे में घटाते बढ़ाते जाओ जिससे तिरछा २ लहरिया बन जाय ऐसी ६ पंक्ति बन जांय। तब फ़न्दों की दूसरी सीध में घटाते बढ़ाते जाओ जैसा तसवीर में देखने से ज्ञात होगा। इस प्रकार जब ७ लहरिया बन जांय तब कन्धे बनाने चाहिये। यह लहरिया बड़ा सुन्दर लगता है। दोनों ओर कन्धों के लिये १२ फ़न्दे ले लो और प्रत्येक ओर २४ लहरियादार पंक्तियां बीनो। गले के लिये २० फ़न्दे उतार दो कन्धे बीनने के बाद २० फ़न्दे बीच में नये चढ़ालो और उसी प्रकार लहरिया जैसा आगे बीना था बीनना आरम्भ करदो। बाहों का स्थान छोड़ कर बगल के दोनों ओर की सिलाई करदो। फिर एक क्रोशिये की झालर गले में और दोनों बाहों के छेद में बीनदो इस प्रकार ५ चेन, १ दोहरा क्रोशिया पहिली चैन में एक दोहरा क्रोशिया गतिका में इस * चिन्ह से बार २ बनाओ और एक सफ़ेद रेशमी फ़ीता बीच में गले में पिरोदो वा ऊन की डोरी बट कर सिरों पर फुंदने बांध कर पिरोदो।

ग्रह प्रबन्ध।

हम ज्योति के पिछले अंक में अपनी पाठिकाओं को सूचना दे चुके हैं कि ज्योति के नवीन वर्ष से उनके विनोदार्थ हम वनिता विनोद में ग्रहप्रबन्ध, स्वास्थ्यरक्षा इत्यादि कई उपयोगी बिषयों पर लेख दिया करेंगे। हमारा विचार ग्रहप्रबन्ध को वनिता विनोद का एक स्थायी स्तम्भ बनाने का है। हम अपनी पाठिकाओं के बड़े कृतज्ञ होंगे यदि वे इस में हमारा हाथ बटाने की कृपा करेंगी।

लकड़ी के सामान की सफाई।

आजकल प्रायः प्रत्येक घर में मेज़, कुर्सी, चौकी इत्यादि लकड़ी का सामान रहता है। कई बार देखने में आता है कि वे मिट्टी की परत पर परत जम जाने से, या बर्तन इत्यादि के दाग़ लग जाने से बहुत बुरे दीख पड़ते हैं। इनकी यथायोग्य सफाई न करने से केवल इतनी ही हानि नहीं कि वे मैले भद्दे और बदसूरत दीखने लग पड़ते हैं वरन यह भी होता है कि उनकी आयु भी बहुत कम हो जाती है सो यह परम आवश्यक है कि इन वस्तुओं की प्रति दिन सफ़ाई की जाय।

जब इस सामान की सफ़ाई करनी हो तो दो नरम कपड़े के झाड़नों से काम लेना चाहिये। एक सामान पकड़ने के लिये और दूसरा उसको पोंछने और साफ़ करने के लिये। जहां तक हो सके सामान को हाथ से न पकड़ना चाहिये इससे धब्बे पड़ने का डर रहता है। नरम झाड़न से पहिले सामान को भली प्रकार झाड डालो। यह ध्यान रखना चाहिये कि छेदों और दरारों में से मिट्टी अच्छी तरह साफ हो जाय नहीं तो सामान वहीं से कमज़ोर होने लग जाता है।

प्रति दिन के झाड़ने के अतिरिक्त समय २ सामान को धोने और पालिश करने की भी आवश्यक्ता पड़ती है। घर पर पालिश बनाने की सुगम रीति नीचे दी जाती है।

(१) एक बोतल में उबला हुआ अलसी का तेल और मटमैला रंग का सिरका बरा बर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मिलाकर खूब मिलाओ। यह बड़ा सुगम और उत्तम वारनिश है।

(२) अलसी का तेल; तारपीन, रंगीन सिरका और स्पिरिट (Methylated spirit) बराबर २ लेकर बोतल में डाल खूब हिलाओ।

सामान पर पालिश करने से पहिले यह परम आवश्यक है कि उस की मिट्टी इत्यादि भली प्रकार साफ कर दी जाय नहीं तो पालिश जमने लग पड़ेगा और चिपचिप करता रहेगा। लगाने से पहिले बोतल को हिला लो और एक फलालैन की गद्दी अथवा रूई के फोये को बारीक कपड़े में लपेट कर पालिश को लगाओ। लकड़ी पर खूब बराबर २ ज़ोर से मलो। यह ध्यान रहे कि पालिश बहुत थोड़ा २ लगाना चाहिये। फिर एक नरम झाड़न से पोंछ डालो और दूसरे नरम झाडन से या चमड़े की नरम गद्दी से चमकाओ।

कार्य्य करते समय बोतल को ध्यान पूर्वक एक ओर रखो जिससे कि वह इधर उधर गिरकर खराब न करे।

वर्ष में एक बार पालिश करने से पहिले सामान को धोना भी बड़ा लाभदायक सिद्ध होगा।

तुन की लकड़ी के सामान को ठंडी चाय या सिरका और पानी से धोना चाहिये। एक जैसे साफ २ सामान को फलालैन या स्पंज से धोना चाहिये और खुदे हुए चित्रकारी के सामान को एक नरम बुरश से धोना चाहिये। सुकाने के पीछे पालिश करो।

बालुत (सिन्दर) के सामान के लिये ज़रा गरम सी शराब (Beer) बड़ी लाभदायक है।

खूब चमकदार सामान को पहिले स्पिरिट और पानी से धोना चाहिये। दो बड़े चम्मच स्पिरिट के एक पाव पानी में डालकर इस में स्पंज को भिगोकर सामान को धो डालो और सूखने पर चमचे से खूब रगड़ डालो और अधिक पालिश की आवश्यक्ता न होगी।

काले रंग का दयार का सामान साबुन और पानी से धोया जासक्ता है परन्तु ध्यान रहे कि लकड़ी अधिक गीली न हो जाय।

सामान के धब्बे सुफैद धब्बे जो कि दूध के या दाल भाजी के गरम बर्तन रखने से पड़ जाते हैं काफूर के अर्क से दूर हो जाते हैं। स्याही के धब्बे ज़रा से आकसैलिक तेज़ाब (exalic acid) से धोने से दूर हो जाते हैं। आवश्यक्ता से अधिक तेज़ाब लकड़ी पर नहीं लगना चाहिये। कार्क से यह तेज़ाब अच्छी तरह लगाया जा सक्ता है। पानी से तेज़ाब को धोकर और फिर सूकने पर पालिश करना चाहिये।

गद्दीदार सामान–पहिले गद्दी को खूब पीटो और बुरश से साफ करो। यदि गद्दी का कपड़ा बहुत मैला हो गया हो तो यह गरम २ चोकर ऊपर मलने से बहुत कुछ साफ हो सक्ता है। बड़े बड़े धब्बे बैन्ज़ाईन (Benzine) द्वारा बड़ी सुगमता से उतर सक्ते हैं।

चमड़े की कुर्सियां–इन का मैल केवल पानी और साबुन से धोया जा सक्ता है। स्पंज से साबुन लगाओ, फिर कपड़े से पोंछ डालो और सुखा लो। बहुत थोड़ा पानी लगाना चाहिये। सूखने पर पालिश नं० (१) लगाओ।

सफ़ेद बैन्त का सामान–साबुन, गर्म पानी और बुरश से साफ करो। साबुन धो डालो और फिर बराबर निम्बू का रस और पानी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रक्खो कि यदि तुम अपनी इच्छानुसार आरम्भ से ही प्रयत्न करोगी तो अपने आचरणों द्वारा अपने प्राणपति को जैसा चाहोगी बना लोगी, परन्तु यदि तुमने आरम्भ ही में भूल की तो फिर यह भी निश्चय ही जानना कि टूटा हुआ कांच कभी भी नहीं जुड़ेगा। स्त्री के लिये पति ही देवता और पति ही गुरु है। पतिसेवा ही स्त्री का व्रत है और गृहकार्य्य ही उसका तप है और स्वजन सत्कार ही उसका यज्ञ है। इसके सिवाय स्त्री को अन्य व्यर्थ के झंझटों में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। मनु भगवान ने कहा है।

भर्तादेवो गुरू भर्ता धर्मतीर्थ व्रतानि च।
तस्मात् सर्वं परित्यज्य पतिमेकं सर्मचणेत्॥
नास्ति स्त्रीणां पृथक यज्ञो न व्रत नाप्युपेषितम्।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीपते॥

जिस गृह में निरन्तर पुरुष स्त्री से और स्त्री पुरुष से प्रसन्न रहती है वहां सौभाग्य, लक्ष्मी, और आनन्द का सदा वास रहता है।

सन्तुष्टाभार्य्या भर्ता भर्ता भार्य्या तथैव च।
यस्मिन् नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥

जो स्त्री सदा प्रसन्न रहती है, हर्ष के साथ अपने पति की मर्य्यादा रखती मान बढ़ाती और जी से प्रीति करती है वही यथार्थ में भार्य्या है अन्य नहीं। हर्ष की बात है कि आजकल जनता और सर्कार दोनों का ध्यान स्त्री शिक्षा की ओर झुका है और भारतवर्ष के एक सिरे से दूसरे सिरे तक विद्या का प्रचार खूब हो रहा है परन्तु अभी तक बहनों को यह भी पता नहीं है कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे के लिये क्या हैं अथवा उनका परस्पर क्या सम्बन्ध है? इस विषय में हमारे शास्त्र कहते हैं कि "स्त्री लक्ष्मी है" "पुरुष विष्णु है" पुरुष विचार है स्त्री वाणी है, पुरुष विवेक है स्त्री नियम है, पुरुष धर्म्म है स्त्री कर्तव्य है, स्त्री कर्म है पुरुष कर्ता है, पुरुष सूर्य्य है स्त्री तेज है, स्त्री रात है पुरुष दिन है, पुरुष न्याय है स्त्री सत्य है, स्त्री लता है पुरुष वृक्ष है, पुरुष दीपक है स्त्री ज्योति है, स्त्री शरीर है पुरुष आत्मा है"। दोनों का महत्त्व बराबर है, इन में से एक भी दूसरे के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकते हैं।

प्यारी बहिनो! अब आपको यह भलीभांति विदित होगया होगा कि तुम्हारा और तुम्हारे प्राणपति का इस संसार में क्या सम्बंध है और पति के प्रति तुम्हारा क्या कर्तव्य है और तुम्हारे प्रति तुम्हारे प्राणपति का क्या कर्तव्य होना चाहिये।

भारतवर्ष की कीर्तिशालिनी स्त्रियों में सब से प्रथम नम्बर पूज्यनीया श्री सीतादेवी का है इस लिये प्रत्येक देश देवी को चाहिये कि हम परम पूज्य सीतादेवी का अनुकरण कर इस संसार सागर के पार उतरने का प्रयत्न करें।

एक निवेदन उन भ्राताओं से भी है जो कि आज दिन भी स्त्रियों को पैर की जूती और सन्तान पैदा करने का साधन के सिवाय कुछ नहीं समझते। उन्हें चाहिये कि अपनी आंखों से अन्याय का चश्मा उतार कर देखें कि उनके पूर्वज स्त्रियों को किस आदर की दृष्टि से देखते थे; तथा—

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवतः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥
(मनु०)

अर्थात् जहां स्त्रियों का आदर होता है वहां देवता रमण करते हैं, परंतु उहां उनका आदर नहीं होता वहां की सब क्रियाएं निष्फल होती हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनुष्य का वास्तविक धन क्या है?

ले०—श्रीमती विद्यावती विशारदा धर्मपत्नी पं० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्।

अज्ञान रूपी नींद से उठो, जागो और सच्चे ज्ञान की ओर बढ़ो।

मनुष्य का वास्तविक धन क्या है? क्या सांसारिक सम्पत्ति, धन, धान्य, पुत्र परिवार यह ही मनुष्य का वास्तविक धन है? क्या इसी वैभव के होते हुये मनुष्य सुख और शान्ति हासिल करके अपने जीवन को सार्थक बना सकता है? नहीं ऐसा नहीं, अगर सांसारिक सम्पत्ति ही मनुष्य को वास्तविक धन और सुख तथा शान्ति के देने वाला होता तो राजा महाराजाओं के रत्नजड़ित महलों में किसी प्रकार का कष्ट न होता, न वहां दुःखदायिनी मृत्यु का प्रवेश होता और न वहां भय का संचार होता, परन्तु ऐसा नहीं, उनके यहां भी मृत्यु और दुःखचक्र सदव लगा रहता है। इसके अतिरिक्त संसार में हज़ारों धनियों के धन से बड़े २ दुष्ट परिणाम होते हुए दिखलाई देते हैं। कई धनिक ऐसे हैं जिन्हों ने धन मद से उत्तेजित होकर अपना ही सर्वनाश नहीं किया, बल्कि अपने सम्बन्धियों का भी नाश कर दिया है। यही धन भाई को भाई से, बेटे को बाप से अलग कर देता है। क्या ऐसा सर्वनाशी धन जिससे इतने दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं वास्तविक धन हो सकता है? अब इसके बाद दूसरा विचार फिर उत्पन्न होता है और वह यह है कि क्या विद्या मनुष्य का वास्तविक धन हो सकता है। क्षणिक विचार के बाद बुद्धि को अनुभव होने लगता है कि यह भी नहीं हो सकता क्योंकि अगर मनुष्य का वास्तविक धन विद्या होती तो संसार में कभी किसी विद्वान से कोई अधर्मयुक्त दुष्कार्य न हो सकता। संसार में एक मूर्ख की अपेक्षा एक विद्वान् दुष्चरित्र हो कर संसार को अधिक हानि पहुंचा सकता है। उदाहरण के लिये रावण के जीवनचरित्र को देखिये। कितना विद्वान था परन्तु विद्वान हो कर भी दुष्चरित्र हो अपने राज्य का नाश कर दिया। इस लिये विद्या से अधिक महत्त्ववाली वस्तु को खोजने की आवश्यकता है जिस को अपनाते ही एक रंक भी राजा को अपना वशवर्ती बना सकता है और जिसके आगे संसार की सब शक्तियां कठिन हो जाती हैं तथा जिस शक्ति के होने से ही राजा अपनी प्रजा का प्यारा और देवतुल्य पूजा जाता है। इस से भी प्रतापशालिनी शक्ति का नाम सदाचार है। इस में सन्देह नहीं कि धनवान और विद्वान भी इस संसार में बड़े कार्य कर सकते हैं परन्तु जो कार्य्य विद्वान सदाचारी अथवा सदाचारी धनवान से हो सकता है उसकी तुलना केवल धनवान और विद्वान नहीं कर कसता क्योंकि धनवान धन से जहां सत्कार्य कर सकता है वहां असत्कार्य भी कर सकता है, एक विद्वान जहां अपनी विद्वत्ता से संसार का उपकार कर सकता है वहां दुष्चरित्र होकर संसार को हानि भी पहुंचा सकता है।

परन्तु इसके विपरीत वह धनी जो कि सदाचारी है उससे और सदाचारी मूर्ख से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संसार को कोई हानि नहीं पहुंच सकती, क्योंकि विद्या एक रेलगाड़ी का इञ्जन और सदाचार रेलगाड़ी की लाइन है। यद्यपि यह ठीक है कि इञ्जन के बिना रेलगाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती परन्तु विचारने की बात है कि अगर लाइन न हो तो क्या अवस्था होगी? क्या वह मनुष्य रूपी रेलगाड़ी लाइन के बिना आगे बढ़ती हुई अपना अस्तित्व कायम रख सकती है? यदि लाइन टूटी हुई है और इञ्जन उसे खींचने की कोशिश करता है तो इसका भयंकर परिणाम यह होगा कि गाड़ी किसी ऐसे गढ़े में जा गिरेगी जहां उसके अङ्ग पङ्ग सब टूट जायेंगे।

परन्तु इसके विपरीत अगर इञ्जन न भी हो और लाइन ठीक हो तो गाड़ी आगे चाहे नहीं बढ़ सके लेकिन अपना अस्तित्व तो कायम रख सकेगी। वहां उसको कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता और उसका अस्तित्व तो बना रह सकता है॥

आज महर्षि दयानन्द, स्वामी रामदास, श्री गुरु गोविन्दसिंह जी के नाम को कौन नहीं जानता? इन महात्माओं के जीवन का प्रधान अंग जहां उच्च विद्या और बुद्धि थी वहां सच्चरित्र का भी योग था। यद्यपि आज उन का भौतिक शरीर इस पृथ्वी पर नहीं है तथापि उनका नाम स्मरण करते ही प्रत्येक भारतवासी के हृदय में अपने देश जाति के लिये सत्कार का भाव उत्पन्न हुये बिना नहीं रहता। आज भी उन का पक्ष सारे भूमण्डल में व्याप्त हो रहा है।

सदाचारी मनुष्य में वह उदारता और निर्भयता होती है कि विपत्ति और दुःख के समय विपथगामी अपने शत्रु को भी सहायता देने में और सत्मार्ग दिखलाने में नहीं हिचकता और दूसरी तरफ़ अन्यायकारी और दुराचारी राजा को भी भर्त्सना किये बिना नहीं रहता।

श्री स्वामी दयानन्द ने मेवाड़ राज्य के अधीश महाराणा सज्जनसिंह को वेश्या के संग देख कर कितना तिरस्कार किया था? इसी तरह से महात्मा राम शास्त्री ने भी राघोबा पेशवा से, जो कि बड़ा दुराचारी राजा था, इस प्रकार लताड़ते हुवे कहा था कि "यदि मुझे तुम्हारी व्यवस्था करने का अधिकार दिया जाय तो मैं तुम्हें फांसी पर लटका दूं" क्या यह शब्द एक राष्ट्रपति के प्रति कहना कोई सुगम बात है। इतनी निर्भयता, इतना आत्मिक बल सिवाय सदाचारी मनुष्य के कोई हासिल नहीं कर सकता।

क्या भूल गए हो कि जिस महात्मा के आत्मिक बल के सामने संसार की सारी शक्तियां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सिर झुका रही हैं उसी आत्मिक बल की प्रसव भूमि केवल सदाचार ही है।

ठीक है सदाचारी और विदुषी आत्मा को किसी से भय नहीं। संसार में भय उसी को होता है जो पापी हो, क्योंकि भय का कारण केवल पाप ही है। सिंहासनारूढ़ परन्तु पापी का हृदय कभी निर्भयता का आनन्द हासिल नहीं कर सकता। उस का हृदय कभी निर्भय नहीं हो सकता। परन्तु दूसरी तरफ एक भिखारी सदाचारी और विद्वान आत्मा को किसी से भय नहीं। वह आप निर्भय है। और दूसरों को निर्भयता का पाठ पढ़ाता है। उसे अनुभव है कि निर्भयता से बढ़ कर संसार में कोई पुण्य नहीं। वह सदैव अपने धर्मपथ पर दृढ़ता से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत बीमा कम्पनी लिमिटिड।

भारत बिल्डिंग लाहौर

१८९६ में स्थापित

केवल भारतीय प्रबन्ध के आधीन

बड़ा दफ्तर— लाहौर।

शाखायें—लाहौर, दिल्ली, रावलपिण्डी, अजमेर, लखनऊ, नागपुर, बांकीपुर।

एजन्सियां—पूना, मंगलोर, कलकत्ता, बंगलोर, ढाका, बम्बे, सक्खर, कराची तथा कोयटा।

कुल निधि ३,००,००,००० से अधिक है शेष बचा हुआ धन भी प्रायः १,००,००० से अधिक है कुल राशि जो बीमा में दी जा चुकी है २,३०,००० से अधिक है॥

जिन्दगी का बीमा करवाने के लिये यह कम्पनी सब से उत्तम है।

मैनेजर—कर्मचन्द विद्यार्थी।

आर. एस.शर्मा का

बाल बहार

छोटे बालकों की ताकत बढ़ाने वाली अपूर्व औषध.

यह औषध बालकों की ताकत बढाने के लिये अपूर्व प्रमाणित हो चुकी है, मीठी होने के कारण बालक प्रसन्न होकर पीते हैं, बालकों की खांसी, संग्रहणी, दूध पटकना, सर्दी आदी रोग इसके पीने से जाते रहते हैं और रक्त शुद्ध होकर बढता है हड्डी मजबूत होती है और बालक तिदिन फूलता चला जाता है, निरोग बालक को पिलाते रहने से किसी बिमारीका भय नहीं रहता, जिन बालकों को दूध हजम नहीं होता उनको दूधमें यह सीरप मिलाकर पिलाने से हजम हो जाता है, ऐसे ही अनेक गुणों के कारण इतना शीघ्र प्रसिद्ध हो गया है, यदि अब तक अपने बालकोंको न पिलाया हो तो आज ही १ शीशी खरीदकर अपने बालकों को पिलाकर इसके गुणों से लाभ उठावें। कीमत १ शीशी ॥) केवल १ मास के लिये हम १२ चीज मुफ्त देते हैं पत्र व्यवहार करो।

नोट—हम देहली से हरेक वस्तु भेज सकते हैं।

पता सं (१)—बाल बहार आफिस देहली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'रमणी-रत्न-माला' के पाँच रत्न

सचित्र शकुन्तला सचित्र

'शकुन्तला' संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालिदासके सर्वोत्तम संस्कृत नाटकका उपाख्यान रूपमें हिन्दी भाषान्तर है। संसार भरकी भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं और इस रचनाके आगे सारे सभ्य-जगत्को सिर झुकाना पड़ा है।

"शकुन्तला" को तारीफमें जर्म्मनीके महाकवि गेटोने कहा है, कि यदि स्वर्ग और मर्त्यकी समस्त शोभाएँ एकही स्थानपर देखनी हों, तो 'शकुन्तला' पढ़ो, क्योंकि यह दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्त्तव्य, सती धर्म्म और विश्व-प्रेमका जगमगाता हुआ उज्ज्वल और अमूल्य रत्न है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर ३ रंगोन चित्र लगाये गये हैं, कि जिन्हें देखकर पौराणिक कालकी समस्त घटनायें आँखोंके आगे नाचने लगती हैं। दाम २), रंगीन जिल्द २।), रेशमी जिल्द २॥) रु०

नल-दमयन्ती

कौन ऐसा हिन्दू-सन्तान होगा, जो "नल-दमयन्ती" का संसार प्रसिद्ध नाम न जानता हो? यह सती-शिरोमणि 'दमयन्ती' और आदर्श राजा 'नल' की शिक्षाप्रद, हृदय-ग्राहिणी पवित्र कथा प्रत्येक बाल, वृद्ध, वनिताके पढ़ने योग्य है। इसमें १३ बहुरंगे चित्र इस ढङ्गसे लगाये गये हैं, कि खाली चित्रोंको देखकरही मनुष्य पूरी कथा समझ सकता है। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं और कम पढ़ी लिखी स्त्रियोंको उपहारमें देनेके लिये यह पुस्तक बड़ीही उपयोगी है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २)

सावित्री-सत्यवान

कुमारी कन्याओं और नव-विवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसमें सती-शिरोमणि महारानी सावित्रीके अपूर्व पातिव्रत-धर्म्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। इसमें हाफटन फोटो के सुन्दर सुन्दर १३ रंगबरंगे चित्र भी दिये गये हैं। हिन्दीके प्रायः सभी समाचार-पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है, प्रत्येक हिन्दू-नारीको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। दाम १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २ रु०

सीता

"सीता" हिन्दू-बालक-बालिकाओं और गृह लक्ष्मियोंके पढ़ने योग्य अपने ढङ्गका अनूठा और सर्वोत्तम ग्रन्थ रत्न है; क्योंकि यह सारी रामायणका सार उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार और साहित्यका सुललित शृङ्गार है। इसके पढ़नेसे एकही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास और नीति शास्त्रका आनन्द मिलता है तथा यह राजनीति, धर्म्मनीति, समाज-नीति और गार्हस्थ-नीतिकी कुंजी है। इसमें १५ बहुरंगे चित्र दिये गये हैं, जिन्हें देखकर तबीयत फड़क उठती है और राम राज्यके अनूठे दृश्य आँखोंके सामने नाचने लगते हैं। दाम सिर्फ २॥), रंगीन जिल्द ३॥) और रेशमी जिल्द ३) रुपया।

चिन्ता

"चिन्ता" देव लोक और मर्त्य लोकका प्रत्यक्ष चित्र दिखलानेवाली शिक्षाप्रद, सुललित और हृदयग्राही अपूर्व कथा है। इसमें सती-शिरोमणि "चिन्ता" और न्याय रत्न महाराज औवत्सको ऐसी पुण्यमय कथा लिखी गयी है, जिसको सुनकर पाण्डवोंने अपने वन वासके १२ वर्ष बड़े धैर्य्यके साथ हंसते खेलते बिता दिये थे। सती 'चिन्ता' के अपूर्व पतानुराग, उज्ज्वल-सतीत्व और अविचल धैर्यकी कथा प्रत्येक पतिव्रता बहू बेटी और कुलनारीके पढ़ने योग्य है। इसमें ६ बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, जिन्हें देखकर चकित और विमोहित होना पड़ता है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

पता:—आर. एल. बर्म्मन एण्ड को०. ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

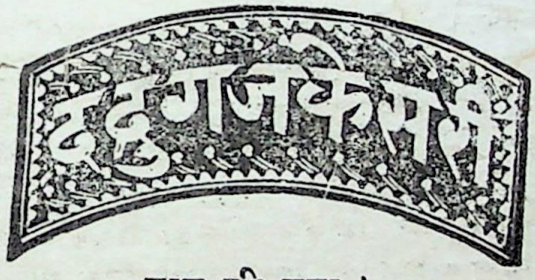

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

विशेष हाल जानने को सूचीपत्र मुफ्त भेजते हैं।

भारत भैषज्य भाण्डार।

यहां पर आयुर्वेदीय समस्त औषधि हर वक्त तैयार मिलती है। धातु, उपधातु, भस्म रस, गोली, चूर्ण, आसव, अरिष्ट, अवलेह, पाक, घृत, तैल वटी, मोदक इत्यादि और पंसारठ की सब चीचें जड़ी बूटी तथा सब रकम क्षार, सत, असल कस्तूरी, शिलाजीत, शुद्ध केसर पीपल, चौसट प्रहरी, भीमसेनी कपूर, गोरोचन इत्यादि बहुतसी चीजें सर्वदा तैयार मिलती हैं, और सम्पूर्ण रोग आराम किये जाते हैं, बाहर के लोगों को अपने रोग का पूरा हाल लिखने से वी० पी० पोस्ट द्वारा घर बैठे दवा मिलती है। और (आढ़त पर) कलकत्ता से सब प्रकार का माल बाहर भेजते हैं। सूचीपत्र मुफ्त भेजते हैं—

पता—भारत भैषज्य भाण्डार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विशेष सूचना।

डाक्टर एस० के० वर्म्मन की दवायों की मूल्य वृद्धि।

दवायों का मूल्य।

अर्क कपूर	।=)	प्लेग रो० गोली [छोटी]	॥॥))
दमे की दवा	१॥)	जुलाब की गोलियां	॥-)
बुखार की दवा [बड़ी]	१)	अर्क पुदीना	॥।)
बुखार की दवा [छोटी]	॥=)	क्लोरोडिन ॥) १२ शीशी	५॥)
सालसा	२॥)	सेम्पिल बक्स	२)
सेनीलाईन	१॥)	चर्म रोग की दवा	॥।)
पुराना सुज़ाक	२)	लाल शरबत	१)
गरमी [आतशक]	२)	स्त्री रोग की दवा	१॥)
कोलाटानिक	१।)	दांत दर्द की दवा	॥)
घेघे की लगाने की दवा	।=)	सत्त पिपरमिण्ट	॥।)
घेघे की खाने की दवा	१)	तेल पिपरमिण्ट	१=)
घेघे का मलहम	॥=)	,, रेड़ी	॥।)
पेनहीलर	१।)	,, चन्दन	॥।=)
खांसी की दवा [बड़ी]	१।)	,, अजवाएन	॥)
खांसी की दवा [छोटी]	॥=)	,, सोंठ	॥।)
कान बहने की दवा	।=)	,, सौंफ	।=)
दाद का मलहम	।=)	,, दालचीनी	॥।)
घाव का मलहम	॥)	,, लौंग	॥)
घाव धोने की टिकिया	=)	,, नींबू	।=)
धातुपुष्ट की गोलियां	१।)	,, लेवेन्डर	॥।=)
पुराने मे० बुखार की गो०	॥=)	,, इलायची	॥।)
अजीर्ण वा अजीण के दस्त	१॥)	थरमामेटर अंग्रेजी	३)
कुनैन की टिकली	॥।=)	,, हिन्दी	३)
शिर दर्द की टिकली	॥।)	,, उर्दू	३)
प्लेग रो० गोली [बड़ी]	१=)		

डाक्टर एम० के० वर्म्मन।

पोष्ट बाक्स नं० ५५४

कलकत्ता।

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240

वर्ष २] कार्तिक १९७८—नवम्बर १९२१ [खण्ड २, संख्या ७

ज्योति

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१—भारत-धन्य' [कविता] लेखक-श्रीयुत "रसिकेश"।	३४३
२—जीवाणुओं के अद्भुत खेल, लेखक-श्रीयुत प्रो० रामशरण सक्सेना एम. एस. सी.।	३४४
३—समालोचक [कविता] लेखक-श्रीयुत हरिशंकर भट्ट बी. ए.	३४८
४—धूम्रास्त्र ! लेखक-श्री. दा. सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, सौंध जि. सतारा।	३४९
५—वीर हैं [कविता] लेखक-श्रीयुत गयाप्रसाद "श्रीहरि"।	३५०
६—गीतामृत, अनुवादक-श्रीयुत प्रो० दामोदर तामसकर एम. ए. एल. टी.।	३५१
७—रुक्मिणी हरण नाटक, लेखक-श्री. मेधाव्रत जगजीवन।	३५५
८—छोटा भाई [कविता] लेखक-"नयन"	३५८
९—हिन्दी भाषा और शृंगार रस, लेखक-श्रीयुत "धनञ्जय"।	३५८
१०—प्रभु चिन्तना [कविता] लेखक-"रत्न"।	३६२
११—अत्याचार, लेखक-श्रीयुत डा. युधवीर सिंह।	३६३
१२—सुसङ्ग [कविता] लेखक-गंगाप्रसाद विद्यार्थी, काशी।	३६६
१३—कुसुमोद्यान।	३६७
१४—वैज्ञानिक संसार।	३६९
१५—हमारी मञ्जूषा।	३७१
१६—विचार प्रवाह।	३७३
१७—वनिता विनोद।	३८१

ज्योति के नियम

ग्राहकों के लिये।

१. ज्योति प्रति अंग्रेजी मास की १५ को ग्राहकों के पास पहुंचा करेगी।

२. डाक व्यय सहित भारत के लिये इस का मूल्य ४॥) और छै मास के लिये २॥) बी. पी. का व्यय ≦) अलग है प्रति अंक का मूल्य ॥) है। भारत से बाहर विदेश के लिये इसका वार्षिक मूल्य ६) है। मूल्य **मैनेजर ज्योति लाहौर** के नाम आना चाहिये।

३. पुरानी प्रतियां जो मिलसकेंगी उनका मूल्य प्रति संख्या ॥) से कम नहीं होगा।

४. पते के परिवर्त्तन की सूचना पत्र के निकलने से १५ दिन पूर्व मैनेजर को मिलनी चाहिये।

५. यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

लेखकों के लिये

६. लेख पढ़ने योग्य अक्षरों में हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखे जाने चाहियें। लेखों के घटाने बढ़ाने, छापने न छापने का अधिकार सम्पादिका को है। जो लेख प्रकाशित नहीं किये जासकेंगे वह टिकट और पता साथ होने पर लौटा दिये जावेंगे।

८. लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और परिवर्त्तन के पत्र **सम्पादिका ज्योति लायलपुर** के पते पर आने चाहियें।

मूल्य तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र **प्रबन्धकर्त्री ज्योति लाहौर** के पते पर आने चाहिये।

विज्ञापन की दर यह होगी।

प्रतिमास।

पूर्ण पृष्ठ या दो कालम १०) आधा पृष्ठ या एक कालम ६) चौथाई पृष्ठ या आधा कालम ३) चौथाई कालम २) टैटिल पेज का तीसरा पृष्ठ १२) टैटिल का अन्तिम पृष्ठ १५)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्ष पाठावली

प्रथम भाग

कुमारी विद्यावती सेठ सम्पादिका ज्योति

रचित

कन्या पाठशालाओं में प्रचिलित पुस्तकों की न्यूनताओं और अस्वभाविकताओं को देख कर ही योग्य लेखिका ने इस परम उपयोगी पुस्तक की रचना की है। सदाचार नीति और धर्म सम्बन्धी विषयों पर बालिकाओं के समझने योग्य सरल भाषा में लिखी हुई सुन्दर और सचित्र पुस्तक है। पुस्तक दिन प्रति दिन सर्वप्रिय बन रही है। पंजाब और संयुक्त प्रान्त की कितनी ही पाठशालाओं में इस की नियम पूर्वक पढ़ाई होती है। अपने कई रंगों के सुन्दर चित्रों, चिकने बढ़िया काग़ज़ और चित्र शाला प्रेस पूना की मनोहर छपाई से यह बालिकाओं के मनों को अपनी ओर खैंचे बिना नहीं रहती।

समाचार पत्रों ने इसकी खूब प्रशंसा की है:—

आर्य मित्र आगरा—आर्य विद्यालयों और कन्या पाठशालाओं में प्रचलित करने के लिये यदि कोई सर्वोत्तम पुस्तक लिखी गई है तो यह है। बच्चों के अन्दर धार्मिक सिद्धान्तों और सदाचार के भावों को भरने वाली ऐसी दूसरी कोई पुस्तक हमारे सामने नहीं आई। पुस्तक की बड़ी विशेषता यह है कि इस में बहुत से उत्तम २ चित्र हैं।

प्रभा—.....इस पुस्तक ने एक भारी अभाव की पूर्ति की है। यह हमारी कन्या पाठशालाओं में अधिक शिक्षा की पाठ्य पुस्तक का काम दे सकती हैं। निबन्ध न केवल उपदेश प्रद ही हैं बल्कि कन्याओं का ज्ञान बढ़ाने वाले भी। जहां सरकारी स्कूलों में आदर्श को भ्रष्ट करने वाली श्री राम और कृष्ण की दूषित कहानियां पढ़ाई जाती हैं वहां हमारी राष्ट्रीय पाठशालाओं में ऐसी धार्मिक पुस्तकें ही पढ़ाई जानी चाहियें.....पुस्तक परमोपयोगी है।

आर्य्य जीवन—(गुजराती) श्री. विद्यावती सेठ ने इस पुस्तक को लिख कर बालकों के अन्दर ऋषि सिद्धान्तों का प्रचार बहुत ही सरलता पूर्वक करने में असाधारण कौशल दिखलाया है। बालकों को ज्ञान के साथ २ आनन्द भी मिले इस रीति से ऋषि दयानन्द प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि ग्रन्थों के विस्तृत समुल्लासों को छोटे २ पाठों में रच कर इन में आये हुये कठिन विषयों को भी सुगम तथा सरस बना दिया है। पुस्तक की भाषा ऐसी सरल है कि गुजराती बालक भली प्रकार पढ़ सक्ते हैं। पुस्तक में अनेक चित्र हैं। काग़ज़, छपाई इत्यादि खूब बढ़िया है।

प्रकाश लाहौर—चित्रशाला प्रेस पूना में खास एहतमाम से बहुत सुन्दर और ब तसवीर छपवाई गई है जिस से यह पुस्तक बहुत दिलकश और दिलचस्प बन गई है.....पुस्तक इस काबिल है कि कन्या पाठशालाओं के मैनेजर महाशय इस पर विचार कर के अपनी पाठशालाओं में रायज करें।

वैदिक मेग़ज़ीन—

The talented authoress has in the first valume aranged the teachings of Swami Dayanand on various social, moral and religious subjects into 71 short lessons cast intitle dialogive form. The book is illustrated with beautiful pictures.

The beauty is that in the entire prose portion there in not a relevant word that has not been extracted from the writings of Rishi Dayananda. The get up and printing are charming, all fathers who have young girls should haster to order the book and it should be introduced as a text-book is all Girls' Shools.

१३५ पृष्ठ की सोलह रंगीन और सादे चित्रों से अलंकृत सुन्दर जिल्द बन्धी पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) बिना जिल्द का ॥=)

इकट्ठा लेने पर १०० सजिल्द रंगीन पुस्तक ६२॥) और बिना जिल्द की ५०) में मिलेंगी।

प्रबन्धकर्ता "ज्योति" अनारकली लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सदाचार-दर्पण

आचार-नीति-शिक्षा का अपूर्व एवं अद्वितीय ग्रन्थ

मध्यप्रदेश, संयुक्तप्रदेश तथा पंजाब के शिक्षा-विभाग द्वारा, स्कूलों के उपयोग के लिए, स्वीकृत।

पृष्ठ-संख्या लगभग ४००; मूल्य १॥), डाक-व्यय ।=) आने।

इस ग्रन्थ के लेखक हैं जबलपुर के हितकारिणी हाई स्कूल के हेडमास्टर विद्यावयोवृद्ध राय साहब पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी, बी० ए०, जिन के अनुभव के विषय में केवल इतना कहना बस होगा कि वे लगभग ३५ वर्षों से शिक्षण-कार्य करते आ रहे हैं। इस ग्रन्थ का परिचय नीचे लिखी हुई कुछ सम्मतियों से प्रकट होगा—

[१] प्रसिद्ध देशभक्त स्वर्गीय रायबहादुर पं० विष्णुदत्तजी शुक्ल, बी०ए०, एम०आर० ए०एस० ने लिखाथा—

"जिस चरित्र-संगठन के बिना मनुष्य को संसार में सफलता प्राप्त करना कठिन ही नहीं, बरन असम्भव है उसी चरित्र संगठन के निमित्त सदाचार की शिक्षा देने के लिए आप का यह "सदाचार-दर्पण" एक परमोपयोगी ग्रन्थ है। अभी तक शालाओं में ऐसे पाठ्य ग्रन्थों का अभाव होने से सदाचार की शिक्षा देने में शिक्षकों को जो कठिनाई थी उसे इस पुस्तक द्वारा दूर कर आप ने शालाओं का विशेष उपकार किया है। आशा है कि न केवल छात्रगण ही, बरन सर्वसाधारण इस ग्रन्थ को पढ़ कर लाभ उठावेंगे। विशेष कर संसार के सभी प्रधान देशों तथा धर्मों के उदाहरण देने से सभी जाति और धर्म के मनुष्यों को यह ग्रन्थ रुचि कर होते हुए परस्पर ऐक्य और सहानुभूति के बढ़ाने में सहायक होगा।"

[२] हिन्दी-साहित्य के दिग्गज विद्वान् काशी-निवासी बाबू श्यामसुन्दर दास जी, बी०ए०, लिखते हैं—

"पुस्तक बहुत ही उपयोगी है और अच्छे ढंग पर लिखी गई है। हमारे स्कूलों में सदाचार की शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। इस पुस्तक द्वारा यह काम बड़ी उत्तमता से हो सकता है, मुझे इस पुस्तक में आप के अनुभव का पूरा परिचय मिलता है। सच बात तो यह है कि बिना अनुभव के ऐसी पुस्तकों का लिखना नहीं हो सकता।"

[३] प्रसिद्ध शिक्षा-तत्व-मर्मज्ञ तथा जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कालेज के वाइस-प्रिंसपाल पं० लज्जाशंकर जी झा, बी० ए०, लिखते हैं—

"पुस्तक मनोरञ्जक है, बालक उसे आनन्द से पढ़ेंगे इसकी मुझे पूर्ण आशा है। उपदेशों में कथाओं का आवरण इस प्रकार सुन्दर रूप से दे दिया गया है कि कथा के लालच से बालक उपदेश भी आनन्द से बाँचेंगे और ग्रहण करेंगे। यदि-साहित्य की दृष्टि से देखा जाय, तो भी यह पुस्तक लाभकारी है; क्योंकि इस में अच्छे अच्छे संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के कवियों की कविताएँ तथा विद्वानों के कथन बहुतायत से दिये हुए हैं।"

[४] भारतवर्ष का सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी मासिक पत्र Modern Review (माडर्न रिव्यू) लिखता है—

"This is a very useful publication on the moral code of the Indians, and the author has illustrated his instructions by propuse and very well-known illustrations."

"The author seems to have had nice practical experience in forming the character of Indian students and his book is admirably seuted to the requirements."

इस प्रकार की पचासों सम्मतियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। यह पुस्तक मध्यप्रदेश तथा अन्य प्रान्तों के अनेक स्कूलों में पाठ्य पुस्तक (Text-book) के समान पढ़ाई जाती है। हिन्दी-भाषा-भाषी शिक्षित कुटुम्बों में अन्य ग्रन्थों के पहले इसको एक प्रति रखी जानी चाहिए। पुस्तक अच्छे काग़ज़ पर तीसरी बार छप कर अभी प्रकाशित हुई है। आप इसकी एक प्रति आज ही मँगाइए। पुस्तक मँगाने का पता—

पं० रामप्रसाद मिश्र, बी० ए०, मिश्र-बन्धु-कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर।

Jubbulpor, (C. P.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

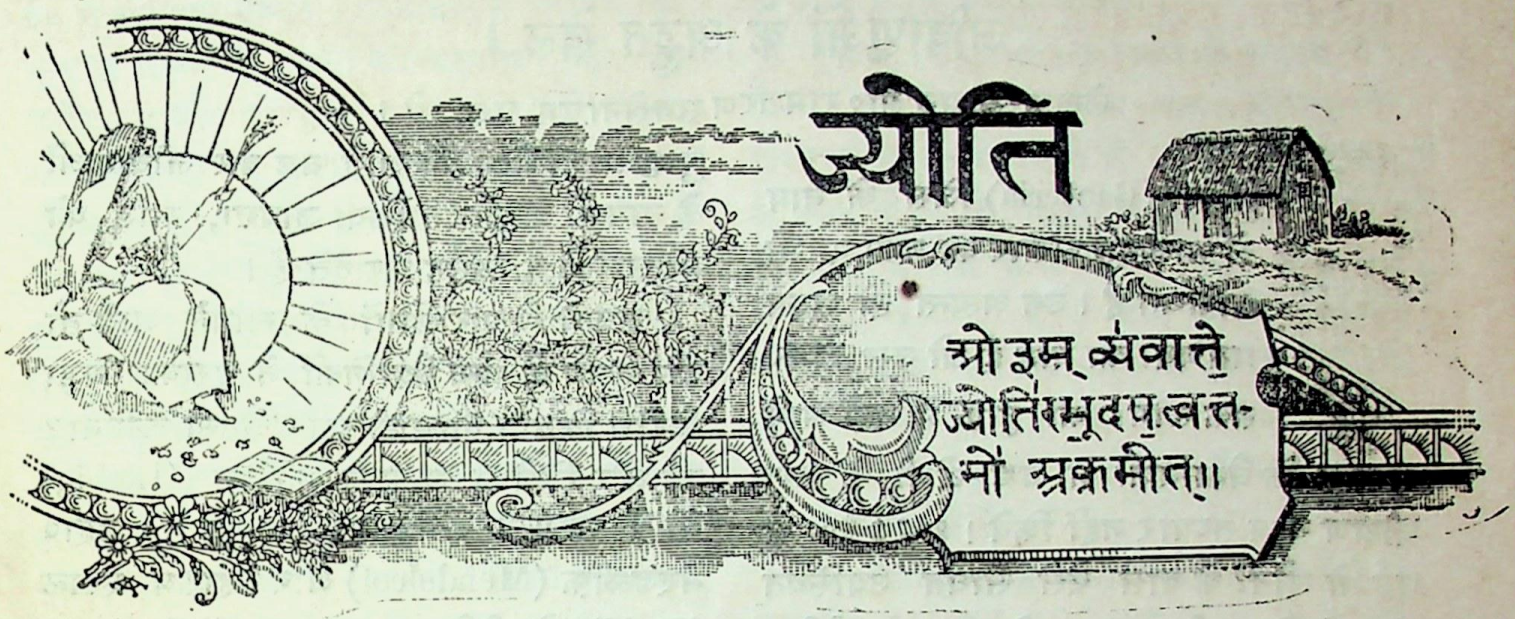

वर्ष २ | कार्तिक १९७८—नवम्बर १९२१ | संख्या ७

'भारत-धन्य'

लेखक श्रीयुत "रसिकेश"

(१)

धन्य ! हमारा भारत देश ।
जै जै सुन्दर सभ्य स्वदेश ॥
अत्युन्नत हिमगिरि भव्य ललाट।
सुरम्य मनोहर श्रीधर ठाट ॥
शुभ्र प्रभा मय विमल प्रदेश ।
धन्य ! हमारा भारत—देश ॥

(२)

कटि में विन्ध्या करधन सोहै ।
सुरसरि नव्य वसन मन मोहै ॥
शिर चरनन पर उदधि नवावत ।
नम मस्तक भारत गुण गावत ॥
दुख नाशक जय अखिलेश ।
धन्य ! हमारा भारत देश ॥

(३)

कनक, रजत, की मूरि विराजैं ।
कानन भव्य भयङ्कर भ्राजैं ॥
धन जन पूरित सब गुण आकर ।
गौरव गर्वित कीर्ति उजागर ॥
नित प्रति ज्ञान, सुशान्ति प्रवेश ।
धन्य ! हमारा भारत—देश ॥

(४)

त्रिंश कोटि नरगन नित पालत ।
धन जन बल से रिपु को सालत ॥
सुरनर इस पर ध्यान लगावैं ।
ईश्वर आकर मान बढ़ावैं ॥
जयति जै जै जयति जै भुवनेश ।
धन्य ! हमारा भारत—देश ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवाणुओं के अद्भुत खेल।

लेखक-श्रीयुत् प्रो० रामशरण सक्सेना एम. एस. सी।

वैक्टीरिया (Bacteria) जिस के नाम से आजकल संसार का बच्चा २ भी परिचित है। उन अत्यन्त ही सूक्ष्म प्राणियों का नाम है जो उस समय तक लोगों की दृष्टि में नहीं आये जबतक कि वैज्ञानिकों ने उच्च श्रेणी के अणु वीक्षण यन्त्र तय्यार नहीं किये। १६१७ ई० से पूर्व तो लोगों के पास ऐसे साधन उपस्थित ही न थे जिन की सहायता से वह इन छोटे २ प्राणियों के अद्भुत खेलों को देख सकते। यद्यपि लोगों को यह पता था कि गन्ने के रस को यीस्ट (Yeast) द्वारा सड़ाने से मद्य सार बन जाता है, तथापि वे इस से सर्वथा अनभिज्ञ थे कि यीस्ट (Yeast) किस प्रकार का पदार्थ है और वह किस प्रकार खांड को मद्यसार में बदल देता है। सब से पहिले महाशय लैवनहौक (Leenwen hock) ने जर्मनी में यीस्ट (Yeast) की परीक्षा अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे की। उसके पश्चात् श्वान (sehwann) ने जर्मनी में और डीलाटूर (De La Tour) ने फ्रांस में यीस्ट पर परीक्षण किये और वे इस परिणाम पर पहुंचे कि पीस्ट एक प्रकार का तुच्छ प्राणी है जिस के ऊपर सेलूलोस (Cellulose) की झिल्ली और भीतर प्रोटोप्लास्म (Protoplasm) होता है। जब खाण्ड के घोल में इसको रखते हैं, तो यह यीस्ट (Yeast) अदरक, हल्दी, घुइयां, या शकरकन्दी की तरह से फूट फूट कर बढ़ने लगता है और जब इस घोल को हिलाते हैं, तो इस प्रकार बनी हुई पीस्ट की गांठें अलग अलग हो जाती हैं और पुनः पहिले की भांति फूट २ कर बढ़ना आरम्भ करती हैं। ये ही तुच्छ प्राणी जिन को आगे चल कर जीवाणुओं के नाम से सम्बोधन किया जायगा, खांड को मद्यसार में परिवर्तन कर देते हैं।

जब ये विचार लोगों के सामने आये तो उस समय के अन्य वैज्ञानिकों ने इसका बड़ा विरोध किया। पीस्टकी इस "चैतन्य कल्पना" का घोर विरोधी महाशय लीविग (Liebig) था। महाशय लीविग (Liebig), महा० मैण्डलीफ़ (Mendeleef) और महाशय स्टाल (Stahl) जो फ़्लोजिस्टन कल्पना-Philogiston Theory का स्थापक था) ये सब इसी मत के थे कि रस के सड़ाव को प्राणियों के जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु पीस्ट के कणों की गति से खाण्ड की मात्राओं (Molecules) के अणुओं की गति में भेद आने से खण्ड की मात्रा (Molecules) टूट कर मद्यसार की मात्रा बन जाती है। लीविग (Liebig) ने इस गति की कल्पना को समय २ कई रूप दिये। उसने यह भी कहा कि खाण्ड के घोल में जब पीस्ट रखा जाता है तो वह स्वयं विभक्त होने की अवस्था में होता है। इस दशा में उसके चारों ओर के खाण्ड की मात्रायें (molecules) भी अस्थिर तुलाव (unstable equilebrium) की अवस्था में होने के कारण विभक्त होकर मद्य-सार में परिवर्तित हो जाती हैं। और कवीनि-कामग गैस (carbonic acid gas) निकल पड़ती है। मैन्डलीफ़ (mendeleef) की कल्पना भी गति की दृष्टि से इसी स्वरूप की थी।

उक्त महाशयों ने सड़ाव की "चैतन्य कल्पना" का घोर विरोध किया। लीविग (Liebig) उस समय का अगुवा था जिस की बात को लोग बहुत मानते थे। अन्त में १८५७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ई० में महाशय पैस्टूर (Pastur) ने लीविग की सड़ाव सम्बन्धी "गति की कल्पना" की जड़ उखेड़ दी और परीक्षणों द्वारा लोगों को सिद्ध कर दिखाया कि सड़ाव की क्रिया उन अत्यन्त ही सूक्ष्म और तुच्छ प्राणियों द्वारा होती है जो बड़ी ऊंची शक्ति वाले अणुवीक्षण यन्त्रों द्वारा ही दृष्टिगोचर हो सकते हैं, अन्यथा नहीं, पैस्टूर ने यह भी बताया कि यह तुच्छ प्राणी खांड के घोल में पहुंच कर ओषजन (oxygen) लेने का यत्न करते हैं ऐसा करने से हो खाण्ड की मात्रा (molecules) टूट कर मद्यसार में परिवर्तित होजाती है। अपनी "चेतन कल्पना" की पुष्टि में उसने कहा कि यदि वारीक कूट पीस कर इन पीस्ट के प्राणियों को मार कर नष्ट कर दिया जावे तो फिर उनमें सड़ाने की शक्ति नहीं रहती।

कुछ दिनों पश्चात् एक दूसरे महाशय बूकनर (Buener) ने १८९७ ई० में यीस्ट पर निम्न परीक्षण किये जिन्हों ने पैस्टूर (Pastur) के विचारों को कुछ थोड़ा सा बदल दिया:—

बूकनर (Bucner) ने पीस्ट में क्वार्टस् (Quart) की रेत मिला कर खूब ही पीसा जिस से कि पीस्ट के जीवाणु सर्वथा नष्ट हो जावें, इस चूर्ण को मोटे कपड़े में को ५०० वायु मण्डल के दबाव से छाना और जो छना पदार्थ आया उसको अणुवीक्षण यंत्र के नीचे देखा (जो पदार्थ को ७०० गुना बढ़ा कर दिखाता था) तो पीस्ट का कोई भी जीवाणु उसमें न दीख पड़ा:—

इस द्रव्य में खाण्ड के घोल को सड़ा कर मध्यसार में परिवर्तित करने की शक्ति थी। इसका नाम बुकनर ने जाइमेज (Zymase) रक्खा। इसमें सड़ाने की शक्ति रखने वाला पदार्थ है उसके लिये आगे चल कर कीटाणु का शब्द प्रयुक्त किया जावेगा।

बुकनर (Bucner) के समय से सड़ाव की क्रिया को वैज्ञानिक लोग एक असाधारण रासायनिक क्रिया मानते हैं। इस प्रकार उक्त से स्पष्ट है कि जीवाणुओं के एक क्षेत्र में सब से पहला प्रसिद्ध काम करने वाला वैज्ञानिक पैस्टर (Pastur) है। और उसके समय से वर्तमान काल तक इस क्षेत्र में बड़ी सन्तोष जनक उन्नति हुई है। देखा जाय तो जीवाणुओं सम्बन्धी जो कुछ भी कार्य हुआ है वह पिछले ५० वर्षों का ही है।

इन जीवाणुओं की कथा निम्न प्रकार है:—

सब से पहिला प्रश्न जो इन जीवाणुओं के विषय में होता है वह यह है कि यह प्राणी जीव जन्तुओं की श्रेणी के हैं या बनस्पतियों में इनकी गिनती होनी चाहिये। देखा जाय तो इन जीवाणुओं में दोनों प्रकार के जीवाणुओं के गुण पाये जाते हैं। तनिक देख कर यह कहना कठिन है कि यह बनस्पति में गिने जायं या जीवजन्तुओं में। इन जीवाणुओं का आकार तीन प्रकार का होता है (१) गोलाकार (२) लम्बी शलाका के समान (३) पेचदार कमानी के समान।

गोल, शलाकाकार और पेचदार कमानी के ढीले अथवा खिचे तने होने के कारण इनकी भिन्न २ शकलें हो जाती हैं। मुख्यतया इनके तीन ही आकार हैं।

इनकी मोटाई अणुवीक्षण यन्त्र से देखने से ८०००००१२ "से लेकर ८००००६" तक ज्ञात हुई है और इनकी लम्बाई, मोटाई से कुछ अधिक होती है।

इनकी उत्पत्ति साधारण जीव जन्तुओं की तरह नहीं होती, परन्तु उत्पत्ति के समय एक जीवाणु बीचों बीच टूट कर दो जीवाणुओं में बदल जाता है और फिर इनमें से प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवाणु बीचों बीच में टूट कर और नये जीवाणुओं को बनाता है। इस प्रकार यह उत्पत्ति का सिलसिला जारी रहता है। यदि माध्यम की अवस्था इन जीवाणुओं के अनुकूल हो तो प्रत्येक आध घण्टे या इससे भी कम समय में इनकी उत्पत्ति का चक्र आता रहता है। इस प्रकार यदि १ जीवाणु को उत्पत्ति के अनुकूल माध्यम में रक्खा जावे तो उक्त क्रिया से बढ़ते २ चौबीस घण्टे में १६५०००००० और ४८ घण्टे में २८१५००००००००० हो जावेंगे। यदि तीसरे दिन इन्हें और बढ़ने दिया जाय और माध्यम में इनके लिये पर्याप्त भोजन की सामग्री उपस्थित हो तो ७२ घण्टे के पश्चात् उसी एक जीवाणु के ४७०००००००००००० जीवाणु हो जावेंगे। और जिनका तोल लगभग २००००० मन होगा, परन्तु उनकी उत्पत्ति देर तक इस तेज़ी से नहीं बढ़ती क्योंकि या तो भोजन की कमी के कारण वे भूखे मरने लगते हैं और या अपने शौच के इकट्ठे हो जाने से जो उन पर ज़हर का काम करता है, वे मरने लगते हैं। इस प्रकार उन की बहुत सी संख्या मर कर नष्ट हो जाती है।

बीज़ २ जीवाणुओं के चारों ओर एक लेसदार जीवित पदार्थ होता है जो इन जीवाणुओं की आपत्ति के समय में रक्षा करता है। साधारण तौर पर जीवाणुओं के लिये ३५ "श से ६०" श तक के तापमान का माध्यम अनुकूल पड़ता है। यदि ताप परिमाण अत्यन्त ही न्यून हो या अधिक हो तो उस अवस्था के अनुकूल न होने के कारण जीवाणु उसमें मरने लगते हैं। परन्तु जिन जीवाणुओं के चारों ओर यह लेसदार पदार्थ उपस्थित होता है, वे ताप परिमाण के बड़े परिवर्तन में भी सुरक्षित रहते हैं। देखा गया है कि कोई कोई जीवाणु कुछ समय तक १८० श के तापमान तक भी जीवित रह सकते हैं। और खौलते हुए पानी में तो पर्याप्त समय तक रखने पर भी उन्हें कुछ हानि नहीं पहुंचती।

उक्त गुण जो इन जीवाणुओं में पाये जाते हैं (आकार, उत्पत्ति और लेसदार पदार्थ की उस स्थिति) ऐसे हैं जिनके आधार पर इन जीवाणुओं को वनस्पति की श्रेणी का कहा जा सकता है। यह ओसिलेरिया (Oscillaria) पौदे से मिलते जुलते हैं केवल भेद इतना है कि इस पौदे का रंग हरा होता है और जीवाणु रंगदार नहीं होते।

अब यदि इन जीवाणुओं की गति और भोजन की दृष्टि से विचार किया जावे तो हम एक दूसरे परिणाम को पहुंचते हैं। ये जीवाणु अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे देखने से गति की अवस्था में पाये जाते हैं। जहां कहीं इनके लिये माध्यम अनुकूल मिलता है, वहां उनकी गति उतनी ही तीव्र होती है, जितनी कि अन्य जीव जन्तुओं की। प्रत्येक जीवाणु भिन्न २ प्रकार से गति करता है।

भोजन के लिये जैसा कि आगे चल कर बतलाया जावेगा यह जीवाणु बड़े विषय पदार्थों पर निर्वाह करते हैं। बड़े २ विषमता के ऐन्द्रियिक समासों को ये जीवाणु सुगमता से ही सरल पदार्थों में विभक्त कर देते हैं। जहां कहीं इनको नत्रजनिक (Nitrogenous) ऐन्द्रियिक समास (जैसे दूध, दही, मक्खन, लहू और मांस इत्यादि) मिलते हैं वहीं इनका कार्य तीव्रता से आरम्भ होता है। कुछ भाग वह स्वयम् खा जाते हैं और बहुत कुछ नये पदार्थ उत्पन्न करते रहते हैं। यह जीवाणु जितने सूक्ष्म हैं उतने ही अधिक चुस्ती से कार्य करते हैं। मानो इनमें कार्य करने की शक्ति इनके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आकार के व्यस्त अनुमान में होती है। ये दो गुण ऐसे हैं (उनकी स्वतन्त्र गति की अवस्था और विषम भोजन) जो जन्तुओं में ही पाये जाते हैं, इनके आधार पर जीवाणुओं को अन्य जीव जन्तुओं में ही गिना जा सकता है।

वैज्ञानिक लोग इन जीवाणुओं को बनस्पति में सम्मिलित करते हैं इस लिये जीवाणु एक अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार के पौदे हैं जिनके अन्दर हरे रंग का पदार्थ, जिसे क्लोरोफिल (chlorophyll)कहते हैं नहीं होता। सम्भवत क्लोरोफिलन होने के कारण ही इनमें विषम पदार्थों को पचाने की शक्ति है।

दूसरा प्रश्न इन जीवाणुओं को भिन्न २ श्रेणियों में विभक्त करने का है। यह प्रश्न ऐसा है कि जिसको अभी तक कोई सन्तोष जनक हल नहीं मिला। कारण यह है कि इन जीवाणुओं का १ दूसरे से पृथक् करना अत्यन्त ही कठिन है। देखा गया है कि दो जीवाणु, जो अणुवीक्षण यन्त्र के नीचे एकही आकार के थे, अपनी २ क्रियाओं में एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। इस लिये जीवाणुओं को उनके आकार के आधार पर श्रेणियों में विभक्त करने से कोई सन्तोष जनक विभक्ति नहीं होती। इस लिये उचित यही समझा गया है कि भिन्न २ जीवाणुओं को उनकी क्रिया शक्ति के अनुसार श्रेणियों में बांटा जाय। जैसे जो जीवाणु खाण्ड को मद्यसार में बदलते हैं उनका नाम मद्यसारोत्पादक जीवाणु होगा और जो जीवाणु मद्यसार को सिरके में बदलते हैं उनका नाम सिरकत जीवाणु होगा। इसी प्रकार जिन जीवाणुओं से जो रोग फैलाते हैं उन रोगों के नाम पर ही उन जीवाणुओं के नाम होते हैं जैसे हैज़ा, ताऊन, इन्फ्लुएन्जा, और कोढ़ के जीवाणु।

इन जीवाणुओं की उपयोगिता तथा अन्य अद्भुतकार्य बतलाने के पूर्व यह बतलाना दिलचस्पी से खाली न होगा कि ये जीवाणु कहां २ पाये जाते हैं। यदि देखा जाय तो संसार में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहां "पर ये तुच्छ प्राणी न पाये जाते हों। संसार में शायद ही कोई दूसरा जीव जन्तु या बनस्पति ऐसा मिल सके जो इन जीवाणुओं की तरह सर्व व्यापक हो। पृथिवी के सारे पृष्ठ पर जहां कहीं भी नल जनि ऐन्द्रियिक समास (Nitrogen ous Organic matter) उपस्थित है वहीं पर ये जीवाणु अधिक संख्या में उपस्थित होते हैं। घास में लिपटे हुए, बनस्पतियों से चिपटे हुए, रेत और गर्द में मिले हुए, नमी के स्थान पर बैठे हुए और पानी के अन्दर चलते फिरते भिन्न २ प्रकार के जीवाणु भिन्न २ स्थानों पर मिलते हैं। क्या ऊंचो पहाड़ो का टीला और क्या पहाड़ की खोह सब जगह इन का प्रवेश होता है। पृथिवी के नीचे भी तीन चार फिट की गहराई तक ये पाये जाते हैं। वायु मण्डल में भी जहां कहीं रेत और गर्द होता है, वहां पर ये उपस्थित होते हैं, जहां कहीं भी इनको भोजन और जल वायु की अनुकूल अवस्था मिलती है, वहीं इनकी उत्पत्ति और इन के कार्य की चुस्ती अधिक होती है। बाज़ार की नालियों, मैली गलियों, पाखानों और पेशाव घरों, गोशालाओं और वृषभशालाओं में ये बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। जहां कहीं भी कोई जानवर मरा पड़ा हो, पौदा सुरझा रहा हो, या फल सड़ रहे हों, वहां पर तो ये जीवाणु अनन्त पाये जाते हैं। परन्तु जहां इन की उत्पत्ति बड़ी तेज़ी से होती है, वहां इनका विनाश भी होता रहता है। झीलों और तालाबों के खड़े पानी में और दरियाओं के बहते पानी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में भी ये बहुत संख्या में पाये जाते हैं। बहते पानी में खड़े पानी की अपेक्षा बहुधा अधिक होते हैं क्योंकि पहले बताये दो कारणों से खड़े हुए पानी के जीवाणु पर्य्याप्त संख्या में मर जाते हैं, या जब इनका झुण्ड बहुत बढ़ जाता है, तो भारी होने के कारण पानी में नीचे को बैठ कर पृथिवी का भाग बन जाते हैं।

मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों के अन्दर और बाहर भी ये जीवाणु पर्याप्त संख्या में उपस्थित होते हैं। शरीर के ऊपर वालों में उलझे हुए, नाक कान में धंसे हुए, होठों के किनारे पर चिपटे हुए, पाखानों और पेशाब के स्थानों पर बैठे हुए और कपड़ों से लगे हुए जीवाणु चारों ओर से घिरे रहते हैं। नाखून के नीचे, बग़ल के गड्ढों तथा अन्य ऐसे स्थानों पर जहां कहीं भी इनके भोजन की सामग्री उपस्थित होती है, वहीं ये जीवाणु अपना काम करते रहते हैं। पशु और पक्षियों के बाल और पैरों पर तो ये विशेषतः अधिक संख्या में मिलते हैं। जो मनुष्य, पशु या पक्षी जितने अधिक मैले रहते हैं उतना ही उन पर जीवाणुओं का आक्रमण अधिक होता है।

मनुष्य, पशु या पक्षी जो कुछ भोजन खाते, पीते या वायु में सूंघते हैं उनके द्वारा ही ये जीवाणु पेट के अन्दर पहुंचते हैं और वहां पर तरह २ की क्रिया करते हैं। यदि खाने, पीने और रहन सहन में पर्याप्त सावधानी की जावे तो इन हानिकारक जीवाणुओं से बहुत कुछ संरक्षा हो सकती है।

इस लेख के अगले भाग में जीवाणुओं के उपयोगी कार्यों पर प्रकाश डाला जावेगा।

समालोचक

लेखक—श्रीयुत हरिशंकर भट्ट बी० ए०

(१)

पढ़ना लिखना अधिक न आता।
पर मन में है यह अभिलाषा।
हिन्दी की कुछ सेवा करके, शीघ्र कमालूँ नाम।
पर हा! कैसे लेख लिखूँ मैं।
अथवा कुछ कविता ही करूँ मैं।
जिससे छप कर इधर उधर, कुछ होजावे मम काम।

(२)

कौन धनी को यार! फसाऊँ?
जिससे सम्पादक बन जाऊँ।
और प्रकाशित पत्र करा कर, कर दूँ मैं उपकार।
इधर उधर से लेख लिखालूँ।
संरक्षक से मूल्य दिलादूँ।
औ अपना यों नाम कमालूँ, भर हिन्दी-भण्डार।

(३)

आहा! कैसी युक्ति मिली है।
आशा कलिका शीघ्र खिली है।
पर पाठक! क्यों तुम्हें बताऊँ? तुम न कमालो नाम।
सुन लो किन्तु न नाम कमाना।
औ न किसी को यह बतलाना।
नाम कमाने की कुञ्जी है, है इसका बहु दाम।

(४)

कविता जिस की मैं देखूँगा।
अथवा उसका लेख पढ़ूँगा।
इधर उधर का दोष लगाकर, मेटूँगा सब शान।
गुण सारे मैं हड़प करूँगा।
औ लेखक को मूर्ख कहूँगा।
सिर्फ़ समालोचक बनने में, है 'हरि' जग में मान।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धूम्रास्त्र!

(ले०—श्री० दा० सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, औंध जि० सातारा)

युरोप के गत युद्ध में विषयुक्त धूम्र का उपयोग पहिले जर्मनी ने किया था, पश्चात् दोनों तरफ़ के दल धूम्रास्त्र का उपयोग करने लगे थे। धूम्रास्त्र का प्रयोग करना योग्य है वा अयोग्य, मानवी हित की दृष्टि से युद्ध में धूम्र प्रयोग किया जाय वा नहीं, यह प्रश्न दोनों राष्ट्रों के नेताओं को ही हल करना चाहिये। किसी एक राष्ट्र का निश्चय कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकता इसका कारण यह है कि, यदि एक राष्ट्र बड़ी सात्विक वृत्ति से युद्ध करने का निश्चय करेगा, और दूसरा राष्ट्र कूट-नीति का आश्रय करेगा तो पहिले का पराजय निश्चित ही समझना चाहिये।

वास्तविक रीति से देखा जाय तो बात यह है कि शत्रु के शस्त्रास्त्रों की अपेक्षा अपने शस्त्रास्त्र बढ़ कर ही रखने चाहिये। तथा शत्रु को राजनीति जानकर उनसे अधिक नीतिज्ञ बनने के विना कदापि अन्तिम विजय प्राप्त नहीं हो सकता। इस लिये ही वेद ने कहा है कि —

यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः ॥

अथर्व० १२। १। ६

"(मायाभिः) कुटिलताओं के साथ (मनीषिणः) बुद्धिमान् राष्ट्र धुरंधर (यां) जिस मातृ भूमि की (अनु अचरन्) अनुकूल सेवा करते हैं।"

"माया" शब्द का अर्थ "कुटिलता, टेढी चाल, कुशलता" है। इस का अर्थ दोनों प्रकार का हो सकता है। (१) मातृ भूमि की सेवा कुशलता के साथ करते हैं, अथवा (२) कुटिल नीति से भी प्रसंग विशेष में करते हैं। रामायण में जो रामचन्द्र जी ने अपनी मातृभूमि की सेवा की है वह कुशलता और सरलता के साथ है, परन्तु महाभारत में कृष्णचन्द्र जी का जो वर्णन है वह बता रहा है कि वहां कुटिल नीति से काम लिया गया है। अर्थात् ये दोनों मार्ग आर्यों में थे।

शस्त्रास्त्रों के प्रयोग के विषय में भी उक्त बात ही है। बड़ी तोप के साथ शत्रु का हमला होने लगा, तो छोटे बाणों से उसका प्रतिकार करना मूर्खता का काम है। इसी प्रकार विषमय धूम का प्रयोग शत्रु करने लगा तो उसके योग्य प्रतिशस्त्र युद्ध करने वाले राष्ट्र को अपने पास रखना ही चाहिये। इसी लिये वेद कहता है कि–

असौ या सेना मरुतः परेषाम्।
अस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना ॥
तां विध्यत तमसाऽप व्रतेन।
यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ॥

"हे (मरुतः) मरुतो! (या असौ) जो यह (परेषां सेना) शत्रु की सेना (स्पर्धमाना) युद्ध की इच्छा से (ओजसा) बल के साथ (अस्मान् अभि ऐति) हमारे पर धावा कर रही है। (तां) उस फौज को (अप व्रतेन) नियम को छोड़ कर (तमसा) अन्धकार से ऐसा (विध्यत) मारा कीजिये कि (मया) जिस से उन में से (अन्यः अन्यं) एक दूसरे को (न जानात्) न जान सके।"

इस मन्त्र का "मरुत्" शब्द "वीरों" का वाचक है। जो वीर युद्ध में मरने के लिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैयार होकर युद्ध भूमि में प्रविष्ट होते हैं उनको (म्रियंति इति मरुतः) मरुत् कहते हैं। तथा जो युद्ध के भयानक स्वरूप को देख कर रोते नहीं (मा-रुदंति) वे भी धीर वीर मरुत् कहे जाते हैं। इस प्रकार के वीरों को युद्ध भूमि में करने का उपदेश उक्त मन्त्र में कहा है।

"जो शत्रु का सैन्य हमारे ऊपर चढ़ाई करके आरहा है। उसको तमसास्त्र से ऐसा मारो कि जिस से उन में से एक दूसरे को पहचान न सके।"

यह तमसास्त्र और धूम्रास्त्र एक ही है। धुंवें से शत्रु सैन्य की ऐसी अवस्था करनी है कि उन में से कोई सैनिक दूसरे को पहचान न सके। यह रात्रि का वर्णन नहीं है। युद्ध दिन में होता हो अथवा शाम को होता हो, प्रकाश हो अथवा न हो, शत्रु सैन्य पर तमस् का अथवा धुंवें का प्रयोग करके ऐसी उन की अवस्था करनी है कि वे मूर्च्छित जैसे होजावें अथवा इतने घबरा जावें कि जिस से वे एक दूसरे को पहिचान न सकें।

मन्त्र में "अप-व्रतेन" शब्द है। वह भी यहाँ विचार करने योग्य है। उक्त शब्द का अर्थ "नियम छोड़ कर" ऐसा होता है। शत्रु की प्रबलता अथवा शत्रु की कुटिल नीति अधिक हानि की अवस्था में सर्व साधारण युद्ध नियमों को तोड़ कर भी युद्ध करके विजय संपादन करना चाहिये ऐसा उक्त शब्द का अर्थ देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है।

पूर्व मन्त्र का "मायाभिः" शब्द इस मन्त्र के "अप-व्रतेन" शब्द के साथ तुलना करने से भी उक्त भाव ही व्यक्त होता है। मायाजाल से तथा नियमों का उल्लङ्घन करके शत्रु को परास्त करना चाहिये। यह ही युद्ध नीति है। अस्तु।

इस प्रकार धूम्रास्त्र और माया युद्ध का उल्लेख वेद में है। इसका अधिक विचार पाठक करें।

वीर हैं॥

लेखक—श्रीयुत गयाप्रसाद "श्रीहरि"।

(१)

ले गये लालची लूटि विदेशी सभी मणिमाणिक कञ्चन हीर हैं।
धीर धरें किमि कोटिन भारत लाल मरें इक भूंख की पीर हैं॥
बीत गई सदियां हम हाय सहीं परतन्त्रता पञ्जर भीर हैं।
"श्रीहरि" और न पाठ पढ़ें नृपभक्ति का कीट नहीं हम वीर हैं॥

(२)

कहें हम कैसे व्यथा की कथा झरना से झरें इन नयननीर हैं।
सुख सम्पति लूट्यो विदेशिन आप बने हम हाय अनोखे फकीर हैं॥
सहयोग वियोग को थोग ही एक हरे हमरी गहरी एक पीर हैं।
लघु लालच नींद न लोचन है अब जागि उठे सब भारत वीर हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीतामृत।

अनुवादक—श्रीयुत् प्रो० दामोदर तामसकर एम ए एल टी।

परिच्छेद ४था योगी का महत्व।

प्रातःकाल को सौम्य रक्त वर्ण सूर्य निकला और उसकी सुनहरी किरणें चारों ओर फैलीं। उस प्रकाश में खड़े रह मैंने सूर्य नारायण को नमस्कार किया और प्रातःकाल के नित्य कर्म निपटाये। "आज मेरे आयुष्य का सुवर्ण दिन है—आज से मेरे चरित्र को एक नयी दिशा प्राप्त होगी—योगी बन जाने पर लोगों का सिर मौर बनूंगा अथवा बनमें ही रहके ईश्वर में लीन हो जाऊंगा"। इस प्रकार आनंददायक विचार करते विवेक स्वामी के प्रकाश से प्रकाशित गीताश्रम के चौक में जा खड़ा हुआ।

सिंहासन पर स्वामी जी समाधिसौख्य में मग्न थे। उनके नेत्र अधखुले थे। उनके मुखसे सौम्य परन्तु तेजः पुंज किरणें निकल रहीं थीं और सब चौक पहले जैसा ही प्रकाशित था। इस समय स्वामी जी की मूर्ति बहुत ही मनोहारिणी दीख रही थी। इस कारण मैं उन्हें आपाद मस्तक देख रहा था। सूर्य के चारों ओर उसके आकर्षण से जिस प्रकार ग्रहमाला घूमती है, उसी प्रकार मेरी ज्ञानेंद्रिय की सब शक्ति उनके अतुल सौंदर्य से आकर्षित होकर उनके चारों ओर घूम रही थी। मैं उनके आगे इकटक देखते हुए खड़े २ उनके स्वरूप का अमृत पी रहा था। ज्यों ज्यों उनका आनन्द पढ़ता त्यों त्यों वे अधिक सुंदर दीखते थे, और उसके साथ मेरा हृदय प्रफुल्लित होकर उठने लगता था।

जल्द ही स्वामी जी ने आंखें खोलीं, पर वह मुझे मालूम न पड़ा। वे जब गारहे थे, तब मुझे मालूम हुआ कि उन्हों ने आंखें खोली हैं। स्वामी जी गा रहे थे :—

योगी का आनंद जानले। योगी का आनंद॥ध्रु०॥
विद्वान् नाना कला निपुण को वह ही विद्यानंद॥१
सगुणोपासक-कीर्तिगायकों को वह ब्रह्मानंद॥२॥
लगे वही श्रुत्यंतपारगों को सच्चा स्वानंद॥३॥

मेघ के दर्शन से चातक अथवा मयूर को, अथवा चंद्रदर्शन से चकोर को जितना आनन्द न होता होगा, उतना आनंद स्वामी जी का गायन सुन कर मुझे हुआ। उनके स्वरमाधुर्य और अर्थ सौष्ठव से मेरा हृदय लहरें खा रहा था। अचानक मेरे सिर में कुछ विचार आये और मैं स्वामी जी के चरणों पर गिर पड़ा। मनो भाव से मुझे जल्द ही योग मार्ग दिखलाने के लिये उनसे विनती करने लगा, स्वामी जी ने मुझे समझाया बुझाया और मैं अपने स्थान पर जा बैठा।

फिर उन की आज्ञा पाकर मैंने घर से निकलने के समय से आज तक का पूरा हाल बतलाया। बीच बीच में जहां कहीं मैं भूल जाता, वहां वहां वे ऐसी रीति से प्रश्न कर याद दिलाते कि मानों उन्होंने ही वे सब बातें भोगी होंय। इस से उन का त्रिकाल ज्ञान सिद्ध हो गया। पूर्वेतिहास बतलाने पर मैंने फिर हाथ जोड़ कर विनती की "महाराज! योग मार्ग जानने की मेरी उत्कट इच्छा आप को मालूम है ही। आप के प्रथम दर्शन से और इस पद्य से मेरा मन बहुत ही उत्तेजित हुआ है और योग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्ग का ज्ञान पाने की उत्कण्ठा बड़ी भारी है। आप की योग सिद्ध तेजः पुंज मूर्ति और योग विशिष्ट वाणी देखकर मेरा ऐसा निश्चय हो गया है कि आप के सिवा इस बात का ज्ञान देने वाला अन्य कोई गुरु मिलना कठिन है, इस लिये मैं आप की शरण में शिष्य बुद्धि धरकर आया हूं। अब मुझे कृपा कर मार्ग दिखलाइये।" यह अखीरी वाक्य बोलते समय "शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्" के भावों से मेरा हृदय उत्तंभित हो गया। हाथ जोड़ कर स्वामी जी के बोलने की ओर मेरे कान लगे थे। गाड़ी की टिकट मिलने के पहले लोगों की आंखें जिस प्रकार खिड़की की ओर लगी रहती हैं, उसी प्रकार मेरी इन्द्रिय शक्तियां स्वामी जी के वचन की राह देख रही थीं।

"शाबास! बच्चा, शाबास! गीता का पठन हजारों करते हैं पर उस से सच्चा मार्ग प्राप्त करने वाला सिर्फ तूही दीखता है। गीता का सारसर्वस्व यानी योग! यह केवल पूर्व पुण्य की बात है कि योग की ओर मनोवृत्ति झुके, उसका ध्यान लगे, और उस की प्राप्ति के प्रयत्न में मन लगे, तेरा पूर्व पुण्य बहुत भारी होना चाहिये, नहीं तो मेरी भेंट न होती। बच्चा! मनुष्य जिस बात के लिये काया, वाचा, मनसा से प्रयत्न करता है, उस की सिद्धि उसे कभी न कभी होती ही है। योग के विषय में तेरा श्रवण और मनन बहुत कुछ होचुका है, और अब तुझे उसका नित्य ध्यान लगा है। यानी तू उस के ज्ञान की सीढ़ी के पास पहुंच गया है। सद्विषयों के ध्यान से उन की प्राप्ति होती है, परन्तु उससे काम उत्पन्न नहीं होता बल्कि निष्कामता बलवती होती जाती है। इस लिये असद्विषयों के कारण होने वाला नाश सद्विषयों के ध्यान से होने नहीं पाता" स्वामी जी अब किसी दूसरे विषय की ओर झुकेंगे ऐसा उनके थोड़ी देर चुपचाप रहने से जान पड़ा। इस शंका को दूर करने के विचार से मैंने उन्हें पूछा भी। उनका दयालुत्व, उपदेश करते समय उल्लसित वृत्ति और सौम्य मुद्रा देखकर उनसे बोलने के लिये मुझे हिम्मत आगई थी। मैंने कहा, "महाराज! असद्विषयों से होने वाले नाशों की परंपरा भी भगवान् ने—

ध्यायतो विषयान् पुन्सः संगस्तेषूपजायते।

"यहां से आगे के दो श्लोकों में जो दी है, वही है ना?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया "ठीक पहिचाना। विषयों का ध्यान लगे तो उनकी प्राप्ति भी (संग) होवेगी जरूर, परन्तु उस प्राप्ति से अगर काम (वासना) बढ़ने लगे तो उस विषय को असद्विषय कहना चाहिये। नाश का मूल वासना है। वह कभी भी तृप्त नहीं हो सक्ती। पाप भीरू पुरुष को भी यह जबरदस्ती पाप करने को प्रवृत्त करती है। "स्वधर्मे निधनं श्रेयः" (अपने धर्म का पालन करते समय मरण भी प्राप्त हो तो श्रेयस्कर ही है) का उपदेश करने पर अर्जुन ने स्वानुभव से यह प्रश्न किया :—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

हे कृष्ण! इच्छा न रहते भी किसी से करने के लिये लाचार किया हो, इस प्रकार पुरुष पाप का आचरण करता है। ऐसा बलवान् यह कौन है?

जिन्हें बीज और भूसी पहिचान कर उन्हें अलग अलग करने की शक्ति है, वे चतुर पुरुष भी कभी कभी बीज को छोड़ भूसी ही छांट कर रखने लग जाते हैं। उन्हें किस के कारण यह भ्रम होता है। कीचड़ में फंसे पैर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निकालने के लिये हाथ का सहारा लेने वाले भी वहां फंस जाते हैं। उसी प्रकार पाप से बचने के लिये प्रयत्न करने वाले को फिर से पाप में डुबा देने वाला यह बलवान् कौन है ?

"इस पर श्रीभगवान् ने "वासना" कह कर इस प्रश्न का उत्तर दिया है" और आगे उसका वर्णन इस प्रकार है :—

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येन मिह वैरिणम् ३.३६.
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथा दर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥ ३.३७.

रजोगुण से उत्पन्न होने वाले ये अतृप्त और अत्युग्र काम और क्रोध इस लोक के वैरी हैं। जिस प्रकार अग्नि धुएं से, दर्पण मैल से अथवा गर्भ झिल्ली से वेष्टित रहता है, उसी प्रकार ज्ञान इनसे वेष्टित है। ये रजोगुण से उत्पन्न हुए हैं, तथापि तमोगुण का परिणाम यानी मोह इनसे उत्पन्न होता है उन्हें नीच शत्रु समझ कर अगर कोई "नीचमलपप्रदानेन" के न्याय से वश करना चाहे, तो वे कभी भी वश में न आवेंगे। यही बतलाने लिये उन्हें "महाशन" कहा है। कामरूपी शत्रु का महाशन-त्व कई जगह पर वर्णित है।

न जातु कामः कामाना मुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥५५.४९.
आदिपर्व

प्रज्वलित अग्नि में स्निग्ध (घी तेल वगैरः) डाल कर उसे बुझाना जितना ठीक दीख पड़ेगा उतना ही काम को (वासना की) उपभोग से तृप्ति करना ठीक होगा। ज्यों ज्यों इच्छितप्राप्ति होगी, त्यों त्यों काम बढ़ता ही जावेगा।

किम्बहुना—

यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः।
नालमेकस्य तत्सर्वं मिति मत्वा शमं व्रजेत् ॥
॥ विष्णु पुराण ॥

तमाम पृथ्वी का सब अनाज, सुवर्ण, पशु, स्त्रियां वगैरः पदार्थ अगर अर्पण किये जावें तो भी वे अकेले काम को काफी न होंगे। उनसे उसका फलाहार भी पूर्ण न होगा! क्योंकि चौदह भुवन जिसके हाथ में हैं उसके एक ग्रास के तुल्य भी क्या यह एक भुवन हो सक्ता है ? इस लिये यह दान से वश नहीं हो सक्ता। कपटी मनुष्य के समान अधिक बलवान् होने के कारण नाश की ओर ही खींच ले जाता है। इस लिये उसके बारे में बेपरवाह रहना योग्य नहीं, बल्कि उसका समूल नाश करना ही ठीक होगा। "महापाप्मा" विशेषण से उसकी अत्युग्रता दर्शित है। इस कारण साम और भेद से भी वह वशीभूत न होगा। इस लिये दंड से उसे अपने हाथ में लाना आवश्यक है।

"इन वृतान्तवत् दुष्ट काम और क्रोध का नाश हुए सिवाय ज्ञानकी सौम्य और सुखकारक संगति का लाभ नहीं हो सक्ता। काम-क्रोध का परिकोट गिरा कर ही ज्ञान राज की भेंट करनी चाहिये। ज्ञानकी भूमिगत अपार सपत्ति हस्तगत करने के लिये उस पर बैठे हुए काम क्रोध रूपी भुजंग अथवा पिशाच पहले नष्ट करने चाहियें। भूमि दूर करने से ही चावल दीख पड़ते हैं।

"तृष्णा, मोह, दंभ और माया ये काम क्रोध के भृत्य है। उनके द्वारा ये वैराग्य, उपशम संतोष, और धैर्य का नाश करते हैं, और आनन्द और सुख को रसातल में पहुंचाते हैं। और तापत्रय की अग्नि लगा कर जीवको "त्राहि त्राहि" करने लगते हैं।

"दुर्ग के सिवा जिस प्रकार राजा बलहीन है, उसी प्रकार इंद्रियतट से युक्त मनो बुद्धि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपी दुर्ग में अगर इन्हें न रहने दिया जाय तो ये भी बलहीन हो जावेंगे। इस दुर्ग के ही प्रथम वश कर लेने से उन्हें कहीं आश्रय न मिलेगा। फिर वे कुछ न कर सकेंगे। सारांश, नाश कारक काम क्रोध की जोड़ी जिनसे बलवत्तर होगी ऐसे अद्विषयों का ध्यान तुझे नहीं है, बल्कि योग के समान सद्विषय में तू लगा है। इस से तेरी आगे सुस्थिति ही रहेगी।

"योग का महत्व गीता में इस प्रकार वर्णित है":—

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिनोऽपिमतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ६.४६.

हे अर्जुन! तू योगी ही हो क्योंकि उसकी योग्यता तपस्वी, ज्ञानी, अथवा कर्मी इन सब से अधिक है।

"जिसकी प्राप्ति के लिये तपस्वी यम नियम और प्राणायामादि तप करते हैं, क्लेशकारक आसनादि हठ योग करते हैं, और उलटा लटका लेना, पंचाग्नि साधन करना, अथवा एकही पैर पर खड़े रहना इत्यादि बातों से शरीर सुखाते हैं; अथवा कर्मीव्रत, नियम, उपवासादि नित्य नैमित्तिक कर्म जिसको मिलने के लिये करते हैं, उसकी समता योगी पा जाता है। इससे यह समझना चाहिये कि योग का महत्त्व बड़ा भारी योग ही गीता का उपदेश है। गीता ने पार्थ को योगी बनाया। अथवा यों कहो, प्रत्येक को योगी बनाने के लिये ही गीता का अवतार हुआ है।

"गीता ने क्या किया और योग किसे कहते हैं ये बातें तुझे अब सवेरे बताऊंगा। तब तक तू बतलाए हुए विषयों के बारे में विचार कर" इतना कहकर वह चुप रहे।

मेरा मन पीछे देखने लगा। मुझे योग का ध्यान लगने के कारण मैं ढूंढ़ने लगा। भागवत की कृष्णावतार कथा की योग माया और योग शक्ति का ख्याल मुझे आया और उन्होंने ही मुझे योगी बनने के लिये कहा। योग शक्ति से आकाश में उड़ सकते हैं, इच्छानुरूप प्रकट अथवा गुप्त होना, त्रैलोक्य को इधर के उधर कर देना, विश्वामित्र के समान नयी सृष्टि निर्माण करना, इत्यादि असामान्य कृत्य करने की शक्ति आती है। इस प्रकार अनेक जगह बतलाये हुए योग शक्ति के प्रभाव मेरी देह में आगये तो मैं अग्रभाग्य हो जाऊंगा इसी ख्याल से मुझे योग का ध्यान लगा। मैं अद्वितीय शक्तिमान् हुआ तो अनेक एम० ए० सी० ए० मेरी सेवा में लगे रहेंगे, अनेक राजा महाराजा मेरा सम्मान करेंगे, राजगुरु अथवा जगद्गुरु की पदवी भी प्राप्त कर लूंगा, इस आशा से मेरा मन योग सिद्धि के प्रयत्न की ओर झुका, ऐसे विचार मेरे दिल में चल रहे थे, उसी समय विवेक स्वामी के गायन का स्वर मेरे कानों में घुसा। वे गाते थे:—

पद्य

सावधान मन में ॥ बच्चा ॥ ध्रु० ॥
आशा डाकिन मार्ग खड़ी है,
निगल जाय क्षण में ॥ १ ॥
तब तदुदर से मुक्ति मिलाने,
युक्ति नहीं सच में ॥ २ ॥
उछाल लेतू उस पर पद धर,
सिद्धि मिले जिस में ॥ ३ ॥

"सच है। योगी बनकर भी मैं वासना, तृष्णा, इत्यादि ही की वृद्धि करूंगा? क्या ही आश्चर्य की बात! सद्विषय के लिये प्रयत्न करने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर भी उसे असद्विषय का स्वरूप देने की ओर मेरी प्रवृत्ति हो।" ऐसे विचार करते करते मैं माध्यान्ह स्नान की तैयारी में लगा। मेरे मन में उत्कण्ठा लगी रही कि दूसरा दिन जल्द निकले। क्योंकि मुझे स्वामी जी योग की परिभाषा दूसरे दिन बतलाने वाले थे। दूसरे दिन के निकलने तक मेरे मन में कितने विचार आये गये होंगे, इसका बतलाना कठिन है। परन्तु पिछले चरित्र से और मेरे विचारों की दिशा से उनकी कल्पना पाठकों को हो सक्ती है। इस लिये यह परिच्छेद यहीं समाप्त करता हूं।

रुक्मिणी हरणनाटक

ले०—श्री० मेधाव्रत जगजीवन

अंक दूसरा—प्रवेश पांचवां

कृष्ण—(प्रवेश कर) आज भारत का गगन मण्डल अपने काले बादलों द्वारा बिजली चमका कर गरज रहा है। प्रकृति देवी वायु द्वारा गरम निश्वास ले रही है। भारत के समुद्र क्षोभ के मारे तटों के साथ सिरों को टकरा रहे हैं। पर्वत लज्जा से मुंह ढांक रहे हैं। क्योंकि आज भारतवासियों ने डरपोक कायर बनकर अपने ही भाइयों को मारने के लिये एक विदेशी विधर्मी राजा को मदत के लिये बुलाया है।

शिशुपाल—(दूसरी ओर से प्रवेश कर) हमारे विरोधाग्नि के तृण समान कृष्ण! अब तू मरने को तैयार हो जा। तेरा साक्षात् कालस्वरूप कालयवन आ पहुंचा है।

कृष्ण--प्रभुता तथा मनुष्यता के धर्म पर मरने या मारने के लिये मैंने जन्म ही लिया है। तथापि-शिशुपाल! तू एक बार मेरी ओर देख और कह कि मैं तेरा कौन लगता हूं?

शिशुपाल--मेरी मासी का पुत्र-भाई।

कृष्ण—सो भाई! हम भाई भाई आपस में लड़ते रहे, मरते या मारते रहे। यह बात तुम जैसों के लिये अनिवार्य तथा उचित थी, किन्तु जब तुम्हारा कुछ न चला, तब भाइयों पर वैर लेने के लिये अपने बाप दादों की इस पवित्र भारत भूमि के मस्तक पर कालयवन जैसे विदेशी विधर्मी म्लेच्छ के चरण चढ़ाने का तुमने जो अमंगल आचरण किया है उसके परिणाम का कुछ विचार करना चाहिये था।

शिशुपाल—हम परिणाम का विचार करें इसके पहिले तुम्हें कारणों का विचार करना चाहिये था। हमारा विरोध छोड़ देना चाहिये था तथा मेरा प्रतिबन्धक रुक्मिणी साथ का सम्बन्ध तोड़ देना चाहिये था।

कृष्ण—तुम्हारे साथ विरोध करके क्या मैं विशेष राज्य लोभ के लिये तुम पर लड़ाई ले आया था? तुम्हारे राज्य कार्य में ज़रा भी माथा मारने या दूसरों की स्वतन्त्रता छिन लेने के लिये आया था? कभी नहीं। बल्कि ऐसी खूँखार हिंसा भरी लड़ाईयों से अपनी तथा निर्दोष प्रजा की शान्ति रक्षा कायम रखने के लिये मैंने एकान्त में द्वारका राज्य स्थापन किया तो भी उलट तुम मुझ से द्रोह छोड़ते ही नहीं-रहा रुक्मिणी का सवाल! वह तो—

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्॥"

जो लोग मुझे जिस भाव से भजते हैं उन को मैं भी उन्हीं भावों से भजता हूं। यदि रुक्मिणी मुझ को नहीं, किन्तु तुझे चाहती होती तो मैं कभी तुम्हारे बीच में ही न आता। लेकिन यह तो तू उलट हमारे ही बीच में आता है और कन्या के स्वयंवर के पवित्र नियम पर बलात्कार का कलङ्क लगता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिशुपाल—समझा समझा! तूने तेरे मामा कंस को मारा और वैसा कर महाराजा जरासंध की पुत्रियों को फर्जियात वैधव्य प्राप्त करा उसके साथ विरोध की अग्नि प्रदीप्त की। हमारे साथ सत्तर सत्तर वार लड़ने के लिये आते हुए तुझे संकोच न लगा।

कृष्ण—कंस को मारा। तुम से लड़ा किन्तु वह किस लिये? कुछ मेरे स्वार्थ के लिये नहीं, किन्तु अधर्म जुल्म तथा अन्याय में से मनुष्यता को बचाने के लिये? नहीं तो कंस को मारने के बाद मेरे नाना उग्रसेन तो मुझे आग्रहपूर्वक मथुरा का राज्य दे देते थे। तथापि मैंने परराज्य की जरा भी दरकार न की। जब कि तुम अपनी राज्य मर्य्यादा तथा सत्ता से संतोष नहीं मानते थे। प्रत्युत दूसरे के राज्य को निगल जाने तथा प्रजा को पराधीनता में विदलित कर त्रास देने के लिये तय्यार हो रहे हो उन के सामने मुझे बचाव ही करना पड़ता है।

शिशुपाल—पर क्या कंस तथा हम तेरे निकट के सम्बन्धी नहीं? सजातीय नहीं? अब भी सम्राट् जरासन्ध के आधीन होकर मिल जा जिस से हमारे साथ के सब विरोध का खातमा हो जायगा।

कृष्ण—तुम धर्म राज्य स्थापने तथा सकल प्रजा को समान न्याय तथा स्वातन्त्र्य प्रदान करने के लिये अगर तय्यार हो तो मैं तुममें मिल जाने के लिये तो क्या? किन्तु इहलोक तथा परलोक में तुम्हारा उद्धार करने के लिये भी तय्यार हूं। बाकी रही जाति और सम्बन्ध की बात! वह भी परमात्मा के सर्व व्यापक न्याय, नियम के अनुसार सुरक्षित रखनी चाहिये। स्वार्थ की अपेक्षा जातीयता श्रेष्ठ है, किन्तु जातीयता की अपेक्षा मनुष्यता की किम्मत हजार दर्जे श्रेष्ठ है। जातीयता तथा सगपन यदि मनुष्यता या प्रभुता के विरोधी हों तो ऐसी जातीयता या सगपन के क्षुद्र तलावों को मनुष्यता के महासागर में ही लीन हो जाना चाहिये जिससे स्वार्थ घमंड के सड़े हुए स्थान में प्रभु के सर्वव्यापी प्रेम का पारावार उछल पड़े।

शिशुपाल—हमारा और तेरा यहीं ही मेल मिलना मुश्किल है। मनुष्यत्व या ईश्वर हमारा स्वार्थ साधने को यदि मददगार होते हों तो हमको उससे काम है। नहीं तो ऐसे झूठे मनुष्यत्व या ईश्वर का भी हमें काम नहीं।

कृष्ण—तो प्रभु पिता का मनुष्यत्व का कुदरती कानून तुम्हारे पाखंड तथा घमंड का सर्वनाश कर खुशी से नहीं तो जबरदस्ती से तो तुमको स्थान पर लावेगा ही।

[रुक्मैया, कालयवन और प्रारब्ध प्रवेश करते हैं]

रुक्मैया—वह देखा जायगा।

प्रारब्ध—(स्वगत) किया प्रारब्ध का होगा।

कालयवन—(शिशुपाल को पकड़ कर) यह है कमवक्खत किरशन अभी मार डालूं।

प्रारब्ध—(स्वगत।) मार डाल। कुछ काम का नहीं मुफत का माल है।

रुक्मैया—नहीं महाराज! ए तो अपना मित्र शिशुपाल छे पेलो सामे उभो तेशनु कृष्ण।

कालयवन—यह जंगली कौनसी जबान बकता है।

प्रारब्ध—गुजराती (रुक्मैया से) तमने जंगली कीया।

रुक्मैया—आपणे जाणिये के हशे।

कालयवन—कुछ भी समझमें नहीं आता है।

रुक्मैया—ए तो में ह्यु के के के।

कालयवन—कौवा के नाई यह के के के क्या (चाटा मारता है)।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुक्मैया—आपणे जाणिये के हशे।

प्रारब्ध—(स्वगत)। इस विदेशी विधर्मी को अपने बनाने गये तो उलट ही लप्पड़ खाते रहे और काका मिटकर भतीजे हो गये।

रुक्मैया - आपणे जाणिये के हशे (कालयवन से) हमको हिन्दुस्तानी बोलते नहीं आवड़ती है।

कालयवन—(प्रारब्ध से) अबे बम्हन! यह आवड़ती क्या आवड़ती?

प्रारब्ध—वह हिन्दुस्तानी नहीं जानता है सो ऐसा कहता है (स्वगत) हम तो अच्छी प्रकार हिन्दी भाषा बोल कर काम चला लेते हैं। श्रीकृष्ण के साथ कौमी तालीम पाई है न?

कालयवन—ये तुम्हारी गुजराती, मराठी, बंगाली आदि अलग २ सैंकड़ों जबानें कौन समझेगा? लेकिन हिन्दुस्तानी ही एक ऐसी जबान है जिसको सब हिन्दुस्तानी लोक समझ सकते हैं और इस लिये हम विदेशी लोक भी उसको पढ़ते हैं मगर अफसोस है कि तुम लोग अपनी एक कौमी जबान को नहीं जानते और मान भी नहीं देते।

प्रारब्ध—मैं कई दफे कहते २ थक गया कि भागी टूटी भी हिन्दी बोलते रहो सो हमारी मखोल उड़ाते रहे मखोल।

!! और गुर्जर साक्षर बनते रहे। मगर अबतो समझ गये न? कि एक राष्ट्रीय भाषा हिन्दी बिना अपना गुजारा नहीं?

रुक्मैया—आपणे जाणिये के हशे।

कालयवन—अच्छा बतलाओ कि कृष्ण कहां है?

रुक्मैया—ए प-प पेलो।

कालयवन—वह कृष्ण? बिलकुल लड़का है?

प्रारब्ध—(स्वगत) लड़को नहीं है लड़को लेकिन वज्र को कटको है कटको?

कालयवन—मैं जब उसको मारूंगा तब हिन्दुस्तान का आधा मुलख लूंगा।

शिशुपाल—रुक्मैया—कबूल; मंजूर।

कृष्ण—रुक्मीदेव! शिशुपाल! तुमने यह तुम्हारा घमंडी उन्नति का प्रवाह, प्रेम और धर्म की गंगा के बदले अपने देशबान्धवों के ही रक्त की नारकी वैतरणी में से लिया है उसके लिये शरम है। तुम जब अपने भाइयों के सामने अशक्त सिद्ध हुए तब तुमने अपना राज्य तथा सत्ता को इस विदेशी विधर्मी के चरण में रख कर उसको अपना गुरु संचालक तथा सहायक बना मेरे सामने बुलाया है। यह तुमने भयंकर देश द्रोह किया है, तथापि याद रखना कि कृष्ण अपनी हयाती में तो इस तुम्हारी सर्पिणी जैसी द्रोही जहरीली नीति का जहर भारत माता को नहीं चढ़ने देगा। किन्तु यदि तुम्हारे पाप से यह विद्रोह नीति जारी रही तो ऐसे कालयवन सचमुच आखिर देशके कालरूप ही सिद्ध होंगे।

कालयवन—क्या कहता है?

रुक्मैया—मारो पकड़ो। तुमको गालियां देता है।

कृष्ण—(स्वगत) करोड़ों यवनों के विरुद्ध लड़कर मनुष्य संहार करने की अपेक्षा मैं इस एक काल यवन को ही अपने पीछे भगाकर काल का ग्रास बना दूं। (भागता है।)

कालयवन—डर कर भागा, अभी पकड़ लूंगा। (पीछे दौड़ता है।)

प्रारब्ध—मैं प्रारब्ध भी तुम्हारे पीछे पड़ूंगा। (पीछे दौड़ता है।)

[दौड़ा दौड़ी।]

कालयवन—मरणिया होकर भागता है।

प्रारब्ध—अरे हरणिया है हरणिया।

कालयवन—चल बे बम्मन।

प्रारब्ध—तुम्हारा कांधिया बनने को पीछे आता हूं।

राम बोलो भाई राम।

[प्रस्थान।]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छोटा भाई

लेखक--"नयन"

जननी के जिस गर्भाञ्चल में, तुम ने किया निवास।
उसी कोख में, उसी दूध से, कर पूरे नौ मास-
तुम्हारे चरण गहे आई!
मिलेगा कहाँ सगा भाई?
खेल समय भी मान न मारो, तजि दो निज अनरीत।
सरल हृदय है-विलख जायगा, कर दो उसकी जीत-
चित्त को इस विधि समझाई-
मिलेगा कहाँ सगा भाई?
अगर किसी दिन शत्रु तुम्हारे, तुम्हें देंय ललकार।
तो वह आकर टूट पड़ेगा, ले नङ्गी तलवार-
प्राण की माया विसराई!
मिलेगा कहाँ सगा भाई?
कौन जन्म का पुण्य उदय है, कहलाये दो भ्रात!
विन लक्ष्मण के रामचन्द्र की, विजय न होती तात?
करें क्या ऋद्धि सिद्धि पाई।
मिलेगा कहाँ सगा भाई?

"हिन्दी भाषा और शृंगार रस"

लेखक श्रीयुत "धनञ्जय"।

संसार परिवर्तन शील है। सब समय एकसा नहीं जाता। जिस ओर समय की प्रवृति होती है, संसार का आदर्श भी उसी ओर झुकता है। मनुष्य समय तथा परिस्थिति का गुलाम है। उसके भाव सदा समयानुकूल होते हैं। समाज-बन्धन की शृंखला उसके पैरों में पड़ी है; वह स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता। ऐसे समय में मनुष्य के मनोगत विचार तथा भाव भी सर्वथा स्वतन्त्र नहीं हो सकते उन पर भी समय का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है।

* * * *

पृथक् पृथक् देश-वासियों के भावों में भी पार्थक्य होता है। परन्तु हां मानव-जीवन के नैतिक-नैमितिक तथा नैयतिक विचार निकटतम एक से होते हैं। हाँ न्यूनाधिक्य अवश्य होता है। मनुष्य के व्यावहारिक जीवन के भावों के तरल-तरंग ही उसके जीवन को शुद्ध तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वच्छ बनाते हैं।

* * * *

कुछ लोगों का विचार है कि समय की प्रगति अब बदल गई। कविता के स्थान पर विज्ञान का सिक्का जम गया। कविता-युगका ह्रास तथा विज्ञान-युग का विकाश हुआ। कविता मूर्खों को मोहित करने का एक जादू है। ज्यों ज्यों सभ्यता का विकाश होता जायगा; कविता का ह्रास होता जायगा। अब इसकी आवश्यकता भी नहीं है। इत्यादि.....

जिन नायिकाओं के कच-कुच कटाक्षों का वर्णन कवियों ने बड़ी रोचकता से किया है। जिनके आधार पर बड़े बड़े काव्य लिख डाले हैं; वही नायिकायें आज वैज्ञानिक युग में मांस तथा खून की बनी हुई पुतलि हैं। उनमें कोई स्वाभाविक सौन्दर्य नहीं। प्रकृति उनको सुन्दर बनाने में योग नहीं देती।

ख़ैर जो हो मुझे इस विवाद से कोई मतलब नहीं और न मुझे इस विषय में इस समय कुछ विशेष कहना है, परन्तु मौन क्यों ? इतना अवश्य कह देते हैं कि "उन्होंने मानव जीवन के वास्तविक विकाश का रसास्वादन नहीं किया; उनका हृदय शुष्क है; उनके द्वारा संसार से सहृदयता का विनाश तथा निष्ठुरता का विकाश हो रहा है; उनके हृदय में प्रेम की वह लहलहीलता नहीं है जो संसार को सौरभित करदे। वे जीवन संग्राम में विजयी नहीं होसकते क्योंकि उनके हृदय में सहृदयता के साथ साथ धैर्य का भी विनाश हो चुका है। उनका संसार में रहना निरर्थक है, क्योंकि वे सांसारिक व्यवहारों से उदासीन हैं। उनका हृदय उल्लसित नहीं वरन पूर्णतया संकुचित है। वे संसार-गढ़ बनाने के लिये ईंटे तथा पत्थर ढोने वाले मज़दूर हैं वे कारीगर नहीं जो कि गारा देकर उन्हें जमायें।"

पाठकगण ! अच्छा अब उन लोगों की ओर दृष्टि कीजिये जोकि इस वैज्ञानिक युग में भी कविता की प्रधानता तो अवश्य मानते हैं, परन्तु उसे शृंगार रस विहीन कर लँगड़ी बनाना चाहते हैं। उनके संकीर्ण दृष्टि कोष में शृंगार रस समाज को आदर्शच्युत कर कलुषित बनाता है। अपने विचार-वायु से हृदय कली को प्रस्फुटित करने वाले वे महा-कवि, जिन्होंने कि शृंगार रस द्वारा प्रेम की सूक्ष्मतम दशा तक का मनोग्राही चित्र खींच कर अनुपम अनुभव कराया है उनकी भ्रमोत्पादक दृष्टि में व्यसनी तथा कुविचारी हैं। क्या कहें कभी कभी तो ये आदर्शवादी आदर्श भ्रष्ट होने का दोष उन्हीं प्रकृति प्रेमी सरस हृदयी कवियों के मत्थे मढ़ते हैं। ठीक है अब गुण ग्राहिता का समय नहीं रहा इस कृत्रिमयुग में कृत्रिम विचारों का ही आदर है। वसंत के बाद पतझड़ भी होता है। हमारी भाषा के आज वे ही दिन है। अब बिहारी, देव, मतिराम और पद्माकर के समान रसिक भौंरे हमारे साहित्योद्यान में नहीं रम-रहे हैं।

* * * *

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार।
अब अलि ! रही गुलाब में, अपत कटीली डार॥

यह दोहा आज दिन सार्थक होरहा है।

किन्तु शोक है कि यदि ये ही विचार रहे तो हमारे साहित्योद्यान में वसंत का पुनरागमन न होगा। सदैव पतझड़ ही रहेंगे।

आज कल जिन संकीर्ण विचारों के आधार पर काव्यों की उत्तरोत्तर सृष्टि होती जारही है; क्या ये विचार समाज में सहृदयता का प्रचार कर सकेंगे ? क्या इनसे सुरुचिका संचार हो सकेगा। क्या ये सखी टहनियाँ साहित्यक्षेत्र में पल्लवित तथा कुसुमित हो सकेंगी ? क्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसिक भौंरे इन पर कभी भी दृष्टि पात करेंगे ? क्या इनके द्वारा लोक तथा परलोक का अनुभव हो सकेगा ? क्या ये कभी भी किसी व्यथित हृदय को शान्त कर सकेंगे ? क्या इनके द्वारा कभी भी पवित्र प्रेम की ओर प्रवृति हो सकेगी ? क्या ये जीवन को विनोद सागर में गोते खिलायेंगे।

जीवनका सबसे बड़ा विकाश कविता है। एक सच्चा कवि प्रकृति प्रेमी है आदर्शवादी नहीं। वह मानव हृदय के अकृत्रिम विचारों का सच्चा चित्रकार है। उसे दूसरों की सहानुभूतिकी आवश्यकता नहीं।

* * * *

उस के विचार क्षणिक नहीं वरन् चिरस्थायी हैं। प्रकृति की साधारण वस्तुयें भी उसके हृदय पर अपना प्रभाव जमाती है। प्रकृति के कण कण में उसे अपना ही रूप प्रति-भासित होता है। वह स्वतः शान्त तथा शान्ति प्रिय है। उसका हृदय संक्षोभ्य है। उसकी कविता आदर्श का अनुसरण नहीं करती। वरन आदर्श होती है। तब भला यह कैसे कहा जा सकता कि वह कविता कुविचार प्रचार करने के लिये करता है। वह जिन उक्तियों को नायिकाओं के अङ्गों पर घटित करता है। कुविचारिता नहीं वरन् तर्क की चरम-सीमा दृष्टिगोचर कराती हैं। वे उपमायें तथा उत्पेक्षायें जिन का कि वह अनुसरण करता है उसके वायुगामी विचार-स्यन्दन-प्रगति का निदर्शन कराती हैं। वह शृङ्गाररसमयी भाषा को अलङ्कारों द्वारा भद्दी नहीं बनाता है। वरन् उसके अलंकृत हृदय से अलंकृत-पद-प्रवाह प्रवाहित होते हैं। आदर्श भ्रष्टता का दोष उसके मत्थे मढ़ना सरासर अन्याय है।

* * * *

जब समाज उन्नति की चरम सीमा तक पहुंच जाता है तब वह आदर्श वादी नहीं वरन् आदर्शरागी होता है। उस में सहृदयता का विकाश तथा निष्ठुरता का ह्रास होता है। मानव जीवन के नैतिक पचड़े छूट जाते हैं। अनुराग का प्रादुर्भाव होता है। प्राणी में प्रेम। देव की छटा देख पड़ती है। निर्व्याजन प्रेम बढने के कारण हृदय में विलासिता का विकाश होता है; जिस की वाह्यावस्था शृङ्गार रस के रूप में प्रतिभासित होती है।

* * * *

आधुनिक आदर्श वादियों को विलासिता शब्द से भी बड़ी कृत्रिम घृणा है। परन्तु मेरी राय में तो यह उनकी बड़ी भूल है। "विलासिता" का प्रतिपादन तो साक्षात् प्रकृति ही करती है। मनुष्य प्रकृति के बाहर नहीं। प्रकृति के नियम उसे अनिवार्य मानने पड़ते हैं। प्रकृति के कण कण से विलासिता का बोध होता है। क्या पावस ऋतु की घन घोर घटाओं के साथ चला चञ्चलायें विलास नहीं करतीं ? क्या निकलते हुये भगवान भास्कर की रश्मियाँ तुङ्ग-मेरु-शृङ्गों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या प्रक्षुब्ध-सागर की तरल-तरंगें कगारों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या प्रातः मलयानिल-उसीर के साथ लहलही लतायें विलास नहीं करतीं ? क्या लवंग-लतायें वृक्षों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या पार्वतीय नदियाँ पर्वतों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या चन्द्र रश्मियाँ विमल जल की लोललहरों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या कोमल-कुसुमों की पंखड़ियाँ रसिक भ्रमरों के साथ विलास नहीं करतीं ? क्या नवीन आदर्शवादी इस तरह के विलास को भी घृणा की दृष्टि से देखेंगे ? इसका आनन्द एक संक्षोभ्य हृदय ले सकता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। मनुष्य चैतन्य है। इस लिये समयानुसार उसके विचार बदला भी करते हैं। यह भी उस के लिये सम्भव है कि वह परिवर्तन की झोंके सहते २ प्रकृति नियमों का उलंघन कर जाये; परन्तु प्रत्येक दशा में प्रकृति-नियम उसके शिरोधार्य हैं जो वस्तुयें चेतन विहीन हैं, उन से नियमाति प्रमाण नहीं हो सकता। इससे स्वतः सिद्धि हैं विलासिता मनुष्य को प्रकृति से मिली है अतः वह इसे त्यागने में असमर्थ है। जब तक मानव हृदय में सहृदयता की कली खिली रहेगी, तब तक विलास-सौरभ अवश्य निकाला करेगा।

* * * *

इसी विलासिता का दुरुपयोग कर हमारा आदर्शवादी समुदाय आज कृष्ण को दुराचारी बनाता है और उस ब्रजलीला पर आँखें बन्द करता है, जिस पर कितने ही प्रेमियों ने जीवन न्योछावर कर दिया। इन आदर्श वादियों में यथार्थ सदाचरण की कितनी मात्रा है? क्या यह इनका बाहरी बनावटी ढोंग तथा आडम्बर नहीं है? ख़ैर जो हो इसका निर्णय पाठक स्वयं कर लें। यदि यही दशा रही तो सम्भव है कि ये आदर्शवादी समाज को पूर्णतया आदर्श विहीन करदेंगे। हमारे देश के केवल संगीत, साहित्य ही नहीं वरन् प्रत्येक कला के आधार कृष्ण हैं। अहा! वह व्यक्ति भी क्या शक्तिशाली रहा होगा जिसने कि अपने चरित्र चित्रण से कृष्ण का प्राणी प्राणी में समावेश कर दिया। यदि भारतीय कला से कृष्ण को हटा लीजिये तो देखिये क्या बँचता है। भला कहिये तो आदर्श वादियों के ये आदर्श विचार आदर्श बनाने में कहाँ तक फलीभूत होंगे?

* * * *

यदि संसार के रंग मंच से कृष्ण को हटालें तो सांसारिक अभिनय सार हीन हो जाय। क्या गोपियों के उस प्रेम को घृणित कह सकते हैं जिस में कि वे संसार का असितित्व तक भूल जाती थीं; वंशी की टेर के सिवा उन्हें कुछ सुनाई नहीं देता था, सिवा कृष्ण के उस घनश्याम रूप को जिस से कि अविरल प्रेम सुधा-धार बरसती थी उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता था। वे अपना पार्थक्य तक खो बैठती थीं प्रेम की सब से उत्कृष्ट दशा का दर्शन कराती थीं। सुनिये कोई प्रेमी कह रहा है।

दो मन इक होते सुन्यो, पै वह प्रेम मन आहि।
होइज वै द्वैतनहुं इक, सोई प्रेम कहा हि॥

* * * *

जग में सबसे अधिक अति, ममता तनहि लखाय।
पै या तनहूं ते अधिक, प्यारो प्रेम कहाय॥

कहिये पाठक! क्या आधुनिक आदर्श वादियों के शुष्क हृदय में प्रेम की यह लहलहीलता लग सकती है?

संसार का गूढ़ तम विषय प्रेम है।

क्योंकि आज तक किसी ने इसे पूर्णतया हल नहीं किया। हृदय का विकाश तथा जीवन का सुख प्रेम है। प्रेम जानने पर कुछ जानने को नहीं शेष रहता।

जेहि बिनु जान्यो कछु हि नहिं,
जान्यो जात विसेस।
सोइ प्रेम, जेहि जानि के,
रहिन जात कछु सेस॥

प्रेमाक्रान्त होने पर हृदय में एक प्रकार की विलासिता सी आजाती है। उससे शृङ्गार रस का प्रादुर्भाव होता है।

इस लिये शृङ्गार रस पावन प्रेम में प्रवृत्त करने का सरल पथ है।

देखिये नीचे लिखे दोहों में शृङ्गार रस द्वारा प्रेम का कितना दिग्दर्शन कराया है।

दृग उर झत टूटत कुटुँब, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति॥

* * * *

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

या अनुरागी चित्त को, गति जानै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूड़े श्याम रङ्ग, त्यों त्यों उज्वल होय॥

* * * *

बहैसदा पसुनरन कहँ, प्रेम पयोधि-पगार।
गिरते ऊँचे रसिक मन, बूड़े जहाँ हजार॥

* * * *

ललित स्याम लीला ललन, चढ़ी चिबुक छवि दून।
मधु छाक्यो मधुकर पर्यो, मनौ गुलाब प्रसून॥

* * * *

इन दुखिया अँखियान को, सुख सिरजोई नाहिं।
देखत बनैन देखिबो, बिनु देखे अकुलाहिं॥

कहिये पाठक शृङ्गार रस की प्रधानता है न परन्तु क्या अश्लीलता है?

क्या आज कल के आदर्श वादियों के ये आदर्श नहीं हैं?

मनुष्य का हृदय एक प्रकार का शीशा है जिस पर वाह्य जगत् का प्रतिविम्ब पड़ता है। एक ही वस्तु का प्रतिविम्ब अच्छे शीशे पर अच्छा और बुरे शीशे पर बुरा पड़ता है। हृदय में जितना प्रेम; जितनी सहृदयता और जितना सौन्दर्य होता है; उतना ही प्रेम उतनी ही सहृदयता तथा उतना ही सौन्दर्य वाह्य जगत् में भी दीख पड़ता है। इस कारण यदि किसी को कोई बात न जचे तो इस से यह मतलब नहीं कि वह बुरी है। यह तो अपनी रुचि की बात है।

प्राचीन काल में भाषा का आदर था। इस कारण बड़े बड़े राजा महाराजाओं के यहाँ कवियों का सम्मान होता था। कवि स्वतः राजाओं की तरह रहते थे। उनकी कविता उनके विनोद के लिये होती थी। शृङ्गार रस में इतनी आकर्षण हृदय शक्ति है कि वह शान्त अपनी ओर खींचती है इसी से प्राचीन कवियों के काव्यों में शृङ्गार रस का समयावेश हुआ।

मैं अश्लीलता का विरोधी हूं। अश्लीलता काव्य में एक प्रकार का दोष भी माना जाता है। इस लिये यह समझ लेना चाहिये कि शृङ्गार रस की सारी कवितायें अश्लील नहीं होतीं। अश्लीलता के डर से शृङ्गार रस छोड़ देना वैसा ही है जैसा रोग के डर से शरीर।

* * * *

हमारे यहाँ के कवियों ने शृङ्गार रस द्वारा नायिका भेद ही नहीं लिखा वरन् प्रेम देव का भी अच्छा चरित्र चित्रण किया है।

प्रभु चिन्तना।

लेखक—"रत्न"

प्रभो घिर आये जलधर घोर।
कभी गरजते, कभी बरसते दिखलाते निज ज़ोर॥
रूप-ज्योति सी चपला चमकै है मारुत झक झोर।
अन्धकार हो अन्धकार है सूझे ओर न छोर॥
प्रति तरंग पर नव उमंग है नृत्य कर रहा मोर।
इससे क्या आनन्द सिन्धु में लेता हृदय हिलोर?
तव चिंतना मध्य डूबा मन लगी तुम्हारी डोर।
मुझे विकल लखि जलद गिराते अश्रु विन्दुका शोर॥
करुणा निधि अब बिना तुम्हारी करुणा की शुभ कोर।
अवलोकेगा क्या हिमांशु यह विरह-विदग्ध चकोर?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अत्याचार।

लेखक--श्रीयुत डा० युधवीरसिंह।

(१)

देवल ने हाथ जोड़ कर कहा—

"सरकार, मैं तो ग़रीब आदमी हूं और मेरे पास न वकीलों की फीस भरने को रुपया है और न गवाहों को कचौरी खिलाने के लिये पैसे। मेरा इन्साफ़ हज़ूर के हाथ में है। मैंने सब सच २ सुना दिया है, न मैं जिरह करना जानता हूं और न सफ़ाई पेश कर सक्ता हूं"

ज़मीदार साहेब के बैरिस्टर ने कहा--

"अदालत ख़ुद ख़याल कर सक्ती है कि मुद्दायलः का बयान कहां तक क़ाबिल एतबार है। मुद्दई के गवाहों, ज़मींदार साहेब के बयान, और डाक्टर की गवाही से साफ़ ज़ाहिर है कि मुद्दायलः का यह बयान कि 'मुझ को मेरी घास के दाम ज़मीदार ने नहीं दिये और मार-पीट कर क़ैद कर लिया तो मैं पहरेदार को सिर्फ दो एक घूंसे मार कर भाग आया" बिलकुल ग़लत है। डाक्टर साहेब ने साफ कहा है कि पहरेदार को सख्त चोट लगी है, और ज़मीदार साहेब पर भी उस ने हमला किया, उधर गवाहों का साफ़ बयान है कि उस के हाथ में खुरपा था और वह बैल चुराने आया था।"

देवल बीच में बोल उठा--"हुजूर, डाक्टर जी को २००) रुपये ज़मीदार ने दिये हैं और गवाह सब झूठे।"

न्यायाधीश मैजिस्ट्रेट--चुप रौ मैन टुम को बोलने का दरकार नहीं!

देवल चुप हो गया और वकील बोले! वकीलों की किताबी बहस के बाद मैजिस्ट्रेट ने फैसला सुना दिया। ग़रीब देवल को तीन साल की कड़ी क़ैद भुगतने का हुकम हुआ। जब साहब ने हुकम सुनाया तो देवल घबराया नहीं। उस ने धीरे से कहा कि आदमी के किये क्या होता है भाई, मेरा मालिक मेरे साथ है जैसा यहां है वैसा ही वह जेलख़ाने में भी मेरे पास रहेगा।

देवल की स्त्री मर चुकी थी, लेकिन एक १२ वर्ष की कन्या थी। देवल के माता पिता नहीं थे पर एक बूढ़ी दुःखिया दादी थी। अपनी कन्या और दादी को लेकर खरैया गांव के एक झोपड़े में यह ग़रीब रहता था, दिन भर घास खोद कर पास के क़सबे में बेच आता था और जो पैसे मिलते थे उन्हीं से रूखी रोटी खाकर यह तीनों ठण्डा पानी पीते थे।

उस दिन ग़रीब क़स्बे में घास बेचने नहीं गया था क्योंकि गांव के ज़मीदार ने ही अपना सिपाही भेज कर बुलवा लिया था। परन्तु जो घास का बोझा क़स्बे में ॥।) बारह आने मिलने पर देवल के सिर से उतरता था उसके केवल दो आने देकर ही ज़मीदार के आदमियों ने टाल बताई।

देवल ने दो आने वापिस कर दिये और भार फिर से बांध कर जाने की तय्यारी कर रहा था की ज़मीदार आगये। यह दृश्य देखकर ज़मीदार ने साले और बहनोई की बारी २ सैंकड़ों तो गालियें सुनाई और जब वह ज़बर-दस्ती से जाने लगा तो उस को मार पीट कर बन्द कर दिया। देवल डील डौल का आदमी था पहरेदार से लड़ कर भागे आया। इस ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क़सूर में उस को ३ साल की कड़ी कैद का न्याय पूर्वक हुकम मिला।

जब देवल अदालत से ज़ेल को जाने लगा तो उसकी बूढ़ी दादी और छोटी बच्ची रोती पीटती उसके सामने आईं। एक सैकिण्ड में उसके दिल में कमज़ोरी आई। यह बूढ़ी और बच्ची क्या खाकर अपना पेट पालेंगी, इस चिन्ता ने उसे चिन्तित किया और आंसू उसकी आंखों में आने वाले थे कि उसे एकदम पतित पावन-अधमोद्धारक" का विचार आया, उसके अन्दर शक्ति आई आँसूओं को उस ने सहज में ही रोक लिया और बोला कि 'क्यों घबराती हो दादी! इस बच्ची को साथ लेकर आनन्द से रहो जिन के भरोसे मैं जेल में खुश खुश दिन काटूंगा जो वहां मेरी रक्षा करेंगे उन ही दीना नाथ को तुम्हारा भार भी सौंप दिया है यह कह कर उसने बच्ची का मुंह चूमा ही था कि पुलिस के कर्तव्य परायण सिपाही ने उस को पकड़ कर जेल गाड़ी में घुसा दिया।

(२)

"खोदे जा बे, इधर उधर क्या देखता है? काम में जी ही नहीं लगता है।"

देवल जेल के बाहर मिट्टी खोद रहा था और निगहबान सिपाही उसे गालियें दे देकर ऊपर के वाक्य कह रहे थे। देवल ज़रा खोदते खोदते रुक गया था क्योंकि उसे कुछ ज़मीन में से चूं चूं की सी आवाज़ आने लगी थी। बोला--"कोई जानवर मालूम होता है, मालिक।"

सिपाही कड़क कर बोला--"अबे, तो, मिट्टी में से शेर तो निकल नहीं आयेगा जो तुझे खा जायगा। काम न करने के सौ बहाने। खोद, जल्दी जल्दी।" और क़ैदियों को भी कुछ ऐसी ही प्यारी २ बातें सुना कर निगहबान तम्बाकू पीने लगा।

देवल ने जो दो एक फावड़े चलाये तो उसे एक गिलहरी का बच्चा नज़र आया। बच्चे को देखकर देवल को भी अपनी बच्ची की याद आगई। सिपाही के डर से उसने चट उसे उठा कर अपने साफे में रखलिया और पहले की तरह खोदने लगा।

उसका मन उस समय कुछ उदास होगया उस को अपनी प्यारी लड़की की याद आई कुछ आंखों में आंसू डब डबा आये--पर हाथ मशीन की तरह बराबर चल रहे थे क्योंकि वैसा न होने से कर्तव्य परायण निगहबान तुरन्त उस की ख़बर लेता। पर मन व्याकुल था। उसे अपनी बच्ची के प्यारे मुख का ध्यान आया कि न जाने किन कष्टों से वह अपना पेट पालती होगी। हाय मेरी बच्ची भीख मांगती होगी या न जाने क्या करती होगी। मेरे परमात्मा उस की रक्षा करना। क्या इस क़ैद से छुटकर कभी मैं उस का मुख देख पाऊंगा।

घण्टी बजी काम ख़तम हुआ और क़ैदियों को दाल रोटी बटी। अपना हिस्सा लेकर देवल भी अपनी कोठरी में आया। जब बाहर से ताला बन्द होगया तो उस ने अपने सिर में छिपे हुए गिलहरी के बच्चे को निकाला। उस ने देखा वह बड़ा व्याकुल था, पहले उसके मुंह में बड़ी सावधानी से दो चार बूंद पानी की डालीं उससे जब ज़रा बच्चा चैतन्य हुआ तो रोटी का टुकड़ा मसल कर दिया पर वह बच्चे ने नहीं खाया, तब उसने चने की दाल को साबुत साबुत निकाल कर खूब पानी से धोया और उसे खाने को दिया उसे खाकर बच्चा खेलने लगा तो देवल का जी बड़ा प्रसन्न हुआ उसे खूब प्यार किया। कभी बच्चा देवल के कन्धे पर चढ़ जाता था, कभी सिर पर कभी छाती पर बैठता था, यह सब देख कर देवल का जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बड़ा शान्त हुआ। उसे आज बहुत दिनों बाद इस क़ैद में खुशी नसीब हुई उसकी आंखों से प्रेम के आंसू निकल पड़े और चेहरे पर फीकी मुस्कराहट भी नज़र आई।

इसही प्रकार उस बच्चे को इसने बड़े प्रेमसे पाला; आप रूखी रोटी खाता था और दाल धोकर बच्चे को खिला देता था। जब दिन में काम पर जाता था तो बच्चे को अंधेरे कोने में बाँध जाता था और रात को अपने पास सुलाता था।

(३)

"मां, दादा को उन्हों ने क्यों बांधा है। दादा का तो कोई अपराध नहीं था। उस ज़मींदार का तो कुछ न हुआ, उसने उस दिन दादा को तो बहुत मारा था"--छोटी कुमारी ने दादी का पल्ला पकड़ कर रोते हुए कहा।

दादी ने पोती को गोद में बिठा कर सिर पर हाथ फेरते हुए उत्तर दिया--"बेटी, अंग्रेज़ के राज में अन्याय नहीं होता तुम्हारे दादा का कुछ अपराध होगा ही। हमें क्या मालूम बेटी, राज काज की बातों को हम क्या समझें।

कुमारी बोली --"तो मां क्या अंग्रेज़ दया नहीं करते ?"

बूढ़ी दादी—क्यों नहीं करते बेटी।

कुमारी-फिर दादा पर क्यों नहीं की, मां ?

बूढ़ी दादी--जो अपराधी है उस पर दया कैसी बच्ची !

कुमारी--फिर दया किस पर हुआ करती है ?

मां--क्या राजा को यह नहीं मालूम कि मेरे दादा रोज़ कमा कर रोज़ हमारा पेट भरते थे। मां ! क्या वे नहीं जानते कि दादा की कमाई पर ही हम निर्वाह करते थे और और अब क्या खाकर जियेंगें।

बुढ़िया--बेटी-दया तो उस पर होती है जिसने कोई अपराध न किया हो तुम्हारे दादा ने तो कुछ न कुछ किया ही होगा।

बच्ची बोली—तो मां दादा ने अपराध किया होगा पर तुमने क्या अपराध किया है और मैंने किसका क्या बिगाड़ा है। हमारे ही लिये दादा को छोड़ देते या दादा को दण्ड ही देना था, तो हमारे निर्वाह का तो कोई उपाय करते क्या हमने भी कोई अपराध किया है मां ?

बूढ़ी दादी की अक़ल ने अब काम नहीं दिया उसने सोचा-'हां, मैंने क्या अपराध किया है और फिर सोचा कि सचमुच इस बच्ची ने किसी का क्या बिगाड़ा है।

"हां बेटी तूने किसी का क्या बिगाड़ा है" यह कह कर बूढी बच्ची को छाती से लगा कर रोने लगी और बच्ची आंसू भरी आंखों से अपनी दादी की धुंधली सूरत देखने लगी।

यह दोनों एक बरगद के पेड़ के नीचे पत्थर पर बैठी थीं इन अभागी दादी पोती का बिलखना देख कर बूढ़े बरगद ने भी सिर हिलाते हुए और दाढ़ी झुकाते हुए कहा—"तुमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा अभागिन" पत्थर का हिया भी पसीजा और हवा को सनसनाहट में भी रोना सुनाई पड़ा।

———

(४)

शाम को जब काम से वापिस आया तो देवल ने उस अन्धेरे कोने में से अपनी 'गिल्लो' को निकाला ! गिल्लो कभी सिर पर चढ़ती कभी उसकी मूंछ कुतर लेती और कभी कन्धे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर चढ़ पिछले दो पांव से बैठ कुट २ करती थी। देवल उस से बातें करने लगा—

तुकतर्का—गिल्लो बेटी है तू मेरी प्यारी।
लाडली है और है तू राज दुलारी॥
दाल भात तू खाती और मिठाई।
रात को सो जाती है ओढ़ रज़ाई॥
तेरा साथ प्रभू ने मुझ को दिया है।
कष्ट जेल का इस ही तरह हर लिया है॥
तेरा मैं धूम धाम से व्याह करूंगा।
.... ॥

जैसे बच्चों को खिलाते हुए लोग स्वयं पागल हो कर सुखी होते हैं उस ही तरह देवल जी अपनी गिल्लो के साथ मस्ती में गारहे थे कि विघ्न पड़ा। झनझनाहट के साथ बारक का दर्वाज़ा खुला। देवल ने चट गिल्लो को अपने बिस्तरे की चादर के नीचे दिया। दर्वाज़ा खुलते ही सिपाही देव प्रगट हुए।

"क्या गा रहा था बे! हराम ख़ोर को रात को भी तो चैन नहीं पड़ती है। जेल में किसी को सोने नहीं देता है रात भर बदमाशी करता है। किस से बात कर रहा था?"

सिपाही की नज़र चारपाई पर पड़ी। गिलहरी के बच्चे को क्या पता था। वह तो फुदकने लगा। सिपाही ने झट देवल की गिल्लो को पकड़ लिया—"अच्छा, इस ही से आप खेला करते हैं, नालायक़! देखें अब आप किस से खेलेंगे," यह कहकर उसने उस गिलहरी के बच्चे को बड़े ज़ोर से ज़मीन पर पटका। कोमल बच्चे ने दो क़लावाज़ियें खाँईं और अपनी दर्दभरी निगाह से देवल की तरफ देखते हुए सदा के लिये आँखें मीच लीं।

देवल की आँखों में खून उतर आया, ज्यों ही सिपाही जाने लगा उसने उसे पकड़ लिया, और कहा कि—अब कहां जाते हो खां साहब खून करने का मज़ा तो चखते जाओ। देवल में न जाने कितना बल आगया उसने बड़े ज़ोर से उस बेरहम सिपाही का गला पकड़ कर उसे नीचे गिरा दिया। दोनों में मल्ल युद्ध होने लगा। ज्यादः देर नहीं हुई कि और पहरेदार गड़बड़ सुन कर दौड़ आये और देवल को पकड़ कर दारोग़ा जी का सामने पेश किया। दारोग़ा जी ने ५ या ६ बेतें तो उस ही वक्त जड़दीं और हुक्म दिया कि कल से इसको हथकड़ी व डण्डेदार बेड़ियां सहित नीचे के तैख़ाने में क़ैद किया जाय और मेहनत दुगनी ली जाय।

——— (क्रमशः)

सुसङ्ग

ले०—गंगाप्रसाद विद्यार्थी, काशी

शुभ सत्संगति के करने से, सम्मान जगत में बढ़ता है।
स्वाती का जल सीपी मुख में, पड़ने से मोती बनता है॥ १॥
सत्य वचन है नीति शास्त्र का, साधु-संग सुख का दाता है।
चन्दन रज सँग जल मिल करके, शीतल गन्धित हो जाता है॥ २॥
अमर बने रहते वे जग मे, जिनको सज्जन अपनाते हैं।
स्थायी काव्य वही रहते हैं, जिसे सुकविगण लिख जाते हैं॥३॥
जहां एक भी सन्त रहेगा, दुःख जाल सब कट जावेगा।
जहां एक भी दीपक होगा, तमका परदा फट जावेगा॥ ४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

प्राचीन भारत में भारतीय जनता का दैनिक जीवन।

भारतीय साहित्य तथा विदेशी यात्रियों के लिखे हुये वृतान्तों से हमें स्पष्ट ज्ञात होता है कि वर्त्तमान समय में भारत की चाहे जो कुछ दुर्दशा हो परन्तु प्राचीन काल में यहां पर वह स्वर्गीय समय था जो कि वर्त्तमान सभ्यता के शिखर पर विराजमान जातियां स्वप्न में भी अनुभव नहीं कर सक्तीं। महाशय प्रथम नाथ बनर्जी एम. ए. अपनी पुस्तक "प्राचीन भारत में शासन व्यवस्था" में लिखते हैं कि प्राचीन भारत की आदर्श न्याय व्यवस्था होने में तीन हेतु मुख्य थे–एक तो न्यायाधीश बड़े सत्यवादी आप्त पुरुष होते थे, दूसरे पुलीस कर्मचारी बड़े योग्य होते थे और तीसरे जन साधारण में इमानदारी और सचाई का भाव बहुत था। बड़े विद्वान् ब्राह्मणों में से जो अपने उच्च आचार और जीवन की पवित्रता के लिये प्रसिद्ध होते थे उनको न्यायाधीश बनाया जाता था और पुलीस विभाग को पूर्ण योग्य बनाने का उचित साधन किया जाता था, इस पुलीस संगठन की योग्यता का प्रमाण हमें विख्यात विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों से जिन्हों ने ध्यानपूर्वक इन प्रश्नों की आलोचना की है विदित होता है। मैगेस्थनीज़—मिश्र देश का विख्यात यात्री जो भारत में आज से लगभग ढ़ाई हज़ार वर्ष के पूर्व आया था वह लिखता है कि "भारत में चोरी तो बहुत कम घटना है—और इन के (भारतीयों के) नियमों और अवादों का साधारणपना इस से सिद्ध होता है कि ये लोग मुकदमें बाज़ी बहुत कम करते हैं। प्रतिज्ञा भंग तथा धरोहर के लिये इनमें कभी मुकदमा नहीं होता और ना ही उन्हें मोहर लगाने या साक्षी देने की ज़रूरत पड़ती है केवल यह लोग एक दूसरे पर विश्वास रख कर धरोहर धर देते हैं। प्रायः अपने घरों और सम्पत्ति को ये लोग अरक्षित ही छोड़ देते हैं। इन बातों से पता लगता है कि इन भारतीयों में उत्तम (moral sense) सदाचार के भाव कितने उच्च हैं" हुयेन संग—चीन देश का विख्यात बौद्ध साधु जो कि भारत में मैगस्थनीज़ से एक हज़ार वर्ष बाद आया था–वह भी इस वर्णन का समर्थन करता है। उस के ये शब्द हैं:—"जन साधारण की बाबत यह बात है कि यद्यपि वे स्वभावतया (light minded) बेपरवाह तथा सरल चित्त हैं, तथापि वे सदाचारी और ईमानदार हैं। धन व्यवहार में वह छली नहीं हैं और न्याय व्यवस्था करने में वे बड़े विचार शील हैं। वे परलोक के भय से सांसारिक वस्तुओं को तुच्छ समझते हैं। वह व्यवहार में ठग और दग़ेबाज़ नहीं हैं, और अपनी शपथों और प्रतिज्ञाओं का पालन करते हैं। शासन व्यवस्था के नियमों में वे बड़े (rectitude) सावधान और दृढ हैं। परन्तु उनके व्यवहार में बहुत कोमलता और मधुरता पाई जाती है।"

ये बातें हैं उस समय की जब कि महाभारत युद्ध के दुष्परिणाम कई हजार वर्षों तक यहां पर अंकुरित हो चुके थे अहो! कैसा आदर्श जीवन रहा होगा उस समय जब कि भारत की उज्वल आभा सतयुग, त्रेता, द्वापर के युगों में देश देशान्तरों द्वीप द्वीपान्तरों को चमकाती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थी, पाठक स्वयं अनुमान करें ॥

असाधारण अवस्था में नियम।

युद्ध की असाधारण अवस्था में भी भारतीयों की एक बात बड़ी चित्ताकर्षक थी कि युद्ध के लिये उद्यत दोनों पक्षों के लोग उन लोगों को कुछ हानि नहीं पहुँचाते थे जो लड़ाई में शामिल न होते थे। आक्रमण कर्ता सेनायें फसल को हानि नहीं पहुँचाती थीं और न शत्रु के देश का नाश करती थीं। जहां तक सम्भव होता था युद्ध क्षेत्र शत्रुओं के दूर निर्जन स्थानों में चुने जाते थे। मैगस्थनीज़ का प्रमाण इस का ज्वलन्त उदाहरण है। वह कहता है कि "जब कि अन्य जातियों में यह बहुत साधारण बात पाई जाती है कि युद्ध के दिनों में शत्रु के क्षेत्रों के जला फूंक डाला जावे और उन्हें ऊजड़ भूमि बना दिया जावे भारतीयों में इसके उल्ट यह बात है कि चूंकि किसानों की जातिमात्र को पवित्र और अवध्य मानते हैं इस से खेत जोतने वाले समीप वर्त्ती भूमि में युद्ध होते हुयें भी भयभीत नहीं होते और उन्हें उभय पक्ष वालों से अभय दान रहता है, चाहे वह परस्पर एक दूसरे का कितना ही घात क्यों न करें। इसके अतिरिक्त वे शत्रु के देश को आग नहीं लगाते और न उसके दरख्तों को ही काटते हैं॥

पाठक स्वयमेव इसको वर्त्तमान समय के युरोपीय महाभारत युद्ध में जो दुर्घटनायें हुई हैं उनसे तुलना करके सभ्यता की पहिचान करें।

भारत का विदेश के साथ लाभ संघर्ष।

भारत में शासक जाति और शासित जाति के मध्य में परस्पर लाभ की समता नहीं है वरन् उलटा एक की हानि पर दूसरे का लाभ निर्भर है। यदि भारत में एक इंच भी स्वदेशी कपड़ा तैयार किया जाता है तो इंग्लैन्ड को उतना ही घाटा पड़ता है, यदि एक भारतीय की उच्च पद पर नियुक्ति होती है, तो एक अंग्रेज़ की एक पदवी छिन जाती है, यदि एक क़ानून भारतीयों के लाभ वृद्धि की दृष्टि से होता है तो उसी समय उससे अंग्रेज़ों की स्थिति को हानि पहुँचती है। दोनों के लाभ में पारस्परिक संघर्ष होने से भारत के लाभ के हेतु काम करना अंग्रेज़ों को न लाभकारी होता है और न हो सक्ता है क्योंकि अंग्रेज़ों की उतनी ही हानि होती है। एक के जीवन से दूसरे की मृत्यु अवश्यम्भावी है।

अतः अब बड़े असमञ्जस और कठिनता का समय है, इंग्लैन्ड इस समय यूरोप की अन्य जातियों के साथ प्राणपण से आर्थिक युद्ध में लगा है, और जब तक वह भारत की बड़ी भारी जनता और भारत के उत्पत्ति श्रोतों को लूट खसूट न डाले, तबतक उसका जीना असम्भव है। इसकी नीति का लक्ष्य ही यही रहा है कि इन उत्पत्ति श्रोतों पर सम्पूर्णतया शक्ति प्राप्त करले, अतः इस अवस्था में भारत में भारतीयों के लिये अपने पैरों पर आप खड़े होने और अपने ऊपर भरोसा रखने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। भारत को अपनी उत्पत्ति और उत्पत्ति श्रोतों पर ही अधिकतर भरोसा रखकर विदेशी वस्तुओं और वहां होने वाली चीज़ों पर बहुत कर निर्भर रहना चाहिये। इसी में भारत का कल्याण है। (मरहटा)

हवाई जहाज द्वारा बीज बोना

हवाई जहाज़ द्वारा अनाज बोने का जो तरीक़ा अभी निकला है उस से खेती के औज़ारों में हवाई जहाज़ भी गिना जा सक्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। नवीन 'उड़ने वाला बीज बोने वाला' ३६ फ़ीट चौड़ी ज़मीन की पट्टी को एक घंटे में ४० मील की दर से बोता है। हवा के ज़ोर से धातु की नली में से बीज इतनी तेज़ी से निकल पड़ते हैं कि वह पड़ते ही ज़मीन में घुस जाते हैं, और बुआ हुआ खेत बताने के लिये प्रत्येक खेत की समाप्ति पर चूने या खाद की एक पतली धारा ऊपर से गिरा दी जाती है और हवाई जहाज़ इस प्रकार का बनाया जाता है कि जुते हुये खेत पर उस के उतरने से कोई हानि नहीं पहुंचती। साधारण अवस्था में यह यन्त्र ६ घंटे में ६४० एकड़ जमीन बो देता है, इसी जमीन को यदि अठपैहलू मशीन से ३ मील प्रति घंटे की दर से बोवे तो एक आदमी को १० घंटे प्रति दिन काम करने पर साढ़े १५ दिन लगेंगे। यह अनुमान किया जा रहा है कि इस हवाई बोने वाले से एक दिन में एक हज़ार एकड़ जमीन बोई जा सकेगी।

(हि वेल्थ आफ इन्डिया)

वैज्ञानिक संसार

(१) संसार में कागज़ की खपत

यह अनुमान किया गया है कि प्रति वर्ष संसार में ३३६००००० मन कागज़ काम में आता है और भारतवर्ष में इतनी सामग्री प्राप्त है कि जिस से यह सब का सब इसी देश में तैय्यार किया जा सके। भारत सरकार के आधीन एक पद है जिस पर कि म० रायट नियुक्त हैं। इन का काम भिन्न २ प्रकार के रेशेदार द्रव्यों (Cellulose) के सम्बन्ध में जांच पड़ताल करना है। उन की सम्मति है कि बर्मा, बङ्गाल और दक्षिण-पश्चिमी भारत में इतना बांस होता है कि उस से २८००००० मन कागज़ तय्यार होता है और इसी प्रकार आसाम में एक प्रकार की घास होती है जिस से ८४००००० मन कागज़ बन सक्ता है।

भारतवर्ष एक कागज़ क्या अन्य भी कितनी ही वस्तुओं से संसार का पेट भर सक्ता है। इसी लिये इसे स्वर्णगर्भा कहा है। यह सब होते हुये भी आज उसकी सन्तान पेट भरने को भी अशक्य है। क्यों? क्या ज्योति के पाठक इसका उत्तर देंगे?

---

(२) इच्छा पर वर्षा

एक महाशय ने अमरीका देश के अलबरी प्रान्त निवासी ज़िमीन्दारों के साथ यह ठेका किया है कि वह प्रान्त के उन भागों में जहां कि वर्षा कम होती है ज़िमीन्दारों की इच्छा अनुसार वर्षा बरसावेगा। इस समाचार पर आस्ट्रेलिया के एजन्ट-जनरल सरजेम्ज़ कानोली साहब अपनी की हुई परीक्षाओं के आधार पर इस प्रकार टिप्पणी करते हैं :—

"वाञ्छित समय पर वर्षा बरसाने के लिये जो तरीक़ा बर्ता जाता है वह बड़ा सरल और सस्ता है। इस का आधार इस खोज पर है, जिस ने यह निश्चय किया कि वायुमण्डल में रहने वाली बिजली वर्षा को रोकती है। यदि किसी कारण से इस बिजली को कम कर दिया जाय तो वर्षा हो सक्ती है। साधारणतया वायु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मण्डल और भूमि को बिजली में एक प्रकार की समता होती है यदि किसी प्रकार से इस समता का नाश कर दिया जाय तो वायुमण्डल में रहने वाले वाष्प कण इकट्ठे हो जल बिन्दु बन जाते हैं। परीक्षण के लिये दो या तीन बड़े २ पतंगों को जिन के साथ १००० फुट जस्त चढी हुई लोहे की लचकदार तार थी चार हज़ार से छः हज़ार फुट की ऊञ्चाई तक चढ़ाया गया। प्रत्येक पतङ्ग पर एक विशेष प्रकार का यन्त्र (विद्युत ध्रुव) लगा था जिस से कि उसका वायुमण्डल की बिजली के साथ पूरा २ सम्पर्क हो सके और दूसरी ओर से इसको पतङ्ग की तार के साथ जोड़ा हुआ था। तार का सम्बन्ध उस के दूसरे सिरे द्वारा भूमि से था। मि० बैलसिली (जिन्होंने कि यह परीक्षण किये थे) का अनुभव है कि प्रत्येक अवसर पर जब कि पतङ्ग आवश्यक उञ्चाई तक उठ जाते थे और वायु का वेग उन्हें ६ घण्टे से अधिक उड़ाये रखता था तो या तो वर्षा होगई है या बादल बन गये हैं। यह उस समय होता था जब कि आकाश नितान्त साफ़ और उज्वल हो और वर्षा के आने का कोई चिन्ह न हो।

विज्ञान में कितनी शक्ति है। क्या ही अच्छा हो कि यह प्राणियों का संहार न कर के उनके उद्धार में ही लगाई जाय।

———

कला और विज्ञान

सितम्बर मास के Discovery नामक वैज्ञानिक पत्र में सम्पादक की लेखनी से कला और विज्ञान सम्बन्धी विचारणीय टिप्पणियां लिखी गई हैं। वह लिखते हैं कि आज कल के "शिक्षित" व्यक्ति नीचे दिये हुए दो में से एक सिद्धान्त के पोषक हैं, प्रथम यह की विज्ञान का प्रसार ललित कलाओं और इस कारण से सभ्यता के लिये हानिकारक है दूसरे यह कि यह विज्ञान का युग है और ललित कला देश और काल के विरुद्ध निकम्मी और निरर्थक है। यह ठीक है, किन्तु शिक्षित समाज के समस्त व्यक्तियों के सिर इन विचारों का मढ़ना ठीक नहीं, परन्तु इस में भी कोई सन्देह नहीं कि साधारण बुद्धि वाले "शिक्षित" या अर्ध-शिक्षित व्यक्ति न्यूनाधिक प्रमाण में इन दो विचारों में से एक के पोषक मिलेंगे।

इन में से पहिला विचार इतना हानिकारक नहीं, क्योंकि विज्ञान की गति को अब कोई रोक नहीं सकता, यह हमारी सभ्यता का एक आवश्यक अङ्ग है। इतिहास के आधार पर यह सिद्ध करना कठिन नहीं कि विज्ञान ने कला को पीछे ढकेलने के स्थान में उस की उन्नति के लिये बड़ी मानसिक प्रेरणा प्रदान की है। परन्तु दूसरा विचार अधिक प्रचलित और कहीं अधिक हानिकारक है। विज्ञान और मैशीनरी के युग में—जैसा कि हमारा समय है--ललित कला को यह कहकर कि यह सम्भव-तया मनोरञ्जक परन्तु निस्सन्देह निरर्थक हैं पीछे ढकेल देना बड़ा ही सुगम है। परन्तु यह कार्य्य न केवल कला के लिये वरन् स्वयं विज्ञान के लिये भी हानिकारक है। यदि संसार में डैन्टे, चासर, शैक्सपीयर, मिल्टन, रैफेल इत्यादि न होते तो उसकी आज क्या गति होती इसका चिन्तन करना कितना दुखदायक है! यदि यूनानी साहित्य का पुनः अध्ययन न होता या हीब्रू कविता का अनुवाद न किया जाता, अथवा प्राचीन चित्रकारी और शिल्प के नमूने हमें न मिलते और प्राचीन धार्मिक रसमयी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविता का लोप हो जाता तो संसार की क्या गति होती? कला और विज्ञान का एक को दूसरे से घटा कर जांच करने की इच्छा से मुकाबला करना ठीक नहीं। दोनों एक ही जैसे आवश्यक हैं और एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि चित्र-कला, कविता इत्यादि ललित कलायें ही हैं जो कि हमारे बीच विचार और मनन शक्ति को जीवित रखती हैं और इस प्रकार हमें मूढ़ और आचार हीन होने से बचाये रखती हैं। यह विचार ही है जो कि खोज के लिये मन को उत्साहित करता है। आज कल जब कि ज्ञान की इतनी वृद्धि हो रही है, तब विज्ञान और कला के विद्वान् एक दूसरे के कार्य का मूल्य समझने लगे हैं। जितना २ ज्ञान अधिक बढ़ेगा उतनी ही यह मित्रता अधिक घनिष्ट होगी।

हमारी मञ्जूषा

राष्ट्रीय हिन्दी-मन्दिर जबलपुर की हमें दो पुस्तकें समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं। रा० हिन्दी-मन्दिर आर्य भाषा साहित्य की जो सेवा कर रहा है वह सर्वथा प्रशंसनीय है। हिन्दी भाषा में मौलिक, मनोरञ्जक और भावपूर्ण साहित्य उत्पन्न करना इस संस्था का परम लक्ष्य है। इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये मन्दिर की ओर से श्री शारदा नाम की उच्च कोटि की मासिक पत्रिका गत १८ मास से निकल रही है। इस के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में स्थायी साहित्य की वृद्धि के लिये उत्तम २ पुस्तकों के प्रकाशन का जो प्रोग्राम हिन्दी मन्दिर ने निश्चय किया है उस से आशा पड़ती है कि मातृ भाषा की अच्छी सेवा होगी।

मुहम्मद—यह पुस्तक शारदा पुस्तक माला का तीसरा पुष्प है। इस के लेखक श्रीयुत् शिवनारायण द्विवेदी ने इसलाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद की जीविनी लिख कर हिन्दी संसार का बड़ा परोपकार किया है। पुस्तक की भाषा सरल और मधुर, तथा लेखन शैली मनोरञ्जक है। पुस्तक को पढ़ कर इस के नायक के विषय में प्रेम, श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न हुये बिना नहीं रहती। मुहम्मद का बाल काल दैवी दुर्घटनाओं के कारण और यौवन उस के प्रचारित धर्म के विरोधियों की कुवासनाओं और अमानुषी अत्याचारों के कारण जितना दुखमय और कष्टदायक रहा उसको पढ़ कर किस का मन पसीजे बिना रह सक्ता है? इस नरशार्दूल के सत्य प्रेम की गाथा न केवल शिक्षाप्रद ही है वरन् उत्साह वर्धक भी। पुस्तक निःसन्देह संग्रहणीय है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी के पढ़ने योग्य है। सुन्दर जिल्द बन्धी १६० पृष्ट की पुस्तक का मूल्य १॥) है।

(२) अमरीकन संयुक्त-राज्य की शासन प्रणाली—लेखक श्री० देवी प्रसाद गुप्त बी० ए०, पृष्ठ संख्या २१२, सजिल्द का मूल्य १॥-)

यह उपर्युक्त शारदा पुस्तक माला की चौथी पुस्तक है। इस पुस्तक में लेखक ने अमरीका के संयुक्त-राज्य के शासन सम्बन्धी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नियम सिलसिलेवार बड़ी उत्तमता से दिये हैं। अमरीकन राज्य के उपनिवेश और उपराज्य किन २ नियमों द्वारा किस प्रकार संयुक्त-राज्य से सम्बन्ध रखते हैं; उन का आपस में क्या सम्बन्ध है; शासन किस प्रकार होता है; नगर, कौंटी इत्यादि किन नियमों पर चलते हैं, व्यवस्थापक सभा और उसका संगठन, उस के अधिकार क्या हैं और किस प्रकार वह उन को वाह्य और अभ्यन्तरीय कार्यों के निपटाने के लिये बर्ताव में ला सक्ती है, न्याय, शासन और व्यवस्थापन विभाग का कार्य्य किस प्रकार चलता है, इन सब बातों को लेखक ने इस छोटी सी पुस्तक में बड़ी दक्षता से लेख बद्ध किया है। इस समय जब कि भारत राजनैतिक परिवर्तन की भट्टी में से निकल रहा है इस पुस्तक का पाठ प्रत्येक भारत वासी के लिये चाहे वह किसी भी राजनैतिक पार्टी से सम्बन्ध रखता हो ज्ञानवर्धक और लाभ-दायक अवश्य होगा। पुस्तक समयानुकूल और परम उपयोगी है।

(३) महात्मा अब्राहम लिंकन—लेखक तथा प्रकाशक श्रीयुत् विश्वेश्वर नाथ मेहरा मध्यमेश्वर बनारस हैं पृष्ठ संख्या १७ है मूल्य ≠) हैं। यह पुस्तक छोटे २ बच्चों को संक्षिप्त रूप से इन महापुरुष का हाल समझाने के लिये उपयोगी है और प्रकाशक से मिलती है।

(४) आर्य्य मित्र का ऋष्यंक—इस वर्ष का आर्य्यमित्र का ऋष्यङ्क हमारे सामने है इस के सम्पादन में सुयोग्य सम्पादक ने बड़े परिश्रम और विवेक बुद्धि से काम लिया है इस में छोटे बड़े सब ३७ लेख और कवितायें हैं और पृष्ट पर महर्षि का चित्र है और प्रथम पृष्ट पर मृत्युञ्जय ऋषि दयानन्द के पितृगृह का उस समय का दृश्य है जब कि उन की छोटी बहिन को विशूचिका रोग हो गया है, सारे परिवार के लोग शोक मना रहे हैं, परन्तु बालक मूलशंकर मृत्युञ्जय बनने के उपाय सोच रहा है। इस चित्र पर जो नाटक का दृश्य रचा गया है वह अपनी नवीनता के लिये बड़ा चित्ताकर्षक है। इस अंक में आर्य्य जगत् के प्रायः समस्त प्रसिद्ध लेखकों के लेख हैं। अन्य कई लेख विदेशियों की लेखनी से निकले हुये ऋषि की ओर उन के पवित्र भावों को प्रगट करते हैं। प्रत्येक आर्य्यगृह में इस अंक का होना लाभदायक है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवश्यक निवेदन

प्रायः ज्योति के ग्राहक लोग अपना पता बदलने की सूचना देते समय ग्राहक संख्या नहीं देते ऐसा करने से उनका नाम ढूंढ़ने में बड़ा समय लगता है अतः सब ग्राहकों से निवेदन है कि पता बदलवाने को सूचना देते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें और इस प्रकार के पत्र तथा पत्रिका न पहुंचने की शिकायत तथा नमूने की मांग इत्यादि मैनेजर सम्बन्धी पत्र मैनेजर ज्योति लाहौर को भेजा करें सम्पादिका को नहीं।

दूसरी बात यह है कि कई लेखक और समाचार पत्रों के सम्पादक परिवर्तन के पत्र लाहौर भेजते हैं या "लायलपुर लाहौर" लिख देते हैं जिससे बड़ी गड़ बड़ी होती है क्योंकि लायलपुर लाहौर का कोई मुहल्ला नहीं है वरन दूसरा शहर है अतः सब परिवर्तन के पत्रों के सम्पादकों तथा लेखकों से नम्र प्रार्थना है कि वह अपने पत्र और लेख सम्पादिका ज्योति लायलपुर को ही भेजा करें। एक बात और भी ध्यान करने योग्य है कि जो लोग लेख व कवितायें भेजें वह स्पष्ट अक्षरों में कागज़ के एकही ओर लिखे होने चाहिये, बहुत लम्बे और अशुद्धियों से भरे न हों और उत्तर के लिये टिकट साथ हो।

(सम्पादिका)

विचार प्रवाह

पंजाब और राष्ट्रभाषा (हिन्दी)

यद्यपि पंजाब राजनैतिक क्षेत्र में किसी प्रान्त से पीछे नहीं वरन यह कहना चाहिये कि सब से आगे ही क़दम रखता है, क्योंकि स्वदेशी का प्रचार, चर्खा, करघा, इत्यादि यहां बढ कर रहा, यहां की म्युनिस्पैलिटी ने सब से पहिले कर्मचारियों के लिये खद्दर का प्रस्ताव पास किया, यहां ही सबसे पहिले टांगे वालों को खद्दर की वर्दी पहिनने का प्रस्ताव हुआ और यहीं पर अभी सबसे पहिले पुलीस कर्मचारियों को खद्दर न पहिन कर ग्रेंडला हाल की खद्दर ही पहिन कर आने वाले लोगों की सभा में जाने से रोका गया। चाहे उसके कारण एक चौदह वर्ष के बालक को भी जेल जाना पड़ा—परन्तु यह सब होते हुये भी बड़े शोक के साथ कहना पड़ता है कि यही पंजाब राष्ट्रभाषा हिन्दी से इतना विमुख है कि उधर कुछ ध्यान ही नहीं देता। पंजाब की जनता तो हिन्दी लिखना पढ़ना जानती ही नहीं है परन्तु स्कूलों और कालिजों के शिक्षित लोगों में भी राष्ट्रभाषा से प्रेम नहीं है। वह समझते हैं कि खबरें पढ़ने या ग्रन्थ पढ़ने से मतलब है वह अंग्रेज़ी और उर्दू की पुस्तकों और अखबारों द्वारा मिल ही जाता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है पत्र व्यवहार भी इन्हीं भाषाओं में प्रायः होता है, यहां तक कि हमारे आर्य्य समाजी भाई आर्य्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में और आर्य्यकुमार सभा की मीटिंग में उर्दू में छपी पुस्तकों द्वारा भजन, सन्ध्या, उपासना, इत्यादि करते हैं। सब से बड़ी खेद जनक बात हमें यह दृष्टिगोचर हुई कि एक कन्यापाठशाला जिसमें हिन्दी कोही सिखाई जाती थी उसकी एक सभा में मेज़ पर कार्य्यक्रम रक्खा गया वह भी उर्दू में था। कहने का तात्पर्य यह कि हिन्दीभाषा के लिये पंजाबियों के दिलों में कुछ भी मान नहीं है। यही कारण है कि हिन्दी प्राफ़ीशेन्सी की परीक्षायें तथा भूषण, विशारद इत्यादि परीक्षायें लोग पास कर लेते भी हैं और लड़कियों से भी करा लेते हैं पर उनको हिन्दी में साधारण पत्र भी लिखना हो तो एक पंक्ति में कई २ अशुद्धियें होती हैं, और हिन्दी के मासिक पत्र तो समझ में ही नहीं आते। समाचार जानना अपना उद्देश्य समझ कर बहुत से लोग तो हिन्दी के पत्रों को व्यर्थ ही समझते हैं। यही कारण है कि पंजाब में न तो हिन्दी के पत्र ही हैं और न हिन्दी साहित्य ही है। एक दो मासिक पत्र समय २ पर निकाले गये किन्तु इसी पंजाबियों की उदासीनता से घाटा खा कर बन्द हो गये। अब भी 'भारती" और "ज्योति" जो यह दो पत्र दीख रहे हैं वह कुछ घड़ी के मेहमान ही मालूम होते हैं। यदि पंजाबियों में राष्ट्रभाषा प्रेम शीघ्रही जागृत न हुआ तो इनकी इतिश्री में शक नहीं है। परन्तु क्या पंजाबियों की यह शिथिलता इस राष्ट्रीय उत्थान के समय उचित है? महात्मा गान्धी जी गुजराती नवजीवन को ही निकाल कर सन्तुष्ट न हुये वरन अपने हिन्दी-प्रेम को हिन्दी नवजीवन निकाल कर प्रगट किया। उन्हें हिन्दी में भाषण करना और लिखना नहीं आता था परन्तु कई वर्षों से उन्होंने हिन्दीमें ही भाषण करने प्रतिज्ञा की थी और अब उन्हें साधारणतया अच्छी भाषा आगई। क्या हमारे पंजाबी भाई महात्मा गान्धी का हिन्दी प्रेम अपने में नहीं ला सक्ते? क्यों नहीं अगर वह चाहें।

आगामी हिन्दी साहित्य सम्मेलन की तैय्यारी

अभी थोड़े ही दिन हुये हैं कि श्री पण्डित गिरधर शर्मा जी तथा लाला लाजपतराय जी ने आगामी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्वागत के लिये एक सभा बुलाई थी जिसके अनुसार स्वागत कारिणी सभिति के सभासदों का चुनाव किया गया तथा सम्मेलन को सफल बनाने का यत्न करने का निश्चय किया गया है। हमे पूर्ण आशा है कि लाहौर की नगरीप्रचारणी सभा द्वारा तथा अन्यान्य उपायों द्वारा माननीय लाला जी तथा पण्डित जी पंजाब की शिक्षित जनता की हिन्दी में रुचि बढ़ाने के लिये ऐसी साप्ताहिक या पाक्षिक सभायें नियत करेंगे जिनमें भाषा साहित्य प्रेमी निबन्ध लेखकों तथा रसमयी कवितायें रचने वाले सज्जनों को निमन्त्रित करके उनकी कृतियों को सुनाया जावे और उन्हें पुरस्कार दिया जावे जिससे अन्यों को उत्तेजना मिले। तथा बालकों के स्कूलों और कन्या पाठशालाओं में इस बात का प्रयत्न किया जावे कि जहां २ उर्दू को प्रधानता है वहां २ हिन्दी को वही स्थान दिया जावे और अध्यापिकाओं को इस बात पर बाध्य किया जावे कि वह शुद्ध हिन्दी लिखना और पढ़ना कुछ मास के अन्दर ही सीख लेवें और सारी कार्य्यवाही हिन्दी में किया करें। हमे निज के अनुभव से पता लगा है कि लाहौर जैसे शिक्षा के केन्द्र में जहां कितने ही कालेज, स्कूल हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और जहां पर हर प्रान्त के लोग भी बहु संख्या में हैं वहां मामूली हिन्दी के पढ़ने वालों की गिनती उर्दू, गुरुमुखी की अपेक्षा बहुत कम हैं, और हिन्दी साहित्य के समझने वाले तो कोई विरले ही होंगे। जहां पर हिन्दी की यह दशा है वहां पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सफलता दुर्लभही मालूम होती है। परन्तु पुरुषार्थ से क्या कुछ नहीं हो सक्ता? यदि लाला लाजपतराय जी अपना ध्यान इस तरफ लगा देवें तो जितनी उनकी शक्ति है और जनता में यश तथा मान है उसको दृष्टि में रख कर यह काम बहुत ही सरल प्रतीत होता है। क्या लाला जी इसको इतनी प्रधानता देंगे यही प्रश्न है?

———

बाहर भेजे जाने वाले गेहूं पर कर

यों तो अनाज की महंगी बहुत वर्षों से हो रही है परन्तु योरुप के महायुद्ध के दिनों और उस के बाद अब तक भी जिस प्रकार खाद्य पदार्थ महंगे हो रहे हैं और खास कर गेहूं महंगा हो गया है उस से तो यही भय है कि यदि यही अवस्था रही तो कुछ साल में गेहूं शब्द को लोग सुना करेंगे परन्तु स्वाद कैसा होता है यह न बता सकेंगे। सर्कार ने जो अभी गेहूं का पता लगाने के लिये कमीशन बैठाई थी उस की तो रिपोर्ट यह है कि पैदावार कम हुई परन्तु मुख्य कारण इस का विदेश जाना ही है। अभी थोड़े ही दिन हुये प्रोफेसर ब्रजनरायण जी ने "ट्रिब्यून" में सिद्ध किया था कि गेहूं की महंगी रोकने का एक मात्र उपाय इस के निर्यात पर कर लगाना है। चाहे सूखा साल हो अथवा शस्य सम्पन्न हो गेहूं के बाहर जाने पर ऐसा कर लगाया जावे कि जब भारत में गेहूं मंहगा हो तो बढ़ा दिया जावे और जब सस्ता हो तो घटा दिया जावे, इस का अर्थ यह है कि गेहूं का [illegible] क्रय विक्रय की वस्तु है और इस प्रकार की वस्तुओं का मूल्य संसार भर में एक सा रहता है परन्तु भारत वासियों के लिये दुःख की बात यह है कि उन्हें मज़दूरी कम मिलती है और खाने पर खर्च उतना ही करना पड़ता है जितना कि अन्य देशों के लोगों को। सर्कारी रिपोर्ट लेखकों का मत है कि यदि गेहूं का बाहर जाना घट जावे तो भारतीय किसान सुस्त हो जावेंगे, जमीनें बिना बोई जोती रह जावेंगी, अकाल के साल के लिये अनाज का स्थायी भण्डार न रहेगा इत्यादि २। परन्तु उक्त प्रोफेसर की सम्मति में सर्कार को दो बातों का मुख्यतया खयाल रहता है जिस के कारण वह निर्यात गेहूं पर कर नहीं लगा सक्ती, एक तो कृषकों की आय में उस का बड़ा भारी भाग रहता है, दूसरे यह कि गेहूं बाहर न गया तो विलायत के लोगों को तंगी उठानी पड़ेगी क्योंकि भारतीय गेहूं अधिकांश वहीं जाता है। सच है हमारी सर्कार का तो यह हाल है कि "कोई जीओ या मरो पोपजीका पेट पूरा भरो" भारत वासियों को स्वयं ही जागना चाहिये और क्षणिक लाभ के हेतु यह दिन पर दिन बढ़ती हुई ग़रीबी को और नहीं बढ़ाना चाहिये।

———

अखिल भारत वर्षीय हिन्दू सभा

गो रक्षा पर हकीम अज़मल खां का भाषण

दिल्ली में अभी अखिल-भारत-वर्षीय हिन्दू सभा का प्रथम उत्सव मनाया गया, उस में स्वागत कारिणी समिति के प्रधान सुप्रसिद्ध हकीम अज़मल खां जी थे। आप ने अपने मनोहर शब्दों में हिन्दू भाइयों का स्वागत करते हुए मुसलमान भाइयों से अपील की कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य को दृष्टि में रख कर जहां हिंदुओं ने खिलाफ़त के प्रश्न को सारे हिन्दुस्तान का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3a Foundation USA

भाइयों को भी उचित है कि गौ रक्षा के प्रश्न को भारतीय प्रश्न बनाकर हिन्दुओं के प्रति अपने प्रेम का परिचय दें। हकीम महोदय ने मुसलमान बादशाहों के इतिहास से और विदेशी यात्री वर्नियर के प्रमाण पर यह बतलाया की बाबर ने हुमायूं को जो वसीयत की थी उस में गौ रक्षा करने पर बड़ा बल था, जहांगीर बादशाह ने फर्मान निकाला था कि गो हत्या न की जावे। तथा औरंगज़ेबके समय में एक लाख की फौज में केवल ५ या छै हजार लोग ही मांस भक्षी थे और उन में गो मांस भक्षियों को संख्या नहीं के बराबर थी, बादशाह शाहआलम ने भी फर्मान निकाल कर गोवध बन्द किया था इत्यादि २।

परन्तु वर्तमान समय में सारे वृटिश भारत में ८ या ६ कमसरियट विभाग बड़े २ हैं— पेशावर, रावलपिण्डी, लाहौर, मेरट, अम्बाला, पूना, मद्रास इत्यादि। इन में से केवल पेशावर और रावल पिण्डी में प्रत्येक में प्रति वर्ष १८ हज़ार गौओं का वध होता है। बाक़ी शेष में ८४ हज़ार का। इस प्रकार फौज के लिये कुल १ लाख बीस हज़ार गौओं का वध होता है। बाहर मांस भेजने के लिये ५ लाख का वध और कुल वध २० लाख है। अतः १५ लाख का वध भारत में रहने वाले अङ्गरेज़ और मुसलमानों के लिये होता है। अतः यदि मुसलमानों ने इस प्रश्न की अवहेलना की तो शीघ्र ही नष्ट हो जावेंगे क्योंकि आर्थिक दृष्टि से इस गो वध का परिणाम यह हो रहा है कि भारत वासियों को खाने के लिये घी, दूध, मक्खन तो नसीब होता ही कम है अनाज भी मुश्किल से प्राप्त होगा। अतः उन्होंने मुसलमानों से अपील की अपने २ घरों में गो मांस का वर्तना छोड़ कर दूसरे मांस को वर्तें।

नेहरू–आचार्य्य विवाद।

निखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कार्य्यकारिणी कमेटी के साथ प्रधान विजयराघव आचार्य्य जी का विवाद होगया। उनका कथन है कि कुछ सभासदों के चुनाव नियम विरुद्ध थे अतः सभा नियमानुकूल दहीं। हम मानते हैं कि चुनाव में कुछ नियम भंग हुआ था, परन्तु जब उस समय उस नियम-भंग को स्वीकार करते हुये स्वयं आचार्य्य जी ने कांग्रेस की प्रधानी को स्वीकार कर लिया था तब इस समय दिल्ली में कार्य्यकारिणी कमेटी करने के समय उन्हें क्या आपत्ति थी? इस में सन्देह नहीं कि आप बड़े योग्य और बुद्धिमान पुरुष हैं और आपका स्पर्धा के भाव से विचलित होना कल्पना के बाहिर है तथापि इस समय कार्य्यकारिणी कमेटी से रूठना बड़ा विचित्र है। आपने अपने प्रधान पद के बल पर विरोध किया, परन्तु याद रहे कि किसी सभा का प्रधान अमेरिका के संयुक्त राज्य के प्रधान की भांति सभा का मालिक नहीं है वरन सभा के कार्य्य कर्ताओं में से एक है और सभा के सब काम नियम पूर्वक कराने के ही लिये उसका निर्वाचन है, वास्तव में सभा ही मालिक है। यदि प्रधान और मंत्री का ही आपस में मत भेद होता तब तो प्रधान की बात चल सक्ती थी, परन्तु जब स्वयं कार्य्यकारिणी कमेटी ही अपनी आज्ञा दे रही है उस समय प्रधान का भी यह कर्तव्य होजाता है कि वह अपने विचारों को दवा कर सभा की आज्ञानुसार काम करे।

मोपला उपद्रव, आर्य्यों का कर्तव्य

मोपलाओं का उपद्रव अभी तक शान्त नहीं हुआ यद्यपि सर्कार अपनी सारी शक्ति लगा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर उसे इतने दिनों से शान्त करने का यत्न कर रही है, इससे दो ही परिणाम निकाले जासक्ते हैं, प्रथम यह कि सर्कार इस उपद्रव को दवाना नहीं चाहती दूसरी यह कि वह उपद्रव शारीरिक बल से दवने के बाहर होगया है। यह दोनों प्रकार के भाव जनता में विद्यमान हैं परन्तु हम पहिले के विषय में कुछ नहीं कह सक्ते दूसरे के विषय में निस्सन्देह हमारी सम्मति है। हमारी समझ में सर्कार यदि महात्मा गान्धी को वहां जाने से न रोकती और उनके साथ सहयोग करती तो यह उपद्रव इतनी देर और इस भयंकर रूप में न रहता। हमारे माडरेट भाई तथा ऐंग्लो इन्डियन लोग चाहे अब भी हंसी करें परन्तु महात्मा गांधी जी के उपदेश में वह जादू है जिसकी बराबरी इस समय कोई शक्ति संसार में नहीं कर सक्ती और यदि उनका जादू न चलता तो भी जो परिणाम अब निकल रहे हैं उनसे भयंकर दशा तो हो ही नहीं सक्ती थी, परन्तु यह किया नहीं गया और इसी से जनता में दूसरे प्रकार के भाव उत्पन्न होरहे हैं।

कहा जाता है कि हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार होरहे हैं परन्तु यदि एक तरफ़ से अत्याचार के समाचार आते हैं तो दूसरी तरफ से अच्छे व्यवहार के भी आते हैं अतः सत्य क्या है यह कहना कठिन है ? हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के प्रतिपक्षी कहते हैं कि हिन्दुओंको बलात्कार मुसलमान बनाया जा रहा है यह ऐक्य कैसा ? हमें मोपलों पर कुछ कोध नहीं परन्तु हिन्दुओं पर अवश्य है इसलिये कि वह अपने ऊपर यह बलात्कार क्यों होने देते हैं ? ऐसे लोगों को तो न गवर्न्मेन्ट, न मुसलमान न और कुछ बचा सक्ते हैं। हिन्दू यदि स्वयं धर्म प्रेम पर जान निछावर नहीं कर सक्ते तो क्या किया जा सक्ता है ? हा ! आज क्या हिन्दू उसी आर्य्य जाति के पुत्र हैं जिसके लाल हकीक़त राय तथा गुरु गोविन्द सिंह के दुधमुहें बच्चों ने अपने धर्म के हेतु तलवार से कटना, दिवारों में जिन्दा चुना जाना स्वीकार किया पर धर्म न छोड़ा। अब आर्य्यसमाज को आगे बढ़कर आर्य्य जाति की रक्षा करनी चाहिये। हमारे आर्य्य समाजी नेताओं को उचित है कि परस्पर में पद और मान के लिये स्पर्धा की ओर से विरक्त होकर इनसे ऊपर उठें और आर्य्यसमाज से बाहर आर्य्य जाति का जो घात हो रहा है उससे उसे छुड़ा कर उसकी मरहम पट्टी करके उसे बचाने का यत्न करें।

——

सविनय कानून भंग तथा अखिल-भारत-वर्षीय कांग्रेस कमेटी

दिल्ली में जो अभी अखिल-भारत-वर्षीय कांग्रेस कमेटीने सविनय कानूनभङ्ग का प्रस्ताव पास किया है उससे असहयोगियों की बड़ी भारी जिम्मेवारी बढ़ गई है। सविनय कानून भङ्ग की घोषणा बड़े उत्तरदायित्व का कार्य्य है। यह सर्कार के साथ खुलम खुला युद्ध है अतः युद्ध क्षेत्र में आकर फिर पीछे मुड़ना ठीक न होगा। इस समय अवस्था इस प्रकार की है कि या तो भारत को स्वतन्त्रता शीघ्र ही नसीब हो सकेगी नहीं तो अनन्तकाल के लिये पीछे हट जावेगी। परन्तु इस प्रस्ताव से यश-लोलुप लोग कहीं जल्दबाज़ी न कर उठें और सर्कार को भारतियों के दबाने के लिये और बहाना न मिल जावे इस लिये यह प्रस्ताव बड़े सोच समझ के बाद बनाया गया है। कांग्रेस के इस प्रस्ताव के अनुसार वही लोग सविनय कानून भंग करें जो कि कट्टर असहयोगी हों, खद्दर पहिनते हों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चर्खा कातते हों और कपड़ा बुनना जानते हों और अपने भरोसे पर जीवन निर्वाह कर सकते हों। कई लोगों को कातने और बुनने की शर्तें अनुकूल नहीं जंचतीं, उनका कथन है कि चर्खा और खड्डी चलाना जानने विना भी बहुत से लोग ऐसे होंगे जिन के भाव उत्तम हों और सविनय कानून भङ्ग कर सकते हों तो उन्हें अनधिकारी क्यों समझा जावे? परन्तु हमारी समझ में इतनी कड़ी शर्तें लगा कर महात्मा जी ने इस प्रश्न के गाम्भीर्य्य को समझाया है अतः प्रत्येक सविनय कानून भंग करने वाले का धर्म है कि चाहे जान जावे परन्तु इन नियमों से विचलित न होकर इस आन्दोलन को सफल ही बनावें।

———

दिल्ली की अखिल-भारत-वर्षीय-कांग्रेस कमेटी के आवश्यक प्रस्ताव

१—सविनय कानून भंग—यतः वर्ष समाप्ति से पूर्व स्वराज्य स्थापित करने के जातीय निश्चय में अब एक मास से ऊपर कुछ ही समय है और अली बन्धुओं की गिरफ्तारी तथा क़ैद पर पूर्णतया अहिंसा व्रत का पालन कर जाति ने अपने आत्मसंयम का परिचय भली भांति दे दिया है और यतः यह उचित है कि स्वराज्य प्राप्ति के लिये आवश्यक सहन शीलता और नियन्त्रण शक्ति का और भी अधिक परिचय दिया जावे इस से अखिल भारत वर्षीय कांग्रेस कमेटी प्रत्येक प्रान्त को सामर्थ्य देती है कि वह अपने उत्तर दायित्व पर टैक्स न देना समेत सविनय कानून भंग करने का कार्य्य अपने प्रान्त की कांग्रेस कमेटी को बताई हुई विधि के अनुकूल प्रारम्भ करे किन्तु नीचे लिखी दो शर्तें अवश्य माननीय हैं:—

(१) यदि किसी व्यक्ति ने "सविनयकानूनभंग" करना हो तो उसे कपड़ा बुनना आता हो और वह चाहे स्त्री या पुरुष हो विदेशी वस्त्रों का परित्याग करके केवल हाथ से कते और हाथ से बुने कपड़े पहिनता हो, हिन्दू मुस्लिम ऐक्य में विश्वास रखता हो तथा भारत के भिन्न २ धर्म्म सम्प्रदायों के मेल में विश्वास रखता हो, खिलाफ़त तथा पञ्जाब के अत्याचारों के हटाने तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिये अहिंसा को अत्यन्त आवश्यक समझता हो और यदि हिन्दू हो तो अपने निज के व्यवहार से यह दिखलाता हो कि अछूतपन जाति पर एक धब्बा है।

(२) यदि समूह के द्वारा सविनय कानून भंग करना हो तो उस ज़िले या तहसील को एक मान कर उसकी बहुत सी जन संख्या पूर्ण स्वदेशी को स्वीकार किये हो, वह लोग उसी ज़िले या तहसील में कते और बुने वस्त्रों को वर्तते हों और वर्ताव में ऊपरोक्त असहयोग के शेष नियमों में विश्वास रखते हों।

याद रहे कि किसी सविनय कानून भंग करने वाले का व्यय स्वराज्य फण्ड से दिया न जावेगा और उस के क़ैद होने पर उस के कुटुम्ब को अपने आप रूई धुन कर, कात कर, और बुनकर या अन्य किसी प्रकार अपना भरण पोषण करना होगा।

इस के अतिरिक्त प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी की प्रार्थना पर कार्य्य कारिणी कमेटी किसी दशा में यदि उसे सन्तोष होजावे तो सविनय कानून भंग करने की शर्तों को शिथिल कर सक्ती है।

दूसरे दिन की सभा में यह प्रस्ताव पास हुए:—

१—अखिल भारत वर्षीय कांग्रेस कमेटी यह जानती हुई भी कि स्वदेशी का प्रचार यद्यपि उत्तेजना जनक है तथापि यह विचार करती है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि वृद्धि सर्वत्र नहीं है। अतः भारत के सब कार्य्य कर्त्ताओं को आज्ञा देती है कि वह अपना ध्यान विदेशी सूत तथा कपड़े के बहिष्कार में लगा कर हाथ से कते और हाथ से बुने कपड़े तैयार कराने में लगे जिस से यदि आवश्यक्ता पड़े तो देश में सर्वत्र सविनय कानून भंग करने का कार्य्य होसके।

२—कार्य्य कारिणी कमेटी ने जो प्रस्ताव सर्कारी नौकरों—चाहे सेनामें हो या अन्य दफ्तरों में—के विषय में पास किया है उसका यह सभा समर्थन करती है और इस का यह विचार है कि सर्कारी नौकर सिविल या फौजी नौकरियों को त्यागें या नहीं इस पर प्रत्येक नागरिक का अपना विचार प्रगट करने का जन्म सिद्ध अधिकार है, प्रत्येक का जन्म सिद्ध अधिकार है कि प्रगट रूप में सैनिकों तथा सर्कारी कर्मचारियों से इस सर्कार से जिस ने भारत की बहुसंख्यक जनता के विश्वास और सहयोग को खो दिया है—अपना सम्बन्ध हटाने के लिये अनुरोध कर सके।

तिलक स्वराज्य फण्ड

कई लोगों को शक हो रहा था कि स्वराज्य फण्ड के एक करोड़ होने की जो घोषणा थी उस में बहुत सा द्रव्य केवल प्रतिज्ञा के रूप में ही है जिस के वसूल होने में शक पड़ सक्ता है। परन्तु हर्ष का विषयहै कि दिल्लीकी अखिल भारत-वर्षीय-कांग्रेस कमेटी में यह बात पेश की गई है कि स्वराज्य फण्ड का सम्पूर्ण रुपया नगद वसूल हो चुका है केवल ६० हज़ार ही कम है और बहुत सी रकमें वसूल करने को हैं जब वह वसूल हो जावेगी तो एक करोड़ से बहुत ऊपर रकम बन जावेगी।

अली बन्धुओं का मुकदमा

व्यर्थ का आडम्बर

सर्कार की ओर से जातीय नेताओं पर जो फौज़ के भड़काने तथा राजविद्रोह फैलाने के अभियोग में पकड़े गये थे—जो मुकदमा चलाया जा रहा था उस में श्री जगद्गुरु शंकराचार्य्य को छोड़ ही दिया गया है बाकी अली बन्धुओं और अन्य सब को दो वर्ष की सज़ा दी गई है। अली बन्धुओं के पकड़े जाने की खबरें जिस प्रकार इतने दिनों से गर्म हो रही थीं और फिर जिस प्रकार इन को पकड़ा गया और करांची में जज के सामने पेशी हुई, फिर थोड़े दिन के बाद नये कोर्ट में इन्हें पेश किया गया इन सब आडम्बरों से जनता में तो यह जनश्रुति थी कि कोई कठिन समस्या सर्कार के सामने है जिस के लिये इतने आडम्बर रचे जा रहे हैं अतः परिणाम भी कुछ भयँकर ही निकलेगा। परन्तु यहां तो यह बात हुई कि खोदा पहाड़ तो निकला चूहा। राज विद्रोह के अभियोग को जिस के लिये भी अली बन्धु गिरफ्तार किये गये थे उसे सर्कार ने ही वापिस ले लिया। दूसरा अभियोग सेना के भड़काने का था वह अब देश के एक कोने से दूसरे कोने तक शहर २ गांव २ में अनेकों वेदियों पर से नर और नारियों में फैला दिया गया और इस दोष से जूरी ने भी अली बन्धु को बिल्कुल निर्दोष सिद्ध कर दिया है, केवल एक ही दोष है जिस के कारण उन्हें दो वर्ष की क़ैद दी गई है और यह काम तो मामूली कोर्ट से भी हो सक्ता था। यदि अली बन्धुओं को कार्य्य क्षेत्र से हटाना ही था तो उस के लिये आडम्बर की क्या आवश्यक्ता थी? परन्तु इस पर यह कहा जा सक्ता है कि सर्कार को क्या पता था कि जूरी इन्हें निर्दोष सिद्ध करेगी। हम कहते हैं कि सर्कार के पास एक से एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बढ़ कर कानून जानने वाले हैं और उस के पास हर एक प्रकार की खबरों के गुप्तचर हैं अतः सर्कार को यह पता न होना कि अमुक अपराध में क्या दण्ड होना चाहिये वर्तमान शासन प्रणाली की अयोग्यता का ही सूचक है। जब वह इतनी अयोग्य है तो उसे स्थिर रखने से क्या लाभ? हमारी समझ में अब भी बहुत देर नहीं हुई है यदि सर्कार असहयोगियों के साथ परामर्श करके कोई उत्तम निश्चय करले तो अब भी देश का बचाव हो सक्ता है।

राष्ट्रीय महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द की विजय

६ नवम्बर को ब्रेडलाहाल में लाहौर के राष्ट्रीय महाविद्यालय का उत्सव हुआ जिसमें स्नातकों को पद प्रदान किये गये। यद्यपि प्रवेश टिकट द्वारा था तौ भी हाल खचाखच भरा था। सभापति के आसन को महात्मा गान्धी जी सुशोभित कर रहे थे। महाशय भीमसेन मंत्री ने राष्ट्रीय महाविद्यालय का वार्षिक विवरण पढ़कर सुनाया, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय प्रधान ने एक बड़ी महत्व पूर्ण वक्तृता दी, जिसमें उन्होंने दर्शाया कि राष्ट्रीय शिक्षा का विचार सबसे पहिले महर्षि दयानन्द के मस्तिष्क में उत्पन्न हुआ और उस शिक्षा के मुख्य अंग अबभी बड़े २ विचारक वही समझते हैं जिनका उल्लेख लंगोट बन्द सन्यासी कर गया है। अपने भाषण के अन्त भाग में आपने महात्मा गान्धी के प्रति अपनी भक्ति का प्रकाश किया और कहा कि जिस गुजरात की भूमि ने दयानन्द को उत्पन्न किया था उसी महापुरुष-प्रसवनी भूमि ने एक ऐसे महात्मा को उत्पन्न किया है जो थोड़े दिनों में ही एक ऐसा कार्य्य करने लगे हैं जो इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। अन्तिम भाषण महात्मा जी का था। लाहौर की सर्दी में भी केवल एक लंगोट और चादर में अपने नेता को देख कर उपस्थित सज्जनों और देवियों के हृदय प्रफुल्लित हुये और आंखों में प्रेमाश्रु वह उठे। महात्मा जी के उपदेश में स्वदेशी, चर्खा, और जीवन की पवित्रता पर बड़ा बल था। टिकटों की बिक्री से ५ हज़ार के लग भग रुपये राष्ट्रीय महाविद्यालय की कोष में आये। हम आशा करते हैं कि यह विद्यालय दिन प्रति दिन उन्नति की ओर पग उठायेगा और इसके विद्यार्थी और स्नातक देशभक्ति, धर्मसेवा और जीवन की पवित्रता में अन्य विद्यार्थियों के लिये उदाहरण बन कर दिखलावेंगे।

गोरे और काले अपराधी

यद्यपि बृटिश राजनियमों में काले और गोरे का भेद इतना अधिक नहीं रक्खा गया परन्तु वर्ताव में यह भेद स्पष्ट रीति से कई विभागों में दृष्टिगोचर होता था, उच्च पदवियें, रेलों के कम्पार्टमेन्ट, कोर्ट इत्यादि गोरों के लिए भिन्न और कालों की भिन्न थे ही परन्तु अब एक बात और पता लगी है। वह यह है कि डा० किचलू तथा अली बन्धुओं के साथ भी जेल में ऐसा सलूक हो रहा जैसा कि किसी चोरी व डाके में पकड़े गये क़ैदी के साथ किया जाता है। दूसरी तरफ़ यूरोपिन क़ैदी को खाने के लिये दूध, खांड, चाय, सूजी इत्यादि, पहिनने के लिये कमीजें, मोज़े, गर्मसूट, फुलालैन के सूट, तौलिये, जूते, इत्यादि शिर बाँहने की कंघी तथा अन्यान्य आराम की चीजें मिलती हैं। बात तो यह है कि चाहे डाकृर किचलू इत्यादि की कुछ भी योग्यता और स्थिति हो परन्तु सर्कार की दृष्टि में तो प्रतिष्ठित वही है जो गोरा हो, खद्दर पहिने हुये काले हिन्दुस्तानी की क्या प्रतिष्ठा? ———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री उपयोगी स्त्रियों द्वारालिखित लेखों का संग्रह।

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१—स्त्री जगत्—	३८२
२—पुरुषों का कुर्ता (ले०श्रीमती ओ३म्वती देवी)	३८३
३—गृह प्रबन्ध	३८५
४—"घंटी बज गई" ले० जवन्द कौर।	३८६
५—संसार में सर्व ध्येय वस्तु प्रसन्नता आशा सूत्र ले० श्रीमती सावित्री देवी	३९०
६—स्वादिष्ट भोजन	३९१
७—धात्री शिक्षा	३९२
८—असहयोग का रहस्य	३९४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री जगत् ।

लाहौर की नारी मण्डल में महात्मा गांधी

गत ६ नवम्बर की शाम को महात्मा गांधी जी ने लाहौर की नारी मंडल को अपना मधुर उपदेश सुनाया। महात्मा जी के दर्शन हेतु लोहे के तालाव के समीप सभा मण्डल में इतनी स्त्रियां एकत्रित थीं कि किसी को हिलने जुलने की जगह न थी और बाहर बहुत से पुरुषों की भीड़ थी। महात्मा जी को नवम्बर के महीने में के एक खद्दर का दुपट्टा ओढ़े और धोती बांधे देख कर सब को बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ उन्होंने अपने भाषण में कहा कि जो स्त्रियां यहां पर खद्दर पहिन कर आई हैं उनके देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता है परन्तु जो मातायें और बहिनें विदेशी पहिने हैं उनके लिये बड़े शर्म की बात है। उन्हे चाहिये कि अब घर जाकर इन कपड़ों को आग में जला दें।

इसके बाद ब्रेडला हाल में नेशनल कालेज के लड़कों का दीक्षान्त संस्कार थो उसमें भाषण करते हुये आपने स्त्रियों से अपील की वह अपने सतीत्व की रक्षा आप करें और महाराणी सीता जी का दृष्टान्त देकर बतलाया कि स्त्रियों में सतीत्व रक्षा के लिये यदि सचमुच प्रवल इच्छा हो तो उनमें आन्तरिक शक्ति उत्पन्न हो जाती है जिसके आगे संसार का कोई भी नीच प्रवृत्ति वाला मनुष्य ठहर नहीं सक्ता इत्यादि।

बिसवाँ कन्या आश्रम।

यों तो कन्या पाठशालायें सब जगह खुली हुई हैं और समय २ पर खुलती जारही हैं परन्तु कोई ऊंचे दर्जे की आर्य्य भाषा, संस्कृत तथा अन्यान्य विषयों की शिक्षा देने वाली पाठशाला और आश्रम सहित यू. पी. में न थी अतः यहां की जनता इस अभाव को बहुत दिनों से अनुभव कर रही थी। अब हर्ष का विषय है कि बिसवां की पाठशाला में नई पाठ विधि रक्खी गई है और उसके साथ आश्रम भी खुल गया है। प्रारम्भिक उत्सव शीघ्र ही दिसम्बर में मनाया जावेगा। जिन २ लोगों को अपनी कन्यायें प्रविष्ट करानी हों वह अधिष्ठात्री कन्या पाठशाला पक्का कटरा बिसवां जिला सीतापुर यू. पी. से शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

बिसवां कन्या पाठशाला की पाठविधि

आर्य्य नारी सेवक सभा द्वारा अभी परीक्षणार्थ बिसवां कन्या पाठशाला के लिये पाठ विधि तैय्यार की गई है वह ≡)॥ के टिकट भेजने से पाठशाला से मिल सक्ती है। इस पाठविधि के अनुकूल यदि आठ वर्ष की कन्या प्रविष्ट हुई हो तो १६ वर्ष तक आठ श्रेणी की पढ़ाई पूर्ण कर सक्ती है। यह पढ़ाई संस्कृत में गुरुकुल कांगड़ी के अष्टम श्रेणी के ब्रह्मचारियों की या विशारद की परीक्षा की योग्यता के बराबर है और आर्य्य भाषा में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षा के बराबर और साथ ही गणित, भूगोल, इतिहास, धर्म शिक्षा, शिल्पकला इत्यादि की भी शिक्षा दी जावेगी। साधारणतया प्रत्येक कन्या का साधारण ज्ञान इतना हो जायगा कि प्रत्येक वर्त्तमान घटनाओं को समझ सकें और धार्मिक ग्रन्थों में भी प्रविष्ट हो सकें और अपने जीवन को देश, धर्म और जाति के लिये उपयोगी बना सकें। यदि यह पाठ विधि उपयुक्त सिद्ध हुई तो इसी क्रम से अधिक आयु तक पढ़ने वाली कन्या के लिये ऊपर की श्रेणी और बना दी जावेंगी। आशा है कि अन्य पाठशालायें भी इस पाठ विधि को प्रचलित करके अपना सम्बन्ध आर्य्य नारी सेवक सभा के साथ जोड़ कर उससे लाभ उठावेंगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

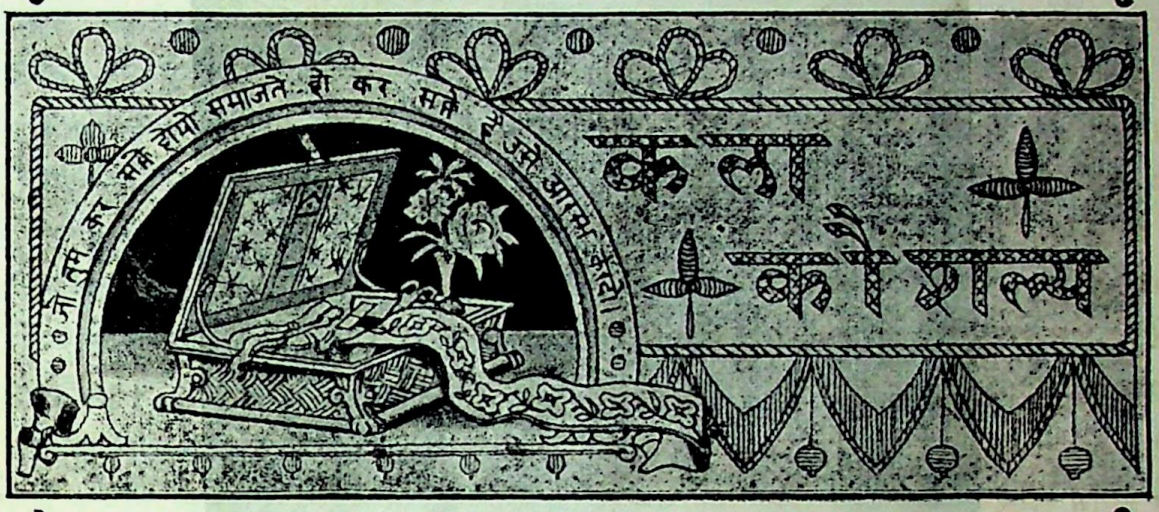

पुरुषों का कुर्ता

यह कुर्ता बड़ी ही उपयोगी वस्तु है। सर्दी आगई है शीघ्र तैय्यार करके अपने २ पुरुषों को दीजिये, घर में ऊन कातिये, बड़ी सुगमता और सस्ते में जाड़ा कट जायगा।

इसकी चौड़ाई १३ इञ्च छाती पर, १२ व १२½ इञ्च गले की गोलाई, २१ इञ्च लम्बाई।

आवश्यक वस्तुएं—लगभग १ पाव वा अधिक ऊन यह तौल ऊन की मोटाई पर निर्भर है ४ लोहे की १२ नं० की सलाइयां।

यदि ऊन बहुत महीन हो तो दोहरे से आरम्भ करो, तीन सलाइयों पर १८० फ़न्दे चढ़ाओ। पहिले ३० घेरे २ सीधे २ उल्टे बीनों फिर ७५ फेर बिलकुल सीधे बीनों। फिर अगले फेरे में हर तरफ़ २ फ़न्दे बढ़ादो। फिर ५ फेरे सीधे। अगले में हर तरफ़ २ फ़न्दे बढ़ाओ। ५ फेर सीधे। अगले फेर में २ फ़न्दे हर तरफ़ इस प्रकार बढ़ाओ कि उनके बीच में ५ सीधे फ़न्दे बीने जांय। ५ सीधे फेर। अब फ़न्दों के इस प्रकार हिस्से करो कि एक तरफ़ के बीच के बढ़े हुवे फ़न्दों से दूसरी तरफ़ के बढ़े हुवे फ़न्दों तक बराबर २ हो जाय, दो सलाइयों में ६६ प्रत्येक पर हो जांयगे (१८०+५+५+५) पहिले पीठ का हिस्सा बीनो। एक पंक्ति सीधी एक पंक्ति उल्टी इसी प्रकार बार २। किन्तु प्रत्येक पंक्ति के पहिले और पिछले १० फ़न्दे सदा सीधे बीनो। इस प्रकार ८० पंक्तियां बीन कर फ़न्दे "उतार" कर समाप्त कर दो।

अब सामने वाली सलाई के फ़न्दों में से दहिने हाथ की तरफ़ के ६४ फ़न्दे बीनो। उसी प्रकार एक पंक्ति सीधी १ उल्टी किन्तु इस में भी पहिले १० और पिछले १० सदा सीधे बीनो। बांये तरफ़ के १० घरों में बराबर दूरी पर ३ गोल छेद घटा बढ़ा कर कर दो जिस में बटनों के घर बन जांय। ८० पंक्तियां बीननी हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक बटन घर चित्र के अनुसार ऊपर वाले के बराबर की तरफ़ अन्दर को बनाओ। समाप्त कर दो। अब बांयें हाथ की सलाई पर ३२ फ़न्दे हैं इनको ६४ करलो इस प्रकार कि ३२ फ़न्दे दाहिने टुकड़े के पीछे की तरफ़ से उठाये जांय अर्थात् जहां पर बटन के छेद हैं उस के पीछे हिस्सा आ जाय। इस में भी ८० पंक्ति बीनो १ पंक्ति सीधी १ उल्टी एक के बाद दूसरी बीनो और आरम्भ के और अन्त के १० फ़न्दे सदा सीधे बीनो। फिर सादे फ़न्दे बीन कर समाप्त कर दो। कन्धों को सफ़ाई से सींदो और गले के लिये काफ़ी बीच में छोड़ दो।

अब बांह के लिये फ़न्दे उठाओ जो छेद हैं उस में ८४ फ़न्दे ३ सलाइयों पर उठाओ।

१० फेर सीधे बीनो। अगले फेर में बांह के नीचे की तरफ़ २ इकट्ठे फ़न्दे बीनो, ३ सादे, २ इकट्ठे बीनो और सीधा। ५ फेर सीधे बीनो। एक के बाद एक पंक्ति में ऊपर की तरह घटाते जाओ जब तक ७६ फ़न्दे रह जांय। फिर १० फेर १ सीधा, १ उल्टा बीनते जाओ और फिर समाप्त कर दो। अब गले के किनारे फ़न्दे उठाओ और ३ पंक्ति १ सीधा, १ उल्टा की बीनो। फिर समाप्त कर दो।

चार सीप के बटन लेकर छेदों के सन्मुख अन्दर की पट्टी के ऊपर और गले के किनारे टांक दो।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गृह प्रबन्ध

थकावट के समय भोजन—मनुष्य की आदतों में बहुत थोड़ी आदतें ऐसी होंगी जिन से स्वास्थ्य को उतनी हानि पहुंचती हो जितनी कि इस मामूली आदत से कि शरीर चाहे थका हुआ हो परन्तु पेट में खाना ठूंस लिया जावे। बहुधा लोग खेतों पर से, दुकान से, पढ़ने से, दफ़्तर से आते हैं उनका दिमाग़ और शरीर थका हुआ होता है परन्तु उसी समय बैठ कर पेट भर भोजन कर लेते हैं और फिर काम पर चले जाते हैं। यदि दिमाग़ या शरीर का कोई भी भाग अत्यन्त थका हुआ हो तो सारे शरीर को थोड़ा सा आराम करने की आवश्यक्ता होती है जिस से दिमाग़ के स्वस्थ होने से रक्त-सञ्चार सारे शरीर में बराबर हो जावे। यदि पेट को भोजन से उस समय भरलें जब कि जीवन-शक्तियां बल पूर्वक दिमाग़ अथवा नस नाड़ियों की ओर लगी हुई हैं तो जब तक रक्त सञ्चार ठीक न हो जावे तब तक हाज़मे की शक्ति काम नहीं करती इस लिये भोजन बिना हज़म हुआ पड़ा रहता है और खट्टा तथा खम्बीरा बन कर पेट में दर्द पैदा कर देता है जिस से पाचन शक्तियां खराब और रोग युक्त हो कर सारे शरीर को रोगी बना देती है। अतः यदि तुम्हें अपने शरीर की तथा सुख की परवाह है तो अत्यन्त काम से थके हुए शरीर या दिमाग़ होने पर कभी भोजन करने न बैठो।

फुलालैन धोने का ढंग—फुलालैन धोने में इन तीन बातों का ध्यान रखना चाहिये जिस से वह सिकुड़ जाया करती है (१) खाली पानी में धोना (२) उबला हुआ साबुन का पानी बहुत गर्म अथवा बहुत ठंडा (३) धीरे २ सुखाना। जब धोना हो तो पहिले दो टब में खूब साबुन डाल कर उबाला हुआ पानी भर कर रक्खो जो कि गुनगुना हो हाथ को गर्म न लगे। दूसरे टब में थोड़ा सा नील डाल लो। पहिले फुलालैन पहिले साबुन के टब में खूब धो लो फिर दूसरे टब में डुबो २ कर धोओ उसे दबा कर निचोड़ लो परन्तु मरोड़ कर न निचोड़ो फिर हाथों से पकड़ कर बल निकाल कर सूखने डाल दो। जब अधसूखी हो जावे तब फिर हाथों में पकड़ कर चारों तरफ़ से बल निकाल दो। कभी भी साबुन ले कर फुलालैन पर न रगड़ो क्योंकि ऐसा करने से उसके रोयें झड़ जाते हैं। सोडा भी न वर्तो क्योंकि उस के लगाने से रङ्ग पीला पड़ जाता है।

प्रत्येक टुकड़े को जल्दी २ धोना चाहिये और हर एक कपड़े को अलग २ और जिस दिन धूप निकली हुई या खूब हवा चलती हो तो हवा में सुखाना बहुत अच्छा है। यदि बर्सात में कमरे के अन्दर सुखाना हो तो खूब आग जला कर उस के सामने अलग २ लटका दो और जल्दी २ लौटते जाओ। नील डालने में इस बात का ध्यान रक्खो कि मलमल के कपड़े में जितनी डालनी होती है उस से तिगुनी डाली जावे।

यदि फुलालैन बहुत मैली हो तो तीन टबों में धोनी चाहिये परन्तु फुलालैन बहुत मैली करनी ठीक नहीं क्योंकि खराब हो जाती है।

साबुन का पानी तैय्यार इस प्रकार करना चाहिये कि एक तसले में साबुन को घुलने दो और टब में खूब पानी भर कर उसको मिला दो। यदि कपड़े धुलने से पूर्व साबुन का पानी ठंडा हो जावे तो फिर और साबुन का पानी तसले में उबाल कर उस में मिला दो। ध्यान रक्खो कि बर्तन बिल्कुल साफ़ हों।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाथी दांत की चीज़ों का रंग ठीक रखने का ढंग—हाथी दांत की चीज़ों की सफेदी स्थिर रखने के लिये साधारण ढङ्ग यह है कि उसे हवा से बचाव करके शीशे की बोतलों में रक्खा जावे। इस प्रकार चाहे कितनी ही पीली पड़ने वाली चीज़ क्यों न हो उस की सफेदी अधिक हो जाती है। और यदि पीली पड़ गई हो इसी प्रकार बोतल में रक्खी हुई हाथी दांत की चीज़ को सूर्य्य की किरणों के सन्मुख रख दो तो साफ़ हो जाती है। जाल कटी हुई हाथी दांत की चीजों के छेदों में जो मिट्टी भर जाती है उसे हटाने के लिये उस चीज़ को साबुन का पानी उबाल कर ब्रुश से धोओ या प्यूमिक स्टोन (Pumice stone) को पीस कर पानी में घोल कर धोओ किन्तु जिस चीज़ को बहुत सफेद करना हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि शीशे के बर्तन में ढक कर धूप में रक्खो। फिटकरी का पानी हाथी दांत को खराब कर देता है।

नोट—पञ्जाब में हाथी दांत का चूड़ा बहुत पहिना जाता है तथा दांत की कंघी, सुरमेदानी भी बर्त्ती जाती हैं अतः यह हमारी पञ्जाबी बहिनों के वास्ते बड़ी ध्यान देने वाली बात है।

———

"घंटी बज गई"

लेखिका—जवन्द कौर

पाठशाला का समय १० बजे का है। कन्याएं ८ बजे से ही माता के आगे पीछे फिरने लगती और रोटी के वास्ते अधीर होती जाती हैं और "बुलावी आयी" "बुलावी आयी" करती हैं। मातायें भी ऊधम के भय से झट कच्चा पक्का शाक उतार बेटी के आगे थाली धर देती हैं। बालिकाओं ने दो कौर इधर दो कौर उधर मुँह में डाल गले से उतार जल का गिलास पान कर माता से पिंड छुड़ा शाला में पहुंच पुस्तकें रख खेल कूद और बात चीत में मन लगा लिया। किसी ने घड़ी की सुई १५ मिनट पीछे कर दी कि पढ़ाई में थोड़ा बिलम्ब हो और हंसी मसखरी को अधिक समय मिल जाय। एक कन्या कोने में बैठी गोडों में मुख छुपाये अलग पड़ी है मोहनी ने कहा रोहिणी तुझे आज क्या हो गया? रोहिणी सुनते ही रोने लगी। इतने में कृष्णा आगई और रोहिणी के रोने का कारण पूछने लगी।

मोहिनी—रोये ना तो क्या करे।

कृष्णा—रोये ना तो क्या करे। करे यह कि उठ के खेले कूदे और समय पर पढ़ने जावे।

मोहिनी—खेलने के समय खेले पढ़ने के समय पढ़े और रोने के समय रोये॥

रोहिणी खिज गई और अधिक रोने लगी।

कृष्णा—वह रोती है तू छेड़ती है उसे पुचकराती नहीं।

मोहनी—पुचकारूं क्या कोई बात मेरे बस की भी हो।

कृष्णा—तो है क्या कुछ फूटे मुंह से कहो भी।

मोहिनी—लो सुनो। देखूं तू क्या इस को पल्ले से खोल कर दे देती है। इस का एक क्रोशिया था वह टूट गया। मखमल का टुकड़ा था उस की माता ने टोपी बना ली। ऊन के बण्डल थे उन को चूहों ने कुतर डाले। विकन के चित्र थे वह लल्ला ने फाड़ डाले। रंगविरंगी धागे थे वह कीचड़ में लथपथ हो गये। पिटारी थी उस पर खाट गिरने से ऐसी पिचक गई जैसे गीली गुड़िया की नाक बैठ जाती है। सो इस के कसीदे का सारा झंझट दूर होगया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृष्णा—तो कोशिया आदि कुछ तुम ही ने दे दिया होता।

मोहिनी - मुझ से इस ने मांगा तो था।

कृष्णा—फिर ?

मोहिनी - मैंने अंगूठा दिखा दिया।

रोहिणी और भी खिज गई और मोहिनी के एक लात मारी। रोते २ हिचकी बन्ध गई तब कृष्णा ने प्यार करना आरम्भ किया।

मोहिनी - इस ने माता से प्रार्थना की थी कि मुझ को यह वस्तु शीघ्र मंगवा दो उस ने झिड़क के कहा कि "तुम मूर्खा को मैं पाठशाला में कुछ सीखने को थोड़े ही भेजती हूं। मैं तो घर से इस वास्ते निकालती हूं कि सारा दिन घर में कान खाया करती, कतरनी की तरह बोला करती और घर भर में उलट पुलट किया करती हो" और यह भी ऐसी है कि पढ़ने लिखने को तो काला अक्षर भैंस बराबर और क़सीदे के वास्ते सदा सर पटाती रहती है।

कृष्णा—हां है तो यह ठीक।

रोहिणी—कृष्णा ! तू भी अब इस झूठी के साथ मिल गई फिर ऊं ऊं करने लगी।

मोहिनी—जानती हो इस को यह चिकन, कसीदा नैकटाई बनियान आदि बनाने का रोग कहां से लगा ?

कृष्णा—रोग ?

मोहिनी—हां रोग। जब शकुन्तला का व्याह हुवा तो उस की माता ने जो उस को वस्त्र दिये उन में बहुत सा भाग शकुन्तला का अपना बनाया हुवा था अर्थात् मेज़ पोश, कुरसी की गद्दिया तकिये के गिलाफ, पड़दे आदि सब शकुन्तला के बनाये हुवे थे। यह चाहती है कि मैं उस से पीछे ना रहजाऊं। अभी मोहिनी कुछ और कहना चाहती थी कि रोहिणी खिज उठी और मोहिनी के मुख में अपना आंचल ठूंस दिया और बोली कि अब बोल।

कृष्णा—सुनो रोहिणी मैं तुझ को एक बात सुनाऊं अब नैकटाई बनियान दस्ताने बनाना छोड़ दो अब तुम चरखा काता करो अब हमारा तुम्हारा इसी में भला है।

मोहिनी—ने झुंझला कर रोहिणी का हाथ अपने मुख से पृथक् कर दिया और कहने लगी हां ठीक बिल्ली के भागों छीका टूटा।

कृष्णा—छीका टूटा तो मटका दही का भी तो फूटा।

मोहिनी—रोहिणी ! तुम ने पिटारी से छुट-कारी पा ली, बहुत पढ़ लिया और क़सीदे से भी भण्डार भर लिये अब चरखा चलाना और महीन महीन कातना। कपास शकुन्तला लावेगी रूई तुम बनाना और सूत मुझ को देती जाना।

रोहिणी—"सूत ना सूत तेरे मुँह में जूत" रोहिणी कुछ और कहने लगी थी कि कृष्णा ने मोहिनी का हाथ पकड़ घसीटना चाहा कि घंटी बज गई और यह सब पुस्तकें सम्भाल अन्य कन्याओं के साथ प्रार्थना में समिलित होगईं।

"मैं वारी"

सत्या आज बड़े ध्यान से मख़मल पर फूल काढ़ रही है और महीन काम होने से कभी कभी चशमा उतार आंखों को मल भी लेती है। सत्या शिल्प कला में दक्ष है। अभी उस ने अपने हाथ के बनाये नाना प्रकार के चिमनी के पड़दों, पेटी कोट की लेस, ब्लाउज़ की नकशी चाय की मेज़ का मेज़पोश आदि के वास्ते उत्तमोत्तम पारितोषिक प्रदर्शनी से प्राप्त किये हैं। उसे यह लालच अधिक परिश्रम के वास्ते बाधित कर रहा है। उस की नेत्रों की ज्योति क्षीण हो रही है पर वह वाह वाह की सूली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर चढ़ रही है। आज वह अपनी वृद्धा सास को अपना काम दिखा रही है। वृद्धा आंखें फाड़ फाड़ कर देखती है उस की समझ में यह जंजाल नहीं आता फिर भी वह "मैं वारी" "बहुत अच्छा है" कह देती और उस का माथा चूमती है। पर कभी २ वह दबी ज़बान से यह भी कह बैठती है "बेटी इतनी टीप टाप का फल क्या है? इन वस्त्रों से ठिठरते शरीर की रक्षा नहीं होती न भानुताप से ही बचाव होता है। ना यह चार दिन चलने के ना धोने साफ होने के। इन में ना गाजर बांधी जावे ना मूली। हमारे तो बाप दादा ने ना यह सूई सलाई ना ऐसी नकशी कढ़ाई कभी देखी थी। चाय ही कोई नहीं जानता था तो उस के प्याले। फिर प्यालों की मेज़ और मेज़ का मेज़पोश और मेज़पोश की झालड़ भला कौन जानता।"

सत्या—माता जी वह समय सीधे लोगों का था सुन्दर, सूक्ष्म, कोमल, जालीदार, बेल बूटे, नकशी चमक दमक लचकदार कलाओं की कौन जानता था? दृष्टि को ऐसी सुन्दर हल्की फुल्की वस्तु देखने का अभ्यास कहांथा? उन की सौन्दर्य—प्रिय—वृत्ति मध्यम पड़ी हुई थी। मोटा पहन लिया रूखा खा लिया।

माता—बेटी, मैं वारी, तुम ने क्या कुछ कह डाला सो तो मैं कुछ समझ नहीं सकी। मैं वारी तुम्हारे ललित भाषण में एक बात कि "रूखा खा" लिया मुझे खटका है। तुझ को ज्ञान नहीं कि उस समय घर में गेहूं, चने, माश मूंग, की बोरियाँ भरी रहती थीं। गाढे, खेस, आदि से पिटार भर पूर रहते और गाय भैंस का कुछ खर्च नहीं था इस वास्ते मक्खन, दूध के मटके घर में भरे रहते थे सो घर में रूखापन नहीं परन्तु तरी ही तरी रहती थी।

सत्या कुछ कहना चाहती थी कि मोहन जी आगये और सकुच कर रह गई।

मोहन जी आते ही महात्मा गांधी का व्याख्यान वर्णन करने लगे। सत्या का सुन सुन कर रंग बदलने लगा कि आज मेरे प्राणनाथ, मोटे सोटे कपड़े पर बोलते फूले नहीं समाते मैं उन ही की आज्ञानुसार यह हाथ का काम करती आई हूं अब क्या बनेगा?

जब मोहन जी सब कुछ कह चुके तो माता जी ने अच्छा अवसर जान कहा बेटा कुछ मेरी भी सुनोगे? मोहन जी बोले माता जी कहिये।

माता हमारे घर में एक चीज थी जिसका तुमने नाम लिया "चरखा"। मैं दसवें बारहवें दोचार आनों की कपास मंगवा लिया करती उसको घर में ही बेलने में बेल कर रूई बना लेती। बिनोले भैंस के काम भी आते और व्याह शादी में रोशनी के लिये भी काम आते। रूई को कात कर सूत बनाती और सूत से खादी, गाढा, खेस, चादर, ओढनी, पिछोड़ी, दोतही, चौतई, तौलिया, लिहाफ, तोषक, तकिया सब कुछ बनाती, हमारे घर में कपड़ों पर कभी कुछ खर्च ही नहीं जान पड़ता था। दगला भी इसी से और कुड़ता भी इसी से, धोती भी इसी से और अंगा अंगी लहँगा पगड़ी सब इसी से हो जाता था। सरदी में गरम लोई भी बना लेते और सरदी गरमी चौमासा निश्चिन्त होकर काट लेते। आज मैं देखती हूं कि तुम लोग गरमी सरदी में कपड़े बनाने की ही चिन्ता में सूख जाते हो। सो बेटा तुम जीते रहो कमाते रहो और बनाते रहो। मैं वारी

मोहन जी—माता जी आपने अच्छी बात सुनाई अब फिर वह समय आने वाला है?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माता—तुम्हारा व्याह हुआ। मैंने तुम्हारी बहू को चरखा कातने को कहा तो तुमको स्मरण होगा तुमने कहा "माता जी यह महाविद्यालय में पढ़ी हुई है। यह अपने मस्तिष्क को अच्छे काम में लगावेगी। चरखे में परिश्रम बहुत और फल न्यून होता है। समय अमूल्य है इसे ऐसे नहीं खोना। लट्ठा खासा सस्ता मिल जाता है"। और मेरी पड़ोसन ने भी कहा "अब तेरे बहू आगई है तू चरखा छोड़ दे और मेरा चरखा लोहड़ी की आग पर रख दिया वह जल कर राख होगया।"

मोहन महात्मा गान्धी का उपदेश सुन चुका था घर में माता का प्रेममय प्रभावशाली कथन सुना तो अपनी स्त्री से बात चीत करने लगा वह भी इसी चिन्ता में निमग्न थी कि अब मेरी बारी भी आयेगी। मगर उसको इसके सिवाय कुछ ना सूझा कि उसने आंख बचा बचा कर सब कसीदा चिकन समेट कर पिटारी में बन्द कर दिया।

वह बोली आप मरदों की ऐसी ही बातें हैं आप लोग झट जोश में आजाते और विना सोचे ही एक के पीछे दूसरे लग जाते हैं। भला अब यह बातें चल सकती हैं? विदेशी के बिना हमारे घर शून्य हो जावें। जरा घर से विदेश की चीजों को निकाल कर देखो पीछे घर में ईट पत्थर के बिना क्या रह जाता है? मैं कहती हूं कि बने हुवे घर में से विदेशी कील कांटा भी निकालो तो घर की ईंट के साथ ईंट बजने लगे।

मोहन जी को यह बातें अच्छी नहीं लगी वह क्रोध से आग बबूला होगये और सत्या के हाथ से पिटारी छीन तीसरी छत से नीचे गली मे दे फैंकी और आप नीचे उतर बुड़ बुड़ाते घर के पिछले भाग से भाग गये कि किसी को क्रोधान्वित मुख न दीख पड़े।

सत्या बेसुध होकर गिरने लगी थी कि उस की सासने कहा "मैं वारी"।

"चरखा"

रात्रि का समय, शीत के दिन, कमरा बन्द है और अंगीठी जल रही है। रोहिणी बेसुध पड़ी है। बृद्धा दादी उसके सिरहाने "मैं वारी" कर रही है। माता सत्या के चिन्तित विक्षिप्त पने से हाथ पाँव फूल रहे हैं कुछ सूझ नहीं पड़ता। गली मुहल्ले के नर नारी एकत्रित होरहे हैं डाक्टर के हाथ में रोहिणी की नाड़ी है। सब लोग डाक्टर के मुख की ओर निहार रहे हैं कि क्या कहते हैं।

डाक्टर साहिब—रोहिणी बेसुध अवश्य हो गई है पर जीवन संकट में नहीं है। कोई भारी वस्तु के धमाके से मग़ज के अन्दर के भाग में थोड़ी चोट आगई है। कहीं २ सूई सी चुभ गई मालूम होती है। इसके सिर पर पानी की गद्दी रखनी चाहिये।

पानी की गद्दी रक्खी गई देखते देखते अन्दर की चोट बाहिर आगई अर्थात् सिर में कुछ सोज होगई।

इतने में मोहन जी घर आये इतना जमघटा देख कलेजा धक धक करने लगा और बावले से हो पूछने ही लगे थे कि सत्या ने कहा—देखा आपकी क्रोधाग्नि का फल। आप तो कहते थे कि महात्मा जी कहते है अपना काम करो किसी को दुख मत दो।

मोहन—घबरा कर बोला। हैं! बात क्या है?

सत्या—आपने मुझ अबला की पिटारी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फैंकी वह रोहिणी के सिर पर जापड़ी, वह शाला से आरही थी। वही रोहिणी अन्दर पड़ी है डाक्टर पास बैठे हैं।

रोहिणी ने कुछ आंख झपकी और धीमी स्वर से बोली :-

"चरखा"

मोहिनी जो रोहिणी की खबर को आयी खड़ी थी कुछ भौंहें हंसी में बोली:—

"हां चरखा जरा २ महीन महीन कातना" कृष्णा भी मोहिनी के साथ खड़ी थी उसने मोहिनी के चपत लगाई और कहने लगी अब भी तुमसे चुप नहीं रहा जावे है कुछ उसके साथ थोड़ी नहीं हुई।

डाक्टर बच्चों का प्यारा था पूछने लगा बेटी क्या बात है ? तो कृष्णा ने पाठशाला वाली सारी राम कहानी कह सुनाई।

सत्या सुन सुन कर मुंह में उंगली देने लगी और मोहन जी भी आश्चर्य करने लगे कि आज घटना अपूर्व हुई है। रोहिणी को फिर होश हुवा और बोली :—

"चरखा"

डाक्टर ने कहा रोहिणी अब नितान्त सचेत होने वाली है इसके वास्ते दुग्ध तय्यार रक्खो मगर चरखा भी कहीं से मंगवा छोड़ो नहीं तो यह व्याकुल हो जावेगी।

रोहिणी की आंख खुली तो क्या देखती है कि कृष्णा चरखा कात रही है और साथ साथ गाती जाती है।

चरखा मेरा रोहिणी राखा।
चरखा मेरा गांधी जी भाखा॥

—:o:—

संसार में सर्व-ध्येय वस्तु प्रसन्नता आशा सूत्र

लेखिका—श्रीमती सावित्री देवी शिमला

दुनियां में यदि किसी भी कार्य में सफलता चाहते हो तो प्रसन्नता उपार्जन करो। बिना प्रसन्नता के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता, जो प्रसन्न है वही संसार के वास्तविक सुख को भोगता है। यथा जिसके हृदय में विरहाग्नि बड़े ज़ोर शोर से प्रज्वलित हो रही है, जिसका मन केवल अभिलाषा ही की यन्त्रणा से बेधित है, जिसे प्रतिक्षण प्रेम को ही खोजना पड़ता है जिसका जीवन केवल मात्र आशा से ही पोषित हो रहा है, जिसके मन की वेदी पर कष्ट देव ने बलवत् होम आरम्भ किया है और कभी २ निराशा की आहुति से ही जिसकी ज्वाला को द्विगुणित किया जा रहा है, हाय, जिसकी आशा पूर्ण कामनायें कभी २ व्यर्थ ही नयी आशाओं से प्रदीप्त दिखाई देती हैं कहो ? उसके लिये संसार में क्या धरा है ? उसके जीवन का क्या लाभ है ? उसके जीवन का एक २ क्षण क्यों बढ़ रहा है हाय, वहीं क्यों नहीं समाप्त हो जाता। आशा निराशा रूपी चक्र में क्यों चक्रित हो प्रतिक्षण हृदय की क्षीणता होरही है, एक दम टूट ही क्यों नहीं जाता !

ओह, आशा-सूत्र न होती तो सचमुच ऐसे ही होता और दुनियां में कष्ट यंत्रणा न भोगनी पड़ती, प्रतिक्षण के स्मरणीय देव की अशान्तता में ही उसके दिनों का अन्त हो जाता, अथवा क्रोध की तीव्र धार से अपने ही पांव काटे होते और प्रायश्चित्त का सहचर बना होता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवित्त

आशा लता मुरझा गई तो सुख कमल सम्भव कहां?
व्यसन व्याधि दीनता फिर निकलतीं कलियां वहां॥
आकाश को काली घटा जब घेर लेती है कभी।
रवि चन्द्र तारागण भगें अरु भाग जाती चांदनी॥१॥

सचमुच आशा के बिना खाना पीना चलना फिरना कर्तव्य चिन्तन क्या, कोई भी चेष्टा पूर्ण नहीं होती अतः आशातीत हो एक क्षण भर जीवन नहीं हो सकता। जहां आशा नहीं वहां प्रसन्नता तो रह ही नहीं सकती-और प्रसन्नता के बिना मानसिक, शारीरिक, अथवा आत्मिक, कोई भी उन्नति असम्भव है। ऐसे ही प्रथम बिना ईश्वरीय प्रसन्नता के आत्मा की पवित्रता नहीं हो सकती, आत्मा की पवित्रता ही भूमिमें सर्वोत्तम रत्न और जीवन की शोभा है। आत्मा की प्रसन्नता से मन भी सद्गतिवान् होता है, मनकी किसी भी प्रकार की गति दशों इन्द्रियों की अपनी गति होती है अतः मन सुमन होने से इन्द्रियें भी सुचारिणी होजाती हैं और विषया शक्ति से दूर रहती हैं।

फिर यह तो सर्वसिद्ध है कि जिन पर विषय किसी प्रकार भी आक्रमण नहीं करते उनका शरीर मन सदैव स्वस्थ रहता है। शारिरिक स्वस्थता ही सर्वोन्नतियों का मूल है-देश सेवा-धर्म परायणता सदाचारादि-के लिये भी स्वस्थता ही प्रधान है।

जैसे हम चाहते हैं कि देश में कोई बड़ा काम करें, दीनों दुःखियों की रक्षा करें, वेदोक्त यम नियमों को पालते हुए सदाचारी बनें, पर धन के होते हुए भी अस्वस्थता हमारी सब कामनाओं की रुकावट है। कोई ऐसा काम नहीं जो बिना स्वास्थ्य के हो सके।

भूमि ही नहीं तो अन्नोत्पत्ति की आशा निराशा मात्र है। अतः संसार में उन्नत होनेके लिए प्रसन्नता एक मुख्य साधन है जैसे अन्नोत्पत्ति के लिये भूमि और पानी की आवश्यकता है ऐसे ही यदि उन्नति-वाटिका को हरा भरा और नाना रंगों से सुशोभित तथा सुगन्धित फलित देखना चाहते हो तो प्रसन्नता रूपी जल से मन को भली भान्ति सिञ्चन करो और धैर्य से करते जाओ। नित्य इसी चाल से चलो तभी तुम्हारे उन्नति मन्दिर के कपाटोद्घाटित होजायेंगे बस, फिर अभ्यास से यही दुर्लभा प्रसन्नता तुम्हारी अपनी होगी और स्थिर होगी।

प्रसन्नता से अधिक ध्येय वस्तु कोई नहीं। सभी चाहते हैं कि मैं प्रसन्न रहूं, कोई कष्ट न हो। सच मुच यही एक अनुपम रत्न है, कि जिसे खोजने के लिये ऋषि मुनि योगी तपी अपना समस्त जीवन पर्वत कन्दराओं में अथवा नदियों के तटों पर धूप और शीत के गुणों को न अनुभव करते हुए आशा को साथ ले उस परम पिता परमात्मा के आगे पूर्ण प्रसन्नता चाहते हैं और उसी में अन्त करते हैं।

प्रसन्नता जीवन का लक्ष्य है और आशा उसे लम्बा बनाने की डोरी है॥

स्वादिष्ट भोजन

गरी की बरफ़ी

आवश्यक वस्तुयें—१ सेर खांड, ½ सेर गरी के गोले, ¼ सेर खोया।

विधि—पहिले गोलों को छील लो फिर एक टीन का महीन २ छेदों वाला गरी रेतने का घीया कस होता है उस में से रेत लीजिये। जब महीन २ रित जांय तो बचे खुचे टुकड़ों को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अलग रख दो।खोया यदि बज़ार से लेना हो तो वहां से नहीं तो घर में डेढ़ सेर दूध मंगा लो और कढ़ाई में डाल कर औंटा लो। अब कोई आध पाव पानी में खांड को कढ़ाई में चढ़ा कर गरम करो जब खूब रीझने लगे तब ज़रा सा दूध पानी में मिला कर उस में डाल दो सब मैल कट कर ऊपर आजायगी, तब छोटी सी झरनी से उसे उतार दो, जब खांड बिल्कुल साफ़ हो जाय तब ज़रा तेज़ आञ्च कर दो फिर जब तार निकलने लगे (किन्तु यह ध्यान रहे कि आञ्च अन्दाज़े की हो इतनी तेज़ न हो कि जलने लगे या तलख़ जाय) तब खोया जिस का खूब महीन २ चूरा सा बनाया हो उसे रेती हुवी गरी में मिलाकर धीरे २ कढ़ाई में डाल कर चलाती जाओ (यह भी ध्यान रहे कि चाशनी बहुत पतली भी न हो क्योंकि इन चीज़ों के डालने से ज़रा और पतली होजाती है) जब अच्छी तरह मिल जाय तब कढ़ाई उतार लो और कुछ देर तक यदि बहुत कड़ी न हो गई हो तो उसी में चलाती जाओ जब जमने वाली मालूम होने लगे तब किसी थाली में तनिक सा घी लगाकर इसे फैला दीजिये, पर बहुत पतली पतली नहीं ज़रा मोटी रखिये ऊपर से वरक़ और पिश्ता बारीक़ काट कर छिड़का दो फिर किसी कागज़ को रख कर ऊपर से दबा दो और बरफ़ी की शकल काट दो, ठण्डी होने पर निकाल रक्खो और खाओ।

धात्री शिक्षा

(गतांक से आगे)

धाय—धाय के चुनने में बड़ा ध्यान रखना चाहिये। उसकी स्वास्थ्य अच्छी होने पर भी अच्छी प्रकार परीक्षा करवानी चाहिये कि उसे कोई छूत का रोग तो नहीं जैसे क्षयी रोग या सूजाक इत्यादि। इसके लिये आवश्यक है कि उस के दांत, मसूढ़े, गर्दन, चर्म, वाल तथा गले की परीक्षा करनी चाहिये। उस के पति का आचरण तथा उस के स्वास्थ्य की दशा भी जाननी आवश्यक है। उस की छाती सुदृढ़ हों और उन पर छोटी २ घुंडियां सी हों वह मोटी और अपने भार से झुकी हुई न हों, स्तन के अग्र भाग भी अच्छे सुदृढ़ हों और उन पर फाँकें पड़ी हुई न हों। उमर के अनुसार उस का दूध बच्चे को पच जाने योग्य होने के लिये आवश्यक है कि उस का प्रसव काल वही हो जो बच्चे की माता का हो अथवा उस से पीछे प्रसूता हुई हो पहिले नहीं। उस के दूध की भी परीक्षा करनी चाहिये। उस का रङ्ग नीलपन लिये हुये सफेद हो, उसमें मिठास हो और रखने पर उस में बहुत मलाई पड़ती हो। परन्तु धाय की सर्व्वोत्तम पहिचान उस के अपने बच्चे की दशा से मिल सक्ती है।

यदि बच्चे की खाल उधड़ी हुई सी लगे या मुँह और नथनों का मास फटा २ सा हो अथवा चूतड़ों पर चकत्ते पड़े हों तो धाय नहीं रखनी चाहिये। धाय बच्चे को दूध पिलाने के वही नियम पालन करे जो माता के लिये ऊपर कहे जा चुके हैं और वह अपनी आदतों को भी सुधरी रक्खे। उसका भोजन सादा, पुष्टि कारक और उचित समय पर हो, वह किसी प्रकार की नशीली वस्तु न खाये उसकी आदतों में सफ़ाई हो, जल्दी सो जाया करे और लड़के उठने वाली हो और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उचित व्यायाम करे। उसके दूध के गुणों के साथ २ उसके स्वभाव की परीक्षा करनी परम आवश्यक है। यदि स्वभाव चिड़चिड़ा हो तो उसको न रक्खे और यदि उसे मासिक होने लगे तब तो अवश्यमेव हटा देना चाहिये। यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि धाय चाहे कैसी विश्वास पात्र क्यों न हो उस का ध्यान पूर्वक और सर्वदा निरीक्षण करना चाहिये।

कई लोगों की राय है कि धाय रखने की अपेक्षा ऊपरी दुध पिलाने का प्रबन्ध करना लाभकारी अधिक है क्योंकि धाय के सबब से जो रोगों की सम्भावना है वह उस में नहीं रहती।

ऊपरी दूध पिलाना—यदि बच्चे को ऊपरी दूध पिलाकर पालना आवश्यक ही हो तो दूध बनाने में बड़े ध्यान और ठीक तौल नाप करने की ज़रूरत है। आज कल कई प्रकार के बने बनाये दूध के डब्बे मिलते हैं जिन्हे झंझट से बचने का खयाल करके कई मातायें या दाइयें बच्चों के पिलाती हैं। लेकिन इस प्रकार के तैय्यार दुध के विषय में कई बड़े भारी एतराज़ हैं। एक तो जिन चोज़ों से वे बने होते हैं उन की ख़ास मात्रा होती है जिस का वर्णन प्रायः नहीं रहता और जो एक उमर के बच्चे के पाचन योग्य हों तो दूसरी उमर के लिये नहीं होते। दूसरी बात यह है कि कोई यह निश्चय नहीं कर सक्ता कि यह ताज़ा है,और एक वार डब्बा खुल जावे तो फिर दूध में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है,तीसरी बात यह है कि वह मंहगे बहुत पड़ते हैं। दूसरी तरफ़ गाय का दूध हमेशः ही मिल सक्ता है वह सस्ता भी पड़ता है क्योंकि छोटे बच्चे को एक दो सप्ताह तक केवल एक या आधी छटांक प्रति दिन चाहिये; वह दिन में दो वार ताज़ा मिल ही सक्ता है और बाकी समय के लिये भी इस प्रकार बनाया जा सक्ता है कि कुछ काल तक बिगड़े नहीं।

कई डाक्टरों ने कई वर्षों तक परीक्षण कर के यह परिणाम निकाला है कि गाय का दूध यदि उचित रीत से बनाया हो तो सभी बच्चों को पच जाता है इस लिये ऊपरी दूध पचने योग्य बन सके इस के लिये नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना चाहिये :—

१—ऊपरी दूध माता के दूध के यथा शक्ति समान ही हो।

२—दूध नियमित समय पर नियम से देना चाहिये।

३—प्रत्येक समय एक ही नाप से उतना ही दूध दिया जावे।

४—और प्रत्येक समय एक ही मात्रा में मिला हुआ दूध हो।

किन्तु इन नियमों के विरुद्ध मा या दायी वे नियम काम करती हैं कि जब २ बच्चा रोया तो दूध दे दिया और दूध पहिले से तो तैयार न किया फिर समय पर झट पट कुछ दूध कुछ पानी मिलाया और चुटकी भर खांड डालली और बोतल में भर कर बच्चे के मुंह में रबड़ देने से पहिले आप छूकर देखा कि कहीं ज्यादः गर्म तो नहीं है—इस प्रकार ऊपरी दूध पिलाने से बच्चे को शूल की दर्द और दस्त आने लगते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असहयोग का रहस्य

सवाल—क्या आप वाकई महात्मा हैं ?

जवाब—मुझे तो नहीं मालूम होता कि मैं हूं। हां, यह मैं जरूर जानता हूं कि मैं ईश्वर की सृष्टि का एक विनम्र जीव हूं।

स०—अगर हां, तो क्या आप "महात्मा" शब्द की परिभाषा बतावेंगे ?

ज०—किसी महात्मा से मेरा परिचय नहीं, अतएव मैं उसका लक्षण नहीं बता सकता।

स०—अगर नहीं, तो क्या कभी आपने अपने अनुयायियों से कहा है कि "मैं महात्मा नहीं हूं"

ज०—ज्यों ज्यों मैं इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाता हूं त्यों त्यों उसका प्रयोग अधिकाधिक ही किया जाता है।

स०—क्या साधारण जनता आपके "आत्म बल" को प्राप्त कर सकती है।

ज०—उसके पास तो वह पहले ही बहुतायत से है। एक दफा फरासीसी वैज्ञानिकों का एक दल ज्ञान की खोज में निकला और घूमता-फिरता भारत में पहुंचा। उन्होंने अपनी अपेक्षा के अनुसार उसे विद्वन्मण्डलीमें पाने का भगीरथ प्रयत्न किया; पर कृतकार्य्य न हुए। पर उन्हें अचानक वह एक नीच जाति के झोपड़े में मिल गया।

स०—आप कहते हैं कि यह "यन्त्र-सामग्री" तो सभ्यता के लिए एक बला हो गई है। तब फिर आप रेलगाड़ी और मोटर में क्यों सफर करते हैं ?

ज०—कुछ बातें ऐसी हैं जिनके फन्दे से, प्रयत्न करते हुए भी, एकबारगी नहीं छूट सकते। यह पार्थिव शरीर-मिट्टी का ढांचा ही जिसमें कि मैं बन्द कर दिया गया हूं, मेरे जीवन के लिए एक बला है; परन्तु मैं उसको सहन करने के लिए मजबूर हूं, और उसका लत्तियल गया हूं जैसाकि ये महाशय जानते ही हैं—क्या लेखक को दर हकीकत इस बात में शक कि "इस पिछले महाभारत में जो नर-संह हुआ उसके लिए यह "यन्त्र-युग" ही जव देह है ?" विषाक्त गैस तथा अन्य दूषित वस्तु ने एक इञ्च भी हमारी प्रगति नहीं की है।

स०—क्या यह बात सच है कि पहले आ रेलगाड़ी के तीसरे दरजे में मुसाफिरी करते और अब आप स्पेशल ट्रेनों और फर्स्ट क्लास घूमते हैं ?

ज०—अफसोस ! इन महाशय को सही स खबर मिल गई स्पेशल ट्रेनों के लिए तो। महात्मापन जवाब देह है और सेकंड क्लास ह पहुंचने के इस अधःपात के लिए यह पार्थि कलेवर।

स०—जब स्वराज्य प्राप्त हो जायगा तब आ क्या करेंगे ?

ज०—मैं तो बड़ी लम्बी-चौड़ी छुट्टी ले पसंद करूंगा, जो शायद समुचित भी हो।

सं०—स्वराज्य प्राप्त हो जाने पर मुसलमा के राजनैतिक और धार्मिक हितों की हिफा किस तरह की जायगी ?

ज०—उनके लिए किसी तरह की हिफाज़ की जरूरत नहीं रहेगी। क्योंकि हरएक हिंदुस्त दूसरे हिन्दुस्तानी की तरह ही आज़ाद हो और उस हालत में परस्पर सहिष्णुता, सम और प्रेम होगा इस लिए परस्पर विश्वास होगा।

मोहनदास करमचन्द गांधी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दी साहित्य में नई वृद्धि

श्रीसयाजी साहित्य माला।

बड़ोदा राज्य के स्कूल तथा लाइब्रेरियों के लिए मंजूर, राज्य द्वारा प्रकाशितः—

हिन्दी पुस्तकें

॥) भेज स्थायी ग्राहक बनो।

तुलनात्मक धर्म्म विचार यह कैंब्रिज के प्रोफेसर जेवन्स की अंग्रेज़ी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें प्रोफेसर साहब ने संसार के सब मतों वा धर्म्मों की तीव्रआलोचना के साथ जो आर्य्य वा हिंदुधर्म्म पर आक्षेप किए हैं उनका विद्वत्ता पूर्ण उत्तर अनुवादक महोदय की भूमिका में प्रत्येक हिंदू वा आर्य्य धर्म्माभिमानी को पढ़ना चाहिए। सजिल्द १)

श्रीसयाजी बाल ज्ञान माला

श्रीहर्ष भारत के अंतिम सम्राट का जीवन वृत्तांत मूल्य ॥)

कोष की कथा वैज्ञानिक सचित्र पुस्तक में सैल (Cell) का सरल भाषा में पूर्ण परिचय दिया है। मूल्य ॥)

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला।

(लेखक राज्यरत्न आत्माराम जी अमृतसरी)

सृष्टि विज्ञान डारविन के विकासवाद ने आधुनिक पश्चिमीय विचार पर पूरा प्रभुत्व जमा लिया। मनुष्य की शारीरिक सामाजिक आत्मिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति की विकास की ही कसौटी पर कसा जाता है। इस पुस्तक में डारविन के सिद्धान्त की समालोचना की है और युक्तियों द्वारा यह सिद्ध किया है कि न तो यह सिद्धान्त सृष्टि के सब नियमों को समर्थन करता है और न ही यह मनुष्य को आगे के लिए सुमार्ग दर्शाता है साथ ही वेदोत्पत्ति, ईश्वर सत्ता अमैथुनि सृष्टि इत्यादि कितने ही विषयों पर बड़े खोज मनन और परिश्रमसे लिखा है पश्चिमी सभ्यता के विचारों से चकाचौंध होने वालों के लिए पुस्तक बड़े काम की है। पुस्तक सर्वथा ध्येय और मनन करने योग्य है। सचित्र पौने तीन सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य २) प्राप्ति स्थान—

जयदेवबदस बड़ोदा

३०००) का इनाम

हिन्दी साहित्य सेवियों के लिये एक अपूर्व अवसर

श्रीयुत लाजपत राय जी

अपने दैनिक पत्र बन्दे-मातरम में सूचना देते हैं कि उन के एक मित्र ने ३०००) इस लिये दिये हैं कि यह धन पुरस्कार के रूप में उन लेखकों को दिया जाय जो कि १ फरवरी १९२२ तक रजिस्टर्ड पैकट द्वारा एक नाटक लिख कर उन के पास भेजें जिस में भारतवर्ष की वर्तमान राजनैतिक स्थिति का पूरा २ चित्र खैंचा हो। नाटक में भारतवर्ष की गत महा युद्ध के समय अंगरेज़ों को दी हुई सहायता, शासन सम्बन्धी सुधार, रौलट ऐक्ट, मार्शल ला, जल्यांवाला बाग और पेट के बल रेगने इत्यादि की दुर्घटनायें, खिलाफत, असहयोग इत्यादि सब मुख्य २ विषयों का वर्णन सरस और सरल भाषा में रहना चाहिये। नाटक अधिक लम्बा न होना चाहिये। जो नाटक सर्वोत्तम होगा उस के लेखक को २०००) पुरस्कार दिया जायगा, दूसरे दर्जे वाले को ५००) और तीसरे को ३००)। पुरस्कार लेने वाले महाशय का नाटक पर किसी प्रकार का अधिकार न रहेगा।

हिन्दी लेखकों को इस अवसर से अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'रमणी-रत्न-माला' के पाँच रत्न

सचित्र शकुन्तला सचित्र

'शकुन्तला' संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालिदासके सर्वोत्तम संस्कृत नाटकका उपाख्यान रूपमें हिन्दी भाषान्तर है संसार भरकी भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं और इस रचनाके आगे सारे सभ्य-जगत्को सिर झुकाना पड़ा है "शकुन्तला" की तारीफमें जर्म्मनीके महाकवि गेटीने कहा है, कि यदि स्वर्ग और मर्त्यकी समस्त शोभाएँ एकहे स्थानपर देखनी हों, तो 'शकुन्तला' पढ़ो, क्योंकि यह दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती धर्म्म और विश्व-प्रेमक जगमगाता हुआ उज्ज्वल और अमूल्य रत्न है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर, ३ रंगोंके चित्र लगाये गये हैं, कि जिन्हें देखक पौराणिक कालकी समस्त घटनायें आँखोंके आगे नाचने लगती हैं। दाम २), रंगीन जिल्द २।), रेशमी जिल्द २॥) रु०

नल-दमयन्ती

कौन ऐसा हिन्दू-सन्तान होगा, जो "नल-दमयन्ती" का संसार-प्रसिद्ध नाम न जानता हो? यह सती-शिरोमणि 'दमयन्ती' और आदर्श राजा 'नल' की शिक्षाप्रद, हृदय-ग्राहिणी पवित्र कथा प्रत्येक बाल, वृद्ध, वनिताके पढ़ने योग्य है। इसमें १३ बहुरंगे चित्र इस ढङ्गसे लगाये गये हैं, कि खाली चित्रोंको देखकरही मनुष्य पूरी कथा समझ सकत है। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं और कम पढ़ी लिखी स्त्रियोंको उपहारमें देनेके लिये यह पुस्तक बड़ीही उपयोगी है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २)

सावित्री-सत्यवान

कुमारी कन्याओं और नव-विवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंक इसमें सती-शिरोमणि महारानी सावित्रीके अपूर्व पातिव्रत-धर्म्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी इसमें हाफटोन फोटो-के सुन्दर सुन्दर १३ रंग-बिरंगे चित्र भी दिये गये हैं। हिन्दीके प्रायः सभी समाचार-पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है, प्रत्येक हिन्दू-नारीको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। दाम १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

सीता

"सीता" हिन्दू-बालक-बालिकाओं और गृह लक्ष्मि-योंके पढ़ने योग्य अपने ढङ्गका अनूठा और सर्वोत्तम ग्रन्थ-रत्न है; क्योंकि यह सारी रामायणका सार उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार और साहित्यका सुललित शृङ्गार है। इसके पढ़नेसे एकही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास और नीति-शास्त्रका आनन्द मिलता है तथा यह राजनीति, धर्म्मनीति, समाज-नीति और गार्हस्थ-नीति-की कुंजी है। इसमें १५ बहुरंगे चित्र दिये गये हैं, जिन्हें देखकर तबीयत फड़क उठती है और राम-राज्यके अनूठे दृश्य आँखोंके सामने नाचने लगते हैं। दाम सिर्फ २॥), रंगीन जिल्द २॥।) और रेशमी जिल्द ३) रुपया।

चिन्ता

"चिन्ता" देव-लोक और मर्त्य लोकका प्रत्यक्ष चित्र दिखलानेवाली शिक्षाप्रद, सुललित और हृदयग्राही अपूर्व कथा है। इसमें सती-शिरोमणि "चिन्ता" और न्याय-परायण महाराज श्रीवत्सकी ऐसी पुण्यमय कथा लिखी गयी है, जिसको सुनकर पाण्डवोंने अपने वन वासके १३ वर्ष बड़े धैर्य्यके साथ हँसते खेलते बिता दिये थे। सती 'चिन्ता' के अपूर्व धर्मानुराग, उज्ज्वल सतीत्व और अविचल धैर्यकी कथा प्रत्येक पतिव्रता बहू बेटी और कुल नारीके पढ़ने योग्य है। इसमें ६ बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, जिन्हें देखकर चकित और विमोहित होना पड़ता है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

पता:—आर. एल. बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by eGangotri

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

वैद्यक औषधि सब प्रकार मिलिहैं—

भारत भैषज्य भाण्डार।

वा औषधि आलय के माहीं। असल द्रव्य सें बनत सदांहीं ॥ औषधि सत्य परिश्रम साथा। उच्च श्रेणि वैदन के हाथा ॥ अयुर्वेद शास्त्र परिपाटी। धातु पधातु भस्म रस खांटी (१) गोली चूर्ण तेल घृत आसव। मोदक लेह अरिष्ट आदि सब ॥ उचित मूल्य पर मिलत यहां हीं। लेहु विशुद्ध वस्तु सब यांहीं ॥

मालती बसन्त कुसमाकर बसन्त लीजै, लीजै महराजा मृगाङ्क मन भावनी। चन्द्रोदय, मकरध्वज, सार भष्म, अभ्रकहू, अन बींधे मोती औ सुवर्ण भष्म चावनौ। कस्तूरी आदि बहु मूल्यवान औषधिहू, मिलत तयार दिन रात इत आवनौ। थोक व्यापारिन को उचित कमीशन पै मिलत सुमाल ले लीजै हरखावनौ ॥ दश मूलादिक क्वाथ सब चूरन अर्क तयार। मिलत सभी ले लीजिये भाव ठीक हरबार ॥

जैसें नवीन ज्वर औरहू पुरानौ ज्वर यकृत सु प्लीहा संयुक्त ज्वर सन्निपात। संग्रहणी अतीसार हैजा कृमि पाण्डु आदि कामला कुरक्त पित्त कास स्वास छर्दि घात। मिरगी सु मूरछा उनमाद बात व्याधि आदि बात रक्त आम बात शूल गुल्म मूत घात। अश्मरि उपदंश औ प्रमेह शोथ उद्र व्याधि अम्लपित्त चक्षु रोग शिरो रोग अर्द्ध जात। नारिन की प्रदरादिक पैर बन्द करने की शिशुगन की रोगन की औषधि तयार हैं। अमृत सी फल दैनी औषधि यहीं सों लैनी वी० पी० कर भेज देत हुक्म इन्तजार हैं। संग अनुपान विधि सेवन प्रकार विधि पथ्यापथ्य लिख देत भेजत सुधार हैं ॥ रोगन को पूर हाल लिख कें सुभेजिये जू, सूचीपत्र मुफत लेहु छापे तय्यार हैं।

मिलने का पता—

भारत भैषज्य भाण्डार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डाक्टर एस, के, वर्म्मन् की नई आविष्कृता पेटण्ट दवाएं।

"मन-हरा"—नन्दन सुरभी; इसकी सुगन्ध अत्यन्त मधुर और अधिक समय तक ठहरती है। रुमाल में थोड़ा लगा देने से ५-६ दिन तक अच्छी सुगंधी रहती है। वास्तव में यह मन हरने वाली अत्यन्त मधुर मतवाली सुगंधी है।

मूल्य फ़ी शीशी १।) एक रुपया चार आना।

"अलोका"—सुवासित आदर्श तरल अलता रङ्ग, सुगंध व पाएदारी आदि गुणों में "अलोका" तरल अलता अन्य समस्त अलतों में सर्व श्रेष्ट प्रमाणित हुवा है। इसका रङ्ग बजारु अलतों की तरह लाल रोशनाई के समान नहीं है। यह इतना अधिक चिकना व उज्वल है, कि यह पैर में सूख जाने पर भी गीला दिखाई देता है और कपड़ों में दाग लगने का भय होता है। किन्तु वास्तव में सूखा रहने के कारण दाग नहीं लगता। निश्चय ही यह सब से अधिक सुन्दर, नवीन व आदर्श तरल अलता है। मूल्य प्रति शीशी ॥) आठ आना।

'केशराज तैल"—इस की सुगंध अत्यन्त मधुर व दीर्घ स्थाई है। बहुत दिनों की परीक्षा व गवेषणा के फल से यह नतन जकृष्ट केश तेल बनाया गया है शिरोरोग नाशक व केशों को सौन्दर्य्य वृद्धी का एक मात्र उपाय केशराज तेल है। यह अनुपम सुगंध व गुणों के लिये केश तेलों का राजा है। मूल्य फ़ी शीशी १) एक रुपया।

"हील-एक"—चमड़े पर होने वाले सब प्रकार के रोगों की महौषधी। घाव, वेदना, वात, मोच, गांठ, (गिल्टी) झांई, मुहासे, फुन्सी, चकत्ते, दाग, हाथ पांव का फटना, रुखापन, मांस पेशियों का दर्द, बवासीर, अग्नि से जलन का घाव, जलने, चोट लग जाने से दर्द का होना, खून का बहना, इत्यादि समस्त चर्म रोग व चमड़े पर होने वाली व्याधियों की हील-एक रामबाण दवा है। चूहे, बिल्ली, मकड़ी, बर्रे, बिच्छू आदि के काटे हुवे स्थान का विष दूर करके शीघ्र आरोग्य करने की हील-एक आश्चर्य दायक महौषधी है। मूल्य फी डिब्बी ॥=) दस आना।

"मकरध्वज"—अनुपान भेद से समस्त रोग नाशक एक मात्र महौषधी। रोगी व निरोगी दोनों ही अवस्था में यह व्यवहार किया जाता है। विशुद्ध व अकृत्रिम मकरध्वज स्वल्प मूल्य में प्रचार करने के उद्देश्य से बड़े परिश्रम व व्यय से हमारे कारखाने में तैयार किया गया है।

मूल्य ७ खुराक के बक्स का १) एक रुपया।

"लाल रोशनाई"—बड़ी २ गवेषणा एवं परीक्षाओं के बाद यह उत्कृष्ट लाल स्याही तैयार की गई है। विलायती लाल स्याही के साथ तुलना करने पर यह उस से किसी भी बात में कम नहीं ठहरती। यह जमती नहीं और निब खराब नहीं होता इसका रंग कभी काला किंवा फीका नहीं पड़ता। मूल्य फी बोतल ॥=) ग्यारह आने।

५, ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट,
कलकत्ता १—५—२१

डाक्टर एस, के, वर्म्मन।

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240

...र्ष २] मार्गशीर्ष १९७८—दिसम्बर १९... संख्या ८

LIBRARY

४॥) है।
२॥) है।
डा० व्य० सहित आ०

...ों से केवल ४) प्रति

लेखकों के लिये

(९) लेख पढने योग्य अक्षरों में हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखे जाने चाहियें। लेखों के घटाने बढ़ाने, छापने न छापने का अधिकार सम्पादिका को है। जो लेख प्रकाशित नहीं किये जासकेंगे वह टिकट

...र्षिक मूल्य ४॥)
...ति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ
१—बलिदान [कविता] लेखक-श्रीयुत श्रीहरि ।	३६७
२—जीवाणुओं के उद्भुत खेल, लेखक-	
[illegible] और हिन्दू सभ्यता, लेखक- श्रीयुत रामनाथ लाल 'सुमन'	४०५
५—उद्बोधन [कविता] लेखक-श्रीयुत "बनज"	४०८
६—गीतामृत, लेखक-श्रीयुत प्रो० गोपाल दामोदर तामस्कर एम. ए. एल. टी.	४०६
७—जातीय-गीत, [कविता] लेखक- श्रीयुत व्रज जीवन दास ।	४१४
८—अत्याचार, लेखक-श्रीयुत डाक्टर युधवीर सिंह ।	४१५
९—विरक्त-जीवन [कविता] लेखक- 'विनोद'	४१८
१०—रुक्मिणी हरण नाटक, लेखक-श्री मेधाव्रत जगजीवन ।	४१९
११—हे समय ! [कविता] ले० "नयन"	४२४
१२—कुसुमोद्यान ।	४२४
१३—वैज्ञानिक संसार ।	४२५
१४—हमारी मञ्जूषा ।	४२७
१५—विचार प्रवाह ।	४३१
१६—वनिता विनोद ।	४३७

———

हिन्दी साहित्य में नई वृद्धि

श्रीसयाजी साहित्य माला ।

बड़ोदा राज्य के स्कूल तथा लाइब्रेरि के लिए मंजूर, राज्य द्वारा प्रकाशितः—

हिन्दी पुस्तकें

॥) भेज स्थायी ग्राहक बनो ।

तुलनात्मक धर्म्म विचार यह कैंब्रिज [illegible] वन्स की अंग्रेजी पुस्तक का हि[illegible] । इसमें प्रोफेसर साहब ने संसार [illegible] धर्म्मों की तीव्रआलोचना के स[illegible] हिंदुधर्म्म पर आक्षेप किए [illegible] पूर्ण उत्तर अनुवादक महोदय [illegible] भूमिका में प्रत्येक हिंदू वा आर्य्य धर्म्मा[illegible] मानी को पढ़ना चाहिए । सजिल्द १)

श्रीसया जी बाल ज्ञान माला

श्रीहर्ष भारत के अंतिम सम्राट का जी[illegible] वृत्तांत मूल्य ॥

कोष की कथा वैज्ञानिक सचित्र पुस्तक [illegible] सेल (Cell) का सरल भाषा में पूर्ण परि[illegible] दिया है । मूल्य ॥)

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला ।

(लेखक राज्यरत्न आत्माराम जी अमृतसरी)

सृष्टि विज्ञान डारविन के विकासवाद [illegible] आधुनिक पश्चिमीय विचार पर पूरा प्रभु[illegible] जमा लिया । मनुष्य की शारीरिक सामाजि[illegible] आत्मिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति को विका[illegible] की ही कसौटी पर कसा जाता है । इस पुस्त[illegible] में डारविन के सिद्धान्त की समालोचना की [illegible] और युक्तियों द्वारा यह सिद्ध किया है कि [illegible] तो यह सिद्धान्त सृष्टि के सब नियमों [illegible] समर्थन करता है और न ही यह मनुष्य [illegible] आगे के लिए सुमार्ग दर्शाता है साथ ही वेदो[illegible] त्पत्ति, ईश्वर सत्ता अमैथुनि सृष्टि इत्या[illegible] कितने ही विषयों पर बड़े खोज मनन औ[illegible] परिश्रमसे लिखा है पश्चिमी सभ्यता के विचा[illegible] से चकाचौंध होने वालों के लिए पुस्तक [illegible] काम की है । पुस्तक सर्वथा ध्येय और मन[illegible] करने योग्य है । सचित्र पौने तीन सौ पृष्ठों [illegible] पुस्तक का मूल्य २) प्राप्ति स्थान—

जयदेवब्रदर्स बड़ोदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* ज्योति के नियम *

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का आमूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित आ० वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष ही।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूँना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष जनवरी से दिसम्बर तक और जुलाई से जून तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपी में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि-आर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेजर "ज्योति" लाहौर के पते से आने चाहिये।

लेखकों के लिये

(९) लेख पढने योग्य अक्षरों में हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखे जाने चाहियें। लेखों के घटाने बढ़ाने, छापने न छापने का अधिकार सम्पादिका को है। जो लेख प्रकाशित नहीं किये जासकेंगे वह टिकट और पता साथ होने पर लौटा दिये जावेंगे।

(१०) लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और परिवर्त्तन के पत्र **सम्पादिका ज्योति लायलपुर** के पते पर आने चाहियें।

विज्ञापन दाताओं के लिये:—

(१) विज्ञापन बिना देखे नहीं छापा जाता।

(२) जिस मास के अंक में विज्ञापन छपाना हो उस के एक मास पूर्व विज्ञापन की प्लेट और पेशगी रुपया आना चाहिये।

(३) एक कालम से कम स्थान का विज्ञापन छपाने वाले को ज्योति मुफ़्त नहीं मिलती।

(४) विज्ञापन की दर इस प्रकार है। प्रतिमास—

एक पृष्ठ (या दो कोलम)	१२)
आधा ,, (या एक कोलम)	६)
चोथाई ,, (या आधा कोलम)	४)
चोथाई कोलम—	२॥)
आवरण का तीसरा पृष्ठ—	१५)
,, ,, चोथा ,,	१८)
पाठ्य विषय के पहिले व पीछे—	१४)

(५) जो विज्ञापन दाता एक वर्ष का विज्ञापन देंगे उन को पेशगी रुपया भेजने पर ४) प्रति रुपया कमीशन काट देंगे।

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर "ज्योति" लाहार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सदाचार-दर्पण

आचार-नीति-शिक्षा का अपूर्व एवं अद्वितीय ग्रन्थ

मध्यप्रदेश, संयुक्तप्रदेश तथा पंजाब के शिक्षा-विभाग द्वारा, स्कूलों के उपयोग के लिए, स्वीकृत।

पृष्ठ-संख्या लगभग ४००; मूल्य १॥), डाक व्यय ।=) आने।

इस ग्रन्थ के लेखक हैं जबलपुर के हितकारिणी हाई स्कूल के हेडमास्टर विद्यावयोवृद्ध राय साहब पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी, बी० ए०, जिन के अनुभव के विषय में केवल इतना कहना बस होगा कि वे लगभग ३५ वर्षों से शिक्षण-कार्य करते आ रहे हैं। इस ग्रन्थ का परिचय नीचे लिखी हुई कुछ सम्मतियों से प्रकट होगा—

[१] प्रसिद्ध देशभक्त स्वर्गीय रायबहादुर पं० विष्णुदत्तजी शुक्ल, बी०ए०, एम०आर० ए०एस० ने लिखाथा—

"जिस चरित्र-संगठन के बिना मनुष्य को संसार में सफलता प्राप्त करना कठिन ही नहीं, वरन असम्भव है उसी चरित्र संगठन के निमित्त सदाचार की शिक्षा देने के लिए आप का यह "सदाचार-दर्पण" एक परमोपयोगी ग्रन्थ है। अभी तक शालाओं में ऐसे पाठ्य ग्रन्थों का अभाव होने से सदाचार की शिक्षा देने में शिक्षकों को जो कठिनाई थी उसे इस पुस्तक द्वारा दूर कर आप ने शालाओं का विशेष उपकार किया है। आशा है कि न केवल छात्रगण ही, वरन सर्वसाधारण इस ग्रन्थ को पढ़ कर लाभ उठावेंगे। विशेष कर संसार के सभी प्रधान देशों तथा धर्मों के उदाहरण देने से सभी जाति और धर्म के मनुष्यों को यह ग्रन्थ रुचि कर होते हुए परस्पर ऐक्य और सहानुभूति के बढ़ाने में सहायक होगा।"

[२] हिन्दी-साहित्य के दिग्गज विद्वान् काशी-निवासी बाबू श्यामसुन्दर दास जी, बी०ए०, लिखते हैं—

"पुस्तक बहुत ही उपयोगी है और अच्छे ढंग पर लिखी गई है। हमारे स्कूलों में सदाचार की शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। इस पुस्तक द्वारा यह काम बड़ी उत्तमता से हो सकता है, मुझे इस पुस्तक में आप के अनुभव का पूरा परिचय मिलता है। सच बात तो यह है कि बिना अनुभव के ऐसी पुस्तकों का लिखना नहीं हो सकता।"

[३] प्रसिद्ध शिक्षा-तत्व-मर्मज्ञ तथा जबलपुर के स्पेन्स ट्रेनिंग कालेज के वाइस-प्रिंसपाल पं० लज्जाशंकर जी झा, बी० ए०, लिखते हैं—

"पुस्तक मनोरञ्जक है, बालक उसे आनन्द से पढ़ेंगे इसकी मुझे पूर्ण आशा है। उपदेशों में कथाओं का आवरण इस प्रकार सुन्दर रूप से दे दिया गया है कि कथा के लालच से बालक उपदेश भी आनन्द से बाँचेंगे और ग्रहण करेंगे। यदि-साहित्य की दृष्टि से देखा जाय, तो भी यह पुस्तक लाभकारी है; क्योंकि इस में अच्छे अच्छे संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के कवियों की कविताएँ तथा विद्वानों के कथन बहुतायत से दिये हुए हैं।"

["४] भारतवर्ष का सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी मासिक पत्र Modern Review (माडर्न रिव्यू) लिखता है—

This is a very useful publication on the moral code of the Indians, and the author has illustrated his instructions by propuse and very well-known illustrations."

"The author seems to have had nice practical experience in forming the character of Indian students and his book is admirably seuted to the requirements."

इस प्रकार की पचासों सम्मतियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। यह पुस्तक मध्यप्रदेश तथा अन्य प्रान्तों के अनेक स्कूलों में पाठ्य पुस्तक (Text-book) के समान पढ़ाई जाती है। हिन्दी-भाषा-भाषी शिक्षित कुटुम्बों में अन्य ग्रन्थों के पहले इसको एक प्रति रखी जानी चाहिए। पुस्तक अच्छे काग़ज़ पर तीसरी बार छप कर अभी प्रकाशित हुई है। आप इसकी एक प्रति आज ही मँगाइए। पुस्तक मँगाने का पता—

पं० रामप्रसाद मिश्र, बी० ए०, मिश्र-बन्धु-कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर।

Jubbulpor, (C. P.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष २ | मार्गशीर्ष १९७८—दिसम्बर १९२१ | संख्या ८

बलि दान

लेखक—श्री हरि

* जननि ! हम हों तुझ पर बलि दान *
तेरे ऊपर करें निछावर निज तन, धन, जन, प्रान ॥ध्रुव०॥

——*——

देवसदन सम कारागृह हो, शूल हों फूल समान।
तेरी मिट्टी में मिल जायें, करते तेरा ध्यान ॥ १ ॥

——*——

प्रति दिन कितने पैदा होते, मरते जीव जहान।
अमर हुए जो मरे बीर है, करके तब सम्मान ॥ २ ॥

——*——

करते हैं स्वर्गीय देवगन, उन का ही गुन गान।
जो निज जन्मभूमि का रखते, प्रान दान से मान ॥ ३ ॥

——*——

सुरललना ले ललित मालका, करतीं प्रेमा ह्वान।
" श्री हरि " उन का मातृ प्रेम में, जो दें जीवन दान ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवाणुओं के अद्भुत खेल

लेखक—श्रीयुत प्रो० राम शरण जी सक्सेना एम० एस० सी

वाणुओं (Bacteria) के नाम से आज कल तो लग भग सभी लोग, क्या शिक्षित और क्या अशिक्षित, क्या स्त्री और क्या पुरुष, क्या बच्चे और क्या बूढ़े, भली प्रकार से परिचित हैं। जब से भारत वर्ष में हैज़ा ताऊन, इन्फ्लुऐन्जा आदि तरह २ की बीमारियें फैली हैं और डाक्टरों ने इन सब रोगों का मूल कारण जीवाणुओं को ठहराया है तब से तो ये जीवाणु दृष्टि से ओझल होते हुवे भी बड़े भयंकर समझे जाते हैं। किसी रोग के फैलते ही जीवाणुओं की कथायें आरम्भ हो जाती हैं। आज कल लोग जीवाणुओं से केवल इसी लिये परिचित हैं क्योंकि वह तरह २ की बीमारियों के कारण हैं। इन जीवाणुओं का नाम जबान पर आते ही मारे डर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और तरह २ की बीमारियों के चित्र सामने आने लगते हैं। साधारणतया सब लोग इन जीवाणुओं को अपना विनाशक वैरी समझते हैं। बहुत कम ऐसे लोग होंगे जो यह जानते होंगे कि ये जीवाणु जहां रोगों के कारण हैं वह मनुष्य के लिये बड़े उपयोगी भी हैं। हां यह अवश्य है कि उपयोगी जीवाणु और हैं और हानिकारक और हैं। यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो मानना पड़ेगा कि ये जीवाणु मनुष्य के लिये ही उपयोगी हैं। यह कहना भी असत्य नहीं कि यदि ये जीवाणु न हों तो मनुष्य के बहुत से व्यवसाय सर्वथा बन्द हो जावें। इस लिये जहां कोई २ जीवाणु मनुष्य के लिये हानि कारक हैं वहां बहुत से जीवाणु बड़े ही उपयोगी हैं। इनकी उपयोगिता बताने के लिये दो चार साधारण व्यवसायों का वर्णन पर्याप्त होगा।

नील—नील की खेती के लिये भारतवर्ष प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है। जब से जर्मनी से रासायनिक क्रियाओं द्वारा बना नील आने लगा है तब से इस का व्यवसाय ढीला पड़ गया है नहीं नहीं बिलकुल ही उठ गया है। इस से पूर्व नगर २ में नील की कोठियें थीं और पृथिवी के बहुत से भाग में नील बोया जाता था। और जब पक कर इस की खेती तय्यार होती थी तब नील की कोठियों में नील जाता था।

यह नील पौदे के तने और पत्तियों में ग्लूको साइड (Glucoside Indican) के रूप में उपस्थित होता है। जब इस के पौदे को तालाबों में डाल कर पानी में डुबो कर रखते हैं तो सड़ाव आरम्भ होता है। इस में जीवाणु बड़ी चुस्ती से अपना काम करते हैं और (Glucoside) को शर्करा (Sugar) तथा नील में विभक्त कर देते हैं। यदि ये जीवाणु यहां उपस्थित न हों तो नील इस विधि से तय्यार ही न हो सके और फिर अन्य उपाय सोचने पड़ें। इस व्यवसाय की कामयाबी इन जीवाणुओं पर ही निर्भर है। जब यह क्रिया समाप्त हो चुकती है तो फिर नील विलोया जाता है। जिस से अपुलन शील नीले रंग का १ चूर्ण नीचे बैठ जाता है। फिर इसकी टिक्कियें बना कर बाज़ार में बेचते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिरका--सिरका भी इस देश में प्रायः घर घर में बनाया जाता है। जब गन्ने की फसल होती है तो गन्ने के रस को घड़ों में भर कर धूप में ढक कर रख देते हैं। गर्द में मिले हुवे सिरकिती जीवाणुओं (Mycoderma aceti) का इस में प्रवेश होता है। इस से पूर्व एक दूसरे प्रकार के जीवाणुओं द्वारा इस की खांड मद्यसार में बदल जाती है। इस क्रिया को दो तीन मास लगते हैं। जो मद्यसार बनता जाता है उसे सिरके के जीवाणु सिरके में बदलते रहते हैं। यदि तीन चार मास के पश्चात् ये सिरके के घड़े खोल कर देखे जावें तो इन में बहुत कुछ सिरका मिलेगा और मद्यसार की भी तीव्र गन्ध आवेगी। अभी इसे कुछ दिन और सड़ने देते हैं। जब सब खांड मद्यसार में और सारा मद्यसार सिरके में बदल जाता है (जिस को लग भग ६ मास लगते हैं) तो कहा जाता है कि सिरका उठ आया, इसे छान कर साफ़ कर लेते हैं। आम सिरका बनाने के लिये इसे (Distill) पातित कर लेना चाहिये।

इस से ज्ञात हुवा कि रस को सिरके में बदलने के लिये दो प्रकार के जीवाणु काम करते हैं। एक प्रकार के जीवाणु तो खांड को मद्यसार में और दूसरी प्रकार के मद्यसार को सिरके में बदलते हैं। यदि ये जीवाणु न हों तो स्पष्ट ही है कि इस व्यवसाय को बहुत धक्का पहुंचेगा।

जिन के घर में सिरका पड़ता है उन्होंने सुना होगा कि घर की महतरानी और अन्य अशुद्ध और मैले कुचैले मनुष्यों को सिरके वाले वर्तन के पास नहीं जाने देते और कहते हैं कि छूत लग जावेगी। प्रायः इस छूत से सिरका बिगड़ भी जाता है। कारण यह है कि जब कोई मैला कुचैला व्यक्ति सिरके के घड़े के पास जाता है तो उस के कपड़ों से उक्त दो प्रकार के जीवाणुओं के अतिरिक्त अन्य प्रकार के जीवाणु भी उस पात्र में प्रविष्ट हो जाते हैं जो सिरका बनाने के स्थान में और अन्य पदार्थ बनाते हैं। इस से सिरका बिगड़ जाता है। इस लिये सिरके की तय्यारी में यह सावधानी आवश्य चाहिये कि कोई हानिकारक जीवाणु उस में प्रविष्ट न हो जावे। जिन घरों में सिरका प्रति वर्ष पड़ता है वे अपने पात्र बड़ी सावधानी से रखते हैं। इन में सिरके के जीवाणु लगे रहते हैं। जब रस इन में भर कर रक्खा जाता है तो सिरका नियम पूर्वक समय पर बड़ा अच्छा तय्यार होता है।

सन—सन भी किसानों को जीवाणुओं की कृपा से ही मिलता है। जब सन पक कर तय्यार हो जाता है तो इस के गट्ठे बांध कर कच्चे तालाब में दबा देते हैं। पानी में दबे रहने से इन में सड़ांद आरम्भ होती है और तरह २ के दुर्गन्ध वाले पदार्थ उस से उत्पन्न होते हैं। जहां ये सन के पौदे सड़ रहे होते हैं वहां के चारों ओर एक २ फर्लांग तक बड़ी दुर्गन्ध फैल जाती है। ये जीवाणु बहुत कुछ भाग स्वयं खाजाते हैं और बहुत कुछ को दुर्गन्धित पदार्थों में बदल देते हैं। इस प्रकार सन के रेशे को लकड़ी से अलग कर देते हैं। जब यह क्रिया हो चुकती है तो किसान लोग बड़ी सुगमता से सन को लकड़ी से उखेड़ कर अलग कर लेते हैं।

तमाखू—तमाखू पीने वालों को भी अच्छे तम्बाखू की प्राप्ति के लिये जीवाणुओं का कृतज्ञ होना पड़ता है। जब तमाखू का पौदा पक जाता है तो उसे काट कर ६,७ घण्टे तक धूप में रखते हैं जिस से उसकी पत्तियां मुरझा कर ढीली पड़ जाती हैं। फिर इन पत्तियों को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मकान के १ कोने में चुनकर ढाक की पत्तियों से दबा कर रख देते हैं। तीन दिन तक इस प्रकार रखने से इस में १ प्रकार का सड़ाव आरम्भ होता है जिस के मुख्य नेता जीवाणु ही होते हैं। तीन दिन में यह क्रिया समाप्त हो चुकती है। तम्बाखू का अच्छा या बुरा होना बहुत कुछ अंशों में जीवाणुओं की क्रिया पर ही निर्भर होता है। यदि हानिकारक जीवाणुओं का इस में प्रवेश हो जावे तो तम्बाखू बिगड़ जाता है।

जो तमाखू खाने या सूंघने के काम में आता है उसे भी जीवाणुओं द्वारा तय्यार किया जाता है। केवल भेद यह है कि प्रत्येक श्रेणी के तमाखू के लिये अलग २ जीवाणुओं की आवश्यकता होती है।

स्पंज—(Sponge) स्पंज जिस को मरा बादल भी कहते हैं और जो आज कल बड़े प्रयोग में आता है एक जन्तु की हड्डियों का रेशेदार भाग होता है। यह जन्तु समुद्र में पाया जाता है। इन जन्तुओं को पकड़ कर वृक्षों से लटका देते हैं। वहां ये मर कर सड़ने लगते हैं। जीवाणु इन जन्तुओं के मांस को खा पीकर समाप्त कर डालते हैं और जो शेष छिद्रदार भाग रह जाता है उसे साफ़ करके रंग लेते हैं। यही पंजर हमारे सामने स्पंज के नाम से आता है जिसे बिना किसी घृणा के हर कोई काम में लाता है।

इस प्रकार बहुत से व्यवसाय गिनाये जा सकते हैं जिन में इन जीवाणुओं का मुख्य भाग होता है। किसान के लिये १ खेती में तथा दुग्ध के भिन्न पदार्थ बनाने में ये जीवाणु कितने उपयोगी हैं इसे बता कर निबन्ध के इस भाग को समाप्त करेंगे।

किसान को अच्छी पैदावार के लिये अच्छी भूमि की आवश्यकता होती है। अच्छी भूमि वही कही जाती है जिसमें पौदों के लिये भोजन की पर्याप्त सामग्री उपस्थित हो। पौदों के लिये ऐसे खाद की आवश्यकता होती है जिस में पोटाश, लोह, स्फुरक (Phosphorus) और नत्र जन (Nitrogen) के घुलन शील समाप्त हों। इन में मुख्य तया नत्रजन तथा स्फुरक (Nitrogenous Phosphodatic manures) के खाद अत्यन्त ही आवश्यक हैं। यदि पृथिवी में पोटाश स्फुरक तथा नत्र जन के घुलनशील लवण न हों तो पौदे फल फूल नहीं सकते। यदि पृथिवी में यह खाद्य पदार्थ पहिले से उपस्थित न हों तो बाहर से ये पदार्थ पर्याप्त राशि में डालने पड़ते हैं। विदेशों में तो भिन्न २ प्रकार के रासायनिक खाद बने बनाये बाजारों में बिकते हैं और कृषक लोग इन्हीं खादों का प्रयोग करते हैं। परन्तु हमारे यहां ऐसे खादों का प्रयोग बहुत कम है। यहां के किसान अपने खेतों के लिये स्वयं खाद तय्यार करते हैं। इन के तय्यार करने की विधि बड़ी सस्ती है और जीवाणुओं की कृपा से यह कार्य बड़ी सुगमता से हो जाता है।

कृषक लोग अपने २ खेतों के पास एक गड्ढा खोदते हैं जिसमें घर का सारा कूड़ा कर कट, गोबर और गोशाला में का कटन जो मवैशियों के गोबर तथा मूत्र में सना होता है रोज़ाना डालते रहते हैं। जो कृषक लोग चतुर हैं वे इसके ऊपर १ छप्पर भी डाल देते हैं जिससे इसकी वर्षा से रक्षा रहे और इसे बहुत धूप भी न लगे। दो तीन वर्ष तक यह गढ़ा खूब भरने देते हैं। इतनें दिनों में कूड़े के नीचे का भाग सड़ गल कर बड़ा अच्छा खाद बन जाता है। जिसे दूसरे या तीसरे वर्ष किसान खोद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर आवश्यकतानुसार अपने खेतों में डालता है।

इस गढ़े में जीवाणुओं द्वारा बड़ी विषम क्रिया होती है। बात यह है कि घास, कूड़े, करकट, गोबर और अन्य ऐसे पदार्थों में जो रासायनिक पदार्थ उपस्थित हैं वे पौदे के लिये उस समय तक भोजन के योग्य नहीं होते जब तक वे टूट कर घुलनशील सरल पदार्थों में परिवर्तित न हो जावें। नत्रजन जिस समय तक स्वतन्त्रगैस के रूप में या प्रोटीड, मांस आदि विषम समासो में होती है तब तक पौदों के काममें यह नहीं आ सकती। पौदों के लिये वह घुलन शील नत्रित के रूप में होनी चाहिये। इस लिये भिन्न भिन्न जीवाणु अपना २ काम बड़ी तेजी से आरम्भ करते हैं और तरह २ के रासायनिक परिवर्तन होने लगते हैं। बहुत सी गैसें, जो उत्पन्न होती हैं, वायु मण्डल में को उड़ जाती हैं। यथा कर्बनिकादलगैस, उद्रजन (Hydrogen), उदगन्धिद गैस (sulphuretted hydrogen), अन्य उदकर्विद (hydrocarbons), नत्रजन और अमोनिया आदि।

इस चक्र में कुछ नत्रजन वायु में को भाग जाती है और कुछ अमोनिया के समासों में बदल जाती है। इन समासों पर पुनः क्रिया होती है। जीवाणुओं की कृपा से ये समास पहिले नैत्राइत और फिर नत्रित के रूप में बदल जाते हैं। यदि कुछ अमोनियम कर्बनित हो और उस पर तेज़ धूप पड़ती हो तो वह विभक्त हो जाता है और उससे उत्पन्न कर्बनिकादलगैस (carbonic acid gas) और अमोनिया (Ammonia) वायु में को उड़ जाती हैं। मूल बहुत जल्दी ही इन जीवाणुओं के द्वारा नत्रित में बदल जाता है।

यदि किसी जीव जन्तु की हड्डियां इस कूड़े में पड़ी हों तो जीवाणु हड्डियों से मांस का भाग तो शीघ्र ही खाकर सरल पदार्थों में बदल देते हैं परन्तु हड्डी पर इनकी क्रिया बहुत धीरे २ होती है। कई वर्षों में वे भली भांति विभक्त हो पाती हैं। स्फुरक का खाद देने के लिये जली हड्डी अर्थात् हड्डी की राख (Bone ash) का प्रयोग करते हैं। यह राख भिन्न भिन्न ऐन्द्रिपिकामनों (organic acids) की क्रिया से (जो जीवाणु वहीं बनाते रहते हैं) घुलन शील स्फुरितों (soluble phosphates) में बदल जाती है।

ये घुलनशील नत्रित या स्फुरित जब पृथिवी में पहुंचते हैं तो इनका घोल पौदों की जड़ों की झिल्ली में को (osmosis द्वारा) ऊपर को चढ़ जाता है और पौदों में पहुंच कर उनका भोजन बनता है।

कोई २ पौदे चने, मटर, लोभिया, मूंगफली आदि ऐसे होते हैं जिनकी जड़ों में गांठ होती हैं इन गाठों में ऐसे जीवाणु उपस्थित होते हैं जो वायु से नत्र जन लेकर नत्रित बनाते रहते हैं। ऐसी फसल को खेत में वो देने से खेत में नत्र जन का खाद पर्याप्त राशि में पड़ जाता है और अगली फसल के लिये नत्रजन का खाद देने की आवश्यकता नहीं होती

कभी २ पृथिवी को हरा खाद (green manure) देने की आवश्यकता होती है। हरा खाद देने के लिये चना, सनीया नील खेत में वो देते हैं और जब पौदे बढ़ कर फलने के लिये होते हैं तो उस खेत में हल चला देते है। इस प्रकार पौदे पृथिवी का भाग बन जाते हैं तब इन पर जीवाणुओं का आक्रमण आरम्भ होता है और ये इन पौदों पर क्रिया करके नत्रजनिक खाद की पर्याप्त राशि खेत में उत्पन्न कर देते हैं। इस विधि से खेत में बड़ी उपज होती है और ऊसर जमीन भी उत्तम होजाती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जब खादों द्वारा पृथिवी तय्यार होजाती है और उसमें पौदे के भोजन को पर्याप्त सामग्री उपस्थित होती है तो किसान फिर इसमें बीज डालता है। बीज के उगने में भी जीवाणुओं का मुख्य भाग होता है। बीज में पौदे के भोजन का भण्डार होता है। जीवाणु इस स्टोर से उचित रूप में पौदे के लिये भोजन देते रहते हैं यदि इस अवस्था में बीज को जीवाणुओं की सहायता न मिले तो पौदे का उगना कठिन है।

खेत में जब फसल खड़ी होती है तो पृथिवी के जीवाणु अपना काम बराबर करते रहते हैं और पौदों को भोज्य सामग्री पहुंचाते रहते हैं। जब फ़सल पक कर तय्यार हो जाती है तो कई फ़सलों में जीवाणुओं की सहायता की अभी और आवश्यकता होती है जैसे नील के पौदे से नील रंग का बनाना, तमाखू, चाय, अफ़ीम, सन इत्यादि बनाना। इससे स्पष्ट है कि किस्मत की सेवा जितनी ये जीवाणु करते उतनी शायद ही कोई अन्य जीव करता हो।

विचार की दृष्टि से देखें तो पता लगेगा कि संसार में परिवर्तनों का चक्र बना हुवा है। सरल पदार्थों से विषम और विषमों से सरल पदार्थ सदैव बनते ही रहते हैं। इन परिवर्तनों में जीवाणुओं का कितना हाथ होता है पाठक गण अब स्वयं ही विचार सकते हैं। इस चक्र को समझने के लिये यों विचारिये कि मनुष्य हो या पशु हो जब तक वह जीवित रहता है तरह २ के पदार्थ खाता रहता है। दूध, दही, मक्खन, रोटी, चावल, अण्डा, मांस इत्यादि बड़े ही विषम पदार्थ हैं। जब ये पेट में पहुंचते हैं तो इन पर जीवाणुओं की क्रिया से ऐसे पदार्थ बनते हैं जिन्हें शरीर पचा सकता है। बहुत कुछ भाग तो शरीर का ही भाग बन जाता है और शेष शौच, मूत्र, पसीना, श्वास आदि द्वारा बाहर निकल जाता है। कुछ भाग वायु में जा मिलता है और शेष पृथ्वी के अर्पण हो जाता है। मनुष्य या पशु पक्षी जितना कुछ भी खाते हैं उसमें नित्य ही नहीं किन्तु प्रति क्षण यही परिवर्तन होते रहते हैं। जब मनुष्य (पशु या पक्षी) मरता है यदि उसे वैसे ही पृथ्वी पर पड़ा छोड़ दिया जाय तो कुछ दिनों में सिवाय हड्डियों के पञ्जर के कुछ भी शेष नहीं रहता। कुल शरीर जीवाणुओं के अर्पण हो जाता है। ये जीवाणु उसका कुछ भाग गैसों के रूप में लाकर वायु में उड़ा देते हैं और कुछ सरल पदार्थों के रूप में पृथ्वी में मिला देते हैं।

शेष हड्डियां भी कुछ वर्षों में पृथिवी का भाग बन जाती हैं। जो पदार्थ भी पृथिवी के अर्पण होते हैं वे जीवाणुओं की क्रिया द्वारा पौदों का भोजन बनते हैं। और बहुत कुछ राशि पौदों के फल में जा कर एकत्र होती है। अवस्थाओं के अनुसार पौदों के फल फिर मनुष्य या पशु पक्षियों के पेट में जा पहुंचते हैं। फिर वही चक्र आरम्भ होता है। जो भाग वायु में मिल जाता है उस में भी बहुत कुछ मनुष्य पशु या पक्षियों के ही काम में आता है। जैसे मनुष्य के लिये ओषजन और पौदों के लिये कर्बनिकादन गैस वायु से ही मिलती हैं। वायु की नेत्रजन पौदों के काम में किस प्रकार आती है इस का वर्णन ऊपर हो चुका है।

यही अवस्था उस पौदे की होती है जो मर कर पृथ्वी पर गिर जाता है और जीवाणुओं के अर्पण होता है। जब किसी जीव या बनस्पति को जलाते हैं या पृथ्वी में गाड़ देते हैं तब भी उस में इसी प्रकार का चक्र चलता है। यह चक्र जो सर्वदा सब स्थानों पर चलता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहता है पदार्थों को तुलना की अवस्था में रखता है। इस चक्र का होना कितना आवश्यक है इस का पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। इसी को देख कर प्रकृति के अविनाशित्व का सिद्धान्त पुष्ट होता है।

केवल इतना ही नहीं किसानों की सेवायें जीवाणु और भी करते हैं। पशुओं के लिये जो घास, चरी आदि की आवश्यकता होती है उस में भी जीवाणु बड़ी सहायता करते हैं। जो घास घोड़ों और बैलों के लिये सुखा कर रक्खी जाती है उसे पकी अवस्था में काट कर और कुछ सुखा कर बड़े २ ढेरों में चिन देते हैं इस अवस्था में जीवाणु इस पर क्रिया कर के इसे घोड़ों के लिये मज़ेदार बना देते हैं।

कभी २ हरे चारे को काट कर लकड़ी के बड़े सन्दूक में जो सब ओर से बन्द और केवल एक ऊपर की ओर से खुला होता है दवा २ कर भर देते हैं। इस में वायु का प्रवेश केवल ऊपर से ही होता है इस लिये ओषजन इस से भली भांति नहीं मिल सकती। यही कारण है कि इस में नमी होते हुवे भी साधारण सड़ाव नहीं होता। चारा नष्ट नहीं होता परन्तु इस में वायु के विशेष जीवाणुओं द्वारा कुछ थोड़ा सा परिवर्तन आ जाता है जिसे पशु पसंद करते हैं और रुचि से खाते हैं।

अब तक जीवाणुओं की जो कुछ भी कथा बताई गई है उस से स्पष्ट है कि कृषकों के लिये ये जीवाणु कितने उपयोगी हैं और स्थान २ पर उसकी किस प्रकार सहायता करते हैं। परन्तु जहां जीवाणु उसे इतना लाभ पहुंचाते हैं वहां उसकी हानि करने के लिये भी हानि कारक जीवाणु सदा उद्यत रहते हैं। जहां कहीं भी जीवाणुओं की संख्या बढ़ी या हानिकारक जीवाणुओं का प्रवेश हुवा और काम बिगड़ा। बीज के उगने के लिये यह आवश्यक बताया गया है कि बीज जीवाणु उपस्थित होने चाहियें। परन्तु यदि किन्हीं कारणों से बीज में इन जीवाणुओं की संख्या बढ़ जावे तो बीज नष्ट हो जाता है और फसल नहीं उगती। कभी २ फसल को जीवाणु बड़ी हानि पहुंचाते हैं। बाग़ के फलों को बिगाड़ देते हैं। जब तक फलों का छिलका साफ़ रहता है तभी तक फल की जीवाणुओं से रक्षा रहती है परन्तु जब छिलका कहीं से कट जाता है वह मनुष्य के शरीर में जख्म के समान होता है। इस के द्वारा हानिकारक जीवाणु फल को बिगाड़ देते हैं। यही जीवाणु किसान की हरी लकड़ियों को ख़राब कर डालते हैं और अच्छी २ बहु मूल्य लकड़ियों को किसी काम का नहीं छोड़ते। जीवाणुओं से बचने के लिये किसान को बड़े २ उपाय करने पड़ते हैं। कभी २ ये जीवाणु खेत के कूवें या तालाब का पानी इतना बिगाड़ देते हैं कि पत्तियों के सड़ने से अत्यन्त ही दुर्गन्ध आने लगती है। पानी इतना वसीला हो जाता है कि मुह के पास तक नहीं लाया जाता। तालाब के सड़े पानी के पास से गुजरना कठिन हो जाता है। इस पानी में बहुत से विषैले पदार्थ भी बन जाते हैं जिन की उपस्थिति के कारण वह पानी पीने के काम में नहीं आ सकता। इस पानी को शुद्ध करने के लिये किसान को और भी बड़े २ उपाय करने पड़ते हैं। इसी प्रकार नाज, चारा इत्यादि की रक्षा करने के लिये उसे बड़ा सावधान रहना पड़ता है। जो स्वयं कृषक हैं या जिन्हों ने कृषकों की कठिनाइयों को अनुभव किया है वे ही इन जीवाणुओं के उपद्रव का भली भांति अन्दाज़ा लगा सकते हैं। सच तो यों है कि किसानों का जीवन इन्हीं जीवाणुओं के बीच में गुजरता है। जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवाणु उसके लिये उपयोगी हैं उन से वह लाभ उठाता है और जो उसके लिये हानिकारक है उन से वह सर्वदा लड़ता झगड़ता रहता है।

र० स० द० सक्सेना।

प्रभो

ले० श्रीयुत गोविन्द प्रसाद द्विवेदी।

प्रभू जी अद्भुत यह संसार
देखि परत चहुं ओर तुम्हारी लीला अपरम्पार।
माया के वश सभी हुए हैं करत नीच व्यवहार॥
यदपि जानते कितने तुमने किये अधिक उपकार।
पर कृतघ्नता वश वे कैसे भजें तुम्हें इक बार॥
हा! रुपया ही केवल उनका जग में प्राणाधार।
आत्म-स्वार्थ हित अवनत मस्तक करें म्लेच्छ सत्कार॥
पाखण्डी कामी जो नर हैं सुख अनुभवत अपार।
करत साधुता होत बुरा है अब वे हैं लाचार॥
पण्डित जन इस क्षुद्र पेट हित फिरें अनेकों द्वार।
किन्तु मूर्ख घर बैठे करते सुख से स्निग्ध अहार॥
'गोविंद' निशिदिन कृष्ण! मुरारे! करता यही विचार।
पाप कर्मरत रह कर कैसे हूंगा मैं भव पार॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रीक और हिन्दू सभ्यता।

लेखक—श्रीयुत राम नाथ लाल 'सुमन'

ऐतिहासिक भाषा में अधःपतन का अर्थ पथ--विस्मरण (निज उद्देश्य को भूल जाना) है। आज दिन (एक प्रकार से) दोनों ही देश आदर्शच्यूत एवं पतित होगये हैं। पहिले की सभ्यता तो बिलकुल ही नष्ट होचुकी है। (यद्यपि उसकी प्रतिनिधि स्वरूपा नवीन पाश्चात्य सभ्यता वहाँ अब भी कार्य कर रही है; परन्तु वह, अधिक अंश में, उससे भिन्न है)।

अब, दूसरी ओर चलिये। भारतवर्ष यद्यपि अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य का (कई अंशों में) पथ-विस्मरण कर बैठा है; परन्तु वह ग्रीस की तरह मृतक नहीं। उसे हम (अधिक से अधिक) मृतप्राय कह सकते हैं; (यद्यपि वह अध्यात्म, वेदान्त एवं अन्य कितनी ही विद्याओं में सम्पूर्ण विश्व से अब भी बढ़ा हुआ है) किन्तु कोई ऐसा कारण नहीं है, जिससे हम उसे मृतक कह सकें। अस्तु अब मूल विषय पर चलिये।

प्राचीन ग्रीक, इस लौकिक विश्व को ही पूर्ण कर्मक्षेत्र समझते थे। उनका विचार था कि राष्ट्र की उन्नति अथवा अवनति पर ही उस देश के मनुष्यों की दशा में परिवर्तन हुआ करता है; इसलिये प्रत्येक सभ्य ग्रीक, 'राष्ट्रीय बंधन को पुष्ट करना' ही अपना प्रधान कर्त्तव्य समझता था। प्रत्येक ग्रीक के लिये, स्वतंत्र जीवन के बदले, राष्ट्रीय जीवन बिताना एक प्रधान, कर्त्तव्य समझा जाता था। समाज की राष्ट्रीय जीवन-धारा में अपने व्यक्तित्व को बहा कर, उसका विसर्जन करके, जातीय उन्नति में भाग लेना ही प्रत्येक व्यक्ति का मूल मंत्र था; अथवा संक्षेप में यों कहिये कि सभी बातें राष्ट्र के हित का ध्यान रखकर, की जाती थीं।

ग्रीक लोग, मानव जीवन को, इस संकुचित क्षेत्र में ही आबद्ध समझ, उसी में अपने जीवन की सार्थकता की चेष्टा करते थे; किन्तु प्राचीन भारत की सभ्यता का बीज मंत्र इससे बिलकुल ही भिन्न था। ग्रीस, सामाजिक जीवन धारा में, व्यक्तित्व का विसर्जन कर देना ही, सुन्दरता की सीमा और जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य मान बैठा था; किन्तु प्राचीन भारत के मत से, व्यक्ति--स्वातंत्र्य का विसर्जन, सौंदर्य का लक्षण नहीं। यहाँ आर्यों ने एक विचित्र सौंदर्य्य का आविष्कार किया था। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा का पूर्ण विकाश ही विश्व-सौंदर्य्य का समुचित लक्षण समझा गया था समाज के क्षुद्र जीवन--जलागार में, व्यक्ति की जीवन धाराओं के संमिश्रण द्वारा, सब प्रकार की स्वतंत्रता का विनाश न करके, भारतवर्ष ने प्रत्येक व्यक्ति के क्षुद्रातिक्षुद्र जीवन-प्रवाह में सारे ब्रह्माण्ड--सम्पूर्ण विश्व-की एकता निमज्जन एवं उपलब्ध करने का प्रयास किया था और साथ ही व्यक्ति-स्वातंत्र्य की पुष्टि की थी और इस काम में उसने खूब सफलता भी प्राप्त की थी। छोटे से मानवजीवन के क्षुद्र कार्यों में अनेक युगयुगान्तर व्यापी, जन्ममरणातीत भविष्य के महत्व और ऐश्वर्य्य ने, असम्पूर्णता को सम्पूर्णता की, अविद्या को विद्या की, मृत को अमृत की, तथा बंधन को मुक्ति की महिमा प्रदान की थी। इसी का फल था, कि भारतवर्ष मानवजीवन की इस सामान्य अवस्था में, सम्पूर्ण विश्व को हृदयगंम करता था। ग्रीक आज मृत है। क्यों? उसकी सभ्यता ही उसके विनाशका कारण हुई। ग्रीस ने अपनी सभ्यता में चिरस्थिरता का बीज बोने में ला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परवाही की उसने कभी (वहाँ के) प्रत्येक व्यक्ति को, अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के हेतु मानसिक उन्नति का अवसर न दिया। भारत-वर्षने यह सब सोच समझ कर अपनी सभ्यता-प्रणाली स्थिर की थी। उसने अपनी सभ्यता में व्यक्ति--स्वातंत्र्य को स्थान देकर उसे चिर-स्थायिनी बना दिया। इसीलिये उसकी सभ्यता अब तक जीवित है। पाठक वर्ग! दोनों के आदर्श एवं उद्देश्य की तुलना कीजिये, और देखिये कि भारतवर्ष, ग्रीक-सभ्यता को, कितना पीछे छोड़ गया है?

वास्तव में, ग्रीक लोग, अपने उद्देश्य की पूर्ति में ही भाग लेते २, न्याय दर्शन, शिल्प, साहित्य, शासनपद्धति, और चित्रकारी प्रभृति प्रायः सभी सांसारिक विद्याओं के थोड़े बहुत जानकार होगये; नहीं तो उन्हों ने स्वतंत्र रूप से अध्यात्म एवं उक्त विद्याओं की उन्नति तथा उनका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का कुछ भी उद्योग नहीं किया। (वरन् अपने उद्देश्य की पूर्ति के समय, ये सब विद्यायें—साधारण ज्ञान के रूप में--उन्हें, राष्ट्रीय सेवा में, प्रसाद स्वरूप प्राप्त हुई थीं। इस तरह से ग्रीस ने 'अंधे के हाथ बटेर' वाली कहावत चरितार्थ की थी; क्योंकि उसका, कोई उद्देश्य, इस विद्याओं में उन्नति प्राप्त करने का नहीं था।

अपने व्यक्तिगत जीवन को, वृहत् राष्ट्रीय जीवन में, डुबो देना ही, ग्रीस का, चर्मलक्ष्य था। इस का क्या कारण था? यह कहना बड़ा कठिन है। पर तो भी सूक्ष्म दृष्टि से देखने और छान बीन करने पर यह बात ज्ञात होती है, कि ग्रीकों की सौंदर्य्य लिप्सा, उनकी शिक्षा-प्रणाली में, इस प्रकार निवेशित हो—घुस—गई थी, कि वे प्रत्येक बात में, राष्ट्र एवं निज सौंदर्य्य लिप्सा की रक्षा का, ध्यान रखते थे। इसी सौंदर्य्य लिप्सा के वशीभूत होकर वे अपने चित्त का (थोड़ा, बहुत) विकाश करने में समर्थ हो सके थे। प्रत्येक वस्तु में वे सौंदर्य्य की खोज करते थे। उन की यह उद्देश्य पूर्ति ही, (राष्ट्रीय उन्नति का) एक मात्र कारण थी। और ऐसा ही वे समझते भी थे। यही एक कारण था, जिस से, उनकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधा पड़ी और वे अपनी मानसिक शक्ति को अधिक उन्नत एवं गम्भीर बनाने में असमर्थ रहे। वाह्याडम्बर में उन्होंने अपना अमूल्य जीवन खोदिया और इस महान उत्सर्ग में उन के हाथ कुछ भी न लगा। अन्य बातों में उसने जो कुछ उन्नति की थी, वह क्षणिक-अस्थिर-थी। ग्रीस ने अपनी सभ्यता पर कभी ध्यान न दिया, कभी उसको, कसौटी पर रख कर, जांच न की। वह अपनी सभ्यता की वाह्य सुन्दरता पर ही इतना लट्टू हो गया था कि उस ने उस के आन्तरिक रूप की देख भाल न की। इस का फल यह हुआ कि उसकी सभ्यता, 'चार दिन की चांदनी फेर अंधेरी रात' वाली कहावत चरितार्थ करती हुई ग्रीस के घोर घटाच्छादित आकाश में एक बार कूंद कर रह गई।

ग्रीक लोग इहलौकिक कार्यों में ही कर्मक्षेत्र की सीमा को परिमित समझते थे; और मानव जीवन को उस में आवद्ध। उनकी उन्नति (उन के विचारों के अनुसार) परिमित थी। उन की उन्नति का दायरा—वृत्त—इतना ही बड़ा था। बस, इतने ही को, वे मानुषिक उन्नति की सर्वोच्च श्रेणी समझ बैठे थे। जिस प्रकार एक गहरे कूयें में रहने वाला अन्धा मेढक उस कूयें ही को विश्व समझ बैठता है; उसी प्रकार ग्रीक लोग भी इस परिमित दायरे को ही विश्व की सम्पूर्ण विद्याओं का घर समझते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी सभ्यता के सामने, वे, कई अंशों में भारतीय सभ्यता को तुच्छ समझ बैठे थे। भारतीय सभ्यता की तली तक पहुंचने की शक्ति उन में नहीं थी। वे, अपनी (जर्मन सिलवर के समान वाली) सभ्यता की चमक दमक के आगे चकाचौंध हो गये थे। (चांदी के समान) भारतीय सभ्यता को वे अपनी सभ्यता के आगे तुच्छ समझ बैठे। उन्होंने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा कि हमारी सभ्यता की चमक दमक थोड़े ही दिन के लिये है; और भारतीय सभ्यता स्थिर है। उनको, अपने दैनिक, सौंदर्य—लिप्सित, राष्ट्रीय जीवन में जो छिद्र दृष्टिगत होते थे; उन्हीं छिद्रों को मिटाना, उन्हीं सामाजिक द्वन्द, विरोधों का नाश करना उनके उद्देश्यों की पूर्ति का साधन था।

सचमुच यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय, तो ग्रीक—सभ्यता में अनेक छिद्र दृष्टिगोचर होंगे। ग्रीक और हिन्दू सभ्यता में ज़मीन, आसमान का अन्तर है। एक की उपमा यदि दूध से ही दी जा सकती है, तो दूसरी, सुशीतल, मृदु सुधा का मुंह मारती है। एक यदि दीपक की टिमटिमाती क्षीण शिखा है तो दूसरा सुशीतल, स्निग्ध, सरसता सम्पन्न, सुधामय, चकोर चय को प्रमुदित करने वाला चन्द्र है। एक यदि ढोल का विकट शब्द है तो दूसरा, हृदय को अलौकिक आनन्द से भर देने वाला मूर्च्छना प्रसारक, मृदु सुरीला, वेणुरव है।

भारत के महर्षियों ने, शान्ति के समूह, प्रकृति देवी के मुख्य रंग मंच पर, एकान्त में, मेखला पहन कर रहते हुये; जो सामान इकट्ठे किये थे, वे सचमुच ही अत्यंत आश्चर्यजनक थे और हैं। उन्होंने "गागर में सागर" नामक उक्ति को चरितार्थ करके, संसार के सामने, जो आदर्श रक्खा था; वह अब तक भारतवर्ष का सिर ऊंचा किये हुये है, और हीन एवं जर्जर हो जाने पर भी उस अद्वितीय आदर्श की छाया, भारतीय हृदय से नहीं हटी है और न हटेगी। इस देश में अनेक युगान्तर व्यापी परिवर्तन हुये। अनेक बार उसके वक्ष स्थल पर खून की नदियां बहाई गईं और अनेक बार उसका हृदय चीर डाला गया, पर मन्त्र बल से जो दार्शनिक, आत्म-तत्व सम्बन्धी छाप उसके हृदय में, आर्य्यों ने बैठा दी थी; अभी तक उसकी मज़बूती में ज़रा भी कमी नहीं आने पाई है। हाँ, उसका रूप कुछ परिवर्तित सा होगया है।

एक बात और है, जिसने कि इस पूर्वीय और पश्चिमीय सभ्यता में सर्वदा के लिये विभिन्नता का बीज बो दिया है—

भारतवर्ष, आत्मतत्ववादी (Spritualist) है और ग्रीस अथवा यूरोप जड़ तत्ववादी (Materalist) एक चैतन्य को मानता है, तो दूसरा जड़ को। अतः इस वैषम्य के कारण दोनों राष्ट्रों के आदर्श में, आकाश पाताल का अन्तर होगया है।

हमारे यहाँ, इस विचित्र आविष्कार के कारण ही, धर्म भाव में, लोगों की विचित्र रुचि होगई थी। इसी विचित्र आविष्कार का प्रभाव था कि भारतवासी, यह भली भाँति समझे हुये थे, कि मानव जीवन के क्रमिक विकाश में, पशुत्व का क्षय और देवत्व की उपलब्धि होती है। सभ्यता के इतिहास में वस्तुतः धर्म का ही क्रम--विकाश होता है; इस बात से वे पूर्ण परिचित थे। इसी से वे प्रत्येक व्यक्ति की सम्पूर्ण स्वाधीनता और मुक्ति-लाभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की आशा कर सके थे। भारत के इसी विशिष्ट धर्मभाव ने समाज-जीवन में प्रवेश करके, साधारण सभ्यता के सामने इस लौकिक क्षुद्रता को खोल कर दिखला दिया था। परन्तु पाश्चात्य देशों के धार्मिक इतिहास में भी राजनीतिक पचड़े घुस गये हैं।*

उद्बोधन

लेखक—श्रीयुत "बनज"

(१)

उठो बीर गण उठो नींद से, करो मातृ उद्धार।
असहयोग का कठिन खड्ग ले, करो दुष्ट संहार॥
शाचि कवच से ढकी देह हो, सहत-शक्ति सिर त्रान।
बना रहे उत्साह हृदय में, सत्य-शक्ति-बलवान॥
उठो बीर गण उठो०॥

(२)

वार करो पर अंग एक भी, बने न रिपु का न्यून।
घाव करो पर बूंद एक भी, गिरे न रिपु का खून॥
शत्रु-देह को बिना घाव के, रहने दो परिपूर्ण।
पर कठोर अति वज्र हृदय को, कर दो भीतर चूर्ण॥
उठो वीर गण उठो०॥

(३)

बना रहै नित समर-क्षेत्र में, निज पूर्वज का ध्यान।
पीठ दिखा भागै हैं ये कटु, वाक्य सुनैं नहिकान॥
सुहार विजय का लेकर करो, मातृ चरण सम्मान।
अड़े नीर की भाँति या रण क्षेत्र में दे दो प्रान॥
उठो वीर गण उठो०॥

---

* इस लेख के लिखने में मुझे प्रो० विनय कुमार सरकार M. A. के एक लेख से बहुत कुछ सहायता मिली है, अतएव लेखक उनका कृतज्ञ है।

लेखक।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीता मृत

लेखक—श्रीयुत प्रो० गोपाल दामोदर तामस्कर एम. ए. एल. टी.

परिच्छेद ५वां सच्चा योग

स्नान संध्यादि नित्य कर्म निपटा-कर मैं विवेक स्वामी जी के गीताश्रम में गया । आज मेरे आनन्द का पारावार न था । मेरा मनोरथ अत्यंत वेग से दौड़ने लगा, "योग की परिभाषा और उस का स्वरूप समझ जाने पर मुझे योगी होने को कुछ देर न लगेगी ! चतुर्दल से लगा कर योग मार्ग के सब चक्रों का, इड़ा, पिंगल, सुषुम्नादि नाड़ियों का और यम नियमादि अष्टांगों का ज्ञान मिल जाने पर कितने कितने समय तक समाधि सुख में मग्न रहूंगा ! काल की भी वक्र दृष्टि अपनी ओर न हो सकेगी ! इत्यादि इत्यादि" ।

ऐसे विचार मन में चल रहे थे, तब स्वामी जी को नमस्कार कर मैं अपने स्थान पर बैठ गया । आज उन्होंने समाधि नहीं लगाई थी । मुझे बैठे देख वे बड़े जोर से हंसे और पूछा-- "क्यों योगिराज ! मन को स्वेच्छया संचार करने को स्वतंत्र छोड़ कर क्या आप योग साधन का विचार कर रहे हैं ?"

स्वामी के हंसते ही मेरे शिथिल विचार तत्काल रुक गये । मैंने नीची गर्दन करली । मैं अब लज्जित हो गया, क्योंकि यह मेरी स्थिति उस अतींद्रिय द्रष्टा को सरलता पूर्वक ज्ञात हो गई । तत्काल मेरी सांत्वना करने की इच्छा से वे कहने लगे—

"इन्द्रिय बलवान हैं ही; वे योगी के भी मन को विषयों की ओर खींच ले जाते हैं । परन्तु मन ही इतना चंचल है कि इन्द्रियों को भी मालूम नहीं ऐसे विषयों की ओर वह स्वेच्छया दौडाता रहता है ।

इस चंचल और अस्थिर मन को अपने अधीन कर लेना चाहिये ।

फिर समता भाव * की प्राप्ति हो सक्ती है, भगवान का यह उपदेश सुन कर अर्जुन ने मन के संयमन की कठिनता दर्शाई । अर्जुन ने कहा " हे भगवन् ! आप ने यह समता भाव योग मुझे बतलाया, पर--

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायो रिव सुदुष्करम् ॥६।३४

"वायु को पकड़ रखना जितना कठिन है, उतना ही इन्द्रिय को क्षुब्ध करने वाले इस बलवान और दृढ़ मन को स्वाधीन करना कठिन है।"

और मन स्वाधीन नहीं तो यह योग सिद्ध नहीं हो सक्ता ।

"श्री कृष्ण ने अर्जुन का भाव समझ कर उसे यह बतलाया कि एवं गुण विशिष्ट (ऊपर बतलाये हुए गुणों से युक्त) मन को किस प्रकार अपने वश में लाना चाहिये । जिस का

---

* सुख दुःख इत्यादि को सम यानी समान समझना ही समता भाव है, इसी को समत्व, या खाली समता या साम्य भी कह सकते हैं, इन शब्दों का इस लेख में यही अर्थ होगा-

अनुवादक-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वरूप अथवा महत्व समझ नहीं पड़ता, पर हवा खाने के लिये त्रिलोक भी काफी नहीं होता, जिस के नियमन करने का प्रयत्न किया तो कुछ वश में आया सा ज्ञात होकर फिर ऐसी उछाल मारता है कि पहुंच के बाहर कूद जाता है और फिर जिसे पकड़ना कठिन है; विवेक, निश्चय, धैर्य इन सब को सहायता देने का बहाना कर उन सब को एक दम फंसाता है, ऐसा यह विश्वास घातकी मन, श्री कृष्ण बतलाते हैं।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥ ६।३५

अभ्यास और वैराग्य से वश में आ सक्ता है।

"अर्जुन को भी जिस का निग्रह दुष्कर मालूम हुआ, वह तेरे वश में इतनी जल्दी किस प्रकार आ सक्ता है! इस कारण उस के बारे में अपने मन में बुरा मत मान, पर ख्याल रख के—

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः॥६।३६

जिसने मन का संयम नहीं किया है उसे योग की प्राप्ति नहीं हो सक्ती।

इस लिये अभ्यास और वैराग्य की सहायता से उसे जीतने का प्रयत्न प्रथम तू कर। मन मर्कट के समान चंचल और उपद्रव कारी है। मर्कट कभी भी एक जगह पर स्थिर बैठता नहीं—कुढ़ाना, खुजलाना, उछलना, टेढ़े मेढ़े मुंह करना इत्यादि अनेक उपद्रव वह सदा किया ही करता है। झूठ मूठ समाधि भी उसे सिद्ध नहीं हो सक्ती! पर वही मर्कट अभ्यास के कारण सर्कस में कौनसा काम नहीं कर सक्ता? परन्तु रोज अभ्यास के पहले एक चाबुक लगती है, उसी प्रकार मन को वैराग्य रूपी चाबुक चाहिये। क्यों? ठीक है ना?"

स्वामी जी ने इस प्रश्न के बाद मधुर हास्य किया और थोड़ी देर चुपचाप रहे।

यह अल्प समय मेरे मन में बहने वाले विचारों की आंधी को दूर करने के लिये बिलकुल काफ़ी न था। मन को स्वामी जी ने मर्कट कहा यह मुझे भी भाया बहुत ठीक जंचा मेरे समान किसी भी व्यक्ति को प्रतीत होगा कि मन मर्कट के समान ही खाते समय, घूमते समय, अथवा और किसी भी दशा में चंचल ही रहता है चारों ओर देखना प्रत्येक काम में गड़बड़ करना बीच में ही टेढ़े मेढ़े मुंह करना आधे काम करके उन्हें छोड़ देना, इत्यादि मर्कट की हलचल अनेकों ने देखी होगी, अब मन की हलचल का विचार करें तो ज्ञात हो जावेगा कि वे भी इसी प्रकार की हैं, स्नान संध्यादि कर्म इसलिये बतलाये हैं कि मन निरुपद्रवी-विषय में कुछ काल एकाग्र हो, पर मन उस मंत्र में, मंत्र की उपास्य देवता में अथवा उस प्रकार हम जो कसरत करते हैं उसमें भी एकाग्र रहता है क्या? क्या कोई ऐसी प्रतिज्ञा कर सक्ता है? हाथ से शालिग्राम के पत्थर सिंहासन पर के पात्रों में रख रहे हैं मुंह से मंत्र घोषणा है, और कल जो खराब तरकारी बनी थी उसके लिये अपनी सहिष्णु अंर्धांगिनी को कठोर शब्द सुना रहे हैं! क्या यही मन एकाग्र है!! ऐसे कितने भी उदाहरण मिलेंगे! ऐसे अनुभव सब को मिलते हैं, इस लिये ज्यादह बतलाने की आवश्यकता नहीं। सिर्फ मैंने अपने विचारों के नमूने दिये हैं। इस प्रकार मैं मन के मर्कट वृत्तियों का चित्र बना रहा था। ऐसी दशा में मन रहे तो कौन सा कार्य सिद्ध होसक्ता है? यह विचार ज्यों ही मन में आया त्यों ही स्वामी फिर से बोले:—

"चित्त के निश्चल हुए सिवाय योग सिद्धि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं मिल सक्ती। इसीलिये पातंजलि महर्षि ने योग को "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" चित्तवृत्ति का निरोध कहा है। यानी उन्हों ने चित्त की निश्चलता को प्रधानता दी है। और चित्तवृत्ति का निरोध करने के लिये अभ्यास और वैराग्य ये ही दो साधन बतलाये हैं। अभ्यास का अर्थ बतलाया है "एक ही अनुभव की बारबार आवृत्ति" (चित्तभूमौसमान-प्रत्ययावृत्तिः), और वैराग्य का अर्थ दृष्ट, श्रुत, अथवा कल्पित भोग सदोष हैं इस भावना से उनके विषय में उदासीन रहना। (दृष्टादृष्टेष्ट भोगेषु दोषदर्शना भ्यासा द्वैतृष्ण्यम्) भोग अनित्य हैं और वासना की वृद्धि करते हैं, इन दोषों का हमेशा मनमें ख्याल रखना चाहिये। तब वैराग्य उत्पन्न होगा। इस कल्पना के अनुभवार्थ आवृत्ति करने से अभ्यास होगा। अभ्यास से वैराग्य उत्पन्न करके, वैराग्य का अभ्यास चलाने से चित्तवृत्ति का विरोध होगा।"

ऊपर की बातों से मेरा ख्याल हुआ कि स्वामी जी चित्त की निश्चलता को योग नहीं समझते बल्कि उसे योग सिद्धि के साधनों में से एक साधन समझते हैं। फिर गीता में बतलाया हुआ योग कौनसा है? मेरा मन विचार चक्र पर चक्कर खाने लगा। यह भी स्वामी जी की अंतर्दृष्टि से छुपा नहीं था। तत्काल हंस कर वे कहने लगेः—

"मनोविजय योग का साधन तो है ही, पर बहुत ही प्रमुख साधन है। जब तुझे भगवद्गीता की योग की परिभाषा ज्ञात हो जावेगी तो तू मेरा कहना समझ जावेगा। प्रथम इस बात का विचार करना चाहिये कि गीता ने कौनसा कार्य संपादित किया। क्योंकि "गीता योग प्रचार के लिये ही उत्पन्न हुई", इस वाक्य से जान पड़ता है कि योगही उसका मुख्य कार्य है। श्रीगोपाल ने सब उपनिषद् स्वरूप गायों को दुहकर चतुर अर्जुन वत्स को गीतामृत पिलाया।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नंदनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतंमहत्॥
गी० अ० ४

"श्री भगवान् गोपाल ने अर्जुन को गीतामृत पिलाया तो किसकारण? उसे कौनसा रोग हुआ था जो ऐसा करना पड़ा?"

ऐसा मुझे पूछ कर स्वामी जी मेरी ओर देखने लगे। उनकेचेहरे से ऐसा ज्ञात होता था कि मुझ से वे उत्तर की आशा कर रहे हैं। मुझे मालूम हुआ कि यह गीता पाठ की मेरी परीक्षा ही है। इस कारण मुझे भी जोश आया और बोला, "भगवन्! योग्य न्यान के अनुसार जो राज्य पांडवों का था उसे कपटद्यूत से हरण कर, निश्चित अवसर बीतने पर भी कई महापुरुषों के कहने कहाने पर भी कौरव राजा दुर्योधन सूई के अग्र के बराबर भी जमीन पांडवों को देने को तैयार न था। पांडव अपना न्याय्य हिस्सा लेना चाहते थे, और कौरव अन्यायपूर्वक प्राप्त किया हुआ राज्य पचाना चाहते थे। इस कारण लड़ाई छिड़ गई। ऐसे समय जिस अप्रतिम पांडव योद्धा पर सब दारमदार थी वह पार्थ ही आप्त स्वकीयों से लड़करउनके रक्तपात से प्राप्त किये राज्य का कैसे उपयोग करें इस विचार में पड़ा और वह शस्त्र त्याग कर चुपचाप बैठा गया उस समय उसका यह विषाद दूर करने के लिये ही श्री भगवान् ने गीता शास्त्र उसे समझाया था।"

इस पर स्वामी जी का चेहरा गंभीर दीखने लगा। मालूम हुआकि इससे वे संतुष्ट हुए। वे कहने लगेः—

अगर विचार करें कि "वह विषाद कौनसा है तो दीख पड़ेगा कि अर्जुन को ऐसी दशा में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चुपचाप बैठा देख श्रीभगवान ने उसे जो पहला प्रश्न पूछा उसी में उसका स्वरूप वर्णित है।

कुतस्त्वा कश्मल मिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्य जुष्टम स्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २। २

हे पार्थ! भीरु पुरुष ही के योग्य, अधोगति को ले जाने वाला और अपकीर्ति कारक यह निरुत्साह युद्ध जैसे बिकट अवसर पर तुझमें कहां से आया? यही श्रीकृष्ण का प्रश्न है। इस प्रश्न में जो नीचता दर्शक विशेषण आये हैं, उनमें बड़ा व्यापक अर्थ भरा पड़ा है। "भीरु पुरुष को ही योग्य" इन शब्दों से यह भाव बतलाया है कि तुझ जैसे शूरको यह कार्य अयोग्य है। अधोगति को ले जाने वाला" कह कर यह सूचित किया है कि यह धर्म के विरुद्ध है। "अपकीर्ति-कारक" यानी अन्याय्य भी है। इस प्रश्न का उद्देश के अनुसार भावार्थ करना हो तो ऐसा होगाः—

"हे अर्जुन! पहले इस बातका तूने विचार किया है कि तू कौन है, क्या करता है, ऐसा करना क्या तुझे योग्य है तू अनुचित बातों को कभी ध्यान में भी नहीं लाता और तेरी हिम्मत कभी नहीं हारती। हे विजय! तेरे नामको "अपकीर्ति" का कलंक कभी नहीं लगा। फिर तुझे आज क्या होगया है? तू क्षत्रियों का राजा है, शूरत्व का आकर है, तूने युद्ध में शंकर को भी जीता, गंधर्वों को हराया, निवातकवच मिलाया। तेरी कीर्ति का त्रैलोक्य में ऐसा घोष हो रहा है और आज तूने यह करुण दशा कैसे ग्रहण की? क्षत्रियों को युद्ध के समय सदय होना ठीक नहीं। जिस प्रकार अंधकार सूर्यको, मेंढ़क सर्प को, अथवा सियार सिंह को निगल डाले, उसी प्रकार इस करुणता ने तेरा क्षात्रतेज निगल लिया है। पर इससे तेरी सुकीर्ति नष्ट हो जावेगी, और युद्ध में मृत्यु पाये हुए क्षत्रियों को मिलने वाला स्वर्ग भी तुझे न प्राप्त होगा। कुछ तो भी इस बातका सोच कर।"

"फिर आगे श्री कृष्ण ने बतलाया 'क्षत्रिय के लिये सब से उत्तम बात धर्म युद्ध है। इस प्रकार का स्वर्ग के कपाट खोल देने वाला युद्ध केवल क्षत्रियों को ही प्राप्त होता है, यानी तेरा धर्म युद्ध करना है और वह तू नहीं करेगा तो तेरे धर्म और कीर्ति दोनों नाश हो जावेंगे', और अपकीर्ति सब जगह फैल जावेगी" और:—

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणा दतिरिच्यते॥२।३४

सन्मान्य पुरुष की अपकीर्ति मृत्यु से भी बढ़ कर असह्य होती है। इस सब उपदेश का सारांश यह है कि 'हे अर्जुन! युद्ध तेरा स्वभावसिद्ध धर्म है। उसे त्याग देने से तेरा स्वभावसिद्ध धर्म नष्ट हो जावेगा और तू पाप का भागी होगा। जिस प्रकार दूध अमृत हो कर भी नवज्वर पीडित को विष के समान होता है, उसी प्रकार सदयता उत्तम गुण तो है पर वह अगर युद्ध के समय किसी क्षत्रिय में उत्पन्न हो तो विष के समान नुकसान पहुंचाती है।

"इस से स्पष्ट है कि अर्जुन स्वधर्म से च्युत हो गया था और कर्मत्याग करने को तैयार था। और गीता सुनने पर फिर से वह धनुष लेकर युद्ध के लिये तैयार हो गया यानी गीता ने उसे स्वधर्म में प्रवृत्त किया।

'अर्जुन प्रति कर्मण्येव प्रवर्तितवान् भगवा-ञ्छ्रीकृष्णः'।

'अर्जुन को भगवान् श्री कृष्ण ने कर्म करने को ही प्रवृत्त किया'। गीता का किया हुआ यह कार्य इस तरह 'ढुंढिराजात्मज विट्ठलशर्मा'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने शांकर भाष्यादि सप्तटीकोपेता श्रीमद्भगवद्गीता नाम की अपनी पुस्तक की भूमिका में व्यक्त किया है।

"इस से सिद्ध होता है कि 'स्वधर्म' यानी 'स्वभाव नियत कर्म' ही गीता का प्रतिपाद्य विषय है।

"अब विचार करना चाहिये कि गीतामें योग की क्या परिभाषा की है।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य सिद्ध्योःसमो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥
२ ॥ ४७ ॥

हे धनंजय! तू योग में रहते हुए (यानी बुद्धि को योग मुक्त बना कर) कर्म कर, उस कर्म में सफलता मिले तो हर्ष मत मान या विफलता मिले तो विषाद मत कर! इस प्रकार के बुद्धि के समत्व को योग कहते हैं।

"श्री भगवान ने इस श्लोक के आखीरी दो चरणों में योग की परिभाषा दी है हर्ष और विषाद दोनों मनोवृत्तियां हैं; उन के आधीन नहीं होना चाहिये यानी उनको अपने वश में रखना चाहिये। यानी चित्तवृत्ति का विरोध करना चाहिये। सारांश, "योगश्चित्तवृत्ति-निरोधः" पातंजल योग सूत्र की इस परिभाषा का अनुवाद ही इस श्लोक में दिया है। श्लोक के पूर्वार्ध में जो बतलाया है कि कर्म करने के लिये 'योगस्थः' (योग मुक्त) होना चाहिये उस की परिभाषा उत्तरार्ध में दी है, यानी यहां वर्णन किया हुआ योग साधन है और कर्म (विहित कर्म) साध्य है"।

ऊपरिनिर्दिष्ट विवाद में स्वामी जी ने कर्म को प्रधानता दी है, इसका कारण मैं बिल्कुल समझ नहीं सका मुझे मालूम होने लगा कि योग की परिभाषा बताते समय उसी को स्वामी जी ने गौण कर दिया, इस में उन का कुछ गूढ़ हेतु होना चाहिये। मैं इस बात को सोचने लगा। अब तक स्वामी जी की रीति यह थी कि महत्व के किसी विषय पर बात चीत होने के बाद वे मुझे विचार का अवसर देने की इच्छा से कुछ देर तक चुप चाप रह जाते थे। पर इस समय मेरे मन में इस बात का झगड़ा चला था कि योग से कर्म क्यों प्रधान है? मेरा चित्त इसी बात में व्यग्र हो गया। आसनादि से कर्मेंद्रिय, प्राणायाम से प्राणवायु, और अभ्यास वैराग्य से मन नियंत्रित करना ही योग है और यही सब से श्रेष्ठ है ऐसा मैं अब तक समझता था, और सब इन्द्रियों को मौन बनाने में ही सब सफलता मिलने की आशा करता था। परन्तु यहां तो स्वामी जी प्रतिपादन करते हैं कि कर्म करना आवश्यक धर्म है। इस कारण मेरी चित्तवृत्ति व्यग्र हो गई। मुझे कुछ भी सूझ नहीं पड़ता था आखिर जब प्रश्न पूछने की इच्छा से मुंह खोलने वाला ही था तब स्वामी जी बोले, "बच्चा! ठहर। जल्दी न कर। मन को इस प्रकार आन्दोलित न होने दे। श्री भगवान ने कुछ महत्व पूर्ण हेतु के कारण योग की परिभाषा इस प्रकार बतलाई है। श्री भगवान ने सिर्फ एक वार और योग की परिभाषा की है:—

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगःकर्मसु कौशलम्।२।५०

इस लिये तू अपनी बुद्धि योग में युक्त कर। योग यानी कर्म करने की निपुणता।

"चित्त की समता ही योग का सार है। मन और बुद्धि की एकता हुई कि समता सिद्ध होगई। यह एकता ही बुद्धि योग है। इसके महत्व के सामने कर्मयोग कम महत्व का जचेगा, पर कर्माचरण के सिवाय बुद्धि योग सिद्ध नहीं होता। कर्म फल के हेतु का त्याग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने के सिवाय कर्म योग नहीं होता, इसलिये पहले निष्काम कर्म योग सिद्ध करना चाहिये, और पीछे से समता साध कर बुद्धि योग सिद्ध करना चाहिये, तब पाप पुण्य का बंधन हमें न लगेगा, बुद्धि योगी पुण्य करके पाप का त्याग करता है और फल हेतु का त्याग कर पुण्य कर्म में भी लिप्त नहीं होता।

"इस में के 'कर्मसु' शब्द का स्पष्टी करण करते समय "स्वधर्मार्व्येसु कर्मसु" कहा है। सारांश, सामान्यतः फल की इच्छा न रखते हुये स्वधर्म कर्म करने के निपुण आचरण को योग कह सकते हैं।

"गीता ने अर्जुन को स्वधर्म में प्रवृत्त किया यानी ऊपर की परिभाषा के अनुसार ऐसा भी कह सकते हैं कि उसे योगी बनाया। अर्जुन को योगी बनाने के लिये--यानी स्वधर्माचरण की ओर झुकाने के लिये--गीता का इस मृत्यु लोक में अवतार हुआ। गीता में महत्व का विषय योग ही है और उस की परिभाषा ऊपर दे चुके हैं। अब इस विषय पर तू पूर्ण विचार कर। फिर सवेरे तुझे कर्म योग की आवश्यकता दिखलाऊंगा और उसे अधिक स्पष्ट क बतलाऊंगा"।

इतना कह कर स्वामी जी का कथन समा हुआ और वे गाने लगे। सोचने के लिये मु एक अतिगहन विषय मिला था और इ कारण किसी बात में मेरा मन लग नहीं सक था। पर स्वामी जी के भाषण का और उस प्रकार गाने का भी आकर्षण इतना जबरद था कि मेरे अत्यन्त चंचल मन को वे बारी से खींच ले जाने लगे।

पद्य

कर्म करो निष्काम सखारे।
यही योग सुख धाम ॥ ध्रु०
जीव जभी तक देख सोच ले,
'कर्म हीनता कैसे पावे' ॥१॥
कर्म हि साधन चित्त शुद्धि का,
चित्त ज्ञान से मलिन न होवे॥
'ज्ञानान्मोक्ष' स्तस्मात् सहजं,
कर्त्तव्यं निज कर्म' सखारे॥

जातीय-गीत।

(ले०—श्रीयुत व्रज जीवनदास)

प्यारा भारत वर्ष हमारा ॥ टेक ॥
शैल शृङ्ग उत्तुङ्ग हिमालय,
धवल चूड़ मानस सलिलालय।
रुद्रासन शुभ पीठ शिवालय,
न्यारा देश हमारा ॥ प्यारा० ॥ १ ॥
जग जननी गंगोत्रि प्रवाहिनि,
पुण्य तोय सलिलालय वाहिनि।
हरित कूल कल्लोल विहारिनि,
सब जग ज्योति सहारा ॥ प्यारा० ॥२॥
नाना धातु राग रस रंजित,
नाना रत्न मुकुट मणि मंडित।
नाना बुद्धि ज्ञान बल पंडित,
सात्विक मुख उजियारा ॥ प्यारा० ॥३॥
गगन चुम्बि बेला सलिलाकर,
क्षोभ-युक्त गम्भीर जला कर।
विविध शक्ति मुक्ता रत्नाकर,
सारा रतन अगारा ॥ प्यारा० ॥ ४ ॥
मन मतंग हित प्रेम अलाना,
मन विहंग हित तरुवर नाना।
मन मलिन्द हित सौरभ वाना,
प्रेम सलिल फौव्वारा ॥ प्यारा० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अत्याचार।

लेखक—श्रीयुत डाक्टर युधवीरसिंह।

(गतांक से आगे)

(५)

पादरी थामस प्रत्येक रविवार को जेल में कैदियों को देखने और उन्हें उपदेश देने आया करते थे। आज देवल को उसकी बारक में न देख बोले कि यह बन्दी कहां है। दारोगा ने कहा कि वह बड़ा बदमाश है। नालायक हमेशा लड़ा करता है उस दिन एक सिपाही को मारे डालता था, उसको नीचे तैखाने में बन्द किया है। पादरी ने कहा कि मैं उससे मिलना चाहता हूं।

दरोगा ने कहा—"कहीं आप पर चोट न कर बैठे।"

पादरी साहिब बोले "नहीं, कोई हर्ज नहीं खुदावन्द ईसूमसीह का सन्देशा मैं उसको सुनाऊंगा।"

देवल शोक शीत और उदास गुस्से से अपनी अंधेरी कोठरी में चारपाई पर बैठा था। पादरी साहेब अन्दर घुसे पर देवल अपने दुःख में इतना लिप्त था कि उसने कुछ नहीं देखा।

अपनी बूढ़ी दादी और प्यारी बच्ची को तो छोड़ा ही था एक गिलहरी के बच्चे को अपनाया था उसको भी ज़ालिमों ने मार डाला। हाय! दुर्दैव!! "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं"।

पादरी साहब ने कहा—देवल तुम क्यों उदास हो मुझ से तो बोलो। मैं पादरी थामस हूं।

देवल ने अपना सिर ऊंचा किया पादरी को देखा और फिर दुःख से गर्दन झुका ली।

पादरी ने देखा मामला टेढ़ा है इसे बहुत दुःख है। देवल पादरी से हमेशा खुशी २ बातें किया करता था क्योंकि वे हमेशा उससे हमदर्दी प्रगट करते थे। उसकी सारी कारावास कथा को उन्होंने बड़ी सहानुभूति से सुनाथा। किन्तु आज उसके दुःख का वारा पार न था वह बहुत दुःखी था उसने पादरी से कोई बात न की।

पादरी ने कहा—मुझे तुम्हें इस दशा में देख कर बड़ा दुःख है खैर मैं तुम्हारे छुड़ाने का प्रयत्न करूंगा लेकिन तुम्हें सारा किस्सा सच्चा सच्चा कहना होगा। अच्छा सलाम, मैं अगले पवित्र रविवार को आऊंगा खुदावन्द ईसूमसीह तुमको शान्ति दें।

———

दूसरा इतवार आगया पर देवल का दुःख नहीं मिटा। वह वैसा ही उदास था कि पादरी साहब ने एक बालिका सहित तैखाने में प्रवेश किया। लड़की १० बरस की होगी वह कन्या पादरी साहब की ही थी। देवल वैसे ही बैठा था-कन्या ने पूछा—

"पापा यह देवल इतना उदास क्यों है! आज तुम से बोलता क्यों नहीं?"

पादरी बोला—"ममी तुमही इसे खुश करो और इससे इसका दुःख पूंछो।"

छोटी ममी को देख देवल को अपनी लड़की की याद आगई उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े उसने लड़की को पास बुलाकर उसका हाथ चूम लिया और बड़ा प्यार किया मौका अच्छा देख कर पादरी साहब ने देवल का प्यार से हाथ पकड़ कर सब बात पूछी। देवल ने लड़की को फिर प्यार किया और गिल्लो की सारी बात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिपाही का उसे मारना, तथा उसकी लड़ाई की सब कथा उन्हें कह सुनाई।

पादरी साहब ने सब वृत्तान्त सुना, सुनकर एक ठण्डी सांस भरी और कहा कि "खुदावन्द ईसूमसीह के नाम पर मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि तुमको इस काल कोठरी व कड़े काम की सज़ा से ज़रूर छुड़ा दूंगा।"

———

देवल उस सजा से छूट गया और अब उसको पादरी साहब के कहने से उनही के बंगले में पौदों में पानी डालने, गमलों को साफ रखने, फूलों को चुनने इत्यादि का काम मिल गया। पादरी साहब का बंगला जेल के पास ही था दिन भर देवल बंगले पर काम करता था और रात को अपनी बारक में आजाता था।

एक दिन जब वह बाग में काम कर रहा था तो पादरी साहब की लड़की देवल के पास आई देवल ने चट उसको फूलोंका गुलदस्ता बनादिया। ममी ने कहा कि एक और बनादो, उसनें पूंछा क्यों, कहने लगी कि आज जो अनाथ बच्चे आये थे उनमें एक गांव की लड़की मेरी उम्र की आयी थी, मैंने उसे अपनी सखी बना लिया है वह बड़ी सुशीला है, उसके लिये चाहिये।

देवल ने एक गुलदस्ता और बना दिया गुलदस्तों को लेकर ममी दौड़ी २ एक कमरे में गई वहां से अपनी नई सहेली को साथ लेकर खाना खाने वाले कमरे में गई। उसने एक गुलदस्ता उसको दिया और कहा लगाओ। दोनों ने बड़ी चतुराई से गुलदस्ते लगा कर मेज़ पर रख दिये। फिर ममी नई लड़की को अपनी गुड़ियें दिखाने लगी। दिखाही रही थी कि इतने में बाहर से धुंआ आने लगा दोनों बच्चियें घबरा कर दर्वाज़े की तरफ जो दौड़ी तो मालूम हुआ कि बाहर आग लग गई है। ममी उस लड़की का हाथ पकड़े हुए दर्वाज़े की और भागी तो देखा उसमे भी आग लग गई है। ऊपर छप्पर भी जल रहा था। ज्योंही ममी ने खिड़की की तरफ़ लपक कर कूदने को किवाड़ खोले तो एक दम धुंआं अन्दर घुस आया और इनकी आंखें बन्द होगई और दम घुटने लगा। दोनों ने डरके मारे एक दूसरी को मजबूती से पकड़ लिया।

उधर बाहर हाहा कार मच गया पादरी साहब घर नहीं थे मेम साहिबा चिल्लाने लगी। खानसामा माली इत्यादि सब दौड़ आये कोई पानी से और कोई मिट्टी से आग बुझाने लगे। मेम साहिबा ने कहा कि अरे अन्दर से कोई मेरी बच्ची को लाओ पर किसी की उस धधकती आग में कूदने की हिम्मत न हुई। इस भब्भड़ को सुन कर देवल भी इधर दौड़ आया और जब उसे यह मालूम हुआ कि ममी अन्दर है तो बिना किसी से कुछ कहे सुने अभय होकर देवल उस आग में कूद पड़ा। कमरे में पहुंचते ही उसे ठोकर लगी, देखा कि दो लड़कियें हाथ में हाथ डाले एक दूसरी पर पड़ी हैं। देवल के कपड़ों में आगबैठ चुकी थी और धुंयें से उसका दम घुटने लगा था पर उसने तुरन्त दोनों बग़लो में दोनों लड़कियों को दबाया और बाहर चला। लड़कियें सही सलामती से आगई कहीं २ कपड़े जले थे पर देवल आते ही बेहोश होकर गिर पड़ा। लोगों ने उसकी आग बुझाई और शीघ्र ही उसे जेल के अस्पताल में पहुंचाया।

———

मरना भला है उसका जो जिये अपने लिये।
जीता है वह जो मर चुका इन्सान के लिये॥

———

देवल अस्पताल में मृत्यु शय्या पर पड़ा है और पादरी साहिब, उनकी लड़की ममी डाक्टर और जेलर इत्यादि खड़े हैं। ममी की नई सहेली खड़ी हुई रो रही थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवल ने आंखे खोलीं--

"कौन रोता है पादरी बाबा"।

यह सुनते ही लड़की "दादा" ज़ोर से चिल्ला कर मरते हुए मुजरिम क़ैदी की छाती पर गिर पड़ी और फूट २ कर रोने लगी।

देवल ने कहा--"हैं कौन, कुमारी, बेटी तुम यहां कैसे आईं?" पादरी साहिब ने कहा कि, "देवल उस दिन ममी के साथ तुमने इसे ही बचाया था। देवल, यह कहती है कि इसके बाप तुमही हो। हमें यह जंगल में मिली थी एक बुढ़िया इसके बराबर मरी पड़ी थी और यह बेहोश थी।"

देवल बोला—"हां कब तक जीती बिचारी, बेटी! वह मर गई।"

कुमारी बोली हां···दादा···वह मर गई-और मैं भी·····मर गई थी-इन पादरी बाबा ने ही मुझे बचाया है पर मैंने अभी तक इनके हाथ का खाया पिया नहीं दादा। अब दादा मुझे अपने साथ ले चलो।"

मरने वाले के सूखे गालों पर सावन भादों की झड़ी की तरह आंसू टपकने लगे उसने एक हाथ से ममी का हाथ पकड़ चूम लिया और दूसरे हाथ से कुमारी को प्यार करने लगा—कुमारी तो रो ही रही थी पर ममी के भी आंसू निकल आये। जेलर का हृदय भी यह दृश्य देख कर पसीज गया बोला—"देवल तुम्हारी क़ैद के दिन तो ख़तम होगये अब तुम जल्दी अच्छे होकर अपनी लड़की को लेकर आजाद हो जाओगे।"

देवल ने एक लम्बी सांस ली और बोला "हां-मेरी क़ैद के दिन सदा के लिये ख़तम होगये हैं अब इस दुनियां के बन्धन से मैं तो छुटता हूं पर न जाने मेरी बच्ची का क्या होगा। पादरी बाबा आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है आपका ईसाई धर्म बड़ा अच्छा है पर बाबा मैं हिन्दू था·····और हिन्दू ही मरता हूं। मेरी बच्ची के धर्म की तुम रक्षा करना इसे किसी हिन्दू को·····ही व्याह देना बेटी मेरे कहे क्या होगा। जो वे करेंगे वही होगा। जो उन्होंने किया अच्छा है और मेरे तेरे सबके पिता अब जो करंगे·····वही अच्छा है बेटी·····तू·····पानी·····बेटी—क्यों रोरोरो·····ती है हरि हरि हरि!!!

देवल का अन्त हुआ--जीवन लीला समाप्त हुई एक क़ैदी की क़ैद खतम हुई।

——:०:——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विरक्त-जीवन

लेखक–'विनोद'

(१)

जान करके कि यह है सुख मय संसार।
मैं भी सुख था करता किसी प्रकार॥
किन्तु न जाना मैंने कि जग है निसार।
और जग की रीति पर न किया विचार॥

(२)

एक दिन मेरे मन में ऐसा आया।
क्यों यह संसार है मुझ को भाया॥
देखा मैंने जग में मोह माया।
मैंने अपने को भी प्रेम मे पाया॥

(३)

मैंने कहा संसार अब निसार है।
विचित्र है लीला यहां कुछ नसार है॥
लेता है जन्म जो मरता है वही।
किन्तु रह जाता ठाठ सब वैसे ही॥

(४)

नहीं भाई बन्धु कोई जग में अपना।
यहां तो है सब उसी धन की महिमा॥
जब तक धन है पास में सब अपना है।
धन नहीं है तो कोई नहीं अपना है॥

(५)

देख यह दशा जग की मुझे दुःख हुआ।
इस तरह यहां सुख हुआ तो क्या हुआ॥
छोड़ो इस बन्धन को क्या करना है।
बस अब तो हरि नाम ही जपना है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुक्मिणी हरण नाटक।

लेखक—श्री मेधाव्रत जगजीवन

अंक दूसरा। प्रवेश ६ छठा।

[स्थान—गिरनार पर्वत की एकान्त गुफा।]

[मुचुकुन्द सोया हुआ है।]

कृष्ण—(भागता हुआ प्रवेश कर।) देवासुर संग्राम में असुरों को जीत कर सो रहने का वरदान पाये हुए तथा जो कोई जगावे वह जल कर भस्म हो जाय ऐसी सिद्धि पाये हुए यह मुचुकुन्द मुनि सोये हुए हैं इसके द्वारा ही कालयवन को भस्मीभूत करना चाहिये। (मुचुकुन्द के ऊपर चादर डालकर दूर खड़ा रहता है)

कालयवन—(प्रवेश कर।) किधर गया ?

प्रारब्ध—(स्वगत, छूमन्तर अदृश्य होगया।

काल०—कहीं भी नजर नहीं आता है।

प्रारब्ध—तुह्मारा मृत्यु तो नजर आता है?

काल०—ऐसा भगने वाला भाजीखाऊ मैंने कभी नहीं देखा।

प्रारब्ध—सचमुच! आज मुझे श्रीकृष्ण की कही हुई गुरुकुल शिक्षण की खूबी याद आती है कि ब्रह्मचर्य से कैसा बल प्राप्त होता है और नंगे सिर एवं नंगे पैर रखने से तथा शीतोष्ण सहन कर परिश्रम के कार्य करने से आखिर कैसे लाभदायी फल मिलते हैं। नहीं तो ऐसे जीवन मरण के विकट प्रसंग में बाबूपना या हड्डियों का हरामपना जोर से रुलाता है।

काल०—[ढूँढता हुआ मुचुकुन्द मुनि के पास जाकर।] हत् तेरी फ़तूरी की!! कमबख्त डरकर इधर सो गया क्यूँ ?

प्रारब्ध—(स्वगत) अब राम बोलो भई राम की तैयारी है यूँ।

कालयवन—[अस्तीन चढाता हुआ।] शैतान अब क्या करेगा ?

प्रारब्ध—(स्वगत) तुमको जहन्नुम में पहुँचावेगा।

काल०—अब नहीं छोड़ूँगा सिर फोड़ूंगा।

प्रारब्ध—(स्वगत) तुह्मारा या तुह्मारे बाप का ?

काल०—[वस्त्र खींच के लात मार कर।] उल्लू का पट्ठा ? अब उठ उठ।

मुचुकुन्द—(सहसा जगकर।) ए भ्रष्ट दुष्ट?

कालयवन—हाय!! किरसन ? मैं मरा। [जल कर भस्म हो जाता है।]

मुचुकुन्द—ए विदेशी विधर्मी ? इस देश के थके सोये हुए तापस को सताने का आखिर यह फल! सतयुग के अन्त में सोया हुआ मैं अब भारत के कलि कलह युग को देखता हुँ। नवीन जाति का आगमन देखता हूँ। आत्मिक बल, चरित्रबल तथा वैदिक धर्मबल से चक्रवर्ती बना हुआ यह आर्य देश फूट भ्रातृद्रोह तथा अज्ञान के तूफानी अन्धकार में अब टकराना शुरू हुआ है। बुद्धि के दीपस्तंभ तथा धर्मैकता के ध्रुव तारे की ओर यदि ध्यान न रखें तो भारत नौका डूब जाने वाली है तथा जलचरों का भक्ष्य हो जाने वाली है। (जाता है।)

[कृष्ण पवर्त पर चढ जाता है। शिशुपाल रुकमैया प्रवेश करते हैं।]

शिशुपाल-ओह ? यह बच गया और कालयवन ?

प्रारब्ध—(रोता हुआ।) स्वधाम में पहुँच गया।

कृष्ण—दुष्टो ? भारत का सोया हुआ सौभाग्य भी अभी प्रभुता तथा मनुष्यता के दुश्मनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को मारने के लिये समर्थ है। तथापि—

"निजमातृ भूमि, मनुष्यता के द्रोहियो"?
तुम चेतियो।
नहिं तो स्वराज्य स्वतंत्रता सर्वस्व खोकर
बैठियो॥"

[ऊपर चढ जाता है।]

शिशुपाल—जलाओ इस पहाड़ को। उस तरह नहीं तो इस तरह तेरा अंत होगा।

प्रारब्ध—पर किया प्रारब्ध का होगा।

[पहाड़ जलाते हैं और सीन ड्रान्स्फर।]

अंक दूसरा। प्रवेश ७ वां।

[स्थान—कुण्डिनपुर के समीप का रुक्मिणी का तपोवन।]

[दृश्य—कृष्ण प्रतिमा तथा गायों की सेवा करती हुई रुक्मिणी।]

गायन।

रुक्मिणी—नाथ! तुम विपति हरो द्रुतमेरी।
हृदय पुष्प से पूजहुँ निशदिन,
मोहनि मूरति तेरी॥ नाथ०—
त्रिविध ताप से तप्त तनू,
पल्वल के क्लेश कीचड़ में।
ठग बक से डरती मछली पर,
कर कृपावृष्टि घनेरी॥ नाथ०—
भटकती हुई खारे भवसागर,
पर के दुःख सलिल में।
हंसी चुगैं मुक्ति, मुक्ताफल,
करुणा ऐसी हो तेरी॥ नाथ०—
जीवन उषा में मोक्ष सूर्य की,
झलका पुण्य किरण को।
विरह तिमिर का नाश करो झट,
बजैं मिलन सुख भेरी॥ नाथ—
जो कृष्ण के अभिमत करे उनपर कृष्ण प्रीति करें।
कृष्णमय जीवन करने से कृष्ण नित्य हिले मिलें॥

कृष्ण—[साधुवेश में प्रवेश कर।] पर्वत दाह में से निकल कर गुप्त वेश से घूमता हुआ मैं कुण्डिन पुर समीप आ पहुँचा। यहाँ रुक्मिणी ने मेरे लिये तप किया है ऐसा मालूम होता है। अप्रकट रह कर भेद लूँ। (अर्ध-स्वगत।) नारायण, नारायण।

रुक्मिणी—पधारो अतिथिदेव? पधारो।
सुर झरन सम निजचरन से मम
अंगन सुपावन करो।
करती है वन्दन रुक्मिणी सन्ताप
सब इसके हरो॥ [प्रणाम करती है।]

कृष्ण—प्रभु की कृपा के किरण सुनैहरी
तुह्मारे पर पड़ैं।
तिमिर विघ्नों के टलैं अरुतब मनोरथ सब फलैं।

रुक्मिणी—मनोरथ? (निःश्वास लेती है।)

कृष्ण—गहरा निःश्वास किस लिये लेती हो? राजकुमारी होकर ऐसे तप के क्लेश से काया कल्पलता को किस लिये और कब तक मुरझाना चाहती हो?

रुक्मिणी—श्रीकृष्ण जलधर इस लतापर
बरसेंगे नहीं जब तक।
अमृतमय हाथ उनके छूएँगे नहीं जब तक।
परिणय प्रणय को वह सुधारस सींचेंगे
नहीं जब तक।
मम काय वेली विरह ताप से मुरझावेगी
तब तक।

कृष्ण—(स्वगत) अब ज़रा हृदय परीक्षा करूँ। (प्रकट-हँसकर।) शिशुपाल जैसे महाराज को छोड़कर तुम, नहीं जैसी छोटी शून्य द्वारका के यादव को व्याहने के लिये व्रत ले बैठी हो। यह तो पहाड़ खोद कर चूहा निकालने जैसा तुम काम कर रही हो।

रुक्मिणी—महाराज? तुम साधु हुए किन्तु श्रीकृष्ण की महिमा नहीं समझे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बालक हुआ भी कृष्ण अंकुश,
इन सभी गजराज का।
बालक हुआ भी कृष्ण हन्टर;
राजमण्डल अश्व का॥
बालक हुआ भी कृष्ण वज्र,
साम्राज्य पर्वत संघ का।
भूकम्प कृष्ण डरावना,
इस सार्वभौम प्रदेश का।

कृष्ण—कृष्ण के लिये तुह्मारे बेहद दिल के दिलासे के बीच में जो कि मैं नहीं आना चाहता तो भी तुह्मारी भूल सुधारने और भावी सुख बढ़ाने के लिये एक साधु की तौर पर सलाह देता हूँ कि शिशुपाल और जरासंघ जैसे इस समय के सब से बलवान राजाओं का कट्टर दुश्मन अरे! लड़ाई के कायम के अतिथि जैसे उस कृष्ण से विवाह कर तुम कहां प्रीति भोजन तथा शान्तिशयन से विवाह का मजा लूटना चाहती हो?

रुक्मिणी—तुह्मारे कथन से तो उलट मेरे गौरव में अधिकता होती है कि मैं एक ऐसे पति को पाने के लिये तप करती हूँ जिसको शिशुपाल जरासंध जैसे जगत के विख्यात महाराजा भी अपना हरीफ समझते हैं। वे लोग उससे सत्तर २ वार हारते हैं डरते हैं और भागते फिरते हैं धन्य है उस मनुष्य के जीवन को कि जिसके शत्रु महान् हों! महान् राहु किसे सताता है? प्रतापी सूर्य चन्द्र को। किन्तु क्षुद्र तारागण को नहीं। और यह विवाह कोई भोजन, शयन या विलास वैभव का स्थान नहीं। किन्तु दिव्य दाम्पत्य धर्म तथा मनुष्य जीवन का महा यज्ञ है और इसी से मैं ऐसे पति की कामना करती हूँ कि जो मुझको मीठे २ भोजन से सुख देनें की अपेक्षा जीवन के कर्तव्य कर्म में लगा भले ही भूख के दुःख सहना सिखावें। जो मुझे शयन में आलिङ्गन से आनन्द देते रहें इसकी अपेक्षा सज्जनों का रक्षण और दुष्टों के हनन के लिये रणभूमि में विजय तथा कीर्ति को ही भले आलिङ्गन देते रहें।

कृष्ण—अच्छा तब ऐसे युद्ध के देवता से विवाह कर तुम आवश्यक ब्रह्मचर्य का उत्तम आनन्द लेना चाहती हो।

रुक्मिणी—साधुमहाराज? महिलाओं की महत्वाकांक्षा का यह प्रवेश आपकी दृष्टिमर्यादा के बाहर का है।

वरवीर की पत्नी कहाने में हि स्त्री का मान है॥
नहिं तो सदा रहना कुमारी ही उसे आसान है॥

कृष्ण--लेकिन सन्तान यह स्त्री के विवाह सुख की स्वर्गीय खान उसे तुम रणमैदान में फतेहकीर्ति को ही अलिंगन करते हुए पति से [illegible] पा सकोगी?

रुक्मिणी--रणाङ्गण के स्थान में घर के कोने में बैठने वाले और युद्ध स्थान के बदले शयन स्थान में सो रहने वाले तथा तलवार बाण के स्थान में मौज मजा को मान देने वाले कायर पति से सैंकड़ो कंगाल सन्तान पाने की अपेक्षा सूर्य चन्द्र के प्रताप जैसे मेरे बहादुर भर्तार के प्रत्येक पराक्रम के समाचार को ही मैं अपना पुत्र समझूंगी और उसकी बढती हुई कर्ति को मैं अपनीं पुत्री मानूंगी।

पशु पक्षिसम जो पेट भरते हैं नहीं सन्तान वे।
पर हैं बढाते जो महत्व प्रभुत्व को सन्तान वे॥

कृष्ण—सचमुच! तुम जैसी स्त्री मुझे नहीं मिलने से ही मैने यह वेश लिया है किन्तु आज मुझे प्रतीत होता है कि--

तव सदृश पत्नी प्राप्त करना भी बडा शुभ भाग्य है।
जोगी सेमैं भोगी बनूँ ब्याहो मुझे यही प्रार्थ्य है॥

रुक्मिणी—बस बस! न सुनना चाहती हूँ;
मार्ग पकडो मान में।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहिं लजाते हो मूढ,होते,
साधु के परिधान में ॥

[दाढी खींचती है। और कृष्ण को देखकर शरमाती हुई-अरे? यह तो वेही !! फिर मैं इनकी माया में ठगी।]

कृष्ण—लो जाता हूं करना क्षमा,
यदि लगा दुःख अपमान में।
रुक्मिणी—माया तुझारी अपार,
भूल गयी नाथ ! अज्ञान में।

गायन।

आओ मेरे सौभाग्य सिन्धु के चन्द्रमा।
मेरी प्रीती कुमुदिनी के मेहमान ॥ आओ०
गंगाजल मरुमें बहा, मंगल जंगल मांहि।
मोक्ष मधुर प्रिय मिलन से, ब्रह्मानन्द रस पांहि॥
पुण्य कल्पद्रुम के समान। आओ०

[कृष्ण मूर्ति के पीछे खड़ा रहता है।

रुक्मैया--(प्रवेश कर।) फतेह ! बेड़ा पार कृष्ण के साथ जल गया गिरनार।

प्रारब्ध—(स्वगत) मेरा ज्योतिष कहता है बड़े भैंसे जैसा नकार।

रुक्मैया--बहिन ? तू अकेली यहाँ यह क्या करती है ?

रुक्मिणी--अपने इष्ट देव की भक्ति।

शिशुपाल--किन्तु स्वर्ग सदन की सुन्दरी को ऐसा जंगली जीवन नहीं सुहाता।

रुक्मिणी--जो तन्दुरस्ती, शान्ति और ईश्वरीय कान्ति प्रभु निर्मित प्राकृतिक जंगल मे मिल सकती है वह मनुष्य के बनाये हुए पत्थर के बनावटी महल में नहीं। महल में सन्ध्या के निस्तेज प्रकाश समान बनावटी जीवन का फीकापन है तो जंगल में उषा के खिलते हास्य समान स्वाभाविक सौन्दर्य का चमकीलापन है। इसी कारण से मेरे गोपाल भगवान् गोकुल बृन्दाबन के जंगल में ज्यादा रहते थे। और मैं उनके योग्य बनने के लिये यह अभ्यास करती हूं।

शिशु०—गौ जैसे पशुओं के झुंड में रहना और उसको पूजना यह तुमारी राज्य सभ्यता को नहीं शोभा देता।

रुक्मिणी—तुम जैसे असुर लोग गायों के पूजन अर्चन की महिमा क्या समझें।
दुग्धदात्री मातृ सम गायें सभी जगमात हैं।
ये ऋद्धि सिद्धि समृद्धियाँ जिनसेसभी साक्षात हैं
गोपुत्र, गोबर भी दवा, परमोपयोगी चर्म है।
श्रीकृष्ण की प्रियप्राण गायें पूजना मम धर्म है॥

इस लिये श्रीकृष्ण जो चाहते हैं, कहते हैं और उनको प्रिय है तदनुसार आचरण करके ही मैं उनकी प्रसन्नता पाना चाहती हूं। और राजरानी होने की अपेक्षा गोकुल की गोपी कहाने के लिये यह तप करती हूं।

रुक्मैया—फिर वही नाम ? वस-रुक्मिणी ? अब इस शिशुपाल महाराज से विवाह करने के बिना तेरी गति ही नहीं क्योंकि--

था वह कृष्ण ग्वाला ही; हुआ स्मृति का विषय अब वो।
गया जल वह पहाड़ के साथ--
प्रारब्ध .....गपोड़ी हो तो ऐसा हो।

रुक्मिणी—श्रीकृष्ण की शक्ति से किसी अजान को वहका जा। कृष्ण की आंखों के पलक २ में सैंकड़ों बिजली के चमत्कार हैं जिनकी ज्वाला से काल भी डर कर दूर भागता है तो फिर तुम्हारे वैर पतंग की क्या मजाल ?

शिशुपाल--ऐसा है ? तो अब देखता हूं कि वह भूत प्रेत कृष्ण क्या है करने वाला ? इस उसकी मूर्ति को तोड़ कर मैं हूं रुक्मिणी हरने वाला।

कर्मयोग—(सिद्धि के साथ प्रवेश कर।) खबरदार ?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुक्मैया--आया फिर बीच में यह कर्म चंडाल।

शिशु०—ए सिद्धि ? तू उस भक्ति को छोड़ कर इस कर्मयोग के फंदे में पड़ कर मेरा नाक काट रही है ?

राधा—(भक्ति वेश से प्रवेश कर।) नहीं नहीं। इस भक्ति ने ही स्वयं उस प्रीति की कली को योग्य भ्रमर के साथ मिला दिया है।

शिशु०—लेकिन अपने साथ ब्याही हुई को तू कैसे छोड़ सकता है ? उसका संबंध दूसरे से कैसे जोड़ सकता है ?

प्रारब्ध—(स्वगत) प्रारब्ध को करना होगा।

राधा—राधा के कहने से।

शिशु०—कहाँ है वह कपटी कृष्ण की माया बिनी राधा कि जो अपने भाई का स्वार्थ साधने के लिये हमको कलंक लगाती है ?

राधा—(प्रकट होकर।) यह रही वह स्वयं जो कृष्ण भक्तों को प्रेम लक्षणा में बान्धकर आनन्द मनाती है।

रुक्मैया—ओह ? यह कौन भक्ति ही राधा ?

प्रारब्ध—यह है सभी प्रारब्ध की बाधा।

शिशु०—आह !! सब जगह दगा। इस कालिये के कूट नीति मन्त्र की कला कीटरूप बन कर हमारे मर्मस्थलों को नोंच रही है। लेकिन वह तो गया स्वधाम में ! अब मैं देखता हूं कि इस रुक्मिणी रूप मणी को इस फणधर के पास से कौन छीन सकता है ?

रुक्मिणी—गरुडवाहन श्रीकृष्ण ही।

रुक्मैया--वह तो था न था होगया ! अब देखा जायगा।

शिशुपाल—सैनिको ? उखाड़ डालो इसमूर्ती को और ले चलो रुक्मिणी को।

रुक्मिदेव ? तुम संभालो अपने हाथ में इस सिद्धी को।

(रुक्मैया सिद्धी के पास जाता है।)

सिद्धी--(अपनी तलवार खींचकर।) देखती हूं कि कौन मेरे सामने आता है ?

रुक्मैया—चलो ! तोड़ो मूर्ती को और पकड़ो इन सबों को।

[रुक्मिणी, राधा,कर्म, सिद्धि तथाप्रारब्ध मूर्ती को घेरे खड़े हैं।]

राधा-रुक्मिणी—ताकत किसकी है कि इस हमारे देव को तोड़ेगा ?

श्रीकृष्ण मूर्ती पर हमारा प्राण ही कुरवान होगा।

शिशुपाल--आह ! क्या देखते हो ? फोड़ो फोड़ो उखाड़ो उसे।

[मूर्ति हिलती है और सैनिक डरते हैं।]

रुक्मैया—कृष्ण मरकर इस मूर्ति में भूत हुआ है क्या ?

शिशु--अरे ? कायरो जाओ। डरते हो क्या ?

प्रारब्ध--तुह्मारे पैरों में भी धरणिकम्प हुआ है क्या ? तुमही हिम्मत धर लो न ?

शिशु०--ओह ? ऐसा है तो अभी इस भूत को निकालता हूं और इन्द्रजाल को छेदता हूं। आओ, सब मेरे पीछे आओ। इन सबों को पकड़लो। फिर यह क्या कर सकता है पत्थर।

ज्योंही मूर्ति को गिराने जाता है त्यों ही कृष्ण प्रकट होता है।]

कृष्ण--(मूर्ति के अन्दर से।) मेरे वैरवायु के रजकणों ? मेरे क्रोध ज्वालाओं के तृणों ? तथा मेरे विरोधाग्नि के पर्णों ? अब संभल जाओ।

[प्रकट होता है।]

रुक्मैया—नहीं मैंने यह धारा था कि जल कर फिर प्रकट होगा।

प्रारब्ध—तू देखा कर और रोया कर किया प्रारब्ध का होगा॥

टँब्लो। ड्राँप।

दूसरा अंक समाप्त।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हे समय !

ले०—" नयन "

(१)

मेरी इस मैली चादर को, कष्टों से धुल जाने दो।
चढ़ता है जो रँग प्रेम का, तो चुपके चढ़ आने दो !

(२)

मार्ग मध्य मिल जाय हमें जो, प्रेम पुराने का साथी।
तो तुम लज्जा मत दिखलाओ, उसको हृदय लगाने दो !

(३)

रूठ गये हैं मित्र हमारे, मुझे, अपरि चित बतलावें।
समय ! विरह दुख कब तक दोगे, मुझको मित्र मनाने दो !

(४)

कड़ी धूप ये नरम करो टुक, पुन नभ में घन घिर आवें।
लाओ कहां छिपाई बंसी, नाच नाच कर गाने दो !

(५)

बिछुड़ गईं हैं मेरी सखियां, यदि आवें सुन मेरे बोल।
पीले प्रेम रंग की पीली, चूनर उन्हें उढ़ाने दो !

(६)

समय ! मुझे चुप चाप न दो कुछ, मुझको लोभ न दिखलाओ।
मुझे देश के भिखमङ्गों में, मिल कर चने चबाने दो !

—:o:o:—

कुसुमोद्यान

समाचार पत्रों की बाढ।

अमरीका में प्रति वर्ष दैनिक पत्रों की ११२५०००००००० प्रतियां प्रकाशित होती हैं। गणना करने पर पता लगा कि वहां १९१९ में २४३३ दैनिक पत्र थे जिनकी ३२७३५९३७ प्रतियां प्रकाशित होती थीं, जो कि १९१४ से १३·८ प्रति शतक अधिक थीं; ५९२ प्रति रविवार निकलने वाले पत्रों ने प्रतियों की संख्या में १४·९ की अधिकता दिखलाई। देश के समस्त छापाखानों और प्रकाशकों ने १९१९ में कुल ४५८६५६९५०९) रुपये का काम किया जिस में से समाचार पत्रों का भाग १८८१५६५४५) रुपये का हैं।

—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक विचित्र धोखा

हमारे देश की तरह अन्य देशों में भी डाक पर कर बढा दिया गया है अतः वहां भी कार्ड लिफाफे अब महिंगे मिलते हैं। पैरिस के एक आदमी को यह असह्य था। इस से बचनें के लिये उसने एक विचित्र तरकीब निकाली। टिकट लगा कर वह जवाव के लिये लिफाफे भेजा करता था। इन टिकटों पर उसने एक विशेष मसाला लगा दिया। जब यह लिफाफे लौट कर आते थे तो वह इस मसाले को डाकखाने को मोहर सहित धोकर उतार डालता था और टिकटों को पुनः काम में ले आता था। भाग्यवश डाकखाने के आदमियों ने इस धोके का पता लगा लिया और उस पर २००० फ्रांक जुर्माना हुआ। पता लगा कि उस ने दस हज़ार बार ऐसा किया था।

———

विलायत में अचार मुरब्बे घरेलू पदार्थ विद्या की पाठशाला

और पदार्थ विज्ञान

यद्यपि रसायन विद्या की शिक्षा अब हमारी कई यूनीवर्सिटियों में दी जाने लगी है तथापि उनको वह रूप नहीं दिया जाता है जिससे शिक्षित नर व नारी उन्हें अपने घरेलू जीवन में उपयुक्त कर सकें। छोटी २ कन्या पाठशालाओं में तो इनका ज्ञान ही नहीं दिया जाता और पाक विद्या के घंटे में जो शिक्षा दी जाती है वह सर्वथा अनुपयोगी सिद्ध हो रही है। इस सम्बन्ध में हम आज यह बतलाना चाहते है कि विलायत में क्या हो रहा है। दी वेल्थ आफ़ इन्डिया समाचार पत्र कहता है:-

"विलायत में बृटिश कृषी विभागने एक स्कूल विद्यार्थियों और गृहस्थी स्त्रियों के लिये खोला है जिसमें उन्हें फलों, शाक भाजियों और घरेलू पदार्थ विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। उन्हें सिखाया जाता है कि भाजियों को कैसे देर तक रख सक्ते हैं। फलों को सुरक्षित रखना, सुखाना, और मुरव्वा, मीठी चटनी इत्यादि बनाना तथा अचार चटनी, फलों के शर्बत और शराब तैय्यार करना इत्यादि बातें सिखलाई जाती हैं।

इस शिक्षा के दो विभाग हैं एक तो घर को उपयोगी दूसरा व्यवसाय के लिये घरेलू शिक्षा दो सप्ताह में दी जाती है और किन २ चीज़ों के सीखने की जरुरत है यह विद्यार्थी आपही चुन लेते हैं। इस शिक्षा और सामग्री का व्यय दो पौण्ड १० शिलिंग है ...."
हमारी समझ में यह तरीका हमारी कन्या पाठशालाओं के लिये बड़ा लाभ कारी है क्योंकि इस प्रकार उन कन्याओं को जो सीखना चाहती हैं इसकी शिक्षा कुछ नियत समय में देने से और नियत शुल्क ले लेने से सब का समय और व्यय व्यर्थ नहीं जाता और शिक्षा भी उत्तम मिल सकेगी।

———

वैज्ञानिक संसार

१. शरीर रहित जीवित हृदय।

अमरीका के न्यूयार्क नगर में फैलर इन्स्टिट्युट् एक प्रसिद्ध विज्ञान भवन है। वहां पर एक मुर्गी के बच्चे का दिल जो कि उस के शरीर से सर्वदा अलग कर लिया गया है रखा है। इस के सम्बन्ध में सब से विचित्र बात यह है कि आज ८ वर्ष बीते कि इसे शरीर में से निकाला गया था, परन्तु यह ज्यों का त्यूं फड़क रहा है अर्थात जीवित है। डाक्टर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कैरल का, जिन्होंने कि यह विचित्र निरीक्षण आरम्भ किया था, मत है कि यदि कोई अकास्मिक दुर्घटना न हो जाय और इसे ठीक २ खोराक मिलती रहे तो यह दिल सदा के लिये जीवित रह सक्ता है। मुर्गी के शरीर से जुदा होने के तीसरे वर्ष इस में आरम्भ की अपेक्षा अधिक बलवती क्रिया शक्ति पैदा हो गई। आज कल इसे ४८ घण्टे में केवल एक बार भोजन देना होता है।

———

२. बड़े २ महलों का स्थान परिवर्तन

एक बने बनाये ग्रह को एक स्थान से उठा कर दूसरे पर ले जाने में अमरीका वासियों ने विशेष निपुणता प्राप्त की है। भारतवर्ष में कलकत्ता लाहौर इत्यादि बड़े बड़े नगरों में कितने ही बड़े तङ्ग राजमार्ग और गलियां हैं। जनता को उन में से आने जाने की भीड़ के कारण बड़ा कष्ट होता है। यदि हमारी म्युन्सपिल कमेटियां इन को चौड़ा करना चाहे तो उन मकानों के मालकों से मोल लेकर गिरा देने के अतिरिक्त इन के पास और कोई उपाय नहीं। इस से मालक मकान को भी कष्ट होता है और कमेटी को भी बहुत सा धन व्यय करना पड़ता है। अमरीका में यह काम इस प्रकार नहीं किया जाता। वहां बड़ी सुगमता से मकान को किञ्चित भी हानि पहुंचे बिना एक स्थान से उठाकर दूसरे पर खड़ा कर दिया जाता है और ऐसी कम्पनी बनी हुई हैं जो कि ठेके पर इस काम को करती है। उस देश में बहुत से मकान ईटों के स्थान में सीमैंट के बने हुए हैं और अब तक प्रायः उन्हीं को उठाया जाता रहा है। परन्तु अब समाचार आया है कि अभी २ एक आठ मन्ज़ल ऊञ्चा बड़ा भारी दफतर सारा का सारा उठा कर चालीस फुट परे हटा दिया गया है। पाठकों के मन में स्वयं यह विचार आया होगा कि इस अट्टालिका को उठाते समय दफ़तर का काम बन्द करना पड़ा होगा और सब सामान निकाल कर कहीं और ले गये होंगे। परन्तु ऐसा करने के लिये और कहीं पर्य्याप्त स्थान न था। अतः सारा दफतर उसी अट्टालिका में रहा और बराबर अपना काम करता रहा। गेस, पानी, पेशाब इत्यादि की मोरियें, बिजली, भाप, बिजली द्वारा ऊपर चढ़ने वाला फर्श (elevator) सब का सम्बन्ध बराबर बना रहा और इस से भी बढ़ कर अट्टालिका के चारों ओर की सड़कें तक उठाली गयीं। इस सारे भवन को १२ इञ्च ऊञ्चा उठा कर चालीस फुट परे धकेल दिया गया।

———

३. मनुष्य शरीर के दो असमान भाग

यदि किसी खुले स्थान पर कड़ी धुन्ध में या किसी घने जङ्गल में मनुष्य को चलना पड़ जाय तो एक विचित्र घटना अनुभव में आती है जो कि मन को बड़ा खिज़ाने वाली होती है। हमें पता लगता है कि हम बड़ा यत्न करने पर भी सीधा न चलकर एक चक्कर में चलने लग पड़ते हैं। वैज्ञानकों ने इस के विषय में जो अनुसन्धान किये हैं वह बड़े विचित्र हैं। उन के विचार में मनुष्य शरीर के यदि सिर से लेकर पैरों तक बीचों बीच से दो भाग किये जावें (केवल अनुमान में) तो यह दोनों भाग माप, तोल इत्यादि में भिन्न २ होते हैं और इसी कारण से मनुष्य सीधा न चल कर चक्कर में घूमता रहता है। इस शरीर के दोनों भागों की भिन्नता का एक और प्रकार से भी तजरुबा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया गया है। एक ही स्थान पर जाने के लिये दो मार्ग थे। कुछ दूर चल कर एक पर दाईं ओर लौटना होता था और दूसरे पर बाईं ओर। यह देखा गया कि अधिकांश मनुष्य सदा दाईं ओर वाले मार्ग पर चलते यद्यपि उन्हें इस बात की ताकीद की जाती थी कि उन्होंने दूसरे मार्ग से जाना है। इस काम के लिये उन को एक विशेष मानसिक यत्न करना पड़ता था। प्रोफैसर अबडर हैल्डण ने एक और उदाहरण दिया है। उन के क्रिया भवन में ऊपर चढ़ने के लिये भवन के बीचों बीच से एक ही जैसी और बराबर बराबर ऊञ्ची दो सीड़ियां थीं। एक दाईं ओर से ऊपर चढ़ती थी और दूसरी बाईं ओर से। उन का अनुभव है कि अधिकांश विद्यार्थी सदा दाईं ओर वाली सीढ़ी से ही चढ़ते थे। पूछने पर पता लगा कि वह विद्यार्थी जो कि बायें हाथ से लिखते और अन्य काम करते हैं वह बाईं ओर की सीढियों को काम में लाते थे। विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य मनुष्यों में भी यही बात पाई गई। परन्तु उतरते समय यह बात न थी और बराबर विद्यार्थी दोनों सीढ़ियों से उतरते थे। किञ्चित इस का कारण यह हो कि चढ़ने में उतरने की अपेक्षा अधिक ज़ोर लगाना पड़ता है।

हमारी मञ्जूषा

भारत-दर्शन—लेखक श्रीयुत सुख संपत्तिराय भण्डारी प्रकाशक श्री जीतमल लूणिया, पृष्ठ संख्या ३५२ मूल्य २॥)

आज हमें एक परम उपयोगी पुस्तक की समालोचना करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भारत की साम्पत्तिक और राजनैतिक स्थिति क्या है इस पर इस पुस्तक में पूरा २ प्रकाश डाला गया है। अंग्रज़ी शासन के पहिले भारत की क्या दशा थी और आज वह किस अवस्था को प्राप्त हो चुकाहै इसका ही मर्मभेदी चित्र इस पुस्तक में खेंचा गया है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पदार्पण से पहिले हमारे उद्योग धन्धे बड़ी उन्नत अवस्थ में थे। यहां के बने सूती और ऊनी वस्त्र जगत विख्यात थे, उन की बारीकी उनकी सुन्दरता इतनी मोहिनी थी कि रुम, मिश्र, फ्रान्स, इन्गलैण्ड इत्यादि देशों के रहने वाले उन को पाने के लिये चातक की न्यायी ललायित रहते थे। बाहर के देशों में हमारा व्यापार खूब फैला हुआ था। हमारे किसान सुख चेन से अपना जीवन बिताते थे। देश में दूध और घी की नदियां बहती थीं। शरीर हृष्ट पुष्ट थे और मन सन्तुष्ट थे। परन्तु इन वणिक अंग्रेज़ों के आते ही देश के नाश का सुत्रपात आरम्भ होगया। किस प्रकार स्वार्थ से अन्धे होकर कम्पनी के कार्यकर्त्ताओं ने हमारे उद्योग धन्धों का नाश किया और हमारे किसानों और कारीगरों पर नाना प्रकार के अत्याचार किये और किस प्रकार इन्गलेंड की सरकार ने उन्हें इस दुष्ट काम में प्रोत्साहित किया, इन मर्मभेदी घटनाओं का वर्णन पुस्तक के पहिले भाग में किया गया है। भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पीछे भी हमारे सामुद्रिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यापार और धन्धों पर कुठार चलता रहा। इसी पालिसी का परिणाम है कि आज न भारत में कारीगर हैं और नही सुख सम्पन्न किसान। देश निर्धनता का केन्द्र बना हुआ है, सब देशों से अधिक खाद्य पदार्थ पैदा करते हुये भी हम भूंखे मरते हैं और तन से नंगे रहते हैं। हमारी इस दीन अवस्था के कारण क्या हैं, इनकी इस पुस्तक में बडी अच्छी विवेचना की गई है।

विषयानुकूल भारत के प्राचीन इतिहास पर और मुसलमानों के शासन पर भी आजकल के बदले हुये दृष्टि कोण के अनुसार विचार प्रकट किये गये है। यह बड़ी सुन्दरता से बतलाया गया है कि मुसलमनों का समय प्रजा और देश के लिये इतना दुखदायी और विनाश कारी कदापि नहीं था जितना पक्षपात युक्त अंग्रेज़ इतिहास लेखक दर्शाते हैं। उस समय आज कल की तरह निरन्तर प्रवाह से देश का धन बाहर नहीं जाता था, राज्य के बड़े २ पद केवल मुसलमानों के ही लिये निर्दिष्ट न थे, कला कौशल उन्नत अवस्था में थे, कारबार बढ़ा हुआ था और अन्य भी कितने ही लाभ थे जिन से हम आज कल सर्वथा वञ्चित हैं। १८५७ के गदर से लेकर अंग्रेजी शासकों की राजनीति का दिग्दर्शन करवाते हुये लेखक ने राष्ट्रीय कांग्रेस की उत्पत्ति और विकाश पर प्रकाश डाला है। पुनः वर्तमान काल की घटनाओं का वर्णन और उनके मूल कारणों पर विचार किया है। गत महा युद्ध में भारत ने किस प्रकार इन्लेंड की सहायता की, परन्तु उसके उस अद्वितीय त्याग का क्या आदर किया गया। रोलेटऐक्ट, सत्याग्रह, पंजाब में मार्शल-ला और उस समय के क्रूर अत्याचार, खिलाफत के सम्बन्ध में किये हुये प्रणभंग इत्यादि किस प्रकार हमें आज कल के असहयोग पर ले आये इन का सविस्तार वर्णन है। पुस्तक इतनी सामयिक है कि हमें सितम्बर १९२१ तक की घटनाओं तक ला पहुंचाती है।

पुस्तक में हमें एक दो बातों की कमी मालूम पड़ती है। फौज, पुलिस अंग्रेज़ी न्यायालय नमक पर कर इत्यादि आवश्यक विषयों पर बहस नहीं की गई। अगले ऐडिशन में यदि इन विषयों को भी सम्मलित किया जाय तो बड़ा अच्छा होगा। पुस्तक के आरम्भ में श्रीयुत लाजपतराय जी की लिखी हुई एक समयोचित भूमिका है।

लेखक और प्रकाशक ने ऐसी उत्तम पुस्तक की रचना कर हिन्दी भाषा जानने वालों का बड़ा उपकार किया है। पुस्तक मर्मभेदी, उपन्यास के समान रोचक, शिक्षाप्रद और विचार वर्धक है; सर्वथा उपादेय और संग्रहणीय है। हम हिन्दी भाषा भाषियों से बल पूर्वक अनुरोध करेंगे कि वह अवश्य इस की एक प्रति खरीदें।

देशबन्धु चित्तरञ्जन दास—लेखक श्री पं० सम्पूर्णानंद जी प्रकाशक श्री० जीतमल लूनिया, पृष्ट सं० ८७ मूल्य ॥)

अहमदाबाद में होने वाली कांग्रेस के प्रधान देश भक्त त्याग मूर्ति चित्तरञ्जन दास को आज कौन सा भारत वासी नहीं जानता। यह पुस्तक इन्ही भारत माता के योग्य पुत्र की छोटी सी परन्तु मनोरञ्जक और उत्साह वर्धक जीवनी है। पुस्तक की भाषा शुद्ध सरल जल की धारा के समान बिना किसी से टकराये और शोर मचाये चित्त को प्रसन्न करती हुई बहती जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बोलशेविज्म–ले० श्री० विनायक सीताराम सरवटे, प्रकाशक श्री० जीतमल लूणिया, पृष्ट १८५, मूल्य १।=)

आज बोलशेविज्म का नाम समस्त शिक्षत संसार में प्रसिद्ध है, प्रत्येक पत्र और पत्रिकाओं में दिखलाई देता है, परन्तु इस का वास्तविक स्वरूप क्या है यह बहुत कम लोग जानते हैं। इस का एक बढ़ा कारण यह भी है कि उस के विरोधियों ने, जिन की संख्या अभी-रूस को छोड़ कर सारे संसार में अधिक है, उस के विरुद्ध बड़े भ्रम मूलक विचार फैला दिये हैं। इस पुस्तक में लेखक ने बोलशेविक सम्प्रदाय का वास्तविक स्वरूप, उसके सिद्धान्त, उसका व्यावहारिक कार्य्य क्रम, उसका संगठन और उस का आदर्श बड़ी सरल रीति से वर्णन किया है। इन सब को भली प्रकार समझाने के लिये इस देश का उस से पहिले सौ वर्ष का इतिहास भी संक्षेप से दिया है, जिस के पाठ से ज़ारशाही और उस के निशस्त्र, आधीन भोली भाली प्रजा पर किये गये अत्याचारों, प्रजा के इनको रोकने के प्रयन्त, अनार्किज्म, सोशियलिज्म इत्यादि विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। अन्त में लेखक ने भारत में बोलशेविज्म के आने की सम्भावना पर योग्यता से विवेचना की है। पुस्तक के आरम्भ में श्री पं० भगवान दास जी की लिखी हुई योग्यता पूर्ण, समयानुकूल, सर्वथा विचारणीय, भूमिका है जिस में कि उन्होंने संसार अशान्ति को शान्त करने के उपाय बतलाये हैं।

पुस्तक बड़े काम की है। बोलशेविज़म एक विचार प्रवाह है, तत्व मीमांसा है। रूस की राज्य क्रान्ति और समय की अराजकता ने इसे अपने विचारों को व्यवहार सिद्ध करने का अवसर प्रदान किया है और यह अपने सिद्धान्तों को कार्य्यरूप में ला रही है। बस यही बोलशेविज़म है। इस पर जो क्रूरता, अत्याचार, अराजकता, समाज घातक इत्यादि आक्षेप किये जाते हैं वह सर्वथा निर्मूल और पक्षपात पर आश्रित हैं। इस समप्रदाय से भिन्न विचार रखना एक और बात है।

पुस्तक सर्वथा पढ़ने और संग्रह करने योग्य है।

ऊपर की तीनों पुस्तकें हिन्दी साहित्य मन्दिर, इन्दौर से मिल सक्ती हैं।

वक्तृत्व-कला–लेखक कृष्ण गोपाल माथुर, प्रकाशक श्री० नर्मदा प्रसाद मिश्र बी० ए० दीक्षितपुरा, जबलपुर, पृष्ट २४५ मूल्य १।), प्रकाशक से प्राप्य।

आज कल हमारे देश में व्याख्यानों का बड़ा ज़ोर है। जहां देखो वहां व्याख्यान हो रहे हैं और जो देखो वह व्याख्यान देने के लिये तय्यार है। इन में से अधिकांश तो सरकार की उचित या अनुचित निन्दा और जनता के मन बहलाव के लिये ही दिये जाते हैं। परन्तु यह वास्तवक में व्याख्यान नहीं कहला सक्ते। व्याख्यान देना भी एक कला है जो कि बिना परिश्रम और योग्यता के प्राप्त नहीं होती। यदि छोटी अवस्था से ही इसका अभ्यास किया जाय तभी इस पर पार पा सक्ता है। प्रस्तुत पुस्तक में इसी कला प्राप्ति के साधनों पर नियम पूर्वक विवेचना की गई है। वक्तृत्व कला का संक्षिप्त इतिहास देने के पीछे, सहृदयता, बुद्धि, तारतम्य, ज्ञान, कल्पना, शक्ति, मनोविज्ञान, निर्भयता, प्रेम इत्यादि जिन जिन गुणों का वक्ता में होना आवश्यक है उन का बड़ा उत्तम उल्लेख है। फिर यह बताया गया है कि इस के लिये किस प्रकार अभ्यास करना चाहिये। देश, काल और पात्र को ध्यान में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रखते हुये ही व्याख्यान का प्रसंग चुनना चाहिये। व्याख्यान देने की शैली, इसकी विविध रीतियां इत्यादि व्याख्यान सम्बन्धी सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक लाभदायक है। जिन को व्याख्यान देने की ओर कुछ भी रुची हो उन्हें इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि यह अपने विषय की, हिन्दी में, एक ही पुस्तक है।

उपाधि की व्याधि—ले० श्री देवी प्रसाद गुप्त प्रकाशक श्री० नर्मदा प्रसाद मिश्र, दीक्षित पुरा, जबलपुर, मूल्य ≠), प्रकाशक से प्राप्य।

यह एक छोटा सा स्टेज पर खेलने योग्य प्रहसन है। एक मारवाड़ी सेठ किस प्रकार राय साहबी के लिये व्यग्र थे और उस की प्राप्ति के लिये किस प्रकार अंगरेज़ अफसरों की खुशामद करते और उन से तिरस्कृत होते रहे इसी का इस में रोचक खाका खेंचा गया है।

सदाचार-दर्पण—लेखक पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी. ए. पृष्ठ संख्या ३४५ मूल्य सादी जिल्द १॥) और पक्की जिल्द २) पं० रामप्रसाद मिश्र बी. ए. दीक्षितपुरा जबलपुर से मिल सक्ती है।

पुस्तक सर्वथा मनोरञ्जक और उपयोगी है। भाषा सरल, सरस और मधुर है लेखन शैली चित्ता कर्षक है। मनुष्य समाज को सदाचार की कितनी आवश्यकता है यह निर्विवाद है। यह किस प्रकार हमारे जीवन का अंग बन सक्ता है इसी का तरीका इस पुस्तक में बतलाया गया है। जब तक मनुष्य के मन पर बचपन से ही सदाचार के संस्कार न डाले जायें, यह कार्य नहीं हो सक्ता। छोटे से पेड़ की डाली को हम जिस ओर चाहें झुका सकते हैं और उसी ओर रहने के लिये सिधा सकते हैं, परन्तु पेड़ के बड़ा होने पर यह असम्भव है। यही अवस्था मनुष्य के मन की है। इस पुस्तक में अनुभवी लेखक ने बड़ी योग्यता से बालकों के हृदय में सुसंस्कार डालने के तरीके बतलाये हैं। हमें अपने लिये क्या करना चाहिये, अपने श्रेष्ठों, बराबर वालों और छोटों के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है, इन विषयों पर बालकों के लिये अनेक उपदेश हैं। परन्तु उपदेशों को कथाओं से इस प्रकार मिला दिया गया है कि कथा के लालच में बालक उन्हें बड़े चाव से पढ़लें। यह पुस्तक प्रत्येक लड़कों व लड़कियों की पाठशाला में पढ़ाई जाने योग्य है। अध्यापक और अध्यापकाओं के विशेष काम की है। सर्व साधारण भी इसके पाठ से लाभ तथा आनन्द उठा सक्ते हैं।

अनारकली—कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक गल्प का अनुवाद है अनुवादक श्री उमरावसिंह जी कारुरिपन बी. ए. प्रकाशक चौधरी शिवनाथसिंह ज्ञान प्रकाश मन्दिर, मेरठ पृष्ठ ३२ मूल्य ≠)॥, प्रकाशक से मिल सक्ती है।

कविवर रवीन्द्रनाथ की मनुष्य के मनोगत भावों के निरीक्षण और उनको अंकित करने की शक्ति जगत विख्यात है। इस पुस्तक को पढ कर जहांगीर तथा नादरा (उपनाम अनारकली) के प्रेम का पुराना चित्र आंखों के सामने खिच जाता है। अनुवादक ने इसका हिन्दी में उल्था कर हिन्दी प्रेमियों के लिये कवि सम्राट की गल्प को पढ़ने तथा उससे आनन्द उठाने का सुअवसर दिया है। अनुवाद की भाषा स्वच्छ और रसमयी है। पुस्तक की छपाई सुन्दर और काग़ज़ बढिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

कई वर्षों के पश्चात् लाहौर वासियों ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन को फिर बुलाने का साहस किया है। इससे पहिली वार यह साहस दुस्साहस सिद्ध हो चुका है। हम आशा करते हैं कि, यद्यपि इस वार भी परिस्थिति अनुकूल नहीं हैं, और हम नहीं कह सकते, जिस प्रकार घटना चक्र घूम रहा है, सम्मेलन के आने तक प्रांत के कितने हिन्दी हितैषी सम्मेलन के कार्य्य में भाग ले सकेंगे, किन्तु तो भी इस वार सम्मेलन को सफल करने में कोई वात उठा न रखी जायगी। यह पञ्जाव के लिये बड़े दुर्भाग्य की बात है, कि जिस प्रकार उस ने कर्म्मण्यता तथा क्षात्र शक्ति के लिये कीर्ति पाई है, विचार शक्ति के अभाव के लिये वह वैसा ही बदनाम है। जिस पञ्जाब को ऋषि दयानन्द की प्रतिमा के पारस का स्पर्श मिल चुका है, जो गुरुकुल जैसी संस्था बनाकर संसार की गति के विरुद्ध क्रियात्मक युद्ध कर सका है उस पञ्जाब में विचारों का दुर्भिक्ष है यह नहीं कहा जा सकता। प्रश्न यह है, कि फिर क्या कारण है, कि पञ्जाब न किसी विज्ञानाचार्य्य को उत्पन्न कर सका और न जितने विचार उसने वर्तमान लहर को दिये हैं, उनका श्रेय पा सका? इस का एक ही कारण है। पञ्जाब के पास विचार भी हैं, कर्म्म भी है, किन्तु भाषा नहीं, और भाषा विचारों के विकास का जितना साधन बन सकती है, वह विचारों का विकास भी नहीं। इसका यही कारण है कि पञ्जाब ने किसी भी साहित्य को नहीं अपनाया। उस के विचारों का स्रोत है संस्कृत, और प्रकाश का साधन उर्दू, फिर संस्कृत तथा हिन्दी दोनों ही की उस ने उपेक्षा की है, इस से अधिक अस्वाभाविक अवस्था क्या हो सकती है। हम आशा करते हैं कि प्रत्येक पञ्जाव हितैषी का ध्यान इस ओर आकर्षित होगा, सच तो यह है कि जब तक कोई संयमी महा पुरुष संस्कृत तथा हिन्दी के प्रचार का व्रत धारण न करेगा तब तक, साहित्य के उत्पन्न करने की सब से बड़ी शक्ति धार्मिक जोश के रहते हुए भी, पञ्जाब साहित्य शून्य रहेगा। आशा है कि इस वार का सम्मेलन किसी पञ्जाबी आत्मा की छिपी शक्तियों को चोट लगा जायगा। पञ्जाब एक बंकिम की प्रतीक्षा में है।

लाहौर आर्य्य समाज का उत्सव

आर्य्य समाज पञ्जाब की सब से उन्नत शक्ति है। इस लिये आर्य्य समाज के विचारों को हम पञ्जाव के विचार कह सकते हैं। पञ्जाब में आर्य्य समाज के उत्कृष्टतम विचारों के प्रकाश का सब से बड़ा मेला लाहौर समाज का उत्सव है। अन्य वर्षों की तरह इस वर्ष भी यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। इस वर्ष उत्सव में नगर कीर्तन के स्थान पर कुछ निश्चित स्थानों में बैठ कर सङ्कीर्तन किया गया, दूसरी विचित्रता इस वर्ष यह थी। उत्सव शनिवार तथा रविवार के दिन गुरु दत्त भवन के मैदान में मनाया गया। दोनों नवीनताओं का प्रभाव उत्सव के लिये कुछ हानिकारक सिद्ध नहीं हुआ। इस वर्ष चन्दा भी ३४ सहस्र हुआ जो पिछले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष की अपेक्षा डेढ़ गुने के लग भग था। हम उत्सव की सफलता के लिये कार्य्य कर्त्ताओं को बधाई देते हैं। यहां हम कार्य्य कर्त्ताओं के सामने एक प्रस्ताव रख देना भी उचित समझते हैं। लाहौर आर्य्य समाज का उत्सव केवल एक स्थानीय उत्सव नहीं है, इस लिये क्या ही अच्छा हो यदि उत्सव पर आर्य्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्रि महोदय वा अन्य कोई सज्जन सभा के प्रतिनिधि रूप से सभा के वर्ष भर के कार्य्य का विवरण सुना दिया करें, जिस से अपनी वर्ष भर की सफलता देख कर जनता का उत्साह बढ़े और साथ ही सभा के सब विभागों की आवश्यकतायें सामने आ जावें।

———

आर्य्य समाज और राजनीति

पिछले दिनों, सहयोगी, बन्दे मातरम् में लाला लाजपतराय जी की लेखनी से आर्य्य समाज के विषय में एक लेख माला प्रकाशित हुई है। इस में लाला जी ने आर्य्य समाज को राजनैतिक आन्दोलन में नेता न होने के लिये मीठी भत्स्ना के शब्द कहे हैं। हमें खेद है कि इस में लाला जी ने पूरी न्याय परायणता से कार्य्य नहीं लिया। इन लेखों में, लाला जी के लक्ष्य, अपने आप को आर्य्य समाजी कहने वाले वे लोग हैं, जो कालिज पार्टी के नाम से विख्यात हैं। किन्तु वस्तुतः आर्य्य समाज अपनी वेदी से भी इस विषय पर उचित प्रकाश डाल रहा है और व्यक्ति रूपेण भी उसके सभासद् आन्दोलन में अपनी संख्या के अनुपात से किसी समुदाय से कम भाग नहीं ले रहे हैं। कमी है तो केवल इस बात की कि जिस प्रकार अन्य समुदायों के सिख लीग मुस्लिम लीग आदि छोटे २ सामुदायिक संघ हैं, इस प्रकार, राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेने वाले आर्य्य पुरुषों की कोई पृथक् संख्या नहीं। इस लिये उन की पृथक् स्थिति मोटे अक्षरों में नज़र नहीं आती। यदि इसी प्रकार आवश्यकता अनुभव होती रही तो यह कमी भी शीघ्र पूरी हो जायगी।

———

कुम्भ कर्ण जाग उठा।

असहयोग आन्दोलन जब सागर पर पुल बांध कर पारभी हो आया, तब तक "धर पकड़ का" कुम्भकर्ण आनन्द से सोता रहा अन्त को उसे जगाना ही पड़ा, और वह जागा; वह जागा भी कुम्भकर्णी शान से। बस अब यदि असहयोगी अपने शान्तिव्रत पर डटे रहे तो लङ्का विजय में सन्देह नहीं। कुम्भकर्ण का मुख खुला हुआ है और अभी तक उसमें सबसे अधिक संख्या बङ्गाल की और फिर पञ्जाब की प्रविष्ट हो चुकी है, किन्तु यह चने लोहे से भी कठिन हैं कुम्भकर्ण सावधान! दांत संभले रहें! असहयोगियों के निवेश में से भी आवाज़ आरही है।

यदर्थं क्षत्रिया सूते कालः सोऽयमुपागतः

यह कौन आदमी है?

मेजर फैरर बड़े दिल चले आदमी हैं। क्यों नहीं, वह लाहौर जिले के भाग्य विधाता हैं। उनके हर काम के करने का ढङ्ग निराला है लाहौर में धर पकड़ का हल्ला बोलने के लिये सबसे पहिले वही चुने गए हैं, या उन्हों ने स्वयं अपने आप को चुना है, सो ठीक २ नहीं कहा जा सकता। खैर जो भी हो ४ नवम्बर के दोपहर को दो बजे के लग भग वह दल बल सहित प्रान्तीय महा सभा के कार्य्यालय में जा धमके। इससे पहिले उनको सूचना दी जा चुकी थी कि सभा की कार्य्यवाही समाप्त होने में अब थोड़ा ही समय है यदि कुछ धर पकड़ करनी हो तो आजाइये। फैरर बहादुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कब चूकने वाले थे, लगे दम वह भी पहुंचे। आते ही आपने फ़र्माया कि मैंने आपका प्रवेश्य पत्र देख लिया है, उस पर भी मेरा यही विचार है कि यह सभा नियम विरुद्ध है। लाला जी ने स्वाभाविक गौरव के साथ उत्तर दिया कि मैं इस आज्ञा के पालन से इनकार करता हूं। इस पर मेजर फ़रार बोले 'यह कौन आदमी है'? जिस व्यक्ति की ख्याति सागर लांघ चुकी है, जो आज पञ्जाब की जनता के हृदयों में आसन पाए हुए हैं, उसे मेजर फैरर पूछते हैं, यह कौन आदमी है, यह लज्जा स्मेरमुखी, प्रणय कलह, सुलभ अनभिज्ञता, फैरर बहादुर के दिल चलेपन के योग्य ही थी पर इसकी पर्वाह न करके लाला जी ने उन पर घडों पानी उलट दिया। अब वह समय आगया है जिसकी इतने दिनों से प्रतीक्षा थी। भारत का इतिहास यदि अब तक दिनों में बदलता था तो अब घण्टों में बदल रहा है। जाइये लाला जी, और विजयी होकर आइये। आपकी हथकड़ी बेड़ियों की झनझनाहट स्वाधीनता के पैरों के नूपुरोंकी झनकार होगी। आज २ कोटि पञ्जाबी सन्तान आशा भरे कानों से उस मङ्गलमय स्वर के सुनने के लिये खड़ी है और उनके हृदय से एक ही ध्वनि निकलती है "बोलो लाला जी सरीखे देश भक्तों की जै"।

लालाजी, श्रीयुत सन्तानम्, डा० गोपीचन्द तथा मलिक लालख़ां के साथ जेल गए हैं, पर इधर क्या हाल है? क्या आज भी मार्शलला की सी मुर्दनी छाई हुई है? बिलकुल नहीं प्रत्येक मनुष्य की नसों में जोश है, चेहरे पर दमक है, और दिलों में उमङ्गे हैं। कोई कह रहा है, देखें मेरी बारी कब आती है, कोई अपने मित्रको समझा रहा है कि पीछे अमुक काम अवश्य कर देना। मित्र भी हंस के उत्तर देता है हां तब तक अन्दर न हुआ तो। माताएं लड़कों से लड़ रही हैं कि नट खट पन मत करना, और लड़के उन्हें वीर माताओं की कहानियां सुना कर उत्साहित कर रहे हैं। उधर कुम्भकर्ण भी अपना मुंह फैलाए आरहा है। बस अब मुठ भेड़ होगी। जिसमें इस पार वा उस पार।

देवियो सावधान।

देखना कहीं आंसू मत टपकाना, तुम्हारे बन्धु एक मङ्गमय यात्रा पर चले हैं। इस युद्ध में अपना रक्त गिरता है और शत्रु का धैर्य्य। फल है स्वाधीनता। जो तुम्हारी बहिनों पर किये गए अत्याचारों को असम्भव बना देगी। उठो हृदय कड़ा करो और उत्साह देकर अपने बन्धुओं को युद्ध के लिये भेजो।

असहयोग के सैनिको।

सुनो कांग्रेस के भावी सभापति महारथी देशबन्धु दास क्या कहते हैं? "मेरा आदिम और अन्तिम आदेश यही है, निरुपद्रव असहयोग का आदर्श अपने सामने से कभी न हटने दो निस्सन्देह यह बीहड़ राह है। निस्सन्देह मैं जानता हूं कि समय समय पर विक्षोभ इतना प्रबल होता है कि मन वचन और कर्म्म में निरुपद्रव होना अति कठिन होजाता है। परन्तु इस आन्दोलन की सफलता इसी पर अब लम्बित है और हर एक कार्य्य कर्त्ता को अपने सब विक्षोभ सहन करने के लिये कड़ा बन जाना चाहिये। हमें दूसरों के कन्धों पर दोष डालने की आदत सी होगई है। जब कहीं दङ्गा हो जाता है तो हम कह उठते हैं कि लोगों ने गुण्डों को भड़का दिया था। हमें भूलना नहीं चाहिये कि गुण्डे भी हमारे देशवासी भाई हैं। हमें भूलना न चाहिये कि हम असहयोगी लोग देश के प्रति निधि होने का दावा करते हैं। हमें समझ रखना चाहिये कि जहां तक हम लोक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समूह को चाहें वह गुण्डे ही क्यों न हों, वश में नहीं रख सकते वहां तक असहयोग आन्दोलन निष्फल हुआ है। उत्तर दायिता हमारी है। यह कहानी कि दुष्ट लोगों ने जनता को शांन्ति भङ्ग करने के लिये भड़का दिया था हमारे मुंहसे शोभा नहीं पाती। क्या आप नहीं समझते कि हमारी सफलता इसी में है कि कोई आदमी, चाहे दुर्जन हो चाहे सज्जन, जनता को वा हमारे देशवासियों के किसी भागको भी उपद्रव वा रुधिर पात के लिये भड़का न सके। यदि हम लोक समूह को अपने वश में नहीं रख सकते तो हमें सफलता कैसे होगी। मैं उत्साह नहीं छोड़ बैठा, न तुम्हें ही उत्साह हीन करना चाहता हूं। जगदीश्वर करे कि हममें इस युद्धको शान्ति पूर्व्वक विजय करने की शक्ति हो, और हम निरुपद्रव असहयोग के आदर्श को कभी आंखों से ओझल न होने दें।

——

बम्बई का दंगा

जिस वेग से घटनायें बदल रही हैं उस से शायद इस अङ्क के पाठकों के हाथ में पहुंचने तक बम्बई के दंगे सी कई ऐतिहासिक घटना हो जाय किन्तु कोई देश हितैषी पुरुष इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इन दङ्गों से स्वाधीनता के आन्दोलन की गति को भारी धक्का पहुंचता है। दंगे को लक्ष्य में रख कर ही देश बन्धु दास ने निरूपद्रवता पर इतना बल दिया है और सच मुच इस पर जितना बल दिया जाय थोड़ा है। यद्यपि सरकार ने जो व्यवहार पीछे से किया है वह कम अनुचित नहीं, किन्तु इस से हमें क्या सन्तोष होसकता है, प्रतिपक्षी के पक्ष के भी अनुचित होने से हम पाप से छूट नहीं सकते।

विशेष कर पारसी बहिनों के साथ जो दुर्व्यवहार हुआ है उसे पढ़ कर किसी भी भारतवासी का सिर लज्जा और आत्म ग्लानि से नीचे हुए बिना नहीं रह सकता। विक्षोभ आने पर लोगों का भड़क उठना समझ में आ सकता है, आपस में सिर फोड़ना भी समझ में आ सकता है, यद्यपि इन से बढ़ कर हमारे आन्दोलन के लिये विघातक कोई बात नहीं हो सकती। ख़ैर जो भी हो, यह सब कुछ समझ में आ सकता है, किन्तु हम लोगों का अपनी बहिनों पर हाथ उठाना नहीं समझ में आ सकता। यह तो वह नीच काम है जो युद्ध काल में भी उतना ही नीच और घृणित है जितना शान्ति काल में। यह तो उन मौलिक सिद्धान्तों पर ही घोर कुठारा घात है जिन्हें सामने रख कर हम इस युद्ध में प्रवृत्त हुए हैं। हमारा युद्ध इस समय पश्चिम की पाशविक शक्तियों के साथ है किन्तु यदि हम ने भी इन पशुवृत्तियों को न दबाया तो हमारा युद्ध धर्म्म युद्ध न हो कर निरास्वार्थ युद्ध रह जायगा, जिस में हम परमात्मा की सहायता बिलकुल भी नहीं मांग सकते। हां एक बात हमें अवश्य टूटा फूटा सन्तोष दे सकती है, वह यह कि हम ने शान्ति शीघ्र स्थापन करली और शान्ति स्थापन होने के मुख्य कारण भी हम ही लोग थे। महात्मा गांधी जी के शब्दों में गवर्नमेण्ट ने यही बड़ी सज्जनता की कि शान्ति स्थापन कर लेने वालों के कार्य्य में विघ्न उपस्थित नहीं किया। निस्सन्देह शान्ति स्थापन के कार्य्य में बहुत से सज्जनों ने बड़ी सराहनीय वीरता दिखाई है। श्री नेकी राम शर्म्मा ने अपनी जान जोखिम में डाल कर आग में जलते लोगों की और माल की रक्षा की। श्रीमती सरोजिनी नाइडू से फ़ौज तक ने कई बार मदद ली और उन्हों ने बिना गोली चलने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के ही लोगों को दूर कर दिया। मियां छोटानी तथा अन्य कई एक सहयोगी असहयोगी सभी प्रकार के सज्जनों ने इस में उल्लेख योग्य भाग लिया।

महात्मा गांधी जी।

बम्बई के दङ्गों को देख कर महात्मा गान्धी जी ने अहिंसा भङ्ग का आन्दोलन थोड़ी देर के लिये रोक लिया है। इस समय उन्हों ने जो सत्य वीरता दिखाई है उसे देख कर किस भारतवासी का सिर अभिमान से ऊंचा न हो जायगा। धन्य है भारत माता जिस की गोद में ऐसे देवता भी निवास करते हैं। यद्यपि अपने किये का प्रायश्चित करने के लिये थोड़ी देर के लिये रुकना उचित ही था पर हम आशा करते हैं कि यह अन्तर बहुत लम्बा न होगा। शीघ्र ही महात्मा जी फिर उसी वेग से कार्य्य आरम्भ कर देंगे जैसा कि वह पहिले करना चाहते थे हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह बम्बई की जनता को शीघ्र ही ऐसी शक्ति दे कि महात्मा जी उन पर विश्वास करके दूने बल से अपना निरुपद्रव आक्रमण आरम्भ कर सकें। नहीं हम यह उचित समझते हैं कि ३१ दिसम्बर को स्वराज्य की हद बना दी जाय। जब तक एक भी भारतीय हृदय में आत्म सम्मान की एक भी बूंद शेष है तब तक यह स्वाधीनता का पवित्र युद्ध बन्द नहीं हो सकता—

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्।

खालसों का धावा।

यह दिन भी अवश्य आने को था। जो वीर शक्ति, गुरु गोबिन्द सिंह से महावीर की दिक्षा से उत्पन्न हुई थी, वह इतने दिनों तक रुपये के इन्द्रजाल में बंधी रही पर यह अवस्था कब तक रह सकती थी, जिस पवित्र लहर ने मुर्दा आत्माओं में नये जीवन का सञ्चार कर दिया वह इन वीर आत्माओं तक पहुंचे बिना कब रह सकती थी। अन्त को खालसों की सेना भी जागी पहिले उनसे दो एक चूक हुई पर चूक से परे इस संसार में है ही कौन। अन्त को वह सच्चे मार्ग पर चल पड़े। इस समय सिख लोग निरुपद्रव युद्ध में भी वही धीरता दिखा रहे हैं, वही कीर्ति लाभ कर रहे हैं, जो उन्होंने रणक्षेत्र में तलवार के बल से प्राप्त की थी उस दिन सरदार खड्गसिंह जी ने अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर को जो उत्तर दिया वह भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में सदा अमिट अक्षरों में लिखा रहेगा। सर्दार महताब सिंह से भी डिप्टी कमिश्नर ने मिलकर बात करने की प्रार्थना की, परन्तु उस बीर ने गौरव के साथ उत्तर दिया "जब तक सब सिख भाई जेल से बाहिर नहीं आ जाते तब तक हम से किसी प्रकार की बात चीत नहीं हो सकती"। हमें निश्चय है कि खालसों का यह धावा खाली न जायगा।

विडाल पाद जान्सन

विडाल पाद जान्सन आए और चले गए। जाते समय उन्होंने महात्मा गांधी को जो पत्र भेजा है और महात्मा गांधी ने उस पर जो छोटी सी टिप्पणी की है वह दोनो विलक्षण हैं। हम पत्र का अनुवाद यहां पर देते हैं।

प्रिय गांधी महोदय—आप के देश से विदाई लेते समय मेरा मन बार २ उस विलक्षण कार्य्य पर जा अटकता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो आप मद्यनिवारण के लिये कर के भारत का और अतएव सारे संसार का उपकार कर रहे हैं। उद्देश्य साधन और प्रेरक भाव सब को छोड़ कर यह सीधी मोटी सी बात आंखों के सामने खिंची नज़र आती है कि आप ने दो वर्षों में भारत में मद्य निवारण के लिये वह कर दिखाया है जो कोई आदमी संसार के इतिहास में इतने समय में नहीं कर सका।

मुझे बड़ा खेद यही है कि मैं भारत में स्वयं मिल कर आप के सामने अपना भाव प्रकाश न कर सका।

कृपा कर अपने भाई और अपनी साध्वी धर्म्म पत्नी को जिनसे मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सका मेरी ओर से स्नेह संवाद दे दीजिये।

आप का
डब्ल्यू० ई० जौन्सन

इस पर महात्मा गांधी लिखते हैं कि मैंने यह पत्र बिना सङ्कोच अनुभव किये पाठकों के सामने रख दिया है क्योंकि जिस काम को डा० जानसन ठीक अर्थों में विलक्षण कहते हैं उसके लिये मैं अपने आपको किसी यश का भागी नहीं समझता, यश के भागी वह अगणित अज्ञातनामा व्यक्ति हैं जिन्हों ने इसे धार्मिक कार्य्य समझ कर एक दम इसका भार अपने पर ले लिया।

शस्त्रक्षय सम्मेलन।

बूढ़े बाबा मनु कह गए हैं "धर्म्म एव हतो हन्ति धर्म्मो रक्षति रक्षिता"। बात बहुत पुरानी है पर इसकी सारगर्भितता बिलकुल कम नहीं होती। यौरोपियन जातियें संसार भर में अपने अधिकार के क्षेत्र-को बढ़ाने में लगी रही। इसी का फल स्वरूप वह महा-युद्ध था जिसके आघात से अभी संसार उठ नहीं पाया है। पर इस पारवारिक द्वेष की कीमत योरोप को बहुत भारी देनी पड़ी है। वह गुर्राना युद्ध के साथ समाप्त नहीं हुआ। हर देश दूसरे देशके गुर्राने से डर कर और अधिक युद्ध के सामान की तय्यारियों में लगा।कल क्या हुआ, करके बोझ के मारे प्रत्येक देशकी प्रजा कराह उठी हाहाकार मच गया, बोलशेविज़म का भूत मुंह फाड़ कर योरोप को डराने लगा लाखों बेकार घूम कर उसके शिकार बनने लगे अन्त को योरोप के राष्ट्रधरों को हिलना ही पड़ा इस युद्ध सामग्री के लिये प्रजाका कितना धन व्यय होने लगा इसका अन्दाज़ा इसी से लगा सकते हैं कि इस प्रस्ता-वानुसार इङ्गलैण्ड को ४८०००००० अढ़तालीस करोड़ के नये जहाज़ों का ठेका उड़ाना पड़ेगा अन्त को योरोपियन राष्ट्रधरों ने योरोपियन ढङ्गका ही इलाज निकाला भी यह यहो कि अबसे योरोपियन देशो को और युद्ध सामग्री न बढ़ानी चाहिये युद्ध का मूल कारण लोभ स्वार्थ और हिंसावृत्रिकम की जाय यह भला योरोपियन राष्ट्रधरों को क्यों सूझने लगा। फल यहीं होगा कि किसी न किसी बहाने सब सामान उसी प्रकार बढ़ते जायेंगे, एक ओर तो संसार के यह भाग्य विधाता अमेरिका के वाशिंग्टन नगर में संसार की सैन्य सामग्री कम करने की आयोजना में लगे हुए हैं दूसरी ओर और ही कुछ और सुनाई देता है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री उपयोगी स्त्रियों द्वारालिखित लेखों का संग्रह।

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१—स्त्री जगत्—	४३८
२—बच्चों का मौज़ा (ले०श्रीमती ओ३म्वती देवी)	४३९
३—स्वादिष्ट भोजन	४४१
४—गृह प्रबन्ध	४४२
५—कृष्ण कुमारी ले०श्रीमती केशर कुंवरी देवी	४४३
६—गृहस्थ स्त्रियों के लिये महाराज मनु का उपदेश	४४४
७—धात्री शिक्षा	४४८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री जगत ।

धन्य ! हे वीर महिला

यदि हम कहें, कि भारत वर्ष के इतिहास में, भारतीय जनता की मान रक्षा, भारतीय स्त्रियां ही करती चली आयीं हैं, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी । पति परायणा सीता ने, अग्नि परीक्षा देकर, राम राज्य की मान रक्षा की; महारानी पद्मनी ने, चिता की लाटों से आलिंगन करके, राजपूताने के उज्वल मुख को कलंकित न होने दिया; आज श्रीमती धर्म पत्नी दास ने शासकों की नीति के खड्ग के कठोर आघात को हंसते २ सहकर, सारे भारत वर्ष के नाम की लाज रख ली।

जिस समय मर्यादा पुरुषोत्तम राम को देश निर्वासन हुआ था, तो स्त्री भूषण सती सीता, वनगमन का अनुरोध करती हुई कहने लगी थीं "भगवन्, वन मार्ग के कठिन शूलों को चुगती हुई, मैं आपके आगे चलूंगी" । आज श्रीमती धर्मपत्नी दास, यथार्थ में सीता बन कर, अपने पति के आगे चलती हुई, स्वाधीनता के दुर्गम मग में से, क्रूर कांटों को अपने कोमल कर कमलों से उखाड़ कर रसातल को फेंक रहीं हैं।

धन्य है वह देवि, जिसने, अपने देश और जाति की स्वाधीनता के लिये, अपनी वैयक्तिक स्वाधीनता को त्याग दिया है; जो कि, वीर भारतीय महिलाओं के सदृश, अपने स्वत्वों की रक्षा करने के लिये, अपने देश के भाग्याकाश में स्वाधीनता के सूर्य को प्रगटाने के लिये राष्ट्रीय रण क्षेत्र में सत्य रूपी खड्ग धारण किये, दिव्य रूप से शांतिमय युद्ध कर रही है। धन्य है वह माता, जिसने अपने प्राण प्यारे पुत्र और पुत्री को, स्वाधीनता के यज्ञ में, सत्य की वेदी पर, आहूति स्वरूप देदिया । धन्य है वह अतुल बल धारिणी भारतमाता, जिस की अक्षय गोद में ऐसी देवी ने जन्म लिया।

हम जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह प्रत्येक भारतीय स्त्री को, ऐसा आत्मिक-बल स्वार्थ त्याग, और देशभक्ति, प्रदान करें कि वे अपना नाम संसार के इतिहास में अमिट कर जावें। उनके अलौकि वीरता युक्त कर्म, समय पट पर स्वर्णाक्षरों में सदा अंकित रहें । इन पंक्तियों के लिखने के पीछे पता लगा कि शासक वर्ग ने श्रीमति दास पत्नी और पुत्र दोनों को छोड़ दिया है।

पंजाब की स्त्रियों को
लाला जी का आदेश

अपनी गिरफ्तारी के दिन, पञ्जाब केसरी श्रीमान् लाला लाजपतराय जी ने, अपने देश बन्धुओं के नाम एक विस्तृत लेख निकाला था। उस में स्त्रियों के बारे में लाला जी लिखते हैं--

पञ्जाब की देवियो—मैं यह जानता हूं कि आप में, मातृभूमि के प्रति स्नेह के भाव, और देश सेवा की प्रबल इच्छा है, और उस देश सेवा में आप अपनी वैयक्तिक स्वाधीनता खो देने के लिये भी तैयार हैं। मुझ को यह भी मालूम है कि आप में से बहुत सी देवियां जेल जाने के लिये तैयार हैं। परन्तु भारतीय जेल इस पृथिवी पर नरक के समान हैं; वहां पर दानविक नीचता का राज्य है। इस लिये मैं आप से प्रार्थना करता हूं, कि आप जेल में जाने का विचार त्याग दें और अपनी सारी शक्तियां स्वदेशी के प्रचार और स्वयं स्वदेशी वस्त्र धारण करने में लगा दें। आप एक काम और कर सकती हैं। आप उन व्यक्तियों के असहाय बालकों की रक्षा करें जो देश हित के लिये जेल में चले गये हैं।

प्रत्येक भारतीय स्त्री को लाला जी की आज्ञा को अक्षरशः पालन करना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

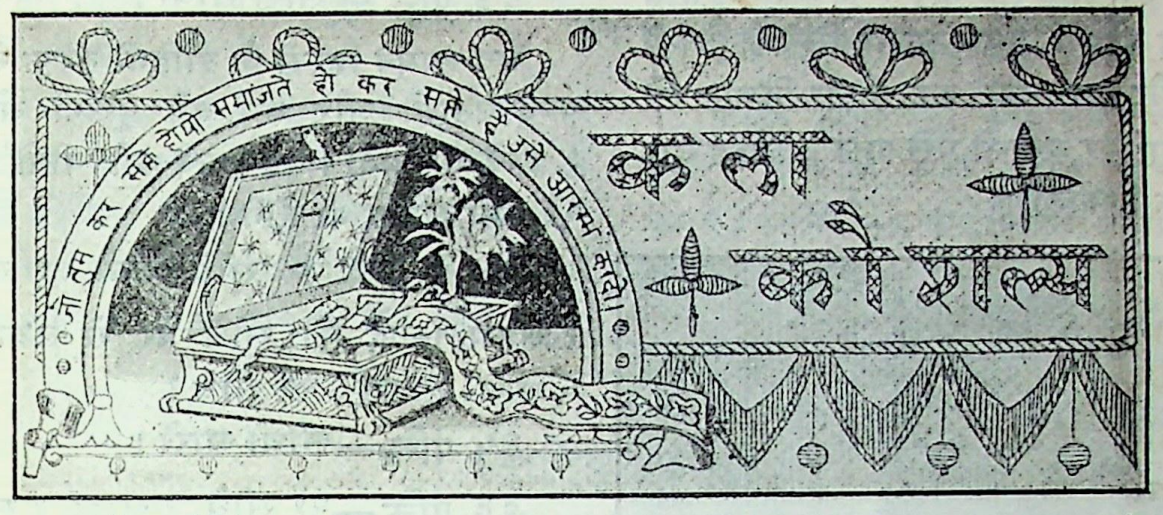

बच्चों का मोज़ा।

यह बच्चों के पैर ढ़कने के लिये बड़ा सुन्दर मोज़ा है और पैर में खूब ठीक आजाता है।

आवश्यक वस्तुएं—आधी छटांक महीन पियाज़ी रंग का ऊन और $\frac{1}{4}$ छटांक मोटा सफेद ऊन, तीन १२ नं० लोहे की सलाई, एक हड्डी का क्रोशिया कुछ गुलाबी फ़ीता।

संकेत—सीधा, "सी" उल्टा "उ", घटाना=(जब कोई फ़न्दा दो इकट्ठे बीन कर कम कर दिया जाय) बढ़ाना= जब एक फ़न्दा बीच में से उठाया जाय) उठान=(जब किसी तरफ़ से बिनावट के किनारे के फ़न्दे उठाये जांय), ख़तम करना=(जब काम समाप्त करना हो तो एक फ़न्दा बीन कर दाहिने हाथ की सलाई पर दो फ़न्दों में से पिछले को अगले पर लंघा देना फिर एक और बीन लेना और पिछले को बंधा देना), "सादा" बिना बीने उतारना।

अब गुलाबी ऊन से ३० फ़न्दे चढ़ाओं मोजे के ऊपर के वास्ते फूल पीछे बनेंगे।

१ पंक्ति—सारी सीधी बीनो।

२ पंक्ति—१ सी, १ उ, बार बार अन्त तक पहिली और दूसरी पंक्ति १३ बार बनाओ यानी सब २८ पंक्ति होजांय।

२९ पंक्ति—१ सादा, * १ बढ़ाओं, दो इकट्ठे बीन कर घटाओ, इस * चिन्ह से बार २ अन्त तक।

३० पंक्ति—सारी उल्टी।

३१ पंक्ति—६ सीधे, * १ उल्टा, १ सीधा इस * चिन्ह से पांच बार।

बायें हाथ की सलाई पर ६ फ़न्दे रहने दो, और उल्ट कर तीसरी सलाई से बीनो। १२ फ़न्दे बीचके जो ६ सीधे और ६ बिना बिने के हैं वही अब बीने जांयगे जिससे पंजे का ऊपरी हिस्सा बनेगा।

३२ पंक्ति—१२ सीधे बांये हाथ की सलाई पर ६ फ़न्दे पड़े रहने दो।

३३ पंक्ति—१ उल्टा, १ सीधा छबार।

३२ वीं और ३३ वीं पंक्ति को चौदह बार बनाओ।

६२ पंक्ति—१ सादा, २ इकट्ठे बीनों पांच बार १ सीधा, यह पंजे का ऊपरी हिस्सा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब इस सामने के हिस्से के बांयी तरफ़ से १४ फ़न्दे उठाओ "(एक सलाई सिरे के छेद में डालो और ऊन चढ़ा कर फ़न्दा निकाल लो उसे सलाई पर चढ़ालो ऐसे पास २ चौदह बार अन्त तक निकालो)"

और ६ फ़न्दे बांधी सलाई पर पड़े थे वह भी ले लो।

६३ पंक्ति—सारी सीधी।

अब सामने हिस्से के दाहिनी तरफ़ से १४ फ़न्दे उठाओ और बचे हुवे दूसरी ओर के ६ फ़न्दे भी बीनो। ५३ फ़न्दे भी बीनो। सब ५३ फन्दे सलाई पर होंगे।

६४ पंक्ति—२२ सीधे बीनो, १ सादा, १ सीधा, (सादे को सीधे पर से लंघा दो), ५ सीधे, २ इकट्ठे, २२ सीधे।

६५ पंक्ति—सीधी सारी।

६६ पंक्ति—२१ सीधे, १ सादा, १ सीधा, (सादे फ़न्दे को सीधे पर से लंघा दो) ५ सीधे, २ इकट्ठे, २१ सीधे।

अगली ६ पंक्तियां—सारी सीधी सिर्फ़ हर पंक्ति के आरम्भ में एक फ़न्दा बढ़ाते जाओ एड़ी बनाने के लिये।

अगली पंक्ति—२६ सीधे, फिर काम को उलट कर उन्हीं ६ को फिर सीधे बीनो इसी प्रकार ६ पंक्तियां बीनो।

अब दोनों सलाइयों को बराबर रख कर तीसरी सलाई से समाप्त करो इस प्रकार (दोनों सलाइयों को जोड़ कर तीसरी सलाई से दोनों के पहिले फ़न्दे में सीधा बीनो अब तीसरी सलाई पर एक फ़न्दा आजायगा इसी भांति फिर अगले दोनों के एक २ फ़न्दे में तीसरी सलाई डाल कर ऊन चढा कर एक फ़न्दा और बनाओ अब तीसरी सलाई पर दो फ़न्दे होगये अब पिछले फ़न्दे को बांये हाथ की सलाई के सहारे अगले पर से उतार दो अब दाहिने हाथ की सलाई पर एक ही फ़न्दा रह जायगा फिर दोनों सलाइयों के एक २ फ़न्दे में डाल कर दूसरा फ़न्दा बनाओ और पहिले की तरह पिछले को अगले पर से लंघा दो इसी भांति सारी पंक्ति। (यह दो सलाइयों को इकट्ठा समाप्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने की विधि है। पिछले खुले हुवे हिस्से को सुई से साफ़ २ सीं दो।

क्रोशिये के ऊपरी हिस्से में दोनों रंग का ऊन मिला कर बनाओ। २ चेन, * ४ तेहरे उसी घर में क्रोशिया को पहिले तेहरे में डालो और चौथे तेहरे को निकाल लो जिससे तसवीर की भांति घुंडी सी बन जाय १ चेन, इसी प्रकार इस * चिन्ह से ६ बार और बनाओ इस प्रकार की तीन पंक्तियां बनाओ और समाप्त कर दो।

पतला फ़ीता जहां पंजा शुरु होता है वहां छेदों में डाल कर आगे फूंदना बांधदो। वा ऊन की रस्सी बट कर किनारे पर फूल बांध कर वह डाल दो।

स्वादिष्ट भोजन

बेसन के लड्डू

यों तो बेसन के लड्डू सभी बनाते रहते हैं परन्तु इस प्रकार के लड्डूओं को बच्चों तक को देने का डर नहीं।

आवश्यक वस्तुएं—½ सेर साफ़ बढ़िया चने की दाल का बेसन, ¼ सूजी साफ़, कीड़े देख कर, क्योंकि इस में प्रायः कीड़े होते हैं; सवा पाव वा डेढ़ पाव घी और इतनी ही खांड, चार बड़ी इलायची, ज़रासी किशमिश, बदाम, पिश्ता।

बनाने की विधिः—कढ़ाई को खूब साफ़ करके अच्छी आंच बालकर उसमें घी चढ़ादो जब घी खूब तप जाय तब सूजी बेसन को मिला कर उसमें डालदो और एक लोहे के खुरचने को खूब साफ़ करके उससे चलाते जाओ जिसमें जलने न पावे। पहिले सूखा २ रहेगा धीरे २ भुनता जायगा, बहुत आंच न करना। जब खुश बू आने लगे तब आंच कम करदो और चलाते जाओ, जब घी छोड़ने लगे और थोड़ी सी मालूम देने लगे तब जानो तैयार होने वाली है किन्तु भुनने में कसर रखने से फिर सवाद नहीं आता और दो चार दिन रखने ही से ख़राब होने लगते हैं। कढ़ाई नीचे उतार कर भी चलाते जाओ फिर इलायची दरड़ कर, किशमिश साफ़ कर धोकर डालदो। बदामों को गरम पानी में भिगो कर छिलका उतार कर काट कर और पिश्ता काट कर सब डाल दो और मीठा थोड़ा २ करके मिलाते जाओ और हाथ से खूब मल दो।

जब सब मिल जाय जरासा चाख कर देख लो मीठा ठीक हो तो छोटे २ लड्डू हाथ में दवा २ कर बांध दो।

सूजी डालने से बड़े खस्ता और स्वादिष्ट होजाते हैं नुकसान नहीं करते और जब घी छुट जाय और ढ़ीला २ मालूम हो तब जानो बेसन भुन गया है यह भी ख्याल रक्खो कि जलने या काला न होने पावे।

यह पन्द्रह बीस दिन तक खराब नहीं होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गृह प्रबन्ध

१. अखरोट की छाल—यह चमड़ा कमाने और कपड़ा रंगने के काम में भली प्रकार आ सक्ती है, परन्तु पंजाब में इस को दंदासे के रूप में दांत साफ करने के लिये, बहुधा स्त्रियां काम में लाती हैं। इस से दांतों के ऊपर को जमी हुई कड़ी मैल उतर जाती है और दांत मोती की तरह साफ हो जाते हैं। वैदिक ग्रन्थों में गले का बैठ जाना या सूज जाना इत्यादि बीमारियों में भी उसका मुंह में रख कर चबाना और शने २ चूसना बड़ा उपयोगी बतलाया है।

———

२. नमकीन पानी की नसवार—डा० शमन नाक के अन्तरीय भाग को नमकीन पानी से धोने की सम्मति देते हैं। उन का दावा है कि इस से फेफड़ों के सब रोग दूर रहते हैं और रोगी होने पर रोग को हटाने में भी सफलता मिलती है। इसके साथ ही एक चाय के प्याले भर पानी में इतना नमक जो कि एक पैसे के ऊपर आ सके मिला कर पीने से पित्त भी शान्त हो जाते हैं। इन दोनों क्रियाओं से फेफड़े और दिल शुद्ध रहकर सब प्रकार के ज्वर को दूर करने में बड़ी सहायता मिलती है। नमक से खून भी शुद्ध होता है। डाक्टर महोदय की सम्मति है कि यदि सब डाक्टर ऊपरोक्त विधियों का अधिक प्रचार करें तो हैज़ा और इन्फलूयन्ज़ा की वबा कभी न फैले।

———

३. खुराक में खाण्ड की उपयोगिता—प्रोफेसर (Metchni koff) कहते हैं कि बुढ़ापे में मनुष्य की देह में जो शिथिलता हो जाती है वह अङ्गों में जीवाणुओं के खेल से उत्पन्न ज़हर का परिणाम है। इन ज़हरों का असर जो नसों, जिगर और दिमाग़ पर पड़ता है उस से इन अङ्गों की सब क्रिया खराब हो जाती है जिस से शक्ति क्षीण होती और बीमारियों को रोकने की असमर्थता उत्पन्न होती है। यह कहा जाता है कि खांड पर इन जीवाणुओं का कोई भी असर नहीं पड़ता इसके अतिरिक्त खांड शरीर में उन कीटाणुओं का पालन करती है जो रोग उत्पन्न करने वाले और विष उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को दबाते रहते हैं। इस से भी अधिक यह बात दिखाई गई है कि दिल को मज़बूत और एक रस रखने के लिये खांड सर्व्वोत्तम खुराक है और दिल की बीमारियों को भी हटाती रहती है। इस लिये खुराक के तौर पर खांड की उपयोगिता केवल यहीं नहीं है कि इस के गुण ताकत देने वाले हैं बल्कि इस लिये भी यह उपयोगी है कि इस के गुण रोग नाशक भी हैं।

———

४. स्याही के धब्बे छुड़ाना—बड़े नाज़ुक से नाज़ुक वस्त्र से बिना उस के रङ्ग को खराब किये स्याही के धब्बे इस प्रकार उठाये जा सकते हैं, राई को बारीक पीस कर और पानी में लेयी जैसी बनाकर उसे धब्बों के ऊपर फैला दो। २४ घण्टे पीछे स्पंज में ठंडा पानी भर कर उसे साफ कर दो। सब धब्बे साफ हो जायेंगे।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृष्ण कुमारी।

लेखका—श्रीमती केशर कुंवरीदेवी

राजपूताने के सब ही राजा महाराजाओं में उदयपुर का घराना आज दिन भी सर्व शिरोमणि गिना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि उदयपुर के रानाओं ने राज्य पाठ छिन जाने और अपने प्राणों से हाथ धोने का समय आने पर भी मुसलमान बादशाहों के आधीन रहना तथा उनको अपनी कन्याएं दे देना स्वीकार नहीं किया था। सन १७९२ ईस्वी में उदयपुर के राना भीमसिंह जी के कृष्ण कुमारी नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। जब यह कन्या सयानी हुई तो वह महा रूपवती और सुन्दर निकली। उसके मृदुहास्य और गजगमन, मन्दस्वर के कारण कृष्ण कुमारी को सब लोग राजस्थान का कमल कह कर पुकारते थे।

कृष्ण कुमारी का विवाह जोधपुर के महाराज से होने वाला था परंतु अकस्मात ही जोधपुर के उक्त महाराज का देवलोक बास हो गया। इस लिये कृष्णकुमारी की सगाई जयपुर के महाराज से करदी गई और दोनों ओर विवाह की बड़ी धूम धाम से तैयारियां होने लगीं। परंतु इधर जोधपुर की गद्दी पर दूसरे नये महाराज ने बैठते ही उदयपुर वालों से कहलाया कि कृष्ण कुमारी की सगाई पहले हमारे यहां हो चुकी है इस लिये कृष्णकुमारी का विवाह हमारे ही साथ होना चाहिये नहीं तो हम स्वयं मरने और मारने को तैयार हैं। उधर जयपुर वाले भी आंखें दिखाने लगे, बहुत समझाने बुझाने पर भी जयपुर और जोधपुर की सेनाएं चढ़ आईं और उदयपुर को लूटना शुरू कर दिया सारे उदयपुर राज्य में कोलाहल और त्राहि त्राहि मच गई।

प्रिय पाठक व पाठिकाओ शायद आप इस समय यह प्रश्न कर उठें कि क्या उदयपुर जैसे महाराज्य में सेना नहीं थी कि अन्य राज्यों की सेना उदयपुर को आन घेरे और सारे नगर में लूट मार शुरू करदे। सुनिये। यह एक मानी हुई बात है कि क्या राजा और क्या रंक, सदा एक से दिन किसी के नहीं रहते हैं। जो आज हाथी पर सोने की अम्बारी में बैठा है कल वही नंगे पैर मारा २ फिरता दिखाई देता है। जिसकी आज्ञा पाते ही सैंकड़ों मनुष्य कठिन से कठिन कार्य्य को पल भर में कर डालने को खड़े रहते हैं और जिनके पैरों में जाकर बैठने में बड़े २ प्रतिष्ठित और धनवान् मनुष्य अपना बड़ा सौभाग्य समझते हैं,काल की कठिन गति से वे भी कभी कभी २ भूखे प्यासे अन्न के एक २ दानेको तरसते दिखते हैं। काल की बड़ी बिचित्र गति है।

मुसलमान बादशाहों से बार २ लड़ते रहने के कारण उस समय राना भीमसिंह की सेना रणभूमि में काम आ चुकी थी इसी लिये उनकी शक्ति कम हो गई थी और इसी कारण से जयपुर तथा जोधपुर वालों को उनके विरुद्ध अपनी सेना भेजने का साहस हुआ। जब दोनों राज्यों की सेना के लूट मार करने और नगर को विध्वंस करने से राना भीम सिंह के नाक में दम आ गया तो एक दिन दर्बार में अपने सब सर्दार व सामन्तों को बुला कर पूछा कि भाइयो कोई ऐसी युक्ति बताओ जिस से यह झगड़ा शान्ति के साथ तय हो जाय और अपनी इज्जत में भी बट्टा न लगे। यह वचन राना के मुख से निकलते ही पाषाण हृदय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्दयी उसी राज्य का दीवान अमीरद्दीन झट्ट बोल उठा हुजूर इस मुसीबत से बचने की तो मेरी समझ में इस से अच्छी कोई दूसरी तरकीब नहीं है कि बाई जी (कृष्ण कुमारी) साहबा को मार डाला जाय, क्योंकि न रहेगा बांस तो बांसरी कहां से बजेगी। निरपराधी कृष्ण कुमारी के बध की सलाह पहले तो राना जी को पसन्द नहीं आई परन्तु जब अपने राज्य के बचने का कोई दूसरा उपाय नहीं देखा तो राना को विवश होकर यही स्वीकार करना पड़ा। राना ने कृष्ण कुमारी को मार डालना तो स्वीकार कर लिया परन्तु अब इस काम को करे कौन। राना जिस से इस दुष्ट कर्म्म करने को कहते वही रोता और कांपता था अन्त में राना के बहुत कहने सुनने और कुछ लालच देने से एक दुष्ट ने यह पाप कर्म्म करने का भार अपने ऊपर लिया और वह भाला लेकर भीतर महल में कृष्ण कुमारी के पास जा पहुंचा। परन्तु कृष्ण कुमारी का रूप और उस का भोला २ चहरा देख कर उस को दया आगई और उस का क्रूर हाथ उस निर्दोष बालिका पर नहीं उठा। उस के हाथ में से भाला पृथ्वी पर गिर पड़ा और वह लज्जा से पसीने पसीने हो गया, बस उसी समय राना के सारे भेद कृष्ण कुमारी को मालूम हो गए।

जब इस तरह से उस का बध न हो सका तो राना ने एक विष का भरा प्याला (कटोरा) कृष्ण कुमारी के पास भेजा। कृष्ण कुमारी ने अपने पिता की आज्ञा और अपनी प्रजा की भलाई समझ कर उस विष को पी लिया। वह मरने से बिलकुल नहीं डरी और बड़े आनन्द में मग्न हो कर ईश्वर के भजन गाने और अपने पिता की राज्य वृद्धि के लिये परम पिता परमेश्वर से नाना भांति प्रार्थना करने लगी। जब उस की माता रोने और बिलाप करने लगी तो कृष्ण कुमारी ने बड़े मधुर स्वरों में कहा "माता जी आप व्यर्थ क्यों रोती हो मेरा बड़ा प्रारब्ध है कि केवल मेरे प्राण जाने से पूज्य पिता जी निर्भयता से राज्य कर सकेंगे और उनकी प्राणों से प्यारी प्रजा को शत्रु सेना से पीड़ित न होना पड़ेगा। पिता जी के अंश से मैं पैदा हुई हूं अब उन हीं के लिये यदि मेरा प्राण जाय तो इस से अधिक और क्या मेरे लिये सौभाग्य होगा। जिस में हमारे कुल की बात रहे और हमारे क्षत्रिय धर्म्म में बाधा न पड़े वही काम प्रत्येक क्षत्रिय ललनाओं को करना चाहिये। माता जी आप स्वयं बड़ी चतुर और क्षत्रिय धर्म्म की आदर्श स्वरूप हो फिर क्यों आप नाहक इतना रुदन और बिलाप कर रही हो मुझे भगवान की शरण में जाने की आज्ञा दीजिये। माता अब मेरा समय निकट आ गया है मेरे अपराध क्षमा करिये और मुझे जाने की आज्ञा दीजिये। देखो मां मेरे पिता जी को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाय देखो मां मैं जाती हूं, मां...मां...मां"।

गृहस्थस्त्रियों के लिये महाराज मनुका उपदेश।

लेखिका

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृह कार्य्येषुदक्षया।
सुसंस्कृतोऽपस्करयो व्यये चा मुक्तहस्तया॥

इस एक छोटे से पद्य में जो चार भाव पूर्ण बातें हमारे परम पूज्य महर्षि महाराज मनु ने गृहस्थी स्त्रियों को बतलाई है वह यद्यपि हमेशा ही ध्यान रखने योग्य हैं तथापि इस वर्तमान युग में जब कि प्रत्येक नियम उलट पुलट हो रहे हैं विशेष करके विचारनी चाहियें। प्रातः कालसे लेकर रात को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोने के समय तक जिस प्रकार स्त्रियों को घर में काम काज करना पड़ता है और जिस तरह बालकों का रक्षण, भरण, पालन करना सम्बन्धियों से व्यवहार करना, गृह प्रबन्ध करना, नौकरों के साथ वर्ताव करना इत्यादि अनेक झंझटों मे समय बिताना होता है उससे बहुत सी हमारी गृहस्थी बहिनें शीघ्र तंग हो जाती हैं और ठीक प्रबन्ध न करके दिन रात आप स्वयं भी रोती झींकती रहती है और अपने पतियों को भी क्लेशित करती और बच्चों और नौकरों को घुड़की देतीं, मारतीं, पीटतीं, और कोसती रहती हैं अतः ऐसी देवियों के जीवन में शायद ही कोई दिन ऐसा आता होगा जब वह प्रहृष्ट अर्थात हंसती हुई मधुर बोलने वाली हों। ऐसी ही स्त्रियों ने गृहस्थ जीवन को नर्क का द्वार बना रक्खा है और ऐसे २ भजन गाती हैं कि "त्रिया जन्म मत दो मेरे प्रभु जी……" इनको क्या पता है कि महाराज मनु उनके लिये क्या उपदेश देते हैं। यदि हमारी बहिने उत्तम शिक्षा को प्राप्त हों और प्रति दिन घंटा आधा घंटा भी अपने कर्तव्य कार्य्य पर विचार करे तो उन्हें ज्ञात होगा कि हमारे स्मृति कार स्त्रियों की कठिनाइयों को बहुत अच्छी तरह जानते थे। अतः उनके लिये प्रथम उपदेश यह दिया है कि सदा हर्षित रहें। चाहे कितने ही झंझट झगड़े हों कितना ही बच्चे तंग करें परन्तु अपने स्वभार को कर्कश न बना कर हमेशः मधुर भाषिणी ही, हँसती हुई, सर्वदा दीख पड़ें यह प्रथम कर्तव्य स्त्रियों का है।

दूसरी बात जो वह कहते हैं वह यह है कि स्त्रियों को गृह कार्य्यों में चतुर होना चाहिये। अब विचारना यह है कि गृह कार्य्य क्या हैं और उनमें चतुरता क्यों होनी चाहिये? जिस दिन से बधू अपने पति के घर में पैर धरती है उस दिन से पति का घर उसका घर बन जाता है और उस घर के प्रत्येक कार्य्य का भार उसके हाथ में आजाता है। नई गृहस्थी को बनाना, उसकी आवश्यक चीज़ों का मंगाना, आई हुई चीज़ों की रक्षा करना घरके बड़े छोटों के साथ उत्तम व्यवहार करना उनकी सेवा टहल करना उसका कर्त्तव्य होजाता है। यदि घर में खेती होती हो या पशु हो तो उनका भी निरीक्षण करना और नौकरों से काम लेना अथवा अपने हाथसे करना परन्तु उन कामों का पूरा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है जब बच्च हो जावें तो बच्चों को समुचित रीति से पालन करना, अपने आराम और सुखका ख्याल न करके परमात्मा की कृपा से प्राप्त देश के छोटे २ बालक जो जाति और देश की सम्पदा हैं उनको उत्तम शरीर और मस्तिष्क वाले बनाने का बड़े ध्यान से यत्न करना उनका कर्तव्य हो जाता है। यदि वह इस कार्य्य को ठीक तरह नहीं करती तो वह पाप की भागी बनती हैं। यही गृहकार्य्य हैं, इन्हें यदि उत्तमरीति से किया जावे तो बहुत परिश्रम और चतुरता की आवश्यक्ता होती है। आज कल प्रायः देखने में आता है कि स्त्रियां गृहस्थ के विषय भोग को अपना अधिकार समझती हैं परन्तु गृहस्थ में प्रवेश करके उनका जो उत्तर दायित्व हो जाता है उसका उनको बिल्कुल ध्यान नहीं होता। गहने कपड़े साज, सामान, घूमने घामने आनन्द भोग के सब सामान उन्हें चाहिये किन्तु अपने ऊपर कोई किसी प्रकार का बन्धन न हो। यह भी प्रायः देखने में आता है कि स्त्रियां केवल अपने लिये ही सुन्दर वस्त्र इत्यादि नहीं चाहती वरन अपने अबोध बच्चों के लिये भी, जिन्हें इनका ज्ञान भी नहीं होता। कई स्त्रियें बच्चों को ठीक समय पर दूध न देंगी साफ़ सुथरे न रक्खेंगी जिनसे उनका शरीर हृष्ट पुष्ट हो परन्तु उनके लिये फ्राक इत्यादि नये फैशन की चीज़ें अवश्य बनावेंगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कई स्त्रियें अपने भण्डार में हर एक वस्तु एक दिन में महीने या १५ दिन के लिये मंगा कर न रक्खेंगी और यदि मंगा भी ली तो सम्भाल न करेंगी किन्तु हरदम आप दौड़ेंगी या नौकर को दौड़ायेंगी। इसमें समय भी नष्ट होता है और चीज़ों की भी संम्भावना नहीं होती और थोड़ी २ चीज मंगाने में बरकत भी नहीं होती। कई स्त्रियें अपने बच्चों का इतना अनुचित लाड़ करती हैं कि उन्हें हर दम खिलाती ही रहती हैं जहां चीज़ सामने आई बच्चे मधुमक्खियों के छत्ते के समान घेर लेते हैं और मातायें कोसती चिल्लाती है, बच्चे ज़िद मचा कर ले जाते हैं। इससे बच्चे की आदतें बिगड़ती हैं उनमें लोभ लालच स्वार्थता इत्यादि आते हैं कई स्त्रियें इतनी कंजूस होती हैं कि अपने बच्चों को भी यथेष्ट भोजन वस्त्र समय पर नहीं देती अन्य किसी के लिये तो क्या ही करेंगी। इस प्रकार का व्यवहार गृहकार्य्य में चतुरता नहीं है अतः हमारी स्त्रियों को दूसरा उपदेश महाराज मनुका यह है कि गृह कार्य्यों में चतुरता सीखो। अब तीसरी बात यह है कि सुसंस्कृतोपस्करया अर्थात् रसोई इत्यादि सब ठीक रक्खें। रसोई का स्थान खूब लिपा पोता रहे घरमें झाड़ू ठीक समय पर लगी रहे और खान पान की जो २ चीज़ें हों वह शुद्ध हों वर्तन भाण्डे भी शुद्ध और भोजन अच्छा पाचक पुष्टि कारक और स्वाद युक्त हो। यद्यपि यह बातें साधारण ही समझी जाती हैं परन्तु यदि ध्यान से देखा जावे तो इनमें बड़ा महत्व है और इन के ठीक होने से बहुत लाभ हो सक्ता है। आज कल प्रायः प्रत्येक घर में झाड़ू चाहे कितनी ही बार लगती हो परंतु यदि अचानक कोई घर में पहुंच जावे तो घर गंदा ही मिलेगा, चीज़ें इधर उधर पड़ी हुई होंगी और जब तक उसी समय खास तौर से स्थान न बनाया जावे तब तक बैठने का भी स्थान नहीं होता। जहां एक तरफ़ आज कल के फैशन वालों के घरों में खूब बैठकें इत्यादि सजी रहती हैं खाने के कमरे में मेज़ पर सफेद कपड़ा होता है बर्तन भी सुन्दर होते हैं परन्तु यदि कोई चौंका चूल्हा देखे तो इतने गन्दे होते हैं कि वमन हो जावे। वहां दूसरी तरफ़ पंजाबी पुराने टाइप के घरों में चौंका में पोचा दिन में एक ही बार पड़ता है और तवा रोटी बना कर वैसे ही स्याही वाला रक्खा रहता है और अन्य कई घरों में बर्तन भी सुख मांच करके कपड़े से पोंछ लिये जाते हैं। रोटी प्रायः खाट पर बैठ कर खाते हैं जिससे जूठ खाट में लग कर एक तो खटमल पैदा होते हैं दूसरे बिस्तरों में जूठ लगती है। अन्य प्रान्तों का तो पता नहीं परंतु यू. पी. में बर्तन चौंका तो साफ रहता है छुआ छूत के कारण, परंतु प्रायः चौंके की धोती इतनी गन्दी रहती है कि देखते ही वमन होजाने की आशंका होती है और उसी धोती से ही प्रायः थाली इत्यादि पोंछी जाती हैं। झाड़न बहुत कम बर्ता जाता है। पंजाब में लीर से घी चुपड़ते हैं वह भी प्रायः गन्दा होता है और झाड़न भी अक्सर गन्दे रहते हैं उन्हें दोनों समय धुलाने का यत्न नहीं किया जाता। यदि स्त्रियें इन बातों पर विचार करें तो बहुत से रोग जो आजकल घरों में दीख पड़ते हैं वह न हों। यह तो हुई सफ़ाई की बात अब दूसरी तरफ़ पाक विद्या की ओर देखो। स्त्रियां पंजाब में प्रायः भोजन बनाना एक आवश्यक विपति समझती हैं अतः यथाशक्ति उस पर बहुत कम ध्यान देती हैं। इस कारण बहुत से लोग बज़ार से ही उत्तम २ भोजन के पदार्थखाते हैं। परिणाम यह होता है एक तो खर्च अधिक होता है दूसरे बाहर की चीज़ों में कीटाणु अधिक उत्पन्न होने की सम्भावना होने से रोगों को अधिक उत्पत्ति होती है, जिस से डाक्टरों और दवाइयों में भी व्यय होता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और खरीद अधिक होने से शूद्र लोगों को इस तरह के पेशों में लगने की रुचि बढ़ती जाती है और अपने और काम करने से विमुख होते जाते हैं। कुछ तो लोगों की रुचि चाट इत्यादि खाने की और अधिक ही है क्योंकि उन की आदतें बुरी पड़ गई। हैं यू. पी. में भी जहां प्रायः घरों में स्त्रियां स्वादिष्ट भी भोजन बना लेती हैं परन्तु वहां पर भी बाहर के खानों पर लोग मस्त रहते हैं। इन सब बातों के हटाने का एक मात्र उपाय यही है कि स्त्रियां महाराज मनु के इस तीसरे उपदेश पर ध्यान रखती हुई अपने स्वच्छता के भावों और पाक विद्या से विविध भोजनों से घर को ऐसा चित्ताकर्षक बनावें कि पुरुषों और बालक बालिकाओं को बाहर के भोज्य पदार्थों में कुछ आकर्षण न प्रतीत हो वरन उन्हें आपत काल का धर्म समझ कर आवश्यक्ता पड़ने पर ही बर्तें। घर में उन्हें अधिक स्वच्छता और अधिक स्वाद दृष्टि गोचर हो। यह है तीसरे आदेश का भाव।

अब चौथे आदेश पर ध्यान दीजिये जो कि यद्यपि पद्य के अन्त में है परन्तु सब से बढ़ कर उपयोगी है। यह आदेश कि "खर्च हाथ दबा कर करे"। कहावत मशहूर है कि यदि पुरुष फावड़ा लेकर घर खोदे तो घर नहीं बिगड़ता परन्तु यदि स्त्री सुई से खोदना शुरू करें तो खट नष्ट हो जाता है। तात्पर्य्य यह है कि स्त्रियों के हाथ में ही सारा घर का प्रबन्ध रहता है छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज़ उसके हाथ में रहती है, यदि वह उसकी सम्भाल न करें और जब चीज़ न हुई झट खरीद ली या आवश्यक्ता से अधिक खरीद ली अथवा अपनी आवश्यक्ताओं का रूप इतना बढ़ा लिया कि व्यय बहुत हो तो उन स्त्रियों के हाथ में पैसा कभी रह नहीं सक्ता और वह हमेशा आप भी दुःखी रहती हैं और अपने पतियों को कर्ज़ के बोझ से लादती ही रहती हैं। यह स्त्रियों का धर्म नहीं है महाराज मनु की आज्ञा है कि चाहे राजा हो चाहे रंक स्त्री को व्यय के लिये जो द्रव्य मिले उसे हाथ दबा कर ही खर्च करे यह न करे कि आज तो रुपये बटुवे में हैं तो खूब खर्च लिये। कई स्त्रियों में चटोरपन होता है वह आप भी चाटती रहती हैं और बच्चों को चटोरे बना देती हैं और यदि घर में बड़ी बूढ़ी इन बातों से नाराज़ होती है या पति महाशय रोकते हैं तो उन से क्लेश होता है, उन से छिपाने का यत्न किया जाता है। उसी प्रकार कइयों में कपड़े का शौक होता है, पर चाहे कितने ही कपड़े बनवा लें परन्तु आप और बच्चे हमेशः वस्त्र हीन या उत्तम वस्त्र रहित ही दीखते हैं। जो स्त्री व्यय अपना हाथ रोक कर नहीं करती वह आप भी दुःखी रहती है और परिवार को भी दुःखी बनाती हैं और यदि लड़कियां हुईं व्याहने को तो फिर सोना और सुगन्ध दोनों मिल जाते हैं। घर में क्लेश और फूहड़पन तो नज़र ही आता था अब लड़की के सम्बन्धियों तक यह बातें पहुंचती है जहां अपयश होता है वहां माताओं की बुरी आदतों के कारण लड़की को ताने भी सुनने पड़ते हैं और यदि लड़की में भी ऐसे ही संस्कार जागृत हुये और उस का भी ऐसा ही स्वभाव पड़ा तो फिर विनाश की मात्रा बढ़ती ही जायगी। अतः महाराज मनु के यह चारों आदेश पर सब स्त्रियों को बहुत ध्यान से विचार करना चाहिये। पिता माताओं को, अपनी कन्याओं को इन बातों की शिक्षा देने पर विशेष ध्यान देना चाहिये और कन्या पाठशालाओं और आश्रमों में कन्याओं को इन बातों की क्रियात्मक रूप से शिक्षा देनी चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस पर पारितोषिक देना चाहिये ताकि गृहस्थ में प्रवेश करने से पूर्व कन्यायें इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो कर उस के योग्य बने ताकि गृहस्थ सुख के धाम बन कर संसार में कल्याण के मार्ग हों। अनपढ़ स्त्रियों को क्या कहें उन में से कुछ तो शायद इन परीक्षाओं के क्रियात्मक रूप में उत्तीर्ण भी हो जावें परन्तु खेद से कहना पड़ता है कि अर्ध पठित या नवीन शिक्षा प्राप्त देवियां सर्वथा इन से अनभिज्ञ हैं अतः हमें बड़े प्रयत्न से घरों को भी उन नियमों के अनुकूल सुधारना चाहिये और शिक्षा में भी इन पर बड़ा बल देना चाहिये। अन्यथा शिक्षा नहीं होगी।

———

धात्री शिक्षा

(गतांक से आगे)

पिछले अंक में हम बतला चुके हैं कि यदि बच्चे को मां का दूध प्राप्त न हो सके, तो गाय का दूध ही पिलाना सब बनावटी दूधों की अपेक्षा लाभकारी और सुगम है। यदि सम्भव हो तो छोटे बच्चे को एक ही गाय का दूध दिया जावे और वह गाय लगभग उसी समय की प्रसूता हो जिस समय बच्चे का जन्म हुआ हो। परन्तु यह याद रक्खो कि नन्हे बच्चे को ताज़ी ब्याई हुई गाय का दूध कभी नहीं देना चाहिये क्योंकि उस से पेट में शूल पैदा हो जाती है। जब बछड़ा एक सप्ताह का हो जावे तब गाय का दूध बिलकुल पचने योग्य बन जाता है। यदि तुम्हारे घर गाय हो तब तो बच्चे को दूध साफ़ मिलने में कष्ट नहीं होगा यदि घर में गाय न हो तो ग्वाले को कह कर घर में गाय मंगा कर दूध दुहा लिया करो, तब तुम यह देख सकी हो कि गाय के थन धुले हुये हों, दुहने वालों के हाथ भी साफ़ धुले हुए हों, और दूध दुहने वाला वर्तन भी साफ़ धुला हुआ हो। यह सफ़ाई इस लिये आवश्यक है कि प्रायः करके रोगों के जीवाणु गौओं के थनों में, दुहने वालों के हाथों में, या गन्दे वर्तन में, रहते हैं और दूध में प्रवेश करके उस में बहुत जल्दी बढ़ जाते हैं। यदि तुम्हें बाज़ार से दूध मंगाना पड़े तब भी इतना तो अवश्य किया जा सक्ता है कि दूध के लिये जो वर्तन भेजा जाय वह बहुत साफ़ हो और उस के साथ ढकने का वर्तन हो ताकि लाते समय दूध में मिट्टी गर्द न पड़ने पावे।

सुबह शाम जब दूध घर में आवे तो बच्चे के वास्ते कुछ अलग निकाल कर रख लिया जाया करे। उसे शीघ्र ही उबाल लिया जावे और उबालते समय उसे बराबर कलछी से चलाते रहना चाहिये ताकि उस में मलाई न पड़ने पावे और उस का हीर उसी में रहे। उस के बाद दूध के वर्तन को ठण्डे पानी के वर्तन में रख कर हिलाते जाओ जिस से वह जल्दी ठण्डा हो जावे। ठण्डे होने पर उसे जाली वाली इलमारी में रख लो यदि इलमारी न हो तो मलमल के कपड़े से ढक कर रख लो ताकि मक्खियां न पड़ें। प्रायः करके दूध पर जो मक्खियां बैठी रहती हैं वह ही दूध में रोगों के जीवाणु ले जाती हैं।

(शेष आगे)

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्ष पाठावली

प्रथम भाग

कुमारी विद्यावती सेठ सम्पादिका ज्योति

रचित

कन्या पाठशालाओं में प्रचिलित पुस्तकों की न्यूनताओं और अस्वभाविकताओं को देख कर ही योग्य लेखिका ने इस परम उपयोगी पुस्तक की रचना की है। सदाचार नीति और धर्म सम्बन्धी विषयों पर बालिकाओं के समझने योग्य सरल भाषा में लिखी हुई सुन्दर और सचित्र पुस्तक है। पुस्तक दिन प्रति दिन सर्वप्रिय बन रही है। पंजाब और संयुक्त प्रान्त की कितनी ही पाठशालाओं में इस की नियम पूर्वक पढ़ाई होती है। अपने कई रंगों के सुन्दर चित्रों, चिकने बढ़िया काग़ज़ और चित्र शाला प्रेस पूना की मनोहर छपाई से यह बालिकाओं के मनों को अपनी ओर खैंचे बिना नहीं रहती।

समाचार पत्रों ने इसकी खूब प्रशंसा की है:—

आर्य मित्र आगरा—आर्य विद्यालयों और कन्या पाठशालाओं में प्रचलित करने के लिये यदि कोई सर्वोत्तम पुस्तक लिखी गई है तो यह है। बच्चों के अन्दर धार्मिक सिद्धान्तों और सदाचार के भावों को भरने वाली ऐसी दूसरी कोई पुस्तक हमारे सामने नहीं आई। पुस्तक की बड़ी विशेषता यह है कि इस में बहुत से उत्तम २ चित्र हैं।

प्रभा—.....इस पुस्तक ने एक भारी अभाव की पूर्ति की है। यह हमारी कन्या पाठशालाओं में अधिक शिक्षा की पाठ्य पुस्तक का काम दे सकती हैं। निबन्ध न केवल उपदेश प्रद ही हैं बल्कि कन्याओं का ज्ञान बनाने वाले भी। जहां सरकारी स्कूलों में आदर्श को भ्रष्ट करने वाली श्री राम और कृष्ण की दूषित कहानियां पढ़ाई जाती हैं वहां हमारी राष्ट्रीय पाठशालाओं में ऐसी धार्मिक पुस्तकें ही पढ़ाई जानी चाहियें.....पुस्तक परमोपयोगी है।

आर्य्य जीवन—(गुजराती) श्री. विद्यावती सेठ ने इस पुस्तक को लिख कर बालकों के अन्दर ऋषि सिद्धान्तों का प्रचार बहुत ही सरलता पूर्वक करने में असाधारण कौशल दिखलाया है। बालकों को ज्ञान के साथ २ आनन्द भी मिले इस रीति से ऋषि दयानन्द प्रणीत सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि ग्रन्थों के विस्तृत समुल्लासों को छोटे २ पाठों में रच कर इन में आये हुये कठिन विषयों को भी सुगम तथा सरस बना दिया है। पुस्तक की भाषा ऐसी सरल है कि गुजराती बालक भली प्रकार पढ़ सक्ते हैं। पुस्तक में अनेक चित्र हैं। काग़ज़, छपाई इत्यादि खूब बढ़िया है।

प्रकाश लाहौर—चित्रशाला प्रेस पूना में खास एतमाम से बहुत सुन्दर और ब तसवीर छपवाई गई है जिस से यह पुस्तक बहुत दिलकश और दिलचस्प बन गई है.....पुस्तक इस काबिल है कि कन्या पाठशालाओं के मैनेजर महाशय इस पर विचार कर के अपनी पाठशालाओं में रायज करें।

वैदिक मेग़ज़ीन—

The talented authoress has in the first valume aranged the teachings of Swami Dayanand on various social, moral and religious subjects into 71 short lessons cast intitle dialogive form. The book is illustrated with beautiful pictures.

The beauty is that in the entire prose portion there in not a relevant word that has not been extracted from the writings of Rishi Dayananda. The get up and printing are charming, all fathers who have young girls should haster to order the book and it should be introduced as a text-book is all Girls' Shools.

१३५ पृष्ठ की सोलह रंगीन और सादे चित्रों से अलंकृत सुन्दर जिल्द बन्धी पुस्तक का मूल्य केवल ॥) बिना जिल्द का ॥=)

इकट्ठा लेने पर १०० सजिल्द रंगीन पुस्तक ६२॥) और बिना जिल्द की ५०) में मिलेंगी।

प्रबन्धकर्ता "ज्योति" अनारकली लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'रमणी-रत्न-माला' के पाँच रत्न

सचित्र शकुन्तला सचित्र

'शकुन्तला' संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालिदासके सर्वोत्तम संस्कृत नाटकका उपाख्यान रूपमें हिन्दी भाषान्तर है। संसार भरकी भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं और इस रचनाके आगे सारे सभ्य जगत्को सिर झुकाना पड़ा है।

"शकुन्तला" को तारीफमें जर्म्मनीके महाकवि गेटोने कहा है, कि यदि स्वर्ग और मर्त्यकी समस्त शोभाएँ एकही स्थानपर देखनी हों, तो 'शकुन्तला' पढ़ो, क्योंकि यह दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती धर्म्म और विश्व-प्रेमका जगमगाता हुआ उज्ज्वल और अमूल्य रत्न है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर, ३ रंगीन चित्र लगाये गये हैं, कि जिन्हें देखकर पौराणिक कालकी समस्त घटनायें आँखोंके आगे नाचने लगती हैं। दाम २), रंगीन जिल्द २।), रेशमी जिल्द २॥) रु०

नल-दमयन्ती

कौन ऐसा हिन्दू-सन्तान होगा, जो "नल-दमयन्ती" का संसार-प्रसिद्ध नाम न जानता हो? यह सती-शिरोमणि 'दमयन्ती' और आदर्श राजा 'नल' की शिक्षाप्रद, हृदय-ग्राहिणी पवित्र कथा प्रत्येक बाल, वृद्ध, वनिताके पढ़ने योग्य है। इसमें १३ बहुरंगे चित्र इस ढङ्गसे लगाये गये हैं, कि चाली चित्रोंको देखकरही मनुष्य पूरी कथा समझ सकता है। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं और कम पढ़ी लिखी स्त्रियोंको उपहारमें देनेके लिये यह पुस्तक बड़ीही उपयोगी है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २)

सावित्री-सत्यवान

कुमारी कन्याओं और नव-विवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसमें सती-शिरोमणि महारानी सावित्रीके अपूर्व पातिव्रत-धर्म्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी इसमें हाफटोन फोटो के सुन्दर सुन्दर १३ रंगीन चित्र भी दिये गये हैं। हिन्दीके प्रायः सभी समाचार-पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है, प्रत्येक हिन्दू-नारीको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। दाम १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

सीता

"सीता" हिन्दू-बालक-बालिकाओं और गृह लक्ष्मियोंके पढ़ने योग्य अपने ढङ्गका अनूठा और सर्वोत्तम ग्रन्थ-रत्न है; क्योंकि यह सारी रामायणका सार उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार और साहित्यका सुललित शृङ्गार है। इसके पढ़नेसे एकही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास और नीति शास्त्रका आनन्द मिलता है तथा यह राजनीति, धर्म्मनीति, समाज-नीति और गार्हस्थ्य-नीतिकी कुंजी है। इसमें १५ बहुरंगे चित्र दिये गये हैं, जिन्हें देखकर तबीयत फड़क उठती है और राम राज्यके अनूठे दृश्य आँखोंके सामने नाचने लगते हैं। दाम सिर्फ २॥), रंगीन जिल्द ३॥) और रेशमी जिल्द ३) रुपया।

चिन्ता

"चिन्ता" देव लोक और मर्त्य लोकका प्रत्यक्ष चित्र दिखलानेवाली शिक्षाप्रद, सुललित और हृदयग्राही अपूर्व कथा है। इसमें सती-शिरोमणि "चिन्ता" और न्याय-परायण महाराज श्रीवत्सकी ऐसी पुण्यमय कथा लिखी गयी है, जिसको सुनकर पाण्डवोंने अपने वन वासके १३ वर्ष बड़े धैर्य्यके साथ हँसते खेलते बिता दिये थे। सती 'चिन्ता' के अपूर्व धर्मानुराग, उज्ज्वल सतीत्व और अविचल धैर्यकी कथा प्रत्येक पतिव्रता बहू बेटी और कुल-नारीके पढ़ने योग्य है। इसमें ६ बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, जिन्हें देखकर चकित और विमोहित होना पड़ता है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

पता:—आर. एल. बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दद्दुगजकेसरी

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

वैद्यक औषधि सब प्रकार मिलिहैं—

भारत भैषज्य भाण्डार।

वा औषधि आलय के माहीं। असल द्रव्य सें बनत सदांहीं ॥ औषधि सत्य परिश्रम साथा। उच्च श्रेणि वैदन के हाथा ॥ अयुर्वेद शास्त्र परिपाटी। धातु उपधातु भस्म रस खांटी (१) गोली चूर्ण तेल घृत आसव। मोदक लेह अरिष्ट आदि सब ॥ उचित मूल्य पर मिलत यहां हीं। लेहु विशुद्ध वस्तु सब यांहीं ॥

मालती बसन्त कुसमाकर बसन्त लीजै, लीजै महराजा मृगाङ्क मन भावनी। चन्द्रोदय, मकरध्वज, सार भस्म, अभ्रकहू, अन बींधे मोती औ सुवर्ण भस्म चावनौ। कस्तूरी आदि बहु मूल्यवान औषधिहू, मिलत तयार दिन रात इत आवनौ। थोक व्यापारिन को उचित कमीशन पै मिलत सुमाल ले लीजै हरखावनौ ॥ दश मूलादिक क्वाथ सब चूरन अर्क तयार। मिलत सभी ले लीजिये भाव ठीक हरबार ॥

जैसें नवीन ज्वर औरहू पुरानौ ज्वर यकृत सु प्लीहा संयुक्त ज्वर सन्निपात। संग्रहणी अतीसार हैजा कृमि पाण्डु आदि कामला कुरक्त पित्त कास स्वास छर्दि घात। मिरगी सु मूरछा उनमाद बात व्याधि आदि बात रक्त आम बात शूल गुल्म मूत घात। अश्मरि उपदंश औ प्रमेह शोथ उद्र व्याधि अम्लपित्त चक्षु रोग शिरो रोग अर्द्ध जात। नारिन की प्रदरादिक पैर बन्द करने की शिशुगन की रोगन की औषधि तयार हैं। अमृत सी फल दैनी औषधि यहीं सों लैनी वी० पी० कर भेज देत हुकम इन्तजार हैं। संग अनुपान विधि सेवन प्रकार विधि पथ्यापथ्य लिख देत भेजत सुधार हैं ॥ रोगन को पूर हाल लिख कें सुभेजिये जू, सूचीपत्र मुफत लेहु छापे तय्यार हैं।

मिलने का पता—

भारत भैषज्य भाण्डार

नं० ७८ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डाक्टर एस, के, वर्म्मन् की नई आविष्कृता पेटण्ट दवाएं।

"मन-हरा"—नन्दन सुरभी; इसकी सुगन्ध अत्यन्त मधुर और अधिक समय तक ठहरती है। रुमाल में थोड़ा लगा देने से ५-६ दिन तक अच्छी सुगंधी रहती है। वास्तव में यह मन हरने वाली अत्यन्त मधुर मतवाली सुगंधी है।

मूल्य फ़ी शीशी १।) एक रुपया चार आना।

"अलोका"—सुबासित आदर्श तरल अलता रङ्ग, सुगंध व पाएदारी आदि गुणों में „अलोका" तरल अलता अन्य समस्त अलतों में सर्व श्रेष्ट प्रमाणित हुवा है। इसका रङ्ग बजार अलतों की तरह लाल रोशनाई के समान नहीं है। यह इतना अधिक चिकना व उज्वल है, कि यह पैर में सूख जाने पर भी गीला दिखाई देता है और कपड़ों में दाग लगने का भय होता है। किन्तु वास्तव में सूखा रहने के कारण दाग नहीं लगता। निश्चय ही यह सब से अधिक सुन्दर, नवीन व आदर्श तरल अलता है। मूल्य प्रति शीशी ॥) आठ आना।

'केशराज तैल"—इस की सुगंध अत्यन्त मधुर व दीर्घ स्थाई है। बहुत दिनों की परीक्षा व गवेषणा के फल से यह नतन जकृष्ट केश तेल बनाया गया है शिरोरोग नाशक व केशों को सौन्दर्य्य वृद्धी का एक मात्र उपाय केशराज तेल है। यह अनुपम सुगंध व गुणों के लिये केश तेलों का राजा है। मूल्य फ़ी शीशी १) एक रुपया।

"हील-एक"—चमड़े पर होने वाले सब प्रकार के रोगों की महौषधी। घाव, वेदना, ात, मोच, गांठ, (गिल्टी) झांइ, मुहासे, फुन्सी, चकत्ते, दाग, हाथ पांव का फटना, रुखापन, ांस पेशियों का दर्द, बवासीर, अग्नि से जलन का घाव, जलने, चोट लग जाने से दर्द का होना, खून का बहना, इत्यादि समस्त चर्म रोग व चमड़े पर होने वाली व्याधियों की हील-एक रामबाण दवा है। चूहे, बिल्ली, मकड़ी, बर्रे, बिच्छू आदि के काटे हुवे स्थान का विष दूर करके शीघ्र आरोग्य करने की हील-एक आश्चर्य दायक महौषधी है। मूल्य फी डिब्बी ॥=) दस आना।

"मकरध्वज"—अनुपान भेद से समस्त रोग नाशक एक मात्र महौषधी। रोगी व निरोगी दोनों ही अवस्था में यह व्यवहार किया जाता है। विशुद्ध व अकृत्रिम मकरध्वज स्वल्प मूल्य में प्रचार करने के उद्देश्य से बड़े परिश्रम व व्यय से हमारे कारखाने में तैयार किया गया है।

मूल्य ७ खुराक के बक्स का १) एक रुपया।

"लाल रोशनाई"—बड़ी २ गवेषणा एवं परीक्षाओं के बाद यह उत्कृष्ट लाल स्याही तैयार की गई है। विलायती लाल स्याही के साथ तुलना करने पर यह उस से किसी भी बात में कम नहीं ठहरती। यह जमती नहीं और निब खराब नहीं होता इसका रंग कभी काला किंवा फीका नहीं पड़ता। मूल्य फी बोतल ॥=) ग्यारह आने।

५, ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट,
कलकत्ता १—५—२१

डाक्टर एस, के, वर्म्मन।

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मुदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240

वर्ष २] पौष १९७८—जनवरी १९२२ [खण्ड २, संख्या ६

ज्योति

नि

क मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए. विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय-सूची।

विषय	पृष्ठ
१—अचल सत्याग्रही [कविता] लेखक—श्री० सुरेन्द्रनाथ तिवारी।	४५३
२—वेद और राष्ट्रभाव, लेखक—प्रोफैसर विश्वनाथ विद्यालङ्कार।	४५४
३—निज बीती किसे सुनाऊँ [कविता] लेखक श्रीयुत हरिशंकर भट्ट बी. ए.	४५६
४—जीवाणुओं के अद्भुत खेल, लेखक—श्री० प्रो०रामशरण जी सक्सेना एम.एस.सी.	४५७
५—रहा क्या शेष है [कविता] लेखक—श्रीयुत दुर्गादत्त त्रिपाठी।	४६२
६—अकाल पीड़ित भारत, लेखक—श्रीयुत हरिश्चन्द्र बी. ए.	४६३
७—आकांक्षा [कविता] लेखक—श्रीयुत भगवती चरण।	४६७
८—गीतामृत, लेखक—श्रीयुत प्रो०गोपाल दामोदर तामसकर एम. ए. एल. टी.	४६८
९—प्रातःकाल की उपासना [कविता] लेखक—श्रीयुत "मराल"	४७१
१०—फूल, लेखक—श्री० गुलाब।	४७१
११—अभिमन्यु [कविता] लेखक—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद काशी।	४७५
१२—"भारत की तीन बीर बालाएँ" कर्म्मदेवी, कमलावती और कर्णवती अर्थात पुत्र की माता पत्नी और बहिन, लेखक—श्री० गौरीशंकर शर्म्मा।	४७६
१३—भारतीय युवकोद्गार [कविता] लेखक—श्री० गोविन्ददास गुप्त।	४८२
१४—वैज्ञानिक संसार।	४८३
१५—हमारी मञ्जूषा।	४८४
१६—कुसुमोद्यान।	४८६
१७—विचार प्रवाह।	४८९
१८—वनिता विनोद।	४९३

———

हिन्दी साहित्य में नई वृद्धि

श्रीसयाजी साहित्य माला।

बड़ोदा राज्य के स्कूल तथा लायब्रेरियों के लिए मंजूर, राज्य द्वारा प्रकाशितः—

हिन्दी पुस्तक

॥) भेज स्थायी ग्राहक बनो।

तुलनात्मक धर्म्म विचार यह कैंब्रिज के प्रोफेसर जेवन्स की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें प्रोफेसर साहब ने संसार के सब मतों वा धर्म्मों की तीव्रआलोचना के साथ जो आर्य्य वा हिंदुधर्म्म पर आक्षेप किए हैं उनका विद्वत्ता पूर्ण उत्तर अनुवादक महोदय की भूमिका में प्रत्येक हिंदू वा आर्य्य धर्म्माभिमानी को पढ़ना चाहिए। सजिल्द १)

श्रीसयाजी बाल ज्ञान माला

श्रीहर्ष भारत के अंतिम सम्राट का जीवन वृत्तांत मूल्य ॥)

कोष की कथा वैज्ञानिक सचित्र पुस्तक में सेल (Cell) का सरल भाषा में पूर्ण परिचय दिया है। मूल्य ॥)

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला।

(लेखक राज्यरत्न आत्माराम जी अमृतसरी)

सृष्टि विज्ञान डारविन के विकासवाद ने आधुनिक पश्चिमीय विचार पर पूरा प्रभुत्व जमा लिया। मनुष्य की शारीरिक सामाजिक आत्मिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति को विकास की ही कसौटी पर कसा जाता है। इस पुस्तक में डारविन के सिद्धान्त की समालोचना की है और युक्तियों द्वारा यह सिद्ध किया है कि न तो यह सिद्धान्त सृष्टि के सब नियमों को समर्थन करता है और न ही यह मनुष्य को आगे के लिए सुमार्ग दर्शाता है साथ ही वेदोत्पत्ति, ईश्वर सत्ता अमैथुनि सृष्टि इत्यादि कितने ही विषयों पर बड़े खोज मनन और परिश्रमसे लिखा है पश्चिमी सभ्यता के वि से चकाचौंध होने वालों के लिए पुस्त काम की है। पुस्तक सर्वथा ध्येय और करने योग्य है। सचित्र पौने तीन सौ पृ पुस्तक का मूल्य २) प्राप्ति स्थान—

जयदेवब्रदर्स बड़ो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

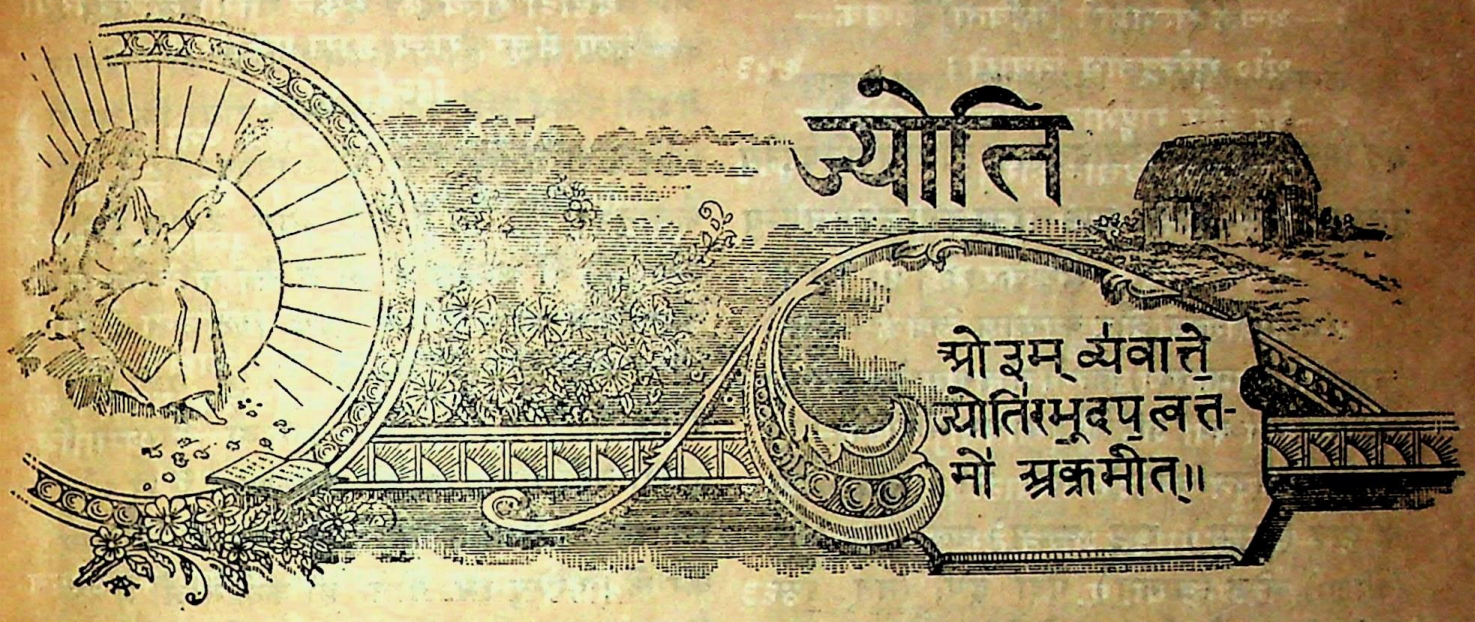

वर्ष २ | पौष १९७८—जनवरी १९२२ | संख्या ९

अचल सत्याग्रही।

ले०—श्री० सुरेन्द्रनाथ तिवारी

(१)

पिता का देख प्रचुर दौरात्म्य;
हिला प्रण से न प्रणी प्रहलाद।
अचल था उसका वह सिद्धान्त;
हृदय में अतुलित था अह्लाद।
कहो फिर क्या था इसका सार?
अचल सत्याग्रह का आधार।

(२)

अनल में पड़ा होलिका साथ;
मगन था सत्याग्रह में वीर।
जली होली प्रगटा प्रहलाद;
निकलता रवि ज्यों तमको चीर।
अनल को अनिल बनाता मार;
अचल सत्याग्रह का आधार।

(३)

चढाया ऊंचे पर्वत शीर्ष;
गिराया नीचे पवि के धाम।
किन्तु क्या देखा उसका हाल;
लिख रहा था वह बैठा 'राम'।
बनाता पवि को पुष्पाकार;
अचल सत्याग्रह का आधार।

(४)

कुचलवाया हाथी के तले;
परीक्षा का परिपूरण अन्त।
बचा फिर भी-ली खड्ग निकाल;
खम्भ से उपजी शक्ति अनन्त।
हुआ अन्यायी का संहार;
अचल सत्याग्रह का आधार॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेद और राष्ट्र भाव

लेखक—प्रोफैसर विश्वनाथ विद्या लङ्कार

भद्रं इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंजमन्यु

अथर्व० १९। ४१। १।

(भद्रम्) सुख और कल्याण को (इच्छन्तः) चाहते हुए (स्वर्विदः) स्वार्थी जीवन वाले (ऋषयः) ऋषियों ने (अग्रे) पहिले (तपः) तप और (दीक्षाम्) दीक्षा की (उपनिषेदुः) शरण ली। (ततः) उस के बाद (राष्ट्रम्) राष्ट्र (बलम्) बल (च) और (ओजः) ओज (जातम्) पैदा हुए; (तत्) इस लिये (देवाः) हे देव लोगो! (अस्मै) इस राष्ट्र भाव, राष्ट्रीय बल और राष्ट्रीय ओज को (उप) प्राप्त करो और (संजमन्यु) एक होकर इसे नमस्कार करो।

भावार्थ—यह मन्त्र राष्ट्रीय भावों का वर्णन करता है राष्ट्र के मूल सिद्धान्त इस मन्त्र में पाए जाते हैं। वे निम्न लिखित हैं।

(१) आरम्भ में राष्ट्र का भाव नहीं था। राष्ट्र-भाव की उत्पत्ति पीछे से हुई है। आरम्भ में राष्ट्र भाव नहीं था, इस कथन के दो अभिप्राय हो सकते हैं।

(क) आरम्भ में मनुष्य अपने २ कर्त्तव्य को समझते थे अतः वे अनधिकार चर्चा नहीं किया करते थे। अतः उस समय "हम एक राष्ट्र के हैं" ऐसा भाव जागृत ही नहीं हो सकता था। शनैः २ जब मानुष नीच प्रकृति ने उन की उत्तम प्रकृति को दबा लिया, और मनुष्य लोभवश तथा स्वार्थवश होकर अनधिकार चर्चा करने लगे, तब एक संगठन की आवश्यकता हुई जिस से कि वे शत्रुओं से अपनी रक्षा कर सकें, तब राष्ट्र भाव की जागृति हुई।

(ख) दूसरा अभिप्राय यह हो सकता है कि आरम्भिक मानुष सृष्टि मूर्ख थी। अतः उस में राष्ट्र भाव पैदा होना सम्भव ही न था। संसार ने शनैः २ जब उन्हें यह अनुभव कराया कि अपनी रक्षा के लिये एक सङ्घ की आवश्यकता है, तब क्रमानुक्रम से उन में राष्ट्र भाव उत्पन्न हुआ। ऊपर की दो कल्पनाओं में से वेद की कौन सी कल्पना अभिमत है, यह अभी विचारणीय है। तो भी वेदों के स्वाध्याय से प्रतीत यही होता है कि वेदों को पहिली कल्पना अभिमत है दूसरी नहीं। उपरोक्त दो कल्पनाओं में से कौन सी कल्पना सत्य है, यह विद्वान् स्वयं निश्चय कर लें। परन्तु इन दोनों ही कल्पनाओं में यह सिद्धान्त सामान्य है कि आरम्भ में राष्ट्र भाव न था, राष्ट्र भाव की उत्पत्ति पीछे से हुई है।

(२) दूसरी बात ध्यान के योग्य यह है कि मन्त्र में यह स्पष्ट बताया है कि राष्ट्र पैदा किया जाता है यह कोई नित्य वस्तु नहीं। उसी ज़मीन और उन्हीं मनुष्यों के होते हुए भी एक समय में उस मनुष्य समुदाय को हम राष्ट्र कह सकते हैं और एक समय में नहीं भी कह सकते। ज़मीन राष्ट्र नहीं, मनुष्यों का जत्था राष्ट्र नहीं, एक ज़ात के मनुष्य राष्ट्र नहीं, अपितु राष्ट्र एक और ही वस्तु है, जो इन मनुष्यों में पैदा की जा सकती है। उस वस्तु के होते हुए उसी ज़मीन पर रहने वाला वही मनुष्यों का जत्था राष्ट्रपद से कहलाने योग्य हो जायगा। ज़मीन और मनुष्यों के एक समान रहते हुए, वह देश अराष्ट्र से राष्ट्र में तबदील हो सकता है, और राष्ट्र से अराष्ट्र में। अर्थात राष्ट्र का होना तद्देशवासियों की इच्छा-शक्ति और कृति शक्ति पर निर्भर है।

(३) परन्तु प्रश्न यह है कि देश को राष्ट्र में परिवर्तित करने के लिये किस वस्तु की परम आवश्यकता है? इस का उत्तर मन्त्र स्वयं दे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहा है, कि "तप और दीक्षा की"।

उद्देश्य की प्राप्ति के लिये चाहे जितने भी कष्ट आवें उन्हें सहना और खुशी से सहना, यही तप है। यदि हम देश को राष्ट्र मे परिवर्तित करना चाहते है, तो इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हमारे ऊपर जितने भी कष्ट आवें उन्हें हम खुशी से सहलें और धैर्य कर उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हम आगे पग बढ़ाते जावें—यही तप है। तप में रहने का भाव आता है न कि मरने का। और दीक्षा का अर्थ है—व्रत तथा नियम। तप भूमि तय्यार करता है, व्रत तथा नियम के लिये। न ही अतपस्वी, अपने जीवन को नियम बद्ध ही कर सकता है। उदाहरणार्थ हम ने अपना यह उद्देश्य बना लिया कि हम ने भारतवर्ष को स्वराज्य दिलाना है। इस उद्देश्य की ओर चलते हुए हमें कई कष्टों का सामना करना पड़ेगा, अगर ये कष्ट आवें और हम इन्हें सहलें, और खुशी से सहलें, तो यही हमारा तप का जीवन होगा। परन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हमें कई व्रत धारण करने पड़ेंगे, तथा कई नियम। यथा भारत की वर्तमान अवस्था के अनुसार (१) असहयोग (२) कर का न देना (३) सेना की मदद न करनी आदि व्रतों, नियमों का धारण करना आवश्यक है, यदि हम भारत को स्वराज्य की हालत में पहुंचाना चाहते हैं। इन व्रतों और नियमों का धारण करना, इनके पालने के लिये प्रतिज्ञा करना, यही दीक्षा है।

(४) देश के मुखिया तथा पूर्ण सदाचारी और दूरदर्शी लोगों को अपना वैयक्तिक सुख छोड़ कर अग्रसर होना यह तीसरी शर्त है, जो देश को राष्ट्र में परिवर्तित करने के लिये आवश्यक है। इसी शर्त को दिखाने के लिये ही ऊपर के मन्त्र में "ऋषयः स्वर्विदः" ये दो पद दिये हैं। ऋषि उन लोगों को कहते है, जो कि भविष्यद् के देखने वाले होते हैं, जो कि युक्ति तथा अनुभव के द्वारा नहीं, वरंच अपनी आत्मिक शक्ति के द्वारा साध्य वस्तु के तत्व को जान लेते हैं। "स्वर्विदः" का अर्थ है वे मनुष्य जिन्होंने कि अपने कर्मों द्वारा इसी देह में स्वर्ग प्राप्त कर लिया है। जिन का जीवन इस मर्त्य लोक पर भी स्वर्गीय है। ये लोग सदाचार के कितने आदर्श होंगे इस बात को पाठक स्वयं अनुभव कर सकते हैं। जब तक ये ऋषि, जो कि स्वर्गीय जीवन के आनन्द में मग्न हैं, अपने वैयक्तिक स्वर्गीय आनन्द को त्याग कर, देश के सामुदायिक आनन्द को अपना आनन्द नहीं समझते, तब तक किसी देश का राष्ट्र बन जाना असम्भव है। महात्मा गान्धी का जीवन और भारत की वर्तमान हलचल, इस तीसरी शर्त के स्वरूप को अच्छे प्रकार प्रगट कर रहे हैं।

(५) राष्ट्रभाव क्यों पैदा करना चाहिये? राष्ट्र भाव के क्या लाभ हैं? इसका उत्तर "भद्रमिच्छन्नः" पदों द्वारा दिया है। भद्र शब्द भदू धातु से बनता है। भदू धातु के दो अर्थ होते हैं। (क) सुख, (ख) कल्याण। सुख का अभिप्राय अभ्युदय से है, और कल्याण का निःश्रेयस से। अर्थात् प्रेय और ज्ञेय दोनों मार्गों की सिद्धि राष्ट्रीय भाव के बिना नहीं हो सकती। अतः इस लोक और परलोक को सुधारना ही राष्ट्र भाव का फल है।

(६) जनता या देश जब राष्ट्र बन जाता है तब ही उस जनता या देश में राष्ट्रीय बल और राष्ट्रीय ओज़ पैदा होता है। जो देश राष्ट्र में परिणत नहीं हुआ उस देश में राष्ट्रीय बल और राष्ट्रीय ओज़ पैदा नहीं हो सकता। बल की परख़ तो बाधायें उपस्थित हो जाने पर होती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है, और ओज़ की परख बाधाओं के सर्वदा दूर रहने में होती है। हाथी में बल है और शेर में ओज़ है। राष्ट्र भाव अपने शारीरिक, सैनिक, बुद्धि तथा कोष के बल से अपने शत्रुओं पर विजय पा लेता है तब उस राष्ट्र में एक विशेष प्रकार का ओज़ पैदा हो जाता है। प्रत्येक स्वतन्त्र देश के व्यक्तियों में ओज़ हुआ करता है। भारत के पठान में बल है परन्तु उस के सन्मुख खड़े हुये एक स्वतन्त्र देश के बालक में ओज है। इस ओज के प्रताप से वह बली पाठन के दम को भी खुश्क कर देता है। बल और ओज में यही अन्तर है।

(७) अतः देश के सभी देवों का यह फ़र्ज़ है कि वे इस राष्ट्र भाव की प्राप्ति के लिये उद्योग करें। क्योंकि देव नाम विद्वान् सदाचारी लोगों का है। समाज के यही मुखिया हुआ करते हैं। जब तक मुखिया लोग आगे नहीं बढ़ते तब तक जनता भी आगे नहीं बढ़ती। जनता को उत्साह देने वाले तथा उस के भाग्य दर्शक देव लोग ही होते हैं। अतः देवों का फ़र्ज़ है कि वे राष्ट्र भाव की प्राप्ति के लिये अवश्य उद्योग करें। और राष्ट्र-भाव, राष्ट्र-बल तथा राष्ट्र ओज, के सामने सीस नवावें। ऋषि कोटि के लोग तो राष्ट्र भाव के प्रवर्तक होते हैं ऋषि देवों को रास्ता दिखा देते हैं और तत् पश्चात् ये देव लोग सर्व साधारण जनता के मार्ग दर्शक होते हैं।

(८) जनता में राष्ट्र भाव के गौरव को बैठाने के लिये यह आवश्यक है कि देवों में परस्पर मतभेद न हो। यदि राष्ट्र भाव के फलाफल के विचार में देवों में परस्पर मतभेद है तो जनता दृढ़ रूप से राष्ट्र भाव के महत्व को न जान सकेगी। अतः जहां तक हो सके देश के देवों में राष्ट्र भाव सम्बन्धी मत भेद न होने चाहियें। देश के सभी देवों को मिल कर राष्ट्र भाव की उन्नति में सहयोग देना चाहिये। यही मन्त्र के "सम्" पद का अभिप्राय है।

(९) उपनिषेदुः पद से उपनिषद् पद का सूझना स्वाभाविक है। सम्भवतः यह या कोई अन्य वैदिक पद वर्तमान उपनिषदों में उपनिषद् नाम की प्रवृत्ति का मूल है।

निज बीती किसे सुनाऊँ ?

ले० श्रीयुत हरिशंकर भट्ट बी० ए०

(१)

किसने दिया उजाड़ है, तेरा सुखद-निवास।
कैसे तू निर्धन हुआ, पाता निशिदिन त्रास।
मैं किसका नाम बताऊँ ?
निज बीती किसे सुनाऊँ ?

(२)

मूक प्रथम ही था बना, रसना भी ली काट।
छलिया ने सब देहका, लूट लिया है चाट।
हा ! कैसे दिवस बिताऊँ ?
निज बीती किसे सुनाऊँ ?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३)

मरने को तय्यार हूं, पर न निकलता प्राण।
मौत निगोड़ी भी नहीं, आती हे भगवान!
अब किसकी टेर लगाऊँ?
निज बीती किसे सुनाऊँ?

(४)

रक्षक हैं भक्षक बने, सेवा में है लोभ।
आश-लता फलती अहो, विषम-भयंकर क्षोभ।
मुंह अपना किसे दिखाऊँ?
निज बीती किसे सुनाऊँ?

जीवाणुओं के अद्भुत खेल।

(iii)

ले० श्री० प्रो० रामशरण जी सक्सेना एम. एस. सी.

भारत वर्ष जैसे कृषि प्रधान देश में जो स्थान गो पालन को दिया जाता है वह शायद ही किसी अन्य कार्य के लिये दिया जाता हो। गौ के नाम के साथ जो पवित्रता का भाव प्रत्येक आर्य के मन में उत्पन्न होता है वह किसी से छिपा नहीं है। इसी लिये गौ को गो माता के नाम से पुकारते हैं। बाज़ २ घरों में तो गौ की पूजा भी की जाती है। गोपाष्टमी का प्रसिद्ध त्योहार सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है। कारण यह है कि आर्य वर्त कृषि प्रधान देश है और खेती के सारे काम गोमाता के पुत्र, बैलों, पर ही निर्भर हैं। दूसरे निर्मास भोजन करने वालों के लिये गोमाता के दूध से बढ़ कर और अन्य कोई पदार्थ उतना पुष्टि कारक नहीं। आज कल तो काल और अवस्थाओं के वश यह हालत हो गई है कि लोगों को घी दूध की बड़ी ही तंगी है। हज़ारों की संख्या में ऐसे घर हैं जहां घी दूध के मुद्दत से दर्शन नहीं हुए। और यह तंगी नित्य बढ़ती ही जाती है। इन दिनों में इतनी महंग है कि यह केवल असाधारण व्यक्तियों के लिये ही भोज्य पदार्थ रह गये हैं। प्राचीनकाल के विषय में कहा जाता है कि यहां दूध की धारा बहती थी। इस में कुछ अत्युक्ति भी प्रतीत नहीं होती क्योंकि यहां पर अतिथियों का सत्कार दूध दही से ही किया जाता था और यह पदार्थ कभी मोल नहीं बिकते थे किन्तु मुफ्त मिलते थे। यही कारण है कि इन दिनों में "घी बेचने वाला" यह एक गाली समझी जाती थी। यह तो अभी थोड़े ही दिनों की बात है और सम्भवता अब भी किसी २ ग्राम में होगी, कि वहां के लोग दूध नहीं बेचते। यदि किसी व्यक्ति को आवश्यकता हो तो दूध मोल नहीं मिलता मुफ्त कभी २ मिल जाता है।

भारत वर्ष में जब दूध की इतनी अधिकता थी और दूध, दही, प्रत्येक घर में होता था तो इस प्रकार की दुग्धशाला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(Dairy) नहीं होती थी जैसी कि आज कल पाश्चात्य देशों में है और जिन की नकल भारत वासी भी कर रहे हैं। यह तो दूध दहीं की विक्री के कारखाने हैं जहां रुपया पैदा करना और बड़ा लाभ उठाना ही एक मात्र अभिप्राय है। वह लोग अपनी दुग्धशाला के लिये केवल ऐसे ही पशु रखते हैं जिन से दूध की प्राप्ति खूब होती है जिन के मन में गो पालन तथा गो रक्षा का बिलकुल ध्यान नहीं होता। जो भारतीय गो शालायें हैं वहां पर गो पालने और गो रक्षा का विचार मुख्य है और दुग्ध की उत्पत्ति गौण है। यही कारण है कि यहां देशीय गो शालायें प्रायः घाटे पर चलती हैं। और उन्हें सदैव दान की आवश्यकता होती है। इन गो शालाओं में जो कुछ भी दुग्ध की प्राप्ति होती है वह दुग्ध के रूप में ही बाज़ार में बिक जाती है। ऐसे देशी कारखाने भारत वर्ष में दो चार ही होंगे जहां दुग्ध शालाओं की पूरी २ नकल की गई हो और वहां पर दूध के भिन्न २ पदार्थ बना कर बेचे जाते हों।

हमें भय है कि हमने गो शाला पर टिप्पणी करते हुवे अपने पाठकों को इस लेख के मुख्य नेताओं से दूर रक्खा है। हमारे इतना कुछ कहने का अभिप्राय यही था कि जहां कहीं दुग्ध शालायें हैं उन की सफलता भी केवल इन्हीं जीवाणुओं पर निर्भर है। पाश्चात्य देशों में दुग्धशाला कृषि का ही एक अंग समझा जाता है। जो लोग दुग्ध शाला रखते हैं उन के पास पशुओं के चारे के लिये पर्याप्त भूमि भी होती है जिस में वह अनाज भी उत्पन्न करते हैं और पशुओं के लिये चारा भी हो जाता है। जीवाणुओं का जो सम्बन्ध, कृषक से, खेती द्वारा है उसका वर्णन इस से पहिले लेख में आ चुका है अब यह बतलाते है कि दुग्ध के कार्य में ये जीवाणु कहां तक सहायक और कहां तक विरोधी हैं।

यदि गाय को कोई रोग न हो और उस का स्वास्थ्य उत्तम हो तो उस के दूध में किसी प्रकार के जीवाणु उपस्थित नहीं होते ऐसी गाय का दूध सावधानी से निकाला जावे तो ताज़ी अवस्था में जीवाणुओं से रहित होता है। यदि इस दूध को कुछ देर तक रक्खा जावे तो इस में फिर जीवाणुओं की उत्पत्ति होने लगती है और जितनी देर का दूध निकला हुवा होता है उस में उतने ही जीवाणु अधिक हो जाते हैं। गाय का दूध जब थनों से बाहर आता है तो उस में जीवाणुओं का कई स्थानों से प्रवेश हो सकता है जैसे (१) गाय से (२) दूध दोहने वाले से (३) दूध के बर्तन से (४) दूध निकालने के स्थान से।

हम ऊपर कह चुके हैं कि जीवाणु कहां २ पाये जाते हैं। जो पशु कि मैले रहते हैं उन में तो जीवाणुओं के झुण्ड के झुण्ड स्थान २ पर पाये जाते हैं। बालों में, पूंछ में और पूछ के नीचे तो ये विशेषतः इकट्ठे रहते हैं। दूध निकालते समय गाय की पूंछ तथा बालों से एक बड़ी संख्या जीवाणुओं की दूध में प्रविष्ट हो जाती है गाय के पूंछ या सिर हिलाने से कभी २ गोबर या फूंस का टुकड़ा दूध में जा पड़ता है वह भी अपने साथ बहुत से जीवाणु ले जाता है और साधारणतया लोग यह समझते हैं कि ऐसे दूध को छन्ने या मोटे कपड़े में छानने से दूध निर्मल, शुद्ध होजाता है। परन्तु यह विचार सर्वथा अशुद्ध है क्योंकि जहां हमने इन जीवाणुओं की लम्बाई मोटाई बतलाई है उस से यह स्पष्ट है कि छानने का कपड़ा कैसा ही मोटा क्यों न हो ये जीवाणु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उस में से बड़ी सुगमता से निकल जाते हैं और जीवाणुओं की दृष्टि से यह दूध उतना ही मैला बना रहता है जितना कि वह छानने के पूर्वथा। गौ के थनों में भी जीवाणु बड़ी संख्या में उपस्थित होते हैं। दूध निकल चुकने के पश्चात् जो एक दो बूंद दूध थन के छिद्र में रह जाता है उस में जीवाणु बड़ी तीव्रता से उत्पन्न होते हैं। और अगली बार दूध निकालने के समय तक थनों में जीवाणुओं की बड़ी संख्या उत्पन्न हो जाती है। ये जीवाणु थनों के धोने से पृथक् नहीं होते किन्तु जब बछड़ा दूध पीता है तो इन की बड़ी राशि उस के पेट में चली जाती है। यदि ऐसा न किया जावे और दूध वैसे ही निकाल लिया जावे तो जीवाणु दूध में ही चले जावेंगे और वहां पर अपना कार्य तीव्रता से करेंगे।

जहां कहीं दूध मशीनों द्वारा नहीं निकाला जाता और लोग दूध अपने हाथों से दोहते हैं वहां पर दूध दोहने वाले के मैले वस्त्र और मैले शरीर से बहुत से जीवाणु दूध में पहुंच जाते हैं। दूध दोहने वाला अपने हाथों को पानी से धो कर सन्तुष्ट हो जाता है कि अब दूध में किसी प्रकार का गन्द उस के शरीर से नहीं पहुंच सकता। वह यह नहीं जानता कि जीवाणुओं के जत्थे के जत्थे दाढ़ी, मूछ, नाक और सिर के वालों में उंगलियों के नाखुनों के नीचे और उस के मैले वस्त्रों में उपस्थित हैं जो दूध निकालते समय बड़ी संख्या में दूध में झड़ जाते हैं और उस पर बराबर अपनी क्रिया करते रहते हैं।

जिस बरतन में दूध निकाला जाता है वह शुद्ध होना चाहिये। उस की शुद्धि केवल जल से धोने से नहीं होती। यदि वह पात्र मिट्टी का है तो उस के खुर्दरे भाग में बड़ी संख्या जीवाणुओं की उपस्थित होती है। यदि यह पात्र जीवाणुओं से रहित न किया जावे तो वह उस में एकत्रित होते रहते हैं और जब दुग्ध उस में निकाला जाता है तो उस पर बड़ी तेज़ी से कार्य आरम्भ करते हैं। प्रायः दूध, पात्र शुद्ध न होने के कारण ही बिगड़ जाता है।

पशु जहां बन्धे रहते हैं वहां पर उन का मूत्र गोबर, और चारे के तिनके गिर जाने से सड़ाव होता रहता है। और भिन्न २ प्रकार के जीवाणु वहां की पृथिवी पदार्थों और वायु में उपस्थित रहते हैं। दूध निकालते समय बहुत से जीवाणु इन गन्दे स्थानों से दूध में प्रविष्ट हो जाते हैं और यदि इन के मारने और इन की वृद्धि को रोकने का कोई उपाय न किया जावे तो ये दूध को बड़ी जल्दी खराब कर डालते हैं।

इन हानिकारक जीवाणुओं से दूध की रक्षा करने के लिये यही उपाय किया जासकता है कि पशुओं को खूब साफ़ रक्खा जावे। दूध निकालने वाला भी सफ़ाई से काम ले। दूध के पात्र को खौलते पानी से धो डाले जिस से उस के भीतर के जीवाणु मर जावें उसे धूप में रख देने से भी पात्र शुद्ध हो जाता है। केवल जल से धो लेने से उस की सफाई नहीं होती। दूध भी साफ स्थान में ही निकालना ठीक है जिस से हानिकारक जीवाणुओं का उस में प्रवेश न होसके। परन्तु इन सब से बड़ी उत्तम विधि यह है कि ज्यों ही दूध निकाला जावे त्यों ही इसे उबाल लिया जावे जिस से वे सब जीवाणु जो उस में प्रविष्ट हो गये हैं नष्ट हो जावें। जहां कहीं कच्चे दूध को दूर भेजना होता है तो उस में कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ मिला दिये जाते हैं जिन से जीवाणु मर जावें जैसे उद्रजन परोषित (Hydrogen Pero xide) या फार्मेल्डिहाइड (Farmaldihyde) इत्यादि।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो दूध तुरंत ही उबाल लिया जाता है उस में उपस्थित हानिकारक जीवाणुओं का नाश तो अवश्य हो जाता है परन्तु यदि वह दूध फिर भी देर तक रक्खा रहे तो बाहर से वायु द्वारा हानिकारक जीवाणुओं का इस में पुनः प्रवेश हो जाता है जो दूध को खराब कर डालते हैं। गरमी की ऋतु में प्रायः देखा गया है कि प्रातः काल का दूध सायं काल तक रक्खा रहने से बैठ जाता है उस में खटास सी आ जाती है। पानी अलग होने लगता है। यह सब हानिकारक जीवाणुओं की क्रिया के कारण ही होता है। दूध को देर तक सुरक्षित रखने के लिये ऐसे पात्र बने होते हैं जिन में से जीवाणुओं को पृथक् करके गरम दूध भर सकते हैं और वायु चूस कर ऐसा बन्द कर देते हैं कि वायु का उस में प्रवेश न होसके। इस प्रकार बन्द किया हुआ दूध देर तक रह सकता है।

कभी २ दही वसीली और अत्यन्त ही खट्टी बनती है। यह तब ही होता है जब कि हानिकारक जीवाणुओं का कहीं से उस में प्रवेश हो जाता है। प्रायः दुग्ध काम्ल (Lactic acid) उत्पन्न करने वाले जीवाणु (जिन को Bacillus acidic lactii कहते हैं) प्रविष्ट हो जाते हैं। ये जीवाणु दूध की खांड (दुग्ध शर्करा, Milk Sugar) पर क्रिया कर के उसे दुग्ध काम्ल में परिवर्तित कर देते हैं। इस काम्ल के कारण दूध खट्टा होकर दही का रूप धारण कर लेता है। जब तक खटास कम रहती है ये जीवाणु अपना कार्य करते हुए बढ़ते रहते हैं परन्तु खटास बढ़ने पर ये स्वयम् नष्ट होने लगते हैं।

भिन्न २ जीवाणुओं की उपस्थिति से दूध पर भिन्न २ प्रभाव पड़ते हैं। जैसा कि ऊपर बताया जाचुका है जिन घरों में दही नित्य जमाई जाती है वह इन हानिकारक जीवाणुओं के कार्य से भली भान्ति परिचित हैं। दही कभी मीठा जमता है कभी खट्टा कभी कड़वाहट लिये हुए होता है जिस में गन्ध भी अच्छी नहीं होती। कभी २ दही का स्वाद बड़ा तीखा या साबुन का सा हो जाता है। कभी २ वह ऐसा चिपचिपा हो जाता है कि उस में तार खिचने लगते हैं। कभी कभी दूध वसीला होकर पीले पीले या लाल से रंग का हो जाता है।

ये सब आपत्तियें भिन्न २ प्रकार के जीवाणुओं से ही होती हैं यदि गौ भली प्रकार शुद्ध स्थान में रखी जाये, दूध दोहने में भली प्रकार इन जीवाणुओ को ध्यान में रखा जावे दूध के वर्तन भली भांति स्वच्छ और शुद्ध रखे जावें, और अन्त में दूध के ताप परिमाण पर जैसा आगे बताया जायगा, विशेष ध्यान रखा जावे, तो दूध की बहुत कुछ रक्षा हो सकती है। इन बातों पर जितना अधिक ध्यान दिया जावेगा उतना ही अधिक शुद्ध और निर्मल दूध मिलेगा। केवल दूध ही नहीं यदि कच्चे घी को देर तक रक्खा जावे तो दो चार दिन में ही उसमें भी सड़ांद उठने लगती है और बड़ी दुर्गन्ध आने लगती है। इसका भी कारण यही है कि घी पर घृत काम्ल (Butyric Acid) उत्पन्न करने वाले जीवाणु जा पहुंचते हैं जो घृत पर क्रिया करके उसको कई पदार्थों में विभक्त कर देते हैं तिन में से कई दुर्गन्ध देने वाले भी होते हैं। इसलिये कच्ची लौनी से घी निकालने के लिये उसे खूब उबाल देते हैं जिससे जल का भाग उड़ जाता है, अन्य छाल इत्यादि पदार्थ ऊपर मैल के रूप में आजाते हैं, और नीचे निर्मल शुद्ध घी रह जाता है जो देर तक नहीं बिगड़ता।

परन्तु यदि यह घृत भी सावधानी से न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रक्खा जावे तो एक दो मास में ही यह भी बिगड़ जाता है।

दूध, खोया और अन्य घी के बनाये हुवे पदार्थ भी इन्ही हानि कारक जीवाणुओं की क्रिया से बिगड़ जाते हैं।

इस प्रकार संक्षिप्त रूप से हमने जीवाणुओं की क्रिया का काला परदा सामने रक्खा है। इससे यह न समझना चाहिये कि दूध के बिगाड़ने के लिये केवल हानिकारक जीवाणु ही होते हैं। बल्कि दूध के बने जो भिन्न २ पदार्थ (दही, पनीर, मक्खन, घी आदि) हमारे खाने के काम में नित्य आते हैं उनके बनाने में जीवाणुओं का मुख्य भाग होता है। यदि भिन्न भिन्न प्रकार के जीवाणु उपस्थित न हों तो जिस सुगमता से यह पदार्थ उनकी उपस्थित में मिल जाते हैं उस सुगमता से उनकी अनुपस्थिति में न मिल सकेंगे।

सबसे पहिले तो दही बनाने वाले जीवाणु हैं जिनसे पाठक भली प्रकार परिचित होंगे। जिस समय दूध उबल कर तय्यार हो जाता है तो उसका दही बनाने के लिये उसे पात्रमें डाल कर जामन डालते है। यह जामन खट्टी छाछ या दही होती है। और इसकी (Inoculation) की क्रिया द्वारा खट्टी छाछ में जो दही बनाने वाले जीवाणु उपस्थित होते हैं वे दूध में प्रविष्ट हो जाते हैं जहां पहुंच कर वह अपना कार्य तेजी से आरम्भ करते हैं। कुछ समय में यदि अवस्थायें अनुकूल हों तो बड़ी अच्छी दही बन कर तय्यार हो जाती है। यदि अवस्थायें अनुकूल न हों तो यातो दही देर में बनती है या अच्छी नहीं बनती पहिले बताया जा चुका है कि जीवाणु साधारण तया अधिक ऊंचे या नीचे ताप परिमाण पर अपने कार्य में शिथिल पड़ जाते हैं। यही कारण है सरदियों में कभी २ अधिक ठंड होने के कारण दही नहीं बनता। अधिक सरदी के समय दूध का ताप परिमाण जीवाणुओं के अनुकूल करने के लिये उसे कुछ ताप देना पड़ता है। गरमी की ऋतु में इसके विरुद्ध करना पड़ता है। सड़ाव के कारण ताप अधिक न बढ़ जावे इस लिये दूधको कुछ ठण्डा रखना पड़ता है जमाते समय भी यही सावधानी की जाती है। सरदी में दूध कुछ गरम अवस्था में और गरमियों में ठण्डी अवस्था में जमाने को रक्खा जाता है जिस से जीवाणु भली प्रकार क्रिया कर सकें।

इस विधि से दही बनाने वाले जीवाणु खट्टी छाछ या दही में उपस्थित होते हैं। यदि किसी और प्रकार से ये जोवाणु प्राप्त होसकें तो वह भी यही क्रिया करेंगे। इन जीवाणुओं को अन्य जीवाणुओं से पृथक् करना कठिन कार्य है। परन्तु इन्हें अलग करके पालने के यत्न किये गये हैं और पले हुवे जीवाणुओं को दूध में जामन लगाने (In-oculate करने) के काम में भी लाया गया है। जरमनी में भिन्न २ जीवाणु पली हुई अवस्था में कांच की बन्द नालियों में विका करते थे और कई वर्ष तक इनका बड़ा प्रचार रहा परन्तु यह परीक्षण अधिक फली भूत न हुवा।

कच्चे दूध को बिलो कर मलाई (Cream) बनाई जाती है। उसको मक्खन में बदल देना जीवाणुओं द्वारा ही होता है। यदि तुरत की निकली हुई मलाई का मक्खन बनाया जावे तो अत्यन्त ही कम राशि में मक्खन बनेगा। मक्खन बनाने वाले जीवाणुओं को कार्य करने में समय लगता है इसी लिये कच्ची मलाई (Cream) को कुछ समय के लिये रख लिया जाता है जिससे जीवाणु भली प्रकार अपना कार्य करलें। प्रायः मलाई रात को रख दी जाती है और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसमें दही का जामन लगा दिया जाता है। प्रातःकाल तक जीवाणु अपना कार्य समाप्त कर चुकते हैं। सुबह को इस मलाई के विलोने पर उत्तम श्रेणी का स्वादिष्ट मक्खन प्राप्त हो जाता है। यह स्वादिष्ट सुगन्धित मक्खन, मलाई से जीवाणुओं की क्रिया द्वारा ही प्राप्त होता है। मक्खन का स्वाद और राशि ऋतु पर बहुत कुछ निर्भर होती हैं। जिस समय सर्दी अधिक न हो नाही गरमी हो तो मक्खन उत्तम बनता है और अधिक राशि में निकलता है। यदि मलाई देर तक रख छोड़ी जावे या कहीं से हानिकारक जीवाणुओं का इसमें प्रवेश हो जावे तो फिर मक्खन का स्वाद बदल जाता है।

इस प्रकार हमारे भोजन के और भी कई पदार्थ है जैसे पनीर और खमीरी आटा (जिस से भिन्न २ मिठाई बनाई जाती हैं) जिनमें जीवाणुओं का मुख्य भाग होता है और वहां पर वह हानि के स्थान पर बड़ी सहायता करते हैं।

इस लेख के चौथे और अन्तिम भाग में संक्षिप्त रूप से रंगों और जीवाणुओं के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला जावेगा।

रहा क्या शेष है!

लेखक—श्रीयुत दुर्गादत्त त्रिपाठी

तन का बल व्यय हुआ दासता करते करते।
अन्न और जल मिला न हम को मरते मरते॥
स्वजन सहायक भी सभी, हुए काल की भेंट।
अनाचारियों ने किया, जिन्हें समुद आखेट॥
दलित अति देश है।
नाम मात्र ही मांस रहा है शेष गात में।
रुधिर हमारा लखो गगन पर नित प्रभात में॥
रक्तरंजिता भूमि वह, जलियां वाला बाग़।
हम दीनों के खून के, जहां लगे हैं दाग़॥
मिले बहु क्लेश हैं।
भारत मां ने सभी गोद से लाल निकाले।
और युद्ध में उन्हें तुम्हारे किया हवाले॥
जो कुछ था सब दे दिया, तुम्हें मुदित तत्काल।
तजे तुम्हारे ही लिये, माता ने निज लाल॥
सतत निर्मोह है।
कहते हैं सब आज करो 'स्वागत' तन धन से।
आते हैं युवराज "रिनाउन" पर लंदन से॥
रहे नहीं धनधाम हैं, और न सुख के साज।
तुम्हीं कहो कैसे करें, उनका स्वागत आज॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation, USA

अकाल पीड़ित भारत

लेखक—श्रीयुत हरिश्चन्द्र बी० ए०

भारत को, बहुत चीज़ों में, संसार में सब से बड़ा होने का अभिमान है। आत्म-विद्या की मातृभूमि यह है। सब से बड़ी संसार की कलाकौशल का केन्द्र यह था। संसार की सर्वोपरि तथा सबसे पुरानी वैदिक सभ्यता का रङ्ग-स्थान यह था। संसार में सब से बड़ा पर्वत इस की रक्षा करता है, तो संसार में सब से ज्यादा तीव्र-धारा गङ्गा-इस के चरण चुम्बन करती है। परन्तु आज हम ज्योति के पाठकों को यह बताना चाहते हैं कि संसार में सब से बड़ा अभागा भारत दुर्भिक्ष का भी सब से बढ़कर केन्द्र स्थान हैं।

भारत पर दुर्भिक्ष का प्रकोप प्रायः इस वणिक राज्य के साथ प्रारम्भ हुआ है। जैसे २ इस राज्य के पैर जमते गये हैं वैसे २ ही अकालों की संख्या तथा भयानकता बढ़ रही है। इसका जो कारण है वह आगे चल कर बतावेंगे।

भारत में प्रथम अकाल ११वीं शताब्दी में पड़ा था। इस समय सबुकतगीन, महमूद, आदि मुसलमान लुटेरे राजा भारत भूमि पर प्रथम प्रादुर्भूत हुए थे। इस हिन्दु-मुसलमानों के लम्बे संघर्षण का यह फल हुआ कि ११वीं शताब्दी में २ अकाल पड़े।

बारहवीं शताब्दी में कोई अकाल नहीं पड़ा। मगर तेरहवीं में एक उत्तरीय भारत में पड़ा। ऐसे ही ज्यादातर राजकीय लड़ाई और झगड़ों से छोटे, और कभी वर्षा के अभाव से बड़े सब मिला कर, १४वीं में ३, १५वीं में २; १६वीं में ३ और १७वीं में ३ अकाल पड़े।

परन्तु लड़ाइयों में चाहे कितने आदमी मारे गए या मरे, हमें इन तमाम अकालों में कोई भी ऐसा दुर्भिक्ष नहीं मिला जिस में लोग भूख से मर गए हों। राजा लोग अपना कर्त्तव्य समझते थे कि, अकाल पीड़ितों को, सम्पूर्ण ख़ज़ाना ख़ाली करके भी जीता रक्खा जावे। फ़ीरोज़-शाह, और राणा उदयपुर के उदाहरण हमारे सामने हैं।

१८वीं शताब्दी में, भारत वणिक राज्य का भाग बनने लगा। जैसे जैसे, जिस जिस प्रान्त में इन भागवानों के पवित्र चरण पड़े अकाल उनके साथ गया। जितने अकाल ११वीं शताब्दी से लेकर १७वीं शताब्दी तक पड़े उन से संख्या में आधे परन्तु भयंकरता में कहीं चढ़ कर सिरफ़ १८वीं शताब्दी में ही पड़े।

इस के बाद १९वीं शताब्दी आई और कई लोगों की धारणा है कि यह शताब्दी सभ्यता में बहुत आगे थी। परन्तु यदि अकालों की संख्या के साथ सभ्यता का कोई भी सम्बन्ध है तो अवश्य १९वीं शताब्दी शिखर पर रहनी चाहिये। इस १०० साल में ३१ बड़े अकाल पड़े जिन में से पिछले २५ वर्षों में १८ और पहले ७५ में १३; अनुमानतः ३२५ लाख आदमी इन की भेट हुए।

इस के बाद बीसवीं शताब्दी आई। इस शताब्दी में एक बड़ा भारी अन्तर जो दूसरों से है वह यह है कि २१ साल गुज़र जाने पर भी केवल १ अकाल पड़ा है। परन्तु यह तब से है जब से शताब्दी का आरम्भ हुआ और, अभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लग रहा है। योरोप की शान्ति के पश्चात् इस का विशेष प्रकोप दीखने में आया है और आज कल तो इस का हाल सब जानते हैं। कविवर करतार सिंह ने सत्य कहा है—

हुन सदा ५६वें पए रहिंदे।
इस राज दियां एह बरकतां नें॥

इन में से बड़े बड़े अकालों का कुछ हाल नीचे दिया जाता है--

१—१७५१ में बंगाल प्रान्त में भयानक अकाल पड़ा। इस समय केवल बंगाल ही पूर्णतया कम्पनी के हाथ में था। और उस के नौकरों के काय्यों का फल रूप यह विकराल काल बंगाल में अब तक नहीं भूला। बंगाल की तिहाई आबादी मृत्यु का ग्रास हुई परन्तु तौ भी कर पूर्णतया वसूल किया गया। जो न मिल सका वह दूसरे साल पर डाल दिया गया।

२—१७८३ में मद्रास में अकाल पड़ा। इस को मरहटों, और मैसूर की लड़ाइयों ने ज्यादा रंगत दी थी।

३—१७९२ में बम्बई का अकाल। इस में मृत्यु का अन्दाज़ा ठीक न लगाया जासका था। यह तीनों इहाते प्रथम विदेशियों के कबज़े में आए थे और तीनों के नाम से (१) (२) अकाल प्रसिद्ध है।

४—इस के पश्चात युक्त-प्रान्त पर कम्पनी की कृपा दृष्टि पड़ी। और बनारस राज्य ख़ास तौर पर वारन हेसटिंगस का लक्ष्य बना—क्योंकि उस को मरहटों के साथ लड़ने के लिये धन, धान्य की आवश्यक्ता थी-अतः १७८४ में उत्तरीय भारत में एक भयंकर अकाल पड़ा। और काशी राज्य में इतने लोग मर गए कि तिहाई खेती बन्द हो गई।

५—१८०३ में बम्बई में फिर दुर्भिक्ष पड़ा। इस समय सरकार ने कुछ सहायता करने का यत्न किया। परन्तु तथापि मृत्यु की जन संख्या बड़ी भारी हुई।

६—१८०४ में उत्तर भारत में; १८०७ में मद्रास में और १८५३ में फिर बम्बई में अकाल पड़ा। गवरमैंट ने सस्ता अन्न करने के लिए Dnty आदि मुआफ़ कर के ही अपना कर्त्तव्य पूरा हुआ समझा।

९—१८२३ में ऊपर जैसा एक काल मद्रास में पड़ा। मगर १० साल पश्चात यह अति विकराल रूप धारण कर के आया। केवल गंटूर ज़िले की ५ लाख आबादी में से २ लाख मर गए। और मद्रास की गलियों तक में मुर्दे उठाने के लिए सरकारी प्रबन्ध करने की आवश्यक्ता पड़ी।

११—१८३७ में उत्तर भारत—विशेषतया युक्तप्रान्त में, क्योंकि पंजाब तो इस समय पंजाब केसरी के हस्तगत था, आगरा फ़तहपुर आदि शहरों की सडकों पर अकाल के शिकार दृष्टि गोचर होते थे। ग्रामों का तो कहना ही क्या। इस समय प्रबन्ध ठीक न होने से शृगाल और कुत्ते ही प्रायः अन्तेष्टि संस्कार करते थे। इसमें ८ लाख से अधिक जन मृत्यु को प्राप्त हुए।

१२—१८५४ में मद्रास फिर अकाल ग्रस्त हुआ।

१३—छः वर्ष पश्चात १८६० में भयंकर अकाल उत्तरीय भारत में पड़ा। २ लाख आदमी इसके शिकार हुए। सहायता का ढोंग रचा गया और लग भग ३५००० की मदद की गई।

१४ - उड़ीसा में १८६६ में एक अकाल पड़ा। १० लाख आदमी इसकी भेंट हो गए। सरकार ने भी ४२००० की मदद की।

१५—१८६९ में उत्तर भारत में फिर दुर्भिक्ष पड़ा। १२ लाख आदमी मरे। १८००० को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहायता सरकार ने दी। इतने बड़े अकाल में यदि सरकार हाथ पांव न हिलाती तो रही सही नाक कट जाती।

१६—१८७४ में बंगाल में फिर अकाल पड़ा। इस समय भारत की बाग डोर लार्ड लारैन्स के हाथ थी। वह ग़रीबों के विशेष रूप से हितैषी थे अतः यत्न से सहायता का काम आरम्भ हुआ। इसका प्रबंध बहुत अच्छा रहा।

१७—परन्तु ३ साल पश्चात मद्रास में फिर अकाल पड़ा। १८७४ के व्ययने (सर रिचार्ड टेम्पिल) के होश हवास उड़ा दिए और आपने कह दिया कि "सरकार का काम लोगों का पेट भरना नहीं है"। फल यह रहा कि ५० लाख आदमी मरे। यह भी याद रहे कि इसी साल में लार्ड लिटन नें एक बड़ा दरबार देहली में किया और करोड़ों का व्यय उस तमाशे पर करके लोगों को बताया कि "विक्टोरिया केवल आंगलदेश की महारानी ही नहीं वह भारत की राज्यराजेश्वरी भी है"। ऐसा विचित्र दृश्य भी भारत में ही मिलता है कि भारत में एक तरफ़ ५० लाख आदमी मरें दूसरी तरफ़ दरबार के तमाशे पर करोड़ों का व्यय कर दिया जाए।

१८—दक्षिण में अभी शान्ति न हुई थी कि १८७८ में दरबार के आस पासके इलाके में अकाल से १२½ लाख आदमी पीडित हुये। बीच में दरबार और आस पास के सब भूख से मरे—यह भी अचंभे का दृश्य भारत में ही दृष्टि गोचर हो सक्ता था।

१९—मद्रास में १८८९ में फिर अकाल पड़ा।

२०—१८९७ में फिर भयानक अकाल पड़ा। पंजाब में यह अकाल ५६ (विक्रमी) करके प्रसिद्ध है। यों तो यह समस्त भारत में व्यापक था, बीकानेर आदि में इसका विशेष प्रकोप था। उस समय के बीकानेरी लोग अब भी पंजाब में मिलते हैं। और मांगने वाले बीकानेरी अकसर ग्रामों में ५६ के अकाल के गीत गाते सुने जाते हैं। मद्रास और बीकानेर विशेष मृत्युक्षेत्र थे। यह सब से बड़ा अकाल समझा जाता है क्योंकि यह न केवल भारत व्यापी ही था वरन कठोर भी था। कोई ३० लाख आदमियों को सहायता दी गई। परन्तु इतने भारी भारतीय अकाल में ३० लाख की गणना क्या है।

२१—१९०० में फिर बंगाल छोड़ कर सब भारत कहत के पंजे में आया यह अकाल "५६" से कम भयानक व कठोर न था। ६० लाख की सहायता होने पर भी लाखों की मृत्यु हुई।

इसके पश्चात् २० वीं सदी आती है। जिस के अकालों का विवरण व्यर्थ है क्योंकि उस को सर्व भारतीय जनता अभी अनुभव कर ही रही है। जब तक इस से छुटकारा न होगा तब तक इस का अंदाज़ा लगाना कठिन है। हां, राजपूताना, युक्त प्रदेश, कांगड़ा, और उड़ीसा इस के विशेष रूप से पात्र बने हैं।

"पिछली सदी के आखिर के २५ वर्षों में अकाल जन्य मृत्यु की औसत निकालने से प्रति वर्ष १० लाख से अधिक भारतीय अकाल ग्रास हुए! अर्थात् प्रति मास ८४०००; प्रति दिन २८००; प्रति घंटा १२०; और प्रति मिनट २ भारतीय बराबर २५ वर्ष तक अकाल की भेंट दिये जाते रहे।"

पंजाब देश में अकाल से मृत्यु होने का अनुभव नहीं। मुझे याद है जब अकाल से हुई मृत्युओं का हाल पढ़ा करता तो शक होता था कि यह ठीक नहीं हो सक्ता। गढ़वाल के "मशहूर" दुर्भिक्ष में काम करने तथा पत्रों में झूठी रपोर्टों के देखने से यह शक और भी बढ़ गया। मगर यह सब कूपमंडूकता थी। ज़रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहली को पार करके युक्तप्रान्त के किसानों का हाल देखिये, बंगाल के ज़िमींदारों को छोड़ साधारण लोगों की दशा पर ध्यान दीजिये, और उड़ीसा, मद्रास और मध्य प्रदेश के लोगों को इस समय -)॥ रोज़ कमाते देख कर विचारिये; या रात को १०| बजे के बाद कलकत्ते के बड़े बाज़ार में चक्कर लगाइये तो आप को मालूम हो जावेगा कि लोग भूख से कैसे मरते हैं। कहत के मरने और दूसरे मरने में फ़र्क है। प्लेग, हैज़ा या किसी और बीमारी में लोग मरते हैं तो सब को छोड़ चले जाते हैं। परन्तु अकाल में प्रथम घर की समस्त वस्तुऐं जिन से मुष्टि भर अन्न मिल सक्ता हो बेची जाती है। जब सिवाय मनुष्यों के और कोई आश्रय नहीं रह जाता, जब भिक्षा भी काम नहीं चला सक्ती, तब धीरे २ प्रति मिनट मृत्यु का भयानक स्वरूप नज़दीक आता दीखता है। और सब को थोड़ा २ कर के रोज़ खाता है हालांकि अन्त हो जाता है।

भारत की सब से बड़ी समस्या इस दुर्भिक्ष का निशाना है। अकाल पड़ने पर कुछ रुपया जमा करके सहायता करने से कुछ न बनेगा। अकाल के कारण को दूर करना होगा।

रमेशचन्द्र दत्त के शब्दों में:—

The immediate cause of famines in almost every instance is the failure of grains, but if we honestly seek for the true causes, without prejudice of bias, we shall not seek invain. The intensity and frequency of recent famines are equally due to the resourceless condition and the chronic poverty of the cultivators the poorest and most miserable peasantry on earth.

फिर—

The real cause of Indian famines is the extreme, the abject, the banefull, poverty of Indian people.

अर्थात् भारत वर्ष में यद्यपि वर्षा के न होने से ही सब अकाल आरम्भ होते है तथापि ज़रा गहरी दृष्टि करने से दीख पड़ेगा कि तमाम अकालों की जड़ भारत की गरीबी है।

परन्तु भारत की ग़रीबी कब और क्यों हुई? ऊपर दुर्भिक्ष विवरण से स्पष्ट ज्ञात हो गया होगा कि किस तरह अकाल इस वणिक राज्य के साथ घना सम्बन्ध रखता है इस के कदमों पर चलता है। इस राज्य का मुख्योदेश्य सम्पत्ति हरण है। फलतः जहां इसकी जयन्ती लहराती है वहां ग़रीबी, आदि दोष आही जाते हैं।

इस लिए भारत को अकाल की विकरालता से मुक्त करने का सब से बड़ा तरीका—विदेशी राज्य—को दूर करना होगा। जब तक भारत पर यह आर्थिक भार है, जब तक भारतीय लोग अपनी कमाई स्वयं नहीं रख सक्त, तब तक अकालों का सर्वथा नाश तो क्या इसकी प्रति दिन वृद्धि होगी। प्रति दिन ग़रीब ज्यादा गरीब और धनवान ज्यादा धनवान होंगे। और फल यह होगा कि ज्यादा अकाल, ज्यादा हृदयबेधक मृत्युएं और ज्यादा दुखदायक दृश्य सामने आवेंगे इस में संदेह नहीं कि जब तक भारत में बहुत सी खेती वर्षा पर रहेगी तब तक अकाल का सर्वथा नाश नहीं हो सक्ता। परन्तु इस में ज़रा भी संदेह करने की जगह नहीं कि ऐसी अवस्था शीघ्र लाई जा सक्ती है जिस से यद्यपि अकाल (स्थानिक) पड़ जावे परन्तु एक भी मृत्यु इस से न हो और वह भी बग़ैर अकाल के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिनों में खास "पेट भर कर देने" वाली मदद पहुंचाने के।

दूसरी बड़ी औषधि जो इस बीमारी की ख़ास दवा है वह जाति के समय को काम में लाना है। इस में संदेह नहीं कि हमारी बहुत सी सम्पत्ति प्रति दिन भारत से बाहर ले जाई जा रही है। मगर जो धन हम लोग समय के रूप में नष्ट करते हैं वह इस से कहीं ज्यादा है। चर्खा और खादी बुनने के काम में समय लगाना भारत की सम्पत्ति को घर में रखने का उपाय है परमात्मा की कृपा से अब जाति का ध्यान इधर हुआ है। आशा है कि अब वह दिन दूर नहीं जब कि भारत जो कुछ खो चुका है उसे पा लेगा।

आकांक्षा।

ले०—श्रीयुत भगवतीचरण

(१)

चाहे हिम संस्पर्श, त्वचा को दग्ध बनावे!
चाहे जलती आग, देह को शीत लगावे!!
चाहे फूलें-फूल, इधर इस नभ मंडल पर!
और खिले तारा-मंडल, इस पृथिवी तल पर!!
तब भी प्रण मेरा सदा-
देश भक्ति का ही रहे।
नक्षत्रों के बीच में-
ध्रुव जैसे निश्चल रहे॥

(२)

चाहे छोड़े मार्ग, सूर्य निज यात्रा ही का!
वेला बन जाये, बबूल के कांटे ही का!!
चाहे निकले तेल, वालु-कण के पिसनें से!
अथवा सूखे समुद, एक तृण के जलनें से!!
पर प्रण मेरा यह सदा-
अटल बना हिय में रहे।
"चरण" सदा निज देश हित-
मरनें को प्रस्तुत रहे॥

———:०:———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गीतामृत।

ले०—श्रीयुत प्रो० गोपाल दामोदर तामसकर एम. ए. एल. टी.

परिच्छेद छवां

वह रात !

निशाकर के उज्ज्वल धवल तेज से वसुंधरा के संपूर्ण भाग प्रकाशित हो रहे थे। दिन की तेज धूप से कुम्हलाई हुई बेल और पत्ते इस अमृत सिंचन से फिर भी सरस और हरे भरे दीख रहे थे। निशिगंध के प्रफुल्ल फूलों से वह वन प्रदेश सुगंधित हो गया था, और उस गिरिराज पर चारों ओर शांति का साम्राज्य फैला था। ऐसे समय में मैं एक विस्तृत शिला पर बैठा हुआ सृष्टि शोभा का अवलोकन कर रहा था।

जगमें बारंबार प्रसिद्ध होने वाले ढोंगी योगियों के वृत्तांत से मेरे अज्ञान मन ने (यह मुझे बहुत देर के बाद मालूम हुआ) योग की कल्पना कुछ और ही कर ली थी। 'कितने ही वर्षों तक योगी बिना खाये पीये रह सक्ता है, वह दूसरे के मन की बात जान सक्ता है; पानी का घी बनाना, रेलगाड़ी खड़ी करना, दूसरे के स्वप्न में प्रवेश करना, अनेक मूर्ति धारण करना, ऐसे २ अलौकिक काम करने की शक्ति उसे रहती है' ऐसी मेरी सुनी बातें थीं ! पर स्वामी जी कहते हैं कि योग यानी कर्म !! फिर ये बातें क्या कर्म से सिद्ध होती हैं ? कर्म से ही क्या वाक् सिद्धि प्राप्त होती है ? ऐसे अनेक प्रश्न मेरे मन में आते थे और उनका उत्तर मेरा मन 'नहीं' देता जाता था। स्वामी जी के पास से उठ कर सायं संध्या, फलाहार, स्तोत्रपाठ वगैरः काम करते समय ये विचार मेरे दिलमें चले थे, और इस विचार सागर के पार जाने के लिये प्रयत्न करने वाला मेरा मन शान्त होगया था। शिलातल पर बैठने को आने के पहिले विगलित मन ने अपनी देह हवा और तरंग को अर्पण कर दिया था, और वह बिलकुल स्वस्थ था। पर जब कभी बड़ी लहरें आती तो वह कभी स्वर्ग में तो कभी पाताल में पहुंच जाता और उसकी उन्नति अवनति होती रहती। ऐसी मनकी स्थिति में ही मैं शिलातल पर आरूढ़ हुआ।

धीरे धीरे उस शोभाने मेरे चर्म चक्षु के समान अंतश्चक्षु को भी आकर्षित कर लिया। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने सृष्टि सुंदरी के शरीर में कितनी बलवती मोहिनी रखदी है ! किसी दूसरी वस्तु में इतनी शक्ति नहीं कि श्रमविगलित गात्र उससे विश्रान्ति सुख पाकर अपने श्रम भूल जावे और उसमें नया दम आजावे। बहुत देर तक विचार मंथन करने से भ्रान्त मन को स्थिर करने के लिये यह अजीब रसायन मात्रा है ! ज्यों ज्यों मैं सृष्टि शोभा का अवलोकन करने लगा त्यों त्यों मेरे मनको शांति प्राप्त होने लगी। उस गहन विषय के वारे में मेरे विचार दूर हुए और उस सहजमधुर सृष्टि सौंदर्यामृत का नेत्र और मन दोनों आकंठ पान करने लगे।

सुधा सिंचन से वनस्पतियों के रस परिपोषि करने का अपना पवित्र कार्य औषधिनाथ-सुधाकर-चंद्रमा अविरत करही रहा था। कुछ दूर दिखने वाली पुष्करणी के कुमुदों के गले में अपने कोमल करों को डाल उन्हें प्रफुल्लित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करने का उसका शृङ्गारकार्य चलाही था। सर्व व्यापी किरणों ने निशिगंध के शुभ्र फूल में से धवलिमा और सुगंध हरण कर चारों ओर फैला दी अथवा कोमल कुसुमों ने ही किरणों के पास से चोरी करली, इस मनोरंजक विषय में मेरा मन लगा था। विचार करते करते इस सृष्टि क्रम के मूल तक जाने के लिये मेरा मन अंदर ही अंदर प्रयत्न कर रहा था। चंद्र, सूर्य, तारे सब ही अपना अपना कार्य बिना गड़ बड़ के सदा नियमित रीति से करते रहते हैं इन्हें अपने वश में रखने वाला सर्वशक्तिमान् परमेश्वर कैसा होगा? चारवेद, छः शास्त्र, और अठारह पुराण भी जिस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके, उसका उत्तर मेरा मूढ़ मन कैसे देगा? कुछ देर तक विचार कर वह आगे कुछ न सोच सका, परन्तु फिर वह इस सृष्टिक्रम की नियमितता की ओर झुका। सूर्य अगर नियमित रीति से उदय और अस्त हुआ नहीं, और कालके दिन और रात के स्पष्ट भेद किये नहीं तो श्रम और विश्रांति का नियमित क्रम बदल जावेगा, और श्रम की अथवा विश्रान्ति की परमावधि हो जाने से जग में केवल दुःख अथवा सौख्य हानि ही फैल जावेगी इसके सिवाय आरोग्यता की दृष्टि से भी नुकसान होगा। यही नियम दूसरे सृष्टि क्रमों को लागू करता, और उनकी नियमितता के महत्व के बारे में इस प्रकार विचार करता था। इस प्रकार कुछ काल के बाद मैं बिलकुल चुपचाप होरहा।

इस स्वप्नमय विश्रान्ति के समय मेरे मन में कुछ दूसरे ही विचार की स्फूर्ति उत्पन्न हुई। इस सृष्टि क्रम का अर्थ यह है कि वह अनेक तेजो गोलों का और पंच महा-भूतों का स्वभाव-नियत (निसर्ग के या परमेश्वरके निश्चित किये हुए) कर्म ही है। यानी यह उनका धर्म ही है। उन्होंने अपना धर्म त्याग दिया तो त्रिभुवन का नाश! यही नियम हम मनुष्य प्राणियों को भी लागू हो सक्ता है। हमने अपना धर्म-हमारा स्वभाव नियत कर्म-त्याग दिया तो इसी प्रकार गड़बड़ मच जाने का डर है? मन में हलचल होने लगी। विचारों के बाद विचार उत्पन्न होने लगे। बहुत देर के बाद मन कहने लगा, "हां! ऐसा ही होगा इसी कारण स्वामी जी ने कर्म को इतना महत्व दे डाला है।" इस प्रकार विचार करते २ वहां बहुत देर तक मैं बैठ रहा। इतने में मेरी आंखें खुली रहते भी चारों ओर की चीजों का दिखना बंद हो गया द्रष्टा दूसरे ही विचारों में मग्न रहने के कारण दृष्टि का साथ (नेत्रद्वय) निरूपयोगी हो गया। यही स्थिति और भी इंद्रियों की हुई। इस एकता-के समय मुझे एक विचित्र आभास हुआ।

चिंतन समय में जब जब मुझे स्वामी जी का स्मरण होता तो ऐसा मालूम होता कि उनकी मूर्ति मेरी दृष्टि के साम्हने खड़ी ही है। इस आभास के होते ही ख्याल आता कि उनके साम्हने मैं आसन पर विराजमान हूं और इससे मन खड़बड़ा कर जग जाता! परन्तु फिर वहां मूर्ति न रहती। ऐसा बारंबार होता था। एक बार तो मुझे स्पष्ट जान पड़ा कि वह मूर्ति मेरे देह में से ही निकली। परन्तु इससे भी विचित्र बात यह कि वह मूर्ति गुप्त होने के लिये ज्यों ज्यों नजदीक आती त्यों त्यों मैं उठने का प्रयत्न करने लगता। परन्तु सब व्यर्थ! मेरे शरीर की शक्ति हीन हो जाती। मुझे मालूम होता कि मेरा वर्ताव विनय के विपरीत है और इस कारण मुझ से स्वामी जी जरूर नाराज होंगे। परन्तु उठते ही नहीं बनता तो मैं क्या करूं? खूब सपाटे से मेरे शरीर से पसीना निकला इधर वह मूर्ति बिलकुल मेरे पास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आगई। सिर्फ देखने के सिवाय मेरे सब व्यापार बंद हो गये थे। वह मूर्ति हिलने लगी, और ऐसा जान पड़ा कि मेरे शरीर में प्रवेश कर रही है। फिर ऐसा भी दीख पड़ा कि वह मेरे हृदय में–बिलकुल भीतर-जाकर वहां स्थिर हुई। उस समय मुझे इस बात का आश्चर्य लगा कि मुझे अंतःकरण देखने की शक्ति कैसे प्राप्त हुई! कार्य का बीज मुझे मिला नहीं तौ भी इतना सच है कि मुझे वह दिखाई देरही थी। उसके चारों ओर एक प्रभा मंडल था। उस मंडल से दूर तक अंधियारे में देह छुपा कर काले लोग बैठे हुए कज्जल जैसे दीखते थे प्रभा मंडल के पास कई कोमल, सुंदर हास्य मुख नर और नारी थे। उन्हों ने हाथ जोड़ कर कुछ प्रार्थना की। उन सब की दृष्टि स्वामी जी को ओर ही लगी थी। इस सब दृश्य का कुछ रहस्य न समझने के कारण मैं आश्चर्य विमूढ़ हो गया। कुछ देर के बाद स्वामी की मूर्ति की आंखें मेरी आंखों से आ भिड़ी उनके मुख पर हास्य दीखने लगा। मेरी इच्छा थी कि वह दृश्य और वह मूर्ति ऐसी ही बनी रहे, परंतु इस स्थिति में थोड़ा ही काल बीतने पाया था कि स्वामी जी के गायन का स्वर सुनाई पड़ाः—

जीव जभी तक देख सोच ले,
कर्म हीनता कैसे पावे।

दो तीन वार यही चरण सुनाई पड़ा स्वामी के मुख के हल चल से और आवाज से मेरी तसल्ली हो गई कि मेरे हृदय के स्वामी ही गारहे हैं। परन्तु वह चरण मेरे कानों में वार वार आता और मेरा मन 'कर्म' वाले विषय की ओर झुकने लगा। हो गया! मेरा कर्म ही इस विषय के रूप से मेरे सामने खड़ा हुआ था। क्योंकि वह दृश्य धीरे धीरे अस्पष्ट हुआ और कुछ देर के बाद साफ दूर हो गया। मुझे फिर से वह चन्द्र प्रकाश, वह उपवन, चारों ओर की झाड़ी वगैरः चीजें दीखने लगीं।

इस के बाद मैंने कई उजली रातें वहां बिताईं, परन्तु उस सुख का स्वाद फिर से मुझे न मिला। अहाहा! वह मूर्ति मेरी आंखों के सामने अभी तक मुझे स्पष्ट दिखाई दे रही है। परन्तु उस समय का स्वरूप कुछ निराला ही था। वह रात अपने हृदय पट पर अक्षय खोद-रखने लायक है। क्या मुझे वह रात फिर से प्राप्त होगी? ऐसा कहां है मेरा भाग्य?—परन्तु मैं कितना मूर्ख हूं। स्वामी जी ने इस का सार मुझे बतलाया तौ भी मैं पागल के समान उन्हीं बातों के ध्यान में लगकर दुःख उत्पन्न कर लेता हूं। वह रात अब—दिन को भी—सुलभ है। यह किस प्रकार हो सक्ता है, इस बात का खुलासा आगे हो जावेगा। यहां इतना बतला देता हूं कि इस रात के प्रसंग से मेरी मनोवृत्ति बीजारोपन करने के लायक हो गई। यह भी मुझे स्वामी जी के ही बतलाने से मालूम हुआ। मेरे पाठक अब स्वामी जी का भाषण सुनने को उत्कण्ठित हुए होंगे। इस लिये अपने मन की स्थिति की नीरस कहानी यहीं खतम करता हूं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रातः काल की उपासना

ले०—श्रीयुत "मराल"

किस मुख सों बिनती करिये।
नैन जड़ित रसना रस डूबी, सुखमा सारे किस बिध तरिये॥
झुकि झुकि डार बन्दना लागीं, कहैं पंछी आलस परिहरिये।
वहतबयार मृदुल रस भीनी, अब तौ सजन भजन चित धरिये॥
झुरमुट चोर किरण दिन पति को, लगीं कहन इत हूं दृग भरिये।
ओस बिन्दु पचरङ्गी लरियां, मोतिन की इत हूं तो उतरिये॥
देखि कृपा उमड़ी सुधि भूली, यह दुविधा प्रभु आप ही हरिये।
सोच पड़ी मोको मैं पापी, कैसे कहूं पर औरन झरिये॥
इक बिनती करुणानिधि मोरी, पर पूरो करिवे सो न टरिये।
हौं झाड़ी दो चार कटीली, उलटी दृग जासों न पकरिये॥

फूल !

(लेखक—"गुलाब")

"फूल"—अहा! कितना मनोरम, कितना सौन्दर्य्य, कितना प्यारा! मैं मुग्ध हूं! संसार मुग्ध है! किस लिए? उस के नन्हें, निराले, अनूठे "फूल" नाम पर! जब मैं अबोध था, बालक था—जरा जरा सी बातों पर रो पड़ता था—माँ से मचल उठता था! हंसी न थी! मुस्कुराहट न थी; उस समय कौन? मुझे मनाता था—हंसाता था! कुसुम कुञ्ज का प्यारा फूल! नन्हें नन्हें पौधों में सुशोभित प्यारा फूल! वे रङ्ग-विरङ्गे थे—नीले, पीले, और सुवर्ण, रङ्ग के थे! कुछ गुलाबी थे कुछ लाल थे! फूल! हाँ प्यारे! फूल! मुझे उपहार देते थे—कौन? वही पौधे! वही विटप! जो मुझे प्यारे थे—जिन्हें मैं प्यार करता था! मालती मेरी चिरसङ्गिनी थी! वह एक कङ्गाल की बेटी थी! मैं उसे पुष्पाञ्जलि देता! वह उन्हें गूँथती! मैं भी उन्हें गूँथता था! फूलों का नयनाभिराम, सुन्दर, अतीव सुन्दर, सर्वोच्च सुन्दर! हम दोनों मनोहर फूल हार तैयार करते! वह किसे धन्य करता—मालती को नहीं! संसार को नहीं! मुझे!! मैं सुखी था! संसार! कठोर संसार! तू जानता है? नहीं, तू क्यों जानने लगा! मैं तेरा तिरस्कार करता हूं! तुझ से घृणा करता हूं!! तूने संसारशाला में अनन्त रत्न उपजाये! किन्तु! तूने उन्हें नहीं भोगा! तू क्या जाने? रस क्या है? प्रेम क्या है? इसी लिये मैं कहता हूं—मैं तेरा तिरस्कार करता हूं—तुझ से घृणा करता हूं! तू दुखी है? मैं सुखी हूं! तू योगी है! मैं भोगी हूं—तू रङ्क है मैं राजा हूं! मेरा—तेरा क्या सम्बन्ध? क्या नाता? क्या रिश्ता?

वह मनोहर—सुन्दर फूलों का हार मुझे धन्य कराता है! मालती—सुखी है—कोकिलायें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मीठे स्वर से कूकती हैं--"सुखी ! तू वास्तव में सुखी है ! धन्य है !! बादल घिर आते हैं ! मुझे सुखी देख प्रेमाश्रु बहा उठते हैं--कहते हैं--"तू धन्य है--बारम्बार धन्य है !!" बसन्त की बहार है--बसन्ती वायु अपने मीठे--झकोरों में सननन् करती कहती है--"तू बनमाली है ! फूलों की कद्र करता है ! तू धन्य है ! बारम्बार धन्य है ! उन के धन्य गीत में, उनके मीठे शब्दों में--उनकी विमल तरङ्गों में असार नहीं--सार है ! वे सच्चे हैं ! क्यों ? मैं धन्य हूं ! बारम्बार धन्य हूं - वास्तव में धन्य हूं !!

मैं निर्बोध हूं ! क्यों ? मैं बालक हूं—नादान हूं—आकाश को पाताल और पाताल को आकाश बताता हूं ! खाते, पीते, उठते, बैठते कुछ गुन गुनाया करता हूं—फूल ! फूल ! फूल !! मुझे—सांसारिक नश्वर व्यापारों की तनिक भी सुध नहीं—किन्तु—अहा ! फूलों की, उन के गुणों की, उनकी सुगन्धियों की, मैं सदैव सुध रखता हूं—! मेरे कण्ठ में फूलहार सुशोभित हैं ! मैं धन्य हूं ! बारम्बार धन्य हूं ! वास्तव में धन्य हूं !! तुम देखो ! समझो ! फूलों में क्या है ! फूल किसे कहते हैं ?

मेरे—कुसुम कुञ्ज की धूल धन्य है ! बारम्बार धन्य है ! मैं उससे खेलता हूं—उस के बड़े २ महल बनाता हूं ! किन्तु वे बावले हैं ! पागल हैं ! उद्भ्रांत हैं ! टेढ़े हो जाते हैं ! मैं निर्बोध हूं—नादान हूं ! उन्हें पल में पतित कर डालता हूं—फिर बना लेता हूं ! हिम्मत है ! जोश है ! रोष है ! सब कुछ है ! क्षण मात्र में धन्य होता हूं—कार्य्य में सफल हो गाता हूं ! बड़े प्रेम से, हजारों लाखों कष्टों से—मैं एक महल बनाता हूं ! उस में फूल—देव को स्थापित करता हूं उनकी अर्चना करता हूं पूजा करता हूं ! आराधना करता हूं ! आरती उतारता हूं ! प्रसाद मिलता है—क्या ? मिष्ठान्न नहीं ! पकवान नहीं ! मेवे और मीठे मीठे फलों के गुच्छे नहीं ! फिर ? वही सुन्दर ! वही नयनाभिराम ! "फूलों के हार" !

मैं धूल धूसरित हूं ! कण्ठ में फूलों का हार पड़ा है ! धूल में नृत्य करता हूं—कुछ गाता हूं—क्या ? फूल ! फूल ! फूल !! अहा ! मैं धन्य हूं—कितना धन्य हूं—यह नहीं जानता ! किन्तु, हूं वास्तव में धन्य ! बारम्बार धन्य ! प्रकृति ! धन्य ! संसार धन्य ! मैं भी धन्य ! अतीव धन्य ! बारम्बार धन्य !!!

मैं सुखी हूं—इधर देखो ! मैं युवा हूं ! मेरी बाल्यावस्था छूट गई ! मालती रूठ गई ! क्यों ? समय के फेर से ! संसार के चक्र से ! धूल में लेटना-हंसना, खेलना, कूदना, पापी समय ने लूट लिया ! मुझ में वे भाव नहीं-वे चाव नहीं !! धूल से घृणा है ! मालती से विरक्ति है । क्यों ? मैं सुन्दर हूं ! मुझे घमण्ड है ! मेरी रूप राशि से सारा संसार महक रहा है ! पूर्व समय शान्ति थी ! तब बालक था-अब युवा हूं ! शान्ति है, मोह है, ममता है ! दिल में चाव है ! नव-जीवन का शृङ्गार है !! प्रेम की तरङ्गों में बह रहा हूं । आभूषण अच्छे नहीं लगते ! घर से कुछ विरक्ति सी है ! किन्तु ! फूल अहा ! मैं धन्य हूं ! तू विरक्त नहीं ! फूलों का हार अबभी, इस समय भी, मेरे कण्ठ में शोभित हो रहा है ! मैं मुस्कराता हूं—मेरी सुन्दरी मृगनयनी, पिक बैनी कहती है—"फूलों का हार मुझे देदो !" कलेजा कांप रहा है, जी धड़क रहा है ! सर्वस्व अर्पण करने को तैयार हूं ! किन्तु, वह ! वह फूलों का हार, समर्पण करने की इच्छा नहीं ! मन कठोर है—झूठा है ! कहता है "निःसङ्कोच देदो !" माया थी, ममता थी, वह हार फूलोंका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हार ! मैंने सहमते हुए—झिझकते हुए, प्रिया के कण्ठ में पहिना दिया ! वह रीझ उठी चरणों में लेट गयी ! प्रिये ! तुम धन्य हो ! तुम्हारे कारण मैं भी धन्य हूं—बारम्बार धन्य हूं हार ! फूलों के हार ! तुम प्रेमिकाओं के उपहार हो ! संसार के शृङ्गार हो ! तुम धन्य हो !! सुरों के शीस चढते हो ! मैं तुम्हारी पूजा करता हूं ! मैं धन्य हूं ! प्रिया बारम्बार धन्य है। क्यों ? उसके कण्ठ में तुम कभी २ शोभित हो ! उसके केशों में तुम्हारी कोमल कलियाँ गुंथी है ! मैं तुम से शून्य हूं—किन्तु, तुम्हारा प्यार करता हूं, इसी लिए धन्य हूं बारम्बार धन्य हूं !!

मैं वृद्ध हूं, जहाँ निर्बोध था, बालक था, युवा था, वही वृद्ध हूं ! वही महल, वही कुञ्ज, वही तालाब, वही कूप, वही बावली ज्यों की त्यों हैं। नहीं जानता वे युवा हैं या वृद्ध ! किन्तु अपने को जानता हूं—समझता हूं, मैं वृद्ध हूं, जर्जर हूं, क्लेशित हूं ! हाथ पांव शिथिल हैं ! बदन में झुर्रियां पड़ गई हैं, मुख पीला है, अधर म्लान हैं, केश श्वेत हैं। होठों में लाली नहीं, नेत्रों में ज्योति नहीं—कण्ठ में स्वर नहीं, चरणों में शक्ति नहीं। संसार शून्य, शृङ्गार शून्य, व्यवहार शून्य, ममता नहीं, प्यार नहीं ! कमर झुक गई है ! गिर गिर पड़ता हूं—सर्द आहें लेता हूं—किन्तु फूल ! प्यारे फूल !!! तुम्हें अब भी प्यार करता हूं—तुम्हारी अर्चना करता हूं ! आंखों में निद्रा नहीं ! बड़े सवेरे, उषा काल की वेला—उठता हूं—जाता हूं—कहाँ ? कुञ्ज में—कुञ्ज—प्रेम में, तुम्हें चयन करता हूं। नीले, पीले, वेले के, सूर्य्य मुखी, चम्पे और चमेली के, काँटेदार "गुलाब" के ! जया और जुही के ! फूल ! प्यारे फूल !! तुम्हें नयनों में लगा लेता हूं। तुम्हारा चुम्बन करता हूं—बारम्बार प्यार करता हूं—प्रेम से, उमङ्ग से, नये और मनोहर ढङ्ग से, तुम्हारा हार तैयार करता हूं। उसे पहिनता हूं ! धन्य होता हूं ! एक दो नहीं सहस्रों, हजारों, लाखों, बल्कि करोड़ों बार धन्य होता हूं ! बारम्बार धन्य होता हूं।

मैं मृत्यु शय्या पर हूं—मेरी माया में—ममता में वे लोग भूले हैं—रोते हैं—जो साथी, बच्चे, प्यारे, संसार में सब कुछ कहलाने का दावा रखते हैं—वे रोते हैं, मैं हंसता हूं ! हन्सोन्मत्त हूं ! मृत्यु की परवाह नहीं ! कुटुम्ब की चाह नहीं ! चाह है—किस की ? फूल की ! फूलों के हार की !! लाओ एक बार मैं उन का साँसारिक अन्तिम चुम्बन करूँ ! उनसे अपनी राम कहानी कह डालूँ—वे मेरे शैशव, युवा, वृद्ध भी अवस्थाओं के साथी हैं। मेरे दुःख में दुःखी हैं—मेरे सुख से सुखी हैं !!

धन भूल गया हूं ! संसार भूल गया हूं ! प्रिया और प्यारे कुटुम्ब को भूल गया हूं ! किन्तु ! फूल ! प्यारे फूल ! तुम्हें नहीं भूला—भविष्य में भी न भूलूँगा ! तुम्हारे सौन्दर्य्य—आदर्श की मृत्यु शय्या पर अब भी तुम्हारी आराधना करता हूं ! मनमन्दिर में तुम्हारी प्रेम—मूर्ति का अब भी प्रेम—पुजारी हूं ! कुमुद ! प्यारे कुमुद ! देव लोक यात्रा की तैयारी है—तुम मुझे शीतल—शान्ति दो ! गुलाब ! जया ! जुही ! चम्पा ! और चमेली ! शायद अब तुम से वियोग होगा ! आओ, जंगल, पहाड़, झील, बन, तरुवर, नदी, और नाले छोटे छोटे पौधों में विकसित छविपूर्ण छटा छहराने वाले ! संसार को सौरव्य देने वाले ! तुम मेरे साथ चलो ! लोग कहते हैं स्वर्ण में सुख है—तुम्हारे बिना वह सुख मुझे दुःख का पहाड़ सा दिखाई देगा ! तुम एक बार दौड़ आओ ! मैं तुम्हारा चुम्बन करूँ ! तुम्हें प्यार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करूँ। तुम्हारी पद—रज चूम दुख एवँ शान्ति पाऊँ! फूल! तुम प्रेमिक हृदयों के आनन्द-माला हो। नन्दन आनन, झील, बन, पहाड़! जहाँ तुम विकसित होते हो—तुम्हारी सुरभि से संसार मंहक उठता है। हजारों लाखों बलिक करोड़ों मुखों द्वारा तुम धन्य वाद और वधाइयाँ पाते हो! मेरे पास वे शक नहीं! शक्ति नहीं !! जो तुम्हारी बढ़ाई करूँ कुछ कह दूं !!

शान्ति! शान्ति! शान्ति !! मायादूर, ममतादूर, संसारदूर, किन्तु! फूल! तुम दूर नहीं! अब भी हृदय, पटल पर भी तुम्हारी मूर्ति अङ्कित है! यह देखो, इधर देखो, मैं मृत्यु लोक तज देव लोक में हूं! तुम मेरे साथ हो! मैं तुम्हारे साथ हूं! तुम साथी हो, मैं चिर साथी हूं! फूल! फूल ही तुम्हारी तुलना है! तुम मेरे आराध्य देव हो! तुम्हें उत्पन्न करने वाली सुफलाँ शस्यमही—भू-धन्य है! तुम धन्य हो! तुम्हारे कारण मैं भी धन्य हूं !! बारम्बार धन्य हूं !!

यह देखो! मैं पुष्पकयान में चढ़ा हूं! फूलों से गुथी वीणा की झङ्कार गुञ्जायमान हो रही है!

"संसार फूलमय—सर्वम् फूलमय! फूल! तुम्हारी सदैव विजय हो !!!

खिले रहना! मुरझाना मत! निराशा नदी में न डुबा देना! क्षुद्र सेवा सदा स्वीकार करते रहना! मेरी सेवा में ढूंढ़ना, प्यार, मिलेगा—माया और ममता मिलेगी—करुणा और शीलता की बड़ी २ खानें खोजें मिलेंगी! मुझे न भुलाना! तुम्हारी विजय—पताका तुम्हारे सेवक द्वारा संसार में फहरा रही है!

संसार! फूल ही तुम्हारा शृङ्गार है! उठो, कपट निद्रा छोड़ो! एक बार सच्चे हृदय से सच्चे दिल से उस की भव्य मूर्ति के आराधक बनो! मधुर मधुर मुसुकान युत मीठे २ शब्दों में एक बार प्रेम से बोलो! "फूल देव की जय"! उस की कीर्ति गाकर तुम धन्य होगे! भौंरे प्रेम—पुष्प पराग पीते हुए तुम्हारी कीर्ति फूल से गायेंगे! चींटी से लेकर हाथी तक—ईश्वर की समस्त सृष्टि फूल की पूजा करती है! तुम भी पूजा करो! धन्य होगे! मैं भी धन्य होऊँगा! तुम्हारी सन्तानें भी धन्य होंगी—! वे कभी न कभी उस पर रीझ उठेंगी और अकस्मात एक स्वर में गगन भरी आवाज़ से कह डालेंगी! "फूल देव की जय!" मैं भी कहूंगा "फूल देव की जय" !! तुम भी कहना—

"फूल देव की जय" !!!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभिमन्यु।

(ले०—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद; काशी।)

आकृति प्राकृति यदपि बाल सी रही तुम्हारी।
तदपि शक्ति बर बीर व्यक्ति सी रही तुम्हारी॥
बल बुधि विद्या विनय शील सौन्दर्य निकेतन।
पार्थनन्द तुम रहे पार्थ के सभ मन रंजन॥ १॥
विघ्न अनेकों क्यो न पड़े हों पथ में आकर।
करते अपना काम किन्तु थे सबल बराबर॥
क्या कोई कर्त्तव्य निष्ट तुमसा अब होगा?
भारत में सद्ज्ञान पुनः पैदा कब होगा?॥ २॥
रही बड़ी ही भक्ति बड़ों की हृदय तुम्हारे।
निर्बल के तुम रहे सदा ही सुहृद सहारे॥
स्वावलम्ब अरु स्वाभि-मान की थे तुम मूरति।
ऐसे ही अब स्वयम् सेवकों की है चाहत॥ ३॥
स्वार्थ-त्याग अरु आत्म-त्याग था तुममें जितना।
कहते संभव नहीं सभी अब होना तितान॥
वीर तुम्हारा अमर इसी से नाम बना है।
कीर्ति स्थम्भ है अचल तुम्हारा मान बना है॥४॥
धर्म राज जब विकल हुए थे देख शत्रु दल।
भेदन काजव चक्र-व्यूह को रहा नहीं बल॥
धन्य तुम्हीं ने हरण किया जा हृदय सोच सब।
हुए अग्रसर चक्र व्यूह में दुःख मोच तव॥५॥
अभिमन्यू तुम नही दबे थे कभी किसी से।
ललकारा जब जिसने जाकर भिड़े उसी से॥
कभी विनय था नही किया तुमने रिपु दल से।
मद मर्दन था किया किन्तु उनका निज बलसे॥६॥
महारथी थे सात यदपि तुमको प्रिय घेरे।
तदपि शक्ति नहि रही उन्हें आवें तव नेरे॥
नहीं अधर्मी कभी किसी के मुख पर आते।
डरते छिपते हृदय तर्कना कर पछताते॥७॥
धीर वीर अरु नीति-निलय जो कहलाते थे
उभय दलो से पूज्य प्रतिष्ठा जो पाते थे
निज हिय का अविचार देख बर भक्ति तुम्हारी
दबे रहे वे द्रोण देख कर शक्ति तुम्हारी॥८
पड़े रहे रण-भूमि बीच जब आहत होकर
हरण किया था प्राण जयद्रथ ने मति खोकर
मूर्ख इसी से बना निशाना पार्थ बाण का
नहीं अधर्मी हेत जगत में स्थान त्राण का॥९
कभी नहीं थी पीठ दिखायो रिपु को तुमने
वरन नित्य नव सीख सिखायी रिपु को तुमने
करि समूह में यथा सिंह सावक घिर झड़ये।
कुरु समूह में तथा धन्य तुमभी घिर तड़पे॥१०
पाण्डव के थे मरे बहुत से सम्बन्धी रन
पर था उतना शोक नहीं व्यापा उनके मन
सत्य कहा है सब सुगुणी के हित हैं रोते
फिर तुमसा खो रत्न नहीं कैसे वे रोते॥ ११
काल व्याल से अग्नि जाल से बाण तुम्हारे
अतुलित बल का नहीं रहा परिमाण तुम्हारे
पारावार समान रहे गंभीर महा तुम
सत्याग्राही रहे शिला से धीर महा तुम॥ १२
यदपि बहुत दिन नहीं रहे तुम अपनी तल पर
शक्ति तुम्हारी तदपि दिखाती नित्य विमलतर
देश धर्म के लिए मरे जो सन्मुख रण में
अजर अमर है गण्य मान्य है वह त्रिभुवन में॥१३
भारत में प्रभु आर्य रक्त अब वही बहे फिर
गुण गौरव सम्पन्न पूर्व उत्थान लहे फिर
वीर बाल अब इसी भांति के हों उत्पन्न
देश धर्म के लिए निछावर करै जो तन मन॥१४

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"भारत की तीन बीर बालाएँ"

कर्म्मदेवी, कमलावती और कर्णवती

अर्थात्

पुत्र की माता पत्नी और बहिन

लेखक—श्री० गौरीशंकर शर्मा

इतिहास से अनभिज्ञ कितने ही भारतीय प्राणी "जिमि स्वतंत्र हुई बिगरहि नारी" कहते हुए अर्धाङ्गनियों बहुओं, बेटियों को पिंजड़े में बंद चिड़ियों की नांई भारतोद्धार का स्वरूप देखा करते हैं। संसार में सभी देश जाग उठे; वृक्षों की छाल से कोपीन द्वारा गुप्ताङ्गों को ढ़कने वाले भी आज मूंछों पर ताव देते हुए 'सभ्यता' के ठेकेदार बनते हुए दिखाई दे रहे हैं पर संसार को अपने ज्ञान-वैभव से चकित करने वाले इस भारतखंड के लोग भीम, अर्जुन, राम, कृष्ण की संतान बनने का अभिमान रखते हुए भी जहां करवट बदलना तक पाप समझते हैं फिर वहां जग कर संसार-क्षेत्र में पुरुष को सार्थक करने वाला पुरुषार्थ दिखाना तो दूर की बात है। "जननी जन्म भूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसो" कहने में हमारे अनेकों नेता व उनके पुछलग्गू रंग मंच को हिला डालते हैं पर काम पड़ने पर "साहब जनाने हैं" कह श्रीमती की ओट कर अपने जीव को जोखिम में डालना बुरा नहीं समझते, और शायद वर्त्तमान ठगियों का अमृत-सुधा पी २ कर सदा को संसार में अमर हो चुके हों, धारणा कर बैठते हैं। "आनीपानि शरीराणि" का ध्यान मात्र श्मशान में ले जाता है, घर आने पर सफाई लोग कहते हैं, तीस कोटि भारत संतान होने पर भी क्यों? सदियों से गुलामी की जंजीरे तोड़ने में समर्थ नहीं होते। ठीक है, पर पारस्परिक प्रेम, आत्मबल, सदाचार जो संसार-विजय के साधन हैं वे तो हमसे असहयोग किये बैठे हैं और बंदे भी इसकी परवाह नहीं करते, "खसम जो पूजै देहरा, भूत पूजनी जोय। एक ही घरमें दो मते कुशल कहां से होय" देखते हुए भी आंख के अंधे बने हुए हैं।

नेता की जय बोलते, तालियां पीटते, और देशहितैषिणी किसी प्रतिज्ञा के समय सब से पहिले हाथ उठाने में बहादुर हैं पर उनकी आज्ञा-पालन में ठीक उत्तर-दक्षिण या ३,६ का संबंध है।

नेता कहते हैं, अपने विरोधी सहोदरों को भी हमें प्रेम से अपनाना है पर हमारी किसी बातों में एक मत न होने पर हम उन्हें बुरे से बुरे कटुशब्द कहने में नहीं हिचकते, कुत्ते, पाजी, हराम कहना तो इन वाग्वीरों के बांए हाथका काम है।

जिसका परिणाम घर ही में जबर्दस्त विरोधी दल का खड़ा कर देना हो और अनिष्ट अपने को निमंत्रित समझ आने में देर नहीं करती—बाहरी शत्रुओं को पराजय करने के पहिले जब तक लोग अपने आत्म घातियों को पराजित न कर लेंगे जब तक देशोद्धार की तानें अलापना व्यर्थ है—एक कवि कहता है—"काम क्रोध मद लोभ थी, जब तक मन में खानि। का पंडित का मूर्ख जन, दोनों एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समान" अतः इस सूत्र के अनुसार तीस कोटी जनता में कितनें 'महात्मा' हैं सो जरा बतलाइये। 'स्वार्थ-त्याग' करो, "मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये। जीता है वह जो मर चुका ईन्सान के लिये ॥" खूब अलापा जाता है पर इन्हों ने क्या अपनी स्त्रियों तक को कुछ स्वाधीनता दे न्याय किया है ? उन्हें शिक्षिता, वीर आदर्श महिलाएं बनने का सुयोग भी दिया है ? उपकार करना तो टेढ़ी खीर है। 'मूले नास्ति कुतो शाखा' सोचिये और अपने ही हाथों स्त्रियों को अशिक्षित रखने वाले कुठाराघात पर अब भी पछताइये, व्यर्थ चिल्लाना 'परोपदेशे पाण्डित्यं' के सीन अब न दिखाइये प्रत्युत यदि हृदय से आप जननी-जन्मभूमि को प्रेम करते हैं, उसे पूज्य समझते हैं उसके उद्धार में अपना सर्वस्व लगाना धर्म्म मानते हैं तो पहिले इन स्त्रियों को सुधारिये, घर से ही सुधार शुरु कर दीजिए। "बालानां रोदनं बलम्" पर ध्यान दो, इन्हीं को जैसा दुख आप लोगों ने दे रक्खा है,उसे न सह वे रोईं और तुम्हारी अधोगति प्रारंभ होगई। 'द्रौपदी' से ही श्रीगणेश समझिये भगवान घट २ में रहने पर भी तुमसे असहयोग कर बैठे हैं उन्हें मनाने को न्याय-पथ के पथिक बनिये "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" सूत्र को अहर्निश जपिये उसी के अनुरूप स्त्री-पूजन (फूल-धूप, कपूर व लोटे भर जलसे नहीं प्रत्युत हार्दिक श्रद्धा, व प्रेम पुष्पांजलि दे उन्हें सद-शिक्षण) भेंट कीजिए,देखिए भगवान तुम्हारे संकटों के दूर करने को नर हरि रूप धर प्रकट होते हैं या नहीं ?

पर प्रह्लाद बनना होगा, दृढ़ निश्चयी, सदाचारी समाज संकट सहने में वज्र समान हृदय करना होगा, आत्मा अमर है, तन-नश्वर है सोच न्याय की वेदी पर हँसते २ बलिदान होना होगा।

अतः यदि आप यथार्थ में घर २ 'मदन' 'लाल' देख 'चित्त-रंजन' करना चाहते हैं, भारत 'विपिन' में 'मोहन' की सुरीली मुरली की तान सुन जागना चाहते हैं, इस आधे देश को पक्षाघात की व्यथा से, सर्वांग को नष्ट होने से, रोकियेगा। तुम्हारे ही देश में आल्हा, ऊदल, शिवाजी पुत्र हम्मीर, प्रताप ने अपनी २ माताओं के द्वारा दूध पीते २ देश-भक्ति का रसास्वादन किया था जिस के परिणाम स्वरूप उनके नाम आज भी संसार के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में अंकित हैं, और तो क्या स्त्रियां अबला होने पर भी समय पर देश रक्षण के लिये दुश्मनों को सबला हो बला सी दिखाई देती थीं, जिस के लिये लक्ष्मी बाई, दुर्गावती का नाम ही बस होगा।

अरे ! राम २ !! पाठक कहां तो 'ज्योति' दर्शन कर उस की सेवा के लिये कुछ वीर बाला रूपी पुष्प लेकर उपस्थित होना चाहता था और कहां भूमिका ही रौगन की आंत हो गई। देश-दशा पर हाथ पैर साफ किये, होली का अवसर समझ कर क्षमा करना और हमारे मूल विषय को ध्यान पूर्व्वक पढ़ स्त्री सुधार की ओर अग्रसर होते हुए इन त्रिदेवियों को हृदय से अभिवादन करना, बस-सुनिये।

महाराणा उदय सिंह जिस समय चित्तौड़ में राज्य करते थे, उसी समय यहां दिल्ली के तख्त पर युवक अकबर बादशाह बैठे थे, कहने की आवश्यक्ता नहीं कि दिल्ली के सिंहासन पर तब तक बैठे हुए मोगल और पठान वंश के सभी बादशाहों में अकबर सब से बढ़ कर राजनीति-कुशल और राज्य-गौरव के बढ़ाने वाले थे। उन्हों ने अपनी अल्पावस्था ही में उत्तर भारतवर्ष में साम्राज्य-विस्तार करते हुए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सन १५६८ ईस्वी में चित्तौड़ पर चढ़ाई की थी।

सोलह वर्ष का बालक वीर पुत्र उस समय केलवाड़ा प्रांत में राज्य करता था, उस की जननी कर्म्मा देवी एक आदर्श क्षत्राणि थी, जिसकी सम्मति व सहायता से ही पुत्र का राज्य-शासन सुचाल रूपेण चल रहा था। जिस समय अकबर के चित्तौड़ पर चढ़ाई करने का समाचार माता ने सुना, उसी समय वह पुत्र से उत्साह पूर्ण वाक्यों में बोली—

"बेटा! अकबर जैसा प्रबल शत्रु मेवाड़ में अपनी विजय-दुंदभी बजाता आ रहा है, अतः सब कार्य्यों को छोड़ युद्ध के लिये, सैन्य समेत चित्तौड़-रक्षण की कामना रख शत्रु से साम्हना करने को सत्वर कूच कर दे"।

पुत्र बोला! मां जी ठीक है, पर राणा जी ने तो इस संबंध में मुझे अब तक निमंत्रित ही नहीं किया है, तब भी जाना क्या ठीक है?

कर्म्मा देवी—बेटा! तू अभी बालक है ऐसा समझ कर ही राणा जी ने तुझे सूचना न दी होगी, पर क्या, ऐसा सोचता हुआ तू मेवाड़ वासी राजपूत होकर भी जन्म भूमि मेवाड़ को आपत्ति-ग्रस्त देख घर में बैठ रहना अपना कर्त्तव्य समझता है? ऐसा करते हुए क्या मेरी उज्ज्वल कोंख को कलंकित करना चाहता है? राणा की प्रजा होकर उन पर शत्रुओं का आक्रमण होते देख कर भी क्या तूं सहायता करना अनुचित समझता है? बस, अब व्यर्थ बकवाद न कर और मेरी सम्मति के अनुसार शत्रुओं से साम्हना करने को समर-भूमि में उपस्थित हो। बालक तूं ऐसा समझ कायर मत बन, सब प्रकार की शंकाओं को परित्याग कर दे, तूं मेरी संतान है, मुझे आशा है कि बालक होने पर भी तूं युद्ध-कला में किसी शूरवीर राजपूत से कम बहादुरी न दिखायगा। राणा जी ने तुझे नहीं बुलाया, न सही, प जननी-जन्मभूमि आपत्ति-ग्रस्त दशा में कातर स्वर से अपने उद्धार की आशा रख प्रत्येक राजपूत को पुकार रही है, उसे सुन। इस निमंत्रण से अधिक मान राणा जी का निमंत्रण नहीं रखता, बेटा! निश्चय रक्खो कि अकस्मात तुम्हारे पहुंच जाने से राणा जी रुष्ट न हो प्रसन्न होंगे, यदि दैवयोग से वे तुम्हारी सेवा स्वीकार करने में कुछ आगा पीछा करें तो भी तुम हताश न हो परोक्ष रूप में स्वदेश-सेवा की ठान ठानते हुए शत्रुओं से साम्हना करते हुए उन्हें राजपूती बल का दर्शन कराना, भगवान कृष्ण के इस वाक्य को "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्य से महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः" न भुला देना। यदि राणा जी तुम्हारे इस उचित हठ से अप्रसन्नता प्रगट करते दिखें तो नत-मस्तक हो उसे सह लेना यही राजपूतों का कर्त्तव्य-कर्म्म है वे तो युद्ध चौपर है और अस्त्र शस्त्र ही पासे हैं, समझ अपने खेल से बाज नहीं आ सकें, चाहे जो हो—

माता के ऐसे उत्साह पूर्ण वाक्य सुन पुत्र ससैन्य चित्तौड़ की ओर चला गया, पुत्र को स्वस्ति वाचन् कर विदा कर देने के अनंतर कर्म्मादेवी ने अपनी कन्या कर्णवती, और पुत्र वधू कमलावती को पास बुलाया, और बोली—मेरा प्राण समान पुत्र अभी बालक है, अतः मैं उसे अकेला भेज घर में सुख से नहीं बैठ सकी इस लिये तुम दोनों यहां का प्रबंध रखना और मैं पुत्र की सहायता के लिये युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करती हूं।

यह सुन कर्णवती बोली—मां जी क्या मेरा भाई मुझे कम प्यारा है, सहोदर की सहायता करने का अधिकार क्या सहोदरा को नहीं है?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्या मैं तुम्हारी पुत्री नहीं हूं ? क्या मैंने तुम्हारा वीर-पय-पान नहीं किया ? क्या उस बल से मैं भी शत्रु-शिरच्छेदन में अपना शस्त्र कौशल न दिखा सकूंगी ? अतएव मां जी मुझे भी अपने साथ लेते जाइये, तुम वृद्धा होने पर खड्गहस्त हो समर में जावो और मैं युवती होने पर सुवर्णा लंकारों से शोभित अपने हाथों को देख घर के भीतर बैठी रहूं, यह मेरी आत्मा स्वीकार नहीं कर सक्ती।

दूसरी ओर से पुत्रवधू कमलावती बोली—मां जी ! मैं भी साथ ही रहूंगी मैं वीर राजपूतनी सहधर्मिणी हूं। स्वामी के साथ रह शत्रुओं से सन्मुख समर करना मेरा प्रधान कर्त्तव्य है, क्षत्रिय बालाएँ कितनी ही कम अवस्था की क्यों न हों पर वे अपना क्षात्रधर्म्म पालन करने में चूक नहीं सक्तीं। यदि स्वामी युद्ध में विजयी होगें तो मैं भी उनके साथ कीर्त्ति पताका फहरा दूंगी यदि दैवयोग से वीर गति को प्राप्त होगए तो मैं भी उन्हीं के साथ ही इस नश्वर तन को त्याग चली जाऊँगी आशा है आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर मुझे अवश्य साथ ले चलेगीं।

पुत्री और पुत्रवधू की ऐसी साहस मयी बातें सुन कर्म्मवती को अपूर्व्व आनन्द हुआ, और उन्होंने उन दोनों को अपने ही हाथ से वीर वेष से सुसज्जित कर दिया आप भी उसी भांति सज्जित हुईं और दोनों के साथ घोड़ो पर बैठ चितौर की ओर रवाना होगई।

इस युद्ध में जो राजपूत राणा उदयसिंह की सहायता को आये थे उन सबमें वदनौर के ठाकुर जयमल ही बहादुरी और साहस में श्रेष्ट थे इसलिये वे ही मुख्य सेनापति बनाये गये, पर दैवयोग से सन्मुख-समर करते २ ही उनका शरीरांत होगया।

इधर पुत्र बालक होने पर भी अपने अपूर्व्व रण-कौशल से शत्रु-दल को चकित कर रहा था यह देख राणा जी परम प्रसन्न हुए और उन्होंने जयमल के स्थान पर पुत्र को ही अपना प्रधान सेनापति बना दिया।

ऐसे उच्च पद तथा चित्तौर रक्षण जैसे कठिन कार्य्य का भार प्राप्त होने से पुत्र भी परम प्रसन्न हुआ।

पाठक और पाठिकां देखें—कि पुत्र उस समय शत्रु-व्यूह भेदने में अभिमन्यु की नांई आगे बढ़ रहा था, और अकबर ने अपनी कुटिलता से कौरवों को भी मात करने का निश्चय कर रक्खा था। तभी उसने अपने सेनापति को एक ओर से ससैन्य पुत्र से युद्ध करने भेज दिया,लड़ाई होने लगी। तब दूसरी ओर से खुद श्रीमान् विपुल टिड्डी दल फौज को साथ ले दौड़ पड़े, कहने का तत्व यह कि चारों ओर से पुत्र को घेर, ससैन्य नष्ट कर देने की लालसा ने ही उन्हें ऐसा अन्याय पूर्ण युद्ध करने को निश्चित कर दिया।

आइये अब जरा वीर रमणी रत्नों का कौशल देखें। उन्होंने आकर एक संकीर्ण रास्ते में अपना अड्डा जमाया और एक २ कर तीनों ने मोगल सैन्य पर बंदूक-घन से गोलियां रूपी ओले बरसाना शुरु कर दिया।

इन देवियों ने शत्रु समूह को छितर वितर कर दिया मोगल सैन्य घबड़ा उठी और अकस्मात कहां से गोलियां आ रही हैं इसका पता पाने को पीछे की ओर देखने लगे तो मालूम हुआ कि तीन स्त्रियां वीर वेष से सज्जित हो पहाड़ी मार्ग को रोक गोलियों की बौछार कर रही हैं, और उनसे मोगल सैनिक एक २ कर धराशायी होते जारहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब इसके समझाने की आवश्यक्ता नहीं कि यह तीन-रमणी-रत्न-कौन थे ?

युद्धारंभ ही में वीर विदुषी कर्म्मदेवी जानती थी कि अकबर स्वयं सैन्य समेत अन्य मार्ग से पुत्र पर आक्रमण करने से न चूकेगा। यदि उसका यह आक्रमण हम रोंक सके तो निश्चयात्मक मेरे वीर पुत्र को विजयी बनने में पूर्ण सहायता प्राप्त हो सकेगी। ऐसा विचार कर ही वह अपनी पुत्री और पुत्रवधू समेत गुप्त रीति से पर्वत कंदरा में छिपी हुई थी।

अकबर ससैन्य जिस समय उस मार्ग से आगे बढ़ रहे थे उसी समय उसने गोलियों की बौछार करना प्रारंभ कर दिया। उसके मन में आज कल के बहादुर कहलाने वालों की कोई यह शंका ही उत्पन्न न हुई कि हम तीन (पुरुष नहीं) अबलाएँ इस अकबर की प्रथम सैन्य के प्रवाह को रोकने में क्या समर्थ हो सकेगी ? उसे अपने हृदय में पूर्ण विश्वास था कि, पुत्र की सैन्य अकबर की अन्य सेना का जब तक संहार करेगी, तब तक मैं अकेली ही इस कुटिल शहंशाह को ससैन्य रोक सकूंगी।

पाठक देखिये एक अबला क्षत्राणी का साहस, उस का वीरवेष, उस का रण—कौशल, फिर साथ ही नजर कीजिये हमारे मूंछ मुड़ाकर, जनाने बनने वाले पुरुष-नाम-धारी का पुरुषों, पर, इन का सर्वस्व चला जावे, देश रसातल में मिल जावे भाई बन्धु भूख से छट पटावें, पर बन्दों के ऐश आराम में फर्क न हो बस यहां की यही सुधार लीला है, महापराक्रमी अकबर के साथ इन त्रिमूर्ति राजपूत महिलाओं का अपूर्व दर्शनीय युद्ध प्रबल वेग से चलने लगा, और दैवयोग से कुछ देर में पुत्री कर्ण वती गोली खाकर जमीन पर गिर पड़ी।

कर्म्म देवी ने एक वार उस की ओर दृष्टिपात किया, मोह ने अपना आवरण डालना चाहा, उस के हृदय में धारणा हुई कि मैं सफल हो जाऊँगी, पर नहीं उसे हार कर आवना पड़ा, कर्म्म देवी ने देखा कि पुत्री का शरीरांत हो गया पर वर्तमान समय शोक कर कर्त्तव्य च्युत होने का नहीं है। विचारते हुए उसने मन को संबोधन किया कि पुत्री समर शैय्या पर सोने के लिये तो आई ही थीं फिर उस की इच्छा पूर्ण हुई, शोक की आवश्यक्ता ही क्या है।

फिर मैं भी तो उसी मार्ग को प्राप्त करने की लालसा रखती हूं। इस प्रकार कहते हुए दूने वेग से वृद्धा कर्म देवी अपनी बन्दूक से शत्रुओं पर हमला करने लगी। पर पाठको! भला हजारों सैनिकों के सन्मुख दो स्त्रियां कब तक ठहर सकती थी ? थोड़ी देर में यह दोनों सास-बहू भी वीर गति को प्राप्त हुई!

यहां लोग कह सकते हैं कि यह क्या प्रशंसा की बात है ? हम कहेंगे हां ! विजयी न होने पर वीर-गति को इस प्रकार प्राप्त होना, बहुत बड़ी प्रशंसा की बात है, फिर स्त्रियां उन के साहस, शौर्य्या, स्वदेश-प्रेम, एक २ कर सभी स्त्री पुरुषों के लिये उन्नति-पथ का पथिक बनाने को उपदेश की नांई आदर्श-आदेश है।

ईश्वर की लीला विचित्र है, यदि कुछ देर हुई होती तो पुत्र भी सहायता को पहुंच जाता .....यहां पुत्र अकबर की प्रथम सेना को परास्त कर उसकी दूसरी सेना को पराजित करने के लिये आगे बढ़ा और पर्वत के सन्मुख पहुंचने पर क्या देखता है कि जननी, भगिनी और पत्नी तीनों वीर-गति को प्राप्त हो चुकी हैं, कुछ सोचने के अनन्तर उसने सेना को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और खुद उन के सन्मुख पहुंचा। पारस्परिक प्रगट प्रेम और पुत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

से अन्तिम भेंट पाने की लालसा के कारण अब भी कर्म्म देवी और कमलावती का श्वासोच्छवास चल रहा था। पुत्र ने उन दोनों को अपनी गोद में लिटाया, एकाएक कमलावती की आंख खुली और पति-दर्शन पा उसे असीम आनन्द हुआ अनन्तर प्राण-त्याग दिये, किन्तु कर्म्म देवी कष्ट पूर्वक ठहर २ कर पुत्र से बोली बेटा पुत्र ! मैं जाती हूं, इस युद्ध का कोलाहल अब भी मेरे कानों में गूञ्ज रहा है, मोह त्याग, बेटा ! जा यहां नाहक समय को बरबाद न कर, हां स्मरण रखना, अगर शत्रु को परास्त कर देश संरक्षण न कर सको, तो घर को वापस न जाना इस नश्वर-शरीर को युद्ध क्षेत्र ही में पंचतत्वों में मिल जाने देना और सच्चा सुख पाने के लिये सानन्द स्वर्ग में पहुंच जाना, मैं तेरी बलैयां लेने के लिये वहीं तैय्यार रहूंगी .....व.....स.....बस कठिनता से कहते २ उस के प्राण पखेरू इस तन पिञ्जर को परित्याग कर चले गये।

वीर पुत्र ने माता के अन्तिम आदेश पर ध्रुव ध्यान रखते हुए हर हर महादेव एक लिङ्गी भगवान की जय कहते हुए आगे बढ़ युद्ध में प्रवेश किया, और कुछ देर अपने पराक्रम की पराकाष्टा दिखा शत्रु समूह को चकित करते हुए पुत्र ने भी वीर गति प्राप्त कर स्वर्गा रोहण किया।

इस भांति अकबर ने कठिनता से चितौर पर विजय पाई राणा उदय सिंह ने वहां से हट अखली पर्वत में आश्रय लिया, और वहीं उदय पुर नामक नये राज्य की संस्थापना कर पहाड़ी प्रदेश पर राज्य करने लगा ऐसा कहा जाता है कि इस युद्ध में इतने अधिक राजपूत वीरों की मृत्यु हुई कि उन के यज्ञोपवीतों का वजन ७४½ मन हुआ था, इस समय राजपूताने में चार सेर का एक मन माना जाता था, कितने ही लोग अभी भी पत्र के सरनामा पर ७४॥ लिख देते हैं, जिस का अर्थ यह माना जाता है कि जिस के नाम पत्र लिखा गया है, उस के सिवाय यदि अन्य कोई उस पत्र को पढ़ेगा तो उसे चित्तौर नाश और उस युद्ध में काम आए हुए राजपूत वीरों की हत्या का दोष लगेगा। अस्तु

संक्षिप्त चरित्र का अन्त हुआ—हमारी यह तीनों चरित नायिकायें सचमुच आदर्श वीराङ्गनायें थी, स्वतन्त्रता का अवतार थी प्रेम की प्रतिमां थी, साहस की मूर्तियां थी आत्मत्याग की आदर्श स्वरूपा देवियां थीं संसार में उनकी कीर्ति अक्षय और अमर रहेगी इस में कोई संदेह नहीं हम भी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि देश में ऐसी ही बालायें उत्पन्न की जाए कि इनके आदेश को मान भारत-संतान जननी-जन्मभूमि पर बलिदान होना अपना कर्त्तव्य समझें।

आशा है हमारे पाठक पाठिकायें भी सामयिक देशोद्धार के प्रयत्न में महात्मा जी के आदेश पर चलना अपना कर्त्तव्य समझ अहिंसात्मक असहयोग के वृती होंगे। सैनिक बन सेना नायक की आज्ञा को पालन करना अपना धर्म्म समझो उस में शङ्का करने का अधिकार सैनिक को नहीं होता, सोच, व्यर्थ अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी न पकायेंगे, और एक सूत्र में आकड़े बंधकर पौरुषादि बल अवश्य दिखायेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय युवकोद्गार।

लेखक—श्री० गोविन्ददास गुप्त

देखो मुझे न लाञ्छित करना, श्रीमन्! मैं हूं ऋषि सन्तान।
पला पुषा हूं गाँधी युग में, सुना देश का गौरव गान।
हंसो न मुझको लख गाढ़े में, रहता सदा न गाढ़ा वक्त-
स्वावलम्ब सोपान प्रथम यह, गाढ़े ही में हुआ सशक्त।
वाह्य रूप है नहीं कसोटी, प्रकट करे जो हृद्गत भाव।
कष्ट कर्म्म की अग्नि-परीक्षा, द्योतक है नर स्वर्ण स्वभाव।
लो काटो हृदरक्त देखलो, विधिवत् उसका कर विश्लेष।
भिदीं रक्त में यह बातें हैं, खूब देखलो-कर अन्वेष।
मसी-मुहम्मद-मोहन का-वह, शिक्षामृत कर डाला पान।
शेक्सपियर हाँ कालिदास के, ग्रन्थ रत्न सब डाले छान।
प्रकृति-मानवी तत्व रूप में, आज मुझे है सारी ज्ञात।
किसे चिढ़ाते भय दिखलाते, विचलित होगा-क्या-सुकरात।
सार्व्व भौम जो नियम प्रकृति के, सभी पुरुष उनके आधीन।
जाओ-जाकर कहीं देखलो, योरोप, ब्राजिल, अथवा-चीन।
वाह्याडम्बर भले भिन्न हो, किन्तु तत्व में सब हैं एक-
रङ्ग मञ्च पर खेल खेलते! भूल मरो नैपश्य विवेक?
धन वैभव या भौतिक उन्नति, अभिनय कासाकोरा स्वांग।
रङ्गभूमि का झूठा राजा, कर सकता क्या पूरी मांग?
खिल्ली मेरी भले उड़ाओ, दिखा तरस करके अपमान-
तानाकशी करो तुम जीभर, कह अयोग्य काला नादान।
किन्तु देखना कहीं अन्त में, करना पड़े न पश्चात्ताप।
इसी भूल के लिये कहीं फिर, रोमत देना देखो आप?
वीर कहूंगा तभी आपको, ऐसे ही यदि रहे अशङ्क।
अटल रहे इस कूट नीति पर, विचलित होकर हुए न रङ्क!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैज्ञानिक संसार

१. बिजली की दातन

आज कल विलायत में एक नवीन प्रकार का दान्तों को साफ करने वाला ब्रुश बनाया गया है जिस को कि हाथ से दान्तों से रगड़ने के स्थान पर बिजली ही से यह काम लिया जायगा। विलासता अभी और कहां तक? क्या यह सब आधुनिक प्रकृतिस्थ सभ्यता के जीवन के अन्तिम चिन्ह तो नहीं?

———

२. उड़ने वाली चुहिया

आज कल इन्ग्लैण्ड में एक उड़ने वाली चुहिया दिखलायी जा रही है। इस की पून्छ के बाल उड़ने वाले जानवरों के पङ्ख के ऊपर की बालों की झिल्ली के समान, पून्छ के दोनों ओर एक चौड़ी पंक्ति में गुन्थे हुए है। इस के पैरों की बनावट ऐसी है कि यह बड़ी सुगमता से दीवारों और छत पर चल फिर सक्ती है। उड़ने में सहायता देने वाली तङ्ग झिल्ली अगले पैरों से शरीर के मध्य तक फैली हुई है। इस के सहारे यह जानवर एक वृक्ष से दूसरे पर बड़ी सुगमता से उड़कर पहुंच जाता है और अपने पैरों की बनावट के कारण उसकी टहनियों को बड़ी मज़बूती से पकड़ लेता है। इस चुहिया की लम्बाई केवल दो इञ्च है और इस का असली निवास स्थान आस्ट्रेलिया है।

———

३. भुने हुए दाने और उन के लाभ

अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर की ओर कैनरी नाम का एक छोटे २ द्वीपों का समूह है। वहां पर गेहों से एक स्वादिष्ट व्यञ्जन जिसे "गोफिया" कहते हैं बनाया जाता है। गेहों को इतना भून लेते हैं कि वह रङ्गत में हलका लाल पड़ जाय और फिर उसे पीस लिया जाता है। बहुत करके यह गेहूं से ही बनाया जाता है परन्तु कभी २ जौ, जयी, मक्का, मटर और अन्य प्रकार के अनाज और फलों से भी उसे बनाते हैं। एक सेर गोफियो में ८ तोले पट्ठों को दृढ़ करने वाला अलब्युमैन का भाग होता है, कोई सवा तोला चिकनाई का भाग और तीन पाव के लग भग शक्कर और निशास्ता इत्यादि का भाग रहता है। कभी कभी "गोफियो" को सूका ही खाते हैं, नहीं तो इस में ज़रा सा नमक डाल कर आटे की तरह गून्ध लेते हैं और फिर चमड़े की थैलियों में डाल कर दबा लेते हैं और काट कर टुकड़े बना लेते हैं। कभी कभी यह सूका आटा दूध, शोरबा, कहवा इत्यादि में भी डाल लिया जाता है।

भारत में दाने भून कर खाने का बड़ा रिवाज है। हमें तो "गोफियो" में भी भुने दानों के अतिरिक्त और कुछ दिखलाई नहीं पड़ता। आज एक जर्मन वैज्ञानिक इस की इतनी प्रसंशा करता है, और हम "सभ्य" भारतवासी इस "असभ्य" भोजन को घृणा करने लग पड़े हैं।

———

४. पत्थर में जल

कहावत है कि श्री शिवा जी के गुरु राम दास जी एक मरहटा सरदार को अपने देश और जाति के हित के लिये प्राण अर्पण करने के लिये क्षात्र धर्म का उपदेश दे रहे थे। सरदार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का अभी २ विवाह हुआ था और उसे चिन्ता थी कि यदि मैं मर गया तो युवती भार्या की कौन रक्षा करेगा। गुरुदेव समझा रहे थे कि परमात्मा आप सब के रक्षक हैं और हमें उन के ही सहारे अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिये। सरदार की समझ में यह बात नहीं आती थी। गुरु देव ने पास पड़े एक पत्थर को उठा लाने की आज्ञा दी। जब सरदार उस पत्थर को उठा लाया तो उस को तोड़ने पर उस में एक मेंडक और कुछ जल बाहर निकल पड़ा।

इस कथा में कितना सत्य है इस से हमें प्रयोजन नहीं परन्तु इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि पत्थर के भीतर जल का पहुंच जाना कोई असम्भव बात नहीं। आज कल भी कितने ही पत्थर ऐसे मिलते हैं जो कि अपने में एक बड़ा भारी भाग जल का सोक लेते हैं। एक प्रकार का पत्थर अपने बोझ के सौ पीछे सात भाग जल सोक लेता है, एक और पत्थर है जो कि ४ से ६ भाग तक सोक लेता है। पत्थर जिसे हम इतना अभेद्य समझते हैं उस में भी जल अपना रास्ता बना ही लेता है।

हमारी मञ्जूषा

१. देश पूजा में आत्म-बलिदान—लेखक श्रीयुत भाई परमानन्द जी एम० ए०, प्रकाशक श्री० राजपाल जी प्रबन्धकर्त्ता आर्य्य पुस्तकालय सरस्वती आश्रम, अनारकली लाहौर। पृष्ट संख्या १७५ मूल्य १।)

भाई परमानन्द जी का नाम आज प्रत्येक भारत वासी की जिव्हा पर है, यही सुप्रसिद्ध देश भक्त इस पुस्तक के लेखक है। इस छोटी सी पुस्तक में भाई जी ने संक्षेप से भारत का गत इतिहास दिया है। परन्तु इस इतिहास में कई एक विशेषतायें हैं। भारत के इतिहास प्रायः मुसलमानों के आक्रमण से ही आरम्भ होते हैं उनके पाठ से तो यही प्रतीत होता है कि मानों इस से पहिले यहां जांगली ही रहते थे। इस पुस्तक के पाठ से यह भली प्रकार पता लग जायगा कि यह समय ही भारत का बड़ा उज्ज्वल समय था। दूसरी विशेषता यह है कि भारत की प्राचीन स्त्रियों के जीवन चरित्र और उनसे जो हमें शिक्षा मिलती है उनका बड़ा मनोहर वर्णन है। इन सब से बढ़ कर विशेषता इतिहास की लेख शैली है। इस में, न तो राजे महाराजों की बन्शावली, उनके पैदा होने और मरने के समय से ही मतलब रखा है और न बड़ी लड़ायियों के सम्बत इत्यादि देने पर ही व्रथा समय खर्च किया है, वरन इनके स्थान में उन घटनाओं का वर्णन है जिन्होंने कि वास्तव में भारत का इतिहास बनाया है, किस प्रकार एक घटना का दूसरी से सम्बन्ध है, किस प्रकार इनका देश और जाति पर प्रभाव पडा, किस प्रकार और किन कारणों से भिन्न २ जातियों की उन्नति हुई और वह पुनः नाश को प्राप्त हुई। जन साधारण पर इनका क्या प्रभाव था, देशकी राजनैतिक, सामाजिक और सामर्प त्तक अवस्था

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्यों और कैसे बदलती रही इत्यादि विषयों की बड़ी गम्भीरता पूर्वक विवेचना की गयी है। इस परम उपयोगी पुस्तक को प्रत्येक हिन्दी जानने वाले लड़के और लड़की और जन साधारण को अवश्य मनन करना चाहिये।

२. गीतामृत—लेखक भाई परमानन्द जी एम० ए० पृष्ट संख्या ४०० मूल्य १॥), उपरोक्त राजपाल कम्पनी से प्राप्य।

जिस समय पूज्यपाद भाई परमानन्द जी काले पानी में कैद थे, उन दिनों वह गीता का स्वाध्याय किया करते थे। गीता के पाठ से उनके मनमें जो विचार उठते थे उनको वह नोट के रूप में लिखते रहते थे। यह पुस्तक उनही नोटों का संग्रह है। पुस्तक की बड़ी खूबी यह है कि बहुत बड़ी न होते हुए भी, मनुष्य जीवन सम्बन्धी सब विषयों पर बड़ी योग्यता से बहस की गयी है। गीता पर कितनी ही पुस्तकें लिखी गयी हैं परन्तु वह इतनी बड़ी हैं कि पढ़ने वाले का मन डर जाता है, प्रस्तुत पुस्तक इस दोष से सर्वथा रहित है। इसके पहिले २५० पृष्ट में योग्य लेखकने, ज्ञान, भक्ति और कर्म सम्बन्धी सब बड़े बड़े प्रश्नों पर प्रकाश डाला है। ज्ञान क्या है, उसको सापेक्षता, अन्तिम तत्व, प्राकृतिक, मानसिक और सामाजिक विकाश, मतमतान्तरों का प्रादुर्भाव, आत्मस्वतन्त्रता, मनुष्य की भली और बुरी प्रवृतियों का घोर संग्राम, धर्म अधर्म, कर्त्तव्य इत्यादि गहन विषयों पर बड़ी विद्वत्ता से बहस की है। प्राचीन ऋषि, मुनि और पंडितों के विचारों के साथ २ आधुनिक पश्चमीय फिलासफरों, वैज्ञानिकों और तत्ववेत्ताओं के विचार भी तुलनात्मक दृष्टि से साथ साथ दिये हैं जिस से पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। अन्त में १५० पृष्ट में गीता के श्लोक और उनका सरल अनुवाद दिया गया है। हम निःसंकोच हो कह सकते हैं कि हम ने आज तक गीता पर जितनी पुस्तकें देखी हैं, यह उन सब से उत्तम है।

३ नवयुवको ! स्वाधीन बनो—सङ्कलयिता श्री० जीतमल लूणिया, प्रकाशक हिन्दी साहित्य मन्दिर इन्दौर, पृष्ट० ८०, मूल्य ॥)

वर्तमान समय में भारत के सन्मुख बड़ा प्रश्न स्वाधीनता प्राप्त करना है। इस समय भारत वासियों का क्या कर्त्तव्य है, इस पर देश के नेता समय २ पर अपने विचार प्रकट करते रहे हैं। तिलक, गान्धी, मुहम्मदअली, सरोजनी नायडो, प्रभृति देश भक्तों के स्वतन्त्रता, असहयोग, देश पूजा, भारतके नवयुवकों और देवियों का कर्त्तव्य इत्यादि विषयों पर उपदेशों का सार इस पुस्तक में दिया है। संग्रह बहुत उत्तम हुआ है और हमें आशा है कि पुस्तक नवयुवकों और बालिकाओं के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

४. वेदज्ञ मैक्समूलर—लेखक सुरेन्द्रनाथ तिवारी, प्रकाशक नवल किशोर प्रेस लखनऊ, पृष्ट० ९३, मूल्य ।≈)

संस्कृत साहित्य से परिचित भारतवासी मैक्समूलर के नाम को भली प्रकार जानते हैं। इस पुस्तक में उसी संस्कृतज्ञ जर्मनी वासी विद्वान के बाल्यकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त की घटनाओं का सरल और सुन्दर भाषा में वर्णन है। विद्या प्रेमी नवयुवकों को इस परिश्रमी साहित्य सेवीके जीवन से, जिसने कि अनेक असुविधाओं के होते हुऐ भी अपने लक्ष्य की प्राप्ती में बड़ी सफलता प्राप्त की, कई प्रकार की शिक्षा मिल सक्ती हैं। यही महापुरुष था जिस ने की पहले पहल योरोप में सर्व श्रेष्ट वेद-भगवान की व्याख्या करके विद्वित् समाज का ध्यान इन की ओर खींचा। पुस्तक पठनीय है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

५. "महिला" इस नाम की एक मासिक पत्रिका विजयदशमी १९७८ से श्रीमती राम प्यारी जी यादवा के सम्पादिकत्व में आगरे से निकलनी आरम्भ हुई है अभी तक इसके दो अंक निकल चुके हैं। इसमें स्त्रियों सम्बन्धी लेख और कविताये रहती हैं जिन में से बहुत से उनके ही लिखे हुये होते हैं। हमें आशा है कि यह पत्रिका नारी समाज के लिये हितकारी सिद्ध होगी। ज्योति के प्रायः आधे साईज़ के २४ पृष्ट रहते हैं और श्रीमती सत्यव्रती आर्य्या माई थान आगरा से मिल सक्ती है।

कुसुमोद्यान

भारत की राष्ट्रीय महा सभा
इन्डियन नेशनल कांग्रेस का
३६ वां अधिवेशन।

अहमदाबाद

हमारी राष्ट्रीय महा सभा ने, अपना इस साल का अधिवेशन अहमदावाद में करके, उस नगर को अत्यंत गौरव प्रदान किया; और वहां के रहने वालों ने भी कांग्रेस की सफलता के लिये, तन, मन, धन, से भीष्म प्रयत्न करके, अपनी कर्त्तव्य परायणता का, अपूर्व और प्रशंनीय परिचय दिया है। कांग्रेस के दिनों में नगर ने एक अत्यंत मनोहर तथा उज्ज्वल रूप धारण किया; कोई व्यक्ति नहीं जिसने खद्दर को न अपनाया हो; प्रत्येक नागरिक के शीश पर विराजती हुई श्वेत वर्णीय गांधी टोपी "स्वदेशी" और 'असहयोग' की विजय की सूचना देरही थी।

सुवरमती नदी के तीर पर, एक विस्तृत स्थान में, छोटी २ दुकानों से घिरा हुआ, खद्दर का एक बड़ा भारी पिंडाल खड़ा किया गया था। सभासदों, तथा दर्शक मंडल की सख्या नियत होने के कारण, पिंडाल में केवल पंद्रह सहस्र व्यक्तियों के लिये स्थान बनाया गया था। पिंडाल में कुरसियों के स्थान पर पृथिवी पर, चादरें विछाई गयी थीं, जिन पर जूते पहिन कर चलना निषिद्ध था। सभा में जाने वाले व्यक्ति अपने जूते खद्दर की थेलियों में रख कर अपने साथ ले जाते थे; और पास रख कर बैठ जाते थे।

स्वदेशी प्रदर्शनी के लिये एक जुदा पिंडाल बनाया गया था जिस में रखी वस्तुऐं, भारतीय कारीगरों के कार्य कौशल और निपुणता की साक्षी दे रहीं थीं। इसी पिंडाल के एक भाग में गायन सभा का प्रबंध किया गया था।

खद्दी नगर की शोभा वर्णनातीत है। सहस्त्रों की संख्या में छोटे २ खद्दर के तंबू तने हुए थे, जिनके वीच में बीसियों बाजार और गलियां जा रहीं थीं। इन गलियों की सफाई यह देखते हुए कि प्रबंध केवल दो सहस्र स्वयं सेवकों के हाथ में था, और जन संख्या इतनी अधिक थी, वास्तव में आश्चर्य जनक थी। खादी नगर में बिजली की रोशनी, कांग्रेस के अपने बिजली घर के द्वारा, की जाती थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुजराती स्वयं सेवक दल ने इतनी बड़ी संस्था का एसा संतोषप्रद प्रबंध करके संसार को दिखला दिया है कि सेवा धर्मावलंबी मनुष्यों में कितनी शक्ति होती है और वह पुलिस और फौज से कहीं अच्छा काम कर सकते हैं।

गुजराती स्वयंसेवक दल में बहुत सी स्त्रियां थी। इन देवियों का स्वयंसेवक दल में प्रस्तुत होना ही इस बात को सिद्ध करता है कि असहयोग सर्वव्यापी, सर्वशक्तिसंपन्न तथा समाजिक और राष्ट्रीय सुधारों का एक मात्र साधन है।

एक वर्ष के अल्प समय में इतना परिवर्तन कर देना महात्मा जी जैसे स्वार्थत्यागियों, ही के लिये संभव हो सकता है।

———

कांग्रेस की कार्यवाही

ता० २७ दिसम्बर को अहमदाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन आरम्भ हुआ। श्री चित्तरञ्जन दास के जेल में होने से हकीम अजमल खां ने सभापति के आसन को सुशोभित किया। पिडाल में तिल रखने तक को जगह न थी। श्रोताओंमें महिलायें भारी संख्यामें उपस्थित थीं।

स्वागत कारणी कमेटी के चेयरमैन श्री० वल्लभ भाई जे० पटेल ने एक सार गर्भित वक्तृता दी जिस में उन्होंने हिन्दू मुसलिम एकता, शिक्षा, स्वदेशी, मद्य-पान-निषेध, और अस्पृश्यता, की योग्य पूर्ण विवेचनाकी और देश बन्धु दास की अनुपस्थिति में हकीम अजमल खां जी से सभापति का आसन ग्रहण करने की प्रार्थना की।

हकीम जी ने सभापति का आसन ग्रहण करके उर्दू में एक महत्व पूर्ण भाषण किया। उन्होंने देश बन्धु दास की ग्रिफ्तारी पर शोक प्रकट करते हुए गतवर्ष के असहयोग प्रवाह का सिंहावलोकन किया। तत्पश्चात आपने युवराज की भारत यात्रा पर विचार करते हुए कांग्रेस की नीति का समर्थन किया। उस के बाद मोपलों के दंगे पर अत्यंत शोक प्रकट करते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

भाषण के समाप्त होने पर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने देश बन्धू दास और श्रीमती दास का सन्देश, जिस में सर्व साधारण जनता से स्वयं सेवक बनने का अनुरोध किया गया था, पढ़ कर सुनाया। तदनन्तर उस दिन की कार्य्य वाही समाप्त हुई।

२८ दिसम्बर को सभा लगने पर महात्मा गांधी जी ने एक लंबा चौड़ा प्रस्ताव पेश किया। अपने प्रस्ताव के समर्थन में उन्होंने हिन्दी और अंगरेजीमें जोरदार व्याख्यान दिये। उनका पेश किया हुआ निम्न लिखित आशय का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हुआ।

(१) यह कांग्रेस उस असहयोग के प्रस्ताव को जारी रखने का दृढ़ निश्चय करती है जो कि कलकत्ते की विशेष कांग्रेस में पास हुआ, और नागपुर की कांग्रेस में दोहराया गया था।

यह कांग्रेस सर्वसाधारण जनता से, कांग्रेस के आदेशानुसार, स्वयं सेवक बनने का अनुरोध करती है। स्वयं सेवक की आयु १८ वर्ष से कम न होनी चाहिये और उसे प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करने चाहियें।

यह कांग्रेस वैयक्तिक तथा सार्वजनिक सत्याग्रह के सङ्गठन के लिये सलाह देती है।

यह कांग्रेस राष्ट्रीय तथा अन्य पाठशालाओं के, १८ वर्षीय तथा उससे अधिक वय वाले विद्यार्थी और अध्यापकों को स्वयं सेवक बनने का आदेश करती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह कांग्रेस महात्मा गांधी को, भारत सरकार से समझोता करने और कांग्रेस के सिद्धान्तों को बदलने के अधिकार के सिवाय, कांग्रेस, अ० भा० को० कमेटी, कार्य कर्त्ती कमेटी, और अपना उत्तराधिकारी नियत करने के अधिकार प्रदान करती है। यह कांग्रेस जेल में गये देश भक्तों को बधाई देती है।

अन्य प्रस्ताव।

महात्मा गांधीके प्रस्ताव के स्वीकार हो जाने पर कई प्रस्ताव और स्वीकृत हुए जो नीचे प्रकाशित किये जाते हैं इन्हें सभापतिने ही उपस्थित किया और बिना बहसके ये स्वीकृत हुए। (१) नर्मदल वालों और दूसरे ऐसे लोगोंसे जो असहयोगमें विश्वास नहीं करते, यह आग्रह किया गया है कि आप लोग स्वदेशी, अछूत, नशाखोरी मिटानें, और एकता सम्बन्धी बातों में सहायता करें, (२) मोपला उपद्रवको शांत करने में सरकारकी नीतिकी निन्दा की गयी है और उन मोपलोंकी भी निन्दा की गयी है जिन्हों ने बल प्रयोग से धर्म परिवर्तन कराया, (३) गाजी कमाल पाशा और तुर्की की सफलता पर बधाई दी गयी है, (४) बम्बईके उपद्रवकी निन्दा की गयी है, (५) कांग्रेस की नियमावली में परिवर्तन किया गया है जिससे १८ वर्षके लोग भी कांग्रेस के सदस्य हो सकें (अब तक २१ वर्षके उमरकी कैद थी), (६) सब मजहबों को विश्वास दिलाया गया है कि कांग्रेसकी यही इच्छा है कि सब के अधिकारों की पूरी पूरी रक्षा हो, (७) भूत-पूर्व सभासदों के लिये यह कैद लगाई गयी है कि यदि आप इस पदकी हैसियतसे कांग्रेसके सदस्य रहना चाहें तो कांग्रेस के लक्ष्यपत्र पर दस्तखत करें, (८)' ट्रांस-फरेबुलब्रोट' के अनुसार यदि कोई समिति निर्वाचन न कर सके तो दूसरी प्रकार काममें लावे, (९)यह कांग्रेस हृदयसे श्रीमान् बाबा गुरदित्त सिंह जी को बधाई देती है जिन्होंने श्री गुरुनानक जहाजका प्रबन्ध किया था और जिन्होंने ७ वर्ष तक सरकारके विफल प्रयत्नके बाद स्वयं ही देशके अर्थ आत्मसमर्पण किया। यह कांग्रेस अन्य सिख नेताओंको भी बधाई देती है जिन्हों ने धार्मिक अधिकार और स्वतंत्रताकी कमी होने देनेसे जलमें जाना अधिक अभीष्ट समझा और सारे सिख संप्रदायकों इस वास्ते बधाई देती है कि बाबाजीकी गिरफ्तारीके समय और पुलीस और सैनिकोंके कितने ही मौकोंपर उत्तेजनता देनेपर भी वह सर्वथा शान्त रहा।

लक्ष्य परिवर्तन।

मोलाना हसरत मोहानीने लक्ष्य परिवर्तन के लिये प्रस्ताव उपस्थित किया था आपका कहना था कि लक्ष्य यह होना चाहिए—

'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्देश्य है कि स्वराज्य अर्थात् पूर्ण स्वतन्त्रता मिले जिसमें विदेशियोंका कोई नियत्रण न हो और इस उद्देश्यकी प्राप्ति हर उचित और शान्तिमय उपायसे की जाय'। मोलाना सहिब का प्रस्ताव बहुमत से अस्वीकृत हुआ।

उपर्युक्त प्रस्ताव पास हो जाने पर सभापति नें अपनी छोटीसी वक्तता में लोगों को असहयोगी बने रहने का अदेश किया और कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद दे कर भाषण समाप्त किया—

गत वर्ष की कांग्रेस के सभापति श्री विजयराघवा चार्य ने हकीम जी को धन्यवाद देने का प्रस्ताव किया जो कि सर्व सम्मति से पास होने पर हकीम जी को "वंदेमातरम्" के नाद के साथ हार पहिनाया गया और सभा समाप्त हुई॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

नवम्बर मास के ज्योति के अङ्क में श्रीपाद दा० सातवलेकर जी द्वारा "धूम्रास्त्र" विषयक लेख पढ़ने का सौभाग्य हुआ, जिसमें यह भी बताया गया है कि मातृ भूमी की सेवा में कुटिल नीति का अवलम्ब करना भी वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल है। उसके लिये अथर्ववेद १२। १। ८। का निम्न लिखित वाक्य उद्धृत किया है। यथा—"यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः"। इसका उन्होंने यह अर्थ किया है कि बुद्धिमान् राष्ट्र धुरन्धर कुटिलतायों के साथ जिस मातृभूमि की अनुकूल सेवा करते हैं। इस प्रकार माया शब्द का अर्थ कुटिलता करके पंडित जी ने मातृभूमि की सेवा के लिये कुटिलता रूपी उपायका भी अवलम्ब करना वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल बताया है। हमारे ख्याल में उनका यह विचार ठीक नहीं प्रतीत होता। इसके निम्न लिखित हेतु हैं।

(१) छल कपट वेद को अभिमत नहीं। क्योंकि वेद में स्पष्ट लिखा है कि (सोम) परमात्मा सत्य की रक्षा करता है और असत् का नाश करता है। अथर्व० ८। ४। १२। तथा यह भी लिखा है कि वह (सोम) परमात्मा राक्षस को मारता है और असत्य बोलने वाले को मारता है। ये दोनों परमात्मा के बन्धन में सोते हैं। अथर्व० ८। ४। १३।

(२) पंडित सातवलेकर जी ने जो मन्त्र कपट को सिद्ध करने के लिये दिया है उसी सूक्त के पहिले मन्त्र में उन गुणों का निर्देश किया है जो कि पृथिवी के धारण करने वाले हैं। यथा (क) वृहत्सत्य (ख) उग्रामृत (ग) दीक्षा (घ) तप (ङ) ब्रह्म (च) यज्ञ। वह मन्त्र निम्न लिखित है।

सत्यं वृहद्वृत मुग्रं दीक्षातपो वहनयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। अथर्व० १२। १। १। इस प्रकार उस सूक्त के प्रारम्भ में ही जब पृथिवी के धारक (रक्षक) गुणों में वृहत्सत्य को गिनाया है तब वेद उस पृथिवी की रक्षा के लिये कपट की आज्ञा किस प्रकार देसकता है। सत्य के साथ वृहत् यह विशेषण देना इस सिद्धान्त को सूचित कर रहा है कि पृथिवी का धारण सार्व भौम सच्चाई के विना असम्भव है।

(३) अथर्ववेद में लिखा है कि "मा मर्च्यस्य मायिनः" अर्थात् कपटी मनुष्य की सेना कभी बलवती नहीं होती। अर्थात् युद्धों, जहां कि छल कपटों की प्रायः सम्भावना होती है, में भी वेद छल कपट की आज्ञा नहीं देता। क्योंकि इसमें स्पष्ट कहा है कि छल कपटियों की सेना वलवती नहीं होती। छल और कपट का आना सेना को निर्वल बना देता है।

(४) इसी प्रकार ऋग्वेद ३। ८। १५। ३। में निम्न लिखित पद आया है। "प्रादेवीर्माया सहते दुखोः"। जिसका अर्थ यह है अग्नि (राजा) अदेवी माया का पराभव करता है। यहां पर माया का विशेषण "अदेवीः" दिया है जिससे स्पष्ट है कि वेद के अनुसार माया (छल कपट) को आसुरीगुण गिनाया गया है दैवीगुण नहीं।

(५) अथर्ववेद ५। ११। ४। का निम्नलिखित वाक्य है।

यथा "त्वज्जनो मायो विभाय" अर्थात् हे परमात्मन् मायी मनुष्य तेरे से डरता है। इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्णन से भी पता लगता है कि वैदिक सिद्धान्तों में कपट को पाप में शामिल किया गया है। यदि कपट वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल होता तो कपटी को परमात्मा से डरना यह वेद का वर्णन कुछ अर्थ न रखता।

(६) अथर्व० २० । ११ । ३ । में "इन्द्रः मायिनाममिनाद्" यह वाक्य आया है। इसका अर्थ है कि इन्द्र कपटियों का नाश करता है।

(७) अथर्व० १६ । ६६ । १ । में "मायिनः" पद असुरों का विशेषण आया है और आगे ही उन असुरों के मारने के लिये उपदेश दिया गया है। अतः वैदिक सिद्धान्त में पापियों के उच्छेद के लिये जब वेद आज्ञा देता है तो वही वेदमाया (छलकपट) को कैसे उचित समझ सकता है।

(८) अथर्व ८ । १३ । ४ । में लिखा है कि असुर लोग माया से जीवन धारण करते हैं। यथा—"तांमायामसुरा उपजीवन्ति"।

(६) अथर्व० २० । २६ । ४ । में "माया" यह शब्द असुरों का विशेषण आया है। "मायाभिसत्सीसृप्सतः" अर्थात् दस्युवे हैं जो कि छल कपट द्वारा सर्पण करते हैं। अतः यहां छल कपट करने वालों को दस्यु कहा है नकि श्रेष्ट अतः वैदिक सिद्धान्त किसी भी अवस्था में छल कपट की आज्ञा नहीं देता।

तब प्रश्न पैदा होता है कि "यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः" का वास्तविक अर्थक्या हैं? इसका असली अर्थ समझने के लिये इस बातको ध्यान से पृथक् नहीं करना होगा कि यह वाक्य उसी सूक्त का है जिस सूक्त का प्रथम मन्त्र इस सिद्धान्त को दर्शा रहा है कि पृथिवी की रक्षा के लिये वृहत् सत्य की आवश्यकता है। अतः उसी सूक्त में पढा हुआ यह वाक्य पृथिवी की रक्षा के लिये वृहत्सत्यरूपी सिद्धान्त का विरोध नहीं कर सकता। अतः हमें "मायाभिः" इस पद के अर्थ पर कुछ विचार अवश्य करना पड़ेगा।

वास्तविक अर्थ

(क) इस वाक्य में यदि "मायाभिः" पद से छल कपट का ही अभिप्राय होता तो "मनीषिणः" के स्थान में "मायाविनः" यह पद देना अधिक उचित होता। चूंकि "मायाविनः" यह पद न देते हुये उसके स्थान में "मनीषिणः" यह पद दिया है, इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उपरोक्त वाक्य में माया पद से मनीषा अर्थात् बुद्धि का ग्रहण है न कि छल कपट का। अतः उपरोक्त वाक्य का अर्थ यह है कि बुद्धिमान् मनुष्य अपनी बुद्धियों के द्वारा जिस भूमि की खोज करते आए हैं। अन्वचरण का अर्थ है "खोजना" अन्वेषण करना। अब देखना चाहिये कि माया का छल कपट से भिन्न कोई और भी अर्थ है या नहीं।

(ख) निघण्टु में बुद्धि के नामों के परिगणन में माया शब्द को भी गिनाया है। यथा—केतः। केतुः। चेतः। क्रतुः। असः। धीः। शची। माया। वयुनम्।

इस से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक कोष निघण्टु के अनुसार माया का अर्थ बुद्धि है न कि छल कपट।

(ग) निरुक्त अध्याय ७। खण्ड २७। में ऋग वेद ८। ४। ११। १। मन्त्र की व्याख्या में "मायाम्" पद की व्याख्या "प्रज्ञाम्" की है। इस से भी पता लगता है कि यास्क ऋषि के मत में माया का अर्थ प्रज्ञा भी है।

(घ) इसी प्रकार निरुक्तकार अ० १२। खण्ड १७। में माया का अर्थ "प्रज्ञानानि" करता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अतः उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि माया का अर्थ बुद्धि भी होता है। इस अर्थ को लेकर अब हम पण्डित सातवलेकर जी के दिये हुए वाक्य पर विचार करते हैं तो वहां पर भी "माया" का अर्थ बुद्धि लेना रुचिकर प्रतीत होता है। यथा—(याम् जिस भूमि को(मनीषिणः) बुद्धिमान् लोग (मायाभिः) अपनी २ बुद्धि शक्तियों द्वारा (अन्वचरन्) खोजते आये हैं। अतः जब यहां "माया" का अर्थ हम बुद्धि करते हैं तो "मनीषिणः" यह पद भी पूर्ण चरितार्थ हो जाता है।

इसी प्रकार उन द्वारा उपस्थापित दूसरे मन्त्रों के 'अपव्रतेन" पद द्वारा भी उन्होंने यह सूचित किया है कि लड़ाई में कोई नियम नहीं होना चाहिये। इस से वे छल कपटादि को सूचित करना चाहते हैं। परन्तु उस मन्त्र में "अपव्रत" का अर्थ नियम को छोड़ देना ऐसा नहीं।

क्योंकि निरुक्तकार के अनुसार "व्रत" पद केवल कर्म के लिये भी आता है। यथा—"व्रतमिति कर्म नाम" अ० २। ख० १३। इसी प्रकार निघण्टु में कर्म के पर्याय वाचक शब्दों में व्रत पद गिनाया गया है। इसी प्रकार निरुक्त ११। २३। में भी व्रत के अर्थ निरुक्तकार ने केवल कर्म किये है। अतः पण्डित सातवलेकर जी द्वारा दिये गये दूसरे मन्त्र में "अपव्रत" का अर्थ "अपकर्म" ऐसा होना चाहिये। अपव्रत में बहुव्रीहि समास करना चाहिये। जिस से तामसा अपव्रतेन पद का अर्थ यह होगा कि "अन्धकार जिस के द्वारा कर्म शून्यता होगई है"। यह स्पष्ट है कि अन्धकार में कर्म शून्यता होती है। अतः उस पद का अर्थ यह है कि उस सेना को अन्धकार से बींधो, जिस अन्धकार के होते हुये मनुष्य "अपव्रत" अर्थात् कर्म शून्य हो जाते हैं और एक दूसरे को नहीं पहिचान सकते। अतः अपव्रतेन पद भी पण्डित जी के अभिप्राय को सिद्ध नहीं करता।

यह संक्षेप से हम ने पाठकों के सामने अपना विचार रक्खा है। हमारे बुद्धिमान् पाठक उपरोक्त वक्तव्य को दृष्टि में रखकर स्वयं विचार कर सकते हैं कि छल कपट की आज्ञा वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल सम्भव है या नहीं।

अहमदाबाद कांग्रेस।

अन्यत्र हमने अहमदाबाद कांग्रेस के प्रस्ताव प्रकाशित किये हैं। यह कांग्रेस केवल ८ घंटे तक रही; इस बार दिखलावा नाम मात्र को भी न था; सब काम शान्तिपूर्वक और गंभीरता के साथ हुए, लंबे चौड़े कृत्रम अलंकारों से शोभित और शब्द योजनाओं से पूर्ण धुंआधार भाषण भी नहीं हुए। क्यों? कारण विस्पष्ट है। जब,लोग मृत्यु और जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये एकत्रित होते हैं, तो उस समय, वाक्य रचना, उनको नहीं सूझती नट क्रियाऐं उनके मन को नहीं भाती; और न हीं कृत्रम आवेश उन्हें अच्छा लगता है। कांग्रेस के निर्वाचित सभापति, कांग्रेस के बैठने से पूर्व ही जेल में जा चुके थे। इसी प्रकार महात्मा गांधी और कतिपय और नेताओं के अतिरिक्त प्रायः सभी मान्य और पूज्य राष्ट्र निर्माता बंदीग्रह में थे। कांग्रेस के स्वयं सेवकों के संघों को नियम विरुद्ध घोषित करके, प्रभुमंडल ने, कांग्रेस के आस्तित्व पर ही वार किया है। नौकरशाही ने कांग्रेस को उपर्युक्त कार्य करके, ललकारा है; और कांग्रेस ने उसका उत्तर बड़ी गंभीर गर्जना से दिया है। विनीत आज्ञा भंग का विचार, महात्मा जी ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ काल के लिये, स्थागत कर दिया था। बम्बई के दंगे के लिये वे प्रायश्चित्त कर रहे थे। नौकरशाही के लिये यह एक बड़ा अच्छा अवसर था कि वह महात्मा जी के साथ सहयोग करके पारस्परिक अविश्वास और अशान्ति के वायु मंडल को दूर करके प्रेम और शांन्ति का युग लाने का प्रयत्न करती; परंतु उसने तो अशान्ति के वहाने से कांग्रेस को ही समाप्त करने की सोची। परिणाम यह हुआ कि लोगों ने सविनय आज्ञा भंग की ठानी और वे हंसते खेलते वंदी ग्रह में जाने लगे। आज हम देखते हैं कि सहस्रों भारतवासी, सरकार के अतिथि-स्वरूप, जेल में जावसे हैं, और बहुत से और पुलिस से कह रहे हैं कि उन्हें भी सरकारी अतिथी वनने का सुअवसर प्रदान किया जावे।

नरम दल वाले भी इस दमननीति को सहन न कर सके; और तो और लार्ड रीडिंग के परम मित्र और विश्वास पात्र पं० मदन मोहन मालवीय जी ने भी कांग्रेस की विषय निर्धारणी कमेटी में कह दिया कि उनकी सम्मति में सरकार की उद्घोषणा के विरुद्ध विनीत आज्ञा भंग सर्वथा उचित हैं। दमन की नीति असफल सिद्ध हुई। जिस कार्य क्रम को उन्मूलन करने के लिये, इस नीति का प्रादुर्भाव हुआ, उस की उन्नति तथा उत्तेजना का यह एक मुख्य साधन हुई। भगवान की लीला भी अपरंपार है। ज्ञात नहीं, वाइसराय महोदय तथा उनके सचिव मण्डल के हृदय पट पर, इस समय कैसे सङ्कल्प विकल्प अङ्कित होते होंगे। रोग की महौषधि मान कर जिस नीति का प्रयोग किया गया था, वही रोग-वर्धक निकली! इतना होते हुए भी वैद्य ने औषधि में परिवर्तन न करना ही योग्य समझा! धन्य रे वैद्य!!

अस्तु! भारत वासियों ने नौकर शाही के साथ रक्त विहीन युद्ध आरम्भ कर दिया है। नौकर शाही के पास पुलिस, सैना, तथा पीनल कोड के अमोघ अस्त्रों का बल है; और दीन सनाथ भारत वासियों के पास आत्मबल गर्भित सत्याग्रह, स्वावलम्बन, तपश्चर्या तथा कष्टसाध्य सहन शीलता की शक्ति है। जीत भारत वासियों की निश्चयात्मक होगी यदि भारतवासी अपने अहिंसात्मक असहयोग रूपी धर्म पर दृढ़ बने रहेंगे--

"यत्र धर्मस्ततोजयः"

यदि अब भी लार्ड रीडिग समझ लें, कि एक स्वराज्य पथा वलम्बी राष्ट्र की इच्छा पूर्ण करना दमन से अधिक उपयोगी होगा, तो वह, भारत की भावी सन्तान के धन्यवाद के पात्र होंगे और उनका नाम स्वतन्त्रता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जावेगा।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री उपयोगी स्त्रियों द्वारालिखित लेखों का संग्रह।

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१—स्त्री जगत्—	४९४
२—स्त्रियों की कुरती (ले०श्रीमती ओ३म्वती देवी)	४९५
३—स्वादिष्ट भोजन	४९७
४—गृह प्रबन्ध	४९७
५—सुन्दरता की आवश्यक्ता और सुन्दरी बनने के उपाय ले० "एक सुन्दरी"	४९८
६—बहिनों के प्रति छोटा सा वक्तव्य ले०-श्रीमती यशोदा देवी	५०१
७—बाहरी रूप रंग का धोका. ले०-श्रीमती सुकामना देवी	५०२
८स्त्रियोंका कर्त्तव्य ले० म० गांधी	५०३

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री-जगत ।

श्रीमती वसंती देवी का संदेश ।

जागो ! उठो ! सुनो ! क्या माताकी आवाज़ तुम्हें सुनाई नहीं देती ? बहुधा, अतीत काल में, वह तुम्हारे पास आई, उसने तुम्हें पुकारा किन्तु तुमने नहीं सुना । वह आज फिर तुम्हारे सामने खड़ी है और स्पष्ट तथा अमोघ शब्दों में कह रही है; क्या उसके वचन व्यर्थ जावें ! क्या अभी भी तुम डर से मुँह छिपा लोगे, या तुम, स्वतंत्र व्यक्तियों के समान, उठोगे और उसकी उग्र और सदर्प आज्ञा का पालन करोगे ?

राष्ट्रीय कांग्रेस २७ दिसंबर को शुरू होगी। उसके विश्वसनीय नेता और सेवक, बूढ़े और जवान, उसमें सम्मिलित नहीं हो सकेंगे, कारण तुम्हें अच्छी तरह मालूम है—ये महान् आत्मा वाले स्वार्थ रहित देशभक्त, यद्यपि अनुपस्थित हैं तौ भी, उनकी आत्मा वहां अवश्य उपस्थित होगी । क्या तुम उनकी उपस्थिति से प्रसन्न और प्रभावित होने के लिए वहां नहीं जाओगे ? सभापति का आसन खाली रहेगा । तो क्या ? उन्हों ने कांग्रेस के लिए अपना संदेश मुझे दिया है और अपनी गिरफ़तारी के जरा पहले मुझ अपनी पत्नी को, उसे तुमको सुनाने का पवित्र कर्त्तव्य सौंपा है । मैं ग़रीब और अयोग्य हूं, तौ भी मैं वह पवित्र कर्त्तव्य पूरा करने का प्रयत्न करूँगी । यह मेरे पति की इच्छा है । यही महात्मा गांधी की भी इच्छा है । क्या तुम इस परीक्षा के गंभीर अवसर पर आकर मेरा साथ नहीं दोगे ? याद रखो गत ४० वर्ष से कांग्रेस ही एक मात्र राष्ट्रीय संस्था रही है और उसका पंडाल हमारा निर्वाचित कार्य-क्षेत्र रहा है । यही स्थान है जहां पर स्वराज्य की पताका हमारे पूर्वजोंने उड़ाई थी और उसे ऊपर उठाये रखी थी । क्या इस जोखिम के वक्त हम उस पताका को छोड़ देंगे ? मैं जानती हूं तुम नहीं छोड़ोगे ? अपने भेदभाव भूल जाओ । हज़ारों की संख्या में आओ । कांग्रेस का साथ दो और स्वराज्य की पताका को उठाये रखो यदि आवश्यकता हो तो उसकी पवित्र वेदी पर अपना बलिदान कर दो, मेरी आख़िरी पुकार है, सुनो—"उठो," "जागो ।"

— —

धन्य इस देवी को ।

महात्मा गांधी, गुजराती नवजीवन में लिखते हैं कि ख्वाजा साहब नैशनल मुसलिम यूनिवर्सिटी के मुख्य व्यवस्थापक थे । वे अमीर कुटुम्ब के हैं और जिस प्रकार धर्माभिमानी हैं उसी प्रकार देशाभिमानी हैं वे खूब चलती हुई बैरिस्टरी छोड़कर धर्म और देश के लिए फकीर बन गये हैं । उनकी पत्नी खुरशेद बेगम ने मुझे तार भेजा है, "आप जानकर खुश होंगे कि मेरे पति को सरकार ने क़ैद कर लिया है। अब यूनिवर्सिटी को मैं चलाऊंगी ।" यह तार जिस समय मुझे मिला उस समय मानो मेरा खून सवा सेर बढ़ गया । जहां यह कुरबानी और बहादुरी होगी वहां स्वराज्य को कौन रोक सकता है ?

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

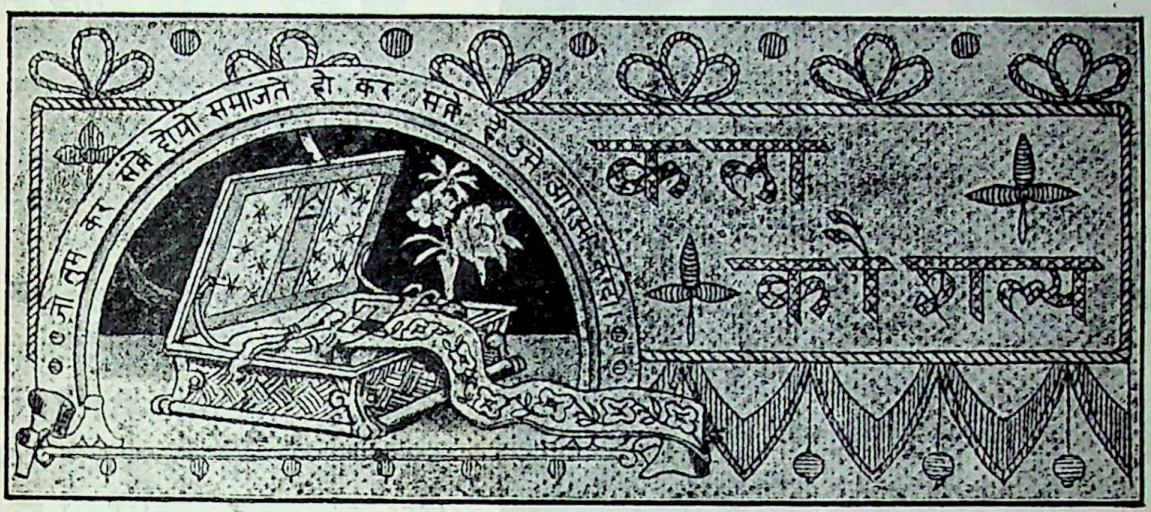

स्त्रियों की कुरती

श्रीमती ओ३म् वती जी

यह एक बड़ी उपयोगी ऊनी कुरती का नमूना है जो कि बटन के साथ चिमट जाती है जितनी बढ़ाओ बढ़ जाती है और बटन दार होने से बनयाइन से अधिक उपयोगी है। मामूली स्त्रियों की नाप की है इच्छा से फ़न्दे घटा बढ़ा कर छोटी बड़ी की जा सक्ती है।

किसी रंग का आध पाव, मोटा ऊन और कुछ बटन २ लम्बी हड्डी की सलाइयां।

आरम्भ में ६४ फ़न्दे चढ़ाओ और २ सीधे, २ उल्टे क्रम से बार बार ५५ पंक्तियों तक बीनों।

५६ पंक्ति—१ सीधा, अगले फ़न्दे में * सीधा १ उल्टा दोनों जिसमें एक बढ़ जाय। * सीधा, १ सी०, १ उल्टा अगले में इकट्ठा इस प्रकार बार २ करो जब तक अगले २४ फ़न्दे ३६ हो जांय। अब दहिने हाथ की सलाई पर ३६ फ़न्दे होंगे ये एक तरफ़ का आगे का टुकड़ा होगा इसे १ सी०, १ उल्टा ४० पंक्ति तक बीनो। और फ़न्दे अभी पड़े रहने दो। फिर १२ फ़न्दे समाप्त कर दो जिससे गले का हिस्सा बन जाय। बचे हुवे २४ फ़न्दों को १ सीधा, १ उल्टा ८ पंक्ति तक बनाओ फिर समाप्त कर दो यह एक तरफ़ का कन्धा हुआ।

अब दूसरी तरफ़ के २४ फ़न्दे लेकर उसी तरह १ सीधा, १ सीधा १ उल्टा अगले फ़न्दे में (इस प्रकार २४ फ़न्दों के ३६ फ़न्दे बन जांयगे। आगे की तरह यह दूसरा टुकड़ा बना लो।

अब पीछे के लिये ४६ फ़न्दे रह जांयगे इनको भी पहिले की तरह बढ़ालो ये ६६ हो जांयगे फिर ४८ पंक्तियां १ सीधी १ उल्टी की बीनों फिर २४ फ़न्दे कन्धे के लिये समाप्त करो फिर * २ इकट्ठे बीनो और समाप्त करो १ सीधा बीनो और समाप्त करो फिर इस*चिन्ह से बार २ बनाओ जब तक २४ फ़न्दे रह जाय, इनको भी सदा की तरह समाप्त कर दो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

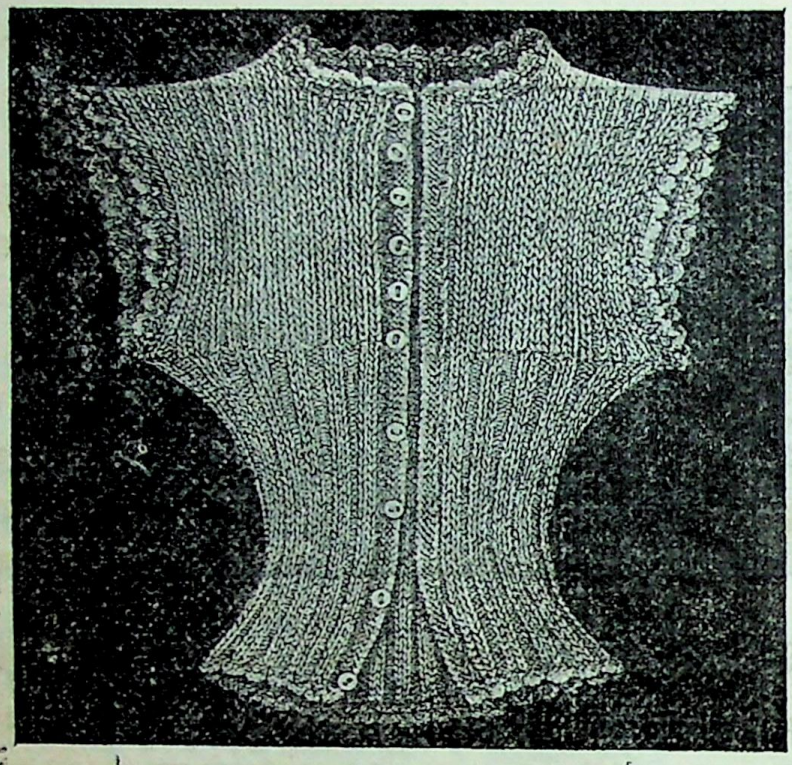

कन्धों को सफाई से सीं दो।

अब बटनों के लिये सामने की तरफ़ बराबर घर उठाकर ४ सीधी पंक्ति बीनो। दूसरी तरफ़ घरों के लिये इस प्रकार उठाओः—२ फ़न्दे उठाओ * १ बनाओ अगला फ़न्दान उठाओ ६ फ़न्दे उठाओ *इस चिन्ह से बार २ तीन सीधी पंक्तियां बीनो और समाप्त कर दो।

क्रोशिये से एक पतली सी क़ंगूरी नीचे, गले में और बाहों में बीन दो। ५ चेन, १ दो०, पहिली चे० में, १ दो किनारे पर इसी प्रकार बार २ बटन के घरों को रेशम से किनारे सीं दो।

यदि बाहें बनानी हों तो बाहों के किनारे घर उठा कर सीधी बीन लो समाप्ति पर कुछ घटा कर २ सीधे २ उलटे कफ़ जितने बीन दो।

गत मास के अङ्क में जो मौजे का चित्र दिया गया था उसके स्थान पर यह छपना चाहिये था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वादिष्ट भोजन

गाजर का हलुवा

यों तो गाजर का हलुवा सभी बनाते हैं परन्तु ख़ास तरकीब से बनाने से यह बहुत ही स्वादिष्ट बनता है ।

काली गाजरें ज्यादा अच्छी समझी जाती हैं । कुछ गाजरें लो उन्हें खूब अच्छी तरह छील कर साफ़ करो फिर काट कर बीच की हड्डी निकाल डालो और टुकड़े २ करके कुछ दूध डाल कर उबलने रख दो आञ्च धीमी २ हो । जब गाजर हाथ से मली जाने लगे और गल जांय तब निकाल कर सिल बट्टे पर खूब महीन महीन पीस लो अब कढ़ाई और खुरचने वाली कलछी को खूब साफ़ कर लो । कढ़ाई चढ़ाकर थोड़ा सा घी डालो जब अच्छी तरह तप जाय तब पिसी हुई गाजरों को डाल कर कलछी से धीरे २ चलाओ और बीच २ में आवश्यक्तानुसार घी छोड़ कर भूनों जब खूब भुन जाय खुशबू आने लगे तब अन्दाज़ से गाजरों की आधी खांड डाल कर चलाओ जब अच्छी तरह मिल जाय तब कढ़ाई उतार कर चलाते जाओ जिस में सूख जाय यदि बरफ़ी जमानी हों तो ज्यादा कड़ा करो नहीं तो ढीला रखो और किशमिश साफ़ करके बड़ी इलायची दरड़ कर बदाम छील कर काट कर पिश्ता सब डाल दो । जमानी हो तो किसी चौड़े थाल में मोटी २ फैला दो और ऊपर से वरक़ लगा कर बरफ़ी की तरह काट दो ठण्डी होने पर खाओ ।

कई लोग सर्दी में केशर डालते हैं जिन्हें अच्छा लगे वह ज़रा से पानी में पीस कर डालदें ।

ग्रह प्रबन्ध ।

हमारे देश में सरदी के दिनों में सूखी मेवा खाने की प्रथा बड़ी पचलित है । इन में बादाम, छुहारा, किशमिश, चिलगोज़ा, खुमानी, मूंग फली इत्यादि बहुत बरते जाते हैं । इनमें से बादाम, चिलगोजा, मूंगफली, अखरोट इत्यादिफल (जिनको पीस कर पानी में घोलने से सफैद रंग का दूध सा बन जाता है) बड़े उपयोगी हैं । इनमें न केवल शरीर को सुदृढ़ रखने की ही शक्ति है वरन् उसको बढ़ाने की भी । दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिये तो यह विशेष उपयोगी हैं । केवल यही एक ऐसा पदार्थ है, जो कि मांस और उससे बनी हुई वस्तुओं के बराबर माता का दूध बढ़ाने में, समर्थ हैं । भली प्रकार चबा कर खाने या बहुत बारीक पीस कर खाने से यह सुगमता से हज़म हो जाते हैं । हुबलर नामिक विद्वान ने तजुरबा करके देखा था कि स्त्रियों में दूध बढ़ाने के लिये मांस के प्रोटीन्ज़ (Proteins) सब से अधिक गुणकारी है, परन्तु अपरोक्त सूखे फलों के विषय में यह बात लागू नहीं होती । जिन माताओं को नन्हें २ बच्चों को दूध पिलाना पड़ता है इन्हें इनका अवश्य सेवन करना चाहिये । यह याद रहे कि जितना भी अधिक इनको चबाया जायगा या बारीक पीस कर मक्खन की भान्ति खाया जायगा उतना ही अधिक लाभ होगा ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२ मसाले–हमारे घरों में दाल भाजी में मसाले डाल कर खाने की प्रथा है। इन में से काली और लाल मिर्च, दालचीनी, लौंग, जीरा, अदकर, राई इत्यादि अधिक काम में लाये जाते है।

इनका अधिक सेवन अवश्य हानि कारक है। मनुष्य के शरीर में अधिक गर्मी पैदा करके कई प्रकार के उद्वेग उत्पन्न करते हैं और अस्वभाविक रूप से इच्छाओं को जागृत करते हैं। परन्तु थोड़ा २ खाने से यह लाभ भी करते हैं। विशेष प्रकार की सबज़ी भाजी में विशेष २ मसाले परिमित मात्रा में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

इसके अतिरिक्त इनका एक और भी लाभ है। जिस खाद्य पदार्थ में यह पड़े हों उसे सड़ने से रोकने में भी सहायता देते हैं। यह प्रायः देखा गया है कि कुछ धन्टे रखने पीछे दाल ाजी में एक प्रकार की बू आने लग पड़ती है ीर स्वाद में भी खटास सी आजाती है। जिन ाजियों में मसाले पड़े हों वह अधिक देर में खराब होती हैं। काली और लाल मिर्च और अदरक तो इस कामके लिये बहुत लाभदायक नहीं परन्तु राई। दालचीनी और लौंग इस अंश में बड़ें उपयोगी हैं॥

—०—

प्याज—आज कल कितने ही डाकृरों की संमति है कि प्याज एक बड़ी लाभकारी खाद्य वस्तु है। इसमें सब सबजियों से अधिक और बढ़कर गुणकारी लवण होते हैं। रात को नीन्द न आने के लिये बड़ी उपयोगी औषधि है। बाय के दर्द को भी यह रोकते हैं, यह सुगमता से हज़म होजाते हैं, शरीर को पुष्ट करते, भूक को बढ़ाते, बेचैनी को दूर करते और कबज़ को हटाते हैं। इनमें गन्धक और अन्य द्रव्य होते हैं जो अतड़ियों की कई एक रोगों से रक्षा करते हैं। कई एक मनुष्य इन्हें ज़ुकाम को हटाने के लिये खाते हैं। पकाये हुये प्याज़ तबीयत को ठहराते और कबज़ी को हटाते हैं खांसी और सांस चढ़ने में इनकी पुल्टस बड़ी पुरानी और उपयोगी इलाज है।

———

सुन्दरता की आवश्यक्ता और सुन्दरी बनने के उपाय।

ले० एक "सुन्दरी"।

मनुष्य का मुख या चेहरा (चाहे वह स्त्री का हो और चाहे पुरुष का) भी संसार में क्या ही मूल्यवान वस्तु है। यही हमें बतलाता है कि अमुक मनुष्य कौन है और उसका आचार कैसा है। जिस की शकल डरावनी और घिनौनी हो उस का मन सुन्दर कभी नहीं हो सक्ता। प्रत्येक व्यक्ति का जो कि यह समझता है कि उसके मुख के ऊपर दिये हुये यही दो प्रयोजन है यह धर्म है कि वह दूसरों पर अपने सम्बन्ध के अपनी शकल द्वारा अच्छे प्रभाव डाले। यह स्त्री और पुरुष दोनों का बराबर एक सा धर्म है, परन्तु स्त्रियों को इस ओर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। इसके लिये यह एक ही विशेष भाव मन में पैदा करता है और वह सुन्दरता का है। यह बात स्वभाविक समझी जाती है कि कोमलता, सरसता और सुन्दरता स्त्री के चेहरे के आवश्यक गुण है। पुरुष के लिये इनकी कुछ भी परवाह नहीं की जाती। यह समझा जाता है कि पुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का चेहरा विधाता ने सादा ही बनाया है परन्तु सुन्दरता नारी ही का गुण है । सुन्दरता का उसके साथ इतना गाढ़ा सम्बन्ध है कि वह स्त्री अपने को स्त्री ही नहीं समझती जिसने कि अपने जीवन में कभी न कभी सुन्दर होने का अनुभव न किया हो । सुन्दरता स्वयं एक प्रकार की शिक्षा है और यह शिक्षा केवल स्त्रियों के ही लिये है । संसार की प्रसिद्ध प्रसिद्ध सुन्दरियों के चेहरे से एक विशेष प्रकार की छबी झलकती थी और इस रूप राशि छबी की शिक्षा उन्हें अपने निज सौन्दर्य से ही मिली थी। इस संसार में अपना कार्य ठीक करने के लिये वह नारी अपनी पूरी शक्तियों से रहित है जिस के कि मन में अपने में एक विशेष शक्ति रखने के भाव ने हिलोलें नहीं मारी, वह शक्ति जो कि उसकी शारीरिक निर्बलता का स्थान पूरा करती है । यहां पर ही हमें परमात्मा की रचना का एक रहस्य पता लगता है। पुरुष में अपनी सुन्दरता के ज्ञान का भाव विद्यमान नहीं । यदि किसी में हो भी तो वह उसे केवल हंसी का ही पात्र बनाता है। परन्तु नारी के पास यह ज्ञान एक खास हथियार का काम देता है जिस के बिना वह कमज़ोर है किसी युवती के लिये इस से बढ़कर और क्या क्रूरता होगी कि वह अपने आप को सुन्दरता रहित समझे । कई व्यक्ति कहते हैं कि स्त्री का रूपवान होना उसके लिये एक आपत्ति है, रूप उसके मन की अवस्था को नीचे २ ही गिराता है । कई स्त्रियें इसी डर से अपने आप को सुन्दरता रहित समझती हैं। यदि अपने को एसा समझने का यही कारण है तो समाज उनको इस झूटे विचार को स्वयं ठीक कर देगा और यदि वास्तव में सुन्दरता की कमी के कारण ही वह अपने को ऐसा समझती हैं तो वह भाव न केवल उन्हें असह्य मानसिक वेदना ही देगा वरन उनकी थोड़ी बहुत जो सुन्दरता है उसे भी दूर कर देगा। यही कारण है कि हमें संसार में एसी स्त्रियां दिखलाई देती हैं जिन्हों ने कि अपने को कुरुप बनाने का व्रत लिया हो; जो कि न तो अपने चमड़े को साफ रखने के लिये काफी भोजन ही करती हैं और न काफी हंसती ही हैं जिस से कि चेहरे की सुन्दरता देने वाली नस नाड़ियों को पूरा पूरा काम मिले-जो कि अपने सीधे साधे थोड़े से कपड़ों में ही शुद्धता और पवित्रता का रहना समझती है और उसी को मान मर्यादा के अनुकूल समझती है जिस में कि वह बहुत भद्दी दिखलाई देती जो कि सादा दुबली पतली है और सदा ही बीमार है और सुखी, सुन्दर और रूपवान स्त्रियों में ऐसा बरतती हैं कि मानों कुरूप होना भी एक गुण है।

कई बहिनों के मन में यह ख्याल बैठ गया है कि सुन्दरता गोरे रङ्ग में ही है। चेहरा की खूब सूर्ती उस को देखने या बातें करने में जो हिलना होता है उस में है; उस के चुप चाप स्थिर रहने में नहीं। हमारी नानी दादी छोटे होते में राजा की लड़की और रानियों की कथा सुनाते हुए कहा करती थी कि वह ऐसी सुन्दर थी कि जैसे गुलाब का फूल बातें करते समय उसके मुंह से फूल झड़ते थे। यह फूल झड़ना भी यही बतलाता है कि चेहरे कि असली खूब सूर्ती उसकी मन्द मुस्कान, तिछीं नज़र और कोमल हास में ही प्रगट होता है। इस लिये वह चेहरा जो कि सदा आनन्दमय भावों से भरे हुए मन से हिलाया जाता है एक अनुपम सुन्दरता को प्राप्त कर लेता है। मन की पवित्रता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का ही दूसरा नाम चेहरे की सुन्दरता है।

सुन्दर बनने की तरकीब

कौन स्त्री है जो सुन्दर और रूपवती बनना नहीं चाहती। आज मैं अपनी बहिनों को सुन्दर बनने की तरकीब बतलाऊंगी जिनको पालन करती हुई कोई भी बहिन करूप नहीं रह सक्तीः—

(१) प्रातः उठ कर शुद्ध जल से मुंह धो डालो और स्नान करो। इसके पीछे यह ख्याल रखो कि मन में कोई दुर्विचार न आवें विशेष कर ईर्षा और द्वेष के, इनसे चेहरा पर पीलापन और रुखा पन आ जाता है।

(२) भोजन के समय गर्मी सर्दी का अधिक ख्याल रखना चाहिये। बहुत गर्म या बहुत ठंडा खाना खाने का दूध, जल इत्यादि पीने से चेहरे पर छोटी २ फुंसियां सी निकल आती हैं। यदि कोई युवती इन से बचना चाहे तो उसे खाने पीने वाली वस्तुओं की गर्मी सर्दी का बड़ा ध्यान रखना चहिये।

(३) यदि कपोलों पर सुर्खी लानी हो तो रंग कदापि न लगाना चाहिये वरन इसका सरल उपाय थोड़ी सी बर्जिश करना है।

(४) मन की बातें ठीक २ कह देने से और स्वभाविक हंसी मज़ाक से चेहरा फूलता है और भीतर को पिचकी हुई आंखें और गाल भरने लग पड़ते हैं।

(५) दूसरों को खुश करने की इच्छा नारी को आंखों में मोहने वाला तेज पैदा करती है।

(६) प्रातः सूर्य्य उदय होने के समय की वायु होन्टों की सुर्खी बढ़ाती है।

(७) इतना करने पर उनके शरीरमें एक लुभाने वाला फुरतीलापन आजायगा जिसको कि नीचे लिखे तरीकों से और भी बढ़ाया जा सक्ता है। प्रथम उन्हें रात को बहुत देर जागना नहीं चाहिये क्योंकि इससे चेहरे पर एक मुर्झाई हुई सी रंगत आ जाती है, दूसरे मोमबत्ती की रोशनी अथवा थोड़ी रोशनी में कदापि कोई किस्से कहानी, उपन्यास इत्यादि नहीं पढ़ने चाहिये क्योंकि इससे आंखें कमज़ोर हो जाती हैं और चेहरे में रुखापन सा आजाता है।

(८) सुन्दर सुफैद हाथ किसको प्यारे नहीं लगते और यह कभी भी सुफैद नहीं रह सक्ते यदि इन्हें साफ न रखा जाय। इससे भी बढ़ कर इनको सुन्दर बनाने का एक और उपाय है कि यह सदा हिलते रहें। इससे इनमें खून का दौरा भली प्रकार होता रहेगा और इनका रंग निखरता जायगा। इनको हिलाते रखने का सब से अच्छा उपाय घरको साफ सुथरा रखना और सीना परोना है और आज कल तो चर्खा कातना सब से ही अच्छा है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Reg'd. No. L. 1240.

वर्ष २] फाल्गुण १९७८—मार्च १९२२ [खण्ड २, संख्या ११

LIBRARY

ज्योति

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय-सूची।

विषय	पृष्ठ
१—प्रार्थना [कविता] लेखक-श्री० गोविन्द प्रसाद द्विवेदी।	५६७
२—प्राचीन आर्य्यों का राशि विज्ञान, ले०—श्रीयुत विद्या भास्कर, वेदरत्न, पं० उदयवीर सिंह जी शास्त्री सांख्य-योग, न्यायतीर्थ वेदान्त विशारद।	५६८
३—अहिन्सा-संग्राम, [कविता] लेखक-श्रीयुत "त्रिशूल"।	५७७
४—आत्म कहानी, लेखक—श्रीयुत हनुमन्त लाल बक्षी।	५७८
५—वह कौन है? [कविता] लेखक—श्रीयुत बलराम उपाध्याय बी. ए. विशारद।	५८२
६—गीतामृत, ले०-श्रीयुत प्रो० गोपाल दामोदर तामसकर एम.ए. एल. टी.।	५८३
७—बसंत [कविता] ले०-श्री मणिराम गुप्त	५८६
८—रुक्मिणी हरण नाटक, ले०—श्रीयुत मेधाव्रत जगजीवन।	५८७
९—कृष्ण-निशा [कविता] ले०—श्रीयुत "श्रीचन्द्र"।	५९०
१०—कुसुमोद्यान।	५९०
११—हमारी मञ्जूषा।	५९५
१२—विचार प्रवाह।	५९७
१३—कनिता विनोद।	६०५

हिन्दी साहित्य में नई वृद्धि

श्रीसयाजी साहित्य माला।

बड़ोदा राज्य के स्कूल तथा लायब्रेरियों के लिए मंजूर, राज्य द्वारा प्रकाशितः—

हिन्दी पुस्तक

॥) भेज स्थायी ग्राहक बनो।

तुलनात्मक धर्म्म विचार यह कैंब्रिज के प्रोफेसर जेवन्स की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें प्रोफेसर साहब ने संसार के सब मतों वा धर्म्मों की तीव्रआलोचना के साथ जो आर्य्य वा हिंदुधर्म्म पर आक्षेप किए हैं उनका विद्वत्ता पूण उत्तर अनुवादक महोदय की भूमिका में प्रत्येक हिंदू वा आर्य्य धर्म्माभिमानो को पढ़ना चाहिए। सजिल्द १)

श्रीसया जी बाल ज्ञान माला

श्रीहर्ष भारत के अंतिम सम्राट का जीवन वृत्तांत मूल्य ॥)

कोष की कथा वैज्ञानिक सचित्र पुस्तक में सेल (Cell) का सरल भाषा में पूर्ण परिचय दिया है। मूल्य ॥)

वैदिक विज्ञान ग्रन्थमाला।

(लेखक राज्यरत्न आत्माराम जो अमृतसरी)

सृष्टि विज्ञान डारविन के विकासवाद ने आधुनिक पश्चिमीय विचार पर पूरा प्रभुत्व जमा लिया। मनुष्य की शारीरिक सामाजिक आत्मिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति को विकास की ही कसौटी पर कसा जाता है। इस पुस्तक में डारविन के सिद्धान्त की समालोचना की है और युक्तियों द्वारा यह सिद्ध किया है कि न तो यह सिद्धान्त सृष्टि के सब नियमों को समर्थन करता है और न ही यह मनुष्य को आगे के लिए सुमार्ग दर्शाता है साथ ही वेदोत्पत्ति, ईश्वर सत्ता अमैथुनि सृष्टि इत्यादि कितने ही विषयों पर बड़े खोज मनन और परिश्रमसे लिखा है पश्चिमी सभ्यता के विचारों से चकाचौंध होने वालों के लिए पुस्तक बड़े काम की है। पुस्तक सर्वथा ध्येय और मनन करने योग्य है। सचित्र पौने तीन सौ पृष्ठों को पुस्तक का मूल्य २) प्राप्ति स्थान—

जयदेवब्रदर्स बड़ोदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* ज्योति के नियम *

ग्राहकों के लियेः—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का आ० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित आ० वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष ही।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूँना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपी में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि-आर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उस प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेजर "ज्योति" लाहौर के पते से आने चाहिये।

लेखकों के लिये

(९) लेख पढने योग्य अक्षरों में हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखे जाने चाहियें। लेखों के घटाने बढ़ाने, छापने न छापने का अधिकार सम्पादिका को है। जो लेख प्रकाशित नहीं किये जासकेंगे वह टिकट और पता साथ होने पर लौटा दिये जावेंगे।

(१०) लेख, कविता, समालोचना के लिये पुस्तकें और परिवर्त्तन के पत्र सम्पादिका ज्योति लायलपुर के पते पर आने चाहियें।

विज्ञापन दाताओं के लियेः—

(१) विज्ञापन बिना देखे नहीं छापा जाता।

(२) जिस मास के अंक में विज्ञापन छपाना हो उस के एक मास पूर्व विज्ञापन की प्लेट और पेशगी रुपया आना चाहिये।

(३) एक कालम से कम स्थान का विज्ञापन छपाने वाले को ज्योति मुफ़्त नहीं मिलती।

(४) विज्ञापन की दर इस प्रकार है। प्रतिमास—

एक पृष्ठ (या दो कोलम)	१२)
आधा ,, (या एक कोलम)	६)
चोथाई ,, (या आधा कोलम)	४)
चोथाई कोलम—	२॥)
आवरण का तीसरा पृष्ठ—	१५)
,, ,, चोथा ,,	१८)
पाठ्य विषय के पहिले व पीछे—	१४)

(५) जो विज्ञापन दाता एक वर्ष का विज्ञापन देंगे उन को पेशगी रुपया भेजने पर =) प्रति रुपया कमीशन काट देंगे।

पत्र व्यवहार का पता—

मैनेजर "ज्योति" लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर पीड़ाका दुःख किसीको न दिखाये।

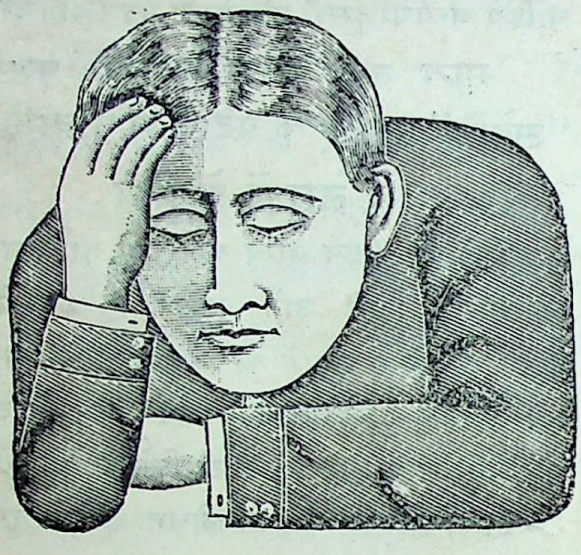

सिर पीड़ा, कर्ण पीड़ा, दाढ़ या दन्त पीड़ा, नेत्र पीड़ा इत्यादि किसी प्रकार की भी पीड़ा हो, इसके अतिरिक्त बात पीड़ा, संधि पीड़ा, काट पीड़ा, घुटने की पीड़ा, उदर पीड़ा छाती की पीड़ा, चोटकी पीड़ा, किसी विषैले जंतुके काटने की पीड़ा घाव अथवा फोड़े फुसीकी पीड़ा, अर्थात् किसी भी प्रकार की बाहरी या भीतरी पीड़ा हो

"अमृतधारा"

खाने या लगाने से तत्काल ही दूर हो जाती है।

सैयद अबदुल कासिम साहब भरतपुरसे लिखते हैं कि-"अमृतधारा" ने मुझे जो गुण दिखाये हैं उनसे मुझे यह इतनी प्रिय है कि मैं इसे एक दिन भी अपनेसे अलग करना पसंद नहीं करता। मेरी भतीजीके घुटनेमें एक दिन गिर जाने के कारणसे बड़ी चोट आई, उसके मलते ही फौरन आराम हो गया। कभी कभी मेरे पास ऐसे रोगियों का इतना झुण्ड जमा हो जाता है, कि मैं घबड़ा जाता हूं। दो एक सप्ताहसे जिन लोगोंकी पेचिश और दस्त बन्द नहीं होते थे इसकी दो ही खुराकसे बंद हो गये। खांसी, उदरपीडा, वमन, कर्णपीड़ा, वशासीर, तिल्ली, इत्यादि जिन रोगों पर इसकी परीक्षा की सबमें गुणकारी पाया।

एक गर्भवती स्त्रीके सिर पर चोटीकी जगह पीड़ा थी, कई दिन से खाना पीना बंद था, और डाक्टरी व यूनानी इलाज होता था, इसके एक बार लगानेसे पीड़ा जाती रही। बाज रोग यकायक रातको हो जाते हैं जब कि न वैद्य, डाक्टर मिलते और न दवाही मिलती, ऐसे समय में यह लाभ देती है। पहिले तो दो शीशियां मंगवाई थीं, गत वर्ष २० शीशियां मंगवा चुका हूं और अब फिर इच्छा है कि मंगवाऊं।

ऐसेही २६ हजार बिन मांगे सर्टीफिकेट मौजूद हैं।

जिसने एक बार मंगवाया, हमेशाको यार बनाया। कोई घर इस दवा से खाली न चाहिये। न जाने किस समय क्या कष्ट आजाय, "अमृतधारा" फौरन आराम देगी।

मूल्य प्रति शीशी २॥), अर्ध शीशी १।), नमूना ॥), विस्तृत हाल जानने के लिये रिसाला 'अमृत' ≠) का टिकट भेजकर मंगवावें और पढ़ें।

पत्र व्यवहार व तार का पता:—

'अमृतधारा' ७५,
लाहौर।

मैनेजर
अमृतधारा ७५, औषधालय, अमृतधारा भवन,
अमृतधारा सड़क, अमृतधारा डाकखाना, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

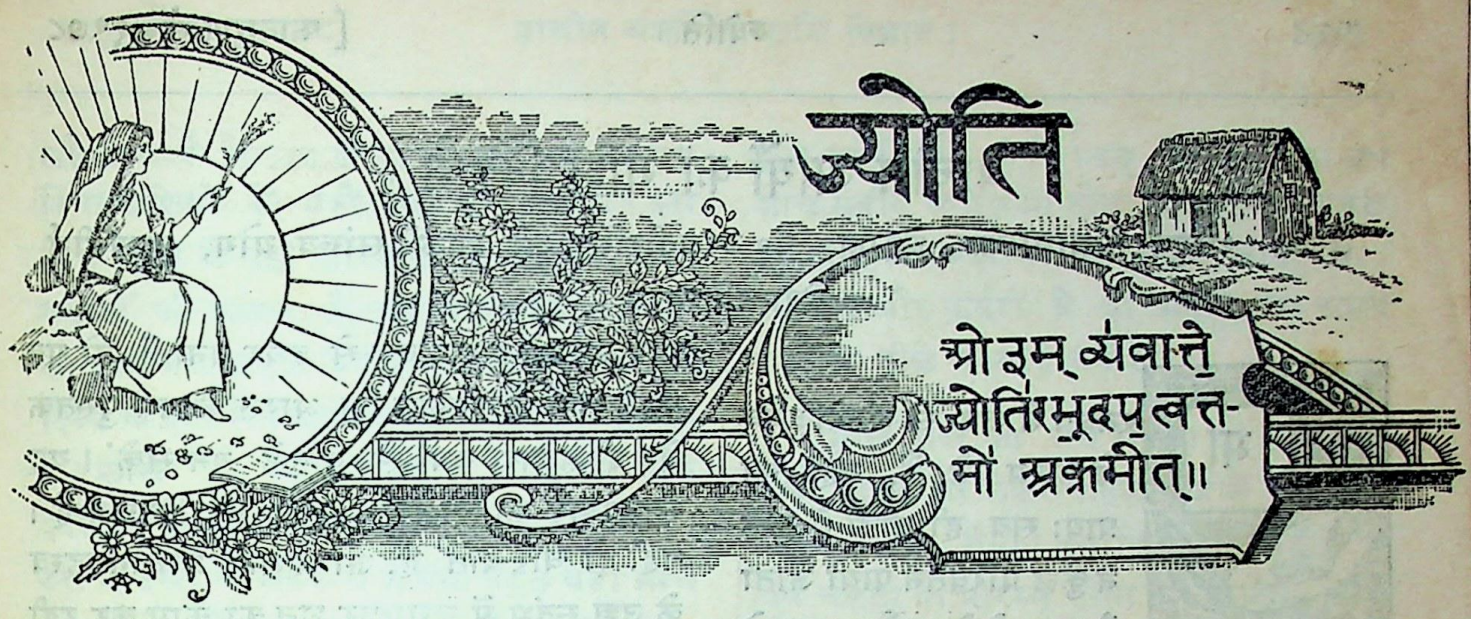

वर्ष २ | फाल्गुण १९७८—मार्च १९२२ | संख्या ११

प्रार्थना।

ले० श्री० गोविन्द प्रसाद द्विवेदी।

कैसे प्रभु तव मैं गुण गाऊँ।

नेति २ कहि वेद हारिगे, कैसे तुमहिं रिझाऊँ।
व्यास आदि कोउ पार न पायों, शक्ति कहाँ मैं पाऊँ॥
निराकार आकार युक्त वा, कैसी मूरति ध्याऊँ।
गिरि सरिता बिच कहाँ छिपे हो, मैं कहँढूंढ़न जाऊँ॥
अनुपम रूप तुम्हारो प्रभु है, कहँ ते उपमा लाऊँ।
रहत अगोचर सब से तुम हो, कहँ २ मैं प्रभु धाऊँ॥
कोऊ कैसे वर्णन करिहे, जब तुम हो सब ठांऊँ।
अन्त हारि के चरणन ही की, हे प्रभु आश लगाऊँ॥

——:०:——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन आर्यों का राशि विज्ञान।

लेखक श्रीयुत विद्याभास्कर, वेदरत्न, पं० उदयवीरसिंह जी शास्त्री सांख्य-योग, न्यायतीर्थ वेदान्तविशारद।

भारतवर्ष में जब से अंगरेज़ियत के क़दम पड़े हैं, यहां की प्रायः सब ही बातों में कुछ न कुछ परिवर्तन पाया जाता है। हमारे वेश और भाषा के परिवर्तन के साथ विचारों पर भी काफ़ी असर पड़ा है। भारतीय विद्वानों में से अधिक विद्वानों का यही ख़याल है कि हम ने जो कुछ सीखा साखा, और हमारे पल्ले में अब जो कुछ भी है, वह सब योरोप की ही कृपा का फल है। यह भाव अब पकते २ इतना मज़बूत होगया है, कि वेदों तक पर भी लोग हाथ साफ़ करने लगे हैं।

दर असल में योरोपीय विद्वानों के दो तीन मत बड़े दृढ़ और पत्थर की लकीर हैं। वे भारत या भारत के साहित्य पर जब कभी जो कुछ बोलते चालते या लिखते हैं, तब प्रायः वहां के सभी विद्वान् उन मतों को निश्चित रूप से अपने सामने रखलेते हैं। उन मन्तव्यों को हम थोड़े से शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं— यदि ईसवी सन् का प्रारम्भ ईसा के सत्ता काल से पांच सौ बरस पीछे हुआ, तो भारत के विक्रम सम्वत् का भी प्रारम्भ विक्रम के सत्ता काल से पांच सौ बरस पीछे ही होना चाहिये। अगर तीन हज़ार वर्ष से पहिले योरोप की सभ्यता अज्ञान के घोर अन्धकार में विलीन थी और वहां के वर्त्ताव वहशियाना थे, तो उस समय में भारतीय जनता को भी पूरा वहशी होना चाहिये। यदि योरोप का धर्म पुस्तक बाईबिल दो हज़ार वर्ष से इधर बना है, तो यह कभी नहीं हो सकता कि भारत के धर्म पुस्तक वेद दो हज़ार वर्ष से पहिले बन सकें। यह साम्यवाद का सिद्धान्त बड़ा ही विचित्र है। यही दो चार बातें हैं, जो हमारे प्राचीनमहत्त्व के उच्च स्तंभ में लगातार घुन का काम कर रही हैं। इन में से एक बात यह भी है कि भारत के प्राचीन आर्यों को राशियों का ज्ञान नहीं था, इन्होंने योरोप से ही राशियों की शिक्षा पाई। आज हम पाठकों का ध्यान इसी ओर आकर्षित करना चाहते हैं, विचारना चाहिये कि यह बात कहां तक ठीक है। इस विषय में हम को जो कुछ मालूम हुआ है, आपके सामने निवेदन करते हैं। पहिले इस बात पर प्रकाश डालना चाहिये कि यूरोप में ज्योतिष शास्त्र का प्रादुर्भाव कैसे और किस समय हुआ? उस के होते हुए क्या यह बात मानी जा सकती है कि वास्तव में भारत ने योरोप से राशियों की शिक्षा ली, या कुछ मामला उलटा ही है। पीछे से प्राचीन आर्यों के धर्म पुस्तकों से प्रमाण भी उद्धृत करेंगे, जिस से मालूम होगा कि उन लोगों को राशियों का अच्छी तरह ज्ञान था।

आज कल पाश्चात्य और उसी ढङ्ग के भारतीय विद्वानों में से प्रायः सभी का यह निश्चय है कि भारत ने राशियों का ज्ञान यूनानियों से लिया। इस लिये सब से प्रथम इसी बात पर विचार करना चाहिये कि यूनानियों को राशि का ज्ञान कब और कैसे हुआ? ज्यौतिष शास्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सौरमास के हिसाब से बारह मास की कल्पना बिना राशियों के माने नहीं हो सकती। इस लिये जिस के यहां सौरमास के अनुसार बारह महीनों की कल्पना है, वह निस्सन्देह राशियों का ज्ञान रखता है। अब देखिये—यूनानियों के दिव्य ख़ज़ाने में कितने रत्न इस प्रकार के मिलते हैं। फ्रांस देश में 'डिमार्गन' नाम का एक ज्यौतिष शास्त्र का अच्छा विद्वान् होगया है। उस ने इसी के सम्बन्ध में एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिखा है। लोगों का कहना है कि वह ग्रन्थ निष्पक्ष बुद्धि से लिखा गया है, मुमकिन है ऐसा ही हो। उस ने एक स्थान पर लिखा है कि पहिले पाश्चात्य देश में दस महीने में ही एक साल ख़त्म हो जाता था। ठीक है सचमुच यूरोप के लोग उस समय तक इस विषय में पूरे भ्रान्त थे, वे दस ही महीने में एक साल ख़त्म कर देते थे। विचारा सूर्य भी इन के डर के मारे अपना कार्य जल्दी २ कर थोड़े ही समय में समाप्त कर देता था। जिस कार्य को सूर्य बारह महीने में नियम के अनुसार समाप्त करता है, उसे वह यूरोप के भीतर दस ही मास में समाप्त कर दिया करता था, क्या यह सूर्य के ऊपर यूरोप वालों का प्रभाव नहीं कहा जा सकता? परन्तु यह प्रभाव या भ्रम हमेशा न ठहर सका, इस का अन्त एलेग्ज़ेन्डर के ज़माने में हुआ।

हम इसका थोड़ा सा इतिहास पाठकों के मनोविनोद के लिये यहां लिखना चाहते हैं। इस से यह भी अच्छी तरह मालूम हो जावेगा कि यूनानी राशियों को बाबत कितने पानी में थे।

जब विजेता एलेग्ज़ेन्डर सब देशों को जीतता हुआ भारत में आया, उस समय उस के साथ यूनान के बड़े २ विद्वान् भी थे। उन में कुछ ज्योतिर्विद् भी थे। इन के यहां का वर्ष मार्च महीने से प्रारम्भ होता था, और आजकल की तरह दिसम्बर में समाप्त हो जाता था। जनवरी और फ़र्वरी ये दो महीने उस समय नहीं थे, पीछे से जोड़े गये हैं।

'मार्च' शब्द का अर्थ चलना या प्रारम्भ है, इसी आशय को लेकर पहिले महीने का नाम 'मार्च' रक्खा गया। क्योंकि इसी महीने से वर्ष चलता या प्रारम्भ होता है। वस्तुतः ग्रीस देश में पहिले काल गणना के लिये कोई सम्वत् प्रचलित नहीं था। ग्रीस देश में ओलिंपस् (Olympus) नाम का एक पर्वत है। उस के पास शारीरिक परीक्षा के लिये पुराने समय से ही प्रति चौथे वर्ष कुछ खेल किये जाया करते थे, उन का नाम 'ओलिंपक्गेम्स' था। इसी कारण खेल के बीच के चार वर्षों का नाम 'ओलिंपिऐड' रक्खा गया। इसी के आधार पर ग्रीस देश वासियों ने काल गणना की नींव डाली। ग्रीक लोगों की तरह रोमन लोगों में भी काल गणना के लिये प्रथम कोई सन् आदि नहीं था। पीछे से रोम नगर की स्थापना के वर्ष से उन लोगों ने अपना सन् स्थिर किया। उस समय में रोमन लोगों का वर्ष सिर्फ़ तीन सौ चार ३०४ दिन का होता था। प्रायः यूरोप भर में इसी वर्ष का प्रचार था। यह वर्ष मार्च से दिसम्बर तक के दस महीनों में समाप्त होता था। जैसा कि हम अभी पीछे कह चुके हैं। मार्च के बाद ऐप्रिल, मई जून महीने यथाक्रम वर्ष के दूसरे तीसरे और चौथे महीने समझे जाते थे। इस के आगे जुलाई के स्थानापन्न महीने का नाम 'क्विन्क्टिलिस्' और अगस्त का नाम 'सेक्स्टिलिस्' था। ईसा से ७०० वर्ष पहिले एलेग्ज़ेन्डर के साथ २ भारत में आये हुए ज्योतिषियों ने जब भारतीय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्वानों से इस बात को सीखा कि साल में दस नहीं किन्तु बारह महीने होते हैं, और उन की कल्पना बारह राशियों के आधार पर है, तब उन्होंने अपनी ग़लती को समझा। और यहां से अपने देश में जाकर उन्होंने इस बात का प्रचार किया। उन के परम्परागत प्रचार से प्रभावित होकर तत्कालीन 'नुमापांपिलिअस्' नामक रोमन राजा ने वर्ष के प्रारम्भ में जनवरी और अन्त में फ़र्वरी मास बढ़ा दिया। पहिले महीने का नाम जनवरी क्यों हुआ? इस का कारण यह है। जब 'एलेग्जेन्डर' के साथी भारत से शिक्षा पाकर अपने देशों में पहुंचे, उस समय उन्होंने वहां एक देवता के उद्देश्य से महोत्सव मनाया, इस देवता का नाम 'जानस्' कहा जाता था, इस देवता के दो मुख माने जाते थे—एक युद्ध और दूसरा सन्धि। उस समय में युद्ध के अनन्तर सन्धि होने पर यह उत्सव शान्ति के उपलक्ष्य में मनाया जाया करता था। एलेग्जेन्डर और उस के साथियों को भारत में युद्ध के अनन्तर चन्द्रगुप्त से जो कि उस समय भारत का सम्राट् था सन्धि करनी पड़ी थी। इसी लिये यहां से वापस होकर उन लोगों ने अपने देश में उक्त 'जानस्' देव का महोत्सव मनाया था। यह महोत्सव उस समय हमारे देश के राजाओं के 'मदन महोत्सव' के समान मनाया जाया करता था। इसी देवता के नाम से उस बढ़े हुए महीने का नाम 'जानोअरी' या जनवरी रक्खा गया। इसी प्रकार वर्ष का अन्तिम मास होने से दूसरे महीने का नाम 'फेब्रुअरी' या फ़र्वरी रक्खा गया। इस के अनन्तर ही यूरोप में एक वर्ष के अन्दर १२ बारह महीनों की गणना होने लगी। परन्तु इन दोनों महीनों के दिनों की तादाद केवल ५१ दिन थी। पहिले १० महीने वाले वर्ष में रोमन लोग ३०४ दिन मानते थे, अब इन दो महीनों को भी मिलाकर ईसा के लगभग ६५० वर्ष पहिले से रोमन लोगों का साल ३५५ दिन का माना जाने लगा। यह सब गणना चान्द्र मास के हिसाब से होती थी। परन्तु कुछ शताब्दियों के बाद चान्द्र वर्ष के स्थान पर सौर वर्ष की अधिक प्रतिष्ठा होने लगी। इस से स्पष्ट है कि अभी तक ये लोग राशियों के ऊपर मास की गणना करना नहीं जानते थे। अगर जानते होते तो वर्ष के दिनों में इस तरह भारी गड़बड़ क्यों होती। सौर वर्ष मान कर भी बहुत दिनों तक ये उस में दिन ३५५ ही मानते रहे। इन दिनों की गड़बड़ का परिशोध होते २ बहुत दिन लगे। इनका पहिला परिशोध 'जुलिअस् सीज़र' ने किया। और अन्तिम परिशोध रोम के पोप 'ग्रेगरी' तेरहवें ने किया। यह सोलहवीं शताब्दी में विद्यमान था। इससे स्पष्ट है कि जब तक राशियों के आधार पर क्या, किसी तरह से भी महीनों तक का ज्ञान न था, काल गणना का ये लोग जब नाम तक भी न जानते थे, उस समय से भी पूर्व भारतवर्ष में ज्योतिषशास्त्र के अपूर्व एवं गम्भीर सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण होचुका था। तत्कालीन भारतीय विद्वान् राशि और नक्षत्रों के आधार पर मास, ऋतु, या वर्ष की कल्पना को बड़ी अच्छी तरह जानते थे। हमारे महीने और वर्ष आदि के नाम से ही यह बात साफ़ मालूम होती है कि प्राचीन भारत के विद्वानों ने आकाश मण्डल के एक २ नक्षत्र को राशियों के साथ २ गिनडाला था। परन्तु इन के कुछ महीनों के नाम संख्याक्रम से हैं—जैसे सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर आदि। कुछ राजाओं के नाम पर हैं, जैसे--जुलाई, अगस्त, और एक आध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'महाभारत मीमांसा' नामक पुस्तक में इन नामों का इस प्रकार विवेक किया है, कि— 'अंहसस्पति' नाम क्षय मास के लिये, और पांच साल के बाद प्राचीन प्रथा के अनुसार एक साथ बढ़ाये हुए दो अधिक मासों के नाम 'संसर्प' और 'मलिम्लुच' हैं। यह विवेक किसी तरह हो, यहां हम को इस से कोई बहस नहीं। परन्तु इन अवतरणों से यह बात अवश्य प्रतीत होती है, कि पुराने आर्यों को चान्द्र मान के अनुसार अधिक मास की कल्पना का ज्ञान था। ऋग्वेद में भी इस की ओर इशारा किया गया है। एक मन्त्र है:—

'वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते'। ऋक्०

सायण ने इस का भाष्य यों किया है :—

'धृतव्रतः स्वीकृतकर्मविशेषो यथोक्त महिमोपेतो वरुणः प्रजावतः तदा तदोत्पद्यमानप्रजायुक्तान् द्वादश मासः चैत्रादीन् फाल्गुनान्तान् वेद जानाति यस्त्रयोदशोऽधिक मास उपजायते संवत्सर समीपे तमपि वेद' इति

इस का स्थूल तात्पर्य यही है कि वह वरुण बारह महीनों को जानता है, और जो तेरहवां महीना अधिक मास है उस को भी जानता है। यहां विचारणीय यह है कि बारह महीनों के अतिरिक्त इस तेरहवें महीने को कल्पना कैसे की जाती है? इस बात को हम पहिले लिख चुके हैं कि चान्द्र मान के अनुसार वर्ष में कुछ दिनों की कमी हो जाती है, इसी लिये ढाई साल के बाद लगभग एक महीने की कमी को पूरा करने के लिये एक अधिक मास कल्पना किया गया है। परन्तु सोचना यह है कि जिन लोगों ने इसकी कल्पना की, उनको यह कैसे मालूम होगया था कि वास्तविक वर्ष इतने दिन का होता है, और चान्द्रमान के अनुसार उस में इतनी कमी पड़ती है? कोई ऐसा साधन अवश्य होना चाहिये कि जिस से उनको यथार्थ वर्ष का ज्ञान हो। हमारी सम्मति में वह साधन सौर वर्ष मान ही हो सकता है। ज्यौतिष शास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार सौर मान में एक वर्ष के ठीक बारह विभाग कर दिये जाते हैं। यह भी बात सिद्ध है कि सौर मान के अनुसार क्षय या अधिक मास नहीं हो सकता, यह सब चान्द्र गणना में ही होता है। इस प्रकार सौर मान के अनुसार किये गये बारह विभागों को ही हम आज कल बारह राशियों के नाम से व्यवहृत करते हैं। इसी को बताने के लिये ब्राह्मण ग्रन्थ और अन्य प्राचीन ग्रन्थों में 'द्वादशादित्याः' इत्यादि पद सैकड़ों स्थलों पर आते हैं। इस प्रकार अविकलित बारह महीनों की कल्पना बिना बारह राशियां माने हो नहीं सकती। इस लिये कहा जासकता है कि प्राचीन आर्यों को राशियों का ज्ञान अवश्य था। यह सम्भव हो सकता है कि उस समय में इस प्रकार की गणना के लिये आम तौर पर राशि शब्द का व्यवहार न होता हो। और उस के लिये कोई अन्य ही शब्द हो। क्योंकि शब्दों की शक्तियां और उनका प्रयोग बराबर बदलता रहता है। कोई महानुभाव यह भी शङ्का कर दिया करते हैं कि प्राचीन साहित्य में राशि शब्द और उन के विशेष नाम-मीन, मेष, इत्यादि कहीं नहीं पाये जाते, इससे मालूम होता है कि पहिले लोग राशि जानते ही नहीं थे। इसकी बाबत हम आगे लिखेंगे कि राशियों के विशेष नाम प्राचीन ग्रन्थों में आते हैं। परन्तु पहिले उन महानुभावों से हम यह पूछना चाहते हैं कि वे 'द्वादशादित्याः' 'संवत्सरः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रजापतिः' इत्यादि ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में आये हुए शब्दों के अर्थ और ज्यौतिष शास्त्र के अनुसार उनकी वास्तविक संगति करें। वेदों और ब्राह्मणों में आये हुए बारह मास और छः ऋतुओं के स्पष्ट वर्णन का और कोई कारण बतावें। तेरहवें मास की कल्पना का प्रयोजन बतावें। केवल इतनी बात से कि प्राचीन ग्रन्थों में 'राशि' यह शब्द नहीं मिलता, यह सिद्ध नहीं किया जासकता कि प्राचीन आर्य इस प्रकार की गणना नहीं जानते थे। लेख के बढ़ जाने के भय से हम यहां बहुत उद्धरण तो नहीं देसकते, अगर मौक़ा मिला तो अगले किसी अङ्क में देसकेंगे। केवल एक उद्धरण यहां रामायण से दिया जाता है, जिस में राशियों के विशेष नामों का ज़िक्र है। देखिये रामायण० बाल काण्ड० १८ सर्ग :—

नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह॥
पुष्ये जातस्तु भरतो मीनलग्ने प्रसन्नधीः।
सार्पे जातौ तु सौमित्री कुलीरेऽभ्युदिते रवौ॥

इन श्लोकों में कई राशियों का स्पष्ट नाम लिया गया है। यह राम आदि चारों भाइयों के जन्म काल का वर्णन है। इन श्लोकों में 'उच्चसंस्थ' पद आया है। यह पद या 'उच्चस्थ' पद राशियों पर संक्रान्त हुए २ नक्षत्र या ग्रह आदि के लिये आता है।

इससे श्लोकस्थ वाक्यों का यह अर्थ है कि उस समय पांच ग्रह पांच राशियों पर स्थित थे। टीकाकारों ने उन राशियों के नाम ये लिखे हैं - मेष, मकर, तुला, कर्क, मीन। कर्क और मीन ये दो नाम तो साक्षात् श्लोकों भी पढ़े हुए हैं। यह हम पहिले लिख चुके हैं कि अधिक से अधिक ईसा से साढ़े छः सौ या सात सौ बरस पहिले तक यूनानियों को न बारह मास की कल्पना का ज्ञान था, और इस लिये न वे राशियों को जानते थे। राशियां बारह मास की विभाग कल्पना के सिवाय कोई वस्तु नहीं है। परन्तु उस से भी बहुत पहिले आर्यों के प्राचीन ग्रन्थों में बारह मास की कल्पना का स्पष्ट वर्णन पाया जाता है। इस से पाठक जानलें कि यूनानियों से भारत ने राशियों की शिक्षाली, या भारत से यूनानियों और उनके भाईयों ने राशियों की शिक्षा ली। अगर आज से हज़ार वर्ष बाद उत्पन्न होने वाला कोई आदमी उसी रूप में आज कल कालिज़ की कुर्सी पर बैठकर लड़कों को पाठ पढ़ा सकता है, तो हम अवश्य मानलेंगे कि यूनानियों ने भी भारत को राशियों की शिक्षा दी। अन्त में हम विद्वानों से यही प्रार्थना करते हैं कि वे अपने हृदयों से ऊपर कहे गये पाश्चात्य समालोचकों के दो चार सिद्धान्त रूप में परिणत हुए भावों को निकाल कर पवित्र अन्तः करण से विचार करें कि इस में तत्व क्या है? इति।

ऐतिहासिक अंश हम ने पं० गौरी शङ्कर हीराचन्द ओझा की 'प्राचीन लिपि माला' के आधार पर लिखा है। जिन को विशेष जानने की इच्छा हो, वे महानुभाव वहीं से पढ़ सकते हैं।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अहिन्सा-संग्राम

ले०—श्रीयुत "त्रिशूल"

बन बन भटका और चुभे काँटे तन भरमें, पड़ी पवन प्रतिकूल, पड़ा पानी पर पर में।
कितना साहस, सहन और था धैर्य भ्रमरमें, आख़िर विजयी हुआ बीर वह प्रेम-समर में॥

पौरुष उसने वह किया, दैव हुआ अनुकूल है।
अब तो उसकी गोद में, उसका प्यारा फूल है॥

सच्चे प्रेमी शूर आन पर मर जाते हैं, सर करते संग्राम याकि फिर सर जाते हैं।
दीन बन्धु भी दया दीन पर कर जाते हैं, चींटी जाती जीत, हार कुञ्जर जाते हैं॥

न्यायी कोई दूसरा, है ज़ाबिर मज़बूर का।
होती विजय विनीत की, सर नीचा मग़रूर का॥

अपमानित पञ्जाब, ख़िलाफ़त पर आफ़त थी, दुखिया था सब देश मगर दिलमें हिम्मत थी।
पराधीन था, कौन नहीं होती दुर्गत थी. कैसे फलता सुफल बुरे को जब संगत थी॥

पुण्य भूमि भारत मही, कांपी पापाचार से।
बीरों को करना पड़ा, असहयोग सरकार से॥

खुलकर नाची नाच और भी नौकरशाही, सभा बन्द, मुंह बन्द खुली राहे गुमराही।
भयसे मन पर विजय नीति निपुणोंने चाही, पर दिन दूने बढ़े देश के वीर सिपाही॥

बन्द बन्द ढीले हुए, खीझी अपनी हार से।
चाहा सबको पीसदूं, अपने प्रबल प्रहार से॥

सेना अपनी इधर सजाली कर्मबीर ने, रण कौशल की कला सिखाली कर्मबीर ने।
कर प्रशस्त दी प्रेम प्रणाली कर्मवीर ने, सत्याग्रह शमशीर निकाली कर्मबीर ने॥

और कहा ललकार के, परम शान्ति से काम लो।
सीने अब हों सामने, और कलेजे थाम लो॥

'आती हैं गोलियाँ,' बढो निर्भय आनेदो.' 'बम बरसाते' 'बीर ! उन्हें बम बरसाने दो'।
'साथी कट कर गिरे' 'इन्हें सद्गति पाने दो,' 'घर ख़ाली होगये,' 'जेलही भर जाने दो'॥

'पड़ी नाव मंझधार में' तीव्र दमनकी धार है'।
'पार पहुंचते हो अभी' यही शान्ति पतवार है'॥

लो सीने पर वार कहीं कर वार न देना, होगी भारी भूल 'क्रोध को मार न देना'।
विश्व प्रेम से पूर्ण भुला वह प्यार न देना, जीती बाज़ी कहीं मुफ़्त में हार न देना॥

कटनेदो परवा नहीं, शीश झुकाना तुम नहीं।
हाथ चलाने दो उन्हें, हाथ उठाना तुम नहीं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेम-सिन्धुमें गर्व-जहाज़ डुबो जायेगा, आपा अपना भूल आपमें खो जायेगा।
यह मनका मालिन्य और मद धो जायेगा, शत्रु न रहकर शत्रु, तुम्हारा हो जायेगा।

और अगर छोड़ा नहीं, उसने निज दुर्भाव को।
डुबो रुधिर को धारमें, देना अपनी नावको॥

अमर पुत्र हो मचा करे जो मचो प्रलय है, भय तब तक है तुम्हें मृत्यु का जब तक भय है।
कभो न्याय से जीत सका क्या क्रूर अनय है? जहां धर्म हाँ 'त्रिशूल' फिर वहीं विजय है॥

बढ़ कर इस संग्राम में, पीठ दिखाना त्याज्य है।
यातो सीधा स्वर्ग है, या फिर प्राप्त 'स्वराज्य' है॥*

———

आत्म-कहानी

(१)

लेखक--श्रीयुत हनुमन्त लाल बक्षी

हमारे उद्यान के पास से ही शिवनाथ नदी कल २ झर २ शब्द करती हुई बह रही है।

माघ का महीना था। सांझ हो गई थी। पूर्व दिशा में चतुर्दशो का चन्द्र उदय हो रहा था। एक मौलश्री के वृक्ष के नीचे बैठकर मालती माला गून्थ रही थी। मैं भी उस के पास बैठ गई।

मालतो हमारी नई दासो का नाम है। जब कभो मैं उस से पूछती—'मालतो, हमारे घर में तुम आनन्दपूर्वक तो हो न?'--वह बनावटी क्रोध के साथ उत्तर देती-'तुम्हारा घर तो एक दुःख-सागर है; वहां आनन्द कहां?'

इस समय भी मैंने वही प्रश्न किया। परन्तु उस ने गम्भीरता से उत्तर दिया—'जब तक मां जीती थी, मैं भो सुखी थी। उस को मृत्यु के पश्चात् न मालूम कितना दुःख सहा। कितने प्रकार के कष्ट सहे। अंत में मैं तुम्हारे स्नेह पूर्ण आश्रय में आ पहुंची हूं। यही क्या कम आनन्द की बात है।'

हटात् मुझे उस दिन का स्मरण आगया! मालती ने कहा था 'मेरी जीवन कहानी सुनोगी?

मैं बोली—'मालती, तुम ने एक दिन अपने जीवन की घटना.....

उस ने अपना कुम्हलाया हुआ मुख मेरो ओर फेर कर कहा—'उसे सुनने के लिये तुम क्यों इस तरह उत्सुक हो रही हो। वह दुःख पूर्ण है। उसे सुनकर तुम्हें प्रसन्नता नहीं होगी। देखो, इस प्रकृति—सौन्दर्य की ओर देखो। कैसा सुहावना समय है। वृन्दा, तुम्हारे दक्षिण प्रदेश के दृश्य मुझे बहुत सुन्दर मालूम पड़ते हैं। यह नील वस्त्र से आच्छादिता मेघ माला देखो। शिव नाथ नदी का यह कल २ झर २ शब्द सुनो।'

* नोट—इस कविता पर श्री० बेनीमाधव खन्ना द्वारा ४१) का पुरस्कार दिया गया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

भारत सरकार का वजट।

सर मैलकम हेली ने पहिली मार्च को जो वजट व्यवस्थापक सभा में उपस्थित किया है उस ने सारे देश में एक सनसनी सी पैदा कर दी है देशी समाचार पत्र तो आंसू बहा ही रहे हैं परन्तु 'एंग्लो इण्डियन' समाचार पत्र भी इस वजट की भयङ्कर क्रूरता को अनुभव कर रहे हैं सब ने एक स्वर से कहा है कि यह वजट सन्तोष जनक प्रतीत नहीं होता भारतवर्ष जैसे निर्धन देश में आए दिन करों की वृद्धि करना मानो इस के जर्जर शरीर से बचे खुचे खून को चूसना है। भारत सरकार को पिछले चार वर्षों से लगातार घाटा ही घाटा हो रहा है। इस घाटे का व्योरा पढ़ कर दिल काँपता है और नौकरशाही की विचित्र लीला पर रोना आता है। जो सरकार घाटे को नहीं रोक सकती और उसकी पूर्ति का एक मात्र उपाय कर-वृद्धि समझती है उस के लिये यही अच्छा है कि वह शीघ्र अपनी स्थानापन्न देशीय शासन नियत करके अपने आप को उत्तरदायित्व से मुक्त कर लेवे। भारत प्रजा की पीड़ित अवस्था का ज्ञान देशीय तथा भारतीय प्रतिनिधि ही अनुभव कर सकते हैं। उच्च पदाधिकारी, बड़े बड़े वेतन पाने वाले नौकरशाही मतङ्ग घाटों की पूर्ति का उपाय व्यय को न्यून करना नहीं समझते किन्तु कर वृद्धि की चक्की चलाना ही उन्हें अभीष्ट है।

१९२२-२३ के वजट का संक्षिप्त व्योरा।

सर मैलकम हेली अर्थसदस्य ने व्यवस्थापक सभा में वजट उपस्थित करते समय जो वक्तृता दी है उस का संक्षेप इस प्रकार है—आप से व्यय बढ़ रहा है गतवर्ष भी आय में बहुत कमी रही इस वर्ष भी वही हाल है आर्थिक सङ्कट से हमें पुनः मुकाबिला पड़ा है। आगामी वर्ष के लिये भी आय की अपेक्षा व्यय का अनुमान बहुत अधिक है। आर्थिक सङ्कट के कारण यह हैं (१) विदेशी हुण्डी की दर हमारे प्रतिकूल है कानूननें रुपये का दाम दो शलिङ्ग ठहराया है पर गत वर्ष वजट के लिये एक शलिङ्ग आठ पैंस ही माना गया था। (२) संसार भर के व्यवसाय में कमी होजाने के कारण भारतीय व्यवसायों पर हानिकर प्रभाव पड़ा है। (३) १९२१ में वर्षा की कमी होने के कारण उपज कम हुई है। गेहूं की कीमत ६ रु० से ८½ रु० फ़ी मन होगई थी। रंगून के चावल का निर्ख़ ४ रु० से ६½ रु० मन हो गया था गेहूं हमें बाहर से मङ्गाना पड़ा, कोइले की खानों में श्रमियों की हड़तालों के कारण कोइले की कीमत बढ़ गई। और हमें बाहिर से कोइला मङ्गा कर रेलें चलानी पड़ीं। (४) भारतीय राजनैतिक घटनाओं के कारण लोगों ने विदेशी चीज़ों के मंगाने के ठेकों को पूर्ण नहीं किया। (५) इन कारणों के अतिरिक्त अन्य बाह्य कारण भी हैं रूस और योरूप की दशा बिगड़ जाने से तथा रूस में दुर्भिक्ष पड़ जाने से भारतवर्ष का व्यवसाय इन देशों से लगभग बन्द सा रहा। भारतवर्ष की रफ्तनी [निर्यात] जो मार्च १९२० में ३१ करोड़ थी वह मार्च १९२१ में १८ करोड़ रह गई और गत जून मास में १६ करोड़ रह गई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आगामी आय व्यय का अनुमान।

आगामी वर्ष में ११० करोड़ आय का अन्दाज़ा है और १४२ करोड़ व्यय का। इस हिसाब से ३२ करोड़ का घाटा सरकार को पूरा करना होगा गत चार वर्षों में जो सरकार को घाटा हुआ है उसका ब्यौरा इस प्रकार है:—

सन् १९१८—१९	६	करोड़
,, १९१९—२०	२४	,,
,, १९२०—२१	२६	,,
,, १९२१—२२	३४	,,
योग	९०	करोड़

आगामी वर्ष के ३२ करोड़ का घाटा कैसे पूरा हो?

इस घाटे की पूर्ति के लिये हेली साहिब तीन सम्भव उपाय बतलाते हैं :—

१—भारत की व्यवसाय उन्नति की दशा उपस्थित हो जाने पर घाटे का अपने आप पूरा हो जाना।

२—नये नोटों और सिक्कों के चलाने तथा कर्ज़ के लेने से।

३—कर वृद्धि के द्वारा।

इन तीनों उपायों में से पहिले दो को छोड़ कर तीसरे उपाय का अवलम्बन हेली साहिब बड़े ज़ोर से करते हैं, और नये नये करों की सूचना देकर इस प्रकार घाटे की पूर्ति करना चाहते हैं, 'रेलों का किराया बढ़ा कर ६ करोड़; डाक महसूल बढ़ा कर १—६० करोड़; बाहिर से आने वाले माल पर ११ °/० से १५ °/०; चुँगी द्वारा ५४५ करोड़, मशीनरी पर २½ °/० से १० °/० करके ४. ५ करोड़, खाण्ड पर १५ °/० से २५ °/० कर के २ करोड़ दियासिलाई पर १२ आने ग्रोस से १½ रु० ग्रोस करके एक करोड़, तेल मट्टी और पैट्रोलियन पर एक आना गैलन बढ़ा कर नौ लाख; विदेशी सूत पर ५ °/० चुङ्गी लगा कर ५० लाख; विलास की सामग्री पर २० °/० से ३० °/० कर के ७½ लाख, इसी प्रकार इन-कमटैक्स और सूगरटैक्स में भी वृद्धि की गई है जिन से २½ करोड़ की आशा की जाती है। नमक जो ग़रीबों का प्राण है और जिस पर मनुष्य और पशु दोनों पलते हैं और जो भारतवर्ष में सदा बिना मूल्य के दिया जाता रहा है उस में १½ रु० के स्थान में २½ रु० प्रति मन कर दिया गया है इस से ४.६० करोड़ की पूर्ति की आशा की जाती है। इन सब करों को मिला कर लग भग २९ करोड़ प्राप्त करने की आशा की गई है, बाक़ी तीन करोड़ सरकार ऋण लेकर घाटा पूरा करने का विचार करती है।

कर वृद्धि की चक्की।

कर वृद्धि की चक्की में पिसते २ हम पिस गए। यदि कर वृद्धि भारत सरकार के घाटे की पूर्ति का अच्छा उपाय होता तो पहिले करों से पिछले घाटे पूर्ण होते परन्तु निरन्तर चार वर्षों से घाटा ही घाटा दिखलाया जाता है इतने बड़े घाटे से सरकार दिवालिया बन रही है। हेली साहिब ने सच कहा है कि सरकार केवल अपनी साख पर ही चल रही है—साख के स्थान पर यदि "बल" के शब्द का प्रयोग कर देते तो और भी ठीक होता—अपने बल से जब चाहती है बल से कर बढ़ाकर अपना कार्य्य चला लेती है, परन्तु इस प्रकार कार्य कब तक चलेगा। भारतवर्ष में चार करोड़ भारतवासियों को एक समय पेट भरने को अन्न नहीं मिलता। करोड़ो रोटी का टुकड़ा लेकर और नमक पानी में घोल कर अपनी क्षुधा को मिटाते हैं। ऐसे देश में कर वृद्धि द्वारा घाटे पूरे करने कहांकी बुद्धिमत्ता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिछले ६ मास में स्वदेशी कपड़ा पहनने पर अधिक बल दिया गया है। यह देखने योग्य बात है कि हमारे प्रयत्न का क्या फल निकला। २६ जनवरी २२ के कैपिटल में अप्रैल १९२१ से दिसम्बर १९२१ तक के आयात और निर्यात सम्बन्धी अंक प्रकाशित हुए हैं। उन को देखने से पता लगता है कि १९२० के इन्हीं महीनों की अपेक्षा गतवर्ष के इन नौ मास में बाहर से लगभग ५५ क्रोड़ के दाम का माल कम आया है। जहां १९२० में कुल माल २, ६३, २१, ४२, ३५८ रुपये का आय था कमी यूं तो अनाज, मसाले, खांड, कोयला, मशीने, रेल का सामान को छोड़ कर शेष सब वस्तुयें ही कम दाम की आयी है, परन्तु इस कमी का मुख्य कारण कपड़ा और सूत ही है। जहां १९२० में ९६, २१, ९५, ०८१ रु० का कपड़ा और सूत हम ने बाहर से खरीदा वहां इस वर्ष केवल ४७, ४८, ७०, ८२५ रु० इन पर व्यय किया। यह अंक उत्साह जनक अवश्य है परन्तु इस से यह भी स्पष्ट पता लगता है कि अभी हमारे लिये कितना काम बाकी है। ४७ क्रोड़ रुपया हम ने गत वर्ष केवल कपड़े पर ही व्यय किया। यदि सब लोग हाथ का कता और हाथ का बुना कपड़ा पहनने लग जायें तो धन का यह बड़ा भारी निकास हम शीघ्र ही बन्द कर सकते हैं।

माननीय मांटेगू।

विलायत से खबर आई है कि भारत सचिव मि० मांटेगू ने त्याग पत्र देदिया है। इङ्गलेण्ड के प्रधान मन्त्री ने वह त्याग पत्र मंजूर भी कर लिया है। हम को यह सुन कर शोक होता है कि मि० मांटेगू जैसे नीतिज्ञ को त्याग पत्र देना पड़ा और वह स्वीकार भी कर लिया गया। माननीय मांटेगू ने भारतवर्ष के लिये भर पूर प्रयत्न किया और अपने विचारों के अनुसार उन्होंने एक अच्छी सुधार स्कीम बनाने में कोई बात उठा नहीं छोड़ी। यह बात अलग है कि भारतीयों को वह पसन्द न आयी; यह तो अपनी रुचि पर है; इस में किसी का क्या दोष?

यदि म० मान्टेगू का त्याग पत्र श्री० लायड जार्ज के सिवाय किसी और प्रधान सचिव ने स्वीकार किया होता तो हमें इतना आश्चर्य न होता। परन्तु लायड जार्ज त्याग पत्र स्वीकार करें यह समझ नहीं आता। याद रहे कि कुछ साल हुए तो प्रस्तुत प्रधान मन्त्री ने इस बात पर बड़े प्रसन्न होकर कि म० मांटेगू भारतीय मामलों को खूब समझते हैं, उन्हें भारतीय सचिव बनाया था। आज वही प्रधान सचिव यह समझते हैं कि म० मांटेगू भारतीय मामलों में दखल देने के लायक नहीं। थोड़े ही काल में इतना परिवर्तन! यह तो कुछ असम्भव सी बात है।

म० मांटेगू पर जुरम यह लगाया गया है कि उन्होंने सरकार की आज्ञा विना भारत सरकार द्वारा भेजा गया तार प्रकाशित कर दिया। अन्तरंग सभा (Cabinet) के एक सदस्य को त्याग पत्र के पांच दिन पहिले ही इस बात का पता था कि म० मांटेगू ने तार छापने की आज्ञा देदी है। इतना होते हुए भी मांटेगू साहब को उक्त सदस्य ने तार छापने से मना नहीं किया। इस से प्रतीत होता है कि मांटेगू जी का त्याग पत्र तार के मामले में नहीं वरन किसी और ही बात पर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो क्या मांटेगू जी को इस लिये त्याग पत्र देना पड़ा है कि उन्होंने, भारत सरकार ने जो तुर्की के बारे में भारतीय मुसलमानों की राय का समर्थन किया था, उस का फिर जोर से समर्थन किया ? यदि ऐसा ही है तो मांटेगू महाशय के अपराध से तो भारत सरकार का जुरम कहीं अधिक है इस हिसाब से तो लार्ड रीडिंग तथा उस के सचिव मण्डल (Exicutive council) के सदस्यों को भी त्याग पत्र देने पर मजबूर कियाजाना चाहिये था। परन्तु ऐसा हुआ नहीं इस लिए कारण कुछ और ही दीखता है।

कहा जाता है कि म० मान्टेगू नें भारत सरकार के तार को छाप कर अपने आपको खुद मुख त्यार दिखलानें का प्रयत्न किया है। परंतु वह तो कहते हैं कि हमनें अपनें निजके मत को प्रकट करनें के लिये एसा किया था। क्या उनको अपना मत प्रकट करने के लिये ही त्याग पत्र देना पड़ा है ? नहीं यदि ऐसा होता तो जिस समया मि० चर्चिल ने केनिया के मामले पर और ला० मिलनर ते मिस्र के बारे में अपने निजके मत प्रकट किये थे तो उनसे भी त्याग पत्र दिलवाये जाते।

हमारे मत में म० मांटेगू जी के त्याग पत्र के कारण नीतिज्ञ नाम धारी इस शताब्दी के सब से बड़े चालाक स्वयं श्री लायड जार्ज ही हैं। आयर्लैण्ड कई शताब्दियों से अपनी स्वाधीनता के लिये लड़ रहा था; जब प्रधान सचिव बाधित हो गये तो उन्हों ने आयर्लैण्ड को वह स्वाधीनता जिस के लेने पर वह तुले हुए थे देदी। ऐसा करके उन्होंने दोनों देशों में शांति स्थापित करदी इस के लिये इसके लिये वे धन्यवाद के भागी हैं। परन्तु मामला वहीं शांत न हुआ। प्रधान सचिव के आयर्लैण्ड को स्वाधीनता दे देने पर कई Unionists ने बड़ा क्रोध प्रकट किया। क्या लायडजार्ज ने Montague to the wolves का आश्रय लेकर Unionists से अपना पीछा छुड़ाया है ?

लायडजार्ज जी ने कितनी ही प्रतिज्ञाऐं क्यों न तोड़ी हो परन्तु प्रतीत होता है की वह अपनी आजन्म प्रधान सचिव रहने की प्रतिज्ञा को रखने के लिये मित्र शत्रु सब को वलिदान करने को प्रस्तुत हैं। धन्यरी प्रतिज्ञा !! और धन्य ऐसे प्रतिज्ञा धारी की नीति !!

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री उपयोगी स्त्रियों द्वारालिखित लेखों का संग्रह।

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१—स्त्री जगत्—	६०६
२—माणिक लेस (ले०श्रीमती ओ३म्वती देवी)	६०७
३—स्वादिष्ट भोजन	६११
४—गृह प्रबन्ध	६११
५—स्त्रियों के सुधार विना स्वराज्य नहीं	६१३
६—अहिंसा संग्राम (ले० श्रीमती चन्द्रवती)	६१४
७—होली (ले०श्री०लक्ष्मीदेवी जोहरी)	६१५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री-जगत ।

प्रयाग महिला-विद्यापीठ ।

हम अपनी स्त्री पाठिकाओं को यह शुभ समाचार सुनाना चाहते है कि प्रयाग में अनेक स्त्री शिक्षा हितैषी सज्जनों ने एक उच्चकोटि का विद्यापीठ स्थापित किया है। विद्यापीठ का संक्षिप्त हाल व्यवस्थापकों के शब्दों में ही नीचे दिया जाता है।

स्त्रीशिक्षा प्रेमियों के निरंतर उद्योग से देश में अब स्त्रीशिक्षा की ओर लोगों की उदासीनता कम होती जा रही है। कन्याओं में प्रतिदिन प्रारंभिक शिक्षा बढ़ रही है। कहीं कहीं कुछ स्त्रियों ने उच्चशिक्षा भी प्राप्त कर ली है किन्तु इस में संदेह नहीं कि उच्चशिक्षा प्रचार के लिए सुविधाओं की बहुत कमी है और उसकी प्राप्ति में कई कठिनाइयाँ हैं। वर्त्तमान कठिनाइयों को बिना दूर किये और सुविधाओं के बिना बढ़ाये स्त्रियों में उच्चशिक्षा का अधिक प्रचार होना यदि असम्भव नहीं तो बहुत ही कठिन है। हमें वर्त्तमान शिक्षाशैली में बहुत आवश्यक परिवर्तन करना पड़ेगा। किन्तु शिक्षाप्रणाली के परिवर्तन में, नवीन पाठ्यक्रम बनाने में हमें अपना आदर्श बराबर ध्यान में रखना उचित है। हमारा उद्योग यह होना चाहिए कि जहां स्त्री विदुषी और पण्डिता हो वहां पातिव्रत धर्म का अपने पाण्डित्य से भी ऊँचा आदर्श अपने दैनिक जीवन में दिखावे, जहाँ सामाजिक व्यवहारों और राष्ट्रीय कार्यों में बुद्धिमत्ता से भाग ले वहाँ अपने बच्चों के पालन पोषण, अपने पूज्य गुरुवरों की सेवा और अपने गार्हस्थ जीवन के दैनिक कर्त्तव्यों में दक्ष और तत्पर हो।

हमारे देश में स्त्रियों में उच्चशिक्षा के प्रचार में जो कठिनाइयाँ हैं उनमें एक बड़ी कठिनाई यह है कि मातृभाषा द्वारा उच्चशिक्षा देने वाली पाठशालाओं का अभाव है और न स्त्रियों के योग्य सार्वजनिक परीक्षाएं स्थापित की गई हैं जिनके लिए वह तय्यारी कर सकें।

हम लोगों ने यह विचार किया है कि प्रयाग में प्रयाग-महिला विद्यापीठ नाम की एक संस्था खोली जाय जो स्त्रीशिक्षा के राष्ट्रीय आदर्श पर कार्य करे। हमारे विचार के अनुसार प्रयाग की म्यूनिसिपैलिटी से इसका घनिष्ट संबंध हो और उसकी विशेष सहायता से यह विद्यापीठ चलाया जाय। किन्तु इतना स्पष्ट कर देना उचित है कि हम लोगों का आशय यह नहीं है कि यह प्रस्तावित विद्यापीठ प्रयाग म्यूनिसिपैलिटी का एक अंग हो कर रहे।

बोर्ड के सभापति विद्यापीठ के भी प्रधान होंगे और बोर्ड के शिक्षा विभाग के सभापति इस के उपप्रधान होंगे। किन्तु इस परिषद के अधिकाँश सदस्य अन्य संस्थाओं के चुने हुए प्रतिनिधि होंगे। विद्यापीठ अपने पाठ्यक्रम और नियमों के बनाने में पूर्णतया स्वतंत्र होगा। इस प्रकार विद्यापीठ म्यूनिसिपैलिटी से घनिष्ट संबंध रखते हुए भी स्वतंत्ररूप से कार्य कर सकेगा।

यह विद्यापीठ सुगठित और सुचारुरूप से स्थापित होकर हमारे घरों की अंधेरी कोठरियों को अपनी ज्योति से उज्ज्वल करे, यही हमारी ईश्वर से प्रार्थना है और इसके ही निमित्त विद्वान और विदुषियों से हमें सहायता की अपेक्षा है।

हम व्यवस्थापकों को विद्यापीठ स्थापित करने पर धन्यवाद देते हैं। हमें विश्वास है कि उनका यह मनोरथ सफल होगा।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

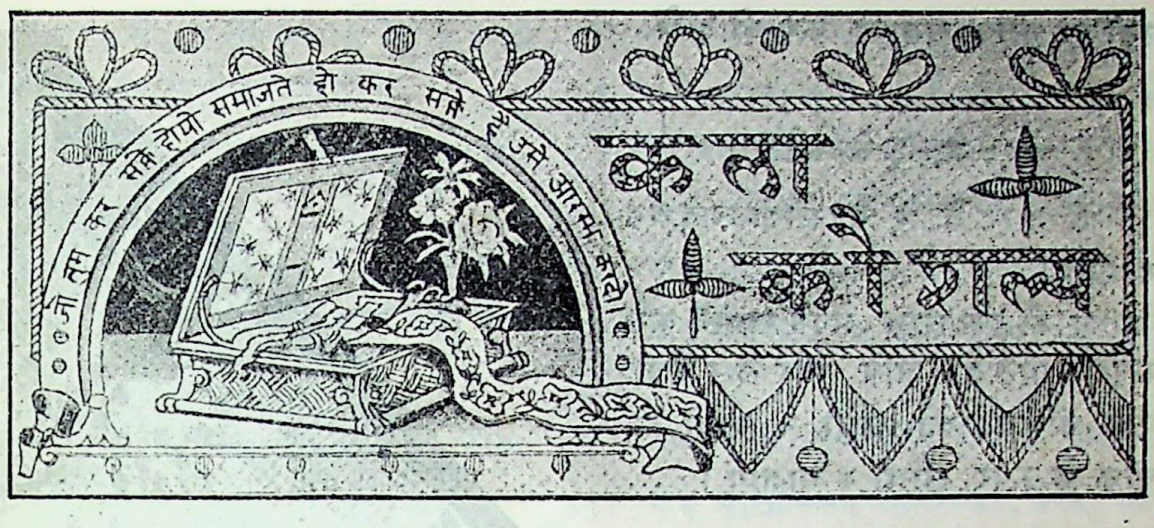

माणिक लेस का कोना।

(गतांक से आगे)

२१ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट., ७ ते., २ लैस्यट., ७ ते., २४ महीन ख़ाने (एक चेन वाले) ७ ते., ३ लैस्यट., ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., १ ख़ाना., १ ल. ते., ३ चे., लौटो।

२२ पंक्ति—(यह पंक्ति कोने के बीच में की है इस से लौटी हुई पंक्ति और तरह की होगी) ७ ते. ते. पर, २ ख़ा, ७ ते., ३ खुले लैस्यट, ७ ते., १२ महीन ख़ाने, ७ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., १ लैस्यट, ७ ते., १ ते पर, २ पहिले छेद में १ दोहरे क्रो. पर, २ अगले छेद में १ ते पर) ३ लैस्यट, ७ ते., ३ चे. लौटो।

२३ पंक्ति—२४ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., १ लैस्यट, २५ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., ६ महीन खाने., २५ ते., १ लैस्पट., ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., (ख़ाने पर और लौटने वाली ३चे. पर) २ चे., १ ल. ते., उसी घर में पिछले तेहरे के साथ, ६ चे., लौटो।

२४ पंक्ति—१ ते. लम्बे ते. पर, १ ख़ा., ७ ते. ते. पर और बाक़ी सब लौटी हुई पंक्ति बीनो।

२५ पंक्ति—१६ ते. पर सादे घर बीनो, फिर ३ चे (१ ते के लिये) ६ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., १२ ख़ाने महीन, ७ ते., ३ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., २ चे, १ ल. ते पिछले तेहरे वाले घर में, ६ चे. लौटो।

२६ पंक्ति—१ ते. ल. ते. पर, १ ख़ाना., ७ ते., लौटती हुई पंक्ति समाप्त कर दो, ३ चे. लौटो।

२७ पांक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., ४ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट, ७ ते, २ ख़ा, ७ ते., २ चे, १ ल. ते. पिछले घर में, ६ चे, लौटो।

२८ पांक्ति—१ ते, ल. ते. पर, १ ख़ा, ७ते.,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और लौटती हुई पंक्ति समाप्त कर दो ३ चे., लौटो।

२९ पंक्ति—१८ ते., ३ चे, लौटो।

३० पांक्ति—१८ ते., १ चे. लौटो सादे घर तेहरों पर बीनो।

अब कार्य्य को इस तरह अपने सामने करो कि कंगूरे सामने हो जायं और लेस बैंडो हो जाय तब पंक्तियों को खड़ी २ बीनो जो पिछली पंक्ति के ऊपर सीधी २ आजायं।

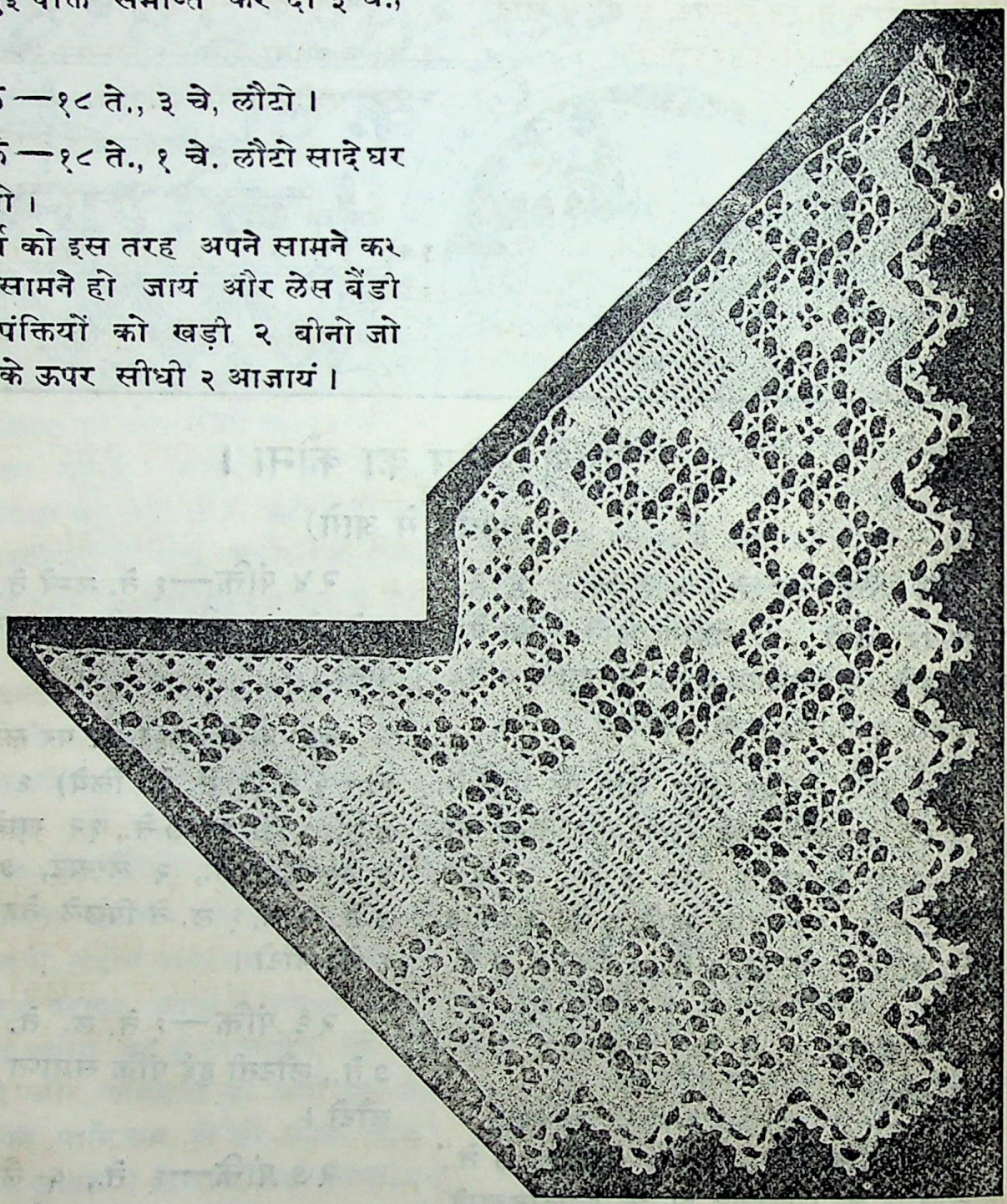

१ पांक्ति—२१ चे., ४ छोड़ो, १७ ते., चे. पर, ६ ते पिछली दो पंक्तियों के तेरहों के किनारे की ओर, २ पड़ी चेन छोड़ कर ४ सारे और पर, ३ चेन और १ तेहरा उसी तरफ़ लौटो।

२ पंक्ति—२४ ते., ३ चे, लौटो।

३ पंक्ति—६ ते., २ बन्द लैस्यट, एक और लैस्यट इस तरह बनाओ – ३ चेन २ छोड़ो १ दोहरा, ३ चेन, २ पड़ी चेन छोड़ो, ४ सादे उसी तरफ़ लौटो।

४ पांक्ति—३ खुले लैस्यट, ७ तेहरे., ३ चे., लौटो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

५ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट, ६ ते., ४ सादे तीसरी पड़ी हुई चेन से लेकर लौटो।

६ पंक्ति—६ ते., २ खुले लैस्यट, ७ ते., २१ चे., लौटो।

७ पंक्ति—४ चे छोड़ो, २३ ते., १ लैस्यट, ७ ते., १ ख़ाना, २ चे., ४ सादे तीसरी पड़ी चेन से लेकर, लौटो।

८ पंक्ति—२ ख़ा., और लौटती हुई पंक्ति बीनो, ३ चेन लौटो।

९ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ६ ते., ४ सादे फ़न्दे तीसरी पड़ी चेन से लौटो।

१० पंक्ति—लौटती हुई पंक्ति और ३ चेन लौटो।

११ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट (अन्त वाले लैस्यट को ३ सरी पड़ी चेन से शुरू कर के ४ सादों में ख़तम करो) लौटो।

१२ पंक्ति—लौटती हुई पंक्ति, २१ चेन, लौटो।

१३ पंक्ति—४चेन छोड़ो,२३ ते, १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., १ लैस्यट, ६ ते., ४ सादे ३ सरी पड़ी चेन से, लौटो।

१४ पंक्ति—लौटती हुई पंक्ति, ३ चेन लौटो।

१५ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ६ ते., ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से, लौटो।

१६ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

१७ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ५ लैस्यट, ६ ते., ४ सादे ३सरी चे. से, लौटो।

१८ पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चेन लौटो।

१९ पंक्ति—४ चे छोड़ो, २४ ते.,१ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाना ७ ते., १ लैस्यट २४ ते., ४ सादे ३ सरी पड़ी चेन से, लौटो।

२० पंक्ति—लौटती पंक्ति ३ चे. लौटो।

२१ पंक्ति—६ ते., लैस्यट, ७ते., २ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट., ४ सादे ३सरी पड़ें तेहरे से, लौटो।

२२ पंक्ति—लौटती पंक्ति ३ चेन, लौटों।

२३ पंक्ति—६ ते., लैस्यट, ७ ते., ५लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट, ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से, लौटो।

२४ पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चेन, लौटो।

२५ पंक्ति—४ चे. छोड़ो; ३३ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., १ लैस्यट, २५ते., २ लैस्यट., ६ ते., ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से, लौटी।

२६ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

२७ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्पट, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते, ६ महीन खाने, ७ ते., २ लैस्यट, ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से। लौटो।

२८ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

२९ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., १२ महीन ख़ाने ७ ते., १लैस्यट, ४ सादे ३सरी चेन से, लौटो।

३० पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चेन, लौटो।

३१ पंक्ति—४ चे छोड़ो, २४ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते., १ लैस्यट, २५ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., ६ महीनख़ाने, ६ ते, ४ सादे ३सरे पड़े तेहरे से लौटो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३२ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

३३ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट, ७ ते., १२ महीन ख़ाने, ६ ते., ४ सादे ३सरी चेन से लौटो।

३४ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

३५ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट., ७ ते., ८ लैस्यट., ७ ते., ६ लैस्यट, ७ ते., ६ महीन ख़ाने, ६ ते., ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से।

३६ पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चेन, लौटो।

३७ पंक्ति—४ चे. छोड़ो, २४ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ाने, ७ ते, २ लैस्यट, २५ ते., २ लैस्यट, ७ ते, २ लैस्यट, २४ ते., ४ सादे ३सरी पड़ी चेन से लौटो।

३८ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चे., लौटो।

३९ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., ४ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्यट, ४ सादे तीसरे पड़ें तेहरे से लौटो।

४० पंक्ति—लौटती पंक्ति ३ चेन लौटो।

४१ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., १२ महीन ख़ाने, ७ ते., ३ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ६ ते. पहले पड़े तेहरे से, लौटो।

४२ पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चे., लौटो।

४३ पंक्ति—४ चे. छोड़ो, २४ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ा., ७ ते., १ लैस्यट २५ ते., ६ महीन ख़ाने, ७ ते., ६ महीन ख़ाने २५ ते., १ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ा., ४ सादे ३सरे पड़े तेहरे से। लौटो।

४४ पंक्ति—लौटती पंक्ति ३ चेन लौटो।

४५ पंक्ति—६ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., ३ लैस्पट, ७ ते., १२ महीन ख़ाने, ७ ते., ३ लैस्यट, ७ ते., २ ख़ा., ६ ते., ४ सादे पड़े तेहरे से लौटो।

४६ पंक्ति—लौटती पंक्ति, ३ चेन लौटो।

४७ पंक्ति—६ ते., २ लैस्यट ७ ते., ५ लैस्यट, ७ ते., ६ महीन ख़ाने ७ ते., २ लैस्यट, ७ ते., २ ख़. ७ ते., १ ख़ा, २ ते. छोड़ो १ ल. ते., ३ चे., लौटो।

४८ पंक्ति—लौटती पंक्ति, २१ चेन लौटो।

इसके बाद आगे बताई हुई पहली पंक्ति से बनाओ कंगूरे के लिये:—

१ पंक्ति—१ दो. क्रो., छल्ले के निचले छठे तेरह में, ७ चेन, ५ छोड़ो, १ दो. क्रो., ७ चेन, १ दोहरा क्रोशिया नोक में, ७ चेन, १ दो. क्रो, तेहरे की दो पंक्तियों के अन्त में, ७ चेन, १ दो क्रो. अगली दो पंक्तियों के अन्त में ५ चेन और दूसरे छल्ले के छठे तेहरे पर पहुंच जाओ और वैसे ही बनाते जाओ।

२ पंक्ति—पहिले छल्ले में ३ दोहरे क्रोशिये बीनो, ४ चेन, ३ दो, ४ चे ३ दो, अगले छल्ले में, ३ दो, ४ चेन, ६ दो।

तीसरे छल्ले में ४ दोहरे बनाओ, तब ७ चेन, क्रोशिये से फ़न्दा निकाल कर उसको पिछले छल्ले के ४ थे तेहरे में डाल कर चेन का घर खींच लो। इस छल्ले में जो कि घुमाव की नोक है ३ दोहरे बनाओ, फिर, ४ चेन, ३ दोहरे क्रोशिये. ३ बार।

अगले अधूरे छल्ले में २ दोहरे क्रोशिये बीनों, ४ चेन, ३ दोहरे, और घुमाव के अन्तिम छल्ले में ३ दोहरे, फिर ४ चेन, ३ दोहरे दो बार। ५ चेन के ऊपर २ दोहरे बनाओ, ४ चेन २ दोहरे, बार २ बीनो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वादिष्ट भोजन

आलू के पापड़।

आवश्यक वस्तुएं—कुछ आलू, नोन, जीरा, धनिया, मिर्च, ज़रा सा घी, ढ़ाक के पत्ते।

विधिः—पहिले आलुओं को खूब उबाल लो फिर छिलके छील कर उन्हें खूब महीन आटे की तरह पीसो पीस कर थोड़ा २ पानी का छिट्टा मार कर पीठी की तरह हाथ से किसी थाल में खूब फेंटो जिससे फैलने वाला पोला २ हो जाय। जब खूब फिट जाय जैसे बड़ियों की पीठी होती है तब महीन नोन ज़ीरा मिर्च धनियां दरड़ कर अन्दाज से थोड़ा २ डाल दो जो ज्यादा खाते हों ज्यादा डाल दें फिर चाख कर निमक देख ले। ठीक हो तो ढाक के पत्तों को धो कर पोंछ कर ज़रा २ सा घी चुपड़ कर उस पर तनिक २ आलू की पीठी हाथ से बराबर २ फैला दो फिर पत्तों को धूप में रख दो जब सूख जाय तब कुछ आप से आप ही उखड़ से जांयगे उन्हें निकाल २ कर पोले २ रखते जाओ और जब खाना हो तब घी में तल लो। पर झट २ तल लो क्योंकि यह बहुत आंच नहीं सहारते और धूप वाले दिन ही बनते हैं नहीं तो अच्छे नहीं होते।

गृह-प्रबन्ध।

लैम्प और लालटैन।

आधुनिक सभ्यता के साथ साथ पुराने ढङ्ग के मट्टी अथवा पीतल के दीपक का रिवाज तो प्रायः प्रत्येक घर से जाता रहा है। अब तो गृह में उजाला करने के लिये कांच की चिमनी और हांडी वाले मट्टी के तेल के लैम्प और लालटैन ही काम में आते हैं। परन्तु इन का स्वच्छ और सुरक्षित रखना भी एक काम है। लैम्प के प्रकाश का लाभ तभी है यदि उस का पूरा पूरा ध्यान रखाजाय। एक बदबूदार और धूआं देने वाले लैम्प से उसका न होना ही अच्छा है। आज हम अपनी बहिनों के प्रति लैम्प और लालटैनों को सुयोग्य अवस्था में रखने के कुछ नियम बतलाते हैं।

(१) लैम्पों की सफाई और इनका जलाना, इन में तेल भरना इत्यादि सब काम एक ही व्यक्ति के हाथ में रहना चाहिये। यदि कोई समझदार नौकर घर में न हो तो उत्तम तो यही है कि गृहिणी स्वयं इस काम को अपने ही पास रखे।

(२) इन की सफाई और तेल इत्यादि भरने का काम दिन रहते ही कर लेना चाहिये। अन्धेरे में अथवा लैम्प इत्यादि के प्रकाश में तेल को उलटने पुलटने में एक प्रकार का भय ही रहता है। यह काम दरी, फरश, मेज़ इत्यादि से एक ओर परे हटकर ही करना चाहिये, क्योंकि लैम्प के तेल के धब्बे बड़ी कठिनता से दूर होते हैं।

(३) जो लैम्प लालटैन प्रति दिन काम में आती हों उनको प्रत्येक दिन सवेरे तीन चौथाई तेल से भर लेना चाहिये, कम तेल होने से कई बार बड़ी हानि उठानी पड़ती है। तेल को सीधा बोतल से कभी न डालकर सदा पीक द्वारा ही लैम्प में भरना चाहिये, क्योंकि अन्यथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेल के छींटे बाहर गिरने का अथवा लैम्प के मुहामूंह भर जाने से बाहर बह जाने का बड़ा डर रहता है। यह भी बड़ा आवश्यक है कि तेल अच्छे दरजे का हो, घटिया तेल जलाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता, क्योंकि न केवल यह धीमा प्रकाश ही देता है वरन जलता भी जल्दी है और इस पर भी इस को आग लग जाने का बड़ा भय होता है। इस से लैम्प भी खराब हो जाते हैं यह कहना अनावश्यक है। अच्छे दरजे के तेल की पहचान यह है कि वह जल जैसा शुद्ध और सुफ़ेद होता है। बदबूदार नहीं होता और इस का प्रकाश भी सुफ़ेद होता है।

(४) इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि बत्ती लैम्प में ठीक ठीक आती हो- बहुत ढीली या बहुत कड़ी न हो—और इतनी लम्बी हो कि लैम्प के नीचे तक पहुंचती हो। एक बत्ती को प्रायः तीन मास चलना चाहिये इस के पीछे उस का बदल देना ही अच्छा है। नयी बत्ती चढ़ाने से पहिले उस के ऊपर के सिरे को तेल में भिगो लेना चाहिये। नियम यह होना चाहिये कि बत्ती को कैंची से न काटा जाय, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उस के जले हुए भाग को किसी गत्ते अथवा कड़ी चीज़ से सब ओर से बराबर बराबर झाड़ देना चाहिये और ऊपर के सिरे को नलकी के साथ साथ बराबर कर देना चाहिये। यदि अभी भी यह बराबर न हो तो बड़ी सावधानी से कैंची से काट देना चाहिये। बत्ती के कोई काले काले टुकड़े बरनर (लैम्प का तह भाग जिस में बत्ती जलती है) से हटा देने चाहिये और लैम्प को बाहर से तेल से सर्वथा पोंछ देना चाहिये।

(५) समय समय पर "बरनर" और तेल भरने वाला भाग भी खूब साफ कर लेना चाहिये। लैम्प में से सब तेल निकाल लेना चाहिये और साबन के गरम पानी से जिस में थोड़ा सा अमोनिया (Amonia) पड़ा हो धो देना चाहिये। धोने के पीछे पानी को झटक कर सर्वथा निकाल दो और फिर उलटा करके रख दो। जब 'बरनर' मैला और गन्दा हो जाय तो इसके प्रत्येक टुकड़े को अलग २ करके एक पतीले में रख दो और ऊपर से इतना पानी भर दो कि वह भली प्रकार से ढंप जायें, फिर थोड़ा सा सोडा डाल कर आंच पर उबलना रख दो। आध घन्टे तक इसी प्रकार उबलने दो। इस के पश्चात गरम पानी से धो डालो और यदि आवश्यक्ता हो तो एक बुरश से बत्ती के जले हुए टुकड़े छुड़ा दो। जब सर्वथा साफ हो जाय तो किसी एकान्त गरम स्थान में सूखने के लिये रख दो। लैम्प में तब तक दुबारा तेल नहीं भरना चाहिये जब तक कि वह और बरनर बिलकुल सूख न जायें।

(६) चिमनी और हांडी को खूब साफ रखना चाहिये। चिमनी को कभी धोना नहीं चाहिये वरन किसी मुलायम कपड़े से प्रति दिन साफ कर देना चाहिये। यदि यह बहुत हो जाय तो धब्बों को स्पिरट (Methylated Spirit) से उड़ा देना चाहिये। हांडी को प्रति दिन कपड़े से पोंछ लेना चाहिये और कभी २ साबन के गरम पानी से धोकर खूब पोंछ डालो।

(७) यदि लैम्प बुरी तरह से जलता हो अथवा जलने में बदबू दुर्गन्ध देता हो तो निम्न लिखित कारण से ऐसा हो सक्ता है :—

(क) इस में तेल बहुत भर दिया है जो कि जलने पर गरम होकर फैल पड़ा और इधर उधर बह पड़ा हो।

(ख) तेल भरने के पीछे बरनर को भली प्रकार नहीं पूंछा गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(ग) बत्ती ठीक ठीक लैम्प में नहीं आती अथवा यह भली प्रकार काटी नहीं गयी।

(घ) घटिया तेल बर्ता गया है।

(ङ) चिमनी और हांडी साफ नहीं।

(८) जब लैम्प जलाना हो तो बत्ती को बहुत कम ऊपर उठाना चाहिये और नीची ही जलने देना चाहिये जब तक कि चिमनी सब ओर से खूब गरम न हो जाय; फिर इस को आवश्यक्ता के अनुसार ऊंचा कर लेना चाहिये।

(९) जब लैम्प न जलता हो तो बत्ती को सदा नीची रखना चाहिये क्योंकि अन्यथा इस के द्वारा तेल बाहर चूता रहता है।

(१०) लैम्प बुझाने के लिये बत्ती को इतना नीचा कर दो कि नलकी के बराबर पहुंच जाय और फिर ऊपर से फूंक मार कर बुझा दो।

स्त्रियों के सुधार बिना स्वराज्य नहीं।

विद्वानों की सम्मतियां।

(१) महात्मा गांधीजी कई बार कह चुके हैं कि जब तक हमारी देश की देवियों का सुधार नहीं होगा तब तक स्वराज्य की नीव खोखले पेड़ की जड़ के समान समझनी चाहिये।

(२) ला० लाजपतराय का कथन है कि जब तक हमारी माताएं भगिनियें जाग कर हमारा साथ नहीं देवेंगी तब तक स्वराज्य मिलना कठिन ही नहीं असम्भ है।

(३) महम्मदअली शौकतअली ने जेल जाते समय सब स्त्री समाज को सम्बोधित करके कहा था कि आज सारी देश देवियां केवल मेरी माता का ही अनुकरण करने लग जावें तो बिना पुरुषों की सहायता के ही स्वराज्य मिलने में कोई सन्देह नहीं है।

(४) गत जनवरी मास में ही विहार प्रांत के पटना नगर में महम्मदअली शौकतअली की वृद्धा माता ने वहां की एक स्त्री समाज में व्याख्यान देते समय कहा था कि बड़े शोक व लज्जा की बात है कि हमारे पिता पुत्र और पति देश और धर्म की रक्षा के लिये जेल जावें और हम घर की घूंस बनी बैठी रहें आशा है कि मेरे इस कथन को सुन कर समस्त बहिने घर की घूंस वाले कलंक को धो कर चर्खा कात के स्वराज्य की लड़ाई में अवश्य विजय प्राप्त करेंगी।

(५) पं० मदनमोहन मालवीयजी ने गत वर्ष महात्माजी को पत्र लिखा था कि सब से प्रथम स्त्रियों में जागृति पैदा करने का प्रयत्न करने के पीछे सत्याग्रह आरंभ करना चाहिये अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है।

(६) स्वर्गीय लो० बालगंगाधर तिलक ने पूने की देश सुधार नामक सभा में शोक प्रकाशित किया था कि क्या करें हमारी स्त्री समाज अभी तक सो रही है वरना हम आज ही स्वराज्य लेलें।

(७) बी० एस० पथिकजी ने तो अपने नवीन राजस्थान में दो कालम इसी लिये खाली छोड़े हैं कि देखें इस स्वराज्य कसौटी पर हमारी बहिने पास होती हैं कि नहीं।

(८) दिल्ली के परम प्रसिद्ध हकीम अजमल खां जी ने उर्दू के फतेह नामक पत्र में लिखा था कि भारत की स्त्रियों को सोचना चाहिये कि अब पर्दे में रहने का समय नहीं है अब स्वराज्य की लड़ाई में चर्खा आदि हथियार ले कर तैयार रहना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(९) जर्मन सम्राट कैसर ने युद्ध में अपनी हार होने पर अपने किसी मित्र को बड़े खेद से लिखा था कि हमारी देश देवियों से कौनसी ऐसी त्रुटि हुई कि जिस से आज मुझ को और मेरे वीरों को नीचा देखना पड़ा है।

(१०) वर्तमान श्रीमान् महाराज राना झाला बाड़ नरेश ने स्त्री शिक्षा पर व्याख्यान देते समय फर्माया था कि भारत के इतना गारत होने का सब से बड़ा कारण हमारी देश देवियों की अयोग्यता है। जिस दिन यहां की स्त्रियां सीता सावित्री गार्गी आदि देवियों का उदाहरण बन जावेंगी अपने आप सारे देश में रामराज्य हो जावेगा।

(११) नेपोलियन बोनापार्ट ने अपनी दिन चर्य्या में लिखा है कि जिस देश की माताएं योग्य और सुशिक्षिता होंगी उस देश को बड़े से बड़ा सम्राट भी विजय नहीं कर सकता है।

(१२) पी० एस० डी० नामक पादरीसाहब कटाक्ष के साथ कहते हैं कि जिस भारत की स्त्रियां पैर होते हुए भी नहीं चल सकतीं आंख होते हुए भी नहीं देख सकतीं वे क्या स्वराज्य ले सकतीं हैं।

(१३) श्रीमती एनीबैसेंट ने एक बार बंबई के भाषण में कहा था कि भारत की स्त्रियां अभी स्वराज्य के अर्थ को नहीं समझती हैं जिस दिन ये समझ जावेंगी उसी दिन स्वराज्य ले लेंगी।

(१४) इंग्लैंड के एक दिल चले साहब कहते हैं कि भारत की स्त्रियों से पूछा जाय कि तुम स्वराज्य लोगी अथवा जेवर इसी पर फैसला कर दिया जाय।

(१५) अभी एक अंग्रेजी के पत्र सम्पादक महाशय ने सम्पादकीय लेख में लिखा था कि सर्कार ने बड़ी भूल की जो भारत में स्त्री शिक्षा का प्रचार किया यह उसी का कारण है जो स्वराज्य आन्दोलन ने इतना जोर पकड़ लिया है।

अहिंसा संग्राम।

लेखिका श्रीमती—चन्द्रवती

भारत विजय ध्वजा फहरा दे।
धार अहिन्सा धर्म धैर्य से, शान्ति युद्ध ठहरादे ॥१॥
अस्त्र शस्त्र सज्जित शूरों में, भारी भय उपजादे।
मार मार मीठी मारों से, हाहा उन्हें खिलादे ॥२॥
हाथ उठे तेरा न किसी पर, क्षमा खड्ग खड़कादे।
हाँ हाँ इसी शस्त्र से वैरी, दल के होश उड़ादे ॥३॥
काट दास्य बन्धन, स्वतन्त्रता का सुख हमें दिलादे।
सत्याग्रहव्रत ठान, दमन दानव का मान घटादे ॥४॥
अवसर पर मत चूक सभी को अपनी कर दिखलादे।
नैतिक कर्म योग धारण कर दोष दरिद्र दुरादे ॥५॥
तेरा है यह कार्य धरापर धर्म राज्य फैलादे।
कुटिल कुनीति निश्चरी सेतू सब का पिण्ड छुड़ादे ॥६॥
'चन्द्रवती' को निज बलिवेदी पर चढ़ना सिखलादे।
आर्य्य बन्धुओं की भगिनी का भी उत्साह बढ़ादें ॥७॥

नोट—इस कविता पर श्रीबनमाधव सभा द्वारा ४१) का पुरस्कार दिया गया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

होली।

ले०—श्री०लक्ष्मी देवी जौहरी।

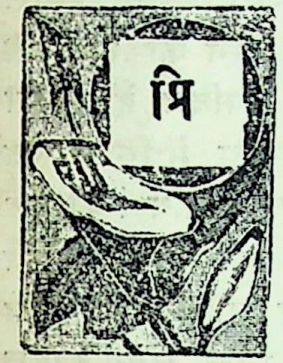

प्रिये देवियो! होली का त्योहार हमारे भारत वर्ष में फाल्गुन शुक्लापूर्णिमा के दिन बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। महीनों पहिले से इसकी धूम मच जाती है। छोटे २ बच्चे बड़े कौतूहल से दिवाली बीतते ही पूंछने लगते हैं कि होली कब आवेगी? गृह देवियां गृहों को साफ़ कराती तथा अनेक प्रकार की वस्तुओं का संचय करतीं और एक मास पूर्व से ही अनेक प्रकार के मिष्ठानों को बनाना आरम्भ कर देतीं हैं। निर्धन से निर्धन भारतवासी तथा भारतदेवी चाहे एक समय के अल्पाहार से ही निर्वाह क्यों न करें परन्तु होली के लिये अवश्य ही कुछ न कुछ बचाकर रक्खेंगे। वह क्यों? अपने छोटे २ बच्चों के विनोदार्थ पिचकारी रंग तथा नये वर्ष के शुभागमन के साथ नमे कपड़े तथा अन्य सामग्री के लिये—भग्नियों यहां तक तो उत्सव की शोभा कह सकते हैं किन्तु एक दुखदायक बात भी है और वह मदिरा तथा अन्य मादक पदार्थों का प्रयोग है जो कि विशेष कर अभाग्य से इस उत्सव की शोभा समझीं जाती है देवियों! यह सब होता है किन्तु क्या हमारे किसी देश बहिन तथा भाई ने यह भी जानने की इच्छा की कि यह उत्सव क्यो मनाया जाता है, अथवा इसका अभिप्राय क्या है?

यह नव वर्ष का उत्सव तो है ही किन्तु हमारे पूर्वजो तथा पौराणिक ग्रन्थों में इसका कारण यह भी बतलाते हैं (१) प्राचीन इतिहासों से हमे यह भी विदित होता है कि यह उत्सव अधम श्रेणियों के मनुष्यों तथा शूद्रों का त्यौहार था, क्योंकि आज के दिन प्रह्लाद जी को जो दैत्यकुल में परम् ईश्वर भक्त थे उनके पिता हिरण्य कश्यप नामक दैत्य ने अपनी भग्नि होलिका की गोद में बिठा कर अग्नि में जलवा दिया था।

तो उस समय दैत्य लोग यह हर्ष मनाते थे कि आज ईश्वर भक्त प्रह्लाद भस्म हो जावेगा और होलिका जीवित निकल आवेगी, इस कारण मद्य पी २ कर उच्च स्वर से "जय होलिका माई की" जय होलिका माई की ऐसा उच्चारण करते और गाते नाचते तथा आनन्द मनाते थे, और मदमत्त होने के कारण उनके मुख से अपशब्द भी निकले थे, सो यह त्यौहार केवल दैत्यकुल के अर्थात् शूद्रों के मनाने का है, सभ्य लोगों और उच्चवर्णों को तो प्रह्लादभक्त की जय जयकार मनाना ही उचित हैं क्योंकि आज के दिन हमारे परम् ईश्वर भक्त प्रह्लाद जी परम् पिता परमात्मा की असीम कृपा से मृत्यु के मुख से निकल आये थे और हमे ईश्वर भक्ति का सच्चा पाठ सिखा गये आज कल लोग यह नहीं सोचते कि होलिका कौन थी और उसकी जय हमे मनानो चाहिये या नहीं—

दूसरा कारण इस त्यौहार को मनाने का हमारे पूर्वज यह भी बतलाते हैं कि परोपकारी कृषक, जिन पर हमारी जीविका का समस्त भार निर्भर है, आज कल खेत बो जोत कर निश्चिन्त हो जाते हैं और उन्हें केवल क्षेत्र रक्षा का कार्य्य ही रह जाता है, कठिन परिश्रम के पश्चात् प्रत्येक व्यक्तिको किंचित विश्राम की आवश्यकता होती है और नये नाज भी कुछ पक कर कटने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योग्य हो जाते हैं, वे क्षेत्रपाल अपने खेतों को हरा भरा देख तथा अन्न से परिपूर्ण वसुन्धरा का अवलोकन कर अपने कठिन परिश्रम को सुफल जान प्रसन्न होते और प्रमोदभरे आलापों से वसुन्धरा की पूजा करते और प्रत्येक गृह में बड़े २ यज्ञ होते जिस में सब एक दूसरे को आमंत्रित कर अनेक प्रकार के मिष्टान्नों से सम्मान करते, इसे नवीनान्त विच्छेदन संस्कार कहते थे।

किन्तु देवियो अब तो नाम मात्र को इसकी लीक पीटनी रह गई है वह भी अनेक प्रकार की कुरीतियों के साथ, यज्ञ हवन का तो नाम ही कहीं नहीं रहा, उसके स्थान पर अब हमारी बहिने गोबर की बरगुलियां (छोटे २ कंडे जो होली में जलाये जाते हैं) होलिका देवी के अर्पण करतीं हैं, कूड़े करकट जलातीं और अनेक प्रकार की दुर्गन्धित वस्तु का जिनको सम्भव है दैत्यों ने प्रह्लाद जी को जलाते समय प्रयोग किया हो। व्यवहार करतीं हैं जिससे वायु अशुद्ध होती और अनेक प्रकार के रोगों की वृद्धि होती है, क्यों न हो जहां भारतीय सज्जन वेद मत्रों का उच्चारण करते और प्रति नगर तथा मुहल्ले में वायु शुद्धि के लिये बड़े यज्ञ होते. शोक के साथ कहना पड़ता है कि वहां ऐसी वस्तुओं का प्रयोग होता है मानो लोग महामारी का आह्वान कर रहे हैं, और प्रान्त का हाल तो ठीक नहीं मालूम किन्तु हमारे यू. पी. प्रान्त में होली से आग लाकर पति पत्नी तथा अन्य गृह के व्यक्ति होलिका देवी को प्रदीप्त करते समय मद्यपान तथा अन्य प्रकार के मादक द्रव्यों का तो तो प्रयोग करने में संकोच न करेंगे. किन्तु यदि होली का यज्ञ गृह के समस्त व्यक्ति कहीं करते भी हैं तो सब उन्हें निर्लज्जता की मूर्ति का उपहार देने से न चूकेंगे, विशेष कर हमारी बहिने, कितने शोक का विषय है कि यज्ञ जैसे पवित्र कार्य्य को जिसके लिये वेदों में साफ़ लिखा है कि "इदं मंत्रम् पत्नी पठेत्" हमारी बहिनें कहतीं हैं कि यज्ञ करने का स्त्रियों को अधिकार ही नहीं स्त्रियां अपवित्र हैं, यह तो सोचकर देखो क्या पूर्व समय में स्त्रियां यज्ञ नहीं करतीं थी, क्या आप रामायण को भूल गईं ? नहीं २ मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी बहिनों को रामायण जैसे प्रतिष्ठित ग्रंथ का अवश्य ही स्मरण होगा, जिस समय दशरथ पुत्र महाराजा रामचन्द्र जी बन जाने को अपनी माता कौशल्य जी से आज्ञा लेने गये थे, वह यज्ञ कर रही थी, क्या वह स्त्री नहीं थी वह भी हमारी स्त्रियों में से थी किन्तु हमारी भांति ज्ञान शून्य और अबला न थीं, हमारी ही कायरता तथा ज्ञान शून्यता ने आज भारतवर्ष की यह दुर्दशा करदी, हमारी ही मुर्खता और वैमनस्यता से इस पवित्र दिवस को पवित्र भारतभूमि घृत और दूध के स्थान पर रक्त से नहा रही है।

वेद मंत्रों के स्थान पर आज हमें कृष्णचन्द्र जी जैसे योगी को अनेक प्रकार से अत्याचारी और अनाचारी सिद्ध करने में लज्जा क्यों नहीं आती, हा ! शोक ! योगियों को दोष लगाने तथा गालियां देकर अपने हृदयों को अपवित्र करने और पाप के भागी बनने को ही अपना धर्म्म हमने समझ रक्खा है।

देवियों इस उत्सव में एक और भी कुप्रथा है जो होली के दूसरे दिन अर्थात दुरहटी को होती है, वह रंग खेलना है। आज के दिन स्त्री पुरुष सभी आपस में एक दूसरे के ऊपर रंग छोड़ते और कहीं २ तो रंग के स्थान पर कीचड़ मिट्टी इत्यादि का प्रयोग भी हमारी सभ्य तथा मूर्खा बहिनों ने आरम्भ कर दिया है, जिसे देख अति शोक होता है। यह प्रथा असल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्येष्ठ मास के विषम ताप में, शिशिरकाल में।
राका की नीरव निर्मल हँसती रजनी में।
परिवर्तन युत विश्व में, किसका सुख साम्राज्य है?
किसकी मृदु मुसुकान पर, टिका प्रेम का राज्य है?
तारागण नक्षत्र आदि अविरल चक्कर में?
किसकी करते परिक्रमा हैं प्रति छन छन में?
सूर्य देवता दीपक हैं किसके मन्दिर में?
चन्द्रदेव मणि हैं किसके अनुपम भूषन में?
विश्वरूप वह कौन है, व्यापक हैं जो सब कहीं?
मेरे छोटे हृदय में, क्या वह आ सकता नहीं?

———

गीतामृत।

ले०—श्रीयुत प्रो० गोपाल दामोदर तामसकर एम. ए. एल. टी।

परिच्छेद ८वां अद्भुत आत्मविचार।

मा ध्यान्ह सन्ध्या-वन्दन के बाद फलाहार समाप्त हुआ। हिमालय के उस भाग में सूर्य की किरणें बहुत कष्टप्रद नहीं होतीं, तथापि यह सोच कर कि प्रत्यक्ष धूप में बैठना ठीक नहीं, मैं एक प्राकृतिक लता मण्डप में जा बैठा उस अकृत्रिम मण्डप में मुझे अकृत्रिम ही विचार सूझने लगे। गीता इत्यादि ग्रन्थों के अभ्यास से, किंवा मन के भिन्न भिन्न विषयों के ध्यान से और दृष्ट और श्रुत अनुभव से बने हुए कृत्रिम विचार उस समय मुझे त्याग गये थे। जिस वेलीका मैंने आश्रय लिया था, वह एक झाड़ को पूर्णतया लिपटी थी। इसे देख कर मुझे अपने बचपन का स्मरण हुआ। हाय! मेरे कल्पित बाबा से बचाने के लिये मेरी दीदी मुझे इसी प्रकार अपने अञ्चल के नीचे ढांक लिया करती थी! उस समय का दृश्य मैंने अपनी आंखों के सामने खड़ा किया और उस से इस वृक्षवेली सम्मेलन दृश्य की तुलना करने लगा। वह तुलना मुझे रुची हो या न रुची हो। परन्तु इतनी बात सच है कि उस से मुझे घर का ख्याल आया। "मैं कहीं भाग गया हूं" यह सुन कर मेरी दीदी को कैसा लगा होगा? मुझे गायन का कुछ शौक है और मेरा रूप आकार भी इतना खराब नहीं है इस से उस ने कल्पना की होगी कि मैं किसी नाटक कम्पनी में जा मिला चार स्त्रियों के जमने पर मेरी दीदी मेरी बुद्धिमानी के बारे में बड़ी बड़ी बातें किया करती थी, पर अब बहुत शरमाती होगी? हमारे समाज का ऐसा ख्याल हो गया है कि नाटक में जाना बुरा है! आज कल बड़े बड़े विद्वान् और श्रीमान् लोग नाट्य कला को ऊंचा दर्जा देने का प्रयत्न कर रहे हैं। जो स्त्री पुरुष 'नाटक बुरा होता है, उस में पुरुष स्त्रियों का वेष लेते हैं, वह देखना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाप है इत्यादि इत्यादि कहते हैं वे भी नाटक देखने को जाया करते हैं। परन्तु 'नाटक बुरी बात है' यह समझ भी कभी दूर नहीं हुई है अथवा वह दूर होगई ऐसा कोई दिखलाता भी नहीं है? क्योंकि नाटक कम्पनियां बढ़ती ही जाती है और वे सब अच्छी दशा में हैं। फिर इन्हें पैसे देने वाले कौन? दुपहर को वक्तृत्व के समय मद्यपान का बड़ा सख्त निषेध करने वाले रायबहादुर शाम को जनरल वाइन मर्चेंट्स की दूकान के कोने में ब्रांडी के ग्लास मुंह में लुड़काते हुए दृष्टि पड़ेंगे! उसी प्रकार नाटक को कोसने के यह दावेदार नाटक के दिन थियेटर के दरवाजे पर फेरी लगाते हुए नजर आवेंगे! इस के साथ ही मुझे इस बात का खयाल आया कि नाटककार प्रस्तावना में लिखा करते हैं कि मैंने नाटक में इस बड़े नीतितत्व का महत्व लोगों के मन पर प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न किया है। नाटक कर्त्ता ने बड़े प्रयत्न से कोई नीति तत्व अपने लेख में कैसा भी गून्थ दिया हो परन्तु क्या नाटक कम्पनियां, कि जिस से उस का योग्य परिणाम होवे, ऐसा प्रयोग करती हैं? प्रयोग भी उत्तम हुआ तो क्या? नाटक का धीरोदात्त नायक (जिस का लोगों के सामने उदाहरण है) दारूबाज है इतना ज्ञात होते ही उस समय का उस का साविर्भाव केवल वक्तृत्व में ही मद्य पान निषेध की बड़ बड़ के समान हास्यास्पद हो जाता है। नाटक कैसा भी हो परन्तु यह मुझे नहीं जंचता था कि नाटक के प्रयोग से नीति का फैलाव होता है। देखने और सुनने से मेरा निश्चय होगया था कि नाटक कम्पनियां केवल स्वेच्छाचरण के स्थान है। कम्पनी में घुस कर निर्व्यसनी रहने वाला पुरुष विरला ही मिलेगा। इन नाटक कम्पनियों ने अगली पीढ़ी के बलवान् रोपाओं की जड़ में कीड़ा लगा दिया। इन्हीं कम्पनियों ने मधुर कण्ठ के सुन्दर बालकों को माता पिता का अपने ऊपर का अधिकार तोड़ना और अपने कर्तव्य को राख कर डालना सिखलाया। नटना, नखरे करना, और स्वत्व को भूल जाना, इस नाटकी शोभा की रुचि इन्हीं ने ही हमारे बालकों के अपरिपक्व मन में उत्पन्न की! आगे कभी जिन्हों ने शूरता के काम करने थे उन्हें इन्होंने स्त्रियों के रङ्ग ढङ्ग सिखलाये! नाटक कम्पनी यानी सब व्यसनों का सागर! तुलसीदास सूरदास इत्यादि साधु सन्तों की नकल करने का इतना अभ्यास करने पर भी और साविर्भाव वक्तृत्व देने पर भी पात्रों के मन पर जो नीतितत्व का कुछ भी परिणाम न हुआ, तो केवल दिल बहलाने की इच्छा से नाटक देखने वालों के विलासी मन पर उसका क्या प्रभाव पड़ सक्ता है? वाह! वृक्ष वेली संमेलन के देखने से घर की ओर झुका हुआ मेरा मन विचार प्रवाह में कहां बह गया? इस समय मुझे नाटक कंपनियों के भले बुरे से क्या करना है? इस समय तो निज का ही खियाल रखना अच्छा। मुझ जैसे चंचल मनके मनुष्य को सब जगह सुधारने की तकलीफ क्यों करनी चाहिये? ऐसे विचार आते आते मन में ऐसा विचार भी आया कि माता पिता को दुःख में छोड़ आया सो ठीक नहीं हुआ। मैं कर्त्तव्यच्यूत हो गया यह ख्याल मन को चुभने लगा और "केसरी" में दिया हुआ 'हमारे लड़के को ढूंढ देने वाले को पांच रुपये इनाम' का मेरे पिता के हस्ताक्षर का विज्ञापन मुझे मेरी आंखों के सामने स्पष्ट दीखने लगा। 'तेरी माता प्राण त्यागने के लिये तेरी राह देख रही है! वह बहुत अचेत दशा में पड़ी है' ये बड़े अक्षरों में लिखे हुए काले काले वाक्य मेरे नयनों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आगे नाचने लगे! मेरे चर्मचक्षु अश्रुप्रवाह से पूर्ण हो जाने से देखने का काम न कर सक्ते तौ भी जिधर मैं मुह फेरता उधर हो वह अक्षर मुझे दीखते थे। मुझे अभी तक नहीं सूझ कि मैं उन्हें किसके द्वारा और कहां देख रहा था। मेरा दुःख पूर्ण अन्तःकरण नेत्र द्वारा अश्रुप्रवाह बहाने पर कुछ हलका हुआ विषयांन्तर करने की इच्छा से मैं स्वामी जी की दी शिक्षा का पर्यालोचन करने लगा; परन्तु विचार से थोड़ा भी मैं दूर हुआ कि फिर से मन मेरी कर्त्तव्यच्युति की ओर दौड़ जाता था। आखिर इस प्रकार थक जाने पर गीता खोल कर पढ़ने लगा। कुछ देर तक तो गीता के केवल अक्षर ही पढ़ता था। फिर मन में के दृश्य ढलने लगे। माता की मृत्यु शैय्या अब दीखना बंद होगया। दौड़ कर उसके चरण में गिरने की उत्कंठा भी दूर हो चली। श्लोक पढ़ते पढ़ते, पोथी और उसके पत्ते की जगह मुझे दीवालें दीखने लगीं और ऐसा मालूम हुआ कि गीताश्रम के तीसरे कमरे में हूं। कर्म करना चाहिये ऐसा बतलाने के लिये स्वामी जी ने उपयोग में लाये हुए 'नित्यं कुरु कर्मत्वं' इत्यादि लाल अक्षरों से लिखे हुए श्लोक मैंने पढ़े और फिर—

यस्त्वात्मरति रेवस्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येवच संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते॥३।१७
नैव तस्यकृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः॥३।१८
तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तोह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥३।१९

ये सुनहरी अक्षरों से लिखे हुए श्लोक देखे। सुनहरी अक्षरों से लिखे हुए श्लोक थोड़े हैं और यह तीन ही हों तो अवश्य ही इनका इतना अधिक महत्व होगा, इस विचार से उनका अर्थ समझने का प्रयत्न करने लगा।

"जो केवल आत्मा पर प्रीति करता है, जिसे आत्मा के कारण ही तृप्ति और संतोष का लाभ होता है, उसे कर्म करने के लिये कारण नहीं रह जाता। उसने कर्म किया तो लाभ नहीं और न किया तो नुकसान नहीं। और उसकी कोई भी इच्छा दूसरी (आत्मा के सिवा) वस्तु पर अवलंबित नहीं रहती। इस लिये अर्जुन कर्म कर इत्यादि इत्यादि" पहले दो श्लोकों के अर्थ से जो विचार उत्पन्न हुए वे मन में घुस कर गड़ बड़ मचाने लगे। इस कारण तीसरे श्लोक का अर्थ मैंने नहीं समझा।

श्रीभगवान् ने इन दो श्लोकों में यह बतलाया है कि किसके कर्म न करने से कोई हर्ज नहीं। जिसे कुछ कार्य नहीं उसे 'आत्मतृप्तः' 'आत्मन्येव संतुष्टाः' और 'न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थ व्यपाश्रयः' इत्यादि विशेषणों से दर्शित है। जिसे कर्म त्याग करना है उन्हें चाहिये कि अपने को इन विशेषणों के लायक वे बनालें। क्या हम आत्मरति है? क्या हमारी केवल अपने पर ही प्रीति है? क्या अन्य स्त्री पुरुषों के विषय में हम उदासीन हैं? क्या सिवाय 'आत्म' तृप्ति के लिये दूसरे किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती? क्या अपने संतोष के लिये किसी भी वाह्यार्थ की आवश्यकता नहीं होती? क्या अपना कोई कार्य किसी भी वस्तु पर अवलंवित नहीं होता? उत्तर तो सब पर प्रगट है ही। (क्रमशः)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बसंत।

ले० श्री मणिराम गुप्त।

आया है बसंत ऋतुराज।
देखो सज करके सुखसाज।
सुंदरता मानो मधु व्याज।
आई है ले सकल समाज ॥१॥

कर बसंत ने सुखमा दान।
बना दिया महि को सुख खान।
बढ़ा दिया है उसका मान।
जिसको देख स्वर्ग हैरान ॥२॥

तरु शाखों पर बाँधे गोल।
करते हैं खग बड़ा कलोल।
और बोल कर मंजुल बोल।
बिना दाम मन लेते मोल ॥३॥

आमों में निकले हैं बौर।
रस चखने आते हैं भौंर।
मित्रो! देखो करके ग़ौर।
है कुछ आज और ही तौर ॥४॥

फूले हैं अनार कचनार।
पुष्प भार से झुकी है डार।
शोभा है बढ़ गई अपार।
जहां देखिये वहीं बहार ॥५॥

देख वाटिका में फलफूल।
मन जाता है सब दुख भूल।

किसी किसी के मधु अनुकूल।
किसी किसी के है प्रतिकूल ॥६॥

कोकिल समुद मचावे शोर।
देता हृदय मदन झकझोर।
मिलता है सुख उन्हें अथोर।
जिनके ढिग रहता चितचोर ॥७॥

है बसंत का सुखद समीर।
पर विरही तन को है तीर।
उठती है उर में अति पीर।
नहिं धरता मन मधु में धीर ॥८॥

उनको है नहिं सुखद बसंत।
जिनके हैं नहिं घर पर कंत।
बिलख बिलख दुख सहें अनन्त!
विरही गण देखो हा हन्त! ॥ ९ ॥

कमल दलायत सुंदर नैन।
कामिनि के होते बेचैन।
दिन नहिं चैन नहिं नहिं रैन।
सुन कोकिल के मंजुल बैन ॥१०॥

गूँथ सुन्दरी सुंदर हार।
करके आलिंगन अरु प्यार।
देती है प्रीतम उर डार।
जो करता है जान निसार ॥११॥

है बसंत ऋतु अति वेढंग।
बढ जाती है अधिक उमंग।
युवक लिये पिचकारी रंग।
युवती को करते हैं तंग ॥१२॥

हिलमिल करें परस्पर गान।
छेड़ें बड़ी सुरीली तान।
कुछ तो तजते हैं कुलशन।
पर वे, जिनको है नहिं ज्ञान ॥१३॥

है बसंत मिल खेलो शग।
उठो उठो आलस को त्याग।
गाओ परम मनोहर राग।
करो परस्पर मिल अनुराग ॥१४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में यज्ञ के पश्चात् चन्दन और केशर माथों पर लेपन करने की है, आज के दिन हमारे पूर्व ऋषियों ने जो वैद्यक के जानने वाले हैं ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ होने के कारण ढाक के फूलों औटाये हुये जल से स्नान करने तथा तुन (एक प्रकार के पौदे का नाम) के रंग में रंगे हुए कपड़े पहिनने को बतलाये हैं जिससे अनेक प्रकार के रोगों का नाश, तथा फोड़े फुन्सी और मरोरी (जो पसीने के मरने से छोटे २ दाने निकलते हैं) इत्यादि के निकलने का भय नहीं रहता था, कितने शोक का विषय है कि हम चाहें कोई रीति अच्छी हो या बुरी अवश्य ही करेंगो किन्तु उसके बिचारने और तत्व समझने की कोशिश भी नहीं करती।

देवियो! जब हम अपने सभी धर्म्म और कर्तव्यों को भूल गये, तो फिर क्यों आनन्द और प्रसन्नता की आशा करें, नहीं २ अब भी बहुत समय है, परमपिता परमात्मा की असीम दया से अब वह समय आगया है जब कि हम अपने कर्तव्यों को सोचें धर्म्मों को बिचारें, समय ने पल्टा खाया हमारी दशा कुछ न कुछ अब सुधरने लगी है, बहुत कुछ भाग असभ्यता का रात्रि के अंधकार की भांति हटने लगा है, परन्तु फिर भी मादक पदार्थों का सेवन नहीं छुटता है, जो मद्यपान नहीं करते अथवा मद्य को अपवित्र मानते हैं। जैसे हमारे ब्राह्मणदेव, वे भी माजूम की बर्फ़ी तथा भंग का सेवन अवश्य करत हैं, और उसे शिवजी का परशाद बतलाते हैं, कितने शोक का स्थान है कि स्वार्थवश लोग शिवजी जैसे योगी और सात्विक वस्तुओं के सेवन करने वाले पर धर्म से पतित ब्राह्मण यह झूठा अपराध लगाने से नहीं चूकते, जहां ब्राह्मणों की दशा ऐसी बिगड़ रही है वहां और जातियों की दुर्दशा पर रोना ही क्या? क्योंकि ब्राह्मणों को ही शास्त्रों में चारों वर्णों का सिर कहा है। यदि ब्राह्मण मदिरा न भी पीते हो किन्तु अन्य मादक पदार्थों का सेवन तो करते ही हैं, क्योंकि गुण तो सबका वही है।

देवियो। अब भी जागो—यदि हम अपनी दशा को सुधारें, मद्यपान त्यागें तो क्यों होली जैसे उत्सव पर हमारे स्वयम् सेवक भाईयों को पिकेटिङ्ग करने और पहरा देने की आवश्यकता हो, यह हमारे ही अपराध हैं कि हमारे लाखों भाई निरअपराध निर्दयी और अन्यायी गवर्नमेन्ट के अत्याचारों को सहते हैं, हमारी ही दशा सुधारने के लिये लाखों भाई जेल जा रहे हैं, क्या हमें अब भी उचित है कि होली जैसे सुअवसर पर विदेशी वस्त्रों के स्थान पर गाढ़ा और खद्दर न पहिने, मादक द्रव्यों के स्थान पर अन्य बुद्धिवर्धक और बलदायक पदार्थों का प्रयोग करें जिससे हमारे कृष्णभवन में रहने वाले भाईयों के उत्साह बढ़ें, हमारे देशभक्त भाइयों को जेल के अत्याचार और कष्ट स्वर्ग से भी अधिक सुख देने वाले होंगे यदि हम अब की होली पर अपने दुर्व्यवहारों को छोड़ देश सेवा का बीड़ा उठालें और विदेशी वस्तुओं को त्यागने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें।

❀ पाकेट इत्रदान ❀

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और आफिसरों को नजर में देने के लिये नई वस्तु है। विवाह (शादी) वगैरः शुभ कार्यों में भी मैफिल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं १ पाकेट इत्रदान फैंसी शी० ६ मय इत्र रु० ४)
नं २ ,, ,, ६ ,, रु० ३)
नं ३ ,, ,, ६ ,, रु० २॥)

इसके अलावा हर एक किस्म की इत्र तेल, तमाखू इत्यादि सामान भी हमारे कार्यालय से मंगवा लीजियेगा
पता—बिहारी लाल काली चरण त्रिपाठी पो० कनौज सिटी Kanouj City.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चन्द्रप्रभा ।

आंखों की प्रत्येक बीमारी को दूर करके उन्हें ज्योतिर्मय बनाता है इसके थोड़े ही दिन के सेवन करने से आंख दुखना, नजला, जाला, धुन्ध, परवाल मोतियाबिन्दु, फूला, रोहे रतौंध आंखों की चिपचिपाहट, एक के दो मालूम होना चश्मा लगाने की बुरी आदत आदि सदैव को जाती रहती हैं यही कारण है कि इसके सेवन करने वालों ने इसके विषय में इतनी अच्छी अनुमति दी है कि जिस का लिखना हमारी शक्ति से बाहिर है । हाथ कङ्गन को आरसी क्या ? मूल्य १ शी० डाक व्यय पृथक् ।

बालाम्बा ।

मीठी तथा स्वादिष्ट होने के कारण छोटे २ तथा बड़े बालक हंसते २ गटागट पी लेते निर्बल तथा दुबले बालकों को मोटा ताजा व बलवान बनाती और उनकी हरएक बीमारी यथा बुखार, खाँसी, अजीर्ण, दूध डालना पसली चलना, हरे पीले आमखून के दस्त होना, दस्त में कीड़े निकलना, मृगी, हिचकी, कब्ज, मरोड़ आदि के लिये अद्भुत गुणकारी है दांत निकलने के समय बालकों को जो २ पीड़ाऐं होती हैं वह सब इसके पीलाते ही भूत की तरह भाग जाती है । यदि परीक्षा करने पर हमारे लेखानुसार न हो तो मूल्य वापिस । मूल्य प्रति शीशी १) डा० व्यय पृथक् ।

मंगाने का पता—वी० डी० शर्मा एण्ड को
मुरादाबाद, यू०पी० ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

झालरापाटन राजपूतानेसे निकलने वाले "सौरभ" मासिकपत्र पर पत्र पत्रिकाओंकी सम्मति

संरक्षक. महामना, उदार हृदय, विद्याव्यसनी, "प्रजासर्वस्व" हिज़ हाइनेस महाराजाधिराज महाराजराना झालावाड़ नरेश सर श्रीभवानीसिंह बहादुर के. सी. एस. आई., एम. आर. ए. एस.
सम्पादक. इत्यादि द्वारा संरक्षित और पंडित रामनिवास शर्म्मा द्वारा सम्पादित सचित्र मासिक पत्र "सौरभ" पर सुप्रसिद्ध, सुप्रतिष्ठितः—

समालोचक पत्र पत्रिकाओं के नाम

छात्रसहोदर, जासूस, संसार, महिलादर्पण, विद्यार्थी, प्रेम, विज्ञान, आर्य्यमित्र, लीडर, श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार, विजय, ज्योति, कायस्थकुल, सेवक, क्षत्रियमित्र, राजपूत, भारतोदय, सुधारक, सरस्वती, ज्ञानशक्ति, भारती, मल्लारिमार्तण्डविजय, जयाजी-प्रताप, श्रद्धा. प्रभा, चित्रमयजगत्. लक्ष्मी, जैनहितेच्छु, स्वार्थ, आज, वैभव, कर्तव्य इत्यादि पत्र पत्रिकाओं की सम्मिलित सम्मतियों का किञ्चित् सारांश निम्नलिखित है—

विशेष संमतियां

हमें यह कहने में गर्व है कि पत्र अच्छे ढङ्ग से निकल रहा है। इसका सम्पादन निर्भीकता और योग्यतापूर्वक बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से होता है जो कि धन्यवादार्ह है। एक ही वर्ष में पत्र ने हिन्दी संसार में अच्छा आदर प्राप्त कर लिया है। केवल राजपूताने में ही नहीं परन्तु सारे हिन्दी साहित्य संसार में इसका अत्यन्त उच्च आसन है। इसको हज़ारों प्रतियों का प्रचार होना चाहिये। यह झालावाड़ नरेश की विद्वत्ता का प्रताप है कि उनके यहाँ से ऐसा श्रेष्ठ, उन्नतिशील, स्थिर साहित्य को पैदा करने वाला, अपनाने योग्य, अपने ढङ्ग का निराला, अध्ययन योग्य, हर दृष्टि से अतीव उत्तम उच्च कोटि का, सर्वाङ्ग सुन्दर मासिक पत्र प्रकाशित होने लगा है। यह पहला ही अवसर है कि ऐसा उत्तम और उपयोगी मासिक पत्र एक देशी रियासत से निकला है। यह न केवल राजपूताना वरन् सब भारतवासियों के लिए उपयोगी है। इसके लेखों का चुनाव और टिप्पणियों को देख कर सम्पादक की योग्यता और कार्यशीलता को जहाँ सराहना पड़ता है वहाँ ऐसे उच्च कोटि के पत्र के संरक्षक होने के कारण महाराज झालावाड़ की उदारता का उल्लेख किये बिना भी सन्तोष नहीं होता। Now Rajputana also can claim to possess a good monthly of its own इत्यादि २।

आकार, प्रकार, छपाई, सफ़ाई

आवरणपत्र पर एक अतीव सुन्दर चित्ताकर्षक रङ्गीन चित्र है। काग़ज़ बहुत बढ़िया, चिकना और उत्तम। काग़ज़ की चिकनाहट और छपाई सफ़ाई सब मिल कर सोने में सुगन्ध का काम करती है इत्यादि २।

भाषा

इसकी भाषा सुमार्जित है। इस पत्र को पढ़ कर हमें बङ्गभाषा के सौन्दर्य को याद हो आई इत्यादि २।

कविता.

कविता अच्छी। कविता सुन्दर। इसमें सुन्दर कविताएँ रहती हैं। इसमें अच्छे २ विद्वानों के काव्य देखे जाते हैं। इसमें कविता को ऊँचा स्थान प्राप्त है इत्यादि २।

विषय.

इसमें विज्ञान, अर्थशास्त्र, धर्म, इतिहास, समाजशास्त्र, साहित्य, शासन विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, अध्यात्म विज्ञान, इत्यादि विषयों पर स्थिर साहित्य के उत्पन्न करने वाले—

लेख.

"मनोरञ्जक, उत्तम, विशेष उपादेय, उपदेशप्रद, अध्ययन योग्य, सुपाठ्य, भावपूर्ण, भाव गम्भीर, चित्ताकर्षक, शिक्षाप्रद, विशेष मौलिक, अपने ढङ्ग के नवीन, विचारपूर्ण, बढ़िया, मनन करने योग्य, अत्यन्त रोचक, मार्मिक दृष्टिसे लिखे गये, सामयिक, विद्वत्ता-मौलिकता-चित्ताकर्षकता समन्वित, मानसिक ठोस भोजनपूर्ण, उच्चकोटि के, अपने विषयों पर पूर्ण आधिपत्य रखने वाले, विद्या-व्यसनी, हिन्दी के सुप्रतिष्ठित प्रौढ़ विद्वानों द्वारा लिखे हुए लेख होते हैं। इसकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ भी बड़े मार्के की होती हैं इत्यादि २।"

सत्यतत्परता

देशी राजाओं को इस उन्नतिशील ज़माने में किस उदारनीति को धारण करना चाहिए और प्रजा के लिए उन्हें ज़िम्मेदार शासनपद्धति की क्यों व्यवस्था करनी चाहिए इस विषय पर इस पत्र में जो (सम्पादकीय) टिप्पणियाँ निकलती रहती हैं वे बड़ी निर्भीक और योग्य होती हैं, वह खुलकर लिखता है, चाटुकारी का भाव उसमें बिल्कुल नहीं पाया जाता।

इसका वार्षिक मूल्य ४।) रु० एक प्रति का ॥) आ० है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैनेजर "सौरभ" झालरापाटन (राजपुताना)

'रमणी-रत्न-माला' के पांच रत्न

सचित्र शकुन्तला सचित्र

'शकुन्तला' संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालिदासके सर्वोत्तम संस्कृत नाटकका उपाख्यान रूपमें हिन्दी भाषान्तर है। संसार भरकी भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं और इस रचनाके आगे सारे सभ्य जगत्को सिर झुकाना पड़ा है।

"शकुन्तला" की तारीफमें जर्म्मनीके महाकवि गेटीने कहा है, कि यदि स्वर्ग और मर्त्यकी समस्त शोभाएँ एकही स्थानपर देखनी हों, तो 'शकुन्तला' पढ़ो, क्योंकि यह दाम्पत्य स्नेह, नारी-कर्तव्य, सती धर्म्म और विश्व-प्रेमका जगमगाता हुआ उज्ज्वल और अमूल्य रत्न है। इसमें ऐसे ऐसे सुन्दर, ३ रंगीन चित्र लगाये गये हैं, कि जिन्हें देखकर पौराणिक कालकी समस्त घटनायें आँखोंके आगे नाचने लगती हैं। दाम २), रंगीन जिल्द २।), रेशमी जिल्द २॥) रु०

नल-दमयन्ती

कौन ऐसा हिन्दू-सन्तान होगा, जो "नल-दमयन्ती" का संसार-प्रसिद्ध नाम न जानता हो? यह सती-शिरोमणि 'दमयन्ती' और आदर्श राजा 'नल' की शिक्षाप्रद, हृदय-ग्राहिणी पवित्र कथा प्रत्येक बाल, वृद्ध, वनिताके पढ़ने योग्य है। इसमें १३ बहुरंगे चित्र इस ढङ्गसे लगाये गये हैं, कि खाली चित्रोंको देखकरही मनुष्य पूरी कथा समझ सकता है। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं और कम पढ़ी लिखी स्त्रियोंको उपहारमें देनेके लिये यह पुस्तक बड़ीही उपयोगी है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २)

सावित्री-सत्यवान

कुमारी कन्याओं और नव-विवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसमें सती-शिरोमणि महारानी सावित्रीके अपूर्व पातिव्रत-धर्म्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी इसमें हाफ टन फोटो के सुन्दर सुन्दर १३ रंग-बिरंगे चित्र भी दिये गये हैं। हिन्दीके प्रायः सभी समाचार-पत्रोंने इसकी प्रशंसा की है, प्रत्येक हिन्दू-नारीको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। दाम १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

सीता

"सीता" हिन्दू बालक-बालिकाओं और गृह लक्ष्मियोंके पढ़ने योग्य अपने ढङ्गका अनूठा और सर्वोत्तम ग्रन्थ रत्न है; क्योंकि यह सारी रामायणका सार उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भण्डार और साहित्यका सुललित शृङ्गार है। इसके पढ़नेसे एकही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास और नीति-शास्त्रका आनन्द मिलता है तथा यह राजनीति, धर्म्मनीति, समाज-नीति और गार्हस्थ-नीतिकी कुंजी है। इसमें १५ बहुरंगे चित्र दिये गये हैं, जिन्हें देखकर तबीयत फड़क उठती है और राम राज्यके अनूठे दृश्य आँखोंके सामने नाचने लगते हैं। दाम सिर्फ २॥), रंगीन जिल्द २॥।) और रेशमी जिल्द ३) रुपया।

चिन्ता

"चिन्ता" देव लोक और मर्त्य लोकका प्रत्यक्ष चित्र दिखलानेवाली शिक्षाप्रद, सुललित और हृदयग्राही अपूर्व कथा है। इसमें सती-शिरोमणि "चिन्ता" और न्याय-परायण महाराज श्रीवत्सकी ऐसी पुण्यमय कथा लिखी गयी है, जिसको सुनकर पाण्डवोंने अपने वन वासके १३ वर्ष बड़े धैर्य्यके साथ हँसते खेलते बिता दिये थे। सती 'चिन्ता' के अपूर्व धर्मानुराग, उज्ज्वल सतीत्व और अविचल धैर्यकी कथा प्रत्येक पतिव्रता बहू बेटी और कुल नारीके पढ़ने योग्य है। इसमें ६ बहुरंगे चित्र लगाये गये हैं, जिन्हें देखकर चकित और विमोहित होना पड़ता है। मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १॥।) और रेशमी जिल्द २) रु०

पता:—आर. एल. वर्म्मन एण्ड को०. ३७१ अपर चीतपुर रोड. कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

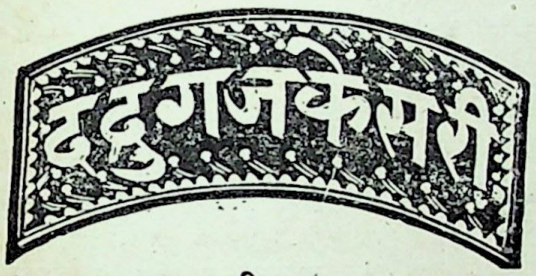

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

वैद्यक औषधि सब प्रकार मिलिहैं—

भारत भैषज्य भाण्डार।

वा औषधि आलय के माहीं। असल द्रव्य सें बनत सदांहीं ॥ औषधि सत्य परिश्रम साथा। उच्च श्रेणि वैदन के हाथा ॥ अयुर्वेद शास्त्र परिपाटी। धातु पधातु भस्म रस खांटी (१) गोली चूर्ण तेल घृत आसव। मोदक लेह अरिष्ट आदि सब ॥ उचित मूल्य पर मिलत यहां हीं। लेहु विशुद्ध वस्तु सब यांहीं ॥

मालती बसन्त कुसमाकर बसन्त लीजै, लीजै महराजा मृगाङ्क मन भावनी। चन्द्रोदय, मकरध्वज, सार भष्म, अभ्रकहू, अन बींधे मोती औ सुवर्ण भष्म चावनौ। कस्तूरी आदि बहु मूल्यवान औषधिहू, मिलत तयार दिन रात इत आवनौ। थोक व्यापारिन को उचित कमीशन पै मिलत सुमाल ले लीजै हरखावनौ ॥ दश मूलादिक क्वाथ सब चूरन अर्क तयार। मिलत सभी ले लीजिये भाव ठीक हरबार ॥

जैसें नवीन ज्वर औरहू पुरानौ ज्वर यकृत सु प्लीहा संयुक्त ज्वर सन्निपात। संग्रहणी अतीसार हैजा कृमि पाण्डु आदि कामला कुरक्त पित्त कास स्वास छर्दि घात। मिरगी सु मूरछा उनमाद बात व्याधि आदि बात रक्त आम बात शूल गुल्म मूत घात। अश्मरि उपदंश औ प्रमेह शोथ उद्र व्याधि अम्लपित्त चक्षु रोग शिरो रोग अर्द्ध जात। नारिन की प्रदरादिक पैर बन्द करने की शिशुगन की रोगन की औषधि तयार हैं। अमृत सी फल दैनी औषधि यहीं सों लैनी वी० पी० कर भेज देत हुकम इन्तजार हैं। संग अनुपान विधि सेवन प्रकार विधि पथ्यापथ्य लिख देत भेजत सुधार हैं ॥ रोगन को पूर हाल लिख कें सुभेजिये जू, सूचीपत्र मुफत लेहु छापे तय्यार हैं।

मिलने का पता—

भारत भैषज्य भाण्डार

नं० ७८ कारन स्ट्रीट कलकत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डा० बर्म्मन की बनाई

धातुपुष्ट की गोलियां

ताकत देने वाली दवाओं में प्रसिद्ध दवाएं—फासफोरस, ष्ट्रिकिनिया और डामियाना मिला कर ये गोलियां बनी हैं। शरीर के धातुओं की मनज, रीढ़, रग, मांस और खून को पुष्ट करने को ये विशेष दावा रखती है।

इनका गुण—भूख बढ़ाना, पाचन शक्ति घटने से जो दोष होते हैं या जो छाती पर बोझ, पेट फूलना, वायु के डिकार आलस्य आदिक एक ही दो दिन में जाते हैं। खाने का आनन्द मिलता है। सुस्त चित्त की ग्लानि जाती रहती है, मन में फुर्ती आती है और मिहनत करने पर थकावट नहीं होती।

अधिक मिहतन, अधिक पढ़ना जवानी का दोष, अधिक विहार आदिक कुक्रियाओं से धातु क्षीण होकर मगज खाली और रगें निस्तेज हो गई हों तो दो तीन सप्ताह में ये गोलियां पुनः टूटे शरीर में जोश लाती है। दो सप्ताह की खुराक ३० गोलियों की १।) सवा रुपया, डा० म० १ से २ शीशी तक ।=) छः आने।

डा० बर्म्मन का बनाया

आईओडाईज्ड सालसा

॥ खून साफ करने की दवा ॥

खून से मनुष्यों का जीवन है इसलिये खून साफ रक्खो। सालसा खून साफ करने की प्रसिद्ध दवा है। इसी सालसे को सोध कर उस में पोटास आईओडाइज्ड आदिक कई एक परीक्षित दवाएं मिला कर यह सालसा बना है। जिस से यह साधारण सालसाओं से अधिक गुण करता है। गर्मी (आतशक) गठिया वा पारा मिली हुई दवायों से खून बिगड़ा हुआ होवे तो सालसा सेवन करो।

खून बिगड़ने के प्रधान दोष दो ही हैं—गर्मी वा गठिया। इन रोगों में अक्सर लोग पारा मिली हुई दवाएं खाया करते हैं जिस से खून और भी अधिक बिगड़ जाता है।

इसका अन्त यही होता है, कि शरीर का चमड़ा फटना, सिर का वाल उड़ना चकत्ता पड़ना, गांठ व गिल्ट होना, घाव फटना, कमर में दर्द, फोड़ा फुनसी, रंग मैला वा क्षीणता आदिक दोष उपजाते हैं। ठीक ऐसी ही हालत सुधारने के लिये यह सालसा बना और प्रसिद्ध है।

मूल्य २॥) दो रु० आठ आने शीशी पै० व डा० म० ॥) आठ आने। एक शीशी में ३२ खुराक (१६ दिन के सेवन योग्य) सालसा है।

५, ६ ताराचन्द दत्त ष्ट्रीट,
कलकत्ता १—५—२१

नं० १
डाक्टर एस, के, वर्म्मन।

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के टुकड़े पर लिखा हुआ था –'हैं, यौवन अवस्था में अवश्य ही ऐसी कोई शक्ति है जो हजार चेष्टा करने पर भी मन को खराब रास्ते ही पर लगाती है। ओफ ! इस शक्ति पर विजय पाना महाकठिन है। मालती ने मुझे कुमार्ग दिखलाया, मैं उस के साथ २ चल पड़ा। मुझे लोक-निन्दा का कुछ भी भय न रहा।'

और न पढ़ सकी क्रोध से उन कागज के टुकड़ों को उठा कर बाहर फेंक दिया। विहारी को कुमार्ग की ओर मैं लेगई !! मैं तो इसे पवित्र प्रेमबन्धन समझती थी। मैं समझती थी, यह विवाह-सम्बन्ध किसी तरह निन्दनीय नहीं है। ईश्वर के साम्हने हमारा विवाह हुआ था चाहे संसार की दृष्टि में वह कुत्सित हो। बहिन, यह उस पुरुष जाति के प्रेम का एक उदाहरण है जो अवला जाति पर अत्याचार करके उसे समाज की दृष्टि में पतिता बनाकर अपने को निरपराध समझती है, जो स्त्री जाति को प्रेम का पाठ सिखाती है और स्वयं उन्मादिनी की तरह उस पवित्र प्रेम को लात से ठुकरा देती है। आज कल भी कई एक सरला बालिका पुरुषों के शिथिल प्रेम-बन्धन में फंस कर स्त्री जीवन के साररूप सतीत्व को नष्ट करके, अपने परिचित स्नेह भाजन बन्धु बांधवों से बिछुड़ कर न जाने कैसा दुःख पूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं ! यही शक्ति शालिनी मनुष्य जाति की न्यायशीलता है। समाज की इस दुर्दशा का उत्तरदाता है मनुष्य न कि स्त्री। मैं जानती हूं बहिन, कि निर्बलों के गर्म २ उच्छासों के कारण हमारे समाज की दिव्य कान्ति क्षीण हो चुकी है। इस में हमारा कोई दोष नहीं। समाज के कठोर से कठोर नियम का पालन करने के लिये हम तैयार रहती हैं परन्तु पुरुष ही प्रथम उस नियम का उल्लंघन करता है।

हां, तो मैं क्या कहती थी ? विहारी ने मुझे दुख-सागर में छोड़ दिया। कोई साथी नहीं, कोई सहारा नहीं, कोई आशा नहीं !"

यह कह कर वह चुप होगई। आकाश साफ हो गया था। दूर में मल्लाहों का गीत सुन पड़ता था। मैंने एक निश्वास त्याग कर मुंह फेर लिया। बड़े कष्ट से आंसू रोक कर पूछा—'उसके बाद ?'

मालती की भी आखें डबडवा आईं थीं। वह कुछ देर तक जमीन की ओर देखती रही। आंख का जल आंख में ही सूख गया। मेरी ओर दृष्टि उठा कर बोली 'उसके बाद ? विरह और विषाद ! न मामा मामी ने ही मेरी खबर ली, न विहारी ने। मैं गली २ की भिखारिन हो गई। दाना २ के लिये तरसती थी। एक बार इच्छा हुई घर चली जाऊं, परन्तु अकस्मात् स्मरण हो आया—जब लोग मुझे देखेंगे तो क्या कहेंगे ! जब वे मेरी ओर उङ्गली उठा कर कहेंगे--यही भ्रष्टा मालती है' तो लज्जा से मैं मर नहीं जाऊंगी ! अब मेरे लिये वहां आश्रय नहीं है, जहां परिजन हैं। वहां सिर्फ घृणा हैं, लज्जा है, अनुताप है !

अन्त में मैं इस शहर में आपहुंची। मेरे सौभाग्य से तुम से भेंट हो गई। ईश्वर तुम सब को कुशल रक्खें। मुझे ऐसा जान पड़ता है मानो फिर मुझे अपनी स्वर्गीया माता का आश्रय मिल गया है। परन्तु वृन्दा, में उदास रहती हूं वह इस लिये कि मैं विहारी को नहीं भूल सकती। उस के सुख दुःख की मुझे जितनी चिन्ता है—और मैं क्या कहूं ?

बहिन, यह न समझो कि एक बिहारी के ही आचरण से मैं समस्त मनुष्यों के प्रति इतना क्रोध प्रगट कर रही हूं, उन सब को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्यायी ठहराती हूं। मुझे मनुष्य-स्वभाव से घृणा है!

तुम स्वयं सोचो तो सही--किस मनुष्य ने जन्म भर के लिये आंख में पट्टी बांध कर एक अन्धी बालिका का पाणिग्रहण किया है? किस पुरुष ने मन में सङ्कल्प किये हुए वधू के कारण एक पत्नीव्रत के पवित्र नियम को न तोड़ने के लिये मरणप्राय कन्या से विवाह किया और उसे अपनी आत्म शक्ति से यम के द्वार से लौटा लाया? किस पुरुष ने अपनी पत्नी के साथ उसी के कारण राज महल के सारे आनन्द की सामग्रियों को त्यागकर, कठोर काएटों का साम्हना करके बन में अपना समय व्यतीत किया?* कहां तक कहूं बहिन, इतिहास के पृष्ठों पर हमारी जाति का उज्ज्वल चरित्र सुवर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। हम से ही इस समाज का मान था, हम से ही भविष्य में यह समाज अपना मान पावेगा। जब तक वह हमें 'पतिता' कहेगा, तब तक वह भी हीन दीन दशा में रहेगा, मैंने धीरे से कहा—'मैं नहीं जानती बहिन, कहां तक तुम्हारा कहना सच है!'।

वह कौन है?

लेखक श्रीयुत बलराम उपाध्याय।

किसकी है यह ज्योति, उषा के उज्ज्वल मुख पर?
किसकी शोभा सें शोभित हैं ये सब तरुवर?
किसकी धुन में घूम रहे हैं, जलचर थलचर?
किसके गुण का गान, किया करते हैं गुरुवर?
किसके पूरण प्रेम में, हुए मस्त ऋषि मुनि सभी?
उसके निर्मल चरण को, क्या पावेंगे हम कभी?

कोयल की इस मधुर कूक में किसकी ध्वनि है?
पक्षीगण का यह कलोल किसका रञ्जन है?
कौन पवन को इस प्रकार शीतल करता है?
फूलों को इस सुखद वास से भर देता है?
रूप रंग अरु गंध से, प्रकृति को भूषित किया?
किसने मेरे हृदय में, राग प्रेम का भर दिया?

श्रावन की रिमझिम वर्षा में, अरु बसन्त में।
कवि-कुल-वन्दित प्रात और सुन्दर संध्या में।

---

* स्त्रियों में गांधारी, सावित्री, सीता आदि के चरित्र प्रसिद्ध हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुक्मिणी हरण नाटक।

लेखक--श्रीयुत मेधाव्रत जगजीवन

अंक २रा। प्रवेश १ला।

[स्थान--कुण्डिनपुर का राजमहल।]

[रुक्मिणी पत्रिका लेखन। गायन।]

रुक्मिणी--हृदयेश! यह विनय है,
चरणों में सिर नमा कर।
अबला को लो शरण में,
कृपया शुभागमन कर॥
भेजी है नाथ! अर्जी,
जैसी है मेरी मर्जी।
अंजन से यह लिखी है,
नयनाश्रु को मिलाकर॥
जलबिन्दु गाल पर के,
कुङ्कुम से लाल करके।
रंगी है पत्रिका यह,
हृद्लेखनी बना कर॥
हृत्पत्र पर तुम्हारी,
तस्वीर है उतारी।
हर लो मुझे मुरारी,
दिन तीन में ही आकर॥
आओगे हंस! नहिं जो,
मणि रुक्मिणी प्रिया को।
शिशुपाल काक हठ से,
ले जायगा उठाकर॥ हृदयेश०—

सखी--(प्रवेश कर) आपकी आज्ञानुसार इस प्रारब्ध को मैं बुला लायी हूं।

प्रारब्ध--राजकुमारी! आशीर्वाद।

रुक्मिणी—पधारिये-महाराज! मेरा एक कार्य आप करेंगे?

प्रारब्ध—सीता को जैसे हनुमान् वैसे अपने लिये इस प्रारब्ध को समझिये।

रुक्मिणी--तो लो यह पत्रिका! शीघ्र द्वारिका जाकर श्रीकृष्ण के हाथ में देना। और उनको तीन दिवस में यहाँ पधारने के लिये मेरी ओर से प्रार्थना करना। नहीं तो मेरे कसाई भाई ने ऐसा जाल रचा है कि कृष्णचन्द्र से खिलती हुई मेरी जीवन चन्द्रिका को शिशु पाल रूप राहु निगलने में देर नहीं लगायेगा।

प्रारब्ध--किया प्रारब्ध का होगा। बहिन! चिन्ता नहीं करना। हनुमान् जैसे लंका का समुद्र तैर गया था वैसे यह प्रारब्ध भी द्वारका का समुद्र तैर जायगा। [जाता है।]

रुक्मैया--(प्रवेश कर।) फतेह, बेड़ा पार। बस अब तो ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि पूर्ण शोध किये बिना किसी भी नये पुरुष को इस नगरी में दाखल न किया जाय फिर एक तो क्या पर सात कृष्ण भी इकट्ठे हो जायँ तो भी उनकी कपटकला तथा जासूसी का चञ्चु प्रवेश भी न हो सके। रुक्मिणी! तुझे अब अपना हठ बिलकुल छोड़ देना पड़ेगा और शिशुपाल से विवाह करना होगा। नहीं तो देख। [सीटी बजाता है। और भीमक को पकड़ कर सिपाही लाते हैं।] सम्राट् जरासंध तथा शिशुपाल की आज्ञा से मैंने बाप को कैद किया है क्योंकि ये हर समय हमारा द्रोह करते रहे हैं। यह राजमुकुट मैं अपने हाथ से अपने सिर पर रखता हूं और कुण्डिनपुर का राजा बनता हूं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बोलो सैनिको ! शिशुपाल के साले कुण्डिनपुर के महाराजा रुक्मैया की..... .....

सब लोग--जय।

रुक्मिणी--अरे भैया ! आज क्या कुदरत का कानून पलट गया है ? भगवान् का आसन कहीं शैतान से छिना गया है ?

रुक्मैया--शैतान पर भी कोई नया शैतान सवार होता है।

रुक्मिणी—भानु का स्थान असमान क्या राहु से ही हरा जाता है ?

रुक्मैया—अलबत ! कायम का ग्रहण होता है।

रुक्मिणी—क्या स्वर्ग नन्दन वन पर नारकी तूफान होता है ? वा पिता के ऊपर पुत्र का धिक्कार कार्य होता है ?

रुक्मैया—हमारे साम्राज्य में पिता पुत्र आदि के धर्म का स्थान नहीं। कुदरत के कानून का मान नहीं।

भीमक—यदि ऐसा ही है तो पुत्री ! देख तो सही कि संसार का व्यवहार ठीक पहिले की तरह चल रहा है ? माताएं अपने बच्चों को विष तो नहीं पिला रही न ? सतियाँ अपने पतियों को सोये हुए लख कर पतित तो नहीं बन गईं। नौकरों की वफादारी सोये हुए स्वामी का मस्तक दबाते २ बेवफाई की छुरी को तो नहीं चला रही ? सूरज की सफेदी तो नहीं उड़ गई ? आसमान की कालिमा तो नहीं हट गई ? इस धरती की स्थिरता तो नहीं मिट गई ?

रुक्मैया—किसी के दिमाग़ की स्थिरता भले ही मिट गई हो ! लेकिन यह दुनिया तो जैसे की तैसी ही है।

भीमक—बस तो मेरा विश्वास हो गया कि अभी तो तुम शैतानों का साम्राज्य नहीं किन्तु भगवान् कृष्ण का ही साम्राज्य है जिन के द्वारा कंस की तरह तुम्हारे अधर्म तथा अन्याय का भी नाश होगा।

रुक्मैया—कंस मरा ही नहीं किन्तु जीवित ही मेरे अन्दर सवाया उतरा है। समझे ! यह रुक्मैया सवाया कंस बना है।

भीमक—सो दैत्य ! तू भी कृष्णदेव के हाथ से सवाया मरने वाला है।

रुक्मैया—आह ! मुझ नये राजा का द्रोह ? बस ले जाओ इसे कैद में।

रुक्मिणी (स्वगत) मैंने श्रीकृष्ण को बुलाया ही है सो इस समय युक्ति से काम लेना चाहिये। (प्रकट) नहीं भाई ! तू पिता जी को बन्धन मुक्त कर। मैं तेरे कथनानुसार करूंगी।

रुक्मैया—फतेह ! बेड़ापार। आखिर मेरी ही बहिन न ! अहा ! कैसी बुद्धिमती ! कैसी होशियार !

भीमक—पुत्री रुक्मिणी ? मेरे लिये तुझे ज़रा भी विचलित होने की ज़रूरत नहीं। भले वह मुझे कैद करे। यदि मैं चाहूं तो इस के इस राजद्रोह तथा पितृद्रोह के बदले में अपनी भक्त प्रजा को उस के विरुद्ध युद्ध कराकर उचित दण्ड दिला सकता हूं किन्तु परमात्मा ने ऐसे कुलांगार पुत्र की ओर भी मुझे न जाने कैसा पितृप्रेम अर्पण किया है, अगम्य वात्सल्य दिया है। पुत्र कुपुत्र भले ही बन जाय किन्तु माता कुमाता कभी नहीं बन सक्ती।

रुक्मिणी—(स्वगत) हे प्रभु ! पिता के दिल को तुम ने अपनी किस दयामय कोमलता से बनाया है ? (प्रकट) पिता जी ! जो वात्सल्य पिता को अपने कुपुत्र की ओर भी दयावान् बनाता है वही वात्सल्य मुझ पुत्री को आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिता के लिये अपने विचारों को बदलने के लिये विवश करता है।

रुक्मैया—शाबास बहिन! शाबास। ऐसी बहिन अखिल ब्रह्माण्ड में भी मिलनी कठिन है। पिता जी? यह लो तुम को मैंने छोड़ दिया। जाओ। सुपुत्री हो तो ऐसी हो।

भीमक--किन्तु-पुत्री? मनुभगवान् की आज्ञा है कि कन्या सारी जिन्दगी तक भले कुमारी रहे किन्तु मा बाप उसे गुणहीन पति को कभी न देवें। सो अपने लिये तेरी सारी जन्दिगी नष्ट होने का पाप लेने को मैं राजी नहीं हूं।

रुक्मिणी—पिता जी! आप घबराइये नहीं। आपकी ओर की पितृभक्ति मेरा कल्याणही करेगी।

रुक्मैया--मेरी बहिन! तू कैसी अच्छी है? अब तू मुझे गरीब गाय जैसी प्यारी लगती है। चलो-पिता जी! रुक्मिणी का ऐसे धूमधाम से विवाह करें कि वह कृष्ण आदि शत्रु जलकर खाक ही हो जायँ। लो, पिता जी! लो यह आप का मुकुट। आखिर मेरे बाप तो आप ही हो। (दोनों जाते हैं।)

रुक्मिणी--हे प्रभु! पितृधर्म निभाने के लिये मुझे रुक्मैया के दिल को क्षण भर मनाना पड़ा है किन्तु मेरी अन्तिम लाज रखना तो आप के ही हाथ में है। गाती है--

गायन--नाथ! तुरत मम लाज बचाओ।
पापी नर वह लेंजावेगा, मुझको आय छुड़ाओ॥नाथ०
अन्तर्यामी तुम मेरे हो, क्या दिल दर्द सुनाऊँ।
सर्वज्ञ तुम हो मेरे मन के, क्या संदेश कहाऊँ॥
शक्तिमान् को अशक्य क्या है, दुर्जन मार भगाओ।
शरणागत वत्सल! दासी की, मानव्यथा मिटाओ॥न०

[जाती है।]

अंक ३रा। प्रवेश २रा।

[स्थान—जंगल।]

कर्मयोग—[स्त्री वेश में प्रवेश कर।] श्रीकृष्ण की युक्ति नीति से भयभीत बने हुए रुक्मैया ने कुण्डिनपुर में प्रवेश करने वाले यात्री पुरुषवर्ग के ऊपर सख्त ज़ाप्ता (निरीक्षण) रखा है; और इसी लिये स्त्री वेश से कुण्डिनपुर में प्रवेश करने तथा श्रीकृष्ण की कार्यसिद्धि पार पाडने में नया कर्मयोग धारण किया है। आतशबाजी के पुतले रूप ए! शिशुपाल-रुक्मैय्या! तुम जैसे २ श्रीकृष्ण के विरोधाग्नि के सामने होवोगे वैसे २ जलकर खाक हो जावोगे। इसकी तुम्हें अब अलपकाल में खबर पड़ेगी। [नेपथ्य की ओर देख कर।] यह सामने से प्रारब्ध आता दिखता है। कर्मयोग अर्थात् पुरुषार्थ बढ़कर है या प्रारब्ध यानी भाग्य? इस विषय में हमारा पुराना झगड़ा चला आता है सो आज उसको बनाने का यह ठीक प्रसङ्ग प्राप्त हुआ है। [एक ओर खड़ा रहता है।]

प्रारब्ध—[दौड़ता हुआ प्रवेश कर।] दौड़ते दौड़ते दम निकल गया मगर अभी द्वारका द्वीप न जाने कितनी दूर है? थककर मोम बन गया हूं और भूख से भी मर गया हूं। तथापि अपना किया प्रारब्ध? स्वयं सामने आकर पड़े तो ही खाऊँ नहीं तो झोके या जम्भाई खाने कहाँ नहीं मिलतीं? बाकी मेरे हरीफ कर्म-पुरुषार्थ का तो दाव लगने न दूं कि भोजन मिलाने के लिये रखड़ पट्टी करूँ। प्रारब्ध पुरुषार्थ की परवाह तो कभी न करें।

कर्मयोग—(स्वगत) तो भले ही हाथ पैर हिलाये बिना भूखो मरें। मेरे बिना जगत क्षणभर भी निभ नहीं सकता। मैं या श्वास रूप कर्म बिना जी ही नहीं सकता?

प्रारब्ध—अब तो कृष्ण और रुक्मिणी भी ब्याहेंगे सो फिर मेरे योग्य कोई स्त्री मिल जाय कि मैं भी यह सब गर्दभ कर्म छोड़ कर शान्ति से जीवन बिताऊँ। अरे? पर मैं खड़ा क्यों? अब द्वारका कितनी दूर है? (क्रमशः)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कृष्ण-निशा।

लेखक—श्रीयुत "श्रीचन्द्र"।

कैसे कुटिल क्रूर स्वार्थ को जगसे दूर भगाऊँ मैं ?
काली कुलशित क्लिष्ट निशा में कैसे कदम वढाऊँ मैं ?
ज्ञान प्रभा कर अस्त पड़ा है।
जीवन रथ पथ वीच अड़ा है।
पथ में मदका भूत खड़ा है,
कैसे उसे भगाऊँ मैं ?
काली कुलशित क्लिष्ट निशा में कैसे कदम वढ़ाऊँ मैं ?
हृदय वीच तम राज्य हुआ है।
तिस से ज्ञान विनाश हुआ है।
मन मंदिर का दीप वुझा है,
कैसे उसे जलाऊँ मैं ?
काली कुलशित क्लिष्ट निशा में कैसे कदम वढ़ाऊँ मैं ?
मोह मेघ से नभ छाया है।
कलह द्वेष जल वरषाया है।
क्रोध वृक्ष को सिंचाया है,
कैसे उसे उखाड़ूँ मैं ?
काली कुलशित क्लिष्ट निशा मैं कैसे कदम वढाऊँ मैं ?

———

कुसुमोद्यान

अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी

की बैठक—

म० गांधी का प्रस्ताव पास

ता० २३ को दिल्ली कार्यकारिणी समिति की बैठक २ बजे से साढ़े चार बजे तक होती रही। अन्त में कांग्रेस में पेश किये जाने वाले प्रस्तावों का निर्णय हुआ। कमेटी में दो दलों की सूरतें नजर आईं। कांग्रेस कमेटी का सेशन २ बजे से आरम्भ होने वाला था; किन्तु कार्यकारिणी में कोई निर्णय न होने के कारण साढ़े सात बजे शाम से हकीम अजमल खां के घर पर एक शामियाने में शुरू हुआ। सेडिशस मीटिङ्ग एक्ट के कारण उक्त मीटिङ्ग में जनता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को खोल देता है जो पहिले बन्द था और खुला हुआ मार्ग बन्द हो जाता है।

सिपाही का यह काम करने के लिये अब एक मशीन ईजाद की गयी है। इसमें ऊपर दो बिजली के लैम्प जलते रहते हैं और नीचे एक बक्स होता है जिस के एक ओर (आमने सामने दोनों तरफ़) बड़े २ मोटे अक्षरों में "ठहरो" लिखा रहता है और दूसरी ओर "जाओ" लिखा रहता है उधर का मार्ग निश्चित समय खुला रहता है, फिर कुछ क्षण के लिये ऊपर के लैम्प जग पड़ते हैं। इसका अभिप्राय सिपाही की सीटी की भान्ति यह होता है कि शीघ्रता करो अथवा हट जाओ और इसके पीछे मशीन अपना ठहरो वाला भाग सामने कर देती है।

हमारी मञ्जूषा

देव और बिहारी—प्रणेता कृष्ण बिहारी मिश्र बी. ए. एल. एल. बी। प्रकाशक गंगा पुस्तक माला कार्यालय लखनऊ। पृष्ठ संख्या २८५। मूल्य १॥=)।

देव और बिहारी ब्रज भाषा के सुप्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनके आचार व्यवहार और रचनाओं के विषय में अनेक पण्डित मत भेद रखते हैं। कई एक देव को महाकवि मानते हैं और बिहारी को साधारण कवि। इसी प्रकार बिहारी को महा कवि और देव को साधारण कवि मानने वालों की संख्या भी कम नहीं। लेखक ने इसी समस्या को हल करने का यत्न इस पुस्तक में किया है। और साथ ही ब्रजभाषा की कठिनता और अप्रचलितता आदि आक्षेपों का भी मुंह तोड़ उत्तर दिया है।

लेखक की सम्मति में देव महाकवि हैं और बिहारी साधारण कवि। उनकी अपनी सम्मति तो यह है कि ब्रजभाषा में ही कविता कामिनी अपने यौवन में प्रकट हो सकती है। अन्य भाषाओं में इसका स्वाभाविक सौन्दर्य्य कम हो जाता है।

यतः, बिहारी का सतसई के अतिरिक्त और कोई काव्य उपलब्ध नहीं होता और वह भी श्रृंगार मय है अतः लेखक ने दोनों के श्रृंगार रस की ही परस्पर तुलना की है। और देव ही को महा कवि सिद्ध करने का यत्न किया है।

इस समालोचना में रसों और अलंकारों की बारीकियों को भी बड़ी योग्यता से दिखाया गया है और इनके अनेक उदाहरण भी दिये हैं। उदाहरण अश्लीलता दोष से सर्वथा रहित है।

इस पुस्तक के विषय में और अधिक न लिख कर इतना लिख देना पर्य्याप्त होगा कि यह एक बड़े साहित्य मर्मज्ञ का लिखा हुआ है। लेख शैली बड़ी सुन्दर है। भाषा परिमार्जित एवं सरस है।

कवियों की त्रुटियों के विषय में बहुत कम लिखा गया है। यदि ये इसी प्रकार निर्दोष है तो इस ग्रन्थ की सार्थकता और भी बढ़ जाती है।

मातृ भाषा—लेखक श्री लक्ष्मी सहाय माथुर, प्रकाशक साहित्य निकेतन, गंगधार राज्य झालावाड़ (राजपूताना) पृष्ठ संख्या ७० मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है। पहिले खण्ड में लेखक ने मातृ भाषा हिन्दी के महत्व सूचक देश के प्रसिद्ध २ नेताओं, कवियों और लेखकों के विचार वाक्य रूप से उद्धृत किये हैं, दूसरे खण्ड अभ्युदय, सम्मेलन पत्रिका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और ब्राह्मण समाचार इत्यादि पत्रों में से इसी विषय पर छोटे छोटे लेखों का संग्रह है, तीसरे खण्ड में हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों की मातृ भाषा के प्रेम और महत्व सम्बन्धी छोटी २ कितनी ही ओजस्वी और भाव पूर्ण कवितायें हैं। सङ्कलन अच्छा हुआ है। भिन्न २ प्रसिद्ध देश भक्त भारत पुत्रों के इस गूढ़ और महान विषय पर क्या विचार है यह इस पुस्तक से भली प्रकार पता लग जाता है।

वीर बाला--लेखक लक्ष्मी सहाय माथुर पृष्ट संख्या १६ मूल्य ≠)। प्रकाशक उपरोक्त साहित्य निकेतन झालावाड़।

यह एक प्रसिद्ध एतिहासिक आख्यायिका है जिस में कि यह दिखलाया गया है कि एक अपने देश और जाति के प्रेम में रङ्गी हुई वीर राजपूतनी देश द्रोही होने पर अपने प्रीतम को तिलाञ्जली देने में किञ्चित भी सङ्कोच नहीं करती वरन अपने प्राण तक दे देने में आना कानी नहीं करती। कथा रोचक और शिक्षाप्रद है।

अञ्जनादेवी--लेखक पं० रामस्वरूप शर्म्मा (शार्दूल) प्रकाशक श्री० माधोराम भण्डारी, जगदीश पुस्तक भण्डार लाहौर पृष्ट संख्या ११४ मूल्य ॥≠)।

यह कथा के रूप में रामायणीय वीर हनुमान की माता का जीवन वृत्तान्त है। इस देवी का जीवन चरित्र बड़ा ही दुःख मय और सहानभूति वर्धक हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक ठाकुर इच्छरचन्द कृत 'हनुमान' नामक उर्दू पुस्तक का ही रुपान्तर है। लेखक के विशेष यत्न करने पर भी भाषा में सरसता और स्वभाविकता नहीं आसकी। कारण, लेखक का यह पहला ही प्रयत्न है ऐसा ही प्रतीत होता है। हमें आशा है कि विशेष अनुभव प्राप्त करने पर लेखक को अधिक सफलत प्राप्त होगी।

बंकिमचंद्र चटर्जी (गंगा पुस्तक माला का १५ वां पुष्प) रचयिता पं० रूपनारायण पाण्डेय कविरत्न पृष्ट संख्या २५६ मूल्य १॥) भूमिका के अनुसार इस जीवन चरित से हिन्दी संसार की एक त्रुटि वास्तव में पूरी हुई है। आद्योपान्त पढ़ने से हमें भाषा रोचक तथा मार्मिक प्रतीत हुई और विषय का संगठन भी नए ढंग से किया गया है जिससे इसकी उपा देयता कई अंशों में बढ़ गई है। इस शैली पर लिखे हुए 'कवि कीर्तन' और लेखकों के जीवन चरितों की बड़ी आवश्यकता है। हमारी क्षुद्र दृष्टि में दो तीन त्रुटियां अवश्य रह गई हैं जो संभव है दूसरे संस्करण में पूरी होजाये।

१. उद्धृत किए अंग्रेजी पदों का अनुवाद वा भावार्थ साथ ही साथ दे देना ठीक होता।

२. कहीं २ बंगला से अनुवाद में "मत्स्य-गंध" कुछ विशेषरूप से है।

३. पर सब से अधिक आपत्ति हमें वंकिम बाबू के मतामत चर्चा पर है या तो उनके मतामत को यों ही लिख कर छोड़ देना था या उनकी सामाजिक दृष्टि से पूरी आलोचना की जाती क्योंकि विवाद ग्रस्त सामाजिक प्रश्नों का सूत्र रूप से सन्तोषदायक उत्तर नहीं हो सकता। जहां कहीं आलोचना की भी गई है वह हमारे मत में उदार दृष्टि से नहीं हुई।

४. पुस्तक के अन्त के भाग में विशेष कर वंकिम विश्लेषण के विषय में यह कहना है कि वंकिम बाबू के भतीजे शचीश बाबू की वंकिम जीवनी का "अंधयष्टि" की तरह सहारा न लेकर रचयिता कुछ स्वतंत्र साहस करते तो यह पुस्तक अधिक चिरस्थायी और हिन्दी साहित्य का अंश बन जाती और यह कार्य योग्य रचियता की क्षमता और स्पर्धा के बाहर न होता अब समय आगया है कि हिन्दी के लेखक कुछ व्यक्तिगत आलोचना और सम्मति का महत्व बढ़ायें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवताओं के नाम पर भी हैं। इस में ज्यौतिष शास्त्र या राशियों का सम्बन्ध कुछ भी नहीं मालूम होता।

यह हम पहिले लिख चुके हैं कि सौर वर्ष के बारह महीनों की कल्पना बिना राशि को माने नहीं हो सकती। इस लिये यह निश्चित है, कि जो सौर वर्ष के बारह महीनों को जानता है, वह अवश्य राशियों को भी जानता है। और जिस के यहां बारह मास की कल्पना नहीं, वह राशियों को भी नहीं जानता। यूनानी लोग ईसा से कुछ सदी पहिले बारह महीनों का ज्ञान नहीं रखते थे, इस लिये कहा जा सकता है कि वे राशियों को भी उस समय तक नहीं जानते थे। परन्तु प्राचीन आर्य ग्रन्थों में सौर वर्ष के बारह महीनों की कल्पना बड़े स्पष्ट रूप में आती है। इस से हम यही कह सकते हैं कि राशियों का ज्ञान यूनानियों ने भारतवर्ष से ही लिया; न कि भारतीयों ने यूनानियों से। जो लोग हमारे ऊपर उलटा दावा करते हैं कि यूनानियों से भारतवर्ष ने राशि का ज्ञान लिया, उन को चाहिये कि वे निष्पक्ष होकर और पाश्चात्य विद्वानों के उन तीन चार सिद्धान्तों को जिनका इशारा हम ने पीछे कर दिया है, अपने हृदय से निकाल कर प्राचीन आर्ष ग्रन्थों की सङ्गति लगावें, और वस्तु स्थिति का विचार करें।

अब हम पाठकों के सुभीते के लिये प्राचीन आर्ष साहित्य के अथाह सागर में से दो चार बून्द ही नमूने के तौर पर उपस्थित करते हैं, जिस से मालूम होगा कि प्राचीन आर्यों को राशियों का अच्छी तरह ज्ञान था।

सब से प्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में से हम कुछ प्रकरणों का उद्धरण करते हैं। देखिये प्रथमाध्याय का प्रथम खण्ड :—

'सप्तदशो वै प्रजापतिर्द्वादश मासाः पञ्चर्त्तवो हेमन्तशिशिरयोः समानेन तावान्त्संवत्सरः संवत्सरः प्रजापतिः'। इति।

इन वाक्यों में संवत्सर को प्रजापति कहा गया है। प्रजापति सूर्य का नाम है क्योंकि यह समय के अनुसार गरमी सरदी और वर्षा आदि के द्वारा प्रजाओं का पालन करता है। इस से स्पष्ट है कि यहां सूर्य को ही द्वादश मासात्मक संवत्सर कहा गया है, यही बात सिद्ध करती है कि सौर वर्ष के बारह महीनों का पूर्ण ज्ञान प्राचीन आर्यों को था।

इस के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थों में सैंकड़ों जगह 'द्वादशादित्याः' यह वाक्य आता है। इस में स्पष्ट सूर्य का वाचक आदित्य शब्द पढ़ा हुआ है। और उस को बारह बतलाया है; ये बारह भेद बारह राशियों के आधार पर ही कल्पित किये गये हैं।

पूना के आनन्दाश्रम से १८९६ ईसवी सन् में प्रकाशित सायणभाष्य सहित ऐतरेय ब्राह्मण के ६०, ७५, १००, १२३, १२६, १३६, २७८, २८४, ३९७ और ४८१ पृष्ठों पर सौर वर्ष के बारह मासों का स्पष्ट वर्णन है। इन के साथ छः ऋतुओं का भी स्पष्ट वर्णन है।

इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण की चौथी पञ्चिका के उन्नीसवें अध्याय के चौथे खण्ड में स्पष्ट रूप से छः ऋतुओं का वर्णन आता है; वर्णन बड़ा मज़ेदार है, देखिये :—

'दीक्षा वै देवेभ्योऽपाक्रामत्तां वासन्तिकाभ्यां मासाभ्यामन्वयुञ्जत तां वासन्तिकाभ्यां मासाभ्यां नोदाप्नुवंस्तां ग्रैष्माभ्यां तां वार्षिकाभ्यां तां शारदाभ्यां तां हैमन्तिकाभ्यां मासाभ्यां नोदाप्नुवंस्तां शैशिराभ्यां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मासाभ्यामन्वयुञ्जत तां शैशिराभ्यां मासाभ्यामाप्नुवन्'। इति।

यहां पर द्वादशाह सत्र में दीक्षा के काल विशेष को बतलाने के लिये स्तुतिरूप अर्थवाद का अनुसरण किया गया है--कथानक की कल्पना भी क्या मज़ेदार की है—एकबार दीक्षा स्त्री का रूप धारण कर देवों के यहां से रूठ कर भाग चली, और वह वसन्त ऋतु के दो महीनों के साथ जा ठहरी, देवताओं ने पकड़ने के लिये उसका पीछा किया; परन्तु वह भी एक ही चालाक थी, उस ने देखा कि देवता मेरा पीछा कर रहे हैं, वह वहां से भी टरक गई। आख़िर वह ग्रीष्म ऋतु के दो महीनों के पास पहुंची, वहां भी देवता उसे न पकड़ पाये। वह आगे चलकर वर्षा ऋतु के दो महीनों के पास पहुंची, पर फिर भी देवताओं के हाथ न लगी। इस के बाद वह शरद ऋतु के दो महीनों के पास पहुंची, और फिर हेमन्त के दोनों महीनों के पास पहुंची, पर अभी तक भी वह देवताओं के हाथ न आसकी। पर देवता भी उसे कब छोड़ने वाले थे, वे भी आख़िर को देवता ही थे। बस शिशिर ऋतु में जाकर अन्त में उसे धरदबाया। दीक्षा देवताओं के हाथ आगई। पर कब? शिशिर ऋतु में। इस सम्पूर्ण अर्थवाद का इतने ही में तात्पर्य है कि द्वादशाह सत्र की दीक्षा शिशिर ऋतु में होनी चाहिये। कुछ ही हो, पर इस बहाने से ऋतुओं का वर्णन भी यहां ख़ूब ही आया है। प्रत्येक ऋतु में दो २ महीनों का ज़िक्र है, और ये बारह महीने बारह राशियों के अनुमापक हैं।

इस तरह के वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक स्थलों पर आते हैं, हम ने केवल दो चार स्थलों को उदाहरण रूप से ही अति संक्षेप में दिखलाया है।

अब इन्हीं का मूल वेदों में भी देखियेः—सब से पहिले देखिये, वसन्त ऋतु का वर्णन—यजुर्वेद, अध्याय० १३। म० २

१—'मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि.....'

इस मन्त्र में वसन्त ऋतु के दो महीने बतलाये गये हैं—मधु, और माधव। इस के आगे बहुत मन्त्रों में बड़े विशद रूप से इसी ऋतु का वर्णन किया गया है, विस्तार भय से वह सब हम यहां नहीं लिख सकते।

इस के आगे देखिये ग्रीष्म ऋतु का वर्णन—यजुर्वेद, अध्याय १४, मन्त्र ६, :--

२—'शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि.....'।

इस मन्त्र में ग्रीष्म ऋतु के दो महीनों का नाम लिया गया है--एक शुक्र, और दूसरा शुचि।

आगे देखिये वर्षा ऋतु--यजुर्वेद, अध्याय १४, मन्त्र १५।

३—'नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू अग्नेरन्तः.....'।

नभ, और नभस्य नाम के दो महीने वर्षा ऋतु में होते हैं।

शरद्--यजुर्वेद, अध्याय १४, मन्त्र १६।

४—'इषश्चोर्ज्जश्च शारदावृतू अग्नेरन्तः...'

शरद् ऋतु के भी इष और ऊर्ज्ज दो महीने हुए।

अब देखिये हेमन्त,--यजुः--अध्याय १४, म० २७।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

५—'सहश्च सहस्यश्च हेमन्तिकावृतू अग्नेरन्तः.....'

हेमन्त ऋतु में सह और सहस्य नाम के दो महीने आये।

और अब अन्त में रह गया शिशिर, वह भी देखिये, यजुः अध्याय १५ मन्त्र ५७--

'तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू अग्नेरन्तः.....'

शिशिर ऋतु के दो महीनों का नाम, तप और तपस्य है।

इस प्रकार वेद के इस प्रकरण में छः ऋतुओं का बड़ा विस्तारपूर्वक और स्पष्ट वर्णन है। ख़ास बात यह है कि ऋतुओं के कालकृत क्रम के अनुसार ही वेद में क्रम पूर्वक वर्णन किया गया है। इस में एक बात विचारणीय यह है कि यहां पर महीनों के जो बारह नाम दिये गये हैं, वे सम्प्रति प्रचलित चान्द्र मास के हिसाब से निश्चित किये हुए महीनों के नाम से बिल्कुल नहीं मिलते। आजकल प्रचलित सब से पहिले महीने का नाम चैत्र है। इसका कारण यह है कि ज्यौतिष सिद्धान्त के अनुसार जब पूर्णचन्द्र किसी नक्षत्र पर आता है, तब उस महीने का नाम उसी नक्षत्र के नाम पर होता है। इस लिये जब पूर्णचन्द्र चित्रा नक्षत्र पर होता है, उस से उपलक्षित मासपरिमित काल का नाम चैत्र होता है। इसी प्रकार वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, आदि भी, विशाखा, ज्येष्ठा, अषाढ़ा आदि नक्षत्रों के आधार पर नामकरण किये हुए हैं। परन्तु वेद में जो ये नाम आये हैं, इन का नक्षत्रों से कोई सम्बन्ध नहीं मालूम होता; इस लिये मालूम होता है कि ये नाम चान्द्रमास के हिसाब से नहीं, प्रत्युत सौरमास के हिसाब से हैं। पाठक सन्देह कर सकते हैं कि फिर इन नामों के साथ राशियों का भी ज़िक्र क्यों नहीं? उसका कारण सम्भवतः यही हो सकता है, कि नक्षत्रों की तरह राशि कोई गगन मण्डल स्थित सद्भाव रूप लोक आदि नहीं हैं। ये केवल पृथिवी पर कल्पित रेखाओं के नाम हैं, पृथिवी के घूमने से जिस नाम की रेखा के सामने सूर्य आता है, उपचार से उसी रेखा पर सूर्य का संक्रमण कहा जाता है। इस लिये ही मालूम होता है राशियों के नाम पर महीनों के नाम की कल्पना नहीं की गई। फिर ये नाम किस कारण से रक्खे गये हैं इस की बाबत अभी हम कुछ नहीं लिख सकते। पर इतना निश्चय है, कि इन नामों के साथ नक्षत्रों का कोई सम्बन्ध नहीं, और इसी लिये यह मास गणना चान्द्रमास के हिसाब से नहीं होसकती।

सौर और चान्द्रमास की गणना के अनुसार महीनों के नाम राशि और नक्षत्रों के आधार पर इस तरह प्रकट किये जासकते हैं—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सौर वर्ष			चान्द्र वर्ष	
मास नाम	राशि नाम	ऋतु	मास नाम-	नक्षत्र नाम पूर्ण चन्द्र से उपलक्षित
१—मधु	मीन	१ वसन्त	चैत्र	चित्रा
२—माधव	मेष		वैशाख	विशाखा
३—शुक्र	वृष	२ ग्रीष्म	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा
४—शुचि	मिथुन		आषाढ़	अषाढ़ा
५—नभ	कर्क	३ वर्षा	श्रावण	श्रवणा
६—नभस्य	सिंह		भाद्रपद	भद्रा
७—इष	कन्या	४ शरद्	आश्विन	अश्विनी
८—ऊर्ज्ज	तुला		कार्त्तिक	कृत्तिका
९—सह	वृश्चिक	५ हेमन्त	मार्गशीर्ष	मृगशिरा
१०—सहस्य	धनु		पौष	पूषा
११—तप	मकर	६ शिशिर	माघ	मघा
१२—तपस्य	कुम्भ		फाल्गुन	फल्गुनी

इस से प्रतीत होता है कि आर्य लोग प्राचीन काल में दोनों तरह की काल गणना को अच्छी तरह जानते थे।

एक बात और भी है, वेदों में बारह महीनों के अतिरिक्त एक तेरहवें महीने का ज़िक्र आता है। इसकी कल्पना ज्यौतिष शास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार चान्द्र गणना के क्रम में ही हो सकती है। इसका कारण यह है कि चान्द्र मास में तिथिक्षय होने से कभी २ दिन कम हो जाते हैं, उस कमी को निकालने के लिये तीसरे वर्ष एक अधिक महीना मान लिया जाता है। इस का नाम अधिमास या मलमास भी है। यजुर्वेद में इस का नाम 'अंहसस्पति' इस रूप में आया है। यह नाम 'अंहस्पति' होसकता है। परन्तु वेद में षष्ठी का लुक् न करके 'अंहसस्पति' ऐसा ही रक्खा है। अंहस् शब्द का अर्थ पाप है, इस अधिक मास में धर्म शास्त्र और कल्प सूत्रों के अनुसार यज्ञ आदि प्रत्येक शुभ अनुष्ठानों के करने का निषेध है। इसी लिये मालूम होता है इस महीने के लिये यह नाम दिया गया है। यह शब्द यजुर्वेद के सातवें अध्याय के तीसवें मन्त्र में, और बाईसवें अध्याय के इकत्तीसवें मन्त्र में आया है। प्राचीन वेद के भाष्यकारों ने इस का अर्थ 'त्रयोदशो मासः' (तेरहवां महीना) यही किया है। वेद में इस अधिक मास के लिये दो शब्द और भी आते हैं, एक 'संसर्प' और दूसरा 'मलिम्लुच'। चिन्तामणि विनायक वैद्य ने एक स्थल पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं समझ गई मालती मेरे ध्यान को दूसरी ओर आकर्षित करना चाहती है। मैं बोली—बहिन, न जाने कितने बार इस प्रकृति—सौंदर्य की ओर देखकर मैं प्रसन्न नहीं हुई। परन्तु आज तुम्हारी आत्म-कहानी सुनने की बड़ी लालसा है।'

वह मलिन मुख किये बोली—'तो सुनो'।

(२)

नीले आकाश में मेघ के दो तीन टुकड़े दौड़ लगा रहे थे। वे चन्द्र को छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे। चन्द्र उन के खेल को देख कर हंस रहा था। मालती ने अद्भुत ढंग से आत्म कहानी शुरू की :—

"मैं अपने लिये कल्पना द्वारा एक सुन्दर सुख सदन बना रही थी। मेरी मामी के हाथ लगते ही वह चूर २ होकर गिर पड़ा। मैं अनाथिनी मामा के आश्रय में रहती थी। माता पिता की तभी मृत्यु होगई थी, जब मेरी अवस्था ७। वर्ष की थी। पति देव के अनन्तविरह के पश्चात् जिस तरह आर्य महिला का संसार सूना हो जाता है उसी तरह मेरा तो अनुभव है कि माता पिता की मृत्यु के बाद कुमारी कन्या को इस पृथ्वी में अंधकार ही अंधकार दिखाई पड़ता है। मामा के यहां मुझे सुख नहीं था। मामी मुझे घृणा की दृष्टि से देखती। मैं उनके लिये एक भारी बोझ की तरह थी। मेरे पालन पोषण का भारही उनके लिये असह्य था, तो उन्हें मेरे विवाह की कितनी चिन्ता रही होगी इसका अनुमान तुम स्वयं कर सकती हो। उनकी भी दो छोटी २ लड़कियां थीं। इस लिये वे मेरे ही लिये बहुत रुपये ख़र्च करके कहां से योग्य वर ढूढ़ कर लाते। इसके लिये मैं मामा को अपना दोषी नहीं ठहराऊंगी, जितना कि अपने जघन्य समाज को।

मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगी। सुनो विहारी एक धनवान का लड़का था, सुन्दर था। पिता के आवश्यक से ज्यादा लाड़ प्यार के कारण वह कुछ भी न पढ़ सका। सड़क पर बांसरी बजाते, गीत गाते घूमा करता था। मेरे हृदय के उच्चासन पर उसी की मूर्ति विराजमान थी। कितने बार मैंने कल्पना नहीं की कि मैं वधू हूं और वह वर—मामा के आंगन पर आम के हरे २ पत्तों का मंडप बना हुआ है—आकाश में चन्द्र चमक रहा है—स्त्रियां मंगलगीत गारही हैं और हम दोनों का विवाह हो रहा है। इस विवाह संम्बन्ध के लिये कौन सी आपत्ति थी मैं नहीं जानती! मैंने एक संगिनी के द्वारा अपनी मामी को सब बातें बतलादी वह सब सुन कर हंसती रही। शायद मामा ने एक धनवान बरात और विवाह के सब खर्च की कल्पना करके मामी से कहा—'लड़कियों को इतनी स्वतंत्रता नहीं देनी चाहिये कि वे स्वयं अपना विवाह सम्बन्ध ठीक करलें'। इसे सुन कर मेरा सारा शरीर क्रोध से जल उठा।

भारी विपद की आशंका से मेरी छाती बार २ धड़कती थी। अंत में वही हुआ। एक दिन मैंने मामा के लगाये हुए विवाह से साफ इन्कार कर दिया। मामी ने मेरे पास एक चिट्ठी को फेंक कर क्रोध पूर्वक कहा—'जिसे इतना अभिमान है, वह देख ले इस पत्र में क्या है?' मैंने देखा, सर्वनाश! यह वही प्रेम भरी चिट्ठी थी जिसे मैंने बिहारी के लिये लिखा था परन्तु उस के पास संकोचवश न भेज सकी थी। मामा ने कहा—'यह कितना घृणास्पद है, कितना लज्जास्पद है!'

मेरे हृत्पिन्ड की गति मानो रुक गई। मैं अपने कमरे में जाकर पड़ी रही। मन में कहा 'समाज एक कुमारी बालिका के इस व्यवहार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को घृणित समझता है, मैं तो ऐसा नहीं समझती। विहारी के विवाह में उस के पिता को हजारों रुपये की आशा थी! भला उन्हें कब यह बात अच्छी लगती कि मैं, एक निर्धनता की मूर्ति, बिहारी की अर्धाङ्गिनी होकर अपने को सौभाग्यवती समझती। तुम हँसोगी--मन में कहोगी 'कहीं कलियुग में भी सावित्री का जन्म हुआ है?' परन्तु मैं सच कहती हूं कि किसी दूसरे पुरुष का पाणि-ग्रहण करना मैं अधर्म समझती थी। इसी लिये मैंने इस समाज के आश्रय में रहकर किसी दयावान वृद्ध पुरुष का पाणि-ग्रहण करके सदा के लिये विधवा जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा मर जाना ही ठीक समझा। इस समाज की वेदी पर कई एक पतिव्रता की मूर्ति, पूजनीय बालिका की बलि नहीं चढ़ाई गई, परन्तु अब भी वह संतुष्ट नहीं हुआ है!

उसी दिन विहारी ने सब सुना और अन्त में कहा--'तुम्हारी मृत्यु के बाद मेरा जीवन भी सदा के लिये अन्धकार पूर्ण हो जावेगा। पिता जी क्रोधित होंगे, जाति-भाई उपेक्षा की दृष्टि से देखेंगे परन्तु मुझे किसी का डर नहीं है। मैं तुम्हें आश्रम दूंगा।'

वह मेरा हाथ पकड़ कर ले गया। मैं उसके साथ २ चल पड़ी।

हम दोनों घर छोड़कर बहुत दूर चले आये।

मैं समझती थी कि हम दोनों के हृदय में पवित्र प्रेम की एक धारा बह रही है। परन्तु मैं भूल करती थी।

एक वर्ष बीत गया।

विहारी को चिन्तित देख कर मैं बहुत दुखी होती। कई बार उसका कारण पूछती रही, परन्तु उत्तर सुनकर संतुष्ट नहीं हुई। मुझे मालूम हो गया कि उस चिन्ता के भीतर अवश्य ही कोई रहस्य छिपा हुआ है।

और २ दिनों की अपेक्षा बिहारी को देर करते देख मुझे कुछ घबराहट मालूम हुई। रात्रि व्यतीत हो रही थी। भोजन ठण्डा हो चुका था। अन्त में मैं उस के कमरे में लेम्प जला कर बैठ गई। अकस्मात् मेरी दृष्टि एक चिट्ठी पर पड़ी। एक बार अन्त तक पढ़ चुकी - सामने शून्य स्थान की ओर देखते हुए कहा--हे ईश्वर यह कैसी निष्ठुरता!'

उस पत्र में लिखा था --'मालती, मेरे विषय में और कुछ जानने का प्रयत्न न करना। अच्छा हो यदि फिर हमारा तुम्हारा मिलन न हो।'

मैं रात भर सोचती पड़ी रही। जिस के लिये मैं सर्वस्व खोने के लिये तैयार थी उसने मुझे बीच दुख सागर में लाकर छोड़ दिया। जिस के सुख के लिये मैं अपना प्राण तक अर्पण कर सकती थी उसका ऐसा निन्दित व्यवहार! मैं उस का कारण न समझ सकी।

उस दुख पूर्ण रात्रि के बाद उषा नवीन आशा लेकर आगई। मैंने बड़े कष्ट से माता वसुन्धरा को प्रणाम किया और उठ बैठी।

कमरे में कुछ चिट्ठियों के टुकड़े बिखरे हुए थे। मैं उन सब को एक में मिला कर पढ़ने का प्रयत्न करने लगी। मुझे बहुत कुछ सफलता मिली। मैं समझ गई कि बिहारी के पिता ने उसे पत्र भेजकर घर आने के लिये बहुत अनुनय विनय किया है। एक जगह उन्होंने लिखा था-'मालती को अपने किये का फल पाने दो, उस के लिये हमारे समाज में स्थान नहीं है। तुम घर लौट आओ। तुम्हारे लिये तुम्हारी माता रात दिन रोती रहती है।' यदि बिहारी इस पत्र का वैसा ही उत्तर देता जैसा कि मैं सोचती थी तो मुझे कुछ भी दुःख न होता। परन्तु मैं देखा कि बिहारी के ही अक्षरों में एक काग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240

वर्ष ३] मार्गशीर्ष १९७९—दिसम्बर १९२२ [खण्ड ३, संख्या ८

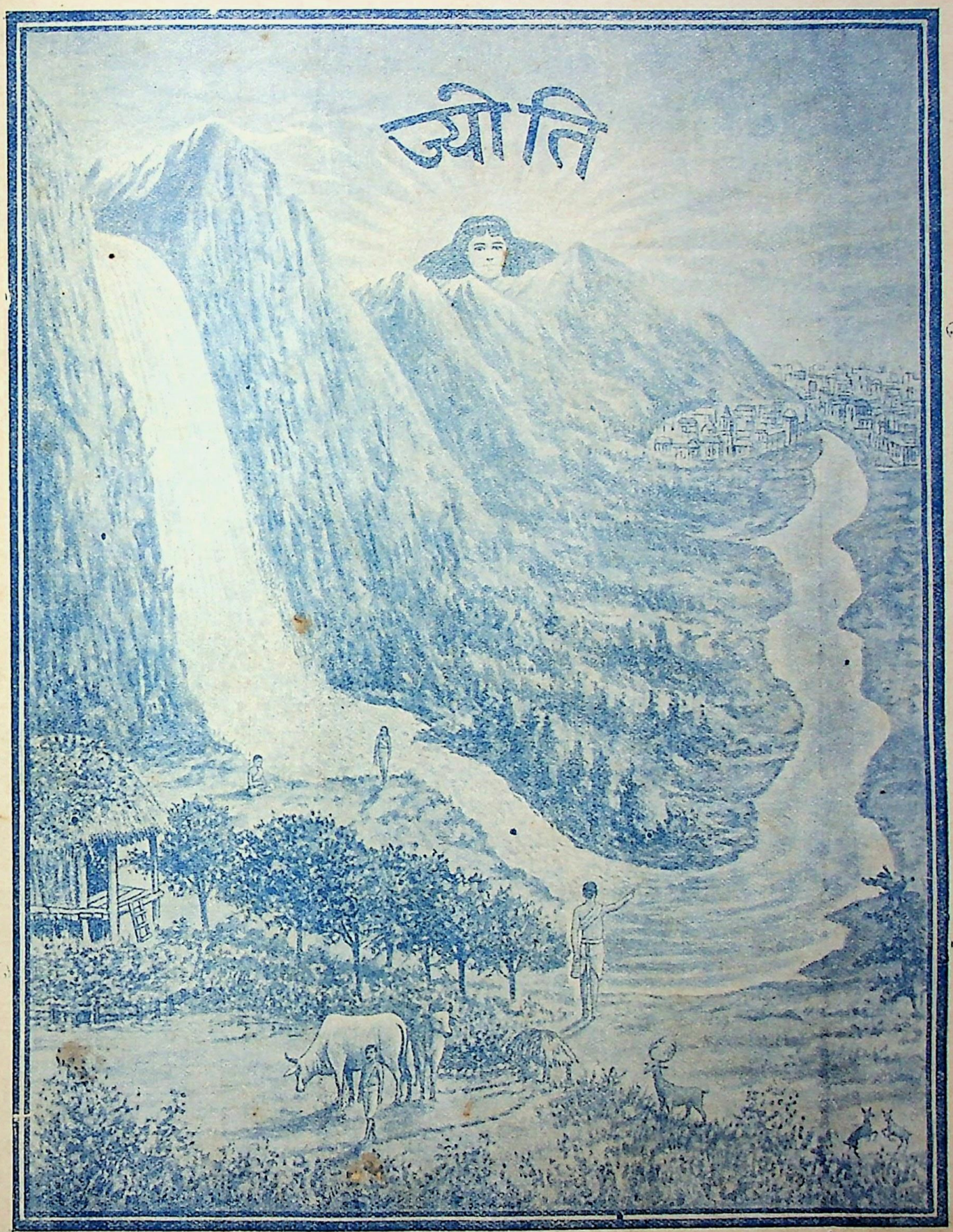

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए. विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ
१—ज्योति [कविता] ले०—श्री० गोविन्द दास गुप्त	३९५
२—हमारी वर्त्तमान स्थिति, ले०—श्रीयुत ठाकुर शिवनन्दनसिंह	३९६
३—मित्र-मिलन [कविता] ले०—श्रीयुत "नयन"	४०६
४—कविता की भाषा, ले०—श्रीयुत मदन	४०६
५—ग़रीब की गुदड़ी, [कविता] ले०—एक राष्ट्रीय आत्मा	४१०
६—कश्मीरदेश की सामाजिक अवस्था, ले०—श्रीयुत वंशीधर विद्यालंकार	४११
७—याचना, [कविता] ले०—श्री० हरिशंकर भट्ट बी. ए.	४१५
८—विचित्र खद्दर-प्रेमी, ले०—श्रीयुत जगन्नाथ जी "मनुज"	४१६
९—समालोचना का नवीन सिद्धान्त, ले०—श्रीयुत पं० जगन्नाथ प्रसादचतुर्वेदी	४१८
१०—अरस्तू की राजनीति, ले०—श्रीयुत प्रो० प्राणनाथ विद्यालंकार	४१८
११—कुसुमोद्यान ।	४२३
१२—वैज्ञानिक संसार ।	४३०
१३—वनिता विनोद ।	४३३
१४—हमारी मञ्जूषा ।	४४३
१५—विचार प्रवाह ।	४४६

ग्राहकों के लियेः—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी ।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का आ० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है ।
६ मास के लिये २॥) है ।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित आ० वार्षिक मूल्य ६) है ।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है ।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है ।

पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है ।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है । बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे । पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि-आर्डर द्वारा भेजें । वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है । आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे ।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये ।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये । परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेजर "ज्योति" लाहौर के पते से आने चाहिये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

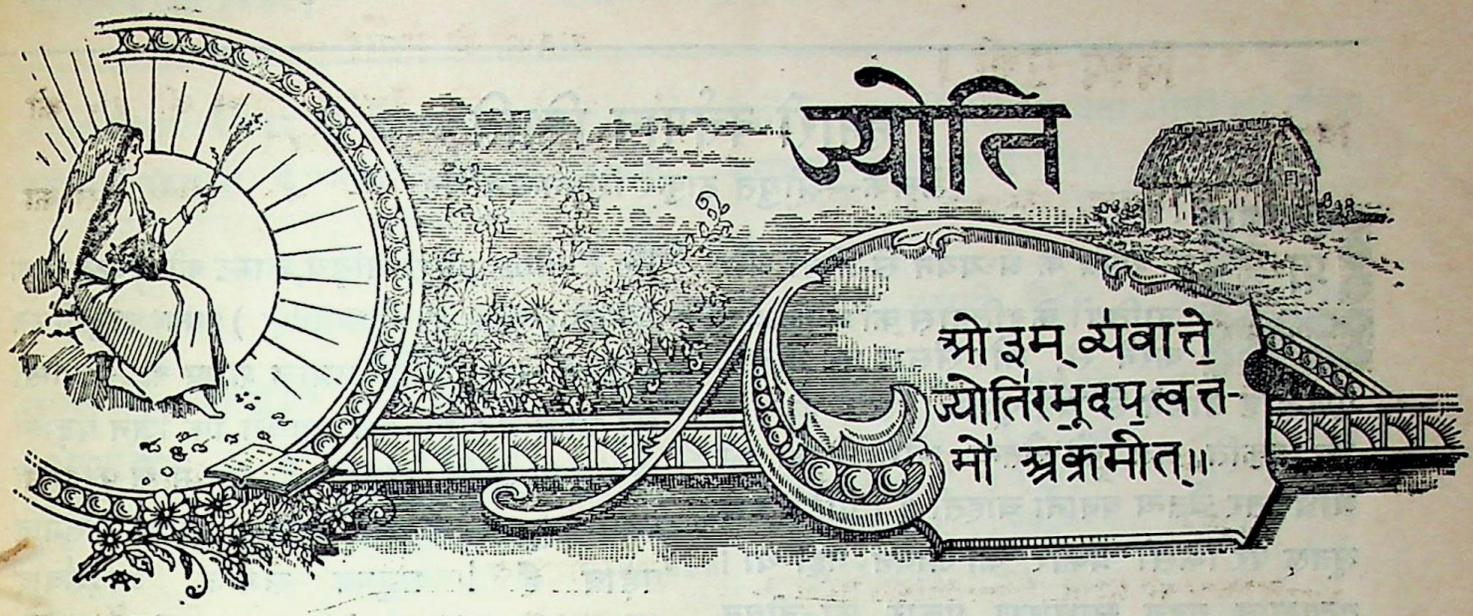

वर्ष ३ | मार्गशीर्ष १९७९—दिसम्बर १९२२ | संख्या ८

❀ ज्योति ❀

लेखक—श्री० गोविन्ददास गुप्त

ज्योति ! जगादे सोये भाव,
हिन्दी के हित होवे चाव।
सीखें करना दूर अभाव,
आज रङ्क कल होंगे राव॥
अनन्तेश के हम हैं अंश,
आर्य प्रसिद्ध हमारा वंश।
तिमिर अविद्या कर विध्वंस,
दे विवेक रखता जो हंस॥
छुपा हमी में सारा भेद,
सब रंग रखता रङ्ग सफ़ेद *।
साक्षी सभी विज्ञवर वेद,
खोजैं "मैं क्या"? छोड़ें खेद॥

* विज्ञानयों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सूर्य की सफ़ेद किरण में सातो रंग हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी वर्त्तमान स्थिति

लेखक—श्रीयुत ठाकुर शिवनन्दनसिंह

प्राणी शास्त्र के अध्ययन से, जीवों और जातियों के इतिहास का अवलोकन करने से, और संसार पर विचार पूर्ण दृष्टि डालने से यह पूर्णतः सिद्ध होता है कि प्रकृति, जड़ को चैतन्य और चैतन्य को अधिकतर चैतन्य बनाना चाहती है। पहिले इस भूतल पर किसी प्रकार का जीवन नहीं था। तत्पश्चात् बहुत साधारण प्रकार का जीवन उत्पन्न हुआ। इसके अनन्तर धीरे धीरे जीवन बढ़ता गया और अधिक विकसित होता गया। समस्त प्राणियों के देखने पर यदि कोई बात स्पष्ट जान पड़ती है तो यह कि जीवन बढ़ना, फैलना, अधिक उन्नति और पेचीदा होना चाहता है।

इसी निरन्तर उन्नति के सिद्धान्त के मार्ग पर मानव-जाति का चलना भी माना जाता है। विकास-वादियों का मन्तव्य है कि मनुष्य-जाति ने बराबर उन्नति की है। इस समय मनुष्य-जगत के सभ्य भाग की जो दशा है वह इतिहास की अन्य दशाओं से बहुत श्रेष्ट है। नये जगत का आचार-विचार, आहार-विहार, शिक्षा-संस्कार सभी कुछ अब से पूर्व की सब अवस्थाओं से श्रेष्ट तथा उत्तम माना जाता है। आज तक मनुष्य-जाति की जो गति रही है उस की तह में विकासवादी, उन्नति के सिद्धान्त को काम करते हुए देखते हैं। उन का मत है कि भौतिक और प्राणी-जगत, अवस्थाओं की अनुकूलता और निर्बलों के नाश द्वारा निरन्तर उन्नति करता जा रहा है। आप ग्रीन आदि आदर्श वादियों को लीजिये, हर्बर्ट स्पेन्सर आदि विकासवादियोंका सयोगात्मक दर्शन(Synthetic Philosophy) पढ़िये, काम्टे की प्रत्यक्षात्मक (Positive Philosophy) का अनुशीलन कीजिये, सब जगह समाज शास्त्र के सिद्धान्तों की खोज में आप यह पावेंगे कि जिन पड़ावों से मनुष्य-जाति गुज़री है, उन में से कोई भी इतना सुन्दर न था, जितना सुन्दर वर्त्तमान पड़ाव है! मनुष्य समाज आदर्शवाद (Theological) युग से, प्रत्यक्षवाद (Positive) युग में प्रवेश कर रहा है। इस समय की अवस्था, अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा आदर्श के अधिक समीप है, और जिस मार्ग पर अब तक मानव-जाति चलती रही है यदि उसी पर निरन्तर चलती रही तो किसी दिन आदर्श तक पहुंच जाने में सन्देह नहीं है।

समाज-शास्त्र के कुछ धुरन्धर पण्डितों का अटल विश्वास था कि संसार, असभ्य सग्राम युग से गुज़र कर अब व्यापार-युग में आगया है। इस युग ने लोगों की स्वार्थ-बुद्धि को इतना परिष्कृत कर दिया है कि अब वह लड़ाई जैसे निकम्मे काम में हाथ नहीं डाल सकते। इस मत को उन्होंने बड़े विस्तार, विचार तथा अकाट्य युक्तियों से सिद्ध किया था। किन्तु, यूरोपीय महायुद्ध ने इस सिद्धान्त रूपी सुन्दर और सुगठित आकाश भवन को पृथ्वी पर गिरा कर चकनाचूर कर दिया। प्रकृति वाद (Materialism) से उन्नति करके आध्यात्मिक या एकेश्वर वाद (Spiritualism) और आदर्श के अधिक समीप पहुंचे हुए मनुष्य-समाज ने एक करोड़ निज भाइयों के रक्त से पृथ्वी को रङ्ग दिया, तराबोर कर दिया भिगो दिया। अमेरिका के प्रोफ़ेसर ई० एल० बोगर्ट ने एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नक़शा तैयार किया है जिस के अनुसार इस यूरोपीय महायुद्ध में भाग लेने वाले समस्त देशों के हताहतों और लापता लोगों की संख्या लगभग एक करोड़ है †।

(मित्र राष्ट्र)

† नाम देश	मृतकों की ज्ञात संख्या	ज़्यादा ज़ख़मी	मामूली ज़ख़मी	कैदी	प्रत्येक देशका जोड़
संयुक्त प्रदेश अमेरिका	१,०७२८४	४३,०००	१,४८,०००	४,९१२	३०,३,१९६
*ग्रेट वृटेन	८ ०७,२२१	६,१७ ७३०	१४,४१,३९४	६४,९०७	२९,३१,२६२
फ्रांस ...	१४ २७,८००	७ ००,०००	२३,४४,०००	४ ५३,५००	४९,२५,३००
रूस	२७,६२,०६४	१०,००,०००	३९,५०,०००	२५,००,०००	१०२,१२,०६४
इटली	५,६०,१६०	५,००,०००	४,६२,१९६	१३,५२,०००	२८८१,३५६
बेल्जियम	२,६७ ०००	४०,०००	१,००,०००	१०,०००	४,१७,०००
सर्विया	७,०७ ३४३	३,२२,०००	२८,०००	१०,०,०००	१०,५६३४३
रूमानिया	३,३९,११७	२,००,०००	× × ×	१,१६,०००	६,५५,११७
ग्रीस	१५,०००	१०,०००	३०,०००	४५,०००	१,००,००
पुर्तगाल	४,०००	५,०००	१२,०००	२००	२१,२००
जापान	३००	× × ×	९०७	३	१,२१०
	६९,३८,५२९.	३४,३७,७३०.	८५,१६,४९७.	४६,५३,५२२.	२,३५,०४,०३८.

(शत्रु राष्ट्र)

जर्मनी ...	१६,११,१०४	१६,००,०००	२१,८३,१४३	७,७२,५२२	६१,६६,७६९
आस्ट्रिया हंगरी	९,११,०००	८५०,०००	२१,५०,०००	४,४३०००	४३५४,०००
टर्की	४,३६,९२४	१,०७,७१२	३,००,०००	१,०३,७६१	९,४८,३९५
बलगेरिया ...	१,०१,२२४	३,००,०००	८,४२,३९९	१०,८२५	१२,५४,४४८
	३०,६०,२५२	२८,५७,७७२,	५४,८५,५४२.	१३,३०,०७८.	१,२७,२३,६३२
पूर्ण योग	९९,९८,७८१.	६२ ९५,५१२.	१,४०,०२,०३९.	५९,८२,६००.	३,६२,२७,६७०.

*ग्रेट वृटेन की सहायता सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, उसके आधीन देशों ने इस प्रकार की:—

नाम देश	विविध रणक्षेत्र में आदमी भेजे	मृतकों की संख्या
न्यूज़ीलैण्ड	... २,२७,२२५ ...	१६,१३६
आस्ट्रेलिया	... ४,१३,४५३ ...	३६,३३०
कैनेडा	... ६,८३,१७० ...	५६,६२६
	१२,२३८,४८ ...	१३२०९२
अकेले भारत ने	१७,०१,३०५ ...	१००००[1]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह केवल हताहतों की संख्या का खुला हुआ ब्योरा है अन्य रूप से विचार करने पर यह संख्या चौगुनी प्रकट होती है। कोपेनहेगेन की एक विश्वसनीय संस्था ने युद्ध के बाद की अवस्था का अध्ययन करके रिपोर्ट तैयार किया है जिस में दिखाया है कि यूरोप में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या जितनी अधिक होगई है उस से ज्ञात होता है कि इस महायुद्ध में कम से कम चार करोड़ मनुष्यों की मृत्यु हुई! यहीं तक बस नहीं, 'दिनेक्सट वार' नामक पुस्तक में विल इर्विन साहब ने लिखा है कि विगत महा-युद्ध में केवल एक करोड़ सैनिक और तीन करोड़ नागरिक की मृत्यु मानना भ्रम जनक है। ये अपने युग के चुने हुये प्रायः अविवाहित पुरुष थे। इनकी मृत्यु से राष्ट्र, इनकी सन्तति से सदैव के लिए वञ्चित हो गया। करोड़ो मनुष्य, युद्ध जनित व्याधियों रोगों और कष्टों के कारण काल के ग्रास बने हैं। इसके अतिरिक्त रुग्ण और अपाहिज सैनिकों की एक बड़ी संख्या है। इन सब प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जनहानि का ठीक ठीक हिसाब लगाना इस समय असम्भव मात्र है। जो राष्ट्र विगत महायुद्ध में सम्मिलित हुये थे उनकी जन संख्या ठीक होने में सदियां लग जायंगी। रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया, टर्की आदि तो बिलकुल अस्त व्यस्त हो गये हैं।

सुप्रसिद्ध अङ्क-शास्त्रज्ञ क्रैमण्ड साहब महा युद्ध से होने वाली प्रत्यक्ष साम्पत्तिक क्षति को अनुमानतः सात अरब रुपया बताते हैं। यह क्षति इतनी विविध है कि इसके ठीक ठीक मूल्य का हिसाब लगाना असम्भव है। बेलिजयम, फ्रांस, रूस, पोलैण्ड, रूमानिया आदि में जो अनेक प्रदेश नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये हैं उनसे होने वाली क्षति का हिसाब कैसे लगाया जा सकता है। जो अनेक पुस्तकालय भस्म कर दिये गये हैं उनकी क़ीमत क्या आंकी जा सकती है। अकेले फ्रांस में ही खेती करने योग्य भूमि का आठ हज़ार वर्ग मील लम्बा चौड़ा प्रदेश नष्ट कर दिया गया है और पांच लाख इमारतें विध्वंस करदी गई हैं। रूस २७ लाख से ऊपर सैनिकों की भेंट युद्ध को दे चुका है। महाशय आर्थर रैन्सम ५३०० मील की परिक्रमा उस देश (रूस) में करके जो ब्योरा वहां के अकाल पीड़ितों का देते हैं उसमे भारत के सिवाय सारे संसार का कलेजा हिल जाता है। भारत तो निरन्तर ऐसे कष्टों को भोगा ही करता है। रूस की आधी जन संख्या वस्त्रविहीन है अत्यन्त कड़ी शीत से रक्षा करने के सामान को कौन कहे तन ढाकने तक का सहारा नहीं है। एक करोड़ नरनारी भूखे फिर रहे हैं। बच्चों की हृदय विदारक कथा न कहना ही अच्छा है। वहां ३० से ५० लाख आदमियों की मृत्यु की आशंका है।

नेपोलियन की भयंकर लड़ाइयों से लेकर बालकन की लड़ाई तक उन्नीसवीं शताब्दी में जितनी महत्वपूर्ण लड़ाइयां हुई थीं उन सभों को मिलाकर ५० लाख से भी कम सैनिक

भारतीय जनता तथा कतिपय विद्वानों का, जिन्होंने इस विषय पर मनन किया है सरकार के इस रिपोर्ट पर विश्वास नहीं है। बहुतों का ख्याल है कि महायुद्ध में भारत के ८ से १० लाख तक सैनिक मरे हैं। लेजिसलेटिव काउन्सिल में लार्ड हार्डिंग ने यह भी नहीं बताया कि इस देश से कितने सैनिक विविध रणक्षेत्रों में भेजे गये। यह कह कर टाल दिया कि संख्या बता देने से सर्व साधारण के हित में बाधा पड़ेगी। अब जो सरकार ठीक ठीक मृतकों की संख्या प्रकाशित करदे तो साम्राज्य-संगठन के हित में बाधा पड़ जाय!

लेखक—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हताहत हुये थे । विगत महायुद्ध का ब्योरा उससे कहीं बढ़ चढ़ कर है। आगामी युद्ध के लिए जिस गरमागरमी और शीघ्रता के साथ तैयारियां हो रही हैं उससे स्पष्ट है कि संसार में फिर खून की नदियां बहने वाली हैं। फ्रांस के प्रधान मन्त्री ब्राइएड तथा अन्य कतिपय प्रधान पुरुषों का कथन है कि शीघ्र ही एक विश्वव्यापी युद्ध होगा। अपनी घातकता और व्यापकता में यह युद्ध, विगत महायुद्ध से भी बाज़ी मार ले जायगा ! श्वेताङ्गों के विरुद्ध इस संग्राम में एशिया एक अरब योद्धा रणक्षेत्र में लावेगा ! इस संघर्ष के लिए श्वेताङ्ग लाग डांट के साथ तैयारी कर रहे हैं।

भारत वर्ष में दुर्भिक्ष, प्लेग और हैज़े से जो करोड़ों मृत्युएं हुई हैं वह तो पुरानी कथा है [इसका ब्योरा मेरी पुस्तक—'देशदर्शन" के दुर्भिक्ष और रोग और मृत्यु के प्रकरण में मिलेगा] । नये नये रोग उत्पन्न होरहे हैं और भारत को समूल नष्ट कर रहे हैं। भूमण्डल के प्रायः सभी प्रधान राष्ट्रों के भिड़ जाने से जितने सैनिक पांच वर्षों में मारे गये, अकेले भारत में उतने ही जन की मृत्यु कुल पांच महीने में ही इन्फ्लूएञ्ज़ा ज्वर से होगई ! बृटेन ने समराग्नि में कूद कर निज साम्राज्य में २२ लाख वर्गमील से ऊपर के क्षेत्र फल को जोड़ दिया और पौने चार करोड़ जन पर प्रभुत्व स्थापित किया*। भारत ने उन्हीं रणक्षेत्रों में लगभग १७ लाख योद्धा भेज कर अपने पड़ोसी भाइयों को परतन्त्र बनाया और † "रौलेट एक्ट" ईनाम पाया ! और साथ ही अपने गुलामी की ज़न्जीर को अपने ही हाथों इतनी मज़बूत बना दिया कि उससे छुटकारा पाना अब और कठिन होगया। अपने जिन सधर्मी पड़ोसियों को प्रायः हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने विजय प्राप्त करके गुलाम बनाया है, थोड़े ही दिनों में वे ही पड़ोसी बृटेन के लिए हिन्दुस्तानियों को परतन्त्र बनाये रखने में पूरा सहायता देंगे । थोड़ा हेल मेल बढ़ जाने पर अरब और मैसोपोटामिया, फारिस और मिश्र के सिपाही बृटेन की तरफ़ से हिन्दुस्तान में युद्ध करने आवेंगे और अवश्य आवेंगे।

सारांश यह कि इस भयंकर धन-जन-नाश

---

* बृटिश साम्राज्य का क्षेत्रफल युद्ध से पहिले देशप्रदेश मिला कर १,३१,५३,७१२ वर्ग मील था। विजयी होने पर जो नये प्रदेश मिले हैं उनका ब्योरा इस प्रकार है :—

प्रदेश	क्षेत्रफल वर्गमील	जन संख्या
मैसोपोटामिया	१,४३,२५०	२०,००,०००
पैलेस्टाइन	७७९०	५,४१,६८०
अरब	१,०७,३८०	१०,६०,०००
फारिस	६,२८,०००	९५,००,०००
मिश्र	२,५०,०००	१,२५,६६,०००
जर्मनी के उपनिवेश	१०,२७ ६२०	१,१८,९७, ९२
	२२,६३,०४०	३,७५,६७,६९२

† यह ऐक्ट अब रद्द कर दिया गया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से हम भारतवासियों को जो शिक्षाग्रहण करनी चाहिये वह नहीं करते। प्रकृति जीवों की संख्या अधिक अवश्य किया चाहती है। एक प्राणी के स्थान पर वह अनेक प्राणियों को उत्पन्न करती है। किन्तु एक मात्र गिन्ती बढा कर वह संतुष्ट नहीं होती। वह नीच श्रेणी के जीवों के स्थान पर उच्च श्रेणी के जीवों को स्थापित करना, निर्बल और निकम्मे व्यक्तियों को निर्मूल करके उनकी जगह बलवान और उपयोगी जनों को देना, और सदाचारविहीन जातियों को नष्ट भ्रष्ट करके उनके देश में सदाचारयुक्त जातियों को फूलते फलते देखना ज्यादा पसंद करती है।

प्रत्येक जीव के शरीर में प्रकृति ने असंख्य जीवन के बीज संचय कर रक्खा है। नित्यप्रति वह असंख्य जीवों का विनाश किया करती है। प्रकृति को निरी निठुर और निर्दई मान बैठना अनुचित है। भावी जीवन की तैयारी के लिए, जातियों की उत्तमता में वृद्धि करने के लिए, संख्या की अपेक्षा श्रेष्टता को स्थिर करने के अभिप्राय से करुणहृदया आनन्दमयी प्रफुल्लिता प्रकृति, सहृदयता के साथ इस निर्दयता का विनाशकारी अभिनय खेला करती है!

बच्चा पैदा करना भी सदाचार (Morality) का लक्षण है। इस क्रिया में नाना प्रकार का कष्ट उठाना पड़ता है, स्वार्थ त्याग करना पड़ता है। किन्तु साथ ही जीवों की श्रेष्ठता बच्चा पैदा करके मर जाने में नहीं है। इतना स्वार्थत्याग तो प्रकृति नीच श्रेणी के जीवों से भी करा लेती है। बाज़ हालतों में (जैसे टोड़) समागम के पश्चात् मादा से अलग होते ही नर अपनी जान खो देता है। कोचीनियल की मादा अपने को इतने अंडों से भर लेती है कि उसे जीवन से हाथ धोना पड़ता है। अण्डों की रक्षा के लिए उनका मृतक शरीर थैली का काम देता है। बहुत से जानवर इस क्रिया के लिए साल में एक बार अक्षरशः मत्त हो जाते हैं। इस काल में, केवल इस कामना को छोड़ कर, उनके हृदय में कोई दूसरी कामना नहीं रहती। इस समय नर-मादा का समागम न होना असम्भव हो जाता है। बहुत ही दुर्बल और भीरु जाति के जानवरों के नर, इस समय मादाओं के लिए लड़ते और प्राण तक त्याग देते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार अन्य सभी जीवों की मादाओं का इस क्रिया के लिए उन्मत्त होना और मनुष्य जाति की स्त्रियों का रजस्वला होना दोनों अवस्थाएं एक ही बात की द्योतक हैं। वास्तव में यह जनन क्रिया, वा वंश के कायम रखने की प्रवृति, मृत्यु से भी बलवान है। यह प्रवृत्ति किसी भी जीव पर जब पूर्ण अधिकार जमा लेती है तब वह मृत्यु का भी भय नहीं करता। स्वयम् अपनी इच्छा से मृत्यु के कराल गाल में प्रसन्नता से प्रवेश कर लेता है। ऐसा करा लेना तो प्रकृति की साधारण लीला है, एक मामूली खेल है। जीवों की उत्तमता केवल इस बात पर निर्धारित है कि कौन जीव कितना विवेक इस वंश-वृद्धि तथा वंश को कायम रखने वाली क्रिया में ख़र्च करता है। इस परमावश्यकीय जनन क्रिया में प्रवृत्ति होने के पूर्व तथा सन्तान उत्पन्न होने के पश्चात् जितना ही स्वार्थत्याग, सहृदयता, सदाचार और सावधानी से काम लिया जाता है उतने ही उच्च श्रेणी के जीव में उसकी गणना होती है, और जितने ही उन्मत्तता, अविवेक, अनुत्तर-दायित्व से काम लिया जाता है उतने ही नीच श्रेणी में वह विद्यमान होता जाता है। सद्गुणों के व्यवहार से जीवों का विकास होता है, वे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रमशः उन्नति करते जाते हैं, और इसके विपरीत आचरण से इनका ह्रास, अवनति और अधः पतन भी होता जाता है।

विकाशशास्त्र ने जीवों को कई श्रेणियों में विभक्त किया है। बहुत से जीव ऐसे हैं कि जिसमें लैङ्गिक भेद (Difference of sex) अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है। उनमें नर और मादा दो न होकर एक ही किस्म होती है। बैक्टिया नामक इस प्रकार का अति सूक्ष्म कीट कुछ मिनटों में ही लाखों पैदा हो जाते हैं। एक बैक्टिया का शरीर आप से आप सैकड़ों टुकड़ों में फट जाता है और प्रत्येक टुकड़े से उसकी सन्तति उत्पन्न होती है, जो फिर फटती और अपना जीवन खोकर अपनी किस्म बढ़ाती है। कुछ ऐसे जीव हैं जिनके शरीर में नर और मादा दोनों के अवयव विद्यमान हैं। ये लैङ्गिक भेद न रखने वाले जीवों से उच्च हैं किन्तु, हैं ये बहुत ही नीचे दर्जे के जीव।

कुछ जल और स्थल पर समान रूप से रहने वाले जीव हैं। जैसे घड़ियाल आदि (Amphibia), या जो पेट के बल चलते हैं जैसे गिरगिट आदि, (Reptiles) इन्हें अपने अण्डों के सेने की जरूरत नहीं होती है, सूर्य्य की गर्मी से अपने आप बच्चे निकल आते हैं। कुछ ऐसे जीव हैं जिन्हें रात दिन बड़ी सावधानी से अपना अण्डा सेना पड़ता है। ज़रा भी सुस्ती करने से अण्डे गन्दे हो जाते हैं। बाज़ों को महीने भर तक इस प्रकार अण्डों को बचाना पड़ता है, तब कहीं उनमें से बच्चे पैदा होते हैं। परन्तु माता पिता का काम यहां समाप्त नहीं हो जाता। नन्हे से पूर्णतः निरवलम्बी और विवस बच्चे को चोंच से भोजन खिलाना पड़ता है। इस प्रकार उनकी रक्षा करने पर वह आंख खोलते हैं, खसकना सीखते हैं और फिर चलना फिरना या उड़ना आरम्भ करते हैं। प्राणी शास्त्र के विद्यार्थी बतलाते हैं कि ज्यों २ जीवों का विकास होता है, ज्यों २ वह नीच श्रेणी से उच्च में प्रवेश करते हैं त्यों त्यों अपनी सन्तति की ओर उनकी जिम्मेवारी बढ़ती जाती है।

जन्म लेने के समय सभी ऊंचे दर्जे के जीव, नीचे दर्जे के जीवों से, अपेक्षाकृत असहाय रहते हैं। परन्तु बड़े होने पर ये ही जीव, नीची जाति के जीवों पर विजय प्राप्त करते हैं तथा उन्हें अपने सुख और आराम का साधन बनाते हैं। घड़ियाल का ६, ७ इञ्च का बच्चा अण्डे से निकलते ही अपना भोजन तलाश कर लेता है। कौआ, घड़ियाल से ऊंचे दर्जे का जीव है। उसे अपने अण्डे तथा बच्चे की, घड़ियाल से अधिक देख रेख करनी पड़ती है। बन्दर कौवे से अधिक विकसित जीव है, अतः उसे अपने बच्चे के लिए अपने ही तन के दूध से सहारा देना पड़ता है। कौवे के बच्चे से अधिक अपने बच्चे की देख रेख करनी पड़ती है। इन सब श्रेणियों के बाद जब हम सृष्टि के स्वामी मनुष्य तक पहुंचते हैं तो उस के बच्चे को इन सभी जीवों के बच्चों से कहीं अधिक निरवलंबी और असहाय पाते हैं। एक ही अवस्था में यदि मनुष्य के बच्चे को अन्य जीवों के बच्चों के साथ जीवन संग्राम में मुक़ाबले के लिए छोड़ दिया जाता तो क्या इस विस्तीर्ण भूमण्डल पर एक भी मनुष्य देखने में आता ? परन्तु, अन्त में विजय किस की होती है, लाखों अण्डा देने वाले मछली और सर्प की, अण्डा देकर पास न फटकने वाले घड़ियाल और गिरगिट की, कुछ दिनों तक अण्डा सेने और बच्चों को दाना चुगाने वाले कौवे और कबूतर की, महीनों दूध पिलाकर जिलाने वाले बन्दर, गाय, भैंस,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और शेर की, या वर्षों तक पाले पोसे जाने वाले पूर्णतः असहाय मनुष्य के बच्चे की? सारांश यह कि जिस जीव के लालन पालन में जितनी ही सावधानी की आवश्यकता होती है, वह जीवन संग्राम में अन्य जीवों की अपेक्षा उतनी ही अधिक श्रेष्ठता प्राप्त करता है। साथ ही, उन्नति के पथ पर जीव जितना ही अग्रसर होता है उतना ही उसे सन्तान कम होती है, परन्तु, शक्तियों के विकास के कारण उस की सन्तान जीवन संग्राम में अधिक श्रेष्ठता प्राप्त करती है।

प्राणियों की उत्पत्ति और विकास के इस संक्षिप्त कथा का अर्थ यह है कि जीवों का इतिहास जातियों के इतिहास से बिलकुल लागू और मिलता जुलता है। जीव, जिन जिन अवस्थाओं से पार होकर श्रेष्ठता तथा उच्चता को प्राप्त करते हैं, जातियों को भी ठीक वैसे ही उन्नति अवनति के मार्ग की यात्रा करनी पड़ती है, उन के जीवन में भी वे अवस्थाएं व्याप्त होती हैं। व्यक्तियों से ही जाति बनती है। जिस देश, जाति वा राष्ट्र के व्यक्तियों की शिक्षा और दीक्षा में, लालन और पालन में, सदाचार और सस्कार में, जितना ही अधिक कष्ट उठाया जायगा, जितना धन, श्रम और बुद्धि उन पर ख़र्च की जावेगी, उतनी ही उन की श्रेष्ठता भी उत्तरोत्तर बढ़ती जायगी; और घड़ियाल या गिरगिट के समान बच्चा पैदा करके उन के लालन, पालन का उचित प्रबन्ध न करने वाली जाति पर प्रभुत्व स्थापित करेगी, हुकूमत करेगी, और पशुओं के समान, अपने आराम, अपने गौरव, अपने ऐश्वर्य्य की वृद्धि में उन से काम लेगी, कठपुतली की तरह उङ्गलियों के इशारे पर उन्हें नचाया करेगी और वे नाचेंगे।

लण्डन की एंग्लो ईस्टर्न पवलिशिङ्ग कंपनी ने 'दि न्यू रेस आफ़ डेविल्स' (The New Race of Devils) अर्थात् 'शैतानों की नवीन जाति, नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है। इस के लेखक जान बर्डनार्ड हैं। इस पुस्तक में बताया गया है कि विशेष कृत्रिम उपायों द्वारा एक नवीन जाति के दैत्य, दूसरे शब्दों में मनुष्य के रूप में शैतान किस तरह उत्पन्न किये जा सकते हैं। इन मनुष्य तनधारी दैत्य वा शैतानों में मानोचित गुणों का सर्वथा अभाव रहेगा परन्तु, इन की शक्ति जड़ मशीनों की भांति भयंकर विनाशकारी और घातक होगी। ग्रन्थकार महाशय लिखते हैं कि इस जाति का उत्पन्न करना केवल सम्भव ही नहीं है बल्कि जर्मनी ने आज कल इस नवीन भयकर जाति को उत्पन्न करना भी आरम्भ कर दिया है।

हमारे देश में देव और दानव, सुर और असुर, मानव और राक्षसों के संग्राम की कितनी ही कथाएं अब तक विद्यमान हैं। ये दानव, दैत्य और राक्षस सींग, पूंछ और अनेक सिर वा हाथ वाले जानवर नहीं थे। सहस्र-बाहु और दशकन्धर का यह अर्थ लगाना कि किसी व्यक्ति की भुजाओं से एक हज़ार हाथ वृक्ष की शाखा के समान निकले थे अथवा यह कि रावण की गर्दन पर दस शिर जोड़े थे वैसा ही भ्रमजनक है जैसे यह मान लेना कि दस घोड़े की ताक़त से चलने वाली मोटर गाड़ी के पेट में दस घोड़े बैठे उसे चलाया करते हैं। सहस्रबाहु की भुजाओं में एक हज़ार आदमियों की भुजाओं के बराबर बल था। दशकन्धर के मस्तिष्क में दस आदमियों के बराबर सोचने, विचारने तथा काम करने की शक्ति थी। देवासुर संग्राम का ठीक वही रूप है जो आज कल भारत और बृटेन के साथ चल रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैज्ञानिक आविष्कारों तथा विनाशकारी मैशीनों से परिपूर्ण बृटिश-जाति, विद्याविहीन और निशस्त्र भारत के लिए साक्षात् दशकन्धर और सहस्राबाहु बन रही है। अतः सुर और असुर, देव और दानव, ऋषि और राक्षस दोनों ही साधारण मनुष्य हैं। स्वभाव, सदाचार तथा आचरण के भेद भाव से एक देव प्रकृति का मनुष्य और दूसरा दैत्य कहलाता है।

कहा जाता है कि भारतवर्ष में तैंतीस कोटि देवता बास करते हैं। यह बात बड़े महत्व की है। इसपर ध्यान पूर्वक विचार करना चाहिए। 'तैंतीस कोटि देवता बास करने, का यह अर्थ नहीं हो सकता कि यहां इस संख्या में पत्थर की मूर्तियां विद्यमान हैं। न इस विस्तृत संख्या में देवताओं की नामावली किसी एक धर्म ग्रन्थ में मिलती है, नहीं सब मत मतान्तरों की पोथी पत्रों में दर्शाये हुए देवताओं के नामों को इकट्ठा जोड़ने से यह मीज़ान मिलती है। इस प्रचलित अमूल्य वाक्य के सीधे सादे दो अर्थ हैं—एक तो यह कि इस पुनीत भारत भूमि में तैंतीस करोड़ देव प्रकृति के मनुष्य वास करते थे, और दूसरा यह कि इस विस्तृत देश में केवल तैंतीस कोटि जनता के वास करने का स्थान है। इस देश की जन संख्या तैंतीस करोड़ से अधिक नहीं बढ़ सकती।

पहिले अर्थ के सिद्ध करने के लिए बहुत प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है। हमारे वेद, शास्त्र, ऊंचे दर्जे की फिलासफ़ी, फाहियान और ह्वेनसांग आदि यात्रियों के सर्टीफिकट के अलावा प्रत्येक भारतबासी अपने को ऋषि सन्तान कहता है। इसकी सत्यता और प्रमाणिकता में तनिक भी सन्देह नहीं है। किन्तु, साथ ही इस जगद्विख्यात आर्य जाति का घोर अधःपतन भी स्वीकार करना पड़ता है। जैसे जर्मनी वाले, मनुष्यों से ही एक शैतान की जाति उत्पन्न करा रहे हैं वैसे ही कुशासन तथा सामाजिक कुप्रथाओं के कारण इस ऋषि सन्तान का बहुत बड़ा अंश शैतान में परिवर्तित हो गया है और होता जाता है। पड़ोसी एशियाई स्वतन्त्र जातियों का भारतीय सेना द्वारा परतन्त्र किया जाना, जलियांवाला बाग़ के सदृश्य अन्य कितनी ही हत्याकाण्डों की उपस्थिति, पुलीस और पल्टन के जवानों के सम्मुख उन्हीं के बल पर उनकी स्त्री, माता और बहिनों के लाज का पर्दा उठाया जाना आदि अनेक नारकीय पैशाचिक कृत्य इस शोचनीय परिवर्तन के अगणित प्रमाण हैं। यह केवल कार्य और कारण है। इस अभागे देश में कारण ही ऐसे उपस्थित हो गये हैं जिससे पुनीत ऋषि सन्तान का बड़ा अंश मनुष्य के रूप में शैतान बन जाय।

जिस देश की आधी जन संख्या पेट भर अन्न न पाती हो, जहां अकाल से तीन करोड़ मनुष्यों की मृत्यु हुई हो, जहां इन्फ्लूएन्ज़ा ज्वर से कुछ महीनों में ही एक करोड़ जन †मर जायं, जहां ३० करोड़ जन निरक्षर भट्ट हों, जहां की सरकार रक्षा के नाम पर उस देश को दबाये रखने के लिए ६५ करोड़ रुपये प्रति वर्ष सेना पर ख़र्च करे, उस देश का विकाश होगा कि अधःपतन! मानव-सन्तति देव प्रकृति की भी बनाई जा सकती है और असुर प्रकृति की भी। मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिये वैसे साधन होने चाहिये।

† सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक ६० लाख मृत्यु बताई जाती है किन्तु यह ग़लत प्रमाणित हुई है। जनता के हिसाब से मृत्यु संख्या एक करोड़ है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दूसरे अर्थ की पुष्टी, यानी इस देश में ३३ कोटि से अधिक जनता की गुन्जाइश नहीं है, आखिरी मर्दुमशुमारी से हो जाती है। गत दस वर्षों में आबादी नहीं बढ़ी। साधारणतः १० से २० बर्षों में आबादी दूनी बढ़ सकती है। खाने पीने का सुविधा होने से किसी भी देश की जन संख्या २० वर्षों के भीतर ही दूनी हो जानी चाहिये। इस तरह भारत में इस बार ६३ करोड़ की आबादी होनी थी। किन्तु, साढ़े एकतीस करोड़ से पूरे बत्तीस करोड़ भी न हो पाई। १९११ की मर्दुमशुमारी में २ करोड़ से अधिक जन या ७. १ फी सैकड़ा बढ़े थे। १९२१ में कुल ३९ लाख जन १. २ फी सैकड़ा बढ़े हैं †। हालां कि यहां की जन्म संख्या सारे संसार से अधिक है।

यह फिर फिर बताने की आवश्यकता नहीं है कि जन्म संख्या की अधिकता प्राणियों और जातियों की उच्चता का चिन्ह नहीं, बल्कि नीचता का लक्षण है। नित्य अण्डे देने वाली मुर्गी वा लाखों अण्डे देने वाली मछली की सन्तति बढ़ भी नहीं सकती। वह कम बच्चा पैदा करने वाले सुयोग्य मनुष्य की ख़ोराक बना करैगी। ठीक इसी तरह बहुत जन्मसंख्या वाली भारत सन्तान कम जन्म-संख्या वाले राष्ट्रों के काम आया करेगी। अपने १७ लाख योद्धा फ्रांस के मैदानों में भेज देगी, घोर दरिद्र होने पर भी संसार मात्र में मंहगी और अत्यन्त अधिक व्यय वाली नौकर शाही पर ४२ करोड़ रुपये प्रति वर्ष ख़र्च करेगी, भौमि आदि नाना करों से चूसे जाने पर अशक्ति होकर अपने निर्बल शरीर पर ७ अरब का जातीय ऋण लाद लेगी, २१६ करोड़ मन प्रति वर्ष ग़ल्ला उपजा कर भी निज ३ करोड़ बच्चों को अकाल का ग्रास बना देगी, आधी जन संख्या के भूखे रहने पर भी ३ अरब से अधिक का कच्चा माल ख़ास कर ग़ल्ला विदेश भेजा करेगी, निज व्यापार और वाणिज्य पर कुठाराघात करके विदेश से २ अरब का माल मंगावेगी उस में ६८ करोड़ का कपड़ा होगा। घी और दूध की नदी बहने वाले भारत में अब आखों में अञ्जन लगाने के लिए भी ये वस्तुएं न मिलने पर भी गौओं की एक बड़ी संख्या का बध ८० हज़ार गोरी सेना के लिए नित्य होगा और ४ करोड़ मूल्य के ७५ लाख जीवित गाय विदेश भेज दिये जायंगे। सन् १९१९ में केवल गुजरात से ६० हज़ार अच्छी दूध देने वाली गौवें अमेरिका के व्यापारी ख़रीद ले गये हैं, निर्जीव, शक्तिहीन हो जाने पर भी एक ही झोके में करोड़ जनता को ज्वर की भेंट चढ़ा देने पर भी शुद्ध जल और वायु के प्रबन्ध में नहीं के बराबर ख़र्च करके ६५ करोड़ रुपये साल ख़र्च वाली फ़ौज रक्खेगी और ख़ुद निशस्त्र असहाय और निरवलम्बी बन कर अन्य जीवित जातियों के लिए भिश्ती, बाबर्ची और खरवाली जाति की भांति कालयापन कर रही है और करेगी। किसी भी जीवित और सभ्य जाति की जांच की कसौटी उस जाति की मृत्यु संख्या और शिक्षा होती है. सो यह अब इस अभागे देश में ६२ प्रति सहस्र होगई है और

† सन्	आबादी	स्त्रियां	पुरुष	जनवृद्धि	पिछली मर्दुमशुमारी से फी सैकड़ा वृद्धि
१९२१	३१,९०,७५,१३२	१५,५०,१८,९४१	१६,४०,५६,१९१	३९,१८,७३६	१-२
१९११	३१,५१,५६,३९६	१५३८,१७,४६१	१६,१३,३८,९३५	२,०७,९५,३४०	७-१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्यूज़ीलैण्ड की ६, इंग्लैण्ड की १४, अमेरिका की १५, जर्मनी की १८, और फ्रांस की १९ प्रति हज़ार है।

शिक्षा के सम्बन्ध में वही दुर्दशा है। भारत की कुल आबादी शिक्षा के सम्बन्ध में फी सैकड़ा कुल ६ आदमी किसी तरह का लिखना पढ़ना जानते हैं, और कल के उठे हुए जापान में फी सैकड़ा ९५, इंग्लैण्ड में ६४, और अमेरिका में ६०, साक्षर हैं। इस देश में गुलाम बनाने वाली पांच पुरानी यूनिवर्सिटियों के अलावा चार युनिवर्सिटियां (बनारस, पटना, मैसूर, लखनऊ) तो अवश्य बढ़ी हैं, किन्तु शिक्षा में कुछ भी उन्नति नहीं हो पाई है। अभी तक इन युनिवर्सिटियों ने ईंट और पत्थर के सुन्दर भवन बनाने में ही अपनी औक़ात गुज़ारी है, मनुष्य को मनुष्य बनाने में बहुत कम प्रबन्ध कर पाये हैं। कदाचित कर भी नहीं सकतीं।

हमारा जल और स्थल का सारा वाणिज्य और व्यवसाय विदेशियों के हाथ में जा चुका और बचा बचाया चला जा रहा है। सन १७८७ ई० तक में खाली इंग्लैण्ड ३० लाख का ढाके का मलमल गया †। हमारी शिल्प कला और लगभग सारे उद्योग धन्धे विदेशियों के हाथ चले गये। सन १८०० ई० के बाद तक भारत के बने जहाज विलायत बिक्री के लिये भेजे जाते थे*। अब सारे जहाज विदेश में बनने लग गये हैं और उन के मालिक विदेशी हैं। चाय, क़हवे और नील की सारी खेती विदेशियों के रुपये से होती है और इसका नफ़ा हिन्दुस्तान के बाहर जाता है। इन वस्तुओं के लहराते हुये बगीचों के मैनेजर तक विदेशी हैं।

कुल उद्योग, कुल व्यापार, कुल वाणिज्य विदेशियों के रुपये से होता है अतः नफे का प्रायः कुल अंश विदेश चला जाता है। राज्य के कुल बड़े बड़े पदों पर विदेशी नियुक्त हैं उन के वेतन का बहुत बड़ा हिस्सा, और बचत का कुल रुपया विदेश चला जाता है।

इस देश के प्रत्येक मनुष्य की आमदनी का औसत दो पैसा रोज़ाना है। काश्तकारों का पेट नहीं भरता। आजन्म बहुतों को पेट भर अन्न खाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। जब गांव अन्न से खाली है तो पेट कहां से भरे। दिन प्रति दिन, मास प्रति मास, वर्ष प्रति वर्ष गांव का गांव अधपेटा—भूखा सो रहता है। ऐसी अवस्था में बे समझे बूझे सन्तान उत्पन्न करते चले जाने का परिणाम क्या होगा? कष्ट बढेगा। भुखमरे बढ़ेंगे। दरिद्रता बढेगी। उत्साह हीन पुरुष और हृदय शून्य स्त्रियों की अधिकता होगी। निर्दोष बच्चों की मृत्यु और ज्यादः होगी। देश की दुर्दशा का पारावार न रहेगा। और इसका उत्तरदाता कौन होगा? हम और आप।

जागो! उठो! सदा के लिये इस गिरी दशा में मत पड़े रहो।

[नोट—यह लेख देशदर्शन नामक मेरी पुस्तक से लिया गया है। यह पुस्तक हिन्दी, उर्दू, गुजराती भाषा में प्रकाशित हो चुकी है और सभी बड़े पुस्तक बेचने वालों से मिल सकती है]

---

† Governor General's Report 1800. East India Company's 4th report, page 23,24
* History of Indian shipping and Maritime by Prof. R.K. Mukhopadhyaya M.A.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मित्र-मिलन।

लेखक--श्रीयुत "नयन"

मिला था जिस दिन मेरा मीत !

वह, जग के सोर विषयों में, लेता था सम भाग।
किन्तु, भरा था मन-मानस में, पूर्ण रूप वैराग॥
कामनाओं से चित्त निवृत्त,
हृदय में घबड़ाहट थी नित्त।
कहीं भी लगा न उसका चित्त,
सुनना चाहे सरल-भाव में, विमल प्रेम के गीत !
मिला था जिस दिन मेरा मीत !

एक वार, मैं, नीरव मन से, जा निकला उस ओर।
जहाँ, भीड़ में था वह बैठा, पूर्व जन्म का चोर॥
दिया जब उसने मुझपर ध्यान,
एकटक देख हुआ हैरान।
लगे कुछ कहने उसके प्रान,
हर्षित-बदन, अरुण-लोचन से, खींची दृष्टि बिनीत !
मिला था जिस दिन मेरा मीत !

कुछ दिन बाद, नदी के तटपर, सन्ध्या समय अनूप।
निर्जन थल पर खड़े हुए वे, सुन्दर-शीतल रूप॥
अचानक मैं पहुंचा उस ठाम,
आपने पूछा, मेरा ग्राम।
आपसे पूछा, मैंने नाम,
विहँस गये वे, विहँस गया मैं, दुख हो गये व्यतीत !
मिला था जिस दिन मेरा मीत !

कविता की भाषा

लेखक—श्रीयुत मदन

उपरोल्लिखित शीर्षक लेख अगस्त मास की माधुरी की संख्या में प्रकाशित हुआ है। उसके लेखक हैं कोई भगवती प्रसाद नामधारी बाजपेयी। कविता की भाषा के विषय में तो आप ने कुछ लिखा नहीं-हाँ, गत साहित्य-सम्मेलन के सुयोग्य-सभापति श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के संस्कृत-तनया सुधास्रविनी ऋषि-वाणी व्रज-भाषा का पक्ष लेकर उसे कवितोपयुक्त बताने पर आपने बहुत कुछ असन्तोष प्रकट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया है। इतना ही नहीं, आपने अपने लेख में यह सिद्ध करने का प्रयत्न भी किया है कि चतुर्वेदी जी ने पक्षपात से काम लेकर एकाङ्गी डिग्री दी है।

आप अपने असन्तोष का उल्लेख करते हुए कहते हैं—

"हम ने ? (या; मैंने) सोचा था कि अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के गत अधिवेशन के सुयोग्य सभापति चतुर्वेदी जी इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक प्रकाश डालेंगे। परन्तु खेद है कि हम ?? उन के मन्तव्य से सन्तुष्ट न हो सके। जो मतभेद अभी तक चला आता है (कहाँ से ?) उसी को आप ने दुहरा दिया"।

ठीक है। किन्तु, सभापति जी का भाषण किसी व्यक्ति विशेष या केवल बाजपेयी जी को सन्तुष्ट करने के लक्ष्य एवं ध्येय से तो हुआ नहीं था। उस विषय पर चतुर्वेदी जी ने अपनी निज की राय जो उन्हें अच्छी लगी दी। जो कुछ वे कहना चाहते थे सो उन्होंने कहा-जी खोल कर पूर्ण रीत्या जितना कहा जासक्ता था उस से किन्ही अंशों में विशेष ही कहा-तो भी यदि वाजपेयी जी सन्तुष्ट न हुए तो इस में बेचारे चतुर्वेदी जी का क्या दोष ? आप को खेद है कि चतुर्वेदी जी ने जो मतभेद चला आता था उसी को फिर दुहरा दिया। किन्तु मैं कहता हूं कि उन्होंने परम्परागत सिद्धान्त का और सभाध्यक्षों की भाँति समर्थन करदिया।

वर्तमान भाषा के विषय में यदि यह कि—

"भाषा की शुद्धता और स्वच्छता की ओर किसी का ध्यान नहीं है न वर्णविन्यास का ठिकाना है, न वाक्य रचना का, मन मानी घर ज्ञानी का बाज़ार गर्म है। .....स्वेच्छाचारिता बढ़ गई है। यदि यह शीघ्र न रोकी जायगी तो बड़ी हानि होगी", इत्यादि कहा तो क्या बुरा किया ? क्या आप चतुर्वेदी जी की ..... इन बातों से सहमत नहीं हैं ? यदि न हों तो इस से पता चलता है कि आप को साहित्य की गति प्रगति का रञ्चमात्र भी ज्ञान और ध्यान नहीं !

और क्या चतुर्वेदी जी की यह बात माननीय एवं सत्य नहीं है कि –

"खड़ी बोली वाले.....तुकबन्दी को ही कविता समझते हैं। खड़ी बोली के कवि तो आज कल बहुत बन गये हैं और बनते जाते हैं पर यथार्थ में कवि कहलाने वाले बहुत थोड़े हैं। इन की अधिकांश कवितायें तुकबन्दी के सिवा कुछ नहीं है"।

शायद बाजपेयी जी भी खड़ी बोली के कवियों में से हैं। तभी आपको चतुर्वेदीजी की बातें कड़वी लगीं। और लगनी भी चाहिये क्यों कि खड़ी बोली में बड़ी कड़ी मिहनत से बेचारे बेलन चलाते २ सम्पादक और कवि हुये। जब कुछ ख्याति हुई तो चतुर्वेदीजी आफत करते हैं। देखो तो कहते हैं कि खड़ी बोली में कवियों की "आजकल की कवितायें भावहीन भाषाहीन और रसहीन होती हैं" ऐसी ही बातों से शायद वाजपेयीजी असन्तुष्ट हैं, व्रज-भाषा का पक्ष लेने का जितना दोष बाजपेयीजी ने लगाया उतना पक्ष चतुर्वेदीजी ने नहीं लिया। उन्होंने यह कभी भी नहीं कहा कि कविता खड़ी बोली में न की जाकर व्रजभाषा ही में की जाय। यह उन्हीं के इन शब्दों से "कि मैं खड़ी बोली का विरोधी नहीं हूं" प्रकट है। और वास्तव में यह कोई कह ही नहीं सक्ता कि अमुक भाषा में अच्छी कविता हो ही नहीं सक्ती। यह तो कवि प्रतिभा पर निर्भर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हां,यह अवश्य कहा जा सक्ता है कि वर्तमान बाजारू भाषा से कविता के लिये ब्रजभाषा ही अत्यधिक उपयुक्त है। अभी तक बाजारू भाषा खड़ी बोली में जितनी रचनायें हुई हैं, उन्हे देख कर चतुर्वेदीजी का कहना सत्य ही है कि—

"खड़ी बोली की कविता में भाव का अभाव है, ओज की खोज व्यर्थ है,लालित्य के तो सदा लाले पड़े रहते हैं। प्रसाद का कहीं पता नहीं। रस का रसाभास नहीं। अर्थ से अर्थ न मतलब से मतलब।"

इस उपरोक्ति में तो हेत्वाभास (Fallacy) के लिये स्थान ही नहीं।

तारीफ तो तब थी कि प्रथम आप भारतेन्दु जी के सर्वदा मान्य इस सिद्धान्त का "कि खड़ी बोली में सुन्दर और मधुर कविता हो ही नहीं सक्ती" खण्डन करते।

बात यह है कि खड़ी बोली का अभी कोई प ही स्थिर नहीं हुआ। उस में कोई माननीय यवस्था नहीं है। नित्यः उस में रूपान्तर हो रहा है, भाषा अभी मँजी नहीं। उस में ऐसे आचार्य नहीं हुए जिन की व्यवस्था मान्य हो– जब खड़ी बोली की ऐसी सड़ी अवस्था है तो वह कैसे कवितोपयुक्त भाषा हो सकती है।

इधर व्रज भाषा के विषय में यह बात है कि वह हजारों वर्ष से प्रतिभाशाली धुरन्धर कवियों की लेखनी से व्यवहृत होकर सरस कोमल कान्त हो गई है। उस का एक एक शब्द मानों साँचे में ढल सा गया है। उस को अनूठी पदावली काव्य के सर्वगुणों से सम्पन्न है। उस में स्वतन्त्र व्यवस्था है। उस को पुट आज भी कवि कङ्कण और विद्यापति के काव्यों में देखी जाती है। गुजराती भाषा में उस की अत्यधिक पुट है। भाव होने पर जिस में एक बच्चा भी उत्तम रचना रच सक्ता है। जो अत्यन्त सरल सुबोध है। ऐसी भाषा ही कविता की भाषा हो सक्ती है अन्य नहीं।

आगे वाजपेयी जी कहते हैं कि—

"होना तो यह चाहिये था कि प्रथम आप यह सिद्ध करते कि व्रज भाषा में ही कविता होनी चाहिये। उसी में कविता का होना श्रेयस्कर है"।

यद्यपि वाजपेयी जी की चुनौती का उत्तर उपरोल्लिखित हो हो जाता है, तथापि मैं वाजपेयी जो से पुनः कह देना उचित समझता हूं कि जिस बात को आप सिद्ध करने को कहते हैं वह स्वयं सिद्ध है। इस का प्रमाण यह है कि बड़े बड़े विद्वानों ने भी ऐसा ही माना है। उन की बात में कोई चूं नहीं कर सक्ता। हाथ कङ्कन को आरसी क्या—देखिये खड़ी बोली की समालोचना करते हुए पूज्य प्रतापनरायण जी मिश्र क्या लिखते हैं—

"आधुनिक कवियों के शिरोमणि भारतेन्दु जी से बढ़ कर हिन्दी भाषा का आग्रही दूसरा न होगा। जब उन्हीं से खड़ी बोली में मधुर कविता न हो सकी तो दूसरों का यत्न निष्फल है। अरे भाई! बांसों को चूस कर यदि ईख का स्वाद मिलसके तो ईख बनाने का परमेश्वर को क्या काम था"?

भारतेन्दु के फुफेरे भाई स्वर्गीय राधाकृष्ण दास की भी यही राय थी कि "कविता की भाषा व्रज भाषा ही ठीक है"।

स्वर्गीय आचार्य्य पं० बालकृष्ण जी भट्ट ने भी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर कहा था कि "मेरे विचार में खड़ी बोली में एक इस प्रकार का कर्कशपन है, कि कविता के काम में ला उसमें सरसता सम्पादन करना प्रतिभावान् के लिये भी कठिन है, तब तुकबन्दी करने वालों की कौन कहे"? आगे पूज्य भट्ट जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने चतुर्वेदी जी की भांति कहा है कि 'खड़ी बोली की कविता पर हमारे लेखकों का समूह इस समय टूट पड़ा है। आजकल के पत्रों और मासिक पत्रिकाओं में बहुत सी इस तरह की कवितायें छपी हैं। परन्तु उनमें अधिकतर ऐसी हैं, जिनको कविता कहना ही मानो कविता की हंसी करनी है, हमे तो काव्य के गुण इनमें बहुत कम जँचते हैं"। शायद वाजपेयी जी अब समझ गये होंगे कि व्रजभाषा का ही कविता की भाषा होना श्रेयस्कर है या नहीं।

बाजपेयी जी की राय में--

प्रफुल्लिता कोमल पल्लवान्विता।
मनोज्ञता मूर्त्ति नितान्त रंजिता॥
वनस्थली थी मकरंद मोदिता।
अकीलिता कोकिल काकलीमयी॥

* * * * *

रूपोद्यान प्रफुल्ल-प्राय कलिका राकेन्दु बिम्बानना
तन्वंगी कल-हासिनी सुररसिक क्रीड़ाकला पुत्तली

* * * * *

नानाभाव विभावहाव कुशला आमोद आपूरिता।
लोला लोल कटाक्षपात निपुणा भ्रू भंगिमा पंडिता।
वादित्रादि समोद वादनपरा आभूषणाभूषिता।
राधाथी सुमुखी विशाल नयना आनन्द आन्दोलिता

* * * * *

सद्वस्त्रा सदलंकृता गुणयुता सर्वत्र सम्मानिता।
रोगी वृद्ध जनोपकार निरता सच्छास्त्र चिन्तापरा॥
सद्भावादरता अनन्य हृदया सत्प्रेम संपोषिका।
राधा थी समना पसन्न वदना स्त्री जातिरत्नोपमा।

इस प्रकार की रचनाओं के अभाव से हिन्दी साहित्य क्षेत्र को संकुचित रखना है। पर क्या वाजपेयी जी ने यह कभी सोचा है कि हिन्दी साहित्य किसे कहते हैं ? और उसमें और संस्कृत साहित्य में कितना अन्तर है ?

उपरोक्त रचनाओं १ चतुर्वेदी जी के कथनानुसार यदि रेखाङ्कित 'थी' को थैले में बन्द कर दीजिये या उसके स्थान में "श्री" रख कर पढ़िये तो संस्कृत रचना में और इनमें भेद न रहेगा। ऐसी रचनाओं को हिन्दी कहना मानो हिन्दी का अनादर करना है। सत्यही हिन्दी के काव्य कलेवर को कलुषित करना और भाषा पर अत्याचार करना है। कौन ऐसा अन्धा है जो इन्हें हिन्दी रचना कहेगा ?

वाजपेयीजी के कथनानुसार यह सत्य है कि हिन्दी भाषा का संस्कृत गर्भित होना स्वाभाविक है। पर किन बातों में है ? शायद इसे स्वयं वाजपेयी जी भी नहीं जानते। संस्कृत गर्भित होने से यह अभिप्राय नहीं कि भाषा की पद योजना वर्ण विन्यास यहां तक कि विभक्तियां भी संस्कृत की ही हों। ऐसी हालत में हिन्दी कहां रही ? साफ व्याकरण की हत्या दृष्टि गोचर है।

सूर, केशव, तुलसी की रचना भी संस्कृत गर्भित भाषा में है किन्तु उनमें संस्कृत शब्द बाहुल्य को छोड़ कर और सब हिन्दी की रीत्या नुसार है। संस्कृत हिन्दी की जननी है अतः उसमें उसके शब्द ही होने चाहिये अन्य बातें हिन्दी की सी हों। मेरी दृष्टि में उपरोक्त रचना क्लीव रचना है जो न हिन्दी में गिनी जासक्ती है न संस्कृत में ही।

ऐसी रचनाओं से हिन्दी साहित्य विस्तृत न होगा वरन हानि ही होगी, साहित्य क्षेत्र में क्रान्त का अङ्कुरारोप होगा।

आगे बाजपेयी जी ऐंठ और दावे के साथ बड़ी तेज़ी से फर्माते हैं कि कविता की भाषा बोल चाल की भाषा से सदा भिन्न रही है और रहेगी ?? वाजपेयी जी ने इसका प्रमाण नहीं दिया कि रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञात होता है वाजपेयी जी ने साहित्य का अध्ययन नहीं किया नहीं तो कभी ऐसा न कहते। अजी महानुभाव उछल कूद तो खूब नाम कमाने के लिये मचाई किन्तु वसन्त की खबर नहीं। यदि आपने स्वप्न में भी कभी देव, विहारी, मतिराम, पद्माकर हितहरिवंश केशवदास को अध्ययन कर व्रजप्रान्त में जाकर इसकी परीक्षा की होती कि उन कवियों की भाषा बोल चाल की भाषा में है या नहीं, यह निर्णय कर फिर लिखते कि बोल चाल की भाषा कविता की न हुई न होगी ?? तो आपकी बात मान्य होती। आज प्रभृति वृजभाषा के जितने भी कवि हुये हैं उनकी भाषा बोलचाल की रही है और अबभी वैसी ही भाषा व्रजमण्डल में ज्यों की त्यों बोली जाती है। उपरोक्त कवियों मे से केशव की भाषा बुन्देलखण्डी है और वह भी बोलचाल की। यही तो खास गुण है व्रज भाषा में जो कविता की भाषा में होना चाहिये।

यों तो वाजपेयी जी का सारा लेख ही विवादग्रस्त बातों से भरा पड़ा है जिनका जवाब देने के लिये अति समय बर्बाद होगा और भी मेरा अर्थ यहीं पर समाप्त हो जाता है अतः अतुकान्त भिन्नतुकान्त की भिन्न भिन्न में न पड़ कर लेख को यहीं समाप्त करता हूं, यदि अवसर मिला तो फिर कभी लिखूंगा।

अन्त में बाजपेयी जी से क्षमा प्रार्थना करूंगा कि यदि लेख में कोई कटु वचन लिख गया हो तो क्षम्य होगा। मैंने अति सरल और शुद्ध भाव से प्रेरित होकर ही इतना लिखा है अन्यभाव से नहीं। आशा है वाजपेयी जी और अन्य साहित्य सेवी जी इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे ॥

ग़रीब की गुदड़ी

ले०—एक राष्ट्रीय आत्मा।

(१)

बालक ऐसे कहां और किस जननी ने उपजाये हैं।
पुरुष सिंह बन जो प्रताप से पुरुषोत्तम कहलाये हैं॥
जिनके चारु चरित्र जगत में जन जन के मन भाये हैं।
देख मुखारविन्द उनके मैंने निज नयन जुड़ाये हैं॥
बार बार पुचकार प्यार से हँस हँस खूब खिलाये हैं।
ग़रीब की गुदड़ी में मैंने लाल अनेकों पाये हैं॥

(२)

अविश्रान्त श्रम में जिनने जीवन सर्वदा लगाये हैं।
मार मार कर शत्रु उन्होंने रण से दूर भगाये हैं॥
पीछे नहीं हटे डट डट कर आगे पैर बढ़ाये हैं।
वलि वेदी पर सदा उन्हों ने ही निज सीस चढ़ाये हैं॥
गाढ़े अवसर पर दृढ़ता से काम निरन्तर आये हैं।
ग़रीब की गुदड़ी में मैंने लाल अनेकों पाये हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३)

प्रति पालक प्रण के जिनके यश देश देश में छाये हैं।
ऐसे सुन्दर लाल तनिक माखन पर यहां लुभाये हैं॥
प्यारे तनकी ज्योति श्याम कमली में स्वयं छिपाये हैं।
स्वामी हैं समस्त जग के पर मेरे दास सुहाये हैं॥
तपो भूमि में भेज भेज तापों में तनय तपाये हैं।
ग़रीब की गुदड़ी में मैंने लाल अनेकों पाये हैं॥

(४)

कैसे पूछूं जाकर उनसे, भूखे हैं या खाये हैं।
वस्त्राभूषण से अपना तन वे क्यों नहीं सजाये हैं॥
क्यों वे दिन दिन सूख रहे हैं क्यों मुखड़े मुरझाये हैं।
माता के प्यारे मन मोहन क्यों यह वेश बनाये हैं॥
मुझको अनमोल अलौकिक आभूषण पहनाये हैं।
ग़रीब की गुदड़ी में मैंने लाल अनेकों पाये हैं॥

(५)

मेरी रक्षा करने को उँगली पर मेरु उठाये हैं।
महाबीर हैं पर शरीर में आज विभूति रमाये हैं॥
स्वतन्त्रता के गीत इन्हीं के बल पर मैंने गाये हैं।
देने को क्या भेंट भला, अपनी मुट्ठी में लाये हैं॥
प्रासादों में नहीं झोपड़ी में उत्सव करवाये हैं।
ग़रीब की गुदड़ी में मैंने लाल अनेकों पाये हैं॥

कश्मीर देश की सामाजिक अवस्था

लेखक—श्रीयुत वंशीधर विद्यालङ्कार

कश्मीर देश, प्राचीन आर्यसभ्यता का वह स्मृति चिन्ह है जिसे देखने के लिये प्रत्येकआय उत्सुक रहता है। जो भी कोई कश्मीर की प्राचीन दन्तकथायें सुनता है, वहां के अद्भुत सौन्दर्यों के वर्णनों को पढ़ता है, वह एक न एक बार वहां जाने के लिये अवश्य सोचता है। कश्मीर देश के नाम के अन्दर ही इतनी आकर्षणशक्ति है कि वह प्रत्येक को अपनी ओर अनजाने खींच ही लेता है।जो जाता है वह समझता है कि उसने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई चीज़ देखी, वह अपनी यात्रायें लिखता है और सुनाता है। उसे इस कथन में अत्यन्त आनन्द प्रतीत होता है कि उसने कश्मीर देख लिया। इस घाटियोंसे घिरे सुन्दर पहाड़ी मैदान में वे अनुपम दृश्य हैं, जिनकी शोभा, जिनकी छटा हृदय के अन्दर एक स्वर्गीय दिव्य भाव उत्पन्न कर देती है। वहां की उषाकाल की अद्भुत लालिमा, जिससे पहाड़ों की बर्फानी चोटियां प्रतिदिन प्रातःकाल रंगी जाती हैं, कदम कदम पर मोड़ खाती हुई वितस्ता नदी, रविवार के दिन फुहारों से अटखेलियां करते हुये और विविध विचित्र फूलों और फलोंसे हंसते हुये निशात और शालामार बाग़, डल झील के अन्दर लेटी हुई बूटियां, चश्मों का फूटना, झरनों का गिरना, गहरे कुण्ड, शिकारों, डूंगों और नाव घरों के दृश्य, प्रत्येक मनुष्य के हृदय में उस अत्यन्त आनन्ददायिनी स्मृति के चिन्ह छोड़ते हैं जो अक्षय हैं और कभी मिट नहीं सकते। इन दृश्यों में मनुष्य अपने आपको अत्यन्त सौभाग्य शाली अनुभव करता है। वह उड़ते हुये नीले सफेद बादलों में जिनको सूर्य की किरणें आलोकित करती हैं, परमात्मा की सत्ता का अनुभव करता है और पहरों आंखें टिकाये देखता है कि यहां कैसे देवताओं का निवास है। इन दैवी निराले दृश्यों में यही आश्चर्य होता है "कि हैं ऐसे देश का भी हमारे पूर्वजों ने पता लगाया था"।

किन्तु आज हम इस लेख में कश्मीर की शोभा का वर्णन नहीं करना चाहते और यदि हम चाहें तो भी नहीं कर सकते, फिर भी इतना अवश्य लिखते हैं क्योंकि इसके विना हमारा जी नहीं मानता कि यदि हमने कोई अपनी आशाओं से बढ़कर चीज़ देखी है, जिसका चित्र हमारे हृदय के चित्र से कहीं बढ़कर और सजीव ज्वल निकला है तो वह कश्मीर है।

आज तो हमें पाठकोंके सामने बिलकुल इससे विपरीत वहां के निवासियों का दृश्य दिखानाहै, जिसे देखकर एक सहृदय मनुष्य दुखी हो कर अपने आंसुओं को नहीं थाम सकता। कोई समय था जब कि इन खिलती हुई घाटियों में हमारी प्राचीन वैदिक सभ्यता का रंग भी खिला हुआ था, किन्तु आज तो वह ऐसा मिटता जा रहा है कि मानों कुछ था ही नहीं। अब भी वहां के गिरे हुये, भग्नावशेष खोद २ कर निकाले हुये मन्दिर इस बात की साक्षी देते हैं वहां की प्राचीन पोशाक का, आचार विचार का, कुछ पता ही नहीं चलता किन्तु इस पहाड़ों से छिपी हुई जगह में आर्य जाति पर जो अत्याचार किये गये हैं उसे मिटाने के लिये जो भरसक प्रयत्न किया गया है, वहां कैसे २ सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव और विकास हुआ है यह अब भी यहां के निवासियों के चरित्रों में पूरी तरह से अङ्कित है। हमारी प्राचीन वैदिक सभ्यता की विशेषता यही है कि वह मिटाये नहीं मिटती। वह किसी न किसी तरह अपनी झलक छोड़ ही जाती है। आजकल की पतित अवस्था में भी एक प्राचीन सभ्यतानुगामी मनुष्य इस देश में जाकर अब भी इस झलक की परछाईं को देखकर सैकड़ों परिणाम निकाल सकता है और अपने पूर्वजों पर अभिमान कर सकता है। कश्मीर देश की सामाजिक अवस्था अब भी हवा के झोंकों से बुझते हुये उस दीपक के समान है जो बुझता हुआ भी अपने मन्द प्रकाश से अन्धकार में कुछ न कुछ प्रकाश फेंकता हुआ मार्ग दिखा जाता है।

यद्यपि इस समय कश्मीर देश में मुसलमानों की संख्या अत्यधिक है (१०० में से ९५ प्रतिशतक) तो भी मुसलमानों के नामों के पीछे "भट्ट" आदि का आना स्पष्टरूप से बताता है कि ये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

भी कभी 'आर्य' सन्तानों में से अवश्य थे। इतिहास भी इस बात की साक्षी देता है कि यहां के निवासी आर्यों को बलपूर्वक, अत्याचार से मुसलमान बना लिया गया है। मुसलमानों के राज्य के थोड़े समय से ही हटने के कारण वहां का हस्तकौशल. चित्रकारी, बुनना, लकड़ी के काम और व्यापार अबतक मुसलमानों के ही हाथ में हैं। यहां के निवासी 'आर्य' जिन्हें पण्डितों के नाम से पुकारा जाता है. तीन विभागों में विभक्त और उन्हीं विभागों के अनुसार ही कार्य करते हैं।

(१) गोर या पुरोहित।

(२) कारकुन या नौकरीपेशा।

(३) बोहड़ या दुकानदार।

इन में से पहिले दो अपने को जन्म का ब्राह्मण कहते हैं इनमें आपस के सम्बन्ध भी होते हैं। बोहड़ों को ये जन्म का क्षत्रिय कहते हैं इनके साथ ये खाते पीते भी नहीं हैं और न कोई अन्य संबन्ध करते हैं। फिर भी ये लोग अपने आप को पण्डित कहते हैं। पुरोहित या गोर, पण्डों का काम करते हैं—इनका पेशा यही है। इनके दृश्य, मटन, वैरीनाग आदि तीर्थ स्थानों में देखे जा सकते हैं। अब ये लोग वेदादि शास्त्रों को संभाल कर नहीं रखते और नांही पढ़ते पढ़ाते हैं किन्तु जगह २ जाकर अपने यजमानों के बही खाते बनाते हैं—इनको ये बड़ा संभाल२ कर रखते हैं, इनके बाप दादाओं की सञ्चित सम्पत्ति यही होती है। उन्हीं के द्वारा इनका कारबार चलता है। दूसरे कारकुन नौकरीके सिवा कुछ नहीं करते। कोई चपरासी है; कोई किसी दफ़्तर में नौकर है। ये लोग पुरोहितों से कुछ अधिक पढ़े प्रतीत होते हैं क्योंकि इन विचारों को नौकरी करने के लिये कुछ न कुछ अपनी योग्यता दिखानी ही पड़ती है। तीसरे बोहड़ दुकानदारी करते हैं—क्योंकि इनके बाप दादा भी यही करते थे। इन तीनों में पहिले दो की संख्या अधिक है और तीसरों की कम। पता नहीं ये सब इन्हीं बाप दादाओं से आये हुये कार्यों को करनाही क्यों अधिक पसन्द करते हैं! जमींदारी, शिल्पविद्या, चित्रकारी, मल्लाह का काम कोई नहीं करता। इन कार्यों को ये शूद्रों का कार्य्य समझते हैं।

यहां के मुसलमानों की तथा पण्डितों की पोशाकों में बहुत थोड़ा भेद है। ऐसे शीत प्रधान देश में इतनी खुली पोशाक का होना सचमुच बहुत आश्चर्यजनक है। ये लोग अपने पेट के साथ "काङ्गड़ी" (एक प्रकार की अंगीठी) बांधे रहते हैं—रात को भी इसे बांध कर सोते हैं—इससे बहुधा इनका पेट जल जाता है। वैसे तो इस पोशाक को देखकर मनुष्य बड़ा विस्मित और प्रसन्न होता है किन्तु कहते हैं कि अकबर ने इन लोगों पर अत्याचार करके इन लोगों को इरान स्त्रियों की यह पोशाक बलपूर्वक पहनाई थी। मुसलमानों के तथा पण्डितों के वेश में निम्न अन्तर है। 'फिरन' दोनों पहिनते हैं किन्तु मुसलमानों के फिरन की बाज़ुयें चौड़ी होती हैं और पण्डितों की पीछे से चौड़ी और आगे से कुछ पतली। कोई २ कहते हैं कि मुसलमानों के फिरन की जेब बाईं ओर होती है और पण्डितों की दाईं ओर, किन्तु हमने इस नियम का उल्लङ्घन भी देखा है। दोनों की पगड़ी मारवाड़ी सेठों जैसी होती है, किन्तु इसके नीचे पण्डित माथे पर तिलक लगाते हैं और मुसलमान कुछ नहीं। फिरन पैरों की एड़ियों से कुछ ऊपर तक रहता है, नीचे पण्डित कौपीन बांधते हैं और मुसलमान सुथ्थन। पैरों में पुराने पण्डित अब भी जूते नहीं पहिनते किन्तु घास के पूले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिनते हैं। अब धीरे २ ये पोशाकें बदलती जा रही हैं।

जो पण्डित पहिले चमड़े के जूते तक नहीं पहिनते थे और जिनके तीर्थों के कुण्डों में अब भी मछलियों को मारने की सख्त मनाई है वे पहिले मांस खाते होंगे इस बात पर विश्वास नहीं होता। कहते हैं कि बुल्लाशाह राजा के पहिले यहां की आचारमर्यादा बहुत अच्छी थी—कोई मांसाहारी न था--किन्तु उस ने पण्डितों पर तरह २ के अत्याचार करके उनके आचार को बिगाड़ दिया। उस ने इस प्रकार के छोटे मुखों वाले वर्तन बनवाये थे (जो अब भी कहीं२ देखने में मिल जाते हैं) जिसमें पण्डितों के हाथ नहीं जा सकते थे और उन को मांजने में बड़ी तक़लीफ़ होती थी। लेकिन यह आज्ञा थी--कि इन्हीं वर्तनों को प्रयोग में लाना होगा। दूसरी यह भी बात है कि यहां वाममार्ग और शैवमत अत्यन्त प्रचलित रहे हैं। ये लोग "शक्ति" के उपासक अब भी हैं और पहिले भी रहे हैं इस लिये इन में मांस खाना कोई घृणित कार्य्य नहीं समझा जाता। यहां तक कि इनकी खुशियों में मांस का पकाना भी एक अङ्ग सा बन गया है। संस्कारों में भी मांस खाया जाता है। पण्डितों के घरों में जब कोई बालक उत्पन्न होता है तो छः दिन तक प्रसविनी माता को भूखा रक्खा जाता है। उसे कुछ शर्वत आदि हलका भोजन खिलाते रहते हैं-किन्तु छठवें दिन जब कि बालक का नामकरण संस्कार किया जाता है उस दिन एक दम माता को भी तथा अन्य विरादरी वालों को सीखों पर पकाया मांस (कबाब) खिलाया जाता है। उस दिन हवन भी होता है-ज़मीन पर गोवरी लीप कर अग्नि जलाते हैं (हवनकुण्ड में नहीं किन्तु उसी ज़मीन पर) और फिर तंत्र मन्त्र श्लोक पाठ करते हैं। इसी प्रकार यज्ञोपवीत संस्कार में खूब मांस का भोजन किया जाता है। ज्वाला-देवी की पूजा का दिन तो समझ लीजिये कि मांस भोज का ही दिन होता है। यहां तक कि मृतक संस्कार पर भी चावलों के साथ सूखी मछलियां पकाई जाती हैं और कुत्तों को डाल दी जाती हैं। इतना होते हुए भी ये लोग अण्डा, प्याज़ और बत्तख़ आदि कुछ चीज़ें नहीं खाते-ये इन के यहां निषिद्ध समझे जाते हैं। यहां की स्त्रियां भी मांस खाती हैं। इस में सन्देह नहीं कि ग़रीब होने के कारण इन लोगों को ऐसे अवसर बहुत कम प्राप्त होते हैं-किन्तु ऐसे प्रसन्नता के अवसरों पर ये लोग मांस के लिये ख़र्चे की पर्वाह नहीं करते।

ये लोग इन पहाड़ों में अलग रहने के कारणऔर भारतवर्ष के ब्राह्मण घरानों से अपने को बहुत उच्च समझते हैं। ये लोग कभी इन के साथ एक आसन पर बैठकर भोजन नहीं खाते। यहां के पण्डित मुसल्मानों के हाथ से राख से वर्तन मंजवा लेते हैं, उन के हाथ से पानी भी भरवा लेते हैं, उन की दूकानों से कच्चा मांस, दूध, दही, पनीर ले लेते हैं, इस में वह कुछ आचारभ्रष्टता नहीं समझते किन्तु एक अन्य देशीय उच्च घराने के ब्राह्मण के साथ बैठ कर खाने को ये महापाप समझते हैं, इस में इन की आचारमर्यादा टूटती है। एक वार एक कश्मीरी पण्डित ने मुझ से अपनी बात चीत में कहा कि भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में रहने वाले ब्राह्मणों या आर्यों की अपेक्षा हम अपने कश्मीर के मुसल्मानों से अधिक प्रेम करते हैं। और उस का कारण उस ने एक देश तथा एक भाषा का होना बतलाया। मैंने उन से कहा कि यहां के मुसल्मान तो अन्य देश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के मुसलमानों से यहां के पण्डितों की अपेक्षा अधिक प्रेम करते हैं। इस पर वह निरुत्तर हो गया। यहां चावल और पालक का तेल में बनाया हुआ शाक अधिकतर खाया जाता है। घी यहां के निवासी नहीं खाते।

यहां के "धर्म" के बारे में हम फिर कभी प्रकाश डालेंगे। यहां पर इतना ही लिखते हैं कि यहां "कश्मीरी शैवमत" अब भी अधिक संख्या में फैला हुआ है।

कश्मीर देश में दुराचार भी बहुत अधिक है। मुसलमानों के अन्दर की "हांजो" class (मल्लाह) अपने लड़कियों को किराये पर दे देते हैं। यहां पर मुसलमानों में रूप बिकता है—दुराचार से अधिक इस का अन्य कुछ महत्व समझा नहीं जाता।

प्रसन्नता की बात है कि यह बात यहां के पण्डित घरानों में नहीं है। इनमें विधवा स्त्रियों का बड़ा आदर है। इतने ग़रीब होते हुए भी ये लोग विधवाओं का इतने आदर और सत्कार से बोझ उठाते हैं—यह देख मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। इन्हीं के आदर का यह परिणाम है कि कोई पण्डितानी वेश्यावृत्ति नहीं करती। पण्डित लोग यह कुछ बड़े विचारपूर्वक नहीं करते किन्तु ये उन में रीति रिवाज चला आता है। यहां तक कि यदि कोई पण्डित एक स्त्री को छोड़ कर दूसरा विवाह करता है तो उस को उस की उदरपूर्ति अवश्य करनी पड़ती है, किन्तु यह बहुत कम होता है क्योंकि प्रायः पण्डित लोग एक स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह नहीं करते।

यहां के पण्डितों के बारे में ये निम्न बातें कही जा सकती हैं कि जिस प्रकार कश्मीर की हवा का कुछ विश्वास नहीं वैसे ही यहां के लोगों का भी कुछ विश्वास नहीं। जिस प्रकार कश्मीर में अनन्त सुन्दर फूल खिलते हैं किन्तु उन में किसी में भी गन्ध नहीं होती और जिन में होती भी है उन में बहुत थोड़ी, उसी प्रकार यहां के लोग सुन्दर अवश्य हैं किन्तु उन में गुण बहुत कम हैं। जिस प्रकार यहां की गौवें दुर्बल हैं और पतला दूध देती हैं उसी प्रकार यहां के 'आर्य' भी कमजोर हैं और उन में सार की बातें थोड़ी हैं। किन्तु गांवों में जहां अभी तक नवशिक्षित समाज नहीं पहुंचा है वहां की यह अवस्था नहीं है। वहां अभी तक लोगों में सच्चरित्रता पाई जाती है।

फिर भी कश्मीर के लोग बुद्धिमान तपस्वी, संतोषी अतिथि—सेवक और प्रतिभा वाले होते हैं। यहां की रमणियां भी परिश्रम से कार्य करने वाली होती हैं और उनमें पर्दा नहीं है॥

———

याचना

लेखक—हरिशंकर भट्ट बी. ए.

नाथ! अब दैन्य न अधिक सतावे।
सुख सम्पत्ति-पूर्ण भारत हो, स्वर्ग समान दिखावे॥ नाथ०।
लोभ मोह छल कपट अनल को, वारिद-ऐक्य बुझावे।
हरित भरित हो हृदय-बल्लरी, प्रेम-प्रसून खिलावे॥ नाथ०॥
भक्ति-नीर-युत मानस-तट पर, धर्म्म कलोल मचावे।
प्रीति-कुञ्ज में साँवलिया 'हरि', मुरली मधुर बजावे॥
नाथ! अब दैन्य न अधिक सतावे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचित्र खद्दर-प्रेमी *

लेo—श्रीयुत जगन्नाथजी 'मनुज'

(१)

जाति का सोनार होने पर भी मेवालाल की शहर में बड़ी प्रतिष्ठा थी। हसुली इत्यादि आभूषण बनाने में उसने इतनी ख्याति प्राप्ति की थी कि सम्पूर्ण वेत्रवती नगरी के कारीगर उसका लोहा मानते थे। उसकी सुजनता और उदारता देखकर सब लोग उसको आदर तथा प्यार की दृष्टि से देखते थे। उसको किसी से द्वेष या डाह नहीं थी। उसका आचरण निर्म्मल, प्रकृति स्वतन्त्र, चाल ढाल सादा और निश्छल था। 'लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर' की हालत रहने पर भी वह निर्बुद्धि नहीं था। प्राकृतिक शिक्षा ग्रहण कर मेवालाल ने अपना शान्तिमय जीवन व्यतीत किया। उसने अपने वीस वर्ष के जीवन में कभी किसी के विचारों की भी दासता नहीं की। उसकी तर्कशक्ति इतनी जबरदस्त थी कि लोग हैरान होजाते थे। पूर्वजन्म के संस्कार से धार्मिक बातों में उसका खूब दिल लगता था। भागवत धर्म्म में उसकी इतनी प्रवृत्ति थी कि वह गीता के निम्न श्लोक का नित्यपाठ करता था—

"कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्त्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ सजीवति ॥१६॥
(तृतीय अध्याय)

भगवान् तिलक का कट्टर अनुयायी होने पर भी उसकी श्रद्धा महात्मा गांधीजी के प्रति कुछ कम न थी, जिसकी झलक हम उसके अन्तिम कार्य्य-कलापों में पाते हैं।

(२)

अन्त में भारत-हृदय-सम्राट भगवान् तिलक की भांति म० गांधीजी छः वर्ष के लिये कारागारवासी हुए। मेवालाल के बड़े भाई रामानन्द जिनका सारा समय स्थानीय-कांग्रेस के तत्वावधान करने ही में लगता था, उनका हृदय 'बापूजी' की वियोगाग्नि से झुलस सा गया। उन्होंने दिल की जलन मिटाने के मिस से घर पर विरह-कथा छेड़ दी। मेवालाल यथासाध्य इसे विसारने का यत्न करता था, परन्तु न जाने क्यों उसकी आंखों से आंसू उमड़ पड़ता। किसी प्रकार चित्त को स्वस्थ कर उसने मानवकर्त्तव्य-ज्ञान की जिज्ञासा रामानन्द से की और आग्रह पूर्व्वक पूछा"—भाई साहेब! यद्यपि हमारी हृदय-ग्रन्थि खुल चुकी हैं, तथापि मुझे प्रकृत शान्ति प्राप्त नहीं। आशा है तुम मेरी उत्सुकता म० गांधीजी के जेल जाते हुए सन्देशे को कह कर निवृत करोगे।"

मेवा—"म० गांधीजी का सन्देशा तो केवल एक शब्द में था। वह यह कि हाथ-कते सूत की हाथ-बुने 'खद्दर' मेरे हाथ पर रक्खो मैं तुम्हारे हाथ पर 'स्वराज्य' रख दूंगा। खद्दर तो स्वराज्य की तरह हमारा जन्मसिद्ध हक है और इसी में स्वराज्य और स्वतन्त्रता है। बिना खद्दर के आदर्श रामराज्य का स्वप्न देखना माया मरीचिका में विचरना है। भारत का भाग्यविधाता सुदर्शन चक्र रूपी चर्खा और सादगी के उज्ज्वल उदाहरण पवित्र शुद्ध खद्दर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यवहार कर सुख-शान्ति-स्वातन्त्र्य को निमन्त्रण दो और यही मेरी तथा दूसरे हजारों कैदियों का मुक्तिमन्त्र है। खद्दर के श्वेत-शृङ्गार की महिमा लोगों के हृदय पर अङ्कित करो कि—

'हिन्द का जानो माल खद्दर है,
अब तो हम पर दयाल खद्दर है।
मत ये समझो निशां गरीबी का,
हमको दौलत का ढाल खद्दर है॥
ग्रीष्मऋतु की तपन बुझाने को,
ठण्डे पानी का ताल खद्दर है।
मोमजामा सा है ये बारिश में,
हम को सर्दी में शाल खद्दर है॥

तब यह खब्बीस और खूबसूरत खद्दर हमारे आध्यात्मिक स्वराज्य जीवन में अहिंसात्मक क्रान्ति उपस्थित करेगा जो वर्तमान शासन का मूलोच्छेद कर अपनी खद्दरी सल्तनत कायम करेगा।"

(३)

उपर्युक्त कथन विद्युतच्छटा की भांति मेवालाल के हृदयान्धकार में समागई। विषमावस्था में पड़जाने से सहसा वह कुछ कर न सका। प्रातःकाल हो उसको पुनरावर्जित कराल ज्वर का प्रारम्भ हुआ। कफ सूख कर कलेजे पर जकड़ गया। कीमती से कीमती तथा अमोघ औषधियों का प्रयोग होता रहा। रोगीके आत्मीय या सम्बन्धी की समस्त सेवा और सुश्रूषा का यही परिणाम हुआ कि कराल ज्वर की लपट में यह अनोखा रत्न ईश्वर की दरबार की ओर अग्रसर हुआ। अन्त तक सेवा और सुश्रूषा समान भाव से होती गयी किन्तु कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मृत्यु से ३६ घण्टा पहले रोगी को खद्दर पहनने की धुन सवार हुई। हाथ से टटोल कर तथा यह जान कर कि ये कपड़े मिल के बने हैं उसने अपने शरीर से उतार कर फेंक दिये। उसको जब सभी वस्त्र खद्दर के मंगाकर पहिरा दिये गये तब यह परलोक-पथ की पथी आत्मा सन्तुष्ट हुई। जब तक वस्त्र परिवर्तन हो रहा था तब तक यह खद्दर की पुकार से सब को व्याकुल कर रहा था। ऐसा मालूम होता था कि जो वस्त्र वह पहने हुए था मानो ये उसके बदन को काट रहे थे। परलोक की ओर तेजी से पैर बढ़ाते हुए आत्मा को मानो पवित्र खद्दर की तीव्र प्यास सी लग गई थी। मरणोन्मुख रोगी के खद्दर की इस मांग ने एक गुप्त रहस्य का भंडाफोर कर दिया जिससे प्रतीत होता था कि खद्दर और परलोक से कोई पारस्पारिक सम्बन्ध है॥

मृत्यु से ८ घण्टा पूर्व रोगी का कंठ अन्तिम वार खुला और तीन चार घंटा तक खुला रहा। परन्तु सिवाय भगवान् तथा महात्मा जी के नाम के अतिरिक्त उसने कोई दूसरी बातें नहीं की। दिवाल में बने हुए एक ताक की ओर ईशारा करके उसने वारम्बार कहा कि 'वहां भगवान् सुदर्शन चक्र रुपी चर्खा लिये हुए आकर बैठे हैं और मुझे बुला रहे हैं। कंठावरोध हो गया। किन्तु रोगीने आंखे खोल ताक की ओर ईशारा करके दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और सर्वदा के लिये इस संसार को छोड़ दिया।

मेवालाल! तुम तो चले गये, किन्तु अपने पीछे एक अमिट प्रभाव तुम छोड़ गये हो। आज तुम्हारे बलिदान से वेत्रवती नगरी में घर घर तुम्हारे आदर्श पर खद्दर का व्यवहार होने लगाहै।

* यह गल्प बिगत चैत्र नवमी की सच्ची घटना के आधार पर लिखी गयी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समालोचना का नवीन सिद्धान्त ।

लेखक-श्रीयुत पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ।

जुलाई की "सरस्वती" में श्री नवीन चन्द्रने 'हिन्दी भाषा और साहित्य' पर नवीन चन्द्रिका डाल कर समालोचना का नवीन सिद्धान्त प्रकट कर दिया है। हिन्दी साहित्य सेवी ही क्यों संसार के समस्त साहित्यसेवी श्री नवीनचन्द्रकी कृतज्ञता मान सदा सिर झुकाये रहेंगे। आप के नवीन सिद्धान्त का सार इस प्रकार है:—

"इस समालोचना की जरूरत ही क्या है ? ग्रन्थकार हैं और पाठक हैं (सम्पादक मुद्रक, प्रकाशक प्रभृति शायद अब नहीं रहे) दोनों आपस में निपटलेंगे। इन दोनों के बीच एक तीसरे आदमी के कूद पड़ने की क्या आवश्यकता (कुछ भी नहीं। फिर भी आप कूद ही ड़े) उपभोग है और उप भोक्ता हैं (ज्ञापयिता ायद मरगये) किसी को यह क्या अधिकार कि वह मनुष्य को (गधे को नहीं) ज्ञान के एक निर्दिष्ट पथ पर ही चलने की आज्ञा दे ?" (फिर आप ही क्यों अनधिकार चर्चा कर रहे हैं ?) अगर यही बात है तो स्वर्णकार है और ग्राहक है फिर कसौटी को क्या जरूरत है ? घी वाला है और खरीदने वाला है फिर जांच के लिये रासायनिक परीक्षक की क्या जरूरत है ?

लेखक हैं और पाठक हैं फिर सम्पादक की क्या जरूरत है ? जमीन है और घास है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह घास पात को उखाड़ फेंके और फूल फल के वृक्षों को बढ़ने दे।

अन्धा है और कुआँ है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह अन्धे को कूए में गिरने से रोके ?

क्या श्री नवीन चन्द्र जी इन प्रश्नों के उत्तर देने की कृपा न करेंगे ?

अरस्तू की राजनीति

ले०—श्रीयुत् प्रो० प्राणनाथ विद्यालंकार

१—राजनीति शास्त्र का उदय ।

यूनान देश में अरस्तू ने ही सब से पहिले राजनीति को एक शास्त्र का रूप दिया । चाणक्य के सदृश ही उसने राजनैतिक प्रश्नों के सरल करने में तर्क का प्रयोग किया। यद्यपि उसके विचार प्लेटो के सदृश ही थे तो भी उसकी विचार प्रणाली सर्वथा नवीन थी। * उसने ऐसी बहुत सी बातों को सिद्धान्त का रूप दिया जिनका कि प्लेटो ने उदाहरण के रूप में या अप्राकरणिक तौर पर ही उल्लेख किया था।

अरस्तू ने सबसे पहिले पहिल 'शासन-पद्धति' (The Constitutions नामक एक बड़ा ग्रंथ लिखा। उसने उसमें भिन्न २ प्रकार की एक सौ पचास शासन पद्धतियों का विस्तृत तौर पर उल्लेख किया। दौर्भाग्य से यह ग्रंथ अब नहीं मिलता है। "एथेन्ज़ की शासन

*Aristoteles Politik (Teisig, 1879) Einleitung, P. 11, note.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पद्धति" नामक इसका एक खण्ड ही प्राप्त होता है * यह ग्रन्थ बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसीके देखने से यह मालूम पड़ा है कि अरस्तू ने किस प्रकार इतिहास तथा तत्कालीन शासन पद्धतियों के सहारे शासनपद्धति नामक महाग्रन्थ को तय्यार किया था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसने अपने राजनीति शास्त्र का उच्च भवन इसी महाग्रन्थ की सामग्री के सहारे खड़ा किया था।

प्लेटो ने धर्म्म तथा सदाचार को राजनीति से मिला दिया था। अरस्तू ने यह न किया। उसने धर्म्म तथा सदाचार से राजनीति को पृथक् करके एक नवीन शास्त्र का रूप दिया। प्लेटो एक त्रैकालिक पूर्ण धर्म (Good) का स्वप्न देखता था। अरस्तू ने इसीको अन्धकार प्रकाश या गरमी सरदी के सदृश सापेक्षिक प्रकट किया। उच्चकोटि के सांसारिक धर्म को बताने वाले शास्त्र का नाम उसने राजनीति शास्त्र रखा †। उसका विश्वास था कि राष्ट्र तथा राज्य की पूर्णता में ही नागरिकों की पूर्णता है। और इसी लिये राष्ट्रीय नियमों या राज्यनियमों का पालन करना नागरिकों का मुख्य धर्म्म है। इसी विश्वास से प्रेरित होकरके उसने राजनीति शास्त्र को सदाचार शास्त्र की अपेक्षा अधिक महत्व दिया। नागरिक या राष्ट्रीय धर्म का वैयक्तिक आचार व्यवहार के साथ विरोध-उसके विचार में राष्ट्र की अपूर्णता का चिन्ह है। पूर्ण राष्ट्र वही है जिसमें वैयक्तिक धर्म का राष्ट्रीय धर्म्म के साथ विरोध न हो। जो राज्य नियम हो वही वास्तविक धर्म्म हो, और जो वास्तविक धर्म्म समझा जाता हो वही राज्यनियम हो ‡।

आज कल राजनीति शास्त्र पर दो विधियों के द्वारा लिखा जाता है। (१) अमूर्त्तविधि। (२) व्यावहारिक विधि। अरस्तू इन दोनों विधियों को ही उचित समझता था। आदर्श राष्ट्र क्या है? और आदर्श मनुष्य क्या होसकता है? इन प्रश्नों पर अमूर्त्तविधि के अनुसार विचार करने के साथ साथ "भिन्न भिन्न राष्ट्रों में राज्य से नागरिकों का क्या सम्बन्ध है?" इस पर व्यावहारिक विधि के अनुसार प्रकाश डालना वह अत्यन्त आवश्यक समझता था। प्लेटो ने प्रायः प्रथम विधि का ही अवलम्बन किया था। परन्तु अरस्तू ने द्वितीय विधि को ही अपने ग्रन्थों में मुख्यता दी §।

२—राष्ट्र तथा परिवार का स्वरूप।

अरस्तू का विचार था कि राष्ट्र एक प्रकार का बड़ा सम्मिलिन है। शुरू शुरू में स्त्री तथा पुरुष का एक छोटा सा सम्मिलिन था। समय के गुज़रने के साथ साथ स्त्री तथा पुरुष के सम्मिलिन ने ग्राम का रूप धारण किया। ग्रामों के परस्पर मिलने से राष्ट्र बना है। सम्मिलिन का आधार मनुष्यों की आवश्यकता थी। मनुष्यों में यदि "आवश्यकता" रूपी प्रवृत्ति न होती तो परिवार तथा ग्राम न बनते और इनके लोप के साथ साथ ही राष्ट्र का लोप हो

* Aristotle on the Constitution of Athens. Troultes, with introduction and notes, by F. G. Kenyon, London, George Bell and Sons, 1891.

† Grout, the Ethics of Aristotle, I Appendix C.

‡ Aristotle, The Politics, III. IV V. 10, XVIII. I. IV- VII. 2, VII. XIV.8

§Political Theories, Ancient and Medieval by Dunning (1916) P. P. n 9.55

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाता है परन्तु कदाचित् ही कोई मनुष्य होगा जो कि आवश्यकताओं से शून्य हो। कामिक तथा सन्तानोत्पत्ति की प्रवृत्ति से परिवार बने और परिवारों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये ग्राम और ग्रामों की भिन्न २ आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये राष्ट्ररूपी वृहत्सम्मिलिन उत्पन्न हुआ।

राष्ट्र एक पूर्ण सम्मिलिन है पारिवारिक सम्मिलिन ने बढ़ते २ राष्ट्र के रूप में पूर्णता प्राप्त की है। अब राष्ट्र का अपना भी एक जीवन है। उसका भी मनुष्य के सदृश एक पृथक् अस्तित्व है। मनुष्य राष्ट्र में रहते हुए ही अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकते हैं। स्वभाव से ही मनुष्य एक राष्ट्रीय या राजनैतिक जीव है। राज्य या राष्ट्र से पृथक् रह करके जंगलों में जीवन निर्वाह करने वाले या तो ऋषि मुनि होते हैं और या राक्षस। मनुष्यों का राष्ट्र या राज्य बिना निर्वाह नहीं हो सकता है।

राष्ट्र को परिवार का और राजा को कुलपति का ही एक रूपान्तर मानना उचित नहीं है। क्योंकि राजा का राष्ट्र के साथ जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध कुलपतिका परिवार के साथ हो-यह आवश्यक नहीं है। कुलपति का परिवार के भिन्न २ सभ्यों के साथ भिन्न २ सम्बन्ध होता है। वह जिस आंख से अपनी स्त्री तथा बालबच्चों को देखता है, उसी आंख से वह दासों तथा अन्य रिश्तेदारों को नहीं देखता है। वह दासों से कठोर काम लेता है और अपनी स्त्री तथा बालबच्चों को कठोर काम से रोकता है। कुलपति का परिवार के सभ्यों के साथ एक सदृश व्यवहार नहीं होता है। किसी के साथ उसका व्यवहार प्रीतिमय और किसी के साथ उसका व्यवहार स्वार्थमय होता है। परन्तु राष्ट्र या राज्य का नागरिकों के साथ सम्बन्ध एक सदृश होता है। राजा की आंख में सभी नागरिक एक समान हैं॥

दासप्रथा को अरस्तू उचित समझता था। उसका खयाल था कि कुछ लोग जन्म से ही बुद्धिमान और कुछ लोग जन्म से ही बलवान होते हैं। विचारशील बुद्धिमान बल तथा मेहनत का काम नहीं कर सकते हैं और बली तथा मेहनती बुद्धि तथा विचार का काम नहीं कर सकते हैं। इसीलिये दासप्रथा उचित है। मेहनती बलवानों को दास बना करके काम लेना कुछ भी बुरा नहीं है। राष्ट्रका हित इसी में है कि बुद्धिमान लोग मेहनती लोगों से बलात् काम लेवें। स्वामियों की अपेक्षा दासों का अधिक बुद्धिमान् तथा विचारवान् होना-वह दासतारूपी स्वाभाविक नियम का अपवाद समझता था। उसके विचार में शासक शासित तथा स्वामी दास का सम्बन्ध एक अत्यन्त स्वाभाविक सम्बन्ध है। बबर या असभ्य जाति के लोगों का दास बनाना अच्छा है। क्योंकि वह यूनानियों से बुद्धि तथा विचार में बहुत पीछे हैं। *

अस्तु कृषि पशुपालन तथा वाणिज्य को एक स्वाभाविक पेशा समझता था। उसके विचार में रुपयों के ख़ातिर वाणिज्य करना और ब्याजपर रुपयों को देना अनुचित था। क्योंकि कृषि पशुपालन तथा वाणिज्य आदि के काम

* Cf. Plate. The Republic, V. 469, Aristotle. The Politics, I. VI. 6, VII. VII, 3.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन निर्वाह के स्वाभाविक साधन हैं न कि रुपयों के बटोरने के। वैयक्तिक सम्पत्ति को भी वह किसी हदतक ही उचित समझता था *।

३—राष्ट्रों की शासनपद्धति।

कौनसी शासनपद्धति राजनीति शास्त्र के सिद्धान्तों के अनुकूल है और कौनसी प्रतिकूल है? इसको पता लगाने के लिये अरस्तू ने भिन्न २ राष्ट्रों की शासनपद्धतियों की समीक्षा की। उसने अपने राजनीति शास्त्र के द्वितीय-भागमें स्पार्टा; क्रीट, कार्थेज की शासनपद्धतियों को और हिप्पोडेमस, फेलिपास तथा सोलन के राजनैतिक सिद्धान्तों को विस्तृत तौर पर दिखाया और स्थान स्थान पर टिप्पणियों को भी चढ़ाता गया। उसने प्लेटो की तीक्ष्ण समालोचनासे इस भाग का श्रीगणेश किया। बहुतों का विचार है यह समालोचना आवश्यकता से अधिक तीक्ष्ण है और औचित्यकी मर्यादाका उल्लंघन करचुकी है। जो कुछ भी हो। प्लेटों के ग्रामवाद (Communion) को स्वीकृति करते हुए भी अरस्तूने ग्रामवाद की प्राप्ति के साधनों के विषय में प्लेटों से अपना मतभेद प्रगट किया है। प्लेटों की कल्पना थी कि पारिवारिक प्रेम से जुदा हो करके ही मनुष्य सामाजिक या राष्ट्राय प्रेम की ओर झुक सकता है। जो मनुष्य अपने बालबच्चों के प्रेम में ही लिप्त है वह राष्ट्रीयप्रेम से बहुत कम प्रेरित होता है। वह राष्ट्रायप्रेम को पारिवारिक प्रेम पर बलि चढ़ा देता है। परन्तु अरस्तू प्लेटो की इस कल्पना से सहमत न था। उसका ख्याल था कि प्रेम मनुष्य का स्वाभाविक गुण नहीं है। बालबच्चों तथा बांधव भाईयों के संसर्ग से ही मनुष्य में प्रेम उत्पन्न होता है। पारिवारिक बन्धनों से जुदा होते ही मनुष्य का हृदय प्रेम शून्य हो जावेगा। राष्ट्राय प्रेम से काम करना तो दूररहा, वह किसीके भी प्रेम से काम न करेगा। प्लेटो सम्पत्ति परसे वैयक्तिक स्वत्व को हटाना चाहता था परन्तु अरस्तू इसी बात में विरुद्ध था। अरस्तू का विचार था कि संपत्ति पर सामाजिक स्वत्व से हानिके सिवाय कुछ भी लाभ नहीं हैं। साम्पत्तिक मामलों में जहां जहां लोगों ने आपस में मिल करके काम किया है वहां वहां ही फूट का बाजार गर्म होगया है। सम्पति पर सामाजिक स्वत्व से भी यही बात होगी। भिन्न वस्तुओं के भेद को हटाकरके समताकी ओर पैर बढ़ाने से कभी भी पूर्णता नहीं आसकती है। एकता की ओर जाने में ही पूर्णता है। सब बाजों को मिटाकरके एक बाजा बनाने में क्या लाभ? संगीत का मज़ा इसी में है कि सब बाजे अपना २ सुर अलापें परन्तु एकता को न छोड़ें। राष्ट्र में शासक शासित तथा धनी दरिद्र के भेद बने रहने दो। उचित तथा कर्त्तव्य कर्म यही है कि राष्ट्र के भिन्न २ सभ्यों के सम्बधों का इसी तरह से संगठन किया जावे कि भिन्न २ बाजे एक ही सुर अलापें और राष्ट्रकी सुघटित प्रतिमाका एक पूर्ण रूप देदें।

इसी उद्देश्य को सन्मुख रख करके अरस्तू ने आदर्शशासन पद्धति का जनसमाजके सन्मुख रखा। नागरिकों के संघ का नामही राष्ट्र है। यहां पर यह प्रश्न स्वभावतः हो उठता है कि नागरिक से क्या तात्पर्य लिया जाता है? इसका उत्तर अरस्तू ने यह दिया है कि नागरिक वह है जिसको कि राज्यानियम या अपराध निर्माण सम्बन्धी विभागों में भागलेने का अवसर प्राप्त हो। इसी को दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि अरस्तू के विचार में राजनैतिक अधिकारों से अलंकृत पुरुष ही नागरिक होता है। उसका यह विचार यूनानी

* Political Theories, Ancient and Medieval by Dunning (1910) P.P. 55-62.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचारों से रंगा हुआ है, इस पर कुछ भी लिखना सूरज को दीपक दिखाना है। नागरिक बनने का किस किसको अधिकार हो, इसके उत्तर में अरस्तू ने कारीगरों तथा मेहनती मजदूरों को नागरिक बनाना अनुचित प्रगट किया है। जो शासक तथा शासित हों सके वही नागरिक होसकता है। मजदूर मेहनती लोग दिन भर दूसरों की नौकरी करके पेट पालते हैं इस हालत में वे शासक का पद कभी भी ग्रहण नहीं करसकते हैं और नही वे इस पद के ग्रहण करने के योग्य ही होते हैं। कारीगरों को भी नागरिक बनाना अनुचित है क्योंकि वे दिनभर अपने पेटपालन के फिक्र में ही रहते हैं। वे राजनैतिक प्रश्नों के हल करने में अपना समय नहीं खर्च कर सकते हैं अतः उनको भी नागरिक बनाना हानिकर है। सारांश यह है कि अरस्तू के विचार में स्वावलम्बी स्वतंत्र पुरुष ही नागरिक होसकता है।

शासनपद्धतियों के द्वारा ही राष्ट्र में राज्यकार्य्यों का सञ्चालन होता है। प्रभुत्वशक्ति का स्रोत कहां पर हो? राज्य के भिन्न २ अंगों का पारस्परिक सम्बन्ध क्या हो? इत्यादि प्रश्नों को सरल करना तथा कार्य्यरूप में लानाही शासनपद्धति का काम है। इन ही प्रश्नों को भिन्न २ ढंग से सरल करने से शासनद्धति भिन्न २ हो जाती है। प्रभुत्वशक्ति का स्रोत यदि नागरिक हा तो शासनपद्धति और यदि कुलीन हों तो कुलीन तन्त्र शासनपद्धति होती हैं।

किस समय राष्ट्र नष्ट होता है और किस समय नवीन रूप को धारण करता है? अरस्तू ने इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही विचित्र दिया है वह नागरिकों के सघ का नाम ही राष्ट्र समझता था। उसका विचार था कि शासनपद्धति ही राष्ट्रका जीवनाधार है और शासनपद्धति के बदलते ही पुराना राष्ट्र नष्ट हो करके नये राष्ट्र का रूप धारण करता है। उसका यह विचार कभी भी सन्तोषप्रद नहीं हो सकता है। क्योंकि इसका तो एक तरीके से यह मतलब हुआ कि शासनपद्धति के बदलते ही कोई भी राष्ट्र अपनी पुरानी संधियों पुराने ऋणों तथा प्रतिज्ञाओं के पालन न करने में कभी भी दोषी नहीं ठहराया जासकता है। परन्तु कौन विचारक यह मान सकता है। अरस्तू स्वयं भी ऐसा करने के पक्ष में न था। यही कारण है कि उस ने यह लिखा कि शासनपद्धति का बदलना और राष्ट्र का प्राचीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को जारी रखना भिन्न २ बाते हैं।

यह पूर्व ही लिखा जाचुका है कि जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करते करते मनुष्य लोग परिवार, ग्राम तथा राष्ट्रके रूपों में संगठित हुए। राष्ट्र में संगठित होते ही मनुष्यों का पारस्परिक सम्बन्ध दिन पर दिन घनिष्ट होता गया। इसी घनिष्ट सम्बन्ध का यह परिणाम है कि आजकल मनुष्यों की उन्नति अवनति में राष्ट्रका अधिक भाग है। इसी विचारसे अरस्तू ने उस शासनपद्धति को सब से उत्तम शासनपद्धति प्रगट किया जिसमें कि लोगोंको राष्ट्र की सेवा करने का क्रमशः अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो। उसके विचार में जीवन निर्वाह तथा पेटपालने के लिये राष्ट्रीय कामों का करना उचित नहीं है। क्योंकि इसमें राज्यकर्मचारियों का मुख्य उद्देश्य सम्पत्ति होता है न कि राष्ट्र।

(असमाप्त)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

प्रथम आर्य्य स्वराज्य सम्मेलन लाहौर

सभापति का भाषण

गत नवम्बर मास में लाहौर आर्य्य समाज के उत्सव के साथ जो आर्य्य स्वराज्य सम्मेलन का पहिला अधिवेशन हुआ था उसमें सभापति श्रीमान् चांदकरण शारदा जी ने जो वक्तृता दी थी उसमें से बहुत आवश्यक उद्धरण हम ज्योति के पाठकों के हितार्थ नीचे देते हैं।

आदर्श वैदिक राज्य

"स्वराज्य प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है" और प्रत्येक पुरुष को अपने अधिकार की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होना चाहिए। इस समय सारा भारत स्वराज्य प्राप्ति के उद्योग में लग रहा है। परन्तु उस स्वराज्य का क्या स्वरूप होगा यह अभी तक निश्चित नहीं है। कांग्रेस के कुल सभासद् यह कह कर बात टाल देते हैं, कि पहले स्वराज्य मिल ले तब उसके स्वरूप का निर्णय किया जायगा। चिड़ियां पिंजरे में से छूटलें तब यह तै करेंगी कि किस पेड़ पर बैठें। अपने घर पर कब्जा हो जाय तब उसमें चीजें किस तरतीब से रखी जांय यह तै किया जायगा। कुछ कहते हैं कि घर में खाने को धान भी नहीं हैं और नक्शे बनारहे हैं स्वराज्य के, चौमहले भवन के इत्यादि मेरा इनको यह उत्तर है कि ये अनेक प्रकार के "मेटाफर और सिमिली" उपमायें देकर अपने को धोखे में डाल रहे हैं। आप उस आदमी को क्या कहेंगे जो सफर करने रेल में बैठा है और यह नहीं जानता कि कौन से गांव जाना है। आप इस आदमी को क्या कहेंगे जो तैरना नहीं जानता और अगाध समुद्र की तरल तरंगों में कूद पड़ता है कि हम तैरना सीख लेंगे। मेरे खयाल में स्वराज्य के निरूपण किये बिना कांग्रेस का काम बहुत बिगड़ रहा है। और भारी गलत फहमियां चारों ओर फैली हैं। भिन्न २ लोगों ने स्वराज्य के भिन्न २ अर्थ लगा रखे हैं। बहुत से लोग स्वराज्य का अर्थ करने से इस लिये घबड़ाते हैं कि इस से कांग्रेस में कई नये दल उत्पन्न हो जांयगे। परन्तु हमारा विचार है कि जब हाथ में राज्य धन और बल नहीं तब फूट का इतना डर है तो इनके मिलने पर तो कितना भयंकर मतभेद हो सक्ता है यह इतिहास के पाठक भली भांति जानते हैं। उस समय स्वराज्य के निरूपण न होने से ऊंची तनख्वाहों व धन जमीन के लालच से व ईर्षा द्वेष से अराजकता फैलने का पूर्ण भय है। इस लिए स्वराज्य के मुख्य २ अंशों को तो अभी तै कर लेना चाहिए। भारतवर्ष में स्वराज्य के भिन्न २ लोगोंने भिन्न २ अर्थ लगा रखे हैं। जिनके कारण बहुत से लोग जो इस स्वराज्य युद्ध में सहायता करते वे अलग बैठे हैं। स्वराज्य के मायने यह समझते हैं कि मैं अपनी इच्छानुकूल जो चाहूं सो करूं और किसी को किसी प्रकार की दस्तन्दाजी का कोई हक नहीं है। कुछ किसान लोग यह समझे हैं कि स्वराज्य में उनसे किसी प्रकार का कर नहीं लिया जायगा। टेक्स देने वाले यह समझे हैं कि सब टेक्स माफ हो जांयगे। मकरूज़ लोग यह समझे हैं कि उनको कर्ज अदा नहीं करना पड़ेगा। कुछ लोग यह समझे हैं कि १८५७ के स्वतन्त्रता के युद्ध में जिन लोगों की जमीनें व जायदादें जब्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की गई हैं वे उनको वापिस कर दी जांयगी। कुछ लोग यह समझ बैठे हैं कि स्वराज्य में हरेक अंगरेज को हिन्दुस्थान से बाहर निकाल दिया जायगा। कुछ लोग यह समझे बैठे हैं कि भारत वर्ष को मुसलमान नवाब, हिन्दू राजा व सिख सरदार आपस में बांट खांयगे और वही पुराने जमाने वाली एक डंडी चलेगी, एकतंती राज्य होगा। कुछ मुसलमान यह समझे हुए हैं कि गाजी मुस्तफा कमाल पाशा या अमीर काबुल आकर अंगरेजों को हटायेगा और फिर मुगलई सलतनत कायम होगी। कुछ लोग यह समझे हैं कि जिस प्रकार की सरकार इंगलेंड अमेरिका फ्रान्स आदि देशों में है वैसी सर्कार यहां कायम होगी, परन्तु हमारा उद्देश्य है कि संसार में सुख और शान्ति का राज्य जब ही होगा जब कि पवित्र वेदों में कही हुई राज्यपद्धति स्थापित होगी। जो लोग (Parliamentary system of Swaraj) की बुलकुल नकल करना चाहते हैं उनका ध्यान मैं यूरप की वर्त्तमान दुर्दशा की ओर आकर्षित करता हूं। स्वयं अमेरिका की (Republic) के प्रेज़ीडेन्ट (Taft) फरमाते हैं "In American States, the administration of criminal justice is a disgrace to American civilization" यानी अमेरिका में फौजदारी न्याय सभ्यता को कलंक लगाने वाला है। लायड जाज के जमाने में इंगलेण्ड का जो पतन हुआ वह किस से छिपा है। सेण्ट निहाल सिंह के लेख जो माडर्न रव्यू (Modern Review) में अमेरका के सम्बन्ध में छपे उनको पढ़ कर किसके रोंगटे खड़े नहीं होते। पूंजी पतियों और मजदूर दल की लड़ाईयों से आज यूरप जजारत हो रहा है। इसके बारे में मैं आपका ध्यान डाक्टर (Doctor Bryce's modern democracies) नामक पुस्तक की ओर आकर्षित करता हूं जिस में आधुनिक यूरुप की शासन पद्धतियों की भली प्रकार पोल खोली गई है और प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली के गुण गाये गये हैं। उन्होंने England के Obstruction, America के Filibustering और Australia के Stone walling और Germany के Dauerreden की कमजोरियां दर्शाई हैं। ऐसी ही कमजोरियों के कारण अमेरिका में Lynching यानी जीवित निगरो की खाल खेंच कर मारने जैसी अमानुषिक प्रथा, फजूल खर्चियां, बेईमानियां रिश्वत खोरियां खूब चलती हैं। धन वाले चुनाव में व अखबारों में खूब रुपया खर्च कर के मन माने अत्याचार करते हैं। हम नहीं चाहते कि पश्चिमी नकल करके वे ही अन्याय हम सहें। यह तो ऐसा ही होगा जैसे कोई अपने सिर का बोझ उतार कर कंधे पर रख ले या कंधे से उतार कर पीठ पर लाद ले। यद्यपि ऐसा करने से थोड़ी देर के लिए उसे आराम मालूम होता है परन्तु दुःख का निपटारा जभी होगा जब वह बोझा बिलकुल उतार दिया जाय और सब आदमी बराबर अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार बांटलें। यूरोप में आजकल राष्ट्रीय सामाजिक पंथचला है जो जागीरदारों की मालिकी हटाकर जमीनों की उनकी निजूजायदाद न रखकर उनको मुफ्त का खाने वाला न रखकर उनको बेकार बैठे रहने वाला न बना कर सारी जमीन का मालिक समाज को बनाना चाहते हैं, क्योंकि पुराने जमाने में जमीन का मालिक समाज ही था। किसान खेती करता था परन्तु स्वामित्व गांव वालों का ही था। आधुनिक प्रथा से किसान दिनभर मेहनत करता है, अन्न पैदा करता है परन्तु उसे पेट भर खाने को भी नहीं मिलता। जमीनदार ठाकुर बेकार बैठा रहता है एक तिनका इधर से उधर नहीं सर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काता और रोज मिष्टान्न पर हाथ मारता है। यह भारी अन्याय है। परन्तु इस पंथ से भी संसार का कल्याण नहीं हुवा। यूरोप में Bolsheavism Militarism Capitalism Navalism, Soveitism Aersplanism Socialism और न मालूम क्या २ बिमारियों से वहां का समाज दुःखित है। इस लिए हमारे स्वराज्य का रूप क्या हो? इसका संगठन कैसा हो? यह जानलेना आवश्यक है। हमारे पवित्र वेदों में इस विषय में क्या आज्ञा दी है? यह प्रत्येक आर्य्य को जानकर उसका प्रचार करना चाहिए। यह हमारा मत है कि जैसे देह बदलते रहते हैं और आत्मा पुराना हो रहता है वैसे ही जमाने नये बदलते रहते हैं परन्तु संसार की गति के नियम वे ही बने रहते हैं, जो हमारे पवित्र वेदों में दर्शाये गये हैं। यौवन काल का बलवान शरीर वृद्धा अवस्था में जीर्ण होता है तब उसको शरीर बदल लेनाही अच्छा होता है। इसी प्रकार पुरानी जीर्ण रूढ़ियों को बदलना चाहिए। प्राचीन काल के ऋषि मुनियों के सत्संगों ने अब सम्मेलनों का रूप धारण किया है जिनमें हम विचार करते हैं कि कैसे उपयोगी ज्ञान संसार में फैले अविद्या का अन्धकार मिटे व सदाचार और सत्चरित्र का ज्ञान उदय हो। आप भाई इस सम्मेलन में एकत्रित होकर उन ही वैदिक स्वराज्य सम्बन्धी सद्विचारोंके फैलाने का उपाय सोचेंगे। मुझे यह लिखते हर्ष होता है कि गया कांग्रेस के मोनोनीत सभापति श्रीमान् देशबन्धु चितरंजनदास का ध्यान इस आवश्यक और महत्वके प्रश्न की ओर गया है। श्रीमान् बाबू भगवानदास जी काशीवासी भी पहिले से इस पर कह रहे हैं। श्रीयुत दास फरमाते हैं कि यह कांग्रस का कर्तव्य है कि वे देश के सामने उस प्रकार की शासनप्रणालीका मसविदा रक्खे जैसी हम चाहते हैं। स्वराज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रीय भावना प्रगट की जानी चाहिए। हमारे सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल हो स्वराज्य का स्वरूप होना चाहिए और हमारे लक्ष्य का निरूपण हो जाना चाहिए। मुझे आशा है कि गया कांग्रेस में स्वराज्य के मोटे २ सिद्धान्तों के साथ २ स्वराज्य के रूप का मसविदा हमारे सामने उपास्थित किया जावेगा। और नौकरशाही के विरुद्ध भीषण युद्ध की तय्यारी के लिए नई २ योजनायें प्रस्तुत की जांयगी। इस वास्ते आर्य्य पुरुषों का कर्त्तव्य है कि वे अभी से सोचलें कि भारतवर्ष की भिन्न २ जातियों के स्वराज्य शासन में हमारे आदर्शानुसार क्या अधिकार और स्थिति होनी चाहिए, ताकि यह गलत फहमियां हट जांय कि स्वराज्य में अमुक जाति का ही राज्य होगा बाकी सब जातियां दब जांयगी। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हिन्दु आर्य्य, मुसलमान, सिख, जैन, फारसी, ईसाई, यहूदी, और हिन्दुस्थान में बसे हुए गोरे और अधगोरे आदि जातियों को विश्वास दिलाया जाय कि स्वराज्य शासन में सब की समान रक्षा होगी। और सब के कर्त्तव्यों के साथ २ उनके अधिकारों की भी रक्षा की जायगी। और पददलित जातियां की रक्षा करने में भारत बराबर हाथ बढ़ावेगा॥

स्वराज्य की मुख्य शर्तें

बनारस के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता श्रीमान बाबू भगवानदास जी ने स्वराज्य के प्राचीन शास्त्रों के आधार पर निम्नलिखित अंश बतलाये हैं।

(१) प्रत्येक मनुष्य व जाति में भले और बुरे भाव होते हैं विद्वान और बेवकूफ पुरुष होते हैं। इस वास्ते यह जरूरी है कि स्वराज्य में भले विद्वान् सदाचारियों के हाथ में राज्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की वागडोर रहे और दुराचारी बेवकूफ बदमाशों को राज्याधिकर न दिया जावे।

(२) एक जाति का दूसरी जाति पर राज्य करना हानिकारक है जैसे पूंजीवालों का मजदूरों पर, ब्राह्मण पुजारी और पादरी व मौलवियों का सब पर, हिन्दू का मुसलमान पर व मुसलमान का हिन्दू पर सिया का सुन्नी पर ब्राह्मण का अब्राह्मण पर, व विदेशी का स्वदेशी पर व एक जाति का दूसरी जाति पर।

(३) स्वराज्य में अच्छे कानून बनाये जायं और उनको न्यायोचित रीति से बर्ता जाय। अच्छे कानूनों में ऐसे नियम बनाये जायं जिसमें प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार जीवन की ज़रूरीयात धन सम्मान प्राप्त हो। इस प्रकार के नियम बनाने वाले पवित्र विद्वान् परोपकारी और वानप्रस्थी ऋषि होसक्ते हैं जैसे कि प्राचीन समय में स्मृतिकार ऋषि हुआ करते थे। वर्त्तमान ढंग के चुनावों से व कायदों के वर्त्तने से हमें उपरोक्त प्रकारके कानून बनाने वाले नहीं मिलसक्ते और न पश्चिमी देशों की प्रथा पश्चिमी ढंग की राज्यव्यवस्था से सुखी हुई। मिसाल के तौर पर समझलीजिये कि पार्लीयमैण्ट में २१० सभासद बैठते हैं उनमें १०० कान्सर्वेटिव हैं और ११० लिबरल हैं। Cabinet मन्त्रीमण्डल लिबरल दल वाले बनावेंगे। लिबरल पार्टी ने कोई कानून पास करने की ठानी उस पर कुछ लिबरलों ने उसका विरोध किया उन ११० की मीटिंग में वोट लेने से साठ ने बहुमत से पास किया कि कानून पास हो अब वास्तविक स्थिति पार्टीसिस्टम से यह हुई कि ६० आदमियों की राय से वह कानून पास हुआ जिसको १५० चुने हुवे विरोध करते थे। भारतवर्ष के लिए पश्चिमी ढंग के राज्य की व्यवस्था सुखदायी नहीं होसक्ती। भारत में प्राचीन समय से ही प्रजातन्त्र राज्य था और वो बौद्ध काल में तथा ग्राम पंचायत की सूरत में अब भी भारत में उपस्थित है। परन्तु स्मृतिकार (कानून बनाने) वाले विद्वानों में से चुने जाते थे।

गौ रक्षा और आर्य्य जाति का सङ्गठन

गौ की रक्षा करना आर्य्य जाति का कर्तव्य है इस की रक्षा न होने से हमें उत्तम घी दूध नहीं मिलता। उत्तम बैलों के बिना खेतों में कठिनाइयां होती हैं। यह हर्ष की बात है कि गौ शालायें स्थान २ पर खोली गई हैं, परन्तु उन के सुधार की परम आवश्यक्ता है उन के साथ ब्रीडिंग फार्म और डेरी फार्म बनाने चाहिए। गोचर भूमियों का भी हमें साथ २ प्रबन्ध करना चाहिए जो गायों को दूसरी विलायतों में भेजते हैं उनसे असहयोग करना चाहिए। और उनका बाहिर भेजना रोकने का नाना प्रकार से यत्न करना चाहिए। प्रत्येक को घर घर में गाय रखना चाहिए। और उसके उत्तम दूध का सेवन करना चाहिए। वर्त्तमान नौकरशाही सर्कार गोरी पल्टनों के लिये गौहत्या करती है तथा चमड़े के व्यौपार व मीट ट्रेड के लिये भी गौ हत्या होती है इस कारण आर्य्य मात्र का धार्मिक कर्तव्य है कि नौकरशाही से असहयोग करे। हमारे बुजुर्गों ने गौरक्षा के लिए प्राण न्यौछावर किये। स्त्रियों ने अपने को जलती हुई चिताओं में देश व गौ की रक्षार्थ जला दिया। बहु राजपूत रमणियों ने अपने सर काट कर रख दिये कि कहीं स्त्री प्रेम में रत होकर पति गौ रक्षा के धर्म से च्युत न हो। आज दुःख है आर्य्य जाति की वह दुर्दशा है कि उस वीरता को भूल गये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी सच्ची गोरक्षा जब ही होगी जब हमारी कन्याओं को कन्या पाठशालाओं व विद्यालयों में दूध दुहने, दही जमाने, मक्खन निकालने व गौपालन की शिक्षा देंगे। जब तक हम मोटर और बाइसिकल के स्थान में घर २ में कम से कम एक २ गाय नहीं देखते तब तक बच्चे भी बलवान नहीं होते। बाजारी दूध के कारण हम घर में गाय नहीं रखते। हे आर्य्य पुरुषो! आप संस्कार विधि का उपहास कब तक करते रहोगे जहां वर को गौ देने का विधान है वहां यह नाटक कब तक चलेगा कि तीन बार गौ ३ शब्द पुकार कर ५) जेब से निकाल देना। पुराने समय में दहेज की एक मात्र वस्तु गाय थी। अब भी आप यही मन्त्र पढ़ते हो पर गाय नहीं देते। इस वास्ते कन्याओं की सर्कारी परीक्षा के लिए तय्यारी बन्द करा कर उन को उन के विवाह में न केवल गोदान ही दो परन्तु उन को साथ २ गौपालन भी सिखाओ॥

हिंदू मुसलमानों की एकता।

एक आर्य्य की हैसियत से मैं आप को साफ २ कह देना चाहता हूं कि हमारे धर्मानुकूल हम अपने देश के लिए अकेले लड़ते रहेंगे और स्वराज्य के संग्राम में किसी दूसरे विदेशी समाज से सहायता की कृपा मांगने नहीं जावेंगे। यदि आप अपने देश की आवश्यक्ताओं के प्रति उदासीन रहे, यदि स्वराज्य आन्दोलन में आप का जोश गुनगुना ही रहा, यदि राष्ट्रीय महासभा के लिए आप की सहानुभूति और सहायता ने वैसी ही चपलता धारण न की जैसी अंगोरा के लिए तो याद रक्खो कि तुम्हारे पीड़ित देश को अभी बड़े दुर्दिन देखने पड़ेंगे। मैं आप को साफ २ कह देना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि प्रायः देश के स्वार्थों की उपेक्षा कर आप अंगोरा के हित के लिए बलि देते हैं। इसके अर्थ, इस के शोचनीय अभिप्राय का पूर्ण अनुभव जब मैं करता हूं तब मुझे बड़ा रंज होता है और दिल टूट जाता है। अपना सर्वस्व देकर तुम भारत को और दुर्बल तथा अंगोरा को बलशाली बना सक्ते हो। आप कह सक्ते हैं कि अंगोरा का बल भारत का भी बल है। मैं इस बात को नहीं मानता हूं पहले तो मैं यह नहीं चाहता कि जो केवल मेरे देश और मेरे राष्ट्र का काम है उस में अंगोरा दखल दे और दूसरे, उस स्वराज्य की उपयोगिता और मूल्य में मेरा भरोसा बहुत ही कम है जो हमारे अपने ही बलिदानों और प्रयत्नों से न प्राप्त होगा।

खिलाफत के प्रश्न को राष्ट्रीय महासभा भली भांति हल कर सक्ती है और इस लिये मेरा विचार तो यह है कि देश की समस्त खिलाफत संस्थाओं को राष्ट्रीय महासभा की प्रतियोगिता न करके उस का अंग बन कर स्वतन्त्र रूप से पूर्ण भक्ति के साथ काम करना चाहिये। सब भारतवासियों को पहले राष्ट्रीय महासभा की सफलता के लिए प्रयत्न करना चाहिये। इस समय खिलाफत एक प्रकार की प्रतिद्वंदी संस्था Rival Government भारत में बन रही है। यदि All India Congress Committee होती है तो Central Khilafat Committee भी होती है। यदि ।) का चन्दा कांग्रेस की मेम्बरी का चलता है तो खिलाफत का भी ।) मेम्बरी का चन्दा लिया जाता है। यदि तिलक स्वराज्य फंड निकला तो उधर अंगोरा फंड निकला। यदि सिविलडिसओविडिऐंस की जांच कमेटी (कानून भंग कमेटी) बैठी तो खिलाफत की भी वहीं बैठी। इस प्रकार दो सरकारों से। Double Government से काम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं चलेगा। अब मैं आर्य्य भाइयों से कहता हूं प्रिय वीरो ! हमारा अंग्रेजी काल में क्षत्रियत्व नष्ट हुआ परन्तु अब कुछ सौभाग्य से अशिक्षित और अन्य उन्नत वर्गों को छोड़कर हिन्दुओं में अपना प्राचीन क्षात्र भाव और अन्य पुरुषोचित गुण बाकी रह गये हैं जिन के कारण दूसरे राष्ट्रों से आदर और सम्मान मिलता है। अगणित उपजातियों और वर्गों के कारण हमारा समाज दुर्बल हो गया है। अछूत का रोग तो हमारी जाति की जड़ में घुन का काम कर रहा है। इस विवशता की शांति के दिनों में भी उपद्रवियों और गुण्डों से हम अपनी नारियों, न्याय अधिकारों और आत्मसम्मान की रक्षा नहीं कर पाते। हिन्दू तो सचमुच पशुओं के एक झुण्ड के समान हो गये हैं। एक डण्डा हाथ में ले कर जिस का जी चाहे खेद आवे। मैं अपने देशवासियों से प्रार्थना करता हूं कि वे अपनी शारीरिक शक्ति को बढ़ाने और सैनिकता के भाव को फिर से जीवित करने के लिये व्यायाम आदि पर सब से अधिक ध्यान दें। नैतिक तथा शारीरिक बल की तरफ ध्यान न रख कर पढ़ना लिखना सीख लेने और बुद्धि का विकाश हो जाने से संसार में काम नहीं चल सक्ता। हिन्दुओं को अब अधिक बाबू मुंशी, लाला कारिंदा और मुत्सद्दियों की आवश्यक्ता नहीं है। न हमें अधिक दुकानदारों, वकीलों, प्लीडरों तथा मुखतारों की आवश्यक्ता है। ये लोग अभी जरूरत से अधिक भरे पड़े हैं। यदि हम अपने धन, घर और आश्रितों की रक्षा नहीं कर सक्ते तो इन चीजों के उपार्जन से क्या लाभ है। धर्मको पहले और स्वार्थ को पीछे रखो तभी उद्धार होगा। महर्षि दयानन्द की यह आज्ञा मानो 'विदेशियों के आर्य्यावर्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मत भेद ब्रह्मचर्य्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति मिथ्या भाषणादि कुलक्षण वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई २ लड़ते हैं तब ही तीसरा विदेशी आकर बीच में पंच बन बैठता है। जब परदेशी स्वदेश में व्यवहार करे व राज्य करे तो बिना दारिद्र्य और दुःखके दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता। इस लिए जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख दुःख परस्पर न मानें तब तक उन्नति होना कठिन है। समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति॥ तुम्हारा निश्चय एक समान हो तुम्हारे हार्दिक कर्म वा गति एक हों॥

नेशन का वैदिक अर्थ

ब्राह्मण हमारे सिरपरा हैं, क्षत्री हमारे भुजा के समान वैश्य हमारी जंघा के समान और शूद्र हमारे आधार रूप पैर हैं। एक अङ्ग की रक्षा से शेष अङ्गों की रक्षा व उन्नति होती है। एक अङ्ग के रोगी होने से सब ही अङ्ग निकम्मे हो जाते हैं। आज हमारे देश में ऋषि दयानन्द, पं० गुरुदत्त, पं० जगदीशचन्द्र बोस, पं० रवीन्द्रनाथ टगोर, से सच्चे ब्राह्मण होने की अधिक जरूरत है। व महात्मा गांधी, लो० तिलक सी० आर० दास, लाला लाजपतराय जी, मालवीयजी, नेहरूजी मोहम्मद अली शौकतअली आदि अनेक क्षात्रय वीरों की जरूरत है। सेठ रघूमल, जमनालाल बजाज, जुगुल किशोरजी, बिड़ला आदि अनेक दान वीर सेठों व सच्चे वैश्यों की आवश्यक्ता है। गुण कर्म से सेवा व्रतधारी सच्चे शूद्रों की भी हमें इतनी ही अधिक जरूरत है। आर्य्य समाज ने गुरुकुलों, दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालेज तथा आर्य्य स्कूलें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश भर में आर्य्य जाति के लिये खोलकर भारी उपकार किया है, और श्रीमान् स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा देवराजजी, महात्मा हंसराजजी, मास्टर देवीचन्दजी वा अन्य महानुभाव जो विद्या प्रचार के भारी कार्य्य को कर रहे हैं वे धन्यवाद के पात्र हैं। परन्तु अभी तक आर्य्य जाति का उचित संगठन नहीं हुआ।

प्रश्न—आर्य्य जाति के लोग कहां कहां हैं—इसका भी ज्ञान हमें होना चाहिये। ताकि हम सब एक संगठन में बंधकर उन्नति करें।

उत्तर—बौद्ध राजाओं के इतिहास ग्रन्थ पढ़ने से यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि अशोक आदि के समय में वैदिक आर्य्य और बौद्ध आर्य्यों की सन्तान के परस्पर विवाह होते थे, इसी कारण हिन्दू कालेज काशी के प्रसिद्ध आचार्य्य प्रोफेसर ध्रुव ने अपने ग्रन्थ में जिसका नाम "धर्म्म वर्णन है" लिखा है कि इस समय भूलोक में ४ प्रकार के आर्य्य समझने चाहिए। प्रथम वह जो अपने आप को हिन्दू कहते हैं दूसरे वह जो जैन हैं, तीसरे बौद्ध जिनका जापान चीन, अनाम, स्याम आदि में निवास तथा राज्य भी है। चौथे सिक्ख जो पञ्जाब में जाट क्षत्रिय हैं।

लौकिक संस्कृत में वैश्य को श्रेष्ठ कहते हैं, जिसका विकृत शब्द सेठ है और संस्कृत में क्षत्रिय को ज्येष्ठ (जाठ वा जाट) कहा गया है। आर्य्य जाति का व्यापक चिन्ह पुराने जमाने में शिखा तथा जटा थी। जिस प्रकार दक्षिणी आर्य्य वा हिन्दू आजकल अर्द्ध शिर पर शिखा रखते हैं, उसी प्रकार की शिखा चीनी बौद्ध जापानी आदि बौद्ध धर्मी रखते थे, जिस प्रकार की जटा हमारे जेष्ट क्षत्रिय वा पञ्जाबी वीर सिंह रखते हैं ठीक उसी प्रकार की जटा हिन्द के वानप्रस्थी आर्य्य साधु रखते हैं और तिब्बत की आधी प्रजा तथा लङ्का के सब आजतक सिक्खों समान जटाधारी हैं। जिन को अछूत हिन्दू कहा जाता है वे भी चोटी वा शिखा ब्रह्मरन्धर के ऊपर रखते हैं। इस लिये आर्य्य जाति शिखाधारी संसार में आजतक प्रसिद्ध है, अतः आर्य्य जाति की जन संख्या भारत, तिब्बत, चीन, जापान, अनाम, स्याम, ब्रह्मा, जावा, मलाया और लङ्का आदि में एक अरब है। प्राचीन आर्य्य अपने मुर्दे जलाया करते थे। भारत की आर्य्य जाति अर्थात् हिन्दू जैन सिक्ख तो अपने मुर्दे जलाते हैं और इतिहास बतलाता है कि प्राचीन काल में चीन जापान आदि सब देशों में मुर्दे जलाये जाते थे और अब भी वहां बहुत से लोग जलाते हैं। आर्य्य जाति का तीसरा चिन्ह नाम है पञ्जाब, राजपूताना में आप को सिंह नामधारी मिलेंगे क्योंकि वे वीर क्षत्रिय हैं। जापान में "सुन सैन" चीन में सनियट सैन आदि संस्कृत जन्य होने से आर्य्य जाति के बोधक हैं आर्य्य जाति का महान चिन्ह ओ३म् है। हिन्दू तथा सिक्ख सब ही ईश्वर का नाम ओ३म् वा ओ३म्कार कहते हैं। जैन मन्दिरों के ऊपर ॐ यही नाम लिखा रहता है, इस को वे स्वस्ति को (साशिषा) कहते हैं जिसके अर्थ यह हैं कि ओ३म् नाम (स्वस्ति) कल्याणकारी है। तिब्बत के बौद्ध लोग ओ३म् मनिपद्मे इत्यादि सूत्र जपते हैं जिस का अर्थ यह है कि ओ३म् रूपी मनिपद्म (हृदय में ही) है। आर्य्य जाति का पांचवां चिन्ह 'जी' शब्द है। हिन्दू वा सिक्ख भाई का जब आप मान करेंगे तो कहेंगे आइये जी, बैठिये जी। यह "जी" शब्द आर्य्य शब्द का बिगड़ा हुआ अन्तिमरूप है। संस्कृत युग में मानार्थ एक दूसरे को आर्य्य कहते थे। सती सीता भगवान् रामचन्द्रजी को आर्य्य पुत्र कहती थीं। पालि ग्रन्थों में आर्य्य का भारज रूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुआ। उत्तर रामचरित आदि नाटकों में आर्य्य पुत्र का प्राकृत भाषा में अजउत्त हुआ और अब जी ही रह गया है।

संयुक्त प्रान्त में गुजरात बङ्गाल मध्य भारत महाराष्ट्र आदि देशों में 'जी हां' सदा मान वाचक अर्थ में बोलते हैं। स्वयं सिक्ख विद्वान कहते हैं कि आरज शब्द का प्रयोग सिक्खों में पुराने समय में होता था और उसका प्रमाण यह दोहा है:--

जो तुम सिक्ख हमारे आरज।
सीस देओ तुम धर्म के कारज॥

आर्य्य जाति के लोग आत्मा को अमर मानते हैं तथा कर्म के सिद्धान्त को मानते हैं यह भी एक भारी व्यापक चिन्ह है। यह लोगों का गलत खयाल है कि सिक्ख भाई हिन्दू जाति से जुदा हैं। गुरु ग्रन्थ साहब में वेदों के विषय में उत्तम भाव दर्शाये हैं यथा (ओ३म्कार वेद निर्मये) चचा चार वेद जिन साजे। चारे खानि चार जुगां॥

अर्थात् जिस ईश्वर ने चार वेद प्रगट किये वही ईश्वर चार प्रकार की सृष्टि और चारों युगों सतयुगादि का कर्त्ता है॥

जटाधारी होने से सिक्ख पुरुष सच्चे आर्य्य हैं। अत जो वर्त्तमान काल के सिक्ख गुरुओं की सच्ची स्प्रिट को त्याग कर अपना सम्बन्ध आर्य्य जाति से तोड़ रहे हैं, यह उनके लिये परिणाम में हानिकर होगा।

वैज्ञानिक संसार

१. मल की खाद।

हमारे देश में पुराने आदमियों में यह विचार साधारणतया मिलता है कि मनुष्य मल की खाद द्वारा उत्पन्न की हुई सब्ज़ी भाजी शरीर के लिये हानिकारक है। इस से सतोगुण का नाश होता है और तमोगुणी वृत्ति बढ़ती है। परन्तु आज कल के शिक्षित पुरुष इस को केवल भ्रम ही समझते हैं। यह कहना कठिन है कि इस विश्वास में कितनी सचाई है। परन्तु इस सम्बन्ध में श्री प्रोफेसर कीथ के विचार मनन करने योग्य हैं। उनका कथन है कि केवल उस भूमि से ही जिस में कि कोई खाद न डाला गया हो हमें ऐसा अन्न और बनस्पति मिलसक्ती है जो कि स्वास्थ के लिये हानिकारक न हो। गोबर, मल इत्यादि की खाद उत्तम पुष्टिकारक अन्न उत्पन्न नहीं करसक्ती। पिसे हुए पहाड़ी पत्थर की खाद ही उपयोगी खाद है। इस से फसल के माप और गुणों में १०० प्रतिशतक से लेकर २०० प्रतिशतक तक उन्नति हुई है।

२. पारदर्शक रबड़।

जिन वस्तुओं में से हम आर पार देखसकें और उनको प्रकाश भली भान्ति पार कर सके उन्हें पारदर्शक वस्तु कहते हैं, जैसा कि शीशा। इसी एक गुण के कारण शीशे क. खिडकियों और दरवाजों में अधिक प्रयोग होता है। अभी एक विचित्र आविष्कार के समाचार मिले हैं। और वह पारदर्शक रबड़ के सम्बन्ध में है। पारदर्शक रबड़, यह कितने आश्चर्य जनक शब्द हैं। यदि यह ऐसा हो सके तो यह कितने काम की वस्तु होगी यह चिन्तन करने से मन में एक अति मनोरम विचार-शृंखला उत्पन्न हो जाती है। हमारी खिड़कियों और किवाड़ों में रबड़ के शीशे! बाहर से कोई शैतान लड़का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन शीशों पर गेंद या पत्थर फेंकता है परन्तु यह शीशा दबकर पीछे को होजाता है और फिर अपने स्थान पर सही सलामत आ पहुंचताहै। उस नटखट लड़के के विस्मय का क्या ठिकाना है! पहाड़ों पर घूमने वाली अंग्रेज युवती वर्षा में ब्राण्डी या ऐसा ही कोई और कोट पहन लेती है परन्तु इससे उसके नीचे के रेशमी चमकदार कपड़े ढँप जाते हैं, वह उदास होजाती है। परन्तु यह रबड़ का शीशा उसकी उदासी को सर्वथा विध्वंस करदेगा। यह पारदर्शक रबड़ न जाने कितने प्रकार से रमणियों के उल्लास का साधन बनेगा। मुहं पर रबड़ का टोप पहन कर दरिया अथवा समुद्र में आंखें खोल कर गोता लगाइये और जल सृष्टिके अद्भुत दृश्य देखिये। बच्चों के लिये नाना प्रकार के खिलौने बनाइये और कांच के परन्तु न टूटने वाले खिलौनों का असीम आनन्द उनको दीजिये।

३ जल शुद्धि की एक नवीन रीति।

आधुनिक योरोपीय सभ्यता के भारत में प्रचार से पहिले इस देश में प्रायः कुओं से पीने का पानी निकाला जाता था। कहीं २ नदियों के निकट जहां कि जल बहुत शुद्ध तथा पवित्र होता था—नदी का जल भी पीने के काम आता था, परन्तु अधिकांश कुओं के जल का ही प्रयोग होता था। जिस स्थान में पानी की कमी हो वहां कुवां लगवाना बड़ा धर्म्म का काम समझा जाता था। परन्तु अंग्रेजों के इस देश में आने पर बड़े २ नगरों में वाटर वर्क्स (Water Works) द्वारा लोगों को घरों में बैठे बिठाये जल मिल जाता है। जरा नल खोला और पानी ले लिया। एक बहुत बड़े हौज में शुद्ध किया हुआ जल भर लिया जाता है और फिर वहां से मोरी और पतली नालियों द्वारा नगर के भिन्न २ भागों में पहुंचाया जाता है। इस से हमारे पाठक समझ सक्ते हैं कि इस बड़े हौज के जल का अति शुद्ध और पवित्र होना कितना आवश्यक है। एक कुंवे का जल खराब होने से एक मुहल्ले वालों को ही जो कि उस जल का सेवन करते थे हानि हो सक्ती है। परन्तु वाटर वर्क्स के हौज़ का जल खराब होने से सारे नगर पर विपदा आ पड़ना साधारण सी बात है। इसी लिये इस जल की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। जल को शुद्ध करने के लिये दो प्रकार के ढङ्ग कहीं २ एक और कहीं २ दोनों मिलाकर बरते जाते हैं। एक तो जल को हौज में भर कर रख छोड़ना। इस से पानी की गाद नीचे बैठ जाती है और निथरा हुआ जल ऊपर आजाता है। इस से भी बढ़ कर जो लाभ होता है वह यह है कि जल के रोगोत्पादक कीटाणु भी नीचे बैठ जाते हैं। परन्तु इस से पूरी २ शुद्धि नहीं होती अतः इस निथरे हुए जल को कंकर, रेत और कहीं बारीक कोयले की तहों में से छानते हैं। इससे जल का सब मल इस रेत अथवा कोयले में रह जाता है और शुद्ध निर्मल जल नीचे से निकल कर हौज़ में एकत्र हो जाता है। जल के रेत और कंकर में से छनने पर रेत के ऊपर एक झिल्ली दार मैल की तह सी बन जाती है और आगे के लिए यही तह जल को शुद्ध करने में अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। ज्यों २ यह तह मोटी होती जाती है जल अधिक शुद्ध होता है, परन्तु साथ ही छनता भी देरी से है। रोगोत्पादक कीटाणुओं के नाश की दृष्टि से तो यह बड़ा अच्छा है परन्तु जहां जल की अधिक आवश्यक्ता हो वहां यह एक रुकावट बन जाती है। अतः समय २ पर इस झिल्लीदार मैल की तह को खुरेद कर उतारना पड़ता है। इस में बड़ा खर्च आता है। वैसे भी जल शु-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तरीका बड़ा महंगा पड़ता है। परन्तु गत महा युद्ध में एक और तरीके की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया है और वह महाशय सिम्स उड हैंड का जल को क्लोरीन द्वारा शुद्ध करने का तरीका है। क्लोरीन एक पीले रङ्ग की विषैली गैस है। छोटे २ जीवों और कीटाणुओं इत्यादि पर इस का बड़ा घातक प्रभाव पड़ता है। यदि दस भाग जल में आधे से लेकर एक भाग तक क्लोरीन छोड़ दी जाय तो जल के सब रोगोत्पादक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। ब्लीचिंग पाउडर नाम का एक द्रव्य है जो कि बहुधा कपड़े धोने के काम आता है। इस में प्रायः एक तिहाई क्लोरीन होती है। यदि इसे पानी में घोल दिया जाय तो इस की क्लोरीन स्वयं अलग हो जाती है और पानी में घुल जाती है। अतः हौज में जल के प्रवेश करने से पहिले किसी उपयुक्त स्थान पर इस को रख दें तो वहां से जाते समय जल इस को अपने में घोल लेगा। परीक्षण द्वारा यह देखना आवश्यक है कि अमुक जल में कितनी राशि में यह पाउडर डाला जाय। एक बार यह परीक्षा कर लेने पर फिर सब काम सुगम होजाता है और फिर एक अनपढ़ आदमी भी इसको कर सकता है।

यह तरीका कितना सरल और सस्ता है। परन्तु इसका विरोध हो रहा है। अधिकांश में तो वह सज्जन विरोध करते हैं जिन की पुराने तरीके को छोड़ने से बड़ी २ मशीने बिकनी कम हो जायेंगी, या पुराने ठेके न मिलेंगे परन्तु बहुत कुछ विरोध विज्ञान के नाम से किया जाता है। इससे जल इतना शुद्ध न होगा॥ ऐसे शुद्ध किये हुए जल सेवन से स्वास्थ बिगड़ने का सदा भय बना रहेगा। परन्तु महाशय मैकडावल का कथन है कि गत महायुद्ध में मिसर और मैसोपैटोमियां में इस नये तरीके की परीक्षा होचुकी और इस में पूरी सफलता प्राप्त हुई है। मिसर से पैलस्टाईन तक मार्ग सिनाई नाम के निर्जल बन में से होकर जाता है। आरम्भ में कुछ कुये हैं जिनका जल पीने के काम आता है। नैपोलियन जब अपनी सेना लेकर मिसर पर चढ़ आया था तो उसने इन्हीं कुवों के जल से काम लिया था। परन्तु इस की सेना इतनी न थी जितनी कि तुर्कों को मुकाबला करने के लिये इस युद्ध में इंग्लैण्ड को भेजनी पड़ी। इतनी बड़ी सेना का इन कुवों से गुज़ारा असम्भव था। सिनाई बनके पूर्व का भाग सर्वथा जल रहित है। और इस जल रहित भाग की दूसरी ओर से तुर्क सेना ने एक साल तक अंग्रजों को आगे बढ़ने से रोके रक्खा। अंग्रेज सेना बिना पीने के शुद्ध जल के इस पूर्वी भाग को कैसे लांघ सक्ती थी? अतः सिनाई बन के बाहर से जल लाना आवश्यक है। नील नदी में से एक नहर निकलती है जो कि कोई ७० मील नील के मुहाने में होकर चलती है और यहां पर इसका पानी बहुत ही गन्दा हो जाता है। यह कितना गन्दा होता है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सक्ता है कि वाटर वर्क्स में शुद्ध करने के लिये इस पानी को कोई भी पसन्द न करे। परन्तु मिसर में इसके अतिरिक्त और कोई जल था ही नहीं। बड़ी शीघ्रता से क्लोरीन द्वारा शुद्ध करने के लिये साधारण मशीन इत्यादि लगायी गयी और जंगल की रेत पर १२ इञ्च मोटी नाली बिछायी गयी जिनके द्वारा सेना के पीछे २ जल पहुंचता था। यह जल इतना शुद्ध था कि सारी लड़ाई में एक भी सैनिक इस जल के कारण रोगी नहीं हुआ। आगे बढ़ते २ सेना ऐसे स्थान पर पहुंच गयी जहां कि कुयें मिलते थे। परन्तु वहां भी सेना ने इसी जल को पसन्द किया। इस प्रकार १४७ मील दूर तक यह जल काम आता रहा।

मैसिपोटामिया में भी इसी प्रकार क्लोरीन द्वारा शुद्ध किया हुआ जल काम आता रहा।

हमारे प्रान्त में लाहौर की म्युनिसिपल कमेटी भी इसी प्रकार से जल को शुद्ध करने के तरीके पर विचार कर रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* वनिता विनोद *

स्त्री-जगत्

स्त्री स्वराज्य सम्मेलन लाहौर में।

लाहौर में गत ६, ७ दिसम्बर को लाहे के तालाब के पास स्त्री स्वराज्य सम्मेलन बड़ी शान के साथ हुआ। श्रीमती कस्तूरी बाई गांधी जी इस सभा की अधिष्ठात्री थी। श्रीमती बी अम्मा तथा बेगम मुहम्मद अली ने भी पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ाया था। पंजाब के कई नगरों से स्त्रियां डेलीगेट बन कर पधारी थीं।

प्रातःकाल स्टेशन से जलूस निकालने का विचार था परन्तु जब स्त्रियां और पुरुष स्टेशन पर पहुँचे तो श्रीमती गांधी ने जलूस से इन्कार कर दिया और स्त्रियों से कहा कि जब तक महात्मा जी क़ैद में हैं तब तक जलूस निकालनामैं पसन्द नहीं करती यदि तुम्हें जलूस निकालना पसन्द है तो महात्माजी को क़ैद से जल्दी छुड़ा लो।

स्त्रियों की शिक्षा के लिये दान।

बम्बई के सुप्रसिद्ध व्यापारी सेठ मूलराय करतान और उनके भतीजे मेसर्स टीकम दास और तुलसी दास ने दो लाख रुपये बनारस हिन्दू युनीवर्सिटी को इस लिये दान दिया है कि वहां एक सौ विद्यार्थिनियों के रहने के लिये आश्रम बने तथा प्रबन्ध किया जावे उत्तरीय भारत में स्त्रियों में उच्च शिक्षा प्रचार को उत्तेजना देने के लिये यह बहुत अच्छा दान है। सब स्त्रियों को इन दानी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिये।

मद्रास में लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य्य।

मद्रास प्रेसीडेन्सी में ईरोड म्युनिसिपल कौंसिल ने कानून पास किया है कि वहां पर पढ़ने की उमर वाले सब बालक और बालिकाओं को प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य्य रूप से दी जावे। इसमें मुसल्मान बालिकायें शामिल नहीं हैं और नवम्बर १९२२ से यह कानून लागू होगा।

आर्य्य नारी सेवक सभा की साधारण बैठक।

आर्य्य नारी सेवक सभा की साधारण बैठक २ दिसम्बर के स्थान में सभा सदाओं की इच्छा से ३ दिसम्बर को ज्योति कार्य्यालय लाहौर में हुई। उस में निम्न देवियां उपस्थित थीं—श्रीमती विद्यावती जी [धर्मपत्नी माधोदास मेहरा], श्रीमती भाग्यवती जी, श्रीमती ओ३म्वती जी, श्री० विद्यावती सेठ, श्री० धर्म देवी जी, श्री० कौशल्यादेवी जी अमृत्सर, श्री० विद्यावती [धर्मपत्नी ला० गंगाराम] श्री० विद्यावती जी [धर्मपत्नी बा० बद्री प्रसाद अम्बाला] श्री० विद्याधरी जी लाहौर।

आगामी वर्ष का निर्वाचन इस प्रकार हुआ:—

प्रधाना—श्री० विद्यावती माधोदास,

उप प्रधाना—१ विद्यावती गंगाराम,
२ कौशल्या देवी सुधाकर,
३ सुशीलवती,

मन्त्रिणी—विद्यावती सेठ,
उप मन्त्रिणी—भाग्यवती [ठाकुरदत्त वैद्य]
कोषाध्यक्षा—ओ३म् वती जी,
पुस्तकाध्यक्षा—विद्यावती बद्री प्रसाद,
प्रतिष्ठित सभासदा—राधा रानी,

निम्न लिखित प्रस्ताव पास किये गये:—

१ तीन मंडल बनाये जावें १ दिल्ली, २ लाहौर, ३ बिसवां जिन में रहने वाली सभासदायें अपने २ पड़ोस के शहरों में प्रचार का प्रबन्ध किया करें और बाहर से किसी को बुलाने पर ही काम हो इस की प्रतीक्षा न करें। इनका प्रचार का खर्च भी उन्हीं स्थानों से पूरा किया जावे

२ यदि एक स्थान पर कई सभासदायें रहती हों तो वह परस्पर सद्भाव और मित्रता बढ़ाने के लिये और हवन का प्रचार करने के लिये प्रत्येक एक २ मास में संक्रान्ति के दिन तथा जो दिन उन्हें ठीक बैठे बड़ा यज्ञ किया करें और सब सभासदाओं को एकत्र करके भजन, वार्तालाप इत्यादि से मनोरंजन करें।

३ जो २ सभासदायें प्रमाद से कभी अग्निहोत्र छोड़ देवें तो वह महीने या वर्ष में जितनी वार प्रमाद करें उसी के अनुसार प्रायश्चित्त रूप से बड़े २ पाक्षिक यज्ञ करें।

४ कोई सभासदा ३मास से ऊपर चन्दा अपने पास न रक्खा करे वरन् मन्त्रिणी आर्य्य नारी सेवक सभा-मा०ज्योति कार्य्यालय लाहौर को भेज दिया करें।

५ इस सभा का वार्षिक उत्सव दिल्ली में फर्वरी महीने में होगा तारीख की सूचना सभासदाओं को समय से एक सप्ताह पूर्व दी जावे।

६ एक सभासदा के हवन के नियम शिथिल करने तथा चन्दा कम करने के प्रस्ताव पर सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि जो सभासदा न दे सकें वह जो चन्दा चाहें दिया करें परन्तु हवन का नियम शिथिल न होगा।

अन्य कोई कार्य्य न होने से सभा विसर्जित हुई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

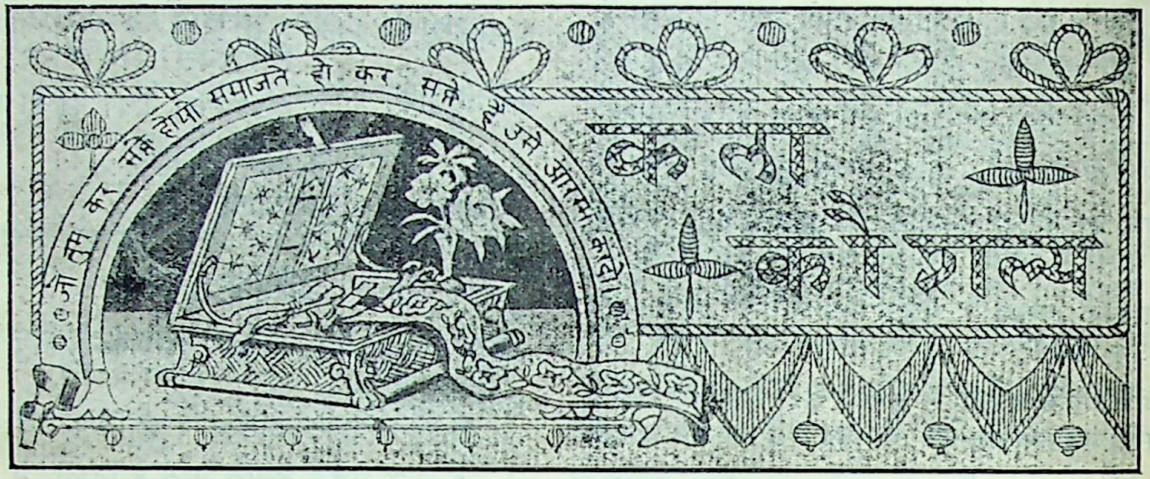

पुरुषों का दस्ताना।

यह मामूली नाप का बड़ा सुगम पुरुषों का दस्ताना है और काला या मिले हुए ऊन का या सफ़ाई से बनावे तो सफ़ेद ऊन का बड़ा अच्छा बनता है। आवश्यक वस्तुएं—एक छटांक ऊन महीन, ४ लोहे की महीन (१४ नं०) सलाइयां वा यदि हो सके तो ८ सलाइयां ले लो।

आरम्भ में ६० फन्दे बनाओं और ५० घेरे २ उलटे, २ सीधे, इस प्रकार के वीनते जाओ अब हथेली वाले हिस्से के लिये।

१ घेरा—सारा सीधा।

२ घेरा—१ सी, १ उल्टा सब कहीं।

३ घेरा—सीधा।

४ घेरा—१ सीधा, १ उल्टा।

५ घरो—सीधा।

६ घेरा—२ सीधे फ़न्दो के बीच में एक बढ़ाओ और इन बढ़े हुवे फ़न्दों को सीधे फ़न्दों के बीच में रक्खो, यह अंगूठा बनाने के लिये॥

७ घेरा—सीधा किन्तु पहिले बढ़ाये हुए फ़न्दे के दोनों ओर एक २ फन्दा और बढाते जाओ जिससे पहिले बढ़ाया हुआ फ़न्दा वीच का फ़न्दा होगा सारे घेरे में।

८ वां घेरा—१ सीधा, १ उल्टा पहिले बढ़ाये हुए फ़न्दों के दोनों ओर एक २ और बढ़ाते जाओ। इस प्रकार बीनते जाओ जब तक १६ फ़न्दे अगूठे के लिये न बढ़ जांय जो कि छठे घेरेके २ सीधे फ़न्दों के बीच में होने चाहिये अब नमूने के अनुसार घेरे बिना बढ़ाये बीनो १ पंक्ति सीधी २सरी पंक्ति १ सीधा, १ उल्टा इस प्रकार सारी, २ फ़ालतू सलाइयों पर सब हाथ के फ़न्दों को छोड़कर केवल अंगूठा बीनो १६ अगले फ़न्दों को लेकर ६ फ़न्दे अन्दर की ओर नये बनाओ अब २२ फ़न्दे होजांयगे १ सलाई पर ८ फ़न्दे रक्खो २ पर सात सात फ़न्दे रक्खो, ३६ घेरे तक नमूने के अनुसार बीनो। नोक सीधी बिनावट की होगी। प्रति दूसरे घेरे में दो फ़न्दे घटादो जब तक ८ फ़न्दे न रह जायँ इनमें सुई से धागा डालकर उल्टी तरफ़ से सींदो।

अब अंगूठे के लिये जो ६ फ़न्दे अन्दरली तरफ बढ़े थे उन्हीं को फिर उठालो और २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाक़ी के फ़न्दे मिलाकर तीन सलाइयों में ठीक से बांटलो और ३० घेरे नमूने के अनुसार बीनों।

अब सारे फ़न्दों को दो सलाइयों पर बांट लो इस तरह कि अंगूठे की तरफ़ बढ़ाये हुए फ़न्दे तीन ३ दोनों सलाइयों के सिरे पर आजाँय अथवा ३३ फ़न्दे प्रति सलाई पर हों।

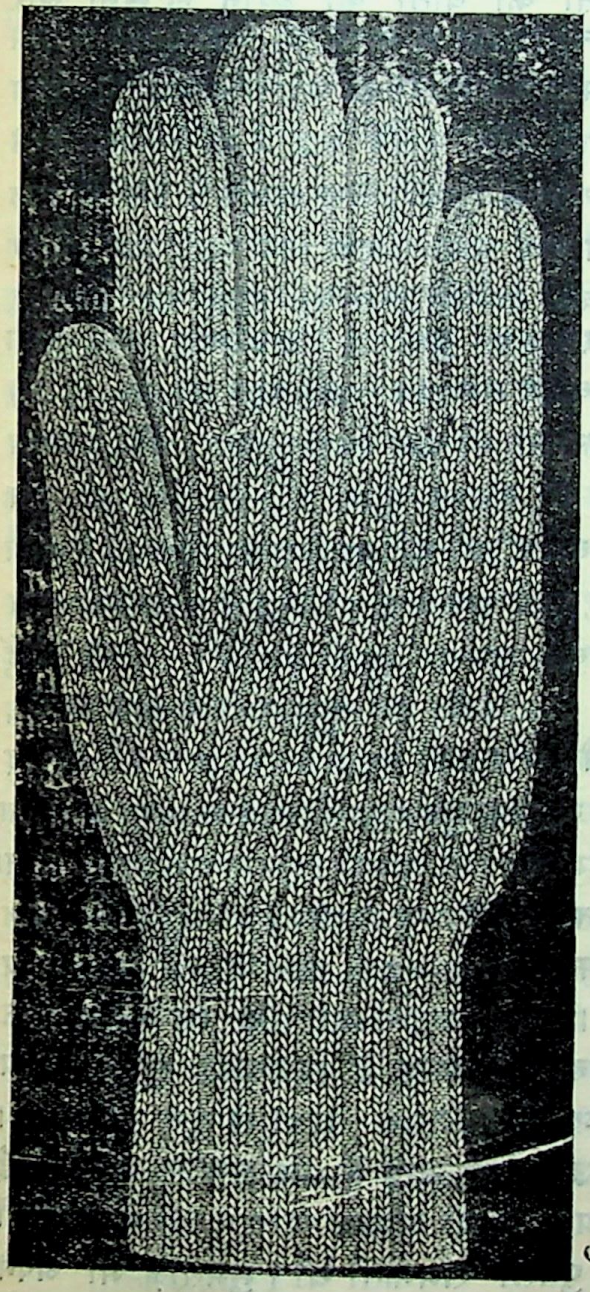

पहिली उंगली:--९ फ़न्दे अन्दर वाली सलाईसे और ८ फंदे बाहर वाली सलाई के सिरे से, फिर ५ फंदे नये बनाओ और अब इन २२ फ़न्दों को तीन सलाइयों पर बराबर ठीक करो और ४५ घेरे नमूने के अनुसार बीनो नोक उसी प्रकार सीधी बिनावट की फ़न्दे घटाकर अन्तकरो जैसा अंगूठे में किया था।

दूसरी उंगली--अब ५ फ़न्दे पहिली उंगली के अन्दर की सलाई से लो ५ फ़न्दे नये बनाओं और ८ फ़न्दे दूसरी बाहर की सलाई पर से लो इन २६ फ़न्दों को तीन सलाइयों पर ठीक कर ५० घेरे नमूने के बीनो और फिर सीधा बीनकर घटाकर पहिले की तरह समाप्त करदो।

तीसरी उंगली--नये बनाये हुए ५ फ़न्दों को फिर इधर उठालो ८ फ़न्दे अन्दर को सलाई परसे लो ५ नये फ़न्दे बीनो और ८ फ़न्दे बाहर की तरफ़ से इन २६ फ़न्दों को तीन सलाइयों पर ठीक कर ४० घेरे नमूने के बीनों और नोक सीधी बीनों।

४थी उंगली—बचे हुए १७ फ़न्दे और ५ फंदे तीसरी उंगली के नये बनाए हुए फंदे की ओर से लेकर इन २२ फ़न्दों को तीन सलाइयों पर बाँटो और ३० घेरे नमूने के अनुसार बीनकर नोक सीधी बीनकर समाप्त कर दो जैसे अगले में की थीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रायश्चित

अनुवादक—श्री० विन्देश्वरी प्रसाद सिंह

(१)

शेख हातिम अली लाहौर के एक बड़े नामी गिरामी रईस और धनी व्यक्ति थे। दान और दया के विचार से वे अपने समय के सोलहो आने राजा कर्ण थे। उनकी धर्मपत्नी का बहुत दिन हुए स्वर्गवास हो चुका था। जब उनकी मृत्यु हुई तो उनकी पुत्री १६ वर्ष की थी और पुत्र १७ वर्ष का था। पुत्री का नाम 'सकीना' और पुत्र का नाम 'मुमताज़' था। सकीना देखने में तो भोली भाली और सीधी थी; किन्तु बुद्धिमती और मिलनसार थी। मुमताज़ अत्यन्त सुन्दर नवयुवक था। सकीना का रङ्ग सांवला था और मुमताज़ का सफेदी लिये लाल था। सकीना मझोले क़द की थी और मुमताज़ छरहरे बदन का था। दोनों के दांत हीरे के तुल्य श्वेत और सुन्दर थे। बहन की आंखें मृगशावक की सी तो भाई की नील कमल के समान श्याम और स्थूल थीं। बहन के होंठ किसी तरह गेहुंए रङ्ग के थे किन्तु भाई के गुलाब के फूल के तुल्य कोमल और गुलाबी थे। इन दोनों को देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ता था कि एक माता के पेट से किस प्रकार इतने भिन्न सूरत की सन्तान पैदा हुई। बहन का भाई से प्रगाढ़ प्रेम था और भाई भी बहन को देखे बिना एक पल नहीं रह सकता था। कुछ तो सीधा सादा स्वभाव और कुछ गृहस्थी के बाझ के कारण सकीना १९ वर्ष की उम्र तक अविवाहित रही। इधर सकीना का उन्नीसवां साल व्यतीत हुआ था कि शेख साहब को यम का निमन्त्रण आया। मृत्यु के समय शेख साहब ने दोनों को बुलाकर आपस में प्रेम पूर्वक रहने और जहांतक हो सके विलग न होने की शिक्षा दी। सकीना ने पिता की बातों को ध्यान से सुना और आजन्म विवाह न करने का निश्चय कर लिया। यह असाधारण लड़की अपनी प्रतिज्ञा पर सदा दृढ़ रही, और उसने स्वप्न में भी विवाह करने का ध्यान न किया। शेख साहब के बर्सी के कुछ महीने बाद सकीना एक दिन रसोई घर के द्वार पर खड़ी रसोईदारिन से कुछ कह रही थी, कि एकाएक मुमताज़ प्रसन्नचित्त घर में आया और कहने लगा कि—'लो बहन बी. ए. (B.A) की परीक्षा का फल निकल गया, और मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।" १८ वर्ष की उम्र और बी. ए. की परीक्षा में प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होना, कोई सरल कार्य्य नहीं है। सकीना इस बात को सुनकर फूली न समाई। दोनों भाई बहन दालान में, जो ख़ूबसूरती से सजाया था, जा बैठे और बड़ी देर तक इस बात पर विवाद होता रहा, कि मुमताज़ को अब कौनसा मार्ग का अवलम्बन करना चाहिये। मुमताज़ वकालत करना चाहता था, किन्तु सकीना डाक्टरी को अच्छा समझती थी। अन्त में बहन ने भाई पर विजय पाई। उसका कहना था, कि चिकित्सा एक सज्जनोचित काय है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्यों को भौतिक पीड़ा से मुक्त करना है। हम ऊपर कह आये हैं, कि सकीना अपने भाई को प्राण से भी अधिक प्यार करती, और आंखों की पुतली समझती थी। मुमताज़ भी अपने बड़े बहन का आदर माता क समान करता था। उसने अपनी बड़ी बहन की बातें मानली और लाहौर के मेडिकल कालेज (Medical College

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के M. B. एम० बी० क्लास में भर्ती होगया।

(२)

पाँच वर्ष बीत गये। पाँच वर्ष कहने को एक बहुत बड़ा समय है। किन्तु यदि वास्तव में पूछा जाय तो दुःखी लोगों का एक एक पल एक एक युग के समान है। सुखी और स्वस्थ लोगों को समय बीतते कुछ मालूम नहीं पड़ता। किसी कवि ने कहा है:—

गुज़रती उम्र है यों दौर आसमानी में।
कि जैसे जाय कोई किश्ती-ए-रवानी में।

पाँच वर्ष के बीच में हज़ारों घटनायें हुईं। कितने ही बच्चे जवान हो गए और कई जवान बुढ़े होगये। कितने ही स्वस्थ लोगों के स्वास्थ्य बिगड़े और कितने ही परलोक सिधार गये। कितनी ही क्वारी लड़कियाँ मातायें बन गईं, और कितनी ही सुहागिन स्त्रियाँ विधवा हो गईं। किन्तु हमारे वीर चरित्रनायक के घर में सिवाय इस के कुछ न हुआ, कि सकीना पच्चीस वर्ष की स्त्री बन गई, और मुमताज़ २३ वर्ष का युवक B. A M. B. Asst. Surgeon (बी.ए. एम.बी. असिटेन्ट सरजन) बन गया।

लाहौर में सुबह की डाक ६ बजे बंटती है। मुमताज़ नित्य इसी समय अपनी बहन के सामने डाक खोला करता था। एक दिन एक चिट्ठी को बिना खोले हुए उसने [सकीना] बहन के हाथ में रख दिया और कहा कि यह चिट्ठी तो चचा साहब की जान पड़ती है ईश्वर ही रक्षा करे। आज उन्होंने इतने दिनों के बाद क्योंकर याद किया? सकीना ने भाई के हाथ से पत्र लेकर खोला। पत्र की प्रतिलिपि नीचे दी जाती है।

प्रिय मुमताज़—

तुम पत्र पाकर बड़े अचम्भित होगे, कि आज चचा जान ने क्यों कर कृपा की। किन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं, कि इस में कृपा की कोई बात नहीं है। मुझे अपना स्वार्थ ऐसा करने के लिये वाधित करता है। मुझे स्मरण है, कि जब से मेरे प्रिय भाई की मृत्यु हुई मैंने तुम्हारी ख़बर नहीं ली और जो बन्धु बान्धव में आपस का प्रेम व्यवहार होता है, नहीं रखा। हमेशा ३६ के अङ्क के समान तुम से विमुख रहा और तुम्हारे वृद्ध पिता तो यही शेर मेरे ऊपर पढ़ा करते थे।

भाग इन बुर्दा: फरोशों से कहां के भाई।
बेच ही डालें जो कहीं यूसुफ सा बिरादर होवे॥

किन्तु मैं क्या करूँ हृदय से विवश था। यमराज का निमन्त्रण आ गया है और मैं शीघ्र ही इस संसार से कूच करने वाला हूं। दो चार दिन का और अतिथि हूं। लेकिन अब भी मुझे यही विश्वास है कि संसार स्वार्थमय है और जब तक स्वार्थ न हो कोई किसी की परवाह नहीं करता। किसी कवि ने कितना ठीक कहा है—

मतलब बगैर कोई नहीं इस जहान में।
फिर कौन है किसी का जो मतलब निकल गया॥

इस अन्तिम काल में मैं तुम से एक प्रार्थना करना चाहता हूं, और वह प्रार्थना यह है कि मेरी इकलौती बेटी रज़िया अब सोलह साल की है। मेरे बाद उस की देख भाल तथा रक्षा करने वाला अब कोई नहीं है। मेरा मकान और २० हज़ार रुपये जो बंक में जमा हैं इस के दहेज़ हैं। जब मेरी मृत्यु हो जाय तो तुम रज़िया को अमृतसर से लाहौर अपने साथ ले जाना। तुम्हारे साथ वह बहिन की तरह रहेगी किसी अच्छे स्थान पर उस का विवाह कर देना। रज़िया तुम्हारे और सकीना की निगरानी में रहेगी। मैं निर्बलता से अब और अधिक नहीं लिख सकता। जिस समय यह पत्र मिले तुम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अविलम्ब चले आओ अन्यथा मुझ से मिलना कठिन होगा।

कमर बांधे हुए चलने को यां सब यार बैठे हैं।
बहुत आगे गये बाकी जो हैं तैयार बैठे हैं॥

तुम्हारा चचा
ग़ानिम

इस पत्र को पढ़ कर सकीना के मुख से एकाएक निकल गया--"हो न" यह सकीना के चचा ग़ानिम का पत्र था। ग़ानिम ऐसा लालची और दुनियांदार आदमी था कि शेख हातिमअली के जीवन काल में ही उन से अलग हो गया था कभी मेल मिलाप से नहीं रहा, उनकी मृत्यु होने पर भी नहीं आया, सारांश यह कि बिना स्वार्थ के वह किसी से बात करने को भी पाप समझता था। और साफ साफ कह देता था कि भाई! हमें संसार के दुःख सुख से मतलब नहीं। सकीना इस घर की एक मात्र अधीश्वरी और "ज्योति" थी अतएव उसको इस घर में एक तीसरे का आना अनुचित जान पड़ा। वह बड़े वादाविवाद और प्रमाण आदि से ज़ोर देती रही की रज़िया घर में न आये किन्तु मुमताज़ ने न माना और कहा कि रज़िया को जिसे मैंने अच्छी तरह देखा भी नहीं है इस दुःख के समय में निरवलम्ब छोड़ देना पाप है। मैं अवश्य जाऊंगा और उस को अपने साथ ले आऊंगा। यह पहला अवसर था कि मुमताज ने बहिन की आज्ञा का उल्लंघन किया।

(३)

दोपहर का समय है। एक पालकी गाड़ी शेख मुमताज के घर आखड़ी हुई। और उस पर से स्वयं शेख मुमताज, एक बुर्के में ढकी हुई स्त्री और एक दाई उतरी। थोड़े ही समय के बाद गाड़ी घरके फाटक पर से चली गई और बुर्के में ढकी हुई स्त्री घर में आई। उसने सकीना को प्रणाम किया और पूछा "आप अच्छी तरह से हैं"। जब बुर्केवाली ने बुर्का उठाया तो सकीना आश्चर्यित हो गई। यह सूर्य चन्द्र के समान ज्योतिर्मयी अनुपमसुन्दरी रज़िया थी। इसके सौन्दर्य से घर जगमगा उठा। इसकी नरगिस की तरह आंखें, कुंदरू के समान अधर भ्रमरके समान काले और सज्जित केश, मध्यम श्रेणी का सुडौल कद और मोती की तरह दांतों की पंक्ति स्वर्गीय अप्सराओं की सुन्दरता को मिट्टी में मिला रहीं थी। जो लोग दुनियांदार हैं तथा संसार की बातों से भिज्ञ हैं वे भली भांति जानते हैं कि कुरूप स्त्रियों को सुन्दरी स्त्रियां फूटी आंखों भी नहीं भातीं। वे अपने सारे पापों को छोड़ सकती हैं किन्तु अपनी सुन्दरता को नहीं छोड़ सकतीं। रज़िया के इस अलौकिक सौन्दर्य ने सकीना के धैर्य को धूर कर डाला। उसके हृदय में डाह की जठराग्नि प्रज्वलित हुई। उसे भय था कि मुमताज़उस दिव्यालौकिक सुन्दरी के दिव्य सौन्दय का पतंग बनकर उसे विस्मरण न करदे। इस डाह और भय के कारण सकीना के हृदय में, उसदिन से रज़िया के प्रति, गांठ पड़ गई। वह रज़िया पर सदा त्यौरी चढ़ाये रहती और कभी सीधे मुंह बात न करती उसका व्यवहार रज़िया से बहुत कड़ा था। रजिया एक तो पिता की मृत्यु से उदास रहती थी दूसरे इस नोंक झोंक से उसका दिल और भी टूट गया। वह बहुधा निर्जन स्थान में बैठकर रोया करती थी। ईश्वर की लीला विचित्र है। सकीना को रज़िया से जितनी ही घृणा थी, मुमताज को उससे भी अधिक और सहस्र गुणा अधिक प्रेम होगया था। वह सकीना के बराबर नहीं नहीं उससे भी अधिक प्यार करने लगा। रजिया का आदर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सम्मान करना वह अपना प्रधान कर्त्तव्य समझता था।

रजिया को लाहौर में आये अभी छः मास भी न बीते थे कि प्लेगदेव ने अपना कर वसूलना शुरू किया। मृत्यु का द्वार सब के लिये खुलगया। दिन दूने रात चौगुने आदमी मरने लगे। नगर उजाड़ होने लगा, लोग घरों से निकलकर भाग गये। शहर में हाहाकर मचगया। रजिया प्रति शुक्रवार को अपने एक दूर के सम्बन्धी के यहां, जो फूलवाले मुहाल में रहती थी, जाया करती थी, दिन भर वहां रह कर शाम को घर लौटती थी। जिसदिन वह वहां जाती थी उसका चित्त बहुत प्रसन्न रहताथा कारण वह दिन भर सकीना के व्यंगों और क्रूर व्यवहारों से बची रहती थी। आगामी शुक्रवार के दो दिन बाकी थे। मुमताज ने सकीना को पृथक ले जाकर कहा "फूलों वाले मुहाल में प्लेग की अधिकता है। स्वयं सरोवर वेगम प्लेग में पड़ी है। रजिया को इस बात की सूचना दे देना और अब की शुक्रवार को उसे न जाने देना। सकीना को यह सम्मान और पक्षपात बुरा मालूम हुआ। उसने चिढ़कर कहा अच्छा देखा जायेगा न जाने दूंगीं।

ईश्वर इस डाह का बुरा करे। उसने उसे शुक्रवार के दिन प्रसन्नतापूर्वक सरवर वेगम के यहां भिजवा दिया और भाई के किये हुए प्रार्थना पर कुछ भी ध्यान न दिया। रजिया प्रसन्नचित्त अपनी सखी के यहां गई वहां जाकर देखा कि उसकी सहेली खाट पर पड़ी हुई है और उसका शरीर आंवे के समान गर्म हो रहा है, आंखे कबूतर की आंखों को तरह लाल हैं और गले में एक गिल्टी निकली हुई हैं। रजिया यह हाल देखकर डर गई और मरीज के सिरहाने बैठकर पंखा झलने लगी। रोगिणी को बोलने की शक्ति कहां थी जो उसे मना करती। जब शाम को चलने लगी तो झुक कर उसको गले लगाया और रोती हुई वहां से विदा हुई।

तीसरे पहर मुमताज घर आया। रजिया को वहां न पाकर वह सकीना पर बड़ा रूष्ट हुआ और कहा कि यदि रजिया को कुछ हुआ तो उसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी। यह प्रथम वार था कि भाई वहन में लड़ाई झगड़े की नौवत आई।

(४)

शाम को रजिया जब घर लौट कर आयी, तो उसका सारा शरीर भस्मीभूत हो रहा था; सिर और बदन में बेतरह पीड़ा हो रहीं थी। आते ही वह अपने कमरे में जाकर सिर से रेशमी रूमाल बांधकर विस्तर पर पड़ रही। सायङ्काल के समय जब मुमताज़ घूम कर आया तो दाई को लेकर रज़िया के कमरे में गया देखा उसका शरीर जलते हुए तवे के समान हो रहा है और मुख फीका पड़ गया है। यह हाल देख कर वह चुपचाप वहां से चला आया। परमात्मा का स्मरण कर वह प्रातःकाल विस्तर पर से उठा और दाई को रज़िया का हाल लेने के लिये भेजा। उसकी सारी रात रज़िया के चिन्ता में बीती और पल भर के लिये भी नींद नहीं आयी थी। दाई गई और यह समाचार लायी कि छोटे सरकार को भी वही अशुभ रोग प्लेग, हो गया है और बग़ल में एक गिल्टी निकल आई है। इस कुसमाचार को सुनकर मुमताज़ पागल सा हो गया। वह दौड़ा हुआ अपने कमरे में गया और फर्श पर गिरकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगा "ऐ सर्व शक्तिमान जगदीश्वर! मेरा जीवन रज़िया से है। यदि उसकी ऐसी ही अल्प आयु थी तो तू मेरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आयु का आधा भाग उसे दे दे। उसके बिना मेरी जीवनलीला एक पल भी नहीं ठहर सकती।" मुमताज इन प्रार्थनाओं तथा मिन्नतों को करता जा रहा था और आंखों से चौधारे आंसू जारी थे। इतने ही में किसी ने बुलाया और कमरे का दर्वाज़ा खटखटाया। उसने प्रार्थना से अपना सर उठाया और किवाड़ खोल दिये। दर्वाज़े पर सकीना खड़ी थी। उस का चेहरा उदास और हल्दी की तरह पीला पड़ गया था।

सकीना—भाई तुम रोते क्यों हो ?

मुमताज़—बहन सकीना अब जले पर निमक न छिड़को। रज़िया जो इस समय मर रही है तेरोही करनी तथा दया का फल है किन्तु बहन स्मरण रक्खो कि मेरी भी रथी रज़िया के साथ ही निकलेगी, मेरा यह अधम जीवन रज़िया ही तक है।

सकीना को मुमताज़ से इतना प्रेम था कि हम वर्णन नहीं कर सकते। हमारे पाठक भी उसका अनुमान नहीं कर सकते। यदि उसको रज़िया से डाह और शत्रुता थी तो केवल मुमताज़ का रज़िया को प्यार करना उसको बुरा मालूम पड़ता था। अपने भाई का सम्मान वह माता के समान करती थी और उसी भाई के लिये वह अब तक क़ारी रही थी। एक दिन मुमताज बीमार हो गया था तो सकीना तीन दिन तीन रात तक जागती रही। उसके भोजन का प्रबन्ध, उसके कारोबार का प्रबन्ध सकीना स्वयं करती थी और भाई को प्राण से बढ़कर समझती थी। उसी भाई के मुख से (जो अब प्रेमदेव का पुजारी था) ऐसे टूटे हुए और हृदय को टूक टूक कर देने वाले बातों को सुन कर उसका हृदय भर आया। वह अपने उमड़ते हुए आंसुओं को भीतर ही भीतर पी गई।

सकीना—भाई तुम तो स्वयं चिकित्सक हो क्या तुमको इस रोगकी चिकित्सा नहीं आती।

मुमताज़ इस रोग की सिर्फ यही चिकित्सा है कि इस गिल्टी को नश्तर दिया जाय और फिर कोई उस स्थान के ख़ून को चूसे और थूक दे किन्तु ऐसा करने वाले का जीना बहुत कठिन होगा।

सकीना—भाई आओ ! और गिल्टी में नश्तर दो।

मुमताज़—(आश्चर्यित होकर) बहन क्या तुम सचमुच ऐसा करोगी।

सकीना—हाँ ! मैंने जो पाप किया है अब उसका प्रायश्चित किया चाहती हूं, ईश्वर मेरे ऊपर दया करे।

मुमताज़ ने सकीना को कितना समझाया किन्तु उसने एक न मानी और गिल्टी में नश्तर दिलाकर वहां का खून चूसा और कुल्ला कर दिया। इसी तरह उसने दो तीन कुल्ले और किये। ऐसा करने से रज़िया का दुःख दूर हुआ। उसने आंखें खोलीं किन्तु जाफ आना जारी रहा। धीरे धीरे रजिया की हालत सम्भलने लगी मगर उसी दिन सायंकाल में सकीना को भयंकर बुखार चढ़ा और रात में १ बजे ठीक रज़िया के समान ही बिकल हो उठी। जीवन की कोई आशा न रही।

* * * * * *

इस बात को हुए तीन वर्ष व्यतीत होगये। प्रातःकाल का सुखद समय है। प्रकृति देवी अपने सौन्दर्य से मन मुग्ध कर रही है। वह देखो ! सामने एक कब्र के पास एक सौन्दर्य मूर्ति सज्जन तथा एक अनिंद्य, अलौकिक, अपूर्व सुन्दरी खड़ी हैं। एक सभ्यसज्जन हज़रत अली की शुभ सेवा में फाख्ता पढ़ रहे हैं और सुन्दरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फूलों का हार कब्र पर चढ़ा रही है। अरे वह लो! देखो !! एक दाई एक सुन्दर लड़की को गोद में लिये आरही है। यह लड़की इस सुन्दरी की ठीक प्रतिमा है। इस लड़की का नाम सकीना है और यह दोनों सौन्दर्यमूर्ति युवक और युवती मुमताज़ और रज़िया हैं। लड़की का नाम इसने अपने चचेरी बहन और ननद के नाम पर सकीना रखा है। प्रति शुक्रवार के दिन यह दम्पति अपनी निःस्वार्थ और प्रेमिका बहन की कब्र पर फूल चढ़ाने आते हैं*।

—०—

सीताजीका पातिव्रत

(बाल्मीकि जी द्वारा वर्णित)

ले०—श्रीमती केशर कुंवरि।

प्यारी पाठिकाओ! हमारे इस देश भारत वर्ष के इतिहास के देखने से विदित होता है कि इस देश में सहस्रों नहीं वरन् लाखों ऐसी देवियां जन्म ले चुकी हैं जिनका पातिव्रत धर्म्म साहस बल बीरता और पतिप्रेम का सच्चा हाल पढ़ कर आज भी सहस्रों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हृदय में आनन्द और बीरता का सागर उमड़ने लगता है। इसीलिये आज मैं आप कुल बधुओं के लाभार्थ बाल्मीकीय रामायण से हमारी सर्वोशिरोमणि सीता देवी के पातिव्रत धर्म्म सम्बन्धी बातें शिक्षा ग्रहणार्थ लिखती हूं।

जब महाराज रामचन्द्र जी पिता की आज्ञा मान कर बनवास जाने लगे तो सीताजी से मिलने को उनके अन्तःपुर में गये। उस समय जो बातचीत दम्पति में हुई वह बड़ी ही उपदेश जनक हैं। सीता जी अपने स्वामी को शोक सन्तप्त और उदास देख कर बोलीं—"हे आर्य्य पुत्र! आज पुष्य नक्षत्र में आपका यौवराज्याभिषेक होने वाला है फिर आप आज ऐसे उदास मुख क्यों हो रहे हो?"। महाराज रामचन्द्र ने उत्तर दिया—"सत्यप्रतिज्ञ! मेरे पिता ने पूर्व काल में मेरी माता कैकेयी को दो बर दिये थे सो इस समय कैकेयी ने १४ वर्ष तक मेरे लिये बनवास और भैया भरत को यौवराज्याभिषेक ये दो बर पिता से मांग लिये हैं सो मैं अब बनको जाता हूं। केवल तुम्हें देखने और धैर्य्य धराने को यहां आया हूं"।

अपने प्राणाधार के मुख से ऐसे बचन सुन कर वैदेही अचेत होकर भूमि पर गिर गईं और एक क्षण में हीं उठ कर बोलीं—"हे प्राणेश! यह क्या हलकी बात आप अपने मुखारबिन्द से निकालते हो? ऐसी बातें आप जैसे विद्वान् और बीर पुरुषों के कहने योग्य नहीं हैं। हे आर्य्य पुत्र! क्या आप यह नहीं जानते हो कि सब अपने अपने पुण्यों के फलों को भोगते हैं इस लिये राजा से मुझ को भी बनवास की आज्ञा हो चुकी है। अतः आपके बिना मुझे यहां रहने में महापाप लगेगा। स्वामी मैं अवश्य आपके संग चलूंगी। महाराज रामचन्द्र जी ने सीता जी की ऐसी बातें सुन कर बनके असह्य कष्टों का वर्णन किया और बन में न चलने के लिये सीता जी को अनेक भांति से समझाया। सीताजी बोलीं—"प्राणेश इस समय अब अधिक शिक्षा देने का

* एक उर्दू गल्प का अनुवाद।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रयोजन नहीं है क्योंकि स्त्रियों के कर्तव्य और धर्म्म की शिक्षा मुझे अपनी माता से पहले खूब मिल चुकी है। हे स्वामी! मैं अवश्य आपके साथ चलूंगी और मैं आपके संग बनमें ऐसे ही निवास करूंगी जैसे पिता के घर में सुखसे रहती थी। केवल पातिव्रत की चिन्ता करती हुई सम्पूर्ण सुखों की चिन्ता छोड़ दूंगी। मैं नियम और ब्रह्मचर्य्य व्रत के साथ बन में रह कर और नित्य कन्द मूल फल खाकर आपके साथ आनन्द से बन बिहार करूंगी। स्वामिन्! मेरी बिनय स्वीकार करिये और मुझे बन में साथ चलने की आज्ञा दीजिये। हे आर्य्य कुमार! मेरा भार आपको लेशमात्र भी नहीं व्यापेगा। प्राणेश! यदि मैं सौ वर्ष भी आपके संग बन में रहूंगी तो भी मैं उन आपके बताए हुए बनकष्टों को भी स्वर्ग के सुखों से भी अधिक प्रिय समझूंगी। स्वामी मुझे साथ अवश्य ले चलिये मैं आपके बियोग में जीवित रहने में अशक्त हूं। स्वामी आपकी सेवा ही मेरे लिये स्वर्गसुख है। और आपका बियोग ही मेरे लिये रौरव नरक है। हे राम! मुझ जैसी भार्य्या को जिसका कौमरावस्था में आपने पाणिग्रहण किया है और बहुत समय तक आपके साथ रही है और पतिव्रता है फिर क्या कारण है जो आप मुझ दासी को परित्याग करते हो? हे प्राणाधार! वायु से उड़ी धूल जो मेरे शरीर पर आन गिरेगी उसको मैं चन्दन के तुल्य समझूगी और जिन तृणों पर शयन करूंगी उनको मैं कोमल शय्या के समान मानूंगी और पत्र फलादि जो कुछ आप खाने को दोगे उनको अमृत के तुल्य समझूंगी। स्वामी आप कुछ चिन्ता न करिये और मुझे साथ चलने की आज्ञा दीजिये।

सीता जी का बनगमन के लिये इतना आग्रह और हठ देख कर महाराज रामचन्द्र जी ने सीता जी को साथ चलने की अनुमति दे दी। जब राम के साथ बन जाने के लिये सीता प्रस्थान करने लगीं तो रानी कौशल्या ने सीता से कहा--"हे सीता अपतिव्रता स्त्रियां जो सर्वदा प्रिय पदार्थों से सत्कारपूर्वक पूजित होती रही हैं, बिपत्ति काल में पति का अनादर करती हैं। स्त्रियों का यह स्वभाव ही है कि पहले सुख को भोग कर भी जहां थोड़ी सी बिपत्ति आई कि पति को दोष देने लगती हैं, वरन उसका त्याग भी कर देती हैं। और जो सच्ची पतिव्रता हैं वे अपने धर्म्म और सत्य पर स्थिर रहती हैं। उनके लिये एक पति ही परम पवित्र और सर्वश्रेष्ठ है इसलिये तू हे सीता! मेरे पुत्र का कभी भूल कर भी अनादर मत करना क्योंकि चाहे वह सधन है या निर्धन है परंतु तेरे लिये वह सर्वदा देव तुल्य है। बेटी इस मेरी सीखको तू आयु भर मत भूलना और सदैव प्रसन्नमुख रहना"।

इस प्रकार सास के धर्म्मयुक्त बचन सुन कर सीता हाथ जोड़ कर बोलीं--"हे आर्य्ये! आप बिश्वास रखिये जैसी आप मुझे शिक्षा दे रही हो मैं सदैव वैसा ही व्यवहार करूंगी। मैं भी आप जैसी माताओं की कृपा से यह खूब जानती हूं कि पति के साथ पत्नी का कैसा व्यवहार होना चाहिये।

हे पूज्ये! आप मुझे असज्जन स्त्रियों के समान मत समझना। मैं अपने धर्म्म से बिचलित होने वाली नहीं हूं। यह मैं खूब जानती हूं कि जैसे बिना तार का बीणा और बिना पहियों का रथ किसी काम का नहीं होता इसी प्रकार बिना पति की स्त्री भी सुख को प्राप्त नहीं हो सकती है चाहे वह सौ पुत्र वाली क्यों न हो। हे मातु आप किसी प्रकार की चिन्ता न करिये और हमें आशीर्बाद देकर बिदा करिये जिससे हम सुखपूर्वक आपकी आज्ञा का पालन करें।

(असमाप्त)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी मञ्जूषा

ज्ञान प्रकाश मन्दिर, पो० माछरा (मेरठ) से हमें समालोचनार्थ तीन पुस्तकें प्राप्त हुई हैं।

(१) कार्नेगी और उसके विचार—लेखक श्रीयुत उमरावसिंह कारुणिक बी० ए०, पृष्ठ संख्या १०७, सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥≠)

अमरीका के विख्यात कर्ण-कुवेर का नाम प्रायः सभी शिक्षित भारतवासियों ने सुना होगा। यह उसी उद्योगी सिंहपुरुष का संक्षिप्त जीवन चरित्र है। एक निर्धन जुलाहे का लड़का किस प्रकार अपने परिश्रम, उत्साह, लगन, धैर्य और बुद्धि चातुर्य्य से संसार का सर्व प्रसिद्ध करोड़पति बन सक्ता है, यही इस पुस्तक में बड़ी सरल और सरस भाषा में योग्य लेखक ने दिखलाया है। इतना धन कमाकर भी उस में लिप्त न होजाना यही कार्नेगी के जीवन की शिक्षा है। 'धनवान मरना पाप है' यह उस महापुरुष का सिद्धान्त था। इसी लिये उसने अपने जीवन काल में करोड़ों रुपये दान में दिये। यह कहना कठिन है कि उसका इतना धन उपार्जन करना अधिक आश्चर्य्यजनक है अथवा उसकी दानशीलता। भारतीय नवयुवकों को श्रीयुत कार्नेगी के जीवन से अनेक उपयोगी शिक्षा मिल सक्ती है जो कि उनके जीवन-में बड़ी लाभकारी होंगी। पुस्तक समयानुकूल शिक्षाप्रद, मनोरञ्जक तथा संग्रहणीय है।

(२) टाल्सटाय की अत्म कहानी—अनुवादक श्री० उमरावसिंह जी कारुणिक और प्रकाशक उपरोक्त ज्ञानप्रकाश मन्दिर, माछरा-पृष्ठ संख्या ११०, मूल्य ॥≠)

जगत् प्रसिद्ध रूस के महात्मा टाल्सटाय को कौन नहीं जानता। आपका जन्म एक रूस के उच्च घराने में हुआ था। उस समय रूस के नवयुवकों और विशेषकर उच्च कुलोत्पन्न नौ जवानों का जीवन बड़ा ही आचाररहित, पतित, क्रूर और निस्सार होता था। न केवल इन बातों को बुरा नहीं समझा जाता था वरन नवयुवकों के लिये इन में शिक्षा प्राप्त करना बड़ा आवश्यक माना जाता था अतः टाल्सटाय का यौवनकाल भी अनेक घृणित कामों में बीता। उसके अपने शब्दों में दुराचार, मिथ्या भाषण, लूटमार, मद्य-पान, निर्दयता, नरहत्या इत्यादि सभी कुकर्म उसने किये। परन्तु अन्तको इस जीवन ने ऐसा पल्टा खाया कि टाल्सटाय महात्मा और ऋषि के नाम से पुकारा जाने लगा। टाल्सटाय ने "My Confessions" नाम की एक पुस्तक लिखी है जिस में उसने अपने जीवन की सभी घटनाओं पर प्रकाश डाला है। इस पुस्तक में उसने बड़े स्पष्ट शब्दों में अपने जीवन की दुर्बलताओं को स्वीकार किया है और किस प्रकार उसको इनसे मुक्ति मिली और उसके विचारों और आचार व्यवहार में शुभ परिवर्तन होते गये यही वर्णन किया है। यह हिन्दी पुस्तक इसी अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद है। महात्माओं के जीवन चरित्र का पाठ सदैव लाभदायक होता है और फिर टाल्सटाय जैसे महात्मा का जीवन जिसने अंधकार से प्रकाश में, कुमार्ग से सन्मार्ग में प्रवेश किया हो तो अवश्य ही शिक्षाप्रद है। आरम्भ में १५ पृष्ठ में कारुणिक जी ने टाल्सटाय का संक्षिप्त जीवन चरित्र देकर पुस्तक की उपयोगिता को और बढ़ा दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३) मुगलों के अन्तिम दिन—अनुवादक श्री उमरावसिंह जो कारुणिक बी० ए० प्रकाशक ज्ञान प्रकाश मन्दिर माछरा, मेरठ, पृष्ट संख्या १४८ मूल्य ॥≈)

मुगल साम्राज्य भारत में एक बड़ा प्रतापी और समृद्धिशाली साम्राज्य होचुका है। अकबर शाहजहां औरंगज़ेब का नाम संसार के इतिहास में अमर रहेगा। परन्तु संसार परिवर्तनशील है, जो आज उन्नति के शिखर पर विराजमान है कल वहीं उसको अवनति की अंधकारमय कंदरा में भी ठौर नहीं। उन्नति और अवनति, सुख और दुख सदा किसी के साथ नहीं रहते। बहादुरशाह मुग़लिया परिवार का अन्तिम बादशाह था। १८५७ में गदर के समय उसकी सेना भी उसकी इच्छा के विरुद्ध विद्रोहियों से जा मिली और इसके दण्ड में विजेता अंग्रेजों के हाथों उसे राज्यच्युत हो बन्दी बन रंगून जाना पड़ा। राज्य महारानी विक्टोरिया के हाथ में आगया और मुग़ल बादशाहों का नाम संसार से मिट गया। वह मुग़ल परिवार जो कि कभी, सुख, सौरभ और शान्ति से जीवन किलोलें करते थे अब अपने पेट भरने को भी लाचार हो गये। उर्दू भाषा के प्रसिद्ध लेखक ख्वाजा हसन निज़ामी ने इसी उजड़े परिवार के कतिपय शाहज़ादों और शाहज़ादियों की दुखमय हृदयविदारक जीवन घटनाओं से सम्बन्ध रखने वाले लेख लिखे हैं। यह हिन्दी पुस्तक उन्हीं लेखों का रूपान्तर है। इन राज-कुमार राज कुमारियों का भोजन के लिये तर-सना, साधारण प्रजा से ठुकराये जाना, घास काटना, छकड़ा चलाना झाड़ू देना इत्यादि कार्य्य करने, यहां तक बाज़ार में भीख मांगने के लिये विवश होना बड़े ही हृदयविदारक और मार्मिक दृश्य हैं जो कि इस असार संसार की निस्सारता का मन पर बड़ा तीव्र प्रभाव डालते हैं। पुस्तक मर्मभेदी होते हुये भी चित्ता कर्षक है।

४. आरोग्य शास्त्र—लेखक कविराज हर-दयाल वैद्य वाचस्पति; प्रोफैसर आयुर्वेद विद्या-लय, डी० ए० वी० कालिज और प्रकाशक श्री शङ्कर आयुर्वेदिक औषधालय सूत्र मण्डी लाहौर पृष्ट संख्या १७० मूल्य १।)

इस पुस्तक में लेखक ने उननियमों का बड़ी सरल रीति से वर्णन किया है जिनको पालते हुए हम स्वास्थ रक्षा कर सक्ते हैं। पूर्वार्ध में स्वास्थ नष्ट होने के कारण तथा स्वास्थ रक्षा तथा दीर्घ जीवन के आवश्यक नियम, दिनचर्य्या भोजन इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है उत्तरार्ध में प्लेग, विषम ज्वर, हैजा, तथा दिक्क, चेचक इत्यादिक छूत रोगों का वर्णन तथा उन से बचने के उपाय दिये गये हैं। अन्त में गर्भरक्षा, शिशु पालन विषयकी विवेचना कीगई है। पुस्तक उपयोगी है और गृहस्थियों के लिये विशेष कर स्त्रियों के लिये लाभकारी सिद्ध होगी।

५. बंग वीणा—अनुवादक भास्कर राम-चन्द भालेराव प्रकाशक भारतीय-साहित्य-मन्दिर पूना। पृष्ट संख्या ४५ मूल्य ॥।)

यह हर्ष का विषय है कि मराठी भाषा भाषी विद्वान भी अब राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की ओर ध्यान देने लगे हैं। महाराष्ट्र प्रान्त की राजधानी पूना से हिन्दी भाषा में पुस्तकों का निकलना आरम्भ होना अवश्य ही मंगल सूचक है।

प्रोफैसर सुरेन्द्रनाथ सेन एम० ए० पी० एच० डी० ने बङ्गाली भाषा की एक छोटीसी पुस्तक में आधुनिक बङ्गला साहित्य पर एक वर्णनात्मक (Descriptive) लेख लिखा है। इस में बङ्गला

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के प्रसिद्ध लेखकों, उनकी पुस्तकों, पुस्तकों के विषय और लेखकों के उद्देश और विचारों का वर्णन है। उक्त बङ्गला पुस्तक के इस हिन्दी अनुवाद से हिन्दी जानने वालों को बङ्गला साहित्य का संक्षेप में दिग्दर्शन हो जायगा। पुस्तक के अन्त में अनुवादक ने बङ्गला भाषा का स्वरूप शीर्षक लेख में इस भाषा का व्याकरण, वर्णमाला, हिन्दी भाषा से इसकी तुलना इत्यादि विषय पर भी प्रकाश डाला है।

इस ४५ पृष्ट की छोटी सी पुस्तक का ॥) मूल्य बहुत ज्यादा है। यदि प्रकाशकों का महाराष्ट्र में हिन्दी भाषा का प्रचार ही मुख्य उद्देश है तो उन्हें अपनी पुस्तकों का मूल्य बहुत कम रखना चाहिये।

प्राच्य-शिक्षा रहस्य—लेखक पंडित हरिदत्त शास्त्री विद्यारत्न, प्रकाशक सेठ केसरीदास, नवलकिशोर प्रेस लखनऊ। पृष्ट सं० २१२ मूल्य कुछ नहीं दिया कदाचित् बिना मूल्य ही मिलती हो।

इस पुस्तक में लेखक के शब्दों में प्रातःकाल से लेकर सम्पूर्ण दिनचर्य्या, विद्यार्थियों का कर्तव्य, विद्या के साधन, पिता, पुत्र का सम्बन्ध भाई भाई का परस्पर व्यवहार, राजा प्रजा का कर्तव्य, राज भक्ति, शिष्टाचार, मानवधर्म सत्य पालन सहानुभूति, अस्तेय, भूगर्भ में जल विज्ञान भवन निर्माण, वृक्षारोपण विधि आदि विषय शास्त्रों से लेकर सन्निविष्ट किये गये हैं।" ऊपर इन विषयों पर महाभारत, मनुस्मृति इत्यादि के संस्कृत श्लोक, नीचे हिन्दी टीका और आधुनिक 'सनातन धर्म' के मतानुसार व्याख्या की गयी है। पुस्तक विद्यार्थियों के लिये उपयोगी है।

ज्ञान भण्डार—लेखक श्रीयुत लेखराम उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, प्रकाशक अमृत कुमार कम्पनी 'अमृतधारा' लाहौर, पृष्ट ८० बिना मूल्य प्राप्य।

इस उर्दू भाषा की पुस्तक में महाराज मकरध्वज और महारानी चोडाला की पौराणिक गाथाको आधार बनाकर मनुष्य जीवन को सफल कैसे बनाया जा सक्ता है विषय पर आर्यसमाज के दृष्टि कोण से बहस की गयी है। संसार में सुख कैसे प्राप्त हो सकता है, मनुष्य का कर्तव्य क्या है, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में मनुष्य का कैसा व्यवहार होना चाहिये इत्यादि विषयों पर कहानी के रूप में मनोरञ्जक रीति से विचार किया गया है। जन साधारण के लिये पुस्तक उपयोगी है। भाषा की शैली में कृत्रिमता अवश्य है।

चान्द—मासिक पत्रिका, सम्पादक श्रीयुत रामकृष्ण मुकन्द लघाटे बी० ए० तथा प्रकाशक श्री० राम रखसिंह सहगल इलाहाबाद पृष्ट १८० वार्षिक मूल्य ६॥) प्रति संख्या ॥।)

चिरकाल से जिस स्त्री-उपयोगिनी-मासिक पत्रिका के निकलने के शुभ समाचार सुन रहे थे उसका गत नवम्बर मास से निकलना आरम्भ हो गया है। पत्रिका की पहली संख्या हमारे सामने है। इस के सभी लेख और कवितायें सुचारु, ज्ञानवर्धक, मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद हैं। सम्पादक द्वारा लिखित राष्ट्रीय जीवन में स्त्री का महत्व, श्रीमती विद्यावती सहगल का सामाजिक सुधारों की आवश्यकता, श्रीमती शारदाकुमारी लिखित भारतीय स्त्रियों का कर्तव्य शीर्षक लेख पठनीय तथा विचारणीय हैं। शिशु-पालन, भूमण्डल की स्त्रियां, स्वास्थ रक्षा डाकृरी दवायें, पाक शिक्षा इत्यादि अनेक अन्य विषयों पर उत्तम २ लेख हैं। पत्रिका होनहार है और स्त्रियों के सर्वथा अपनाने योग्य है। हम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी सहयोगिनी का प्रेम से शुभागमन करते हैं और उसके चिरजीवन की कामना करते हैं।

"हिन्दी" का दिवाली अंक—शायद ज्योति के पाठकों को पता होगा कि हमारे उत्साही आर्य भाई श्रीयुत पण्डित भवानीदयाल जी दक्षिण अफ्रीका के जैकोब्ज नगर से हिन्दी भाषा में एक साप्ताहिक पत्र निकाल रहे हैं जिस में अफ्रीकानिवासी भारतवासियों के हितार्थ लेख तथा समाचार रहते हैं। पत्र का नाम "हिन्दी" है। यह आर्यभाषा के लिये गर्व की बात है कि हज़ारों मील की दूरी पर भी उसका एक भक्त मातृ भाषा का डंका बजा रहा है। श्री भवानी दयाल जी ने गत दिवाली के अवसर पर अपने पत्र का एक विशेष अंक निकाला है जो कि हमारे सामने है। इस में हिन्दी तथा अंगरेज़ी दोनों भाषाओं में लेख हैं। इस दिवाली अङ्क को देख और पढ़ कर चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। लेख खूब बढ़िया और सुन्दर छपे हैं। लेखों के विषय स्वामी दयानन्द और उसका कार्य, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र तथा दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति है। लेखकों में अफ्रीका और भारत के कितने ही प्रसिद्ध २ नाम हैं जैसे श्रीयुत एन्ड्रूज भाई परमानन्द, मि० चिन्तामणि, श्री सत्यदेव, पं० ईश्वरदत्त विद्यालङ्कार मिस्टर पाल रिचर्ड इत्यादि २। इस अङ्क में ६८ पृष्ट हैं और छोटे बड़े सब मिलाकर ५० के ऊपर लेख और कविता हैं। कितने ही चित्र भी हैं। मूल्य दो शिलिङ्ग अथवा १॥) रु०। हम अपने भाई को ऐसा उत्तम दिवाली अङ्क निकालने पर हार्दिक बधाई देते हैं।

विचार प्रवाह

आर्य्यसमाज लाहौर का वार्षिक उत्सव

आर्य्यसमाज लाहौर का वार्षिकोत्सव गत २४, २५, २६ नवम्बर को बड़े समारोह के साथ समाप्त हुआ। जन संख्या तथा व्याख्यानों की उत्तमता तथा धन की राशि प्रत्येक को दृष्टि में रख कर यह कहना अत्युक्ति नहीं कि इस वर्ष लाहौर का उत्सव बड़ी सफलता से हुआ। इस वर्ष दो तीन बातें नवीन हुईं। एक तो जहां प्रति वर्ष भजन मंडलियां एकत्रित करके नगरकीर्तन निकाला जाता था वहां इस वर्ष भजनीकों के ऊपर कीर्तनकार्य्य भार न डाल कर आर्य्यजनता ने स्वयं इस कार्य्य को सम्भाला और हजारों नर और नारी कीर्तन करते हुए समाज मन्दिर से गुरुदत्त भवन की ओर पधारे। आर्य्य पुरुषों की पहिचान के लिये सब ने एक ही केसरी रंग की पगड़ियां बांधी हुई थीं।

उत्सव से तीन दिन पहिले शास्त्रार्थ वगैरः हुआ करते थे उन के स्थान में विद्वज्जनों के व्याख्यान कराये गये और उन पर वाद विवाद हुआ। स्नातक बुद्धदेव जी ने सनातन धर्म पर, प्रो० रामदेव जी ने ईसाई मत पर और पंडित धर्मभिक्षु ने मुसलमानी धर्म पर बड़ी योग्यता पूर्ण वक्तृतायें दीं। ईसाइयों की ओर से कोई आगे नहीं आया किन्तु मुसलमानों के एतराज़ों का पण्डित धर्मभिक्षु जी ने बड़ी उत्तमता से जवाब दिया॥

इस वर्ष यह भी निश्चय गया था कि बहुत से व्याख्याताओं को इकट्ठा करके व्याख्यानों की भरमार न की जावे वरन इतने व्याख्यान करायें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जावें जितने सावधान चित्त से जनता सुन सके इस का शुभ परिणाम यह हुआ कि श्री पण्डित ब्रह्मदत्त जी, श्री० प्रो० रामदेव जी तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज इत्यादि के शिक्षा प्रद, मनोज्ञ और प्रभावशाली व्याख्यानों को शान्त चित्त से जनता सुनती रही।

बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष धन राशि ५१ हज़ार सुनाई गई जिसमें ३० हज़ार विलायती महिला के दान की रकम है॥

एक अंग्रेज़ देवी का दान

ज्योति के पाठकों को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि श्रीमती शान्ता देवी–जिनका पहिला नाम मिस मेरी वरोज़ था—ने भारतीय महिलाओं के उन्नत करने तथा उन्हें शिक्षा दिलाने के कार्य्य के हेतु अपनी सारीसम्पत्ति जो कि कम से कम ३० हज़ार रुपया है पंजाब प्रतिनिधि सभा के संरक्षण में एक नया ट्रस्ट बना कर उसकी इच्छानुसार व्यय करने के लिये दिया है जिसके मेम्बर श्रीमान् प्रोफेसर रामदेव जी, श्री०डाक्टर श्यामस्वरूप जी वरेली निवासी श्रीमती विद्यावती सेठ, श्रीमती ओ३म्वती जी, श्रीमती विद्यावती जी हैं।

श्रीमती शान्ता देवी पहली अंग्रेज महिला हैं जिन्होंने आर्य्यसमाज से मिल कर स्त्री जाति के हितचिन्तन की लगन दान रूप में प्रगट की है। श्रीमती जी को कुछ वर्ष हुये गुरूकुल वृन्दावन के उत्सव पर शुद्ध करके शान्ता देवी नाम दिया गया था और कई वर्षों तक इधर उधर भ्रमण करके वह पिछले दो तीन वर्षों से लाहौर में ही अधिकतर निवास करती रहीं। आप बड़ी सुयोग्य लेखिका थीं और वैदिक मैगज़ीन में प्रायः आप के लेख प्रकाशित होते रहे हैं। आप की प्रबल इच्छा थी कि कोई ऐसा शिक्षणालय बनाया जावे जिस में माउन्टसरी के तरीक़े पर बालिकाओं को शिक्षा दी जावे। चूंकि आप आर्य्य भाषा बोलना अच्छी तरह नहीं जानती थीं इसलिये स्त्रियों के बीच में काम करना उनके लिये कठिन हो रहा था इस कठिनता को वह दूर करने के लिये कई मास तक महाशय कृष्ण जी के मकान पर रह कर आर्य्य भाषा सीखती रहीं। परन्तु काल की गति विचित्र है उन्हें कोई पुरानी बीमारी थी जो पुनः बढ़ने लगी और कई महीने इलाज करने पर भी रोग ने प्राण लेकर छोड़े। गत अक्टूबर मास के अन्त में बरेली में आप का देहान्त हो गया। श्रीमती शान्तादेवी ने अंग्रेज महिला होकर भी भारतीय महिलाओं के कल्याण के लिये जो यह दान दिया है उसके लिये हम स्त्री जाति की ओर से ही नहीं समस्त भारतीयों की ओर से बड़ी कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आर्य्य स्वराज्य सम्मेलन।

लाहौर आर्य्यसमाज के उत्सव के साथ २ एक आर्य्य स्वराज्य सम्मेलन भी हुआ जिसके सभापति श्री० चांदकरण शारदा जी थे। इस सम्मेलन में जन संख्या बहुत अधिक न थी और इसकी कोई भी कार्य्यवाही ऐसी न थी जिससे इस नये सम्मेलन के संगठन की आवश्यक्ता न्यायसंगत प्रतीत होती हो। हमें आशा थी कि आर्य्य स्वराज्य सम्मेलन कम से कम वर्त्तमान राजनैतिक प्रश्नों में से सब पर नहीं तो दो एक पर तो आर्य्यसमाजियों की दृष्टि विन्दु दर्शायगा परन्तु स्वागत कारिणीसभा के प्रधान तथा सम्मेलन के प्रधान दोनों में से किसीने भी कौंसिलोंमें प्रवेश करने न करने तथा सविनय कानूनभंग इत्यादि प्रश्नोंको छुआ तक नहीं हम यह नहीं कहते कि सम्मेलन से कोई लाभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं हुआ क्योंकि सम्मेलन के प्रधान ने हिन्दू मुसलिम एकता, गो रक्षा, इत्यादि प्रश्नों पर उत्तम प्रकाश डाला परन्तु आशा के प्रतिकूल वर्त्तमान राजनैतिक ज्वलन्त प्रश्नों के प्रति सम्मेलन की उदासीनता देख कर हमें विस्मय हुआ।

स्त्री स्वराज्य सम्मेलन लाहौर

गत ६, ७ दिसम्बर को लाहौर में श्रीमती कस्तूरी बाई गांधी तथा बी अम्मा और मिसिज़ मुहम्मद अली पधारीं। स्त्री स्वराज्य सम्मेलन की धूम कई दिनों से मची हुई थी और बड़े २ विज्ञापनों में प्रायः उन सभी देवियों के पधारने की सूचना जनता को दी गई थी जिन के पति इस समय देश के नेता और मान्य गणों में गिने जाते हैं। यह सम्मेलन यद्यपि कागजों में बड़ा भारी कार्य्य प्रतीत होता था किन्तु देखने पर बिल्कुल एक खद्दर सभा की साधारण बैठक सी थी, विशेषता इतनी ही थी कि कांग्रेस कमेटी के सदस्यों ने पन्डाल कुछ सजा दिया था, और डेलीगेटों स्वागतकारिणी सभा की सभासदाओं और दर्शकों के लिये भिन्न २ टिकट और भिन्न २ स्थान नियत कर दिये थे जो भेद पीछे से लुप्तप्राय ही था क्योंकि दर्शकों को डेलीगेटों और स्वागतकारिणी सभा के सदस्यों के साथ ही पीछे बैठा दिया गया। डेलीगेट बन कर क्या कार्य्यभार उठाना पड़ता है अथवा स्वागतकारिणी के सदस्य का क्या काम है यह विचारी अनपढ़ तथा अर्धपठित देवियां क्या जानें ? उन्हें यह पता था कि उन्होंने २) या ५) की सीट ली है। वालन्टियरों का यह हाल था कि कई स्त्रियां जो कि शायद बुलावी या नौकरानी का काम घरों में करती रहती हैं उन्हें बैज पहिना दिया था। उन्हें शिष्टाचार नहीं आता था और जब कभी उन की परिचिता स्त्रियों के बैठने का प्रश्न उपस्थित होता तो वह झट पक्षपात से उन्हें उत्तम स्थान पर बिठालने का यत्न करतीं दूसरों के साथ गाली गलौज की नौबत भी पहुंच जाती थी। यह तो हुई प्रबन्ध की बात, अब सम्मेलन की मुख्य कार्य्यवाही का हाल सुनिये। स्वागत कारिणी सभा की प्रधाना धर्मपत्नी लाला लाजपत रायजी थीं, जिन्होंने अपनी वक्तृता आप न पढ़कर अपनी पुत्री पार्वती देवीजी से पढ़वाई हमारी सम्मति में यदि पार्वती देवी स्वयं ही प्रधाना बनकर अपनी ओर से वक्तृता देतीं तो बड़ा उत्तम होता।

सम्मेलन की प्रधाना कस्तूरी बाई जी का भाषण अधिकांश उपस्थित जनता को सुनाई नहीं दिया क्योंकि स्त्रियां कोलाहल मचा रही थीं।

सम्मेलन में स्त्रियों ने किसी वर्तमान राजनैतिक प्रश्नों—कौंसिलों में जाना, सविनय कानून भङ्ग इत्यादि को स्वतन्त्र रीति से नहीं विचारा न यही विचारा कि सामान्य स्त्रियों में खद्दर और चर्खे का प्रचार जारी रखने के लिये किन २ उपायों और साधनों से काम लेना चाहिये। चूंकि चारों तरफ सम्मेलन हो रहे थे तो स्त्रियां क्यों पीछे रह जातीं इसलिये एक स्त्री स्वराज्य सम्मेलन भी संगठित किया गया। जब तक स्त्रियों को वर्तमान स्वराज्य सम्बन्धी अथवा सामाजिक बातों को स्वयं विचार ने और सोचने की शिक्षा न दी जायगी, जब तक योग्य शिक्षित देवियों का सहयोग न होगा तब तक इस प्रकार की सभायें "यथा काष्ठमयो हस्ती, यथा चर्ममयो मृगः" की भांति नाम मात्र की सभायें रहेंगी फल कुछ न निकलेगा।

पंडित मालवीय जी का टाइप राइटर

लाहौर के स्टेशन पर चुंगीघर ने जो अनर्थ कर रक्खे थे उन के विषय में पाठकों ने पत्रों में पढ़ा होगा। पहिले तो प्रत्येक नर नारी के ट्रंक इत्यादि सब सामान खोल २ कर देखे जाते और घण्टों समय नष्ट होता और स्त्री पुरुष तङ्ग होते थे किन्तु जब बहुत शोर मचा तो म्युनिस्पैलिटी ने कुछ ऐसे नियम बनाये जिससे लोग तङ्ग भी न हों और म्युनिसिपैलिटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को चुंगी की हानि भी न हो। परन्तु नियम का चलाना बहुत कुछ स्थानिक कर्म्मचारियों के ऊपर ही रहता है अतः जैसे कर्मचारी होंगे उसी के अनुसार काम होगा। अभी कल की बात है कि पण्डित मालवीयजी के टाइपराइटर पर चुंगी अवश्य ले लेने के लिये चुंगी वाले तुल गये और पण्डित जी के नौकरों के कहने पर विश्वास न करके उन्हें रोके रखा। जब प्रो० रुचिराम साहनी का आदमी पहुंचा तब उनका छुटकारा हुआ। समझने की बात है कि कोई बेचने के लिये माल लावे तो चुंगी ठीक है परन्तु कोई देशभक्त या देशसेवक टाइप राइटर या मैजिक लाइन्टर्न तथा अन्य ऐसी कला साथ लिये २ जावे जिस के द्वारा वह अपना कार्य्य आसानी से कर सके तो यदि जहां २ वह जावे और इस प्रकार चुंगी देता रहे तो उसका दिवाला ही निकल जावेगा और कीमत से कहीं बढ़ कर धन चुंगी में देना पड़ेगा। हम भारतीय स्वराज्य की प्राप्ति के लिये जीतोड़ प्रयत्न में लगे हुये हैं किन्तु स्थानिक स्वराज्य में इन अनियमों से क्या हम यह नहीं सिद्ध कर रहे हैं कि भारतवासी स्वराज्य के योग्य नहीं हैं ? आशा है कि लाहौर की म्युनिसिपैल्टी इस पर विशेष ध्यान देगी और पंडित मालवीय जी के टाइप राइटर की घटना फिर कभी न होगी।

अमरीका में अंग्रेजों की चालाकी

इतिहास द्वारा विचार परिवर्तन की चेष्टा

अभी पता लगा है कि अमरीका के न्यूयार्क शहर में जो स्कूल और कालिज हैं उनमें जो इतहास पढ़ाये जाते हैं उन में अंग्रेज़ों ने कुछ ऐसे हेर फेर करने की चेष्टा की है जिनसे अमरीका निवासी युवकों के मस्तिष्क उन बातों से भर जावें जो अमरीकन जाति के लिये हानिकारक हैं। एक अमरीकन अखबार लिखता है कि:—

"हमारी पाठ्य पुस्तकों में चुपके से जो परिवतन हुए हैं जिन के द्वारा हमारे जाति के नेता और प्रवर्त्तकों की बदगोई की गई है, हमारी ऐतिहासिक घटनायें घटा बढ़ा दी गई हमारी नीति युवकों के दिमागों को बिगाड़ने के लिये बनी है यह सब आकस्मिक घटना नहीं है वरन उन गुप्त कार्य्यों का परिणाम है जो अन्य क्षेत्र में भी काम कर रहे हैं। सर जिलबर्ट पार्कर तथा स्वर्गवासी लार्ड नार्थक्लिफ द्वारा जो सुगठित और चलाऊ प्रचार का कार्य्य हमारे देश में हो रहा था उसके अतिरिक्त एक दर्जन और अंग्रेजी अथवा अंग्रेजों की पोषक दृढ़ संस्थायें हैं जो अमरीका की जनता को अंग्रेजी विचारों से भरने में लगी हुई हैं। कुछ ढंग तो खुले हैं, कुछ गुप्त हैं किन्तु सब हानिकारक और एक ही लक्ष्य रखते हैं। गुप्त तरीकों का पता उनके परिणामों द्वारा ही लगता है।"

जब अमरीका जैसे स्वतन्त्र देशों में यह चालाकी हो रही है तो भारत जैसे अंग्रेजों के आधीन देश में क्या कुछ नहीं हो रहा है जिनसे भारतीय काले अंग्रेज बन सकें॥

❀ पाकेट इत्रदान ❀

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और आफिसरों को नजर में देने के लिये नई वस्तु है। विवाह व शादी वगैरः शुभ कार्यों में भी मौफिल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं १ पाकेट इत्रदानफैसी शी० ६ मय इत्र की ४)
नं २ ,, ,, ६ ,,
नं ३ ,, ,, ६ ,,

इसके अलावा हर एक किस्म की इत्र तेल, तमाखू इत्यादि सामानभी हमारे कार्यालय से मंगवा लीजियेगा॥

पता—बिहारी लाल काली चरण त्रिपाठी,
पो० कनौज सिटी (Kanouj City.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुख्य पत्र।

॥ आर्यमित्र ॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति वृहस्पतिवार को आगरा से प्रकाशित होता है।

सम्पादकः—

पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री बी. ए.

तर्कशिरोमणि स्नातक गुरुकुल वृंदावन।

यदि आप वैदिकधर्म प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियें पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्य जगत् के समाचार जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही—

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये,

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है।

पता—आर्यमित्र आगरा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

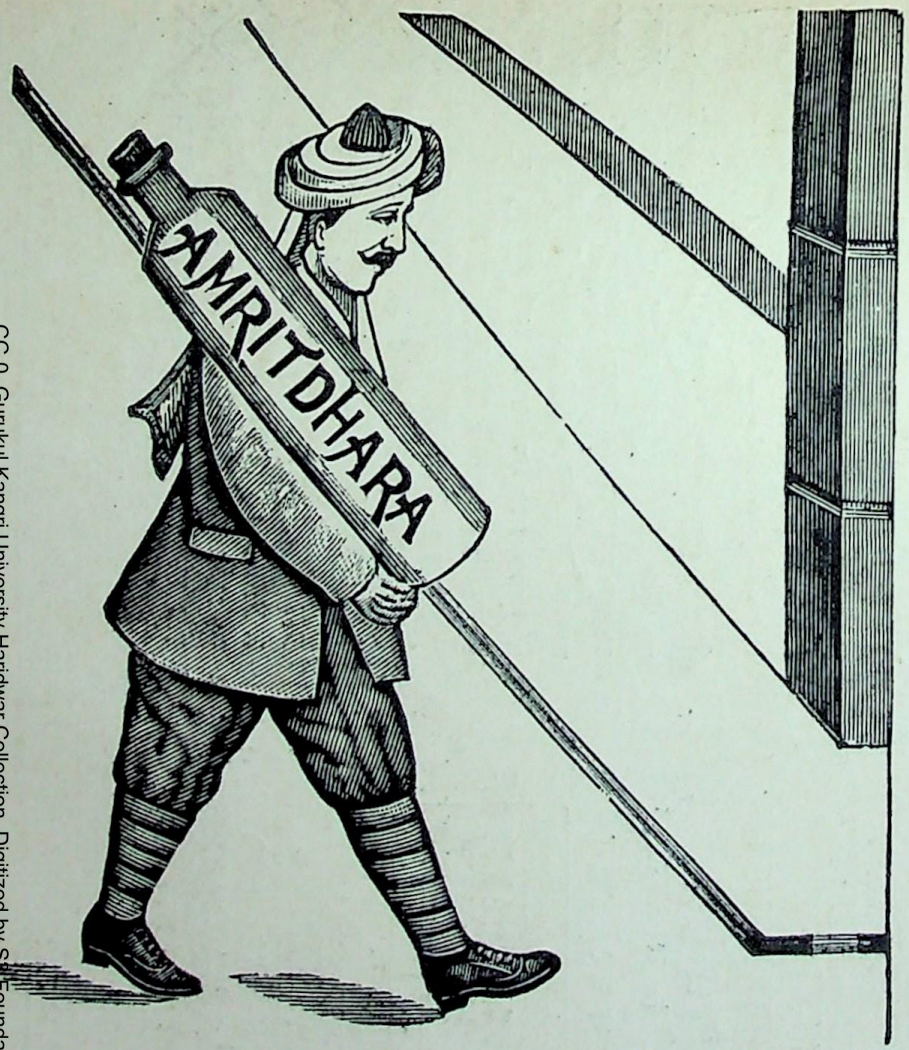

तुम्हारे घर के धन दौलत की रक्षा के लिये चौकीदार की ज़रूरत है परन्तु घर में रहने वालों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये एक अनोखे चौकीदारः—

अमृतधारा की आवश्यकता है।

श्रीस्वामी नित्यानन्द जी महाराज राजउपदेशक ने शान्ति कुटी शिमला से लिखा था:--

"आपकी दवाई अमृतधारा को मैने और अन्य सज्जनों ने सेवन करके देखा है सचमुच रामवाण औषधि है। जिन रोगों का आपने वर्णन किया है उनमे से कुछ पर सेवन किया तो जैसा कि लिखा है, वैसा ही पाया। मेरी सम्मति में प्रत्येक मनुष्य के पास और हर गृह में अवश्य रहनी चाहिये" ऐसे ही

२५ हज़ार सार्टीफिकेट मौजूद हैं।

विस्तृत हाल जानने के लिये रिसाला "अमृत" मुफ्त मगाकर देखिये, ⁻) के टिकट भेज "बड़ा अमृत" मंगवा सकते हैं

सावधान! नक़ालों से बचे रहना। बहुत से लोग इस से मिलते जुलते नाम रखकर पबलिक को धोखा दे रहे है। वस्तुतः इस के आविष्कारकर्ता श्रीमान् कवि बिनोद पं० ठाकुरदत्त जी के सिवा इसके रहस्य को कोई नहीं जानता है।

मूल्य प्रति शीशी २॥) आधी शीशी १।) और नमूना ॥) सेवन विधि पत्र प्रत्येक भाषा में मिल सकता है।

मैनेजर—अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा रोड़, अमृतधारा डाकखाना लाहौर॥

पत्र व्यवहार का पता--'अमृतधारा लाहौर'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

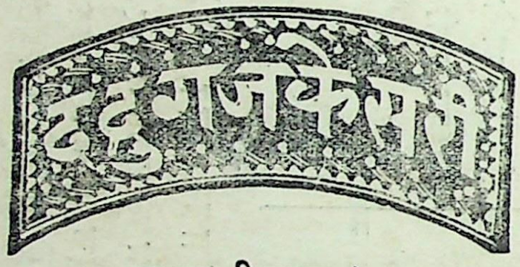

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य।

कोषकी कथा—सचित्र पुस्तक में Cell का सरलभाषा में पूर्ण परिचय दिया है। प्राणिशास्त्र के विषय में हिन्दी में ऐसी सरल पुस्तकें निकलना अच्छीबात है। यह पुस्तक प्राणिशास्त्र के छात्रों के लिए बड़ी सहायक होगी। मू०॥)

श्रीहर्ष—पुस्तक के पढ़ने से मालूम हो जाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मालूम होती हैं। वंसखेर तथा मधुवन के ताम्रपत्र तथा श्रीहर्ष के हस्ताक्षर इसकी उपयोगिता को बढ़ाते हैं। बढ़िया छपी पुस्तकहै मू०॥

अवताररहस्य—अर्थात् भारतीय तथा युरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समाक्षा इस पुस्तक में बड़ी खोज तथा परिश्रम से तुलनात्मक विवेचन करते हुए अवतारों का रहस्य समझाया है जो प्रत्येक जिज्ञासुको पढ़ना चाहिए। इसमें २५ प्रकरण हैं तथा भाषा शास्त्र की उत्पत्ति, आर्य्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, युगलक्षण इत्यादि विषयोंपर विवेचन किया है। सजिल्द बढ़िया छपी पुस्तक मू० ॥≠)

तुलनात्मक धर्म्मविचार मू० १) गुजराती हिन्दी शब्दकोष मू० ३)। आठ आने जमा करने वालों को इन स्वल्प मूल्य की पुस्तकों पर दो आना रुपया कमीशन दिया जायगा। अतएव स्थायी ग्राहक बनकर लाभ उठाएं। इन मालाओं में समुद्रगुप्त, चीनकी संस्कृति, नीतिविवेचन इत्यादि २ पुस्तकें छपरही हैं।

मुफ्त—यदि आप इन पुस्तकों को विनामूल्य लेना चाहें तो दो पैसे के टिकट भेज हमसे नियम मंगालीजिए।

अन्यपुस्तकें।

सृष्टिविज्ञान २) शरीरविज्ञान ।≡) ब्रह्मयज्ञ ॥। गीतासार ।≠ त्रिदेवनिरूपण ।-) आत्मस्थान विज्ञान -) दुर्गा ।≠) प्रेमपूर्णिमा २) इनके अतिरिक्त सब प्रकार की पुस्तकें तथा मासिक सूची-पत्र मिलने का पता जयदेवब्रदर्स बड़ोदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाम्बे मशीन प्रेस लाहौर में मैनजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ३] माघ १९७९—फरवरी १९२३ [खण्ड ३, संख्या १०

ऋषि-बोध अंक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)

विषय-सूची ।

विषय पृष्ठ

[illegible] [कविता] ले० [illegible]

लता का सब से अच्छा प्रमाण है ।

सुधासिन्धु

[illegible] ज्यात [कविता] ले०—पं० नाथूराम शङ्कर शर्मा, 'शङ्कर' । ५१३

४—आर्य्यसमाज की वर्तमान अवस्था, उसके कारण और उपाय, ले०-श्रीयुत व्रजनाथ मिश्थल बी.एस.सी., एल. एल. बी.। ५१४

५—श्रीमद्दयानन्द-शिवरात्रि[कविता]ले०—श्री० पं० चेतराम शर्मा । ५१७

६—ऋषि दयानन्द का बोल-बाला, ले०—प्रिन्सिपल रामदेवजी बी.ए.एम.आर.ए.एस. ५२०

७—महर्षि दयानन्द और स्त्री जाति, ले०—प्रोफैसर प्रीतम लाल जी गुप्त एम. ए. एम. आर. ए. एस. । ५२३

८—ज्योतिर्मय [कविता] ले०—श्रीयुत राजाराम जी शुक्ल । ५२६

९—भारतोद्धारक भगवान दयानन्द, ले०—देशभक्त श्री० डाकृर सत्यपाल जी । ५२६

१०—स्वामी दयानन्द एक समालोचक की दृष्टि में, ले०—श्रीयुत डाकृर लक्ष्मण स्वरूप पी. एच. डी. प्रोफैसर पञ्जाब यूनिवर्सिटी । ५२९

११—विनय-गीत [कविता] ले०—श्री राम नाथ लाल 'सुमन' । ५३१

१२—शिवरात्री से हम क्या सीख सकते हैं? ले०—श्रीयुत दीनानाथ सत्यभिक्षु सिद्धान्तालंकार । ५३२

१३—दीक्षारात्रि का महत्त्व, ले०—श्रीयुत प्रो० रामशरण सक्सेना एम.एस.सी. ५३३

१४—श्री स्वामी दयानन्द के जीवन की एक झलक, ले०—ब्रह्मचारी चन्द्रकान्त श्रीनाथ १३७

१५—अभिलाषा [कविता] ले०-श्रीयुत धर्म्म चन्द्र खेमका "चन्द्र" । ५४१

१६—ऋषि दयानन्द का विमलज्ञान, ले०—सरलभाषा म[illegible]न्तराम जी बी. ए.। ५४२

शास्त्र के विषय [illegible]वता] ले०—श्रीयुत दुर्गादत्त निकलना अच्छ[illegible] ५४४

के छात्रों के [illegible]

[illegible]वण्डन-स्वामी दयानन्द और भगवान बुद्ध, ले०—श्रीयुत चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, पालीरत्न । ५४६

१९—शिवरात्री, ले०—श्रीयुत देवराज सिद्धान्त लङ्कार । ५४८

२०—वन्दना [कविता] ले०-श्रीयुत चमूपति 'चातक' । ५५६

२१—स्वामी दयानन्द सरस्वती, ले०—श्रीयुत कविवर पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी । ५५०

२२—शान्तिपथ ले०-श्रीयुत निरंजननाथजी ५५१

२३—वनिता विनोद । ५५६

२४—विचार प्रवाह । ५६३

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इसका आ० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित आ० वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेजर "ज्योति" लाहौर के पते से आने चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar. Collection. Digitized by S3 Foundation USA

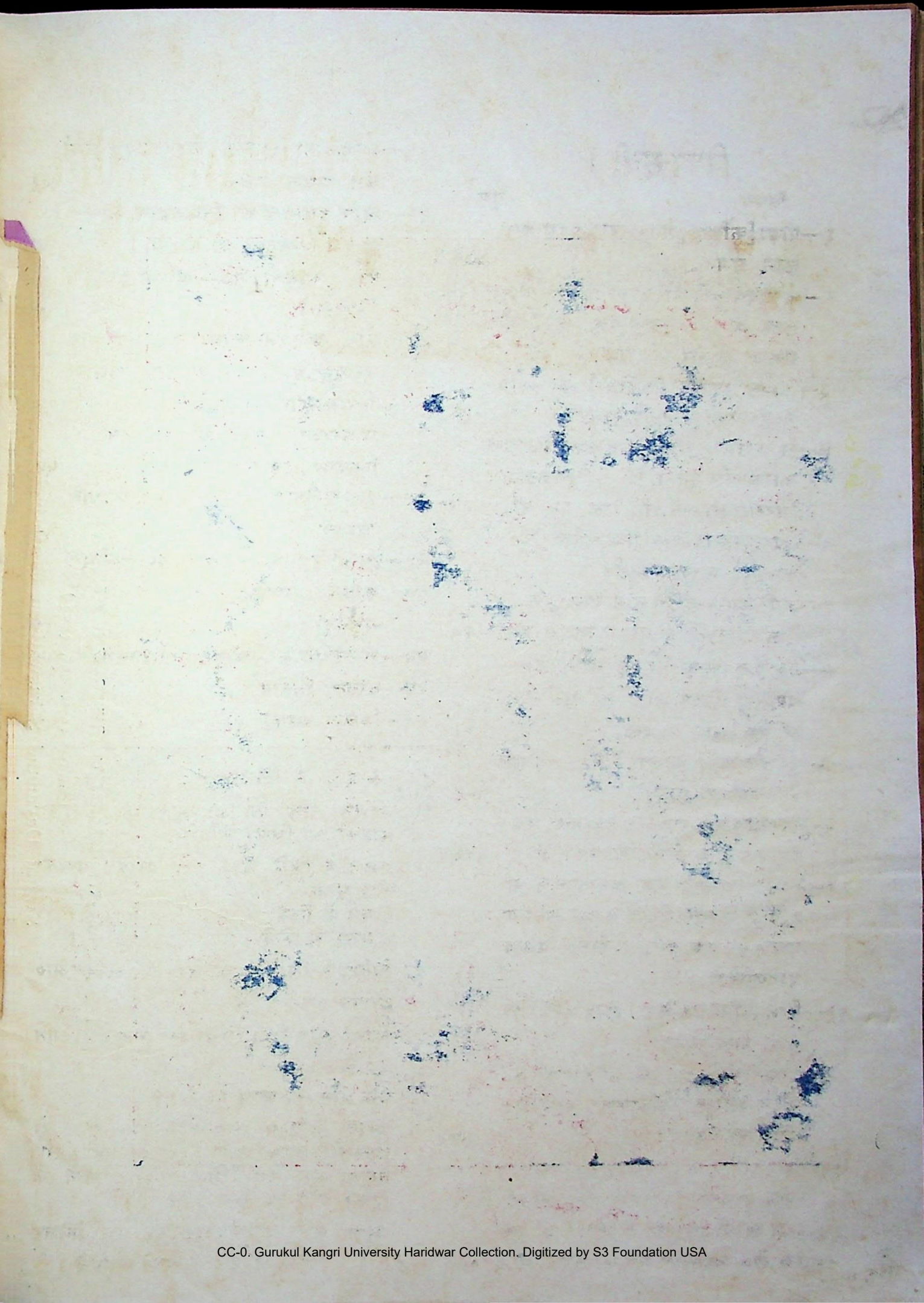

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

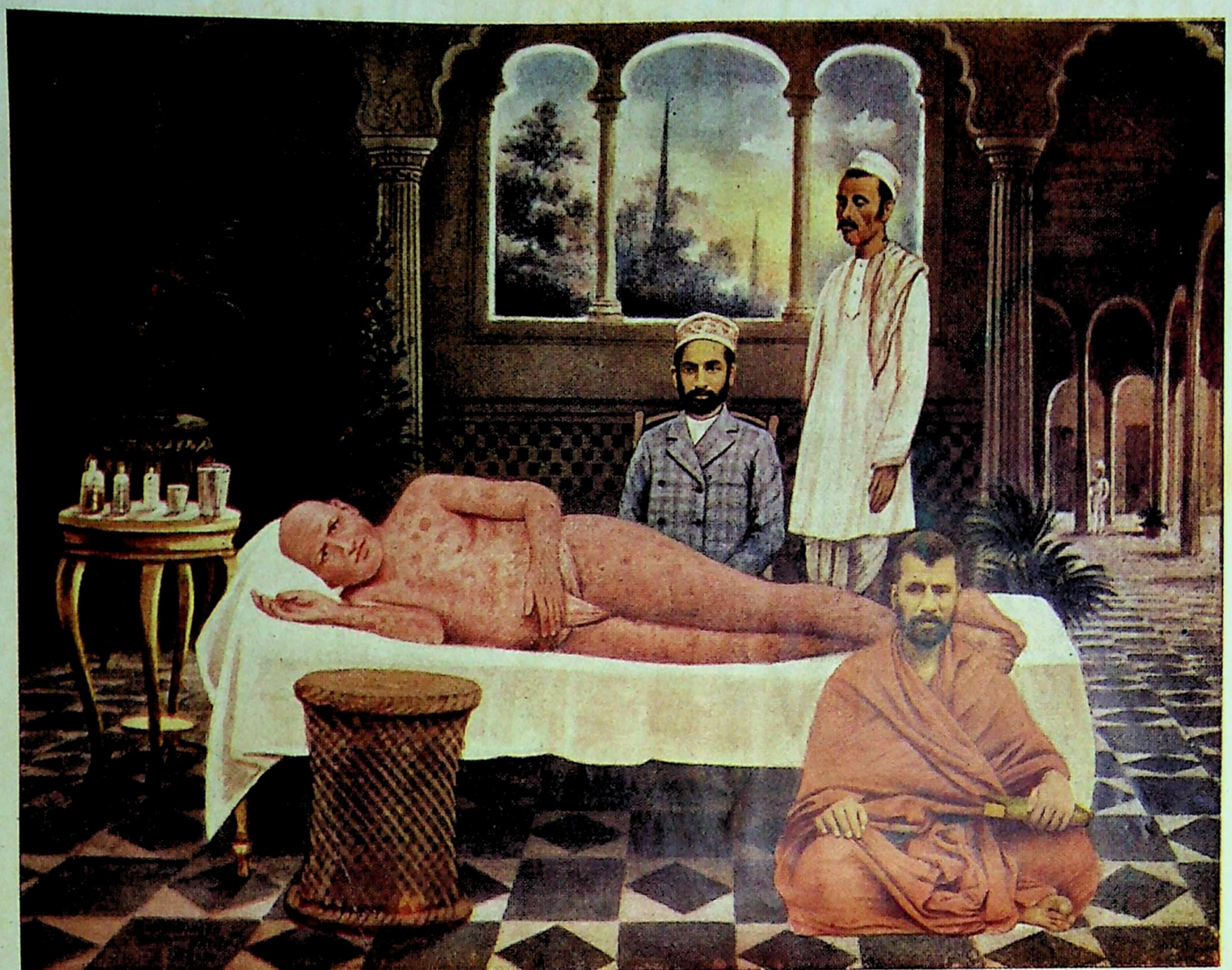

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती मृत्युशय्या पर

(अजमेर—३० अक्तूबर, १८८३)

Swami Dayanand Saraswati on Death-bed.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष ३ | माघ १९७९—फरवरी १९२३ | संख्या १०

पीड़ा।

(ले०—श्रीयुत रामनाथलाल 'सुमन')

शान्त समीरण हृदय जलाए डालता,
वीणा की स्वर-लहरी की वह वेदना—
पग पग पर दिल की चुटकी है ले रही,
आह! चित्त की वे पर हैं सुनते नहीं।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द ।
और
राजनीति ।

ले०—श्रीयुत कृष्ण, बी० ए० सम्पादक 'प्रताप और प्रकाश' लाहौर

भारत में इस समय घोर आन्दोलन हो रहा है। इसका परिणाम क्या होगा यह भगवान ही जानें, परन्तु कुछ होकर अवश्य रहेगा। यों तो भारत में राजनैतिक युद्ध कई वर्षों से हो रहा है परन्तु जिस युद्ध का आरम्भ १९१९ से हुआ है वह निराला ही है। सरकार ने सर्व भारत को इच्छा के विरुद्ध रौलट बिल पेश किया। उसके विरोध में हिन्दू और मुसलमान, गरम दल वालों और नरम दल वालों का कोई भेद नहीं था। यदि कोई एक विषय है जिस के विरोध में सारा देश एक मत हो तो वह यह बिल था। परम माननीय मि० श्रीनिवास शास्त्री ने, जो इस समय सरकार के बड़े विश्वासपात्र बने हुए हैं, वाइसराय की सभा में इस बिलके विरुद्ध बड़ी तीव्र और कड़ी वक्तृता की थी। उन्होंने कहा था कि यदि सरकार ने यह कानून पास कर दिया तो देश में एक ऐसी अग्नि प्रज्वलित होगी जिसका बुझाना सरकार के लिये असम्भव होगा और मैं उन व्यक्तियों में से हूंगा जो इसका सदैव प्रतिरोध करते रहेगें।

विदेशी राज्य की यह बड़ी न्यूनता होती है कि उसके शासक प्रजा से मिल जुल कर नहीं रहते। अतः उन्हें यह ज्ञात नहीं होता कि प्रजा के भाव और विचार क्या हैं। सरकार यही समझती रही कि प्रजा में इस बिल के विरुद्ध कोई भाव नहीं, यह केवल राजनैतिक नेताओं की गर्जना मात्र है। सरकार यह समझ ही न सकी कि प्रजा के मन को कौन से भाव डाँवाडोल कर रहे हैं। योरोप का महायुद्ध अभी समाप्त ही हुआ था, इङ्गलैण्ड को इस में विजय प्राप्त हुई थी, उसके शत्रु सर्वथा पराजित हुए थे। भारत यह समझता था—और उसका ऐसा समझना किसी प्रकार भी असंगत न था—कि इङ्गलैण्ड को यदि यह विजय प्राप्त हुई तो उसके ही कारण से। उस के ही वीर योद्धाओं ने सब से पहिले जर्मनो को पेरिस पर अधिकार प्राप्त करने से रोका यदि उन्होंने फ्रान्स के युद्ध क्षेत्र में पहुंच चिर स्मरणीय उत्साह और वीरता से शत्रु का मुंह न मोड़ दिया होता तो अवश्य पैरिस के महलों पर उसकी पताका फहराती होती और आज संसार का चित्र ही कुछ और होता। इस अवस्था में जर्मनी इङ्गलैण्ड के साथ क्या व्यवहार करता इसके वर्णन की आवश्यक्ता नहीं। "यह रौलट बिल क्या उसी अमूल्य सेवा का पुरस्कार है? क्या हमारी सहायता का यही मूल्य है?" यह विचार था जो कि भारतीयों के हृदय को खाये जा रहा था। यही विचार था जिस ने कि देश में आग लगादी और एकता का वह भाव पैदा कर दिया जो इससे पहिले कभी दृष्टिगोचर न हुआ था।

जब सरकार रौलट बिल पास कर चुकी तो महात्मा गान्धीने सत्याग्रह का खड्ग हाथ में ले देश में पदार्पण किया। उन्होंने भारतीय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रजा से कहा कि अन्याययुक्त कानून के आगे शीश न झुकाना ही मनुष्य का धर्म है। यह रौलट एक्ट कानून नहीं है वरन कानून का हनन है। आओ, हम सब मिलकर इस के मानने से इन्कार करदें। देश भर में सत्याग्रह की तय्यारियां होने लगीं। दो प्रान्तों ने इस आन्दोलन को विशेष रूप से अपनाया, एक बम्बई प्रान्त ने जहां कि महात्माजी स्वयं विराजमान थे और दूसरे पंजाब ने। पंजाब ने सत्याग्रह में सब से बढ़ कर भाग क्यों लिया? इसका एक कारण यह भी है कि पंजाबी स्वभाव में, विचार और कर्म में बहुत भेद नहीं। यदि पंजाबियों को यह निश्चय होजाय कि अमुक कार्य्य करना चाहिये तो उस के लिये तुरन्त उद्यत होजाते हैं, परिणाम क्या निकलेगा इसकी उन्हे चिन्ता नहीं। दूसरा कारण यह भी था कि पंजाब सर माईकल ओडायर के अत्याचारों से तंग आया हुआ था और किसी न किसी प्रकार उनका प्रतिरोध करना चाहता था।

पंजाब में रौलट ऐक्ट के विरुद्ध घोर आन्दोलन हुआ। सर माईकल ओडायर ने जहां डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू को बन्दी करके धर्मशाला भेज दिया वहां महात्मा गान्धी को पंजाब में प्रवेश करने से रोक दिया। जहां अमृतसर निवासी अपने स्थानिक नेताओं के कैद कर लिये जाने से अधीर होगये वहां यह जानकर कि गान्धी जैसा महात्मा भी पंजाब में पग नहीं रख सक्ता लाहौर तथा अन्यस्थानों के निवासी वेसुध होगये। इस अवस्था में उनसे कुछ अनुचित कार्य्य भी होगये परन्तु यह केवल रौलेट एक्टके विरुद्ध दृढ़ असम्मति का प्रकाश था, अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कोई विद्रोह न था। सर माईकल ओडायर इस भेद को न समझ सके। उन्हों ने यह समझ कर कि पंजाब में राजविद्रोह है मार्शलला की आज्ञा दे दी।

(२)

इससे न केवल पंजाब में प्रत्युत समस्त भारत में इतिहास का एक नवीन पृष्ठ आरम्भ होता है। मार्शलला के दिनों में जो अत्याचार हुए उनके विरुद्ध शब्द उठा। इङ्गलैण्ड से लार्ड हण्टर उन अत्याचारों की पड़ताल के लिये नियुक्त होकर भारत में आये। महात्मा गान्धी के साधु हृदय ने निज मन की भांति औरों के हृदय को भी निर्मल और स्वच्छ समझा। उन्हें विश्वास था कि लार्ड हण्टर पंजाब के साथ अवश्य न्याय करेंगे। थोड़े ही समय में लार्ड हण्टर की रिपोर्ट भारत सरकार और ब्रिटिश सचिवसभा की सम्मति समेत प्रकाशित होगई। महात्मा ने देखा कि पंजाब के साथ न्याय नहीं किया गया। जो सारी आयु भर दक्षिण अफ्रीका में घोर सत्याग्रह करते रहने पर भी सहयोगी रहा था असहयोगी बन गया। इसी समय विजयी राष्ट्रोंने टर्की के साथ सन्धि की। महात्मा ने समझा कि इस से मुसलमानों की खिलाफत के अस्तित्व को भय है। अतः पंजाब के अत्याचारों और खिलाफत को लेकर उन्होंने असहयोग का झंडा खड़ा कर दिया। असहयोग का प्रथम चरण सरकार की दी हुई उपाधियों, कालिजों, न्यायालयों तथा कौंसिलों का बायकाट था। और अन्तिमचरण था कर अथवा टैक्स का न देना। यह सारा कार्य्यक्रम कितने समय में पूरा होगा इसका कोई निश्चय नहीं किया गया था। महात्मा गान्धी का विचार था कि दूसरा पग उस समय तक न उठाया जाय जब तक कि पहिला दृढ़ रूप से स्थिर न हो जाय। देश के लिये उनकी पहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज्ञा, कालेजों न्यायालयों और कौन्सिलों का बायकाट था। जिस समय उन्होंने देखा कि इस ओर पर्याप्त कार्य्य हो लिया है तब उन्होंने देश के सन्मुख रचनात्मक कार्य्यक्रम रखा अर्थात (१) एक करोड़ रुपया एकत्र किया जाय (२) कांग्रेसके एक करोड़ सभासद बनाये जायँ और (३) देश में २५ लाख चर्खे चलाये जायँ। जब यह कार्य्यक्रम पूरा होगया तब महात्मा जी ने विदेशी कपड़े के बायकाट का आदेश किया। यदि सरकार उन्हें बाधित न करती तो किंचित महात्माजी इस से आगे न जाते, परन्तु सरकार ने प्रजा की स्वतन्त्रता पर घोर आघात आरम्भ करदिये। धड़ाधड़ लोगों को जेल में डालने लगी। इस पर भी महात्मा सविनय नियम भंग के लिये उद्यत न थे। परन्तु जब सरकार ने सभायें करने और स्वयंसेवक दल को नियम विरुद्ध ठहराया तब उनसे न रहा गया और उन्होंने देश को नियम भंग की आज्ञा देदी।

इस के पश्चात् क्या हुआ, यह वर्णन करने की आवश्यक्ता नहीं। यह भारत के इतिहास का एक उज्ज्वल पृष्ट है। भारत के पूजनीय नेता देशबन्धु दास, पंडित मोती लाल नेहरू, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, मौलाना अबुल कलाम इत्यादि सहर्ष कारागार में चले गये। उन के पीछे २ बीस पच्चीस सहस्र भारत सपूतों ने स्वराज्य मन्दिर में प्रवेश किया। इतने में चौरीचौरा की लज्जाजनक घटना हो गई जिस पर महात्मा जी ने युद्ध को रोक कर पुनः रचनात्मक कार्यक्रम की ओर देश की सारी शक्ति लगा देने का आदेश किया। सविनय नियम भंग बन्द हो गया। महात्मा जी से कुछ लोग रुष्ट हो गये। सरकार ने देखा कि यह समय उन्हें जेल में डालने का है। उस ने महात्मा जी को पकड़ कर ६ वर्ष के लिये कारागार में डाल दिया।

(३)

अब अवस्था यह है कि यद्यपि सरकार और प्रजा में कोई घोर युद्ध नहीं हो रहा तथापि दोनों पक्ष डटे हुये हैं। शान्ति के कोई चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं होते। सरकार यह समझती है कि उस ने असहयोग आन्दोलन का नाश कर दिया है, परन्तु प्रजा का कहना है कि:—

"यह वह नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे"।

महात्मा जो मन्त्र हमारे कान में फूंक गये हैं हम उसे कभी नहीं भूल सक्ते। जब तक महात्मा गान्धी को न छोड़ा जाय तब तक सन्धि विषयक कोई बात नहीं हो सक्ती और जब तक स्वराज्य का निश्चय न हो तब तक शान्ति नहीं हो सक्ती। यह अवस्था इस समय है, आगे क्या होगा यह भगवान जानें। सम्भव है कि एक बार पुनः देश में सविनय आज्ञा भंग आरम्भ हो, यह भी सम्भव है कि ऐसा न हो कि आन्दोलन कोई और रूप धारण करे। परन्तु यह निर्विवाद है कि जब तक स्वराज्य न मिलेगा आन्दोलन बराबर होता रहेगा।

प्रश्न यह है और यह प्रश्न कई बार किया गया है कि आर्य्य समाज ने इस आन्दोलन में क्या भाग लिया है ? इस प्रश्न का उत्तर ही इस लेख के शीर्षक को भी स्पष्ट कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य्य समाज के उद्देश्य के विषय में न केवल सरकार ही भ्रममें रही है वरन प्रजा भी भारी भ्रम में है। १९०७ में जब लाला लाजपत राय को पकड़ कर माण्डले भेजा गया उस समय सरकार आर्य्यसमाज को एक पोलिटिकल संस्था समझती थी। आर्य्यसमाज की ओर से इसका तीव्र प्रतिरोध किया गया। बतलाया गया कि जहां आर्य्यसमाज के धर्म में

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजनीति को स्थान है वहां वर्तमान राजनीति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। वह समय ऐसा था जब कि किसी संस्था को हानि पहुंचाने के लिये यह कह देना पर्याप्त था कि इसका राजनीति से सम्बन्ध है। उन दिनों आर्य्यसमाज के विरोधियों का यही काम था कि इस का राजनीति से सम्बन्ध सिद्ध करें और इसे राजविद्रोह का केन्द्र बतलायें। आर्य्यसमाज के धार्मिक सिद्धान्तों पर उन्हें कोई आक्षेप न था। इन्हीं बातों से प्रभावित होकर उस समय के पंजाब के लाट सर डैनज़िल इबरसन ने कहा था कि जहां कहीं आर्य्यसमाज की शाखा है वहीं राजविद्रोह विद्यमान है।

एक समय वह था और एक यह है कि कोई संस्था जीवित नहीं रह सक्ती यदि वह राजनीति से अपना सम्बन्ध सिद्ध न करे। आर्य्यसमाज के वे विरोधी जो उन दिनों अपनी धर्म पुस्तकों में से सरकार की राजभक्ति की शिक्षा निकाला करते थे आज यह सिद्ध कर रहे हैं कि उन की धर्म पुस्तकों में वर्तमान सरकार के विरुद्ध स्पष्ट आज्ञा है।

आर्य्यसमाज पर भी दबाव डाला जाने लगा। जहां १९०७ में सरकार यह चाहती थी कि आर्य्यसमाज कह दे कि उसका वर्तमान तो क्या राजनीति से ही सम्बन्ध नहीं वहां आज कल प्रजा का यह आग्रह है कि आर्य्यसमाज अपनी सारी शक्ति वर्तमान शासकों के विरुद्ध लगा दे। जहां पहले सरकार को निराशा हुई वहां अब प्रजा को होगी। आर्य्यसमाज सरकार से डर कर यह कहने को तय्यार न हुआ कि उस के धर्म में राजनीति को कोई स्थान नहीं और न ही अब वह प्रजा के दबाव में आकर यह मानने को तय्यार है कि ऋषि दयानन्द ने आर्य्य समाज की स्थापना ही इसलिये की थी कि यह अङ्गरेजों को भारत से बाहर निकाले। ऋषि दयानन्द ने आर्य्यसमाज की स्थापना की थी वैदिकधर्म के प्रचार के लिये। उनका उद्देश सार्वभौमिक था। वह सारे संसार को सत्य मार्ग पर लाना चाहते थे न कि केवल भारत को। यदि भारत सत्यमार्ग पर आगया और संसार का शेष भाग न सुधरा तो भी क्या लाभ हुआ? आर्य्यसमाज के नियमों में ऋषि ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि आर्य्यसमाज का उद्देश्य संसार मात्र का उपकार करना है। उस को किसी देश विशेष के साथ परिमित करना उस के साथ अन्याय करना है। यदि हम ऋषि के हृदयोद्गारों पर दृष्टि डालें तो हमें ज्ञात होता है कि उनका हृदय कितना विशाल था, उनके भाव कितने उच्चतम थे? वह देश और काल की सीमा में बद्ध नहीं रह सक्ते थे। आर्य्यों को उनका आदेश था कि संसार में वेदों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित करो।

(४)

तब क्या ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का भारत के उद्धार में कोई भाग नहीं? क्या वस्तुतः यह कहा जा सक्ता है कि भारत ने ब्रिटिश सरकार के साथ जो स्वतन्त्रता का युद्ध छेड़ रखा है उसमें आर्य समाज ने कोई सहायता नहीं दी। इसका उत्तर १९०७ में श्रीयुत अरविन्द घोष ने दे दिया था। उनसे पूछा गया कि क्या आपकी सम्मति में आर्यसमाज एक राजनैतिक संस्था है और स्वामी दयानन्द भारतके पोलिटिकल उद्धारक थे? उनका उत्तर सुनने योग्य है। श्रीयुत अरविन्दघोष कहते हैं कि स्वामी दयानन्द भारत का उद्धार चाहते थे इस में सन्देह नहीं परन्तु उनकी कार्यप्रणाली पोलिटिकल (राजनैतिक) न थी प्रत्युत National थी। इन दो शब्दों के भेद से ही पाठकों को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द की पोलिटिकल फिलासफी समझ में आ जायगी। ऋषि दयानन्द जानते थे कि जो जाति यह समझती है कि वह केवल राजनैतिक उद्धार से ही उन्नत तथा स्वतन्त्र हो सक्ती है वह भूल करती है। कोई जाति अपने पांव खड़ी नहीं हो सक्ती जब तक कि वह शारीरिक सामाजिक और आध्यात्मिक सर्व अंशों में उन्नति न करे। यदि यह कहा जाय कि कोई जाति स्वतन्त्र नहीं हो सक्ती जब तक वह धार्मिक और सामाजिक रूप से न उठे तो असत्य न होगा। देखो महाराष्ट्र का इतिहास। उस प्रान्त में जाग्रति उस समय हुई जब कि तुकाराम, वामदेव इत्यादि कितने ही महात्माओं ने अपने धर्म प्रचार द्वारा स्वतन्त्रता के लिये क्षेत्र तय्यार कर दिया। इन महात्माओं ने महाराष्ट्र निवासियों के मस्तिष्क स्वतन्त्र कर दिये। जो व्यक्ति अथवा जाति धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में स्वतन्त्र हो वह राजनैनिक क्षेत्र में दास और आधीन कैसे रह सक्ती है? शिवाजी ने मरहठा राज्य की नींव रखी। परन्तु शिवाजी को किसने तैयार किया? गुरू रामदास ने। यह रामदास की शिक्षा का फल था जो शिवाजी ने देश को स्वतन्त्र करने का बीड़ा उठाया। कहते हैं कि जब शिवाजी कितने ही किले जीत चुके और मुग़ल बादशाहों से अपने देश का बहुत सा भाग वापिस लौटा चुके तब वे गुरु रामदास की सेवा में उपस्थित हुये और प्रार्थना की कि भगवन् आपने जो शिक्षा मुझे दी थी उसका फल निकल आया है, इस लिये मैं गुरुदक्षिणा भेंट करने के लिये उपस्थित हुआ हूं। रामदास ने कहा राजन्! क्या दक्षिणा लाये हो? शिवा जी ने उत्तर दिया कि इस समय तक जितना प्रदेश मैने जीता है वह सब आपकी भेंट है। रामदास बोले यह देश हमारे काम का नहीं, यदि आप दक्षिणा देना चाहते हैं तो वह किले दीजिये जो अभी तक मुग़लों के आधीन हैं। आप उन्हें अपने अधिकार में लीजिये, हमें दक्षिणा मिल जायगी। महाराष्ट्र के अतिरिक्त पंजाब में भी जब धार्मिक नेता क्षेत्र तय्यार कर चुके थे तभी स्वतन्त्र होने का भाव उत्पन्न हुआ।

अतः स्पष्ट है कि जो कोई भी भारत को स्वतन्त्र देखना चाहता है उसे पहिले क्षेत्र तय्यार करना होगा। जब तक भूमि तय्यार न हो बीज नहीं बोया जा सक्ता। ऋषि दयानन्द ने यह कार्य किया। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक महान कार्य्य है। यदि ऋषि दयानन्द रूपी रामदास न होते तो आज गान्धीरूपी शिवाजी कहां से होते? ऋषि दयानन्द का लक्ष्य मुख्यतया धार्मिक था। वह देश का ही नहीं प्रत्युत संसार भर का धार्मिक उद्धार चाहते थे और उसके लिये यत्नशील थे। परन्तु इस धार्मिक आन्दोलन का यह अनिवार्य परिणाम है कि जनता के मस्तिष्क स्वतन्त्र हों और वह प्रत्येक क्षेत्र में स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करें। महात्मा गान्धी के सत्याग्रह आन्दोलन को पंजाब और संयुक्त प्रान्त में अधिक सफलता प्राप्त हुई। इसका कारण यह है कि इन प्रान्तों में आर्य समाज ने अपने प्रचार से क्षेत्र तय्यार कर रखा था। क्या यह एक सोचने की बात नहीं कि गुजरात प्रदेश के जिन बारदौली और आनन्द ताल्लुकों में महात्मा गान्धी सामूहिक सविनय नियम भंग करना चाहते थे उन में आर्य पुरुष बड़ी भारी संख्या में थे? क्या यह विचारणीय विषय नहीं कि महात्मा गान्धी ने भारत को स्वतन्त्र करने के लिये जो भी कार्य विभाग देश के सन्मुख रखा उसका एक एक अंग ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में लिखा है। कहा जाता है कि महात्मा गान्धी ने भारत के सन्मुख स्वराज्य का आदर्श रखा। मैं भी यह मानता हूं, परन्तु क्या इस से कोई इन्कार कर सक्ता है कि महात्मा गान्धी से चालीस पचास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष पहिले ऋषि दयानन्द ने अपनी अमर पुस्तक सत्यार्थप्रकाश में स्वराज्य का पोलिटिकल आदर्श रख दिया था। देश की एक भी ऐसी समस्या नहीं जिसका ऋषि उत्तर न देगये हों। इस समय तक जितने भी कार्यक्रम देश के सामने हैं उनमें एकभी बात ऐसी नहीं जो ऋषि पहिले से ही न बतला गये हों। ऋषि दयानन्द वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते हैं। जिस जाति में यह धर्म फैलेगा वह जाति दास नहीं रह सक्ती। वैदिक धर्म मनुष्य मात्र को शिक्षा देता है कि परमात्मा के अतिरिक्त किसी के सामने सिर न झुकाओ। यदि किसी मनुष्य ने इस शिक्षा को अपने जीवन में धारण कर लिया हो तो वह किसी अत्याचारी और अन्यायी शासक के सामने कैसे झुक सक्ता है? ऋषि दयानन्द की विजय का इस से बढ़ कर और क्या प्रमाण हो सक्ता है कि महात्मा गान्धी ने भारतीय जातीय महासभा को 'राजनैतिक' पथ से हटाकर धार्मिक मार्ग पर चला दिया है।

यह है ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का भाग जो उसने भारत के उत्थान में लिया है। देशकी स्वतन्त्रता प्राप्तिमें यह है ऋषि का सहायक अंश। उन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में कोई 'स्पष्ट' (direct) भाग नहीं लिया परन्तु ऐसा न करते हुये भी उन्होंने वह कार्य्य किया जो कोई दूसरा न कर सका।

मुनिवर पण्डित गुरुदत्त कहा करते थे कि संसार एक शताब्दी के पश्चात दयानन्द को समझने के योग्य होगा। इस समय भारत दयानन्द को समझने लगा है और मेरा विश्वास है कि ज्यों ज्यों समय बीतता जायगा त्यों २ अधिक समझता जायगा। एक समय अवश्य आयेगा जब कि भारत मुक्तकंठ से स्वीकार करेगा कि उसका एक मात्र उद्धारक था ऋषि दयानन्द।

जीवन ज्योति

लेखक—पं० नाथूराम शङ्कर शर्मा, 'शङ्कर'।

दोहा—

पाया जीवन ज्योति का, परमानन्द प्रकाश।
ज्ञान शक्ति विद्यावती, देख मोहतम नाश॥

षट्पदी—

शंकर का धर ध्यान, तेज जड़ निर्जर सारे।
'वैदिक धर्म' प्रधान, मान मत पन्थ विसारे॥
तज मिथ्या भ्रम भूल, सत्य सादर अपनाया।
तारक मंगल मूल, मुक्ति मग जान जनाया॥
यों महिमा आर्यसमाज की, मोद मढ़ी उमगी रहै।
श्री दयानन्द मुनिराज की, जीवन ज्योति जगी रहै॥

भारत—भद्रोल्लास—

शुद्ध बोध अपनाय, विश्व बल्लभ बल धारे।
पौरुष प्रभुता पाय, प्रगल्भ प्रताप प्रसारे॥
शुभ समृद्धि सम्पन्न, बने सुकृती सुख भोगी।
परमोदार प्रसन्न, रहे प्रिय प्रेम प्रयोगी॥
हो उन्नत, वृहदुत्कर्ष की, सुखमा साथ लगी रहै।
हे शंकर! भारत वर्ष की, जीवन ज्योति जगी रहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्य्य समाज की वर्तमान अवस्था, उसके कारण और उपाय

ले०—श्रीयुत ब्रजनाथ मिट्ठल बी० एस० सी०, एल० एल० बी०

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज को परलोकवास हुए अभी ५० वर्ष भी व्यतीत नहीं हुए परन्तु भिन्न भिन्न दिशाओं से आज यह ध्वनि सुनाई पड़ने लगी है कि आर्य्य समाज जो महर्षि की एक मात्र उत्तराधिकारी संस्था है; एक मृतप्राय सोसाइटी हो चली है और उस में आज वह जीवन प्रतीत नहीं होता जो एक धार्मिक संस्था, विशेषकर ऐसी धर्म संस्था कि जिस को इस बात का गर्व है कि वह ईश्वरीय ज्ञान वेदों की अनुयायी है, होना चाहिये। सम्भव है कि आर्य्य समाज के विपक्षी लोग इस विषय में कुछ अधिक नमक मिर्च लगाकर लिखते हों और वास्तविक अवस्था अक्षरशः ऐसी न हो जैसी वह लोग दर्शाते हैं। परन्तु एक आर्य्य समाज के सदस्य की हैसियत से तथा एक ऐसे व्यक्ति की हैसियत से कि जिस को कुछ आन्तरिक अवस्था जानने का भी सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य प्राप्त है; मैं यह कह सकने का साहस कर सकता हूं कि हमारी वास्तविक अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। और यदि हमारी उन्नति की यही चाल रही तो वह दिन दूर नहीं कि आर्य्य समाज भी और धार्मिक संस्थाओं की भाँति जो इस देश में दृष्टिगत होती रही हैं, हिन्दू धर्म रूपी अजगर के पेट में चली जावे और इस प्रकार जो अवस्था हमारे देश की स्वामी दयानन्द के जन्म से पूर्व थी वही फिर से हो जाय। ईश्वर करे यह मेरी कल्पना असत्य हो परन्तु मैं कुछ स्वाभावतः ही निराशा-वादी हूं और मुझे आज दिन लच्छन अच्छे नहीं जान पड़ते।

शोक यह है कि ऐसी हीन अवस्था के प्रतीत होते हुए भी आर्य्य समाज के नेताओं की ओर से अभी तक कोई (Organised effort) सङ्गठित आन्दोलन इस बात का नहीं किया गया कि उस पर विचार करके उसके दूर करने की कोशिश की जावे और आर्य्य समाज मे फिर से उसी प्रकार जीवन सञ्चारित हो जो उस के जन्म काल के समय तथा उसके कुछ दिनों पश्चात् तक दृष्टिगोचर होता था। जिस समयके विषयमें जर्मन विद्वान (Paul Deussen) ने अपनी पुस्तक (My Personal Reminiscences) में लिखा है कि "एक आर्य्य समाजी अपने चेहरे के तेज, अपने सरल स्वभाव अथवा अपने सत्य भाषण से पहिचाना जा सकता है कि वह स्वामी दयानन्द का भक्त है"। हम में से आज कितने हैं जो अपने हृदय पर हाथ रख कर इस कथन का पूर्णतया समर्थन कर सकें। वास्तव में बात यह है कि हम ने अपनी अवस्था के सुधारने का यत्न करना बिलकुल छोड़ दिया। अन्तरावलोकन (Introspection) जो एक व्यक्ति अथवा एक संस्था को उन्नत करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है का अब प्रयोग बिलकुल जाता रहा। हम उस व्यक्ति को बड़ी उच्च दृष्टि से देखते हैं, जो हमारे छोटे मोटे अच्छे कामों को देख कर प्रशंसा कर देता है, अथवा जो हमारे सिद्धान्तों को देखकर चकित हो जाता है अथवा यह लिख देता है कि यह सिद्धान्त संसार को शान्ति प्रदान करेंगे; परन्तु यदि कोई व्यक्ति हमारे दोष निवारण करने के हेतु उन्हें हम पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नजर आते हैं। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि प्राचीनों के पास या तो दूरबीन थी और या उनका ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान इतना उन्नत था कि वह जानते थे कि पर्वत के शिखर पर चढ़ने से अधिक तारे दीखते हैं। वैज्ञानिकों के मतानुसार योरुप में ५ लाख वर्ष से पहिले मनुष्य नहीं थे और अमेरिका में ३ लाख वर्ष पहिले कोई मनुष्य न था। अमेरिका के निवाडा प्रदेश में हम्बोर्ड पर्वत श्रेणी की तह में से जिसको बने भूगर्भ विद्या के अनुसार १० करोड़ वर्ष से कम नहीं हुये, जूता निकला है जिस पर मशीन से टोपे लगाये हुए स्पष्ट नजर आते हैं, इस जूते ने तो यह सिद्ध कर दिया कि ३ करोड़ वर्ष हुए न केवल मनुष्य ही था किन्तु उसकी सभ्यता भी बहुत समुन्नत थी।

जब यह सिद्ध होगया कि ज्ञान विकास का परिणाम नहीं तो यह मानना ही पड़ेगा कि वह अनादि है। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि वह अनादि ज्ञान कहां है? यदि कोई ज्ञान भण्डार अनादि सिद्ध होसक्ता है तो वेद ज्ञान ही है क्यों कि उस से अधिक प्राक्तन संघटित और युक्ति युक्त ज्ञान संसार के पुस्तकालय में देखने में नहीं आता।

महर्षि दयानन्द और स्त्री जाति

लेखक—श्रीयुत् प्रोफैसर प्रीतमलाल जी गुप्त एम. ए. एम. आर. ए. एस.

साधारण रीति से कहने और विचारने पर कहाजाता है कि अस्पृश्य, अनाथ, और अनार्य आदि लोगों पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने परम उपकार कर उनका उद्धार किया है। परन्तु सूक्ष्मदृष्टि से देखने पर पता लगता है कि महर्षि दयानन्द का स्त्री जाति के प्रति उपकार का एक विशेष महत्व है। ऋषि ने स्त्री जाति को अपनी अपूर्ण दया से जो आनन्द पहुंचाने का यत्न किया है उसका वर्णन करने में सरस्वती भी असमर्थ है

महर्षि के समय से पूर्व स्त्री को अवला नाम से पुकारा जाता था। "स्त्री शूद्रो नाधीयताम्" ने ऐसा प्रभाव डाला था कि स्त्री को पढ़ाना पाप समझा जाता था और जो व्यक्ति स्त्री शिक्षा का प्रचार करता, वह समाज में कुदृष्टि से देखा जाता था। स्त्री के सदाचरण के सम्बन्ध में ऐसे विचार थे कि 'स्त्रियां पुरुष की सुन्दरताई अथवा अवस्था का विचार नहीं करती हैं। सुरूप हो अथवा कुरूप, पुरुष को पाने से ही संभोग करती हैं'। ऐसे ही अनेक खोटे और हानिकारक विचार हिन्दू समाज में प्रचलित थे। पश्चिमी शिक्षा ने इस में एक विचार यह और बढ़ा दिया था कि हिन्दूशास्त्रों में स्त्री एक वेजान जायदाद के तुल्य है। और इनका कोई आदर्श नहीं है।

भारतवर्ष में और विशेषकर हिन्दू समाज में ऐसे विचारों का राज्य महर्षि दयानन्द कब सह सकते थे। उन्होंने बलपूर्वक स्त्री जाति के महत्व का प्रचार किया और कहा कि सत् शास्त्रानुसार

उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।
प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्री निबन्धनम्॥
अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा।
दारा धीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैतावर्धते तद्धि सर्वदा ॥

अर्थात् स्त्री ही सन्तान उत्पन्न करने, सन्तान के पालन, और नित्य के लौकिक कार्य्य के निर्वाह का मुख्य साधन है। सन्तान की उत्पत्ति अग्निहोत्र और धर्मकार्य, सेवा, श्रेष्ठ रति, पितरगण, और अपनी स्वर्गप्राप्ति स्त्री के ही, अधीन है । जहां स्त्रियों का आदर होता है वहां देवगण प्रसन्न रहते हैं। जहां उनका आदर नहीं होता वहां की सब क्रिया निष्फल होती हैं। जिसकुल में स्त्रियां दुःख पाती हैं उसकुल का शीघ्र ही नाश होता है। जिस कुल में वे सुखी रहती हैं उसकुल की सदा धन आदि से वृद्धि होती है।

स्त्री को अर्द्धांगिनी कहा जाता है। क्योंकि पुरुष और स्त्री दोनों मिलकर समाज की एक इकाई बनते हैं। इसी कारण कोई पुरुष पत्नी विना यज्ञ करने का अधिकारी नहीं है। स्त्री ही घर की शोभा और लक्ष्मी है। पति और पत्नी का ऐसा सम्बन्ध है जैसा विष्णु और लक्ष्मी का, यदि पति को सत्य कहा जाय तो पत्नी धर्म रूप है। यदि पुरुष को वलकी उपमा दीजावे तो स्त्री को 'सुन्दरता' की उपमा देना कोई अत्युक्ति नहीं है। और यदि पुरुष को दीपक माने तो उसके साथ प्रकाश रूप में स्त्री सदा विद्यमान रहती है।

सुश्रुत अपने शरीरस्थान में वतलाते हैं कि सन्तान के शरीर के हृदय, मन आदि कोमल अंग मातृज होते हैं अर्थात् उनमें माता का अधिकांश होता है। विज्ञानेश्वर का मत है कि माता और पितामें माता का महत्व अधिकतर है क्योंकि माता द्वारा सन्तान के शरीर का अधिकांश बनता है। इसी प्रकार यह भी कहा गया है कि पिता से १० गुणी बड़ी पदवी आचार्य की है परन्तु आचार्य से भी १० गुणी पदवी माता की है।

पुरुषार्थी वलवान् और पराक्रमी पुरुष उत्पन्न होने के लिये यह आवश्यक है कि स्त्री को योग्य वनायाजावे। नेपोलियन, अभिमन्यु शिवाजी आदि का इतिहास हमारे इस विचार की पुष्टि करता है।

ऐसी दशा में स्त्री को 'अवला' कहना कितना बड़ा पाप है। अपनी शक्ति से अनभिज्ञ रह कर स्त्रियों की जो दुर्दशा इस विचार ने की है उसका उल्लेख करना कठिन है। मैं अपनी माताओं और बहिनों से निवेदन करता हूं कि वह अपनी शक्ति, अपने उच्चस्थान और अपने महत्व को समझें। देश और जाति के उठाने और सुखमय बनाने की कुंजी और वल आप ही हैं।

स्त्री को अवला कहना पाप है। परन्तु उस को अवला मानकर उसके साथ अन्याय और अत्याचार करना महापाप, कायरता, और पशु-पन है। निर्वल की सहायता न करके अत्याचार करना यह पशुधर्म है। भारतवर्ष में स्त्रीजाति के साथ जो पशुवत व्यवहार हुआ है और होता है और वह भी धर्म के नाम पर, उसको ध्यान में रखते हुए मुक्तकण्ठ से यह ही कहना पड़ता है कि ईश्वर बड़ा दयालु है। हिन्दूजाति में ऐसे २ घोर पाप होते हुए भी यह नष्ट नहीं की गई यह परमात्मा की दया ही है। सीता महा-रानी के हरण के कारण मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने रावण और उसके कुल का नाश किया। द्रौपदी पर अत्याचार होने के कारण महाभारत हुआ और बड़े २ वीर और विद्वान् मारेगये। परन्तु क्या यह बात सत्य और रोमां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

च खड़े करने वाली नहीं है कि एक नहीं, दस नहीं, हजारों की संख्या में स्त्रियां अपने सतीत्व और धर्म से भ्रष्ट होकर मुसलमान और ईसाई हो रही हैं और हिन्दूजाति के शरीर और मन में किंचित भी गति उत्पन्न नहीं होती है। भ्रूणहत्या से बढ़कर कोई पाप नहीं। परन्तु ऐसे बड़े पाप से आंख छुपाई जाती है। क्या हिन्दू जाति मृत नहीं है? बड़े२ व्याख्यान देने वालो, धर्म के धुरंधर रक्षको और लम्बी २ डींगे हांकने वालो, कहो कि इस महा पाप का उत्तर-दायित्व किसपर है? इस विषय में उपेक्षा करना मृत्यु के मुंह में जाना है। परमात्मा हमको सद्बुद्धि दे जिससे हमको अपने जीवन मरण का ज्ञान हो।

'स्त्री शुद्रौ नाधीयताम्' के मानने वालों को महर्षि ने कहाः—

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्राय चार्यायच स्वाय चारणाय।

इस वेद मंत्रद्वारा परमात्मा आज्ञा देते हैं कि जिस प्रकार सब मनुष्यों के लिये इस संसार और परलोक में सुख प्राप्त करने वाली मेरी वाणी ऋग्वेदादि चार वेद हैं उसी प्रकार उनका उपदेश तुम ब्राह्मण,क्षत्री, वैश्य, शूद्र स्त्री, आदि सबके लिये करो।

इस मन्त्र से और साधारण युक्ति से भी स्त्रियों का विद्या ग्रहण करने का अधिकार स्पष्ट है। स्त्रियों का धर्म है विद्या ग्रहण करके परमात्मा की आज्ञानुसार इस संसार और परलोक में सुख प्राप्त करें।

स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक व्यभिचारिणी मानना भी युक्ति शून्य है। यह स्वाभाविक है कि व्यभिचारी, एक व्यभिचारिणी बिना और व्यभिचारिणी, एक व्यभिचारी पुरुष के बिना हो कैसे सकते हैं? आज कल के समय में भी पुरुषों का आचरण, स्त्रियों के आचरण से यदि बुरा नहीं तो अच्छा भी नहीं है।

माताओ और बहिनों। आपको स्त्रीधर्म का आदर्श पूर्ण रीति से समझ कर उसकी ओर आचरण करना चाहिये। आप पुरुष की ऐसी ही पत्नी (संरक्षिका) हैं जैसे कि पुरुष स्त्री के। पुरुष के बिना स्त्री और स्त्री के बिना पुरुष अपने धर्म पालन में बिल्कुल असमर्थ हैं। परमात्मा ने अपनी सब सामग्री आपके लिये वैसे ही दी है जैसे पुरुष के लिये। आप स्वतंत्र हैं। परन्तु स्वतंत्रता का अर्थ नियम और धर्म पालन है स्वेच्छाचार नहीं है। आज कल पश्चिमी सभ्यता की लहर चल रही है। उसके अनुसार अधिकार प्राप्त करना, उसके लिये लड़ना मरना, यह ही स्वर सुनाई पड़ता है। देवियो! आप इस विषमयी लहर से बची रहना आपने इस संसार की बड़ी २ लहरों का धैर्य और बुद्धिमत्ता से मुकाबिला किया है। हिन्दू धर्म की रक्षा आपने की है, और उसके लिये निज जीवन तक अग्नि को सौंपदिया है। मत समझो कि पश्चिम की चमक दमक में सुख और शान्ति है। सूर्य भगवान चमकते २ पश्चिम में अस्त होते हैं। पुरुष और स्त्री बराबर नहीं, किन्तु एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों की भिन्न शरीर रचना हैं; भिन्न २ धर्म और कर्तव्य हैं। पति पत्नी में अधिकार के लिये बहस और होड़ होना ठीक नहीं किन्तु परस्पर प्रेम के साथ धर्म पालन करना ही सर्वोत्तम है।

आज ऋषिबोध दिवस है। ऋषि की जीवनी हमारे लिये पथप्रदर्शक है। आओ इस दिनके स्मर्ण में हम अपने जीवन को उत्तम, पवित्र, और शुद्ध और सुखमय बनाने का व्रतधारण करें। परमात्मा से प्रार्थना है कि हमको बल और बुद्धि दे कि हम, अपना धर्मपालन करने में समर्थ हों।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्योतिर्मय

लेखक—श्रीयुत राजाराम जी शुक्ल

(१)

जब न जीवन की मुझे चिन्ता रही—
मृत्यु को अमृत समझ निर्भय हुआ है।
प्रिय-सखा के सम्मिलन में स्वर्ग है;
तब मुझे यह पूर्णतः निश्चय हुआ।

(२)

मर मिटूंगा मिल तेरी गोद में—
आज यह अन्तिम अटल निर्णय हुआ।
बढ़ रहा हूं, बेधड़क, तेरी तरफ—
ले जला ले तू निपट निर्दय हुआ।

(३)

प्राण प्रिय प्राणेश प्रण के साथ है—
यदि प्रियवर आप से परिणय हुआ।
कह उठेंगे लोग अभिनय देख कर—
'प्रेमिकों के प्रेम का परिचय हुआ।

(४)

सुहृद-दीपक सहित प्रेमोन्मत्त मैं—
बन शलभ जलने लगा विस्मय हुआ।
इस तरह जगदीश तेरी ज्योति में—
जल गया, जो जीव, 'ज्योतिर्मय' हुआ।

भारतोद्धारक भगवान दयानन्द

ले०—देशभक्त श्री० डाक्टर सत्यपाल जी

संसार में जब अन्धकार ही अन्धकार का राज्य होता है, हर दिशा में तिमिर देवता के पुजारियों का ज़ोर होता है। जब संसार के आकाश पर पाप और अन्याय के मेघ घोर घटा उत्पन्न किये हुवे होते हैं उस समय भगवान की अपार कृपा का प्रकाश होता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है और संसार में कोई महान आत्मा दर्शन देकर उस अन्धकार को अपनी शुभ ज्योति से छिन्न भिन्न कर देती है, पाप का बढ़ता हुवा बल क्षीण हो जाता है, पुण्य व न्याय का देवता अपना आसन संभालता है, दीन दुःखियों की पुकार व्यर्थ नहीं जाती और गिरता हुवा धर्म्म फिर स्थापित हो जाता है।

भगवान दयानन्द ऐसी पवित्र व शक्तिमान् आत्माओं में से एक हैं। भारत के अन्दर जिस समय महाराज प्रगट हुवे हैं उस समय देश की दशा अत्यन्त शोचनीय थी।

स्वराज्य के स्थान में विदेशीराज्य स्थापित होता जाता था। भारतवासियों के हाथ से सब शक्ति छिनती जा रही थी, राज सिंहासनों पर बैठने वाले अन्य जाति के लोगों के आगे भिक्षा माँगने पर उतर आये थे, स्वधर्म्म की महिमा भी बहुत करके कम हो गई थी, प्रायः लोग आर्य्य धर्म्म से विमुख होकर ईसाई धर्म्म की ओर जा रहे थे, विदेशी शिक्षा का प्रभाव यहां तक बढ़ गया था कि आर्य्यों को अपनी सभ्यता व अपने धर्म्म से घृणा उत्पन्न होती जाती थी। और वास्तव बात है भी यह कि उस समय जिस धर्म्म को वैदिक या आर्य्य धर्म्म कहा जाता था वह धर्म्म ऐसा ही था कि कोई सभ्य सज्जन उसे ग्रहण न कर सके। पाप के प्रेमी नवीन मतावलम्बियों ने धर्म्म में नाना प्रकार की कुरीतयां ऐसी सम्मलित कर दी थी कि पाप पुण्य में भेद करना असम्भव होगया था, भारत के राम और कृष्ण द्रौपदी व सीता पर ऐसे २ लाञ्छन लग चुके थे कि इनके लिये पूजा का भाव तो दूर रहा, आर्य्य सन्तान के चित्त में तिरस्कार उत्पन्न हो गया, ब्राह्मण जाति ने इतर जातियों पर इतने अत्याचार किये और ऐसे उल्टे पथ पर चलाया कि आर्य्य जाति का विनाश प्रत्यक्ष दीखने लग गया। गौ का अपमान व वध बड़े वेग से प्रचलित हो गया था। स्त्री जाति का निरादर होता था। संक्षेपतः प्रत्येक रूप से आर्य्य जाति का अत्यन्त अधःपतन हो चुका था और शेष हो रहा था। यही ठीक समय था कि जब कोई ऐसी आत्मा भारत में जन्म लेती और भारत का कल्याण करती। मेरा विश्वास है कि इस युग में भारत का उद्धार भगवान दयानन्द से आरम्भ होता है, यह संसार का नियम है कि महात्माओं का मान उन के जीवन काल में प्रायः कम होता होता है। पापी पुरुषों को, जो रात के अन्धकार में कई प्रकार के दूषित कर्म्म करते है सूर्य्यका उदय होना बड़ा दुःखकारक होता है। इसी भाँति भगवान दयानन्द के प्रकाश ने धर्म्म के नाम पर पापाचरण करने वालों को कुपित कर दिया, उन की दुकानें मन्द पड़ गयीं, उन के वश में आई सोने की चिड़ियां उड़ने लगीं, ईसायों का भी काम शिथिल पड़ गया। दयानन्द के उपदेशों ने भारतमें नया रङ्ग उत्पन्न कर दिया। पाप के स्थान में धर्म्म का बल बढ़ना आरम्भ हुवा, इस का स्वभाविक परिणाम यह हुवा कि इन पापाचारियों ने भगवान दयानन्द पर दूषण लगाने ही में अपनी मुक्ति जानी। जिस महाराज के चरण स्पर्श से उनका कल्याण हो सक्ता था अपने स्वार्थ के मद में उन्मत्त इन लोगों ने महाराज का पत्थरों व ईएटों से सत्कार किया, महाराज पर कीचड़ फैंका, महाराज को विष दिया पर, महाराज के विशाल शरीर में ऐसी तेजस्वी व शक्तिशाली आत्मा का निवास था कि वह इन बातों से दुःखी होना तो कहीं दूर रहा प्रत्युत हर्षित हुवा करते थे। आप कहा करते थे कि वैद्य की कटु औषध पान करते समय रोगी सदा ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैद्य को बुरा भला कहते हैं पर वैद्य इन बातों को कदापि ध्यान में नहीं लाता है। महाराज कहते थे कि उन्हें तो संसार के किसी व्यक्ति का न भय है और न उसे रिझाना है, सारे संसार में केवल एक शक्ति है कि जिस के सन्मुख झुकना चाहिये, जिससे डरना चाहिये, जिस का आश्रय लेना चाहिये, जिसको अपना पूज्य मानना चाहिये, भगवान उसी की आज्ञा का पालन करते थे और उसके अतिरिक्त प्रत्येक सांसारिक शक्ति को तुच्छ जानते थे। भगवान का यह वचन कि आर्य्य जाति उन के उपदेशों पर चल कर ही अपना नष्ट हुवा २ गौरव प्राप्त कर सक्ती है आज अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रहा है।

भारत के उद्धार के लिये जो २ पथ इस समय के नेता लोग बता रहे हैं वह सब का सब कोड़ियों वर्ष पहले भगवान दयानन्द अपने ग्रन्थों में लिख गये हैं। भगवान के चरणों में मेरी भक्ति बहुत अधिक हो जाती है जब मैं देखता हूं कि भगवान ने भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के जितने उपाय बताये हैं उन में अधिकता या न्यूनता अब तक तो किसी नेता को नहीं सूझी है। महाराज के कार्य्यक्रम से प्रभावित होकर एक अङ्गरेज़ पदाधिकारी ने भगवान को कहा कि यदि भारतवासी आप के उपदेश को ग्रहण करके उस पर कटिबद्ध हो जायें तो निश्चय ही भारत में स्वराज्य स्थापित हो जायगा। मेरा भी यही विश्वास है कि यदि हम सब सच्चे दिल से भगवान की बताई हुई राह पर चलना शुरू कर दें तो वह शुभ दिन दूर नहीं है जब कि भारत में भारतवासियों को पूर्ण रूप से स्वराज्य का आनन्द प्राप्त हो सके। आवश्यकता इस बात की है कि हम महाराज के वचनों पर ध्यान दें और उन के उपदेश को शिरोधार्य्य करें। भारत में इस समय अत्यावश्यक काम यह है कि लोग स्वदेशी हो जायें। मेरा इससे यह अभिप्राय नहीं है कि लोग केवल स्वदेशी वस्त्र ही धारण करें या स्वदेशी वस्तुओं को ही काम में लायें, यह तो स्वदेशी होने के बाह्य चिह्न हैं, आवश्यकता तो यह है कि शिखा से लेकर पग तक भारतवासी स्वदेशी हों। इस बात में भगवान का अपना जीवन एक उत्साहप्रद उदाहरण है। महाराज पूरे २ स्वदेशी थे, वेष स्वदेशी, भाषा स्वदेशी, विद्या स्वदेशी, धर्म्म स्वदेशी, ज्ञान स्वदेशी, कर्म्म स्वदेशी, हृदय में स्वदेश प्रेम, मस्तिष्क में स्वदेश उन्नति के विचार, रोम २ में स्वदेश व स्वराज्य व्याप रहा था। भारत के नर नारियो! आप ने महान दयानन्द के वचनों की अब तक अवहेलना की है। आपने उनको उचित सन्मान नहीं दिया। आप ने उससे योग्य लाभ नहीं उठाया। चेतो और अब भी उस पूज्य महात्मा के अनुकरण का व्रत धारण करो। शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करते हुवे भारत भूमि को दासत्व के पाश से मुक्त कराओ। अब विलम्ब का समय नहीं है, अब काम करने की घड़ी है, इस शुभ अवसर को गंवा देने से भारत का कल्याण न होगा। आओ हम सब भारत के सुपुत्र पूज्यपाद भगवान को सादर नमस्कार करें, उनके उपकारों का सप्रेम वर्णन करें उनकी महिमा का गायन करें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें बुद्धि व बल प्रदान करें कि हम उन के भेजे हुवे भगवान दयानन्द के शब्दों पर आरूढ़ होकर अपनी मातृभूमि का कष्ट निवारण करें, यही हमारा धर्म्म है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामी दयानन्द एक समालोचक की दृष्टि में

लेखक :—श्रीयुत् डाक्टर लक्ष्मण स्वरूप जी पी. एच. डी. प्रोफेसर पंजाब यूनिवर्सिटी

स्वामी दयानन्द के जीवन के विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। उन के जीवन की सारी घटनाओं को जनता भली भान्ति जानती है। हम केवल थोड़ी सी समालोचना करना चाहते हैं।

उच्च कुलीन ब्राह्मण घर में जन्म लेने से, पिता के नियमबद्ध शैव होने तथा कर्मकाण्ड में निपुण होने से स्वामी दयानन्द की आत्मा पर आरम्भ काल से ही धार्मिक संस्कारों ने अपना प्रभुत्व जमा लिया था। परिस्थिति (environments) का मनुष्य पर गहरा असर पड़ता है, सो हम देखते हैं कि बचपन से ही धार्मिक क्रियाओं में स्वामी दयानन्द की बहुत श्रद्धा थी। पिता तथा अन्य ब्राह्मणों को देखा देखी वह भी शिव के उपासक बन गये थे और दत्तचित्त हो उपासना करते थे। शिवरात्रि को जब सब पुजारी और बड़े बड़े छाप तिलकधारी निद्रा के वशीभूत हो गये तो अकेला दयानन्द निद्रा से लड़ता हुआ जागता रहा। निद्रा से युद्ध करना कितना दुष्कर है, फिर एक बालक के लिए! इसी से पता लगता है कि इस क्रियाकलाप में दयानन्द की कितनी श्रद्धा थी; उन की भक्ति अनन्य थी। बालक ने जागरण का निश्चय किया; अनेक उपायों से आंखों को खुला रखा इससे उनका दृढ़ संकल्प होना सिद्ध होता है।

माया का परदा उठा, असत्य की असारता का भेद खुला तो परिस्थिति का गहरा प्रभाव भी उनकी आत्मा को न जकड़ सका। इस से उन के हृदय की (openness) ग्राह्य शक्ति का भास होता है। पिता के क्रोध से भी न डरे, इस से उन का साहस जान पड़ता है। भगिनी की मृत्यु पर लोकचाल के दिखावे मात्र से हाहाकार नहीं किया किन्तु जीवन मृत्यु संबन्धी प्रश्नों को सोचते रहे इससे उन की विचारशीलता प्रकट होती है। निर्भयता, सत्यप्रियता, साहस, धैर्य बचपन से ही उन में पाये जाते हैं। अङ्गरेजी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि वरडस्वर्थ (wordsworth) ने एक कविता में लिखा है कि child is the father to the man अर्थात् बालक आदमी का पिता है। इस का भावार्थ यही है कि जो अच्छे या बुरे गुण किसी पुरुष की प्रौढावस्था में दृष्टिगोचर होते हैं वह सब के सब बाल्यावस्था में अंकुर रूप से पाए जाते हैं, दूसरे शब्दों में बाल्यावस्था के हावभाव का भले प्रकार परीक्षण करने के पश्चात् संकोच के बिना कहा जा सकता है कि बड़ा हो कर यह क्या बनेगा। भारत के भूतपूर्व राजमन्त्री लार्ड मोरले जब पाठशाला में पढ़ा करते थे तो एक दिन अध्यापक ने कहा कि जो विद्यार्थी सब से अच्छी कविता रचेगा उस को १५) का पारितोषक मिलेगा। लार्ड मोरले ने बड़े उत्साह से सगर्व एक कविता रची। पारितोषिक तो उन्हें न मिला किन्तु उनके अध्यापक ने कहा इस पद्य रचना से प्रतीत होता है कि तुम गद्य के अच्छे लेखक बनोगे। आज कौन नहीं जानता कि लार्ड मौरले की आधुनिक सर्व प्रिय तथा सर्व श्रेष्ट गद्य लेखकों में गणना होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि दयानन्द का जीवन उपरोक्त वचन का बहुत ही उत्तम उदाहरण है।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रिय चाचा जी की मृत्यु पर मौत को जीतने की इच्छा पहली बेर उन के दिल में समाई । अमर होने को किस का मन नहीं चाहता ? शुभ संकल्प प्रत्येक प्राणी के हृदय में उठते हैं किन्तु खिलते ही मुरझा जाते हैं। कोई विशेष व्यक्ति होता है जो परिश्रम से इन भावों को सींचता है, धैर्य से इनकी रक्षा करता तथा अनथक बल और साहस से इनको हरा भरा, फूला फला रखता है । गत ४००० बरस के इतिहास से पता चलता है कि भारत में आज तक केवल दो ही ऐसे महान आत्मा हुए हैं जिन में मृत्यु पर विजय पाने की उत्कण्ठा ऐसी सबल थी कि उन्हों ने घर बार त्यागा, धन दौलत ऐश्वर्य पर लात मारी; यौवन काल की भोग विलास की लालसा का दमन किया नाना प्रकार के कष्ट उठाए, अनेक बेर असफलता हुई किन्तु निराशाओं के सम्मुख भी हिम्मत न हारी, और अन्त में विजय पाई। महात्मा बुद्ध और स्वामी दयानन्द के जीवन को एक ही भाव ने पलटा दिया, शव की दृष्टि ने राजकुमार के नेत्र खोल दिये और मृत्यु से बचने के लिए उसे व्याकुल कर दिया; चचा की मृत्यु ने संसार की स्थिरता, क्षणभुङ्गरता, तथा नश्वरता, का नकशा दयानन्द के हृदय पर अंकित कर दिया।

बुद्ध और दयानन्द के जीवन में हमें बहुत सी सामान्य घटनाऐं दीख पड़ती हैं, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है मृत्यु पर विजय पाने के भाव ने दोनों से गृहत्याग करवाया, दोनों ही सत्य की खोज में थे। पूर्व आचार्यों से प्रदर्शित मार्ग पर चलने से इन्कार नहीं करते थे किन्तु तजरुबा करके जब शान्ति न मिलती थी तो छोड़ देते थे। हठ से अथवा केवल स्वाभिमान से लोकलज्जा के भय से, अथवा किसी दूसरे विचार से उसका अनुकरण नहीं करते थे। बुद्ध ने घोर तप किया, शरीर को सुखा दिया उनको बतलाया गया था कि मुक्ति का यही साधन है अतः उन्होंने उग्र तपस्या की परन्तु मुक्ति प्राप्त न हुई। उन्होंने समझ लिया कि यह मुक्ति का साधन नहीं है; भले प्रकार परीक्षा की और सार रहित जान कर छोड़ दिया। दयानन्द ने शिव की उपासना करना सीखा था और खूब की, जब असत्यता का ज्ञान हुआ छोड़ दिया।

बुद्धने निर्वाण की प्राप्ति की, उसको विशेष आनन्द हुआ; उस ने सकल संसार को उस आनन्द में भाग लेने का निमन्त्रण दिया उसने भिक्षुओं से कहा भिन्न २ देशों में जाओ और जाकर प्रचार करो। दयानन्द को वेद ज्ञान प्राप्त हुआ। हिन्दूधर्म के नेता तथा प्रचारक वेद को कतिपय आर्यश्रेणिओं के लिये ही समझते थे यहां तक कि स्वामी शंकराचार्य ने भी लिख दिया कि स्त्री और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है। स्वामी दयानन्द को वेद से शान्ति मिली, वेद से परमानन्द की प्राप्ति हुई तो उन्हों ने मुक्तकण्ठ से कहा कि वेद सकल संसार के लिये है, वेद प्राणीमात्र के लिये है, यह ईश्वर का ज्ञान जल, वायु, प्रकाश के समान सब जातियों के लिए सामान्य है; आर्य पुरुषो ! जाओ संसार में इस का प्रचार करो ॥

बुद्ध एक (Organizer) संस्थापक था उस ने भिक्षुओं की श्रेणी बनाई जिसका नाम संघ रक्खा गया। यह बड़ी Democratic body थी। प्रत्येक बौद्ध को यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि वह संघ के नियमों का पालन करेगा। बौद्धधर्म में प्रवेश होते समय प्रत्येक प्रवेष्टा यह कहता था 'संघं शरणं गच्छामि'। दयानन्द ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी एक Democratic Society की स्थापना की जो कि आर्य्यसमाज के रूप में हमारे सामने है।

दोनों अपने अपने युग के महापुरुष थे, उन के जीवन से विशेष आनन्द मिलता है तथा आत्मोन्नति के साधन का पता चलता है॥

विनय-गीत ३

(१)

कहाँ अटके नटनागर आज ?
जर्जर कुंजें हुईं सूख कर, कालिन्दी के कूल—
हुए मरुस्थल, नहीं दीखते कहीं पत्र फल फूल।
गाएँ नाश हो चलीं, फैला कुटिल पाप का राज।
कहाँ अटके नट नागर आज ?

(२)

व्रज-बालाओं का अकाल ने क्या कर डाला हाल।
अत्याचारी हो प्रसन्न मन नाचें दे दे ताल।
कृषक मर रहे, किन्तु है नहीं तुम को इस की लाज।
कहाँ अटके नट नागर आज ?

(३)

जिसकी मिट्टी खाते थे नित सहकर के भी मार।
लीला भूमि वही अब तेरी होती जाती भार।
क़त्ले आम !— खून की नदियाँ !!—कैसी भीषण साज।
कहाँ अटके नट नागर आज ?

(४)

लीलामय ! अब आओ, आकर करो देश-उद्धार।
गूँज उठे वंशी ध्वनि तेरी हटे भूमि का भार।
ध्यान रहे तेरा ही सन्तत और न हो कुछ काज।
कहाँ अटके नट नागर आज ?

सौरभकुटी—काशी।
५—७—२२

रामनाथ लाल 'सुमन'

——:०:——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिवरात्रि से हम क्या सीख सकते हैं ?

लेखक—श्रीयुत् दीननाथ सत्यभिक्षु सिद्धान्तालंकार

हिन्दुओं में इस त्यौहार का शायद उतना महत्व न होगा जितना आर्य्यसमाज में, एक घटना विशेष के कारण, अब इसका होगया है। यह घटना जिस रूपमें हुई थी उसका परिचय, हम समझते हैं, अधिकांश पाठकों को होगा, इस लिए उसे यहां दोहराने की हमें कोई विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। परन्तु, प्रश्न यह है कि इस रात्रि से हम क्या सीख सकते हैं ? बालक मूलशंकर के हृदय में इसने एक विप्लव पैदा कर दिया था, एक हलचल, अशान्ति और चिरकालिक जिज्ञासा को जन्म दे दिया था। तो क्या हम इससे कुछ नहीं सीख सकते ? सीख तो अवश्य सकते हैं परन्तु ज़रूरत है सीखने वालों की। यह संसार एक विद्यालय के समान है जिसमें प्रत्येक मनुष्य अपने गुण-कर्म और स्वभाव से भिन्न २ श्रेणी में पढ़ता है। महापुरुषों के जीवन से बना हुआ इतिहास अध्यापक के रूप में हमें कई पाठ देता है परन्तु हम उन्हें भूलजाते हैं, इस लिए वह बार २ उन्हीं को दोहरा कर, भिन्न २ रूप और स्थान में, हमारे सामने उपस्थित करता है। इसी लिए किसी तत्त्ववेत्ता ने कहा है कि इतिहास अपने को दोहराता है। "(History repeats itself) कई वार दोहराये जाने पर भी भूले हुए पुरुषों की सचाई याद दिलाने के लिए ही इस रंग भूमि पर महापुरुष पात्र बन कर आया करते हैं और अपना खेल करके चले जाते हैं। शिवरात्रि के दिन, प्रकृति ने उस नाटक के पहिले अंक का गर्भांक रक्खा जिसमें प्रधान नायक का सेहरा मूलशंकर व बालब्रह्मचारी के सिर पर बांधा गया था। जिस तरह नाटक के गर्भांक को समझने के लिए नन्दी और प्रस्तावना से परिचित होना आवश्यक है, उसी तरह शिवरात्रि का महत्त्व समझने के लिये हम अपने पाठकों को कुछ और पीछे ले जायेंगे जिसे बिना जाने यह लड़ी अधूरी ही समझनी चाहिये।

मृत्यु का प्रश्न संसार के विकटतम प्रश्नों में से एक है। ज्ञान के स्रोत वेद भगवान् से लेकर अब तक इस प्रश्न के कई उत्तर दिये गये पर आश्चर्य है कि इस का महत्त्व अभी तक वैसा ही है और इसके लिए मुमुक्षुओं की जिज्ञासा भी कुछ कम नहीं हुई है। कई तरह के सांसारिक प्रलोभन उपस्थित किये जाने पर भी नचिकेता ने जिस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए जबरदस्त हठ किया वह मृत्यु के सम्बन्ध में ही था। दसो उपनिषद् तथा रामायण और महाभारत में भिन्न २ कथा और संवाद के रूप में प्राचीन ऋषियों ने इसी समस्या को हल करनेका प्रयत्न किया है। बाज़ार में से गुज़रते हुए दो शवों ने बुद्ध के बालसुलभ मन में हल चल पैदा करदी और इसी अशान्ति ने उसे "बोधिसत्त्व" या "निर्वाण" पद तक पहुंचाया। शंकराचार्य्य तथा उसका अनुसरण करने वाले अन्य धुरन्धर पण्डितों ने भी इसका यथामति और यथाशक्ति उत्तर दिया। ईसामसीहने sermon on the mount के द्वारा मृत्यु की घुण्डी को खोलने का जहां कुछ प्रयत्न किया वहां हजरत मुहम्मदने हाथ में तलवार पकड़ जेहाद के सिद्धान्त द्वारा अरब की जंगली जातियों को सीधा राह दिखाने का दावा किया। फलतः, भिन्न २ धर्मों और मतों में मानी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुई सब पवित्र पुस्तकों में मृत्यु के प्रश्न पर ऊहापोह की गई है और लगभग प्रत्येक महापुरुष के सामने यह किसी न किसी रूपमें अवश्य उपस्थित हुआ है। महर्षि दयानन्द की भावी महानात्मा को धारण करने वाले बालक मूलशंकर के सामने भी प्रकृति ने, अपने नियमानुसार, परीक्षा के लिये यही प्रश्न उपस्थित किया। वह किस रूप में था? मूलशंकर को अपने चचा और बहिन से बड़ा प्रेम था। परन्तु उसके ये दोनों ही स्नेही सम्बन्धी एक दूसरे के पीछे मृत्यु का ग्रास बन गये। मूलशंकर एक कोने में खड़ा, बड़े शान्त स्थिर और धीर चित्त के साथ, मृत्यु के इस ताण्डव नृत्य को देखता रहा। जिस समय उसके रिश्तेदार हाहाकार द्वारा अपने हृदय के दुख पूर्ण उद्गारों का परिचय दे रहे थे उस समय मूलशंकर उस रोने के साथ मृत्यु के भयंकर खेलकी तुलना करते हुए इसी विचार पर पहुंचने का प्रयत्न कर रहा था कि मृत्यु क्या है? क्या मुझे भी इसी हालत में से गुज़रना होगा और इस पर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है, इत्यादि।

जिज्ञासु का मन इधर उधर भटकने लगा। उसने अपने माता-पिता से भिन्न २ प्रश्न करके अपनी यह धार्मिक पिपासा बुझानी चाही। उन्होंने अपनी योग्यता और विश्वास के अनुसार उसे सन्तुष्ट करना चाहा पर मूलशंकर इससे तृप्त न हुआ। इसी सिलसिले में शिवरात्रि का त्यौहार आया और उसे बताया गया कि रात भर शिवकी इस मूर्त्ति की पूजा करने से ईश्वर सिद्धि होती है, यही ईश्वर है और इसी के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त किया जा सकता है। जिसे सच्ची दर्द होती है, वह उसके मिटाने के लिए बताये हुए उपाय को परिश्रम से निभाता है। उसके माता पिता तथा मन्दिर के पुजारी इत्यादि सब धीरे २ निद्राग्रस्त होगये परन्तु वह बालक पूर्ण उत्साह के साथ, आंखों पर चुपके से बैठने वाली निद्रा को बार २ पानी से भगाता हुआ, सारी रात जागता रहा। शिव लिंग पर चढ़ाये गये फल मूलको खाने के लिए चूहा धीरे-२ आया। मूर्त्ति पर उसने यथेच्छ उछल-कूद की और अपना अभीष्ट सिद्ध कर चम्पत हुआ। उसे किसीने नहीं रोका वा टोका। सारे जगत् की रक्षा करने वाला क्या चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सका? बस, यही भाव था जो मूलशंकर के हृदय में दृढ़ता के साथ जम गया। इस दृश्य से उसने यही स्वाभाविक परिणाम निकाला कि जो अपनी रक्षा आप नहीं कर सकता वह दूसरों की रक्षा कैसे करेगा?

पर प्रश्न फिर भी यही उपस्थित हो सकता है कि शिवरात्रि से क्या शिक्षा ली जावे? अगर इन दोनों घटनाओं को इकट्ठा जोड़कर विचार किया जावे तो शिक्षा स्पष्ट होजाती है। निस्सन्देह, मृत्यु का बड़ा रुद्ररूप है। मुमुक्षुको उस पर विजय प्राप्त करना भी आवश्यक ही है। परन्तु यह विजय कौन प्राप्त कर सकता है? वही जो कि अपनी रक्षा आप कर सकता है और करने का सामर्थ्य रखता है। जो निर्बल है—जिसका शरीर मन और आत्मा अधखिले ही हैं। वा जो जड़ और तमोरूप है वह मृत्यु से अपने आपको किस तरह बचा सकता है। यह बात हमारे रोजके अनुभव की है कि निर्बल व्यक्ति सब से पूर्व मृत्यु का ग्रास बनते हैं। परन्तु, भीष्मपितामह जैसे बालब्रह्मचारी वीरों के सामने मृत्यु हाथ जोड़े खड़ी रहती है। इसलिए उपनिषद् में कहा है "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः"। गीता में भी भगवान कृष्ण इस दुर्बलता की निन्दा करते हुए अर्जुन को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation

यही उपदेश देते हैं कि 'क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप"।

व्यक्तियों की तरह जातियों के विषय में भी यही बात कही जासकती है। इतिहास इस सिद्धान्त का साक्षी है कि दुनियां के इस तख्ते पर वही जाति जीवित रह सकती है जो अपनी रक्षा आप कर सकती है। जिस जाति में कुछ तत्व (Vitality) नहीं है जो खोखली है उसका जीवन अब गया-तब गया वाली अवस्था में ही है।

बालक मूलशंकर जब महर्षि दयानन्द का उदात्त और उज्वल रूप धारण करके संसार के सामने अपने आपको प्रकट करता है तब उसके शरीर मन और आत्मा पूर्णता को पहुंच चुके थे। इसीलिए दिवाली की रातको जब और जगह अमावस का घनघोर अन्धेरा था, उस महापुरुष के हृदय में ज्ञानरूपी पूनो के चांदकी चांदनी छिटक रही थी। उस रात को मृत्यु के पास यह महात्मा उसी तरह जारहा था जैसे विजेता शत्रुकी राजधानी में छाती अकड़ाये निःशंक और निर्भय होकर जाता हैं। शिवरात्रि को जिस महत्व पूर्ण नाटक की नन्दी पढ़ी गई थी दिवाली की रातको इस दिव्य आत्माने उसका अन्तिम पर्दा संसार को दिखाया। उस पर्दे पर 'भरत वाक्य'[1] यही लिखा था कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। पर यह विजय वही प्राप्त कर सकता है जो अपनी रक्षा आप करने की सामर्थ्य रखता हो। मृत्यु निर्बलों से प्रेम करता है और बलवानों से डरता है।

दीक्षारात्रि का महत्त्व

ले०-श्रीयुत प्रो०रामशरण सक्सेना एम. एस. सी

संसार में नाना प्रकार की घटनायें प्रत्येक समय ही होती रहती हैं ऐसे विरले ही होते हैं जो इन घटनाओं की तह में जाकर उन के समझने का यत्न करते हैं। समय २ पर ऐसे महानुभावों ने जन्म लिया है जिन्हों ने जीवन की कठिन समस्याओं को हल किया है। गौतम बुद्ध के जीवन में सांसारिक कष्टों के दृश्य ने ऐसा परिवर्तन किया कि वह राज पाट छोड़ और सांसारिक सुखों पर लातमार निर्वाण की खोज में बाहर निकल पड़े और जब तक उन का प्रश्न हल नहीं हुआ बराबर बेचैन घूमते फिरे और प्रश्न का हल सोचते रहे। जब उन्हें ज्ञात हुआ तो महात्मा बुद्ध कहलाये। उनके खोज का परिणाम यह हुआ कि बौध मत ने जन्म लिया, जो एक समय दूर २ तक फैल गया और उस का खूब डङ्का बजा। वैज्ञानिकों ने भी जो जो आविष्कार किये हैं उनकी तह में भी सदा साधारण सांसारिक घटनायें रही हैं। कहा जाता है कि सर इसाक न्यूटन एक समय जब रोगी पड़ा तो स्वास्थ सुधार के लिये वह बाग़ में ठहरा हुआ था। उसने देखा कि वृक्ष से सेव नीचे गिरा उसी समय उस के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह नीचे क्यों गिरा, ऊपर को क्यों नहीं उड़ा ? उसी समय से उसकी कल्पना शक्ति कार्य्य करने लगी जिस का परिणाम यह हुआ कि उसने पृथ्वी की आकर्षण सम्बन्धी गति के

१—नाटक के अन्तमें उपसंहाररूप से जो श्लोक पढ़ा जाता है, संस्कृत साहित्य में उसे "भरत वाक्य" कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीन नियमों का आविष्कार किया जो अब तक न्यूटन के नाम से प्रसिद्ध हैं और जिनके कारण न्यूटन का नाम सदा के लिये अमिट हो गया है। इसी प्रकार की घटना हम शिवरात्रि के समय देखते हैं जिस के कारण इस रात्रि का महत्व बढ़ा हुआ है। रात्रि का समय था पं० अम्बा शङ्कर के सुपुत्र ब्र० मूल शङ्कर ने शिवरात्रि का व्रत रक्खा हुआ था। पिता और पुत्र दोनों ही शिव की पूजा में लगे हुवे थे। अचानक एक चूहा बिल में से निकल शिव की मूर्त्ति पर चढ़ने उतरने लगा और शिव पर चढ़ाये मेवा मिठाई निर्भयता से खाने लगा। यह घटना अत्यंत ही साधारण थी जो पं० अम्बा शङ्कर ने पहिले भी कभी देखी होगी परन्तु उन के मन में कभी किसी प्रकार की शङ्का उत्पन्न न हुई। ब्र० मूल शङ्कर ने जब देखा कि एक चूहा उनके इस देवता का इस प्रकार अपमान कर रहा है उस से न रहा गया और शिव की शक्ति में सन्देह करने लगा। उसी समय पिता से प्रश्न किया कि यदि वह शिव की मूर्त्ति देवता है तो वह इतना अपमान कैसे सहसकता है कि तनिक सा चूहा निडर उस के ऊपर उछलता कूदता फिरे और वह उसे न रोक सके। पं० अम्बाशङ्कर इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर न देसके। बस इसी घटना ने मूलशङ्कर के विचारों को पलट दिया। उस का विश्वास मूर्त्तिपूजा से बिलकुल हट गया और वह सच्चो भक्ति की खोज करने लगा। इस घटना के कुछ काल पश्चात् ब्र० मूल शङ्कर को अपनी बहिन और चचा की मृत्यु का दृश्य देखना पड़ा जिस से वह इतना प्रभावित हुआ कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करने और मुक्ति की खोज में घर से बाहर निकल पड़ा। माता पिता ने उसे गृहस्थ की ज़ंजीरों में फांसने के बड़े उपाय किये परन्तु चूंकि वह ब्रह्मचर्य के महत्व को भली भान्ति समझता था अपने को बन्धन में न फंसने दिया और अन्त तक ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत किया।

जब से यह बोध हुआ मूलशङ्कर का नाम दयानन्द में बदल गया।

घर से बाहर निकल कर दयानन्द ने शिक्षा ग्रहण की। श्रीस्वामी विरजानन्द जी के चेले बने बड़ी श्रद्धा और प्रेम से गुरु जी की सेवा की, गुरु जी ने भी बड़े प्रेम से अपने श्रद्धालु शिष्य को शिक्षा दी। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध आदर्श सम्बन्ध था। कहते हैं कि गुरु जी ने एक बार रुष्ट होकर उनको ठोकरें मारीं तो वह गुरु जी के पैर दाबने लगे कि कहीं उन के पैर में चोट न आगई हो। गुरु जी के हाथ से उनके शिर में एक चोट आई जिस का चिन्ह अन्त तक उन के माथे पर रहा और जब कभी उनकी दृष्टि उस चिन्ह पर पड़ती थी अपने पूज्य गुरु का चिन्तन और उनके गुणों का वर्णन करते थे। शिक्षा की समाप्ति पर वह अपने गुरु जी को लौंगे भेंट देने लगे। गुरुजी ने कहा कि अनमोल विद्या के बदले लौंगों की भेंट बिलकुल तुच्छ है और यह भेंट मांगी कि संसार में जो अन्धकार फैला हुआ है उसे दूर कर, धर्म का प्रचार कर और जो शिक्षा प्राप्त की है वह सब को सिखा। श्रद्धालु शिष्य दयानन्द गुरु की यह आज्ञा शिरोधार्य मान चल पड़े और अपना सारा जीवन गुरु की आज्ञा पालने में व्यतीत किया।

स्वामी दयानन्द ने अपने सिद्धांत नये नहीं बनाये, उन्होंने वेदका अध्ययन किया और सच्चा आर्य पुरातनधर्म जो लोग शिक्षाके प्रभाव से भूलगये थे पुनर्जीवित किया। महाभारत काल से लोग अपने धर्म को भूल पाखंडों में फंसगये थे, वेद शास्त्र और अन्य धार्मिक ग्रन्थ तालों में बन्द थे, स्त्री और शूद्र का उनको हाथ लगाना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

या सुनना सुनाना भारी दोष समझा जाता था 'स्त्री शूद्रो नधीयताम्' का राज्य था। अछूतों की अति दुर्दशा थी। ब्रह्मचर्य के महत्व को लोग समझते न थे, मूर्त्ति पूजा ही धर्म का मुख्य अंग था। भारतवर्ष के आर्य्य जो अहिंसा के लिये सदा से प्रसिद्ध हैं यज्ञों में मनुष्यों और अन्य जीवों का बलिदान करना ही धर्म समझने लगे थे। स्वामी दयानन्द ने इन सब कुरीतियों और कुविचारों के विरुद्ध आवाज उठाई और बड़ी निर्भयता से उनका खंडन किया। उन्हेंने आर्य्य जाति की पुरानी वैदिक सभ्यता को पुनर्जीवित किया और संसार को बतलाया कि सच्चा धर्म क्या है।

स्वामी जीने जो लक्ष्य सामने रक्खा उसके प्राप्त करने में सैंकड़ों कष्ट सहे परन्तु जो मार्ग उन्होंने ठीक समझा था उससे कभी विचलित न हुए और अपने लक्ष्यको कभी न छोड़ा। वेद प्रचार करते समय अपना पक्ष स्थापित करने लिए उन्होंने अन्य मतों का खंडन किया। वह बड़ा ही नाजुक समय था जब स्वामीजीने मुसलमानी और ईसाई इत्यादि मतों के विरुद्ध आवाज उठाई। यह स्वामीजी का ही साहस था कि उन्होंने सच्चे धर्म के प्रचार में अशुद्ध विचारोंका खंडन करते हुए अपनी जान जोखों में डाली। उन पर पत्थर बरसाये गये, चोटें लगीं विष तक दिया गया परन्तु उन्होंने अपने जीवन के उद्देश को कभी न छोड़ा। खंडन करते समय स्वामीजी जितने कड़े थे उतने ही दयालु और उदार भी थे। उन्होंने अपने विरोधियों को कभी घृणा की दृष्टि से नहीं देखा, अपने घातकों के साथ भी दया का भाव ही प्रकाकित किया। कहते हैं कि जिस जगन्नाथ ने स्वामीजी को विष दिया था उसको मार्ग व्यय देकर नैपाल प्रांत में चले जाने का आदेश दिया क्योंकि यदि वह अंग्रेजी राज्य में रहता तो उसको फांसी दी जाती।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन अदर्श जीवन था, आदि से लेकर अंततक जब उनके जीवन पर विचार करते हैं तो अनमोल शिक्षायें पद पद पर मिलती हैं। ब्रह्मचर्य्य का महत्व, गुरु शिष्य का सम्बन्ध, शिक्षा का प्रचार, अछूतों का उद्धार, देश भक्ति, स्वदेशी का प्रचार, गो रक्षा इत्यादि इत्यादि के चमकते हुए दृष्टांत स्वामीजी के जीवन में मिलते हैं। और यदि हम दीक्षा रात्रि का कुछ महत्व समझते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि स्वामीजी के जीवन पर विचार करते हुए उनके गुणों का केवल मान ही नहीं अपितु उन्हें अपने जीवन में ढालने का यत्न करें और सब से बड़ा आदर यदि हम इस उत्सब का कर सकते हैं तो यह है कि जो कार्य हमारे पथ दर्शक ऋषि दयानन्द ने प्रारंभ किया था उसने पूर्ण करने में तन मन और धन से कोशिश करें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री स्वामी दयानन्द के जीवन की एक झलक

लेखक—ब्रह्मचारी चन्दकान्त "श्री निधि"

यद् यद् विभूतिमत् सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा, तत्तदेवावगच्छ त्वं ममतेजोंऽश सम्भवम् ॥१॥

सूर्य चन्द्र आदि ग्रह उपग्रह तामसी निशामें चम चम चम चम चमकती हुई नक्षत्र माला, गगन चुम्बिनी उन्नत पर्वत श्रेणी, शीतल सलिल वाहिनी कल कल नादिनी तुङ्ग तरङ्ग रङ्गिणी शतशत तरिङ्गिणी, एव चराचर जीवों को अपने कोमल अङ्क में लेकर नृत्य करने वाली प्रकृति माता के लीला स्थल इस विपुल विश्व में जो कुछ ऐश्वर्य्य युक्त, श्रीयुक्त, अथवा शक्तियुक्त पदार्थ हैं वे सभी श्री भगवान् की विशेष शक्ति को प्राप्त विभूतियों के रूप में ही संसार के विषम असामञ्जस्य का समय २ पर निराकरण किया करते हैं। ऐसी विभूतियों से ही सामयिकरूप से धर्म रक्षा होती है। यह बात अवश्य स्मरणीय है कि विभूतियों में आंशिक अर्थात् अपूर्ण शक्ति होने से उन से धर्म-जगत् में जो काम होते हैं वे भी उन सब आंशिक देशकालों के अनुकूल ही होते हैं अतः उन से धर्म जगत् में स्थायी कल्याण नहीं हो सकता। बल्कि कईबार ऐसा भी हो जाता है कि जिस देश काल में किसी विभूतिने धर्म कार्य किया था उस देश काल के गत होने के अनन्तर अन्य देशकाल में वह धर्म कार्य, देश काल विरुद्ध तथा हानिकर हो जाता है, जिस से किसी दूसरी विभूति से पूर्वोक्त कार्य का खंडन भी हो जाता हैं और नवीन देश कालानुकूल नवीनरूप से धर्म रक्षा होती है। भारत में जितने प्रसिद्ध नेतागण तथा धर्म-प्रवर्त्तक धर्माचार्य्य हुए हैं, वे सब भगवद् विभूति की कोटि में माने जाते हैं; एवं कला विकाशानुकूल उन से धर्मरक्षा मूलक महान् कार्य भी हुये हैं जिस के लिये आर्य्य जाति का इतिहास तथा वे निखिल सम्प्रदाय साक्षी भूत हैं। जिस में एक सम्प्रदाय चलाने की शक्ति है, जिसकी बाणी के प्रभाव से सब मनुष्य वशीभूत तथा अनुगामी हो जाते हैं, चाहे वह मत कैसा भी हो उसका भविष्यत् परिणाम धर्म जगत् में अनुकूल हो या न हो, किन्तु कोई भी विवेकी जन इस बात के कहने में तनिक भी सङ्कुचित न होगा कि उस महात्मा ने जगदाधार, जगन्नियन्ता भगवान् की विशेष शक्तियों तथा विभूतियों को लेकर के ही प्राकृतिक जनों के कल्याण के लिये इस कर्म-क्षेत्र में पदार्पण किया है। जिनका नाम स्मरण करके इस समय भी हज़ारों मनुष्य अपने जीवन को पवित्र मानते हैं। जिनके पथ पर चल कर आज भी लाखों जन अपने आपको कृतकृत्य मानते हैं, वे महात्मा साधारण प्राकृतिकजनों के समान ही हैं, ऐसा कभी भी नहीं कहा जा सकता है। जो महापुरुष जिस समय अपनी जगमगाती हुई जीवनज्योति से जिस देश और कालको पुनीत करते हैं, वेही देश काल उनके पवित्र चरित्र से लाभ उठाने के लिये उपयुक्त सिद्ध होते हैं। उस समय की सामाजिक अवस्था के साथ उन महात्माओं के जीवन का अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध होता है। यही कारण है कि उनके क्रिया-कलाप एवं जीवन के उद्देश्य जीव-जगत् के लिये हितकारी सिद्ध होते हैं। वस्तुतः जिस तरह अङ्कुर के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूप में आया हुआ एक वृक्ष अपनी शीतल छाया से क्लान्त पथिकों का सन्ताप दूर करता है, जिस तरह आरंभ में एक साधारण स्रोत स्रोतस्वनी के रूप में परिणत होकर असंख्य प्यासेजनों की पिपासा को दुर करता है, ठीक उसी प्रकार महात्माओं का जीवन भी अपने समय की उपस्थित एवं अतीत दोनों अवस्थाओं में क्रमशः अधिकाधिक उपयोगी ही सिद्ध होता जाता है। यदि हम आज इस सिद्धान्त को अपने उदारचरित चरितनायक ऋषि-मुनि मण्डली-मंडन पापताप-खण्डन श्री १०८ महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन के साथ नियन्त्रित करें तो कोई भी जन इस सर्व-वादि-सम्मत सिद्धान्त से असहमत न होगा। जिस समय भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन आदि अनेक मत, बल्लभ माध्वादि विविध सम्प्रदाय "अपनी २ डफली अपने २ राग" की कहावत के अनुकूल वेद विरुद्ध आचरणों को अपनाते हुए एक दूसरे मत तथा सम्प्रदाय से ईर्ष्या करते हुये अहर्निश द्वेष दावानल से जल रहे थे, जिस समय सुर् दुर्लभ इस पवित्र आर्य्यावर्त की कुलीन से कुलीन आर्य्य सन्तति मायावी ईसाईयों के भय तथा प्रलोभनों से भीत एवं प्रलोभित होकर अपने कुल धर्म को तिलाञ्जलि देती हुई ईसाई धर्म की किङ्करी हो रही थी, जिस समय भारत की भूमाता मिथिला आदि अनेक प्रदेशों में अनावश्यक कामनाओं की पूर्ति के लिये रण-रङ्गिणी चण्डी की प्रसन्नता के निमित्त असंख्य खड्ग धाराधार पशुओं की रुधिरधारा से भीगी हुई चादर को ओढ़ कर उन विपथगामियों के कुकृत्यों पर विलख रही थी, जिस समय आर्य्यावर्त्त से वैदिक साहित्य, वैदिक वेष भूषा, वैदिक धर्म कर्म, आदि सभी कृत्य प्रायः लुप्तप्राय होचुके थे, जन्मान्धों की भांति धर्मान्ध विभिन्न मतावलम्बी जन विवेकपथ से विमुख होकर अपनी इच्छा के अनुकूल पापोंके गर्त में गिरकर आर्त्त हो रहे थे, ठीक उसी समय अगम गम्भीर महासागर में भ्रान्त पोत के लिये ध्रुवतारा की भांति, वर्षाऋतु की घनघोर घटाओं से स्नेहालाप करती हुई तामसी निशा में एक भटके हुये पथिक के लिये चञ्चला चपला की भांति, निदाघ समय में मृगमरीचिका के चक्कर में पड़े हुये मृग के लिये एक शीतल सलिल स्रोत की प्राप्ति की भांति, इन दीन हीन आर्य सन्तानों के कल्याण के लिये मौरवी ग्राममें हमारे चरित-नायक का प्रादुर्भाव हुआ।

आपके पिता का नाम अम्बाशङ्कर था। ये उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुगामी तथा कट्टर सनातनधर्मी थे। जहां उन्हें तीर्थ स्नान, गङ्गा स्नान, आदि से सब प्रकार की भुक्ति मुक्ति में विश्वास था, वहीं उनकी प्रतिमा पूजन में भी कम श्रद्धा नहीं थी। वे औदीच्य ब्राह्मण एवं शैव मतावलम्बी थे। स्वामी जी के जीवन चरित का पाठ करने से पता लगता है कि उनके एक पुत्र और एक कन्या के सिवाय और कोई भी सन्तति नहीं थी। उन्हीं पुण्यशाली अम्बाशङ्कर जी को फल रूप से हमारे पूज्यपाद श्री स्वामी जी को गोद में लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्रीस्वामी दयानन्दजीका पिता माता एवं शेष सम्बन्धियों से अनुमोदित प्राथमिक शुभनाम मूलशङ्कर था। आप बाल्याकाल से ही "होनहार विरवान के होत चीकने पात" की कहावत के अनुकूल अत्यन्त शान्त, सुशील, विनीत, प्रतिभा-शाली, एवं पितृभक्त थे। शास्त्र निर्देशानुसार पञ्चम वर्ष से ही आपकी शिक्षा का प्रारम्भ होगया था। और आपने क्रमशः तीक्ष्ण बुद्धि होने के कारण थोड़े समय में ही अपने मत के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तोत्र ग्रन्थ अदि पढ़ कर व्याकरण आदि विषयों में भी विशेष व्युत्पत्ति लाभ करली। जिस समय आपकी अवस्था लग भग १० वर्ष की थी उस समय एक विचित्र घटना हुई जिस घटना ने ही पवित्र हृदय बालक मूलशंकर के जीवन में विचित्र परिवर्तन किया, वह घटना इस प्रकार सुनी जाती है कि उनके पिताजी ने शिवरात्रि के अवसर पर अपने पुत्र मूलशङ्कर को भी शैवमतानुसार उपवास करने के लिये बाधित किया।

अतः बालक मूलशङ्कर भी समस्त दिन उपवास करके रात्रि में शिवपूजा के हेतु एक शिवमन्दिर में गये।

वहां जाकर उन्होंने देखा कि एक पाषाण प्रतिमा भगवान् शिव की बनी हुई थी। उस पर पुजारी ने अनेक प्रकार के सुन्दर २ भोग्य पदार्थ चढाये हुए थे। पूजा होती रही, अन्त में १२-१ बजे उनके पिताजी को भी नींद आगई पर दिव्यमूर्त्ति, होनहार, प्रतिभाशाली मूलशङ्कर को निद्रा देवी न अपना सकी और वे गूढ़ विचार तरङ्ग में निमग्न होगये। अकस्मात् एक चूहा शिवमूर्त्ति पर चढ़ कर चढ़ाये हुए भोग का भोग करने लगा। मूलशङ्कर ने एक दम विस्मय सागर में डूबकर, अपने पूज्यपाद पिताजी से पूंछा, कि "पिता जी सुनाथा कि शिव तो अत्यन्त बलवान्, दुष्ट विनाशक हैं परन्तु ये प्रतिमा के भगवान तो अपने शरीर पर चढ़े दुष्ट चूहे तकको भी नहीं भगाते।" पिताजी ने कहा "पुत्र! भगवान् भावमय हैं। अतः इस पत्थर की मूर्ति में भावनास्वरूप से ही भगवान् माने जाते हैं।" इस प्रकार पिता जी से सान्त्वना प्राप्त करने पर भी यह बालक वास्तविक सच्चिदानन्द के स्वरूप का समवलोकन करने के लिये अत्यन्त प्रयत्न करने लगा। इनके पिताजी इन्हें समीपस्थ स्थानों में विद्या अध्ययन के लिये भेजदिया करते। १४ वर्ष की अवस्था में ही मूलशङ्करने अनेक पुस्तकें कंठस्थ करलीं थी। किसी ने ठीक कहा है "मेधायाः भूषणं विद्या" ठीक उसी प्रकार मेधावी मूलशङ्करने विद्या का यथोचित सन्मान किया। इस व्रत ने इनके दिलमें उस सच्चिदानन्द परब्रह्म की प्राप्ति का विचार कराया। उस भीष्म प्रतिज्ञने प्रण किया कि जब तक मैं उस परमानन्द आनन्दकन्द सच्चिदानन्द के रूप का अनुभव न करूंगा, तब तक कभी भी मुझे आनन्द तथा सच्ची शान्ति न मिलेगी। इस अवसर में इनके पिता ने इनका विवाह करना चाहा। पर वह बाल ब्रह्मचारी ने विवाह से घृणा करता हुआ अपने को किसी न किसी प्रकार से उस जंजाल से मुक्त करना चाहा। इस प्रकार की विचारतरङ्गोंने उन्हें इस बाल्यकाल में ही अपने पूज्यपिता के लालन सुख से मुख मोड़कर घर से बाहर निकलने के लिये विवश किया। अनन्तर ये महानुभाव आबू नदिया आदि कई एक विद्यापीठों में जाकर विद्या का अध्ययन करते रहे। हमारे चरित्रनायक की दूसरी भीष्मप्रतिज्ञा यह भी थी कि ये आजन्म ब्रह्मचर्य्यव्रत धारण करके एक कोपीनधारी ब्रह्मचारी बनकर रहेंगे। पुनः वे मथुरापुरी में व्याकरणसूर्य विश्वर प्रज्ञाचक्षु श्री विरजानन्द जी के यहां पहुंचे। ऐसे सद्गुणी शिष्य की प्राप्ति से दण्डी जी आज भी अपने सुयश को अजर अमर बना रहे हैं। स्वामी जी में गुरु भक्ति अपार थी। गुरु भक्ति के बिना यथार्थ विद्या की प्राप्ति दुर्लभ है। विद्याध्ययन के पश्चात् स्वामीजी लवङ्ग लेकर गुरुदक्षिणा के लिये गुरु जी के समीप गये। उस समय परिव्राजकाचार्य्य श्री विरजानन्द जी महाराजने बड़े ही आशान्वित हृदय से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रेरित होकर अमृतप्रवाही शब्दों में अपने योग्य शिष्य श्री० स्वामी दयानन्द जी से यही गुरु दक्षिणा मांगी कि "वत्स ! जाओ और वैदिक धर्म से विमुख एवं पापाचार से परिपूर्ण इस भारत वर्ष में फिर भी वैदिक धर्म का प्रचार करो। इसे अपनी जातीयता का स्मरण कराओ।" बस यही समय हमारे स्वामी जी का कार्य्य क्षेत्र में पदार्पण करने का है।

जिस समय श्री स्वामी जी ने कार्य्य क्षेत्र में पदार्पण किया उसी कालसे अपने अदम्य उत्साह से एक सोती हुई जाति के अन्दर "जो कि चिर काल से अपना वेश, भूषा, भाषा धर्म कर्म आदि के परित्याग करने एवं विदेशी विधर्मी राजाओं से पद दलित होने के कारण मृतप्राय होचुकी थी" आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक, (धार्मिक, सामाजिक, शारीरिक, राजनैतिक,) आदि सभी प्रकार की उन्नतियों के सदुपदेश द्वारा एक नये प्रकार के जीवन का सञ्चार किया। स्वामी जी में अद्भुत धर्म-प्रेम, विचित्र देशभक्ति, अखण्डनीय सामाजिक सङ्गठन, अनुपम वाक्पटुता, निर्भीकता, दयालुता तेजस्विता आदि अनेक लोकातिशायी दैवीगुणों, एवं दैवी शक्तियों को देख कर सहस्रों भारतवासी उनके भक्त तथा अनुगामी बन गये। और कितने ही हठ धर्मियों की आंखों में इस तेजोमूर्त्ति को देखने से चकाचौंध छा गया। स्वामी जी ने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जहां शत शत विमतवादियों, वैदिकधर्म विरोधियों को परास्त करके वैदिकधर्म का डंका बजाया, वहीं उन्होंने देशोद्धार के लिये सामाजिक सङ्गठन का उपदेश देने में भी कोई कसर नहीं रक्खी थी। स्वामीजी को तत्कालीन देश की अवस्था का भलीभांति ज्ञान था। वे धर्मोपदेष्टा, धार्मिक नेता, तथा धर्माचार्य होते हुये भी एक दृढ़ प्रतिज्ञ स्थिरमूर्त्ति, दूरदर्शी, सामाजिक तथा राजनैतिक नेता भी थे। उनका दृढ़ निश्चय था कि जब तक देश के शासन की बागडोर देश के हाथों में नहीं होगी, जब तक पराधीन, पद दलित भारत स्वराज्य प्राप्त करके स्वतन्त्र नहीं होगा, तब तक ठीक २ देश में धार्मिक जागृति होनी असंभव नहीं तो कठिन अवश्यमेव है।

यही कारण है कि स्वामी जी ने अपने श्री मुख से तथा ग्रन्थों के द्वारा कई स्थानों पर इसी प्रकार का उपदेश दिया है "कि पुरुषार्थ करो और अपना जन्मसिद्ध अधिकार स्वराज्य एवं स्वाधीनता को प्राप्त करो"। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में कई स्थानों पर बड़ा ही धार्मिक उपदेश दिया है। उन्होंने लिखा है कि "अब उन की सन्तानों का अभाग्य उदय होने से राज्यभ्रष्ट होकर विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहे हैं"। इत्यादि। हमारे उपस्थित नेता गण जिन बातों को देशोद्धार के लिये परमावश्यक जान कर आज जनता में उनका प्रचार कर रहे हैं हमारे त्रिकालदर्शी स्वामी जी कितने ही दिन पहले वर्णभेद जातिभेद एवं छूताछूत आदि देश, धर्म्म तथा समाज घातक पापपङ्क को धोने का उपदेश दे चुके हैं। स्वामी जी के ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि जहां उनकी इच्छा थी कि समस्त संसार में वैदिक धर्म, वैदिक सभ्यता, एवं वेद विद्या का विकाश हो वहीं उनकी यह भी उत्कट वांछा थी कि यह दीनहीन भारत अपनी परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ कर अपने पूर्वजों की भान्ति अखण्ड भूमण्डल का सम्राट् बने। हमारे आधुनिक नेता और श्री स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों में केवल इतना ही भेद है कि ये लोग राजनैतिक सामाजिक उन्नति को मुख्य मानते हुए धार्मिक उन्नति को गौण मानते हैं। किन्तु श्री स्वामी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जी धार्मिक उन्नति को मुख्यस्थान देते हुए धार्मिक उन्नति के साथ ही साथ सामाजिक, राजनैतिक आदि उन्नति करने का उपदेश देते हैं। जिस प्रकार, एवं जिस दृष्टि से स्वामी जी ने भारतवासियों के भाग्य तथा भविष्य का निर्माण किया है, उसे देखते हुए प्रत्येक जन को मुक्त कंठ हो करके यह कहना पड़ेगा कि वे हमारे केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे वरन् सामाजिक तथा राजनैतिक नेता भी थे। वे केवल हमारी धार्मिक उन्नति के ही अभिलाषी नहीं थे वरन् सामाजिक और धार्मिक उन्नति के भी। यद्यपि भारत के भाग्य और भविष्य के निर्माता अथवा भारत पोत के सच्चे कर्णधार श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज आज इस असार संसार में नहीं हैं, तथापि उन के उपदेशामृत आज भी अनन्त प्राणियों के अशान्त एवं संतप्त हृदयों में शान्ति का स्रोत बहाते हुए उन्हें कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर कर रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। भगवान् भारतीयों के दुर्बल हृदय में वह विवेक, वह शक्ति, तथा वह बल दें जिस से वे श्री स्वामीजी के निर्दिष्ट पथ पर चल कर वास्तिक स्वराज्य, आत्मिक स्वराज्य, एवं नैतिक स्वराज्य, उभय स्वराज्य प्राप्त करके, सच्ची शान्ति का लाभ कर सकें।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अभिलाषा

लेखक—श्रीयुत धर्म्मचन्द्र खेमका "चन्द्र"

तृषित नयन है क्लेशयुक्त मन,
विकल वचन सुनते आओ।
लुके रहो न हरे! अन्तर में,
कपटी बनो मत भरमाओ॥
हृदय गगन के इन्दु आप हो,
छटा शान्तिमय दिखलाओ।
मृदु मुसकान दिखाकर प्रभुवर,
हृदयस्थल में बस जाओ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि दयानन्द का विमल ज्ञान

लेखक—श्रीयुत सन्तरामजी बी० ए०

लोग कहते हैं, मनुष्य निर्भ्रान्त नहीं हो सकता। वह अल्पज्ञ जीव है। उसका पार्थिव शरीर और परिमित क्षमतायें उस के निर्भ्रान्त होने में बाधक हैं। ऋषि दयानन्द मनुष्य थे, इस लिये वे निर्भ्रान्त नहीं हो सकते। अस्तु। हम इस तर्क को काटने की चेष्टा करना नहीं चाहते। इस युक्ति को अकाट्य बनाये रखने के लिये हम ऋषि में भ्रान्ति की सम्भावना स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु उन के विचारों और कार्यों पर दृष्टिपात करने से यह बात मुक्तकण्ठ से स्वीकार करनी पड़ती है कि उनका ज्ञान अतीव विशुद्ध और अतीव निर्मल था। उस दिव्य ज्ञानालोक में वे उन सूक्ष्म तत्वों को देख लेते थे जिन का जानना साधारण व्यक्ति के लिये असम्भव है। महाराज की बुद्धि योगाभ्यास के ताप से ऐसी प्रखर और सूक्ष्म हो गई थी कि एक्स किरणों (X Rays) के सदृश उसे किसी गूढ़ विषय के तत्व तक पहुंचने में कोई भी चीज़ बाधा न दे सकती थी। उन की इस शक्ति का परिचय उन के वेदार्थ को देखने से मिल सकता है। जिन वेद मन्त्रों को साधारण भारतीय व्याकरण और भाषा तत्वज्ञान पर अभिमान करने वाला योरुपीय पण्डित समाज अश्लील समझता और उन के हास्यजनक अर्थ करता था उन में ऋषि ने ऐसी सनातन सचाइयाँ दिखाई हैं जिनको देख कर वे दंग रह गये हैं। ऋषि ने ऐसे उत्तम अर्थ किस विधि से लगा लिये. किस व्याकरण और किस कोश की सहायता ली, यह उन लोगों की समझ में नहीं आता। उन की बुद्धि वहाँ तक पहुंच नहीं सकती। अतएव वे झुंझला कर कह उठते हैं कि यह दयानन्द की खेंचातानी और मन-मानी है। ऋषि ने अपने ऊपर इतने लोकोपकारी कार्य ले रक्खे थे कि उन के पास इस काम के लिये समय ही न था कि वे आज कल के योरुपीय पण्डितों के सदृश, साधारण लोगों के समझाने के लिये, राई को बढ़ा कर पर्वत बना देते, और मन्त्र के एक एक शब्द के साथ उस की उत्पत्ति, धातु, व्याकरण, और अन्य स्थलों पर उस का उसी अर्थ में प्रयोग, इत्यादि बातें भी लिख देते, जिन के बिना आज कल के योरुपीय विद्वान् और उन का उच्छिष्ट खाने वाले भारतीय कुछ समझ ही नहीं सकते। उन के जीवन-काल में पहले तो किसी को उन के वेदार्थ पर शङ्का करने का साहस ही नहीं हुआ, फिर यदि किसी ने कुछ साहस किया भी तो उसका समाधान वे झट कर देते थे। योरुपीय ढंग के विद्वान् समझते हैं कि वेदार्थ के लिये केवल उनका कल्पित भाषा तत्वज्ञान और व्याकरण ही पर्याप्त है, परन्तु वास्तव में देखा जाय तो योगाभ्यास द्वारा बुद्धि और ज्ञान को निर्मल किये बिना वेद का सत्यार्थ जानना असम्भव है। कारण यह कि जहां साधारण पण्डितों की बुद्धि व्याकरण और शब्दार्थ के जटिल जाल से ही बाहर नहीं निकल सकती, वहां योगी की दृष्टि अपनी दिव्य शक्ति के प्रताप से एकदम मन्त्र के तत्व पर जापहुंचती है।

ऋषि दयानन्द इस देश का नाम 'हिन्दुस्तान और इस जाति का नाम 'हिन्दू' नहीं समझते थे। उन के ग्रन्थों में ये दो जघन्य शब्द कहीं भी नहीं मिलते। वे सदा इस देश को आर्यावर्त या भारतवर्ष और इस जाति को आर्य्य जाति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहते थे। परन्तु हमारे कुछ भूले 'टनाटनी' भाई, जिन्हों ने ऋषि की प्रत्येक बात का व्यर्थ विरोध करने का ठेका ले रक्खा है, इस बातको सिद्ध करने में लगे हुए हैं कि हां, हमारा नाम हिन्दू है और हिन्दुस्तान शब्द बड़ा उत्तम और गर्वान्वित है। कोई हिन्दू का अर्थ हिंसा न करने वाला और कोई 'इन्दु' या चन्द्रवंशी बताता है। अंग्रेज़ों ने गत महायुद्ध में सेंटपीटर्स बर्ग का नाम, जर्मन होने के कारण, बदल कर पेट्रोग्रेड कर दिया, परन्तु हमारी पतित जाति को अपने दासत्व से इतना मोह हो गया है कि वह ऋषि के चेतावनी देने पर भी हिन्दू और हिन्दुस्तान जैसे जघन्य और अपमान सूचक नामों को छोड़ने का साहस नहीं कर सकती। उलटा 'काला आदमी' और चोर कहलाने पर प्रसन्न होती और अभिमान करती है। आगे हम इत्सिंग नाम के एक चीनी यात्री का मत इस विषय में उद्धृत करते हैं। यह ईसा की सातवीं शताब्दी में भारत में आया था। उस के भ्रमण-वृत्तान्त का जो अंगरेज़ी अनुवाद छपा है उस में लिखा है:—

To tell a teacher of one's own doings, etc., mentioned above, is the custom which is taught in the Arya desh; Arya means 'noble,' desh 'region', the Noble Region, a name for the west. It is so called because men of noble character appear there successively and people all praise the land by that name..... The northern tribes (Hu—Mongols and Turks) also call the Noble Land 'Hindu,' but this is not at all a common name. It is only a Vernacular name and has no special significance. The people of India do not often know this designation and the most suitable name for India is the 'Noble Land'.

Some say that India means the moon, and the Chinese name for India, *i. e.*, Indu is derived from it; although it may mean this, it is, nevertheless, not the common name.

(Itsing's Record of Buddhist Practices in India, Chap. XXV.)

इस से स्पष्ट है कि सातवीं शताब्दी में भी इस देश का नाम आर्य्यावर्त या आर्य्यदेश था और 'हिन्दू' नाम मुगलों और तुर्कों का दिया हुआ है। 'इन्दु' और हिन्दू का सम्बंध जोड़ना भी इत्सिङ्ग की सम्मति में कपोल कल्पित ढकोसला ही है। क्या ये वही बातें नहीं जो ऋषि दयानन्द कह गये हैं परन्तु जो हमारे सनातनी पण्डितों की समझ में नहीं आतीं?

एक बात और। आज से अठारह बीस वर्ष पहले जब गुरुकुल की स्थापना हुई थी तब ऋषि की बतलाई शिक्षा-प्रणाली पर यह आपत्ति की जाती थी कि सरकारी विश्व-विद्यालयों से सम्बन्ध तोड़ कर मातृ-भाषा में शिक्षा देने से देश की रोटी का प्रश्न हल नहीं हो सकता। रोटी का प्रश्न हल करने के लिये सरकारी छाप का लगवाना आवश्यक है। सरकारी विश्व-विद्यालयों के अधीनस्थ कालेजों से ही देशोद्धारक और भारत-त्राता निकल सकते हैं। परन्तु आज दुनियां ने देख लिया कि ऋषिका सिद्धान्त बिलकुल ठीक था। सरकारी शासन से मुक्त स्वतंत्र विद्यालयों के बिना सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा का मिलना असम्भव है। जो लोग ऋषि की शिक्षा-प्रणाली पर आक्षेप करते थे उन्हों ने अब देख लिया कि स्वतंत्र विद्यालयों के बिना न तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देशका उद्धार हो सकता है और न सच्चे अर्थों में रोटी का प्रश्न ही हल हो सकता है।

इसी प्रकार किसी प्रश्न को लीजिये, आप को ऋषि का ज्ञान निर्दोष और उसकी बुद्धि विमल दिखाई देगी। भारतीय आर्य्य समाज के विषय में तो कुछ कहा नहीं जा सकता, परन्तु इसमें सन्देह के लिये तनिक भी गुञ्जायश नहीं कि अनतिदूर काल में भूमण्डल की समस्त जातियाँ एक स्वर और एक भाषा में कह उठेंगी नमो दयानन्दाय योग्येश्वराय।

उषे !

ले०—श्रीयुत दुर्गादत्त त्रिपाठी

हां, मैंने तुझे विलोका था।
तू किलक किलक कर हँस हँस कर मदु मंगल गान सुनाती थी।
रवि-स्वागत हित पुलकित हो हो जब फूली नहीं समाती थी॥
अम्बर को अम्बुद छाते थे,
कल कूजन विहग सुनाते थे,
पिक-निकर मुदित मद माते थे,
घन घहर घहर घहराते थे,
अभिलषित-अतिथि से हो हताश,
तू चली छोड़ कर निज प्रकाश,
तव अंचल थाम प्रमाद-पाणि से, मैंने तुझ को रोका था॥ हां॥

(२)

तब मैंने तुझे पुकारा था,
आशा थी फिर आजावेगी तू एक वार दर्शन देने।
लोचन को प्रतिभा देने को या प्रतिभा को लोचन देने॥
बाणी दुख-निधि की मीन हुई,
उस तम-अनन्त में लीन हुई,
नैराश्य-उरग हित बीन हुई,
तुझ बिन कौड़ी की तीन हुई,
ये शब्द अनर्गल थे केवल।
मेरा पुकारना था निष्फल।
थी भूल बड़ी ही जो मैंने यह कानन-रोदन सारा था॥ तव॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मातृशक्ति

ले० श्रीयुत् डा० वेशवदेव शास्त्री एम० डी०

बौधों के जातक ग्रन्थों में वर्णन है कि जब महात्मा बुद्ध के विचारों का भली भान्ति प्रचार हो चुका तो नारियों के हृदय मन्दिर में भी उत्साह उत्पन्न हुआ कि वह बौध धर्म का सन्देश अपनी बहिनों तक पहुचावें। एतदर्थ यशोदा और मायावती महात्मा जी की सेवा में उपस्थित हुईं और उन्हों ने भिक्षुणी बनने की आज्ञा मांगी। महात्मा जी ने स्त्रियों की कोमलता और प्रचारकों के कष्टों को सामने रख उन्हें इस कठिन मार्ग में जाने से रोका। देवियां निराश हो चली गईं। दूसरे वर्ष द्विगुने उत्साह से प्रेरित हो उन ही मायावती तथा यशोदा के नेतृत्व में २० देवियां १२ मील से नंगे पाओं चलती हुईं पुनः भगवान् बुद्ध की सेवा में उपस्थित हुईं और सानुरोध प्रार्थना की कि उन्हें घर २ में धर्म सन्देश पहुंचाने की आज्ञा दी जावे। महात्मा बुद्ध ने आनन्द को सम्बोधन कर उत्तर दिया कि यतः स्त्रियों में पुरुषों के सदृश सभी शक्तियां विद्यमान हैं, कोई कारण नहीं कि वे उपदेश के उत्तम काम से रोकी जावें।

भारतवर्ष के इतिहास में इस घटना का प्रभाव बड़ा ही विचित्र हुआ। महात्मा जी के जीते जी एक समय बड़े छोटे घरानों से ८२०० नारियां बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ भिक्षुणी के वेष को धारण कर चुकी थीं। उन के द्वारा प्रचार में बड़ी सहायता मिली।

महाराजा अशोक की पुत्री ने इन्हीं भिक्षुणियों का अनुसरण करते हुए लंका द्वीप में जाकर बौध धर्म की पताका को स्थिर किया निरन्तर ६०० वर्ष तक यह परिपाटी चलती रही, तदनन्तर स्वामी शंकराचार्य्य की उपदेश प्रणाली ने स्त्रियों के अधिकारों पर आघात किया और महर्षि दयानन्द सरस्वती के आगमन तक प्रायः २००० वर्ष से मातृ शक्ति का नितान्त निरादर होता आया है। महर्षि ने वेदामृत द्वारा नर नारियों के अधिकारों को पुनः स्थिर किया और देवियों को प्रचार करने तथा प्रत्येक कार्य्य में भाग लेने की पुनः आज्ञा प्रदान की।

समय की गति विचित्र है। जो भारतवर्ष अन्य देशों से अग्रसर था आज वह सब के पीछे जा पड़ा, औरों को जगा स्वयम् घोर निद्रा में सो गया। अन्य देशों में स्त्रियों ने क्या शिक्षा, क्या समाजोद्धार क्या सेवा व्रत में बड़ी उन्नतिकी है। भारतवर्ष की नारियां शिक्षादि में बहुत पीछे रह गई हैं। जाति का अर्धाङ्ग बेकार सा पड़ा है। देश हित के काय्यों में नारियों से बहुत कम सहायता मिलती है। उन्हें दूसरों को उठाने की सुध तो दूर रही अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने की भी सुध बुध नहीं। अत्याचारों पर अत्याचार सहते हुए भी वे प्रोटस्ट नहीं करतीं। उन्हें अहोरात्र उन की दुर्बलताओं और अल्प शक्तियों का स्मरण कराया जाता है और आश्चर्य्य तो यह है कि वे स्वयं भी अपने आप को अबला मान रही हैं।

अमेरिका के (Seattle) नगरी में एक बार मैंने एक विचित्र घटना देखी। वहां के एक लकड़ी के कारखाने में नरनारियां मज़दूरी करते थे। पुरुषों को तीन और स्त्रियों को २ डालर दैनिक मज़दूरी मिलती थी। स्त्रियों ने बराबर की मज़दूरी के लिये तकाजा किया। फैकट्री के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मालिक ने इन्कार ही नहीं किन्तु अपशब्द कहे। स्त्रियों ने मिल उस के विरुद्ध अभियोग खड़ा कर दिया । अदालत के जज ने भी स्त्रियों के विरुद्ध अपना फैसला सुनाया। तब क्या था ? स्त्रियों ने (Recall) द्वारा जज के खिलाफ व्याख्यान देने शुरू किये और निरन्तर दो मास पर्य्यन्त नर नारियों में आन्दोलन कर उस जज को निकाल, दूसरे जज को नियत कराया और यह कानून बनवा लिया कि सभी कारखानों में नर नारियों को समान मज़दूरी मिला करे।

पाठक वृन्द ! पाश्चात्य देशों में मातृशक्ति उज्जागृत हो चुकी है। नारियों को सभी अधिकार प्राप्त हो रहे हैं, देश की (Parliaments) तक उन का प्रवेश हो रहा है। धर्म की वेदी पर वह पुरुषों के सदृश उपदेश कर रही हैं। यदि उनके इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें ज्ञात होगा कि उनके अन्दर सहस्रों मायावती और यशोदाएं उत्पन्न हो चुकी हैं जिन्होंने अपने अधिकार प्राप्ति के लिये नंगे पाओं ही चलने का दृढ़ व्रत न लिया था किन्तु बड़े २ कष्ट सहन किये हैं। जो कठिन समस्या २५०० वर्ष पूर्व भारतवर्ष में थी वह आज भी विद्यमान है। भारतवर्ष ही क्या प्रत्येक देश में मातृशक्ति को उपयोग में लाने का यत्न किया जा रहा है परन्तु सफलता वहां ही हो रही है जहां स्त्रियों ने अपने अधिकारों को प्राप्त करने का आन्दोलन स्वयम् किया है। बाहिर से उन्हें ज्योति मिल सक्ती है परन्तु जब तक नारियां अपने हृदय में प्रकाश को धारण कर स्वयम् उत्साह से आगे बढ़ने पर उतारू नहीं होतीं तब तक उन को अधिकार मिलने दुस्तर हैं। कितने शोक का स्थान है कि वैदिक धर्म की ज्योति को रखते हुए अन्य देशस्थ नारियों की जागृति को जानते हुए आज भी भारतवर्ष की देवियों के समक्ष परदा, बाल विवाह तथा अविद्या के मसले विद्यमान हैं। वह दिन कैसा उत्साह जनक होगा जब भारतवर्ष की नारियाँ यशोदा के सदृश दृढ़ व्रत धारण कर अपने कर कमलों में ज्योति का पताका उठा कर घर २ में जाकर अपनी बहिनों को उठाने, अपने स्वत्वों को लेने और मातृशक्ति द्वारा देश के सुधार में भाग लेना आरम्भ करेंगी? वह दिन तो दूर नहीं परन्तु यशस्विनी देवियों की आवश्यक्ता है। परमात्मा करे कि वह शीघ्र ही अपने रिक्त स्थान को ग्रहण करें। ओं शम्

तीर्थखण्डन—स्वामी दयानन्द और भगवान बुद्ध

ले०—श्रीयुत् चन्द्रमणि विद्यालंकार पालीरत्न

पौराणिक लोगों का यह विश्वास है कि गङ्गा आदि नदियों में स्नान करने से मनुष्य भवसागर को तर जाता है और मुक्ति को प्राप्त करता है। यह अज्ञान भारत वर्ष में अभी तक अपना गहरा प्रभाव डाले हुए है। पर यदि हम साधारणतः पौराणिकों के हरिद्वारतीर्थ, मथुरातीर्थ, प्रयागतीर्थ आदि तीर्थों की ओर ध्यान डालते हैं, तो भवसागर से तरना तो पृथक रहा, उन स्थानों में इतने भयङ्कार पाप कर्म होते हैं कि जिनका वर्णन करना सिवाय खेद के अन्य कोई लाभ नहीं पहुंचा सकता। स्वामीदयानन्द ने वर्तमान युग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में इन झूठे तीर्थों के विरुद्ध बड़ीप्रबल आवाज उठाई। उन्होंने प्राचीन आर्षग्रन्थों के प्रमाण देते हुए दर्शाया कि सच्चेतीर्थ गुरु, वेदादि-सच्छास्त्र, महानुभाव मातापिता, और परमेश्वर हैं जिन के संग से मनुष्य वास्तव में भवसागर से तर सकते हैं। यह अज्ञान गौतमबुद्ध के समय भी पर्याप्त यौवनावस्था में पहुंचा हुआ था। उन्होंने भी आधुनिक तीर्थों का खण्डन बड़े कड़े शब्दों में किया है। सुत्तपिटक के मज्झिमनिकायान्तर्गत सप्तम वत्थसुत्त में वर्णन आता है कि जब गौतमबुद्ध श्रावस्ति में निवास करते थे तब उनके पास सुन्दरिका नदी के उपासक सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण आये, और पूछने लगे कि क्या आप बाहुका नदी पर स्नानार्थ जावेंगे?

बुद्ध ने कहा "ब्राह्मण! स्नानकरने पर बाहुका नदी क्या करेगी?" भारद्वाज ने उत्तरदिया "वह-नदी स्नान करने वालों को स्वर्गलोक में लेजाने वाली मानी जाती है, पुण्य देने वाली बखानी जाती है, उस नदी में स्नान करने से अनेक जन अपने किये हुए पापों का नाश करते हैं।" इस पर बुद्धने इन झूठे तीर्थों का खण्डन इसप्रकार किया:—

१. बाहुकं अविकक्कञ्च गयं सुन्दरिकामपि
सरस्सतिं पयागञ्च अथो बाहुमतिं नदिं।
निच्चम्पि बालो पक्खन्तो कण्हकम्मोन सुज्झति।

बाहुका, सुन्दरिका, सरस्वती, बाहुमती नदियों और अविकल्क, गया, प्रयाग तीर्थों में नित्यम्प्रति स्नानकरता हुआ भी पापकर्मी मूढ़ मनुष्य शुद्ध नहीं होता।

२. किं सुन्दरिका करिस्सति,किं पयागोकिं बाहुलिका नदी। वेरिं कतकिब्बिसं नरं, नहिनं सोधये पापकम्मि।

सुन्दरिका नदी क्या करेगी? प्रयागतीर्थ क्या करेगा? बाहुलिका नदी क्या करेगी? वह क्रोधी दुर्गुणी, पापकर्मी मनुष्य को नहीं शुद्ध करती।

३. सुद्धस्स वे सदा फग्गु सुद्धस्सोपोसथो सदा।
सुद्धस्स सुचिकम्मस्स सदा सम्पजते वतं॥

शुद्ध पवित्र धर्मात्मा मनुष्य का सर्वदा होलिकास्नान है, पवित्राचरण वाले का सदा उपवास है, पवित्र कर्म करने वाले सदाचारी का सदा व्रत विद्यमान है।

मज्झिमनिकाय की टीका प्रपञ्चसूदनी में फग्गु की व्याख्या करते हुए लिखा है कि फग्गु का अर्थ फग्गुननक्खत्त (फाल्गुन-नक्षत्र फाल्गुनउत्सव) है। यह उत्सव उत्तरा फाल्गुनी में होता है। उस दिन जो मनुष्य तीर्थों में स्नान करता है, उसके वर्ष भर के किये हुए पाप नष्ट होजाते हैं-ऐसा माना जाता है। यह फाल्गुन उत्सव होली का ही त्योहार है। अब तक भी मूढ़ मनुष्यों का यही विश्वास है कि होली के अन्तिम दिन गङ्गादि तीर्थों में स्नान करने से साल के किये हुए पापों से मुक्त होजाते हैं। इसी प्रकार उपवासों और झूठे व्रतों से आजकल भी मोक्षप्राप्ति समझी जाती है। गौतम बुद्ध के समय भी यह अन्धविश्वास खूब प्रचलित थे। अतएव उसने कहा कि जो मनुष्य सदाचारी है वह प्रतिक्षण होलिका स्नान, उपवास और व्रत कर रहा है।

(४) इधेव सिनाहि ब्राह्मण सब्बभूतेसु करोहि खेमं।
सचे मुसा न भणसि सचे पाणं न हिंससि॥
सचे अदिन्नं नादियसि सद्दहानो अमच्छरी।
किं काहसि गयं गन्त्वा उदपानोपि ते गया॥

हे ब्राह्मण! तू इसी सत्यधर्म में स्नान कर सर्वप्राणियों को सुखप्रदान कर। यदि तू झूठ नहीं बोलता, यदि तू किसीप्राणी की हिंसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं करता, यदि तू किसी की चोरी नहीं करता और तू श्रद्धावान् तथा ईर्षा रहित है, तो गया जाकर क्या करेगा? कूंआ भी तेरे लिये गया ही है।

यह हैं झूठे तीर्थों के बारे में गौतमबुद्ध के विचार। संसार में सच्चाई सदा एक ही हुआ करती है। जो कोई भी सदाचारी और आस्तिक समाज संशोधक होगा वह इसी परिणाम पर पहुंचेगा। वर्तमान युग के आचार्य, समाज सुधारक भगवान् दयानन्द को भी उतने ही प्रबल शब्दों में तीर्थ खण्डन करने की आवश्यकता पड़ी। पौराणिक भाई क्या इससे यह परिणाम नहीं निकालेंगे कि स्वामी दयानन्द वास्तव में उनको सच्चे मार्ग पर ही लाने का प्रयत्न करते रहे, और उनके शिष्य आर्यसमाजी भी उसी के प्रचारक हैं।

शिवरात्रि

ले०—श्रीयुत देवराज सिद्धान्तालङ्कार

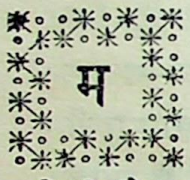

हा पुरुषों के जीवन को महत्व की ओर फेरने वाली एक विशेष घटना होती है। महात्मा गौतम बुद्ध को महात्मता के जीवन की ओर फेरने वाला वह दिन था जिस दिन उन्हों ने एक मुर्दे, एक रोगी और एक साधु को देखा था।

इसी प्रकार न्यूटन के जीवन में एक सेब का गिरना ही उस को उस के जीवन की दिशा बताने में पर्याप्त हुआ।

इसी प्रकार शिवरात्रि के दिन शिवलिङ्ग पर एक चूहे का चढ़ना स्वामी दयानन्द के जीवन की दिशा का सूचक हुआ।

साधारण जन ऐसी २ नाना प्रकार की घटनाएं अपने जीवन में देखते हैं, परन्तु साधारण मनुष्यों के लिए वे साधारण ही रहती हैं, उन के जीवन को किसी विशेष ओर नहीं झुका सकतीं। विशेष पुरुषों में ही वे साधारण घटनाएं विशेष रूप धारण कर लेती हैं। यही कारण है कि शिवरात्रि के दिन शिवलिङ्ग पर चूहे के चढ़ने की घटना अन्यों की अपेक्षा स्वामी दयानन्द के जीवन की उत्कृष्टता को बताती है।

स्वामी दयानन्द शिवरात्रि का व्रत करने के समय केवल १४ वर्ष का बालक था। परन्तु उस छोटी आयु में भी स्वामी दयानन्द के जीवन में अन्य साधारण लोगों की अपेक्षा कई विशेषताएं थीं, यथा :—

स्वामी दयानन्द व्रत का पक्का था। जिस काम को करने के लिये सङ्कल्प कर लिया उस को सब कष्ट सहन करके भी जी जान से करना धर्म समझता था। उस की धर्म में अटल श्रद्धा थी। धार्मिक अनुष्ठान में कैसे भी कष्ट क्यों न आन पड़ें उन की वह कुछ भी परवाह न करता था। जो कार्य उसे सौंप दिया जाता था उसे उस के शिक्षक तथा अन्य सज्जन करें या न करें पर वह स्वयं निबाहने को कटिबद्ध हो जाता था। उसके दिल में यह तर्क नहीं उठता था कि और तो करते नहीं फिर मैं क्यों करूं? वह कर्तव्य परायण था। ईश्वर भक्त इतना था कि शिवलिङ्ग पर चूहा देख कर उसने यह नहीं कहा कि "शिव ईश्वर कुछ नहीं होता यह सब ढकोसला है" परन्तु "सच्चा शिव कोई और है" उस की तलाश में और उसके साधनों की तलाश में सन्नद्ध हो गया। और क्या!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बालक दयानन्द कितना मनस्वी था कि बूढ़ों का भी दिमाग चकराता है। शिवरात्रि स्वामी की, नये जीवन में प्रवेश करने के लिए दीक्षा रात्रि थी। जीवन भर शिव के चरणों में ही विचरते हुए उसी की उपासना में लग कर उसका साक्षात्कार करके अपने जीवन को शिव के अर्पण कर दिया।

इस शिवरात्रि वा दीक्षारात्रि को स्वामीजी ने सच्चे शिव की प्राप्ति का व्रत धारण किया था। इस व्रत की पूर्ति कुछ थोड़े समय में होने वाली न थी। उन्हों ने अपना सारा जीवन ही इस व्रत की पूर्ति करने में लगा दिया और अन्त को सफलता प्राप्त की। इसी व्रत के पूर्ण करने के लिए ब्रह्मचर्य तथा तप का जीवन व्यतीत किया। स्वामी जी की सारी जीवन माला में यह व्रत सूत्रवत् पिरोया हुआ है।

क्या हम अपने किसी व्रत को ऐसे ही निभाना जानते हैं? स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन से बताया कि व्रत का निभाना किसे कहते हैं। स्वामी दयानन्द ने संस्कार विधि में उपनयन संस्कार के अन्त में पारस्कर संहिता का प्रमाण देते हुए लिखतेहैं 'कस्य ब्रह्मचार्यसि' 'प्राणस्य ब्रह्मचार्यसि' अर्थात् तू किस (प्रजापति) का ब्रह्मचारी है, प्राण का ब्रह्मचारी है? जिसने यह नहीं समझा कि मैं प्राण का ब्रह्मचारी हूं वह ब्रह्मचारी कैसे रह सकेगा? स्वामी जी ने उपनयन संस्कार के अन्त में लिखा है कि बालक को प्राण आदि विद्याओं का उपदेश करे।

स्वामीजी इस बात का अनुभव अच्छी तरह से करते थे कि ब्रह्मचारी के लिए प्राण विद्या का जानना आवश्यक और मुख्य है।

स्वामी जी आरम्भ से ही इस प्राणविद्या की खोज में लग गये थे। इसी से वे ईश्वर के दर्शन कर सके और मृत्यु पर विजयी हुए।

आजकल लोग ब्रह्मचारी रहना चाहते हैं, परन्तु प्राणविद्या की हंसी करते हैं, उस ओर रुचि नहीं देते। परन्तु बिना प्राणविद्या के ब्रह्मचारी कैसा? द्विज श्रेणी में प्रविष्ट हो कर पहला कर्तव्य प्राणविद्या का शिक्षण और अभ्यास है। बिना प्राणविद्या के तो वर्णोच्चारण शिक्षा भी ठीक २ नहीं हो सकती। तेजस्वी वर्चस्वी, ब्रह्मचारी न हो कर वेदविद्या के गौरव को अनुभव करना कैसे अनुभव कर सक्ते हैं।

अतः आओ! जिस शिवव्रत को पूरण करने के लिए शिव चरणों में निवास कर शिवपूजक शिष्य ने प्राणविद्या का अभ्यास किया था उस प्राण विद्या का अभ्यास करके हम भी अपने २ व्रतों को पूर्ण करें।

वन्दना

लेखक–श्रीयुत् चमूपति 'चातक' आर्य सेवक

वन्दौं पद श्री शंकर मूल ॥ टेक ॥
शिवमन्दिर में जगी ज्योति ज्यों,
भगीं भीति भ्रम भूल ॥१॥
चकाचौंध चंचल तारागण,
झिलमिल भेंटें फूल ॥२॥
निद्रा नशी मिटी मल मन की,
धुली ध्यान धर धूल ॥३॥
मधुर हँसी विलसे मुख मण्डल,
बसें त्रिनयन—त्रिशूल ॥४॥
बरस सरस ऋषि-रस! मन कानन,
खिलें खुलें मति-फूल ॥५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामी दयानन्द सरस्वती

लेखक—श्रीयुत कविवर पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि स्वामी जी सच्चे सुधारक और भारत-भक्त सन्यासी थे। उनका नाम राष्ट्र के इतिहास में स्थान पाये विना न रहेगा। स्वामीजी में स्वदेशाभिमान की पूर्ण मात्रा थी। वह भारतीय सभ्यता के पूरे प्रेमी थे और उनकी इच्छा थी कि भारतवासी विदेशी चमक दमक पर लट्टू न हो अपनी सभ्यता का सदा सम्मान करें।

उन के आन्दोलन से सनातन धर्म्मावलम्बियों में अच्छी जागृति हुई और संस्कृत शिक्षा का प्रचार हुआ। वह राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपयोगिता भी समझते थे। इसका प्रमाण उनका ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है जो हिन्दी में ही प्रकाशित हुआ।

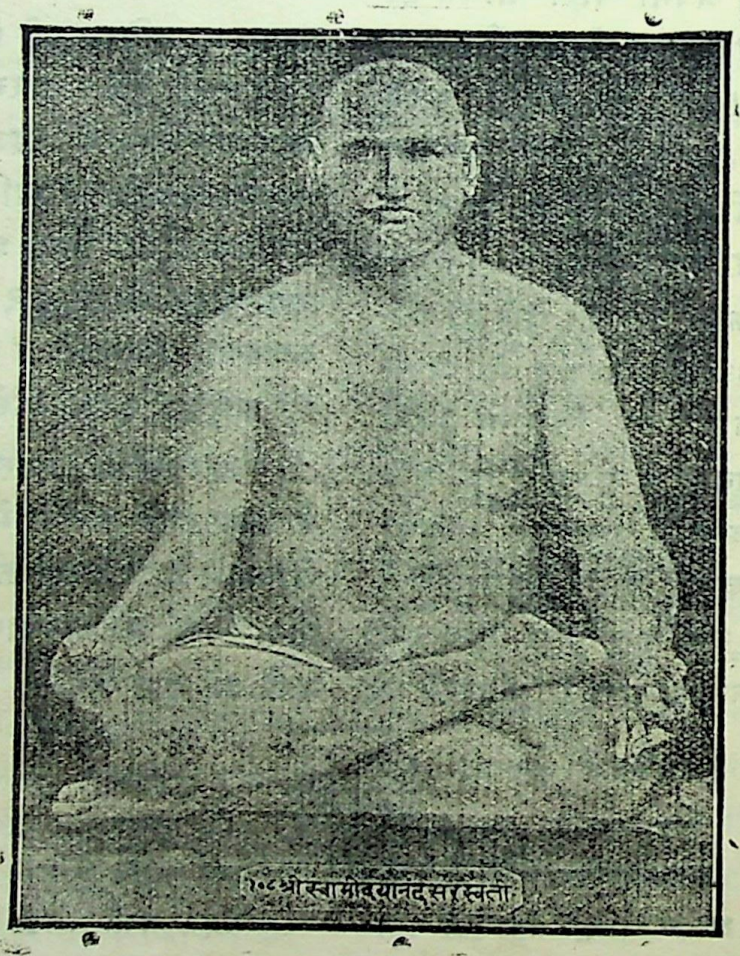

नागरी प्रचारिणी सभा, गुरुकुल और गो रक्षिणी संस्थाओं की स्थापना उनके समय में ही हुई। स्वदेशी वस्तुप्रचार, अछूत उद्धार आदिके वह पक्षपाती थे। जो बातें आज कल बड़े महत्व की समझी जाती हैं उनकी चर्चा "सत्यार्थ प्रकाश" में पहले ही हो चुकी है। वह भारतीय सभ्यता का विकास और अभ्युदय चाहते थे।

उनमें बड़ी विशेषता यह थी कि वह अंगरेजी न जानने पर भी अंगरेजी राजनीति की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गति समझते थे। उनका ध्येय भारत की स्वतंत्रता था। यह सब तरह से भारत को स्वतंत्र बनाना चाहते थे।

उनका उद्देश्य उत्तम था परन्तु प्रतिमा पूजनादि के खण्डन से उनकी उद्देश्य-पूर्त्ति में बाधा पहुंची और वह सर्व्व मान्य न हो सके।

यदि वह इन विषयों के खण्डन में प्रवृत्त न होते तो सर्व्वमान्य हो भारत की भलाई बहुत कुछ कर जाते। खैर जो कुछ किया वह क्या थोड़ा है! हमें उनका कृतज्ञ होना चाहिये॥

शान्तिपथ

(१)

"माता! लो मैं ही तेरी गोदी में आती हूं"

ले०—श्रीयुत निरंजननाथ जी

प्राण नाथ! घड़ी घड़ी पल पल काटते बरसों विरह में व्यतीत होगये। इन नैनों के अन्दर आपकी मोहनमूर्ती विराजमान रही। अन्तर मुख होकर उसी के दर्शनों में मुग्ध रही। मगर हा! प्रभो जिस की सुन्दर प्रतिमा हृदय को ढारस देती और आशाओं के पुल बांधती रही उनके प्रत्यक्ष होने पर यह दिन देखने नसीब हुए। आज मेरा न घर है न घाट। आज प्राण पत्थर होकर गले में लटक रहे हैं। मैं भागकर यहां बन में इस वास्ते नहीं आयी कि प्राणों को गोदी में लिये फिरूं। आज मैं इन से छुटकारा पाकर रहूंगी। 'आत्महत्यापापहै।" यह बात कही जाती है। मगर "आत्मा का हनन नहीं होता" यह भी तो कहा जाता है। रहा शरीर का नाश। सो जो है ही नाशवान उसको मैंने क्या करना है। हां मैं तो सोधी सी बात जानती हूं कि तिरस्कृत तथा निन्दित जीवन व्यर्थ है। इस जीनेसे संसार में सबको क्लेश हैं। देने वाले को भी और भोगने वाले को भी। आज निर्धन का दुनियां में कौन है? और मैं तो हुई भी अनाथ। मेरे पिता होते तो आज देखते कि उन की पुत्री की आज क्या दशा है? उन्होंने मुझे पाला पोसा और बुरी वाहली शिक्षा दी। जो कसर थी उसको सीखने के वास्ते मैं तय्यार थी। मगर उनको क्या मालूम कि उनका स्वर्गवास हो जावेगा और उनकी अबलापुत्री का जिस ने हाथ पकड़ा है वह उसको अपने अयोग्य कहकर बूट से ठुकरा देंगे। माता! तूने भी मेरा साथ न दिया मेरे लिये कोई भाई भी न छोड़ा जो मेरी रक्षा करता। मगर भाई भी क्या करता। सुलगती हुई आग वायु के वेग से ही धधक कर प्रज्वलित होती है। किसी की रक्षा या सुख वास्तविक सुख की तुलना थोड़े ही कर सकता है। जो मेरा ही कोई अंगी संगी नहीं रहा तो मैं यह शरीर किस के वास्ते रखूं। माता! तू मुझको जिसके हवाले कर गई उन्होंने मुझे अस्वीकार किया। अब मैं दो टके के पीछे भागना नहीं चाहती। मेरा धैर्य्य मुझे त्याग चुका है। मेरा कलेजा धक धक करताहै और मैं वेवस हो चुकी हूं, मैं जानती हूं कि सारा संसार मुझे धक्के देता हैं, पर तेरा सहारा मेरे वास्ते सदा स्थिर था। अब तुम भी मुझे नहीं बुलाती हो मैं ही तेरी गोदी में आती हूं (सरस्वती ने आओ देखा न ताओ उच्च स्थान से नीचे कूद पड़ी)

(२)

"तुम्हारी गोदी में वज्र भी फूल बन गया"

कैलाशपति नदी किनारे बैठे देवी पार्वती को नैसर्गिक दृश्यों की उपमा वर्णन करते हुए वैदिक मार्मिक कथाएं सुना रहे हैं। देवी भी उन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के वेदामृत वचनों में मुग्ध है पर देवी को वार वार सांसारिक दुखिया अवलाओं का ध्यान आता और उनको रक्षा के वास्ते प्राण पति से प्रार्थना करती है। स्त्री जाति के उद्धार की वेग-वान तरंगें स्त्रियों के हृदयों में स्वभाव से ही उत्पन्न होती हैं। उनका अन्दाजा कोई पुरुष नहीं लगा सकता। फिर जो देवी मातावत अपनी प्रजा की रक्षा करे उसके पवित्र मनको कौन कहे। देवी को अपने पूज्य पति से उतर कर कोई दूसरा ध्यान आता था तो यही। महाराज कहने लगे—"देखो पार्वती! जो नर नारी वैदिक कर्म क्रिया से हीन होजाते हैं उन की अवनति अवश्यमेव हो जाती है। शास्त्रों में सब शुभ कर्मों का वर्णन है। स्वतंत्र मनुष्य उन से भले ही मुख मोड़ बैठे परन्तु अपने कर्म फल को नहीं टाल सकता। मन्द कर्मों में तो प्रवीण पर कष्ट भोगने में विधाता का दोष यह कहां का न्याय है? तुम स्त्री जाति से हित रखती हो। उनकी सेवा सुश्रूषा में भी तत्पर रहती हो तुम को ऐसा अवसर भी नित्य मिलता रहता है"। यह वचन कह ही रहे थे कि ऊपर से धड़ाम से कोई चीज देवी की गोदी में पड़ी। जिसको उसने ऐसी सावधानी से सम्भाला मानो माता ने अपने घबराये हुए बच्चे को गले लगा लिया है। भगवान बोले "देवी! पड़ी तो वज्र की न्यायीं थी मगर तुम्हारी गोदी में फूल बन गयी" देवी बोली—"महाराज यह आपके समी-पस्थ होने का फल है। फूल तो है मगर मुर-झाया हुवा। मुखड़ा तो देखिये कली है जो खिलने से पूर्व मुरझा गई है। इस फूल की न पखंडी है न पल्लव।" माता ने अपने स्वाभा-विक प्रेम से उसे गले लगाया। आंखों पर जल स्पर्श किया और देख भाल के वास्ते अपने भवन में लेगई।

(३)

"मदन तुम को पछताना होगा"

"कहो मिस्टर मदन किस उधेड़ बुन में हो। अब तो आप सुख की नींद सोते होगे! सरस्वती का तिरस्कार करके आप का दिल तो अब ठण्डा हो गया होगा?"

मदन—"जगदीश! आगये मगज चाटने। तुम को मेरे सिवाय दूसरा कोई मत्था पच्ची करने को नहीं मिलता?"

जगदीश—"बात यह है तुम हो मेरे लङ्गोटिये। फिर तुम ने विलायत की हवा भी खायी है और बाप दादा की गाढ़ी कमाई के टके से खूब नाच रङ्ग देखे हैं। मैं रहा बाबा आदम की पुरानी भारत भूमि की मट्टी छानता। मगर यह तो बताओ तुम ने उस अबला को त्यागा क्यों?"

मदन—"देखो जगदीश! तुम ने भारत की मट्टी छानी है तुम को मुबारक हो मैं कुछ बुरा नहीं कहता मगर तुम भी तो मेरे हाल पर तरस खाओ। मैंने इतना समय एक उच्च और उन्नत देश में लगाया। पर्याप्त धन व्यय किया और विविध प्रकार का अनुभव प्राप्त किया। क्या वह सब व्यर्थ जाना चाहिये। मुझे उस के अनुसार कुछ भी नहीं चलना चाहिये? मुझे तुम्हारे भारत की गली सड़ी सभ्यता और नर नारी की चाल ढाल पसन्द नहीं।"

जगदीश—"तो इस में सरस्वती के स्वीकार करने में क्या बाधा रही?"

मदन—"बाधा यही जो एक अयोग्य का योग्य से मेल और एक अशिक्षित का शिक्षित से जोड़ने में होता है। उस का भद्दा भोंड़ा शरीर, उस की मोटी बुद्धि मेरे किस काम की? बात यह है कि मुझे उस का बोल उसकी चाल ढाल कुछ नहीं भाती। आज कल की रोशनी के वह लायक नहीं है।"

जगदीश—"और यह भी तो कहो कि उस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के पल्ले कच्ची कौड़ी नहीं क्योंकि उस के सिर पर न मां है न बाप।

सुडौल स्वस्थ शरीर तुम को भद्दा क्यों ना मालूम हो? तुम को तो रुधिर रहित पीला मुख पसन्द है। और जिस की पतली कमर अपने सिर के बोझ से झुकती चली जावे और तुम उस को बगल में सहारा दिये खड़े रहो। तुम को चरखा कातना, चक्की पीसना और गाय भैंस की सेवा करना, मोटी बुद्धि वालों का काम प्रतीत होता है। तुमको पतली पतङ्ग नाच रङ्ग में निःशङ्क चाहिये। तुम को न धर्म से वास्ता न कर्म से। न कथा वार्ता से प्रेम, न शास्त्रों में श्रद्धा। तुम न पतिव्रत जानो न स्त्री व्रत मानो। तुम गाय भैंस की जगह मुरगी पाल कर अण्डे लेना चाहते हो। धन्य है तुम्हारी बारीक बुद्धि! तुम अपनी पत्नी धारा प्रवाह अङ्गरेजी बोलने वाली चाहते हो। तुम्हारे फूटे मुंह से कभी संस्कृत की प्रशंसा न सुनी। तुम को देश सेवा खटकती है। तुम श्वेत चमड़े के ग्राहक हो। भारत सभ्यता का नाम सुन कर तुम चिल्ला उठते हो। देखो मदन! मैं सत्य कहता हूं तुम अपनी लगाम मोड़ लो वरना तुम को पछताना होगा"

(४)

"इस पवित्र जीवन का पथ प्रदर्शक कौन है?"

मिस्टर मदन के मित्र बाबू किशोरी लाल सरकारी उच्चाधिकारी हैं। कार्य वश सरकार ने उन को परदेश गमन की आज्ञा दी है नौकरी है कैसे नकार हो। पैन्शन के दिन निकट आगये हैं। परिवार भी साथ नहीं जा सकता। मिस्टर मदन के हवाले सब को कर गये। मिस्टर मदन ने उनकी देख रेख पूरे ध्यान से की। अब अपने मित्र की पुत्री की आयु १६ वर्ष की हो चुकी। उस के वास्ते दिन रात वर की चिन्ता में हैं। समाचार पत्रों में छपवाया। इष्ट मित्रों में चर्चा की और पत्र व्यवहार में समय लगाया। मगर अब तक कुछ न बना। वर मिला तो घर पसन्द नहीं। घर ठीक निकला तो वर से सन्तोष नहीं। लड़की की माता रामायण का प्रमाण देती है।

जे घर वर कुल होय अनूपा। करिये विवाह सुता अनुरूपा। नतु कन्या वरु रहे कुमारी। कन्त उमा मम प्राण प्यारी। मिस्टर मदन को भी सुध बुध भूल गई वह नहीं जानते क्या करें। जो वर पसन्द भी आता है तो उसे कन्या की त्रुटियां नजर आती हैं। कोई वर कैसी वधू चाहता है कोई कैसी। सर्वगुण निधान न कन्या मिलती है न वर। कुछ न कुछ न्यूनता रह ही जाती है। चाहता तो सब कोई है कि सर्वगुण सम्पन्न जोड़ा मिल जावे। मित्र की स्त्री ने मिस्टर मदन से एक दिन कहा। भाई साहिब। हमारी पुत्री में दोष तो कुछ है नहीं। शरीर स्वस्थ है। अंग प्रत्यंग सब सुन्दर सुदृढ़ हैं। घर का काम काज बड़ी सावधानी से करती है, आलस्य और प्रमाद को मुंह नहीं लगाती। सत् शास्त्रों का स्वाध्याय करती है। वृत्ति सात्विक है। खाना पकाना सीना परोना चरखा कातना सब बातों में प्रवीण है फिर आप कैसे कहते हो कि कोई २ वर पसन्द नहीं करता। जो गुण शेष होने चाहिये वह मुझे कहिये मैं उस की शिक्षा का प्रबन्ध करूं।"

मि० मदन—"बहिन जी! कुछ लोग आज कल के पढ़े लिखे अपने स्वाभावानुसार अपनी पत्नी चाहते हैं।"

बहिन—"भाई साहिब बात यह है कि आपने अपने ख्याल के अनुसार तो यत्न किया है जो मेरे आदर्श के नितान्त विरुद्ध है। अब ज़रा मेरी भी सुन लो! आप कोई बैरिस्टर या बैरिस्टरों जैसा वर न ढूंढिये। आप कोई ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ढूंढ़िये जो घर का अच्छा हो । जिस का कुल आचार व्यवहार नाम दान में प्रसिद्ध हो, जो स्वयम् वेदादि सत् शास्त्रों का ज्ञाता हो। जो अपने धर्म और देश पर प्राण न्योछावर करने वाला हो। धनी हो तो अच्छा है मगर धनी हो और सुकर्मी न हो ऐसा नहीं चाहिये। धर्मानुसार मेहनत वाली कमाई करने वाला हो, स्वस्थ हो।"

मिस्टर मदन इन बातों को मानते नहीं थे, तो भी उन्होंने इस आदर्श वाला वर ढूंढ़ लिया और अपने मित्र की पुत्री का विवाह कर दिया। जब इस जोड़े के सात्विक जीवन को उन्होंने देर तक देखा और उन के अगाध प्रेम और श्रद्धा भक्ति का अनुभव किया तो उनके अपने विचार डग मगाने लगे। अपने मित्र के परिवार की देख रेख ने उन को गृहस्थ की ऊंच नीच देखने का अवसर दिया। उनको बाह्य टीप टाप और वास्तिवक सुख का भेद जान पड़ा। ज्यों २ वह इस जोड़े में वैदिक जीवन का प्रभाव देखते और उन्हें सात्विक सुखों का यों२प्रवाह दृष्टि गोचर होने लगा उनके हृदय पट के संस्कार धुलने लगे। उन को ऐसा प्रतीत हुआ मानो चन्द्र लोक का कोई दम्पति उन की शिक्षा के वास्ते उतरा है। अब उन के हृदय से यह शब्द निकले कि "इस पवित्र जीवन का पथ प्रदर्शक कौन है?" (५)

"जल्दी चलो जल्दी चलो"

बूट सूट उतार कर मोटा खुदरा कपड़ा पहन कर एक भारी दण्ड हस्तगत करके महाशय मदन अपनी धुन में वैदिक जीवन पथ-प्रदर्शक से परिचय करने जा रहे हैं और आंखे फाड़ फाड़ कर चारों ओर देख रहे हैं। अब उन को परम पिता परमात्मा की सृष्टि में उस की रचना का स्वरूप आनन्दमय दीखने लगा। अब उन को भारत सभ्यता से प्रेम होने लगा और अपने पूर्वजों के समाचार जानने की उत्कण्ठा हुई। उन्होंने अपने नेत्रों से प्रत्यक्ष करना आरम्भ किया कि छोटे बड़े बालक तपस्या का जीवन व्यतीत करके वेदाध्यन कर रहे हैं इसी प्रकार कन्यायें भी विद्योपार्जन कर रहीं हैं। कहीं अनाथालय, विधवाश्रम, विद्यार्थी आश्रम आदि अनेक परोपकारी संस्था हैं। एक विशाल पुस्तकालय में वेद भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश संस्कार विधि, गोकरुणा निधि, पञ्च महा यज्ञ विधि, वेदाङ्ग प्रकाश, आर्योद्देश रत्न माला, व्यवहार भानु आदि अनेक ग्रन्थ हैं। देश हितैषी स्वराज्य प्रेमी दलितोद्धारक आदि २ विशेषण एक ऋषि के नाम के साथ देखे। महाशय मदन ने देखा कि वह ऐसी बस्ती में पहुंच गया है जहां के लोग हर समय इस बात के वास्ते तय्यार रहते हैं कि कहीं ईश्वर न करे अकाल या भूचाल से लोग पीड़ित हों तो यह झट वहां पहुंचे और तन मन धन से उन की सेवा करें। दलित भाइयों को गले लगाते गले कटवाने पड़े तो पीछे नहीं हटते। देश और धर्म के वास्ते प्राणार्पण करने में नहीं झिझकते। बालक और बालिकाओं की शिक्षा निमित्त अपने भावी सांसारिक सुखों को स्वाहा करते हैं। उस ने देखा कि वह एक ऐसा महात्मा का गुण गायन कर रहे हैं जो बाल ब्रह्मचारी था, योगी था तपस्वी था। जो जीवन भर सत्य के प्रगट करने में निर्भय रहा, जिस ने परोपकार का सच्चा नमूना पेश किया, जिस का सांसारिक सुखों के साथ रत्ती भर मोह नहीं था. जिस ने अपने जीवन के हरने वालों, प्राण पीड़ा देने वालों को क्षमा कर दिया। जिस ने अन्धकार में पड़ी आर्य्य जाति को वैदिक सूर्य का पता दिया। जिस ने आर्य्य जाति पर आच्छादित पौराणिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कपोल कल्पित गाथाओं के कलङ्क को दूर कर दिया। जिस ने शुद्ध वैदिक जीवन का आदर्श दिखाया। जिस ने वर्णाश्रम धर्म मर्यादा को प्रचलित कर दिया। जिस ने सन्यास के उच्च पद को प्रमाणित कर दिया। इस प्रकार की अनेक घटनाओं को देख कर महाशय मदन को खयाल आया "कि जिस महर्षि का यह सब लोग अनुकरण कर रहे हैं, जिस महर्षि के नाम से यह सब संस्थायें सुशोभित हो रही हैं, वह सन्यासी महात्मा कौन सा है ? उस का जीवन कैसे व्यतीत हुवा ? और वह है कहां ?" जब श्रद्धा का प्रवाह उस के अन्दर संचारित हुवा तो किसी ने उस के कान में कहा कि—"जो तुम देख रहे हो यह उसी का प्रतिविम्ब तो है। अगर कुछ और देखना चाहते हो तो चलो जल्दी चलो।"

(६)

"तुम्हारी मनो कामना सिद्ध हो"

म० मदन ने जब देखा कि मेरे कान में बोलने वाला कोई नजर नहीं आता तो उसने अन्धा धुन्ध उसका पीछा करना चाहा मानो पवन के साथ २ दौड़ रहा है। इसी भाग दौड़ में जब थक कर चूर हो गिरने लगा तो उसके सन्मुख एक बड़ा खुला दरवाजा नजर पड़ा जिस पर लिखा था "आर्य समाज"। म०मदन को अन्दर पग रखते ही सामने एक विशाल मूर्ति नजर पड़ी जिसके चरणों पर महाशय गिर पड़े। महर्षि ने नमस्ते कहके पूंछा—"क्या चाहते हो ? कहां से आये हो ?" बोला—"जो चाहता था पा लिया।" महर्षि ने कहा—"कुछ कहना चाहते हो तो कहो, तुम घवराये हुवे क्यों हो ?" बोला—"महाराज ! श्री चरणों में रहना चाहता हूं।" भगवान दयानन्द ने पूंछा—"विद्यार्थी हो गृहस्थी हो कौन हो ?"

म० मदन क्या उत्तर देते। दम रुक गया। पानी पानी होगये। जो कसर थी सो निकल गयी। महर्षि समझ गये कुछ दाल में काला है। आज्ञा दी जावो विश्राम करो और कैलाश पति कैलाशके भवन में विश्राम करो ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे तुम्हारी मनो कामना सिद्ध हो।"

"सरस्वती मैं बड़ा अपराधी हूं !"

देवी पार्वती ने दिन रात सेवा करके सरस्वती को पुनर्जीवित कर लिया। और दया दृष्टि से उस की रक्षा करती रही। सरस्वती अपने प्राणों से छुटकारा चाहती थी। इसी वास्ते उसने पर्वत से कूद कर देह त्याग करने की इच्छा की। वह मोह की मारी अपनी जीवन दातृ माता की गोद में जाना चाहती थी मगर वह नहीं जानती थी कि यह असम्भव लालसा है। हां वह सच्ची माता की गोदी में अवश्य जापड़ी। आज वही माता उस को कैलाश भवन के उद्यान की वायु सेवन करा रही है और अनेक कथाओं से उस का मन बहलाती है। सरस्वती अपनी नयी माता के सुखों में पगप उठी थी। और उस का मुखड़ा चान्द का टुकड़ा दीखने लगा। मगर कभी २ चान्द को भी ग्रहण लग जाता है इसी प्रकार उस विरहणी का मुखड़ा भी कभी २ अपने पुराने संस्कारों की स्मृति से मलीन हो जाता। माता बोली—"देखो सरस्वती आज मैं तुम से एक बात कहूंगी तुम को मानना होगा।"

सरस्वती—"माता आपको सन्देह क्यों हुआ ?"

माता—"सन्देह इस वास्ते कि तुम कभी २ उदासीन हो जाती हो। जरा सामने देखो तो क्या है ? जावो जावो जल्दी जावो भागो और उनके चरणों पर जा गिरो। अब समय आगया है तुम्हारे दुखों की समाप्ति का। अब मेरा ख्याल छोड़ दो। जावो जल्दी जावो।" सरस्वती ने जब आंख उठाकर देखा तो उसकी देह कांप उठी। रोमांचित हो पांव लड़ खड़ाने लगे। और मूर्छित होकर भूमि पर गिर गई।

मः मदनने दूरसे देखा कि एक स्त्री गिर गई है तो दौड़ कर उसके निकट आये मगर उसको छूनेका हौसला नहीं हुआ। कुछ देर पीछे उस स्त्री ने सचेत हो उनके चरण स्पर्श किये तो म० मदनने पूछा—"प्यारी कहां हो !" सरस्वती बोली—"माता के पास" म० मदन बोले—"यहां तो सिवाय मेरे तेरे पास दूसरा कोई नहीं है ?" सरस्वती फिर सिर फैंकने लगी तो म० मदन ने अपने हाथों से सम्भाल कर अपने पिछले कुव्यवहारों को स्मरण करके कहा "सरस्वती मैं बड़ा अपराधी हूं" अब क्षमा करो। अब मैं शान्ति पथ पर आ गयाहूं। आजसे हम दोनों दम्पति महर्षिदयानन्द की आज्ञानुकूल गृहस्थ जीवन व्यतीत करके सुख और शान्ति प्राप्त करेंगे और संसार को दर्शायेंगे कि आदर्श वैदिक जीवन क्या है।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* वनिता विनोद *

स्त्री-जगत्

ऋषि दयानन्द जी की स्त्रियों को आज्ञा विधवा विवाह निषेध

जिस स्त्री का पाणिग्रहण मात्र हुआ हो और संयोग न हुआ हो अर्थात् अक्षत योनि स्त्री हो उसका अन्य पुरुष के साथ पुनर्विवाह होना चाहिये किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णों मे क्षतयोनि स्त्री का पुनर्विवाह न होना चाहिये। (स० प्र० समु० ४ पृ० १२४)

———

द्वितीय विवाह तथा कुमारी कन्या का रंडवे के साथ विवाह का निषेध

द्विजों में स्त्री और पुरुष का एक ही वार विवाह होना वेदादि शास्त्रों में लिखा है द्वितीय वार नहीं।

कुमार और कुमारी का ही विवाह होनें में न्याय और विधवा स्त्री के साथ कुमार पुरुष का और कुमारी स्त्री के साथ मृत स्त्री पुरुष (रंडुवा) के विवाह होने में अन्याय अर्थात् अधर्म है।

(स० प्र० समु० ४ पृ० ११७)

———

गृहस्थी स्त्रियां क्या करें

अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराई युक्त सब पदार्थों के उत्तम संस्कार तथा घर की शुद्धि रखे, और व्यय में अत्यन्त उदार न रहे अर्थात् यथा योग्य ख़र्च करे। और चीजें पवित्र हों तथा पाक इस प्रकार बनावे जो औषधिरूप होकर शरीर व आत्मा में रोग को न आने देवे, जो २ व्यय हो उसका हिसाब यथावत् रख कर पति आदि को सुना दिया करे, घर के नौकर चाकरों से यथायोग्य काम लेवे, घर के किसी काम को बिगड़ने न देवें।

———

ब्रह्मचारिणी कन्या क्या २ सीखें

ब्राह्मणी और क्षत्रियां को सब विद्या, वैश्या को व्यवहार विद्या और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य सीखनी चाहिये।

स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये।

———

ऋषि के अनुसार कन्या गुरुकुल कैसा होना चाहिये

१—लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोष एक दूसरे से दूर होनी चाहिये।

२—जो वहां अध्यापिका और भृत्य अनुचर हों वह कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री हैं।

३—स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का भी न जाने पावे।

४—पाठशाला से चार कोस दूर ग्राम व नगर रहे।

५—सब को तुल्य वस्त्र, खान पान, आसन दिये जावें। चाहे वह राजकुमारी हो चाहे दरिद्र के सन्तान सब को तपस्वी होना चाहिये।

६—उनके माता पिता अपने सन्तानों से व सन्तान अपने माता पिताओं से न मिल सकें।

७—न किसी प्रकार का पत्र व्यवहार एक दूसरे से कर सकें।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री जाति के लिये ऋषि का उपकार

ले०—श्रीमती शकुन्तला देवी गुप्ता पटियाला

हम को उस अनन्तशक्ति परमेश्वर को कोटिशः धन्यवाद देना चाहिये, जिस की कृपादृष्टि से आज हमारी देश बहिनें अपने आत्मिक और शारीरिक बल को उन्नत करने के लिये शक्ति ग्रहण करने का प्रयत्न कर रही हैं। कोई समय था कि लड़कियों को पढ़ाना महा पातक समझा जाता था, यहां तक कि सांप को दूध पिलाना समझते थे। अर्थात् लड़कियों को पढ़ाना मानों विष को बढ़ाना था। परन्तु जब से श्रीयुत सकल गुण निधान स्वामी दयानन्द जी ने अवतार धारण किया तब से मानों सोई हुई स्त्री जाति को चेतनता दिला दी। स्थान २ पर पाठशालाएं बना दीं और उन के नियंत्रित करने के लिये बहुत सी सभाएं भी बनाईं। छोटी २ कन्या को आरम्भ से पढ़ाना प्रारम्भ किया। पहिले पहिल तो लोग लड़कियों को पाठशाला में भेजने को बहुत आना कानी करने लगे। परन्तु ज्यों ज्यों स्वामी जी के धर्मोपदेशों पर ध्यान देते गये अपने हृदय के बुरे भावों को जड़ से नष्ट करते गये। प्रायः आज कल भी देखा जाता है कि संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध की तरफ स्त्री शिक्षा का बहुत कम प्रचार है। कहीं २ पर एक दो पाठशाला आर्य्य समाज की तरफ से खुली हुई हैं, परन्तु पञ्जाब में बहुत से महाविद्यालय बने हुए हैं। आज कल बहुत सी लड़कियां B. A., M. A. तक पढ़ने लग गईं हैं। अब कोई ही ऐसा नगर होगा जहां कोई कन्या पाठशाला नहो। यह सब भारत के प्रसिद्ध नेता स्वामी जी का प्रभाव है।

उनके जन्म काल से पहिले सौ में से एक केवल नाममात्र लिखना जानती थी। सुशिक्षित घरों में स्त्रियों के अशिक्षित होने से स्त्रियों की ऐसी हीन अवस्था थी कि जिस को देख कर उनके प्यारे जीवन पर आंसू बहाने पड़ते थे। विचारी विद्या शून्य मूर्खा रात दिन नीच दासी के समान कार्य में लगी रहती थीं तो भी परिवार के लोग उन्हें, घृणा की दृष्टि से देखते थे, और मनमाने अत्याचार करते थे। स्त्रियां परतन्त्र थीं वे अपने मन के भावों को किसी प्रकार से भी प्रगट नहीं कर सकती थीं। यदि वे अपना दुखड़ा किसी के पास रोती थीं तो पराई निन्दा का दोष दिया जाता था। उन के सन्तप्त हृदय स्थल पर ही शोकाश्रु धारा गिर२ कर सूख जाती थी। उनकी सन्तप्त आहों पर कोई भी ध्यान नहीं देता था। परन्तु ज्यों ज्यों जगद्दीपक स्वामी दयानन्द जी का उपदेश सुनते गये, लोग अपने २ कार्य पर स्थिर हो गये। स्त्रियों को अर्द्धाङ्गिनी समझने लगे। स्त्रियों में भी आत्मिक बल बढ़ने लगा। प्रिय सम्बन्धियों से उचित व्यवहार करने लगीं। मनुष्यों के मुंह से अबला शब्द जाता रहा। स्त्रियों का भी समाज की उन्नति की ओर ध्यान बढ़ने लगा। अपने पातिव्रत धर्म को धारण किया। पुरुष भी पत्नीव्रत हुए। सुशिक्षित पुरुष स्वामी जी के बताये हुए सन्ध्या हवन करने लगे। स्त्रियों के भी हृदय में ईश्वरीय भक्ति का प्रादुर्भाव हुआ।

दूसरा उपकार स्वामी जी ने "बालविवाह निषेध" का किया। पुरुष लड़कियों को इतनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लघु अवस्था में व्याह देते थे। कि उन की तोतली जिह्वा भी ठीक नहीं होती थी। विवाह की बातें तो स्वप्न में भी नहीं सुनी होंगी। वे विचारी दूसरी जगह जाने से घबराती थीं। कभी माता पिता की गोद से भी अलग नहीं हुई थीं। वे अबोधबालिका क्या जाने कि पराये कुटुम्बियों से कैसा बर्ताव किया जाता है। कुछ ही दिन होते हैं कि बालविवाह से दूषित होकर उस का पति कालग्रसित हो गया। उसके लिये तो संसार में प्रलय हो गई। उसे तो अभी तक यह भी मालूम नहीं था कि विवाह किस चिड़िया का नाम है। जब वह युवावस्था में आती है, तो संसार को देख २ कर आंसू बहाती है। और आजीवन सम्बन्धियों के ताने ही सहती हैं। इस दूषित कार्य को हटाने के लिये स्वामी जी ने बड़ा प्रयत्न किया। और सत्यार्थप्रकाश में भी इस बात का बहुत अनुमोदन किया है। आज कल लोग इस बात को मानने लगे हैं कि बालविवाह में बड़ी २ मुसीबतें होती हैं। बालिकाओं को सारी उमर रोते ही बीतती है। कोई ही ऐसा मनुष्य होगा जो आज कल १० वर्ष से कम अवस्था वाली कन्या का विवाह करता होगा। संसार का यह बड़ा भारी सौभाग्य है जो स्वामी दयानन्द जी जैसे भारत माता के सुपुत्र पैदा होते रहे और भारत का सुधार किया।

स्वामी दयानन्द और सामाजिक सुधार

लेखिका—श्रीमती सुशीला देवी

स्वामीजी ने गिरते भारत को जिस प्रकार अवलम्ब दिया; अपनी योग दृष्टि या दूर दर्शिता से जिस तरह इसे उन्नति-मार्ग दिखाया; इस पर और भी जो २ उपकार किये उनसे भारतीय जनता अपरिचित न होगी। उन्हों ने सामाजिक जीवन में जो २ आवश्यक तथा सामयिक परिवर्त्तन करने आवश्यक बताये हैं उन्हीं की ओर हम पाठकों का ध्यान ले जाना चाहते हैं।

सब से पहिले जो उन्होंने अत्यावश्यक एवं स्वाभाविक परिवर्त्तन बताया वह है स्त्रियों तथा शूद्रों के अधिकारों में वृद्धि। स्त्रियों को असली अर्थ में अर्धाङ्गिनी समझना इनके लिये वेद विद्या तक का द्वार खुला छोड़ देना; तथा स्यंबर विवाह की शिक्षा का प्रचार करना इत्यादि बातें समाज के लिये परमोपयोगी बतलाई गई हैं।

शूद्रजनों के लिये तो स्वामी जी ने उन्नति के सभी रास्ते खुले छोड़ दिये। वे जैसा चाहें बन सकते हैं। उन्होंने शूद्र शब्द का अर्थ जाति परक नहीं माना। वे गुण कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था माना करते थे। वे आर्य्य तथा शूद्र की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:—

"द्विजों, विद्वानों का नाम आर्य्य है, और अनपढ़ों का नाम शूद्र अनाड़ी है"। छूआ छूत के तो स्वामी जी पक्के विरोधी थे। वे स्वच्छ रहने वाले शूद्र तक के हाथ का भोजन खालेने में कोई दोष नहीं मानते थे। वे तो यहां तक लिख गये हैं कि भोजन खाना ही शूद्र के हाथ चाहिये। क्यों कि यदि ब्राह्मण लोग पाचक ही बने रहे तो उन विचारों को अपने कर्त्तव्य कर्म करने का समय ही कौनसा मिलेगा? हां वे मद्य मांसादि सेवन करने वाले किसी भी मनुष्य के हाथ का भोजन करना पाप समझते थे।

जाति में एकता का सूत्रपात भी इन्हों ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अच्छे ढंग से बतलाया है। वे सहभोजन की प्रथा को एकता का साधन बिल्कुल नहीं मानते थे। इस विषय की पुष्टि के लिये ईसाई इस्लाम आदि दूसरे मतों में इसका विरोध दिखाते हुए वे कह गये हैं जबतक एक मत, एक हानिलाभ, एक सुख दुःख न मानें; तब तक उन्नति का होना बहुत कठिन है। वे दिखावे मात्रकी एकता को जाति में भारी दोष समझते थे।

विदेश गमन को भी वे उन्नति का एक साधन समझते थे। उन्होंने विदेश जाने में धर्म भ्रष्टता किसी भी अंश में स्वीकार नहीं की। हां, यह अवश्य कहा है कि धर्म का सम्बन्ध आत्मा तथा कर्त्तव्य से है। जब हम भीतरी पवित्रता बनाये रक्खें; सत्य भाषण आदि का आचरण करते रहें, और अपने कर्त्तव्य पथ को न भूलें तब, चाहे कहीं भी चले जावें, धर्म भ्रष्ट नहीं हो सक्ते।

अपनी वेशभूषा तथा जनेऊ आदि धार्मिक चिन्हों को न छोड़ना भी जाति की उन्नति का एक साधन बतलाया है।

जातीय जीवन को अविकल बनाये रखने के लिये भाषा तथा भाव की भान्ति जातीय वेश को बनाये रखना परमावश्यक है। इस सम्बन्ध में उनके वचन यह हैं:—

"देखिये; युरोपियनों को इस देश में आये सौ से कुछ ऊपर वर्ष हुए हैं; पर आज तक वे वैसे ही मोटे कपड़े आदि पहनते हैं जैसे अपने देश में पहनते थे। आप में से बहुत लोगों ने उन का अनुकरण कर लिया है। इसीसे तुम निर्बुद्धि ठहरते हो और वे बुद्धिमान् सिद्ध होते हैं। ऐसा अनुकरण करना किसी बुद्धिमान् का काम नहीं"।

स्वदेश गौरव बनाये रखना तो उनका सब से पहला और सच्चा मूल मन्त्र था। उन की बात २ में स्वदेश गौरव, स्वदेश-भक्ति झलकती है।

इस विषय में देखिये वे क्या लिखते हैं:— "अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही उलटे उनकी पेट भर निन्दा करते हैं"। इत्यादि, लिखते हुए वे प्रत्येक मनुष्य के लिये, अपने पूर्वजों के गौरव को बनाये रखना तथा हर प्रकार से देश सेवा में लगे रहना एक कर्त्तव्य बतला गये हैं।

आजकल जिस स्वराज्य की चर्चा भारतवर्ष के कोने २ में फैली हुई है, स्वामी जी ने तो कई बर्ष पहिले इस समस्या को देश के सामने रख दिया था।

वे विदेशीय राज्य के दोष दिखाते हुए लिखते हैं—"जब से गो आदि पशुओंको मारने वाले मांसाहारी, मद्यप, इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए हैं; तब से क्रमशः आर्य्यों के दुःखों की बढ़ती होती जाती है।" इस प्रकार आगे जाकर लिखते हैं:—"आर्यावर्त्त में विदेशियों का राज्य होने का कारण आपस की फूट, मत-भेद आदि आदि दुष्कर्म हैं।"

उपरोक्त अवतरण से पाठकों को विदित हो गया होगा कि जिस स्वराज्य की आवश्यकता भारत जनता को अब प्रतीत होने लगी है उसे स्वामी जी ने पहिले ही कैसे जान लिया था।

आजकल शान्तिमय असहयोग को स्वराज्य पाने का एक उत्तम साधन बतलाया जाता है। इसी साधन को स्वामी जी ने पहले से अपने स्पष्ट शब्दों में लोगों के सामने रख दिया।

इस प्रकार स्वामी जी ने सामाजिक सुधार की जो नींव बांधी उसके लिये भारत वर्ष का बच्चा २ चाहे वह किसी सम्प्रदाय का हो; ऋणी है।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषि ऋण अभी सिर पर है

ले०—श्रीमती सत्यवती मलिक देहली

संसार के अन्दर बहुधा देखा जाता है कि एक छोटी सी घटना से ही महत्व पूर्ण बातें हो जाती हैं अथवा एक छोटीसी घटना से ही मनुष्य के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है और मनुष्य की चित्त-वृत्तियां ठोकर सी लगने पर उसी क्षण बदल जाया करती हैं। किन्तु वह हृदय और वह आत्मायें विरली ही होती हैं जो कि उसी क्षण अपने आपको संसार पर न्योछावर करने को तैयार हो जाते हैं। कहा भी है:—

विरलाः पर कायरताः,
पर दुःखेनापि दुःखिता विरलाः।
"विरला सत्याग्रहिणाः,
पतितजनोद्धार मानसा विरलाः"

हमभी तो नित्य प्रति दुःखित अथवा पीड़ित जीवों कों अपनी आंखों के सामने देखती हैं, सैंकड़ों मरते हुये, कराहते हुये प्राणियों को, उन अनाथों का जिनका कोई आश्रय नहीं है। परन्तु यह सब जानते हुए भी कि आज हमारे ही भोगविलास के कारण, हमारी कुरीतियों के अटल बन्धनों से भारतवर्ष का बच्चा, बच्चा किस तरह दासता में जकड़ा हुआ है हमारे कानों के अन्दर जूं तक नहीं रेंगती।

हम यह जानते हुये कि जीवन अस्थायी है, सबने एक न एक दिन जाना है। गीता का प्रभावशाली उपदेश सुनते हुये भी अपने उसी रोने पीटने में लगे रहते हैं:।

परन्तु पाठकगण! विपरीत इसके जरा इस दृश्य को भी हृदय में अङ्कित कीजियेः—

"कि जिस समय प्यारी बहिन के प्राण-पखेरू उड़गये थे और इस दुख दुर्घटना से सकल परिवार के नेत्रों से अविरल अश्रुधारायें बहती थीं, रोने पीटने से हाहाकार मचा हुआ था, रो रो कर हिचकियाँ लेते २ माता की घिग्घि बन्ध-गई थी, और सर्व स्नेहीवर्ग पर शोक का सागर उमड़ आया था, उस समय एक दयानन्द ही था जो मृत भगिनीकी शैय्या के समीपवर्त्ती दीवाल से लगा हुआ अश्रुहीन नेत्रों से चुपचाप प्यारी बहिन के शव को एक-टक देख रहा था।

उसके चितकी गहरी चिन्ता को न पहिचान कर बन्धुओं ने उस पर बहुतेरे कटु कटाक्ष किये पिताने पाषाण हृदय कहा, यहां तक कि सदा प्रेम प्रदर्शितकरने वाली माता ने भी यही शब्द दोहराये परन्तु बालक दयानन्द के सम्मुख उस घटना ने एक ऐसी समस्या उपस्थित करदी थी कि जिसकी पूर्ति के लिये उनका चित्त चंचल हो उठा था।

जैसे वायुका वेग नौका के मुखको फेर देता है, जैसे विशाल चट्टान से टक्कर खाकर नदी का बहाव बदल जाता है ऐसे ही इस अदृष्ट पूर्व घटना को देखकर श्री दयानन्द की चित्तवृत्तियां अपने क्लिष्ट प्रवाह को क्रमशः बदलने लगीं।

विद्युतपात से कम्पित मनुष्य की भांति भयभीत दयानन्द सोचने लगे-अहो! मेरी बहिन की तरह सभी लोग एक २ करके अवश्यमेव विकराल काल के गाल में ग्रास बनेंगे। निश्चय मुझे भी उसी मार्ग का अनुसरण करना पड़ेगा। मृत्यु ऐसी अवश्यम्भावी है कि इससे छोटा बड़ा कोई भी जीव नहीं बच सकता। यह दुर्दिन जीवमात्र को देखना पड़ेगा। सच-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुच यह जीवन क्षण भंगुर है, जल बुदबुद्वत् चञ्चल है, तब तो कोई ऐसा ही उपाय करना चाहिये जिससे जन्म मरण के दारुण दुःख से मुक्ति लाभ हो, अमरजीवन की उपलब्धि हो।

दो अरणियों के मथन से जैसे अग्नि उत्पन्न हो जाती है, उचित वस्तुओं के मिश्रण और संघर्षण से जैसे विद्युत बहाव वह निकलता है ऐसे मृत्युघटना से संचालित दयानन्द के चित्त में चिरकाल के निरन्तर चिन्तनरूप संघर्षण से विवेक-विद्युत की रेखा का उदय हो गया, वैराग की ज्वलन्त ज्वाला उछलने लगी जिसने प्रकट होते ही दयानन्द की चित्तभूमि से सांसारिक वासनाओं के घासपात को भस्मसात् करना आरम्भ कर दिया कुल की रीति के अनुसार पांच दिन तक सहानभूति करने वाले लोग आते जाते रहे और घर में रोना धोना बना रहा, परन्तु दयानन्द की हृदय स्रोत को मृत्यु के भय और वैराग्य की आगने इतना शुष्क कर दिया था, कि लोगों के धिक्कारने पर भी उनकी आँख गीली नहीं हुई। वे रात दिन चुप्पी साधे अपनी ही चिन्ता में चूर रहते। बड़ी रात बीत जाने पर भी जब वे न सोते तो उन्हें बन्धुजन सोने के लिये प्रेरणा करते परन्तु भला इतनी चिन्ता, इतनी अशान्ति में नींद कहां? वे बिछौने पर पड़े २ चौंक उठते, इस मृत्यु व्याधि के नाश की ओषधि कहां मिलेगी? अमर जीवन के लिये कौन से उपायों का अवलम्बन करना चाहिये? मुक्ति मार्ग में किस का भरोसा किया जाय? इत्यादि विचारों में दिन रात निमग्न रहते। अन्त में दयानन्दजी ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि जैसे भी हो मुक्ति हस्तगत करूंगा और मृत्यु के दुख से छुटकारा पा जाऊंगा।

इस धारणा के साथ ही उनके मन से संसार का अनुराग दूर हो गया, उनका चित्त स्वस्थ हो गया, और उस में उत्तरोत्तर इतर विचारों की उन्नति होने लगी। तो मैंने बतलाया कि महात्माओं के महत्व को सम्पादन करने वाली प्रायः घटनायें ही हुआ करती हैं। बुद्धदेव को भी मृतक की ऐसी ही घटना देख कर वैराग्य उत्पन्न हुआ था, परन्तु उपर्युक्त घटना से जो वैराग्य दयानन्द को हुआ, विरक्ति की जो आग उन के भीतर प्रकट हुई, उस में एक विशेषता थी। वह यह कि उन्होंने उसी समय धारणा कर ली, कि चाहे जो हो मैं अब इस वैराग्य अग्नि पर सांसारिक स्नेह, और सम्बन्ध का गीला इन्धन और हरी घास डाल कर इसे धूमायमान नहीं बनाऊंगा।

प्रिय बहिनों! यदि यह ही भाव और धारणायें ऋषि दयानन्द के अन्दर न उत्पन्न होतीं तो हम स्त्री जाति की दुर्दशा, तथा भारत की हीनावस्था को देख कर आंसू कौन बहाता? विधवाओं व अकाल पीड़ित अनाथों को देख उन के दुःखों को कौन निवारण करता। अछूतों को कौन गले लगाता? इस सोई हुई हिन्दू जाति की आंखें कौन खोलता?

महान आत्मा दयानन्द ने अपनी जीवनी को उन सामाजिक बुराइयों के मिटाने में लगा दिया, जिन्होंने काले मेघों की नाईं भारतवर्ष के जातीय जीवन में अन्धकार कर दिया था। जिन्होंने उस शान्तिमय युग को उड़ा दिया था जब कि वेदों के सिद्धान्तों के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता था, और जब पुरुष स्त्रियां जीवन के प्रत्येक कार्य्य में एक दूसरे से सहयोग करते थे, प्रत्येक कार्य्य में स्त्रियां सब भाग लेतीं थीं। किन्तु अविद्या के कारण वह दृश्य पलट गया और बालविवाह, पर्दे की प्रथा, निरक्षरता, आदि अनेक कारणों से स्त्री जाति का अधःपतन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होगया। तब से ही यह कपोल कल्पित वाक्य बने कि—"स्त्री शूद्रो नाधीयताम्" तथा—"शूद्र गंवार ढोल अरु नारी। यह सब ताड़न के अधिकारी॥" तभी से हमारी सारी स्वतन्त्रता छीनी गई और हमें देवियों की पदवी से जूती व शूद्रों की पदवी मिली थी। किन्तु उस लगोंट बन्द सन्यासी ने स्त्री जाति की स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रथम आवाज़ उठाई। स्वामी जी के हृदय में स्त्रियों के प्रति अतिशय सम्मान भाव था, उस महामुनि के विमल मन में मातृ मण्डल का कितना महत्व भरा हुआ था उसका पूर्ण प्रकाश इस कथा से प्रतीत होता है—एक दिन स्वामी जी कुछ पण्डितों के साथ भ्रमण को जा रहे थे। मूर्तिपूजा पर ही युक्तियां प्रत्युक्तियां चल रही थीं, मार्ग में ग्रामीण लोगों का एक देवालय आ गया, उस समय वहां बहुत से बच्चे मिल जुल कर स्वच्छन्दता पूर्वक खेल रहे थे। स्वामी जी ने एकाएक सिर नीचा कर दिया और फिर आगे चल पड़े। एक साथी पण्डित ने कहा कि स्वामी जी! प्रतिमा पूजन का चाहे खण्डन करो पर देव बल का भी प्रत्यक्ष प्रभाव है जो कि देवालय के सामने आप का सिर आप ही नीचा होगया! ऋषि यह सुनते ही उन्हीं पावों पर खड़े हो गये और उन बच्चों में से एक चतुर्वर्षीया विगत वस्त्राबालिका की ओर संकेत करके बोले—"देखते नहीं हो यह मातृ शक्ति है कि जिस ने हम सब को जन्म प्रदान किया है।" देखिये क्या ही श्रद्धा का भाव है। ऋषि ने बालविवाह, पर्दा, निरक्षरता को दूर किया, और मनुस्मृति से एक गहरी सचाई को प्रकट किया जब कि उन्होंने बतलाया—

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैताश्चन पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः॥

ऋषि दयानन्द के इस उपकार भाव का जो उन्होंने स्त्री जाति पर किये हैं, वर्णन करना मेरी सामर्थ्य से तो बाहर है, किन्तु मुझे शोक से कहना पड़ता है—

"ऋषि ऋण अभी सिर पर ही है"

अर्थात हमने अभी तक ऋषि की दीक्षा का पालन नहीं किया। अभी तक हमारे आर्य्य गृहों के अन्दर पञ्चयज्ञों का पालन नहीं होता, अभी तक हमारे गृहों के अन्दर संस्कारों का अभाव है, अभी तक वर कन्या के गुण, कर्म, स्वभाव तथा आयु, का ध्यान नहीं किया जाता, अभी तक हमने अपनी कन्याओं को पूर्ण शिक्षा देने का प्रयत्न नहीं किया। अस्तु।

प्रिय भगिनियों! हमने आज तक ऋषि ऋण को भुला कर कृतघ्नता का पाप किया। आज तक हम अपने कर्त्तव्य से विमुख रहीं परन्तु पिछली भूल और पाप के प्रायश्चित्त के लिये—आइये! आज शिवरात्रि के दिन शिवरूप भगवान महिमा महान के ऊपर विश्वास रखती हुई ऋषि ऋण की पूर्ति के लिये दृढ़ व्रत धारण करें, और प्रतिज्ञा करें कि हम वेद मन्त्रों की ध्वनि संसार के प्रत्येक स्थान में तथा प्रत्येक व्यक्ति के कानों तक पहुंचावेंगी और इस शुभ मिशन की पूर्ति में अपना सर्वस्व "स्वाहा" कर देने को फ़खर समझेंगी और जहां तक हो सकेगा अपने गृहों को पूर्ण आर्य्य गृह बना कर दिखायेंगी।

आर्य्य बहिनों! आज शिवरात्रि का वह शुभ दिन है, जब कि मूल शङ्कर के मन में दयानन्द बनने की इच्छा उत्पन्न हुई थी। दयानन्द के हम कितने कृतज्ञ हैं इस विषय को कथन करना सूर्य्य को दीपक दिखलाने के समान हैं। शिवरात्रि इन अर्थों में आर्य्य समाज का जन्म दिन है क्योंकि यदि दयानन्द के मन में इस रात शिवलिङ्ग पर चूहे को चढ़ते देख शुभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाव न उत्पन्न होते तो आर्य्य समाज का आज नाम दिखलाई न देता। अतएव आवश्यक है कि हम दयानन्द के वैदिक मिशन की पूर्ति के लिये तन, मन, धन से निडर और निर्भय होकर प्रयत्न करें। और परमात्मा से प्रार्थना करें कि—हे सहस्रबाहु परमात्मन्! हम ने आज यह दृढ़ व्रत धारण किया है, परन्तु हम निर्बल हैं इस लिये आप से ही बल के लिये याचना करती हैं, कि हे व्रतपते परमात्मन्! हमारी आत्माओं को बलवाली कीजिये ताकि हम इस प्रतिज्ञा का पालन करसकें और संसार में वैदिक "ज्योति" को फैला कर अन्धकार का नाश कर सकें।

विचार प्रवाह

दयानन्द जन्म शताब्दि

ऋषि दयानन्द जी की जन्म शताब्दि धूम धाम और सफलता से मनाने के लिये बड़ी २ तैय्यारियां हो रही हैं। इस वर्ष से दयानन्द सप्ताह मनाया जा रहा है और स्थान २ पर नर व नारी इकट्ठे प्रति दिन एक सप्ताह तक कथा और नगर कीर्तन करने का प्रबन्ध कर रहे हैं। सब से अधिक इस क्षेत्र में काम करने वाले हमारे पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज हैं जिन्हों ने इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिये कई प्रकार की प्रान्तिक सभायें बना इसे उत्तेजना देना निश्चय कर लिया है। पञ्जाब में यह ऋषि-बोधोत्सव का सप्ताह बड़े संगठन और श्रद्धा से मनाया जा रहा है।

किन्तु जन्म शताब्दि मनाने का स्थान मथुरा नगरी है जहां पर दयानन्द जी ने वह अध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की थी जो उनके नामको हमेशः के लिये अमर कर गई है यद्यपि मथुरा नगरी संयुक्त प्रान्त का हिस्सा है परन्तु शदोब्दि महोत्सव को सफल बनाना केवल यू. पी. वालों का काम नहीं है। इस महोत्सव में समग्र आर्य्य समाजियों को भाग लेना चाहिये और उसे सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिये चाहे वह पञ्जाब वासी हो चाहे बम्बई निवासी चाहे अफ्रीका इत्यादी उपनिवेशों में रहने वाला हो। यदि दैव वश शताब्दि महोत्सव असफल होजावे तो केवल संयुक्तप्रान्त का ही नहीं वरन् सब का मुंह काला होगा। इस लिये भिन्न २ परिषदों के पंड़ितों को भी इस कार्य्य में जी जान से लग जाना चाहिये और धन एकत्र करने में और आर्य्यों की संख्या बढ़ाने में प्रयत्नशील होकर सहयोग देना चाहिये ताकि यह शुभ काम सब के सम्मिलित प्रयत्न से सफल हो जावे।

स्तूप

टंकारा में जन्म शताब्दि के उपलक्ष्य में दयानन्द स्तूप बनाने का निश्चय हो चुका है। जो लोग प्राचीन भारत का इतिहास पढ़ चुके हैं उन्हें बहुत अच्छी तरह ज्ञात होगा कि स्तूपों की उपयोगिता कितनी होती है। यदि आज अशोक के स्तूप और स्तम्भ न होते और सिक्के इत्यादि सहायक न मिले होते तो भारत की गौरव पताका कैसे उड़ती और भारत के गौरव सम्बन्ध में विदेशियों के भ्रम मूलक विचार कैसे नष्ट किये जाते? स्तूप एक प्रकार का ऐतिहासिक मेमोरियल (यादगार) है। इस का मूल्य ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत है क्योंकि भारतीय इतिहास की रचना ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसी पर है इस अवस्था में वर्तमातभारत के सब से श्रेष्ठ और सब से प्रथम निर्माता की जीवन घटनाओं की तिथियां, मुख्य २ स्थान तथा जन्म स्थान इत्यादि के सुरक्षित करने के लिये स्तूप बनाना मूर्त्ति पूजा नहीं है। ईसामसीह के अस्तित्व को ही लोगोंने (Mithical) कल्पित घटना कहना शुरु कर दिया था अतः कुछ काल पीछे दयानन्द जी के सम्बन्ध में भी यह भाव हो जावें तो क्या आश्चर्य्य है। पंडित लेखराम जी के अनथक परिश्रम करने पर भी ऋषि की जन्म भूमि का निश्चय नहीं हुआ था परन्तु अब टंकारा का पता चला है। इस बात को सुरक्षित करने के लिये टंकारा में स्तूप बनाना आर्य्य समाज के लिये विवादास्पद बात नहीं होनी चाहिये, बल्कि आर्य्य समाज के प्रवर्तक की स्मृति आर्य्य समाज की स्थिरता और अस्तित्व है यह समझना चाहिये। न कि मूर्त्ति पूजा कह कर निरादर करना। मूर्त्ति पूजा भी पाप नहीं है वरन मूर्खों का काम है। जड़ में जो गुण नहीं हैं उन की भावना करलेना मूर्खता है किन्तु महात्मा और देश निर्माताओं के चित्रों, मूर्त्तियों और उन के यादगार में स्तूपों का बना लेना और उन का उचित मान करना जातीय गौरव को बढ़ाता और दिलों को उत्साह और आत्मावलम्ब, आत्म-सम्मान से भर देता है इसलिये इन चीजों को व्यर्थ न समझ कर इधर भी आर्य्यों का ध्यान होना चाहिये। अतःजन्म शताब्दि तक स्तूप बनाने के लिये पर्य्याप्त धन एकत्र कर देना और आर्य्य सभासदों की संख्या दुगनी करना प्रत्येक आर्य्य का कर्तव्य होना चाहिये।

दयानन्द वेद विद्यालय

हर्ष का विषय है कि इतने दिनों बाद अब आर्य्य जनता को होश आया है और गुरुकुल विश्वविद्यालय में वेद विद्यालय पृथक खोला गया है जो कि आर्टिस कालेज से भिन्न है। यों तो गुरुकुल से सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करके स्नातक निकलते रहे हैं परन्तु वैदिक सिद्धान्तों पर ही विशेष ज्ञान प्राप्त करके वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन में समय लगाना उनके लिये असम्भव था। इस वेद विद्यालय के खुलने से यह त्रुटि दूर हो गई है। हम समझते हैं कि इस विद्यालय में वेदांगों उपांगों उपनिषदों और आर्षग्रन्थों का ही अध्ययन होगा अतः उसके पूर्ण ज्ञान के लिये एक विशेष प्रकार के पुस्तकालय की आवश्यक्ता होगी। वेद लाइब्रेरी बनाना इस विद्यालय की उपयोगिता को बढ़ाना है। जिस प्रकार कैसा भी कारीगर हो यदि उसके पास साधन न हो तो वह कार्य्य नहीं करसक्ता इसी प्रकार वेद पुस्तकालय न बनने से वेद विद्यालय का काम नहीं चल सकेगा इसलिये शताब्दि महोत्सब मनाने के बाद भी अर्य्य जनता को सोजाने का समय न होगा इस पुस्तकालय के लिये फण्ड इकट्ठा करके देना प्रत्येक का कर्त्तव्य है और होगा अतः वेद विद्या के प्रचार के पक्षपाती लोग अभी से इस तरफ ध्यानदेवें और वेद विद्यालय को सफल बनाने का यत्न करें।

ऋषि दयानन्द की एक और क्षेत्र में विजय

डाक्टर जोसिया ओल्डफील्ड का विश्वास है कि यदि इङ्गलैण्ड निवासियों के भोजन में अन्न, फल, दूध मक्खन और अण्डे का बाहुल्य हो और मांस न हो तो अङ्गरेज़ जाति के बल और वीर्य्य की वृद्धि और जाति की रक्षा बहुत अच्छी तरह हो सक्ती है। मैंचेस्टर गार्डियन लिखता है कि अपने इस विचार की पुष्टि के हेतु उन्होंने चारों तरफ योरप में दूत भेजकर पता लगाया है कि कृषकों के भोजन में मुख्यतया क्या २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वस्तुयें होती हैं ? भिन्न २ जातियों के जातीय भोजन क्या हैं ? उन में मांस का क्या भाग रहता है ? और उन जातियों का बल किस भोजन के आधार पर है ? इसके उत्तर में जो भिन्न जातियों ने बतलाया वह यह है—

१—आस्ट्रिया ने उत्तर दिया कि उस की अधिकांश जनता गांवों में रहती है और किसान लोगों में अन्न शाक भाजी इत्यादि ही भोज्य पदार्थ होते हैं अतः यह कहा जा सक्ता है कि आस्ट्रियन जाति का बल अन्न फल भाजी पर बना हुआ है।

२—चिली के पदाधिकारियों ने उत्तर दिया कि दक्षिण और मध्यवर्त्ती चिली के कृषी प्रधान देशों में गेहूं का आटा, दालें, ज्वार ही मज़दूरों की मुख्य खुराक हैं मांस बहुत कम वर्त्ता जाता है। यह प्रथा कई पीढ़ियों से चली आती है।

३—जर्मनी के दूत ने पता दिया कि जर्मन जाति के रोज के भोजन में वर्त्तमान में मांस का भाग आवश्यकीय नहीं है।

४—नार्वे के मन्त्री ने उत्तर दिया कि वहां के लोगों के भी भोजन में मांस का भाग आवश्यकीय नहीं है।

५—पोचुंगाल में भी मांस का भाग गरीबों के भोजन में आवश्यकीय नहीं है।

६—कहा गया है कि रूस में मांस का खाना बहुत ही कम है। वहां पर साढ़े चार महीने लेन्ट के त्यौहार में प्रत्येक बुध वारों और शुक्र वारों को व्रत होता है उस समय मांस अण्डे दूध और मक्खन का खाना त्याज्य है।

७—रूमैनिया के किसान मांस भोजन बिलकुल नहीं करते और सर्विया की कृषक जाति जो कि ८० या ८५ फी सदी है केवल अन्न और शाक पर जीवन निर्वाह करती है।

८—स्पेन और जापान में भी मांस का भाग भोजन में आवश्यक अंग नहीं है।

इन उपरोक्त खोजों से यह स्पष्ट ही है कि मांस से बल नहीं बढ़ता और संसार की मुख्य और बलवती जातियां मांस को भोजन का न तो आवश्यकीय अङ्ग ही समझती हैं और न उस के आधार पर रहती हैं। बड़े खेद की बात है कि मांसाहारी देशों में तो इस प्रकार मांस को हटाने के लिये प्रयत्न किया जा रहा है और वह ऋषि दयानन्द के बताये पथ पर धीरे २ आरहे हैं परन्तु आर्य्य समाज का एक भाग अपने को ऋषि के अनुयायी बताते हुए उन की स्पष्ट आज्ञा का विरोध करके मांस का प्रचार करें और मांस खाने से वीरता आती है इस का समर्थन करें। यदि मांस खाने से वीरता आती है तो शेर का मांस खाना चाहिये ताकि मांस प्राप्त करने में बल की परीक्षा भी हो विचारे गरीब बकरे की गर्दन पर छुरी चलाकर वीरता प्राप्त करना क्या है।

ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट रीति से मांस और मद्य का निषेध किया है। मांसाहारियों के हाथ का न खाना चाहिये और उन के साथ से आर्य्यों को भी यह कुलक्षण न लग जावें यह भय बतलाया है। क्या ही अच्छा हो कि हमारे मांसाहारी भूले भटके भाई आज शिवरात्रि के उपलक्ष्य में अहिंसा का व्रत लेते हुये मांसका परित्याग करके निरामिश भोजी बनने का यथाशक्ति प्रयत्न करें और दयानन्द जन्म शताब्दि के शुभ अवसर पर यह घोषणा की जावे कि कोई भी आर्य्य नाम धारी नर व नारी जन्म शताब्दि के बाद मांस भोजन नहीं करेगा यदि कोई प्रमाद करे तो उसे जाति व पंक्ति से च्युत होना पड़ेगा। यदि आर्य्य समाज जन्म शताब्दि तक यह कलङ्क मिटा न सका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो समझो कि वह मुर्दा है। मांसाहारी विदेशी जातियां भी अपने त्यौहारों पर मांस परित्याग करती हैं और वाममार्गी भी इसे दोष न मानते हुये भी इससे निवृत्ति को महाफल बतलाते हैं तो क्या हमारी वर्तमान आर्य्य जाति इतनी पतित है कि वह अपने सब से बड़े त्यौहार पर इस मांस भक्षण के कुलक्षण को दूर न कर सकेगी ?

दयानन्द दलितोद्धार मण्डल

अछूत कहलाने वाली पद दलित जातियों के उद्धार का चारों ओर कोलाहल हो रहा है और कांग्रेस की वेदी पर से भी यह आवाज उठ रही है कि अछूतों का उद्धार हुए बिना स्वराज्य न मिलेगा अतः पहिले इनको उठाओ। परन्तु सबसे प्रथम इसक्षेत्र में बीज डालने वाला महर्षिदयानन्द ही था और आर्य्यसमाज ने ही इस काम को पहिले पहिल उठाया और इसी वेदी पर पंडित लेखराम जी बलिदान हुए

इसी वेदी पर अभी आर्य्य वीर रामचन्द्र जी ने जम्मू में प्राण अर्पण किये-जिसका ब्योरा समाचार पत्रों में आचुका है।

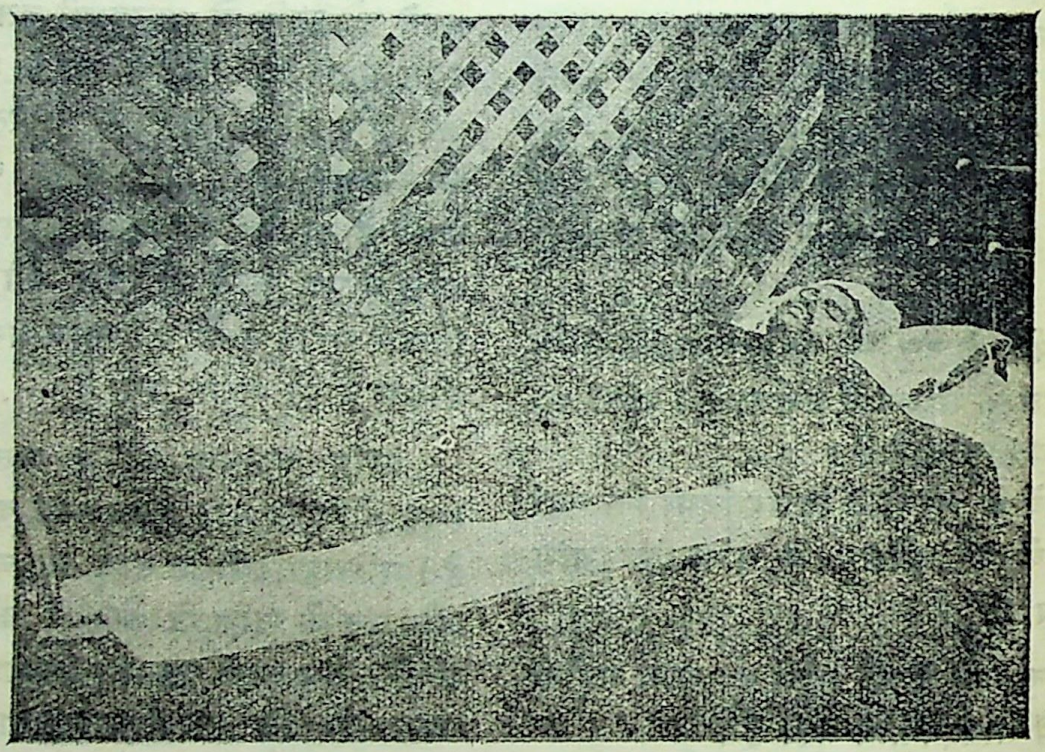

आर्य्यबीर रामचन्द्र मृत्यु शय्या पर

अछूतों को शुद्ध कर देना ही पर्याप्त नहीं है वरन् उनके जीवन को पलटा देकर उनमें वैदिक धर्म का प्रचार क्रियात्मक रूप से करके उनकी काया पलट देना ही आर्य्य समाज का काम है। दिल्ली की सार्वदेशिक सभा ने अपने हाथ में दलितोद्धार का काम लिया हैं किन्तु उच्छृंखल जोश में आकर अछूतों के हाथ का खालेना या उनके घर का पका हुआ खालेना ही पर्याप्त नहीं। खानपान करना और बात है। विवाह बन्धन में जकड़ लेना दूसरी बात है। शास्त्रों में लिखा है कि सवर्ण व्याह हों, कुल और शील देखाजावे पिता का कुल न हो माता का गोत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न हो इत्यादि बातें तो तभी होसकेंगी जब कि शुद्ध किये हुए लोगों की गुण और कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की जावे उन्हें गोत्र दिया जावे और जात पांत का ख्याल छोड़ दिया जावे। जब तक इन उपरोक्त बातों पर ध्यान न दिया जावेगा, तब तक अछूतों के हाथ का भोजन कर लेने मात्र से उन की स्थिति ऊंची न उठेगी आशा है कि सभा इस ओर ध्यान देगी।

कृतज्ञता

ज्योति के पाठकों को ऋषि दयानन्द के स्मृति में विशेषांक निकालने की सूचना दी गई थी। उस समय दीपावली पर निकालने का विचार था किन्तु अन्य कई कार्य्यों में व्यग्र होने के कारण हमने अपनी असमर्थता प्रगट की थी और शिवरात्री पर विशेषांक निकालने का वादा किया था। परम पिता परमात्मा का बड़ा धन्यवाद है कि आज हम अपने वायदे को पूरा कर सके हैं। इस दीक्षा रात्रि के अङ्क में बड़े २ प्रसिद्ध आर्य्य भाषा के लेखकों के लेख हैं जो विद्वत्ता पूर्ण और रोचक हैं। हम इन सज्जनों के बड़े कृतज्ञ हैं। जिन्हों ने अपनी महती कृपा से आज ज्योति के विशेषांक को निकालने में सहायता दी है। इसमें हमने कई चित्र भी देने का प्रयत्न किया है। यह विशेषांक अच्छा या बुरा जैसा भी है पाठकों के चरणों में भेट किया जाता है आशा है कि दयालु पाठक इसकी त्रुटियों पर विशेष ध्यान न देकर इसका आदर करेंगे और प्रत्येक आर्य्यसमाजी इसे पढ़ने और अपने पास रखने में अपना गौरव समझेगा।

जात पांत तोड़क मण्डल

आर्य्य समाज में कभी२ कई विचित्र बातें होती रहती हैं जिन से उद्देश्य के विपरीत फल प्राप्त होता है, इन में एक बात यह है कि एक नया क्लास बना है जिस का नाम जात-पांत तोड़क-मण्डल है। जात पांत को (ignore) करना अर्थात् जात का ख्याल छोड़ देना और बात है और जात तोड़ने के लिये ही जान बूझ कर अनमेल विवाह करना और बात है। विवाह सम्बन्ध में वर्ण देखना चाहिये और कुल और शील का ख्याल रखना चाहिये चाहे वह जात के बाहर मिले या भीतर इस का ख्याल न हो। जाति बन्धन बड़ी खराब चीज़ है और सैंकड़ों और हज़ारों गृहस्थ इसी बन्धन के कारण नरक धाम बन गये और बन रहे हैं परन्तु दूसरी तरफ़ जात तोड़क भी वैसा ही रोग है जिस के कारण भी गृहस्थ दुःखमय बन चुके हैं। आर्य्य समाज ब्राह्मणों को बुरा कहती है क्योंकि बहुत से ब्राह्मण कर्म से ब्राह्मण नहीं रहे परन्तु इस का यह मतलब कदापि नहीं कि जन्म से ब्राह्मणों में कर्म से ब्राह्मण हैं ही नहीं। अछूतों में भी साफ़ सुथरे लोग हैं जो अछूत नहीं कहे जासक्ते और कुलीनों में भी गन्दे लोग हैं। जाति पांत के बन्धनों से पीड़ित होकर जाति पांत तोड़क मण्डल बना कर नई जाति बनाना उचित नहीं। इस (Reaction) प्रतिक्रिया की (follies) मूर्खताओं से आर्य्य जाति को सर्वथा बचाना चाहिये और कुल, शील और वर्ण के अनुसार ही विवाह की प्रथा को चलाना चाहिये।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अतिशय मनोहर सामाजिक शिक्षाप्रद उपन्यास।

भागवन्ती।

छप कर हाथों हाथ निकल रहा है। इसके रचियता हैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेकख श्रीयुत् सुदर्शन। जिन लोगों ने कभी माधुरी, सरस्वती, तथा ज्योति में उनकी कहानियों का पाठ किया है, वह जानते हैं कि उनकी लेखनी में कैसी प्रतिभा है। यह उपन्यास उन के दो साल के परिश्रम का अद्भुत फल है। यदि आपको सादी भाषा के सौन्दर्य्य का शौक है, स्त्री जाति की अद्वितीय आकाशभेदी शक्ति देखने का चाव है, अथवा आप हिन्दू जाति के अपनी माताओं, बहिनों, बेटियों पर अकथनीय अत्याचारों से परिचित होना चाहते हैं या बिवाह की प्रचलित प्रथा की बुराइयां देखना चाहते हैं तो भागवन्ती पढ़िये। इस उपन्यास का प्रत्येक परिच्छेद प्रत्येक परिच्छेद का प्रत्येक पृष्ट, और प्रत्येक पृष्ट की प्रत्येक पंक्ति हृदय को भेदने वाली है। यह उपन्यास ऐसा चित्ताकर्षक है, कि पढ़ते समय खाना पीना सब भूल जाताहै। पाप और पुण्य के दो मार्ग बड़ी खूबी से दिखाये गये हैं। हर एक स्त्री पुरुष को इस की एक २ कापी मंगवानी चाहिये।

मूल्य १॥) रेशमी जिल्द २) रु०

नारायण दत्त ऐण्ड संज़

बुकसेलरज़ लोहारी गेट,

लाहौर।

देवियों के लिये नवीन पुस्तकें

आत्मविजय

अभी छप कर तैयार हुआ है दो मास में छ-सौ प्रतियां बिक चुकीं महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को बड़ी सरल भाषा में वर्णन किया गया है। देवियों के लिये बड़ा शिक्षाप्रद उपन्यास है। मूल्य १०० पृष्ट से अधिक का केवल ॥।) आने।

अनाथ सरला

दिसम्बर मास में सचित्र स्त्री शिक्षा का महत्वपूर्ण उपन्यास छप कर तैयार हुआ है। इसमें धनिकों के अत्याचारों को पढ़ कर आँसू टपकने लगते हैं मूल्य १५० पृष्ट से अधिक का ॥।)

सूचीपत्र मुफ़ मंगाइये हमारे कार्य्यालय के स्थायी ग्राहक बनिये। मैनेजर

विश्व साहित्य भण्डार मेरठ शहर।

❀ पाकेट इत्रदान ❀

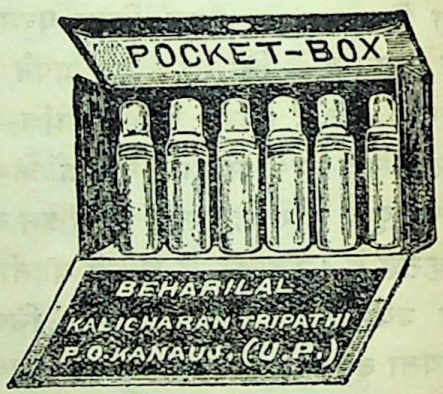

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और आफिसरों को नजर में देने के लिये नई वस्तु है। विवाह व शादी वगैरः शुभ कार्यों में भी मैफिल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं १ पाकेट इत्रदानफैंसी शी० ६ मय इत्र की ४)
नं २ ,, ,, ६ ,,
नं ३ ,, ,, ६ ,,

इसके अलावा हर एक किस्म की इत्र तेल, तमाखू इत्यादि सामानभी हमारे कार्यालय से मंगवा लीजियेगा॥

पता- बिहारी लाल काली चरण त्रिपाठी,
पो कनौज सिटी (Kanouj City.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्याओं व स्त्रियों के लिये अपूर्व सचित्र पुस्तक

जल्द मंगाइये।

आर्ष पाठावलिः

प्रथम भाग।

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित

यह पूना चित्रशाला प्रेस में छपवाया गया है। इस में महर्षि दयानन्द जी के बचनों और उपदेशों को बच्चों के लिये उपयोगी छोटे २ पाठों की माला में परोया गया है। चित्र भी बड़े खूबसूरत और मनोरंजक हैं। प्रथम चित्र रंगीन है अध्यापिका बच्चों को "ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्या प्रेमी शूद्र और पोप की बहस का चित्र भी बड़ा रोचक है। प्रत्येक पाठ में चित्र हैं और पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं, कागज़ भी बढ़िया है, इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। सजिल्द का मूल्य ।॥) बिना जिल्द ॥), इकट्ठा लेने वाले दुकानदारों को १०० जिल्द पुस्तकें ६२॥) नकद पर मिलेंगी और बगैर जिल्द की १०० पुस्तकें ५०) नकद पर। डाक व्यय अलग। शीघ्र खरीदो।

यह तथा अन्य वैदिक धर्म्म सम्बन्धी पुस्तकें मिलने का पता—

पं० वजीर चन्द शर्म्मा अध्यक्ष,

वैदिक पुस्तकालय, लाहौर रोड़,

लाहौर।

पान शृंगार गोली

यह गोलियां शुद्ध देशी मसालों से तय्यार की गई हैं। विदेशीय जीनतान, टिन्चो, सेन सेनगम, शेसीनतान से कहीं बढ़कर अच्छी हैं। पान के साथ खाने से अत्यन्त आनन्द आता है; मुंह की दुर्गन्ध दूर होती है तथा खांसी को फायदा भी है। अतएव मंगाकर परीक्षा करिये। ३५ गोली फी शी० ⁄) ६५ गोली ⁄) २८० गोली ॥) ६०० गोली १) है। थोक खरीदार व्योपारियों को ३०) रु० से भेजी जावेगी।

पान का खुशबूदार मसाला

बाजार से पान लगवाकर खाने में वास्तविक आनन्द नहीं आता। अतएव हमने नए ढंग और युक्तियों से यह मसाला तयार किया है। पान पर केवल ६ मासा रखकर खाइये। प्रत्येक समय ताज़े और सुगन्धित पान जब जी चाहे तब मसाला डाल कर खाइये। दाम फी डिब्बा ।⁄) बड़ा डिब्बा ॥⁄)

और भी मंगाइये।

इत्र केवड़ा, गुलाब, हिना, मोतिया, खस, पानड़ी, चम्पा, मौलश्री वगैरः दर १) फी तोला से १०) रु० तक। तेल वेला, चमेली, सन्तरा, मसाला, इलायची दर २) सेर से ८) रु० सेर तक। तमाखूपत्ती १॥) २) ४) सेर दाना तमाखू २॥) ३) ४) ८) १६) रु० सेर तक है।

पता—देवीप्रसाद श्यामलाल अत्तर वाला,

पो० कन्नौज।

यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुख्य पत्र ।

॥ आर्यमित्र ॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति बृहस्पतिवार को आगरा से प्रकाशित होता है ।

सम्पादकः—

पण्डित हरिशङ्कर जी शर्मा "कविरत्न"

यदि आप वैदिकधर्म प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियें पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्य जगत् के समाचार जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही—

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये,

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है ।

पता—आर्यमित्र आगरा ।

तुम्हारे घर के धन दौलत की रक्षा के लिये चौकीदार की ज़रूरत है परन्तु घर में रहने वालों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये एक अनोखे चौकीदारः—

अमृतधारा की आवश्यकता है।

श्रीस्वामी नित्यानन्द जी महाराज राजउपदेशक ने शान्ति कुटी शिमला से लिखा थाः--

"आपकी दवाई अमृतधारा को मैने और अन्य सज्जनों ने सेवन करके देखा है सचमुच रामवाण औषधि है। जिन रोगों का आपने वर्णन किया है उनमे से कुछ पर सेवन किया तो जैसा कि लिखा है, वैसा ही पाया।। मेरी सम्मति में प्रत्येक मनुष्य के पास और हर गृह में अवश्य रहनी चाहिये" ऐसे ही

२५ हज़ार सार्टीफिकेट मौजूद हैं।

विस्तृत हाल जानने के लिये रिसाला "अमृत" मुफ्त मंगाकर देखिये, ⁻) के टिकट भेज "बड़ा अमृत" मंगवा सकते हैं

सावधान! नक्कालों से बचे रहना। बहुत से लोग इस से मिलते जुलते नाम रखकर पबलिक को धोखा दे रहे है। वस्तुतः इस के आविष्कारकर्ता श्रीमान् कवि विनोद पं० ठाकुरदत्त जी के सिवा इसके रहस्य को कोई नहीं जानता है।

मूल्य प्रति शीशी २॥ आधी शीशी १।) और नमूना ॥) सेवन विधि पत्र प्रत्येक भाषा में मिल सकता है।

मैनेजर—अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन, अमृतधारा रोड़, अमृतधारा डाकखाना लाहौर॥

पत्र व्यवहार का पता--'अमृतधारा लाहौर'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य।

कोषकी कथा—सचित्र पुस्तक में Cell का सरलभाषा में पूर्ण परिचय दिया है। प्राणिशास्त्र के विषय में हिन्दी में ऐसी सरल पुस्तकें निकलना अच्छीबात है। यह पुस्तक प्राणिशास्त्र के छात्रों के लिए बड़ी सहायक होगी। मू०॥)

श्रीहर्ष—पुस्तक के पढ़ने से मालूम हो जाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मालूम होती हैं। बंसखेर तथा मधुवन के ताम्रपत्र तथा श्रीहर्ष के हस्ताक्षर इसकी उपयोगिता को बढ़ाते हैं। बढ़िया छपी पुस्तकहै मू०॥

अवताररहस्य—अर्थात् भारतीय तथा युरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समाक्षा इस पुस्तक में बड़ी खोज तथा परिश्रम से तुलनात्मक विवेचन करते हुए अवतारों का रहस्य समझाया है जो प्रत्येक जिज्ञासुको पढ़ना चाहिए। इसमें २५ प्रकरण हैं तथा भाषा शास्त्र की उत्पत्ति, आर्य्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, युगलक्षण इत्यादि विषयोंपर विवेचन किया है। सजिल्द बढ़िया छपी पुस्तक मू०॥=)

तुलनात्मक धर्म्मविचार मू० १) गुजराती हिन्दी शब्दकोष मू० ३)। आठ आने जमा करने वालों को इन स्वल्प मूल्य की पुस्तकों पर दो आना रुपया कमीशन दिया जायगा। अतएव स्थायी ग्राहक बनकर लाभ उठाएं। इन मालाअ में समुद्रगुप्त, चीनकी संस्कृति, नीति विवेच इत्यादि २ पुस्तकें छपरही हैं।

मुफ्त—यदि आप इन पुस्तकों को विनामूल्य लेना चाहें तो दो पैसे के टिकट भेज हमसे नियम मंगालीजिए।

अन्यपुस्तकें।

सृष्टिविज्ञान २ शरीरविज्ञान ।≡) ब्रह्मयज्ञ ॥।) गीतासार ।= त्रिदेवनिरूपण ।-) आत्मस्थान विज्ञान -) दुर्गा ।=) प्रेमपूर्णिमा २) इनके अतिरिक्त सब प्रकार की पुस्तकें तथा मासिक सूचीपत्र मिलने का पता **जयदेवब्रदर्स बड़ोदा**

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हनुमान्प्रसाद के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Regd. No. L. 1240

वर्ष ३] चैत्र १९७९—अप्रैल १९२३ [खण्ड ३, संख्या १२

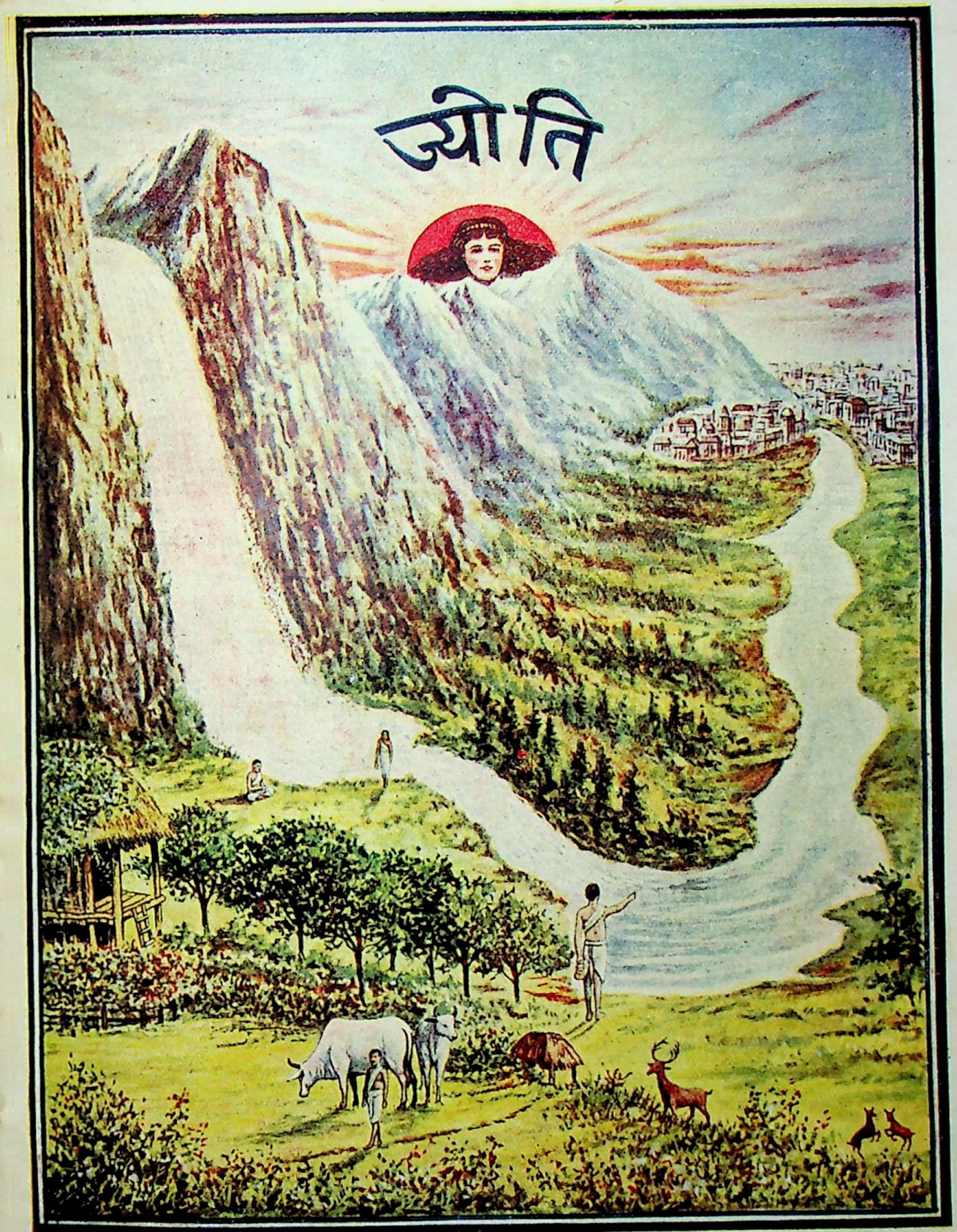

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ
१—ईश प्रार्थना [कविता] ले- श्रीयुत् साहित्याचार्य्य पं० गयाप्रसाद शास्त्री "श्री हरि"	६२७
२—मेरी विदेश यात्रा और धर्म प्रचार, ले०- श्रीयुत् ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार	६२८
३—प्रणवीर [कविता] ले०—श्रीयुत् धर्म-चन्द्र खेमका "चन्द्र"	६३५
४—कविता का अर्थ समझने में अलंकार की आवश्यकता, ले०—श्रीयुत् बजरंग वली गुप्त विशारद	६३६
५—मोहन ! मुरली फेर बजादो [कविता] ले०—श्री "मुकुन्द"	६३६
६—दहेज की प्रथा और स्त्री जाति की सामाजिक स्थिति, ले०--श्रीयुत् नन्दकिशोर विद्यालंकार	६४०
७—लहू का प्रभाव, ले०--श्रीयुत् पृथ्वी-नाथ शर्मा	६४४
८--मनः शक्ति और उसका प्रभाव, ले०-- श्रीयुत् बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०	६५१
९—कुसुमोद्यान ।	६५५
१०—वनिता विनोद ।	६६०
११—हमारी मञ्जूषा ।	६७१
१२—वैज्ञानिक संसार ।	६७४
१३—विचार प्रवाह	६७६

ग्राहकों के लियेः—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी ।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इसका वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है ।
६ मास के लिये २॥) है ।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है ।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है ।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है ।
पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है ।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है । बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे । पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि-आर्डर द्वारा भेजें । वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है । आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे ।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये ।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये । परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी ।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेजर "ज्योति" लाहार के पते से आने चाहिये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

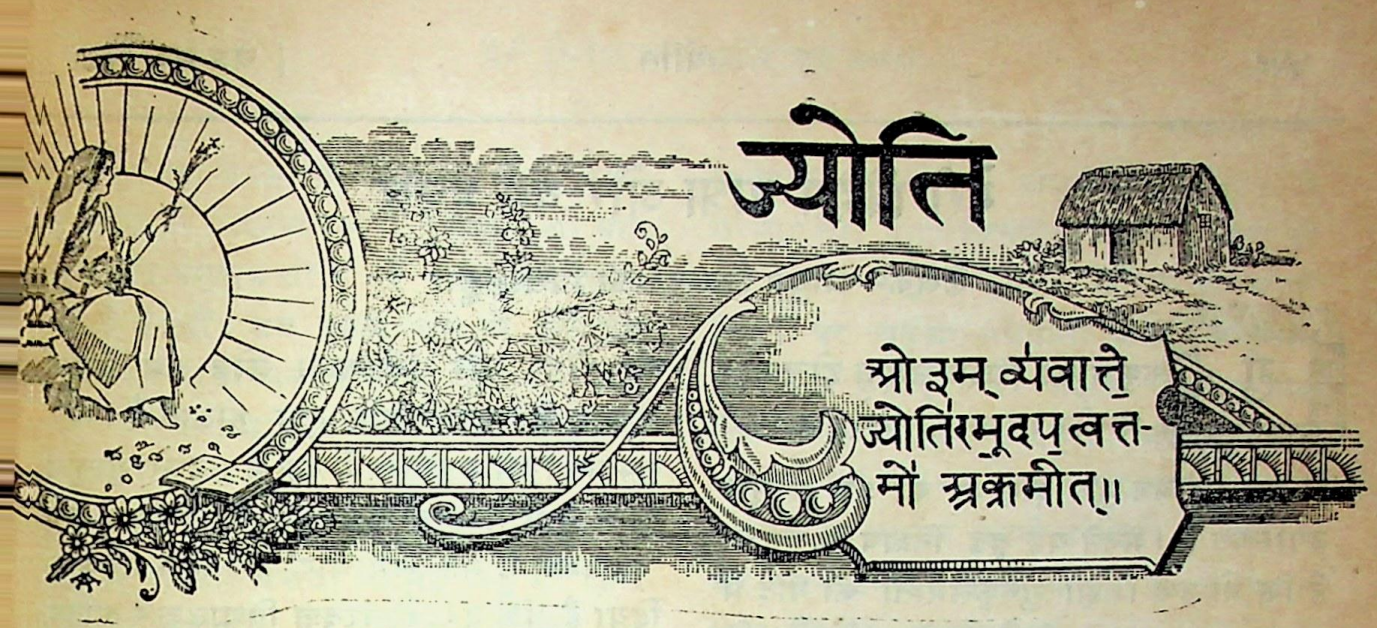

वर्ष ३ | चैत्र १९७९—अप्रैल १९२३ | संख्या १२

❀ ईश प्रार्थना ❀

ले०—श्रीयुत् साहित्याचार्य्य पण्डित गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि'

प्रभो ! जीवन की यह नैय्या कभी तट पर लगा देना।
इसे संसार सागर की तरङ्गों से बचा लेना ॥ ध्रुव ॥
यहां मद मोह कामादिक मकर मुख खोले बैठे हैं।
दयाकर ! इन के पञ्जे से दया कर के छुड़ा लेना ॥ १ ॥
विरह संयोग गिरि माला की चोटों से हुई जांजर।
भरा तृष्णा का पानी है इसे भगवन् खिवा लेना ॥ २ ॥
चले अविवेक की आंधी न कुछ भी सूझ पड़ता है।
भटकता हूं अंधेरे में मेरे ध्रुव को दिखा देना ॥ ३ ॥
नहीं कोई यहां अपना जिसे रो कर पुकारूं मैं।
कहां भगवान हो मेरे मेरा पतवार ले लेना ॥ ४ ॥
मेरे पापों से यह भारी फंसी है भौंर भयकारी।
किसी विध घाट अपने तुम इसे "श्री हरि" लगा लेना ॥ ५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरी विदेश यात्रा और धर्म प्रचार

लेखक—श्रीयुत ईश्वरदत्तजी विद्यालङ्कार

गुरुकुल की शिक्षा समाप्त होचुकी। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली के अनुसार अब गुरु दक्षिणा का प्रश्न सन्मुख उपस्थित है। मनने यह दृढ़ निश्चय करलिया है कि जो उच्च शिक्षा गुरुकुलमाता की गोद में १४ वर्ष रहकर प्राप्त की है उसके बदले में यदि समस्त जीवन भी लगाना पड़जावे तो भी इनकार न होगा परन्तु आचार्य्य जी की ओर से सवाल एक बहुत ही तुच्छ होता है और वह इसरूप में:—

एक वर्ष की सेवा गुरुकुलमाता की भेटकरो पूर्वीय अफ्रीका के आर्यपुरुषों को जोकि देर से धर्म के प्यासे बैठे हैं जाकर वेदामृत का पान कराओ। और गुरुकुल के लिए उनके सन्मुख भिक्षा की झोली भी फैलाओ। गुरु आज्ञा के जवाब में इधर से सिर झुकगया और गुरुजनों के आशीर्वाद के साथ कुलभूमि से विदाई ली। गुरुकुल छोड़कर जब हरिद्वार आकर पहुंचता हूं तो एक भयानक दृश्य आखों के सामने आता है। बड़े भाई की धर्मपत्नी घोर सन्निपात के प्रकोप से एक ओर बेहोश पड़ी हैं और दूसरी ओर उनका २½ वर्ष का बालक देरतक ज्वर पीड़ित रहकर अब देह के बन्धनों को तोड़ स्वतन्त्र होना चाहता है। दोनों की सेवा शुश्रूषा में रातों जाग २ कर भाई भी स्वयं सन्निपात का शिकार बनजाते हैं। इन तीनों प्राणियों को लेकर मैं घर आता हूं। चिकित्सा अपनी शक्तिभर कराई जाती है परन्तु ईश्वर की इच्छा बलवती है। १७ दिन तक सन्निपात से पीड़ित रहकर बड़ेभाई देवदत्तजी अपने समस्त परिवार को रोता और बिलखता छोड़ इस असार संसार से सदा केलिए लुप्त होजाते हैं। सारे सम्बन्धी शोक सागर में मग्न हैं। उधर गुरुकुल के आचार्य महोदय ने पञ्जाब के सुप्रसिद्ध पत्र 'प्रकाश" में यह समाचार प्रकाशित भी करादिया है 'कि पं० ईश्वरदत्त विद्यालङ्कार स्नातक गुरुकुल काङ्गड़ी वैदिक धर्म के प्रचार के वास्ते ईस्ट अफ्रीका के लिए रवाना होचुके हैं'। ऐसे समय में यदि विदेशयात्रा में और विलम्ब करता हूं तो भी यह उचित नहीं प्रतीत होता और उधर पुत्रवियोग से दुःखित माताजी से विदाई की आज्ञा लेने की भी हिम्मत नहीं पड़ती। अनेक सङ्कल्प विकल्पों के पश्चात् इस ही निश्चयपर पहुंचता हूं कि कुछ भी हो जो एक बार निश्चय करचुका हूं उससे तो मैं पीछे कभी न हटूंगा। इस विचार का मन में उत्पन्न होना था कि मैंने अपना सङ्कल्प माता जी के सन्मुख रखदिया परन्तु उसका कोई फल न निकला और उनकी ओर से अब विदेशजाने के लिए साफ इनकार ही मिला। एकबार उनकी आज्ञा का भङ्ग करके गुरुकुल में दाखिल होजाने का दण्ड तो मुझे यह मिला था कि मेरे विद्यार्थिकाल में मुझसे बात करना तो दूररहा मेरी शक्ल भी उन्होंने कभी न देखी थी और अब यदि यह दूसरा आज्ञाभङ्ग करता तो न जाने इसकेलिए क्या दण्ड निश्चित होता। बड़े चक्कर में पड़ा हुआ था। कभी बड़े भाई ब्रह्मदत्त जी के द्वारा सिफ़ारिश करवाता कभी इष्ट मित्रों द्वारा माताजी को मनवाने का यत्न करता और कभी स्वयं गुरुदक्षिणा के प्रण का ध्यान उन्हें दिलाता। निदान इन सब यत्नों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का फल इतना अवश्य निकला कि जहां माता जी पहिले मेरे विदेशगमन के प्रतिकूल थीं वहां अब यद्यपि अनुकूल तो न हुईं परन्तु हाँ, प्रतिकूल भी न रहीं। जब उनके रुख में मैंने कुछ परिवर्तन देखा तो विलम्ब करना ठीक न समझा और अपनी जन्मभूमि जसपुर जिला नैनीताल से चलकर सीधा बम्बई आपहुंचा। इस बीच में वह जहाज जिससे कि मुझे रवाना होना था छूटचुका था और प्रकाश का वह अङ्क भी जिस में कि मेरे चलपड़ने की सूचना प्रकाशित हुई थी ईस्ट अफ्रीका के आर्यपुरुषों के हाथों में पहुंच चुका था। अब मैं बम्बई में १७ दिन पड़ा रहने के पश्चात् २२ दिसम्बर सन् १९१९ के दिन ईस्ट अफ्रीका के लिए "कारागोला" नामक जहाज पर सवार होगया। जिस समय जहाज मातृभूमि के पवित्र किनारे से शनैः २ खिसक रहा था, भारत की भूमि आखों से ओझल होकर उस अनन्त सागर के नील जल में लुप्त हो रही थी बस उस समय के भावों का वर्णन करना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। दस दिन तक हिन्द-महासागर के अनन्त जलों को निरन्तर चीरता हुआ जहाज अब अफ्रीका की भूमिके समीप आपहुंचा आकाश में उड़ते हुए पक्षिगण जल में तैरती हुई समुद्र-घास और जलके रङ्ग में एक प्रकार का परिवर्तन यह सब चिन्ह बतलाने लगे कि अब भूमि नजदीक है। कुछदेर बाद (Horizon) यानी दिगन्त में कुछ धुंधला बादल सा नज़र आने लगा। अब वह और स्पष्ट होगया और अब तो उसमें से पहाड़ निकल आया। अब किनारा भी दीखने लगा और उसके ऊपर के हरे २ नारियल के जंगल भी नजरपड़ने लगे। यह कुल दृश्य जादूगर का खेल था। अभाव से भाव की उत्पत्ति थी और जहां कुछ न था वहां अब मम्बासा का विशाल बन्दरगाह आंखों के सामने था। जहाज ने गम्भीर नाद द्वारा किनारेवालों को सूचना दी कि मैं आगया हूं। Pilot फौरन ही अपनी किश्ती पर चढ़कर अगवानी करने आपहुंचा। किनारे से कुछ दूरी पर जहाज ने लङ्गर डाल दिया और अफ्रीका के हब्शी मल्लाह अपनी डोंगियों पर चढ़कर जहाज पर आपहुंचे और यात्रियों का सामान अपनी डोंगियों पर उतार २ कर रखने लगे। बात की बात में सैंकड़ों मुसाफ़िर किनारे जालगे। इन हब्शियों के साथ मुसाफिरों को उनकी बोली में बात करता देख प्रतीत होता था कि उनकी यह पहिली यात्रा नहीं है बल्कि यह उनका एक पूर्व परिचित देश है। मेरे लिए तो कुल नई ही सृष्टि थी। उनका रंग कालेपन में तवे कोभी लजाता था। नाक बिलकुल चपटी, होठ मोटे २ पेवन्दी बेर जैसे। दांत कौड़ी जैसे। कानों में बड़े २ छेद और उनमें लकड़ी के डाट ठुके हुए। विशाल और भयङ्कर उनकी काया और बोली खुरासानी। मैं सोचता था हे ईश्वर, यहां कैसे पार बसेगी! उनको कई तरीकों से मतलब समझाने का यत्न करता पर उनके ठोस दिमाग पर मेरे यत्न पूरे २ कारगर न होते। एक घण्टे के अन्दर २ यह नाटक पूरा होगया। किनारे पहुंच कर चुंगीघर में घुसा। मुसाफ़िरों के दल के दल खड़े थे। अनेक बाबू उनके बोरी बिस्तर सन्दूक पिटारे खोल २ कर देखरहे थे। यह जांच बड़े ग़ौर के साथ की जारही थी। दोपहर के दो बजचुके थे, भूख बुरीतरह सतारही थी धूप इतनी सख्त थी कि मुसाफ़िरों का तेल निकलाजाता था। मेरे साथ सामान भी औरों से अधिक था। ६ सन्दूक तो किताबों के ही थे जिन्हें मैं नैरोबी समाज के लिए बम्बई से साथ लारहा था। शेष रहा मेरा अपना सामान।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किताबों की पेटियां कीलों से बंद थीं। यह ट्रङ्क या बेग के ढंग पर बन्द न थीं कि ताला खोला और दिखला दिया। मैंने एक यात्री से पूछा कि क्या इन किताबों के सन्दूकों को भी खोल कर दिखलाना पड़ेगा ?

यात्री—क्या यह बिक्री की किताबें हैं ?

मैं—नहीं, यह निजू किताबें हैं।

यात्री—तो तुम उस सामनेवाले बाबू को अपना सामान दिखलाओ, वह कुछ भला आदमी जान पड़ता है। मैं उस बाबू की ओर बढ़नाही चाहता हूं, कि इतने में एक और व्यक्ति मेरे सामान की जांच करने को आजाता है। कपड़ों से प्रतीत होता है कि यह चुंगीघर का अध्यक्ष है। वह पहिले बिस्तर और ट्रङ्क देखता है और तत्पश्चात् पुस्तकों के सन्दूकों की ओर इशारा करके पूछता है कि इन सन्दूकों में क्या है ?

मैं—इन में पुस्तकें हैं।

अध्यक्ष—कैसी पुस्तकें हैं ?

मैं—यह पुस्तकें मूर्तिपूजा के खण्डन में हैं।

अध्यक्ष मम्बासा समाज का स्वयं प्रधान है परन्तु न तो वह ही मुसाफ़िर को जानता है और न मुसाफिर ही उसे पहचानता है। जहाज पर जब मैं बम्बई से सवार हुआ था उस समय ही मुझे तार द्वारा ईस्ट अफ्रीका के आर्य्यपुरुषों को अपने आनेकी सूचना देदेनी चाहिए थी परन्तु जहाज पर चढ़ते समय कार्य की अधिकता से वैसा न करसका। जहाज़ पर सवार होने के बाद बेतार की तार से भी मैं वह समाचार ई० अफ्रीका भेजसकता था परन्तु इससे पूर्व कि मैं ऐसा करता मुझे एकतार मम्बासा से मिला जोकि इस प्रकार था—

Pandit Ishwardatta Cabin Passenger S.S. Karagola.

Confirm arrival.

Narsibhai Patel,
President Arya Samaj.
Mombasa.

"प्रकाश" द्वारा वहां के लोगों को यह ज्ञात होही चुका था कि मैं भारत से चलपड़ा हूं परन्तु मैं चूंकि पहिला जहाज़ चूक चुका था इस कारण उन का यह अनुमान था कि मैं शायद इस जहाज़ से आरहा होऊंगा। इस कारण मम्बासा समाज के प्रधान की तरफ़ से पूर्वोक्त तार भिजवायागया था जिसका तात्पर्य्य यह है :—

पं० ईश्वरदत्त पहिले या दूसरे दर्जे के मुसाफिर, जहाज़ कारागोला।

आने आने की पक्की ख़बर दो—

नरसीभाई पटेल

प्रधान, आर्यसमाज मम्बासा

मैंने फौरन ही इस तार के जवाब में एक तार भेजा जिसका मतलब यह था कि मैं परसों प्रातः काल मम्बासा पहुंचूंगा परन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि मम्बासा के तारघर में कुछ ख़राबी आजाने के कारण प्रधान जी को मेरा तार न मिल सका और उन्होंने यह समझ लिया कि मैं इस जहाज़ से भी नहीं आरहा। अध्यक्षने जब यह सुना कि इन सन्दूकों में मूर्त्तिपूजा के खण्ड़न की पुस्तकें हैं तो उसने पूछा—"क्या आप इन पुस्तकों में से कुछ हमें भी देसकते हैं" ?

मैं—दे तो नहीं सकता परन्तु हां दिला सकता हूं। यह पुस्तकें नैरोबी समाज की हैं उनसे कह कर आपको भी इनमें से कुछ भिजवा दी जावेंगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अध्यक्ष—आप आ कहां से रहे हैं ?

मैं—हरिद्वार से ।

अध्यक्ष—हरिद्वार में कहां से ?

मैं—गुरुकुल काङ्गड़ी से ।

अध्यक्ष—आपका नाम क्या है ?

मैं—मुझे लोग ईश्वरदत्त विद्यालङ्कार वैदिक मिशनरी ऐसा कहते हैं । इन शब्दों का सुनना था कि अध्यक्ष अपने उपदेशक से प्रेम में गद्गद हो चिपट पड़े और बोले मैं मम्बासा समाज का प्रधान हूं और आपने तो बड़ी लीला खेली ।

मैं—लीला खेलने वाला तो कोई और ही है, मैने तो आपके तार का उत्तर फ़ौरन ही देदिया था परन्तु वह फिर लौट कर जहाज़ पर मेरे ही पास आया क्योंकि यहां का तार घर बिगड़ा हुआ था—इसमें भी प्रभु का कोई भेदही होगा । इस दृश्य को देख चुंगीघर के कर्म्मचारियों में सनसनी मच गई । एक २ करके शहरभर में सबको यह खबर मिलगई कि आज जिस जहाज़ से दो पौराणिक सन्यासी उतरे हैं उसही से गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी भी आपहुंचे हैं । सन्यासियों के आने के समाचार यहां बम्बई सेही लोगों को मिल चुके थे परन्तु मेरे विषय में किसी को कुछ गुमान भी न था । सन्यासियों के आने की सूचना लोगों को जब मिली तब ही से पौराणिक दल में "बोलो सनातनधर्म्म की जय' के नारे बुलन्द होरहेथे परन्तु आर्य परिवार में अब तक उदासी ही छारही थी । मम्बासा समाज ने फ़ौरन एकतार नैरोबी को दिया । नैरोबी ईस्ट अफ्रीका की राजधानी है । यहां की समाज जो कार्य कररही है वह आज किसी आर्य पुरुष से छुपा नहीं है । नैरोबी समाज को मेरे आने के समाचार ऐसे समय में मिले जब कि एक ओर तो पौराणिक सन्यासियों के आने की खबर सारे शहर में फैल चुकी थी दूसरी ओर बम्बई समाज को जो तार पं० बालकृष्ण जी के भेजने के विषय में दियागया था उसका भी कोई उत्तर न मिला था और मेरे आनेकी तो आशा ही टूट चुकी थी। ऐसी अवस्थामें आर्य पुरुषों को मेरे आने के समाचार अचानक मिले और उनकी सारी चिन्ता प्रसन्नता में बदल गई । मम्बासा समाजमें कुछ एक व्याख्यान देकर मैं सीधा नैरोबी आगया । लोगों की बड़ी अभिलाषा थी कि मैं जितनी जल्दी हो सके अपना प्रथम भाषण देकर जनता का सन्तोष करूं । उचित विश्राम के बाद नैरोबी समाज के जाम्बवान् सदृश अनुभव वृद्ध सज्जनों की राय के मुताबिक मेरा प्रथम व्याख्यान संस्कृत भाषा में हुआ । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि धाराप्रवाह संस्कृत में एक घंटा व्याख्यान सुनने के अनन्तर गुरुकुल में संस्कृत की किस ऊंचेदर्जे की तालीम दीजाती है इस बात का जनता को भली प्रकार निश्चय होगया था । उसके पश्चात् कई मासतक सारे ही व्याख्यान उन पौराणिक सन्यासियों के आक्षेपों के उत्तर में होते रहे । इसके अनन्तर मैं गुरुकुल के लिए धन एकत्रित करने के वास्ते निकला । पूर्वीय अफ्रीका के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक मैंने भ्रमण किया और २५०००) से अधिक धन एकत्रित करके गुरुकुल के कोष में भिजवादिया । इस एक वर्ष के समय में जहां एक ओर मुझे विधर्मियों के आक्षेपों का उत्तर देने में अपना समय लगाना पड़ता था वहां दूसरी ओर स्वतन्त्र प्रचार भी करना होता था। गुरुकुल के लिए अपीलें भी होती थीं । समय २ पर संस्कार भी होते थे । लोगों की यह भी प्रबल इच्छा थी कि शारीरिक बल तथा धनुर्विद्या के चमत्कार भी करके दिखलाए जावें । राजा और प्रजा दोनों की उपस्थिति में कुल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्य करके दिखलाए गए। विरोधी दलके मुख बन्द होगए। गुरुदक्षिणा का एक वर्ष भी अब पूर्ण हुआ। इसके बाद मैं जर्मनी अफ्रीका और पोर्चुगीज़ अफ्रीका होता हुआ दक्षिणीय अफ्रीका आपहुंचा। इस देश में घुसना सहल काम न था। बड़े यत्नों के बाद इजाज़त मिली और प्रचार का कार्य आरम्भ हुआ। इस देश में यद्यपि लोगों की आर्थिक अवस्था ईस्ट अफ्रीका की अपेक्षा अच्छी थी परन्तु राजनैतिक रुकावटों के कारण धर्मप्रचार को यहां वह सफलता न हो सकी थी। ईस्ट अफ्रीका में जहां आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना होचुकी थी और जहां नैरोबी समाज तथा ज़ैन्ज़ीबार समाज जैसीअनेक समाजें कार्य कर रही थीं वहां सौथ अफ्रीका में एक भी समाजकी हस्ती न थी। आर्य समाजियों की केवल एक संस्था दरबन शहर में दृष्टिगोचर हुई जिसका नाम आर्य युवक सभा था। यह भी केवल एक व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम था और वह दक्षिणीय अफ्रीका के सत्याग्रही वीर पं० भवानीदयाल जी थे। आपके यत्नों से आर्यसमाज का कुछ कार्य नैटाल प्रान्त में तो अवश्य होसका था परन्तु देश के अन्य प्रान्तों में वैदिक ज्योति का प्रायः सर्वथा अभाव ही था। ऐसी अवस्था में जब एक बार मेरा इस देश में प्रवेश होगया तब फिर भारतीय जनता मुझे क्यों छोड़ने लगी थी। ट्रान्सवाल के सुप्रसिद्ध नगर जो हैन्सवर्ग में ही मुझे ५ मास प्रचार करते हुए व्यतीत होगये परन्तु लोगों की तृप्ति न हुई। निदान नैटाल प्रान्त से अनेक निमन्त्रणों के आने पर मुझे जोहैन्सबर्ग छोड़ कर शीघ्र दरबन आना पड़ा। ट्रान्सवाल में जो ५ मास रहने का अवकाश सरकार ने दिया था वह ५ बार ५ प्रार्थना पत्रों के भेजने का परिणाम था। हरबार प्रार्थना करने पर एक मास का समय और बढ़ा दिया जाता था। इस प्रकार नैटाल प्रान्त में पग रखने से पूर्व ही ५ बार मेरे लिए सरकार से समय लिया जाचुका था।

अब जब मैं दरबन शहर में आया तो वहां हिन्दी प्रजा ने अपने प्रान्त के लिए सरकार से पृथक् समय मांगा यद्यपि पहिली बार समय इस शर्त पर दिया गया था कि अब इसके आगे समय में कोई वृद्धि न की जावेगी परन्तु फिरभी सरकार ने यह सोचकर कि यह प्रश्न एक दूसरे प्रान्त की तरफ़ से उठाया जारहा है एक मास का समय और भी दे दिया परन्तु यह एक मास सर्वथा ही अपर्याप्त समझा गया और जनता ने ३ मास का समय और मांगा जिस पर सरकार ने एक मास का और भी समय दिया और यह साफ़ २ कह दिया कि अब इससे अधिक तुम्हारे उपदेशक को समय न मिलेगा और नियत समय के पश्चात् उन्हें यह देश छोड़ना ही पड़ेगा। हिन्दी प्रजा ने हरचन्द चाहा कि वह अपने उपदेशक को कुछ और समय तक रख कर उसकी उपस्थिति से लाभ उठावें परन्तु वहां की गोरी सरकार ऐसा करने की इजाजत न देती थी। दक्षिणीय अफ्रीका के प्रचार में बस यह ही एक मुख्य रुकावट है। वहां की सरकार एशिया खण्ड निवासियों को न केवल उसदेश में आने से ही रोकती है बल्कि, वहां पर जो व्यक्ति पहिले से जाकर बसे हुए हैं उनको भी Repatriation अर्थात् प्रत्यावर्त्तन का मोटा डंडा हाथ में पकड़ कर वहां से खदेड़ रही हैं। सरकार के और अधिक समय न बढ़ाने का दृढ़ निश्चय कर लेने पर हिन्दी प्रजा लाचार हुई और उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों से इङ्गलैण्ड के लिए रवाना होते हुए अपने उपदेशक को विदाई दी। बहुत से सज्जन सरकार की इस आग्रह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्ण कार्यवाही पर फिर एकवार सन् १९१४ का सा सत्याग्रह करने के लिए उतारू होगए थे परन्तु मेरी स्थिति को एक धर्मोपदेशक की स्थिति के रूप में देखते हुए वह शान्त होगए। दक्षिणीय अफ्रीका में इस प्रकार लगभग ७ मास प्रचार का कार्यकरके मैं इङ्गलैण्ड आगया। यहां मेरा प्रायः सारा समय अमेरिका के लिए पासपोर्ट तय्यार कराने में निकल गया। भारत वर्ष में पहिले भी मैं ८ मास तक लगातार इस पासपोर्ट के पीछे टक्करें खाता फिरा था क्योंकि सरकार की आर्यसमाज पर वैसे तो शुरू से ही क्रूर दृष्टि रही है परन्तु सन् १९१९ में जबकि देहली में सत्याग्रह की लड़ाई चल रही थी उन दिनों सरकार की भृकुटी हम पर विशेष चढ़ी हुई थी। लण्डन में भी मुझे अमेरिका के पासपोर्ट के लिए कुछ कम कष्ट न उठाना पड़ा American consul अमेरिकन कौनसल का यह कथन था कि तुम चूंकि अफ्रीका से आरहे हो सो अपना पासपोर्ट वहां से तय्यार कराकर क्यों नहीं लाए? अस्तु, अनेक तार अफ्रीका के Consul के पास भेजे गए और उसकी मंजूरी मिलने पर अमेरिकन कौनसल लण्डन ने पासपोर्ट तय्यार कर दिया। यह काम ज्योंही हुआ त्योंही मैं इङ्गलैण्ड से अमेरिका के लिए जहाज़ पर सवार होगया। पूरे ७ दिन के बाद जहाज़ न्यूयार्क के बन्दर में जालगा। फ़ौरन ही डाक्टर जहाज़ पर आ गया और मुसाफ़िरों की देह परीक्षा करने लगा। जहां अन्य कई गौराङ्ग यात्रियों को उसने किसी कारण विशेष से unfit अर्थात् नाकाबिल कह कर रोक दिया वहां कुल भारतीय यात्रियों को जिनकी संख्या तीन थी यह कह कर कि तुम्हारी आंखें ख़राब हैं unfit कर दिया। हम यह जानते थे कि डाक्टर ने हमारे साथ दुष्टता की है परन्तु कुछ हमारी वहां चल न सकती थी। नक्कार ख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है? जब सब मुसाफिर जहाज़ से उतर कर किनारे पर चले गए तो एक बड़ी किश्ती में हम सब रोके हुए मुसाफ़िरों को भर कर एलिस नामके जज़ीरे में जा उतारा। तीन दिनकी जेल के बाद हमारी भी पेशी का समय आया। नाना प्रकार के सवाल किए गए जिनका माकूल जवाब मिलने पर वहां के अधिकारियों ने हमें अमेरिका में घुसने की आज्ञा देदी। अमेरिका में मैंने लगभग १ वर्ष निवास किया। इस अन्तर में मैंने अमेरिका के भिन्न २ शहरों में होने वाले मेलों में जहां एक ओर शारीरिक बल की खेलें कीं वहां दूसरी ओर प्रचार का काय भी किया। वहां के अख़बारों ने मुझे The iron man from India अर्थात् हिन्दुस्तान से आया हुआ फ़ौलाद का आदमी ऐसा प्रसिद्ध कर रखा था। प्रचार के कार्य के सम्बन्ध में इतना लिखना आवश्यक होगा कि यह लोग अपना खण्डन बिलकुल नहीं सुनना चाहते। पाठकों को यह ज्ञात ही होगा कि अमेरिका में एक भारतीय सन्यासी को पहिले गोली से भी मारा जा चुका है। एकबार ईसाईयत का खण्डन करते हुए मैंने यह कह दिया था कि :—

"That which is conceived in her is of the Holy Ghost." This is what the Bible says but as a matter of fact that which was conceived in her was of some unholy ghost like we witness in big bunches hanging around in every town after dark.

अर्थात् कुमारी मेरी को जो गर्भ हुआ है वह तो साक्षात् पवित्रआत्मा की कृति है अतः हे जोसफ़ तू मेरी को अपनी धर्मपत्नी करके समझ और उसे स्वीकार करले, भयमत कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इत्यादि बाइबल में लिखा है परन्तु वास्तविक बात तो यह है कि वह गर्भ उसे पवित्र आत्मा से नहीं बल्कि किसी अपवित्र आत्मा से रह गया था। इस प्रकार की आत्माओं के झुंड के झुंड हम हर शहर में शाम को घूमते फिरते देखते हैं। यह शब्द सुन कर बहुत से ईसाई बहुत तिलमिलाए थे जिस की परवाह न करते हुए मैंने प्रचार का कार्य पूर्ववत् जारी रक्खा। हाँ, एक जो बड़ी भारी तक़लीफ़ मुझे वहां झेलनी पड़ी वह भोजन सम्बन्धी थी। अमेरिका में प्रायः साराही समय डबलरोटी और उबले हुए आलुवों पर गुज़रा। इसके अतिरिक्त जो भोजन प्राप्त होते थे उनमें या तो अंडा पड़ता था या उनमें चर्बी का उपयोग होता था या वह पदार्थ सर्वथा मांस से बनाए जाते थे। एक व्यक्ति को उन देशों में रहते हुए दूसरा सवाल जो आकर सताता है वह ख़र्चे का है। लण्डन में रहने के लिए एक मनुष्य को ४००) मासिक और न्यूयार्क में ४५०) मासिक व्यय करने की सामर्थ्य होनी चाहिए। प्रलोभनों का सामना करने के लिए आचार बल प्रथम कोटि का होना चाहिए जिससे कि मनुष्य वहां की शूर्पणखाओं का मानमर्दन भली भान्ति करसके और अपनी नाक कटाकर घर वापिस न लौटना पड़े। गुरुकुल माता के चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम है जिसकी शिक्षा की बदौलत मैं उन कठिन समयों में भी आत्मरक्षा कर सका। मैं अमेरिका के प्रोफ़ेसर मैकफ़र्सन-जो कि कैप्टेन लाबैल के अजायबघर में शरीररचना विज्ञान पर व्याख्यान देते हैं-का लेख यहां उद्धृत करके पाठकों से विदाई लूंगा।

SAVANNAH. GA,
U. S. A.,
Nov. Ist, 1922.

TO WHOM IT MAY CONCERN.

I have had the pleasure of enjoying the company of Prof. I. Datta for several months. I have found him, during that period just the same as he tells me he was in fourteen years of seclusion in India. He never enjoys the company of girls, never drinks, eats no meat, or fish or even eggs in any form. It has always been a matter of great surprise to my country men how the professor can live that way. The most remarkable thing about him to the American mind is, that he has never had any undue familiarity with one of the opposite sex in his entire life of 26 years. It always baffles me a great deal how he can perform his feats of strength such as running a touring car over his body, and cracking rocks on his chest without the use of any kind of nutritious food which we use in our country. As a matter of fact he is a man of principle and character, and the first man of his type I have had the pleasure of meeting in my whole life. I wish him all success in the noble mission of his life.

PROF. Mc. PHERSON,
PROFESSOR OF ANATOMY,
Capt. LaBelle's Museum,
Florida U. S. A.

सवैनह जियोर्जिया
अमेरिका
१-११-१२

प्रत्येक के प्रति जो इसके पढ़ने की ज़रूरत समझें।

मुझे पं० ईश्वरदत्त जी के साथ कई मास रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने उन्हें इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बीच में सर्वथा वैसा ही पाया है जैसाकि वह उनके कथनानुसार अपने ब्रह्मचर्य काल के ४४ वर्षों में थे जो कि उन्होंने भारत में व्यतीत किए थे। वह लड़कियों के संग में रहना बिलकुल पसन्द नहीं करते, कभी शराब नहीं पीते, न मांस खाते हैं न मछली, और नहीं आण्डा किसी रूप में खाते हैं। मेरे देश के लोगों के लिए यदि कोई सब से अधिक आश्चर्य की बात हो सकती है तो वह यह कि उन्होंने अपनी कुल २६ वर्ष की अवस्था में कभी भी किसी स्त्री के साथ सहवास नहीं किया। मुझे यह बात अचम्भे में डाल देती है कि पण्डित जी किसी भी प्रकार के पौष्टिक पदार्थों का सेवन न करते हुए, जिनका कि इस्तेमाल हम इस देश में करते हैं, किस प्रकार ऐसे पराक्रम के खेल कर लेते हैं जैसे कि मोटरकार का शरीर पर से गुज़ारना और भारी पत्थर का छाती पर तुड़वाना। निस्सन्देह पण्डित जी अपने आचार के सच्चे और सिद्धान्तों के पक्के व्यक्ति हैं। मैंने इस ढंग का यह पहिला ही पुरुष अपने जीवन में देखा है। ईश्वर इन्हें अपने जीवन के उच्च आदर्श के पूर्ण करने में पूरी सफलता देवें।

प्रोफ़ेसर ओ० ई० मैकफ़र्सन
कैप्टेन लाबैल का अजायबघर
फ़्लोरिडा, अमेरिका।

प्रणवीर

ले०—श्रीयुत् धर्मचन्द्र खेमका "चन्द्र"

सेवा स्वदेश की हम,
सादर सदा करेंगे।
विपदा अनेक आवें,
फिर भी नहीं डरेंगे॥
निज दीन भाइयों के,
संकट सभी हरेंगे।
भारत हितपिता-हित,
हँस हँस के हम मरेंगे॥
दे कर वचन कभी भी,
पीछे नहीं हटेंगे।

पूरा उसे करेंगे,
जिस काम पर डटेंगे॥
छल, फूट, द्वेष इर्षा,
से दूर ही रहेंगे।
सच बात को कहेंगे,
सुभ मार्ग ही गहेंगे॥
परमार्थ ही करेंगे,
सब स्वार्थ त्याग देंगे।
अपकार कर किसी का,
नहिं नीच हम बनेंगे॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविता का अर्थ समझने में अलंकार की आवश्यकता

ले०—श्रीयुत् बजरंगबली गुप्त विशारद

जिस प्रकार सरोज रहित सरोवर, धर्म रहित धन, पुत्र रहित परिवार सुपारी रहित पान और पानी रहित कूप अधूरे ही रहते हैं उसी प्रकार बिना अलंकार-ज्ञान के पद्य-साहित्य का ज्ञान अधूरा ही रहता है। बिना अलंकार-ज्ञान के कोई भी पुरुष अपने को प्राचीन कविता का पंडित होने की बात तो बहुत दूर है प्राचीन कविता का अर्थ लगाने वाला भी नहीं कह सकता। क्योंकि प्राचीन कवियों ने अपने ग्रन्थों में ऐसे ऐसे पद्य लिखे हैं जिनका अर्थ बिना अलंकार निर्णय किये लग ही नहीं सकता। बिना अलंकार-ज्ञान के प्राचीन साहित्य का पढ़ने वाला विद्यार्थी कवि की खूबियों को भली भाँति समझ ही नहीं सकता। यह बात हिन्दी भाषा के केवल कुछ कवियों में ही परिमित नहीं है वरन् अधिकांश कवियों की कविताओं में पायी जाती है। यहाँ तक कि बिना अलंकारों को जाने हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि गोस्वामी तुलसीदास जी के रामायण की कविताओं का अर्थ भी कहीं कहीं पर समझना असम्भव ही है। इसे पढ़ कर अलंकार-शास्त्र से अनभिज्ञ हमारे पाठकगण बड़े चक्कर में पड़े होंगे। वे सोचते होंगे कि जिस रामायण का अधिकांश अर्थ अल्पशिक्षित गँवार गण भी समझ लेते हैं क्या उसी को बिना अलंकार ज्ञान के कविता का प्रेमी एक शिक्षित मनुष्य पढ़ कर भली भाँति नहीं समझ सकता ? वह उसकी बारीकियों को नहीं जान सकता। पाठकगण घबराइये नहीं मैं दूर जाने की राय नहीं दूंगा। आप कृपा कर गोस्वामी तुलसीदास जी की निम्नलिखित चौपाई को देखिये जो उन्होंने बालकाण्ड में श्रीरामचन्द्र जीके व्याह प्रकरण में लिखा है।

राम सीय सिर सेंदुर देहीं।
उपमा कहि न जाय कवि केहीं।
अरुण पराग जलज भरि नीके।
ससिहि भूष अहि लोभ अमी के॥

पहिली पंक्ति का अर्थ अलंकार से अपरिचित मनुष्य भी समझ लेंगे कि श्री रामचन्द्र जी जिस समय सीताजी के सिर में सेंदुर लगा रहे हैं, उस समय की उपमा कोई कवि नहीं कह सकता। परन्तु दूसरी पंक्ति का अर्थ लगाने में अलंकार से अपरिचित व्यक्ति बहुत माथा पच्ची करने पर भी शायद यह करेगा, "अहि (सर्प) लाल पराग को कमल में भली भाँति भर कर अमृत के लोभ से चन्द्रमा को विभूषित कर रहा है"। इस समय रामचन्द्र जी सीता जी के सिर में सेंदुर भर रहे हैं, यहाँ पर सूर्य चन्द्रमा आदि की क्या आवश्यकता ? क्या तुलसीदास जी पागल हो गये थे जो वे इस शुभ समय में सर्प ऐसे भयंकर जीव का वर्णन करने लगे। ऐसे ही विचित्र और भ्रम-पूर्ण विचार अलंकार-शास्त्र से अनभिज्ञ पुरुष के मन में उठने लगेंगे। परन्तु इस छन्द का ऐसा अर्थ कदापि नहीं है। दूसरे पद का यह अर्थ है "अहि (श्री रामचन्द्र जी का हाथ) अमृत पाने के लोभ से (सीता जी के पाने की इच्छा से) कमल में भली भांति (हाथ में) अरुण पराग भर कर (सेंदुर लेकर) चन्द्रमा (सीता जी के मुख को) को सुशोभित कर रहा है। अभिप्राय यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है कि रामचन्द्र जी हाथ में सेंदुर लेकर सीता जी के मुख को विभूषित कर रहे हैं"।

उपरोक्त चौपाई में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है। यहाँ पर कवि ने केवल उपमान कह कर उपमेय को प्रगट किया है। यदि अर्थ लगाने वाले मनुष्य को रूपकातिशयोक्ति अलंकार का ज्ञान होता तो उसे इतने बड़े भ्रम में न पड़ना पड़ता।

और भी देखिये, रामायण में ही तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्र जी के मुख से कहलाया है:—

खंजन सुक कपोत मृग मीना।
मधुप निकर कोकिला प्रवीना।
कुंदकली दाड़िम दामिनी।
शरद कमल अहि ससि भामिनी।
वरुण-पाश मनोज धनु हंसा।
गज केहरि नित सुनत प्रशंसा।
श्रीफल कदलि केलि हरषाहीं।
नेकु न शंक सकुच मन माहीं।
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू।
हरषे सकल पाय जनु राजू॥

अलंकार से अपरिचित व्यक्ति इसे पढ़ कर कहेगा कि खंजन, शुक, कपोतादि बिना सीता जी के क्यों प्रसन्न होते हैं; घंटों सोचने पर भी उसे इसका अर्थ न ज्ञात होगा। परन्तु जो मनुष्य अलंकार जानता है वह तुरंत समझ जायगा, "श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं कि जब जानकी जी मेरे संग थीं तब उन्हें देख कर उनके अंगों के ये उपमान लज्जित होते थे; परन्तु अब उनके हर जाने पर ये सब उपमान प्रसन्न होते हैं।

यह तो मैंने गोस्वामी तुलसीदास जी के रामायण से उदाहरण स्वरूप बहुत थोड़ा सा उद्धृत किया है। सूर केशव, दीनदयाल गिरि भिखारीदासादि अधिकांश कवियों की कविताओं में इस अलंकार के बहुत छन्द हैं; जिनको उद्धृत करने से लेख का कलेवर बहुत विस्तृत हो जायगा। अब दूसरे अलंकार पर दृष्टि डालिये।

पाठकगण देखिये नीचे के छन्द में भूषण समासोक्ति अलंकार द्वारा क्या कह रहे हैं:—

बड़ो डील लखि पीलको, सबन तज्यो बन थान।
धनि सरजा तू जगत में, ताको हर्‌यो गुमान॥

इस का भी अर्थ लगाने और भाव समझने में अलङ्कार से अपरिचित व्यक्ति कभी समर्थ न होगा। भूषण ने यह छन्द शिवा जी पर लिखा है। यहाँ पर अलङ्कार से अपरिचित व्यक्ति हाथी और सिंह का नाम सुनकर चक्कर में पड़ जायगा और कवि के इच्छित अर्थ तक कदापि न पहुंचेगा। परन्तु अलङ्कार से परिचित मनुष्य तुरंत समझ जायगा कि वर्तमान अर्थ में केवल अवर्तमान का आभास मात्र ही है। यहाँ पर कवि का इच्छित अर्थ शिवा जी और औरङ्गजेब के व्योहार को दर्शाना है। यह छन्द सरजा शब्द श्लिष्ट होने के कारण (सरजा=शिवा जी, सिंह) शिवा जी का पराक्रम प्रकट करता है। मैं अलङ्कार से अपरिचित पाठकों को कवि का भाव भली भांति समझने के निमित्त समासोक्ति अलङ्कार की परिभाषा बतला देना भी उचित समझता हूं। जहाँ पर कवि के इच्छित अर्थ में कोई अन्य अर्थ भासित होता है वहाँ पर समासोक्ति अलङ्कार होता है।

अब मैं एक दूसरे अलङ्कार का उदाहरण आप लोगों के सम्मुख उपस्थित करता हूं। पाठक गण देखिये, निम्नलिखित छन्द में कविवर पृथीराज ने एक नायिका का एक ही छप्पय में कैसा अच्छा शिखनख वर्णन किया है:—

आनन बेनी नैन बान पुनि दसन सुकटि गति।
शशि सर्पिन मृग पिक अनार केहरि करणिन पति।
परत खिझित जुक तरुण पक्ष वर पंच पुष्ट बल।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शरद पताल बिछोह बाग तरु गिरि बन कज्जल।
निसि सन्निवेश शावक चुवत,
बिगस प्रसूती मदझरत।
पृथिराज भनत वंशी बजत,
अस बनिता बन बन फिरत॥

अलङ्कार शास्त्र से अनभिज्ञ पाठक कभी भी इस छन्द का अर्थ नहीं समझ सकते। बहुत से नामों को सुनते ही वे चक्कर में पड़ जायेंगे। परन्तु जो पाठक क्रम अलङ्कार से भली भाँति परिचित हैं, उन्हें यह समझने में कठिनता न होगी कि इस छन्द के प्रथम पद में कवि ने नायिका के सात अवयवों का नाम लिया है और प्रत्येक पद में क्रमशः उनके उपमानों या विशेषणों को कहता चला गया है। इस प्रकार एक ही छन्द में कवि ने नायिका का वर्णन कर दिया है।

देखिये निम्न लिखित छन्द में कवि ने विपरीत क्रम अलङ्कार जो क्रम अलङ्कार का एक खंड है—का प्रयोग किया है। इसका अर्थ भी बिना विपरीत क्रम अलङ्कार के जाने कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता।

राज्य नीति बिनु धन बिनु धर्मा।
हरिहिं समर्पे बिनु सतकर्मा॥
विद्या बिनु, विवेक उपजाये।
श्रम फल पढ़े किये अरु पाये॥

यहाँ पर कवि ने विपरीत क्रमालङ्कार से काम लिया है। विपरीत क्रम अलङ्कार उसे कहते हैं जिस में पूर्वोक्त वस्तुओं के वर्णन का क्रम उलट दिया जाय। यहाँ पर कवि ने राज्य, धन, सत्कर्म और विद्या चार वस्तुओं का नाम लिया है और कहा है कि यदि इन चारों के साथ इन के गुण नीति, धर्म, हरि-समर्पण और विवेक न हो; तो विद्या का पढ़ना, सत्कर्म का करना और राज्य तथा धन का पाना केवल परिश्रम मात्र है। पाठक गण आप ही बतलाइये कि क्या बिना विपरीत क्रम अलङ्कार को जाने कोई मनुष्य इस चौपाई का अर्थ कर सकता है? उत्तर यही होगा 'नहीं'।

पाठक गण भारत के इन्दु भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द जी का निम्नलिखित प्रसिद्ध दोहा देखिये—

सत्यासक्त दयाल द्विज, प्रिय अघहर सुखकन्द।
जनहित कमला तजन जय, शिव नृप कवि हरिचन्द

क्या अलङ्कार को न जानने वाला कोई मनुष्य इस छन्द की विशेषता समझ सकता है? क्या वह जान सकता है कि इस छन्द के कितने अर्थ होते हैं? नहीं कदापि नहीं। अलङ्कार से अपरिचित व्यक्ति इस चक्कर में पड़ जायगा कि यहाँ पर हरिश्चन्द्र के लिये कवि क्यों लिखा गया। इस प्रकार वह इस दोहे का एक भी अर्थ न कर सकेगा। परन्तु अलङ्कार से परिचित मनुष्य पहिले यह देखेगा कि इस दोहे में कौन अलङ्कार है। जब उसे मालूम हो जायगा कि इस दोहे में श्लेष अलङ्कार है तब वह तुरत इस दोहे का अर्थ लगालेगा। पाठक गण इस दोहे का अर्थ १ शिवजी २ राजा हरिश्चन्द्र ३ कविवर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ४ सूर्य ५ विष्णु और श्री कृष्ण जी पर लग सकता है। कहिये पाठक गण क्या बिना अलङ्कार शास्त्र को जाने कोई कवि की विशेषता को समझ सकता है?

पाठकगण भारतेन्दु कृत मुद्राराक्षस का निम्नलिखित प्रसिद्ध छन्द देखिये—

चन्द्र बिम्ब पूरण भये, क्रूर केतु हठ दाप।
बल सों करिहै ग्रास कहँ, जेहि बुध रच्छत आप

यह मुद्राराक्षस के प्रस्तावना का दोहा है। अलङ्कार से अनभिज्ञ पुरुष को इस का प्रस्तुत अर्थ तो ज्ञात हो जायगा परन्तु जिस अर्थ में मुद्राराक्षस नाटक पढ़ने का आनन्द निर्भर है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वह उसे न मालूम होगा। इस दोहे से साधारण अर्थ के अतिरिक्त मलयकेतु, चन्द्रगुप्त और चाणक्य की कार्रवाइयों की सूचना मिलती है। बिना इसे जाने मुद्राराक्षस पढ़ने से जो आनन्द प्राप्त होता है उसके कुछ अंश से पाठक वञ्चित ही रह जायगा। उपरोक्त छन्द में मुद्रा अलङ्कार है। मुद्रा अलङ्कार उसे कहते हैं जिस में प्रस्तुत अर्थ के प्रकट करने वाले शब्दों से दूसरा सूचनीय-आवश्यकीय-अर्थ भी निकलता हो

यद्यपि इस प्रकार के और भी अनेक अलङ्कार हैं जिन से अपरिचित रहकर कोई भी व्यक्ति कविता का पण्डित नहीं हो सकता। परन्तु मैं अधिक उदाहरण देकर पाठकों का समय नहीं नष्ट करना चाहता। क्योंकि इतने से ही पाठकों को ज्ञात हो गया होगा कि बिना अलंकार शास्त्र के जाने बहुतेरी कविताओं का अर्थ लगाना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। पाठकों को यदि मेरा यह लेख कुछ भी रुचिकर और लाभदायक हुआ तो मैं फिर कभी कविता कामिनी के आभरण रूप आभरण के विषय में कुछ सुनाऊँगा।

मोहन ! मुरली फेर बजा दो

लेखक—श्री "मुकुन्द"

मोहन ! मुरली फेर बजा दो।
एक वार फिर भारत आओ।
वृन्द्रावन में रास रचाओ ॥
कामरि ओढ़ो गाय चराओ।
द्वापर के सब साज सजा दो।
मोहन ! मुरली फे बजा दो ॥ १ ॥

'कृष्णा' खड़ी, बेड़ियाँ-पहने।
रुला दिया उस को पशु बल ने ॥
अत्याचार आदि को दलने—
आओ फिर से समर रचा दो।
मोहन ! मुरली फेर बजा दो ॥ २ ॥

कालिन्दी के कूल सुहावैं।
अन्यायी, अवगुणी-नशावैं ॥
तेरे गुण-गण हम सब गावैं।
नैया-मेरी पार लगा दो ॥
मोहन ! मुरली फेर बजा दो ॥ ३ ॥

भव्य-भाव मन में लहरावैं।
कार्य-क्षेत्र में हम सब आवैं ॥
बलि-वेदी पर बलि हो जावैं।
देश-प्रेम-अंकुर उगा दो।
मोहन ! मुरली फेर बजा दो ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दहेज की प्रथा
और
स्त्रीजातिकी सामाजिक स्थिति

ले०—श्रीयुत् नन्दकिशोर विद्यालंकार

जिस प्रकार तालाब का जल यदि मर्यादा को तोड़कर बाहिर निकल जाय तो न केवल यही कि उसने मर्यादा या बाढ़ को ख़राब किया प्रत्युत उसने तालाब के अस्तित्व को भी बड़ा भारी धक्का पहुंचाया। जलके इस मर्यादाभङ्ग से तालाब का तालाबपन ही नहीं रहता। इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु की स्थिति तब तक है जब तक कि वह मर्यादामें है। सामाजिक जगत् में या समाजशास्त्रके शब्दों में इसी मर्यादा का नाम धर्म है। धर्म वह है जो समाज को धारण करता है। कोई भी प्रथा धर्म के अन्दर है जब तक कि वह प्रथा समाज (Society) में विषमता उत्पन्न नहीं करती। इसी सिद्धान्तको दृष्टि में रखते हुए आज हम 'दहेज़ की प्रथा' पर विचार करेंगे।

दहेज की मर्यादा

आर्य्यधर्म शास्त्र के अनुसार पिता की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी उसका पुत्र है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि पुत्री का उस सम्पत्तिमें कुछ भाग नहीं, क्योंकि पुत्री भी अपने पिता के रक्त से बनी और उसी का अंश है। पुत्री या कन्या का अधिकार अपने पिताके धन पर है—किन्तु उस अधिकार को शास्त्रकारों ने दूसरे प्रकार से नियमित कर दिया। यह क्यों? यह केवल इसलिये कि स्मृतिकार चाहते थे कि पैतृकसम्पत्ति पिता के अपने ही कुलमें रहे—कन्या के अन्य कुल में जाने से सम्पत्ति (साधिकार) अन्यकुल में न चलीजावे केवल इसी दृष्टि से पैत्रिक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी पुत्र है पुत्री नहीं। पुत्री को उसका दायभाग देने के लिये दहेज या यौतक की प्रथा आर्य्यजाति में स्मृतिकारों ने प्रचलित की है यह दहेज पिता के अपने सामर्थ्य तथा प्रेम पर निर्भर है इसीलिये वैदिक विवाह संस्कार में दहेज के लिये न विधि न निषेध है। कन्यापक्ष की ओर से वरपक्षको केवल 'गोदान' दिया जाता है-जो कि निर्धन से निर्धन माता पिता के भी सामर्थ्यमें है। प्रत्येक वैदिक संस्कारमें यही विशेषता है कि उनकी विधि ऐसी रक्खी गई है जो क्या राव क्या रंक सब के लिये सुलभ हो।

जैसे पुत्र अपने पिताकी उसी सम्पत्ति का अधिकारी है जो कि ऋणनिर्मुक्त (अर्थात् जिसमें किसी तरह का कर्जा शामिल नहीं) है—इसी प्रकार वरपक्ष को कन्या के पिता से वहीं तक दहेज लेने तथा स्वीकार करने का हक़ है कि जहां तक कन्या का पिता उस धनराशि को प्राप्त करने के लिये ऋणी या पापी नहीं बनजाता।

इसके अतिरिक्त मनुभगवान् ने जिन आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन किया है उसमें केवल एक 'आसुर विवाह' में दहेज लेने की प्रथा बताई है—और उसको भी निकृष्ट की पदवी में गिना है जैसा कि निम्नलिखित श्लोकों से ज्ञात होगा:—

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आच्छाद्य चार्चायित्वा च श्रुतशीलवते स्वयम् ।
आहूय दानं कन्याया ब्राह्मोधर्मः प्रकीर्तितः ॥

यज्ञे तु वितते सम्यगृत्विजे कर्म कुवते ।
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्मः प्रचक्षते ॥

एकं गोमिथुनं द्वे वा वरादादाय धर्मतः ।
कन्याप्रदानं विधिवदार्षो धर्म उच्यते ॥

सहो भौ चरतः धर्ममितिवाचानुभाष्य च ।
कन्याप्रदामभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिःस्मृतः ॥

ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्वा कन्यायै चैव शक्तितः ।
कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्म उच्यते ॥

उक्त श्लोकों में 'आसुर विवाह' के लक्षणों में कहा है कि 'शक्तितः' स्वाच्छन्द्यात् अर्थात् अपने सामर्थ्य और इच्छा के अनुसार कन्या का पिता वर को धनदेकर जो विवाह करता है वह आसुर है। और उक्त आठ विवाहों में केवल पहले चार ही प्रशस्त माने गये हैं। आसुर विवाह श्रेष्ठ नहीं है।

मर्यादाभङ्ग

अब जो बात ऐच्छिक (Optional) थी वह प्रधान बनगई। बंगाल और सिन्ध आदि कितने ही प्रदेशों में 'दहेज' विवाह के लिये मुख्य और आवश्यक हैं। बंगाल में तो बहुत ही दुर्दशा है जिसके वर्णन की यहां इसलिए आवश्यकता नहीं क्योंकि प्रत्येक शिक्षित पुरुष को उसका ज्ञान है। स्वर्णलता आदि महिलाओं का इतिहास आज किसी से छिपा नहीं। जब तक एक विशेष नियतराशि कन्या का पिता दहेज में न देसके तब तक कन्या का विवाह नहीं हो सकता।

मर्यादाभङ्ग का पुष्परिणाम

इस मर्यादाभङ्ग के कितने ही दुष्परिणाम हुए। लोग बरबाद होगये। ऋणी हो गये। यह तो ऐसे परिणाम हैं जो मोटे हैं जिनको हर कोई जान या देखसकता है किन्तु सूक्ष्मतर दुष्परिणाम जिसको केवल कतिपय समाजसुधारक ही अनुभव करसकते हैं वह यह है कि—

समाजमें स्त्रियों की स्थिति गिरगई

जिस कन्या के लिये पिताको हजारों रुपया दहेज में देना पड़े उस कन्या को-उस अपने ही रक्त के अंशको पिता भी बोझ समझने लगता है। पिताकी जो शक्ति कन्या की शिक्षा में व्यय होनी चाहिये थी-उसको सदाचारिणी सद्गृहस्थिनी योग्य बनाने में लगनी चाहिये थी-वह भले या बुरे साधनों से धनकमाने तथा कन्या को आशीर्वाद देने में व्यय होती है। पुत्र को योग्य बनाने और शिक्षा दिलाने में भी चाहे पिताका उतना ही धन क्यों न व्यय होजाय किन्तु वह शनैः २ व्यय होता है। यह एक दम बड़ी राशिके रूप में व्यय होता हुआ बोझ मालूम पड़ता है।

फिर दूसरा दुष्परिणाम पाप का बढ़ना है। स्पष्ट है कि जब बहुत धन प्राप्त करना है-सीधे साधनों से आता नहीं उलटे साधनों से-पापमय मार्गों से-धन कमाने की ओर प्रवृति बढ़ती है।

पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यताका प्रभाव

जब तक पाश्चात्य शिक्षा तथा भावों ने भारत में पदार्पण नहीं किया था तब तक तो यह था कि लोग एक दूसरे की देखादेखी दहेज को आवश्यक बनाते चले गये-अमुक ने इतना दहेज दिया मैं क्यों न दूं-परन्तु पाश्चात्य शिक्षा और भावों ने इस पर और रंग चढ़ा दिया-वह कैसे ?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"हर एक बात की कसौटी रुपया होगया"

पाश्चात्यदेशों वाले समझते हैं कि हर एक वस्तु यहां तक कि मान प्रतिष्ठा और विद्या भी धन से खरीदे या बेचे जा सकते हैं। हर एक वस्तु की कीमत रुपया हो गया। इसी लिये बंगाल में हर एक नव शिक्षा प्राप्त नवयुवक की कीमत (market value) हज़ार रुपये की संख्या से कूती जाने लगी। यदि लड़का बी० ए० पास है तो इतना और एम० ए० पास है तो उतना रुपया उसे चाहिये तब विवाह होगा। यह दशा केवल बंगाल में ही नहीं, पञ्जाब और यू०पी० में भी यही दशा है। शिक्षा मंहगी होगई पश्चिम का तरीका तालीम बड़ा मंहगा है। ग़रीब माता पिता अपने पुत्रों को शिक्षा नहीं दे सकते, किन्तु पुत्र बी०ए० और एम०ए० की मृग तृष्णिकाओं की ओर दौड़ते हैं। वहां फ़ीसें अधिक हैं पुस्तकें मंहगी हैं, फैशन भी ज़रूर चाहिये, इन सब के लिये रुपया कहां से आवे? विद्यार्थी अवस्था में ही विवाह के प्रस्ताव आने लगते हैं, प्रत्युत विद्यार्थी ही यह ढूंढते हैं कि ऐसी ससुराल मिले जो शिक्षाके सब ख़र्च सहले। बस दहेज़ की प्रथा एक विकराल राक्षस की तरह समाज को खारही है। कितने ही बी०ए० पास नवयुवक यह आग्रह करते हुए सुने गये कि यदि उन्हें इंग्लैंड भेज दिया जावे तो वह विवाह करना स्वीकार करेंगे।

हमारा दावा है कि पाश्चात्य शिक्षा की मंहगी ने भी दहेज की प्रथा को बढ़ाने में पूरा सहयोग दिया है। इस लिये यदि इस भूल भुलैयां से आर्य जाति बचना चाहती है तो उसे पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली को छोड़ कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर आना चाहिये जो सस्ती है और शिक्षित समाज को सादगी या सरलता सिखाती है।

ऊपर हमने जो कुछ लिखा उससे यह स्पष्ट है। हमारा मत है कि दहेज़ देना या दहेज़ देने वाला बुरा नहीं। हर एक कार्य आवश्यकता समझकर और अपने सामर्थ्य के अनुसार किया जाता है। उदाहरणार्थ यदि एक माता पिता अपनी कन्या को ऐसे स्थान में देते हैं जहां कि सदाचार धर्म, सुशीलता तथा विद्या है किन्तु धन नहीं और कन्या के माता पिता धनवान् हैं तो समता करने के लिये यदि वह अपनी कन्या को दहेज़ देदें तो वहां आवश्यकता है, इस लिये वह दहेज़ हर एक के लिये अनुकरणीय नहीं है, क्योंकि 'समेषु विवाह':—विवाह बराबरों में होता है।

उपाय

महाभारत में भी कहा है—

"दरिद्रान्भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।
व्याधितस्यौषधं पथ्यं नीरूजस्य किमोषधैः"॥

किन्तु आवश्यकता होने पर भी यदि कन्या के माता पिता देने में असमर्थ हैं तो वहां दहेज़ के लिये आग्रह नहीं करना चाहिये। इस लिये वरपक्ष की आवश्यकता और कन्यापक्ष का सामर्थ्य व्यापी कारण है।

कन्या का अवश्य विवाह करना ही चाहिये यह भ्रमात्मक धारणा भी लोगों को दहेज़ देने के लिये बाधित करती है। हमारा ऐसा ख्याल है कि जैसे प्राकृतिक जगत् में प्रत्येक त्रुटि को प्रकृति स्वयं पूर्ण करना चाहती है और करती है इसी प्रकार भयङ्कर दहेज़ प्रथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से कितनी ही जाति की कन्याएं स्वयं अविवाहिता रहजाया करेंगी। बंगाल में ब्रह्म समाज की शिक्षा ने यह कार्य प्रारम्भ भी कर दिया है। आज दिन बंगाल में कितनी ही ब्रह्मो कन्याएं अविवाहित जीवन बिताती हैं। किन्तु बाधित होकर जो कार्य किये जाते हैं कभी उनका परिणाम अच्छा नहीं होता। यह कहना कठिन है कि इस प्रकार अविवाहित रही हुई सभी कन्याएं या कमसे कम उनकी अधिक संख्या सदाचारपूर्वक अपना जीवन निर्वाह कर सकेंगी। तो भी दहेज लेने पर बल देने वाले आजकल के विशेषतः बंगाल के नवयुवकों को यह जान लेना चाहिये कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि कन्याओं को विवाह करना ही पड़ेगा वह कुमारी भी रह सकती हैं। स्वयं मनु ने विशेष अवस्थाओं में कन्या को कुमारी रखने की आज्ञा दी है:—

"काममामरणात्तिष्ठेद्गृहे कन्यर्तुमत्यपि।
न चैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित्" ॥
मनु ९। ८९।

अर्थात् यदि सदृश पति न मिले तो अपेक्षा इसके कि असदृश पति से विवाह करे विवाह न करके कुमारी रहना भला है। इसके अतिरिक्त प्राचीन भारत में कितनी ही ब्रह्मवादिनियों का पता लगता है जिन्होंने जन्मभर कुमारी रह कर ब्रह्मविद्या का अध्ययन किया। जैसे पुरुष जन्म भर ब्रह्मचारी या कुमार रह सकते हैं कन्याएं भी कुमारी रह सकती हैं। इस शुद्ध वैदिक शिक्षा के प्रचार से भी दहेज़ लेने के लिये आग्रह करने वालों के दिमाग़ ठीक हो सकते हैं।

'वरपक्ष को ऊपर समझना और कन्या पक्षवालों को हीन समझना' यह एक अन्य भ्रममूलक विचार है जिसने कि हिन्दू (आर्य) जाति में न केवल विषमता का ही बीजबोया प्रत्युत दहेज़ की प्रथा को अनुचितता की अवधि पर पहुंचाया है। कन्यापक्षको हीन मान करही दहेज़ के लिये दबाया जाता है। यदि समता के भावों का जाति में प्रचार हो तो यह कुप्रथा भी बहुत कुछ दूर हो सकती है।

इसके अतिरिक्त हमारा यह भी विचार है कि एक कुप्रथा के साथ दूसरी कुप्रथा इस प्रकार बँधी हुई है जैसे कि शृङ्खला (ज़ंजीर) में प्रत्येक कड़ियां एक दूसरे से गुथी हुई होती हैं, इस लिये जहां हम इस कुप्रथा को तोड़ना चाहें वहां जाति बिरादरियों, अनुचित बन्धनों को भी हमे तोड़ फेकना चाहिये, क्योंकि जब तक बिरादरियों के सङ्कुचित क्षेत्र में हम पड़े हैं तब तक स्वातन्त्र्य के सुगन्ध का आस्वादन नहीं कर सकते। यह बिरादरियां ही हैं जिन्होंने कुप्रथाओं को बढ़ा रक्खा है। अच्छा हो कि विवाह सस्कार भी अन्य धार्मिक यज्ञों की भांति धार्मिक मन्दिरों में ही हुआ करे और बरात वग़ैरह के पुराने ढ़कोंसले सब दूर कर दिये जायें, तभी वास्तविक सुधार हो सकता है। तभी स्त्रीजाति का पद समाज में उच्च हो सकता है। तभी कन्या की उत्पत्ति को लोग न शोक का चिन्ह समझेंगे न भार समझेंगे॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लहू का प्रभाव

लेखक—श्रीयुत पृथ्वी नाथ शर्म्मा

(१)

बाबू सुमेरुदत्त चारपाई पर लेटे हुक्का पी रहे थे। दोनों बच्चे इधर उधर खेल रहे थे। उसकी नव विवाहिता स्त्री कुछ दूर दरी पर बैठी क्रोशिये के साथ कुछ बुन रही थी। इतने में नौकर ने एक कार्ड बाबू जी के हाथ में लाकर रक्खा।

बाबू साहिब के हाथ में कार्ड देख कर उस की पत्नी भी वहां आ मौजूद हुई और जैसे कार्ड देख कर सब पूंछते हैं, वह भी पूछने लगी, "किस का कार्ड है जी?"

"तेरे पिता का" बाबू जी ने उत्तर दिया।

बस फिर क्या था, उस का चेहरा लाल हो गया और उत्सुकता से पूछा, "क्या लिखा है, कुशल तो है?"

बाबू जी ने चुपके से उत्तर दिया, "हां और तो सब कुशल है परन्तु तेरे पिता के दो चार दिन से शिर में दर्द है"।

यों तो सब स्त्रियों की प्रबल इच्छा अपने मैके जाने की होती है और वह समय २ पर वहाँ जाने के बहाने भी ढूंढती हैं। परन्तु नव विवाहिता के आगे किसी एक घर वाले का नाम ले देना ही उसे मैके भेजने के लिये काफी होता है। ज़रा किसी घर वाले का नाम लो बस हाथ पांव धोकर तुम्हारे पीछे पड़ जायंगी और वहां जाने के लिये चिल्लाना आरम्भ कर देंगी। यहाँ पर तो पिता के शिर दर्द था, फिर यह कैसे हो सकता था कि बाबू साहिब की पत्नी यशोदा चुप रहती।

वह आंखों में आंसू भर कर बोली, "तब तो मुझे अवश्य ही वहां जाना चाहिये"।

बाबू साहिब ने कहा, "तेरे जाने की क्या आवश्यकता है, मैं अभी पत्र लिखता हूं उस में तेरी, ओर से भी पूछ लूंगा"। वह फिर बोली, "खाली पूछने से क्या होगा? मैं आप जाकर उनको देखूंगी। पता नहीं क्या रोग है? कोई, अधिक बीमारी ही होगी जिसे शिर दर्द लिखा है"।

बाबू जी ने खीज कर कहा, "अभी पांच सात दिन हुए तुम वहां से आ रही हो। आज फिर जाने को उद्यत हो गई हो। मुझे यह बातें नहीं अच्छी लगतीं"।

स्त्री की जिह्वा जिस समय चलने लगती उस समय मस्तिष्क उस का साथ छोड देता है। वह ताना देती हुई बोली, "हां जी! आप को क्यों अच्छी लगनी हैं? आप का पिता बीमार हों तो मैं देखूं किस तरह ठहरते हो"।

बाबू साहिब को यह सुन कर क्रोध आ गया। वह क्रोध से लाल होकर बोले, 'यदि मामूली शिर में दर्द हो तो मैं कभी भी न जाऊँ"

"हां जी कभी न जाओ। कहना सुगम ही होता है करना ज़रा कठिन होता है"।

यह सुन कर बाबू साहिब और अधिक सहन न कर सके। क्रोध से बोले, "मैंने एक बार जो कह दिया नहीं जाने दूंगा। फिर बार२ वही बात।"

यह शब्द सुनकर यशोदा वहां से उठ आई। इस से यह नहीं समझ लेना चाहिये कि उसने मैके जाना स्थगित कर दिया। परन्तु नहीं, उसने दुगने ज़ोर से मन में कहा "मैं जाऊंगी।"

(२)

दिन गुज़र गया। सूर्य देवता गगन मण्डल में पश्चिम दिशा की ओर पहुंच कर ओझल हो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गये। शनैः २ तारे निकलने आरम्भ हो गये। चन्द्र देवता भी अपनी शीतल किरणों को लिये, अपने सिंहासन पर आ विराजे।

बाबू सुमेरुदत्त खाना खा कर पलङ्ग पर जा लेटे। कुछ देर के अनन्तर यशोदा भी अच्छी तरह से वाक्यों के शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित बाबू जी पर धावा कर उन्हें मनाने के लिये वहां आ उपस्थित हुई। आते ही कहने लगी, "क्यों जी आप के पांव दाब दूं?"

यह सुन कर बाबू साहिब कुछ विस्मित से हुए और सोचने लगे। क्या बात है जो इतनी दया हो रही है? क्या यह दोपहर की घटना भूल गई। परन्तु फिर भी उन्होंने चुपके से उत्तर दिया, "यदि ऐसी ही इच्छा है तो दाब दो"।

यशोदा ने पैर दबाने आरम्भ किये और बाबू साहिब को नींद के झोंके आने आरम्भ हुए। यशोदा ने यह समय बड़ा उत्तम समझा और कहने लगी, "क्यों जी, क्या फिर कल मैं चली जाऊं"?

बाबू साहिब जो कुछ निद्रा में थे कुछ नम्रता से उत्तर दिये, 'मैंने कह जो दिया था कि नहीं जाना। फिर बार २ क्यों पूंछती हो?"

यशोदा ने कहा, "नहीं जी वहां जाना अति आवश्यक है। इस लिये आप एक दिन के लिये ही जा लेने दो"।

बाबू साहिब ने फिर नाही की। परन्तु यशोदा तो अब बार बार यही बात कहने लगी। अन्त को बाबू साहिब, जो अर्ध सुप्त अवस्था में थे, उत्तर दिये, "अच्छा प्रातः सही।"

बस यशोदा इस से अधिक नहीं सुनना चाहती थी। इस से उसने झट अपना अभिप्राय ही निकाला। और झट वहां से उठ आई।

प्रातःकाल बाबू साहिब अभी गहरी निद्रा में ही आनन्द ले रहे थे कि यशोदा नौकर को साथ ले स्टेशन पर गाड़ी आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

कोई सात बजे के लगभग बाबू साहिब भी अपने बिस्तरे से उठे। शीघ्र ही नीचे उतरे, नौकर को दातुन आदि लाने के लिये कहा, और पूछा, "बीबी जी कहां हैं?"

नौकर ने उत्तर दिया, "हज़ूर वह तो प्रातः काल ही दूसरे नौकर को साथ लेकर गांव चली गई हैं। मुझे यह कह गई थीं कि बाबू जी को कह देना "मैं परसों आजाऊंगी।"

यह सुनते ही बाबू जी के क्रोध का वारापार न रहा। उन का मुख क्रोध से लाल हो गया, दांत पीसने आरम्भ हो गये, होठ फड़कने लगे, आंखों में रक्त उतर आया। दोनों मुक्के क्रोध से मेज़ पर मार कर बोले, "उस की इतनी हिम्मत हां, मैं उसे अच्छी तरह से सबक सिखाऊंगा" यह कह कर उन्होंने दातुन को परे फैंक दिया, पानी के लोटे को ठोकर लगाया और धड़ाम से कुर्सी पर बैठ गये। और दो चार गालियां नौकर को भी दीं, "हरामज़ादे तुझे जो कहा था कि पतली दातुन भिगोना, फिर वही लट्ठ भिगो दी है, यह दातुन करेगा तेरा बाप"।

नौकर ने देखा बात बढ़ती जारही है, किसी तरह बाबू जी को शान्त करना चाहिये। उसने मुहल्ले की एक दो स्त्रियों के आगे मिन्नत की कि वेही आकर बाबू जी को शान्त करें।

यह प्रायः होता है कि यदि किसी के घर में लड़ाई हो तो दूसरी स्त्रियां—पुरुष भी परन्तु बहुत कम-उस लड़ाई की अग्नि में घी का काम करती हैं। अब बाबू साहिब की स्त्री के विषय में यह सुनकर कइयों के हृदय प्रसन्नता से उछल पड़े। उन्होंने सोचा चलो चल के आनन्द तो लें। इस लिये बाबू साहिब को उसकाने के लिये एक खासा झुण्ड आ गया। हां परन्तु उन में एक दो विचारी भली नीयत से भी बाबू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जी को शान्त करने के लिये आई थीं। परन्तु ऊपर से सब ने ऐसी सूरतें बनाई थीं जैसे संसार में उन्हें बाबू जी के भले के अतिरिक्त और काम ही नहीं।

उन में से एक स्त्री जो बेचारी भली नीयत से आई थी बड़ी नम्रता से कहने लगी, "हुआ क्या? अभी छोकरी जो हुई। अभी उमर की कच्ची ही तो है। अपराध हो ही जाता है आप क्षमा कर दिया करें।"

ज्यों ही उसने यह शब्द समाप्त किये एक दो स्त्रियों ने उसे इस तरह उत्तर दिया जैसे वह उसे काट ही खायंगी, 'हां जी अभी तक छोकरी ही रही, अभी कोई बीस तीस वर्ष तक कच्ची ही रहेगी।"

एक और बोली, "कसूर तो उसने इतना किया है कि उसे कुछ न कुछ दण्ड अवश्य ही देना चाहिये।"

तीसरी बोली, "यदि आप गुस्सा न मानें तो मेरे विचार में कुछ देर तक उसे वहां रहने देना चाहिये। देखना सौ २ बार क्षमा मांगती है कि नहीं" एक बूढ़ी सी स्त्री जो अभी तक चुप ही थी, बड़े ही गम्भीर भाव में बोली, "बाबू जी! स्त्री का क्या है? जैसे जूती वैसी ही स्त्री; एक उतारी दूसरी पहिन ली। आप दूसरा विवाह क्यों नहीं करा लेते?"

अभी तक तो बाबू साहिब चुप थे। यह सुन कर उनको कुछ क्रोध आगया। परन्तु दूसरे ही क्षण क्रोध का स्थान शोकने ले लिया। उन्हों ने एक ठंडी आह भरी और बोले, "पुरुष का विवाह एक होता है अनेक नहीं। जिस के साथ मेरा विवाह हुआ था वह अब स्वर्ग में हैं"

यह कहते २ बाबू साहिब के नेत्रों से दो चार आंसू टपक पड़े। वह आंसू पोंछते २ वहां से उठ कर चले गये।

पाठकों के विनोदार्थ हम बाबू सुमेरुदत्त के पूर्व जीवन पर एक दृष्टि डालना आवश्यक समझते हैं जिस से वे बाबू साहिब के आंसुओं का ठीक कारण जान सकें और साथ में यह भी जान सकें कि इतना चिर हो जाने पर भी उनकी पहिली पत्नी कुलवती में क्यागुण थे-जिससे वह केवल उसके साथ विवाह को ही अपना विवाह कहते। आशा है पाठक हमें विषय उल्लङ्घन के लिये क्षमा करेंगे।

(३)

सुमेरु दत्त लाहौर के प्रसिद्ध रईस बाबू गिरधारी लाल का इकलौता लड़का था। वह अभी दो वर्ष का भी न हुआ था कि पिता के प्रेम से बञ्चित हो गया। उस की माता ने उसे बड़े लाड़ और प्यार से पाला था। जब उसकी अवस्था अठारह ही वर्ष की थी तो उसका विवाह जालंधर के लाला अमृतलाल की लड़की कुलवती के साथ हो गया।

कुलवती की अवस्था उस समय कोई पंद्रह वर्ष के लगभग थी। उस में सुन्दरता तथा भोलापन कूट २ कर भरा था। जब वह हंसती थी उसकी गुलाबी कपोलें किरिमिची हो जाती थीं। उसके दांत मोतियों की लड़ी के समान एक दूसरे के साथ सटे हुए चमकने लग जाते थे। उसके नेत्र विशाल तथा तेजोमय थे जिन से सुन्दरता दया तथा पवित्रता टपकी पड़ती थी। उसके नेत्र जैसे कि प्रायः उपन्यास लेखक लिखा करते हैं-समुद्र की भांति गहरे नहीं थे जिनमें उसकी स्वभाविकता छिपी हो। परन्तु इसके विपरीत उसके नेत्रों में-यदि समुद्र को ही उपमा के लिये ले लिया जाय तो ऊपर वर्णित तीनों गुण कमल के समान तैर रहे थे जो प्रत्येक देखने वाला देख सकता था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वह सुन्दर थी यह बात तो ठहरी झगड़े के बाहर। वह दयालु थी। इसके विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यदि वह किसी भूखे नंगे को देख लेती तो उसे खाना, और वस्त्र देती। यदि उसकी सखी सहेलियाँ अथवा पड़ोसिनों में से कोई बीमार होती तो उसका हृदय पसीज जाता था। वह अवश्य ही उसकी खबर लेने जाती थी। यदि हो सकता तो उसकी सेवा शुश्रूषा भी करती। यदि और कुछ नहीं कर सकती थी तो मीठे वचनों से उसे सांत्वना दे आया करती थी।

वह पवित्र थी, इसके विषय में यही कहना काफी होगा कि वह अपने पति से दिल से प्रेम करती थी। वह कभी किसी साधु तथा महात्मा के दर्शन करने नहीं जाया करती थी और न ही कभी किसी देवी देवता की पूजा किया करती थी। परन्तु वह अपने पति के दर्शन करना ही हजार साधुओं के दर्शनों से अच्छा समझती थी और अपने पति की सेवा करना ही हजार देवी देवताओं की पूजा से उत्तम समझती थी।

इन गुणों के कारण कुलवती को प्रत्येक पुरुष आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता था। यदि कोई पुरुष अपनी स्त्री को कुछ समझाने लगता था तो कुलवती का ही नाम लेता था। यदि कोई सास अपनी बहू को शिक्षा देती थी तो भी कुलवती की ही उपमा उसके मुखसे निकलती। यदि कोई माता अपनी लड़की को सुसराल भेजते समय उपदेश देती थी तो वह भी कहती थी, बेटी! कुलवती की तरह रहना' अधिक क्या उस मुहल्ले में कुलवती प्रत्येक बात में आदर्श थी।

सुमेरुदत्त ऐसी पत्नी को पाकर फूला न समाता था। प्रसन्नता से उसके पग पृथ्वीपर न पड़ते थे। वह इतना प्रसन्न रहता था कि यदि उसके मित्र यह कहते थे कि वह सब से सुखी है तो वह हंस कर इस बात की अनुमति दे दिया करता था।

इस तरह प्रसन्नता में बारह वर्ष बीत गये। सुमेरुदत्त अब एक लड़की और लड़के के पिता थे और कुलवती माता।

एक दिन सुमेरुदत्त और उसकी पत्नी बैठे आपस में हंसी से बातें कर रहे थे। कुलवती अभी २ स्नान कर के आई थी। उसने अपने लम्बे काले तथा मुलायम केश पीठ पर ही छोड़ रखे थे। शनैः २ वायु के चलने से उसके कुछ केश उसके चमकते मुख के इर्द गिर्द आगये थे। उन केशों से घिरा उसका मुख काले बादलों से घिरे चन्द्रमा के समान सुन्दर लगता था। उसदिन वह इस पृथ्वी की जीव नहीं बल्कि आकाश से उतरी अप्सरा के समान प्रतीत होती थी।

सुमेरुदत्त एक टक उसकी ओर देख रहा था। वह सोच रहा था सचमुच स्वर्ग ही तो भोग रहा हूं। मेरे जैसा प्रसन्न तथा सुखी शायद ही कोई और होगा।

सुमेरु दत्त को क्या पता था कि उसके सुख की अवधि पूरी हो हुआ चाहती है। प्रकृति उसकी इस अनभिज्ञता पर हंस रही थी।

(४)

शहर में मलेरिया फैल गया। चारों ओर रोगी ही रोगी नज़र आने लगे। कोई घर ऐसा न होगा जहां एक दो चारपाइयां बीमारों की न पड़ी हों। डाक्टरों की दुकानों पर हर समय भीड़ लगी रहती थी। नये डाक्टरों के भाग्य भी फिरे। जहां पहिले वह बैठे मक्खियां मारा करते थे अब उन्हें खाना खाने का समय भी न मिलता। डाक्टर तो एक ओर रहे, हकीम जिन्हें लोग नीम कह कर पुकारा करते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिनसे दवाई लेने की तो बात ही जाने दीजिये लोग कभी उनकी ओर देखते भी न थे, उनके भी जेब आज कल छन २ करते थे।

जब मलेरिये की यह हालत थी तो यह कैसे हो सकता था कि सुमेरुदत्त का घर खाली रहता। वहां भी आप घुसे। आते ही कुलवती को दबोचा और चारपाई पर लिटा दिया। रोज़ डाकृर आने लगा परन्तु ज्वर कम न हुआ। एक मास बीता, दो भी बीते, शहर से मलेरिया भी दूर हो गया परन्तु कुलवती वैसी की वैसी ही रही। अन्त को कुछ निराश होकर सुमेरुदत्त ने सिविल सर्जन को बुलाया। अच्छी तरह से परीक्षा करके साहब ने अकेले में सुमेरुदत्त से कहा "इसे तो consumption है"।

"हैं, क्या कहा consumption?" सुमेरुदत्त ने घबराई हुई आवाज़ में पूछा।

"हां"।

यह सुनते ही सुमेरुदत्त के चेहरे का रंग उड़ गया। शरीर थर थर कांपने लगा। पृथ्वी नीचे से निकलती हुई प्रतीत हुई। मस्तक से पसीना चूने लगा और दिल धड़कने लगा।

उसकी यह हालत देख कर डाकृर ने सांत्वना देते हुए कहा, "आप घबराइये मत। अभी पहिली ही स्टेज (stage) है। कोई आश्चर्य नहीं यदि आराम हो जायतो"।

यह सुन कर उसका जी कुछ ठिकाने हुआ। उठ कर डाकृर को बाहर तक छोड़ आया।

अब सिविल सर्जन की चिकित्सा आरम्भ होगई। परन्तु बीमारी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। डाकृर साहब की कोई दवाई कारगर न हुई।

एक दिन डाकृर और सुमेरुदत्त रोगी के कमरे से निकले। सुमेरुदत्त ने पूछा, 'कैसी अवस्था है"?

डाकृर साहिब ने सिर हिलाते २ उत्तर दिया, "हालत अच्छी ही है। परन्तु आप अन्दर जाकर उन्हें मिललें"।

सुमेरदत्त को डाकृर की इस बात की कुछ समझ न आई। वह झटपट अन्दर गया। कुलवती तकिये के सहारे लेटी हुई थी। उसके गुलाबी गाल पीले हो गये थे और उनमें झुर्रियां पड़ी हुई थीं। उसके विशाल तथा सुडौल नेत्र अन्दर को धंस गये थे परन्तु तेज अब भी निकल रहा था। उसके लम्बे तथा मुलायम केश आधे से अधिक झड़ चुके थे। वह सन के समान रूखे थे। सुमेरुदत्त उसके पलंग पर उसका सिर गोदी में लेकर बैठ गया और कहने गला "प्रिये कोई कष्ट तो नहीं?"

उसने धीमी सी आवाज में उत्तर दिया— "नहीं नहीं प्राणपति! अब क्या कष्ट होना है अब तो मैं उस स्थान पर जा रही हूं जहां प्रत्येक पुरुष जाता है, जहां सच्ची शांति का साम्राज्य है वहां कष्ट का क्या काम है। वहां दुःख दूर २ भागता है"।

सुमेरुदत्त ने कुछ कहना चाहा परन्तु शब्द गले में ही रुक गये, शब्दों ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। सुमेरुदत्त के नेत्रों से आंसुओं की धारा बह रही थी। उनमें से एक दो आंसू कुलवती के मुख पर भी गिर पड़े।

वह फिर बोली, "हैं यह क्या? आप तो रो रहे हैं, मैंने तो अभी आप से कुछ और कहना था परन्तु आप रोना बन्द करें तो। यह कह कर उसने अपना आंचल बाबू साहिब को पकड़ाया और कहा, "यह लो आंसुओं को पोछो"।

आंचल हाथ में पकड़ कर बाबू साहिब सोचने लगे क्या यह अन्तिम वार ही है? यह विचार उनके मन में आते ही आंसू रुकने के बजाय दुगने ज़ोर से बहने आरम्भ हो गये। खैर ज्यों त्यों करके उसने आंसू बन्द ही किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और बोला, "प्रिये जो कहना था अब कहो"।

कुलवती इस तरह बोली जैसे कोई पुरुष कब्र के अन्दर से बोलता है, "स्वामिन्! मैं तो अब चली। आपके लड़की और लड़का—"

यह कह कर वह रुकी। एक लम्बी सांस ली और बोली, "वह दोनों कहां हैं"?

इतने में नौकर उनको लेकर अन्दर आया। कुलवती ने दोनों को बारी २ चूमा और फिर कहने लगी, "आपके लड़की और लड़के को आपकी रक्षा में ही छोड़ जाती हूं, अब आप ही उनके पिता और आप ही उनकी माता हो"।

बाबू साहिब आंसू रोक कर बोले, "निराश मत होओ। तुम दो चार दिन में ही भली चंगी हो जाओगी"

यह सुन कर वह बोली "नहीं २ वह समय अब बीत चुका है, क्या मेरी एक बात मानोगे? क्या दोनों बच्चों के लिये कुछ आत्म-त्याग कर सकते हो?"

बाबू जी ने भरे हुए नेत्रों से कहा, "हां हां कहो"

"क्या मेरे मरने के उपरान्त—" यह कह कर रुक गई। उसने डब डबाई हुई आंखों से सुमेरु दत्त को ओर देखा और बोली, "तुम बिन विवाह किये रह सकोगे?"

सुमेरुदत्त एक टक उसकी ओर देख रहा था और चुप था। उसे चुप देख कर कुलवती ने फिर कहा, "बोलते क्यों नहीं? शीघ्र बोलो, मेरा समय अब हुआ चाहता है"

सुमेरु दत्त ने रुके गले से उत्तर दिया, "मैं ऐसे ही रहूंगा"

यह सुन कर कुलवती के नेत्र अन्तिम वार चमके और वह बोली "मेरी बात—को—या—द"

वह पूरा वाक्य भी न कहने पाई थी कि अधिक बोलने की थकावट से मूर्छित हो गई। बहुत चेष्टा की गई परन्तु मूर्च्छा न टूटी। दो ही घंटों के अनन्तर वह मूर्च्छा सदा के लिये मूर्च्छा हो गई।

(५)

यह प्रकृति का नियम है कि ज्यों २ समय बीतता जाता है पुरुष का शोक भी घटता जाता है।

सुमेरुदत्त जो अपनी स्त्री की मृत्यु पर पागल सा हो गया था, जो घंटा भर वेहोश ही पड़ा रहा, दो तीन दिन तक जिसके नेत्रों से आंसू बन्द न हुए, दो तीन सप्ताह तक जिसने रुचि से भोजन न किया, मासों तक जिसको स्वप्न में भी अपनी पत्नी की याद ही तड़पाती रही, अभी वर्ष भी पूरा न होने पाया था कि उसका शोक नाम मात्र का रह गया। उसकी याद किसी भूली हुई वस्तु की याद के समान रह गई। उसकी सब प्रतिज्ञाएं—सच्चे दिल से की हुई प्रतिज्ञाएं—धूल में मिल गईं।

सुनते हैं अब उसका विवाह होने वाला है।

इस में संशय नहीं कि यह उसकी स्वर्गीय माता की प्रार्थनाओं का नतीजा है। यह भी सच है कि यह उसके मित्रों के प्रभाव का फल है और यह कथन भी कुछ हद तक ठीक है कि शरीकों के कांटे की भांति चुभने वाले ताने भी इसके लिये उत्तरदायी हैं, तो बाबू साहिब का उत्तरदायित्व सब से अधिक है।

बाबू सुमेरुदत्त का विवाह हो गया। पत्नी भी आ गई परन्तु यशोदा कुलवती नहीं।

यशोदा और कुलवती में बड़ा अन्तर था। वैसे तो यशोदा भी बड़ी सुन्दरथी। परन्तु यशोदा का हृदय उन दो गुणों से ऊसर ही पड़ा था जिनके कारण कुलवती ने सब के हृदय में स्थान प्राप्त कर लिया था। जिनके कारण अभी तक लोग उसे देवी कह कर याद करते। अर्थात दयालु हृदय जो प्रत्येक स्त्री पुरुष को विपत्ति में देख कर पिघल जाता था और सुशील

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

स्वभाव जो सब को मोह लेता था। जब सुमेरुदत्त कुलवती की याद यशोदा को मुकाबले में रख कर किया करता था तो उसकी महानता का अनुभव करके उसके नेत्रों से आंसू बह जाते थे। इसका प्रभाव यह होता था कि वह अपने पुत्र और पुत्री को दिन प्रति दिन आगे से अधिक प्रेम करने लग गया था। यशोदा उसके इस व्यवहार पर असंतुष्ट रहती थी, इस लिये दोनों में प्रायः अनबन ही रहती थी।

(६)

घड़ी ने टन २ कर सात बजाये। यशोदा ने प्रसन्न २ अपने घर पग रक्खा। मैके रह कर आने की प्रसन्नता में वह इस से दो दिन पहिले की सब घटना भूल चुकी थी। उसे यह नहीं पता था कि बाबू साहिब ने उससे न बोलने का निश्चय किया हुआ है।

बाबू साहिब अपने कमरे में बैठे पढ़ रहे थे। यशोदा ने उस कमरे में प्रवेश किया। बाबू साहिब ने मुड़ कर यह भी न देखा कि अन्दर कौन आया है और उसी तरह बैठे रहे। यशोदा झट भांप गई कि क्या बात है परन्तु फिर भी उसने कहा, 'बाबू जी'। बाबू जी ने एक वार क्रोध भरे नेत्रों से उसकी ओर देखा और फिर मुख को मोड़ लिया। यशोदा निकल कर बाहर आ गई।

एक दिन बीता, दो दिन भी बीते, परन्तु उनका कलह ज्यों का त्यों रहा। बाबू साहिब जब यशोदा को देखते तो उनके मुख पर क्रोध के चिन्ह आ जाते थे। यही कारण था कि एक दो वार अपने स्वभाव के विपरीत भी यशोदा का दिल क्षमा याचने को चाहा। परन्तु उसको साहस न हुआ।

यह प्रायः होता ही है कि एक ओर से प्रेम हट जाने पर पुरुष दूसरी जगह लगा कर उसकी पूर्ति करता है। शायद यही कारण था कि यशोदा अब अपनी सौत के पुत्र हंस और पुत्री श्यामा को प्रेम करने लग गई थी।

इस घटना को एक मास बीत गया। दोपहर का समय था, गर्मी का मौसम। यशोदा सब किवाड़ आदि बन्द करके लेटी हुई थी। पास ही सात वर्षीय हंस लेटा था। यशोदा ने उठा कर उसे प्रेम से चूमा और छाती पर बिठला लिया और प्यार करने लगी। इस प्यार ने हंसको वह बात पूछने का साहस दिया जिसे पूछने के लियेवह बड़े चिरका इच्छुक था। वह बोला, "मां अब बाबू जी कभी तुम से बोलते नहीं"।

यह सुन कर यशोदा के नेत्र भर आये। उसने सजल नेत्रों से हंस की ओर देखा। और उसके बालों को संवारती हुई बोली, "लाल वह मेरे साथ लड़े हुए हैं"। बालक ने उसी भांति सरलता से पूछा, "क्यों"। "पुत्र वह मुझसे अप्रसन्न हैं"-यशोदा ने उत्तर दिया। यह सुन कर हंस ने गर्व तथा गम्भीरता युक्त भाव से जैसे कोई बड़ा आदमी बोलता है कहा, "अच्छा तो मैं उन्हें अभी मना कर लाता हूं"

यह कह कर वह दरवाज़े को चल पड़ा।

संयोग से बाबू सुमेरुदत्त बाहर खड़े २ यह सब सुन रहे थे। इन प्रेम भरी बातों ने उनके हृदय की गांठ को खोल दिया। हंस के साथ के प्रेम ने उनके मन से सारा क्रोध दूर कर दिया। हंस अभी किवाड़ तक भी न पहुंचा था कि बाबू जी किवाड़ खोल कर अन्दर आ गये। उन्होंने हंस को गोदी में उठा लिया, यशोदा के पास बैठ गये और बोले, "बेटा तुझ में सच-मुच अपनी माता का असली लहू है"

हंस अपने पिता की ओर देखने लगा। और यशोदा आर्द्र नेत्रों से हंसकी ओर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनःशक्ति और उसका प्रभाव

लेखक—श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०

मनः शक्ति वैयक्तिक जीवन को उच्च बनाने के लिये एक विलक्षण शक्ति है। इसके द्वारा कठिन से कठिन कार्य्य क्षणमात्र में किये जा सकते हैं, यह वह शक्ति है जो प्रत्येक कार्य्य में प्राणों का सञ्चार कर देती है। वास्तव में ईश्वर ने यह अमूल्य शक्ति प्रदान कर मनुष्य मात्र का बड़ा उपकार किया है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया गया है, यदि मूर्खतावश कोई व्यक्ति इस ईश्वर प्रदत्त महती शक्ति को नहीं विकसित करता तो इस में उसी का दुर्भाग्य है, इसके उत्तरदायित्व का भार उसी प्रमादी व्यक्ति के कन्धों पर डाला जायगा।

इस शक्ति को अङ्गरेज़ी में (Will power) के नाम से पुकारा जाता है। आत्मशक्ति, आत्मबल इच्छाशक्ति, मनोबल, मनःशक्ति आदि सब पर्याय वाची शब्द हैं। इस का शब्दार्थ है हृदय अथवा मन की शक्ति। अर्थात् जब विचार उच्च कोटि में पहुंच कर इतने परिपक्व और सुदृढ़ हो जाते हैं कि वे किसी भी झटके से हिलाये डुलाये नहीं जा सकते, जब मन इतना स्थिर एवं एकाग्र हो जाता है कि वह किसी भी इच्छित विषय में तल्लीन हो सकता है तब यह कहा जाता है कि मनः शक्ति का पूर्ण विकाश हो गया अथवा मनः शक्ति बलवती हो गई। इस अवस्था में जब कोई कार्य्य किया जाता है तो सफलता स्वयं हाथ बांध कर सामने आ जाती है।

यह शक्ति अभ्यास और परिश्रम से बहुत कुछ बढ़ाई भी जा सकती है। हमारे प्राचीन ऋषि महर्षि और आचार्य्यों के जीवन चरित्र बढ़ी हुई मनः शक्ति के उज्ज्वल उदाहरण हैं। इसी शक्ति द्वारा वे जगत् का कल्याण एवं आध्यात्मिकोन्नति करते२ अन्ततोगत्वा परमानन्द परमेश्वर में तन्मय होकर मुक्ति को प्राप्त करते थे। मनः शक्ति ने ही हनूमान को इतना बली बनाया, मनः शक्ति ने देवादि देव महादेव को वह शक्ति दी कि कामदेव देखने मात्र से भस्म हो गया! मनःशक्ति ही मिस्मरेज़्म का प्रधान अङ्ग है! मनःशक्ति ने ही अर्जुन को धनुर्धर, भीम को गदाधर, कृष्ण को चक्रधर, बलराम को हलधर, अभिमन्यु को चक्रव्यूह ऐसे दुर्गम दुर्ग का तोड़ने वाला, राणाप्रताप को कठिनाइयां झेल कर आत्माभिमान और क्षत्रिय वंश के गौरव का रखने वाला और सीता सरीखी वीरांगना को पापिष्ठ रावण के वंश-क्षय के लिये दवाग्नि की ज्वाला बना दिया। यह मनः शक्ति की प्रबलता का ही प्रभाव था कि अकेले दयानन्द सरस्वती जैसे त्यागी लंगोट बन्द सन्यासी ने असंख्य यातनाओं एवं रुकावटों को पार कर भारत में मरदुमपरस्ती के झाड़ झंखाड़ को उखाड़ कर फैंक वैदिक सिद्धान्तों का सिंहनाद बजाया और एक दम देश की काया पलट दी। यह मनःशक्ति का ही उज्ज्वल प्रभाव है कि महात्मा गान्धी ने त्याग और तप की साक्षात मूर्ति बन कर समुद्र पार विलायत में हलचल पैदा कर दी। कहां तक कहें संसार का इतिहास देखने से पग २ पर इस शक्ति की विलक्षणता दिखाई पड़ती है। इटली के प्रख्यात देशभक्त जोजेफ मेजिनो को ही लीजिये, इस विलक्षण शक्तिशाली पुरुष ने दासत्व के भयानक दल दल में फंसे हुए इटली देश को दास्यमुक्त और स्वतन्त्र करने के दृढ़

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संकल्प एवं समस्त देश में एक स्वजातीय पताका फहरा देने की अभिलाषा से अपने उत्साह वाक्यों और कार्य्यों द्वारा इटली निवासियों के मृतप्राय शरीरों में शक्ति रूपी प्राण फूंक कर देश के लिये तन मन धन दे देने को तैयार कर दिया। और प्रत्येक देशवासी के हृदय में वह शक्ति उत्पन्न कर दी कि इटली की समस्त जनता हथेली पर सर रख कर जातीय पताका के नीचे आ खड़ी हुई। यही नहीं अपने उष्ण रक्त से जननी जन्मभूमि को मंगल स्नान करा उसे शत्रुओं के शिरों की जयमाल पहना सदा के लिये परतन्त्रता की बेड़ियों से छुड़ा लिया। विचारिये तो सही क्या यह साधारण शक्ति का काम है? जापान जैसे छोटे देश ने रूस जैसे विस्तृत देश पर कैसे विजय पाई? इसी मनःशक्ति की सबलता के प्रभाव से। छत्रपति शिवा जी ने किस बल पर मुग़लों के छक्के छुड़ा दिये थे? निस्संदेह इसी मनःशक्ति की महत्ता के बल पर। रूप नगर की वीर क्षत्राणी चंचल कुमारी जब पालकी से बाहर निकल कर साक्षात चण्डी की भांति औरङ्गज़ेब और राणा राजसिंह की सेना के मध्य आ उपस्थित हुई थी तो किसी भी वीर की हिम्मत न पड़ी कि तलवार उठा कर युद्ध प्रारम्भ करता। उस वीर महिला की अलौकिक शक्ति और सत्व के आगे सब के हौसले पस्त हो गये। पाठक यह है मनः शक्ति के बल का प्रभाव! अशोक वाटिका में रावण नंगी तलवार लेकर सीता जी के सामने जाता है। नाना प्रलोभनों के पश्चात त्रास दिखा कर धमकाता है, यही नहीं तलवार उठा कर कहता है। 'सीता मैं तुझे इतना चाहता हूं और तू मेरी ओर एक बार प्रेम से देखती भी नहीं। सम्भल जा यदि तू मेरी पटरानी बनना स्वीकार नहीं करती तो अभी तेरा किस्सा पाक किये देता हूं।" किन्तु आदर्श रमणी तनिक भी विचलित नहीं होती और रावण को बार २ धिक्कारती एवं उसे नराधम और पापिष्ठ बताती है। यदि रावण चाहता तो सीता बिचारी को बल से अपनी दासी बना सकता था; किन्तु नहीं! रावण को साहस नहीं हो सका कि उस देवी के शरीर को हाथ तो लगाता। बात क्या थी? उसे अपने सतीत्व अपनी पवित्रता एवं अपनी मनःशक्ति पर पूर्ण विश्वास था और परम् पिता जगदीश का सहारा था। पाठक! देखा आपने मनःशक्ति का महात्म्य! विद्वानों ने मनःशक्ति के प्रभाव को दो भागों में विभक्त किया है:—१ बाह्य प्रभाव, २ आन्तरिक प्रभाव; बाह्य प्रभाव के विषय में उपरोक्त उदाहरणों से भली भांति सुस्पष्ट है कि मनःशक्ति और कुछ नहीं केवल सच्ची इच्छा का लगन मात्र है, किन्तु यह आवश्यक है कि उस में किसी प्रकार की न्यूनता सन्देह अथवा कच्चापन नहीं होना चाहिये। कच्चापन ही उसकी सिद्धि में बाधक होता है।

रहा आन्तरिक प्रभाव उस के विषय में निम्नस्थ उदाहरण मात्र से पूरी जानकारी हो सकती है। देखिये मनुष्य को जिस बात का दृढ़ निश्चय हो जाता है उसका वैसा ही प्रभाव भी होता है। विलायत में एक अपराधी को प्राण दण्ड की सज़ा दी गई, किन्तु कुछ मनोविज्ञान वेत्ताओं ने अदालत से कहा कि न तो इसे छोड़ा जायगा और न जीवित ही रक्खा जायगा वरन एक विशेष रीति से बिना कष्ट पहुंचाये मार डाला जायगा। जज को भी आश्चर्य्य हुआ कि ऐसी कौनसी रीति है? वे भी प्रयोग स्थल पर जाने को उत्सुक हुए। दूसरे विद्वान और डाक्टर भी एकत्रित हुए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्शकों से बिना बोले चाले शांति पूर्वक देखने का अनुरोध किया गया। प्रथम उस मनुष्य को मेज़ पर लिटा कर उसके हाथ उल्टे बांध दिये गये कि वह अपने शरीर को टटोल न सके। साथ ही आंखों पर पट्टी बांध दी गई कि वह उक्त प्रयोग की क्रिया देख भी न सके। इस प्रकार कानों के अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करने के सभी मार्ग रोक दिये गये। तदनन्तर प्रयोग कर्त्ताओं में से एक ने दूसरे से कहा,—'मैं इस की गर्दन की मुख्य रक्त वाहिनी नाड़ी में नश्तर लगाये देता हूं जिस से इसके शरीर का सारा खून निकल जायगा और यह अत्यन्त क्षीण और निर्बल होकर मर जायगा" दूसरों ने भी उसके कथन की पुष्टि की। और उसने उसकी गर्दन की रग पर बलपूर्वक एक चुटकी ली जिस से लेटे हुए मनुष्य को विश्वास हो गया कि वास्तव में मेरे नश्तर लगा दिया गया। पास ही एक रबर की नली तैय्यार थी, उस के नीचे रक्खे हुए बर्तन में बून्द २ पानी गिराया जाने लगा। और उसे सुना २ कर कहा जाने लगा, "कि खून निकलना शुरू हो गया।" उसे अब पूरा विश्वास हो गया कि मेरी गर्दन में नश्तर लगा दिया गया और रक्त निकल रहा है। किन्तु वास्तव में उसके शरीर से रक्त नाम मात्र को भी नहीं निकलता था। थोड़ी देर इस प्रकार दो २ चार २ बून्द रुधिर गिरते देख कर एक ने कहा इस तरह धीरे २ रुधिर निकलने से बड़ी देर लगेगी, यदि आप लोगों की राय हो तो मैं इस रग का मुंह और भी खोल दूं? सब ने इस राय को पसन्द किया और उसी रग पर पूर्वानुसार फिर एक चुटकी ली गई। और कह दिया गया कि अब इस रग का मुंह काफ़ी खुल गया है और थोड़ी देर में इस के शरीर का सारा रुधिर निकल जायगा। साथ ही रबर की नली से शनैः २ पानी भी अधिक गिराया जाने लगा और उसकी मात्रा को यहां तक बढ़ाया कि उससे अखण्ड धार गिरने लगी। पानी रूपी रक्त से भरा हुआ एक पात्र ख़ाली हुआ, दूसरा ख़ाली हुआ, अब तो तीसरे का नम्बर आया। ये सारी बातें शब्द द्वारा उस लेटे हुए मनुष्य के विचार में लाई जाती रहीं। एक दूसरा व्यक्ति उस की नाड़ी (नबज़) एवं हृदय की गति को देख २ कर कहने लगा कि थोड़ी देर में इस का अन्त हुआ चाहता है। उस बेचारे को सुन कर मालूम कर लेने के अतिरिक्त और कोई अपनी वास्तविक स्थिति को जान लेने के हेतु मार्ग ही न रह गया था। अतएव उसे सुनी हुई बातों पर विश्वास होता गया। और ज्यों ज्यों यह विश्वास दृढ़ होता गया त्यों त्यों उस की शारीरिक चेष्टायें शिथिल और शून्य होती गईं। क्रमशः हाथ और पैरों में सनसनाहट शुरू हो गई। अब प्रयोगकर्ताओं ने धीरे धीरे रक्त स्राव को बन्द कर दिया और कहा कि अब इस के शरीर में रक्त नहीं रहा। कुछ देर बाद दर्शक डाक्टरों से प्रार्थना की गई कि वे उस मनुष्य की परीक्षा कर उसकी अवस्था के विषय में अपनी राय दें। डाक्टरों ने कौतूहल पूर्वक उसकी नाड़ी और हृदय की गति को देखा किन्तु वास्तव में उसकी शोचनीय दशा देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य्य हुआ। अन्त में सब ने मिल कर राय दी कि अब यह पांच मिनट से ज्यादा नहीं जी सकता। अब इस अन्तिम राय से उस के रहे सहे अवसान और भी खता हो गये। उस के हृदयादि की गति क्रमशः शान्त होती गई और ठीक ५ मिनट बाद डाक्टरों ने उसे बिल्कुल ठण्डा पाया। पाठक उस की मृत्यु का कारण स्पष्ट है। डाक्टरों की कही हुई सब बातों पर उसे दृढ़ विश्वास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होता गया। सब ओर से उस के विचार हट कर उसी एक विषय में लग गये और निश्चय होता गया कि जो कुछ कहा जाता है अक्षरशः यथार्थ है। यथार्थ मानने के लिये इस से सबल कारण और क्या हो सकता था कि वह अदालत से प्राण दण्ड पाया हुआ था और प्राण लेने का वचन दे कर ही प्रयोग स्थल पर लाया गया था। उसने सब बातों को सत्य माना और यही उसकी मृत्यु का कारण हुआ। इसके अतिरिक्त सांसारिक जीवन यात्रा में नित्य ऐसी घटनायें उपस्थित हुआ करती हैं जिन का इच्छा शक्ति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि रोगी को वैद्य की औषधि पर पूर्ण विश्वास न हो तो उसकी दवा से रोगी कभी भी चङ्गा नहीं हो सकता। यदि आप का दृढ़ विश्वास है कि आप का शरीर निर्बल है तो अवश्यमेव कुछ न कुछ बल क्षीण हो जायगा। यदि आप का पूर्ण विश्वास है कि मेरे शरीर में कोई रोग नहीं है तो कोई भी छोटा मोटा रोग आप के शरीर को दबा नहीं सकता।

एक मानसिक शास्त्र वेत्ता का कथन है कि किसी प्राणी अथवा सजीव जन्तु का आकार बनना अथवा किसी अवयव का उत्पन्न होना अथवा होता रहना सर्वथा उसकी मनः शक्ति पर अवलम्बित है। प्रत्येक प्राणी को सूक्ष्मतया अवलोकन करने से ज्ञात होगा कि उक्त प्राणी का आकार उस के स्वभाव एवं इच्छा के अनुसार ही विकसित हुआ है। मेरे गुरु महाशय स्मरण शक्ति को बढ़ाने के विषय में कहा करते थे कि यदि तुम्हें दृढ़ विश्वास हो जाय कि तुम्हारी स्मरण शक्ति अधिक तीव्र है तो अवश्य तुम्हें स्मरण शक्ति में नवीन बल प्रतीत होने लगेगा। इसी प्रकार और भी समझ लीजिये। अतः सिद्ध हुआ कि इच्छा शक्ति द्वारा शारीरिक अवयवों, शारीरिक इन्द्रियों और प्रत्येक प्रकार की शारीरिक रचनाओं का इच्छानुसार परिवर्तन किया जा सकता है। यहां तक कि स्त्री की इच्छा शक्ति सुदृढ़ एवं प्रबल होने की अवस्था में यह भी सम्भव है कि यदि कन्या का गर्भ है तो तीसरे मास में उसे बदल कर पुत्र और यदि पुत्र गर्भ है तो उसे कन्या का गर्भ बनाया जा सकता है (किन्तु यह उसी दशा में सम्भव है जब स्त्री की मनःशक्ति पूर्णरूप से विकाश पा चुकी हो अन्यथा परिणाम और ही कुछ होगा)। अस्तु वास्तव में मनः शक्ति ही शरीर रचना करती है। जिस प्रकार मनःशक्ति को किसी कार्य्य से हर लिया जा सकता है उसी प्रकार किसी कार्य्य में विशेष रूप से लगाया भी जा सकता है। अतः इस शक्ति द्वारा शरीर के जिस अवयव को हम सबल अथवा सुन्दर बनाना चाहें बना सकते हैं उसकी आकृति को इच्छानुसार बदल सकते हैं, क्योंकि जिस अवयव को हम सबल अथवा सुन्दर बनाना चाहते हैं उससे सम्बन्ध रखने वाले जीवन तन्तु उस भाग में मनः शक्ति द्वारा अधिक पोषण तत्व पहुंचाते हैं। यही कारण है कि प्रो० राम मूर्ति और सैण्डो की व्यायाम-क्रिया में जिस अङ्ग विशेष का व्यायाम किया जाता है उस की ओर विशेष ध्यान रखने का उपदेश है कि मेरा अमुक अङ्ग धीरे २ पुष्ट एवं सुन्दर होता जाता है। प्राणायाम की क्रिया में स्मरण शक्ति, इसी प्रकार पाचन शक्ति, मानसिक शुद्धि, ज्ञान वृद्धि, वीर्य पुष्टि वन्धेज रक्त सञ्चालन एवं कान्ति वृद्धि आदि जिस विषय पर आप की मनोवृत्ति अधिक एकाग्र रहेगी उसी का विकाश कालान्तर में अवश्यम्भावी है। किन्तु मनोवृत्ति निश्चय दृढ़ और परिपक्व होना चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि आप को शारीरिक सङ्गठन एवं सौन्दर्य के प्रति अभीष्ट है, यदि भारत के लिये स्वराज्य की इच्छा है, यदि स्वदेश का दुःख दारिद्र दूर करना है, यदि आप को चरित्र सङ्गठन की कामना है, यदि प्राचीन ऋषि महर्षियों की मान मर्य्यादा की रक्षा करना है तो मनः शक्ति को पूर्ण विकास दो। सफलता जिसे कहते हैं वह आप ही दासी बन जायगी। निर्बलता, निराशा, परतन्त्रता एक दम विलीन होजायगी और देश का पुनरुत्थान होगा, स्वर्ण भूमि बन जायगा। God helps those who help themselves जो अपने पैरों पर खड़ा होता है ईश्वर उसकी सहायता करता है—मनः शक्ति को दृढ़ एवं उपयोगी कैसे बनाया जा सकता है इसका वर्णन दूसरे लेख में किया जायगा।

कुसुमोद्यान

महाराष्ट्र में स्त्रियों की जागृति और शिक्षा

अङ्गरेजी समाचार पत्र वेलफेयर में महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्य्य का वर्णन करते हुए महाशय हेरम्बनाथ भट्टाचार्य्य बी० ए० बहुत खोज और इन प्रश्नों के अध्ययन के बाद लिखते हैं—

"ऐसा मालूम होता है कि महाराष्ट्र के लोगों ने स्त्री शिक्षा के प्रश्न को हल करने में वास्तविक आतुरता दिखलाई है क्योंकि बम्बई विश्वविद्यालय के आधीन खुली हुई शिक्षा संस्थाओं के साथ २ उन्होंने स्वतन्त्र संस्थायें तथा स्त्रियों के लिये विश्वविद्यालय भी बना लिये हैं। हम ने आठ संस्थायें देखी हैं जो केवल स्त्रियों की ही उन्नति के लिये हैं, उन में ३००० से ऊपर कन्यायें और स्त्रियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। केवल एक ही संस्था में जिसे हम पूना का 'सेवा सदन' कहते हैं हमने १५ घण्टे व्यतीत किये। यह सेवा सदन श्रीमती रानाडे और महाशय देवधर के उद्योग से १९०९ ईस्वी में स्थापित हुआ था। उन दिनों प्लेग और अकाल के सम्बन्ध में दुखियों की मदद के लिये जो कार्य्य किया जा रहा था उस में समाज सेवा के लिये ट्रेन की हुई स्त्रियों की कितनी आवश्यक्ता और उपयोगिता हो सक्ती है इस का अनुभव म० देवधर जी ने उस समय किया और उसी का फल स्वरूप यह संस्था स्थापित हुई। इस संस्था का उद्देश्य यह है कि वह गरीब युवा स्त्रियों को आत्मावलम्बी बना कर उन्हें धर्म प्रचार और समाज सेवा के योग्य बनावे और वह भेदभाव छोड़ कर अपने गरीब बहिनों और भाइयों के बीच में शिक्षा और चिकित्सा का कार्य्य करें।

इस संस्था में सात विभाग हैं और सब मिला कर ४७ कक्षाओं में बंटे हुए हैं। भारतीय महिलाओं को नर्स और दायी का काम सिखाने के लिये बहुत सुगमतायें रखी गई हैं और सेसून अस्पताल के पास ही उन के लिये एक अलग होस्टल बना है। वर्तमान में उस में ३३ छात्रायें निवास करती हैं। सब आंसस्टैन्ट सर्जन का काम सीखने वाली स्त्रियों के लिये भी एक होस्टल है, इस में अभी २२ छात्रायें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं। इन के अतिरिक्त एक ट्रेनिंग कालिज भी है जिस में लड़कियों को प्राइमरी पाठशालाओं के लिये अध्यापिका बनने के लिये ग़रीब स्त्रियों को भाषा का ज्ञान दिया जाता है। इस में १३४ विद्यार्थिनियां हैं। शायद यह कालेज भारत में पहिला ही होगा जो बिना सर्कारी मदद के चल रहा है और जिस में देशीय भाषा, वेश इत्यादि हैं और जहां पर पूर्ण शिक्षा दी जा रही है। इस कालेज से मिला हुआ एक और छोटी लड़कियों के प्रैक्टिस के लिये स्कूल है जहां पर शिक्षा भी पूर्ण है और साधन भी उपयुक्त हैं। इन विभागों की विद्यार्थिनियों के लिये दो छात्रावास हैं और श्रीमती रानाडे ने विद्यार्थिनियों के आचार व्यवहार की निगरानी का भार अपने ऊपर लिया है।

काम करने की कक्षा में जहां पर पढ़ाना, सिलाई, शिल्पकला, मोजे बनाना, बुनना इत्यादि सिखाया जाता है—१५२ छात्रा हैं और ८८ से अधिक छात्रायें बाजा भी सीखती हैं। इन के इलावा फर्स्टएड, स्वास्थ्य रक्षा, गृह प्रबन्ध, धात्री शिक्षा इत्यादि पर लेक्चर देने की भी क्लास हैं इन में बहुत संख्या में छात्रायें आती हैं। सब मिला कर २००० के लगभग लड़कियां और स्त्रियां सेवा सदन में ट्रेन की जा रही हैं।

बाल रक्षा और उत्पत्ति से पूर्व भावी माता की खाट इत्यादि किस तरह की हो इस शिक्षा का जो केन्द्र है वह गरीबों के लिये बड़ा लाभ दायक है। वहां पर प्रति दिन २५ बच्चों को दूध मुफ्त में दिया जाता है। इस विभाग की अध्यक्षा एक लेडी डाक्टर है जो माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य की परीक्षा करके उचित सम्मति देती है। ग़रीब बच्चों को कपड़े भी मुफ्त में दिये जाते हैं।

कातने और बुनने का विभाग भी बड़ा भारी है और बहुत सी छात्रायें वहां पर शिक्षा पा रही हैं और साथ ही एक स्टोर भी है जहां पर इन का बनाया हुआ माल रक्खा रहता है।

कई अन्य स्थानों पर भी पूना सेवा सदन की सेवायें और कार्य्य शुरू किये जा रहे हैं यथा बम्बई में "पूना सेवा सदन नर्सेज सेटिल मेन्ट बम्बई" नाम से एक शाखा खुली है जिस के द्वारा भाटिया जाति की प्रसूता स्त्रियों और बच्चों की अच्छी प्रकार रक्षा की जाती है। इस काम की देख रेख एक मेट्रिन तथा एक ग्रेजुएट महिला जो मन्त्रिणी हैं करती हैं। सुबह शाम को ४ नर्सें भाटिया परिवारों में जाकर गर्भवती, प्रसूता, तथा प्रसूत बच्चे, छोटे बच्चे तथा कमजोर बच्चे को यथाशक्ति सहायता करती हैं। एक लेडी डाक्टर भी रखी है जो बुलाने पर हर समय घरों में चली जाती है और नियम पूर्वक जाती रहती है। हम ने इस संस्था को बड़े चाव से देखा। हमें यह इतनी अच्छी लगी कि हम हमेशः सोचते हैं कि हमारे प्रान्त में भी ऐसी संस्थायें बन सक्ती हैं।

स्त्री विश्व विद्यालय

इस विचित्र संस्था के इलावा एक और संस्था है जिस की बाबत भी कुछ कहना है। पूना में हिगने बड्रुक में भारतीय महिलाओं की युनीवर्सिटी है जो कि सब प्रकार से जातीय कही जा सक्ती है। इस का उद्देश्य सब आपत्तियां, जो आसकती हैं उन्हें हटाकर स्त्रियों के लिये शिक्षा सुलभ बनाना है। यह भाषाओं के माध्यम द्वारा शिक्षा देती है और अपनी पाठ विधि जो स्त्रियों और लड़कियों के लिये उपयोगी हो बनाने तथा परीक्षा लेने में बिल्कुल स्वाधीन है। चूंकि भाषाओं के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माध्यम से शिक्षा दी जाती है इस से शिक्षा लाभ सुगम होजाता है और जहां तक साधारण ज्ञान तथा कलचर का सम्बन्ध है वहां यह ही उद्देश्य है कि यहां की छात्रायें पगपग पर अन्य विश्वविद्यालयों की योग्यता की बराबरी कर सकें। परीक्षाओं की सख्तियां, कम्पार्टमेंट प्रणाली रखने के कारण कम हैं अर्थात् यदि एक कन्या सब विषयों में उत्तीर्ण है केवल एक में ही फेल है तो उसे उसी एक विषय में पुनः परीक्षा देनी पड़ती है परन्तु यदि कोई छात्रा एक से अधिक विषयों में फेल है लेकिन कई विषयों में ४० प्रतिशतक या अधिक नम्बर ले लेती है तो उसे पुनः परीक्षा नहीं देनी होती।

अङ्गरेज़ी की आवश्यकता का भी ध्यान रक्खा गया है। ऐन्ट्रेन्स की परीक्षा में अंगरेज़ी अनिवार्य्य विषय है। प्राइमरी और विद्यालय की पाठविधि ९ वर्ष में समाप्त होती है उसके बाद ३ वर्ष में स्नातका बनती हैं। यह विश्व विद्यालय म० कर्वे की लगातार और उत्साह पूर्ण सेवा का फलस्वरूप है जो प्रारम्भ में बहुत छोटा होते हुए भी आज इस रूप को धारण कर गया है। इस की सेनेट के फेलो पांच भिन्न २ चुनाव के केन्द्रों से चुने जाते हैं और उन चुने जाने वाले पुरुषों की नामावली में लगभग २२०० नाम हैं। इसके लिये चन्दा भी सारे भारतवर्ष के लोगों से आता है।

\+ \+ \+ \+ \+

सेवा सदन, भारतीय महिला विश्वविद्यालय तथा वनिता विश्राम बम्बई के छात्रावास में रहने वाली छात्रायें घरों की अपेक्षा अधिक शौकीनी नहीं करतीं। एक मेट्रिन की देर रेख में प्रत्येक होस्टल की निवासिनियां अपना काम आप ही करती हैं यहां तक कि छात्राओं को खाना बनाना, वर्तन साफ करना और इसी प्रकार के अन्य भी पाकशाला के काम आप करने पड़ते हैं लेकिन तौ भी वह हंसमुख दीख पड़ती हैं और कोई शिकायत नहीं करतीं। वह लोग सरल स्वभाव हैं और विलास प्रियता और फैशन की ओर झुकाव यह दो दोष जो हमारी कई पढ़ी लिखी बहिनों पर लगाये जाते हैं और जिस के कारण स्त्री शिक्षा को रगड़ने के और भी हेतु मिल जाते हैं—वह इन बम्बई की संस्थाओं पर नहीं लगाया जा सकता।

विधवाओं और अनाथाओं के लिये प्रबन्ध

दूसरी आवश्यक बात देखने योग्य यह भी है कि विधवाओं और गरीब स्त्रियों को स्वतन्त्र जीवनोपार्जन के योग्य बनाते हुए उन्हें समाज की सेवा के भी योग्य बनाने के लिये क्या २ सुगमतायें वहां दी जा रही हैं। प्रत्येक संस्था में बहुत सी विधवायें पढ़ रही हैं अर्थात् सेवा सदन में ३५० विधवायें हैं और इतनी ही स्त्री विश्व विद्यालय में भी होंगी। जो उच्च कुल की विधवायें आती हैं वह भी नर्स का काम, दायीगीरी लेडी डाक्टर अध्यापिका का काम सीखने में अपनी हेठी नहीं समझतीं और मलाबार की सहायता के काम के दिनों उनकी सेवाओं की बड़ी क़दर हुई। विधवाओं का जीवन भार रूप और कष्टमय नहीं रहा और खाने पहिरने के विषय में विधवाओं के लिये सख्त नियम भी बहुत घट रहे हैं। छात्रावास में रहने वाली विधवाओं के विचार बहुत उन्नत हैं वह अछूत कहलाने वाली स्त्रियों के साथ एक ही घर में रहती हैं। उत्तरीय भारत की अपेक्षा महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा का प्रश्न सिद्ध करना सरल है क्योंकि वहां परदे की प्रथा नहीं है लेकिन वहां के लोगों में संस्था चलाने तथा निरन्तर एक रस काम करने की शक्ति कमाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की है। प्रत्येक संस्था के साथ प्रयत्नशील लाइफ मेम्बरों का सम्बन्ध रखने की प्रथा-जो केवल गुज़ारे लायक थोड़ा सा द्रव्य लेकर काम करते हैं—का प्रचार है और इस के सन्तोष जनक परिणाम हैं"।

हम आशा करते हैं कि हमारे स्त्री शिक्षा में रत आर्य्य सज्जन महाराष्ट्र की प्रथा से लाभ उठावेंगे और यहां पर भी इसी प्रकार के शिक्षा केन्द्र शीघ्र ही बन कर स्त्री जाति का उद्धार करेंगे।

इसाई धर्म की रक्षा में भारत का व्यय।

केवल एक २ मामूली पादरी पर २०८५३) का व्यय।

ज्योति के पाठकों को को यह पढ़ कर विस्मय होगा कि भारत सर्कार गरीबों का गला घोंट कर न केवल अंग्रेज कर्मचारियों की जेवें ही भरती हैं वरन उन को ईसाई धर्म की शिक्षा देने का व्यय भी भारत पर डालती है। समाचार पत्र "नेशन" लाहौर से लिखता है कि:—

"भारत में रहने वाले बृटिश लोगों को धार्मिक शिक्षा देने में भारत को ३० लाख रुपये सालाना से अधिक खर्च करने पड़ते हैं। हिन्दू और मुसलमानों पर इस कार्य्य के लिये टैक्स लगाने की हानिकारक प्रथा १८४६ ईस्वी से जब कि जान बुल कम्पनी के डाइरेक्टरों ने युरोप निवासियों को धार्मिक शिक्षा देने का भार लिया-शुरू होती है। लार्ड नार्थ ब्रुक ने यह कह कर कि "बृटिश उत्पत्ति वालों को धार्मिक शिक्षा देने की हद नियमित रहे" इस खर्च को घटा दिया था। यह प्रश्न १८८३ में पुनः विचारा गया और लार्ड रिपन ने इस विभाग पर व्यय और कम कर दिया था परन्तु आज कल भी यहां पर १० बिशप, बहुतेरे आर्क-डीकन और १६६ चैपलेन (प्रत्येक गिरजे का अध्यक्ष) भारत सर्कार की सेवा में हैं जिन्हें भारतीय टैक्स दाताओं की जेब से उनके अंग्रेज बन्धुओं को धार्मिक शिक्षा देने के लिये बड़ी २ तनखाहें दी जा रही हैं। प्रत्येक चैपलेन की औसत आय २०८५३) रुपये सालाना है और इस राजसी तनखाह के साथ उन्हें बहुत सा यात्रा-धन और पेन्शन भी मिलते हैं। यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि यह प्रथा अन्यत्र इतिहास में कहीं नहीं दीख पड़ती। अगर युरोपियन लोगों को धार्मिक शिक्षा की आवश्यक्ता है तो वह अपने लिये स्वयं अपना प्रबन्ध करें। हम समझते हैं कि चर्च के सेवक लोग अपने धर्म की सेवा मुफ़्त करने के लिये भी तैयार होंगे। चाहे जो कुछ हो योरोपियन लोग जो कि इस देश में धन से मालामाल हो रहे हैं वह अपनी धार्मिक आवश्यक्ताओं के लिये अवश्यमेव व्यय कर सक्ते हैं"।

जब भारतीय बजट का भार इतना अधिक बढ़ गया है कि भारत के गरीब लोगों से जो निमक और सूखी रोटी से पेट भर लेते थे वह भी सुगमता छीनी गई है और समस्त भारतीयों के विरोध करने पर भी निमक पर २॥) रु० मन टैक्स लगाना ही उपयुक्त समझा गया है तो क्या यह अच्छा न हो कि भारत सर्कार ईसाई धर्म की रक्षा पर व्यय होने वाले अपने धन को बचा जर बजट की कुछ कमी को पूरा करने का उद्योग भी करे।

मलकाना राजपूत हिन्दू हैं या मुसल्मान ?

आगरा जिले का गज़ेटियर मलकाना राजपूतों-जिन की शुद्धि के कारण आज़ कल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चारों ओर सनसनी फैली हुई हैं–के विषय में इस प्रकार कहता है:—

"किसी समय मुसलमान बनाये गये मलकाना नाम से प्रसिद्ध राजपूतों, के सन्तान आगरे ज़िले में सर्वत्र और विशेषरूप से किरौली, इत्यादि ५ या ६ गावों में बहुत पाये जाते हैं। मथुरा में भी इनकी संख्या पर्याप्त है और कुछ थोड़े से इटावा और मैनपुरी में भी पाये जाते हैं। उन्हें मुसलमान बनाये गये राजपूत कहते हैं किन्तु वे स्वयं तो भिन्न २ जगह में अपनी भिन्न २ पैदायिश बतलाते हैं यद्यपि सभी लोग उच्च कोटि के कृषकों की सन्तति मालूम होते है। यद्यपि अनिच्छा से वह अपने आपको मुसलमान कह देते हैं परन्तु प्रायः वह अपनी पहिली जाति ही बतलाते हैं और मलकाना कहलाना पसन्द नहीं करते। इनके नाम हिन्दू ही होते हैं, यह लोग हिन्दू मन्दिरों में पूजा करने ही प्रायः जाते हैं, और आपसमें मिलने पर 'राम, राम' ही करते हैं। यह बड़ी हिफ़ाजत से चोटी रखते, अपनी जात बिरादरी में ही परस्पर विवाह शादी करते हैं और अपने नाम के साथ ठाकुर लगाना पसन्द करते हैं। दूसरी तरफ वह कभी २ मस्जिदों में चले जाते हैं, और मुसलमानी भी करवाते और अपने मुर्दे गाड़ते भी हैं परन्तु साधारण मुसलमानों के साथ उनका और किसी प्रकार का मेल मिलाप नहीं है। ये लोग कभी २ उनके साख खा भी लेते हैं परन्तु जिनके साथ ख़ास मित्रता न हो उन मुसलमानों के साथ एक चटाई पर बैठना छोटापन समझते हैं। पहिले दिनों में तो राजपूत भी घी से पकाया हुआ अन्न इनके हाथ का खा लेते थे किन्तु अब रिवाज नहीं रहा"।

हिन्दी नवजीवन इन मलकाना राजपूतों की बाबत कहता है कि:—

"आगरा तथा उसके आस पास के ज़िलों में कोई ५–६ लाख ऐसे राजपूत लोग बसते हैं जो किसी जमाने में मुसलमान बना लिये गये थे। ये मलकाने कहे जाते हैं। आज इनके रस्म रिवाज न पूरे हिन्दुओं के से हैं न पूरे मुसलमानों के से। कहते हैं कि इनके नाम आम तौर पर 'सिंह' और 'नारायण' पर होते हैं। कई जगह इन में निकाह नहीं होता न खतना ही होता है। ये जनेऊ पहिनते हैं, चोटी रखते हैं, पर मुर्दे गाड़ते हैं। हिन्दुओं के त्यौहारों को मनाते हैं। राजपूत के सिवा दूसरों को हुक्का नहीं देते। गाय की प्रतिष्ठा करते हैं। शेख या मौलाना कह दिया जाय तो बुरा मानते हैं। इन बातों से हिन्दू लोगों का कहना है कि ये वास्तव में हिन्दू थे और आज भी बहुत कुछ हिन्दू हैं।

इधर मुसलमानों का कहना है कि ये लोग मुसलमानों के निकाह, मिहर सलाह सद्दी आदि रीतियों का पालन करते हैं आज भी अपने को मुसलमान कहते हैं इस लिये ये मुसलमान हैं"।

हमारी सम्मति में न यह पूरे हिन्दू ही हैं न मुसलमान किन्तु इनमें हिन्दूपन के संस्कार इतने प्रबल हैं कि मुसलमान बनाये जाने पर और हिन्दुओं से परित्यक्त होकर भी इन्होंने अपने पूर्वजों की रीतियां और रस्में अभी तक रख छोड़ी हैं और हिन्दू धर्म में पुनः प्रवेश हो जाने के लिये अति उत्सुक हैं इस लिये यह गुण कर्म और स्वभाव से हिन्दू ही हैं और हिन्दुओं में उनका प्रवेश होना अनिवार्य्य है। हमारे मुसलमान भाइयों को हिन्दू-मुसलमान प्रश्न को उठा कर इस समय परस्पर ईर्षा और वैर नहीं बढ़ाना चाहिये क्योंकि ये राजपूत जबरदस्ती हिन्दू नहीं बनाये जा रहे हैं बल्कि अपनी स्वतन्त्र इच्छा से बन रहे हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* वनिता विनोद *

स्त्री जगत्

विवाह प्रतिवन्ध

योरोप के नार्वेदेश में यह कानून वना हुआ है कि जब तक युवती कन्यायें इस वात का प्रमाणपत्र न दिखला सकें कि उन्हे भोजन वनाने, वुनने, और चर्खा कातने के कार्य्य में क्षमता है वह विवाह नहीं कर सक्तीं ।

—:०:—

केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में स्त्रियों को समान अधिकार मिलगये ।

यद्यपि योरोप सभ्यता का केन्द्र माना जाता है और वहां स्त्रियां पुरुषों के समान अधिकार रखने का दावा करती हैं परन्तु वहां पर भी कतिपय मुख्य विश्वविद्यालयों में स्त्रियों के लिये कुछ प्रतिवन्ध थे वह विश्वविद्यालय आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज थे जो स्त्रियों को डिग्री नहीं देते थे । हर्ष का विषय है कि आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने तो कुछ काल पहिले ही समान अधिकार दे दिये थे अव केम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने भी सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास कर लिया है कि स्त्रियां पुरुषों की भांति ही लेकचर में सम्मिलित हों और रसक्रिया भवन में काम सीखें और उनको भी डिग्री दी जावे ।

—: :—

स्त्री के राज्य में विशेषता

वेगम भूपाल की योग्यता और शासनकार्य्य क्षमता प्रसिद्ध हैं । उन्होंने अपने राज्य में कई प्रकार के सुधार किये हैं परन्तु अब उन्होंने ४,५ लाख का सालाना घाटा सह कर भी अपने राज्य में शराब विल्कुल वन्दकर दी है । उनका विश्वास है कि इस ४, ५ लाख की आर्थिक हानि का फल यह निकलेगा कि प्रजा की समृद्धि और शारीरिक स्वास्थ्य उन्नत होगा ।

—:०:—

बड़ौदा में स्त्रीज्ञान वर्धक मण्डल

श्रीमती रत्नवन कुमारी जी ने बड़ौदा स्टेट में एक उपरोक्त नाम का मण्डल वनाया है जिसमें स्त्री उपयोगी सरल छोटे २ ग्रन्थ ।) मूल्य के प्रकाशित हुआ करेंगे । इस मण्डल के सभासद होने का चन्दा १) रुपया वार्षिक है और नियम इत्यादि उक्त देवी से मिलसक्ते हैं । स्त्रियों को इससे लाभ उठाना चाहिये ।

—:०:—

आर्य्यनारी सेवक सभा

आर्य्यनारी सेवक सभा की ओर से लायलपुर में दो मैजिकलैन्टर्न लेकचर स्त्रियों में हुए । स्त्रियों की उपस्थिति बहुत थी और प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा ।

२. इस सभा का वर्ष मार्च में समाप्त हो गया है अतः सब सभासदाओं से प्रार्थना है कि जिनके चन्दे शेष हैं या तीन मास से ऊपर के होचुके हैं वह कृपा करके अपना २ चन्दा श्रीमती ओ३म्वती देवी कोषाध्यक्षा, द्वारा डा० रामजी नरायन ऐग्रीकलचरल कालेज लायलपुर के पते पर शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि वर्ष का हिसाव ठीक रहे । आशा है कि सभासदायें ध्यान देंगी ।

शान्ति निकेतन में स्त्रियों के लिये प्रवन्ध ।

शान्ति निकेतन विश्वभारती में एक नारी विभाग भी इस वर्ष से खोला गया है जिस की प्रिंसिपल कुमारी हेमलता सेन वी० ए० हैं । इसमें अभी ३० छात्रायें हैं और इनको गृह प्रवन्ध, पाक विद्या रोगी-सेवा और परिचर्य्या की शिक्षा दी जाती हैं । इनके सोने के लिये पृथक शयनागार है ।

—:०:—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

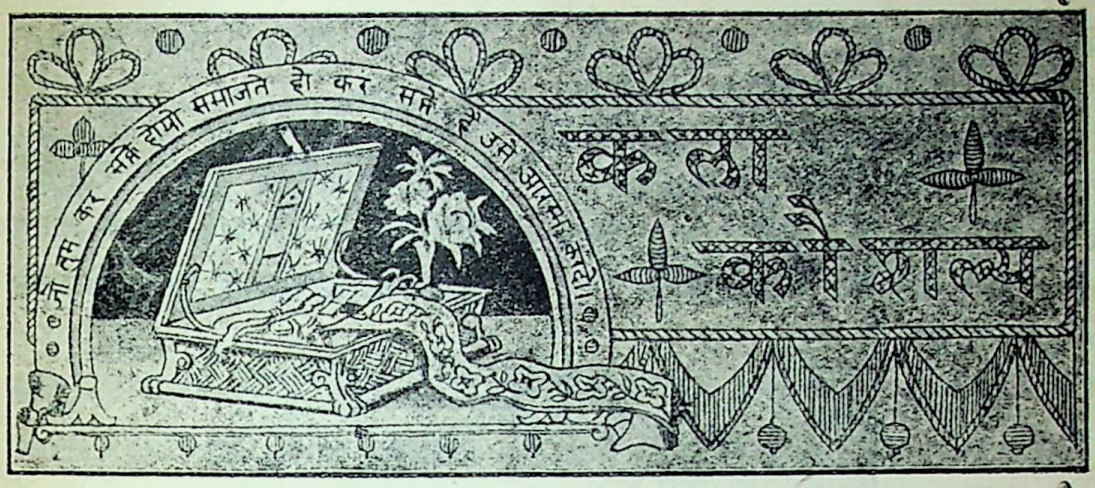

ऊनी कोट ।

(गतांक से आगे)

जेब के लिये मुंह ७६ वीं पंक्ति में बनाया जाता है, इधर उधर के फ़न्दे ऐसे ही सलाई पर चढ़े रहें केवल बीच के ३७ फ़न्दों को बीनो, ७ पंक्ति तक १ पंक्ति सीधी, १ उल्टी ८ वीं पंक्ति सीधी, ६ वीं सीधी, १० वीं पंक्ति ३ वार दोहराओ और फिर ये फ़न्दे समाप्त करदो, उल्ट कर अन्दर की ओर लकीर पर गोट की तरह सींदो जहां से आरम्भ किया था।

जेब के लिये ३७ फ़न्दे चढ़ाओ और १ सीधी, १ उल्टी ऐसी ४० पंक्तियां बीनो ये अन्दर की ओर होंगो। जो बीच की जगह खाली थी वहीं यह ३७ फ़न्दे जोड़ कर पहिले की तरह बीनते जाओ।

११५, १२७, १३६, १५१, और १६३ वीं पंक्तियों के आरम्भ दाहिने सामने में बटन के छेद बनाने के लिये—सबसे पहिला घर ३१ वीं और ३२ वीं पंक्ति में बनेगा फिर २८ पंक्तियां प्रत्येक के बीच में फ़ासला रहेगा। इसके लिये—

१ पंक्ति—२ सीधे बीनों ४ अगले फ़न्दे समाप्त करदो पंक्ति के अन्त तक कार्य्य करो।

२ पंक्ति—उल्टी बीनो छेद तक, फिर ४ फ़न्दे नये चढ़ाओ और अन्त के २ फ़न्दे उल्टे बीनो।

दाहिना सामना—२३३ पंक्ति—पंक्ति के अन्त में दाहिने टुकड़े के लिये १ बढ़ाओ।

२३४ पंक्ति—उल्टी।

२३५ पंक्ति—२४ फ़न्दे समाप्त करदो और अन्त तक सीधी बीनो।

२३६, २३८ पंक्तियां—पंक्ति के अन्त में २ इकट्ठे बीनों।

२३९ से २४५ पंक्ति तक—पंक्ति के अन्त में १ बढ़ाओ।

किन्तु २४०, २४२, २४४ पंक्ति में—अन्त में २ इकट्ठे उल्टे बीनों।

२४६, २४८, २५० पंक्ति में—अन्त में २ इकट्ठे उल्टे बीनो।

२५० पंक्ति में और प्रत्येक उल्टी बिनावट की पंक्ति में ५ फ़न्दे आरम्भ के समाप्त करदो जब तक कि एक फ़न्दा न रहे सारा कोट सी डालो और बांह जोड़दो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बांयें टुकड़े की सामने की पट्टी—उल्टी तरफ़ से कार्य्य को अपने सामने पकड़ो और १७० छल्ले में से फ़न्दे उठाओ फिर एक पंक्ति सीधी २ उल्टी बीनो, फिर १ सीधी पंक्ति १ उल्टी क्रम से ७ पंक्ति तक बीनों, ११६ फ़न्दे समाप्त करदो और अन्त तक उल्टी बीनो।

अब सलाइयों को आगे पीछे दोनों बीनते जाओ, प्रत्येक उल्टी बिनावट की पंक्ति में ३ फ़न्दे समाप्त करते जाओ जब तक कि सब समाप्त न हो जांय। इस टुकड़े को बराबर से पकड़ों और अन्दर की तरफ़ मोड़ कर सींदो।

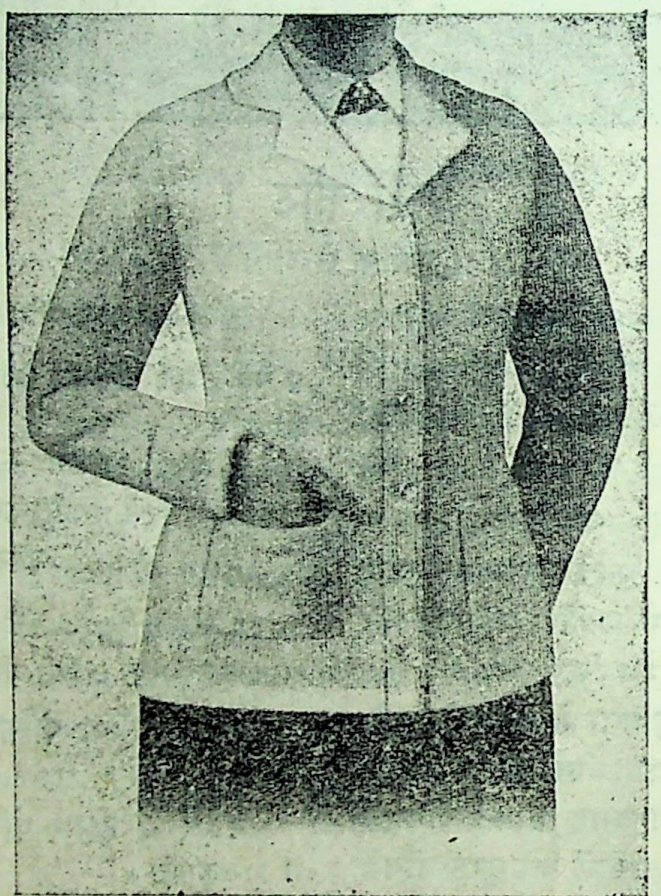

दाहिने सामने की पट्टी—उल्टी तरफ़ से कार्य्य को पकड़ो और १७० फ़न्दे उठाओ, १ पंक्ति सीधी बीनो २ उल्टी, १ सीधी, १ उल्टी, अब फ़न्दों के इस प्रकार हिस्से करोकि १७ फ़न्दे पहिले हिस्से में नीचे से ऊपर की तरफ़ को हों, और २३ प्रत्येक पांच हिस्सों में और ३८ अन्त वाले में। प्रत्येक हिस्से की आठ २ अलग २ पंक्तियां बीनो।

जब सब हिस्से बिन जांय तब नीचे से आरम्भ करके १ पंक्ति सीधी बीनो सबकी नोकों को सफ़ाई से खूब पक्की करके कस दो और बांध दो। १ पंक्ति उल्टी बीनो और ११६ फ़न्दे समाप्त करदो बाकी अन्त तक सीधी बीनों। अब आगे पीछे बीनते जाओ और प्रत्येक पंक्ति के आरम्भ में ३ फ़न्दे समाप्त करते जाओ जब तक एक न रहे। इस टुकड़े को खूब बराबर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करके नीचे उल्ट दो और बटन के घर ठीक करके बनादो।

कालर—७२ फ़न्दे चढ़ाओं और २० पंक्तियों तक १ सीधी पंक्ति १ उल्टी क्रम से बीनते जाओ किन्तु प्रत्येक पंक्ति के अन्त में १ फ़न्दा बढ़ादो, फिर १७ पंक्तियां बीनो जिसमें प्रत्येक के अन्त में १ फ़न्दा घटादो।

३८ पंक्ति—सीधी बीनो और अन्त में घटाओ फिर १७ पंक्तियां प्रत्येक के अन्त में एक बढ़ा कर बीनो और १७ पंक्ति प्रत्येक के अन्त में १ घर घटा कर बनाओ और समाप्त करदो।

कालर को उल्टी बीनी हुई धारी पर से मोड़ कर पकड़ो, और दोनों तरफ़ की नोकें बीच में रक्खो, सफ़ाई से सींदो।

जब कोर समाप्त हो जाय तब यदि उस पर लोहा फेर दिया जाय तब बहुत सुन्दर हो जाता है।

ईश्वर भक्त राबअ और पतिपरायण मेरी

लेखक—श्रीयुत नारायण गोस्वामी

आज हम 'ज्योति' के पाठक पाठिकाओं को दो विदेशी महिलाओं की शिक्षाप्रद जीवनी भेंट करते हैं। इन में पहिली मध्य एशिया की एक मुसलमान कुमारी है तथा दूसरी एक अङ्गरेज़ देवी। दोनों के पवित्र चरित्र अपनी ज़िन्दगी में ढालने योग्य हैं, अतः आशा है कि, इन के द्वारा अवश्य ही पाठक पाठिकाओं का लाभ और मनोरञ्जन होगा।

राबअ

(१)

एशिया माइनर में बसरा नाम का एक शहर है। राबअ इसी नगर के एक ग़रीब मुसलमान की लड़की थी। अरबी भाषा में 'राबअ' के माने चौथे के हैं, और राबअ अपने बाप की चौथी बेटी थी, इस लिये उसके माता पिता ने अपनी कन्या का नाम वही रख दिया। राबअ समझदार भी न होने पाई थी कि, उस के मां बाप संसार से चल बसे। इस के उपरान्त ही कुछ समय बाद बसरे में ज़ोर का दुर्भिक्ष पड़ा। इस भयङ्कर समय में राबअ अपनी बहिनों से बिछुड़ गई। एक दुष्ट मनुष्य ने उस अनाथ को पकड़ कर थोड़े से पैसों के बदले एक अमीर के हाथ बेच डाला। इसने राबअ को एक दासी की भांति ख़रीद कर अपनी ख़िदमत में लगा लिया।

यह अमीर बड़ा निर्दयी था। सदैव राबअ को ऐसे कठिन काम में लगाता, जो उस कन्या की सामर्थ्य के बिलकुल बाहर होता। कभी कभी इस लिये बेचारी राबअ को कठिन मारपीट भी सहन करनी पड़ती। अन्ततोगत्वा वह इस अपमान और आपत्ति के जीवन से तङ्ग आकर अपने स्वामी के घर से भाग निकली। दम चढ़ा हुआ था, जल्दी जल्दी जा रही थी, कि ठोकर खाकर गिर पड़ी और, दुर्दैवकि, बांह टूट गई। इस वक्त अत्यन्त कष्ट और दुःख के समय में चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार देख कर भूमि पर शिर रख कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगी; 'हे अनाथनाथ, मैं माता पिता हीन, दुखिया दासता की दशा में पड़ी हुई हूं। मेरी बाह टूट गई है। इस तमाम आपत्ति में ग्रसित होने पर भी मुझे तनिक भी खेद नहीं। मैं आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की प्रसन्नता की अभिलाषा करती हूं। हे शरणागत वत्सल, कृपा कर कहो कि, तुम मुझ पर खुश हो या नहीं?' उस समय राबअ ने यह आकाशवाणी सुनी 'पुत्री, और अधिक शोक न कर, तुम्हारे ऐश्वर्यान्वित होने में अब देर नहीं। देव लोक के देवता भी तेरा सन्मान करेंगे।

इस दैवी प्रेरणा को सुनकर राबअ अपने मालिक के घर लौट आई। अब वह तमाम दिन तो उस अमीर की सेवा में रहती, और रात कुरान के पाठ और भगवद्भजन में व्यतीत करती। यह उस का नित्य नियम हो गया। एक दिन रात को अमीर की आंख खुली। सुना कि राबअ कुछ बोल रही है। उस समय यह भगवद्भक्त कन्या अपनी कोठरी में—अपने पूजा मन्दिर में—पड़ी हुई कह रही थी; 'हे प्रभु परमेश्वर; तुम जानते हो कि, मेरी केवल एक आकांक्षा है; और वह यह है कि मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूं, तुम्हारे उपासना-स्थल में तुम्हारी सेवा में ही मेरी आंखों का प्रकाश है। अगर मेरा वश चलता, तो घड़ी भर भी तुम्हारे ध्यान को न छोड़ती। लेकिन तुमने मुझे अन्य के अधिकार में दासी बनाया हुआ है। इसी कारण देर से आप के पाद पद्म पर प्रस्तुत होती हूं।' जिस समय राबअ अत्यन्त विनीत भाव से अपने प्रभु के प्रति यह उद्गार प्रकट कर रही थी, तो उसके स्वामी ने उसकी यह बाणी सुनी, और बिस्तर से शिर उठा कर उसकी ओर दृष्टि फेरी तो देखा कि, राबअ के मुख मण्डल पर एक स्वर्गीय प्रभा चमक रही है, और उससे तमाम घर देदीप्यमान हो रहा है। वह यह देख कर स्तम्भित रह गया। उस ने सोच कर यह निश्चित किया कि, ऐसी पवित्र और पूजनीय आत्मा को अपनी सेवा में रखना किसी प्रकार योग्य नहीं। अपितु ऐसी देवी का स्वयं सेवा-सन्मान करना धर्म है। अपने निर्णयानुसार अगले रोज़ उसने राबअ को स्वतन्त्र कर दिया। साथ ही अतीव विनम्र भाव और प्रतिष्ठापूर्वक उस अपूर्व कन्या से अनुनय किया कि, यदि आप मेरे यहां ही निवास करें, तो मैं आप का दास बन कर आप की सेवा करूंगा। लेकिन राबअ उसकी अनुमति से उसके घर से चली गई, और कठिन तपस्या का जीवन व्यतीत करने लगी।

राबअ धार्मिक पुस्तकों के पाठ, कुरान के पारायण, जप, तप, पूजा, पाठ और भगवद्भक्ति से छुटकारा न पाती। कभी कभी बसरे के पीर इमाम हसन की मजलिस में जाकर धर्म चर्चा किया करती थी। कुछ समय एक निर्जन बन में रह कर योगाभ्यास किया। उपरान्त एक मसजिद में आकर ठहरी। थोड़े काल तक वहां धर्म साधन में समय व्यतीत कर मक्का को चली गई। और शेष जीवन वहीं व्यतीत किया। राबअ ने साधन की अपूर्वता और अभ्यास की सहायता से ऐसा उत्तम धार्मिक-जीवन, ईश्वर प्रेम और पवित्र आत्मा प्राप्त किया था, कि उसके नाम के आगे सब शिर झुकाते थे। हर समय उसके समीप धर्म जिज्ञासुओं और दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती। सब लोग उसके महान् जीवन को देख कर उसके मुख से प्रभावपूर्ण उपदेश सुनकर अचम्भित होते थे। इमाम हसन बसरी ने कहा कि राबअ बिना शिक्षा प्राप्त किये, बिना उपदेश सुने, और बिना किसी भौतिक साहाय्य के अलौकिक रूप से ज्ञान प्राप्त करती थी।

एक दिन किसी सज्जन महानुभाव ने राबअ से पूछा कि आप के हृदय में विवाह करने की इच्छा है? ईश्वरीय-प्रेरणा को प्राप्त हुई राबअ ने कहा; 'विवाह तो शरीर के लिए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होता है। मेरा शरीर है कहां ? जिस्म तो परमात्मा के हवाले कर चुकी हूं। यह तो अब उसी की सेवा में और उसी के काम में संलग्न है।' एक बार एक धनी पुरुष ने राबअ के पुराने कपड़े देख कर कहा, 'पवित्रात्मा, बहुत से लोग ऐसे हैं, जो आप के किञ्चित संकेत मात्र से हर्ष पूर्वक आपकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।' यह सुन कर राबअ बोली– 'सांसारिक आवश्यकताओं के लिए किसी से निवेदन करने में मुझे लज्जा आती है। यह अखिल ब्रह्माण्ड ईश्वर का राज्य है, सर्वत्र उसी की विभूति व्याप्त है, ऐसे बड़े चक्रवर्ती को छोड़ कर अन्य के समक्ष कैसे हाथ पसारूं ? जो कुछ जरूरत होगी, उन्हीं के हाथ से लूंगी।' एक समय की बात है, नव जीवन-कारी ऋतुराज बसन्त सृष्टि की शोभा बढ़ा रहे थे, और आबिदा राबअ अपने एकान्त कुटीर में आनन्द पूर्वक अकेली बैठी हुई थी। उसकी दासी ने उसे बुला कर कहा, 'बाहर आकर सृष्टि सौन्दर्य का निरीक्षण कीजिये'। ईश्वरीय प्रेरणा में मस्त राबअ ने कहा, 'तुम अन्दर आकर स्रष्टा की शोभा देखलो'। किसी समय कुछ लोगों ने राबअ की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने आकर उस पवित्र कन्या से कहा 'संसार में आज तक पुरुष जाति को सब गुणों से ही सज्जित किया गया है। पुरुष ही बड़े बड़े तत्ववेत्ता हुए हैं। कभी किसी स्त्री को अवतार का पद नहीं मिला। वह कभी पैग़म्बरी के मसनद पर नहीं बैठी। तुमने इस प्रकार का साहस क्यों कर किया ? पाक साफ़ राबअ बोली 'तुमने जो कुछ कहा, सच है, लेकिन अपनी पूजा आप करना, खुदी का घमण्ड और खुदाई का दावा करना–यह काम किसी से नहीं बन पड़ा। कोई स्त्री कभी भीरु प्रमाणित नहीं हुई। भीरुता पुरुषों में ही पाई जाती है'॥

एक बार राबअ ने इस प्रकार प्रार्थना की, 'हे भगवन्'! आपने जो कुछ मेरे लिए इस दुनियां में रक्खा है अपने विरोधियों को दो। और परलोक में जो मेरे लिए रक्खा गया है, वह अपने प्यारों को दो। मेरे लिए केवल मात्र आप ही अलम् हैं। आप को छोड़ कर मैं और किसी की इच्छा नहीं करती। विभो, अगर मैं नरक के भय से आपकी उपासना करती हूं तो मुझे नरकाग्नि में जला और यदि स्वर्ग के लोभ से तेरा स्मरण करती हूं तो स्वर्ग मेरे लिए शाप हो। और अगर, हे नाथ केवल आपके लिए आपकी पूजा करती हूं, तो अपनी अनन्त ज्योति का प्रकाश मुझ पर प्रादुर्भूत कर'।

मेरी

(२)

मेरी एक रूपवती, गुणवती और सुशीला स्त्री थी। रूप और गुण दोनों में अनुपमेय थी। जान नामक एक सैनिक के साथ इसकी सगाई हुई थी। जान भी एक उदार सच्चरित्र और धार्मिक युवा था। पाणिग्रहण की तिथि समीप ही थी कि, जान को युद्धक्षेत्र में जाना पड़ा। दिनरात के कठिन परिश्रम, गोले-गोलियों के सन्नाटे और तलवार सङ्गीनों के झन्नाटे में भी वह अपनी प्रियतमा को भूला न था। नित्य की डाक से अपना कुशल-पत्र मेरी को भेजता।

लड़ाई ने ज़ोर पकड़ा। एक दिन घमासान में आजाने से बहुत घायल हो गया, यहां तक कि, उसकी दोनों बाहें कट गईं। अस्पताल में लाकर रक्खा गया। तीन दिन तक अचेत पड़ा रहा। इन दिनों वह अपनी मेरी को कुछ न लिख सका। चौथे दिन, चैतन्यलाभ करने पर, उसने एक अन्य मनुष्य से यह पत्र लिखवाया:—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'मेरे प्रेम'

तुम शायद चिन्तित्त होगी कि मैंने तुम्हें इतने दिन से क्यों पत्र नहीं लिखा? इसका कारण मेरी पीड़ा और लाचारी है। मैं कष्ट में हूं। मेरी दोनों बाहें कट गई हैं। लेकिन प्रिये, इस तमाम कष्ट में मैं तुमको एक क्षण के लिए भी नहीं भूला हूं। तुम्हारे मृदुल स्मरण से मेरी व्यथा मुझे बहुत कम अनुभव हुई है। और मैं देख रहा हूं कि, हमारा प्रेम-बन्धन पहिले से अधिक गूढ़ हो गया है। अपितु मैं नहीं चाहता कि मेरे साथ वैवाहिक सम्बन्ध कर तुम आजीवन कष्ट उठाओ। मेरा हृदय तुम्हें तनिक भी खेदित नहीं देख सकता, क्योंकि अब मैं तुम्हारी सेवा और पालन के योग्य नहीं रहा। अतएव हममें जो पारस्परिक-बन्धन की प्रतिज्ञा हुई है, उस में मैं तुम्हें अपनी ओर से मुक्त करता हूं। अपने योग्य किसी सज्जन को प्राप्त कर उससे विवाह कर लीजिये। अपने लिए इतना लिखना ही कर्त्तव्य समझता हूं कि, मृत्युपर्य्यन्त तुम्हें हार्दिक प्रेम और प्रतिष्ठा के साथ स्मरण करता रहूंगा।

तुम्हारा हृदय—

जान।

लिफ़ाफे पर अजनबी हस्ताक्षर देख कर चिन्तितमना मेरी की चिन्ता और भी बढ़ी। झटपट लिफाफा फाड़ा। पढ़ते ही सन्न रह गई। उसकी आंखों से प्रेमाश्रुधारा बह चली और लिफाफा हाथ से छूट पड़ा। एक क्षण में उसने अपने प्रियतम से भेट करना निश्चित किया। तुरन्त लड़ाई के मैदान की ओर रवाना हुई, और उस अस्पताल में पहुंची, जहां जान मरहम पट्टी से जकड़ा हुआ मरीज़ी चारपाई पर पड़ा था। मेरी को देखते ही मानों जान के शरीर में नयी जान पड़ी। जान को देख कर मेरी ने साक्षात् प्रेम के दर्शन किये। दोनों के बीच प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा। मेरी जाते ही जान के गले से लिपट गई, और रो रो कर कहने लगी, 'मैं इस दशा में भी तुम्हारी होकर रहूंगी। अगर मुझ से विवाह न करोगे, तो आजन्म कुमारी रह कर दासी की भांति आप की सेवा करती रहूंगी, प्राण रहते कभी तुम से पृथक् होना नहीं चाहती।'

मेरी अस्पताल में तब तक जानकी सेवा सुश्रूषा बड़े प्रेम से करती रही, जब तक उस के घाव अच्छे नहीं होगये। लाम बन्द हुआ। सेनाऐं देश को लौटीं। आकर जान ने मेरी का पाणि ग्रहण किया। लेकिन जान अपाहिज हो चुका था। मेरी परिश्रम कर धन कमाती, और अपना और अपने पति का निर्वाह करती। प्रेम सूत्र पहिले से भी अधिक लम्बा हुआ। नितनये प्रेम से मेरी जान की सेवा करती। अपने हाथों उसे नहलाती, भोजन कराती, और जो जो आवश्यकताएं होतीं सब को बड़ी प्रीति पूर्वक पूरा करती। ऐसा दाम्पत्य प्रेम, इस जोड़े का वात्सल्य, कहीं न दीख पड़ता था। लोग इनके प्रेम की चर्चा करते थे। इस गरीबी की दशा में भी वह दोनों ऐसे प्रसन्न और सुखी थे, जो बड़े बड़े धनशाली राजों महाराजों तक को प्राप्त न था।

हमारे देश का प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास ऐसी अनेक राबअ और मेरी से भरा पड़ा है। पुरातन युग की विदुषी बालाओं और गत शताब्दियों का राजस्थान का इतिहास सैकड़ों राजपूत बीराङ्गनाओं, बिमला विदुषियों पवित्र कुमारियों और उच्च कोटि की महिला मणियों से मण्डित हुआ आज भी सूय की भांति प्रकाश कर रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मजदूरनी

लेखक—श्री युत् बलवन्तराय सचदेव

(१)

सूर्य उदय हो गया, बज़ारों में भीड़ लगी है इक्के वाले सवारी के लिये पुकार रहे हैं। जैसे बिल्ली चूहों की ताक में रहती है, वैसे ही दुकानदार ग्राहकों की ताक में बैठे हैं। सूर्य के होते २ ही सब बातें हो रही हैं। सारे ही अमीर बने फिरते हैं, शायद यही कारण होगा के धर्मपुर का नया महल अधबना ही छोड़ दिया गया है। आइए ज़रा राजा के दरवार में तो चलें देखें क्या हो रहा है। एक पुरुष बढ़िया पोशाक पहने हुए आगे बढ़ा, झुक कर के सलाम किया और बोला :—

"अन्नदाता! मैं तो बहुत जतन कर चुका हूं परन्तु मजदूरों की बहुत कमी है, मिलते ही नहीं"

महाराजः—"परन्तु देखो लाने तो होंगे चाहे कहीं से लाने पड़ें महल अधबना थोड़े ही छोड़ देना है। यहां नहीं मिलते तो किसी और देश से लेआओ।"

पुरुष—"सरकार मैने तो बहुत ढूंढ भाल की है। अच्छा जो हुक्म हो तो मैं ढाके से ले आऊं।"

महाराज—"अच्छा जाओ ढाके से ही लेआओ।"

उस पुरुष ने हुक्म पाते ही झुककर के सलाम किया और दरवार से बाहर हुआ॥

महाराज साहब महल के लिये बहुत घवरा रहे थे क्यों कि उन की इच्छा अभी एक विवाह और करने की थी, चार तो पहले हो ही गये थे, पांचवें की तय्यारी में थे।

(२)

आज सोमवार के दिन भी वैसे ही दरवार लगा हुआ है, जैसे पहले। वही पुरुष आज भी आया है जो उस दिन आया था। आते ही मस्तक को नीचे झुकाया और बोलाः—

"स्वामिन् काम हो गया।"

महाराज—"अच्छा तो कल प्रातः से काम आरम्भ होना चाहिये, कितने मजदूर लाये हो?"

पुरुष—"सरकार दो सौ के लगभग स्त्री पुरुष होंगे। उस पुरुष ने फिर नमस्कार किया और वहा से बाहर हुआ। उस दिन भी सूर्य उदय हुआ था आज भी हुआ है। परन्तु आज धमपुर के महल ने समझा मेरे भाग खुले। रौनक लगी हुई है, स्त्री पुरुष गारा लिये जाते हैं कोई ईंटें लगाता है और कोई गढ़ २ कर देता है। ऐसे लगे रहने से तो महल दो महीने में ही तय्यार हो जावेगा॥

आज मजदूरों को लगे चार दिन हो गये हैं। महाराज साहब की भी कृपा हुई, अकेले ही उस महल को देखने चल पड़े॥

उन्हों ने क्या कुछ और देखलेना था? वही मजदूर लगे हैं कोई गारा और कोई ईटें ढो रहे हैं और भला हो ही क्या सकता था? परन्तु नहीं उन्होंने कुछ और ही देखा और देखते ही फड़क उठे। शरीर और मन चुटीला हो गया, कलेजा उछलने लगा और हृदय में अग्नि सुलगने लगी। रूप की बात देखो कैसी अद्भुत है? और कोई होता तो इधर देखता ही न।

सामने से गारा उठाए हुये कल्लू मजदूर की पत्नी सबलावती आ रही है। गारा तो जरूर उठाये हुए थी, मानते हैं परन्तु उस रूप को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA.

देखते ही कीचड़ में गिरा हुआ हीरा स्मरण हो आता था।

काले बालों की रात फैल रही थी परन्तु इधर मुख सूर्य की तरह चमक रहा था। देखने का हौसला कहां था देखा तो जाता ही न था।

महाराज अपने आप से बाहर हो गये और टक टकी लगा बावलों की तरह उधर ही को ताकने लगे। फिर कुछ मन में आया और अपने निवास स्थान की ओर चल पड़े। बस महल को देख आये, इतना ही देखना था।

उस दिन भोजन तो किया परन्तु कम। रात को निद्रा भी थोड़ी ही आई।

दूसरे दिन फिर अकेले ही घर से निकले, महल के एक कोने में खड़े हो गये। भाग्यवश वही पहले गारा उठाए हुए मिली।

महाराज के शरीर में तो बिजली दौड़ गई कुछ साहस किया और बोलेः—"ठहर जाओ"

स्त्री ने ऊपर ध्यान किया आंखों से ज्वाला निकल रही थी। सबल ने समझा कोई अमीर आदमी है। बोलीः—"कहिये क्या कहते हैं"

महाराजः—"प्रिये! कहूंगा क्या? तेरे लिये अन्धा हुआ बैठा हूं। आओ मेरे साथ महलों में चलो, वहीं सुख से रहना।"

सबला का मुख क्रोध से लाल हो गया और गर्ज उठीः—"पापी अधर्मी पतिव्रता स्त्री को ऐसी बातें कहता है?"

परन्तु सबलाने भी समझ लिया कि यह धमपुर का महाराज ही है जो अत्याचार पर उतारू होता है।

महाराजः—"देखो मैं राजा हूं तुझे पटरानी बनाऊंगा। ऐसा समय फिर ढूंढने से भी नहीं मिलेगा।"

सबल थी तो मजदूरनी, पढ़ी लिखी भी न थी परन्तु जन्म तो उस उत्तम कुल में लिया हुआ था जिस पवित्र आर्य्य कुल में सती सीता जी ने जन्म लिय था। यह बात सुनते ही शेरनी की तरह फिर गरजीः—"अरे नीच देश का राजा होकर के धर्मासन पर बैठकर ऐसा पाप कर्म करता है? पापी! एक पतिव्रता पर अत्याचार करना चाहता है। इससे तो डूब मरना अच्छा था।"

राजा कुछ गुस्से में आया और बोलना ही चाहता था, कि सामने से कुछ मजदूर आते हुए दिखलाई दिये। मुख नीचे डाल लिया और रास्ता छोड़ घर को चल दिया॥

रास्ते में मन में सोचता रहा कि "यह मजदूरनी कैसी पतिव्रता है जो राजा को तुच्छ समझ कर अपने पति के, जो सारा दिन गारा ढोता है, प्रेम में लवलीन है! आह! पर कैसी भोली चांद सी सूरत है?

अच्छा जायेगी कहां? मैं सब कुछ समझ लूंगा।"

(४)

आज महाराज घर में ही रहे, दरबार से भी छुट्टी पाई, दिवान साहब को घर से बुला भेजा और आने पर हुक्म दिया कि धमपुर की चालाक से चालाक बुढ़िया जो स्त्रियों को फुसला सकती हो जल्द हाजिर करो।

दिवान साहब तो आगे ही इन बातों में तेज थे, कोई दो बजे होंगे, महाराज साहिब दालान की ओर टक टकी लगाये देख रहे हैं। दरबान एक बुढ़िया को पीछे पीछे लिये हुये प्रवेश किया और महाराज जी के आगे सिर झुकाया, और कहाः—"सरकार इन को दिवान साहब ने आप के पास भेजा है॥"

महाराज—"अच्छा दरबान तुम जाओ।"

दरबान तो चला गया परन्तु वह स्त्री महाराज के संकेत करने पर नीचे गलीचे पर बैठ गई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

महाराज ने बड़ी नम्रता से कहा—"काम बस यह है कि सबलावती जो यहां महल पर लगी हुई कल्लू मजदूर की पत्नी है यदि तू उसे मेरे पास ला दे तो जो इनाम मांगेगी दूंगा। देखो वह रङ्ग की गोरी है। मैं उसकी सुन्दरता पर मोहित हूं।"

बुढ़िया—

"महाराज! मैंने तो समझा था कि बहुत कठिन काम के लिये महाराज जी ने बुलाया होगा। बस काम क्या निकला? यह भी कोई बड़ी बात है। मैं उसे कल ही आप के पास लेकर हाज़िर होऊंगी।"

महाराज—"अच्छा तो मुंह मांगा इनाम पाओगी।"

बुढ़िया महल छोड़ कर बाहर हुई, और सीधे ही बनती हुई इमारत पर जा पहुंची। एक मजदूरनी सामने ही घड़ा उठाये हुए मिली बुढ़िया ने उसी से ही पूंछताछ शुरू की।

बुढ़िया—"बताओ तो सबला कहां काम कर रही है?"

मजदूरनी—"माई वह इधर ही थी, वहां गारा ढो रही होगी"

बुढ़िया उधर ही को चल पड़ी जहां से स्त्री पुरुष गारा उठा कर चले आरहे थे। सारी देख भाल की कोई खूब सूरत स्त्री दृष्टिगोचर न हुई। विचार आया महाराज ने कहीं नशे में यह बातें तो नहीं कह दीं? परन्तु नहीं बात सच थी। थोड़ा समय ठहरने पर उसने देखा कि एक स्त्री खाली टोकरी लिये हुए पूर्व की ओर से अकेली ही गारा लेने को आ रही थी। सूरत देखते ही पूर्णमासी का चन्द्र याद हो आया।

बुढ़िया ने उसे रोक लिया और कहा—"बेटी तू बड़ी भागवान है। गारा उठाती तू दुबली हुई जाती है। कुछ अपने तन का भी ध्यान कर।"

सबलावती—"आप कौन हैं? आप हमारे देश से तो नहीं आयीं?"

बुढ़िया—पुत्री! मैं भी यहां महाराज जी के महल में काम करती हूं। तू धन्य है तेरे तो भाग खुल गये, महाराज जी तुझ से बहुत प्रेम करते हैं। चल यह नीचों के काम छोड़ और मजे से महलों में रह।"

वहां नौकर हैं, चाकर हैं....."बात काट कर सबलावती गुस्से से गरज उठी—"हट मर पापिष्ठा ऐसा घृणित उच्चारण करने से पहले तू डूब क्यों न मरी?"

बुढ़िया—बेटी! यह धरम करम रहने दे, यह बात ही बात होती है, पटरानी बनोगी पटरानी! इस कल्लू नीच को अब छोड़ो, अब तो तुझे महाराज जी मन में स्थान देते हैं।"

अपने प्रिय पति का नाम सुनते ही सबला का कोध भड़क उठा और बुढ़िया को "पाखण्ड की मूर्ति" "विश्वास घातिनी" कहते हुए, ज़ोर से लात मारी।

लात पड़ने पर भी बुढ़िया क्रुद्ध न हुई, और यह कहती हुई चल दी कि "सबला, अब भी समय है सोच ले।"

(५)

बुढ़िया फिर महल में ही आ गई, और महाराज जी को प्रणाम करते ही बोली—"महाराज यहां तो दाल गलनी कठिन है। वह तो पगली है। अपने पति के पीछे इतनी पड़ी है कि कुछ हद्द ही नहीं। मैंने तो बहुत यत्न किया परन्तु निष्फल ही गया। अच्छा, कल फिर जाऊंगी और जो खबर होगी सरकार को पहुंचाऊँगी।"

रात का समय है। अकाश पर कुछ बादल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घिरे हुए हैं, चन्द्रदेव के उपस्थित न होने के कारण आज रात भी अन्धेरी ही है। सो चोर चोरी के लिये तैयार हो रहे हैं। बन रहे महल में भी कुछ गड़ बड़ी है। मज़दूर स्त्री पुरुष इकट्ठे हुए हैं और भागने की चेष्टा में लगे हुए हैं।

ओहो यह क्या? यह कोई कैदी थोड़े ही हैं? परन्तु रहना क्यों नहीं चाहते हैं? एक बूढ़े ने उन में से उठ कर के कहा—"भाइयो बड़ों ने भी कहा हैकि जहां बहू बेटियों का धर्म नष्ट होने का डर हो वहां पल भर के लिये भी ठहरना उचित नहीं। सो अब देर क्या कर रहे हो? उठो और चलने की तैयारी करो।"

अब समझे! प्रतीत होता है कि सबला ने अपने पति को सब बातें कह दी हैं, और उसने आगे अपने मजदूर भाइयों से सब कुछ कह दिया है। अब यह निश्चय हो गया कि सब यहां से अपने देश को भाग चलें। सबला ने चलने से पहले ही अपने पति की कटार कमर में बांध ली और चल पड़ी॥

(६)

अन्धेरा दूर हुआ और अब सूर्य भगवान दर्शन दे रहे हैं। महाराज जी ने भी निद्रा को त्यागा और शौच आदि हो कर अपने कमरे में बैठे कुछ चित्र देख रहे थे कि इतने में एक पुरुष दरवार के पीछे २, नीचा मुंह डाले हुए आया। आते ही बोला:—"महाराज, सब मजदूर भाग गये। इतना सुनते ही महाराज को क्रोध ने घेर लिया और गुस्से में बोले "मेंडकी को जुकाम हो गया। भाग खड़े हुये हैं, मेरी बराबरी करेंगे! कल तक जो मेरे दीवार पर जूतियां खटकाते फिरते थे आज अकड़ दिखलायेंगे कुचल डालूंगा, दूध से मक्खी की तरह निकाल फेकूंगा। भला पूछो तो यह भाग कर जायेंगे कहां?" हुक्म दिया कि रिसाला तैयार हो जावे। महाराज जी आप साथ चलेंगे।

एक हजार फौज का रसाला लिये हुए राजा साहब ने दूसरे दिन इन गरीब मजदूरों को तीसरे पड़ाव पर जा घेरा।

बिचारे लड़ने के योग्य तो थे ही नहीं। भागने की सूझी परन्तु भागते कहाँ? फौज ने ऊपर से धावा कर दिया और बीसों मारे गए।

महाराज साहब आप बहादुरी करने को आगे बढ़े और कल्लू को अपने बन्दूक का निशाना बनाया। वह बिचारा गोली खाते ही पृथिवी पर लेट गया। महाराज ने ललकार कर सबला को कहा—"अब भी मान जा।" परन्तु उस सती ने उत्तर में कहा—मुर्दार भोजी गीदड़ दूर हो, दूर हो, हट; मेरी आंखों के सामने से तू हट। पतिव्रता स्त्री का धर्म कोई अधर्मी नष्ट नहीं कर सक्ता।"

सबला ने अपने मरते हुए पति का सिर गोद में लिया, और आप कटार निकाल कलेजे में ठूस ली और कहा—"प्राणनाथ आप की दासी आप के लिये स्वर्ग में भी पहले पहुंच कर सेवा के लिए सामग्री तैयार करती है, दो हिचकी आई और प्राण छोड़ दिए।"

माता के रूप में नागरिक

हेलेन टामसन एक विदेशी महिला हैं उन का विचार है कि नागरिक के रूप में जो २ काम किये जाते हैं उन में परम आवश्यक और सब से श्रेष्ठ काम सन्तान उत्पति करना है। उन का कथन है कि "समाज सेवा के कार्य्यक्षेत्र में इस पीढी तथा भावी पीढियों की सेवा के हेतु मातृत्व बढ कर सेवा क्षेत्र अन्य दूसरा नहीं है। आज कल की उत्साही स्त्रियों के लिये—चाहे उनका उत्साह लाभकारी नागरिक बनने की ओर हो अथवा निज आराम को प्राप्त करने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की ओर हो—इससे बढकर कोई सुअवसर नहीं कि वह अपने घरकी चारदीवाली के भीतर रहती हुई बच्चों से परिपूर्ण, दक्षता से चलायी गई और नियम पूर्वक प्रबन्ध की हुई गृहस्थी में रह कर कार्य करें। एक स्त्री, ने जो बड़ी विदुषी बिचारशीला थी और और जिसे बच्चों और उनके माता पिताओं के साथ व्यवहार तथा उन के स्वभाव परिचय में कई वर्षों का अनुभव था थोड़े दिन हुये मुझसे कहा कि अमेरिका की माताओं में सब से बढ़ कर इस बात की जरूरत है वह बच्चों के स्वभाव और गुणों का ज्ञान अच्छी तरह प्राप्त करें और गृहस्थी को नियम पूर्वक चला सकें।

घर ही समाज की पहिली एकाई है इस लिये जैसे २ घर होंगे उसी प्रकार की जाति होगी और घर भी जैसे उन में रहने वाले स्त्री पुरुष होंगे, उसी प्रकार के होंगे। इस लिये हम माताओं को अत्यन्त उचित है कि अपने दोषों को देखें और उन्हे सुधारें और इस प्रकार अमेरिका की माताओं की साधारण स्थिति को ऊंचा करने में निश्चित रूप से सहायका बने। केवल इसी प्रकार कि हम अपने आदर्श को उन्नत करने का उपाय करेंहम अपने घरों और जाति के सुधार में लाभ कारी सहायता दे सकी हैं।"

—o—

हमारी मञ्जूषा

साहित्यालोचन—लेखक श्रीयुत श्याम सुन्दरदास जी, प्रकाशक श्री रामचंद्र वर्म्मा, साहित्य रत्न कार्यालय काशी, पृष्ट संख्या ४०० के लग भग सुन्दर कपड़े की जिल्द मूल्य ३), साधारण संस्करण २)

यह पुस्तक साहित्य रत्न—पुस्तक माला का प्रथम ग्रन्थ है। किसी भी भाषा में साहित्य का विषय बड़ा गम्भीर और महत्व का विषय है। इससे न केवल उस भाषा की उत्पत्ति और विकास का ही ज्ञान प्राप्त होता है वरन उसके बोलने और पढ़ने वालों के मानसिक विचार, उनकी रुचि, और ध्येय, उनकी भावनायें और हृदयोद्गारों की–जैसा कि तत्कालीन अवस्थाओं की क्रिया और प्रतिक्रिया द्वारा संशोधित और परिमार्ज्जित होकर वह रूप धारण करते हैं। झलक हमारी आंखों के सामने आजाती है। साहित्य का विवेचन और आलोचन जहां एक ओर भूतकाल के मानसिक इतिहास का दिगदर्शन करवाता है वहां भविष्यत् के लिये हृदय में नवीन उमंगों का संचार करता है प्रस्तुत पुस्तक में आर्य भाषा के अनथक लेखक और योगय लेखक श्री श्यामसुन्द्र दास जी ने साहित्य और उसके भिन्न २ अंगों जैसा कि गद्य और पद्य कविता, नाटक, उपन्यास, रसों और शैली इत्यादि परमोपयोगी साहित्य सम्बन्धी विषयों पर बड़ी गम्भीरता और विद्वता से निष्पक्षता और दुराग्रह रहित गुण-दोष निरूपण का गहन कार्य्य–संपादन का यत्न किया है। यूनानी, रोमन, अंग्रेजी, चीनी इत्यादि अन्य भाषाओं के साहित्य और उसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विकास को सन्मुख रख कर हिन्दी साहित्य की तुलनात्मक विवेचना की गयी है। किसी भी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये केवल मात्र उसके गद्य और काव्य ग्रन्थों तथा व्याकरण का पाठ ही पर्याप्त नहीं होता वरन उसके साहित्य के इतिहास और विकास का ज्ञान अनिवार्य है। भाषा के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अपने आप ही सब कवियों और लेखकों की पुस्तकों को स्वयं पढ़ना और साहित्य सम्बन्धी विवेचनात्मक सम्मति बनाना प्रायः असम्भव होता है। इसका कारण केवल समय का अभाव ही नहीं होता वरन अनुभव की कमी भी होती है। इसी कारण हम संसार की जीवित जागृत भाषाओं में उनके साहित्य और विवेचना सम्बन्धी ग्रन्थ पाते हैं। इन ग्रन्थों का पाठ विद्यार्थियों की कालिज के शिक्षा का एक अनिवार्य अंग होता है। हिन्दी भाषा में अब तक इस प्रकार का कोई ग्रन्थ न था अतः लेखक ने 'साहित्यालोचन' लिख कर एक बड़ी भारी कमी को पूरा किया है। लेखक इस कामके लिये कितना उपयुक्त है इसके कहने की आवश्यक्ता नहीं। हमारी प्रबल इच्छा है कि भारत के समस्त विद्यालयों में—विशेष कर जातीय विद्यालयों में आर्य्यभाषा की नियमपूर्वक पढ़ाई होनी चाहिये और उस पर उतना ही समय देना चाहिये जितना की संस्कृत, गणित, या अंग्रेज़ी इत्यादि पर दिया जाता है। इस शृंखलाबद्ध पाठ विधि में हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक एक बड़ा उच्च स्थान प्राप्त करेगी। इस पुस्तक को लिख कर लेखक ने हमारी भाषा में एक बड़े महत्वपूर्ण ग्रन्थ का संकलन किया है और यह हमारी मातृभाषा के लिये बड़े सौभाग्य की बात है।

राधामाधव अथवा कर्मयोग नाटक तथा वैर का बदला नाटक—लेखक श्री गोपाल दामोदर तामसकर एम० ए० एल० टी०, प्रकाशक डा० कृष्णराव भावे, बी० एस सी० एम० बी० बी० एस० लार्डगञ्ज जबलपुर, पृष्ठ संख्या १६४ और मूल्य १) रुपया।

श्रीयुत तामसकर जी के नामसे हिन्दी साहित्य संसार भली भांति परिचित है। आपने महाराष्ट्र होते हुये भी हिन्दी भाषा को अपनी सेवा का पात्र समझा है। हिन्दी मासिक पत्रों में आपके लेख प्रायः निकलते रहते हैं। पुस्तक निरूपण में आपका यह पहिला ही प्रयत्न है। पुस्तक में दो नाटक हैं जैसाकि नाम से प्रगट है। पुस्तक का उद्देश्य मनुष्य हृदय में होने वाले देवासुर संग्राम में शुभभावों, उच्च आकांक्षाओं और सद्विचारों की विजय और कुचेष्टाओं और राक्षसी प्रवृतियों की पराजय दिखलाना है। इस उद्देश्य में लेखक को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। पात्रों का चित्रण अच्छे ढंग पर किया गया है। संभव है कि कुछ पाठकों की सामाजिक आचार व्यवहार की दृष्टि से राधा का चरित्र मनोनीत न हो परन्तु यह निर्विवाद है कि मनोविज्ञान की दृष्टि से यह चरित्र सर्वथा ठीक है। यह लेखक की योग्यता है कि राधा को प्रेम के वश अन्धी न करके उसके असीम प्रेम को श्रेय और हितकर मार्ग पर नियन्त्रित कर दिखलाया है। दूसरे नाटक में राजा 'दधीति' का चित्र एक आत्म विजयी हृदय का मन्द मधुर शान्तिप्रद गान है जिसकी कि अन्तिम कड़ी 'दीर्घायु' के विचार परिवर्तन में विशेष प्रभावयुक्त मूर्ति धारण करती है। पुस्तक पठनीय है और नवयुवकों और नवयुवतियों के विशेष लाभ की है।

महिला महत्व—लेखक हिन्दीभूषण श्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिव पूजनसहाय जी, प्रकाशक जिन्तू प्रसाद रामसुन्दर ५४ सुकिया स्ट्रीट कलकत्ता। पृष्ठ संख्या २८५ मूल्य २)

इस पुस्तक में श्री शिवपूजन सहाय जी की समय २ पर लिखी हुई दस आख्यादिकाओं का संग्रह है। आख्यादिकाओं का संग्रह है। अख्यायिकाओं की रचना गद्यकाव्य का बड़ा सुन्दर और मनोहर नमूना है। भाषा के सौन्दर्य और भावों के माधुर्य को दृष्टि में रख कर हम कह सक्ते है कि कहानियां साहित्य वाटिका से चुने हुये सर्वाङ्ग सुन्दर सुगन्धित और मनोरम फूलों का नयनाभिराम और सुवासित, हिन्दी साहित्य प्रेमियों की भेंट करने योग्य गुलदस्ता है। हमें आशा है कि हिन्दी संसार पुस्तक का समुचित आदर करेगा पुस्तक का मूल्य कुछ अधिक है।

भागवन्ती—लेखक श्रीयुत सुदर्शन, प्रकाशक नारायणदत्त सहगल एण्ड संज़ लुहारी दरवाज़ा लहौर। पृष्ठ १६० मूल्य १॥)

श्री सुदर्शन जी उर्दू और हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध गल्प लेखक हैं यह उपन्यास उनकी पहिली कथा प्रवन्ध है। जातिपांत की प्रबल परन्तु अन्याय युक्त ज़ंज़ीरें किस प्रकार हिन्दू जाति के विशेष २ कोमल अवयवों को घुन की तरह खा रही हैं और शरीर को खोखला कर रही हैं यह इस पुस्तक में कथाके रूप में योग्य लेखक ने बड़ी मनोरंजक शैली द्वारा वर्णन किया है। पुस्तक मौलिक और शिक्षा प्रद है। इतना लिखते हुये भी हम यह कहे विना नहीं रह सक्ते कि श्री सुदर्शन जीसे हम इस से कहीं उत्तम उपन्यास की आशा रखते थे। पुस्तक का उद्देश्य कुप्रथाओं और दुष्कर्मों का दुखदायी और दारुण परिणाम दिखलाना है, अतः पुस्तक में निर्दोष, साधु स्वभाव, शान्ति प्रिय, सत्कर्म परायण व्यक्तियों को भी उतने ही, वरन पाप कर्मचारियों से भी कहीं बढ़कर व्यथा, और कष्टों को सहन करते देख हृदय पर अवश्य ठेस लगती है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार इन सब परिणामों का युक्तियुक्त निरूपण होसक्ता है परन्तु एक उद्देश्य विशेष से लिखे हुये ग्रन्थ में मनो विज्ञान के नियमों को जितना भी अधिक ध्यान में रखा जाय अच्छा है। पुस्तक में कहीं २ उर्दू भाषा की भी कहावतें हैं परन्तु इन से हिन्दी भाषा की वृद्धि ही है। समाज सुधार के प्रेमियों को पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। पुस्तक में एक तिरंगा और चार सादे चित्र हैं।

राष्ट्रीय-वीणा—दूसरा भाग सम्पादक कविवर त्रिशूल और प्रकाशक प्रताप पुस्तकालय कानपुर पृष्ठ १४, मूल्य ॥)

प्रताप में समय २ पर जो हिन्दी के प्रसिद्ध और मर्मज्ञ कवियों की रचनायें प्रकाशित होती रहती हैं प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में कतिपय उत्कृष्ट कविताओं का संग्रह है। संग्रह कर्ता हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि "त्रिशूल" जी हैं अतः यह कहने की अवश्यक्ता नहीं कि संग्रह कैसा हुआ है। कवितायें देशभक्ति रस से परिपूर्ण और हृदय ग्राही हैं।

आर्य कुमार दिनचर्य्या—सम्पादक तथा प्रकाशक डाक्टर युद्धवीरसिंह मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद दिल्ली, कपड़े की जिल्द, मूल्य ॥)

गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य कुमार परिषद ने आर्य कुमारों के हितार्थ यह डायरी तय्यार करवाई है। एक दिन के लिये एक पृष्ठ है और प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर दिन, तिथि मास (अंग्रेजी और विक्रमी सम्वत के अनुकूल) दिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं तथा एक पंक्ति उपदेशमय वाक्य की है। आरम्भ में आर्यसमाज के नियम, आर्य कुमार सभा के उद्देश्य, पर्व सूची तथा कई एक भजन हैं। अन्त में देश दशा सम्बन्धी कुछ अंक, डाक घर के नियम, परिषद विषयक आवश्यक सूचनायें और भारत के आर्य कुमारों की सूची है। डायरी के बीच में भी आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेताओं के सदोपदेश उद्धृत किये गये हैं।

डायरी निसन्देह आर्य कुमारों के काम की चीज़ है और ॥) में सस्ती है।

बाल विनय—लेखक और प्रकाशक श्री धर्मचन्द्र खेमका "चन्द्र" पाकेट साईज़ के ३२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ≈)। प्रकाशक से ३०, काटन स्ट्रीट कलकत्ता से प्राप्य।

पुस्तक में ज्योति के सुपरिचित कवि चन्द्र जी कृत हिन्दू धर्म के मुख्य २ देवताओं की स्तुति सम्बन्धी कवितायें हैं। यद्यपि श्री "चन्द्र" जी से हमारे धार्मिक विचार नहीं मिलते तो भी हमें यह कहने में हर्ष है कि कविताओं की रचना मधुर, भाषा सरल और भाव ग्राह्य है। प्रत्येक कविता के ऊपर उस से सम्बन्ध रखने वाला एक २ छोटा सा चित्र भी है। हिन्दू बालकों के विनोद और शिक्षा के लिये पुस्तक परमोपयोगी है।

ज्ञानमण्डल काशी द्वारा प्रकाशित हमें तीन पुस्तकें राजनीति शास्त्र, राष्ट्रीय आय व्यय शास्त्र और अङ्गरेज़ जाति का इतिहास समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं। पुस्तकें बड़ी महत्व पूर्ण, उपयोगी और संग्रह करने योग्य हैं। इन की विस्तृत समालोचना ज्योति के आगामी अंक में निकलेगी॥

वैज्ञानिक संसार

कीट पतंगों की योनियां

डाक्टर हौवर्ड जो कि अमरीका के वाशिन्गटन नामक नगर की कीड़े मकोड़ों की ज्ञान-वर्धनी सभा के अध्यक्ष हैं—ने नवीन अन्दाज़ा लगाया है कि संसार में कीट पतङ्गों की ३,०००,००० (तीस लाख) योनि हैं। चिउंटी शहद की मक्खी, भिड़ (वर्र) इत्यादि जाति के कीड़े २,७१,००० प्रकार के हैं जिन में से हमें ६०,००० का ज्ञान है, मच्छड़ और मक्खिये २२०,००० प्रकार की हैं, एक और प्रकार के फुदकने वाले कीड़े हैं जिन का अन्दाज़ा २००,००० है और अनुमान यह है कि इन की वास्तविक गणना के यह दसवें भाग से भी कम है।

भूमि की पाचन शक्ति

वनस्पति की उपज और वृद्धि के लिये दस मौलिक तत्व परमावश्यक हैं। और पौदों में पांच तत्व इन दस के अतिरिक्त और मिलते हैं। भूमि अथवा खेत की मिट्टी को पहिले इन १५ तत्वों का कोश मात्र ही समझा जाता था। परन्तु अब इस मत में बड़ा परिवर्तन हो गया है। मट्टी में अगणित अदृश्य जीवाणु निवास करते हैं। इस के अतिरिक्त भिन्न २ तत्वों के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेल से मिल कर बने हुये, इस में ३/१ के लग भाग रासायनिक-समास हैं। इन में से कुछ तो पौदों की वृद्धि में बड़ी सहायता देते हैं, कुछ विशेष प्रकार के पौदों के लिये विष समान हैं और अन्य पौदों को कोई हानि नहीं पहुंचाते। इस प्रकार की पेचीदा सामग्री को रखती हुई मिट्टी में प्राणियों की भांति पाचन क्रिया के लिये साधन विद्यमान हैं। उन की तरह मिट्टी भी, प्रोटीन्ज़ तैल्य पदार्थ और निशास्ते का रासायनिक क्रिया द्वारा अधिक सरल पदार्थों में परिवर्तन कर देती हैं, प्राणियों के समान ही अन्य ओषजन, अथवा जीवाणुओं या इन्ज़ाईम्स (Engymes) द्वारा की गया क्रियाओं को करती है और बनस्पति अथवा प्राणियों के मल को अहानिकारक अथवा हितकर पदार्थों में बदल सक्ती है। प्राणियों की भांति भूमि को बदहज़मी भी हो जाती है। जिस का कारण ठीक प्रकार हल न चलाना या एक के पीछे दूसरी अनुचित फसल का बोना है। इस बदहज़मी को दूर करने के लिये विशेष ज्ञान, और विशेष परिश्रम की आवश्यक्ता है।

क्या लकड़ी मनुष्यों का भोजन है?

मनुष्य अथवा अन्य प्राणी लकड़ी क्यों खाते हैं? साईबेरिया के उत्तरीय किनारे पर रहने वाले मनुष्य प्रायः एक प्रकार के वृक्ष के छाल के नीचे की लकड़ी बड़ी बारीक २ उतार कर और उस में बर्फ डालकर उबाल कर खाते हैं यद्यपि उनके आहार के लिये मछली बड़ी भारी मात्रा में मिलती है। यह एक विचित्र स्वभाव ही प्रतीत होता है क्योंकि इस लकड़ी में शरीर को शक्ति प्रदान करने वाले कोई भी तत्व विद्यमान नहीं हैं। फिर इसका क्या कारण है? यद्यपि ठीक २ कारण तो नहीं बतलाया जा सक्ता, परन्तु इन मनुष्यों का यह स्वभाव कितने ही अन्य प्राणियों से मिलता है। खरगोश को कई पेड़ों की छाल लकड़ी और पत्ते बड़े प्रिय हैं, थोड़ी आयुवाले घोड़े के बच्चे जंगल में से कितने ही पेड़ों की छाल उतार कर खा जाते है। निस्सन्देह इन इन वृक्षों की लकड़ी में कोई बड़ी स्वादु और गुणकारी वस्तु विद्यमान है।

भूगर्भ का ताप।

मनुष्य आजकल अपने को सरदी से बचाने के लिये लकड़ी और कोयले का आश्रय लेता है। परन्तु जिस राशि में हम लकड़ी और कोयले को खर्च कर रहे हैं उससे यही अनुमान होता है कि यह बहुत ही शीघ्र समाप्त हो जायेंगे उस अवस्था में शीत से बचने का क्या उपाय होगा? अमरीका के एक पत्र में एक लेखक लिखता है कि जो बुद्धि गगनस्पर्शी विमान बना सक्ती है उसने पहिले ही मनुष्य के लिये भूमितल से नीचे रहने को निवास स्थान बना दिये हैं, और यह बड़े २ हाल, दफतर, दुकानें वैज्ञानिक क्रिया भवन भूमि के नीचे होने के कारण किसी प्रकार भी कष्टदायक नहीं। पहाड़ी नदियों द्वारा उत्पन्न की हुई बिजली से इनमें पृथ्वी के ऊपर की ठंढी वायु को कुछ गरम करके इन मकानों में भेजा जाता है। रूस की राजधानी पैट्रोग्रैड में जब कि बरफ पड़ रही थी पृथ्वी के ऊपर पानी के जमने के तापविन्दु से ३९ दर्जे कम गर्मी थी और उसी समय बरफ के केवल दो फुट नीचे इसी तापविन्दु से २९ दर्जे ऊपर गरमी थी अथवा ६८ दर्जे का अन्तर था। इसी उदाहरण से पता लगता है कि भूमि के नीचे कितना अधिकताप,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। ऊपर हिम और नीचे गरमी। बरफ एक प्रकार से भूमि के लिये किसी कम्बल अथवा रजाई का काम देती है और उसके ताप को बाहर नहीं निकलने देती। वैसे भी यदि बर्फ न भी हो तो भूमि तल से कुछ ही नीचे मिट्टी जम जाती है, उस के नीचे का ताप पानी के जमने के ताप से अधिक ही रहता है।

——

विचार प्रवाह

ज्योति का नया वर्ष

इस अंक के साथ ज्योति के तीन वर्ष पूरे हो जाते हैं। इन तीन वर्षों में जिस अनथक परिश्रम के साथ यह पत्रिका पंजाब में हिन्दी प्रचार के यत्न में लगी रही है उस को कोई आर्य्यभाषा का प्रेमी भुला नहीं सकता। पिछले वर्ष जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन लाहौर में हुआ था उस समय केवल यही 'ज्योति' अपनी सौम्य मूर्त्ति से पंजाब के हिन्दी संसार को समुज्ज्वल कर रही थी। इस गत वर्ष में ज्योति ने चित्रों द्वारा अपने पाठकों का मनोरञ्जन भी किया और यथाशक्ति यही उद्योग करती रही कि पाठक पाठिकाओं को इस से जितना भी लाभ पहुंचाया जा सकता है पहुंचाया जावे। पंजाब के इतिहास में आर्य्य भाषा की उच्चकोटि की मासिक पत्रिका जिस में सामाजिक, धार्मिक और वर्तमान राजनैतिक और स्त्री सम्बन्धी प्रश्नों पर लेख तथा टिप्पणियां रही हों इतने वर्ष तक जीवित नहीं रही, परन्तु ज्योति ने कई हजार का घाटा सहते हुए और पंजाब की जनता से कोई उत्साह न पाते हुए भी पंजाब में आर्य्य-भाषा का प्रचार कर देने का अपना संकल्प दृढ़ रक्खा है।

अब तक ज्योति श्रीमती कुमारी विद्यावती सेठ बी० ए० सम्पादिका श्रीमती ओ मवती जी सहकारि सम्पादिका तथा अन्य कतिपय प्रतिष्ठित आर्य्य पुरुषों के अनथक परिश्रम से बहुत धनराशि के व्यय करते हुए किसी प्रकार चलाई गई परन्तु इस वर्ष से ज्योति की सम्पादिका पर बड़े भारी उत्तरदायित्व का कार्य्यभार है। कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की आचार्य्या बन कर उन्हें ज्योति की सेवा के लिये उतना समय अब न मिला करेगा जितना कि अब तक वह दे रहीं थीं और प्रबन्ध के लिये पिछले वर्षों से कहीं अधिक धन की आवश्यक्ता होगी। ज्योति को जीवित रखना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि उस से पंजाब की शान है और आर्य्यसमाज का सन्देशा बहुतों के पास पहुंचता है जो आर्य्य समाज के क्षेत्र से बाहर हैं और जिन के पास वैदिक धर्म के पहुंचने का और कोई साधन नहीं। ईसाई लोग अपने मिशन के फैलाने के लिये अपने धर्म के प्रचारक पत्रों को उत्तेजना देने के हेतु ही खरीद लिया करते हैं इस से उनके कामों को सर्वथा उत्तेजना ही मिलती रहती है परन्तु हमारे आर्य्य समाजियों में अपने मिशन के प्रचार से इतना प्रेम नहीं है और नाहीं उनके दिलों में अपनी चीज़ की क़दर है नहीं तो आज सारे आर्य्य समाज की एक मात्र उच्च कोटि की पत्रिका – जिसे वह उपयोगी और उत्तम भी मानते हैं—आज उनकी छत्रछाया से वंचित रह कर कैसे मुर्झाती ?। लाखों की संख्या में विद्यमान आर्य्य समाजी क्या अपने में से नर और नारी मिलकर ज्योति की ग्राहक संख्या और एक हज़ार नहीं बना सकते ?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्यों नहीं, किन्तु यदि उनका ध्यान इधर खिचें तब तो।

वैशाखी से इस का नया वर्ष प्रारम्भ होता है अतः हम आर्य्य जनता से विशेष आग्रह पूर्वक निवेदन करते हैं कि ज्योति हज़ारों और सैंकड़ों का दान नहीं चाहती वह केवल आप की सहानुभूति में रहकर जीवित रहना चाहती है अतः आज वैशाखी के शुभ अवसर पर प्रत्येक आर्य्य पुरुष और देवी जो अब तक ज्योति के ग्राहक नहीं हैं ४॥) रु० का मनीआर्डर मैनेजर ज्योति गवाल मण्डी लाहौर के नाम भेज कर शीघ्र ग्राहक बन जावें। पर्व वाले दिन हिन्दू लोग बहुतेरा दान करते हैं यदि आर्य्य भाई और बहिनें ४॥) का दान इस रूप में दें तो उन्हें बदले में वर्ष में १२ प्रतियां ज्योति की भी मिल जायंगी और यश और आर्य्य भाषा के प्रचार का पुण्य भी साथ में मिलेगा और ज्योति को एक हज़ार ग्राहक और मिलने से उसका जीवित रहना निश्चित होजायगा। आशा है कि हर एक आर्य्य समाजी पुरुष और देवी अपने कर्तव्य को निभाने का पूरा यत्न करेंगे और शीघ्र ही ज्योति के मांग के आर्डर ज्योति कार्य्यालय में पहुंचेंगे।

एक हजार ग्राहक और हो जाने पर

हम ज्योति को कई प्रकार से अधिक उपयोगी और मनोरञ्जक बना सकेंगे। एक तो चित्रों से अधिक विभूषित की जा सकेगी दूसरे वनिता विनोद और वैज्ञानिक संसार के आकार प्रकार में बहुत उन्नति की जावेगी। आगामी वर्ष से उसे स्त्रियों और कन्याओं के लिये अधिक उपयोगी बनाने पर विचार हो रहा है और यदि पाठक पाठिकाओं ने एक हजार की ग्राहक संख्या और कर दी तो ज्योति अपनी छटा द्वारा ही अपनी कीर्ति फैलायेगी, अभी से अपने मुंह मिट्ठू बनना व्यर्थ का आडम्बर है।

निमक पर कर

अप्रैल मास का सहयोगी माडर्न रिव्यू इस विषय पर क्या लिखता है? यह ज्योति के पाठकों के सन्मुख रख आज हम उन से अनुरोध करेंगे कि वह इस पर स्वयं विचार करें। सहयोगी का कथन है कि "हम वैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रश्न को नहीं देखना चाहते कि निमक जीवन की प्रथम परमावश्यक वस्तु है और जन साधारण के स्वास्थ्य के लिये कितना लाभकारी है अथवा नहीं क्योंकि हम भोजन की जांच में कुशल नहीं हैं हम इतना कह देना ही पर्य्याप्त समझते हैं कि भारत के सब कुटुम्बों में यह वर्ता जाता है और गरीबों के रूखे सूखे थोड़े से ग्रासों को स्वादु बनाने का एक मात्र साधन है जिसे वह वर्त्त रहे हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार की चीज़ पर टैक्स लगाना ठीक भी है? हमारी समझ में तो कदापि ठीक नहीं। परन्तु इस पर १।) रुपये मन का टैक्स पहिले से ही मौजूद है इस लिये इस पर और टैक्स बढ़ाना तो बिल्कुल ही अनुचित है।

हमारे कई ऐंग्लो इन्डियन समाचार पत्र और उन के पक्षपातियों का कहना है कि इस टैक्स से केवल प्रति वर्ष तीन आने प्रति जन पर ही टैक्स की वृद्धि हुई है और उन की दृष्टि में यह बहुत ही तुच्छ धन है लेकिन हम इसे दूसरी तरह देखते हैं। हमारा यह विचार है कि गरीबों पर टैक्स केवल उसी समय लगाया जाना चाहिये जब कि धनवान श्रेणी के लोगों अर्थात् उन लोगों पर जो प्रायः कुछ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न कुछ बचा सके और बचाते भी हैं—जितना कर लगाया जा सक्ता हो, लग चुका हो। वोरोक्रेट (कुछ लोगों के हाथ में ही शासन सत्ता रहने के पक्षपाती) और उन के सहयोगी लोगों ने कह दिया है कि आप के सब श्रोत समाप्त हो चुके हैं इस से अर्थ सचिव को निमक पर कर लगाना ही पड़ा। हम इस के एक भी शब्द पर विश्वास नहीं करते। क्या आयात और निर्य्यात के सब पदार्थों पर ज़ितना कर लग सक्ता था लग चुका? क्या धनवान और सम्पत्ति वाले भारतीय लोगों पर इतना कर लग चुका है कि धनिकों के बंक में जमा किये रुपयों में कमी पड़ी हो, या व्यापारी शिरोमणियों की धनिराशि में कमी पड़ी हो अथवा रैयत का खून चूसने या मजदूरों से हद से ज्यादः व्याज लेने के लिये ही जो धन उधार देते हैं उनकी आय में कमी पड़ी हो? नहीं। तो फिर यहां के निवासी को तीन आने प्रति वर्ष भी कर क्यों देने पर वाधित किया जावे जब कि हम देखते हैं कि इन में से लाखों और करोड़ों को जन्म से मृत्यु तक कभी एक सप्ताह भी दो या तीन वार दिन में भोजन नसीव नहीं हुआ, जो सारी जिन्दगी चिथड़ों से भी मुश्किल से ढके रहे और जिन के रहने को—जिन किन्हीं को नसीव भी हैं—ऐसे गन्दे घर हैं कि जिन में सभ्य पाश्चात्य लोग अपने घोड़ों, गाय, भैसों, भेड़ों, सुअरों और कुत्तों को भी नहीं रखेंगे। ऐसे लोगों के ऊपर एक पैसा भी सालाना कर बढ़ाना कोई दया शील प्राणी न चाहेगा। तीन आना प्रति वर्ष तुच्छ द्रव्य है लेकिन और करों को देते हुये इतना और देना बहुतों के लिये सौ प्रति शतक कर बन जाता है। क्या निमक कर वृद्धि के पक्षपाती जो कर अब देते हैं उन के इलावा सौ प्रतिशतक कर और देना चाहेंगे। तीन आना बहुत तुच्छ धन है तो, लेकिन, ढेरों गरीव आदमियों की आमदनी का बहुत तुच्छ भाग नहीं है। क्या कर बढ़ाने के पक्षपाती लोग अपनी आमदनी का इतना ही भाग बढ़े हुये कर के रूप में देना मंजूर करेंगे? यह केवल करुणा का भाव ही है लेकिन धर्मानुकूल और न्याय पूर्ण करुणा के भाव निमक कर बढ़ाने के पक्षपातियों के दिये हुये कर लगाने के सिद्धान्तों से कहीं अच्छे हैं।

यदि मोटरकार और फिटन तथा लैन्डो पर चढ़ने वालों पर कर लगा कर उन्हें इतना घटाया जाय कि वह ट्रामकार पर चढ़े या पैदल चलें तब उन लोगों पर कर लगाने के विचार का समय होगा कि जो जन्म भर नंगे पैर और नंगी टांगों पर घूमते रहे अगर खूब बढ़िया कपड़े पहिनने वालों को कर देने के कारण मोटे सादे कपड़े पहिन कर अपना शरीर मात्र ढकना मिले तब चिथड़े पहिने, आधे नंगे, या बिलकुल नंगे लोगों पर कर लगाने का विचार न्याय युक्त होगा। यदि कर लगाने के कारण ही तीन, चार, पांच वार प्रतिदिन भोजन करने वालों को केवल दो या एक ही वार भोजन मिले तब वह समय होगा कि भूख से अधमरों आधा पेट भोजन मिलने वालों या केवल एक वार भोजन करने वालों पर कर लगाने का विचार किया जाय, अब नहीं।

एक ऐङ्गलो इन्डियन अखवार कहता है मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट ने वर्णन किया है कि "रिफार्मज़" का एक उद्देश्य यह भी है कि भारत की साधारण जनता की करुणोत्पा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दक संतोष को उखेड़ा जावे इस इस लिये सब से गरीब जन पर भी कर लगाना चाहिये जिस से उसे याद रहे कि प्रजा तन्त्र शासन के लिये कर देना आवश्यक है। आहा प्रजा तन्त्र शासन के सुखों को जन साधारण के हृदयङ्गम करने का बड़ा अच्छा ढंग है! लेकिन यदि सचमुच जनता को और अधिक असन्तुष्ट करने की आवश्यक्ता है तो प्रत्येक जन की पीठ पर कोड़े ही क्यों नहीं लगाने देते? उनको यह बतलाने के लिये कि प्रजा सत्ता शासन प्रणाली भारत में है यह बहुत सस्ता तरीका होगा और साथ ही साथ वह पूर्णरूप से असन्तुष्ट भी हो जावेंगे।"

❀ पाकेट इत्रदान ❀

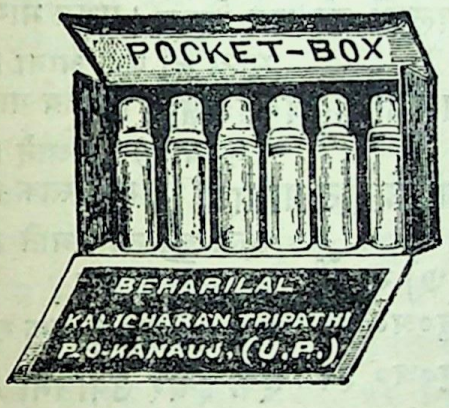

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और आफिसरों को नजर में देने के लिये नई वस्तु है। विवाह व शादी वगैरः शुभ कार्यों में भी मैफिल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं १ पाकेट इत्रदानफैसी शी० ६ मय इत्र की ४)
नं २ ,, ,, ६ ,,
नं ३ ,, ,, ६ ,,

इसके अलावा हर एक किस्म की इत्र तेल, तमाखू इत्यादि सामानभी हमारे कार्यालय से मंगवा लीजियेगा॥

पता—बिहारी लाल काली चरण त्रिपाठी,
पो कनौज सिटी (Kanouj City.)

अतिशय मनोहर सामाजिक शिक्षाप्रद उपन्यास।

भागवन्ती।

छप कर हाथों हाथ निकल रहा है। इसके रचियता हैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत सुदर्शन। जिन लोगों ने कभी माधुरी, सरस्वती, तथा ज्योति में उनकी कहानियों का पाठ किया है, वह जानते हैं कि उनकी लेखनी में कैसी प्रतिभा है। यह उपन्यास उन के दो साल के परिश्रम का अद्भुत फल है। यदि आपको सादी भाषा के सौन्दर्य्य का शौक है, स्त्री जाति की अद्वितीय आकाशभेदी शक्ति देखने का चाव है, अथवा आप हिन्दू जाति के अपनी माताओं, बहिनों, बेटियों पर अकथनीय अत्याचारों से परिचित होना चाहते हैं या विवाह की प्रचलित प्रथा की बुराइयां देखना चाहते हैं तो भागवन्ती पढ़िये। इस उपन्यास का प्रत्येक परिच्छेद प्रत्येक परिच्छेद का प्रत्येक पृष्ट, और प्रत्येक पृष्ट की प्रत्येक पंक्ति हृदय को भेदने वाली है। यह उपन्यास ऐसा चित्ताकर्षक है, कि पढ़ते समय खाना पीना सब भूल जाताहै। पाप और पुण्य के दो मार्ग बड़ी खूबी से दिखाये गये हैं। हर एक स्त्री पुरुष को इस की एक २ कापी मंगवानी चाहिये।

मूल्य १॥) रेशमी जिल्द २) रु०

नारायण दत्त ऐण्ड संज़

बुकसेलरज़ लोहारी गेट,
लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओ३म्

वैदिक धर्म के अमूल्य ग्रन्थ।

[१] योग-साधन-माला।

(१) संध्योपासना। योग की रीति से संध्या करने की पद्धति। मूल्य १॥) डेढ़ रु०

(२) संध्या का अनुष्ठान। मूल्य ॥) आठ आने

(३) वैदिक-प्राण-विद्या। प्राणायामपूर्वार्ध। मूल्य १) एक रु०

(४) ब्रह्मचर्य। सचित्र। वीर्यरक्षण के उपाय। मूल्य १।) सवा रु०।

[२] उपनिषद्-ग्रन्थ-माला।

(१) "ईश" उपनिषद् की व्याख्या। मूल्य ॥=) चौदह आने।

(२) "केन" उपनिषद् की व्याख्या। मूल्य १।) सवा रु०।

[३] आगम-निबंध-माला।

(१) वैदिक-राज्य-पद्धति। मू०।-) पांच आने

(२) मानवी-आयुष्य। मूल्य ।) चार आने

(३) वैदिक सभ्यता। मूल्य =) तीन आने

(४) वैदिक-चिकित्सा-शास्त्र। मूल्य ।) चार आने।

(५) वैदिक स्वराज्य की महिमा। मूल्य ॥) आठ आने।

(६) वैदिक सर्पविद्या। मूल्य ॥) आठ आने

(७) मृत्यु को दूर करने का उपाय। मूल्य ॥) आठ आने।

(८) वेद में चरखा। मूल्य ॥) आठ आने

(९) शिवसंकल्प का विजय। मूल्य ।॥) बारह आने।

(१०) वैदिक धर्म की विशेषता। मूल्य ॥) आठ आने।

[४] स्वयं-शिक्षक-माला।

(१) वेद का स्वयं शिक्षक। प्रथम भाग। मूल्य १॥) डेढ रु०।

(२) वेद का स्वयंशिक्षक। द्वितीय भाग मूल्य १॥) डेढ रु०।

[५] देवता-परिचय-ग्रन्थ-माला।

(१) रुद्रदेवता का परिचय। मू०॥) आठआने

(२) ऋग्वेद में रुद्र देवता। मू०॥=) दसआने

(३) ३३देवताओंका विचार मू०=) तीनआने

(४) देवता-विचार। मूल्य =) तीन आने।

[६] धर्म-शिक्षा के ग्रन्थ।

(१) बालकों की धर्म-शिक्षा। प्रथम भाग मूल्य -) एक आना।

(२) बालकों की धर्म-शिक्षा। द्वितीय भाग मूल्य =) दो आने।

(३) वैदिक-पाठ-माला। प्रथम पुस्तक। मूल्य =) तीन आने।

[७] यजुर्वेद का स्वाध्याय।

(१) यजु०अ० ३०। नरमेध। मू० १) एक रु०

(२) यजु०अ० ३२। एक ईश्वर उपासना। मूल्य ॥) आठ आने।

(३) यजु० अ० ३६। शांति का उपाय। मूल्य ॥) आठ आने।

[८] ब्राह्मण-बोध-माला।

(१) शतपथबोधामृत। मूल्य ।) चार आने

[७] वैदिक धर्म।

यह सचित्र मासिक पत्र वैदिक धर्म के तत्व ज्ञान का विचार और प्रचार कर रहा है। योग साधन विषयक लेख भी सब को करने योग्य सुगम रीति के साथ इसमें प्रसिद्ध होते हैं। वार्षिक मूल्य ३॥) साढे तीन रु० है। शीघ्र मंगवाइये।

मन्त्री—स्वाध्याय मंडल, औंध (जि० सातारा)।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

कन्याओं व स्त्रियों के लिये अपूर्व सचित्र पुस्तक

जल्द मंगाइये।

आर्ष पाठावलिः

प्रथम भाग।

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित

यह पूना चित्रशाला प्रेस में छपवाया गया है। इस में महर्षि दयानन्द जी के बचनों और उपदेशों को बच्चों के लिये उपयोगी छोटे २ पाठों की माला में परोया गया है। चित्र भी बड़े खूबसूरत और मनोरंजक हैं। प्रथम चित्र रंगीन है अध्यापिका बच्चों को 'ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्या प्रेमी शूद्र और पोप की बहस का चित्र भी बड़ा रोचक है। प्रत्येक पाठ में चित्र हैं और पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं, कागज़ भी बढ़िया है, इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। सजिल्द का मूल्य ॥) बिना जिल्द ॥), इकट्ठा लेने वाले दुकानदारों को १०० जिल्द पुस्तकें ६२॥) नकद पर मिलेंगी और बगैर जिल्द की १०० पुस्तकें ५०) नकद पर। डाक व्यय अलग। शीघ्र खरीदो।

यह तथा अन्य वैदिक धर्म्म सम्बन्धी पुस्तकें मिलने का पता—

पं० वजीर चन्द शर्म्मा अध्यक्ष,

वैदिक पुस्तकालय, लाहौर रोड़,

लाहौर।

पान शृंगार गोली

यह गोलियां शुद्ध देशी मसालों से तय्यार की गई हैं। विदेशीय जीनतान, टिन्चो, सेन सेनगम, शेसीनतान से कहीं बढ़कर अच्छी हैं। पान के साथ खाने से अत्यन्त आनन्द आता है; मुंह की दुर्गन्ध दूर होती है तथा खांसी को फायदा भी है। अतएव मंगाकर परीक्षा करिये। ३५ गोली फी शी० ⁄) ६५ गोली ⁄, २८० गोली ॥) ६०० गोली १) है। थोक खरीदार व्योपारियों को ३०) रु० से भेजी जावेगी।

पान का खुशबूदार मसाला

बाजार से पान लगवाकर खाने में वास्तविक आनन्द नहीं आता। अतएव हमने नए ढंग और युक्तियों से यह मसाला तयार किया है। पान पर केवल ६ मासा रखकर खाइये। प्रत्येक समय ताज़े और सुगन्धित पान जब जी चाहे तब मसाला डाल कर खाइये। दाम फी डिब्बा ⁄) बड़ा डिब्बा ॥⁄)

और भी मंगाइये।

इत्र केवड़ा, गुलाब, हिना, मोतिया, खस, पानड़ी, चम्पा, मोलश्री वगैरः दर १) फी तोला से १०) रु० तक। तेल बेला, चमेली, सन्तरा, मसाला, इलायची दर २) सेर से ८) रु० सेर तक। तमाखूपत्ती १॥) २) ४) सेर दाना तमाखू २॥) ३) ४) ८) १६) रु० सेर तक है।

पता—देवीप्रसाद श्यामलाल अत्तर वाला,

पो० कन्नौज।

यू. पी.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुख्य पत्र ।

॥ आर्यमित्र ॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति वृहस्पतिवार को आगरा से प्रकाशित होता है ।

सम्पादकः—

पण्डित हरिशङ्कर जी शर्मा "कविरत्न"

यदि आप वैदिकधर्म प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियें पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्य जगत् के समाचार जानना चाहते तो शीघ्र ही —

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये,

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है ।

पता—आर्यमित्र आगरा ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१ अमृतधारा ।

जगत्प्रसिद्ध औषधि। कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की ईजाद। एक ही ओषधि प्रायः सर्व रोगों को यथावसर खाने व लगाने से दूर करती है। ज्वर, खांसी, इन्फ्लुएंज़ा, प्लेग, निमोनिया, हैजा, अजीर्ण, नजला, जुकाम, सर्प, बिच्छू आदि के डंक, वात, पित्त, कफ के रोग। शिर, कान, नाक, दन्त, पेट, जोड़ चोटादि की पीड़ायें सब तुरन्त नष्ट होती हैं। सविस्तर वर्णन के वास्ते 'अमृत' पुस्तक मुफ्त मँगावें। मूल्य २॥) अर्धशीशी १।) नमूना ॥) अमृतधारा को मिला कर और अद्भुत आषधियां बनाई गई हैं। सोप, मरहम, और मोठी टिकियां

२ अमृतधारा मरहम ।

समस्त चर्मरोगों की अद्वितीय ओषधि है। सब प्रकार के घाव, चोट, रगड़, फुन्सी, दद्रु, चम्बल, एगज़ीमा, खाज, छपाकी, छाले, हाथ-पांव का फटना, उपदंश के घाव, अर्शमस्से, मच्छर भिड़ आदि के डंक, आग उष्ण जल व तेजाब आदि से जलना, सब इससे दूर हो जाते हैं। बड़े से बड़े गहरे घाव इतनी जल्दी भरने शुरू हो जाते हैं, कि बड़े बड़े डाक्टर चकित रहते हैं। इसको मलने से पट्ठों का दर्द दूर हो जाता है। तात्पर्य यह है कि यह एक अद्भुत मरहम है। मूल्य १) प्रति शीशी।

४

चार

३ अमृतधारा सोप ।

यह अद्वितीय है, क्योंकि यह साबुन रोज के बरतने के वास्ते अति उत्तम है, और साथ ही यह चर्मज रोगों को भी गुणकारी है। पित्ती खुजली, दाद, चम्बल, मुखछाई, मुहांसा आदि शीघ्र दूर करता है। मैल भी दूसरों सोपों से अधिक उतारता है। सुगन्धि भी बडी अच्छी है। मूल्य ।॥≠) प्रति डब्बा। १ टिकिया ।-)

४ अमृतधारा की मीठी टिकियां ।

कई मनुष्यों (विशेष कर स्त्रियों) के लिए ओषधि खाना कठिन होता है। बालक को भी ओषधि देना कठिन है। इसी वास्ते यह मीठी टिकिया तैयार की गई है, जो कि मिठाई के तौर पर बालक तक भी बड़े आनन्द से खाते हैं। कई प्रकार की विलायती गोलियां और टिकियों से अधिक लाभकारी हैं।

बालकों को शूल, दस्त, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, पसली आदि सब रोगों में दे सकते हैं।)

मूल्य १०० टिकिया केवल।)

पत्र या तार का पताः—

अमृतधारा ९, लाहौर

विज्ञापकः—

मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमृतधारा सड़क, अमृतधारा पोस्ट, लाहौर ।

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य।

कोषकी कथा—सचित्र पुस्तक में Cell का सरलभाषा में पूर्ण परिचय दिया है। प्राणिशास्त्र के विषय में हिन्दी में ऐसी सरल पुस्तक निकलना अच्छीबात है। यह पुस्तक प्राणिशास्त्र) के छात्रों के लिए बड़ी सहायक होगी। मू०॥)

श्रीहर्ष—पुस्तक के पढ़ने से मालूम हो जाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मालूम होती हैं। बंसखेर तथा मधुवन के ताम्रपत्र तथा श्रीहर्ष के हस्ताक्षर इसकी उपयोगिता को बढ़ाते हैं। बढ़िया छपी पुस्तकहै मू०॥

अवताररहस्य—अर्थात् भारतीय तथा युरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समाक्षा इस पुस्तक में बड़ी खोज तथा परिश्रम से तुलनात्मक विवेचन करते हुए अवतारों का रहस्य समझाया है जो प्रत्येक जिज्ञासुको पढ़ना चाहिए। इसमें २५ प्रकरण हैं तथा भाषा शास्त्र की उत्पत्ति, आर्य्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, युगलक्षण इत्यादि विषयोंपर विवेचन किया है। सजिल्द बढ़िया छपी पुस्तक मू० ॥≠)

तुलनात्मक धर्म्मविचार मू० १) गुजराती हिन्दी शब्दकोष मू० ३)। आठ आने जमा करने वालों को इन स्वल्प मूल्य की पुस्तकों पर दो आना रुपया कमीशन दिया जायगा। अतएव स्थायी ग्राहक बनकर लाभ उठाएं। इन मालाअ में समुद्रगुप्त, चीनकी संस्कृति, नीति विवेच इत्यादि २ पुस्तकें छपरही हैं।

मुफ्त—यदि आप इन पुस्तकों को विनामूल्य लेना चाहें तो दो पैसे के टिकट भेज हमसे नियम मंगालीजिए।

अन्यपुस्तकें।

सृष्टिविज्ञान २ शरीरविज्ञान ।≡) ब्रह्मयज्ञ ॥। गीतासार ।≠ त्रिदेवनिरूपण ।-) आत्मस्थान विज्ञान -) दुर्गा ।≠) प्रेमपूर्णिमा २) इनके अतिरिक्त सब प्रकार की पुस्तकें तथा मासिक सूची-पत्र मिलने का पता **जयदेवब्रदर्स बड़ोदा**

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ४] श्रावण १९८०—अगस्त १९२३ [खण्ड ४, संख्या ४

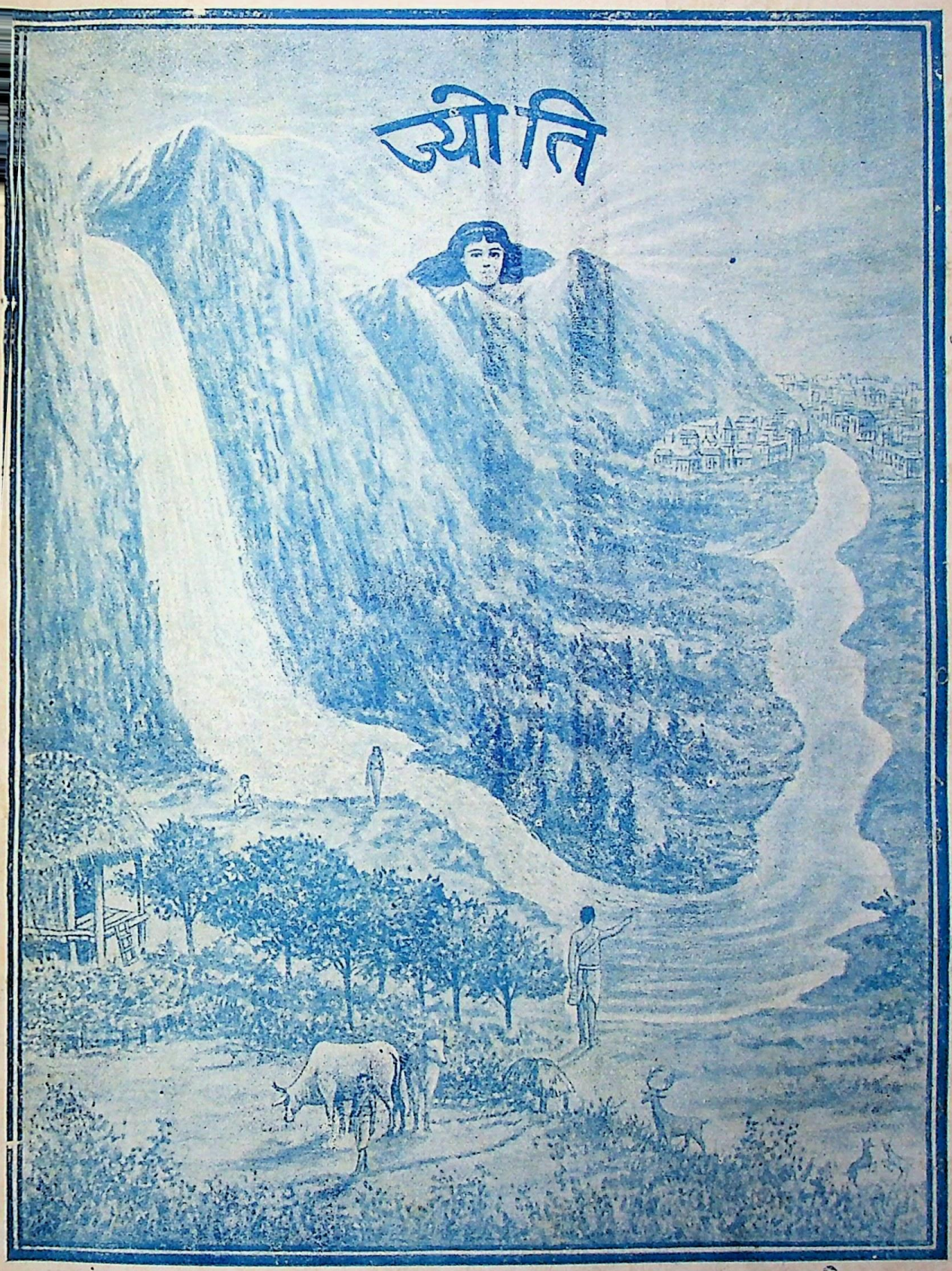

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१—आत्म-दशा—(कविता) लेखक—"एक राष्ट्रीय आत्मा"	१६६
२—शिक्षा और वेद	१७०
३—भिन्न भिन्न देशों और समयों में स्त्रियों की स्थिति, ले०—आर्य्य महिला"	
४—हिन्दुओ,उठो (कविता) लेखक—श्रीयुत हरिशङ्कर शर्मा सम्पादक आर्य्यमित्र	१८०
५—पाम्पी आई—लेखिका—श्रीमती ओ३म्-वती देवी सह० सम्पादिका ज्योति	१८०
६—स्मरण (कविता) लेखक—श्री० जगन्नारायण देव शर्म्मा, कवि पुष्कर	१८७
७—पति का घर—ले०—श्रीमती शारदा कुमारी गोभिलीय	१८८
८—ईश प्रार्थना,लेखक—श्रीयुत"श्रीनिधि"	११६
६—कवि और पण्डित, लेखक—श्रीयुत चमूपति जी एम० ए० आर्य्य सेवक	१६२
१०—कुसुमोद्यान ।	१६४
११—वैज्ञानिक संसार ।	१६६
१२—हमारी मञ्जूषा ।	१६६
१३—वनिता विनोद ।	२०३
१४—विचार प्रवाह ।	२१५

———

ग्राहकों के लियेः—

(१) ज्योति प्रति अंगरेजी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इसका वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता नमूना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि आर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आना चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुं तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पत न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूच अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिल चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मेनेज "ज्योति" लाहौर के पते से आने चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्योति

भारत का राष्ट्रीय झण्डा।

Amrit Electric Press, LAHORE.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप को ज्योति क्यों पढ़नी चाहिये ?

१. ज्योति उच्च कोटि की सब से सस्ती सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

२. ज्योति पंजाब प्रान्त में एक मात्र उच्च कोटि की मासिक पत्रिका है जिस में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक इत्यादि सभी विषयों पर लेख, कविता कहानियां इत्यादि रहते हैं।

३. ज्योति सारे भारत वर्ष में आर्य समाज की एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है जो कि ऋषि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक धर्म का निर्भीकता से प्रचार करती है।

४. सारे हिन्दी संसार में ज्योति ही एक मात्र मासिक पत्रिका है जिस के पन्ने भारत के वर्तमान काल से सम्बन्ध रखने वाले राजनीतिक और धर्म सम्बन्धी लेखों के लिये सदा खुले रहते हैं; केवल एक ही शर्त है कि ऐसे लेखों का उद्देश्य न्याय परता और आपस के भेद भाव को हटा कर सत्य का खोज हो। हमारी भाषा में राजनैतिक पत्रिकायें हैं, धार्मिक पत्रिकायें हैं और ऐसी भी पत्रिकायें हैं (अधिकांश उच्च कोटि की हिन्दी पत्रिकायें ऐसी ही हैं) जो कि इन दोनों विषयों से को सों दूर रह कर समाज, साहित्य, विज्ञान इत्यादि अन्य विषयों पर ही अपना ध्यान देती हैं। परन्तु यह ज्योति की ही विशेषता है कि यह अपने पाठकों के लिये प्रत्येक विषय पर सरस, भावपूर्ण और खोज द्वारा लिखे हुये लेख उपस्थित करती है।

५ ज्योति की एक और विशेषता है। यह केवल पुरुषों की ही आवश्यक्ताओं को पूरा नहीं करती परन्तु स्त्रियों की आवश्यक्ताओं की ओर भी पूरा पूरा ध्यान देती हैं। जहां इस में ऐसे लेख रहते हैं जो कि स्त्री, पुरुष दोनों के काम के हों, वहां वनिता विनोद शीर्षक से देवियों और कन्याओं के लिये अलग ही एक लेख माला रहती है जिस में उनेक हित के अनेक विषयों पर सरल लेख रहते हैं। इस के कला कौशल सम्बन्धी लेख जिन में कि क्रोशिया, सलाई इत्यादि द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तु जैसा कि लेस, फीते, मौज़े, जूते, टोपियां, कुर्ते, वनियाइन, स्वैटर इत्यादि बनाने की सुगम रीति रहती है, इस लेखमाला की एक ऐसी विशेषता है जो कि भारत वर्ष के हिन्दी तो क्या अन्य किसी भी भाषा के पत्र में नहीं मिलती। यह प्रबन्ध में ऐसी अनेक बातों की शिक्षा रहती हैं जितनी कि प्रत्येक गृहस्थी और बाल बच्चे वाली स्त्री को हर रोज़ आवश्यक्ता रहती है। स्वादिष्ट मिठाइयां और भोजन बनाने की विस्तृत और स्वयं आज़मायी हुई विधि भी रहती हैं। इसके अतिरिक्त स्त्रियों के लाभकारी अनेक विषयों पर सरल लेख और कविता रहती हैं। हमारा विचार वनिता बिनोद को बढ़ा कर कितने ही और भी नये नये विषयों पर मनोहर चित्ताकर्षक लेख देने का है जिन को आशा है हमारी बहिनें अवश्य पसन्द करेंगी।

अतः प्रत्येक हिन्दी प्रेमी भाई और बहिन को ऐसी सस्ती और सर्वांग-सुन्दर पत्रिका का अवश्य ग्राहक बनना चाहिये। मैनेजर ज्योति—ग्वाल मण्डी, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

ज्योति के प्रेमियों को कला कौमुदी मुफ्त,

कला कौमुदी

बढ़िया आर्ट पेपर पर छपी सचित्र शिल्प सम्बन्धी पुस्तकें

(शीघ्र प्रकाशित होंगी)

कला कौमुदी—वक्र सूची (क्रोशिया) भाग,

कला कौमुदी—वक्र सूची (क्रोशिया) भाग,

कला कौमुदी—दीर्घ सूची (सलाई) भाग,

ज्योति में जो प्रतिमास कला कौशल सम्बन्धी लेख निकलते रहे हैं उन्हें स्त्री जगत में बड़ा पसन्द किया गया है। उन की उपयोगिता और नारी संसार में इस चाह को देख कर हम ने इन्हें पुस्तक रूप में छपवाने का निश्चय किया है। प्रति मास संकेत देकर अथवा प्रारम्भिक सरल सरल नमूने देकर समझाना सम्भव नहीं, अतः अपरिचित बनाने वालों को उत्तम उत्तम नमूने बनाने में कष्ट होता है। इसी लिये इस कौमुदी में पचास से ऊपर प्रारम्भिक सचित्र नमूने देकर क्रोशिये तथा सलाई के काम को अति सरल और सब के समझने योग्य बना दिया है। ज्योति में प्रकाशित तथा और कितने ही नवीन नवीन पचास के लग भग सुन्दर, मनोहर और नमूने दिये गये हैं।

यूं तो कई बार शिल्प सम्बन्धी पुस्तकें लिखने का प्रयास किया गया है परन्तु नारी जगत में इस को विशेष सफलता नहीं हुई। इस का कारण यही है कि इन में क्रमानुगत रीति द्वारा सरल से कठिन तक पहुंचने के लिये कोई सुविधा न थी। इस पुस्तक में इस कमी की ओर पूरा २ ध्यान दिया गया है। इस के अतिरिक्त जो नमूने दिये गये हैं वह इतने सुन्दर, मनोहर, अद्भुत और आवश्यक हैं कि जिन्हें देख कर प्रत्येक कन्या व स्त्री का बनाने को चित्त चाहेगा। गर्मी सरदी बरसात हर ऋतु के काम की चीज़ें दी गयी हैं, बच्चों के बिब, बनियान, वास्कट, मोज़े इत्यादि, बड़े पुरुषों के लिये स्वेटर, बड़े तथा छोटे मोज़े कोट इत्यादि और स्त्रियों के लिये जाकट, बनयाइन, चौड़ी पतली लेसें, महीन २ कालर इत्यादि इत्यादि घर बैठे बिना किसी की सहायता के बनाना सुगम हो गया है।

पुस्तक शीघ्र छप कर प्रकाशित होगी। मूल्य प्रत्येक भाग का १) या १।) के लग भग होगा। तीनों भाग इकट्ठे मंगवाने वालों तथा पेशगी आर्डर भेजने वालों को विशेष रियायत होगी।

प्रकाशक—कला कौमुदी,

ज्योति कार्यालय लाहौर।

हम प्रकाशक कला कौमुदी के कृतज्ञ हैं जिन्हों ने प्रेमवश हमें उपरोक्त रियायत देने में सहायता का वचन दिया है। आर्डर शीघ्र भेजिये।

मैनेजर ज्योति, लाहौर।

ज्योति के पांच ग्राहक बनाने वाले सज्जनों को कला कौमुदी (तीनों भाग) मुफ्त मिलेगी ॥ मनेजर ज्योति, लाहौर।

ज्योति के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जनों को कला कौमुदी तीनों भाग मुफ्त तथा ज्योति ४॥) के स्थान में ३) मिलेगी ॥ मैनेजर ज्योति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष ४ | श्रावण १९८०—अगस्त १९२३ | संख्या ४

आत्म-दशा

लेखक—"एक राष्ट्रीय आत्मा"

लूट रहे हैं अमित लुटेरे।
वेश बनाकर भांति भांति के रहते निशि दिन घर घेरे।

(१)

फांस रहे हैं छल से, बल से
अपने कर कौशल से, कल से
प्रान्त प्रान्त में नगर नगर में,
डगर डगर में डाले डेरे।
लूट रहे हैं अमित लुटेरे॥

(२)

द्वार सदन के खुले हुए हैं
दस्यु दमन पर तुले हुए हैं
और उन्हीं में मिले हुए हैं,
कतिपय बन्धुविभीषण मेरे
लूट रहे हैं अमित लुटेरे॥

(३)

यहां संगठन का अभाव है
महा मोह-मद का प्रभाव है
सोये हैं प्रगाढ़ निद्रा में,
प्रिय जन, पुर जन-स्वजन घनेरे।
लूट रहे हैं अमित लुटेरे॥

(४)

भाये भूरि प्रलोभन उनको
हम से नहीं प्रयोजन उनको
सुन्दर रूप रंग सज धज वश
कुछ जन बने ठगों के चेरे
लूट रहे हैं अमित लुटेरे॥

(५)

ऐसा माया जाल रचा है
पूछ रहा हूं, कौन बचा है?
देखें दीन दयालु द्रवित हो,
कब हम दीनों के दिन फेरे।
लूट रहे हैं अमित लुटेरे॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिक्षा और वेद ।

ओ३म् अदितिष्ट्वा देवी विश्व देव्यावती पृथिव्याःसधस्थे अङ्गिरस्वत् खनत्वव्वट देवानां त्वा पत्नीर्देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत् दधतूखे । धिषणास्त्वा देवी विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वदभीन्धतामुखे वरूत्रीष्ट्वा देवी विश्वदेव्यावतीःपृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वच्छ्रपयन्तूखेऽग्नास्त्वा देवी विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे जनयस्त्वाच्छिन्नपत्रा देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे ।

यजु० अ० ११ । मंत्र ६१ ।

पदार्थः—हे (अवट) बुराई और निन्दा रहित बालक (विश्वदेव्यावती) सम्पूर्ण विद्वानों में प्रशस्त ज्ञानवाली (अदितिः) अखण्ड विद्या पढ़ाने हारी (देवी) विद्वान् स्त्री (पृथिव्याः) भूमि के (सधस्थे) एक शुभ स्थान में (त्वा) तुझको (अङ्गिरस्वत्) अग्नि के समान (खनतु) जैसे भूमि को खोदकर कूप जल निष्पन्न करते हैं वैसे विद्यायुक्त करे । हे (उखे) ज्ञानयुक्त कुमारी (देवानाम्) विद्वानों की (पत्नीः) स्त्री जो (विश्वदेव्यावतीः) सम्पूर्ण विद्वानों में अधिक विद्यायुक्त (देवीः) विदुषी (पृथिव्याः) पृथिवी के (सधस्थे) एक स्थान में (अङ्गिरस्वत्) प्राण के समान (त्वा) तुझको (दधतु) धारण करें । हे (उखे) विज्ञान की इच्छा करने वाली (विश्वदेव्यावतीः) सब विद्वानों में उत्तम (धिषणाः) प्रशंसित वाणी युक्त बुद्धिमती (देवीः) विद्यायुक्त स्त्री लोग (पृथिव्याः) पृथिवी के (सधस्थे) एक स्थान में (त्वा) तुझको (अङ्गिरस्वत्) प्राण के समान (अभीन्धताम्) प्रदीप्त करें । हे (उखे) अन्न आदि पकाने की बटलोई के समान विद्या को धारण करने हारी कन्ये (विश्वदेव्यावतीः) उत्तम विदुषी (वरूत्रीः) विद्या ग्रहण करने के लिये स्वीकार करने योग्य (देवीः) रूपवती स्त्री लोग (पृथिव्याः) भूमि के (सधस्थे) एक शुद्ध स्थान में (त्वा) तुझको (अङ्गिरस्वत्) सूर्य्य के तुल्य (श्रपयन्तु) शुद्ध तेजस्विनी करें। हे (उखे) ज्ञान चाहनेहारी कुमारी (विश्वदेव्यावतीः) बहुत विद्यावानों में उत्तम (देवीः) शुद्ध विद्या से युक्त (ग्नाः) वेदवाणी को जानने वाली स्त्री लोग (पृथिव्याः) भूमि के (सधस्थे) एक उत्तम स्थान में (त्वा) तुझको (अङ्गिरस्वत्) विजुली के तुल्य (पचन्तु) दृढ़ बलधारिणी करें । हे (उखे) ज्ञान की इच्छा रखने वाली कुमारी (विश्वदेव्यावतीः) उत्तम विद्या पढ़ी (अच्छिन्नपत्राः) अखण्डित नवीन शुद्ध वस्त्रों को धारने हारी स्त्री लोग (पृथिव्याः) पृथिवी के (सधस्थे) उत्तम प्रदेश में (त्वा) तुझको (अङ्गिरस्वत्) ओषधियों के रसके समान (पचन्तु) संस्कार युक्त करें । हे कुमारी कन्ये तू इन पूर्वोक्त सब स्त्रियों से ब्रह्मचर्य्य के साथ विद्या ग्रहण कर ।

आजकल भारतवर्ष में हम देखते हैं कि शिक्षण का कार्य्य इतनी साधारण सी बात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मानी जाती है कि लोग अपने दूध मुंहे बालक बालिकाओं को ऐसे अनाड़ी अध्यापकों या अध्यापिकाओं के हाथों में सौंप देते हैं जिनको शिक्षण का कार्य्य आता भी नहीं, न उन में पूर्ण योग्यता ही होती है, अखण्ड विद्याओं के ज्ञान का तो कहना ही क्या है—न धर्म का ज्ञान होता है न उनके आचार विचार ही शुद्ध पवित्र होते हैं। प्रायः समझा यही जाता है कि विद्या सीखने और धर्माधर्म, आचार विचार में कोई सम्बन्ध नहीं है। वह समझते हैं कि छोटे से बालक बालिकाओं को कोई भी छोटा मास्टर पढ़ा सक्ता है। पहिली दूसरी कक्षाओं में पढ़ाने के लिये बड़े योग्य अध्यापक और अध्यापिकाओं की क्या आवश्यकता है? इसी लिये हमारे यहां के सभी प्राइमरी स्कूलों में कितने कम योग्यता के शिक्षक रखे जाते हैं। (अ) और (ब) कक्षाओं में तो प्रायः ऐसी अध्यापिकायें होती हैं जिन्हें स्वयं भी सुन्दर अक्षर लिखने नहीं आते न उनका उच्चारण ही शुद्ध होता है और सिखाने के ढंग की तो बात ही निराली है। हमारी वर्त्तमान शिक्षाप्रणाली से ही असन्तुष्ट होकर कई पाश्चात्य सभ्यता में रंगे हुए सज्जन अपने दूध मुंहे बालक बालिकाओं को कानवेन्ट स्कूलों तथा ऐसी ही अन्य संस्थाओं में भेज देते हैं। उनका यह कहना है कि चूंकि हमारे शिक्षणालयों में शिक्षक उत्तम नहीं होते इसलिये छोटे २ बच्चों को किंडर गार्टन के अनुसार शिक्षा न मिलने से प्रारम्भ ही से जो उनकी शिक्षा बिगड़ जाती है तो फिर ठीक नहीं होती। उनको यह पता नहीं होता कि सीखने और सिखाने वालों का इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि शिक्षक का प्रभाव हर प्रकार से बच्चों पर पड़ता है और वे शिक्षक के आचार व्यवहार की बड़ी जल्दी नकल करते हैं अतः यह कहना कि "हम अपने बच्चों को केवल थोड़े दिनों के लिये कानवेण्ट इत्यादि स्कूलों में भेज देते हैं जिससे कि उनकी प्रारम्भिक शिक्षा ठीक हो जावे, हम तो केवल पुस्तक ज्ञान के लिये ही भेजते हैं उन अध्यापक अध्यापिकाओं के आचार विचार से हमें क्या सम्बन्ध?" निरी मूर्खता की बात है। हमारी एक परिचिता स्त्री ने अपने किसी सम्बन्धी की बात करते २ कहा कि उन्होंने अपनी एक १३ वर्ष और एक छै वर्ष की कन्या को कानवेन्ट स्कूल में केवल डेढ़ वर्ष के लिये रख दिया है कि बड़ी लड़की को कुछ गृहस्थ सम्बन्धी कार्य्यों की शिक्षा मिल जाय और छोटी को प्रारम्भिक शिक्षा उत्तम मिल जावे। डेढ़ साल के बाद तो निकाल ही लेंगे इतने समय में उनका क्या प्रभाव पड़ेगा? हमें इन भोलेपन की बातों पर हंसी आती है। एक नहीं हमारे बहुतेरे भारतीय इसी खयाल के हो रहे हैं। हमारे देश के बालक बालिकाओं के लिये एक तरफ कूआं है दूसरी तरफ खायी! अगर पुराने खयालात के मास्टर लोग तथा पण्डित तो बालक बालिकाओं को मार और धमकी देकर जबर्दस्ती रटवा २ कर उनके दिमागों में विद्या ढूंसते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि बालक बालिकाओं की अपनी निज शक्तियों का विकास नहीं होने पाता, वह शक्तियां अन्दर ही अन्दर घुट कर मर जाती हैं और बच्चे रट्टू तोते की भांति ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, परीक्षोत्तीर्ण भी हो जाते हैं परन्तु उन्हीं पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य साधारण ज्ञान में वह कोरे ही रह जाते हैं। दूसरी तरफ विदेशी नर व नारियों के चलाये हुए इन कानवेन्ट स्कूलों में यद्यपि किंडर गार्टन आदि तरीके हैं तो उन शिक्षकों के आचार विचार धर्म व्यव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हार हमारी सभ्यता से भिन्न होने से और उन का उद्देश्य भारतीयों को ईसाई बनाने के अतिरिक्त और कुछ न होने से उधर से भी हमारे बालक बालिकाओं को शिक्षा ठीक नहीं मिलती।

शिक्षा के क्षेत्र में क्या सर्कार, क्या भारतीय भिन्न २ मतावलम्बी धर्म संस्थायें सभी अपूर्ण रूप से कार्य्य कर रहे हैं। आर्य्य समाजी स्कूलों सनातनधर्मी स्कूलों तथा सर्कारी स्कूलों के ढर्रे एक ही हैं सिर्फ़ नाम का ही भेद है। आर्य्य समाज के शिक्षणालय भी, चाहे उनके नाम कुछ रख लो-वैदिक शिक्षा प्रणाली के अनुसार न चलाये जा सकने के कारण उन फलों को नहीं दे रहे हैं जो उन्हें देना चाहिये था। इस का कारण यही है कि उपरोक्त वेद के आदेश को आर्य्य समाज ने अभी तक समझा ही नहीं और उसके पास साधन भी अधूरे हैं॥

इस वेद मंत्र में मुख्यतया स्त्री-शिक्षा का वर्णन है परन्तु प्रारम्भ में अवट शब्द से बालक बालिकायें दोनों की शिक्षा का वर्णन कर दिया गया है। वेद भगवान् की आज्ञा यह प्रतीत होती है कि दूध मुंहे बच्चों को जब कि उन्हें बुराई भलाई का भान भी नहीं है और उनकी शक्तियां कोमल और छिपी हुई हैं—जो शिक्षा देने वाली हों वह स्त्रियां ही हों और उनकी योग्यता विद्वान् पुरुषों से घट कर न हो और सारी विद्याओं का ज्ञान भी उन्हें हो। यह देवियां एकान्त शुभ स्थानमें बच्चों को ले जाकर उनको शिक्षित करके उनके बीजरूप में वर्त्तमान शुभगुणों का विकास करें और अशुभ गुणों का दमन करें। यहां पर (खनतु) शब्द आया है जिस से यह भाव प्रदर्शित है कि उन बच्चों की शक्तियां जैसे पृथिवी में जल गुप्त है उसी भांति गहराई में गुप्त हैं और जैसे कुंवें खोदने में बड़े कौशल और परिश्रम बर्ते जाते हैं उसी प्रकार इन बच्चों के शिक्षण में भी बड़े कौशल की और अविश्रान्त परिश्रम की जरूरत है जो देवियां ही कर सकी हैं॥

इस मंत्र के शेष भाग में शिक्षिका देवियों के गुणों पर बल दिया गया है कि वह (विश्वदेव्यावती) अर्थात् सम्पूर्ण विद्वानों में अधिक विद्यावाली हों उनके पति विद्वान् अवश्य हों परन्तु वह स्वय भी विदुषी (धिषणा) प्रशंसित वाणी युक्त हों अर्थात् उनकी आवाज़ भी अच्छी हो, मधुरा हों और शिक्षाप्रद उपदेश देने वाली हों। फिर (वरूत्री) शब्द आया है जिसके अर्थ ऋषि ने किये हैं 'विद्या ग्रहण करने के लिये स्वीकार करने योग्य' अर्थात् यह सम्भव हो सक्ता है कि कोई देवी स्वयं विदुषी भी हो और उत्तम भाषण भी जानती हो परन्तु उसे या तो शिक्षा देना न आता हो दूसरे शब्दों में ट्रेनिंग न पास किया हो, अथवा कोई दोष उसमें हो जिस से वह स्वीकार करने के योग्य न हो, इस लिये वेद भगवान् कहते हैं कि वह देवी (वरूत्री) भी हो। फिर कहते हैं कि (ग्नाः) वेदवाणी को जानने वाली स्त्री हो, (अच्छिन्नपत्राः) अखण्डित नवीन शुद्ध वस्त्रों को धारने हारी हो और (अंगिरस्वत् पचन्तु) ओषधियों के रसके समान संस्कार युक्त करने की योग्यता रखती हो, अभिप्राय यह कि शुद्धता स्वच्छता इत्यादि गुणों से भी युक्त हों। इन थोड़े से शब्दों और विशेषणों में स्त्रियोपयोगी शिक्षा का सारा सार भरा हुआ है। जहां तक हमारी तुच्छ बुद्धि पहुंचती है हम को इस मंत्र में बालक बालिकाओं की शिक्षा का पूरा २ ढंग दीख पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भिक शिक्षा लड़कों और लड़कियों दोनों की विदुषी स्त्रियों के हाथ में रहे। उसके पश्चात् माध्यमिक शिक्षा लड़कों को पुरुष और लड़कियों को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियां देवें परन्तु स्त्री शिक्षा का वर्णन करते हुए यह बतलाया गया है कि विद्वानों की पत्नियां जो स्वयं भी सम्पूर्ण ज्ञानयुक्त हों वह ही अर्थात् गृहस्थी या वानप्रस्थी देवियां ही लड़कियों की शिक्षा को भली भांति कर सक्ती हैं क्योंकि उन्हें संसार का ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वह मानव स्वभाव को भली प्रकार जानती रहती हैं। विद्यास्नातिका ब्रह्मचारिणी देवियां जब तक संसार में कुछ काल विचरें नहीं तब तक शिक्षिका बनने योग्य नहीं होतीं। दूसरी बात जिस पर इसमें बल दिया गया है वह यह है कि लड़कियों के लिये सब विद्याओं के सीखने का प्रबन्ध होना चाहिये और प्रत्येक विषय की शिक्षिकायें हों उनके लिये आर्ट्स कालेज, थिआलोजी का कालेज, मेडिकल कालेज तथा साइन्स की शिक्षा के लिये रस-क्रिया-भवन इत्यादि भी हों और उन्हें विज्ञान, पाक-शास्त्र, अध्यात्मविद्या, शिल्पकला और रसायन शास्त्र तथा रोगी-सेवा परिचर्य्या इत्यादि की भी शिक्षा देनी चहिये। तीसरी बात जो इन शब्दों से निकलती है वह यह है कि शिक्षणालय शुद्ध एकान्त प्रदेश में हों जहां पर सावधान चित्त से पठन पाठन का कार्य्य हो सके और कोई विघ्न बाधा उपस्थित न हो सके।

भगवान् ऋषि दयानन्दजी ने अपनी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को इसी आधार पर निर्धारित किया होगा परन्तु आर्य्य समाज के पास पर्य्याप्त साधन न होने के कारण इन बातों पर उचित ध्यान नहीं दिया गया और समाज की पाठशालायें इस आदर्श से बिलकुल ही दूर रही हैं। यद्यपि अभी तक आर्य्यदेवियां इतनी योग्य नहीं मिलतीं कि इन आदर्शों तक पहुंच सकें और न अभी तक आर्य्य समाज के पास भिन्न २ विषयों के कालेज बनाने की सामग्री ही है तथापि हमारा विश्वास है कि वह समय शीघ्र ही आयेगा जब कि इस उपरोक्त वैदिक प्रणाली का अनुसरण करके देवियों को 'विश्व देव्यावती' बना कर दूषित शिक्षा प्रणाली को नष्ट कर आदर्श प्रणाली का प्रचार सारे भारतमें होगा और देवियां बालकों की शिक्षा को भी संभालेंगी॥

भिन्न २ देशों और समयों में स्त्रियों की स्थिति

लेखिका—"आर्य्य महिला"

"स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन" मनु०

किसी महापुरुष का वचन है कि "स्त्री पुरुष की सेविका नहीं है और न ही उस की क्रीत-दासी है। वह पुरुष की साथी संगिनी सहायिका और अर्धांगिनी है। जितने अधिक किसी जाति के लोगों के धार्मिक भाव उच्च होते हैं उतना ही अधिक उस जाति के भाव स्त्रियों के मान और स्वातन्त्र्य में उदार होते हैं परन्तु स्वातन्त्र्य के अर्थ कर्तव्य और आज्ञापालन से मुक्त होने के नहीं बल्कि सब प्रकार से नीच पराधीनता से रहित होना है"। संसार के इतिहास में इस से अधिक मनोरञ्जक अध्ययन का विषय कि विविध समयों में और भिन्न२ देशोंमें स्त्रियोंकी सामाजिक स्थिति कैसी ऊंची या नीची रही है—शायद ही कोई होगा? हमारे आर्य्य ग्रन्थों तथा भारतीय सभ्यता के अध्ययन से जिस उच्च कोटि की स्त्री जाति की स्थिति का ज्ञान मिलता है वहां तक तो कोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देश वा जाति नहीं पहुंचती परन्तु फिर भी पाश्चात्य विद्वानों ने विविध देशों और जातियों में स्त्रियों की दशा का अध्ययन करके जो परिणाम निकाला है वह भी बहुत लाभकारी है। एक पाश्चात्य विद्वान डा० राबर्ट डानीज़ लिखते हैं कि यह सचमुच बड़े आश्चर्य की बात मालूम होती है जब हम यह सोचते हैं कि कैसे इतने वर्षों तक स्त्री केवल पुरुष की सम्पत्ति समझी जाती थी। उसी की तृप्ति ही केवल मात्र स्त्री का लक्ष्य और जीवन का उद्देश्य था मानो स्त्री के आत्मा नहीं, उस में विचार शक्ति नहीं, उसको धार्मिक स्वातन्त्र्य नहीं। प्राचीन मिश्र वासियों और २ अति पुराकालीन ईरानवासियों में स्त्रियाँ बड़े मान की दृष्टि से देखी जाती थीं, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के सब अधिकार थे और स्वराज भी प्राप्त था परन्तु इनको छोड़ कर सारा प्राचीन इतिहास उन दुःखमय घटनाओं से परिपूर्ण है जिनमें हम स्त्रियों को घोर अत्याचार से पीड़ित, कई प्राकृतिक अधिकारों से विहीन देखते हैं और जहां स्त्रियों को पुरुष का परिशिष्ट भाग अथवा पिछलगू (Appendage) उसकी वासनाओं की दास और उसके आवेगों की पूर्त्ति का साधन मात्र ही समझा जाता था। जङ्गली जातियों में जहां पर लोगों का स्वभाव बाहर घूमने का था और जिन का व्यवसाय केवल युद्ध करना और शिकार खेलना ही था, स्त्रियाँ चूंकि धनुष नहीं चला सक्ती और दण्डे का प्रहार उतनी क्षमता से नहीं कर सक्ती थीं जैसे पुरुष कर सके थे इस लिये उन्हें पुरुषों की अपेक्षा नीचा समझा जाता था। शारीरिक बल के प्रधान होने से पुरुषों ने शासन करना अपना अधिकार बना लिया और कमजोर होने के कारण स्त्रियों को उनकी आज्ञापालन करना ही अधिकार मिला। उनकी दशा अत्यन्त नीच थी और उन का जीवन लगातार, नीच, और बड़े परिश्रम का द्योतक था जिस के बदले में उन्हें कुछ नहीं मिलता था। यदि वह अपने आखेटक के साथ मृगया में जाती तो उसका कर्तव्य यह होता था कि वह उस आखेट को उठाकर घर लावे, घर में रह कर उसे पकावे और अपने पति के सामने खाने के लिये रख कर पीछे खड़ी रहे और खा चुकने पर बचे खुचे शेष भाग जो कि कुत्ते की भांति उसकी ओर फेंक दिये जाते थे उन्हें उठाकर खा लेवे। इन जातियों में स्त्रियों का इन्द्रियदमन करना कर्तव्य समझा जाता था और पुरुष लोगों को केवल व्यभिचार से ही रोक थी॥

प्राच्य देशों में स्त्रियों की दशा।

उन प्राच्य देशों में जहां पर बहुपत्नी की प्रथा प्रचलित थी और जहां पर वैवाहिक सम्बन्ध निरी काम क्रीड़ा की दृष्टि से ही देखा जाता था, वहां पर स्त्रियों को आत्माहीन प्राणी ही समझा जाता था, वह खेलने का खिलौना अथवा घृणा की दृष्टि से देखने योग्य नीच व्यक्ति ही समझी जाती थीं। प्राच्य देशों के स्वेच्छाचारी राजा लोग कभी २ इनके सौन्दर्य की प्रशंसा अवश्यमेव करते लेकिन उसी के साथ २ उन्हें विवेकहीन और शुभ गुणों में इतनी निर्बल समझते थे कि इस भय से कि कहीं वह कुपथगामिनी न बन जावें उन्हें अन्य लोगों की दृष्टि से छिपा कर रखते थे। मुहम्मद साहब के शासन ने भी इन की दशा न सुधारी। उन्होंने कुरान के नियमानुकूल मुसलमानों को तो चार बीवियां रखने की आज्ञा दी स्वयं अपने आप नौ बीवियां रक्खीं और यह कह दिया कि उन्हें इस नियम विरुद्ध काम करने के लिये परमेश्वर की ओर से प्रेरणा हुई है। उन्होंने अपने अनुयायियों को मारने की आज्ञा भी दी और कुरान में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखा है कि 'जिन स्त्रियों को कुपथ पर जाने की तुम्हें आशंका हो उन्हें घुड़की देकर अलग कोठरी में बन्द रक्खो और मारो'। एक और स्थल पर कुरान में लिखा है कि 'पुरुषों का स्त्रियों पर आधिपत्य रहेगा क्योंकि परमात्मा ने पुरुषों को स्त्रियों की अपेक्षा अधिक सशक्त बना कर उत्तम बनाया है'। यह स्थिति मुहम्मद ने स्त्रियों की बनाई थी और यही आज भी मुसलमानों में पाई जाती है॥

यूनान और रोम देशों में स्त्रियों की स्थिति

यूनान और रोम के साहित्य देखने से पता लगता है कि वहां पर भी स्त्रियां पुरुषों से अत्यन्त नीच समझी जाती थीं। युरीपिडीज ललनाओं को तिरस्कार की दृष्टि से देखता था इस कारण उसे स्त्री द्वेषी कहते थे और अरिस्टाफेन के सुखान्त नाटकों में जो स्त्रियों के चरित्र वर्णित हैं उस में इन की बड़ी हंसी उड़ाई गई है। साधारणतया यूनान में सदाचारिणी स्त्री की स्थिति बड़ी नीच थी। छोटी अवस्था में विवाह हो जाने से वह हमेशः निरन्तर पराधीनता में ही रहती थी। पहिले तो पिता माताके आधीन थी जो उसका पाणिग्रहण करा देने के अधिकारी थे उसके बाद पति की पराधीनता में रहती और विधवा हो जाने पर अपने पुत्रों तथा अन्य सम्बन्धियों के आधीन रहा करती थी। स्त्रियों को अपने ही कमरों में रहना पड़ता था, और वह अपने पतियों की इस प्रकार की सम्पत्ति मानी जाती थीं कि वह वसीयत कर के उन्हें जिसको चाहते उसको दे जा सकते थे। स्त्रियों को यह पद देने में जैसे उस जाति के साधारण विषयी जन अन्याय करते थे वैसे ही दार्शनिक लोग भी करते थे। अरस्तू ने स्त्रियों को जो पद दिया वह स्वतन्त्र मनुष्य और क्रीत दास के मध्य का जो पद हो सक्ता है वह था और प्लेटो का यह सिद्धान्त था कि स्त्रियों का गुण यही है कि अपने घर को ठीक रक्खे, घर के अन्दर ही रहे और अपने पति की आज्ञा पालन करती रहे।

रोम में भी गृह पत्नी की दशा इसी प्रकार की थी। स्त्री को रोम राज्य में जन संख्या की उत्पत्ति का साधन मात्र समझते थे और वैवाहिक बन्धन को सामाजिक हित की वेदी पर अपने सुखों को निछावर करना समझते थे। सम्राट् अगस्टस ने बिना विवाह संस्कार किये घर में डाल लेने की प्रथा को न्याय युक्त कर दिया था। कवि सेनेका ने अपने समय की स्त्रियों पर बड़े चुभने वाले तिरस्कृत शब्द लिखे हैं और एक लेखक मेंद्रिलस का कथन है कि 'यदि प्रकृति का यह नियम होता कि पुरुष स्त्रियों के विना ही विद्यमान रह सकें तो उसे इस स्त्री रूपी कष्टदायी संगिनी से छुटकारा मिल जाता'। रोम में कुटुम्ब इस नियम के आधार पर बने थे कि उस के मुखिया को कुटुम्ब पर सम्पूर्ण अधिकार है। पुरुष को अपनी स्त्री और बच्चों को जीवित रखने तथा मार डालने का अधिकार था और वह स्त्री का जब चाहे परित्याग कर सक्ता था। इस के पश्चात् वह भारत की वर्तमान स्त्री जाति की दशा बताते हैं।

भारत में स्त्रियों की दशा

इस बात की साक्षी की कमी नहीं है कि ज़ोरो आस्ट्रियन (पारसी) लोग (अग्नि पूजक लोग) जो कि भारत के पूर्वीय प्रदेशों में ३०० वर्ष पूर्व रहा करते थे वह स्त्रियों के प्रति बड़े उच्च भाव रखते थे। प्राचीन ईरान समाज में पत्नी का पद पति से नीचा न था और माता तथा बहिन और लड़की को लोग सम्मान की दृष्टि से देखते और बड़े प्रेम और सम्मान से पालन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पोषण करते थे। ज़िन्द अवस्था जो कि इन अग्नि-पूजकों की धर्म पुस्तक है उस में कहीं पर यह भाव नहीं मिलता कि लड़की के जन्म होने पर लोगों में कोई निराशा उत्पन्न होती हो। इस के विपरीत उसे विशेष स्नेह से पालन करते और पारसी एक देवता पूजक उच्च धर्म के अनुकूल उसे पवित्र विचार, पवित्र भाषण और पवित्र कर्म की शिक्षा देते थे॥

प्राचीन ईरान में विवाह बन्धन बलात्कार पकड़ लेने या खरीद लेने का परिणाम न था बल्कि वर और वधू दोनों की ओर से चुनाव होता था। सभी लोग विवाह को बड़े महत्व की दृष्टि से देखते थे और विवाह के बाद यदि पुरुष को गृहपति के अधिकार थे तो स्त्री भी गृह की स्वामिनी होती थी। पत्नी पति के साथ सब धार्मिक कृत्यों में भाग लेती थी, वह पुण्य कार्य्य में पति की सहधर्मिणी और मुख्य २ यज्ञों में उसकी साथिनी रहती थी। परन्तु ब्राह्मणों की प्रधानता में भारतवर्ष में स्त्रियों की दशा अत्यन्त ही शोचनीय थी और अब भी है।

हिन्दू धर्म के एक प्रमुख धार्मिक शिक्षक का कथन है कि स्त्रियों को कभी स्वतन्त्र स्वेच्छानुसार व्यवहार नहीं करना चाहिये। वह स्वतन्त्रता के योग्य नहीं है उसे अपने पति की अधीनता में ही सदा रहना चाहिये। पंडित लोग कहते हैं कि—'स्त्रियों में आभूषणों, सुन्दर वस्त्रों, रम्य भोगों और उत्तम भोज्य पदार्थों के लिये उत्कट इच्छा रहती है। उन के मुख्यदोष ये हैं:—अदम्य क्रोध, अगाध रोष, हृदय के गुप्त भावों को कोई नहीं जान सक्ता, दूसरों के गुणों में दोष देखना, और बुरे काम करना'।

स्त्रियों के सम्बन्ध में यह भाव वर्त्तमान भारत की परदा नशीन स्त्रियों में स्पष्टतया दीख पड़ते हैं जहां पर स्त्रियों की स्थिति एक शृंखला बद्ध आत्म बलिदान का जीवन है और जहां पर उन के उत्तम से उत्तम भावों को निर्दयता पूर्वक गृहस्थ के अत्याचारों से पद दलित किया जा रहा है। यहां पर लड़की का जन्म आपत्ति समझी जाती है। उसे कहीं भी स्वागत नहीं मिलता। जब लड़की का जन्म होता है तो लोग खेद से कहते हैं 'लकड़ी पैदा हुई है'। बम्बई में एक कन्या पाठशाला के पारितोषिक वितरण में कन्याओं को एक पुस्तक इनाम दी गई जिन में स्त्रियों की स्थिति के सूचक यह शब्द थे जिन के भाव स्पष्ट ही हैं—यतः-"जो स्त्री अपने पति को कुवाच्य कहती है उस का गांव के अछूत कुत्ते का जन्म होगा। उसे गीदड़ की भी देह मिलेगी और निर्जन वन में रहना पड़ेगा। जो स्त्री अपने पति को खिलाये बिना मीठे भोजन करती है उसे मुर्गी का जन्म मिलेगा और वह पेड़ के खोखले में रहेगी। जो स्त्री पति के विना भ्रमण करती है वह मैला खाने वाली सुअरी होगी। जो स्त्री पति से निरादर पूर्वक भाषण करती है वह दूसरे जन्म में गूंगी होगी। जो स्त्री अपने पति के सम्बन्धियों से घृणा करती है वह जन्म जन्मान्तर में नर्क का कीड़ा होगी"। इस प्रकार प्रत्येक जाति तथा देश में किसी समय जो स्त्रियों की बुरी या अच्छी दशा रही है उसे दर्शाते हुये डा० रावर्ट डानीज़ ईसाई स्त्रियों की उच्च दशा का बड़े गौरव से वर्णन करते हैं।

ईसाई मतानुसार स्त्रियों की स्थिति

इन डा० रावर्ट का कहना है कि यह ईसाई मत के ही भाग्य में था कि स्त्रियों को धूलि से उठा कर उन्नत करे और मनुष्य को यह बतलावे कि अधिक बल का परिचय वह देता है, जो अपनी इच्छा पूर्वक सेवा धर्म का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुसरण करके कर्तव्य पालन करता है + + + + + + + ईसाई मत द्वारा स्त्रियों में नवीन आत्मा और नया भाग्य आ गया है। इस ने स्त्रियों को मनुष्य की क्रीत दास अथवा खिलौने की नीच स्थिति से छुड़ाकर उन्हें उन की सखा और समान अधिकारिणी बनाया है। + + +++ ईसाई मत के प्रभाव से स्त्रियों के गुण यथा-कोमलता, सुशीलता, नम्रता, करुणा और स्नेह-की पहिचान हो गई है और स्त्रियों को उन का वास्तविक मान मिल गया है, उन के दुःख और अत्याचार दूर हो गये हैं। + + + +

आर्य्य सभ्यता में स्त्रियों की स्थिति

भारत वर्ष में महाभारत के समय से जो गिरावट प्रारम्भ हो गई थी और जिस प्रकार धर्म का नाश होने से समाज की अवस्था बिगड़ गई थी उसका प्रभाव सब ही पर दीख पड़ता है और उसी समय से भारतीय देवियों की दशा भी बिगड़ती गई। महाराणी द्रौपदी को पांचों पांडवों की पत्नी बनाना, द्रौपदी का दांव पर लगाया जाना और भरी सभा में बलात्कार केशों को पकड़ कर घसीटते लाया जाकर नग्न किया जाना, यही एक उदाहरण गिरावट की पराकाष्ठा के दिग्दर्शन कराने के लिये पर्याप्त है। परन्तु इतिहास महिला समाज के निरादर के ऐसे बहुतेरे उदाहरणों से परिपूर्ण है। परन्तु इस से यह नहीं समझना चाहिये कि भारतीय ललनाओं की दशा हमेशा हर काल में और हर देश में ऐसी ही रही है। इसी गिरे हुये समय में और उस के पश्चात् भी यदि एक तरफ़ स्त्रियों के प्रति अत्याचार और घोर घृणित व्यवहार के उदाहरण मिलते हैं तो दूसरी तरफ़ उनके प्रति बड़े ही उदार और उच्च भाव भी प्रदर्शित किये जाने के उदाहरण दिखलाई देते हैं। वर्त्तमान भारत में यद्यपि स्त्रियों की दशा शोचनीय अवश्य है और जो २ उपरोक्त बातें डाक्टर रावर्ट डानीज़ बतलाते हैं वह सच भी हों—क्योंकि कई पुस्तकों में स्त्रियों के प्रति बड़े नीच भाव मिलते हैं—तथापि इससे यह नहीं कहा जा सक्ता कि आर्य्य जाति में स्त्रियों का मान ही नहीं है, वह निरी पददलित हैं और पैर से ठुकराई जाती हैं। आर्य्य जाति (हिन्दू जाति) में कई वर्ष पहिले गिरी दशा में भी जब कि लोग उन्हें उच्च शिक्षा नहीं देते थे, अनमेल विवाह बन्धन द्वारा उनका जीवन भी दुःखमय बना दिया जाता था और कन्या पैदा होने पर लड़के की अपेक्षा खुशी भी बहुत कम मनाई जाती थी फिर भी कन्या को देवी ही कहते थे, स्त्रियां अपने घर की स्वामिनी होती थीं और अपने ज्ञान और विचार अनुसार पर्य्याप्त स्वातन्त्र्य भी भोग लेती थीं।

स्त्रियों की पराधीनता के सूचक आदेश जो कई ग्रन्थों में पाये जाते हैं वह स्त्रियों के प्रति अत्याचार के द्योतक नहीं वरन स्त्री जाति को कमजोर समझ कर उस की रक्षा के लिये बनाये गये हैं। समाज के अधः पतन के साथ स्त्रियों का अधः पतन और उत्थान के साथ स्त्रियों का उत्थान होता है। फिर भी चिर-काल से बनी हुई और कुलपरम्परागत नीति समाज के कहीं न कहीं भाग में छिपी रहती है और समय समय पर बर्सातके मेघोंमें चपला की भांति चमकती हुई दीख अवश्य पड़ती है। हमारे भारत वर्ष में भी स्त्री जाति की उच्च स्थिति रूपी चपला समाज और देश के अधः पतन रूप बादलों में समय २ पर चमकी है इस को इतिहास स्वर्ण अक्षरों में बतला रहा है और एक ईसाई पादरी क्या समस्त पाश्चात्य सभ्यता के चमकीले दमकीले सिद्धान्त भी उस दामिनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की चमक के आगे फीके पड़ जाते हैं। हमारी आर्य्य जाति के पथदर्शक वेद भगवान् और तदनुकूल शास्त्रों और स्मृतियों में जो स्त्रियों की उच्च दशा का वर्णन पाया जाता है उसको भी तो ध्यान देना चाहिये। वेदों में स्त्री और पुरुष के समान अधिकार, समान कर्तव्य बतलाये हैं और स्त्रियों के लिये "देवी" "सरस्वती" "श्री" इत्यादि शब्दों का शास्त्रों में प्रयोग हुआ है। महाराज मनु कहते हैं कि "स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन" स्त्री में और घर की शोभा में कोई भेद ही नहीं है। "जहां पर नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं। इसलिये पिता, भाई, पति, देवर इत्यादि यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो इन की पूजा करें, इन्हें सब प्रकार से भोजन वस्त्र, आभूषण, इत्यादि से नित्य ही तथा पर्वों पर सत्कार किया करें। इत्यादि" शास्त्रों में ब्रह्मचारी कुमार के लिये जो नियम हैं वही कुमारी ब्रह्मचारिणी के लिये भी तथा विवाहित स्त्री पुरुषों में जैसा नियम पुरुष के लिये है वैसा ही स्त्री के लिये। कहीं पर पुरुष की श्रेष्ठता नहीं दिखाई गई वरन् उल्टा स्त्री की ही उच्चता दिखाई गई है, क्योंकि वह माता के रूप में जाति की उत्पत्ति पालन और रक्षण का एक मात्र साधन है। माता का दर्जा प्रथम है पिता का दूसरा है तभी तो कहा है कि "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद॥" और भी—

उपाध्यायान्दशाचार्य्य आचार्य्याणां शतं पिता।
सहस्रन्तु पितॄन्माता गौरवेणातिरिच्यते॥

मनु० अ० २। १३८।

अर्थात् पिता से हजार गुणा गौरव माता का होता है। इसी प्रकार नव विवाहिता वधू के लिये लिखा है कि उसे बलि वैश्वदेव करने से पहिले ही भोजन देना चाहिये तथा यह भी लिखा है कि यदि गर्भवती स्त्री मार्ग के एक ओर से आ रही है और राजा उसी मार्ग के दूसरी ओर से आ रहा हो तो राजा को उसका मार्ग छोड़ देना चाहिये। मातृशक्ति का इतना गौरव है कहीं भी संसार के अन्य हिस्सों में तथा पुस्तकों में? विवाह के समय विवाह की सप्तपदी के अन्तिम मन्त्रमें पति पत्नी एक दूसरे को सखा और मित्र कहते हैं यथा—"सखे सप्तपदी भव····· ·····"इत्यादि।

इसी प्रकार साधारणतया स्त्री जाति मात्र को ही मान्य की दृष्टि से देखा जाता था और वह सर्वथा अवध्या मानी जाती थी। इन वैदिक और स्मृति आदर्शों का व्यावहारिक रूप यदि देखना हो तो रामायण कालीन आर्य्य सभ्यता को देखिये वहां पर इसके ज्वलन्त उदाहरण मिलते हैं। आप वाल्मीकि रामायण के उन स्थलों को देखिये जहां पर स्त्रियों का वर्णन आता हो तब आपको पता लगेगा कि रामायण तथा छान्दोग्य उपनिषद् काल में—जब कि वेदों का सूर्य मध्याह्न काल में था और आर्य्य सभ्यताभिमानी राजा यह दावे के साथ कह सक्ते थे कि 'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो, नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।" अर्थात् मेरे राज्य में न कोई चोर, न घातक, न शराब पीने वाला है और न यज्ञ को न करने वाला, न मूर्ख, न व्यभिचारी, तब व्यभिचारिणी तो किस प्रकार हो सक्ती है? और इसी प्रकार अयोध्या में राजा दशरथ के शासन काल में पुर और राष्ट्र में न कोई दुराचारी, दुष्ट, न झूठ बोलने वाला या परस्त्री-गामी था। सब नर और नारी धर्मशील और नियमानुकूल व्यवहार करते थे उस समय—स्त्रियों की कितनी उच्च दशा थी। महिला मात्र का कितना मान था। किस आदर भाव से स्त्री जाति को मातृबुद्धि से देखा जाता था! उस दृश्य को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी आंखों के सामने कल्पना कीजिये जब कि भगवान् रामचन्द्र के बनवास जाने के बाद महात्मा भरत मामा के घर से लौट कर आते हैं और सारा वृतान्त सुन कर माता पर कोप करते हैं और शत्रुघ्न मन्थरा दासी को केश पकड़ कर घसीटते हुये भरत के सम्मुख लाते हैं। उस समय महात्मा भरत क्या कहते हैं:—"शत्रुघ्न! स्त्रियां सब प्राणिमात्रमें अवध्या होती हैं। अतः क्षमा करो। मैं इस पापा दुष्टाचरण करने वाली कैकेयी को ही मार देता, यदि मुझे यह भय न होता कि ऐसा करने पर धर्मात्मा राम मुझ से भाषण मात्र भी न करेंगे। यदि इस कुबड़ी को भी हम लोगों से पीटी हुई धर्मात्मा राम सुन लेंगे तो न तुझ से बोलेंगे न मुझ से"। इधर तो अकार्य्य करने वाली दासी पर भी स्त्री मात्र होने के कारण इतनी क्षमता दिखाई गई परन्तु दूसरा दृष्टान्त स्त्री जाति के मान का एक और भी है जो इससे कहीं बढ़ कर है। सीता हरण के बाद जब सुग्रीव और रामकी मित्रता हो जाती है और सुग्रीव अपने राज्य पर राम लक्ष्मण की सहायता से पुनः स्थापित हो जाता है तो उसे राम की सहायता करने की बात भूल जाती है और वह भोगों में लिप्त हो जाता है। अतः रामचन्द्र लक्ष्मण को उसके पास प्रतिज्ञा याद दिलाने के लिये भेजते हैं। जब सुग्रीव लक्ष्मण के सक्रोध किष्किधा पहुंचने की खबर सुनता है तो देवी तारा को कहता है कि "हे तारा! तू प्रथम जाकर लक्ष्मण जी का स्वागत कर, विशुद्धात्मा लक्ष्मण तुझको देख कर रोष नहीं करेगा क्योंकि महात्मा लोग स्त्रियों पर निर्दयता नहीं दिखला सक्ते"। भगवान् बालमीकि कहते हैं कि जब लक्ष्मण ने तारा को देखा तो उदासीन भाव से नीचा मुख किये खड़े हो गये और स्त्री के सम्मुख आने पर उनका सब क्रोध शान्त हो गया। यह हैं स्त्रियों के प्रति उदार भाव, आदर और विनय के उदाहरण, जिनसे भारतवर्ष का इतिहास भरा पड़ा है। इतने उच्च भाव यदि आज ईसाई धर्म द्वारा युरोप आदि पाश्चात्य सभ्य देशोंमें फैले होते तो वहां जो आज लाखों स्त्रियों की रोटी का प्रश्न उपस्थित है, हजारों दुःख और दारिद्र्य भोग रही हैं और सारी पाश्चात्य सभ्यता में मलिनता का कलंक लगा हुआ है वह क्यों होता?

भारतीय ललनाओं में एक वार पुनः उच्च भारतीय शिक्षा और आदर्श को भरने की आवश्यकता है फिर देखिये उनकी मान मर्य्यादा का आदर्श पाश्चात्य देशों के लिये अनुकरणीय बनता है या नहीं?

आर्ष पाठावलिः (प्रथम भाग)

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित

यह लड़कियों और स्त्रियों के लिये एक सचित्र पुस्तक है। चित्र भी बड़े खूबसूरत और मनोरंजक हैं। प्रथम चित्र रंगीन है, अध्यापिका बच्चों को "ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्या प्रेमी शूद्र और पोप की बहस का चित्र भी बड़ा रोचक है। प्रत्येक पाठ में चित्र हैं और पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं, कागज़ भी बढ़िया है, इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। सजिल्द का मूल्य ।॥) इकट्ठा लेने वाले दुकानदारों को १०० जिल्द पुस्तकें ६२॥) नकद पर मिलेंगी। डाक व्यय अलग

पं० वजीर चन्द शर्म्मा अध्यक्ष, वैदिक पुस्तकालय, लाहौर रोड़, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दुओ, उठो !

ले०—श्रीयुत हरिशंकर शर्मा सम्पादक आर्य्यमित्र

(१)

उठो, हिन्दुओ ! नींद त्याग कुछ करना सीखो ।
बहुत सो चुके, जगो जाति पर मरना सीखो ॥
क्या करने का और कभी अवसर आवेगा ?
हाय! तुम्हें अब कौन कहो क्या समझावेगा ?

(२)

ह्रास तुम्हारा हुआ, भीरुता जाग रही है ।
सुख-समृद्धिता चली, वीरता भाग रही है ॥
निर्बलता का नाच चतुर्दिक देख रहे हैं ।
हा ! अवनति ने आप हमारे केस गहे हैं ॥

(३)

हां, हां, हम भी कभी 'वीरवर' कहलाते थे ।
अटल प्रतिज्ञा धार, धर्म पर मर जाते थे ॥
अब तो मन-वच-कर्म भिन्नता दिखा रहे हैं ।
भ्रातृभाव को भगा, खिन्नता सिखा रहे हैं ॥

(४)

रहा नहीं संगठन, एकता का घर फूटा ।
साहस का सिर फटा, धर्म से नाता टूटा ॥
अत्याचारों का स्वागत करते रहते हैं ।
बात बात पर ग़ैरों से डरते रहते हैं ॥

(५)

कहीं चोटियां काट मोपले मार रहे हैं ।
तोड़ जनेऊ हाय ! हमें दुतकार रहे हैं ॥
कहीं मन्दिरों पर हा ! हा !! हमले होते हैं ।
'कर्महीन' हो, हाय ! हमेशा हम रोते हैं ॥

(६)

अमृतसर की दुर्घटना ने विष बरसाया ।
तान तोड़ मुलतान हमारे आगे आया ॥
हा ! ऐसे दुर्दृश्य अनेक निहार चुके हैं ।
पर न आत्म-उद्धार विशद व्रत धार चुके हैं ॥

(७)

सह अनेक अपमान देवियां दुख पाती हैं ।
जीती हैं असहाय, अन्त को मर जाती हैं ॥
पर हम पौरुष हीन न कुछ भी कर सकते हैं ।
भर सकते हैं भीरु भाव या डर सकते हैं ॥

(८)

कहो, हिन्दुओ ! इस प्रकार उन्नति क्या होगी ?
सम्हलो, उठो, सचेत रहो, बनकर उद्योगी ।
कायरता को काट 'कर्मयोगी' कहलाओ ।
या अवसर अनुकूल धर्म पर प्राण गँवाओ ॥

पाम्पीआई

लेखिका—श्रीमती ओ३म्वती देवी सह० सम्पादिका ज्योति

ज्योति के पाठकों ने इटली देश के एक प्राचीन प्रसिद्ध नगर पाम्पीआई का नाम सुना होगा। यह नगर व्यसूवियस पर्वत के नीचे नेपल्स की खाड़ी के किनारे पर स्थित था। रोम के बादशाह नीरो के समय में यह रमणीक नगर वहां के धनिक शौकीन मनुष्यों का एक प्रकार का स्वास्थ्य-रक्षक स्थान समझा जाता था, और वे प्रति वर्ष अवश्य ही कुछ समय यहां बिताते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किन्तु इस सुन्दर नगर का सूर्य्य डूबने ही को था अतः ७९ ईस्वी में ज्वालामुखी व्यसूवियस पर्व्वत में बड़ा भारी उद्गार हो गया और समस्त नगर दावानल से आच्छादित हो गया। बहुत से नागरिक पशु पक्षी इत्यादि मृत्यु का ग्रास बन गये। *

रोमन इतिहासवेत्ता प्लिनी जिसकी अवस्था इस दुर्घटना के समय १७ वर्ष की थी तथा जिस ने उस समय पाम्पीआई में अपने चचा के साथ इस भयानक दृश्य को स्वयं अपनी आंखों से देखा था इस प्रकार वर्णन करते हैं।

"यद्यपि प्रातःकाल का समय था तथापि प्रकाश की झलक मध्यम थी, और धुंधलापन छाया हुआ था; चारों ओर के भवन हिल रहे थे, और हम लोग यद्यपि खुले मैदान में थे तथापि वह स्थान चारों ओर से घिरा होने के कारण भय से सुरक्षित न था अतः हम ने नगर छोड़ने का निश्चय किया। घरोंसे काफ़ी दूरी पर पहुंच कर भी हम एक भयानक तथा ख़तरनाक दृश्य के सन्मुख उपस्थित थे।

जिन रथों पर हम भागना चाहते थे वे समतल भूमि पर स्थित होने पर भी खड़े नहीं हो सक्के थे और यद्यपि हमने उन्हें बड़े २ पत्थरों के सहारे खड़ा करना चाहा फिर भी वे हिलते डुलते ही जाते थे। समुद्र मानों अपने ही ऊपर लौट २ कर दुहरा होता जाता था और पृथ्वी के चलायमान होने के कारण किनारे पर से बार २ धक्का खाता था, सुतरां समुद्र का किनारा बड़ा खाली होकर विस्तृत बन गया और बहुत से सामुद्रिक जीव जो पहिले वहां जल में रहते थे खुले रह गये।

दूसरी ओर से बड़ा भयानक काले मेघ सदृश धुंध का बादल अग्नि की प्रचण्डता से काले नाग की तरह उबलती हुई भाफ़ की पिचकारियें छोड़ता हुआ बिजली की चमक की तरह ज्वाला की एक अतितीव्र लपक लाल जिह्वा सी निकालता हुआ दौड़ता आ रहा था।

उसी समय ऐसा ज्ञात हुआ मानों धुयें रूपी बादलों ने उतर कर सारे समुद्र को ढक लिया और राख ने हमारे ऊपर गिरना आरम्भ कर दिया। मैंने मुंह फेर कर देखा कि काले धुयें का एक रेला हमारे पीछे वेग से दौड़ा आ रहा है। मैंने सलाह दी कि जब तक धुंधला प्रकाश है शीघ्र ही हम स्थान रिक्त कर दें नहीं तो पीछे दौड़ा आता हुआ काला बादल हमें डस कर मृत्यु का ग्रास बनायेगा। हम ने अभी दो बार पग ही बढ़ाये होंगे कि अंधकार ने चारों ओर राज्य कर लिया और हमें ऐसा प्रतीत होने लगा मानों हम एक ऐसे कमरे में हैं जिसकी खिड़कियां और रोशनदान बन्द कर दिये गये हों और सब प्रकार का प्रकाश बुझा दिया गया हो। उस समय केवल स्त्रियों की चीत्कार बच्चों की चिल्लाहट और पुरुषों की चिंघ्यारों के अतिरिक्त और कुछ सुनाई न देता था। निदान एक धुंधला प्रकाश दृष्टिगोचर हुआ जो कि-जैसा हमने विचारा था—दिनका प्रकाश न था किन्तु आगामी अग्नि प्रकोप की प्रचण्ड ज्वाला का सूचक था; परन्तु यह अग्नि हम से कुछ दूर पर गिरी और हम फिर एक बार अंधकार में डूब गये, हम पर राख के ढेर के ढेर बर्सने लगे जिन्हें हम बार २ झाड़ते थे नहीं तो उस में दब जाते। बहुत समय पीछे क्रमशः यह भयानक अंधकारमय धुंयें का बादल घटा, दिन का उदय हुआ और सूर्य्य भी

* नोट—लार्ड लिटन ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास "लास्ट डेज़ आफ़ पाम्पी आई" में बड़ा हृदयविदारक विस्तृत वर्णन दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चमका किन्तु वह इतना धुंधला और तेज रहित था जैसे कि ग्रहण लगने पर होता है। प्रत्येक वस्तु हमारी दृष्टि में-जो कि बिलकुल मन्द हो गई थी—बदली हुई बड़ी धुंधली और राख से ढकी हुई-जैसे बरफ़ जमने से हो जाती है—प्रतीत होती थी।

हम लोग मिसन्यम को लौटे और अपने आप को यथाशक्ति आश्वासित कर हमने आशा तथा भय के कारण उत्सुकता पूर्ण रजनी व्यतीत की क्योंकि भूकम्प अब भी विद्यमान था॥"

जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं इस सारे भीष्म अग्नि काण्ड का परिणाम यह हुआ कि विशाल भवनों, सुन्दर नाट्य-गृहों तथा अन्य खेल तमाशों के स्थानों से सुसज्जित, और रमणीय बाग बगीचों से मण्डित वह प्राचीन रोमन नगर राख के नीचे दब गया। इस समय यह अनुमान करना कठिन है कि कितने स्त्री, पुरुष और अन्य प्राणियों का नाश हुआ होगा। खोदने पर २००० मनुष्यों के अस्थि पिंजर प्राप्त हुए हैं। कितना ही धन और सम्पत्ति—जो कि राख के ढेर में दब गयी थी—भागे हुए नागरिक कुछ वर्ष पीछे निकाल कर ले गये थे।

यह पुराना नगर कितना रमणीक और सुन्दर था इस का कुछ कुछ अनुमान उन खंडरात से हो सक्ता है जो कि खोद कर निकाले गये हैं। इटली देश की सरकार खुदाई के काम को बड़े उत्साह, प्रेम और श्रद्धा से कर रही है और यह हो भी क्यों न? वह किसी अन्य जाति के आधीन तो हैं ही नहीं कि जिन के लिये आज पूर्वजों की कृति का खोज निकालना पाप हो।

यह खुदाई बड़े नये ढंग से हो रही है जिस में कि पुराने तरीके के गढ़े खोदना या इतस्ततः खाई खोदना नहीं पड़ता किन्तु पहिले एक विस्तृत घेरे की थोड़ी सी ऊपर की मिट्टी को सावधानी से खुरेदते हैं फिर क्रमशः प्राचीन सतह की ओर तक पहुंचते हैं इस भांति चीज़ों की पारस्परिक ऊंचाई, निचाई, गहराई तथा उनके नियमित स्थान का पता लगाना सुगम हो जाता है और उनके प्रत्येक टुकड़ों को जो कि बिलकुल ही न टूट फूट गये हों ठीक ठिकाने लगाना भी संभव हो जाता है।

इस भांति की नवीन खुदाई का प्रतिफल निवास-गृहों के सम्बन्ध में अत्यधिक फलीभूत हुआ है।

सन् ७९ के जिस अग्नि-उद्गारसे समस्त नगर ढक गया था वह समयान्तर में कठोर होकर महलों, अटारियों और मन्दिरों इत्यादि पर इस प्रकार जम गया जैसा कि किसी वस्तु के ऊपर उसका सांचा ठीक २ जम जाता है। और इस स्वाभाविक सांचे ने मानों एक प्रकार इनकी रक्षा का ही प्रबन्ध किया। सन् १७४८ से जो खुदाई आरम्भ हुई है उस से संसार को दो सहस्र वर्षों के उपरान्त भी नगर की पहिले की अनुपम छटा की झलक देखने का सौभाग्य मिलता है। रोमन लोगों के लिये इस अमित परिश्रम का पुरस्कार स्वरूप अपने पुरखाओं के रहने सहने के ढंग, वहां की लम्बी २ विशाल भवनों से सुसज्जित बाज़ारें; पत्थर जड़ी हुई सड़कें, सुन्दर २ मन्दिर इत्यादि खोद कर अधिकतया उसी पूर्व परिस्थिति में रक्खे जाने का प्रयत्न किया जा रहा है। कतिपय निवास करने के बंगले इस प्रकार खोदे गये हैं कि उन के कमरों के अन्दर दीवारों पर टंगे हुवे चित्र तथा अन्य सजावट ज्यों के त्यों रक्खी है। नये नियम के अनुसार खोद कर निकली हुई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रत्येक वस्तु नेपल्स में ले जाकर नहीं रक्खी जाती वरन् यथा सम्भव उसी स्थान पर जहां वह मिले रख दी जाती है। भवनों पर जिस प्रकार पहिले छत पर ईंटें इत्यादि लगी थीं वह जहां तहां आवश्यकतानुसार सुधार दी गई हैं जिस में दर्शकों का धूप से बचाव हो। जली हुई धन्नियां लोहे के सहारों से रख दी गयी हैं, दिवारों पर के चित्रों की रक्षा के लिये उन्हें ऊपर से शीशों से ढांप दिया गया है। पहिले पहिल केवल मनुष्य के अस्थिपिंजर के ही सांचे बनाये जाते थे किन्तु अब यह प्रयोग प्रत्येक नष्ट हुई चीजों के विषय में होता है।

मेज़, कुरसी, दरवाज़े जिन में कि पहिले केवल कीलें ही मिलती थीं-यहां तक कि पौदे तक के सांचे बना कर उनकी असली आकृति और परिमाण में डाल कर पुनर्जीवित किया जाता है। कई स्थानों में जहां पेड़ पौदे थे अब भूमि खोदने पर केवल मात्र उन की जड़ें ही मिली हैं। वनस्पति विद्या विशारदों द्वारा इन जड़ों से उन पौदों के नाम जान कर जो वहां उस समय लगे थे-उन्हें फिर ज्यों का त्यों लगाने का यत्न किया जा रहा है।

प्राचीन नगर अनियमित अण्डाकार रूप में फैला हुआ था इसकी परिधि प्रायः दो मील की होगी जिस पर चारों ओर दिवाल खिची हुई थी। इस दिवाल में स्थान २ पर बहुतसी बुर्जें बनी हुई थीं जो कि कहीं कहीं इतनी निकट थीं कि इनमें सौ गज़ का ही अन्तर था। नगर की साधारण योजना बड़ी क्रम-बद्ध दिखलाई पड़ती है। प्रायः सबकी सब सड़कें सीधी हैं और एक दूसरे से समकोण पर मिलती हैं। प्रधान सड़कें अधिक से अधिक २० फुट तक चौड़ी होंगी। अब तक जो सबसे चौड़ी सड़क मिली है उसकी चौड़ाई ३२ फुट है। पिछवाड़े की गलियां प्रायः १४ फुट ही हैं। वे ज्वाला मुखी के जमे हुए लावा से बने हुए पत्थरों को बराबर पहलदार काट कर उनसे जड़ी गयी हैं, जिनमें कहीं २ पर पानी ने दरारें बना दी हैं। इन सड़कों के किनारे पैदल मनुष्यों के चलने के लिये इसी प्रकार की पगडंडियां भी बनी हुई हैं। यह पैदल मनुष्यों के सुभीते के लिये था, किन्तु इससे भी बढ़ कर यह बात है कि पगडंडियों को एक दूसरे से मिलाने के लिये ऊंचे २ परन्तु छोटे पुल की तरह के हिस्से बने हैं जिनसे गाड़ियों के सड़क पर चलते हुए भी मनुष्यों को इस पार से उस पार जाने में कोई कठिनता न हो और न सड़क पर जाना पड़े वरन पुल पर चढ़ कर चले जांय।

जिस समय पाम्पीआई का नाश हुआ था उस समय अनुमान किया जाता है कि २०००० की जन संख्या होगी। ७९ ईसवी के भूकम्प से जो अस्थिपंजर प्राप्त हुए हैं उनसे हिसाब लगाया जाता है कि प्रायः २००० मनुष्य मरे थे।

रोम राज्य की प्रथा के अनुसार पाम्पीआई का फोरम (Forum) बड़ा प्रभावशाली तथा चित्ताकर्षक और नगर का प्रधान भाग था। फोरम नगर का वह हिस्सा होता है जहां पर न्यायाधीश जनता को न्याय सुनाता है, जहां पर बड़े २ वक्ता अपनी २ प्रभावशाली वक्तृताएं सुनाते हैं, जिसकी शोभा नगर में सबसे उत्कृष्ट होती है, यहां पर सुन्दर मूर्तियों का संग्रह होता है। चारों ओर सुन्दर और मनोहर सार्वजनिक भवन होते हैं। पाम्पीआई का फ़ोरम आज कल के नगरों में जो खुली जगह होती हैं उनके सदृश बड़ा विशाल न था परन्तु उसके बड़े २ स्तंभों से घिरे हुये स्थान को सम्मिलित कर ४६७ फुट लम्बा और १२६ फुट चौड़ा इसका परिमाण था। वह अनेक मूर्तियों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से सुसज्जित था जिस में अधिकतया मूर्तियां राज घराने की थीं और कुछ बड़े २ नागरिकों की थीं।

फ़ोरम के तीन तरफ़ विशाल खम्भों के आश्रित अनेक तोरण हैं जिनके ऊपर एक छज्जा व दूसरी मंजिल रही होगी जिसके अब केवल टूटे फूटे चिह्न ही दृष्टि-गोचर होते हैं। यहां के फरश की बनावट से ऐसा प्रतीत होता है कि सिवाय पैदल मनुष्यों के कोई अन्य सवारी इस स्थान में नहीं आती थी। फ़ोरम का उत्तरी पार्श्व जहां कि आलिंद (portico) नहीं हैं, बड़े बड़े मन्दिरों से घिरा हुआ है जिनमें ज्यूपिटर, ज्यूनो और मिनर्वा की पूजा होती थी।

इन मन्दिरों के अतिरिक्त पांच और छोटे २ मन्दिरों के खंडहर प्राप्त हुए हैं जो कि तीन नाट्यशालाओं के अति निकट स्थित हैं।

इन भवनों के अतिरिक्त यहां दो बड़े २ नाट्यशाला भवन भी हैं जो कि ग्रीक ढंग की भांति एक दूसरे के बराबर स्थित हैं। इनमें से सबसे बड़ा जो कि पहाड़ी के पास में से खोदा गया है बहुत ही प्रभावशाली इमारत है जिसमें अधिकतया संगमर्मर जड़ा हुआ है। इस में बैठने की सुन्दर २ संगमर्मर की चौकियां थीं जो कि प्रायः सारी की सारी वहां से उठा ली गयी हैं।

छोटा नाट्य भवन—जैसाकि एक शिला लेख से पता लगता है दो न्यायाधीशों का बनवाया हुआ है जो केवल नगर को सर्वांग सुन्दर सजाने के हेतु ही नियुक्त किये गये थे-बड़े से प्राचीन है और उस समय जबकि रोमन उपनिवेश सूला के आधीन हुआ था, निर्मित हुआ था। हमें यह भी ज्ञात हुआ कि यह सदा छता हुआ था और सम्भवतः संगीतशाला की भांति कार्य्य में लाया जाता था, किन्तु बड़े भवन के विषय में भी ऐसे स्पष्ट चिह्न प्राप्त होते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि समय २ पर सारे घर की छत खोल दी जाती थी। छोटी शाला में केवल १५०० मनुष्यों ही के देखने के लिये स्थान है तथापि बड़े में पांच सहस्र मनुष्यों के बैठने की जगह है।

इन नाट्य शालाओं से ५०० गज़ की दूरी पर एक दूसरा स्थान बना था जिसको हम रंग भूमि का नाम दे सक्ते हैं। इस रंग भूमि के बीचोंबीच अण्डे के आकार की समतल भूमि जिसको हम अखाड़ा कह सक्ते हैं छोड़ी गयी थी और इस के चारों ओर गैलिरी बनी हुई थी। पाम्पीआई की रंग भूमि, (Amphi theater) न केवल रोम में वरन संसार में अपनी प्रकार की सब से पुरानी इमारत है। इसके अतिरिक्त इसकी और कोई विशेषता नहीं, इस इमारत में शिल्पकला सम्बन्धी कोई भी खूबी नहीं है। इसका बहुत सा भाग मैहरावों पर न बना कर, पहाड़ी में से ही काटा गया था अतः इसके नीचे मैहराब दार बड़े २ लम्बे कमरे भी-जो कि इन इमारतों की विशेषता हैं-नहीं हैं। न इसका विस्तार ही इतना बड़ा है (यह केवल ४६० फुट लम्बा और ३४५ फुट चौड़ा है) कि इस प्रकार की इमारतों में इसे प्रथम स्थान दिया जा सके और न ही इसके अखाड़े की भूमि के नीचे तहखाने हैं जिन में से कि शेर हाथी इत्यादि को ऊपर खैंच लेने के मंच हों। तो भी इस अखाड़े में पहलवानों की आपस में तथा शेरों हाथियों और सांढों से कुश्ती देखने के लिये आस पास के नगरों से बहुत से आदमी आया करते थे। इस रंग भूमि में २० सहस्र मनुष्य बैठ कर तमाशा देख सक्ते थे।

नगर की प्रसिद्ध २ सार्व जनिक इमारतों में स्नानगृह भी थे। पाम्पीआई में चार स्नानागार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थे जिन में से तीन पुरुषों के लिये और एक स्त्रियों के लिये था। इन स्नानगृहों में घुसते ही पहले मलमूत्र त्यागने के लिये एक पायखाना बना होता था। फिर आगे जाकर कुछ देर आराम करने के लिये एक कमरा था। उसी के साथ वह कमरा भी था जहां पर कि वस्त्र उतार कर रक्खे जाते थे। अगले कमरे में मालिश के लिये तेल इत्यादि रक्खे रहते थे जहां पर स्नान करने वालों की मालिश की जाती थी। फिर पास के अगले कमरे में स्नान करने के पहिले शरीर गर्म करने के लिये प्रबन्ध था। यह कमरा अन्य पहिले कमरों की अपेक्षा अधिक गरम होता था और यह भाफ़ द्वारा ही गरम किया जाता था। इससे अगले कमरे में स्नान के लिये गरम पानी होता था और सब से पीछे के कमरे में खूब गरम पानी रहता था जिस में स्नान कर सीधे कपड़ों वाले कमरे में लौट आते थे।

पाम्पीआई के अनेक सार्वजनिक भवनों के प्रति लोगों का अधिक अनुराग है परन्तु जैसा अमूल्य प्रकाश वे अन्य प्राचीन नगरों के खण्डहरों और मूर्तियों पर डालते हैं उस से भी अत्यधिक और आश्चर्यजनक कतिपय निवास-गृहों तथा दुकानों की आन्तरिक अवस्था का दृश्य है जिससे कि प्राचीन नगर की जनता के स्वभाव तथा जीवन सम्बन्धी ढंगका पता लगता है।

हाल ही में एक नये खोदे हुए घरमें ऊपर की छत की बनावट तक हज़ारों टुकड़ों को जोड़ २ कर ठीक कर दी गयी है। एक कमरे में एक कांच का लैम्प जिस में केवल बत्ती ही की कमी है दिवाल के साथ टंगा हुआ है। दिवारों की चित्रकारी दर्शनीय है और जो उन पर बीती है उसका अनुमान करते हुए बहुत सुरक्षित हैं। दुकानों पर वस्तुएं सन्मुख सुसज्जित रहती थीं और वे खरीदने वालों से छिपाई नहीं जाती थीं वरन दूकानदार अपनी वस्तुओं का बड़ी चटक मटक से विज्ञापन देते थे।

आधुनिक सांचे द्वारा एक गिरे हुए पुरुष का बहुत ही अद्भुत बुत बनाया गया है। ज्वालामुखी के वेग से जहां वह मनुष्य गिरा था वहीं पर उसके जूते सहित नमूना बनाया है। शरीर तथा अन्य वस्तुयें लिफाफे की तरह राख तथा महीन पत्थरों से ढंक गई थीं जो धीरे २ पानी की सहायता से जमकर पक्का पड़ गया और पूरा सांचा बन गया जिसके अन्दर वास्तविक चीज समय के साथ गल गयी। अब इन्हीं प्राकृतिक सांचों के अन्दर एक छेद करके पिघला हुआ पत्थर भरकर शकलें निकाली जाती हैं।

अभी हाल ही में एक बड़े मोड़वां दरवाजे का सांचा ढाल कर निकाला गया है जो कि अच्छे बड़े नाप का है और जिसमें लोहे की बड़ी २ टोपीदार कीलें अब तक सुशोभित हैं। इसे उसी प्रकार कब्जों से तुरन्त जड़कर स्थान पर लगा दिया है। यह एक बड़े विशाल भवन का द्वार है ऐसा प्रतीत होता है कि यह अवश्य ही किसी धनिक शौकीन नागरिक का होगा। इस बड़े गृह के कमरे बड़े सुन्दर प्रतिभा-सम्पन्न चित्रों से सुशोभित हैं। यह प्रायः चौथे पाम्पीअन ढंग के हैं और इसकी भोजनशाला की एक भीत में किसी चतुर चित्रकार के अद्भुत चातुर्य का प्रमाण स्वरूप ट्रोजन युद्ध का चारु चित्र देखकर हम चकित रह जाते हैं। उपवन में भी इसी सांचे वाले तरीके से १८५४ वर्ष पूर्व के जो वृक्ष पौधे इत्यादि थे वही ला ला कर लगा दिये हैं जिससे वह बहुत कुछ प्राचीन ढंग का हो गया है। पुरातत्त्व शास्त्र की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दृष्टि से पाम्पीआई के खोदने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमें रोमन राज्य के प्रान्तिक जीवन का वृत्तान्त पता लगता है। सिसरो, होरेस, जूवनल, स्पन्यका प्रभृति बड़े २ लेखकों ने हमें स्वयं रोम राजधानीका तो विस्तृत वर्णन तथा वहां की जनता का जीवन वृत्तान्त बहुत कुछ दिया है, परन्तु उन्हें प्रान्तों के विषय में लेखनी उठानेका एक प्रकार से क्षोभ था इसी से इस विषय में उनकी मूकता का निरूपण होता है क्योंकि जो वस्तु जिसको रुचिकर न हो वह उसके विषय में कुछ विस्तार भी नहीं करता। चूंकि उन्होंने रोम के अतिरिक्त किसी और स्थान को कम से कम वर्णित तो किया है अतः हमारे लिये रोमन राज्य के पाम्पीआई सदृश किसी छोटे नगर का जीवन वर्णन करना यदि वह पुनरुज्जीवित न हो सक्ता बड़ा कठिन था।

पाम्पीआई की इस खोज ने हमें उन सब विद्वानों की चुप की कमी का पूरा पूरा बदला दे दिया। यदि पुराने खण्डहरों के बीचमें थोडी देर घूम लो तो उससे कितना ही अधिक पुराने छोटे नगरों के रहन सहन के विषय में पता लग जाता है। वे बहुधा अपनी राजधानी के रहन सहन के ढंग तथा मन्दिरों मूर्तियों और फैशनों को ही आदर्श रुप रखकर अपने जीवनों को ढालते थे।

पाम्पीआई के सार्वजनिक भवन उसकी परिमित सीमा के अनुसार कुछ अधिक ही थे। उसका प्राकृतिक स्थान आदर्श स्थान था। वहां पर शीत काल थोड़े ही समय तक रहता था, वसन्त और हेमन्त ऋतु ही प्रधानतया राज्य करती थीं। ग्रीष्म का प्रचण्ड कोप भी न्यून था। यद्यपि प्रातःकाल गरम होता था तो भी १० बजे के समय तक ठण्ठी वायु के झकोरे आने लगते थे और ऋतु आनन्ददायी हो जाती थी। रात्रिमें तो सदा ही शीतल समीर बहता रहता था। यदि रोम और नेपल्स की गरमी की इससे तुलना की जाए तो कोई आश्चर्य्य नहीं होता कि रोमन लोगों को यह सामुद्री नगर जो कि मानों राजधानी का छोटा प्रतिबिम्ब ही था क्यों इतना प्रिय था? लगभग २०००० की जन संख्या थी, इस में बड़े २ बंगले तथा कोठियां थीं जो कि रहने वालों की अपनी २ बनाई हुई थीं। इनमें धनवान मनुष्यों के कुटुम्बों के अपने रहने के कई घर होते थे। प्रायः सारा का सारा मुहल्ला उनका ही होता था। मामूली लोगों ने अपने घरका सामना सड़क वाला हिस्सा दुकानों के लिये किराये दे रक्खा था जिससे काफी किराया आता था। पाम्पीआई वालों को गृहस्थ जीवन शान्तिमय रुचिकर था अतः वह अधिक एकान्त प्रिय थे। अधिकांश गृहों के द्वार गलियों में ही थे। उनमें आंगन होता था। वे लोग घर में बहुत से भिन्न २ हिस्से बनाते थे जैसे कि अलग २ ऋतु में भिन्न प्रकार के भोजन-शाला, अतिथि-शाला, तथा विश्राम-शाला इत्यादि। शयनागार में प्रायः खिड़कियां भी नहीं रखते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वहां सिवाय सोने के वे एक क्षण और नहीं बिताते थे। अधिकांश समय वे आंगन में ही रहते जिसमें छोटी सी वाटिका लगाते थे और छोटे फोहारे तथा झरने होते थे। इन्हें वे हृदय से प्यार करते थे। सुन्दरता तथा रमणीकता उनके गृहों की आराध्य देवी थी। गृहों में सफेद पत्थरों को चमक से बचाने के लिये नाना प्रकार के रंगों से मनोहर छाया कर देते थे। कमरों की वार्निश वा अंगीठियां भांति२ के बेल बूटे तथा अद्भुत पक्षियों के नाना चित्र और ऐसे ही अन्य सुचारु चित्रकारी से चित्रित थीं जो आजकल कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होती। स्थान २ पर सुन्दर मीनाकारी, चमकदार चूने का पलस्तर, और संगमरमर पर बनी हुई भिन्न चित्रकारी की चीज़ें इनकी मनोहरता को बढ़ाती थीं। कहीं कहीं दीवारों पर पुराने देवी देवताओं के लीला सम्बन्धी चित्र खिंचे हुए थे जो कि आजकल भी दर्शक को प्राचीन चित्रकला का स्वाद चखाते हैं। कहीं २ पर पीतल और कांसी की बनी हुई सुन्दर मूर्तियां रक्खी हुई हैं। थोड़े से शब्दों में हम कह सक्ते हैं कि यह धनवान पाम्पीआई निवासी सुखी जीव थे, वह अपने जीवन को सुखमय बनाना जानते थे।

हमने अधिकांश धनिकों के जीवन ढंग का वर्णन पाठकों के सन्मुख रक्खा है किन्तु वहां पर निर्धन दीनों तथा परिश्रमी जनों का भी काफ़ी समूह था। पाम्पीआई व्यवसायिक नगर भी था। सामुद्रिक व्यवसाय के अतिरिक्त वह फलों और मदिरा के व्यवसाय का केन्द्र था। वहां की चटनियां विख्यात थीं। वहां पर दुकानों के अतिरिक्त भारत वर्ष की भांति भिन्न २ प्रकार के बेचने वाले फेरीवाले भी घूमते थे जिनको "फ़ोरम के आदमी" के नाम से पुकारते थे।

समय आवेगा कि दीनों के गृहों का भी उद्घाटन होगा क्योंकि उनके रहन सहन रीति-रिवाजों से हम अभी अपरिचित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके अपने होटल होते थे जहां केवल मदिरा ही नहीं बिकती थी वरन कई प्रकार की गरम चाय के ढंग की चीज़ें भी मिलती थीं इनका रूपरंग अभी अनिश्चित है। यह होटल प्रायः बाजारों के कोनों पर ही होते थे। उनके अगले भाग में संगमरमर का एक मेज़ लगा रहता था जिस पर कि गरम २ पेय पदार्थों के ग्लास रक्खे जाते थे पिछली ओर अलमारियें थीं जिनमें भिन्न भिन्न रूप और परिमाण के ग्लास रक्खे रहते थे।

पाम्पीआई भूतकाल का पाम्पीआई पंचत्व को जा कर मृत हो कर भी अब नवीन आविष्कारों से पुनरुज्जीवित हो रहा है, ज्वालामुखी ने मानों झपट कर उसे जीता ही निगल लिया था।

मनुष्य के लिये क्या दुर्लभ है? किन्तु फिर भी "हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ"।

स्मरण

ले०—श्री० जगन्नारायण देव शर्मा, कविपुष्कर

(दशपदी)

सत्यप्रतिष्ठित धर्म राष्ट्र का मंगलमय हो।
प्रजा रहे स्वाधीन न्याय निष्ठा की जय हो॥

तू जनता में स्वयं बीज शिक्षा का बोवे।
स्वाहा स्वधा सुकर्म आर्य गुरुता का होवे॥

सद्विवेक विश्वास वेद विद्या फैला दे।
नर से नारायण होने की कला बता दे॥

तुझे एक अद्वैत मान अविरल यश गावें।
सुख स्वतंत्रता सहित आत्म सत्ता को पावें॥

ऐ त्रिलोकशासक! तुझे नमस्कार शत वार हो।
तेरा केवल हे प्रभो! हम सब पर अधिकार हो॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पति का घर

अनुवादिका—श्रीमती शारदा कुमारी गोभिलीय

परिच्छेद

(२)

समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता यह सत्य है परन्तु वह मनुष्य का यथेष्ट उपकार करता है। समय के फेर से अश्रुमती भी धीरे २ पिता को भूलने लगी। नवीन २ संसार के सुखों में तथा अपनी ननदादि के साथ स्वामी के प्रेमादर में मग्न होकर उसका समय अच्छी तरह कटने लगा। उसकी माता भी छपरा त्याग कर कलकत्ते आ गई। अमूल्य बाबू ने अश्रु के विवाह समय जो ऋण लिया था वह अब चौगुना हो गया था। उनका घर बेचकर वह ऋण चुकाया गया, दश हज़ार के जीवन के बीमोंके अतिरिक्त एक पैसा भी वह नहीं छोड़ गये थे। इन रुपयों का कम्पनी के काग़ज़ से जो व्याज आता था उसी से अश्रु की मां का निर्वाह होने लगा।

इसी तरह एक बरस और बीत गया, इसके बीच में क्षेत्रमित्र के परिवार में अनेक परिवर्तन हुये, वे बदली होकर कलकत्ते चले गये। वहां जाने के बाद उनके दो भाइयों की मृत्यु हो गई।

एक रोज़ प्रभात को बुला कर क्षेत्रबाबू ने कहा'इतनी नवाबी करने से तो मैं तुम्हारा ख़र्च नहीं चला सकता। तुम्हारी पढ़ाई का ख़र्च, कपड़ा, भोजन यह तो मैं ज़रूर दूंगा परन्तु तुम्हारे दो दो बच्चों के दूध का ख़र्च यह तो भाई मैं नहीं दे सकता। बहू से कह दो कि वह अपनी मां के पास से यह सब खर्च मांग लिया करे, तुम्हारे श्वसुर तो बहुत रुपया छोड़ गये हैं। प्रभात ने चुपचाप सब बातें सुनीं और बाहर चला आया, आज प्रथमबार उसके हृदय पर चिन्ता की रेखा उत्पन्न हुई। इसी दुःख के साथ केवल एक अङ्क के लिये प्रभात दूसरी बार भी बी. ए. में फेल हो कर हतोत्साह हो गया। प्रभात ने बड़ी आशा की हुई थी कि बी. एल. पास करके मुन्सिफ़ हो जाऊंगा परन्तु इस वर्ष फेल होने से उसकी समस्त आशाओं पर पानी फिर गया। हो सकता है कि पिता फ़ीस भी देनी बन्द करदें। उसको दुःखी देख के अश्रु ने कहा—"कितने ही आदमी तो फेल हो जाते हैं उसके लिये इस तरह दुःखी होने की क्या आवश्यकता ? फिर से पढ़ो पास हो जाओगे।"

प्रभात ने दीर्घनिःश्वास ले कर कहा, "अब पढ़ने लिखने से काम नहीं चलेगा तुम लोगों के खाने पहिरने की भी तो चिन्ता करनी है, पिता और कितने दिनों तक हमें बैठा कर खिलाएंगे"। अश्रु ने पति की इस बातका अर्थ समझ लिया। उसने बलपूर्वक कहा—"जब तक मेरा एक भी गहना शेष रहेगा तब तक तुम्हारा पढ़ना नहीं छुट सकता।" उसकी बात पूरी होते न होते उसके छोटे देवर (प्रभात के सौतेले भाई) ने बाहर से आवाज़ देकर कहा—"भाबो ! अब तक बैठी बातें कर रही हो मां पूछतीं हैं कि आज क्या घर में झाड़ू नहीं दो गी, बिछौने नहीं बिछाओगी ?" अश्रु ने जल्दी से स्वामी से कहा- "जाओ बाहर जाकर मित्रों से बातें करो इस तरह दुःखी होकर घर में न बैठो। बीमार हो जाओगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाहर के घर से दुबारा फिर चिल्ला कर उसके देवरने आवाज़ दी "भाबी ! मां कहती है कि क्या तुम्हें सुनाई नहीं देता, नहीं कर सकती तो सीधी तरह कह सकती हो, चुप्पी साधने की क्या ज़रूरत है ?"

हाय अश्रु ! जिसकी सेवा के लिये सर्वदा दो दो दाई नौकर हाजिर रहते थे, उसे आज काम करने में जरा देरी होने पर इतनी ताड़ना। आज तुम्हारे वह स्नेहमय पिता कहां हैं जिन्होंने बड़ा घराना देख कर तुम्हारा इस घर में व्याह किया था ? परन्तु अश्रु ने काम करते हुए एक दिनभी मुंह नहीं फुलाया। पांच मित्रों के सामने उसके पिता ने गर्वपूर्वक जो कहा था (मेरी कन्या काम करने में आलसी नहीं है) श्वसुराल आकर पिता की उस गर्व पूर्ण बात को पूरा कर दिया। उसे कामसे डर नहीं लगता था वह तो सबों के आदर और सास श्वसुर की स्नेहमयी बातों की भिखारिणी थी।

तृतीय परिच्छेद

(३)

प्रभात ने इस बार बी.ए.पास कर पिता को बतलाया तो उन्होंने गम्भीर होकर कहा अच्छा हुआ, अब ला क्लास (कानून) में भर्ती हो जाओ, और साथ २ एक नौकरी भी करो, क्योंकि तुम्हारा तो अब पूरा परिवार हो गया। तीन लड़के लड़की बहू, इन सबके खाने पीने पहिनने की व्यवस्था तुम्हें ही करनी होगी। मैं तो अब नहीं कर सकता।

प्रभात दुःखी चित्त हो अपने कमरे में लौट गया। यह देख अश्रु ने कहा—"पास हो गये तब भी उदास क्यों हो ? मैंने तो कहा ही था कि इस बार निश्चय ही पास हो जाओगे, देखा, मेरी बात ठीक हुई कि नहीं। अब मुझे क्या इनाम दोगे, मालूम होता है इनाम देने ही के भय से मुंह फुला लिया है।" प्रभात चुप न रह सका, हंस पड़ा और दोनों हाथ फैला कर अश्रु को अपने हृदय से लगा लिया। अश्रु ने हंसते २ कहा, समझी, यही तुम्हारा इनाम देना है। प्रभात ने गद्गद् स्वर से कहा "अश्रु ! मेरे पास क्या है ? जिसे देकर मैं तुम्हारा ऋण चुकाऊं। मैं तो गरीब हूं।"

अश्रु ने कहा—"फिर वही बात, मैंने क्या तुमसे यही कहा था ?" यह कह कर वह जल भरे नेत्रों से स्वामी के मुख की ओर देखने लगी, प्रभात ने उसका मुख अपने हृदय से लगा प्रेम-पूर्वक चुम्बन किया, स्वामी के हृदय पर सिर रख अश्रु मन ही मन भगवान् से प्रार्थना करने लगी "हे ईश्वर ! मैं कुछ नहीं चाहती। मेरे हाथ का लोहा (बंग महिलाओं का सौभाग्य चिह्न) और मांग का सिंदूर मरण पर्यन्त बना रहे।"

प्रभात सुबह १० बजे तक तो ला क्लास (कानून) में पढ़ता और १० से ५ तक एक आफ़िस में काम करता। ४०) रु० में उसका खर्च चल जाता था। क्षेत्रनाथ के पांच, छै लड़के, दो तीन लड़की, लड़कों की बहू-बच्चे, एक नौकर, दो स्त्री पुरुष आप, इतने आदमियों के लिये वह इतने हिसाब से दैनिक खर्च को ऐसे देते थे कि उसमें से उनकी स्त्री और वह, दूसरे विवाह के लड़के लड़कियों के सिवाय और किसी को भी, शाक, भाजी आदि नहीं मिल सकती थी।

तीनों लड़के अपने परिवार के लिये आप भाजी इत्यादि रोज़की चीज़ें अपनी २ आय से मंगा कर खाते थे। भात और दाल पिता के पास से मिला करता था। प्रभात कुमार भी जब से ४०) मासिक वेतन कमाने लगा तब से उसके स्त्री बच्चों को भी कोई कष्ट नहीं रहा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसने भी अलग भाजी तथा बच्चों के दूध आदि की व्यवस्था कर ली। परन्तु अश्रु के हाथ में ख़र्च का भार रहने से वह अधिक ख़र्च कर डालती थी। एक रोज़ पति को हिसाब बतलाते हुये कहने लगी कि "आज भी मैंने बहुत भाजी आदि ले ली पर क्या करूं देवरों को दिये बग़ैर खाने की इच्छा नहीं होती, रोज़ २ देवर आ कर पूछते हैं, भाबी! आज क्या बनाया, क्या करूं इसी से उनके लिये पहिले ही से लेकर रखना पड़ता है।" प्रभात ने हंस कर कहा—"ऐसा तो होवेगा ही क्योंकि तुम्हारे पिता को भी तो ऐसी ही आदत थी वह भी तो चार आदमियों को खिला कर खुश होते थे।" पिता की बात का उल्लेख होते ही उसको सब पुरानी बातें याद आ गईं। पिता के घर वह किस तरह से पड़ोसियों के लड़कों को बुला कर खिलाया करती थी, कितनी तरह की मिठाइयें ज़बर्दस्ती उनके कपड़े से बांध देती थी। आज अपनी इस अवस्था से तुलना करते हुये उसे सब बातें स्वप्न सी मालूम हुईं। अश्रु रोने लगी, उसे रोते देख प्रभात ने कहा—"मास का वेतन तुम्हारे हाथ में दे देता हूं, जैसे तुम्हारी इच्छा हो ख़र्च किया करो, मुझे हिसाब देने की क्या ज़रूरत?" अश्रु ने आंसू पोंछ कर कहा "यदि आज पिता जीवित होते तो इतना कष्ट क्यों होता?"

दो बरस बाद प्रभात ने बी. एल. पास किया। आज उसे बड़ी खुशी हुई। अब उसे किसी बात की चिन्ता नहीं है, तीन साल वकालत करने से मुन्सिफ़ हो जावेगा। मुन्सिफ़ भी न हो तो न सही वकालत से ही यथेष्ट आय हो सकती है, अश्रुमती के साथ सलाह की, तर्क वितर्क हुआ॥

अश्रुमती ने कहा—"तुम्हें मुन्सिफ़ी करने की ज़रूरत नहीं, तुम वकालत करो।"

प्रभात ने कहा—"अभी वकालत करने में बड़ा झंझट है, मुन्सिफ़ी करने में कोई झंझट नहीं।" अन्त में अश्रु ने हंस कर कहा—"जो तुम्हारी इच्छा हो सो करो, परन्तु यह कहे देती हूं कि यदि विदेश नौकरी करने जाओगे तो मुझे भी साथ ले चलना होगा। मुझे छोड़ के नहीं जा सकोगे। तुम्हें छोड़ कर मैं एक दिन भी नहीं रह सकती।" प्रभात ने हंस कर कहा—"अच्छा यदि दो दिन बाद मैं मर जाऊं तब कैसे रहोगी?"

अश्रु ने दोनों हाथ से स्वामी के हाथ पकड़ कातर नयनों से उसके मुख की ओर देखते हुए कहा—"प्रभो! ऐसी बात न कहो, तुम्हारे पैर पड़ती हूं, प्रतिज्ञा करो फिर तो ऐसी बात न कहोगे?" प्रभात ने कहा—"आगे से नहीं कहूंगा।"

प्रभात के मुंह से उसके मरने की बात सुन कर इस प्रकार अश्रु क्यों सिहर उठी थी, उसका कारण यह था कि उसकी ननद अभी ६ महीने हुये विधवा हो गई थी। विधवा हो जाने पर उसे उसके सुसराल वालों ने निकाल दिया था। दो लड़के लड़की लेकर वह पिता के घर आ गई, अश्रु उसे कितना समझाती थी, कहती "तुम्हारे भाई हैं, पिता हैं, तुम्हें बच्चों की क्या चिन्ता?" वह कहती कि "बहू!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"जिसका स्वामी नहीं, उसका संसार में कोई अपना नहीं होता"। स्वामी को ननद की दुःख कथा सुनाते हुये अश्रु को रोना आ गया। प्रभात ने भी आंसू पोंछते हुये कहा—"तुम उसका और बच्चों का ध्यान रखा करो, उन्हें कोई कष्ट न होने पावे।"

छः महीने के बीच में मित्र परिवार में दो दुर्घटनाएं हुईं, एक तो प्रभात की विमाता विषपान करके मर गई। दूसरी घटना उसकी बहन बीस साल की अवस्था में विधवा हो गई थी।

(क्रमशः)

❀ ईश प्रार्थना ❀

लेखक—श्रीयुत "श्रीनिधि"

दयामय ! मेरे मनमन्दिर में, दीपक बनके आ जावो।
जो बिछुड़ा आज है तुम से, उसे दर्शन दिखा जावो ॥ ध्रुव ॥

❀

मचलतीं आंखें ये मेरी, कलपतीं बिन तुम्हें देखे।
हुई हैं लाल रो रो कर, उन्हें प्रभु आप मिल जावो ॥१॥

❀

तुम्हारे नेह जल के हित, कलपता प्यासा यह चातक।
यहां दो बूंद जल अब तो, भला घनश्याम दे जावो ॥२॥

❀

नहीं है चाह धन दौलत, का मैं भण्डार बन जाऊं।
मैं तेरा प्रेम-भिक्षुक हूं, मुझे दे भीख अपनावो ॥३॥

❀

नहीं है चाह भवसागर से, भगवन् ! पार हो जाऊं।
मुझे निज प्रेम सागर की तरङ्गों में डुबा जावो ॥४॥

❀

नहीं है चाह जन धन की, नहीं भूपों के भोगों की।
मेरे तन मन में बस, "श्री निधि" तुम्हीं अब एक रम जावो ॥५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कवि और पंडित

लेखक—श्रीयुत चमूपति जी एम० ए० आर्य्यसेवक

पंडित जी बड़ी लम्बी यात्रा से आ रहे थे। रात गाड़ी में बैठे बीती। टिकट इंटर का लिया था परन्तु भीड़ का यह हाल कि इन्हें तो बैठने को स्थान मिल ही गया था, इन के कई भाई, पंडितों का भाई कौन होता है, सहयात्री कहिये खड़े खड़े चले आए थे। ज्येष्ठ का महीना! गर्मी के दिन! जान निकली जाती थी। प्यास ही नहीं पानी के गिलास पर गिलास उंडेले जा रहे थे। निकम्मी जट्टी के ऊन बेलने की कहावत है। निकम्मा पण्डित पानी न पिये तो क्या करे? बर्फ वाला आता, लेमोनेड, बर्फ, हिन्दू सोडा, मुसलमान सोडा, हिन्दू बर्फ मुसलमान बर्फ, कह जाता। यार लोग बोतल लेते, गट गट उड़ाते। पण्डित जी के मुंह में भी पानी भर आता। परन्तु लम्बे लम्बे तिलक का ध्यान आते ही रुक जाते। जी बहलाने को कहते भ्रष्टाचार है। इसी तिलक ने बैठने को जगह दिलवाई थी। उस का तिरस्कार कैसे करें?

एक कवि साथ थे। वह मौजी थे। पंडित जी से उनकी जान पहिचान थी। जान पहिचान ही नहीं! कभी गहरी छनी प्रतीत होती थी। वह सारा रास्ता मौज करते जाते थे। पण्डित जी से भी बोलने से न चूके। कहा—महाराज! शुद्धि के दिन हैं। और बेचने वाला कहता है 'हिन्दू सोडा, हिन्दू बर्फ'। हिन्दू न सही मलकाना ही समझिये। गङ्गा जल से शुद्ध कर लीजिये। वह साथ न हो तो हुक्का ले दूं? उस की एक फूंक मार दीजिये। सोडा, लेमोनेड, बर्फ, सब शुद्ध हो जायगा। इनकी पीढ़ियां तक शुद्ध हो जाएंगी।

पण्डित जी हंस पड़े। कहा 'शुद्धि का अच्छा तुम ने खाका उड़ाया है। हुक्के की खूब कही। यह भी तो आज मोहिनी मन्त्र है। आगरे में इसी की झाड़ फूंक है।'

कवि—'तो इसमें हानि ही क्या है? आर्य्यों ने हवन चलाया था। सनातनियों के हुक्का चलता था। अब दोनों इकट्ठे हैं। अर्थात् हिन्दू जाति का ऐक्य है। सिक्ख बिगड़े ही इसी लिये हैं कि इस हुक्का यज्ञ में उन का स्थान नहीं'।

दो तीन सिक्ख बैठे थे। वह हंस पड़े। पण्डित जी तो हँस ही रहे थे। मुसलमानों से न रहा गया। वह भी हँस पड़े। सारी गाड़ी हँस पड़ी।

समय गुजरता गया। गाड़ी चलती गई। इस चहल पहल में गर्मी भी हँस उठी। प्रातः काल हुआ। कुली ने कहा 'मलकवाल उतरने वाले उतरो'। यहां गाड़ी हलकी हो गई।

कवि बाहर निकला, अन्दर आया और उस ने पण्डित जी से कहा—हम ने टिकट यहां तक का लिया था। अब आगे थर्ड का ले लेते हैं।

पण्डितजी—टिकट तो हमारा भी यहीं तक का है। पर भाई! सारी रात जागते आए हैं। अब जरा विश्राम करने दो।

यह कहते २ इंटर के टिकट के दाम दे दिये और बिछौना बिछा कर सो रहे।

टिकट शोरकोट का मिला था। वहां से और टिकट लेना था। कवि जी को बुलाया। कहा—पब्लिक का धन है क्यों मुक्तहस्त व्यय करें। यहां से थर्ड का टिकट लो। और अब मील रह गए थे ख़ैर से चार।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गाड़ी थर्ड की भी खाली थी। पण्डित जी ने वहां भी बिछौना कराया। थर्ड को इंटर बना लिया।

कवि जी भागे २ आए और बोले, वह भीड़ आई! वह भीड़ आई! वह भीड़ आई। कहते हैं कहीं मेला था। वहां से जनता टूट पड़ी है। इतने में गाड़ी में फिर कोहराम मच गया। पण्डित जी को बिछौना लपेटना पड़ा। सिकुड़ कर बैठना पड़ा। कहा—

'कवि जी! देखा, कैसे असभ्य हैं? कैसे ग्रामीण हैं'?

यह कहते २ पण्डित जी ने कपड़े समेट लिये और साथ के यात्री से अन्तर रख कर बैठे।

यात्रियों के पास ढोल था। वंशी थी। खड़तालें थीं। वह लगे अपने ग्रामीण गीत गाने और बजाने। उन का उत्साह, उन का उल्लास, उन के लाल २ चेहरों, उभरी और उभरती हुई नाड़ियों, सजीव आलापों और स्फूर्तियुक्त चेष्टाओं से व्यक्त हो रहा था।

पण्डित जी ने माथा पकड़ लिया।

कवि जी उठे और ढोलक वाले के पास जा बैठे। वंशी वाले से वंशी ले ली। उसे बजाया और ऐसे तल्लीन हुए कि ग्रामीण गीत का यह भी एक भाग हो गए।

स्टेशन आया। यात्री उछल उछल कर उतरने लगे थे। कवि भी उनके साथ उछलता फिरता था। पण्डित जी सब से पीछे उतरे। नाक भौं सिकुड़ी हुई। जब स्टेशन खाली हुआ उन के मुख पर मुस्कान के चिन्ह प्रतीत होने लगे।

कवि—'खैर! आप अच्छे हैं। मुझे तो वैद्य बुलाने की चिन्ता हुई थी'।

पण्डित—'तुम्हें तो जैसे अपने सगोत्र भाई मिल गए हों'।

कवि—'भाई क्यों? मेरी आत्मा। मेरा अपना आप। कविता का स्थान उछलते हृदयों में है। पाण्डित्य का हिलते मस्तिष्कों में। आप व्याख्यान-वेदिकाओं पर गर्जिये। आपकी दिग्विजय वहां से होगी। निस्तब्ध, नीरव, निर्निमेष समाज आप के घोर गर्जन को सुनेगा और उसके आगे सिर नवायेगा। कवि कोलाहल की लय में गायेगा। कलह की तान पर सिर हिलायेगा। नदियों के गीत में कौनसा ताल है? पक्षियों के स्वर में कौनसा लय है? वही ताल वही लय इन ग्रामीण गीतों में है। यहां नाड़ियां हिलती हैं। रुधिर उमड़ता है। हृदय उछलते हैं। अर्थात् जीवन है'।

पण्डित—'तो भाई! उपदेशक तो कवि हैं, पण्डित नहीं। हम सज लेंगे, सजा लेंगे। बनना और बनाना आप का काम है। जीना और जिलाना आप का काम है'।

आंखें खोल कर देखो—उफ़! इनको क्या हो गया? कहीं कुकुड़े तो नहीं पड़ गये? दृष्टि निर्बलता की शिकायत तो नहीं? यदि है तो "सुर्मा अन्सीर" का इस्तेमाल करो। इसको चीफ केमिकल आफिसर और पंजाब प्रांतिक कांग्रेस की शिल्प प्रदर्शिनी की कमिटी ने स्वीकार किया है। बड़े २ डाक्टरों और रईसों ने इसके इस्तेमाल को पसंद किया है।

हर एक ऋतु और हर एक उम्र के मनुष्यों के लिये अमृत तुल्य लाभदायक है। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है। मूल्य प्रति शीशी १।)

मिलने का पता—सृष्टि बुक डिपो, मुतसद्दी मल स्ट्रीट, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

आगरा शुद्धिक्षेत्र में आर्य्य समाजियों की धर्म शिथिलता।

सम्पादक "वैदिक मैगेज़ीन" अपने जुलाई के अंक में आगरे में आर्य्यसमाजियों का शुद्धि सम्बन्ध में कार्य्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं, कि ऐसा मालूम होता है कि आगरा आर्य्यसमाज की श्मशान भूमि बनेगी क्योंकि हमें एक सज्जन ने बतलाया है कि यद्यपि ऋषि दयानन्द और उनके बाद उनके अनुयायियों ने बराबर इस बात का खण्डन किया है कि गंगाजल द्वारा पाप मोक्ष होते हैं तथापि आगरे में आर्य्यसमाजियों ने मलकानों के ऊपर गङ्गा जल छिड़क कर शुद्ध करने में भाग लेकर इस बात का समर्थन ही किया है कि गङ्गाजल में पाप नाशक शक्ति है। इसके अतिरिक्त इसी आगरे की शुद्धि के सम्बन्ध में हिन्दुओं के साथ बहुत मित्रता दिखलाने के जोश में आर्य्यसमाजियों ने माला भी पहिनी और यदि यह जनश्रुति ठीक हो तो—मूर्तियों के आगे शिर भी झुकाया। परन्तु सबसे बढ़ कर बात जो वहां हुई वह यह कि हुक्का पीने की बुरी बान को हटाने के स्थान में उन्होंने हुक्के की पंचायतें बनाने में सहायता दी और शुद्ध हुए मलकानों और हिन्दुओं के बीच में जो परस्पर हुक्के की छुआछूत थी उसको हटाने का यत्न किया।

इस प्रकार इन तीन हृदय वेधी बाणों की उस सज्जन ने जिसका ऊपर उल्लेख हुआ है—हमारे और हमारी समाज के ऊपर वर्षा की और हमें शिर झुकाना पड़ा। आगरे में काम करने वाले अपने भाइयों के विरुद्ध जो यह दाम्भिकता और धर्म विरुद्ध चापलूसी के दोष आरोपण किये गये हैं उनमें अत्युक्ति बहुत है यह मानकर भी हमें यह अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिए कि हम में धार्मिक भावों की न्यूनता है। अब तक तो केवल आर्य्यसमाज ही था जिसके ऊपर लिखा था हिन्दू जाति का "प्रवेश द्वार"। और जब कि दूसरे दर्वाजों पर चाहे वह बड़े २ फाटक ही थे—बड़े २ अक्षरों में लिखा था कि "निकल जाओ" उस समय एकमात्र आर्य्यसमाज ही था जो कि हिन्दूसमाज की ओर से बाहें फैला कर लोगों को अपने मध्य में प्रविष्ट करने के अलौकिक दृश्य को दिखा रहा था। वे शुद्ध किये गये अथवा दूसरे मतसे आर्य्य बनाये गये लोग अपने स्वतंत्र धार्मिक विचारों के अनुसार आर्य्यसमाजी या सनातन धर्मावलम्बी बन जाते थे परन्तु आर्य्य समाज उन्हें अपने सिद्धान्तों के अनुकूल दीक्षा और उपदेश देकर अपने कर्तव्य से च्युत नहीं हुआ। आर्य्य समाजियों ने कभी धार्मिक सिद्धान्तों में शिथिलता नहीं की। न कभी 'नमस्ते' की जगह 'राम राम' की। उनका विश्वास दृढ़, निश्चल और निष्कम्प ही रहा, परन्तु आगरे ने यह सब भाव बदल दिये।

हमने अब तक आगरे की शुद्धि का पक्ष ही लिया है और हिन्दुओं से भिन्न लोगों के आक्षेपों से उसे सुरक्षित रखने के लिये सफे के सफे लिख डाले हैं, हम अब भी अपने विचारों पर टिके हुये हैं क्योंकि जब भाई भाई को गले लगावे तो इस से बढ़ कर और क्या हो सक्ता है? अछूतपन चाहे किसी ने किसी पर लगाया हो परन्तु है यह कलंक। मनुष्य का मनुष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होना ही सिद्ध करता है कि वह शुद्ध पवित्र है! वह अछूत नहीं। आर्य्य समाज ने अछूतपनके माथेकलंक को हटाने में जो भाग लिया है उसके लिये वह धन्यवाद पात्र है + + +

वट वट कर लोहे और स्टील की ½ इञ्च मोटी जंजीरों को तोड़ डाला है।

२. पहिले उसने आध इञ्च चौपहलू लोहे की छड़ियों को अपने मुंह में दबा कर घुमा २ र एक गोलाकार बना दिया, फिर उसी ोलाकार को उमेठ २ कर चक्कर पर चक्कर देकर छल्लेदार बना दिया।

३. उसने अपने दांत से लोहे की कील की नोक काट डाल कर उसे एक मुट्ठी मार कर ही एक इञ्च मोटे तख्ते के भीतर घुसेड़ दिया।

४. उसने चार इञ्च मोटी और ढाई इञ्च चौड़ी रेल की पटड़ियों को अपने सिर के नीचे दबाकर मोड़ दिया।

उपरोक्त कमेटी को सन्तोष है, कि यह पहलवान इन खेलों को अपने अलौकिक शारीरिक बल तथा उत्तम वैज्ञानिक शिक्षा और लोकोत्तर नस नाड़ियों की दृढ़ता द्वारा करता है।

बत्तीस वर्ष तक सोती हुई स्त्री

स्वीडन के एक छोटे से गांव में एक स्त्री के लगातार ३२ वर्ष तक सोती रहने का वर्णन किया जाता है। कहते हैं कि बहुत वर्ष हुये एक स्त्री जिसका नाम कैरोलीन कार्लसडेटर था पाठशाला में पढ़ते २ अपनी पुस्तकों के ऊपर ही सो गई। उस समय उसकी आयु १३ वर्ष की थी। परन्तु जब वह फिर जगी तो उसका ४५वां जन्म दिन बीत चुका था। बचपन से एक दम अधवयस् उम्रमें आ जाना हममें से किसी को भी पसन्द न होगा, परन्तु वह स्त्री इसके कारण बिलकुल भी खिन्न नहीं प्रतीत होती। वह कहती है कि मैं तो ऐसी ही फुर्तीली और प्रसन्न हूं मानों कुछ हुआ ही नहीं और मैंने केवल एक रात्रि ही आराम किया हो। उसकी प्रबल इच्छा यही है कि इस विचित्र घटना से पूर्व उसने जहां पर अपना पठन समाप्त किया था उसके आगे फिर पढ़े।

उसको जगाने के सब तरीके और परिश्रम व्यर्थ हुये थे, परन्तु वह अब क्यों जग पड़ी यह इतनी ही विचित्र बात है जितनी कि यह बात कि वह क्यों सो गई थी?

वैज्ञानिक संसार

रसायनिक शुद्ध जल

यदि जल को भाप बना कर उड़ा दिया जाय और उसे पुनः ठण्डा करके जल बना लिया जाय—जिस प्रकार कि अर्क निकालते हैं—तो हमें शुद्ध पवित्र जल मिल जाता है जिस में से कि सब प्रकार के घुले हुए पदार्थ तथा अन्य प्रकार का मल पीछे रह जाता है। जिन दिनों किसी नगर में कोई छूत वाला रोग फैला हो तो डाक्टर लोग प्रायः कहा करते हैं कि जल को उबाल कर पीना चाहिये क्योंकि उबालने से जल में रहने वाले रोग कृमि नष्ट हो जाते हैं। अर्क निकले हुए जल में भी—जिस को distilled water कहते हैं—इसी प्रकार यह सब रोगोत्पादक जीव नाश हो जाते हैं। साधारण रीति से विचार करने पर यह अनुमान हो सक्ता है कि जल का अर्क जिस में से कि और भी घुले हुए पदार्थ निकल चुके हों स्वास्थ्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के लिये केवल गरम करके ठण्डे किये हुए जल की अपेक्षा अधिक लाभकारी होगा। परन्तु वैज्ञानिकों का मत है कि इस प्रकार रसायनिक रीति से शुद्ध किया हुआ जल यदि प्रति दिन पिया जाय तो यह मनुष्य शरीर को निर्बल बना देता है, क्योंकि इस में ओषजन और अमलजन गैस के अतिरिक्त और कुछ घुला नहीं रहता। अर्क खेंचने में जल में घुले हुए समस्त धातव-लवण (metallic salts) पीछे पतीले में रह जाते हैं और यह सब लवण शरीर के लिये अत्यन्तावश्यक हैं, वरन अपरिहार्य हैं। मनुष्य शरीर की जीवन क्रिया में धातव लवण लगातार ख़र्च होते रहते हैं, अतः हमें प्रतिदिन इन का नया संग्रह अपने शरीर में लेना चाहिये। जिस का सब से उत्तम तरीका जल द्वारा पान करना है। अतः हम यदि रसायनिक शुद्ध जल पीते हैं तो शरीर के भीतर के पहिले के लवण तो ख़र्च कर डालते हैं और नवीन से उन के स्थान की पूर्ति करते नहीं। इसका परिणाम अन्य बातों के अतिरिक्त तपदिक भी होता है।

अग्नि लेख को नष्ट नहीं कर सक्ती

चतुर से चतुर मुजरिम भी जो कि यह समझता है कि अपने विरुद्ध सर्व प्रकार के सबूत को—जो कि उसके अपराध को सिद्ध करते हों, लेख्य पत्र इत्यादि को जलाकर नष्ट कर सक्ता है—आधुनिक विज्ञान के फन्दे से बच नहीं सक्ता। ऐसे पत्र भी जो कि अग्नि द्वारा जल कर कोयला बन गये हों विज्ञान की सहायता से अपनी कथा कह सुनाते हैं।

कुछ समय हुआ एक बड़ा आवश्यक लेख्य पत्र भूल से अग्नि में डाल दिया गया। जब इस हानि का ज्ञान हुआ तो उस समय इस का सिवाय एक काले जले हुए तुरन्त भंग हो जाने वाले पत्र के अतिरिक्त जिस पर लिखा हुआ बिलकुल नहीं पढ़ा जाता था और कुछ शेष न बचा था।

पत्र स्वामी को यद्यपि कुछ विशेष आशा न थी तो भी उस ने इस विद्या में निपुण एक पण्डित की सहायता मांगी। चार सप्ताह पीछे यह पण्डित वापिस आया और स्वामी को उस जले हुए पत्र का बड़ा शुद्ध फ़ोटो लाकर पेश किया, जिस में कि प्रत्येक शब्द इतनी ही सुगमता से पढ़ा जा सक्ता था जितना कि लिखने के दिन।

इस पण्डित को यह पता था कि फ़ोटो लेने की प्लेट पर प्रकाश के अतिरिक्त अन्य चीज़ें भी प्रभाव डालती हैं। उस स्याही में जिस से यह पत्र लिखा गया था कुछ ऐसे रसायनिक पदार्थ हैं जो कि यद्यपि आग के मध्य में से निकल चुके हैं परन्तु तो भी उनकी कुछ न कुछ शक्ति अवश्य शेष रह जाती है।

उसने दो बड़े सुग्राहक प्लेट के बीच इस जले हुए पत्र को रख दिया। एक सप्ताह पीछे देखने पर पता लगा कि प्लेट पर कुछ चिह्न तो बन गये हैं, परन्तु वह स्पष्ट न थे। निराश न होते हुए उसने दूसरी बार तीन सप्ताह के लिये उसे प्लेट के भीतर रखा और उसे पूरी २ सफलता प्राप्त हुई।

(टिट-बिट्स)

आकाश विज्ञापन।

आजकल के वाणिज्य का आधार विज्ञापन हैं। जो कोई भी खूब चटकीले, भड़कीले, मनोहर तथा अपनी शब्द रचना से चित्त को आकर्षण करने वाले विज्ञापन देता है, वही अपनी वस्तुओं को अधिक बेंच सक्ता है। अतः प्रत्येक शिल्पकार अथवा पदार्थ निर्माता को अपनी बनाई वस्तु को अधिक मात्रा में बेचने के लिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विज्ञापन कला का सहारा लेना पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य मनोहर और चित्तोपहार विज्ञापन स्वयं नहीं बना सक्ता अतः योरोप अमरीका इत्यादि देशों में ऐसे भी व्यक्ति मिलते हैं जिन का व्यवसाय केवल विज्ञापन रचना ही है। इन प्रान्तों में अन्य विषयों की तरह विद्यार्थियों को विज्ञापन देने की विधि इत्यादि सिखलाने के लिये नियमित कालेज हैं, जहां तीन तीन वर्ष की नियमित पाठ प्रणाली (Courses of study) है।

इन कालिजों में शिक्षा पाने के पीछे उन्हें बी० ए०, एम० ए० की भान्ति डिग्री दी जाती है। इन विज्ञापन-कला-विशारदों का यही उद्देश्य रहता है कि वह विज्ञापन देने के नये नये तरीके ढूंडते रहें। विज्ञापन देने वाली एक कम्पनी ने अमरीका प्रदेश में विज्ञापन देने की एक नवीन रीति का रिवाज चलाया है जो कि किंचित हमारे पाठकों के ध्यान में भी न आई होगी। इसका मनोहर विवरण आज हम अपने पाठकों के मनोरञ्जन के लिये साईन्टिफ़िक अमेरीकन (Scientific American) के आधार पर यहां देते हैं।

अब तक तो समाचार पत्रों में, नगर के उन स्थानों में जहां जनता का अधिक आना जाना हो, मकानों की दीवारों पर अथवा रेलके स्टेशनों पर बड़े बड़े कागज़ के अथवा लोहे की चादरों पर बहुरंग में पक्के तौर से पेण्ट किये हुए विज्ञापन दिये जाते थे, परन्तु अब आकाश में विज्ञापन देने का नवीन तरीका प्रचलित हुआ है। इससे प्रायः एक मील ऊंचे और पचास पचास फुट मोटे अक्षर, जो कि स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकें और बड़ी देर तक स्थित रह सकें, आकाश में लिखे जाते हैं और सहस्रों मनुष्यों का ध्यान एक बारगी ही अपनी ओर खैंच लेते हैं। इस आविष्कार के रचयिता मेजर सैवेज ने १९११ में इस की कल्पना की थी, जब कि उन्होंने देखा कि हवाई जहाज़ के अंजन से निकला हुआ धुवां सायंकाल के समय निर्मल आकाश में एक सुन्दर रेखा खैंच रहा था। उद्देश यह था कि इस प्रकार का धुआं उत्पन्न किया जाय, जो कि वायुमण्डल में विघ्न बाधा रहित लटका रहे और जिसका निःसरण हवाई जहाज़ के नाविक के सर्वथा आधीन हो। मेजर सैवेज चिरकाल तक गुप्त रीति से आकाश और क्रिया भवन में अपने तजुरुबे करते रहे-जो महा युद्ध के समय बन्द करने पड़े-और अन्त में १९२० के ग्रीष्म काल में अपने उद्देश की पूर्ति में सफल हुए। इस आविष्कार में किन २ रसायनिक क्रियाओं का उपयोग होता है और किस प्रकार गैस का निःसरण स्वाधीन रक्खा जाता है यह आविकर्त्ता ने गुप्त ही रक्खा है।

डाक्टर सिम्मन-जो कि नियुयार्क युनिवर्सिटी में रसायनशास्त्र के प्रोफ़ैसर हैं-का विचार है कि रसायनिक क्रिया जो कि इस योजना में काम आती हैं बड़ी सरल हैं। यह दो प्रकार की अदृश्य गैसों के मिलने से एक रूप दृश्य धुयें की उत्पत्ति द्वारा सिद्ध किया जा सक्ता है। हाईड्रोक्लोरिक एसिड (नमक का तेज़ाब भाफ़ के रूप में) और अम्मोनिया (गास के रूप में) दोनों अदृश्य होते हैं, परन्तु इनके मिलने पर नौसादर बनता है जो कि भाफ़ के रूप में बड़ा गहरा धुआं देता है। यह दोनों पदार्थ तरलरूप में भी बनाये जा सक्ते हैं जो कि बाहर निकलने पर तुरन्त गेस बन जाते हैं। इन दोनों को तरल अवस्था में यदि विशेष प्रकार के बर्तनों में रखकर हवाई जहाज़ में रख इंजन के हवा-विसर्जन करने वाले पम्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(Exhaust pump) से सम्बन्ध कर दिया जाये तो सब काम ठीक २ हो सक्ता है। यह पम्प हवा को खैंचेगा जो कि नमक के तेजाब को खैंचेंगी और यह अम्मोनिया से मिलकर नोसादर की भाफ़ बनायेगा और पम्प इस भाफ़ को आकाश में छोड़ता जायगा। इस नौसादर की भाफ़ का विसर्जन पम्प को इच्छानुसार चलाने और बन्द कर देने से नितान्त वश में हो सक्ता है। इस भाफ़ से मील मील ऊंचे अक्षर बड़ी सुगमता से आकाश में लिखे जा सक्ते हैं और यह १५ मिनट से लेकर एक घण्टे तक बिना बिगड़े आकाश में स्थित रहते हैं। एक अक्षर के लिखने में इतनी गैस लगेगी, जो कि १०० फुट लम्बे, १०० फुट चौड़े और ३० फुट ऊंचे बर्तन में समा सके। इस लिए यह पदार्थ तरल अवस्था में ही आकाश में ले जाये जा सक्ते हैं।

जिस दिन यह विज्ञापन देना हो आकाश निर्मल और नीला होना चाहिये और दिन शान्त हो, विज्ञापन कम से कम दस सहस्र फुट की ऊंचाई पर लिखना होगा, ऊपर यदि मन्द२ समीर चलता हो तो कोई हर्ज नहीं, हां बड़े २ झोंके नहीं होने चाहियें। जहाज़ की गति जितनी भी तेज़ हो उतना अच्छा है क्योंकि इस से अक्षर साफ़ २ लिखे जाते हैं।

इस काम के लिये नाविक बड़ा होशियार और दक्ष होना चाहिये और इस कार्य में विशेष शिक्षा और अनुभव प्राप्त हो। उसको अक्षर उल्टे, सीधे और स्पष्ट लिखने होंगे, जहाज़ और गैस विसर्जन दोनों की गति को एक साथ ही आधीन रखना होगा, बड़ी फुरती से मुड़ना होगा और वायु, सूर्य और वायु-मण्डल की अन्य बदलती हुई अवस्थाओं को भी ध्यान में रखना होगा।

हमारी मञ्जूषा

वैदिक धर्म की विशेषता—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लेखक, और प्रकाशक स्वाध्याय मंडल, औंध (ज़िला सितारा)। पृष्ठ संख्या ८० मूल्य ॥)

पंडित सातवलेकर जी के नाम से हमारे पाठक भली प्रकार परिचित है। आपका वेद विद्या प्रेम और उसके ज्ञान को सार्वजनिक बनाने का यत्न सर्वथा प्रसंशनीय है। वैदिक ज्ञान को अनुसंधान और स्वाध्याय द्वारा ठीक २ समझनेका यत्न करना और फिर उसका प्रचार करना यही आज कल आपके जीवन का लक्ष है। प्रति वर्ष श्री पूज्य पंडित जी की लेखनी द्वारा वेद विषय पर कितनी ही पुस्तकें प्रकाशित होती हैं जिनके पाठ से वेद के श्रद्धालु भक्तों को बड़ा लाभ पहुंचता है। उपरोक्त पुस्तक भी आपके इसी स्वाध्याय का फल है। इस में आपने वैदिक धर्म सम्बन्धी अनेक विषयों पर जैसा कि वैदिक धर्म की विशेषता, उसका स्वरूप, आजकल के विचारों से उसकी तुलना, आत्मा का अनुभव, सत्य, धन, यश, मित्रता का आदर्श इत्यादि-बड़ी सरल और हृदयग्राही भाषा में १४ निबन्ध दिये हैं। इन के पाठ से मन को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है और वैदिक धर्म में हमारी श्रद्धा अधिक दृढ़ होती है। पुस्तक प्रत्येक वैदिक धर्मी के पढ़ने और मनन करने योग्य है।

वेद में रोग जंतु शास्त्र—लेखक और प्रकाशक वही पंडित जी पृष्ठ ३२ मूल्य =)

इस छोटी सी पुस्तक में लेखक ने यह बतलाने का यत्न किया है कि आज कल की जो रोग जन्तु विद्या है उसकी कल्पना सर्वथा नवीन नहीं, यद्यपि आज कल उसका खूब विस्तार हुआ है। आपके विचार में इस कल्पना का आधार कितने ही वेद मन्त्र हैं और उनकी पुष्टि ब्राह्मण वाक्यों से होती है। वेद में रोग जन्तुओं की कल्पना किस प्रकार है, उनके कितने प्रकार हैं, किस प्रकार वह उत्पन्न होते और नाश होते हैं इत्यादि विषय पर लेखक ने बड़े महोरञ्जक और शिक्षाप्रद विचार प्रगट किये हैं। पुस्तक तीन बार छप चुकी है, यही इसकी उपयोगिता और लोक प्रियता के विषय में कहना पर्याप्त है।

स्वाधीनता के सिद्धान्त—लेखक टेरेन्स मैकस्विनी, अनुवादक पं० हेमचन्द्र जोशी बी. ए., प्रकाशक हिन्दी पुस्तक भवन १८१ हैरीसन रोड, कलकत्ता, पृष्ठ १७ मूल्य १)

आयर्लैन्ड के प्रसिद्ध देशभक्त टेरेन्स मैकस्विनी के नाम से हमारे पाठक अपरिचित न होंगे। आपने तीन मास के लग भग जेल में बृटिश सरकार के अमानुषी व्यवहार के विरुद्ध Protest रूपसे निराहार रहकर अपने प्राण विसर्जन किये थे। ऐसा व्यक्ति तपस्वी होगा और उसका आत्मा और मन कितना बलवान होगा, उसकी झलक हमें इस पुस्तक के पाठ से भली प्रकार पता लगती है। हमारे देश में महात्मा गांधी ने वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन की पवित्रता पर जितना बल दिया है इस से पहिले किसी ने न दिया था। गान्धी युग के पूर्व हमारे राजनैतिक नेताओं में कितने ही शराबी और दुराचारी थे, परन्तु कांग्रेस में उमका बड़ा मान था। उस समय इस बात को कोई अनुभव न करता था कि मनुष्य के वैयक्तिक जीवन की पवित्रता और अपवित्रता का उसकी सार्वजनिक योग्यता से कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। महात्मा गान्धी ने जो देश में जागृति पैदा कर दी है उसका एक मुख्य कारण उनका अपना उच्च पवित्र जीवन, और दूसरों को उनके निज जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाने पर बल देना है। यही विशेषता हमें टेरेन्स मैकस्विनी की शिक्षा में मिलती है। स्वाधीनता प्राप्त करने के लिये पवित्र जीवन की कितनी आवश्यकता है यह इस पुस्तक के पाठ से हमें भली प्रकार पता लगता है। यह पवित्रता का प्रेम इस वीर पुरुष के प्रत्येक लेख में दृष्टि गोचर होता है। इस पुस्तक में मूल लेखक ने स्वाधीनता क्या है, इसकी क्या आवश्यकता है और यह कैसे प्राप्त हो सकी है, शत्रु और मित्र कौन है, विचार को व्यवहार में कैसे लाया जाय, स्वाधीनता के आन्दोलन में नारी-धर्म क्या है इत्यादि अनेक आवश्यक विषयों पर महत्व पूर्ण विचार प्रगट किये हैं। पुस्तक परम उपयोगी और सामयिक है। इसका पाठ हृदय में बल, उत्साह और पवित्र स्वार्थत्याग के भाव उत्पन्न करता है। अनुवाद भी बहुत अच्छा हुआ है। पुस्तक के आरम्भ में मैकस्विनी का एक चित्र और उनकी जीवनी भी दी गयी है। प्रत्येक युवक को-जो स्वाधीनता संग्राम में भाग लेना चाहता है-इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये।

कर्म योग—लेखक श्री अश्विनीकुमार दत्त,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुवादक पं० छविनाथ पाण्डेय बी. ए., प्रकाशक उपरोक्त हिन्दी पुस्तक भवन। पृष्ठ संख्या १४६ मूल्य ॥।)

इस पुस्तक के मूल लेखक बंगाल के प्रसिद्ध नेता श्री अश्विनी कुमार दत्त हैं। लेखक का कथन है कि यह उनके कर्मयोग का ही फल है कि बारीसाल (आपका निवास स्थान) बंगदेश के सभी आन्दोलनों में सदा ही सब से आगे रहता है। अतः बाबू अश्विनी कुमार दत्त द्वारा लिखी इस पुस्तक का महत्व और भी बढ़ जाता है। पुस्तक का विषय इसके नाम से ही प्रगट है। कर्मयोग के भिन्न २ रूप, लक्षण और उसकी आवश्यकता इत्यादि विषयों की श्रीकृष्ण द्वारा गीता में वर्णित कर्मयोग के आधार पर बड़ी सरल व्याख्या है। पुस्तक का उद्देश्य थोड़े में ही कर्म की महिमा और उसके आदर्श को सर्वसाधारण के लिये सरल रूप में उपस्थित करना है, जिस से कि हम अपने जीवन को शुभ कर्मयुक्त बना सकें और इस उद्देश्य में लेखक को बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। पुस्तक एक गूढ़ और महत्त्व पूर्ण विषय की सरल मीमांसा है, जो सर्वथा पठनीय है।

सुप्रभात--लेखक श्रीयुत सुदर्शन, प्रकाशक नारायणदत्त सहगल ऐण्ड सन्स, लुहारी गेट लाहौर। पृष्ठ संख्या १९० मूल्य १॥)

श्रीयुत सुदर्शन जी के नाम से हिन्दी संसार भली प्रकार परिचित है। यह पुस्तक लेखक की कुछ प्रकाशित और अप्रकाशित ११ राजनैतिक कहानियों का संग्रह है। सभी कहानियां मौलिक, शिक्षा प्रद और चित्ताकर्षक हैं। आजकल की राजनैतिक हलचल का मानवी हृदय में जो प्रतिबिम्ब पड़ रहा है यह कहानियां उसी का जीता जागता मनोहर फोटो हैं। किस प्रकार छोटे २ भाव और विचार अथवा साधारण घटनायें मनुष्य को बड़े २ कार्य करने पर उत्साहित करती हैं और उसके जीवन चक्कर को एकदम पलट देती हैं इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इन कहानियों में दिया गया है। यों तो सभी कहानियां रोचक, और मनोहर तथा शिक्षा प्रद हैं, परन्तु "पंथ की प्रतिष्ठा" और 'अन्धेरे में' विशेष महत्त्व की हैं।

कारावास की राम कहानी—लेखक श्रीयुत नरदेव शास्त्री, प्रकाशक चौधरी हुलास वर्मा भारतीय प्रेस देहरादून, पृष्ठ संख्या २०० मूल्य ॥)

१९२१-२२ का असहयोग आन्दोलन भारत के इतिहास में चिरस्मरणीय रहे गा। यह वह समय था जब कि महात्मा गांधी की शिक्षा पूरणतया कार्य रूप में परिणत हो रही थी और जनता का उत्साह दिनों दिन बढ़ रहा था। यह इस आन्दोलन की ही विशेषता थी कि बलवती भारत सरकार भी एक बार कांप उठी थी। उपरोक्त पुस्तक एक प्रकार से इसी आन्दोलन का इतिहास है। पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहिले में लेखक ने अपने जेल में भेजे जाने की कहानी और उस समय की मुख्य२ राजनैतिक घटनाओं का बड़ा रोचक वर्णन दिया है। दूसरे भाग में जेल के जीवन का पूरा २ वृत्तान्त है, जेल की मशीनरी किस प्रकार चलती है, दारोगा, जेलर, वार्डर, कैदी किस प्रकार अपना कार्य करते और दिन काटते हैं, जेल का क्या कार्यक्रम है, मुशक्कत, प्रेड, वेश इत्यादि अनेक बातों का बड़ा रोचक वर्णन है जिस को पढ़कर इस सांसारिक नरक का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। पुस्तक मनोहर और शिक्षाप्रद है।

ब्रह्म विज्ञान—रचियता श्री सत्य प्रकाश विशारद, प्रकाशक कला-कार्य्यालय प्रयाग। मूल्य ≠)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस ३२ पृष्ट की छोटी सी पुस्तक में लेखक ने ईश तथा श्वेताश्वतर उपनिषदों का पद्यानुवाद दिया है। अनुवाद अच्छा हुआ है। पुस्तक अध्यात्म विद्या प्रेमियों के काम की चीज़ है।

वैरागी वीर—लेखक भाई परमानन्द, प्रकाशक लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी पुस्तक विक्रेता लाहौर, पृष्ट १२८ मूल्य ॥।)

बाबा बन्दा का नाम पञ्जाब के इतिहास प्रेमियों और विशेष कर सिक्ख धर्म के इतिहास से प्रेम रखने वालों को भली प्रकार पता है। गुरुगोविन्द सिंह जी के समय में और उनके पीछे जिस तपस्वी वीर ने हिन्दू धर्म की रक्षा की और मुसलमान शासकों का नाक में दम किया वह वैरागी बन्दा ही था। इस वीर का जीवन त्याग, तपस्या, वीरता और आत्मविजय का जाज्वलंत उदाहरण है। इस महापुरुष की जीवन कथा बड़ी ही शिक्षाप्रद और उत्साह वर्धक है। प्रत्येक हिन्दू बालक को इसे पढ़ना और मनन करना चाहिये और अपने अन्दर वैरागी के गुणों को धारण करना चाहिये। भाई जी ने यह पुस्तक लिख कर हिन्दू जाति का बड़ा उपकार किया है।

जात-पाँत-तोड़क—मासिक पत्र, सम्पादक श्री सन्तराम जी बी० ए० वार्षिक मूल्य १॥) १२ पृष्ट।

यह जात पाँत तोड़क मण्डल लाहौर का मुख्य पत्र है। हमारे पाठकों को पता होगा कि जात पाँत की राक्षसी जञ्जीरों को तोड़ने के लिये—जो कि हिन्दू समाज का गला घोंट रही हैं और उसे घुन की तरह खा रही हैं—लाहौर में उपरोक्त नाम से एक सभा स्थापित हुई है जिस का उद्देश्य वर्तमान जात पाँत को तोड़ कर विवाह करने की प्रथा का प्रचार करना है। यह पत्र उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये निकाला गया है। प्रथम अङ्क हमारे सामने है इस में मण्डल सम्बन्धी अनेक सूचनाओं के अतिरिक्त भाई परमानन्द जी का जात पाँत पर बड़ा प्रभाव शाली लेख है। पत्र के उद्देश्य सराहनीय हैं और हमें आशा है कि इनमें इसे पूरी सफलता मिले गी।

स्त्री दर्पण—मासिक पत्र, वार्षिक मूल्य ३)

लगभग १५ वर्ष से प्रयाग के प्रसिद्ध नैहरू परिवार की देवियों की रक्षा में यह पत्र निकल रहा है। गत जुलाई मास से अब यह कानपुर से निकलने लगा है और श्रीमती फूलकुमारी मेहरोत्रा तथा श्रीमती रूपकुमारी वाचूं इसकी सम्पादिका हैं। जुलाई का अङ्क हमारे पास समालोचनार्थ आया है। इस में स्त्री उपयोगी विषयों पर छोटे २ सरल कोई ३२ लेख और कविता हैं जो देविओं के बड़े काम की हैं।

कुमारी दर्पण में कन्याओं के मनोरञ्जनार्थ छोटी सी कविता, कहानी, पहेलियां, इत्यादि हैं। पत्र स्त्रियों की बड़ी सेवा कर रहा है और उन के अपनाने योग्य है।

गृह लक्ष्मी—मासिक पत्र, सम्पादक पंडित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० तथा श्रीमती गोपालदेवी वार्षिक मूल्य ३)

यह भी एक स्त्री उपयोगी मासिक पत्र है जो कि गत चार वर्ष से इलाहाबाद से निकल रहा है। ज्येष्ठ का अङ्क हमारे सामने है इस में ज्योति की साईज़ के ४८ पृष्ट हैं। इस में २२ लेख और कविता हैं। लेख और कविता सब सरल, और देवियों के लिये शिक्षाप्रद हैं। पत्र सचित्र है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* वनिता विनोद *

स्त्री जगत्

मिश्र देश की स्त्रियों में स्वाधीनता की लहर

मिश्र देश की स्त्रियों में भी स्वाधीनता के भाव दिनों दिन भर रहे हैं और यद्यपि वहां के पुरुषों के इतने उदार विचार नहीं हैं कि स्त्रियों को उन के अधिकार स्वयं ही दे देवें, तथापि स्त्रियां अपने सुधार के लिये बड़ा बल लगा रही हैं। तुर्की महिलाओं की तरह वह भी पर्दे को उठा देने के पक्ष में हैं और वह स्त्रियों की शिक्षा में इस प्रकार अदल बदल करना चाहती हैं जिस से शिक्षा से स्त्रियों को बहुत लाभ पहुंचे। मिश्र देश में जहां वोट प्राप्त करने की सभाओं की शाखायें हैं उन्हें एक मण्डल में बनाने की भी चेष्टा कर रही हैं और सब प्रकार से अपनी उन्नति की ओर लगी हुई हैं। मुसलमानी अखबारें इस आन्दोलन के खिलाफ़ हैं कहते हैं कि यह बातें कुरान के विरुद्ध हैं।

अब तक युरोप और अमेरिका की ही स्त्रियां अपनी जाति की उन्नति के लिये लगी हुई थीं। फिर जापानी स्त्रियों ने सिर उठाया और अब मुसलमानी स्त्रियां भी अपनी २ उन्नति की ओर लग पड़ी हैं, परन्तु इस अभागे भारत की स्त्रियों में कब यह भाव पैदा होंगे? यहां पर तो स्त्रियाँ कुम्भकर्ण की नींद सोई हुई हैं, आर्य्य देवियो! क्या तुम सब के पीछे जागोगी?

एक देवी को हवाई जहाज़ चलाने की आज्ञा

अभी पहिली वार ही एक देवी को हवाई जहाज़ चलाने का आज्ञा पत्र (लाइसेन्स) मिला है। इस देवी ने अपना हवाई जहाज़ ११००० फीट की ऊंचाई तक चलाया था इस लिये इन को यह सम्मान मिला है। इतनी ऊंचाई तक अभी तक कोई देवी नहीं गई थी।

पत्नी को पति के साथ रहने के लिये बाधित करने का कानून

अभी कौंसिल में एक कानून संशोधित हो कर पास हुआ है जिस से स्त्रियों को अपने पति के पास रहने पर बाधित किया जा सक्ता है। इस कानून का यह अर्थ है कि यदि कोई पत्नी अपने पति के साथ रहने से इनकार करे उस स्त्री की जायदाद कुर्क करा ली जायगी। इस प्रस्ताव पर वोट लिये गये तो १६ पक्ष में थे और ६ विपक्ष में और कई गैर सर्कारी मेम्बरों ने वोट भी नहीं दिया, परन्तु कई सर्कारी मेम्बरों ने इस का समर्थन कर के पास करा लिया।

स्त्रियां तो आगे ही पुरुषों के अत्याचार से पीड़ित हैं फिर इस प्रकार के कानून से उन्हें और जकड़ना बड़ा घृणित काम है। स्त्री को कैद का भय दिला कर उसे उस पति के साथ रहने पर बाधित करना जिस से उसे घृणा हो बड़ा अन्याय है। क्या कहीं यह भी कानून है कि यदि पति अपनी पत्नी के साथ न रहे तो उसे कैद की सजा दी जावे? पति तो अपनी पत्नियों को झट त्याग देते हैं और यदि उन विचारियों को रोटी कपड़ा भी दे दिया तो बड़े उदार कहलाते हैं। बहुत सी अभागिनी देवियों को इतना भी नसीब नहीं होता। देवियो! देखो यह है तुम्हारी दशा। क्या अब भी तुम अपने सुधार के लिये नहीं कोशिश करोगी?

रोम में स्त्रियों की महा सभा

मई महीने हुये रोम मे स्त्रियों की एक बड़ी सभा हुई जिसमें भिन्न २,४३ देशोंकी स्त्रियां उपस्थित थीं। इसमें आठ देवियां भारत के प्रान्त मदरास, बम्बई और संयुक्त प्रान्त से भी गई हुई थीं। इस सभा ने यह प्रस्ताव पास किये कि स्त्रियों को पुरुषों के बराबर ही तनखाह मिले, विवाहिता स्त्रियों को भी काम करने का अधिकार हो, स्त्रियों को भी पुरुषों की भांति उच्च शिक्षा और ज्ञान दिया जाय, सब पेशों में वह भी जा सकें, उन्हें भी सिविल सर्विस में जाने का अधिकार हो। पति पत्नी अपने २ पैदा किये धन को अलग २ वर्त सकें, परन्तु स्त्री का पति के उपार्जन किये धन में भी हिस्सा हो। विधवाओं और माताओं को राज्य की ओर से अथवा म्युनिसिपैलिटी की तरफ से सहायता दी जाया करे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

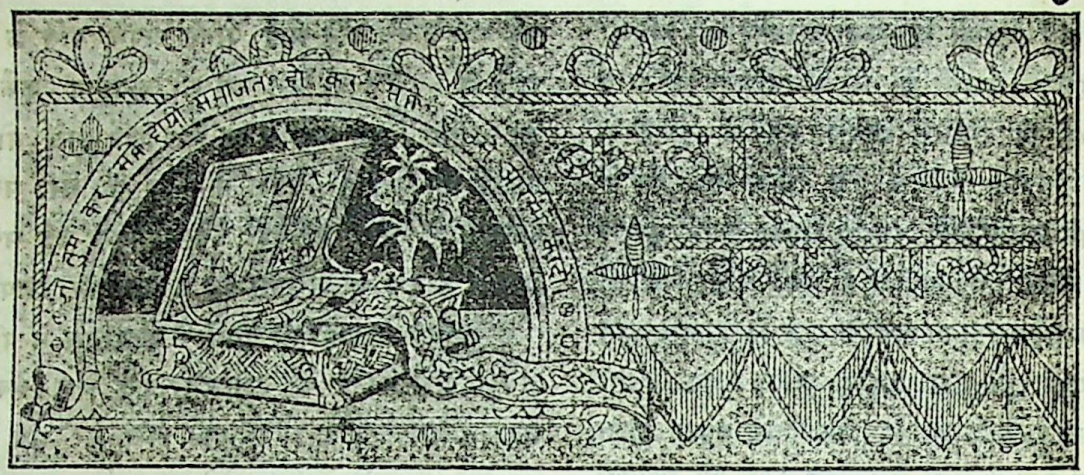

चतुष्कोण लेस ।

(जून के अंक से आगे)

लेखिका—श्रीमती ओ३म्वती देवी

ज्योति के जून के अंक में हम चतुष्कोण लेस दे चुके हैं इसी के अब कोना बनाने की विधि दी जाती है ।

लेस में जहां ४२ पंक्ति हैं यह कोना वहीं से घटना शुरू होता है फिर नोक तक घटनेके बाद क्रमशः बढ़ना आरम्भ होता है ।

१ पंक्तिः—जब लेसका वह हिस्सा जहां घटाती बार १४ ख़ाने आते हैं आजांय तब तेहरा किनारा न बनाकर अन्तवाले तेहर पर एक तेहर बीन दो जिससे तिरछ शुरु हो जाय फिर ३ चेन कर लौटो ।

२ पंक्तिः—एक ख़ाना इधर घट जायगा आगे १२ ख़ाने बनाओ, ख़ानोंपर फिर ४ ते. १ ख़ाने पर बीनो * ४ चेन, १ लम्बा तेहरा तीन चे. के बीच में ४ चेन, १ चौखुन्टा (४ ते. बराबर २) ४ चेन, १ ल. ते. ३ दोहरों के बीच में, ४ चेन, १ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. ते. ३चेनों के बीच में, ४ चे, १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से दोहराओ, अन्त में ६ चेन लौटो ।

३ पंक्तिः—१ चौखुन्टा (४थे तेहरे से लेकर), २ चेन, ३ छोड़ो १ चौखुन्टा, ६ चेन, ३ दोहरे चतुष्कोण के बीच में ६ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दुहराओ फिर १० ख़ाने बनाओ १ ते फिर अन्त में, ३ चे. लौटो ।

४ पंक्तिः—८ पूरे ख़ाने बनाओ १ चौखुन्टा ७ चेन, ५ दोहरे चतुष्कोण के बीच में, ७ चेन १ चौखुन्टा, ७ चेन ४ दोहरे बीच में, ७ चेन, १ चौखुन्टा इसी प्रकार अन्त तक ६ चेन लौटो ।

५ पंक्तिः—१ चौखुन्टा (४थे तेहरे से आरम्भ करके) * ६ चेन, ३ दोहरे, ५ दोहरों के बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा, ३ चेन, २ छोड़ कर १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से दोबार, ६ ख़ाने और १ तेहर अन्त वाली चेनमें, ३ चेन लौटो ।

६ पंक्तिः—४ पूरे ख़ाने बनाओ, १ चौखुन्टा ४ चेन, १ लम्बा तेहरा ३ चेन के बीच वाली में., ४ चेन, १ चौखुन्टा, ४ चेन. १ लम्बा तेहरा ३ दोहरों के बीच में. ४ चेन, १ चौखुन्टा *४ चेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

११ ल. ते ३ दोहरों के बीच में, ४ चेन १ चौखुन्टा इस * चिह्न से एक बार फिर ६ चेन लौटो।

७ पंक्तिः—४ तेहरे का चौखुन्टा, २ चेन ३ छोड़ कर १ चौखुन्टा, *६ चेन, ३ दोहरे चतुष्कोण के बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से फिर दोहराओ, २ खाने १ तेहरा अन्त में. ५ चेन लौटो।

८ पंक्तिः—१ खाना छोड़ कर अगले के ऊपर १ चौखुन्टा * ७ चेन, ५ दोहरे चतुष्कोण के बीच में. ७ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ फिर १२ चेन लौटो।

९ पंक्तिः—१ ते. १०वीं चेन में और ३ ते अगली में इस प्रकार १ चौखुन्टा बनता है * ३ चे., २ छोड़कर, १ चौखुन्टा, ६ चे., ३ दोहरे

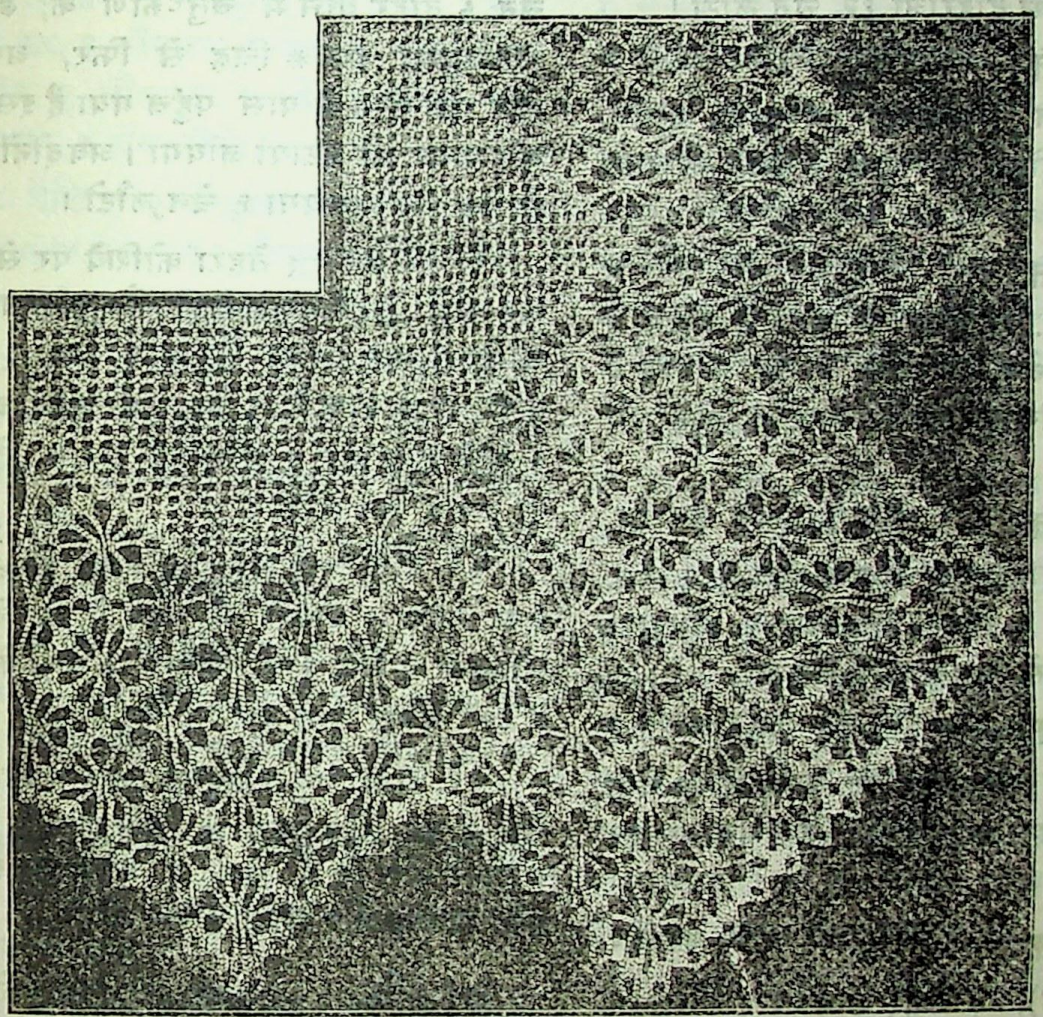

बीच में ६ चेन, १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से दोहराओ ६ चेन लौटो।

१० पंक्तिः—चौखुन्टा अन्दर को (अब नीचे से बढ़ता ऊपर से घटता है) * चेन, १ ल. ते. दोहरों के बीच में, ४ चेन, १ चौखुन्टा ४ चेन, १ ल. ते., ३ चेनों के बीच की में, ४ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ अन्त में १२ चेन लौटो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

११ पंक्तिः—१ चौखुन्टा (बढ़ाकर १०वीं चेन से शुरु करके) * ६ चेन, ३ दोहरे चतुष्कोण के बीचमें, ६ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन, ३ छोड़ कर, १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से दोहराओ, ६ चेन लौटो।

१२ पंक्तिः—१ चौखुन्टा अन्दर को, * ७ चेन, ५ दोहरे फूल के बीच में, ७ चेन, चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ १२ चेन लौटो।

१३ पंक्तिः—१ चौखुन्टा (बढ़ाकर) * ३ चेन, २ ते. छोड़कर, १ चौखुन्टा, ६ चेन, ३ दोहरे ५ दोहरों के बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दो बार ६ चेन लौटो।

१४ पंक्तिः—१ चौखुन्टा अन्दर को, * ४ चेन, १ ल. ते दोहरे के बीच में ४ चेन, १ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. ते. ३ चेन के बीच में ४ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ १२ चेन।

१५ पंक्तिः—१ चौखुन्टा आगे बढ़ाकर, * ६ चेन, ३ दोहरे, चतुष्कोण के बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन ३ छोड़कर १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ ६ चेन।

१६ पंक्तिः—१ चौखुन्टा अन्दर को * ७ चेन, ५ दोहरे चतुष्कोण के बीच में, ७ चेन, १ चौखुन्टा, इस * चिह्न से फिर बनाओ १२ चेन लौटो।

१७ पंक्तिः—१ चौखुन्टा (आगे बढ़ाकर १०वीं चेन से), *३ चेन, १ छोड़कर १ चौखुन्टा, ६ चे., ३ दोहरे बीच में, ६ चे., १ चौखुन्टा इस * चिह्न से फिर, ६ चेन लौटो।

१८ पंक्ति—१ चौखुन्टा * ४ चेन, १ ल. ते दोहरों के बीच में, ४ चेन १ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. ते., ३ चेनों के बीच की में, ४ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दोहराओ, १२ चेन लौटो।

१९ पंक्ति—१ चौखुन्टा (आगे बढ़ाकर) * ६ चेन, ३ दोहरे, बीच में ६ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन, ३ छोड कर, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से फिर, ६ चेन लौटो।

२० पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को * ७ चेन, ५ दोहरे बीच में चतुष्कोण के, ७ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से फिर, अब यह फिर एक नोक के पास पहुंच गया है इस लिये अब अन्दर को घटाया जायगा। अब दोनों तरफ़ से कम होता जायगा ६ चेन लौटो।

२१ पंक्ति—१ तेहरा कोशिये पर से गिन कर चौथे तेहरे पर ३ तेहरे और पास पास, १ चौखुन्टा बन जाता है, * ६ चेन, ३ दोहरे ५ दोहरों के बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा, ३ चेन, २ तेहरे छोड़ कर, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से दो बार ६ चेन लौटो।

२२ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को ४ चेन, १ ल. तेहरा ३ दोहरों के बीच में, ४ चेन, १ चौखुन्टा ४ चेन, १ ल. तेहरा ३ चेनों के बीच में इसी प्रकार अन्त तक। ६ चेन लौटो।

२३ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को, * २ चेन, ३ घर छोड़ कर, १ चौखुन्टा ६ चेन, ३ दोहरे बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा इस * चिह्न से एक बार और, ६ चेन लौटो।

२४ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को * ७ चेन, ५ दोहरे बीच में ७ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन ३ तेहरे छोड़ कर १ चौखुन्टा इस * चिह्न से एक बार और ६ चेन।

२५ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को, ६ चेन, ३ दोहरे बीच में ६ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३ तेहरे छोड़ कर, १ चौखुन्टा ६ चेन, ३ दोहरे, ६ चेन, १ चौखुन्टा, ६ चेन लौटो।

२६ पंक्ति—१ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. तेहरा ३ दोहरों के बीच में, ४ चेन, १ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. तेहरा, चेनों में ४ चेन, १ चौखुन्टा ४ चेन १ ल. तेहरा, ४ चेन, १ चौखुन्टा ६ चेन लौटो।

२७ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को, २ चेन ३ छोड़ कर, १ चौखुन्टा ६ चेन, ३ दोहरे बीच में, ६ चेन, १ चौखुन्टा, २ चेन ३ छोड़ कर, १ चौखुन्टा, ६ चेन लौटो।

२८ पंक्ति—१ चौखुन्टा अन्दर को, ७ चेन, ५ दोहरे बीच में ७ चेन, १ चौखुन्टा, ६ चेन लौटो।

२९ पंक्ति—१ चौखुन्टा ६ चेन, ३ दोहरे बीच में, ६ चेन १ चौखुन्टा, ६ चेन लौटो।

३० पंक्ति—१ चौखुन्टा, ४ चेन, १ ल. तेहरा बीच में, ४ चेन, १ चौखुन्टा ६ चेन लौटो।

३१ पंक्ति—१ चौखुन्टा २ चेन, ३ छोड़ कर १ चौखुन्टा ६ चेन लौटो।

३२ पंक्ति—१ चौखुन्टा ६ चन।

अब लौट कर बनेगा और एक तरफ़ से १२ चेन करके बनेगा दूसरी तरफ़ जोड़ते जाना होगा।

३३ पंक्ति—३१ वीं पंक्ति की ६ चेनों से जो घर बन गया था उसमें एक चौखुन्टा बीनों फिर १२ चेन करो।

३४ पंक्ति—कार्य्यको अब तिरछा पकड़लो १०वीं चेन से लेकर १ चौखुन्टा (३ चेन में १ तेहरे पर) बनाओ २ चेन करो। ३२वीं पंक्ति में जो चौखुन्टा बना था वह अब इधर बेड़े बल से पड़ गया है उसी की जगह छोड़ कर ३१ वीं, पंक्ति की ६ चेनों में १ चौखुन्टा २ चेन करके इसको सीध वाले पड़े ४थे तेहरे के ऊपर १ सादे फन्दे से जोड़ दो, ३ चेन करो।

३५ पंक्ति—तिरछी लटकती हुई चेनों के छल्ले को ३ चेनों को साथ जोड़ कर धागा निकालो जिससे वे खड़े हुवे तेहरे के समान लगें फिर लौट कर २ तेहरे २ चेनों में १ तेहरा ते पर इस प्रकार चौखुन्टा बन गया, ४ चेन, १ लम्बा तेहरा ३ चेनों के बीचमें ४ चेन, १ चौखुन्टा (१ ते.पर ३ चेन में) १२ चेन लौटो।

३६ पंक्ति—१ चौखुन्टा (१०वीं चे से लेकर) ६ चेन, ३ दोहरे ६ चेन, १ चौखुन्टा अगली चेनों में फिर अगली पंक्ति की तरह २ चेन करके चौखुन्टे के सिरे पर के तेहरे के ऊपर जोड़दो, ३ चेन करके अगले छल्ले की ३ चेन के साथ तेहरे की तरह जोड़दो लौटो।

३७ पंक्ति—२ तेहरे २ चेनों में, १ तेहरा ते. पर ७ चेन, ५ दोहरे चतुष्कोण के बीच में; ७ चेन, १ चौखुन्टा चेनों में १२ चेन लौटो।

यह जो जोड़ने का तरीका है कि २ चेन करके पड़े हुवे चौखुन्टे के अन्त के तेहरे से जोड़ कर ३ चेन करके छल्ले की ३सरी चेन से जोड़ दो फिर लौट कर इन्हें एक तेहरा मान कर २ तेहरे और बनाओ यह क्रम ५६वीं पंक्ति तक अर्थात् पिछले कोने के हिस्से में जहां तक चतुष्कोण हैं तब तक चलता रहेगा। बाकी का बिचला हिस्सा उसी पहिले की तरह चलता रहेगा। तब घटता था अब बढ़ता जायगा। फिर ४५ पंक्ति के बाद ६ चेन करके नोक पर से भी घटना शुरु होगा जो कि ५६ पंक्ति तक चलेगा। फिर ख़ाने वाला हिस्सा शुरु होगा। जिस तरह पहिले ख़ाने दो दो करके घटाये थे उसी तरह दो दो करके बढ़ाना और दूसरी ओर १२ चेन करके बढ़ाते जाना (तसवीर में देखो)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

८ पंक्तियां और ख़ाने वाली बनाने से सिरा पहुंच जायगा वहां पर नोक मिला कर फिर ६५वीं पंक्ति से तेहरा किनारा बनाना शुरु करना जैसा आगे लेस में दिया जा चुका है।

नोट—तसवीर में कोने के बीचो बीच एक तिरछी सीध में जो ख़ाने २ हैं वहीं पर सब पंक्तियां जुड़ती हैं।

यह ध्यान रक्खो कि जोड़ पता नहीं लगता है॥

आदर्श नारी ❀

ले० जगन्नारायणदेव शर्मा, कविपुष्कर

(छप्पय)

जो निज पति को जान देवता नित प्रति सेवे।
दम्पति प्रेम प्रचार विश्व में वर यश लेवे॥
विद्या विनय विचारवती बन करे भलाई।
देशकाल अनुकूल रखे साहस सुखदायी॥
गृह कार्यों में निपुण हो, साधु चरित्रा पतिव्रता।
वह नारी आदर्श है, शास्त्र शिक्षिता नय युता॥

सच मुच क्या विलायती स्त्रियां निकम्मी रहती हैं ?

लेखिका—ललितकला विनोदिनी

भारत वर्ष में आजकल जो विलायती देवियां पर्दा पार्टी इत्यादि रचकर तथा अन्यान्य कई प्रकार से भारती महिलाओं के साथ मिलती जुलती हैं, उन्हें देख कर हमारी बहिनें प्रायः यह सोचती हैं कि ऐश व आराम तथा निकम्मी बैठे रहना, घूमना घामना, मौज करना यही मेम लोगों का काम है और वह जब अपने गृहस्थ के धंधों को देखती हैं तो यह खयाल कर प्रायः दुःखी होती हैं कि भारतीय स्त्री होने के कारण उन्हें तो दिन रात काम करना पड़ता है और मेम लोगों को

❀ सूचना—'आदर्श पुरुष' द्वितीय संख्या में छप चुका है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ नहीं करना पड़ता। इस भ्रम को दूर करने के लिये मैं आज अपनी बहिनों के सन्मुख विलायती देवियों के काम बतलाना चाहती हूं, ताकि उनका भ्रम दूर हो जावे और वह केवल उनसे फैशन और ऐश व आराम की ही शिक्षा न ले वरन उनकी समय पर काम करने की आदत को भी सीखें।

युरोप के महाभारत के बहुत पहिले भी विलायत में धर्मप्रचारिकाओं के अतिरिक्त लाखों देवियां अपनी जीविका के लिये भी काम करती थीं। हर साल यह पता लगता जाता है कि स्त्रियां उन बहुतेरे कामों को कर सक्ती हैं, जिन्हें लोग समझते थे कि वह न कर सकेंगी और आज से १० या ११ साल पहिले भी लग भग एक करोड़ स्त्रियां तीन सौ प्रकार के भिन्न पेशों में लगी हुई थीं। १५००० स्त्रियां शिक्षा प्रचार का काम करती थीं और ८००००० से अधिक स्त्रियां पहिनने की चीजें तैय्यार करने का काम करतीं थी, १५ लाख स्त्रियां घरों में दासी का कार्य्य करतीं तथा बहुत सी स्त्रियां खिलौने, सुइयां, नकली फूल, दस्ताने, तृण की टोकरी, मिट्टी के तथा कांच के बर्तन, कागज, जिल्द बांधने, इत्यादि के काम में लगी हुई थीं तथा ४० लाख स्त्रियां मिलों में लेस बनाने तथा ऊन, रेशम और सूत के बुनने के काम में लगी थीं। युरोप के महाभारत के बाद तो स्त्रियां और भी अधिक संख्या में काम करने लग पड़ी हैं, क्योंकि पुरुषों की वहां पर और भी कमी हो गई है, अतः हरएक धंधेमें स्त्रियां ही दीख पड़ती हैं।

परन्तु यह कदापि न समझना कि यह देवियां जो रोज़ी कमाने में लगी हुई हैं वह मूर्खा और पतित स्त्रियां ही होती हैं। जो मिश्नरी देवियां कई वर्षों तक इनके बीच में रही हैं उनकी यह रिपोर्ट है कि इन व्यवसायी देवियों में-जो कि मैन्चेस्टर, लीडज, ब्रेडफोर्ड इत्यादि स्थानों पर काम कर रही हैं—वीरता के वह उच्च भाव, स्वार्थ त्याग, धैर्य्य, प्रसन्नता और उच्च आकांक्षायें पाई जाती हैं जो कि कुलीन कहलाने वाली स्त्री जाति में दुर्लभ हैं। इन धर्म प्रचारिकाओं को इन व्यवसायी स्त्रियों में रोगी सेवा के काम से जाना पड़ा तो उन्हें पता लगा कि बहुत सी इन देवियों ने बहुत सा स्वार्थ त्याग करके कर्तव्य की वेदी पर अपने को बलिदान चढ़ाया है और या तो अपनी विधवा माता को सुखपूर्वक जीवन बिताने के हेतु, या वृद्ध पिता को सुख देने के हेतु अथवा अन्य इसी प्रकार के कर्तव्य पर अपने को निछावर करके अपनी शक्ति से अधिक काम करके अपने स्वास्थ्य की अवहेलना की है।

इन ज़िलों में राज्य की सहायता से बहुत से स्कूल खुले हैं जो इन बिचारी अबलाओं को बहुत सी व्यवसाय में उपयोगी शिक्षा देते हैं और रविवार को जो सत्संग लगता है उन से इनको धार्मिक शिक्षा मिलती है। सैंकड़ों देवियां इन में बड़ी मधुरता और पवित्रता की मूर्त्ति हैं और हजारों ऐसे स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र धारण किये होती हैं कि शिक्षिता देवियों से उन्हें भिन्न तभी बतलाया जा सक्ता है जब वह बोलती हों। बहुत सी फैक्टरी में काम करने वाली देवियां स्विटज़रलैण्ड तथा युरोप के अन्यान्य प्रदेशों में छुट्टियों में भ्रमण करने भी जाती हैं। इस प्रकार वहां पर साधारण स्त्रियां अपने जीवन को व्यर्थ नहीं खोतीं बल्कि अपने लिये और दूसरों के लिये उपयोगी ही बनाती हैं और उनकी बनाई हुई वस्तुयें जो यहां पर आती हैं, वह हमारी भारतीय ललनाओं के फैशन को बढ़ातीं और बेशक उन्हें निकम्मी बना रही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विलायत को छोड़ कर भारत में भी जो पाश्चात्य स्त्रियां हैं उनमें से धर्म प्रचारिकाओं की तो कथा ही क्या कहनी–जितना काम वह कर रही हैं उसका चौथाई भी यदि हम आर्य्य महिलायें कर सकें तो भारत के दुःख दारिद्र आज नष्ट हो जावें—परन्तु जो अन्य अफसरों इत्यादि की स्त्रियां हैं वह भी केवल ऐश आराम नहीं करतीं वरन अपनी गृहस्थी के सब धंधे अपने देश की रीति रिवाजों के अनुकूल समय पर ठीक २ करती हैं और कराती हैं। माना उनके पास धन अधिक होने से साधारणतया वह अधिक सुख पूर्वक रहती हैं परन्तु धनका होना ही सुखी नहीं बनाता उससे ठीक उपयोग लेना और उसे बुद्धिमत्ता से बर्त्तना ही सुख की कुंजी है। यदि पाश्चात्य देवियां स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र धारण किये दिखलाई देती हैं, तो इस से यह मत समझो कि सभी दर्जी को बड़ी सिलाई देकर और धोबी को प्रतिदिन बहुत सा धन धुलाई देकर ऐसा करती हैं। कदापि नहीं। बहुतों को काट छांट और सीना परोना बहुत अच्छा आता है और धोना भी तथा कपड़े सम्भाल कर पहिनना, बच्चों को पहिनाना और फिर सम्भाल कर रखना भी आता है।

हमारी भारतीय देवियों को पहिनने और पहिनाने का शौक तो देखकर होजाता है, पर दूसरी बात नहीं आती। जब कहीं बाहर जाना हो,तब उन्हें अपने तथा बच्चोंके कपड़े सिलानेकी ज़रूरत होती है, सिलाती भी हैं फिर भी स्वच्छता पास नहीं फटकती। सारा दिन झाड़ू पकड़े रहें परन्तु घर में जब कोई अचानक पहुंच जाय तो नर्क का कुण्ड ही मिलेगा। सारा दिन घर के कामों में लगी रहें तो भी कार्य्य ठीक समय पर जैसे चाहिए नहीं होते। और समाज तथा अन्य सभाओं इत्यादि में जाने तथा कोई और कार्य्य करनेकी तो उन्हें फुर्सत ही नहीं होती। गृहस्थी देवियो! यदि नकल ही करनी है, तो पूरी नकल करो, यदि फैशन की करो तो जिस प्रकार वह देवियां साधन सम्पन्न हैं उसी प्रकार तुम भी उन्हीं साधनों को सीखो। सोने के समय सोओ, जागने के समय जागो, काम के समय काम करो और घूमने के समय घूमो, अपने समय को व्यर्थ मत जाने दो। १५ मिन्ट के काम में दो घंटे काम करके समय नष्ट मत करो और खाली हाथ कभी न बैठो, बोलते चालते भी तुम्हारे हाथ में काम हो। ऐसे २ काम सीख लो और अपनी लड़कियों को सिखा दो कि चलते फिरते बोलते चालते भी पाश्चात्य स्त्रियों की भांति बुनने इत्यादि का काम हाथ से होता ही रहे, फिर देखो तुम भी उन्हीं की भांति सुखी बनती हो या नहीं।

हम देखते हैं कि ज्योति में स्त्रियों के हितार्थ जहां और कई तरह की बातें रहती हैं, वहां पर स्त्रियों के फ़ायदे के लिये एक देवी का लेख कला कौशल पर सदैव रहता है। इस में शिल्प कला के नाम से ऐसे बहुत से काम बतलाये गये हैं और बतलाये जा रहे हैं जो कि यदि हमारी बहिनें सीख लें तो उन्हें पाश्चात्य स्त्रियों की भांति काम में बड़ी अच्छी तरह ला सकी हैं। इन लेखों द्वारा स्त्रियों के जीवन को उपयोगी बनाना ही इसका एक मात्र उद्देश्य है, परन्तु मुझे सम्पादिका जी ने बतलाया है कि हमारी बहिनें इससे अधिक लाभ ही नहीं उठा रही हैं, न इधर ध्यान ही देती हैं। यदि अपने बच्चों या भाई भतीजों को कपड़े देने होंगे तो खरीद कर बेशक दे देंगी, परन्तु अपने आप बुन कर, या सींकर, सुन्दर बना कर देना नहीं चाहतीं। जहां पर हमारे देश की स्त्रियों का यह हाल है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि सलमे की टोपी और फ्राक भी कारचोपी करने वाले पुरुषों द्वारा ही अधिकांश बनवाती हैं और फीते लेस इत्यादि तो विदेशी बर्तती हैं, वहां पर विलायती स्त्रियों का यह हाल है कि वह सब प्रकार की सजावट की तथा उपयोगी चीजें अपने हाथों बनाती हैं। व्यवसाय भी करती हैं और अपने उपयोग के लिये भी बनाना जानती हैं। बताओ, हम कैसे कह सक्ते हैं कि विलायती स्त्रियां निकम्मी रहती हैं ? ऐश व आराम ही उनका एक मात्र ध्येय है, इत्यादि।

भारतीय देवियो और कन्याओ ! विलायती देवियों से उदाहण लो और ज्योति में दिये हुए शिल्पकला के लेखों से लाभ उठाकर जीवन के अमूल्य समय को व्यर्थ न खोने दो वरन शिल्प कला सम्बन्धी काम एक न एक लगा रक्खो और जब २ समय मिले थोड़ा या बहुत जब कभी बातें करने बैठो या किसी के घर दो चार घंटे के लिये जावो, तो खाली न बैठो वरन हाथ में सलाइयां और सुइयां हों और कुछ न कुछ काम रोज किया करो। ऐसा करने से तुम में भी उन्हीं की तरह निकम्मे न रहने की आदत हो जायगी और तुम भी सब काम ठीक समय पर करके अपने लिये घूमने फिरने और आराम का समय निकाल कर सुखी बन सकोगी, और अपने गृहको सुखधाम बना सकोगी, और मितव्ययता और कार्य्य कुशलता से वस्तु सम्पन्न बना कर परिवार को भी सुख पहुंचा सकोगी।

ईश्वरी न्याय

लेखक—श्रीयुत बलवन्त राय सक्सेना

(१)

सायं काल का समय है। सूर्य्य अपने शत्रु अन्धेरे के साथ युद्ध करते २ पीठ दिखा गया है और अब अपनी जान लेकर रणभूमि से भाग रहा है। अब यही प्रतीत होता है कि अन्धेरा—जो अपनी तारों की पल्टन लेकर आया है – दो ही घन्टों में पूर्ण विजय पावेगा। ऐसे ही समय में दङ्गल करन स्टेशन का भङ्गी—जिस की आयु इस समय ३० वर्ष के लग भग होगी—मज़े से झाड़ू लगा रहा है और मुंह में बीड़ी डाल कर कभी २ धुवां भी निकाल देता है।

दङ्गल करन एक छोटा सा स्टेशन है। एक ही प्लेट फ़ार्म है, एक स्टेशन मास्टर और एक और बाबू है, जो टिकट आदि देता है और उतरने वाले मुसाफिरों से टिकट लेता भी है। इनके अतिरिक्त इस स्टेशन पर एक वही ऊपर वर्णित भङ्गी जो झाड़ू दे रहा था वह तथा दो कांटे वाले रहते हैं।

स्टेशन मास्टर के कमरे के पूर्व की ओर एक और छोटासा कमरा है जो मुसाफ़िरख़ाने का काम देता है। इस कमरे के दो किवाड़ हैं, एक तो स्टेशन के बाहर वाली सड़क पर खुलता है और दूसरा स्टेशन के अन्दर। इस कमरे में एक ही बैंच पड़ी है और अन्धेरा इतना है कि अभी थोड़ा दिन रहते हुए भी अन्धकार ने अपना पूर्ण स्वत्व जमा लिया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भङ्गी झाड़ू लगाता हुआ स्टेशन मास्टर के कमरे के आगे झाड़ू लगाने पहुंचा। बाबू जी अपने कमरे से बाहर निकले, भङ्गी ने झुक कर सलाम की।

बाबू—"क्यों अलिये! अच्छा हाल है न?"

अलिया—"हुजूर माई बाप हैं। आपके पैरों की खैरियत से गुज़ारा चले चलता है। अब आप की बेटी का विवाह करना है, आप की खैरियत से किसी साहूकार से उधार लेंगे।"

बाबू—"अलिये! क्या तूने आज लखनदास को जाते देखा है?"

अलिया—"जी हां, अभी आधा घण्टा हुआ होगा वह गांव की ओर जा रहे थे। उन को यह शराब की इल्लत कहां से लग गई? बाबू जी! आपतो इतने भाग्यवान हैं परन्तु आपका लड़का कैसा निकला!" इतना सुनते ही बाबू जी के मुंह का रङ्ग बदल गया और गुस्से से बोले—"हां देख, फिर ऐसी बात मत करना" अलिये ने लम्बी सलाम की और फिर झाड़ू देने लगा। बाबू जी ने जाकर कांटे वाले को बुलाया और लैम्पों की सफाई के लिये हुकुम दिया।

(२)

सात बजने में अभी पाँच मिनट बाकी हैं। दङ्गल करन स्टेशन खम्भों से लटकते हुए केरोसीन तेल के लैम्पों से जगमगा रहा है और स्टेशन मास्टर साहब अपनी वर्दी पहिन, हाथ में लाइन क्लीयर लिये हुए इधर उधर फिर रहे हैं। यह स्टेशन ब्रांच लाइन पर होने से एक छोटा सा ही स्टेशन है और दो ही गाड़ियां यहां से आती जाती हैं, एक तो एक बजे दिनको आती है और दूसरी जो अभी आने वाली है, वह पूरे सात बजे यहां पहुंचती है। घड़ी में सात बजने की टनटनाहट होते ही गाड़ी स्टेशन पर आ ठहरी और बेचारा लड्डू बेचने वाला खूब ज़ोर शोर से आवाजें देता हुआ इधर उधर घूमने लगा। पांच यात्री तीसरे दर्जे के कमरे से नीचे उतरे और अपने टिकट देकर बाहर चले गये, इतनेमें एक स्त्री जिसकी आयु ३५ वर्ष की होगी, डेवढ़े दर्जे से उतर इधर उधर देखने लगी, मानों वह किसी के आने की प्रतीक्षा करती हो। परन्तु जब कोई उसे लेने आया न दीख पड़ा तो वह बड़ी निराश हुई। उस का मुख जो अभी लाल २ था पीला पड़ गया। फ़िकर में पड़ गई कि क्या करूं?

यह स्त्री एक अच्छे घराने की है, इस के पति दौरे पर बाहर गये हुए थे। इसका मायका इसी दङ्गल करन के पास के एक गांव में है। कल इसके छोटे भाई का तार मिला था कि "प्यारी बहिन! जिस तरह हो मुझे बचाओ और पांच सौ रुपया नगद किसी के हाथ भेज दो।" बहिन भाई का प्रेम बहुत है, इसलिये पति के घर न होने पर भी बच्चों को किसी के पास छोड़ पाँच सौ रुपया ले कर यह उसी दम दङ्गल करन के लिये चल पड़ी। जिस समय गाड़ी मुगल सराय पहुंची, पहिली गाड़ी तो छूट चुकी थी, इस लिये उस सुशील देवी को दूसरी गाड़ी पर सवार होना पड़ा, जो सायंकाल के सात बजे पहुंचती थी।

स्टेशन पर अपने मायके का कोई आदमी न देख कर वह घबराने लगी, क्योंकि गांव दूर था। चोर आदि के डर से अकेले जाना ठीक न था। तौ भी उस ने मन को धैर्य्य दिया और सोचने लगी "यह स्टेशन मास्टर तो भले आदमी मालूम होते हैं, उनको यह रुपया सौंप कर मैं मुसाफिर खाने में किसी न किसी तरह रात व्यतीत कर लूंगी। इतने में गार्ड ने सीटी बजाई और गाड़ी चलती बनी। यह देख उस स्त्री को भय हुआ और मन ही मन कहने लगी "बस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब मेरा परमात्मा ही सहायक है।" रात होने में कुछ कमी न थी, अतः वह स्त्री स्टेशन मास्टर के कमरे के अन्दर चली गई और बड़ी नम्रता से बोली "भाई जी! मुझे गांव जाना था, पर रात पड़ गई है, इस से डर के कारण अकेले नहीं जा सक्ती, मेरे घर से भी कोई आया नहीं, अतः आप मेरे यह पांच सौ के नोट रख लीजिये मैं प्रातःकाल जाते समय ले लूंगी।" बाबू साहब ने नोट पकड़ लिये और बड़े मीठे स्वर से कहा—"बहिन जी! यह आप की दौलत है, जब चाहें ले लें, आप विपद् में हैं, रक्षा करना मेरा धर्म है।"

स्त्री—"आप की बहुत कृपा है। ईश्वर आप को सुखी रक्खें।"

यह बातें हो ही रही थीं कि अलिया भङ्गी अपनी झाड़ू लिये हुए कमरेके सामने से गुजरा, उसे बुला कर स्टेशन मास्टर ने मुसाफ़िर खुलवा दिया और वह स्त्री उसी बेञ्च पर जाकर लेटी परन्तु वहां भी डर के कारण उसे चैन न पड़ी, और बोल उठी "ओफ़! कैसी भयानक रात है?"

इस संसार में लालच के पीछे मनुष्य अन्धा हो जाता है, न आगे की सोचता है और न पीछे की, इसी प्रकार हमारे बाबू साहब का मन वश में न रहा और सोचने लगे—"इस स्टेशन पर तो कुछ आमदनी नहीं है, ऐसे समय में शिकार हाथ से जाने देना तो बुद्धिमत्ता नहीं।" (कुछ सोच कर) —"हो सक्ता है, अलिये ने मुझे रुपये लेते देख लिया हो।" बाबू जी के मन में खलबली मच गई।

(शेष फिर)

गृह प्रबन्ध

१. कांच के बर्तनों को भली प्रकार साफ करके यदि अन्त में एक बार सिरका मिले पानी से धो डाला जाय तो वह खूब चमक उठते हैं।

२. पक्का रोगनी रंग की हुई वस्तुओं को साफ़ करने के लिये पहिले उन पर नींबू का एक टुकड़ा भली प्रकार फेरो और फिर कुछ सफेदी का चूना, अन्त में साबुन और पानी से धो डालो।

३. रसोई और उसके पास के कमरों की छतें धुयें के कारण काली पड़ जाती हैं। इनको साफ करने के लिये साबुन का कभी प्रयोग नहीं करना चाहिये वरन गरम पानी और सोड़े से वह खूब साफ हो जाती हैं।

४. मेज़, लकड़ी के फर्श इत्यादि, को कभी सोडे से साफ़ नहीं करना चाहिये, इससे उनका रंग खराब हो जाता है।

५. मोज़ों को धोने पीछे हाथ से खेंच कर उनकी सिलवट निकाल देनी चाहिये। इस प्रकार इस्त्री करने की अपेक्षा यह अधिक देर तक चलते हैं।

६. फूलदार मोज़ों को धोने पीछे सुखाने के लिये उनके बीच में सूखे कपड़े की तह दे देनी चाहिये।

७. साबुन को घोलने के लिये चक्कू से छोटे २ टुकड़े करने की अपेक्षा कद्दूकस में से रगड़ कर निकालना अधिक उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस से वह जल में बहुत जल्दी घुल जाता है और कपड़े की मैल भी शीघ्र काट डालता है।

८. अल्यूमीनियम के बर्तन प्रायः शीघ्र ही काले पड़ जाते हैं। इन को साफ करने की सब से अच्छी विधि यह है कि इनको एक छोटे से मुलायम कपड़े के टुकड़े को नींबू के रस में भिगोकर साफ किया जाय और फिर गरम पानी से धो डालना चाहिये।

९. रोगन किये हुए लकड़ी के सामान को साबुन से न धो। यदि वर्षा के पानी से धोया जाय तो वह अधिक अच्छा रहता है। पीछे से एक कपड़े के टुकड़े पर जरा सी वैसेलीन लगा कर इस पर फेर डालो।

१०. कंबल या फुलालैन के कपड़ों को धोते समय यदि एक सेर पानी पीछे एक बड़ा चम्मच ग्लीसरीन मिला कर उससे धोया जाय तो कपड़े सख्त नहीं होते और सिकुड़ते भी कम है।

११. गोन्द, सरेस, जूतों का पालिश और इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं की बोतलों के कार्क कई बार बोतल से चिमट जाते हैं। यदि बन्द करने से पहिले उन पर जरा सी ग्लीसरीन फेर दी जाय तो वह बोतल से कभी न चिमेटेंगे।

भूल सुधार

हमें बड़े खेद से कहना पड़ता है कि प्रूफ़ रीडर की असावधानता के कारण इस वर्ष की ज्योति के दो तीन अंक जो निकल चुके हैं उस में एक दो लेख जो छपे हैं उनमें लेखकों का नाम छपने से रह गया है यथा जून के अंक में ८३ पृष्ठ पर जो 'हृदय' शीर्षक कविता छपी है उसके लेखक हैं श्रीयुत रामपरीक्षण शर्मा 'हृदय'।

(२) जुलाई के अंक में १५६ पृष्ठ पर जो स्वतंत्रता संग्राम में देवियों का स्वार्थ त्याग, शीर्षक लेख है उसके लेखक हैं-श्रीयुत सत्यदेव विद्यालंकार (जेल में)

हम लेखकों से इस भूल के लिये क्षमा मांगते हैं॥

❀ पाकेट इत्रदान ❀

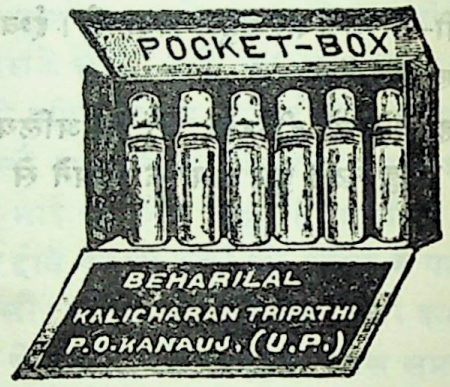

यह इत्रदान उत्तमोत्तम इत्रों से भरा हुआ होने पर भी पाकेट में रखने योग्य है। मित्रों और आफिसरों को नजर देने के लिये नई वस्तु है। विवाह व शादी वगैरः शुभ कार्यों में भी मैफिल का पूरा काम भी दे सकता है।

नं० १ पाकेट इत्रदानफैंसी शी० ६ मय इत्र की ४)
नं० २ ,, ,, ६ ,,
नं० ३ ,, ,, ६ ,,

इसके अलावा हर एक किस्म की इत्र तेल, तमाखू इत्यादि सामानभी हमारे कार्यालय से मंगवा लीजियेगा॥

पता—बिहारी लाल काली चरण त्रिपाठी,
पो० कनौज सिटी (Kanouj City.)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

लोकमान्य तिलक की स्मृति

यद्यपि लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को हमसे जुदा हुये आज तीन वर्ष हो चुके हैं परन्तु हम यही अनुभव करते हैं कि वह हम से जुदा नहीं हुये क्योंकि उनकी स्मृति का चिह्न स्वरूप उनकी निर्भयता हमारे देश भाइयों और बहिनों के हृदय में बड़ी दृढ़ता से घुसी हुई है और सारा भारतवर्ष इसी निर्भयता के भाव से पूरित हो रहा है। किसी ने ठीक कहा है कि—

"मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका है दूसरों के लिये॥"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने देश के आत्म सम्मान और पूर्वजों की कीर्ति की पताका को सबसे ऊपर फहराती हुयी रखने के लिये स्वतन्त्रता के संग्राम में जिस प्रकार दृढ़ता और निर्भयता से यह योद्धा आगे बढ़ कर लड़ा, वैसा वीर उनके समय में दूसरा न था। यह न केवल एक बड़े भारी राजनैतिक क्रान्तिकर्ता और स्वराज्य प्रेमी ही थे वरन बड़े विद्वान् भी थे और न केवल जन्म से ब्राह्मण ही थे वरन् कर्म से भी। इनकी संस्कृत भाषा का ज्ञान तथा शास्त्र ज्ञान बड़ा विस्तृत था और जब २ यह राज विद्रोही बन कर सर्कार के मेहमान बनते तो वहांपर बहुतसा समय अध्ययन में व्यतीत करते थे। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहस्य' उस समय लिखी गई थी जब कि वह मांडले में ६ वर्ष की कैद में रक्खे गये थे। सर्कार के साथ व्यवहार में वह हमेशः ही अपने मत पर अटल और दृढ़ रहे और भारतवर्ष में आज जो उत्साह और बल असहयोग आन्दोलन को मिल रहा है वह उन्हीं की कृपा का फल है। महात्मा तिलक ने जो उत्साह, देश प्रेम और निर्भयता का भाव देश को दिया था, महात्मा गांधी ने उसमें अपने आत्मिक बल द्वारा अधिक धार्मिकता और स्वच्छता के भाव भी भर दिये। सोना और सुगन्ध दोनों इकट्ठा हुये। यतः महात्मा तिलक ही असहयोग आन्दोलन के प्रवर्तक हैं इससे देश को उनके जीवन से हमेशः शिक्षा मिलती रहेगी और हमारे नवयुवक और देवियां जो स्वतंत्रता के संग्राम में अपने जीवन को बलिदान करने के लिये उत्सुक हैं महाराज तिलक के मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम, वर्त्तमान शासन प्रणाली के प्रति उदासीनता, अदम्य इच्छा शक्ति और उत्साह तथा देशहित के लिये सर्वस्व निछावर कर देने के लिये हमेशः तैय्यार रहना इत्यादि शुभगुणों का स्मर्ण करके स्वराज्य को शीघ्र स्थापित करने का उद्योग करेंगे।

———

तुलसी जयन्ती

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी का शुभ नाम भारत वर्षकी हिन्दू कहलाने वाली आर्य्य जाति के बच्चे २ को ज्ञात होगा। उन्हीं तुलसीदास जी की रामायण घर २ नर नारियों के हाथ में देखी जाती है और बहुत से लोग धर्म पुस्तक की भांति इसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। पंजाब प्रान्त में जहां कि सिक्ख धर्म की प्रधानता है वहां पर भी, स्त्रियों को रामायण की कथा करते देखा है। हिन्दी भाषा के अनगिन्त कवि होगये हैं किन्तु गोस्वामी तुलसीदास जी ही एक ऐसे कवि हैं जिनके एक २ पद्य को हिन्दू मात्र आनन्द से ध्यान पूर्वक पाठ करता है। इनकी कविता बड़ी सरस, सरल है और भक्ति और प्रेम के फूलों से हमारे हृदय कानन को भरपूर कर देती है। गुसाईं जी केवल कवि ही नहीं थे वरन समाज सुधारक भी थे और मुसल्मानी राज्यकाल में हिन्दू समाज को पतित होने से बचाने में उन्होंने बड़ा भाग लिया था।

गोस्वामी तुलसीदास जी राजापुर ज़िला बांदा संयुक्तप्रान्तके रहने वाले सरयूपारी ब्राह्मण थे। उनका जन्म सम्वत् १५८९ में हुआ था, किन्तु मूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण माता पिता ने उसी समय उनका त्याग कर दिया था क्योंकि मुहूर्त्त चिन्तामणि जो ज्योतिष के फल को भी बताने वाला ग्रन्थ है और जिसे सनातन धर्मी पण्डित प्रमाण मानते हैं उसमें लिखा है कि मूल की आठ घड़ी में पैदा हुये बालक को त्याग दे अथवा ८ वर्ष तक उसका मुख न देखे इत्यादि। माता पिता के त्याग देने के उपरान्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बालक गुसाईं जी को एक साधु जिसका नाम नृसिंहदास था शूकर क्षेत्र नामक स्थान पर ले गये और वहीं उनका पालन पोषण हुआ। बालकपन ही से उस साधु ने इनको रामकथा का प्रेमी बना कर बड़े होने पर अपना शिष्य बना लिया।

कहा जाता है, कि गुसाईं जी को अपनी स्त्री से बड़ा प्रेम था और कभी उस से अलग रहना नहीं चाहते थे परन्तु एकदिन इनके बाहर जाने पर वह चुपके से अपने पितृ गृह को चली गई। जब इन को पता लगा तो यह भी वहीं चले गये। स्त्री को इस प्रकार का व्यवहार अच्छा न लगा और उस ने झुंझला कर कह दिया, "कि जितना प्रेम मेरे इस नश्वर शरीर से करते हो यदि इतनी प्रीति रामचन्द्र के चरणों में होती तो क्या अच्छी बात थी"। बस यह वाक्य स्त्री के मुंह से निकलने की देरी कि गुसाईं जी को वैराग्य आ गया और घर बार छोड़ कर काशी चले गये। वहीं पर रामायण लिखने का विचार उनके हृदय में उत्पन्न हुआ और सम्वत् १६३१ की चैत्र सुदी नवमी को उस रामायण की रचना प्रारम्भ हुई जिस के कारण तीन सौ वर्ष के बाद भी तुलसी दास की स्मृति हम भारत वासियों के हृदय में नवीन ही बनी है।

आज बड़ी प्रसन्नता और सौभाग्य का दिन है कि हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक गुसाईं तुलसी दास जी का उचित मान करने के लिये हिन्दी संसार आगामी श्रावण शुक्ला सप्तमी को उन की त्रिशत वार्षिक जयन्ती का पुण्य दिवस मनाने को तैय्यार हुआ है। किसी देश व राष्ट्र की जागृति का यह मुख्य लक्षण है कि उस में अपने देश के महापुरुषों का सम्मान करने के भाव अंकुरित हों। हम इस जागृति के शुभ चिह्न का हृदय से स्वागत करते हैं।

हिन्दी लेखकों के लिये गंगा पुरस्कार

गङ्गा पुस्तक माला के सञ्चालकों की ओर से समाचार पत्रों में सूचना प्रकाशित हुई है कि वह प्रति वर्ष अपनी माला में ५० पुस्तकें निकालना चाहते हैं और उन में जो पुस्तक सर्वश्रेष्ठ समझी जायगी उस पर एक स्वर्ण पदक और १५००) नकद का पुरस्कार दिया जायगा। इस पुरस्कार के नियम "माधुरी" के ज्येष्ठ अङ्क में प्रकाशित हुए हैं। सम्पादक महोदय की आज्ञानुसार हम भी इन नियमों पर अपने विचार प्रगट करते हैं। पुरस्कार का दूसरा नियम निम्नलिखित है—

(२) जिस पुस्तक में मौलिकता का अधिक अंश होगा, जो इस देश की जनता के लिये अधिक उपयोगी होगी, जो भाषा और विषय की दृष्टि से स्थायी गौरव रखती होगी उसको अधिक महत्व दिया जायगा।

इस एक नियम में सञ्चालक महोदय ने इतनी शर्तें एक दम एकत्र कर दी हैं कि किसी भी एक पुस्तक में इन सब का मिलना दुर्लभ है। निर्णय समिति के लिये पचास पुस्तकों में से एक ऐसी पुस्तक को चुन लेना जो ऊपर लिखी सब बातों को पूरा करती हो बड़ा कठिन है; वरन असम्भव है। पुनः उदाहरण के लिये हम मान लेते हैं कि इन पचास पुस्तकों में विज्ञान पर एक बड़ी उत्तम पुस्तक लिखी गई, है जो सर्वथा पुरस्कार पाने के योग्य है परन्तु निर्णय समिति में ऐसे ही विद्वान् हैं जिन को शुद्ध साहित्य से ही अधिक प्रेम और परिचय है। इस अवस्था में इस विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक पर पुरस्कार दिया जाना असम्भव है। इसी प्रकार इस से भिन्न अवस्था में साहित्य अथवा इतिहास की पुस्तक सर्वश्रेष्ठ होने पर बिना पुरस्कार रह सकी है।

अतः हमारा विचार है कि पुरस्कार योग्य पुस्तकों को यदि उन के विषय के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुसार तीन भागों में बांट दिया जाय तो बड़ा उत्तम हो जैसा कि (१) साहित्य इस में नाटक, कविता, उपन्यास, शुद्ध साहित्य इत्यादि सभी सम्मिलित हों) (२) विज्ञान (भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, प्राणी शास्त्र, भूगोल इत्यादि इस के अन्तर्गत माने जायें) और (३) इतिहास (नवीन और अर्वाचीन, पुरातत्त्व सम्बन्धी अन्वेषण सम्पत्ति शास्त्र नीति इत्यादि) एक वर्ष में इन तीनों में से एक ही विषय पुरस्कार के लिये चुना जाय। इस प्रकार पुरस्कार का दूसरा नियम केवल लेख बद्ध ही न रह कर बहुत कुछ सजीव बन सक्ता है। यदि सञ्चालक महोदय को हमारा यह प्रस्ताव स्वीकार हो तो नियम (१) को इस प्रकार बदलना उचित होगा— गङ्गा पुस्तक माला कार्यालय के निर्णय से तीन वर्ष में पहले। विषय पर प्रकाशित होने वाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के लेखक को १५००) का एक पुरस्कार और एक स्वर्ण पदक दिया जायगा।

हमारी सम्मति में आज कल ज्ञान विषय का इतना बाहुल्य है कि किसी भी एक व्यक्ति के लिये चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो— प्रत्येक विषय का विद्वान् होना असम्भव है। अतः यह आशा करना कि हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान उपरोक्त विषयों में से प्रत्येक में प्रवीण (expert) हों यह दुर्लभ है। अतः हमारी सम्मति में निर्णय समिति की रचना इस प्रकार होनी चाहिये कि इस में तीन लब्ध प्रतिष्ठ हिन्दी के विद्वान् रहें और दो उस विषय के (हिन्दी प्रेमी और हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वाले) पण्डित हों जिस में कि उस वर्ष में पुरस्कार देना हो। गङ्गा पुस्तक माला के सम्पादक यदि निर्णय-समिति के सदस्य न हों तभी अच्छा है।

अन्य नियमों के विषय में हमें कुछ विशेष नहीं कहना है। पुरस्कार को केवल गंगा पुस्तक माला कार्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तक ही परिमित करना व्यवसाय की दृष्टि से चाहे ठीक हो परन्तु साहित्य सेवा को उत्साहित करने के विशुद्ध भाव की इस से पूर्ति नहीं होती। तो भी संचालकों का यह उद्योग प्रशंसनीय है और हिन्दी संसार को उनका कृतज्ञ होना चाहिये।

महाराजा नाभा

पञ्जाब प्रान्त में गत मास की सब से महत्त्व-पूर्ण घटना महाराज मालवेन्द्र रिपुदमन सिंह नाभा नरेश का सिंहासन त्याग है। पिछले दिनों महाराजा नाभा और महाराजा पटियाला में आपस का कुछ झगड़ा होगया था और अवस्था तू तू, मैं मैं तक पहुंच गयी थी। दोनों पक्षों के समर्थकों ने अपने अपने नरेश की हिमायत में अनेक जलसे किये, छोटी २ पुस्तिकायें लिखीं तथा समाचार पत्रों में लेख लिखवाये, जिनमें सुना है बड़ी गन्दी गालियां दी गयीं और घृणित असभ्य आक्षेप एक दूसरे पर किये गये। महाराजा पटियाला ने अंग्रेज़ी सरकार से शिकायत की और उसने निश्चय किया कि इस प्रकार झगड़ने की अपेक्षा यदि दोनों पक्ष अपने २ आक्षेप एक जज के सन्मुख पेश करें तो सब झगड़े का सभ्यता पूर्वक फैसला हो सक्ता है। दोनों पक्षों ने यह स्वीकार किया और सरकार ने इलाहबाद हाईकोर्ट के जज स्टुयार्ट को इस काम के लिये नियुक्त किया। कई मास तक मुकद्दमा चलता रहा और अन्त में फैसला महाराजा नाभा के विरुद्ध हुआ। इसीफैसले के आधार पर महाराजा नाभा को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी। यह है संक्षेप में इस सारे झगड़े का इतिहास।

आधुनिक भारत में सिक्ख एक जीती जागती जाति है। यदि पराधीन होते हुये भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किसी को समूह रूप से स्वाधीन कहा जा सक्ता है तो वह सिक्ख ही हैं। यह इन की धर्म भक्ति और श्रद्धा, स्वार्थ त्याग और संस्था की मर्यादा के लिये असीम मान के ही कारण है। गुरु के बाग में बलवती भारत सरकार को नीचा दिखा कर उन्हों ने संसार को दिखला दिया है कि उनकी क्या सामर्थ्य है ? इस मामले में सिक्ख जाति ने समझा है कि सरकार ने न्याय से काम नहीं लिया। यदि यह मान भी लिया जाय कि महाराजा नाभा ही दोषी हैं तो भी उनका यह दण्ड इतना भीषण और कठोर है कि इस में न्याय की गन्ध तक नहीं। अतः सिक्खों की मुख्य जातीय धार्मिक संस्था शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने सरकार को इस बात का चैलेञ्ज दिया है कि वह इस बात को साबित करे कि महाराजा नाभा ने स्वयं अपनी इच्छा से राजगद्दी को छोड़ा है जैसा कि भारत सरकार कहती है। शिरोमणी कमेटी का कथन है कि उनके पास लेख बद्ध प्रमाण है जिस से सिद्ध होता है कि महाराज ने दबाव में आकर और डराये धमकाये जाने पर राजगद्दी को छोड़ा है। शिरोमणी कमेटी का विचार है और उससे जनता का बड़ा भारी भाग सहमत भी है कि महाराज नाभा को उनकी निर्भयता, देश, जाति और धर्म प्रेम तथा खुशामद से कोंसों दूर रहने के कारण ही यह दण्ड मिला है। इसके उदाहरण में वह महाराज का गत वर्ष मसूरी में तिलक पाठनालय की स्थापना के समय इसके प्रधान पद को स्वीकार करना, गत महायुद्ध में कुछ रुपये के अतिरिक्त अधिक सहायता न करना तथा अन्य राजाओं की तरह वाइसराय और गवर्नरों के पीछे पीछे न घूमना, पेश करते हैं। नाभा ही एक ऐसा प्रान्त है जिसमें कि अकालियों को उनके धार्मिक आन्दोलन के कारण जेल में नहीं ठूंसा गया, नाभा ही ऐसा स्थान है जहां अकाली काली पगड़ी पहिने निर्भीक घूम सक्ते हैं।

भारत सरकारने नाभा से जो सन्धि कीथी उस में स्पष्ट लिखा था कि रियासत के भीतरी और दूसरी रियासतों से सम्बन्ध रखने वाली बातों में हस्ताक्षेप न करेगी। अब ऐसा न करके उसने सन्धि को तोड़ा है यह सिक्खों का मत है। कितने महाराजे भारत में हैं जो उस से कहीं अधिक घृणित, क्रूर कार्य्य जो कि भारत सरकार महाराजा नाभा के सिर मढ़ती है-करते रहते हैं परन्तु उन्हें कभी राजच्युत नहीं, किया जाता-इत्यादि।

जनता इन सब बातों को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करती है। यह एक निर्विवाद विषय है कि सरकार ने राजनैतिक आन्दोलन को न्याय रहित कठोरता से दबाने का कार्य कर जनता की सहानुभूति और विश्वास को खो दिया है। चाहे वह किसी अन्य समय कुछ दूसरी ओर सोचती भी परन्तु अब तो उसे सरकार का ही पक्ष सर्वदा निर्बल दिखलाई देता है।

अस्तु शिरोमणी गुरुद्वारा कमेटी ने फैसला किया है कि वह इस अन्याय को अवश्य हटावेगी। नाभा के किले में गुरु गोविन्दसिंह जी का गुरुद्वारा है वह सिक्खों से इतर किसी जाति के पास न रहना चाहिये। इस धार्मिक अपमान को हटाना सिक्ख अपना कर्तव्य समझते हैं। पंजाब के प्रत्येक नगर और गांव गांव में यह आन्दोलन हो रहा है। सिक्ख जाति जोश पर है। परन्तु यह उनका कथन है कि हमारा आन्दोलन अहिंसात्मक और निःशस्त्र ही रहेगा। तिस पर कहा जाता है कि भारत सरकार डर रही है। उसने नाभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में फौज एकत्र करनी और मूर्चा बन्दी आरम्भ कर दी है। इन सब का खर्च भी नाभा के ही खज़ाने पर पड़ेगा।

देखिये भविष्य क्या दिखलाता है? सगुन तो अच्छे नहीं। सिक्ख, डटे हुए हैं। यदि उन्होंने इस युद्ध को भी जीत लिया-जिसकी कि पूर्ण आशा है तो वह निःसन्देह संसार में अहिंसात्मक युद्ध को भली प्रकार एक सफल युद्ध पद्धति सिद्ध कर सकेंगे। परमात्मा करे कि यह ऐसा ही हो जिससे युद्ध की क्रूरता, भयंकरता और उद्दंडता, दूर हो सके और युद्ध का क्षेत्र भी धार्मिक क्षेत्र बन सके।

केनियां (पूर्वी अफ्रीका) की समस्या

प्रवासी भारतीयों की जो दुर्दशा उपनिवेशों में हो रही है, वह पढ़े लिखे लोगों से छिपी नहीं है। नित्य ही हम समाचार पत्रों में विदेश में गये हुए अपने भाइयों के प्रति गोरे लोगों के दुर्व्यवहार के समाचार पढ़ते रहते हैं। और हमारे नेता लोग अपने अपने दृष्टि विन्दु के अनुसार इन दुःखों के दूर करने के उपाय सोचते रहते तथा आन्दोलन करते रहते हैं। फीजी, दक्षिण अफ्रीका, फिलिपाइन द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका, अमेरिका इत्यादि सभी जगह गोरी और काली जाति के बीच झगड़ा चल रहा है और झगड़ा सैंकड़ों वर्षों से चला आ रहा है। उस में कई शक्तियां काम कर रही हैं उन्हें रोकना आज किसी एक सर्कार की शक्ति से बाहर है। बात यह मालूम होती है कि युरोप की गोरी जाति स्वार्थवश होकर संसार के ऊपर अपना आधिपत्य रखना चाहती है और पशु बल का प्रयोग उन के लिये साधारण बात है। इस गोरे और काले के संघर्ष सिन्धु में केनियां भी एक छोटा सा विन्दु है और यतः वहां भारतीयों के साथ गोरों का संघर्ष है इससे हम भारतीय भी उस संघर्ष में भाग लिये विना रह नहीं सक्ते, चाहे हमारे बनाये कुछ भी न बने। जब मिस्टर शास्त्री केनियां की समस्या को भारतियों के पक्ष में हल कराने की दृष्टि से डेपुटेशन लेकर विलायत चले थे तभी अनुभवी राजनीतिज्ञों ने कह दिया था कि यह परिश्रम व्यर्थ है। पार्लियामेन्ट और कैबिनट के किये कुछ न होगा। उपनिवेशों की सभा ने जो बात पहिले से ही निश्चित करली है वही की जायगी। यङ्ग इण्डिया के शब्दों में "अफ्रीका की उर्वर भूमि में भारतीयों को प्रामाणिक रीति से अंगरेज़ों के बराबर हक दिये जाना एक असम्भव बात है। वह तो बड़ी व्यवस्थापक सभा, शिष्ट मण्डल तथा सर्कारों और कैबिनट की शक्ति से बाहर की बात है। लार्ड डेलामियर और जनरल स्मटस के पीछे वह ज़बरदस्त ताकत है—गोरी जाति की वह जातीय स्वार्थ बुद्धि, जो अधिकार और जीवन कलह में सदा विजयी रहने के लिये निरन्तर और अबाधित रूप से प्रयत्न शील रहती है-जिसे पराजित करना किसी भी पार्थिव शक्ति के बाहर की बात है।" परन्तु उस समय किसी ने इस पर ध्यान न दिया, बल्कि हमारे माडरेट भाई तो एक प्रकार से निश्चिन्त से ही थे कि अब तो केनियां का प्रश्न हल ही हुआ क्योंकि २७ जुलाई को जब कौंसिल में केनियां के प्रश्न पर बात छेड़ी गई तो सर्कार की तरफ़ से यह आश्वासन मिला था कि भारत सचिव का भारत सर्कार से केनियां के सम्बन्ध में मत भेद है या वह उदासीन है, यह बात ज्ञात नहीं हुई है क्योंकि केबिनट की बातें गुप्त होती है, परन्तु जहां तक पता लगा है तो यही प्रतीत होता है, कि भारत सचिव ने भारतीयों के विचारों को स्पष्ट रूप से और निर्भीकता से प्रगट किया है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माडरेटों की व्यर्थ की धमकी

इस पर कौंसिलके सब भारतीय सदस्यों का एक मत हुआ कि यदि केनियां का फैसला भारतीयों के पक्ष में न हुआ तो हम उपनिवेशों से आये हुए लोगों के ऊपर भी कड़े नियम लगावेंगे। मिस्टर रज़ाअली ने कहा—"भारत वासियों को बाहर भेजना बन्द होना चाहिये, जिन उपनिवेशों ने आघात पहुंचाया है वहां से आये हुए माल पर कर लगाना चाहिये, भारत की ओर से इम्पीरियल कान्फ्रेंसों में कोई भाग न लिया जावे, और बृटिश इम्पायर प्रदर्शिनी में कोई शामिल न हो। यदि कोई युद्ध छिड़ जावे तो भारत को इंग्लैण्ड की पीड़ित अवस्था से जो कुछ लाभ उठा सके उठाना चाहिये। लाला रामसरन दास ने यहां तक कहा कि यदि बृटिश सर्कार भारतीयों की बातको न माने तो लार्ड रेडिंग को इस के विरोध में पद त्याग कर देना चाहिये।

केनियां का अन्तिम फैसला।

निदान केनियां की समस्या अब हल हो गई। जिनका घर में मान नहीं होता उनको बाहर वाले भी मान नहीं देते। हम भारतीय घर बाहर सर्वत्र ही ठुकराये जाते हैं। भारतीय सदस्यों ने इतनी धमकी भी दी और शास्त्री जी ने शास्त्रार्थ भी किया परन्तु बृटिश मन्त्री मण्डल ने इन सब बातों की उतनी ही परवाह की जितनी कि बाघ गीदड़ की करता है। केनियां का फैसला गोरों की रुचि के अनुकूल ही हो गया है। इसके अनुसार केनियां में साम्प्रदायिक ढंगों से प्रतिनिधि भेजे जाया करेंगे और उसमें भी गोरे बहु संख्या में हों गे। हिन्दुस्तानियों के लिये भारी अड़चनें लगाई गई हैं। और गोरों के लिये खास रियायतें रक्खी गई हैं। उन की व्यवस्थापिका के पांच भारतीय मेम्बर रहें गे और ग्यारह गोरे तथा सर्कारी मेम्बर होंगे और एक ईसाई मिश्नरी अफ्रीका के लोगों का प्रतिनिधि बनकर रहेगा। ऊंचे स्थानों में गोरे लोग ही रहें गे भारतियों को नीचे हिस्सों में ही रहना मिलेगा और केनियां में भारतवासी विना किसी रोक टोक के नहीं जाने पावें गे।

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुखपत्र।

॥ आर्यमित्र ॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति बृहस्पतिवार को आगरा से प्रकाशित होता है।

सम्पादकः—

पं० हरिशङ्कर जी शर्म्मा "कविरत्न"

यदि आप वैदिकधर्म प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियें पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्य जगत् के समाचार जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही—

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये,

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है।

पता—आर्यमित्र, आगरा।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१ अमृतधारा ।

जगत्प्रसिद्ध औषधि। कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की ईजाद। एक ही ओषधि प्रायः सर्व रोगों को यथावसर खाने व लगाने से दूर करती है। ज्वर, खांसी, इन्फ्लुएंज़ा, प्लेग, निमोनिया, हैजा, अजीर्ण, नजला, जुकाम, सर्प, बिच्छू आदि के डंक, वात, पित्त, कफ के रोग। शिर, कान, नाक, दन्त, पेट, जोड़ चोटादि की पीड़ायें सब तुरन्त नष्ट होती हैं। सविस्तर वर्णन के वास्ते 'अमृत' पुस्तक मुफ्त मँगावें। मूल्य २॥) अर्धशीशी १।) नमूना ॥) अमृतधारा को मिला कर और अद्भुत ओषधियां बनाई गई हैं। सोप, मरहम, और मीठी टिकियां

२ अमृतधारा मरहम ।

समस्त चर्मरोगों की अद्वितीय ओषधि है। सब प्रकार के घाव, चोट, रगड़, फुन्सी, दद्रु, चम्बल, एगज़ीमा, खाज, छपाकी, छाले, हाथ-पांव का फटना, उपदंश के घाव, अर्शमस्से, मच्छर भिड़ आदि के डंक, आग उष्ण जल व तेजाब आदि से जलना, सब इससे दूर हो जाते हैं। बड़े से बड़े गहरे घाव इतनी जल्दी भरने शुरू हो जाते हैं, कि बड़े बड़े डाक्टर चकित रहते हैं। इसको मलने से पट्ठों का दर्द दूर हो जाता है। तात्पर्य यह है कि यह एक अद्भुत मरहम है। मूल्य १) प्रति शीशी।

४
चार

३ अमृतधारा सोप ।

यह अद्वितीय है, क्योंकि यह साबुन रोज के बरतने के वास्ते अति उत्तम है, और साथ ही यह चर्मज रोगों को भी गुणकारी है। पित्ती खुजली, दाद, चम्बल, मुखछाई, मुहांसा आदि शीघ्र दूर करता है। मैल भी दूसरों सोपों से अधिक उतारता है। सुगन्धि भी बड़ी अच्छी है। मूल्य ॥≠) प्रति डब्बा। १ टिकिया ।-)

४ अमृतधारा की मीठी टिकियां ।

कई मनुष्यों (विशेष कर स्त्रियों) के लिए ओषधि खाना कठिन होता है। बालक को भी ओषधि देना कठिन है। इसी वास्ते यह मीठी टिकिया तैयार की गई है, जो कि मिठाई के तौर पर बालक तक भी बड़े आनन्द से खाते हैं। कई प्रकार की विलायती गोलियों और टिकियों से अधिक लाभकारी हैं।

बालकों को शूल, दस्त, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, पसली आदि सब रोगों में दे सकते हैं।)

मूल्य १०० टिकिया केवल ।)

पत्र या तार का पता:—

अमृतधारा ९, लाहौर

विज्ञापक:—

मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन,

अमृतधारा सड़क, अमृतधारा पोस्ट, लाहौर ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य।

कोषकी कथा—सचित्र पुस्तक में Cell का सरलभाषा में पूर्ण परिचय दिया है। प्राणिशास्त्र के विषय में हिन्दी में ऐसी सरल पुस्तकें निकलना अच्छीबात है। यह पुस्तक प्राणिशास्त्र के छात्रों के लिए बड़ी सहायक होगी। मू०॥)

श्रीहर्ष—पुस्तक के पढ़ने से मालूम हो जाता है कि भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री किस प्रकार संस्कृत साहित्य में भरी पड़ी है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुत सी ऐतिहासिक बातें मालूम होती हैं। बंसखेर तथा मधुवन के ताम्रपत्र तथा श्रीहर्ष के हस्ताक्षर इसकी उपयोगिता को बढ़ाते हैं। बढ़िया छपी पुस्तकहै मू०॥

अवताररहस्य—अर्थात् भारतीय तथा युरोपीय पुराण कथाओं की तुलनात्मक समाक्षा इस पुस्तक में बड़ी खोज तथा परिश्रम से तुलनात्मक विवेचन करते हुए अवतारों का रहस्य समझाया है जो प्रत्येक जिज्ञासुको पढ़ना चाहिए। इसमें २५ प्रकरण हैं तथा भाषा शास्त्र की उत्पत्ति, आर्य्यकुल और उसका आदि निवासस्थान, युगलक्षण इत्यादि विषयोंपर विवेचन किया है। सजिल्द बढ़िया छपी पुस्तक मू० ॥≈)

तुलनात्मक धर्म्मविचार मू० १) गुजराती हिन्दी शब्दकोष मू० ३)। आठ आने जमा करने वालों को इन स्वल्प मूल्य की पुस्तकों पर दो आना रुपया कमीशन दिया जायगा। अतएव स्थायी ग्राहक बनकर लाभ उठाएं। इन मालाअ में समुद्रगुप्त, चीनकी संस्कृति, नीति विवेच इत्यादि २ पुस्तकें छपरही हैं।

मुफ्त—यदि आप इन पुस्तकों को विनामूल्य लेना चाहें तो दो पैसे के टिकट भेज हमसे नियम मंगालीजिए।

अन्यपुस्तकें।

सृष्टिविज्ञान २ शरीरविज्ञान ।≡) ब्रह्मयज्ञ ॥। गीतासार ।≈ त्रिदेवनिरूपण ।-) आत्मस्थान विज्ञान -) दुर्गा ।≈) प्रेमपूर्णिमा २) इनके अतिरिक्त सब प्रकार की पुस्तकें तथा मासिक सूची-पत्र मिलने का पता **जयदेवब्रदर्स बड़ोदा**

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आनन्द समाचार

ज्योति के प्रेमियों के लिये विशेष सुविधा

४॥) के स्थान ३) में

ज्योति के एक हितैषी ने हमें कुछ धन इसलिये दिया है कि इस से ज्योति के उन नये खरीदारों को जो ४॥) वार्षिक मूल्य देने में असमर्थ हों ज्योति ४॥) के स्थान में ३) में दीजाय। अतः ज्योति के प्रेमियों को इस रियायत से शीघ्र लाभ उठाना चाहिये। हमारे पास ज्योतिके वार्षिक मूल्यमें रियायत करनेके लिये कईबार प्रार्थना पत्र आते रहते थे जो कि हम ज्योति की आर्थिक अवस्था के कारण स्वीकार करने में असमर्थ थे। अब ऐसे भाई, बहिनों, कन्या पाठशालाओं, वाचनालयों, तथा अन्य ऐसी ही संस्थाओं को शीघ्रता करनी चाहिये। ३) सहित आर्डर आने पर इस वर्ष के अब तक के तीनों अंक उनकी सेवा में पहुंच जायेंगे और इस के पीछे ९ मास तक ज्योति लगातार मिलती रहेगी।

शीघ्रता कीजिये जिस से पीछे पछताना न पड़ें।

मैनेजर ज्योति,

ज्योति कार्यालय,

ग्वालमंडी लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बाम्ब मशीन प्रेस लाहौर में मैनजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

Regd. N. L. 1240

वर्ष ४] पौष १९८७--जनवरी १९२४ [खण्ड ४, संख्या ९

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी. ए.

स्त्रियों और विद्यार्थियों के ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१—(कविता) करुण-क्रन्दन, लेखक-विश्वनाथ प्रसादमिश्र "मुकुन्द"	४४६
२—स्त्रियों की स्थिति, ले०-प्रोफेसर सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार गुरुकुलकांगड़ी	४५०
३—(कविता) तेरी माया। लेखक-श्रीयुत बलराम उपाध्याय बी० ए०	४५६
४—आजन्म ब्रह्मचारिणी देवियों से लाभ लेखिका-एक "आर्य्य महिला"	४५७
५—अत्याचार का अन्त, लेखक-श्रीयुत श्रीकृष्ण पांडे	४५६
६—(कविता) सदाचार, लेखक-'कुशल'	४६७
७—राजर्षि-भीष्म (नाटक) लेखक-श्रीयुत हरगुलालजी वशिष्ठ।	४६१
८—पतिका घर, लेखक-श्रीमती शारदा कुमारी गोभिलीय	४७४
९—(कविता) ऊषा का स्वप्न, लेखक-श्रीयुत रामपरीक्षण शर्म्मा "हृदय"	४७८
१०—कुसुमोद्यान।	४७९
११—वैज्ञानिक संसार।	४८२
१२—हमारी मंजूषा।	४८५
१३—वनिता विनोद।	४८६
१४—गृह प्रबन्ध।	४९१
१५—विचार प्रवाह।	४९६

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंगरेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इसका वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियां सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ़्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियां दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनि-आर्डर द्वारा भेजें। वी. पी. भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को-कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्ध-कर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बंधी पत्र मैनेजर 'ज्योति' रावलमंडी लाहौर के पते से आने चाहियें॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रपति मौलाना मुहम्मद अली ।

कांग्रेस-स्वागताध्यक्ष

श्री कोंडा वेंकटप्पा ऐय्या ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

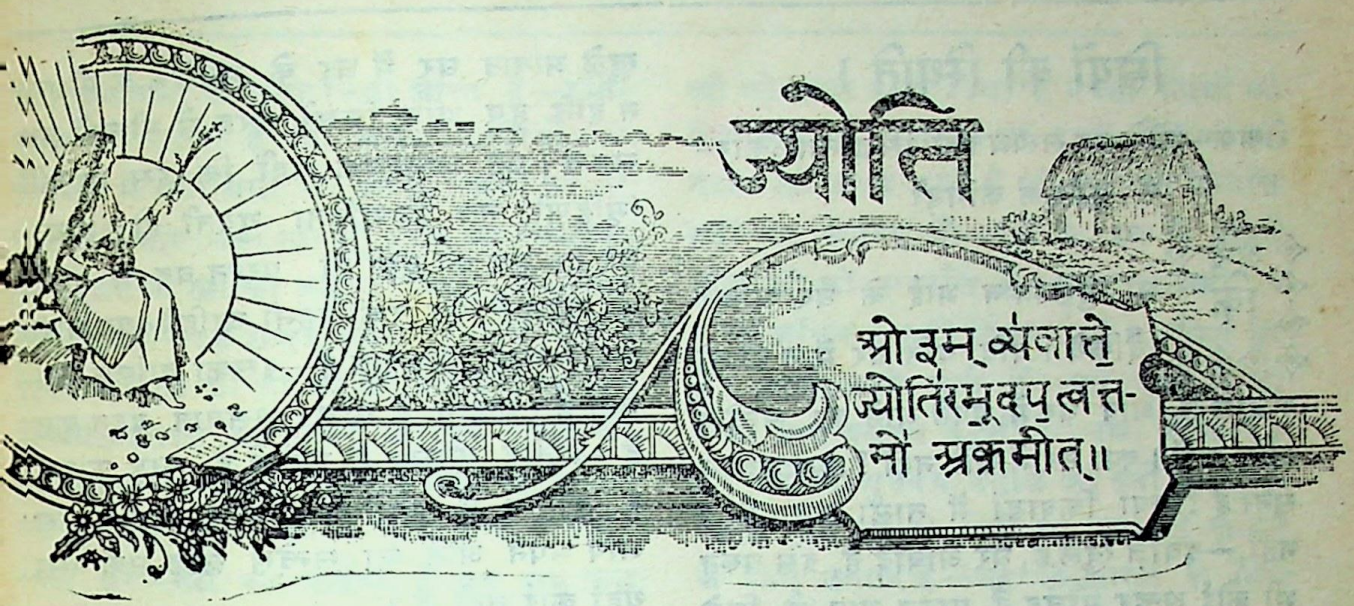

वर्ष ४ | पौष १९८०—जनवरी १९२४ | संख्या ९

करुण-क्रन्दन

ले०—विश्वनाथ प्रसाद मिश्र "मुकुन्द"

प्रतीक्षा करी बहुत हे नाथ !
अवतरो निज-भ्राता के साथ ॥
दीन-माता का गह लो हाथ ।

घोर-अन्याय-नाश के लिये—
शीघ्र ले लो प्रभु ! अब अवतार ॥१॥

पड़ी है पर के वश में अम्ब ।
घेरते उस को दुःख कदम्ब ॥
कर रहे फिर क्यों विभो ! विलम्ब ?

धनुष, शर, तूण, संग में लिये—
पधारो, करो क्लेश-संहार ॥२॥

धर्म की—अब होती है—ग्लानि ।
व्यक्ति भी खोती है निज—कानि ॥
महानों की होती है हानि ।

वही मुनि-वेष प्रभो ! अब किये—
बढ़ो, कर दो भारत उद्धार ॥३॥

हो गया है अति-काल अतीत ।
तुम्हारे ही हाथों है जीत ॥
करोगे, गावेंगे गुण-गीत ।

दीन के नाथ 'राम' हैं हुए—
कह रहा यह सारा-संसार ॥४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों की स्थिति।

लेखक—प्रोफेसर सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार—गुरुकुल कांगड़ी

किसी मुसलमान भाई के घर जाकर देखिये। यदि पति घर में न हो तो मज़ाल है, आप घर में अपने आने का सन्देस छोड़ सकें। क्या घर में कोई नहीं? क्या मकान सूना है? क्या किवाड़ों में ताला लगा है? नहीं,—दर्वाज़े खुले हैं, घर आबाद है, इस वख्त भी कोई अन्दर मौजूद है, परन्तु आप के लिये घर सूना न होता हुआ भी सूना है, किवाड़ खुले होते हुए भी बन्द हैं, आप अपने आने का कोई सन्देस नहीं छोड़ सकते! क्या कारण? कारण यही कि घर में जिस तरह मेज़ कुर्सियें मकान की शोभा बढ़ा रही हैं, जिस तरह झाड़ फ़ानूस छत से लटकते हुए अलङ्कार हैं, उसी तरह इस घर में एक जीवित अलङ्कार है-शायद नया हो, शायद पुराणा हो—वह मकान वाले की मलकीयत है। मालिक-मकान के लिये उस की स्त्री उसकी सम्पत्ति है, एक चीज़ है-उन्हीं अर्थों में वह मलकीयत और चीज़ है जिन अर्थों में उसकी मेज़ और कुर्सी। वह उसे छिपाकर रखता है—शायद वह उसके चुराये, खोये या छीने जाने से डरता है—घर के आख़ीरी कमरे के आख़ीरी कोने में गठड़ी सी बनकर बैठे रहने का उसे हुक्म मिला हुआ है। एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के समय उसे अच्छी तरह लपेटा जाता है, कोने २ से कपड़े से ढांपा जाता है, खूब पैक करके उसका पार्सल तय्यार किया जाता है। स्टेशनों पर सब ने देखा होगा। उसे गाड़ी में इसी तरह चढ़ाया जाता है जिस तरह एक बिस्तर को। यही कारण है कि इस खुले आबाद घर में घर के मालिक के मौजूद न होते हुए आप किसी तरह से भी नहीं जा सकते। यह आवश्यक नहीं कि इस घर की 'गृहिणी' नव विवाहिता युवती हो—शायद वह ८० वर्ष की बूढ़ी हो परन्तु वह तो दूसरे की चीज़ है, वह ढंकी रहनी चाहिये। यह सारा मकान माल, असबाब है—इसका मालिक यहां नहीं है। मकान में माल, असबाब बहुत कुछ है—मेज़ें हैं, कुर्सियें हैं, ग़लीचे हैं, झाड़ फ़ानूस हैं, मुर्ग़ियें हैं, घोड़े हैं—परन्तु जिसके पास आप अपने आने का सन्देस छोड़ सकें ऐसा यहां कोई नहीं है।

पुरुष जाति ने स्त्री-जाति को अपनी जायदाद बना रक्खा है। कहते हैं, स्त्री स्वभाव से ही दबती है—उस में अपनी इच्छा नहीं होती वह एक चीज़ हैं, भोग्य वस्तु है। सैमेटिक-लोगों के यही विचार हैं। मुसलमान और यहूदी इसी दृष्टि से स्त्री को देखते हैं। उनकी मान्य पुस्तक बाइबल के पुराने अहदनामे में लिखा है कि खुदा ने मट्टी से गाय, भैंस, भेड़, बकरी, आदि को बना दिया—उन में रुह नहीं फूंकी। स्त्री को भी बनाया लेकिन उसमें भी रुह नहीं फूंकी। आदम को बनाकर उस में रुह फूंक दी। इसीलिये पक्के ईसाई-मुसाई और मुहम्मदी पशुओं तथा स्त्रियों में आत्मा नहीं मानते। यदि स्त्री मे आत्मा नहीं तो वह माल, मत्ता, असबाब नहीं तो और क्या है? इसीलिये सैमेटिक जातिके लोगों की लड़ाइयों मे हाथियों घोड़ों की लूट के साथ २ स्त्रियों को भी लूटा गया! जिस के पास जितने अधिक हाथी, घोड़े हुए वही बड़ा—बड़े के पास अधिक स्त्रियों का होना ज़रूरी हुआ बहु विवाह का अधर्म होना तो दूर, वह व्यक्ति के गौरव की परख बन गया। अतिथियों का सत्कार अपनी उत्तम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सी उत्तम वस्तु के साथ किया जाता है—इतिहास की साक्षी है कि अनेक जातियों की सम्मति में अतिथियों का उनकी स्त्रियों पर भी पूरा अधिकार था। स्त्री तो पुरुष का खिलौना है। पुरुष को स्त्री की ज़रूरत पड़ती है—'स्त्री की ज़रूरत'—इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं। पुरुष चाहे तो स्त्री को जी भर कर पीट सकता है—वह उसकी मलकीयत जो हुई पुरुष को स्त्री का मनोवाञ्छित उपयोग करने का पूरा २ अधिकार है—पुरुष स्त्री के साथ जैसा व्यवहार चाहे करे—स्त्री का कर्तव्य है वह सब कुछ आंखमूंद कर सहन करे। पुरुष स्त्री के गहने उतार कर बेच सकता है, बुरे से बुरा इस्तेमाल कर सकता है। लोग स्त्रियों को बेचते हैं—बड़ी भारी तिजारत होती है। स्त्रियें खुद अपने जिस्म को कौड़ी २ में बेचती हैं। यह सब कुछ क्यों होता है—क्योंकि स्त्रियों की स्थिति माल असबाब से बढ़ कर नहीं। 'स्वतन्त्रता शब्द का पुरुष ही उच्चारण कर सकता है—'स्त्री' और इन दोनों शब्दों में कोई साहचर्य्य नहीं।

अब चलिये किसी युरोपियन के घर। यहां भी गृह-पति अनुपस्थित है—परन्तु कोई फ़िकर नहीं। पांव की आहट सुनते ही नवयौवन-सम्पन्न-गृह-पत्नी शृङ्गार किये हुए बूटों की टप २ आवाज़ करती हुई आप के सामने आ खड़ी होती है। 'चलिये, अन्दर चल कर बैठिये चाय पीजिये। आराम कीजिये। गृह-पति के आने तक पुस्तक लेकर पढ़िये। मुसल्मान भाई के घर में ८० वर्ष की वृद्धा भी आप के सामने आने से हिचकिचाती थी, यहां १९ वर्ष की युवती बड़ी खुल कर आप से वार्तालाप करती है। क्यों?

सैमेटिक जातियों से युरोपियन जातियें उन्नत अवस्था में हैं। उन्हीं ने अपने समाज में स्त्री को ऊंचा दर्जा दिया है। यहां स्त्रियों की स्थिति झाड़, फानूस या हाथी घोड़े की सी नहीं। स्त्री उनसे ऊंची है स्त्री पुरुष की सम्पत्ति नहीं--वह स्वतन्त्र है—नहीं २, इन के मत में पुरुष स्त्री की सम्पत्ति है। पुरुष का स्त्री पर इतना अधिकार नहीं जितना स्त्री का पुरुष पर है। भ्रमण करने जाते हैं—स्त्री पुरुष से दो कदम आगे बढ़कर चलती है। बच्चा रोता है। स्त्री बच्चे को पुरुष के हवाले कर देती है। युरोपियन लोग स्त्री के लिये मां, बाप को छोड़ने के लिये तय्यार हैं—घर से भागने के लिये उद्यत हैं। पुरुष स्त्रियों के साथ मिल कर नाचते हैं। जो पुरुष जिस स्त्री से और जो स्त्री जिस पुरुष से चाहे प्रेम करे—प्रेम की खुली छुट्टी है, पूछने वाला कोई नहीं। शादी होते होते ही घर से जुदा हो जाते हैं-अपनों को छोड़ पराये हो जाते हैं, स्त्री के दास होजाते हैं। सैमेटिक जातियों ने स्त्री को धन दौलत समझा, उसे पुरुष की क्रीत दासी समझा, विषय-वासना-तृप्ति का एक साधन समझा—युरोपियन जातियों ने स्त्री के स्त्रीत्व-रूप को देखा उसे रत्नों से जड़ दिया, अलङ्कारों से विभूषित कर दिया, अपने जीवन को उसीके चरणों में समर्पित कर दिया, स्त्री में भोग्य बुद्धि को एक दूसरा रूप दे दिया। स्त्री कष्ट सहन करने के लिये उत्पन्न नहीं हुई-वह अध-खिली चमेली की कली है; कष्ट-रूपी पाला लगने से वह मुरझा जायगी। वह दिन भर कोकिल-कण्ठ से गाया करे, वसन्त की शीतल-पवन के झकोरे से हिलते शालमली-पत्र की तरह नाचा करे। चन्द्रमा समुद्र में ज्वार भाटा उत्पन्न करता है-वह भी मानव-मानस में तरङ्गें उत्पन्न करती रहे। वह हंसती रहे, खेलती रहे, कूदती रहे, नाचती रहे, गाती रहे, - युरोपियन जातियें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसीसे सन्तुष्ट हैं। बूढ़ी स्त्रियें भी इनके यहां शृङ्गार करती हैं, पाउडर लगाती हैं, दुनियां भर की नोंक-झोंक करती हैं—अपने, स्त्री-भाव को कायम रखने के प्रयत्न में लगी रहती हैं।

पाश्चात्य-देशों में स्त्री के 'स्त्री-भाव' को प्रधानता दी गई में-इसीलिये वहां स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार देने पड़ रहे हैं। 'स्त्री-भाव' का दर्शन पुरुष को बाधित कर देता है कि वह स्त्री को समान अधिकार दे। स्त्री पुरुष के बराबर हो जाती है। यही बराबरी युरोप में दीख पड़ती है। पुरुष स्वतन्त्र हैं—स्त्रियें भी स्वतन्त्र होनी चाहियें। पुरुष वकालत करते हैं—स्त्रियों को भी वकील बनना चाहिये। पुरुष व्यापार करते हैं-स्त्रियों को भी सौदागर बनना चाहिये। पुरुष सरकारी नौकरियां करते हैं—स्त्रियों की भी नौकरी की तलाश में रहना चाहिये। युरुप में स्त्रियें वे सब करना सीख रही हैं जो अबतक पुरुषों के ही समझे जाते थे—पुरुष की स्त्रियें पुरुष बन रही हैं। पश्चिम ने अपनी स्त्रियों को नाचने कूदने वाले पुरुष बनाकर अपने माथे पर कलङ्क का टीका अपने हाथ से ही लगाया है।

आइये, अब आप को एक 'आर्य्य' के घर ले चलें। हिन्दु के घर जाने की ज़रूरत नहीं-उसने मुसल्मानों के सहवास में बहुत कुछ नया सीख लिया और पुराणा भुला दिया है। ऐसे भारतीय गृह में प्रवेश कीजिये जिसमें प्राचीन ऋषियों की जगाई ज्योति का प्रकाश धीमा न पड़ा हो। घर क्या है—देवस्थान है-'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। आप के दौर्भाग्य से आप के पहुंचने पर यहां भी गृह-पति बाहर गये हुए हैं। आप के आने की सूचना पाते ही एक नवोढ़ा-हिता षोडश वर्षीया युवती धीरे से कपाट के एक तरफ़ आकर खड़ी हो जाती है। देखते ही समझ आ जाता है कि इसकी गणना माल, असबाब में नहीं की जा सकती, नाही यह उछलती कूदती, बित्ता भर उठी एडी के बूटों को टप-टपाती आङ्गल-ललना के समान है। यह आपके सामने खड़ी है परन्तु इसकी आंखों में दैवी गम्भीरता, नम्रता तथा प्रेम चित्रित हैं। वही सत्कार सूचक शब्द—आइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं?' सारा व्यवहार हृदय में 'मातृत्व भाव' को उत्पन्न कर देता है—हृदय 'मातृ-शक्ति के सन्मुख आदर पूर्वक नम जाता है!

आर्यों के हृदय में स्त्री का ऊच्चा स्थान है। ईंट, पत्थर, रोड़े, पशु, पक्षी की स्थिति से ऊपर उठकर, 'स्त्री भाव' या समानता की स्थिति से भी ऊपर उठ कर वह और ऊपर उठती है—वह पुरुष से भी ऊपर की स्थिति में आ जाती है। उस में आत्मा नहीं है इस कल्पना की जगह शास्त्रों में स्त्री को 'शक्ति' का रूप दिया गया है। 'स्त्री' एक अद्भुत शक्ति है—'शक्ति', माता है! आर्य-लोग स्त्री में सब भावों की कल्पना करते हुए उस की 'मातृ-शक्ति' को सदा प्रधानता देते थे। वे स्त्री में शक्ति की पूजा करते थे क्योंकि शक्ति शब्द का उच्चारण करते ही उन्हें दिव्य गुणों का स्मरण हो आता था। उनका ध्येय था—'मातृवत् परदारेषु'। पाश्चात्य लोग इस भाव पर हंसते हैं क्योंकि उन्होंने स्त्री में 'मातृ भाव' की कल्पना अभी नहीं की। उन की स्त्रियें बूढ़ी हो कर भी अपने 'स्त्री-भाव' को शृङ्गार आदि द्वारा कायम रखने का प्रयत्न करती है—यहां प्रारम्भ से ही तपस्या का पाठ सीखना पड़ता है। वहां 'स्त्री-भाव' में अनिच्छित 'मातृ भाव' आ पड़ता है—यहां 'मातृ-भाव' के साक्षात्कार के लिये अनिच्छित 'स्त्री-भाव' की कल्पना करनी पड़ती है। वहां 'स्त्री-भाव'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उद्देश्य है—यहां वह 'मातृ-भाव' रूपी उद्देश्य के लिये साधन है। यही कारण है कि भारतवर्ष के प्राचीन आर्यों में चाचे, भतीजे सब इकट्ठे रहा करते थे, आपस में फटे हुए नहीं हुआ करते थे। घरों में लड़ाइयां और बटवारे तभी होते हैं जब नव-युवकों की आंखों के सामने ऐशों के स्वप्न फिरने लगते हैं। 'स्त्री' में 'स्त्री-भाव' देखने वाला अन्ध-स्वार्थी अपने बलहीन माता पिता को छोड़, स्त्री को साथ ले दूर निकल जाता है, स्त्री में 'मातृ-शक्ति' के दर्शन करने वाले आर्य से यह आशा नहीं की जा सकती।

आर्यों की विवाह-पद्धति इस बात को और भी स्पष्ट कर देती है। विवाह हृदय का है—जिन के हृदय मिल गये उन का विवाह स्वयं हो गया, संस्कार तो उसी के वाह्य-स्वरूप को दर्शाने के लिये है। आश्चर्य तथा खेद की क्या इस से बढ़ कर कोई सीमा हो सकती है कि जिन्हें सारी उमर दुःख सुख में साथ बितानी है उन की कोई सलाह न ले और माता-पिता ही अपनी सन्तानों के भाग्यों का सदा के लिये फैसला कर दें। जिन के भाग्य का फैसला करने चले हो उन की सलाह बिलकुल नहीं—जिन का कोई सरोकार नहीं वे मग़ज़पच्ची करें! विवाह करने या न करने में सन्तान की सलाह न ले कर अपनी इच्छा प्रधान रखने वाले माता पिता धींगाधींगी करते हैं, ज़बरदस्ती करते हैं, अनधिकार-चेष्टा करते हैं। ये काम हिन्दुओं के हैं। आर्यों की विवाह-प्रथा अद्वितीय थी, उनमें 'स्वयम्वर' से विवाह हुआ करता था। 'स्वयंवर' का अर्थ है—'अपने आप वरना'। पुरुष में प्रचलित स्वच्छन्द-प्रेम (free-love) की प्रथा को स्वयंवर कहना भूल है। स्वच्छन्द-प्रेम में लड़का-लड़की खुले हैं, उन पर निगरानी रखने वाला कोई नहीं। स्वच्छन्द-प्रेम का प्रारम्भ ही इस प्रकार होता है। पहले पहल उसे छिपाया जाता है। जिस लड़के-लड़की का प्रेम हो वे उसे गुप्त रखने की प्राण-पण से कोशिश करते हैं। 'स्वयंवर' में यह भाव कतई नहीं। लड़के-लड़की का प्रेम है, वे उसे छिपाते नहीं! उन का हृदय-पट्ट उनके माता पिता के सामने खुला पड़ा है—माता पिता से कुछ छिपाया नहीं जाता। स्वच्छन्द-प्रेम में सारी कार्रवाई—शुरू से आख़ीर तक—माता पिता से छिपाई जाती है; स्वयंवर में सब कुछ माता-पिता के सन्मुख किया जाता है, उनके अनुभवों से लाभ उठाया जाता है। इस भेद का आधार-भूत कारण यही है कि पुरुष के स्वच्छन्द-प्रेम में स्त्री के 'स्त्री-भाव' को प्रकट करने का प्रयत्न किया जाता है—भारत की स्वयंवर-प्रथा में स्त्री के 'मातृ-भाव' को लक्ष्य में रख कर, उसे एक पवित्र कार्य समझ कर किया जाता है। पश्चिम में स्वच्छन्द-प्रेम नव-युवकों को गढ़े में गिराता है—यहां वह हाल नहीं। स्वच्छन्द-प्रेम की प्रथा यहां भी है परन्तु यहां के स्वच्छन्द-प्रेम स्वयंवर का परिणाम तलाक (divorce) नहीं। यहां के स्वच्छन्द-प्रेम का आधार स्त्री का 'स्त्री-भाव' नहीं अपि तु 'स्त्री-भाव' में छिपा हुआ 'मातृ-भाव' है। यही कारण है कि पुरुष को स्वच्छन्द प्रेम की प्रथा ने तबाह कर दिया—भारत को स्वयंवर प्रथा ने पुरातन-सभ्यताभिमानी देशों का मूर्धन्य बना दिया। इसी उच्च आदर्श के कारण 'स्वयंवर' प्रथा में यद्यपि स्वच्छन्द-प्रेम से होने वाले सब फ़ायदे मौजूद हैं तथापि उस का पागलपन और अन्धापन नहीं। स्त्री की 'मातृ-शक्ति' को समझा जाता था अतः माता-पिता अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपनी सन्तान के हृदय को स्वतन्त्रता भी देते थे और अपनी आंख के सामने भी रखते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'मातृ-शक्ति' के भाव को कितनी दूर तक पहुंचाया था ! 'जाया' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए ऋषि-लोग कहते हैं—'जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः' । स्त्री को 'जाया' क्यों कहते हैं—? क्योंकि पुरुष स्वयं इस के गर्भ से इस का पुत्र बन कर फिर से पैदा होता है। अपनी ही स्त्री को स्वयं उस की सन्तान बन कर 'मां' कहने लगता है। धन्य हैं वे लोग जिन्होंने इस उच्च-भाव को इस पराकाष्ठा तक पहुंचाया। स्त्री को पवित्र क्यों रक्खें ? क्योंकि वह अपने उत्पन्न होने के लिये ही तो क्षेत्र है ! बीज बुरे क्षेत्र में पड़ कर बुरा उत्पन्न होगा। मनुष्य बीज बन कर अपनी स्त्री के क्षेत्र में उत्पन्न होता है—वह अपने क्षेत्र को मलिन क्यों होने दे ? पुत्र के लिये कहा है—'आत्मा वै पुत्र नामासि'—पुत्र अपना 'आत्मा' है। पुत्र का 'मां' कह कर पुकारना तुम्हारा ही 'मां' कह कर पुकारना है क्योंकि पुत्र तुम्हारा ही तो एक नया संस्करण (edition) है। तुम—एकोऽहं बहु स्याम्—अपनी एकता को अनेकता में लाते हुए स्त्री की 'मातृ-शक्ति' का आश्रय लेते हो। जब तुम एक रूप में थे, पति के रूप में थे तब 'स्त्री' को 'स्त्री' कह कर पुकारते थे। एक मुख से 'स्त्री' उच्चारण करने का बदला चुकाने के लिये पुरुष को अनेक सन्तानों के रूप में आना पड़ता है ताकि वह अनेक-मुखों से उसी स्त्री को 'मां' कह कर पुकार सके। तभी तो सन्तान-हीन होना शास्त्रों में पापों का फल समझा गया है। सन्तान-हीन पुरुष अपनी 'स्त्री' को 'माता' कह कर नहीं पुकार सकता, इस से बढ़ कर और क्या पाप-फल हो सकता है—'स्त्री-शक्ति' में 'मातृ-शक्ति' के दर्शन करने से उसे वञ्चित रक्खा जाता है। पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति इसी भाव पर प्रकाश डालती है। 'पुं नाम नरकात् त्रायत इति पुत्रः' नरक से पार तराने वाला पुत्र है। श्राद्ध कर के पुत्र अपने माता-पिता को नरक से पार नहीं तरा सकता। अपनी ही स्त्री में पुरुष फिर से उत्पन्न हो कर 'स्त्री-भाव' में 'मातृ-भाव' का साक्षात् दर्शन करता है, बस, यही माता-पिता का नरक से पार उतर जाना है। 'स्त्री-भाव' का अन्त तक वैसा ही बना रहना नरक है, उस का 'मातृ-भाव' में परिवर्तित हो जाना नरक से तर जाना है।

युरोपियन जातियों के स्त्री के प्रति सम्बोधन इस भाव को और भी अधिक स्पष्ट कर देते हैं। पीयर्सन की स्त्री को सम्बोधन करते समय उसे मिसेज़ पीयर्सन कहेंगे। मिसेज़ पीयर्सन का अर्थ है--'पीयर्सन की स्त्री'। मिसेज़ पीयर्सन कहते हुए उन्होंने 'स्त्री' में 'स्त्री-भाव' को ही प्रधानता दी। उस भाव का पीयर्सन के साथ ही सम्बन्ध है यह बात स्वीकार करते हुए भी उसमें 'मातृ-भाव' कल्पित करने का विचार उन के दिमागों में आ तक नहीं सकता। है वह स्त्री ही--हां, 'वह पीयर्सन की स्त्री है'--इसे वे स्वीकार करते हैं। आर्य परिवारों में ऐसे सम्बोधन नहीं सुन पड़ते। 'मिसेज़ पीयर्सन को बुला लाओ' का यही अर्थ है कि 'पीयर्सन की स्त्री को बुला लाओ'। आर्य परिवारों में कहते हैं--'मुन्नी की मां को बुला लाओ' ! पीयर्सन के चाहे दस सन्तान भी क्यों न हों उस की स्त्री उस की स्त्री ही है; लाला जी के तो एक ही सन्तान है परन्तु उन की स्त्री 'मुन्नी की मां' है ! 'स्त्री की स्थिति' का कितना उच्च आदर्श है ? यहां बालिका को 'अपनी लड़की' समझा जाता है, सम-वयस्क कन्या को 'अपनी बहिन' और अपने से बड़ी को 'अपनी माता' समझा जाता है। यहां के सम्बोधन हैं--'बेटी', 'बहिन जी', 'माता जी'।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिस प्रकार प्रचलित सम्बोधन स्त्री की स्थिति को बहुत कुछ प्रकट करते हैं उसी प्रकार स्त्रियों के प्रचलित नाम भी उस की स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। बहुत सी जातियों में स्त्रियों के नाम 'तोता,—'मैना' आदि जानदार तथा 'गंगा'--'जमुना'--'सांकरी' आदि बेजानदार चीज़ों के पाये जाते हैं। युरोपियन जातियें स्त्रियों के लिये फूलों और तित्तरियों के नाम पसन्द करती है--उन की स्त्री के प्रति यही भावना है। आर्य नाम इस प्रकार के नहीं। स्त्री के नाम के साथ 'देवी' सम्बोधन किया जाता है। स्त्री में दिव्य-भाव की कल्पना, शक्ति की उपासना आर्यों को छोड़ अन्य किसी में नहीं पाई जाती!

आर्य्य लोग स्त्रियों की स्थिति पर विचार करते हुए एक मुख्य बात को नहीं भूले। वह मुख्य बात है—'स्त्री तथा पुरुष का प्रकृति-कृत भेद'। यूरुप ने स्त्री के महत्व को न समझते हुए पौलिटिक्स को ही जीवन का एक मात्र ध्येय समझने के कारण स्त्री-समाज को समानाधिकार देना प्रारम्भ किया है। स्त्रियें पुरुषों के सारे काम सम्हाल रही हैं। समय दूर नहीं जब स्त्रियें पुरुषों को कहेंगी—'इतनी सदियों तक हम ने बच्चे जने, अब इतनी ही देर तक यह कार्य पुरुषों को करना चाहिये'। परन्तु यह अपील परमात्मा या मनुष्य, किसी के भी दरबार में नहीं सुनी जायगी। पुरुष तथा स्त्री में पारस्परिक भेदों का कैसे ही ज़ोरदार शब्दों में खण्डन क्यों न कर दिया जाय परन्तु यह भेद ऐसा है जो सब खण्डनों का खण्डन कर देता है। स्त्री पुरुषों के समानाधिकारों का कुछ अर्थ ही नहीं है। स्त्री का पुरुष से दिमाग़ छोटा हो या बड़ा, वह पुरुष से लम्बी हो या ठिगनी-हमें मालूम नहीं इन बातों से कुछ सिद्ध हो सकता है या नहीं। हां पुरुष चाहे हज़ार कोशिश भी क्यों न करे अपने पेट से बच्चा नहीं जन सकता—इस मौलिक भेद को लक्ष्य में रख कर आर्य्य-लोगों ने स्त्री तथा पुरुष की स्थिति पर विचार किया है। पाश्चात्य लोग स्त्री के लिये माता बनना आवश्यक नहीं समझते, इसीलिये वहां के पुरुष स्त्रियों के दास हैं। आर्य-लोग स्त्री के लिये माता बनकर देव-पथ की यात्रा करते हुए मोक्ष की तरफ़ टिकटिकी लगा कर धैर्य्य से कदम आगे बढ़ाते जाना उसके जीवन का लक्ष्य समझते हैं—सन्तान का न होना पापों का फल समझते हैं—जीवन समुद्र के पार उतरने के लिये सन्तान को नौका समझते हैं। इन्हीं दो दृष्टियों को सन्मुख रख कर युरुप तथा भारत में स्त्रियों की स्थिति का निश्चय हुआ है।

सैमेटिक, युरोपियन तथा आर्य्य—इन तीन जातियों में स्त्री की स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए हमने उन जातियों में फैले हुए मुख्यतया प्रचलित भावों को ही सन्मुख रक्खा है। मुसल्मानों में कई लोग पाश्चात्य विचारों के हो सकते हैं, पाश्चात्यों में भी अनेक आर्य्य विचारों के पाये जाते हैं। स्त्री-जाति की ये तीन—निकृष्ट, मध्यम तथा उत्तम—स्थितिएं हैं, उसे इन तीन दृष्टियों से देखा गया है।

वर्तमान भारत अपने पुरातन आदर्श से बहुत नीचे गिर चुका है। पुस्तकों में बहुत कुछ लिखा धरा है—क्रिया में सब कुछ लुप्त हो चुका है। मुसल्मानों के भारत पर आक्रमण हुए। हमारे कुछ भाइयों ने स्त्री की स्थिति वही बना दी जो मुसल्मान लोग समझते थे। युरोपियन जातियें यहां आई। हमलोग स्त्री की स्थिति उन्हीं के आदर्श के अनुसार बनाने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में लग गए। इस समय भारत की अशिक्षित स्त्रियों की अवस्था माल असबाब की तरह की है—इन गिनी शिक्षित स्त्रियों की अवस्था पतली, दुबली, नाजुक, हवा के एक झकोरे से उड़जाने वाली आङ्गल-महिलाओं की तरह की है। पढ़ी लिखी होतो हुई भारतीय आदर्श को उज्ज्वल करने वाली बहिन हज़ारों में ढूढ़ने से एक भी मिल जाय तो गनीमत है। जाति के लिये यह शुभ-लक्षण नहीं। 'स्त्री-शिक्षा' की दुहाई देने वालो! मर्ज़ को पहचान कर उस का इलाज करो।

तेरी माया!

लेखक—श्रीयुत बलराम उपाध्याय बी० ए०

धन्य है तेरी यह माया!
मूर्ति यह तेरी या छाया?
वदन पर मन मोहक मुसुकान।
हृदय में भरा हुआ अभिमान!
प्रेम की प्रतिमा का सा रूप।
हृदय हो अन्धकार का कूप!
जाल यह कैसा फैलाया?
धन्य है तेरी यह माया! ॥१॥

भ्रमर ने किया प्रेम का गान।
कमल ने दिया त्याग अभिमान॥
मुदित हो अर्पित किया पराग।
प्राप्त कर उसे गया अलि भाग॥
जलज फिर हो हत् मुरझाया।
धन्य है तेरी यह माया॥२॥

मधुर कैसा कोकिल का राग?
भरा है उस में वह अनुराग।
जिस सुनने को ही ऋतुराज।
आगया सजकर सभी समाज॥
उसी कोकिल की यह काया?
धन्य है तेरी यह माया॥३॥

श्यामघन नभ में हँस हँस कर।
हर्ष से आंसू भर भर कर।
देखते जिस मयूर का रंग।
निराला, नया, नाच का रंग॥
उसी ने देखो क्या खाया?
धन्य है तेरी यह माया॥४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आजन्म ब्रह्मचारिणी देवियोंसे लाभ

लेखिका—एक "आर्य्य-महिला"

प्रायः हम देखते हैं कि जो लोग स्त्रियों के कर्तव्यों और धर्मों पर बहुत बल देते हैं उनकी दृष्टि स्त्री जाति की उस श्रेणी पर ही पड़ती है जो माता और पत्नी के रूप में जाति और समाज की सेवा कर सक्ती है, वह लोग यह समझते हैं, कि जीवन में पत्नी और माता बनने का पवित्र काम ही सबसे बढ़कर है इससे परे कुछ नहीं है। हम भी उनके इस सिद्धान्त से सहमत हैं कि स्त्रियों के लिये स्वाभाविक और वांछित सम्बन्ध तो पत्नी और माता बनना ही है क्योंकि अपना सुन्दर घर बना हो, पति पत्नी से से प्रेम करने वाला हो और उस पर आसक्त हो, बच्चों के कोमल स्पर्श और मनोहर तोतली बातें सुनने को मिलें तो कौन वास्तविक रमणी ऐसी होगी जो इनकी अभिलाषा न करे?

परन्तु हाय! हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि संसारमें स्त्रियों का बड़ा भारी भाग ऐसा है और बहुत सी ऐसी स्त्रियां हैं जिन्हें यह वांछित वस्तुएं उपलब्ध नहीं हैं। तो उन के जीवन का, उनके भाग्य का क्या उपयोग किया जावे? क्या हम यह समझलें, कि जिन शुभ और सुमधुर गुणों के कारण स्त्री का जीवन संसार के लिये आवश्यक है वह उनके लिये बन्द है? सो भी उनके निजी दोष के कारण नहीं वरन दैवके प्रकोपसे या सामाजिक कुरीतियों के कारण? क्या उनके जीवन को हम निष्फल ही समझें? कभी नहीं।

परमात्मा की सृष्टि में स्त्रियों का पत्नी और माता के रूप में जाति की सेवा करने का कर्तव्य उतना ही आवश्यक और उपयोगी है जितना एक पुरुष के लिये पति और पिता बन कर जाति का विधाता बनना है मनुष्य जाति का अन्तिम उद्देश्य सन्तानोत्पत्ति करने से कहीं बढ़ कर है क्योंकि सन्तान की उत्पत्ति पालनपोषण तो पशु पक्षी भी करते हैं बल्कि जब हम गलियों और चौराहों पर अच्छे २ घरोंके असभ्य, दुर्बल. नीच प्रकृति के बालकों को देखते हैं तो हमें आन्तरिक वेदना होती है, और हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि स्त्री जीवन का अन्तिम उद्देश्य सन्तान उत्पन्न करना ही नहीं है—यद्यपि यह बहुत पवित्र और वांछित कर्तव्य है—वरन् संसार में शुभ गुणों का फैलाना, सेवा करना, मानव जाति को अमृत पुत्र बनाना और अमर जीवन प्राप्त करना है। इस लिये इस अवस्था में आओ हम धार्मिक जीवन को आगे रक्खें ओर स्वाभाविक जीवन को गौण रूप देवें। इस में अनिवार्य्य वस्तु स्त्री का गुण स्त्रीत्व शुद्ध स्त्रीत्व है। उस स्त्रीत्व की विद्यमानता के लिये बाहरी सम्बन्ध में लिप्त होना आवश्यक नहीं वह इनके बिना भी विद्यमान रहता है। एक शुभ स्त्रीत्व के गुणों से युक्त देवी किसी की भार्य्या, प्रिया या माता से कहीं बढ़ कर और श्रेष्ठतर हैं। इन सम्बन्धों के अतिरिक्त एक सच्ची शुभ गुणों से युक्त स्त्री होना इस संसार में सब से उत्तम और सब से आनन्द दायक वस्तु है।

पाश्चात्य देशों में बहुत सी गृहस्थके योग्य देवियां भी अविवाहिता हैं इस का क्या कारण है? यद्यपि उन देशों में स्त्री पुरुषों की संख्या भेद, आर्थिक कठिनाइयां तथा अयोग्य साथी इत्यादि कई बातें हैं जिन के कारण स्त्रियां अकेले जीवन व्यतीत करना ही पसन्द करती हैं तथापि इससे यह न समझना चाहिये कि इन देवियों का जीवन निष्फल बीतता है। इन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में से बहुतों का स्वभाव बड़ा निस्स्वार्थ और मधुर होता है और वह जाति तथा कुटुम्ब को बहुत लाभ पहुंचाती हैं जिन के कारण लोग बड़े बल बल पूर्वक उनकी प्रशंसा करते हैं। शार्लोट ब्रान्टी नामक देवी का कथन है कि "आज कल मैं अविवाहिता अथवा जिन्हों ने कभी भी गृहस्थ धारण नहीं करना है उन देवियों की विद्यमानता पर बहुत भरोसा करती हूं और मेरे हृदय में यह विश्वास बैठ गया है कि इस जगत् में उस अविवाहिता स्त्री से बढ़ कर उच्चाशय व्यक्ति कोई नहीं हो सकता जिस ने चुप चाप धैर्य्य और परिश्रम के बिना अपने भाई या पति की सहायता से जीवन में अपनी स्थिति बना ली हो, जिसका मस्तिष्क विचार शील हो, जो साधारण आनन्दों का उपभोग कर सके, जो अनिवार्य्य दुःखों व क्लेशों को धैर्य्य से सहन कर सके, जो दूसरों के दुःख में समवेदना प्रकट कर सके और अन्त में जो अपनी शक्ति और साधन के अनुसार दूसरों के दुःख दर्द को मिटाने को प्रस्तुत रहे।

वेरेञ्जर नामक एक अंग्रेज़ सज्जन ने अपनी बुआ की समाधि के ऊपर यह मर्म-भेदी शब्द लिखवायेः—

"वह माता कभी नहीं बनी परन्तु उस के पुत्र उसके लिये शोकान्वित हुये।"

और यह शब्द केवल वेरेञ्जर की बुआ के लिये ही उपयुक्त नहीं हैं वरन् पाश्चात्य देशों में कुटुम्ब कुटुम्ब में स्वार्थहीन, हंसमुख और स्नेहमयी अविवाहिता बुआयें और मासियें विद्यमान हैं, जिनको कुटुम्ब वाले बड़ी कृतज्ञता की दृष्टि से देखते हैं और जिनका यश गान करते हैं। उदाहरण के लिये वार्ड बीचर नामक एक सज्जन लिखते हैं कि "यहां पर बहुत सी देवियां विद्यमान हैं, जिन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य्य का कठिन व्रत इस लिये धारा कि मातृ-हीनों की माता बनें, उन्होंने कभी भी प्रशंसा या पद की लालसा न की और सर्वदा अपनी शिक्षा और अपने आचार से दूसरों के बच्चों में उच्च आचार और उत्तम गुणों को ही भरने का यत्न किया। ये गृह लक्ष्मियां मन्दिरों की देवियों को गुण गरिमा में परास्त करती हैं।"

बिशप थोरेल्ड की भी इस विषय पर स्पष्ट और सुन्दर शब्दों में वर्णित सम्मति को सुनिये। वह कहते हैं कि—"अहा यदि इस संसार में अविवाहिता देवियां न होतीं तो उन के बिना यह संसार बिलकुल बियाबान जंगल ही रह जाता! हज़ारों घरों में कुंवारी बहिनें और बुआयें कुटुम्ब की प्रतिपालिकायें, बच्चों की स्नेह भाजन और उन लोगों को भी आनन्द और विश्राम दाता होती हैं जो इन के साथ बहुत अच्छा व्यवहार भी नहीं करते। ये बीमारों और मृत्यु शय्या पर पड़े हुयों को शान्तिदायिनी होती हैं और गरीबों, बुड्ढों और असहाय अनाथों की अनथक मित्र होती है बुढ्ढी कुमारिकायें! वह भले ही कहलावें परन्तु कुछ अपवाद रूप देवियों को छोड़ कर शेष सभी देवियां ही संसार का आभूषण हैं, जिन गृहों में वह रहती है जिन के रखने का सौभाग्य प्राप्त है उन के लिये वह शांति की मूर्ति गृह की दीपिका हैं। उन की पदवी यही है कि सब लोगों को उन की आवश्यक्ता रहती है; उन का पारितोषिक यही है कि वह सब के लिये उपयोगी होती हैं, उन के घर उन लोगों के स्नेह पूर्ण कृतज्ञ हृदय होते हैं जिन को उनकी सेवा से लाभ पहुंचता है। और यदि इस लोक सेवा में उन की उपयोगिता से इतना लाभ पहुंचता है तो स्वर्ग में भी उन का तेजस्वी मुख मण्डल चमकता ही रहेगा।" इत्यादि २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऊपर के पृष्ठों में हम ने पाश्चात्य कुमारी देवियों के प्रति उन्हीं देशों के भद्र पुरुषों की श्रद्धाञ्जलि का प्रकाशन करके यह दिखलाया है कि देवियां केवल अपने घर में माता, पत्नी, बहिन और पुत्री के रूप में ही उपयोगी नहीं होती वरन् घर से बाहर उनकी उपयोगिता कहीं बढ़ कर है। यदि हम पाश्चात्य कुमारियों के स्थान में भारत की बाल विधवाओं को रख लेवें तो विदेशी भद्र पुरुषों की जो सम्मति अपने देश की कुमारी देवियों के विषय में है वही अक्षरशः हमारे देश भाइयों की सम्मति अपने देश की विधवा ब्रह्म-चारिणी देवियों के विषय में—जिन से अभाग्यवश कोई ही गृह खाली होगा—आज से कुछ वर्षों पहिले जब विधवा विवाह प्रचलित न था—थी और प्रायः है और भविष्य में भी परमात्मा करे बनी रहे।

कोई समय था जब कि हमारे घर की देवियां शिक्षणालयों में शिक्षा ग्रहण न कर सकने पर भी अपने स्त्रीत्व के गुणों से और क्रमागत आचार व्यवहार की शिक्षा द्वारा अपने कुटुम्ब अड़ोसी पड़ोसी गांव और मुहल्ले वालों की सदैव सेवा सुश्रूषा के लिये तैयार रहती थीं और उन के कठिन समय में उतनी ही उपयोगी होती थी जितनी कि उन के शुभ कार्यों में। सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा को आजकल बहुत बुरा समझा जाता है इस लिये कि वर्तमान समय में पाश्चात्य फैशन की गुलामी के आगे सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा की खूबियां तो दूर हो चुकी हैं और स्वार्थान्ध लोगों की विषय वासनाओं की ओर झुकावट होने से बुराइयां बहुत दीख पड़ने लगीं। अतः ब्रह्मचारिणी विधवायें उपयोगी होने के स्थान में भार रूप प्रतीत होने लगी हैं। और भोग विलास का जीवन व्यतीत करने वाली भारतीय जनता उन के कुपथ मार्ग गामिनी बन जाने के भय से अनेक अनेक ऊंचे और नीचे, पथ निकाल कर उन्हें उस पर ले जा रही है। परन्तु हमारा विचार है कि हमारे भारत में त्याग वृत्ति से कार्य्य करने वाली ब्रह्मचर्य्य व्रत आजन्म रख सकने वाली देवियों की बड़ी आवश्यक्ता है। अतः यही विधवायें जो किसी भी कारण से गृहस्थ सुख से वंचित हो गई हैं वह यदि इस आवश्यक्ता को पूरा करने की दृष्टि से सुशिक्षा और सुविचार आत्मोन्नति और धार्मिक जीवन द्वारा उन्नत की जावें तो हमारी ऊपर वर्णित पाश्चात्य देवियों से कहीं बढ़ कर उपयोगी सिद्ध होंगी और जितना श्रम, समय और द्रव्य का व्यय इन पर किया जायगा उससे कई गुणा बढ़ कर लाभ यह पहुंचावेंगी। अतः भारतीय जनता को इन की ओर से उदासीन होने का समय नहीं रहा। इन्हें भी उपयोगी बनाओ और इन से काम लेना सीखो।

———

अत्याचार का अन्त

लेखक—श्रीयुत श्रीकृष्ण पाण्डे

बाबू योगेश्वर ने अपनी वृद्धावस्था में समाज के लोगों के मना करने पर भी अपना द्वितीय विवाह कर ही लिया। समाज के कुछ चापलूसों को छोड़ कर जिन का इस विवाह से कुछ स्वार्थ था और सभी योगेश्वर बाबू के इस कार्य से असन्तुष्ट थे। वे नहीं चाहते थे कि गुप्त महाशय किसी बालिका के जीवन का सत्यानाश करें। इस लिये विवाह के पूर्व ही समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों ने योगेश बाबू को बहुत समझाया,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवयुवक समाज-सुधारक दल ने भी अनेक चेष्टायें की लेकिन वह सब विफल हुईं। योगेश बाबू अपने दुराग्रह पर डटे ही रहे। दुराग्रह के सन्मुख सत्याग्रह की कुछ न चली। योगेश बाबू ने आख़िरकार रुपयों के ज़ोर से एक सोलह वर्ष की युवती कन्या से पाणि-ग्रहण कर ही लिया। विवाह के एक वर्ष बाद ही गुप्त महाशय सन्निपात ज्वर से इस असार संसार से, अपनी गर्भवती स्त्री को छोड़ कर विदा हो गये। इस के कुटुम्ब में अब इनकी एक विधवा बहिन और स्त्री ही रह गई थी। ज़मीन्दारी काफ़ी थी, एक साहूकार महाशय उसका काम काज देखते थे। उसी की आय से इन का समय एक प्रकार से सुखपूर्वक व्यतीत होता था।

योगेश बाबू की पत्नी का नाम मोहिनी था। मोहिनी को भी तो किसी बात की कमी न थी, उस की सब इच्छायें यथा समय पूरी हो जाती थीं, लेकिन अभागिनी मोहिनी फिर भी उदास ही रहा करती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे उसको किसी वस्तु की चाह है, वह कोई प्रिय पदार्थ खोज रही है। वह ऐसी कौनसी वस्तु है जिस के लिये वह हर समय व्याकुल रहती है, वह ऐसी कौनसी इच्छा है जो पूरी नहीं होती ? वह इच्छा है पति सुख ! अभागिनी मोहिनी इसी सुख से वंचित है। उसे वह सुख मिला था, लेकिन अमेल था। उसकी इच्छा न थी कि वह योगेश बाबू के साथ विवाह करे, किन्तु माता पिता के भय से बिचारी मोहिनी कुछ बोल न सकी। वह अपने मन के भावों को सदा मन में ही रखती थी। लेकिन इस समय वह स्वतन्त्र है, अब उसे मां बाप का डर नहीं है, अतः वह जो चाहे सो कर सकती है, अपने मनोभावों को स्वच्छन्दता पूर्वक प्रकाश करने में अब उसे कोई नहीं रोक सकता। आइये हम भी उसी के मुख से उस की मन की बात सुनें।

सन्ध्या का समय है, सूर्य भगवान अपना समस्त दिन का कार्य समाप्त करके, आफ़िस क्लर्कों की तरह धीरे २ प्रस्थान कर रहे हैं, गगन मण्डल का एक भाग बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है, काले बादलों के भीतर अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा बड़ी ही मनोहर लगती है, मन्द २ पवन चल रही है, पक्षी गण अपने अपने घोंसलों में जाने की तय्यारी कर रहे हैं। ऐसे समय में मोहिनी अपने मकान की छत पर खड़ी २ प्राकृतिक दृश्य की शोभा देख रही है। उस के सिर के बाल खुले हुए हैं, कभी २ हवा का झोंका लगने से आँचल हवा के साथ ही भागने की चेष्टा करता है। किन्तु परवश होने के कारण बिचारा अपनी चेष्टा में असफल होता है।

मोहिनी के मन में इस समय तरह २ के भावों का उद्दीपन होता है। वह कुछ सोचती है और ठंडी सांस लेती है। उसने लाख चेष्टा की कि अपने मन के भावों को मन के भीतर ही रक्खे, किन्तु कुछ फल नहीं हुआ। अन्त में उस ने एक निश्वास छोड़ कर यों कहना शुरू किया—

"हायरी दुनियां ! तू बड़ी स्वार्थी है, अपने स्वार्थ के सामने तू किसी का भला बुरा नहीं देखती। दूसरे का चाहे जितना नुकसान हो, लेकिन तुझे अपने काम से मतलब। चाहे जिस प्रकार हो तू अपना काम करेगी ही। दूसरे की तुझे कुछ भी फ़िकर नहीं, चाहे कोई मरे या जीये तेरी बला से, "तुझे तो एक स्वार्थ से काम"। लोग समझते हैं कि मैं इस विवाह से सुखी हूं, लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम कि मुझ पर क्या बीतती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हाय! आज मेरे साथ की लड़कियां खूब खाती, पहिनती, घूमती, फिरती हैं, लेकिन मैं एक सादी धोती पहने घर के एक कोने में पड़ी पड़ी अपनी ज़िन्दगी के दुःखपूर्ण दिन बिता रही हूं। कोई भी नहीं पूछता कि मेरा क्या हाल है। लोग कहते हैं कि भगवान् की यही मर्ज़ी है कि मैं ऐसी अवस्था में रहूं। लेकिन यह सब झूंठ है। मैं इस झूठे नर्क को नहीं मान सकती। उस की दृष्टि में सब एक समान हैं, उस का न्याय सब के लिये एक सा है, यह सब पाखण्डियों की चालें हैं, भगवान को दोष देना व्यर्थ है। और अगर उसी की इच्छानुसार मैं यह दुःख भोग रही हूं, उसी के न्याय के कारण मेरी यह अवस्था हुई है, तो मैं उसका फ़ैसला नहीं मानती। भला यह कहां का न्याय है, कि मर्द तो एक स्त्री के रहते दो दो तीन तीन विवाह करलें, और स्त्रियां विचारी जबर्दस्ती एक बूढ़े खूसट के हाथ सौंप दी जाय, और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें दूसरा विवाह करने की आज़ादी तक न मिले। स्त्रियों का ऐसा कौनसा अपराध है, जिस के कारण उन्हें दण्ड दिया जाता है। अगर स्त्रियों का यह धर्म है कि वह एक ही पुरुष की पूजा करें, पतिव्रत धर्म निबाहें तो उससे पहले पुरुषों का भी यह कर्त्तव्य है कि वह एक स्त्री को अपनायें, वह भी एक पत्नीव्रत धर्म निबाहें। यह न्याय नहीं अन्याय है, अविचार और अत्याचार है। मैं ऐसे अत्याचार को नहीं सह सकती। इतने दिनों तक चुप रही, अपनी इच्छा को दबाये रही, किन्तु अब असम्भव है मैं अपनी इस इच्छा का दमन करने में असमर्थ हूं। (सोच कर) हां, यही ठीक है, माता पिता की बदनामी होगी। हो, इससे मुझे क्या? मेरी बला से। मेरे साथ जैसा सलूक उन्होंने किया है अब उसी का बदला लूंगी। इसमें मेरा कुछ दोष नहीं, यह उन्हींके किये अविचारका फल है, ऐसे विवाहों का यही फल होता है।"

इतने में ही नीचे से किसी ने आवाज़ दी, "बहू, शाम हो गई नीचे आओ, अभी तक ऊपर क्या कर रही हो।" इस आवाज़ ने मोहिनी को चौंका दिया। "आई बीबी जी" कह कर मोहिनी चली गई।

उपरोक्त घटना को घटे लगभग तीन महीने हो गये। इस समय मोहिनी को सात महीने का गर्भ है, उसके गांव में अनेक तरह की अफवाह फैल रही है। कोई दबी जबान से कहता है कि गुप्त महाशय की मृत्यु के बाद मोहिनी व्यभिचारिणी हो गई है। किसी का विचार था, कि वह पहिले से ही बुरे मार्ग का अवलम्बन कर रही है। कोई कोई सहृदय सज्जन इन सब बातों को निराधार बतलाते थे, इसके अलावा रूटर प्रेस के रिपोर्टर गांव की वृद्धा औरतें घर घर में इस अफ़वाह का प्रचार करतीं थीं। गरज़ यह कि आज हमीरपुर गांव में इसी बात की चर्चा थी, लेकिन सब गुप चुप, स्पष्ट कहने का साहस किसी को नहीं था, क्योंकि मोहिनी योगेश्वर बाबू के रहते ही गर्भवती होगई थी। अस्तु ठीक समय पर मोहिनी ने पुत्र रत्न प्रसव किया, घर में आज शोक पूर्ण आनन्द मनाया जा रहा है। योगेश बाबू की विधवा बहिन ने समस्त कार्य ठीक समय पर बिधि पूर्वक किये। पण्डित बुलाये गये लड़के के ग्रह नक्षत्र दिखाये गये योगेश्वर बाबू के कुल पुरोहित ने लड़के का नाम रामेश्वर गुप्त रक्खा। धीरे २ रामेश्वर माता और बुआ के लालन पालन में बढ़ने लगा।

इस समय रामेश्वर की उम्र २ या ३ वर्ष की होगी। आज किसी त्योहार के कारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गांव के नर नारी गङ्गा स्नान करने को जारहे हैं, अतएव मोहिनी भी अपनी ननद के साथ रामेश्वर को लिये गङ्गा स्नान करने को जारही है। गङ्गा इनके घर से ज्यादा दुर नहीं करीब आधा मील पर होगी। इसलिये इन लोगों ने किसी सवारी की कोई ज़रूरत नहीं समझी, ये भी गांव की अन्य स्त्रियों के साथ ही साथ पैदल ही चल पड़ीं।

गङ्गाजी पर आज की भीड़ का कोई ठिकाना नहीं है। हज़ारों नर नारी आजारहे हैं। कोई किनारे पर बैठा तिलक आदि करता है, कोई सूर्य्य भगवान को अंजलि देता है, कोई अपने शरीर को गङ्गा की चिकनी मट्टी से मल २ कर साफ़ कर रहा है कोई तैर रहा है, कोई छिपी आंख से स्नान करती हुई स्त्रियों की ओर घूर रहा है, स्त्रियां भीगी धोती पहने नहाकर लजाती हुई जारही हैं। जैसी भीड़ गङ्गाजी के भीतर वैसी ही बाहर भी है बल्कि बाहर की अधिक है। ऐसे २ त्याहारों के दिन ऐसी भीड़ में बदमाश, गुंडे नशेबाज़, पाकिटमार आदि लोगों की बन आती है। बहुत से मनचले नवयुवक ऐसे ही मौकों पर अपनी कामवासना पूरी करते हैं, ऐसे लोगों के लिए यहां पर यथेष्ट साधन हैं, इनके सुभीते के लिये दल्लाल लोग यहां मौजूद रहते हैं, जिसके उपर इन लोगों की नज़र पड़ गई बस दल्लालों और कुटनियों की बदौलत वह उन्हें मिल जायगी। ऐसे ही मौके पर दुष्ट चरित्र स्त्रियां अपने भले बुरे का विचार छोड़कर, अपनी काम पिपासा को तृप्त करने के लिए कहीं किसी के साथ गायब होजाती हैं। वह यह नहीं सोचतीं कि आखिर में क्या परिणाम निकलेगा और सोचने की ज़रूरत ही क्या है "क्योंकि प्रेम अन्धा है"।

हम अपने विषय को छोड़कर उससे बहुत दूर चले आये। हमें फिर उसी की और पहुंचना चाहिये।

हम उपर कह आये हैं कि मोहिनी अपनी ननद के साथ गङ्गा स्नान करने को आई हैं। देखिये, वह घाट के एक किनारे अकेली खड़ी २ न मालूम क्या सोच रही है, उसकी दृष्टि फिर रही है वह चारों ओर बड़ी ही चंचल दृष्टि से देख रही है, मानों किसी को ढूंडती हो। कभी २ उसके चहरे पर खुशी के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं किन्तु क्षण भर बाद ही वे सब दूर होजाते हैं। मोहिनी ने ठंडी सांस लेकर कहा "हाय! क्या मेरा सब किया करा मिट्टी हो जायगा न मालूम अभीतक क्यों नहीं आई इतने में ही सामने से एक वृद्धा आती हुई दिखाई पड़ी, मोहिनी ने देखा कि उस वृद्धा के पीछे एक युवक भी सफर के सामान से तैयार होकर चला आरहा है। उसके एक हाथ में एक चमड़े की बेग थी और एक दुशाला कंधे पर पड़ा हुआ था। इस बार मोहिनी खुश हुई और मुस्कराई। थोड़ी देर में ही वह वृद्धा मोहिनी के पास आई और इशारे से मोहिनी को अपने साथ आने के लिये कहा, तथा मोहिनी भी बिना कुछ कहे सुने मन्त्र मुग्ध की भांति उनके पीछे २ चली गई।

(३)

उपरोक्त घटना को घटे कई वर्ष हो गये। इस समय रामेश्वर की उम्र लगभग २६-२७ वर्ष के होगी। कलकत्ते के पुलिस विभाग के किसी ऊंचे पद पर ५००) मासिक पर उसने काम करना शुरू किया है। अस्तु, इस समय रामेश्वर बाबू अपनी बैठक में बैठे हुए किसी बात की चिन्ता में व्यग्र थे कि इतने में ही उनके मित्र ने कमरे में प्रवेश किया। उसको देखते ही रामेश्वर बाबू ने अपने चेहरे के भाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को बदल कर कहा–"आओ जी, आज तो बहुत दिनों बाद आये। कहो ख़ैरियत तो है।"

मित्र—"हां भाई, सब आनन्द है। लेकिन यह तो कहिये। आप आज किस चिन्ता में व्यग्र हैं।'

रामेश्वर बाबू ने आलकस लेते और हंसते हुए कहा–"नहीं, चिन्ता किस बात की है, आजकल कार्य्य की अधिकता के कारण, इस समय कुछ थकावट सी मालूम होती है। बस यही सुस्ती का कारण है।

मित्र महोदय ने उत्तर दिया 'तो क्या घर के एक कोने में बैठे रहने से थकावट दूर होगी। आप जैसे २ अधिक पैसा पैदा करते हैं, वैसे ही कंजूस भी परले सिरे के होते जाते हैं। जनाब सारे दिन के थके मांदे आते हैं, ज़रा फ़ुरसत के समय कहीं दिल बहलाने भी तो नहीं जाते। नई बहु की तरह पेर्द में ही बैठे रहते हैं। उठिये कहीं घूम फिर आवें।"

"ठीक है। आप बहुत ठीक कहते हैं। मैं ड्रैस करके (कपड़ा पहन कर) आता हूं।" इतना कहकर रामेश्वर बाबू उठकर कपड़ा पहिनने को चले गये।

इस जगह पर हम रामेश्वर बाबू के मित्र महोदय का परिचय करा देना उचित समझते हैं। इनका पूरा नाम तो लक्ष्मीनारायणदास है, परन्तु इनके इष्ट मित्र इन्हें लक्ष्मी बाबू के नाम से ही सम्बोधित करते हैं। कलकत्ते में आपके ५-६ मकान हैं, इसके अलावा एक बागीचा दमदम में और एक लिलुए में है। महाजनी, मकानों का भाड़ा और बाहर की जमीन्दारी की आय काफ़ी होने तथा सिर पर कोई संरक्षक के न होने के कारण आप अपनी आय का दुरुपयोग खूब ही करते हैं। और यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। जिन धनवानों के ऊपर कोई संरक्षक नहीं होता, वह प्रायः अपनी सम्पत्ति को योंही बर्बाद किया करते हैं। और फिर जब इनको अपने जैसा ही कोई साथी मिल जाता है, तब फिर पूछना ही क्या है। दोनों हाथों से सपनी सम्पत्ति को लुटाना शुरू करते हैं। अतएव लक्खी बाबू को भी रामेश्वर बाबू जैसा साथी मिल गया। अस्तु, रामेश्वर बाबू पांच ही मिनिट में कपड़ा पहनकर आगये। दोनों मित्र सिगरेट का धुआं उड़ाते हुये बैठक खाने से बाहर आये और मोटर पर बैठ कर अपर चितपुर रोड़ की तरफ़ जाने का हुक्म दिया। भों भों करती हुई मोटर अपर चितपुर रोड ओर ब्रेस्ट्रीट की मोड़ के एक मकान के सामने खड़ी होगई, तथा दोनों जने मोटर का भाड़ा चुका कर झट से मकान के भीतर दाखिल होगये।

(४)

अब हम अपने पाठकों को अपर चितपुर रोड के मकान में एक सजे सजाये कमरे की सैर करना चाहते हैं। यह कमरा विलासिता की समग्र सामग्रियों से खूब ही सजाया गया है, अगर उसका वर्णन किया जाय तो एक छोटी सी पुस्तक बन सकती है। मिर्जापुर के माधोसिंह गांब का बना हुआ बढ़िया गलीचा कमरे में बिछा है। एक तरफ़ तीन चार युवक बैठे हुये हैं, उनके बीच में एक सुन्दरी हारमोनियम लिये बैठी हुई है। सामने की तरफ़ तबलिया बैठा है। बीच में चांदी की तश्तरी में पान सिगरेट रक्खे हुये हैं, गाना होरहा है, वाह वाह के तर्राने छूट रहे हैं। सुन्दरी ने अपने कोकिल कंठ से पहले एक ठुमरी और बाद को एक गज़ल गाई।

इतने में घड़ी में बारह बज गये और वाह वाह के साथ गाना भी ख़तम हुआ। सब कोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उठ खड़े हुये, तबलिये ने सामने आकर आदाब बजाई, रामेश्वर बाबू ने अपनी मनी बेग से दो रुपये निकाल कर दे दिये तथा वह दुबारा लम्बी आदाब बजा कर चला गया। उस के उसके जाने के बाद इन चारों में न मालूम क्या बात हुई, यह तो मालूम नहीं किन्तु रामेश्वर बाबू को छोड़ कर और सब लोग चले गये। अब इस कमरेमें केवल रामेश्वर बाबू और सुन्दरी को छोड़कर और कोई नहीं रहा।

इतने में रामेश्वर बाबू ने कहा—'चलो दूसरे कमरे में चलें" और उठ खड़े हुए। यह कमरा उस कमरे की तरह सजा हुआ न होने पर भी साधारण तरह से अच्छा सजा हुआ है। रामेश्वर बाबू यहीं आकर बैठ गये इतने में वह स्त्री भी कमरे का किवाड़ बन्द करके रामेश्वर बाबू के पास खड़ी हो गई। रामेश्वर बाबू ने सुन्दरी को खड़ी देख कर मुस्कराते हुए कहा "आओ, मेरे पास आओ।"

सुन्दरी जो अभी तक मुस्कराती हुई इनके पास ही खड़ी थी हाथ पकड़ते ही एक दम बेहोश हो गई। "हाय ! हाय ! यह क्या हुआ" कहते हुए रामेश्वर बाबू उसे उठाने को आगे बढ़े, उन के हृदय में भी भय छा गया। उन की आत्मा की ओर से आवाज़ आ रही थी कि उन का यहां ठहरना प्राकृतिक नियम के अनुकूल नहीं है तथापि वह कुवासनाओं के वशीभूत हो रहे थे। उतने में सुन्दरी को होश हुआ, वह बोली न मालूम क्यों मुझे तो बड़ा भय सा मालूम होता है, मैंने आज तक कभी ऐसा नहीं अनुभव किया। आज मालूम नहीं आप के सामने आते ही मुझे भीतर से घृणा और भय क्यों मालूम हो रहा है ? मेरा हृदय धड़क रहा है, नहीं कह सकती कि यह क्या बात है।"

रामे०—"हां, मेरे हृदय में भी एक तरह की उथल पुथल मची हुई है। मुझे दो वर्ष पुलिस विभाग में काम करते हुए लेकिन ऐसा कभी भी नहीं देखा। (संभल कर) आह ! जाने भी दो, यह सब मन का भ्रम है और कुछ नहीं।" इन की बात सुन कर आत्मा की आवाज़ को दबा कर सुन्दरी फिर इन के पास आ गई। लेकिन उस के चेहरे से साफ़ यही मालूम पड़ रहा है कि वह बहुत ही घबरा गई है, वह बेहद डर गई है, उसे रामेश्वर बाबू के पास बैठते भय लगता है, किन्तु करे तो क्या करे, वह ऐसा करने के लिये बाध्य थी, उस ने अपने हाथ से अपनी यह गत बनाली थी अतः सुन्दरी रामेश्वर बाबू की इच्छानुसार उन के पास बैठने के लिये मजबूर थी। जैसे रामेश्वर ने उस का हाथ पकड़ कर उसे फिर अपने पास बैठाने की चेष्टा की वैसे ही एक भयानक आवाज़ के साथ किसी आदमी के गिरने का शब्द हुआ। और रामेश्वर ने देखा कि सुन्दरी मूर्छित होकर गिर पड़ी है। इस बार रामेश्वर बाबू भी बेहद घबरा गये उन्होंने चट अपनी जेब से पाकिट लालटेन निकाल कर उस की रोशनी की ओर सुन्दरी के मुह पर पानी छिड़क कर उसे होश में लाने की चेष्टा करने लगे। कोई दस मिनिट के बाद सुन्दरी को होश आया, वह घबराई हुई चारों तरफ़ देखने लगी। उसे ऐसा मालूम पड़ने लगा कि मैने आज सांसारिक नियम को भंग कर दिया है, उसी की सज़ा देने के लिये मुझे यमदूत बुला रहे हैं। रामेश्वर ने उसे होश में आते देख कर कहा मुझे डर मालूम होता है। चलो बगल वाले कमरे में चलें वहीं पर चल कर इस पर सोचूंगा कि यह क्या बात है। यह तो भूतों का सा मामला जान पड़ता है। ख़ैर जो हो चलो उस कमरे में चलें वहीं पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बात होगी। "अच्छी बात है" कह कर सुन्दरी फिर पहले वाले कमरे में चलने को तय्यार होगई।

(६)

रामेश्वर की आज्ञा से सुन्दरी ने डरते हुए बत्ती जलाई, चांदना होने पर रामेश्वर ने अपनी जेब से जर्मनी की बनी हुई एक छोटी सी पिस्तौल निकाली, और सुन्दरी को लक्ष्य कर के बोले, "देखो अगर अपना भला चाहती हो तो जो कुछ मैं पूछ रहा हूं उसको जबाब सीधी तरह से सच्चा २ देती जाओ। अगर एक बात झूठ कही तो समझ लेना तुम्हारी जान की ख़ैर नहीं।"

सुन्दरी एक तो पहलेसे ही घबराई हुई थी, उस पर पिस्तौल देख कर तो उस के होश ही उड़ गये। लाचार होकर उस को रामेश्वर बाबू का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। अतएव उसने यों कहना शुरू किया—

"मैं जाति की कायस्थ हूं। मेरी माता मुझे पांच वर्ष की छोड़ कर मर गईं थीं, पिता ने ही मेरा लालन पालन किया। मैंने अपनी गांव की पाठशाला में पढ़ना सीख लिया। युवती होने पर पिता जी को मेरे विवाह की चिन्ता हुई। धन का इन्तज़ाम न होने के कारण उनको बाध्य होकर मेरा विवाह एक वृद्ध के साथ करना पड़ा। मैं अपने पति की दूसरी स्त्री थी, उनका मुझ पर प्रेम भी था, लेकिन किया क्या जाय, कराल काल के आगे किसी का कुछ वश नहीं चलता, मेरे पति मुझे गर्भवती छोड़ कर, एक वर्ष में ही इस असार संसार से चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद मैं और मेरी विधवा ननद ही रह गई। हम लोगों का खर्च जमींन्दारी की आय से चलता था, किसी बात का कष्ट नहीं था। अस्तु जब मेरे गर्भ की खबर गांव में फैली, तब गांव वालों ने अनेक तरह के सन्देह किये, जो जिसके मन में आता वह वही कह देता। कितनों ने तो मेरी ननद को यह सलाह दी कि 'मुझे घरसे निकाल देना चाहिये"। ख़ैर, मेरे गर्भ से एक पुत्र पैदा हुआ। उसका लालन अच्छी तरह से होता था, किसी बात की कमी नहीं थी। अब मैं आपको यह बताती हूं कि किस प्रकार मैं व्यभिचारिणी बनी। मेरे गांव के एक युवक से मेरी आंख लड़ गई। वह कलकत्ते के किसी आफ़िस में काम करता था। जिस दिन मैं घर से गायब हुई हूं उसी दिन वह भी कलकत्ते जाने वाला था, हम लोगों में पहले ही से सब बात एक वृद्धा के ज़रिये ठीक होगई थी। जिस दिन मैं गायब हुई थी उस दिन कोई त्योहार था। हम लोग सब कोई गंगाजी स्नान करने को गये थे, मैंने अपने बच्चे को भी अपने साथ लेलिया था, क्योंकि उस को गोद में रखने का यह आख़िरी दिन था, मैंने अन्तिम वार अन्तिम समय तक उसे अपने पास रक्खा। मौका पा कर मैंने बच्चे को ननद की गोद में दे दिया और मैं भीड़ में निकल गई। हम लोगों ने अपने मिलने का एक स्थान भी ठीक कर लिया था, अतः मैं वहीं जाकर खड़ी होगई। थोड़ी देर में वह युवक भी आगया।

उसके साथ वह वृद्धा कुटनी भी थी। वह मुझे अपने साथ २ आने का इशारा करके आगे चली मैं उसके साथ हो गई। मेरे पीछे २ वह युवक भी आरहा था। थोडे दिनों तक तो मैं उसके साथ कलकत्ते मे रही लेकिन कुछ दिनों बाद वह मेरा ख़र्च चलाने में असमर्थ होगया, और उसने मेरे यहां आना बन्द कर दिया। अब मुझे अपने पेट के लिये चिन्ता हुई। अब कहां रहूंगी, कहां खाऊंगी, किस तरह मेरा खर्च चलेगा आदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनेक चिन्ताओं ने मुझे आघेरा। खर्च बढ़ा हुआ था, और आय एक पैसे की भी न थी, अतएव लाचार होकर मुझे यह नीच धन्धा स्वीकार करना पड़ा। इसके अतिरिक्त मुझे और कोई उपाय नज़र नहीं आया। इस घर में रहते मुझे कई वर्ष होगये लेकिन आज जैसा वाकया कभी नहीं गुज़रा"।-इतना कहकर सुन्दरी रोने लगी। रामेश्वर बाबू यह सब बातें नोट कर रहे थे। सुन्दरी को चुप देखकर उन्होंने पूछा कि "बस इतना ही या और कुछ"। सुन्दरी ने रोते २ कहा "यही मेरी संक्षिप्त जीवनी है"

रामे०—"तुम्हारे पिताजी का क्या नाम था?"

सुन्द०—"दया सिन्धु वर्म्मा।"

रामे०—"तुम्हारी माता का क्या नाम था?"

सुन्दरी—"करुणामई"।

रामे०—"अच्छा तुम्हारे ससुर का क्या नाम था?"

सुन्द०—"गौरीशंकर गुप्त।"

रामे०—"और पति का नाम?" सुन्दरी चुपरही। उसे चुप देखकर रामेश्वर खिन्न होकर बोला "ओह! तुम हिन्दू रमणी हो, चाहे जैसी पतित क्यों न होजाओ, फिर भी हिन्दू रमणी हो, अपने पतिका नाम नहीं ले सकती अच्छा लिख दो"।

सुन्दरी ने रामेश्वर के कथनानुसार एक कागज़ पर अपने पतिका नाम लिख दिया उसे पढ़कर रामेश्वर की आंखों से आंसू गिर पड़े। और उसने एक लम्बी सांस लेकर कहा "तो मेरा सन्देह ठीक निकला, हे ईश्वर! रक्षाकरो रक्षकरो! (चौंक कर) मैंने पाप किया है, चाहे वह जानकर किया हो या अनजान में, लेकिन पाप ज़रूर किया है, उसका प्रायश्चित्त करूंगा"।

इतना कहकर रामेश्वर ने एक बड़े कागज़ पर बड़े २ अक्षरों में कुछ लिखा और सुन्दरी से पूछा "हां, तुम्हारा असली नाम क्या है? कहीं मोहिनी तो नहीं है?"

सुन्द०-'हां मेरा असली नाम मोहिनी ही है'

रामे०—"और तुम्हारे पुत्र का नाम रामेश्वर होगा?"

सुन्द०—"हां आपने कैसे जाना?"

रामेश्वर ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया अपने लिखे कागज़ को दिवाल पर चिपका कर उसने अपनी पिस्तौल से आत्म हत्या कर ली। मोहिनी यह देखकर घबरा गई उसने उस कागज़ को पढ़ा और उसके नीचे कुछ लिख, लिखकर उसी पिस्तौल से उसने भी आत्म हत्या करली।

× × × × ×

दूसरे दिन पुलिस को इस वारदात की ख़बर लगी, उसने आते ही सामने एक बड़े कागज़ पर कुछ लिखा देखा, उस में लिखा हुआ था :—

"माता और पुत्र-तथा-ईश्वरीय न्याय। विशेष हाल जानने के लिये मेरी नोट बुक देखो।

मैंने अपनी इच्छा से आत्म हत्या की है, किसी का कुछ दोष नहीं"।

हस्ताक्षर "रामेश्वर गुप्त"

इस के नीचे लिखा था—

हम लोग अभी तक पाक हैं, लेकिन तौ भी पाप का यही दण्ड है। मैंने संसार को अपना कलङ्कित मुख न दिखाने की इच्छा से आत्म हत्या की है।"

हस्ताक्षर "मोहिनी गुप्त"

पुलिस वाले यह देख कर दंग रह गए। सब की आंखों से सहानुभूति पूर्ण आंसू टपक पड़े।

पुलिस सुपरिन्टैन्डैन्ट साहब ने करुणा भरे शब्दों में कहा "ठीक है यह ईश्वरीय न्याय है"।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सदाचार

[लेखक—"कुशल"]

[१]

सदाचार सुविचार, विश्व के प्रबल-सहायक ।
हृदय-ज्योति गौरव, महल प्रभुता परिचायक ॥
दया-स्नेह धृति क्षमा, विनय प्रतिभा संचारक ।
मानव-जीवन-ज्योति, अमल-औदार्य्य प्रचारक ॥
श्रम शीलता सहिष्णुता, सत्य परायणता सता ।
विकसित होती शक्तियां, प्रेम आदि शुभ-विमलता ॥

[२]

संसृत में आदर्श, यशष्कर यही बनाता ।
भक्ति-ज्ञान की सुधा, विविध विधि यही बिताता ॥
नैसर्गिक-आनन्द-सु-मेवा यही चखाता ।
दिव्य-दान्ति-आगार, प्रमाकर यही बनाता ॥
सेवा-मार्ग-विधान का दिखलाता अनुपम छटा ।
द्वेष दम्भ पाखंड को मूल सहित देता हटा ॥

[३]

अहंकार मद लोभ, प्रलोभन दर देता है ।
न्याय-विमुखता क्रोध, आलसता हर लेता है ॥
उच्छृंखलता विषय, वासना भंजन करता ।
सकल असद व्यवहार, भ्रान्ति-भय-भंजन करता ॥
स्रष्टा के प्रिय सृष्टि का, एक मात्र आधार है ।
ऊंच नीच सब के लिये, इस पर सम अधिकार है ॥

[४]

जिन सुगुणों से मनुज, प्राणियों में प्रियवर हैं ।
करते सार्थक नाम, विश्व में विद्वद्वर हैं ॥
सब का इक आधार, सत्य-आचरण निराला ।
निष्कलंक शुभरत्न- देव-आभरण उजाला ॥
भूल-भुलैया-मार्ग में, ज्ञान-प्रदीप्त-प्रकाश है ।
सच्चरित्र-जन के सदा, सकल सिद्धियां पास हैं ॥

[५]

सच्चरित्र-जन ! प्रेम-निलय के अटल-पुजारी ।
स्वर्गिक-शुचि-आनन्द, परम-पद के अधिकारी ॥
जीवन-प्रभा-प्रपुंज, ओजता-शील-निकेतन ।
कलित-कर्म-आगार, धर्म-ध्रुव-धैर्य्य निकेतन ॥
रुचिर रम्य सद्भाववर, वसुन्धरा थापक सनय !
दृढ़-व्रत शुचि-निष्कपटता क्षमा शील ज्ञापक हृदय !

[६]

विमल-शान्ति का वस्त्र, क्रोध-गत शुचिता गहते ।
परमारथ का मार्ग, नित्यशः हैं वे गहते ॥
विश्व-प्रेम में लीन, दीन सम्प्रति-दुख हरते ।
हृदय अभय निशंक, मृत्यु से कभी न डरते ॥
सदा एक-रस वे गहें सुख-दुख विजय-अविजय में ।
जीवन-मृत्यु समान है, हर्ष-विषाद न हृदय में ॥

[७]

शुभ-कार्यों में महा, विरल-उत्साह दिखाते ।
साहस से दुख द्वन्द, मोह-आलस्य मिटाते ॥
अपने आश्रय आप, निरन्तर वे रहते हैं ।
माया भव-जंजाल-जाल में नहिं फंसते हैं ॥
प्रेमी-जीवन-दान का दिखलाते आदर्श हैं ।
आत्म-त्याग निस्वार्थ का करते नव-उत्कर्ष हैं ।

[८]

दुखिया के दुख देख, आप भी दुखिया होते ।
सुखिया के सुख देख, आप भी सुखिया होते ॥
अति क्षुधार्त को देख, दया उस पर करते हैं ।
ऊंच-नीच का भेद न रख सेवा करते हैं ।
अपनी जाति स्वदेश-हित, आत्म त्याग दिखलायेंगे ।
जननी-हित बलिदान का बीड़ा कठिन उठायेंगे ॥

[९]

करते हैं पुरुषार्थ, कीर्ति-सत-सुधा बहाते ।
विमल-प्रेम की लता, विश्व में हैं लहराते ॥
मर कर भी वे अमर, सुधी नर हैं कहलाते ।
किसी धृष्ट-सत्ता के सम्मुख सिर न झुकाते ॥
संकट ही के बाद जगत में फिर होता आराम है ।
इस रहस्य को जानते, कर जाते कुछ काम हैं ॥

[१०]

चरित्रवान-जन सदा, निरत सेवा में रहते ।
सुन्दर-न्याय, सुधर्म, सत्य पर हँसते मरते ॥
अपने शुचि-सिद्धान्त, सुप्रण पर कट मरते हैं ।
थोड़े में निर्वाह, भले जग में करते हैं ॥
ईश्वर-चिन्तन में सदा, समय बिताते सुजन हैं ।
इस जीवन-संग्राम में, विजयी होते सुजन हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजर्षि भीष्म

लेखक—श्रीहरगुलाल 'वशिष्ठ'

पहिला अंक

चौथा दृश्य

स्थान—महर्षि पाराशर का आश्रम।

समय—प्रभात।

(पाराशर आसन पर बैठे विचार रहे हैं)

पाराशर—(दीर्घ स्वांस लेकर) विष्णुदत्त का अनुमान मिथ्या नहीं था। व्यास सत्यवती का पुत्र है और कपट वेशधारी पाराशर शान्तनु के अतिरिक्त कोई भिन्न व्यक्ति न था। अपने पाप को छिपाने के लिए ही शान्तनु ने विष्णुदत्त से कहा था "मैंने इस बालक को गंगा तट पर पड़ा पाया है। ....." वास्तव में व्यवस्था भ्रष्ट पथ अवलम्बन करने लग गई है। आर्य्य जाति में घुन लगना आरम्भ होगया। आर्य्य जाति में विशेष कर क्षत्रियों में, विलास उचित सीमा को लांघ कर सर्वव्यापी होता जारहा है। क्षात्र और न्याय के उच्चासन से क्षत्रिय जाति बहुत नीचे उतर आई है, उस के मानव जीवन में शासन और भोग ये ही दो अभिनय होरहे हैं। शान्तनु जैसे उच्च राजाओं से जब ऐसे नीच कर्म किये जारहे हैं, तब साधारण पुरुषों से हम किस पाप की आशा नहीं कर सकते। परशुराम इस पाप का प्रतिशोध करने के लिए शान्तनु को प्राण दण्ड देने पर उद्यत होगये थे, बड़ी कठिनता से अनुनय विनय करके उन्हें शान्त किया है, क्योंकि हत्याओं से जाति का भयंकर रोग नष्ट नहीं किया जा सकता। तपस्या और बलिदान ही उसकी एक मात्र औषधि है। (कुछ विचार कर) सत्यवतीका विवाह एक प्रकारसे शान्तनु के साथ हो ही चुका, चाहे वह ब्राह्म विवाह हो अथवा पिशाच! दैवेच्छा का प्रभाव कभी कभी मनुष्य के मानसिक भावों को, छिन्न भिन्न कर के अनुसरणीय पथ से कहीं परे लेजाता है। मत्स्यगन्धा के बाल्यकाल में यही अभिलाषायें मेरे मानसिक विचारों को परिपक्व कर रहीं थी कि मत्स्यगन्धा को उपनिषद् परिषद् की एक योग्य सदस्या बनाऊंगा, परन्तु दुर्दैव ने उसकी मानसिक स्थिति को इतना संकीर्ण बना दिया कि वह एक शान्त गृहजीवन से भी वंचित रही जाती है। अब यह एक विडम्बना मात्र है कि सत्यवती एक ब्राह्मण की कन्या है और इतर वर्ण से ऊपर ही उसके जीवन श्रोत का प्रवाह होना चाहिये। शान्तनु चाहे कितना ही लम्पट, इन्द्रियासक्त राजा क्यों न हो फिर भी वह इस हतभाग्य ब्राह्मण की कन्या सत्यवती का पति है। (व्यास का प्रवेश) अब सत्यवती के मानसिक जीवन को शान्तनु के अन्तःपुर में परिमित करा देना ही न्याय-संगत तथा उस के भावी जीवन के लिए शान्ति कारक होगा। इसके अतिरिक्त और कोई उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता। (व्यासको देखकर) कौन? व्यास!

व्यास—हां गुरुदेव!

पाराशर—(कुछ विचार कर) व्यास! तुम गंगा तट पर जाकर एक मास तक केवल जल पान करके निराहार व्रत धारण करो।

व्यास—गुरुदेव! मुझ से कौन अपराध हो गया है जो एक मास तक उपवास करने की आज्ञा हुई?

पाराशर—नीच प्रवृत्ति के कारण किये हुए नीच कर्मों का प्रायश्चित्त करने के लिए ही उपवास नहीं किये जाते, परन्तु मानसिक विचारों को संगठित करने के लिए भी उपवास किये जाते हैं। दुःखों पर शासन करना, आपत्तियों को अपने अनुकूल बनाना यह केवक उपवास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कठिन तप से ही होसकता है। व्यास ! तर्क करने का समय अभी दूर है निसंकोच आज्ञा पालन करना ही तुम्हारा एक मात्र कर्त्तव्य है। जाओ, आज्ञा का पालन करो।

व्यास—जो आज्ञा ! (प्रस्थान)

पाराशर—(स्वगत) देखूं। चेष्टा करके देखूं कि व्यास को ब्राह्मण बना सकता हूं वा नहीं। इस युवक की उत्पत्ति काम की निकृष्ट लालसा से हुई है, परन्तु इसका अन्तःकरण शुद्ध और आत्मा निर्मल है। सम्भव है मैं इसे ब्राह्मण बना सकूंगा। उत्तम होता यदि देवव्रत को भी ब्राह्मण बनाता, परन्तु गंगा शान्तनु से इस बात की प्रतिज्ञा कर चुकी है कि वह देवव्रत को क्षत्रिय बनायेगी। गंगा का उद्देश उच्च और सराहनीय है। उसने अपने सात पुत्रों को क्षत्रिय न बना कर ब्राह्मण बनाया है। और वह ऐसा करने के लिए बाध्य भी हो गई थी क्योंकि क्षत्रियों का कर्तव्य आर्यों को अनार्यों से रक्षा करना था, परन्तु आज क्षत्रिय जाति स्वयं ही अनार्य्य होकर अपनी ही जाति पर कुठाराघात कर रही है। शरीर का एक अंग अपने ही शरीर का नाश कर रहा है। जब हाथ, सिर-पैर और पेट को पीटने लगते हैं तब शरीर की दशा शोचनीय होजाती है। अब तो यही इच्छा होती है कि क्षत्रिय जाति को कुछ समय के लिए आर्य्य जाति से पृथक करके नष्ट कर दिया जाय, परन्तु यह कर के भी दशा सन्तोष जनक न हो सकेगी।

(देवव्रत का आकर अभिवादन करना)

पाराशर—देवव्रत !

देवव्रत—हां गुरुदेव !

पाराशर—पाठ याद कर लिया ?

देवव्रत—हां गुरुदेव !

पाराशर—तब क्या जिज्ञासा है ?

देवव्रत—धर्म की व्याख्या मैं नहीं समझ सका।

पाराशर—अच्छा बैठो।

(देवव्रत बैठ जाता है)

पाराशर—देखो देवव्रत ! धर्म की व्याख्या साधारण नहीं है। इसका मर्म अति गहन है। ज्ञानी भी इसके सर्वांग को नहीं जान पाते, परन्तु धर्म सरल भाषा में "जो धारण किया जाय" ऐसा ही कहाता है।

देवव्रत—धारण क्या किया जाता है ?

पाराशर—जिसमें धारणा हो।

देवव्रत—धारणा किस वस्तु में होती है ?

पाराशर—जो अक्षर है उसी में धारणा होती है। जीव अक्षर होने से सानुकूल अक्षर में ही धारणा कर सकता है।

देवव्रत—तब जीव इन्द्रियों के नश्वर विषयों में फंसकर क्यों पाप करने लगता है ?

पाराशर—इन्द्रिय व मन के विकारों से बलात्कार जुटाया जाकर ही जीव पाप की ओर आकर्षित हो जाता है।

देवव्रत—मानसिक विकारों से मुक्ति पाने का कौन यत्न है ?

पाराशर—भूतयज्ञ।

देवव्रत—भूतयज्ञ किसे कहते है ?

पाराशर—मन और इन्द्रियों के विकारों को मन और इन्द्रियों में ही स्थिर करके विकारों की अग्नि में विकारों का होम करना भूतयज्ञ कहलाता है।

देवव्रत—भूतयज्ञ का अनुष्ठान करके जीव यदि भ्रष्ट हो जाय, तब कौन कर्तव्य है ?

पाराशर—इन्द्रियों का दमन करके पुनः यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिये।

देवव्रत—तब यज्ञके पश्चात कौन कर्तव्य है ?

पाराशर—यज्ञके पश्चात मुख्य कर्तव्य बलिदान है। उससे परे कोई कर्तव्य नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवव्रत—बलिदान किसके प्रति होना चाहिये ?

पाराशर—देवता के प्रति।

देवव्रत—किस देवता के प्रति ?

पाराशर—व्योमन देवता के प्रति।

देवव्रत—व्योमन का स्वरूप क्या है ?

पाराशर—जड़, विभु और चेतन को व्योमन कहते हैं। वि, पृकृति जड़ है; ओम् (ब्रह्म) विभू (व्यापक) है। और अव (जीव) चेतन है। इन्हीं को सत, सच्चिदानन्द व सत-चित् कहते हैं। इन्हीं के प्रति बलिदान करना मुख्य कर्तव्य है।—जो जड़ के प्रति बलिदान करते हैं, जो जड़ की उपासना करते हैं, जो अपने जीवन रूपी ध्येय सम्पत्ति को प्रकृति की आराधना में लगा देते हैं-प्रकृति के होम कुण्ड में आहुति दे देते है वे "दानव" कहलाते हैं।

देवव्रत—मय ने जड़ देवता के प्रति बलि-दान किया था इसी से वह मय दानव कहलाया

देवव्रत—परन्तु वह तो दानव जाति का था, इसी से दानव कहलाया-उसके वंशज भी दानव कहलाते हैं।

पाराशर—नहीं देवव्रत ! यदि यम जाति के कारण ही दानव कहलाता तो प्रहलाद, जिसने ब्रह्म देवता के प्रति बलिदान किया, दैत्य कहलाता, परन्तु प्रहलाद को कोई भी दैत्य नहीं कहता। यम के वंश सब दानव नहीं कहलाते परन्तु जो प्रकृति के प्रति बलि-दान करके विज्ञान व शिल्प को अध्ययन करते हैं, वे ही दानव कहलाते हैं और उनमें से सर्व श्रेष्ठ को यम की पदवी मिलती है।

देवव्रत—तब सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है ?

पाराशर—मनुष्य।

देवव्रत--मनुष्य ?

पाराशर--क्यों देवव्रत ! आश्चर्य्य में क्यों आगये ? यद्यपि सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म है, परन्तु मनुष्य के प्रति बलिदान न करने से ब्रह्म के प्रति बलि-दान करने वाले शिष्य नहीं बनेगें। जनता के गोपनीय जीवन का निरीक्षण करने से पता लग जायगा कि वहां मनुष्य के प्रति बलिदान का सर्वथा अभाव है। यही कारण है कि आज आश्रमों में ब्रह्म में प्रति बलिदान करने वाले तपस्वी दृष्टिगोचर नहीं होते।

देवव्रत--मनुष्य देवता के प्रति बलिदान का अनुष्ठान क्या ?

पाराशर--जो आप्त और ज्ञानी हैं-जो योगी और तपस्वी हैं, उनके दिखाये पथ पर चलना यज्ञ का अनुष्ठान कहलाता है। और उनके सानु-कूल योगी बन जाना यज्ञ की सफलता हैं।-परन्तु देवता के प्रति मनुष्य का बलिदान निस्वार्थ होना चाहिये।

देवव्रत—इसको स्पष्ट कर दीजिये।

पारा०--देखो, ब्राह्मण-तपस्वी, योगी, और ज्ञानी होने के कारण मनुष्य मात्र के लिए पथ-प्रदर्शक है। अपने पथ प्रदर्शक के लिए यदि कोई प्राणतक देदे, तो इसमें उसकी कुछ महत्ता नहीं हो सकती। ब्राह्मण से मनुष्यों को अनेक आशायें होती हैं ब्राह्मण के नष्ट हो जाने पर वे आशायें भी नष्ट हो जाती हैं। आशाओं के नष्ट हो जाने पर उन्नति का मार्ग रुक जाती है। इसलिए ब्राह्मण की रक्षा के लिए आत्म बलि-दान कर देना मनुष्य का पहला और साधारण कर्तव्य है और साधारण कर्तव्य का पालन करना महत्व नहीं कहलाता। यदि कोई मनुष्य अपनी माता की सेवा नहीं करता, अपने गृहस्थ का पोषण भी नहीं करता, तो वह मनुष्य महत्व हीन नहीं किन्तु मनुष्यत्व हीन है।

देवव्रत—गुरुदेव ! महत्व किसे कहते हैं ?

पाराशर—निस्वार्थ कर्म-निस्वार्थ बलिदान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को महत्व कहते हैं। दूध देने वाली गौवों का पालन पोषण अपने स्वार्थ के लिए है, उनकी रक्षा मनुष्यत्व है। परन्तु सिंह की हिंसावृत्ति को छुटा कर अहिंसक बना देना, बनचर जीव, मृगादि का पोषण करना—तथा उनके जीवन को संकट से बचाने के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान कर देना निस्वार्थ है और यही महत्व है।

देवव्रत—तन मनुष्य के प्रति श्रेष्ठ बलिदान क्या है ?

पाराशर—जो मनुष्य इन्द्रियों के विकारों के वशीभूत होकर पाप पथ में बहुत नीचे उतर गए हैं—जो काम क्रोधादि से पीड़ित हैं, जिनकी मेधा बुद्ध नष्ट हो गई है जो दूसरों का सर्वनाश करने के लिए मसान के प्रेत की तहर परिक्रमा कर रहे हैं, उनके प्रति उपकार करना—उनको शान्त स्थल पर लाना मनुष्य के प्रति बलिदान है। उनको नष्ट कर देना तो उनके सदृश अपने को नीच बनाना है। क्योंकि हत्या तो निकृष्ट कोटि का कर्म है।—किसी कामी पुरुषों के हाथों से किसी अबला की रक्षा करना मनुष्य के प्रति साधारण उपकार है।—देवव्रत ! यदि कामी पुरुष का वध करदिया जाय तो इस हत्या से अपना मन कलुषित तथा कामी पुरुष का अधःपतन हो जाता है। मनुष्य को पाप पथ से हटा कर, क्रोधादि पीड़ाओं से बचाकर मेधा बुद्धि का पुनरावतरण करके स्थिर बुद्धि युक्त योग पथमें ले जाना मनुष्य के प्रति बलिदान है। मनुष्य बड़ा दीन है !—वह मनुष्य दीन नहीं जो निर्धन निराश्रय है—वह मनुष्य दीन नहीं है जो तीनों तापों से तप रहा है। वह तो किये हुए कर्मों का फल भोग रहा है—पापों का दण्ड पा रहा है। परन्तु दीन वह है जो इच्छा न होने पर भी बलात्कार से पापों की ओर जुटाया जारहा है। इसी के प्रति बलिदान करना श्रेष्ठ है। यदि पापियों की पापवृत्ति का नष्ट करके ज्ञान पथ मे लाकर योगारूढ़ कर दिया जाय, तो उस अस्थिर बुद्धि वाले का—ज्ञान पथ में ले जाने वाले का तथा आगामी संतान का अतिशय कल्याण होता है। अपने तपके—ज्ञान के तथा—योग के तेज से पापियों की पापवृत्ति को उन्ही में भस्म कर देना मनुष्य के प्रति सच्चा बलिदान कहलाता है। और इसी को नरयज्ञ कहते हैं।

(एक शिष्य का प्रवेश)

पाराशर—क्यों श्वेतकेतु ?

श्वेतकेतु—गुरुदेव ! एक सन्यासिनी आप से साक्षात करने आई हैं। वे अपने को गङ्गा बतलाती हैं।

पाराशर—गङ्गा ?

श्वेतकेतु—हां गुरुदेव ! यही नाम उन्होंने मुझे बतलाया है।

पाराशर—जाओ उन्हें सादर लिवा लाओ।

(शिष्य का प्रस्थान)

पाराशर—(स्वगत) गङ्गा किसी महान उद्देश को लेकर ही आई होंगी, उनके विचार महत और सराहनीय हैं।

(गङ्गा का प्रवेश)

गङ्गा—देवर्षि के चरणों में प्रणाम करती हूं

पाराशर—आओ गङ्गा ! तुम्हारा आगमन शुभ हो !

देवव्रत—माता के चरणों में देवव्रत प्रणाम करता है।

गङ्गा—चिरंजीव होवो पुत्र ! (पाराशर से) कुछ गोपनीय समाचार है।

पाराशर—देवव्रत ! आश्रम में जाओ (देवव्रत का प्रस्थान)।

पाराशर—इस आसन पर बैठकर अपने गुप्त विचारों को प्रगट करो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गङ्गा--(आसन पर बैठकर दीर्घ स्वांस लेती है) इन्द्रियों के वशीभूत होकर मनुष्य आप ही अपना शत्रु बन जाता है ।

पाराशर—इसी विषय पर तो देवव्रत से चर्चा हो रही थी आज वह बलिदान के मर्म को भली भांति समझ गया ।

गङ्गा--आये दिन क्षत्रिय वर्ण के प्रति मेरी घृणा बढ़ती ही जा रही है। क्या कहूं कहते लज्जा आती है। आपके सम्राट शान्तनु का मन भ्रमर एक नव विकसित कली पर मुग्ध हो गया है।

पाराशर—वह हत भाग्या कौन है ? आह ! शान्तनु बड़ा दीन है !

गङ्गा—दीन ! हां वास्तवमें दया का पात्र है

पाराशर—इन्द्रियासक्त दया के पात्र होते हैं, यह तुम सच कहती हो गङ्गा ! हां, वह हत भाग्या कौन है ?

गङ्गा—नायिका शूद्र जाति की कन्या है।

पाराशर—शूद्र जाति की कन्या ? परन्तु शान्तनु के लिए यह कार्य इतना नीच नहीं है।

गङ्गा--शूद्र कन्या के प्रति प्रेम, एक क्षत्रिय सम्राट के लिए इतना नीच नहीं है ! तो क्या शान्तनु से इससे भी निन्दित कार्य हो गया है ?

पाराशर--निन्दित ही नहीं, किन्तु एक घृणित कार्य्य, शान्तनु निर्द्वन्द युवावस्था में कर गये हैं। हां गङ्गा ! वह शूद्र गृहस्थ कौन हैं ?

गङ्गा--एक धीवर कन्या अनुपम सुन्दरी तथा विदुषी है।

पाराशर--उसका नाम ?

गंगा—सत्यवती ।

पाराशर—सत्यवती ?

गंगा—हां सत्यव्रती ही उसका नाम है, परन्तु किन्हीं कारणों से धीवर सत्यवती का विवाह शान्तनु से करना नहीं चाहता।

पाराशर—शान्तनु की क्या दशा है ?

गङ्गा—यदि सत्यवती से विवाह न हुआ तो शीघ्र ही जीवन लीला समाप्त हो जायगी। मैं इसी लिए आई हूं कि देवव्रत शीघ्र ही हस्तिनापुर लौट जाय जिससे वह अपने पिता की रक्षा कर सके।

पाराशर—सत्यवती से विवाह होने का क्या उपाय हो सकता है ?

गङ्गा—मैं तो कुछ निश्चय नहीं कर सकी सम्भव है देवव्रत के अनुरोध से धीवर सहमत हो जाय।

पाराशर--(स्वागत) सत्यवती के लिए यह अच्छा अवसर है (प्रगट) गङ्गा ! क्या तुम बता सकती हो कि यह सत्यवती कौन है ?

गङ्गा - यों तो उसे सब धीवर कन्या कहते हैं, परन्तु देखने से यह प्रतीत नहीं होता कि ऐसे काले गृहस्थ में यह अनुपम नारी रत्न उत्पन्न हुआ हो।

पाराशर—गङ्गा ! यह चिरकाल की बिछुड़ी हुई मत्स्यगंधा है।

गङ्गा-यत्स्यगंधा ? अपकी पुत्री मत्स्यगंधा ?

पाराशर—हां, वही कन्या जिसको मैं चिरकाल से ढूंढता था यह आपदाओं को झेलती हुई इस धींवर गृहस्थ में सम्मिलित हो गई थी

गङ्गा—उसके धींवर कन्या होने में मुझे पहले से ही संशय था। धन्य है उस परमेश्वर को ! कहां ब्रह्म देश कहां आर्यावर्त !

पाराशर—सत्यवती का विवाह शान्तनु से अवश्य हो जाना चाहिये।

गङ्गा—भगवन् ! आप तपस्वी ब्राह्मण हैं। आपकी आत्मजा भी विदुषी है। फिर आप किस कारण, अपने से इतर वर्ण क्षत्रिय को अपनी कन्या देना चाहते हैं और शान्तनु तो आदर्श क्षत्रिय भी नहीं है।

पाराशर—गङ्गा ! शान्तनु अधम कोटि का लम्पट है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गङ्गा—भगवन् ! आपके इन शब्दों में कोई गुप्त रहस्य है।

पाराशर—हां, एक बड़ा गुप्त रहस्य है। शान्तनु और सत्यवती के कलंक की कालिमा है। इन्द्रियों के सहयोग का अभिनय है। और आज वही इन्द्रियों के असहयोग से अभियोग बन गया है। गंगा ! यह बड़ा गुप्त रहस्य है !

गंगा--क्या आप उस गुप्त रहस्य को प्रगट कर सकते हैं ?

पाराशर—क्यों नहीं ? गंगा ! ऐसा रहस्य कभी न सुना होगा, मानव लीला में ऐसा विषम अभिनय किसी पात्रने भूमण्डलपर नहीं किया। यह घटना इतिहास में कालिमा को लेखनी से लिखी जाने योग्य है। क्योंकि भूतपूर्व इतिहास में ऐसी घटना का उल्लेख नहीं मिलता।

गंगा—आपकी वाणी गद् गद् होती जा रही है। रहस्य की स्मृति से आपका हृदय व्यथित सा हो गया है।

पाराशर—नहीं गंगा ! किस बात की ! तुम रहस्य को सुनो। हां, तुम्हे याद है कि शान्तनु नवजात बालक व्यास को इस आश्रम में विष्णुदत्त को दे गये थे ?

गंगा—हां भगवन् ! वह घटना मुझे भली प्रकार याद है,शान्तनु भी लगभग एक वर्ष गंगा तट पर रहे थे।

पाराशर—रहे थे ! किस कारण से रहे थे ?

गंगा--उन्होंने तो यही कहा था कि विनोदार्थ गंगा तट पर रहूंगा। परन्तु—

पाराशर-यही विनोद गुप्त रहस्य है। गंगा ! शान्तनु सत्यवती पर आसक्त हो गये थे। और इसी कारण उन्होने गङ्गा तट पर निवास किया था। अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए वे सत्यवती के पास साधु वेश में गये, और अपना नाम महर्षि पाराशर रक्खा।

गङ्गा—पाराशर ?

पाराशर--हां, पाराशर। गंगा ! यह तो तुम जानती हो हो कि शान्तनु कर्णधार के कार्य्य में कुशल हैं ?

गङ्गा—हां जानती हूं।

पाराशर—गङ्गा पार जाने के लिए वे नौका में बैठ गये और सत्यवती नौका खेनेलगी। जब नौका धारा में पहुंची तब शान्तनु ने कर्णधार सम्बन्धी अनेक बातें सत्यवती को सिखाईं। कपट वेश धारी ब्राह्मण के कपट जाल में सत्यवती फंस गई और उसी रात्रि को इस बालिका का सर्वनाश हुआ।

गङ्गा—हाय शान्तनु ! मैं यह तो जानती थी कि तुम इन्द्रियासक्त हो, परन्तु यह न जानती थी कि तुम इतने नीच इतने अधम कापुरुष हो। (रोने लगती है)

पाराशर--गङ्गा ! तुम रोती हो ? सन्यासी को समदर्शी होना चाहिये। तुम सन्यासिनी हो तुम्हारे लिए उच्च और नीच सब समान हैं। गंगा ! शान्तनु दीन है ! वह दया का,अनुकम्पा का पात्र है।

गङ्गा--नहीं; वह नीच वधयोग्य है। सत्यवती का विवाह उसके साथ कदाचित नहीं होने दूंगी।

पाराशर—गङ्गा ! वह तुम्हारा पति है। पति न सही वह भूपति सम्राट है। उसके ऊपर दया करो। वह मनुष्य है उसका सुधार करो। वह रोगी है उसकी चिकित्सा करो। तनिक अनुमान तो करो वह कितना संकट में है, कितना नर्क में है।

गङ्गा—(स्वांस लेकर) वास्तव में वे नर्क में हैं। मैं आवेश में जो कुछ कह गई उसके लिए लज्जित हूं। मैं सन्यासिनी तो हो गई हूं परन्तु रागद्वेष को नहीं जीत पाई। शान्तनु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के लिए मेरे हृदय में अगाध प्रेम है। मैं उनके वियोग को कठिनता से सहन कर रही हूं।

पाराशर—गंगा! तुम यहीं रहकर भूतयज्ञ का अनुष्ठान करो। यहीं शान्तचित्त से अपने में अपने आप को मूंदकर आत्मा का दर्शन करने की चेष्टा करो।

गङ्गा—मैं अब चित्तवृत्तियों को रोक कर यहीं साधना करूंगी। आप देवव्रत को हस्तिनापुर भेजदें।

पाराशर—मैं देवव्रत को आज ही हस्तिनापुर भेज दूंगा। तुम यहीं चित्तको एकाग्रित करो।

—०—

पति का घर

[ले०—श्रीमती शारदा कुमारी गोभिलीय]

परिच्छेद

[८]

आज तीन दिनों से अश्रु का खाना नहीं हुआ, शरीर उसे बहुत दुर्बल मालूम होने लगा। सन्ध्या के बाद रोज़ उसके सिर में जलन और थोड़ा बुख़ार मालूम होता था। उसकी माता रोज़ ही उसका हाल जानने के लिये आदमी भेजती थी परन्तु वह कह देती थी कि, 'मैं अच्छी हूं।' एक बार भी उसके बीमार होने की ख़बर पाती तो उसे अपने पास लेजाने की जिद करती। दो चार दिन के वास्ते जाने में तो उसको कोई आपत्ति नहीं थी, बल्कि जब अच्छी थी तो जाया भी करती थी, परन्तु जिस दिनसे बीमार हुई उस दिन से वह इस डर से नहीं गई कि कहीं बीमारी बढ़ न जाय और मैं फिर लौट कर न आसकूं।

उस समय सन्ध्या होगई थी घर के एक कोने में मृत-प्रदीप जल रहा था। और एक कोने में अश्रु पृथिवी पर चुप चाप पड़ी थी। इसी समय उस की छोटी मौसी के लड़के "सरोज" ने प्रवेश किया, वह उसे देख कर जल्दी से बैठ गई। इसी भाई से वह सब से ज्यादा डरती थी।

सरोज ने घर में प्रवेश करते ही कहा, "अश्रू दीदी, आज दिल खोल कर तुम्हारे बुड्ढे श्वसुर को गाली देता हूं। आज तीन दिन तुम को बिना खाये हुये, तो भी बुड्ढे ने एक बार भी ख़बर नहीं ली। बहिन, मैं कहे देता हूं जैसे यह तुम को दुःख देरहा है वैसे ही यह भी फल भोगेगा, शरीर की एक २ हड्डी गल २ के गिरेगी गले के भीतर घाव हो जांयगे। न खा सकने से सूख सूख कर मरेगा।"

अश्रूमती कांप उठी! उसने विनीत स्वर से कहा," लक्ष्मी भाई! उसका क्या दोष, दोष तो मेरे भाग्य का है। आहा, वह दुःखी आदमी हैं, उन्हें तुम शाप न दो।"

सरोज—दीदी, तुम चुप रहो, अभी तक तुम्हारी श्रद्धा उस परसे नहीं गई। उस चमार ने आज तीन दिन से तुम्हारे बच्चों के खाने के पैसे बन्द कर दिये यह बात क्या छिपी रहता है? तुम कब तक छिपाओगी, तुम्हें जो दो पैसे रोज़ पानी पीने को मिलते हैं उन्हींसे तुम बच्चों को चने खिला कर और आप केवल पानी की घूंट पीकर रह जाती हो।

इस बार अश्रू विपद में पड़ गई, सरोज को वह खूब जानती थी कि वह कैसा है। जब उसने यह सब बातें जान ली हैं तब वह ज़रूर कुछ न कुछ कांड करेगा। हाय, न जाने किस ने उसे यह खबर दी है किसने इस विपत्ति की सृष्टि करी है।

अश्रू ने व्यग्रभाव से कहा, "भाई! तुम उन्हें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गाली न दो, क्यों उन पर नाराज़ होते हो दुःखी आदमी, उस पर इतना सर्वनाश हुआ।"

सरोज ने बीच ही में बाधा देकर कहा, "उसका सर्वनाश होने से कुछ नहीं बिगड़ा वह क्या आदमी है जो उसको दुःख होगा ? वह तो आप तीनों लड़कों को लेकर मज़े में खाता पहिनता है, और इन बच्चों को खाना तक नहीं देता ! क्या कहूं दीदी ! सिर्फ़ तुम्हारे ही कारण....." बीच ही में बाधा देकर अश्रू ने कहा, "यह सब कुछ सही। हज़ार दोष क्यों न हों फिर भी वह गुरुजन हैं वह जो उचित समझते हैं करते हैं। जब मेरा भाग्य ही फूट गया तब तुम्हारे गाली देने से क्या मेरा भाग्य लौट आयेगा ?

सरोज अवाक होकर बहिन के मुंह की ओर देखता रहा। इतनी सहिष्णुता ! इतनी भक्ति ! उसके बाद दीर्घ निश्वास लेकर कहा, "दीदी, प्रकाश तुमको देखने आया था ?"

अश्रू—"नहीं भाई बहुत दिनों से उसकी कोई ख़बर नहीं मिली। तुमसे मिलना हुआ था कि नहीं ? वह सब अच्छे तो हैं ?"

सरोज—जब २ मैं गया तब २ ही वह बाहर चल दिया ! ओह कैसा पिशाच है ! है तो इसी बाप का बेटा ! मैं कहे देता हूं दीदी, कि तुम एक दिन सुनोगी कि वह अकेला सड़ कर मरा है, कोई मुंह फेर कर भी न देखेगा।

अश्रू ने देखा कि अब दूसरी बात शुरू हुई, इसलिए वह शीघ्रता से बोली, "उसका क्या दोष, यहां तो इन बच्चों को रोज़ ही देखना सुनना पड़ता था, आंखों की ओट में दो दण्ड शान्ति से तो रह सकते हैं, मेरे लिये जन्म भर क्यों सब जलेंगे ? आहा, विचारे को ईश्वर करे कभी भी दुःखित न होना पड़े। वह जब मरने लगे तब उनके मुंह से इसी भाई का नाम था, कितना प्यार करते थे। तुम प्रकाश को शाप न दो वह कभी भी दुःख नहीं सह सकेंगे।"

अब सरोज और क्या कह सकता था, बहनके प्रति प्रगाढ़ भक्ति से उसका मुखमण्डल उज्वल होगया वह उसी भाव से बहिन के मुंह को देखने लगा। भली भान्ति देखने से सहसा उस का मुख विवर्ण होगया, उसने व्यग्रभावसे कहा, "दीदी, मालूम होता है तुम्हारी बीमारी बहुत बढ़ गई है ?" अश्रु ने कहा, नहीं भाई।"

सरोज को इस पर विश्वास नहीं हुआ, उसने कहा—"नहीं ज़रूर ज्यादा होगई है नहीं तो चेहरा क्या कभी ऐसा होता है ? मैं अभी जाकर मौसी को साथ लाता हूं।" अश्रू ने कहा, "क्यों इतनी रात को मां को कष्ट देते हो, मैं अच्छी हूं।"

परिच्छेद

[९]

सरोज के जाने के आध घन्टे बाद उसको अपनी तबियत बहुत खराब मालूम हुई। वह किसी से कुछ न कह कर एक चादर ओढ़ कर पड़ गई, तीन दिन तो अनाहार बीते आज भी कुछ खाना नहीं हुआ। एक पैसे का कुछ मंगा कर खाया था, परन्तु बुखार बढ़ने से उसे भी नहीं खा सकी, उस पर कल एकादशी का निर्जल व्रत है।

एक घन्टे बाद सरोज अश्रू की माता के साथ आया। उस समय रात के दस बज चुके थे। मकान का सदर फाटक बन्द होचुका था। बहुत खटखटाने पर भृत्य ने विरक्ति के साथ आकर दरवाज़ा खोल दिया।

ऊपर से गृहस्वामी ने पूंछा "इतनी रात को कौन आया है रे ?"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नौकर ने उत्तर दिया, "बड़ी बहू की मां और भाई।"

गृहकर्त्ता चिल्लाकर बोला—"अच्छी आफ़त है रात को सोना भी नहीं मिलता। जो लड़की की इतनी मोहब्बत है तो क्यों अपने घर नहीं लेजातीं, आधी रात को दरवाज़ा खटखटाने की क्या ज़रूरत, यह भी क्या धर्मशाला समझ रक्खी है?"

क्षेत्र बाबू की दूसरी गृहिणी की एक पुरानी दाई थी, मालकिन के मरने पर वह बच्चों के संभालने के लिये पड़ी हुई थी। ऐसे शुभ अवसर पर वह चुपचाप कैसे रह सकती थी वह भी बाहर बरान्दे में आकर नौकर को धमकाती हुई बोली, "चाहे जो कोई आकर दरवाजा खट खटाये, तू बाबू के बिना पूछे जाकर खोल आता है। इतनी रात उनकी नींद टूटने से मुझे भी सारी रात पंखा झलना पड़ेगा, कल से दरवाजे में ताला डालना पड़ेगा।"

सरोज अब और न सह सका, क्रोध से उसका सारा शरीर कांपने लगा, वह चिल्ला कर बोला, "मारे जूतों के तेरा मुंह तोड़ दूंगा। जितना बड़ा मुंह नहीं उतनी बड़ी बात, देखूं तो किसके दरवाजे में ताला लगाती है।"

दासी ऊपर से गर्ज्जन करती हुई बोली, "तेरे बाप का घर है क्या, जो यहां मतवालापन करने आया है।" "तब ले दुष्टा" कहता हुआ सरोज दौड़ कर ऊपर जाने लगा कि अश्रु की माता ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर कहा, "ठहरो २ यह क्या करते हो, ऐसा करने से मेरी लड़की नहीं बचेगी।" बहिन की याद आते ही सहसा सरोज स्थिर होगया, बहिन की अस्वस्थता की बात याद करते ही अपने अपमान को भूल गया, वह नीरव होकर मौसी के साथ भीतर चला गया।

परिच्छेद

[१०]

दूसरे दिन सवेरा होते न होते अश्रू के आत्मीय स्वजनों से कमरा भर गया। अब भी अश्रू में करवट लेने की शक्ति नहीं है। अश्रू की मौसी के आते ही उसकी मां ने कहा, "दीदी कल की सारी रात मैंने और सरोज ने बड़ी मुश्किल से बितायी। सरोज एक बार डाक्टर के जाता और एक बार घर आता। मेरा ऐसा फूटा भाग्य है कि एक डाक्टर भी न मिला। कई डाक्टरों ने तो जवाब ही न दिया जिन्होंने जवाब दिया वह सौ से कम पर आने को राज़ी नहीं हुये, सो भी पेशगी। उतनी रात को सौ रुपये कहां से लाती? अश्रु का एक देवर भी तो डाक्टर है अन्त में उसे बुलाने गया तो उसने जवाब दिया "इतनी रात को बाहर जाने से मैं बीमार हो जाऊंगा, सुबह को आऊंगा।" अन्त में हमीं दोनों ने सारी रात सिर पर पानी देते और हवा करते काटी।"

इसी समय अश्रुने क्षीणकण्ठसे कहा, 'मां'।

मां ने उसके तप्त-मस्तक पर हाथ रखते हुए कहा, "बेटी प्यास लगी होगी, पानी पिलाऊं।"

अश्रु ने अति कष्ट से कहा, "मां आज तो एकादशी है।" उसकी मां यह बात भूल गई थी कि आज एकादशी है, यह बात सोचते ही वह कांप उठी। भगवन्! तुमने यह क्या किया? इतनी दुर्बलता होगई है कि यदि आज पेट में कुछ न गया तो कैसे बचेगी?

अश्रु की मौसी ने कहा, "एकादशी है तो क्या हुआ, बीमारी में एकादशी का विचार नहीं किया करते हैं।" कह कर एक गिलास पानी लेकर अश्रु के मुख में लगा कर बोली, "लक्ष्मी बेटी मेरी? थोड़ा सा पानी पीले नहीं तो गला बिलकुल सूख जावेगा।" परन्तु अश्रु ने तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और ज़ोर से मुख बन्द कर लिया कोई भी उस के मुंह में एक बून्द भी जल न दे सका।

बहुत समय बीतने पर डाक्टर ने आकर देखा और और औषधि लिखने बैठा तो, अश्रु ने अपनी माता से कहा—"मां व्यर्थ क्यों दवा मंगा रही हो, मैं आज किसी तरह भी दवा नहीं खाऊंगी।"

निदान डाक्टर ने इनजेकशन द्वारा औषधि की व्यवस्था की और जाते समय सरोज से कहते गये, "आध घन्टे बाद रोगी बहुत कुछ अच्छा हो जावेगा, परन्तु दवा का फल बहुत देर ठहरेगा तो अच्छा है:—जो हो शाम को आकर बिना देखे कुछ कह नहीं सकता। क्योंकि नाड़ी की अवस्था कुछ अच्छी मालूम नहीं होती है।"

दिनके दो बजे तक अश्रु की अवस्था अच्छी रही। सरोज और अश्रु की माता के सिवाय और सब आदमी चले गये थे। परन्तु अब फिर अश्रु छटपटाने लगी। मस्तक में एक तरह की ज्वाला सी आरम्भ हो गई, हाथ पैर ठंडे होने लगे।

कल सारी रात अश्रु की ऐसी दशा रहने पर भी उसके घर के एक आदमी ने भी झांक कर नहीं देखा। और आज भी इतना समय हो गया अब भी किसी ने नहीं पूछा। लगभग ढाई बजे होंगे कि सरोज ने अश्रु के श्वसुर को उसके कमरे की ओर आते देखा। कमरे के दरवाज़े पर खड़े होकर, वृद्ध क्षेत्रनाथ ने कर्कश कण्ठ से कहा, "देखो बहू! मेरे इस घर में तुम्हारे लिये अब रहने को स्थान नहीं है, तुमको सन्ध्या तक का समय दिया जाता है कि तुम आज शाम तक घर छोड़ कर चली जाओ नहीं तो सन्ध्या बाद अपमान सहित घर से निकलना होगा। तुम्हारे चार बदमाश भाई बहनोई आकर रात्रि को मेरे यहां ऊधम मचायेंगे और तुम बैठे २ उसी घर में मेरा अन्न भक्षण करोगी सो तो मैं नहीं होने दूंगा। मैं क्या कुछ समझता नहीं हूं। दाई को मारने जाता था या मुझको मारने जाता, एक ही बात है, पाजी गधा।"

सरोज ने चुपचाप सब सुना। उसको लक्ष्य करके ही क्षेत्रनाथ ने इतनी गालियें दी हैं यह उसको समझने में देर न लगी, परन्तु बहिन को मृत्युशय्या पर देख कर वह उसके हृदयहीन श्वसुर को कुछ न कह शान्त होकर सब सह गया। उस समय अश्रु की यन्त्रणा खूब बढ़ गई थी, उसके ऊपर श्वसुर के घर को छोड़कर चले जाने के हुकुम को सुनकर वह और भी मृत प्राय हो गई। केवल अपने हृदय देवता के अन्तिम आदेश को पालन करने के लिये इतनी भयानक यन्त्रणायें सहन करके चारों बच्चों के साथ आधे पेट खाकर इस देवमन्दिर रूपी 'पतिगृह' में पड़ी हुई थी। हाय! वह तो और किसी भी स्थान में नहीं रहसकेगी, श्वसुर तो उसको खींच कर बाहर नहीं कर सकते। दोनों हाथों से माता का गला पकड़ रोते रोते बोली, 'मां ऐसा क्यों हुआ, मैं तो इस घर को छोड़ कहीं जाकर न रह सकूंगी। तुम लोग मुझे उठाकर मेरे श्वसुर के पास ले चलो मैं उनके पैर पकड़ क्षमा मांगूगी, ऐसा करने से वह मुझे नहीं निकालेंगे"। इसके बाद सरोज की ओर देख कर बोली, "भाई! तुमने ऐसा क्यों किया।"

सरोज अनुतापानल में दग्ध हो रहा था। यदि वह कल सहन कर लेता तो आज उसकी बहिन को इतना अपमान इतनी यन्त्रणा न सहनी पड़ती। प्रकाश में सरोज ने कहा—"उस समय क्रोध के सामने कुछ न समझा मैं अभी जाकर क्षेत्रनाथ से क्षमा मांगता हूं सरोज ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाकर क्षमा मांगो तो वृद्ध ने बिगड़ कर कहा, "पाजी, मतवाले! यहां फिसाद डालने आया है।" यह कह कर नौकर को आवाज़ दी। सरोज ने पैर पकड़ कर कहा "मुझे क्षमा करें फिर कभी ऐसा न कहूंगा।" इतने में नौकर जिसे क्षेत्रनाथ ने बुलाया था-आगया, उसे देखकर वृद्ध को साहस हुआ, उसने पैर खींच लिये और क्रोध कम्पित कण्ठ से कहा, 'निकल सूअर मेरे घर से, यह माफटाफ मैं नहीं करना जानता। मेरी एक बात है,जब मैंने कह दिया कि मेरे घरसे निकलना होगा, तब तो जाना ही पड़ेगा।" सरोज ने तब भी एक वार वृद्ध के पैरों के पास बैठकर माफ़ी चाही परन्तु वृद्ध ने और दो चार खरी खोटी सुना दीं। सरोज और न सह सका उसके आंख नाक से क्रोधाग्नि निकल रही थी।

इसी समय नीचे के घर से अश्रु की जननी ने आर्त्तस्वर से पुकारा "अरे सरोज बेटा कहां गया-अरे मेरी अश्रु न जाने कैसी हो गई।"

सरोज दौड़ कर नीचे आया।

उस समय सूर्य डूब रहा था। डाक्टर आकर देख गये, परन्तु दवा कुछ नहीं दी केवल उस विपत्ति निवारण प्रभुको याद करनेको कह गये।

सन्ध्या समय अश्रु को इस घर को छोड़ जाने की आज्ञा हुई थी; परन्तु स्वामी के अन्तिम आदेश के आगे श्वसुर की आज्ञापालन में वह अक्षम थी। इसीलिये मालूम होता है कि उसके दोनों होठ अब भी कांप कांप कर यही बात कह रहे थे कि "पिता? मुझे पतिगृह से अलग न करो" विदित होता है कि इसी डर से उसकी आंखों की पुतलियां ऐसी स्थिर हो गई हैं॥

ऊषा का स्वप्न

लेखक—श्रीयुत रामपरीक्षण शर्मा "हृदय"

(१)

विमला लौकिक विस्तर राज्यावास में,
कनका भूषित सुन्दर सेज पर।
(निद्रा देवी के विस्मृति कल-कक्ष में,
निर्विघ्ना हो स्वांस ले रही थी उषा)॥
अति मनोहरा निरी उजेली रात थी,
छिटिक रही थी प्रभा चहूं दिशि व्याप्ति हो।
शीतलता, सुखमा, सुषमा का पुञ्ज बन,
शनैः शनैः बहता सुखद समीर था॥
बरस रही थी वसुन्धरा पर मधुरिमा,
सौम्य सरसता, शुचिता प्रियता पगी।
मुदित हो रहे चारू चकोर समूह थे,
विकसित विभु विमलेन्दु विलोक कर॥

(२)

झांक झांक कर वातायन से समय हो,
व्योम प्रकाशित कामुक चन्द्र भी।
प्रति स्पर्धी ऊषा का था पीरहा,
(मनमोहक मुख मण्डल माधुरी)॥
सोयी सोयी ऊषा देखी स्वप्न यह,
मंजु मनोरम धवल वस्त्र धारण किए।
प्राणाधारा निरुद्ध आगए सेज पर,
कुसुमाधिक कोमल कल जिसका ग्रास है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्शनीय है मुख मण्डल कमनीयता,
चूई पड़ती जिसकी चन्दन चारुता।
प्रफुल्लित पीयूष पुञ्ज है कञ्ज-दृग,
श्रवण पर्य्यंत स्पर्शित वर अलकावली॥
हृदय देश पर रख कर अपना कर कमल,
गले गले से मिले बहुत ही प्यार से।
रुचिर रूप लख भावावेशाभिभूत हो,
मोदाप्लुत मुकुलित गुलाब मुख चूम चूम कर॥
अन्तस्तल के भाव पुञ्ज को खींच कर,
चित्ताकर्षक बहु मृदु मन्द ध्वनि।
बोल उठे अनिरुद्ध वीर कलकण्ठ से,
उठ बैठो प्रिय ऊषे! ऊषे जगा रही॥

(३)

उठ बैठी झट आंखें खोल कर,
चौंक कर इधर उधर लखने लगी।
किन्तु कहीं भी मिले नहीं अनिरुद्ध प्रिय,
मिलते क्यों? 'वे मानस कल्पित रूप थे'॥
कम्पित स्वर में ऊषा यह कहती हुई,
देव दरश दो? त्यागो मत, यह जान कर।
मुझ अबला में शक्ति नहीं है लेश भर,
तेरे विषम वियोग दुःख के सहन की॥
नाथ कहां हो? इस संकट के समय में,
जल्दी आकर मुझ दुखिनी के दुःख को।
दूर करो! औ इस दासी को शरण ले,
लो लगाय निज सुख कर कोमल अङ्क में॥
मुर्छित हो मुँह बले अचेता भूमि पर,
आह! आह!! कर प्यारी ऊषा गिर पड़ी।
"ऊषे? सचमुच यदि तेरा "हृदय" पवित्र है,
तो तू निश्चय जान मिलेंगे वे कभी"॥

कुसुमोद्यान

पाश्चात्यदेशोंमें आर्य्यसभ्यताकीविजय

ज्योति के पाठकों को यह अवश्य ज्ञात होगा कि पाश्चात्य देशों में कुछ रीतियां ऐसी प्रचलित हैं जिन्हें हम भारतवासी अभी तक अनुचित समझते रहे हैं किन्तु वहां का जन समाज उन रीतियों को विहित समझता रहा है, परन्तु समय का फेर देखिये कि हमारे देशके अर्ध शिक्षित अथवा विलायती सभ्यता (असभ्यता) मे रंगे हुए काले साहब लोग और काली मेम-लोग--क्योंकि भारतीय लोग चाहे कितने ही गोरे हों और चाहे कितना ही पाउडर, साबुन और गुलाबी रंग वर्तें फिर भी पाश्चात्य गौराङ्गों के आगे काले ही लगते हैं—आज उन्ही कुरीतियों के प्रचार में मस्त हो रहे हैं और कुमार कुमारियों तथा युवक युवतियों का परस्पर मेलजोल, सम्भाषण, पत्र व्यवहार, थियेटरों इत्यादि में साथ २ घूमना तथा अन्य आमोद प्रमोद में निस्संकोच भाव से व्यवहार आदि यहां पर बड़ी तेज़ी से फैल रहे हैं जिनके दुष्परिणाम भी समाज को भोगने पड़ रहे हैं। दूसरी तरफ़ पाश्चात्य देशों के लोग इस प्रकार के व्यवहारों को रोकने के लिये कानून बनवाते और समितियां बनाते हैं। अभी गत दिसम्बर मास के 'नेशन' में निकला है कि कनाड़ा के चेथम ओन्टेरियों नगर के युवकों ने एक "Stop Flirting League" नामक सभा बनाई है जिसके सभासदों को इस बात का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्रत लेना पड़ता है कि जहां तक सम्भव हो सक्ता है वह स्त्री जाति से हर प्रकार से दूर २ रहेंगे। उसके नियमों के अनुसार किसी सभासद् का भी परस्त्री या कुमारी के साथ प्रेमालाप आमोद प्रमोद नाच कूद तथा थियेटर में जाना वर्जित है। केवल इतनी रियायत बेशक कर दी गई है कि यदि रास्ते चलते कोई परिचित स्त्री मिल जावे तो शिर से टोपी उतार दे सक्ते हैं।

इसी प्रकार जनताके सामने चुम्बन की प्रथा को रोकने के लिये भी कानून बने हैं। ईसा की १५ वीं शताब्दि में योरप में जब प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ था और इंगलैण्ड में भी प्लेग फैल गई थी तब वहां की पार्लियामेण्ट ने जल्दी में यह कानून पास कर लिया था कि अंग्रेज सर्कार की प्रजा में कोई भी परस्पर चुम्बन न करे। देश मे तो यह एक ही कानून पास किया गया था परन्तु अन्य कई देशों में बहुत कड़े नियम इस सम्बन्ध में बनाये गये हैं। बवैरिया स्टेट रेलवे का कानून है कि उन की रेलवे सिस्टम में कोई भी परस्पर चुम्बन न करे। न्यूयार्क सेन्ट्रल रेलवे का कानून है कि यदि कोई प्लैटफार्म पर चुम्बन करे तो दण्डका भागी होगा। उन्होंने एक अलग प्लैटफार्म बना दिया जहां जाकर मित्र और सम्बन्धी गण अपने यात्री सम्बन्धियों से अलग होते समय चुम्बन कर सक्ते हैं।

क्या इस प्रकार की बातें इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि पाश्चात्य देशों में आर्य्य सभ्यता फैल रही है और समय दूर नहीं है जब वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार शिक्षित वर्गों में बड़े बल पूर्वक होगा। केवल वैदिक धर्मके सच्चे प्रचारकों को उन देशों में जाकर इन सिद्धान्तों को खोल कर बतलाने की ज़रूरत है।

बाज़ारमें खाना

हिन्दुस्थानके प्रायः सभी बड़े शहरोंमें बाज़ारमें खड़े होकर (विशेषतः खोमचे आदि वालोंकी दुकानोंके सामने) खानेकी रीति है, परन्तु सभ्य-समाजमें उसे अच्छा नहीं समझा जाता। जिन हिन्दुस्थानियोंने रहन-सहनका यूरोपियन तरीका अख़तियार कर लिया है वे तो बाज़ारमें खाने वालोंको और भी नफ़रतकी निगाहसे देखते हैं। परन्तु यूरोपके सबसे शौकीन देश फ्रान्समें बाज़ारोंमें खड़े होकर खानेकी रीति बहुत प्रचलित है। दक्षिणी फ्रान्सके लोग तो बाज़ारमें चाटें आदि खानेके ऐसे शौकीन होते हैं कि यदि गरमीके मौसममें शामके समय दक्षिणी फ्रान्सके किसी शहरमें घूमनेको निकलें तो बाज़ारोंमें सब जगह गरम तेलकी ही बदबू आवेगी और जगह जगह खोमचेवाले अपनी छोटी कड़ाहियोंमें आलू, मछली और मेवे तलते हुए तथा चूल्हों या अंगीठियोंपर भूनते हुए पाए जावेंगे। इटली स्पेन और अमरीकामेंभी बाज़ारमें खानेकी रिवाज है। स्पेनके खोमचे तो बहुत कुछ हिन्दुस्थानी खोमचों से मिलते जुलते होते हैं। (प्रणवीर)

ईसाइयोंके बड़े दिनके त्यौहारके गपोड़े

ज्योतिके पाठकोंको क्रिस्मस या बड़े दिनके त्यौहारका अवश्य ही पता होगा क्योंकि प्रत्येक सरकारी कर्मचारीको कमसे कम २५ दिसम्बर के दिन अवश्य ही छुट्टी रहती है, अतः हम भारतीयोंको भी यह त्यौहार छुट्टीके रूपमें मनाना मिलता हीहै और बहुतसे चापलूस नौकरशाहीके भक्त लोग इन दिनों अफसरोंको डालियां इत्यादि भी भेजा करते हैं। यह त्यौहार क्या है और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किस प्रकार मनाया जाता है इसका कुछ थोड़ा सा वर्णन करके हम फिर इस त्यौहारके साथ जो गपोड़े बने हुए हैं उन्हें बताना चाहते हैं।

जैसा कि इसका नाम ही बताता है क्रिस्मस्का त्यौहार महात्मा ईसा जो ईसाइयोंका धर्म-प्रवर्तक था—के जन्मदिवसका उत्सव है। इस दिन ईसाइयोंके गिरजे घरोंमें विशेष प्रकारकी प्रार्थनायें होती हैं, उपहार भेजे जाते हैं, दान दिये जाते हैं और अभ्यागतोंका खूब स्वागत होता है। २४ दिसम्बरकी शामको भी त्यौहार मनाते हैं और प्रत्येक घरमें एक नकली वृक्ष बनाते हैं उस पर खिलौने फल मिठाइयां लटकाते हैं और दीपक जलाते हैं। सरांश यह कि जिस प्रकार हमारे भारतमें दिवाली में हटरीको सजाकर सजाकर पूजा करते और इष्ट मित्रों को खिलाते पिलाते भेंट देते हैं इसी प्रकार का यह ईसाइयोंका एक त्यौहार है और वह लोग अपने तरीकेसे उसे मनाते हैं।

कई धर्मध्वजी लोगोंने इसे धर्मका मुख्य अंग मानकर इसकी एक २ विधिमें पाखण्डीपनका जाल फैलाया हुआ है और इसके साथ गपोड़े भी मिलाये हैं, जैसे—

वह कहते हैं कि, अगर तुम बड़े दिनोंमें और आगामी वर्षमें भी भाग्यवान बनना चाहते हो तो क्रिस्मसके हफ्तेभर जहां कहीं ज़मीन पर आलपीन पड़ी देखो उठा लिया करो।

२. जब क्रिस्मस केक (बड़े दिनके त्यौहारके लिये खूब बढ़िया और बड़ी भारी डबल रोटी भी खास ढंगसे बनाई जाती है) का पहिला टुकड़ा ही मुंहमें धरो तो उसमेंसे कुछ हिस्सा बचालो और उसे अपनी जेबमें दूसरे क्रिस्मस तक रख छोड़ो तो तुम्हारा सारा वर्ष भाग्यशाली रहेगा और यदि दैववश वह टुकड़ा खो जाय तो तुम्हे जरूर किसी न किसी विपत्तिका सामना करना पड़ेगा।

३. क्रिस्मसकी प्रातःको जब कपड़े पहिनने लगो तो यदि तुम दाहने आस्तीनमें पहिले हाथ डालना भूल जाओ तो तुम भाग्यशाली नहीं होगे। और इसी प्रकार तुम्हें जूता पहिनते समय भी उस दिन पहिले दाहिने पैरमें जूता डालना चाहिये।

४. अपने कपड़ोंको पहिलेसे ही देखभाल लो कि उनमें कोई छेद तो नहीं है। चाहे कुछ भी होजावे कोई ऐसी चीज़ न पहिनो जिसमें छेद हों, क्योंकि ऐसा करनेसे सारे वर्ष भर तुम्हारी थैलीमें छेद ही रहेगा अर्थात् तुम्हारे हाथमें धन नहीं ठहरेगा। अतः अपने भाग्यको सुरक्षित बना रखनेके हेतु कोई नया कपड़ा ज़रूर धारण करो चाहे वह एक छोटी सी टाई हो या फीता या लेस ही क्यों न हो।

५. अगर कपड़े पहिनते समय इत्तिफाकसे तुम्हारा कपड़ा फट जावे तो क्रिस्मसके दिन तक उसे वैसा ही रहने दो दूसरे दिन सिओ क्योंकि क्रिस्मसके दिन सिलाई करना दुर्भाग्य का सूचक है।

हमारे भारतमें भी इस प्रकारके गपोड़े असंख्य हैं और प्रत्येक त्यौहार और प्रत्येक तिथि और माससे यह जुड़े हुये हैं।

आयर्लैण्डमें होली (एक प्रकारका पौदा होता है) पौदेको फिरिश्तोंका पौदा मानते हैं और कई स्थानोंमें क्रिस्मससे पहिले होली वृक्ष को घरमें रखना अभाग्यका लक्षण मानते हैं।

इटलीके लोग अपने बच्चोंके पालनोंमें होली की शाखायें लटकाते थे जिससे भूत, प्रेत न सतावें। भारतवर्ष और फारसमें जिस जलमें होलीकी छाल पड़ी हो उससे बच्चोंका मुख धोते हैं ताकि भूत प्रेत हटे रहें। कभी किसी ज़मानेमें इस होलीके वृक्षको विषके रोकनेकी औषधि समझते थे और बिजुली रोकनेकी शक्ति वाला भी समझते थे।

इसप्रकारके गपोड़े प्रत्येक धर्ममें पाये जाते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैज्ञानिक संसार

कांच का फुटबाल

किंचित् हमारे पाठक और पाठिकायें ऊपर का शीर्षक पढ़कर अविश्वास से हंस पड़ें, परन्तु डाक्टर होरक का कथन है कि उन्होंने एक प्रकार का नया कांच बनाया हैं जो कि यद्यपि अटूट तो नहीं परन्तु फुटबाल की भान्ति उसका एक खोखला बनाया गया है जो कि पैरों से जोर से ठुकराने पर भी नहीं टूटा। उसके ग्लास बनाकर उनको इतना गरम किया गया कि उनके भीतर रक्खे हुए कागज़ के टुकड़े जलकर काले पड़गये और इन गरम २ ग्लासों पर ठंडे पानी के छींटे दिये गये। तिस पर भी यह ग्लास नांही टूटे और न चिटके। डाक्टर होरक यह तो नहीं कहते कि उन्होंने कभी न टूटने वाले कांच की रचना की है परन्तु उनका यह दावा अवश्य है कि उनको एक ऐसा तरीका अवश्य पता लग गया है कि जिस से कि उनका बनाया कांच अब तक के बने हुए सब प्रकार के कांचों से अधिक मज़बूत और सख्त हो। यह भी विचार है कि इस कांच से मुंह को ढ़ांपने वाले चेहरे बनाये जावें जिस के भीतर से आंखें बाहर की वस्तु और दृश्य को भली प्रकार देखसकें परन्तु लड़ाई के समय इन पर गोली की मार न हो सके। परन्तु इसका सबसे अधिक प्रयोग साधारण प्रति दिन के काम की चीज़ों-जैसा कि बोतलें, पिर्च प्याले, ग्लास इत्यादि के बनाने में हो होगा।

केले का काग़ज़

केले का फल उतारने के पीछे उसका पेड़ और पत्ते या तो यूंही खड़े २ सूख जाते हैं या कहीं २ उन्हें गला कर खाद बना ली जाती है। परन्तु अब उसका एक और प्रयोग होने लगा है जो कि काग़ज़ बनाना है। पत्तों और तनों को पीसने वाले रोलरों में से निकाल कर दरदरा सा कर लिया जाता है। यहां पर पानी जो कि पहिले ९० प्रति शतक होता था सूखकर ५५-७५ प्रतिशतक रह जाताहै। इस पानी को निचार कर निकाल दिया जाता है और दरदरे मसाले की एक और मशीन द्वारा बारीक लोई सी बना ली जाती है। यह लोई और रस अब एक उबलने वाले बर्तन में रख दिये जाते हैं और पानी डालकर बर्तन का मुंह बन्द कर दिया जाता है। अब इन्हें पांच छः घण्टे तक वायु मण्डल के दबाव से कोई चार से पांच गुना अधिक दबाव में उबाला जाता है। अब इसको एक कूटने वाली मशीन में डाल दिया जाता है जिसपर कि पानी की धारा बहती रहती है। इससे चिपचिपा और लेसदार भाग सब धुल कर बह जाता है और पीछे शुद्ध काग़ज़ बनाने योग्य द्रव्य रह जाता है जिसके तय्यार करने में किसी भी रासायनिक पदार्थ का प्रयोग नहीं किया गया।

मक्खियां और पतंगे प्रतिदिन कितना उड़ते हैं।

एक प्रकार की मक्खी होती जिसका कि पेट नीले रंगका होता है। यदि इन मक्खियों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को पकड़ लिया जाय और इनको लालरंग कर छोड़ दिया जाय तो यह पता लगता है कि यह एक दिन में ६ मील, चलती हैं। शहद की खोज में अपने छत्ते से ८ मील तक दूर उड़ जाती है परन्तु बर्र एक या दो मील से अधिक दूर नहीं जाती। तितलियां बहुत दूर तक जाती हैं। कभी २ यह समुद्र पर स्थल भूमि से बहुत दूर तक देखी जाती हैं। यह हलकी २ पवन के साथ उड़ती हैं और कभी कभी बड़ी तेज हवा में फंसकर सैंकड़ों मील दूर तक चली जाती हैं।

टिड्डी बहुत ऊंचे पर उड़ती हैं और प्रति दिन चालीस पचास मील लम्बा मार्ग चल लेती हैं परन्तु एक वार भूमि पर बैठकर जब तक कि सब हरी बनस्पति को चर न जायें उड़ने का नाम नहीं लेतीं।

पतंगे भी बहुत दूर तक उड़ते हैं। यह परीक्षण करके देखा गया है कि यदि एक नारी पतंग को पिंजड़े में बन्द कर दिया जाय तो नर पतंग दो दो मील से उड़कर उसके पास पहुंच जाते हैं। चीटियां अपने बिल से २०० फुट से अधिक दूर नहीं जातीं परन्तु अफ्रीका में एक प्रकार की चींटियां होती हैं जो कि बड़े २ जथ्थे बनाकर घोर जंगल में से मीलों तक चली जाती हैं और मार्ग में जो कुछ भी आजाय सब खाजाती हैं यदि वह किसी मकान में से निकलें तो उस में कुछ भी नहीं छोड़तीं। टिड्डे, कीड़े, चुहियां, चूहे और सांप तक सभी भक्षण कर जाती हैं।

बिना परों वाले जीवों में जाला बुनने वाली मकड़ी सब से अधिक दूर तक जासक्ती है। यह अपने मुंह से एक बड़ी पतली और लम्बी तार सी निकाल कर छोड़ देती है जो कि हवा से ऊपर को उड़जाती है और इसके सहारे यह कई मील तक उड़ जाती है।

कारखानोंमें स्वस्थ और शान्त मज़दूरोंसे लाभ

आज कल बड़े २ कारखानोंका युग है। मनु भगवान ने बड़े कारखाने बनानेका निषेध किया है। आज कल महात्मा गान्धी भी इसी आदेशका प्रचार कर रहे हैं। इन महानुभावोंके मतमें कारखानोंमें अशिक्षित शूद्र वर्ण मज़दूरों (स्त्री, पुरुष, बालक) के एक स्थानमें एकत्र होने अधिक समय तक कार्य करने, स्त्रियोंको उनकी अवस्था दशा और आवश्यक्ताके अनुसार आराम न मिलने, धनपति कारखानोंके मालिकोंद्वारा धनकी शारीरिक और मानसिक अवस्थाओंपर कोई ध्यान न दिये जानेसे इन बिचारे मज़दूरोंको बहुत हानि सहनी पड़ती है। यह धन और धन कमाने के मदमें अपने मज़दूरोंके स्वास्थ्यकी ओर किंचित भी ध्यान नहीं देते। उनका एक मात्र उद्देश्य यही रहता है कि यह मज़दूर लोग थोड़ेसे थोड़ा वेतन लेकर अधिकसे अधिक समय तक उत्तमसे उत्तम कार्य करें। इस प्रकार हज़ारोंका बलिदान होता है और तब कहीं एक या दो वैद्योंकी अर्थपिपासा शान्त होती है। शान्त होती भी है या नहीं यह अनिश्चित ही है। यदि यह धनपति कुछ थोड़ा सा ध्यान अपने इन मज़दूरोंके स्वास्थकी ओर भी दें तो इससे न केवल इन ग़रीबोंको ही कुछ आराम मिले वरन् इन मालिकोंको भी अधिक लाभ हो। इसीके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

एक कारखानेके मालिकने अधिक काम करवानेके अभिप्रायसे एक डाक्टरकी सम्मति ली। डाक्टरने मज़दूरोंको काम करते समय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखकर यह निदान किया कि उस कारखानेके बने बनाये माल को भेजनेके लिये डिब्बोंमें बन्द करने और गट्ठोंमें बांधने वाले विभागमें जो लड़कियां काम करती थीं वह मशीनोंको घुमाते समय अपनी भुजासे एकसार चक्कर पूरा नहीं करतीं परन्तु एक घुमावको चार बार हिचकोले लगाकर पूरा करती हैं और इसीसे काम थोड़ा होता है। उसने यह सम्मति दी कि इनके लिये बांहका एक बार पूरा चक्कर घुमाना सिखानेके लिये एक क्लास खोली जाय। कारखानेके मालिकने डाक्टरकी इस सम्मतिको एक ढकोसला समझा परन्तु इसपर चलनेसे ८८ प्रति शतक अधिक कार्य हुआ।

एक डाक्टरकी सलाहसे एक चीनीके बर्तन बनानेके कारखानेमें टूटनेवाले बर्तनोंका हिसाब लगाया। इनमें एक तिहाईके टूटनेका कारण बिल्कुल स्पष्ट और सीधा था—बर्तन उठाते समय किसी स्त्रीका पांव फिसल गया या ऐसी ही कोई अन्य घटना होगयी। दो तिहाईके टूटनेके कारण अस्पष्ट थे। डाक्टरकी सम्मतिमें मज़दूरोंकी स्मरणशक्तिका क्षणिक अभाव ही इसका कारण था। कार्यकी ओरसे ध्यान हटा दिया गया और देखा गया कि इस क्षणमें दो तिहाई बर्तन टूटे। जब कि मनके अस्पष्ट खिज जानेके कारणोंको—चिड़चिड़ा स्वभाव या प्रकाशकी कमी—दूर कर दिया गया तो हज़ारोंका लाभ प्रतिवर्ष होने लगा।

एक और कारखानेमें एक डाक्टरने मशीनके साथ अपने एक औज़ार को लगाकर देखा कि मज़दूर जितना बल खर्चते हैं—मशीनपर दबाव डालते हैं—उतना फल नहीं मिलता। उसने ताड़ लिया कि मनकी थकावटके कारण शरीरका पूरा २ बल भी लाभदायक नहीं होता। उसने कार्यका समय बदलनेकी सलाह दी, (जब कि मन थका हुआ न हो) और इसका परिणाम शीघ्र ही अधिक कार्यके रूपमें देख पड़ा।

एक बड़े नगरमें ट्राम गाड़ी—जैसा कि देहली, कलकत्ता इत्यादि नगरोंमें है—चलती थी, परन्तु ट्राम कम्पनीको बड़ा घाटा था। ट्राम चलानेवाले वाहकोंको चलानेके एक नवीन तरीके पर शिक्षा दी जाने लगी जिसमें कि कार्यके साथ २ उनका मनोरञ्जन भी होसके। इसका परिणाम यह हुआ कि वाहक लोग पहलेकी अपेक्षा बहुत थोड़े समयमें अपने काम को सीखने लगे और इसी कारण प्रति वर्ष हज़ारों टन (टन २८ मनका होता है) कोयलेकी बचत होने लगी।

ऊपरके उदाहरणोंसे यह स्पष्ट है कि जब तक वैश्य धनपति अपने स्वार्थवश मज़दूरोंकी शारीरिक और मानसिक उन्नतिसे विमुख थे उन्हें घाटा रहा, ज्यूंही उन्होंने इस ओर ध्यान दिया तो तुरन्त लाभ होने लगा। यही अवस्था आज कल हिन्दू समाजकी है। बड़ी जातियां जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय इत्यादि कहते हैं, छोटी जातियों, शूद्रोंकी मानसिक और शारीरिक अवस्थासे नितान्त विमुख हैं, उन्हें पतित कह कर ठुकराती हैं। परिणाम यह कि समाज रूपी मशीन अपना कार्य ठीक नहीं कर रही और दोनों ही रसातलको जारहे हैं। जब हम इन शूद्रोंकी ओर सहृदयताका न्यायपूर्ण व्यवहार करने लगेंगे, तब हमारी उन्नति अधिक सहजमें ही होने लगेगी।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी मञ्जूषा

कवि-कीर्तन—लेखक श्री "वियोगी हरि" प्रकाशक साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग मूल्य ॥≈)

इसमें श्री वियोगी हरिजी ने हिन्दी भाषा के आदि कवियों से लेकर आजतक के प्रसिद्ध २ कवियों की विशेषता तथा लेखन शैली इत्यादिक गुणों की पद्यों में प्रशंसा की है। जहां इन पद्यों से हिन्दी के कवियों का परिचय मिलता है वहां लेखक की भावुकता तथा पद्य रचना शक्ति का भी ज्ञान प्राप्त होता है। कई कई पद्य बड़े मार्मिक तथा उच्च कोटि के हैं।

गङ्गा पुस्तक माला कार्य्यालय अमीनाबाद लखनऊ, द्वारा प्रकाशित हमें निम्न लिखित पांच पुस्तकें प्राप्त हुई हैं:—

बहता हुआ फूल—लेखक श्री चारुचन्द्र बैनरजी, अनुवादक पण्डित रुपनारायण पांडेय पृष्ट ४५० मूल्य २)।

उद्यान—लेखक श्री शंकरराव जोशी, पृष्ट संख्या २०४ मूल्य ॥≈)।

भारत गीत—लेखक श्री श्रीधर पाठक, पृष्ट संख्या १२० मूल्य ॥≈)।

भारत की विदुषी नारियां—लेखिका श्रीमती कृष्ण कुमारी देवी, पृष्ट ९६ मूल्य ॥)

सम्राट चन्द्रगुप्त—लेखक श्री बालमुकन्द वाजपेयी। पृष्ट ४२ मूल्य ।)

बहता हुआ फूल—यह पुस्तक श्री चारुचन्द्र जी कृत "स्रातेर फूल" नामक बंगला पुस्तक का अनुवाद है। मूल पुस्तक में लेखक ने बंगाल के जिमीदारी जीवन की एक झलक दिखलाई है और साथ ही सामाजिक समस्याओं की गुत्थियों को भी सुलझाने का यत्न किया है। आजकल के बंगाली गृहस्थ में स्त्री पुरुष का जीवन किस प्रकार बीतता है, उस में क्या त्रुटियां हैं और किस प्रकार इनको दूर किया जा सक्ता है इत्यादि पुस्तक के मूल लेखक ने बड़ी उत्तमता से कहानी के रुप में वर्णन किया है। कहानी की बड़ी खूबी यह है कि किसी भी स्थल पर लेखक ने कल्पना का आधार लेकर अनहोनी घटनाओं का उल्लेख नहीं किया वरन् स्वाभाविकता और वास्तविकता का पूरा २ अवलम्बन किया है। अनुवादक ने इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर हिन्दी साहित्य की सेवा ही की है। पुस्तक का अनुवाद अच्छा हुआ है यद्यपि इसमें बंगलापन की झलक आती है। यदि योग्य अनुवादक बंगला के मुहावरों का अंग्रेज़ी शैली से ज्यूं का त्यूं अनुवाद न करके उनके मुकाबले के हिन्दी में प्रचलित वाक्यों और शब्दों का प्रयोग करते तो भाषा की दृष्टि से पुस्तक और भी अच्छी होती।

उद्यान—में लेखक ने बाग और बागीचों संबंधी जानने योग्य प्रायः सभी बातों का उल्लेख किया है। बाग़ीचा कैसे लगाना चाहिये, उस में पानी देने का क्या ढंग हो, खाद कब और कैसे दी जाय, कलम लगाने की क्या विधि है इत्यादि अनेक बातों पर प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न प्रकार के फलों के वृक्ष और पुष्पों के पौदे लगाने की भी अलग अलग विधि दी गयी है। हिन्दी भाषा में अपने विषय की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह एक ही पुस्तक है। उद्यानों के मालिकों तथा उद्यान प्रिय सज्जनों के यह बड़े काम की चीज़ है। इसके संकलन में उद्यान-विद्या की शिक्षा प्राप्त लेखक ने बड़ा श्रम किया है।

भारत गीत–पूज्यवर श्रीधर पाठक जी के शुभ नाम तथा उनके भारत गीतों से कौन सा ऐसा हिन्दी प्रेमी है जो परिचित नहीं। उनकी सुन्दर, मधुर और रसमयी कविता हिन्दी साहित्य का शृंगार है, गङ्गा पुस्तक माला के संञ्चालकों ने इन कविताओं का संग्रह कर बड़ा उत्तम काम किया है। अब हिन्दी पाठकों को एक स्थान में श्री पाठकजी की रचनाओं का स्वाद लेने का अवसर सहज में ही प्राप्त हो सकेगा। इन गीतों के विषय में कुछ अधिक न कह कर यही कहना पर्य्याप्त है कि प्रत्येक हिन्दी भाषा को इनके पाठ से आनन्द उठाना चाहिये। स्कूलों तथा पाठशालाओं में बालक बालिकाओं को इन्हें अवश्य कण्ठस्थ करवाना चाहिए।

भारत की विदुषी नारियां–इस पुस्तिका में प्राचीन भारत की नारियों के जीवन चरित्र देने का यत्न किया गया है। परन्तु कितनी अर्वाचीन समय की देवियों–जैसा कि जेबुन्निसा, गुलबदन बेगम माधबी प्रभृति–के चरित्र भी हैं। इस पुस्तिका के पाठ से यह पता चलता है कि हमारे देश की देवियों में कितना विद्या प्रेम और प्रचार था और वह अपनी योग्यता में पुरुषों से किसी प्रकार भी कम न थीं। हम संकलनकर्त्री विदुषी से यह आग्रह करते हैं कि इस प्रकार की पुस्तकों में जो कि साधाराण जनता के ही लिये लिखी जाती हैं विवादास्पद विषयों और भावों को स्थान देना यथोचित नहीं। आपने विदेशी लेखकों और उनके भारतीय शिष्यों का अनुकरण करते हुए वेदों को इतिहास मात्र माना है और इसी कारण उनकी कितनी ही ऋचाओं की रचियता उन देवियों को माना है जिनके चरित्र इस पुस्तक में दिये हैं। विद्वद् मण्डली में यह बड़ा विवादास्पद विषय है। विदेशी विद्वानों और उनके इने गिने भारतीय अनुयायिओं को छोड़कर भारत का समस्त विद्वद् समाज वेदों को ईश्वरकृत ही मानता है और उनमें दिये मन्त्रों के ऋषियों और ऋषिकाओं को मन्त्र कर्ता न मानकर मन्त्र द्रष्टा–अर्थात् इन मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वाले–ही मानता है। ऐसी अवस्था में लेखिका का इस विचार का जन साधारण में–जिनमें कि अपने लिये स्वयं विचार और मनन करने की शक्ति नहीं–प्रचार करना कि वेद मनुष्य कृत हैं कदापि उचित नहीं समझा जा सकता।

सम्राट चन्द्रगुप्त–यह गंगा पुस्तकमाला कार्यालय द्वारा प्रकाशित चवन्नी पुस्तकमाला का दूसरा अंक है। इस ४० पृष्ठ की पुस्तक में बाईस सौ वर्ष पहिले के भारत इतिहास के एक उज्वल पृष्ठ का चरित्र दिखलाया गया है जिसमें चन्द्रगुप्त के यशस्वी काल में भारत की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति का संक्षिप्त वर्णन है। भारत के पूर्वकाल में प्रेम और श्रद्धा तथा भविष्य में विश्वास रखने वालों को इस पुस्तिका के पाठ से लाभ उठाना चाहिये।

डायरशाही और जलियां वालाबाग

लेखक "दो न्याय प्रेमी," प्रकाशक ला० मदनमोहन वैश्य प्रबन्धक-तिलक ग्रन्थमाला मथुरा पृष्ठ ९०, मूल्य ॥)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जलियांवाला बागकी दुर्घटनाका भारतके राजनैतिक क्षेत्रसे कितना गहरा सम्बन्ध है यह सब जानते हैं। इस पुस्तकमें उसी कहानीका सिलसिलेवार संक्षिप्त वर्णन है। उस क्रूर समयमें पंजाबपर किये गये अत्याचारोंका दिग्दर्शन है। पुस्तक राजनैतिक-इतिहास-प्रेमियोंके कामकी चीज़ है।

श्रीबुद्ध-गीता—अनुवादक स्वामी सत्यदेव प्रकाशक दी लवानियां पब्लिशिंग हौस आगरा, पृष्ठसंख्या १०० मूल्य ॥।)

धम्मपद बुद्धोंका परम पवित्र ग्रन्थ है। इसमें भगवान बुद्धके अनेक विषयोंपर दिये हुए उपदेशोंका संग्रह है। यह सब उपदेश बड़े सरल, मनोहर और चित्तपर प्रभाव डालने वाले हैं। इनके मननसे हृदयमें शान्ति और पवित्रताका संचार हुये बिना नहीं रहता। धम्मपद पाली भाषामें है। स्वामी सत्यदेवने अब इसे हिन्दीभाषा भाषियोंके लिये भी सुलभ कर दिया है। इसमें बुद्धके २६ विषयों पर उपदेश हैं। प्रत्येक उपदेशके आरम्भमें अनुवादकने अपनी ओरसे पांच सात लाईनकी भूमिका देकर उस दृश्य या कारणकी कल्पना करनेका प्रयत्न किया है जिससे प्रेरित होकर भगवान्‌ने वह उपदेश दिया था। हम नहीं कह सकते कि बुद्ध धर्मानुयायी इस प्रयत्नको कैसा समझते हैं। हमारी तुच्छ बुद्धिमें तो यह अनधिकार चेष्टा ही प्रतीत होती है।

आदर्श-बलिदान—संकलनकर्ता श्रीअतरसैन जैन, प्रकाशक नैशनल बुक डिपो, मेरठ। पृष्ठसंख्या ४० मूल्य ।=)

इसमें स्त्री उपयोगी तीन कहानियोंका संग्रह है। पहली कहानी 'सच्ची माला' में स्त्रियोंकी भूषणोंसे अत्यधिक प्रीतिका कुपरिणाम दिखलाया गया है। दूसरी 'सुहागकी साड़ी'के लेखक श्रीप्रेमचन्दजी हैं, इसमें आधुनिक खद्दर आन्दोलनकी एक झलक दिखलाई गयी है, तीसरीमें गान्धी आन्दोलनसे पहिलेकी हुई एक सच्ची घटनाके आधारपर पतिव्रत धर्मका एक सच्चा जीता जागता चित्र खेंचा गया है। प्रत्येक पंजाबी, भाई बालमुकन्द—जिन्हें देहली अभियोगमें फांसी मिली थी—की सती साध्वी धर्मपत्नीके शरीर त्यागकी कथासे परिचित होगा। कहानियां सब ही मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हैं।

'खद्दर-प्रतिमा' और 'अनोखी-लीली'। इन दोनों पुस्तकोंके लेखक हैं श्रीविश्वम्भर सहाय 'प्रेमी' और प्रकाशक प्रेम साहित्य भण्डार मेरठ शहर, पहली का मूल्य ॥।) और पृष्ठसंख्या १४८, दूसरी का मूल्य ॥) और पृष्ठसंख्या ८५।

खद्दर-प्रतिमा—एक उपन्यास है। इसमें लेखकने जहां मुख्यतया खद्दरकी महिमा दर्शाई है वहां अन्य घटनाओंको भी जो आज कल हिन्दू जातिके भीतर घट रही हैं कहानीके रूपमें उपस्थित किया है। कहानी रोचक और शिक्षा प्रद है। कहानीके विचारसे पुस्तक निर्दोष नहीं कही जा सकती। एक घटनाके आधारपर दुसरीके घटित होनेमें लेखकने कहीं २ उतावली की है और इसीसे कहानीमें अकृत्रिमता सी आगई है। 'प्रेमी' की यह तीसरी रचना है और तीनोंमें ही उन्होंने वेश्याओंके जीवनका दृश्य खींचा है। क्या हम आशा रक्खें कि लेखक इस वेश्या विषयको छोड़ और ओर ध्यान देंगे। महिलाओंके हाथमें जाने वाली पुस्तकों में जहां तक यह गन्द कम जाय, उतना ही अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनोखी-लीला—इस पुस्तकमें छोटी २ तेरह कहानियां हैं जिनमें कि मनुष्य स्वभाव और मनुष्य जीवनसे सम्बन्ध रखने वाले भिन्न भिन्न विषयोंका आधार लेकर चित्र खींचे गये हैं। कहानियां मार्मिक तथा हृदयग्राही हैं, यद्यपि उपरोक्त दोष इनमें भी कहीं २ पाया जाता है।

स्त्री-दर्पण—कानपुर मासिक पत्रिका, सम्पादिका श्रीमती सुमती देवी बी. ए. तथा श्रीमती फूलकुमारी मेहरोत्रा।

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह सब से पुरानी स्त्री उपयोगी पत्रिका जबसे नये संचालनमें कानपुर आई है दिनों दिन उन्नति कर रही है। चित्र अब इसके स्थायी अङ्ग बन गये है। इसके लेख प्रायः सब ही सरल भाषा में लिखे रहते हैं और स्त्री सम्बन्धी अनेक विषयों पर प्रकाश डालने वाले होते हैं। कविताओंका भी बड़ा सुन्दर समावेश रहता है। बालिकाओंके मनोरञ्जनकी भी प्रत्येक अङ्कमें काफ़ी सामग्री होती है। हमें आशा है कि यह पत्रिका स्त्रीजातिकेलिये उपयोगी सिद्ध होगी।

श्रीसत्यनारायण माधवमिश्र विद्यालयका प्रथम तथा द्वितीय वार्षिक विवरण, श्रीहनुमान बालिका विद्यालयकी प्रथम व द्वितीय वार्षिक रिपोर्ट, तथा श्रीहनुमान पुस्तकालयकी प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट।

यह तीनों संस्थायें सलकिया (हवड़ा) कलकत्तामें स्थित है और हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि यह दिनों दिन उन्नति कर रही हैं।

———

आर्ष पाठावली: (प्रथम भाग)

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित

यह लड़कियों और स्त्रियों के लिये एक सचित्र पुस्तक है। चित्र भी बड़े खूबसूरत और मनोरंजक हैं। प्रथम चित्र रंगीन है, अध्यापिका बच्चों को "ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्या प्रेमी शूद्र और पोप की बहस का चित्र भी बड़ा रोचक है। प्रत्येक पाठ में चित्र हैं और पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं, कागज़ भी बढ़िया है, इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। सजिल्द का मूल्य ॥)

पं० वज़ीर चन्द शर्म्मा अध्यक्ष, वैदिक पुस्तकालय, लाहौर रोड, लाहौर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* वनिता विनोद *

स्त्री जगत्

एक १५ वर्ष की कन्या का ६० वर्ष के बुड्ढे से विवाह

मध्य प्रान्त में होशंगाबाद नगर में एक धनवान सेठ नन्नेलाल नाम के पालीवाल ब्राह्मण जिन की आयु इस समय ६० वर्ष की है, तथा जो इससे पहिले चार विवाह कर चुके हैं और रोगी भी रहते हैं—एक १५ वर्ष की युवा कन्या से विवाह करने लगे हैं। लड़की का सम्बन्ध १० वर्ष पहिले से ही एक कुलीन ब्राह्मण युवा के साथ हो चुका था तथापि लड़की के पिता को धन का लोभ दे कर यह नर-पिशाच ऐसा राक्षसी व्यवहार करने लगे हैं।

हमारे देश में प्रान्त २ में इस तरह की रीतियां हैं जिनसे भारत रमणियों का जीवन सङ्कटमय बन रहा है। यह विवाह प्रथा भी इन्ही कुरीतियों और पैशाचिक प्रवृत्तियों का एक उदाहरण है।

मिश्र देश में स्त्रियों का साहस।

भारत की स्त्रियों को यह सुन कर हर्ष होगा कि छोटी उम्र की शादी तथा अनमेल विवाह के तरीके जो भारत में अब भी बहुतायत से पाये जाते हैं मिश्र देश में भी प्रचलित थे परन्तु आज दिन वहां की देवियों ने इस रिवाज़ को उठाने के लिये बड़ा आन्दोलन किया है। इस आन्दोलन की नेत्री हैं श्रीमती हुदा शराबी पाशा। यह देवी एक धनी विधवा हैं और जब से पति की मृत्यु हुई है तभी से समाज सुधार के काम में लगी हुई हैं। इन के आन्दोलन का नतीजा यह हुआ है कि मिश्र देश में यह कानून बन गया है कि १८ वर्ष से कम आयु के लड़के और १६ वर्ष से कम आयु की लड़कियों का विवाह न हो सकेगा और बहुत छोटी उम्र की लड़कियों का विवाह भी बुड्ढों के साथ न हो सकेगा।

भारत की देवियो! क्या आप में भी इतना साहस है कि अपने देश से इन कुरीतियों को निकालने के लिये यत्न करो?

स्वीज़र्लैण्ड में स्त्रियों के अधिकार

धन सम्पत्ति के भोग, दान, बंटवारा आदि तथा रोज़ के कामों में स्वीज़र्लैण्ड में स्त्री पुरुष का समान अधिकार है। स्त्री-त्याग के विषय में पुरुष के लिये जो नियम हैं पति त्याग के विषय में स्त्री के लिये भी वही नियम चलता है। सन्तान के ऊपर पिता का जितना अधिकार है कानून द्वारा माता का भी अधिकार उतना ही है। इस के अतिरिक्त स्विस स्त्रियां ग्राम पंचायत, शहर सभा, इत्यादि में भाग लेने के हक़ के लिये भी अग्रसर हो रही हैं। तथापि प्रायः स्त्रियां राष्ट्रीय आन्दोलन के धूम धाम में बहुत नहीं पड़ती हैं। उन का कहना है कि स्विस परिवार के पुरुष बाहर का काम करते हैं और स्त्रियां घर का काम करती हैं यही हमारी सनातन रीति है। इसका तोड़ना हमें पसन्द नहीं।

---

२८ दिसम्बर को पूना में जो लिबरल सम्मेलन की बैठक हुई थी उस के अन्तिम दिन में श्रीमती रामाबाई रानाड़े ने यह प्रस्ताव पेश किया कि बड़ी तथा प्रान्तीय कौंसिलों के मेम्बर बनने और चुनने में स्त्रियों के लिये जो रुकावट है वह दूर हो जानी चाहिये। यह प्रस्ताव भी पास हो गया।

बिसवां आर्य्य कन्या पाठशाला

लगभग एक मास से श्रीमती राधारानी जी सञ्चालिका बिसवां कन्यापाठशाला बिसवां पधारी हैं और प्रबन्ध इत्यादि में सुधार कर रही हैं। गत वर्ष से जब से गाड़ी का प्रबन्ध हुआ है लड़कियों की संख्या खूब बढ़ रही है। स्थानीय मुसल्मान भाइयों का भी ध्यान शिक्षा की ओर झुका है और वह भी अपनी कन्याओं को इसमें भेज रहे हैं। गांव के लिये यह पाठशाला बड़े लाभ का काम कर रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

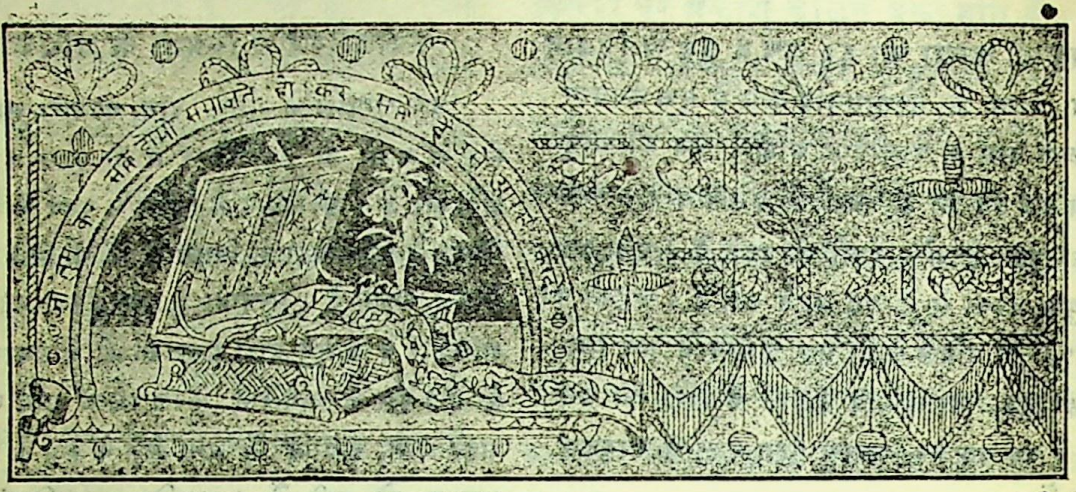

त्रिकोण लेस

लेखिका—श्रीमती ओ३म्वती

(नवम्बरके अङ्क की पूर्ति)

१५ पंक्ति—७ चेन छोड़कर ४ ते. अगले ४ फन्दोंमें, ४ खा., ४ ते., ३ लैस्यट, ३ चे., १ दोहरा अगले बन्द लैस्यटमें. ३ चे, सादा फन्दा बाईं ओरके तीसरे ते. पर, सादा फन्दा अगले ३ ते. के साथ साथ ५, चे. लौटो।

१६ पंक्ति—लैस्यट छोड़कर, १ ते. अगले ते. पर, ३ बन्द लैस्यट १ खा., ४ ते., ४ खा., ४ ते., १० चे., लौटो।

१७ पंक्ति—७ चे. छोड़कर ४ ते., अगले ४ फन्दों में, ४ खा., ४ ते.. १ लैस्यट, १ खा., ४ ते., २ लैस्यट, ३ चे., १ दोहरा बन्द लैस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओरके तीसरे ते. पर, सादे फन्दे अगले ३ ते के साथ २, ५ चे लौटो।

१८ पंक्ति—लैस्यट छोड़कर १ ते. अगले ते. पर, १ और बन्द लैस्यट, १ खा., ४ ते., १ खा., ४ ते., १ बन्द लैस्यट, ४ ते., ५ खा., ४ ते., ६ चे., लौटो।

१९ पंक्ति—४ ते., ते. पर, ५ खा., ४ ते., ३ खा., ४ ते., १ खा., ३ चे., १ दोहरा बन्द लैस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादा फन्दा अगले ३ ते. के साथ, ५ चे. लौटो।

२० पंक्ति—लैस्यट छोड़ कर, १ ते. अगले ते. पर, १ बन्द लैस्यट, १ खा., ४ ते, १ खा., ४ ते., १ बन्द लैस्यट, ४ ते., ५ खा,, ४ ते., ५ चे., लौटो।

२१ पंक्ति—३ ते. छोड़ कर ४ ते., ४ खा., ४ ते., १ लैस्यट, १ खा., ४ ते., २ लैस्यट, ३ चे, १ दोहरा फन्दा. अगले बन्द लैस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादे फन्दे अगले ३ ते. के साथ, ५ चे, लौटो।

२२ पंक्ति—लैस्यट छोड़ो, १ ते. अगले ते. पर, ३ बन्द लैस्यट, १ खा., ४ ते., ४ खा., ४ ते., ५ चे., लौटो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२३ पंक्ति—३ ते. छोड़ो, ४ ते., ४ खा., ३ लैस्यट, ३ चे., १ दोहरा फन्दा बन्द लैस्यट में. ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादा फन्दा अगले ३ ते, के साथ, ५ चे. लौटो।

२४ पंक्ति—लैस्यट छोड़ो, १ ते अगले ते. पर, १ और बन्द लैस्यट, १ खा., १० ते., ४ खा., ४ ते., ५ चे. लौटो।

२५ पंक्ति—३ ते. छोड़ो, ४ ते., ६ खा., ४ ते., १ लैस्यट, ३ चे., १ दोहरा फन्दा बन्द

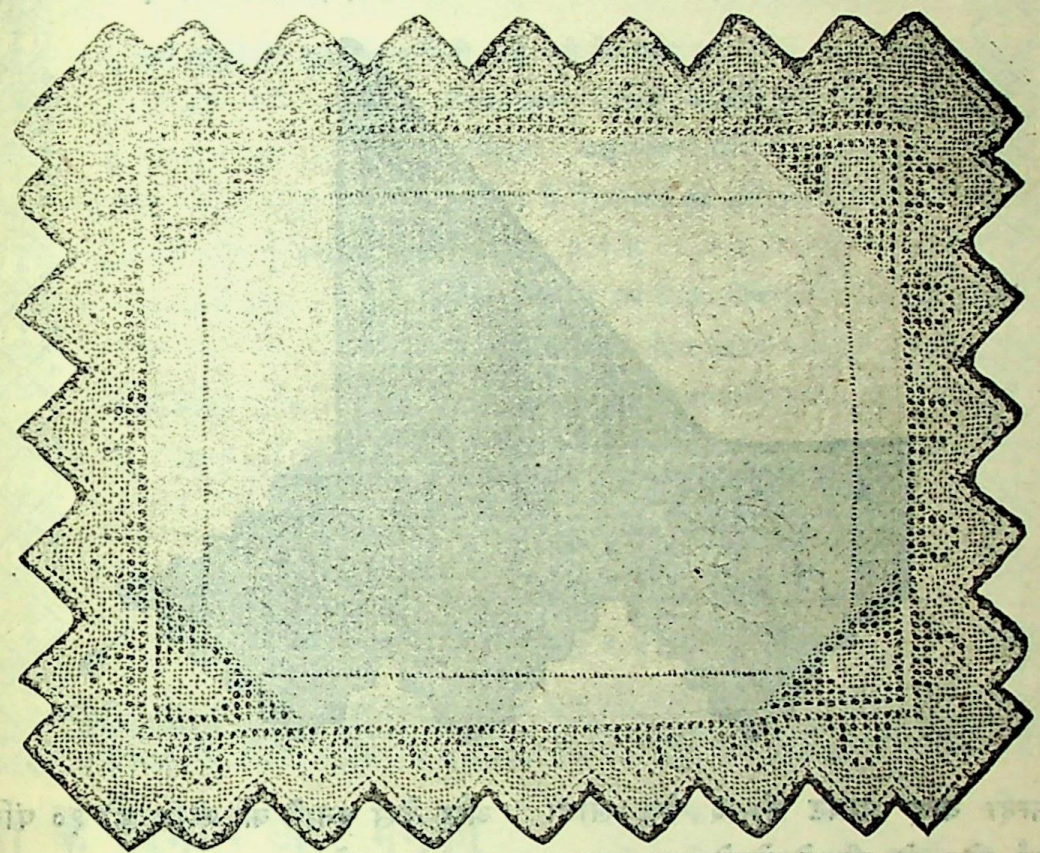

लैस्यट में, ३ चे. सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादा फन्दा अगले तीन ते. के साथ, ५ चे., लौटो।

२६ पंक्ति—लैस्यट छोड़ो, १ ते. अगले ते. पर, १ खा., ४ ते., ६ खा., ४ ते., ५ चे., लौटो।

२७ पंक्ति—३ ते. छोड़ो, ४ ते., २ खा., ४ ते., ३ खा., ४ ते., ३ चे., १ दोहरा फन्दा बन्द लैस्यट में, ३ चे. सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सारे फन्दे अगले ३ ते. के साथ ५ चे., लौटो।

२८ पंक्ति—४ ते. ते. पर, २ खा., ४ ते., २ खा., ४ ते., ५ चे., लौटो।

२९ पंक्ति—३ ते. छोड़ो, ४ ते., २ खा., ४ ते., १ खा., ४ ते., ३ चे., १ दोहरा फन्दा बन्द लैस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादा फन्दा अगले ३ ते. के साथ, ५ चे. लौटो।

३० पंक्ति—४ ते., ते. पर, २ खा., ४ ते., २ खा., ४ ते., १० चे., लौटो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३१ पंक्ति—७ चेन छोड़ो, ४ ते. अगले ४ फन्दों में, १ ख़ा., ४ ते., ३ खा., ४ ते., ३ चे., १ दोहरा फन्दा बन्द लैस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे ते. तक, सादे फन्दे अगले ३ ते., के साथ साथ, ५ चे., लौटो।

३२ पंक्ति—१ ते., चे. फन्दों के पहिले तेहरे पर, १ खा., ४ ते., ६ खा., ४ ते., १० चे., लौटो।

३३ पंक्ति—७ चेन छोड़ो, ४ ते., अगले ४ फन्दों में, ६ ख़ा., ४ ते., १ लैस्यट, ३ चे., १

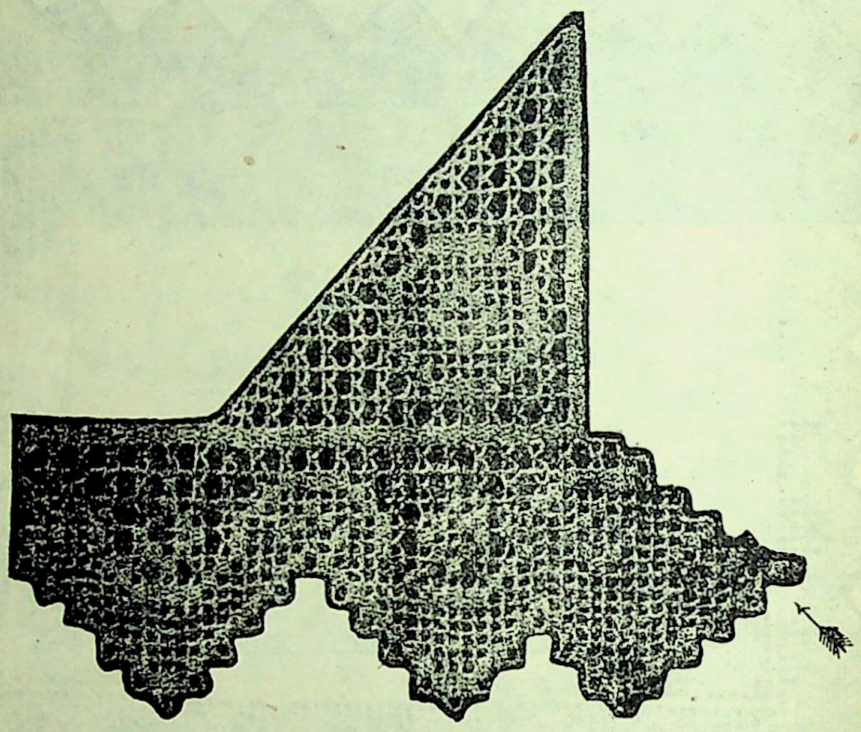

दोहरा फन्दा बन्द लेस्यट में, ३ चे., सादा फन्दा बाईं ओर के तीसरे तेहरे तक, सादा फन्दा अगले ३ ते. के साथ साथ, ५ चे. लौटो।

३४ पंक्ति—१४ वीं पंक्ति की भान्ति।

३५ पंक्ति—१५ वीं पंक्ति की भान्ति।

३६ पंक्ति—१६ वीं पंक्ति की भान्ति।

३७ पंक्ति—७ चेन छोड़ो, ४ ते. अगले ४ फन्दों में, ४ खा., ४ ते., १ लैस्यट, १ खा., ४ ते., २ लैस्यट, ३ चे., १ दोहरा बन्द लैस्यट में, ३ चे., ४ तेहरे त्रिकोन की अन्तिम पंक्ति के अन्त की तीन ३ चेन के सिरे पर, ३ चे. लौटो और लेस बनाने की रीति की १० पंक्ति से पुनः बनाते जाओ।

झालर

१ दोहरा फन्दा डालो, ५ चे., १ दोहरा फन्दा नोकों की बीचके छल्लेमें २ चे., १ दोहरा फन्दा अगले छल्लेमें, ५ चे. और १ दोहरा फन्दा तीन बार, सब के सब उसी छल्ले में + इस चिन्ह से फिर बनाओ, नोकों के सबसे ऊपर वाले के छल्लेमें पांच चेन के जार छल्ले बनाओ और नोकों के बीच के छल्ले में जैसा ऊपर बतलाया है बनाओ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बालिका-विनय

[ले०—"ग्रामीण"]

सुनिए विनय हमारी नाथ।
धर्म धारिणी, शुभ विचारिणी, रहें कर्म के साथ॥
विद्या-ज्ञान, ध्यान से धारें।
दुर्विचार अज्ञानहिं मारें।
परहित में निज तन को जारें।
प्रभुहिं नवावें माथ॥ १॥
देश-भक्ति को रस नित पीवें।
धर्म-जाति-मंगल हित जीवें।
ऐक्य, प्रेम को कंथा सीवें।
दुर्बल-हित हों हाथ॥ २॥
छल-प्रपंच दुर्गण सब भागे।
गुरुजन में श्रद्धा नित जागे।
वेद-शास्त्र-चिन्तन मन लागे।
सुनें सदा शुभ गाथ॥ ३॥

माता के दिमाग़ और मनका बच्चों पर असर

लेखिका—एकदेवी।

हमारे देश की वर्त्तमान मातायें अपने स्वार्थ और भोग विलास में इतनी लिप्त हैं कि वह अपने गृहस्थ जीवन में यह कभी नहीं खयाल करतीं कि उनका प्रभाव उनके बच्चों पर भी पड़ता है अतः सोच समझ कर काम करें। कई मातायें तो अपने हाथों अपने बच्चों को बिगाड़ती है परन्तु सौ में से निन्यानवे मातायें आजकल की ऐसी हैं जिन्हें सचमुच यह नहीं पता है कि उनके शरीर, मन और दिमाग़ के अच्छे बुरे प्रभाव भी बच्चों के रूपरंग और गुणों पर पड़ते हैं। आज हम ज्योति की पाठिकाओं के लाभ के लिये बड़े २ वैज्ञानिक तथा डाक्टरों की सम्मति यहां पर देते हैं। आशा है कि हमारी गृहस्थ बहिनें इसको पढ़कर लाभ उठावेंगी। डाक्टर नेफिज ने एक पुस्तक लिखी है जिस में वह यह दिखलाते हैं कि माता के मन की अवस्था के निशान बच्चों के शरीर पर भी पड़ जाते हैं। माता के मन की अवस्था के अनुसार बच्चों का रूप और रंग भी बन जाता है। वह कहते हैं कि इस बात के बहुत से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उदाहरण दर्ज किये जाचुके हैं कि स्त्री को गर्भावस्था के शुरू के महीनों में अगर बहुत देर तक मानसिक अवस्थायें बिगड़ी रहने की आदत ही पड़जावे तो उससे बच्चों का शरीर या तो अंग हीन या अधिक अंग वाला और या किसी प्रकार से विकृत हो जाता है।

न्यूयार्क के एक प्रोफ़ेसर विलियम हैमण्ड अपनी आंखदेखी बात-जिसमें बिल्कुल भी शक नही है-इस प्रकार वर्णन करते हैं-कि माता के मन की अवस्था का प्रभाव गर्भ के बच्चों की शरीर रचना पर कैसे पड़ा:—

सुनिये—एक स्त्री को तीन मास का गर्भ था, जब कि एक दिन शाम को उसके पति के चेहरे पर बड़ी चोट लगी, उसके मुखसे खून निकल रहा था। अतः उसी दशा में वह घर में लाया गया। उसे देखकर उसकी पत्नी को बड़ा भारी दुःख हुआ और वह बहुत डर गई। यहां तक कि उसे गश पड़ गई, उसके बाद उसको हिस्टीरिया के फिट आने लगे और वह इन्ही डाक्टर हैमण्डके पास इलाज करानेके लिये लाई गई। जब वह अच्छी होगई तो उसने डाक्टर को कहा कि मुझे भय है कि इस घटना के कारण मेरे गर्भ के बालक पर बुरा प्रभाव पड़ेगा क्योंकि अभी तक मेरे पति का खून से भरे मुख का चित्र मेरे चित्त पर वैसा ही अंकित है। यथासमय उसके एक लड़की पैदा हुई। उसके चेहरे पर गाढ़े लालरंग का वैसा ही दाग़ उसी जगह पर पड़ा हुआ दिखाई दिया जहां पर उसके पिताको चोट आई थी, दूसरी बात यह भी हुई कि वह लड़की बड़ी होने पर बिल्कुल बे अक्ल निकली।

न्युयार्क के प्रोफेसर डाल्टन कहते हैं कि उस शहर के डाक्टरी के कालेज के दर्वान की स्त्री ने गर्भावस्था में स्वप्न में एक कनकटे आदमी को देखा। उस स्वप्न का उस पर बड़ा असर हुआ और उसने यह बात अपने पतिको भी बतलाई। जब उसके बच्चा पैदा हुआ तो उसके एक तरफ़ के कान का हिस्सा उसी तरह कटा हुआ था जैसे कि उस आदमी का जिसे उसने स्वप्न में देखा था। जब प्रोफेसर डाल्टन इस विषय पर लेकचर दे रहे थे कि गर्भस्थ बालक की उन्नति पर माता की मानसिक अवस्था का क्या असर होता है उस समय उस दर्बानने उन्हें उपरोक्त घटना बताई थी। उसका कान बिल्कुल वैसा ही दीखता था जैसे किसी ने तेज़ चाकू से काटा हो।

एक और प्रोफेसर लुईस्मिथ जो कि न्युयार्क के एक अस्पताल के डाक्टर थे उनके सामने नीचे लिखी घटनायें आईं:—

एक आयरिश स्त्री गर्भस्थिति के पहिले महीने में एक गली में जारही थी तो उसे एक भिखमंगा जिसके अंगूठे और उंगलियां कुछ नहीं थीं मिला और परमेश्वरके नामपर भीख मांगी। स्त्री बहुत मनोवेग वाली थी और कुछ गपोड़ों पर भी विश्वास करती थी। पहिले तो वह चुपचाप चली गई परन्तु पीछे जब खयाल किया कि परमेश्वर के नाम पर भीखमांगो गई थी तो उसे पश्चात्ताप हुआ कि उसने भीख न देकर बड़ा पाप किया है। वह उसी जगह पर फिर गई जहां वह भीख मंगा मिला था, और इसी प्रकार कई वार जाती रही परन्तु फिर वह दिखाई नहीं दिया। अपने माने हुए पाप के भय से वह कई सप्ताह तक दुखी रहती रही और इतने में उस का प्रसवकाल भी आगया। जब लड़की का जन्म हुआ तो उसके एक हाथ में अंगूठा और उंगलियां कुछ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं थीं। जो हाथ अंगहीन था वह उसी तरफ़ का था जिस तरफ़ का उस भीखमंगे का था और माता के कहने के अनुसार बिलकुल उसी प्रकार का था। एक और स्त्री थी जिसने गर्भवती होने पर अपने एक कुटुम्बी जन को चोट लगजाने से टांग कटवाते देखा था अतः उसका बच्चा भी वैसा ही अंगहीन पैदा हुआ। प्रोफ़ेसर स्मिथ ने इन दोनों उदाहरणों की जांच पड़ताल की और यह सच्चे सिद्ध हुए। इसी प्रकार एक रोटी पकाने वाले की स्त्री की कथा इस प्रकार है कि उस स्त्री के कुटुम्ब में तथा उसके पुरुखाओं में भी जहां तक उसे पता था इस प्रकार का कोई रोग न था। किन्तु जब उसे अभी एक दो महीने का ही गर्भ था तो उसके पास एक बच्चा रोटी लेने आया करता था जिस के दो अंगूठे थे और वह अंगूठे और उंगली के बीच में पैसे पकड़कर लिया करता था। तीसरे महीने के बाद उसने रोटी वाली दुकान छोड़ दी लेकिन उसके चित्त पर इस अधिक अंग का इतना प्रभाव था कि अपने बच्चे में उसी दोष को देखकर उसे कुछ अचम्भा न हुआ। इन ऊपरोक्त सभी दशाओं में गर्भ के शुरू महीने में ही प्रभाव पड़ा दिखाया गया है लेकिन इस प्रकार के भी उदाहरण बहुतेरे मिलते है जिन से यह भी पता लगता है कि प्रसवकाल से एक दो महीने पहिले भी यदि माता के चित्त पर बड़ा भारी प्रभाव हो और वह प्रसवकाल तक बना रहे और माता को यह खयाल आवे कि उसके बच्चे पर भी उसका प्रभाव पड़ रहा है तो अवश्य बच्चे का हाल उसी प्रकार होगा। एक प्रोफेसर कार्पेण्टर साहब को जो कि शरीर शास्त्र के प्रसिद्ध वेत्ता हैं अपने एक निकट सम्बन्धी के घर में भी ऐसी घटना दिखाई दी थी।

ऊपर के सब उदाहरण केवल इसी बात को बताते हैं कि लगातार रहते मनोवेगों का क्या प्रभाव पड़ता है परन्तु यह भी सच है कि अचानक तेज मनोवेग चाहे वह जल्दी ही क्यों न हट जायें और भुला दिया जावें तब भी उनका असर गर्भस्थ बालक पर अवश्य पड़ ही जाता है। अगले अंक में हम इसके भी प्रमाण देंगे।

(क्रमशः)

गृह-प्रबन्ध

१. छोटे २ टूटे कांच के टुकड़ों को भीगे हुए ऊनी कपड़े से बड़ी सुगमता से इकट्ठा कर सक्ते हैं।

२. फूलदान का पानी प्रतिदिन बदलते रहो रात्रि के समय फूलदान को किसी खाली बर्तन में रखकर ऊपर से भीगे हुए कपड़े से ढांप दो।

३ फूलदान में जल के स्थान में कई बार भीगी हुई रेत भी काम में लायी जा सक्ती है। इस में एक लाभ यह भी है कि फूलदान निचले भाग में भारी हो जाने के कारण लुढ़केगा नहीं

४. किशमिश, छुआरे आदि मेवे को खीर मिठाई इत्यादि में डालने से पहले गरम पानी से खूब धो डालो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

५. सादे और चित्रकारी किये हुए तसवीरों के चौखटों को साफ़ करने के लिये गरम पानी और साबुन से बढ़कर कोई चीज नहीं। जब वह सूख जायें तो इन पर थोड़ा सा अलसी का तेल मल दो और नरम कपड़े से रगड़ कर साफ़ कर दो।

६. रंगबिरंगे धारीदार तौलिये को धोने से पहिले नमकीन ठंडे पानी में रातभर डूबा रहने दो। फिर उन्हें साबुन और गरम पानी से जिसमें सिरका मिला हो धो डालो।

७. फलालेन जिस पर कि गरम स्त्री के अथवा अन्य किसी प्रकार से आग के दाग़ पड़ गये हों किन्तु जलने न पाई हो-को पुनः अपनी असली हालत में लाने के लिये इस धब्बे के स्थान को नीबूं से रगड़ना चाहिये और फिर नीबूं का गूदा उसी स्थान पर रहने दो और दो घण्टे तक धूप में सुखा कर साधारण रीति से धो डालो।

८. छींट अथवा फूलदार पौदे के कपड़ों को बिना पानी के धोया जासक्ता है। चोकर पिसा हुआ चरक और नमक को बराबर बराबर मिला लो और एक फलालेन के टुकड़े से इनको साफ़ करने वाले टुकड़े पर खूब रगड़ो।

९. कपड़ों को धोते समय यदि पानी में थोड़ा सा मट्टी का तेल डाल लिया जाय और उन्हें फिर उबाला जाय, तब उनको मैल से छुड़ाने के लिये कम रगड़ना पड़ेगा। तेल की बदबू सूखने के पीछे स्वयं उड़ जाती है।

१०. कपड़ों को उबालते समय पानी में थोड़ा सा सुहागा डालदो। इन कपड़ों का रंग खराब नहीं होता।

विचार प्रवाह

कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ समाचार।

गतमास की अपेक्षा ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य साधारणतया बहुत अच्छा रहा है अतः प्रातः काल का उठना और नियम पूर्वक स्नान करना उन्हें अब अनुकूल हो गया है। शिक्षा का प्रबन्ध भी बहुत कुछ नियमित हो चला है। अभी केवल दो मास ही कुल की स्थापना को हुए हैं फिर भी ब्रह्मचारिणियों ने बहुत सा ज्ञान प्राप्त कर लिया है। ट्रेन्ड अध्यापिकाओं की बड़ी आवश्यक्ता है। वर्तमान अध्यापिकायें प्रायः अपना सारा समय इनकी शिक्षा और देख रेख में अर्पण कर रही हैं अतः इनको कुछ थोड़ा सा विश्राम देने और इनके पठन के लिये समय निकालने के लिए बहुत आवश्यक है कि दो चार अध्यापिकायें और अन्य काम करने वाली देवियां सेवा के लिये आवें। जहां कहीं भी पढ़ी लिखी देवियां हों उनसे प्रार्थना है कि वह इस पवित्र काम के लिये आगे आवें और गुरुकुल की सेवा के लिये कम से कम साल या दो साल अवश्य निकालें।

ब्रह्मचारिणियों की संख्या इस समय ८० है परन्तु कुछ सज्जनों ने अपनी २ कन्याओं के लिये स्थान रिक्त रखवालिये हैं जिन्हे वह शीघ्र ही लाने के लिये यत्न कर रहें हैं। इनके अतिरिक्त अब और नई कन्याओं का प्रवेश बन्द हो गया है।

यद्यपि कन्या गुरुकुल का वर्त्तमान स्थान इधर की सब कोठियों से उत्तम और विस्तृत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है तथापि कन्याओं की संख्या अधिक होजाने के कारण स्थान की कमी हो गई है अतः आश्रम के कमरे और विद्यालय विभाग अलग २ कर दिये जाने के विचार से चार पांच नये कमरे बन रहे हैं। इनके बनने पर विद्यालय एक तरफ़ होजायगा और आश्रम मुख्य कोठी में ही रहेगा।

दर्शकगण

बड़े दिन की छुट्टी तथा वृन्दावन गुरुकुल के उत्सव के कारण दर्शकाओं की संख्या भी अधिक रही है। इसके द्वारा इस संस्था की प्रसिद्धि दूर २ फैल रही है।

वाचनालय

कन्यागुरुकुल के वाचनालय के लिये समाचार पत्रोंके सम्पादकों से मुफ़्त पत्र देने की प्रार्थना की गई थी जिसका परिणाम अच्छा निकला है। निम्न लिखित पत्रों के सम्पादकोंने अपने २ पत्र भेजने प्रारम्भ कर दिये हैं:—आर्य्यमित्र, आर्य्य, चांद, माधुरी, गृहलक्ष्मी, सरस्वती, प्रभा, प्रताप, हिन्दमहिला, सत्यवादी, ज्योति,।

इन पत्रों के अतिरिक्त 'आज' और 'तरुण भारत' भी कुछ रियायत पर मिलने लगे हैं। हम इन सब महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि अन्य समाचार पत्रों वाले भी उदारता दिखला कर शीघ्र इस वाचनालय को सर्वाङ्ग पूर्ण बनायेंगे।

भारत राष्ट्रीय महासभा।

इस वर्ष भारत राष्ट्रीय महासभा (इंडियन-नेशनल कांग्रेस) का ३८ वां वार्षिक अधिवेशन आन्ध्र प्रान्त की समुद्रतट वर्तिनी विख्यात नगरी कोकनटपुरी (कोकनाड़ा) में बड़े समारोह से मनाया गया। भारतमाता के उद्धार के लिए श्रीकृष्ण जन्म स्थान में दीर्घ तपस्या करके लौटने पर सारे भारतीय राष्ट्र ने एक स्वर से मौलाना मोहम्मदअली जी को उस अधिवेशन का सभा-पति बना कर उचित सर्वोपरि सम्मान दिया था। इस वर्ष की कांग्रेस में मुख्य विवादास्पद विषय व्यवस्थापक सभाओं (कौंसलो) में प्रवेश विषयक कांग्रेस की नीति निर्धारणा और हिन्दू-मुसलिम ऐक्य की समस्या थे। प्रथम विषय अर्थात कौंसल प्रवेश के विषय में जनता को बड़ी आशङ्का हो रही थी कि यह विवाद विषम रूप धारण करेगा। यङ्गइण्डिया के तीन लेखोंको पढ़कर अनुमान होता था कि अब की कांग्रेस उस विवाद का ही प्रधान अखाड़ा बनी रहेगी परन्तु महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी श्री राजगोपालाचार्य्य और स्वराज्य पार्टी के प्रमुखनेता श्री चित्तरञ्जनदास की दूरदर्शिता और शान्तिप्रियता को अनेक धन्यवाद है कि उन्होंने कांग्रेस को फूटके भयङ्कर दुष्परिणामों से बचालिया और इस प्रकार का समझौता कर लिया कि उससे जहां कांग्रेस को अपने पूर्व स्वीकृत और भारत के वास्तविक उद्धारक रचनात्मक विधायक कार्य्य क्रम से नहीं हटना पड़ा, वहां व्यक्ति के जन्म-सिद्ध मत स्वातन्त्र्य पर भी आघात नहीं पहुंचा, श्री राजगोपालाचार्य्य जी के प्रस्ताव और श्री चि० र० दासजी के अनुमोदन पर यह निश्चय राष्ट्रीय महासभा से स्वीकृत हो गया कि त्रिविध-वर्जनात्मक असहयोग की नीति पर राष्ट्र अटल रहेगा और व्यवस्थापक सभाओं में जो सज्जन प्रवेश करेंगे वे अपने व्यक्ति रूप में अपने उत्तरदायित्व पर वैसा करेंगे। राष्ट्रीय महासभाका उनके कार्य्यों से कोई सम्बन्ध न होगा। यदि भारतीय जनता ने इस निश्चय को पूर्ण रूप से कार्य्य में परिणित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करके रचनात्मक कार्य्यक्रम को अपनाया तो भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में बहुत काल न लगेगा। भारत का उद्धार जब भी होगा, विधायक कार्य्य के स्वावलम्बन और आचार निर्माण के प्राचीन पथ पर ही चल कर होगा कौंसल प्रवेश का पाश्चात्य संघर्ष उसका विस्तार कभी न कर सकेगा।

इस वर्ष राष्ट्रीय महा-सभा के सामने दूसरी जटिल समस्या हिन्दू-मुसलिम ऐक्य की थी। खेद है कि महासभा उसके सुलझाने में सफल नहीं हुई और उसने उस प्रश्न को लाजपत-अन्सारी समझौते पर पूर्ण निर्णय न देकर यूं ही छोड़ दिया। हिन्दू मुसलिम ऐक्य की स्थापना दृढ़ आधार पर तब ही हो सकती है, जब कि उभय संम्प्रदायों के स्वातन्त्र्य और अधिकार की सीमाएं समतल पर अभी से पूर्ण रूपेण निर्धारित का दी जांय। उस प्रश्न को हाथ लगाने से आनाकानी करने से उसकी वही दशा होती जायगी, जो कुपितमल को स्वशरीर में संचित करने वाले रोगी की होती है। कुपितमल को जितना शीघ्र सम्भव हो, देह से निकाल देने में ही भलाई होती है उसी प्रकार हिन्दू मुसलिम वैमनस्य के कारणों को यथा सम्भव शीघ्रातिशीघ्र दूर किए बिना उस महारोग का शमन न होगा।

सभापति महोदय का भाषण।

भारतीय राष्ट्रीय महासभा पर टिप्पणी करते हुए उसके सम्मान्य सभापति मौलाना-मोहम्मदअली के भाषण पर भी दो चार शब्द लिखना आवश्यक होगा। मौलाना का यह भाषण अपने आकार से अपने पूर्ववर्ती सारे सभा-पतियों के भाषणों को अतिक्रमण कर गया था। वह $\frac{२०\times२०}{८}$ के १४८ पृष्ठों को घेरे हुए था और उसको संक्षेप से पढ़ने में भी उनके कई घण्टे लगे। इस भाषण में मुसलमानी राज-नैतिक आन्दोलन के इतिहास का इतना विस्तार किया गया था कि हमारे कई सह-योगियों की सम्मति में यह भाषण खिलाफ़त कांफ्रेस के सभापति के आसन के योग्य था। इस इतिहास से किसी मातृ-भूमि के उपासक का हृदय-कमल नहीं खिल सकता। उसको पढ़ कर प्रत्येक भारत-भक्त के मन में यह भावना उदय हुए बिना न रहेगी कि मुसलमानों के मन में स्वदेश भक्ति की मात्रा बहुत ही न्यून रही है और वे अपने स्वार्थ को ही लक्ष्य में रख कर विदेशी गवर्नमैण्ट से मिलते वा पृथक होते रहे हैं। इस भाषण में हिन्दु-मुसलिम वैमनस्य पर भी पूर्ण प्रकाश नहीं डाला गया और न उसके दूर करने का कोई अमोघ उपाय बतलाया गया। मालाबार, मुलतान और सहारन-पुर के दंगों में हिन्दुओं पर मुसलमान गुंडों के भयङ्कर अत्याचार ऐसे सूर्य्य-सम प्रत्यक्ष थे कि उन पर त्राहि त्राहि से भारत का प्रत्येक कोना प्रतिध्वनित हो उठा था। पर मौलाना महोदय का मुसलमान गुंडों के कुकर्म्मों पर घृणा व्यञ्जक एक शब्द का भी प्रयोग न करना और अत्याचार पीड़ित हिन्दुओं से सहानुभूति का लेश भी न दिखलाना उन के भारत-राष्ट्र-पति पद को शोभा नहीं देता। मुसलमान गुंडों के राक्षसी कर्म्मों की निन्दा से मुसलमानों मत पर कोई आक्षेप नहीं आसकता था, क्योंकि गुंडे सब सम्प्रदायों में होते हैं और उनके गर्हित कुकर्म्म उनको ही गर्हणीय बनाते हैं उनके कदाचारों से उनका माना हुआ धर्म्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कभी निन्दित नहीं हो सकता। अत्याचार पीड़ित हिन्दुओं के लिए मौलाना-महाशय के दो चार सहानुभूति बिन्दु, यद्यपि उनके दारुण दुखों और सर्व विनाशक विपत्तियों को दूर करने में समर्थ न होते, पर वे भारतीय राष्ट्रपति के हृदय की विशालता का परिचय अवश्य देते। हम को खेद है कि महामना मौलाना मोहम्मद-अली से जैसे भाषण की हम को आशा थी वह पूरी नहीं हुई।

हिन्दू-मुसलिम समझौता

इस वर्ष की कांग्रेस में यदि कोई सब से आवश्यक विषय उठाया गया था तो वह हिन्दु मुसलिम समझौते का विषय था। बंगाल के समझौते की तो राष्ट्र ने एक स्वर से गर्हणा की थी। लाजपत-अन्सारी समझौता ही विचार के योग्य समझा गया और,वह एक समिति के सपुर्द इस लिए किया गया है कि वह उस पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे।

हम इस पर अपने विचार अपनी आगामी संख्या में पाठकों के सामने प्रस्तुत करेंगे।

नैपाल स्वतन्त्र राष्ट्र

हिन्दू जनता में यह समाचार बड़े आनन्द से पढ़ा जायगा कि गत २१ दिसम्बर को नैपाल की राजधानी काठ-मांडू में उस सन्धि पत्र के नियमानुसार स्वीकृति का उत्सव बड़े समारोहसे मनाया गया, जिसके द्वारा अंग्रेजी गवर्नमेण्ट से नैपाल की मित्रता दृढ़ हुई है और अंग्रेजी सरकार ने नैपाल को पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र स्वीकार कर लिया है। अब तक आर्य्य जाति (हिन्दुओं) का कोई स्वतन्त्र राष्ट्र न माना जाता था और हमारे मुसलमान भाई समय कुसमय अपनी राज-नैतिक महत्ता यह कह कर दर्शाया करते थे कि संसार में उनके कई स्वतन्त्र राज्य विद्यमान हैं किन्तु हिन्दुओं का कोई भी स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं है इस लिए हम को विशेष राजनैतिक अधिकार मिलने चाहिएं यही कारण है कि उनकी दृष्टि भारतकी अपेक्षा टर्की, फारस, और काबुल, की ओर अधिक खिंची रहती है। सच भी है,संसारमें "क्षात्रबल" और "ब्रह्मबल" दो ही बल होते हैं। कोई समय था जब आर्य्य जाति के पुरुषा "ब्रह्मबलं बलं धिक् क्षत्र बलं" साभिमान कह सकते थे पर इस घोर कलिकाल वा अधर्म्म प्रधान युग में "ब्रह्मबलं" आर्य्य जाति अपने ब्रह्मबल का वैभव तो सर्वथा गवा ही चुकी थी, पर गत शताब्दीसे उसने अपना "क्षात्रबल"भी खो दिया था। हर्षहै कि अब नाममात्रके लिए तो कोई उस को "स्वतन्त्र राष्ट्र हीन" न कहेगा यद्यपि उसका उद्धार भारतमाता की अनन्य भक्ति से ही होगा और हमारे मुसलमान भाईयों को भी भूल भटक कर अन्त में इसी मार्ग पर आना पड़ेगा। क्योंकि हिन्दी की प्रसिद्ध कहावत है कि "घर खीर तो बाहर भी खीर" परन्तु सम्प्रति 'दिल के बहलाने को ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है।'

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ।

४७००० एजेंटों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है।

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगंधित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंज़ा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≡)

दाद की दवा।

बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशीसे पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ।=)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

मास्टर आत्मारामजी

(अमृतसरी) राज्यरत्न व्याख्यान वाचस्पति की बनाई हुई।

प्रथम, अपने ढंग की अपूर्व, वैज्ञानिक, सचित्र अद्वितीय पुस्तकें

अपने विषय की अपूर्व पुस्तकें

सृष्टिविज्ञान नास्तिकवाद पर विजय—विकासवाद का युक्तियुक्त खंडन। विकासवाद जो कि युरोप में बहुत प्रचलित है और जिस का प्रचार नास्तिकता के रूप में भारत में भी प्रचलित होता जाता है इस अवैदिक लहर को रोकने के लिए सृष्टिविज्ञान—रचकर ईश्वर वादका सुदृढ़ मंडन करते हुए वैदिक धर्म की रक्षा में बड़ा काम किया है। प्रत्येक ईश्वरवादी आर्य्य के घर में इस ग्रन्थ का रहना परमावश्यक है। सचित्र स्वच्छ छपी पुस्तक का मूल्य २) है। डा० ।=)

द्वितीय सचित्र अनुपम अद्वितीय पुस्तक शरीरविज्ञान जिस में दर्शाया गया है कि शल्यविद्या का आदि मूल वेद में है और भारत ऋषि ही इस के आदि प्रचारक हुए हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्य को पढ़नी चाहिये। ऋषियों के पंच भूत तथा वातपित्त कफ के सिद्धान्त की सत्यता दिखाकर युरोप के कई सायंस के मन्तव्यों को युक्ति पूर्वक अमान्य ठहराया है। सचित्र मू० ।≡)

तृतीय पुस्तक आत्मस्थान विज्ञान मू० -)

ब्रह्मयज्ञ—आर्य्यों के पढ़ने योग्य है मू० ॥।)

तुलनात्मक धर्म विचार १) कोष की कथा ॥), समुद्रगुप्त ॥=) श्रीहर्ष ।।) अवतार रहस्य ॥।) अत्याचार का अन्त ॥।) नारीधर्म विचार १॥) दृष्टांतसागर १।) त्रिदेवनिरूपण ।-) आदर्शचरितावली ।=) कृष्णकुमारी ॥।) स्वर्णप्रतिमा २) कोलेजहोस्टल ।) नियोगमीमांसा १॥) दुर्गा ।=) फूलों की डाली ≡ ॥ उन्नतिकापथ ।) नारायण शतक=) डायरशाही ।।) महात्मा गांधी ≡) स्वाधीनता=) देशदर्शन २) दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह २॥)

मिलने का पता—जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योग साधन से स्त्री पुरुषों के स्वास्थ्य का संरक्षण करने का मार्ग।

योग-साधन के ग्रंथ

(१) आसन (सचित्र)

योग के आसन करने से शरीर नीरोग होता है। मूल्य २) दो रुपये।

(२) संध्योपासना।

योग की रीति से संध्या करने की रीति। मूल्य १॥) डेढ रुपया।

(३) वैदिक प्राणविद्या।

वेद और उपनिषदों की प्राणविषयक विद्या का वर्णन इस पुस्तक में है। मूल्य १) एक रुपया।

(४) ब्रह्मचर्य। (सचित्र)

ब्रह्मचर्य साधन पूर्वक वीर्यरक्षण के उपाय। मूल्य १।) सवा रुपया।

(५) योगसाधन की तैयारी।

योगसाधन की तयारी के सामान्य नियम। मूल्य १) एक रुपया।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल औंध,
(जिला—सतारा)

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुखपत्र।

॥ आर्यमित्र ॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति वृहस्पतिवार को आगरा से प्रकाशित होता है

सम्पादकः—

पं० हरिशङ्कर जी शर्म्मा "कविरत्न"

यदि आप वैदिकधर्म प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियें पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्य जगत् के समाचार जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही --

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये,

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है।

पता—आर्यमित्र, आगरा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों के गुप्त रोग और उन की
रामवाण चिकित्सा ।

मोल ३२ गोली २)

प्रदरान्तक वटी

वी. पी. द्वारा २।≡)

प्रदरान्तक वटी के सेवन से स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर (अर्थात् नीला काला, लाल, पीला पानी और दुर्गंध युक्त पानी आना) जिस के कारण स्त्रियों को हड फूटन, अंगों में पीड़ा और दुर्बलता सदा बनी रहती है, बिलकुल दूर हो जाती है। ऋतु का ज्यादा आना या कई दिनों तक रहना इत्यादि रोग जड़ से उखड़ जाते हैं। शरीर में बल आता है चेहरे का रंग सुर्ख हो जाता है और भूख अच्छी तरह लगती है॥

मिलने का पता—**पं० मदन मोहन शर्म्मा वैद्य कविराज,**
मैनेजर रत्नाकर औषधालय लाहौर।

फ्रांस के डाक्टर की आश्चर्यजनक रचना

* हुसन यूसफ *

अर्थात्

गोरे और सुन्दर होने की शर्तिया अपूर्व औषधि

केवल सात दिन नियम पूर्वक जिस को मलकर स्नान करने से काला और कुमलाया, निसतेज और कुरुप मुख तथा शरीर मलमल के सदृश मुलायम, और गुलाब के फूल के समान सुन्दर और लाल हो जाता है, और मुख के काले दाग, धब्बे, काल, छाइयां खुशकी आदि को शर्तिया दूर करती है। यदि मुख का रंग १६ वर्ष की सुन्दरी के बराबर मालूम न हो तो मूल्य नहीं लेंगे। सुगन्धि इतनी कि जब तक दूसरी बार नहाया न जाए तो न हटे। यह पसीना की बदबू बगलगन्द, फोड़ा, फिन्सी, दाद, खारिश इत्यादि का अतीव लाभकारी है। मूल्य प्रति शीशी २) तीन शीशी ५) महसूल डाक खरीदार पर होगा।

मिलनेका पता—एम.डी.मैनेजर मोहियाल एजंसी ५०१ लोहारीगेट लाहौर

बाम्बे मैशीन प्रेस लाहौर में मैनेजर पंडित हरभगवान के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू मदनलाल ने ज्योति कार्य्यालय लाहौर से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ५] वैशाख १९८१—जुलाई १९२४ [खण्ड ५, संख्या ३

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी० ए०

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
१.	संगठन (कविता) लेखक—कवि 'पुष्कर'	१११
२.	माता की लाज पुत्रियों के हाथ में ले०-श्री० स्वामी श्रद्धानन्दजी	११२
३.	महात्मा गांधी और हम ले०—एक गांधी—दयानन्द भक्त डी. यस. सी.	११४
४.	जीवन-ज्योति (कविता) ले०—श्रीहरिशंकर शर्मा कविरत्न ...	१२४
५.	तमाखू ले०—प्रो० रामशरण सक्सेना एम. यस. सी. ...	१२५
६.	भानु भुवन—या मोहन माया अनुवादिका—कु० सुमित्रादेवी जलविद ...	१२८
७.	प्रार्थना—(कविता) ले०—'गुलाब' ...	१४४
८.	फ़रेब-ख़याल ले०—श्रीराजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद' ...	१४५
९.	सम्मोह (कविता) ले०—श्री मार्कण्डेय पांडे	१४६
१०.	वैज्ञानिक संसार ...	१४७
११.	हमारी मञ्जूषा ...	१४९
१२.	वनिता विनोद ...	१५१
	१. इलियन लेस, ले० ओ३म्वती	
	२. भारतीय महिलाओं का कर्तव्य ले०—शिवरानीजी	
	३. 'कान्हा' (गल्प) ले०—बलवन्त सचदेव	
१३.	कन्यागुरुकुल-समाचार ...	१५९
१४.	विचार-प्रवाह ...	१६१

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं. जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

वर्ष ५ | आषाढ १९८१—जुलाई १९२४ ई० | संख्या ३

संगठन

ले०—श्री० पं० जगन्नारायण देव शर्मा कविपुष्कर

(लुप्तपद)

जो रखता अस्तित्व जाति का जीवन-धन है।
जिसमें अविरल शक्ति सुधरता जिससे जन है॥

प्रेम-एकता--ज्ञान आदि का जो साधन है।
रक्षा--सत्य--समाज-राज्य--हित--यत्न--सृजन है॥

उसको कहते संगठन, जग में मंगल-मूल है।
जो इससे मुख मोड़ता, उसमें भारी भूल है॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माता की लाज पुत्रियों के हाथ में

लखक—श्रीयुत् स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी जी महाराज

भारत माता का विलाप सन्तान के लिये असह्य हो गया, इसी लिये सन्तान माता की रक्षा और उसके पुनरुत्थान के लिए हाथ पैर मार रही है। अबतक पुरुष ही यत्न करते रहे थे, कुछ दिनों से स्त्रियों ने मातृ-सेवा का व्रत लेना शुरू कर दिया है।

मन कितना ही उठने वाला विशाल क्यों न हो बिना दृढ़ बलवान शरीर और आत्मा के वह विवश ही रहता है। भारतीयों में मानसिक भाव बड़े व्यापक हैं, परन्तु आत्मा और शरीर की निर्बलता के कारण उनके संकल्प केवल संकल्प मात्र ही रहते हैं। फिर निर्बल, तेजहीन शरीर के अन्दर तेजस्वी आत्मा का निवास भी दुस्तर है।

कहा जायगा कि सुशिक्षित पुरुषों ने शारीरिक उन्नति और दृढ़ता की ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है। परन्तु सन्तान वही कुछ बनती है जो उसे पिता माता (विशेषतः माता) बना दें। भारत को वीर सिंह सन्तान चाहिये, वेद के आदेशानुसार—

अस्य यजमानस्य वीरो जायताम्।

राष्ट्र में वीर सन्तान उत्पन्न होनी चाहिये।

वह वीर सन्तान कैसे उत्पन्न होगी?

आजकल की विदेशी शिक्षापद्धति ने जहां भारतीय बालकों के शरीर निस्तेज कर दिये हैं वहां आर्य बालिकाओं को भी अत्यन्त निर्बल बना दिया है। आज से ४० वर्ष पहिले की आर्य देवियां यद्यपि सर्व भाषाओं के अक्षरों से शून्य थीं तथापि शारीरिक बल से वञ्चित न थीं; उनमें इतनी शक्ति अवश्य थी कि कम से कम स्वस्थ और दृढ़ाङ्ग सन्तान उत्पन्न करें। विदेशी शिक्षा ने भारत की कुछ पुत्रियों को पुस्तक पढ़ने और अक्षर लिखने के योग्य तो बना दिया परन्तु साथ ही उन्हें दृढ़ांग वीर संतान उत्पन्न करनेके योग्य नहीं छोड़ा। ऊंची एड़ी के बूट और रंग बिरंगी रेशमी साड़ियां पहिन कर हमारी पुत्रियां और बहिनें तितलियाँ बना दी गईं। फिर तितलियों के गर्भ से सिंह कैसे पैदा हो सकते हैं।

६०० वर्ष हुए मेवाड़ की गद्दी पर राना अजयसिंह बैठे। उनके पीछे उनके भाई अमरसिंह के पुत्र को गद्दी मिलनी थी। उन का पुत्र प्रसिद्ध राना हम्मीर हुआ जिसने ६४ वर्षों में मेवाड़ की काया पलट दी थी। उसने मेवाड़ के खोए हुए सहस्रों दुर्ग ही मुसलमानों से न लौटा लिये अपितु बादशाह महमूद ख़िलजी को भी ३ महीने तक चित्तोड़ के कारागार में रक्खा। और उससे अजमेर, रनथम्भोर, नागौर, सुई, शिवपुर के इलाके ही न छुड़वा लिये प्रत्युत ५० लाख रुपया हर्जाना और १०० हाथी कर में लिये। वह हम्मीर किस माता का पुत्र था? सुनो!

एक दिन अमरसिंह जंगली सुअर के शिकार के लिये जा रहा था सुअर एक ज्वार के खेत में घुस गया। अमरसिंह के साथियों को खेत में जाते देख एक राजपूतनी लड़की ने जो मचान पर बैठी थी उनको खेत में घुसने से रोक कर कहा—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"तुम सब हट जाओ मैं शिकार को खेत में से निकाल देती हूं।"

ज्वार के एक चार गज लम्बे लट्ठे को उखाड़ कर उससे सुअर को मार उनके सामने खींच लाई और विदा हो गई। राजपूत बहादुर उस शक्ति को देख आश्चर्य्य में आ गए। उन सबने पास की नदी के किनारे बैठ शिकार रूंधा और जल्सा मनाने लगे। उसी समय किसी का चलाया एक मिट्टी का गोला कुमार अमरसिंह के घोड़े को लगा और उसकी हड्डी तोड़ दी। देखने पर मालूम हुआ कि मचान पर से उसी कुमारी राजपूतनी ने जानवरों को हांकने के लिये यह गोला चलाया था। उससे हानि देखकर वह कुमारी उतरी और कुमार से क्षमा प्रार्थना करके चली गई। जब सब राजपूत घर को लौटे तो रास्ते में देखा तो वही कुमारी सिर पर दूध का घड़ा रखे दोनों हाथ से दो मस्त भैंसे पकड़े लिये जा रही है।। हंसी में उसके सिर से दूध गिराने के लिए एक सवार आगे बढ़ा। कुमारी घबराई नहीं एक भैंसे को घोड़े की टांग में अड़ा कर घोड़ा और सवार दोनों को अड़ा दिया। अमरसिंह ने कुमारी के पिता के पास पहुंच कर उससे विवाह करने का प्रस्ताव किया। वह चन्दावत राजपूत था। निर्धन होते हुए भी अमरसिंह के बराबर बेपरवाही से बैठ गया और प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। उसकी धर्मपत्नी ने जब समझाया तब अमरसिंह का चन्दावत राजपूतों में से विवाह हुआ। उन दोनों की सन्तान राना हम्मीर था।

कैलवे के फतहसिंह की माता और धर्मपत्नी ने चितौरगढ़ से निकल कर मुग़ल सेना में हलचल डाल दी थी और सैकड़ों को मार कर देश की स्वतन्त्रता पर अपनी जान कुर्बान करदी।

वह पुस्तक की विद्या व्यर्थ है जो शरीर और आत्माको निर्बल करदे। झाँसी की रानी की कहानी भी कोई बहुत पुरानी नहीं है। ३२ वर्ष पहिले की एक घटना तो मेरे सामने ही घटित हुई थी। एक नव विवाहित जाट लड़की यात्रा में कुटुम्ब के साथ सोई हुई थी। रात को चोर ने चाँदी की चूड़ी उतारने के लिए हाथ बढ़ाया। १७ वर्ष की जाट लड़की ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। श्वसुर और अन्य बड़े बूढ़ों से लजाते बोल न सकती थी। तीन घंटे तक उसी तरह पकड़े रक्खा जब चोर ने हाथ छुड़ाना चाहा तो उसकी कलाइयां इतनी दबाई कि चोर चीख उठा तब पुरुष जागे और चोर पकड़ा गया।

ऐसी दृढ़ाङ्ग देवियां यदि सत्य विद्या के भूषण से आभूषित करदी जांय तब वह सन्तान उत्पन्न हो सकती है जिसकी 'वेद' ही राष्ट्र के लिये आवश्यकता बतलाता है। अब तक कन्या पाठशालाओं और महाविद्यालयों के संचालकों के पास यह सन्देश भेजता रहा हूं और अब जब कि कन्या गुरुकुल खोलने का साहस किया गया है वही सन्देश उस संस्था के संचालकों के पास पहुंचाना चाहता हूं।

नोटः—यह लेख कन्या गुरुकुलांक के लिये आया था परन्तु मुझे बड़ा खेद है कि असावधानता से कहीं पीले कागजों की कापियों के साथ चला गया बहुत ढूंढने से भी न मिला। परन्तु आज अचानक मिल गया है अतः इसे इस अंक में ही पाठकों की भेंट किया जारहा है आशा है कि पाठक और लेखक महोदय भूल को क्षमा करेंगे।

सम्पादिका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महात्मा गांधी और हम

लेखक—एक "गांधी-दयानन्द-भक्त" डी. एस. सी

महात्मा गांधी के लिये हमारे हृदय में श्रद्धा और भक्ति है, उनके विचार हमारे लिये आदर और सन्मान की वस्तु हैं, उनके कृत्य हमारे गौरव और मान की सामग्री हैं वह केवल भारत के ही भूषण नहीं हैं वरन संसार के शिरोमणि हैं। उनका देशप्रेम, स्वार्थ त्याग, तपोमय जीवन और आत्मसंयम आज प्रत्येक भारतवासी के हृदय पर अपनी छाप लगायेहै। हमारे हृदय सम्राट! आज जो श्रद्धाञ्जलि हम आपकी भेंट करते हैं, हमें शोक है कि उसमें कतिपय पुष्प कांटेदार हैं। प्रभो! हमारा हृदय दुःख और शोक से विह्वल है कि सदैव की भांति आज हमारी पुष्पाञ्जलि के पुष्प सर्वथा कंटक रहित नहीं। भगवन्! बड़ा यत्न किया कि इन पुष्पों से कांटे अलग करके अर्पण करें, परन्तु सब प्रयास विफल गया। कांटे को तोड़ते हैं पुष्प-पल्लव बिखर जाते हैं, पंखड़ियां टूट कर गिर जाती हैं और थोड़े समय में ही पुष्प अपनी सुरभि सुवास को खो बैठता है। अतः देव! अखंड निखिल प्रसून अर्पण हैं, देखना कहीं आपको कोमल उंगलियां छिल न जायें, यह पुष्पमाला कहीं आपके निर्मल कोमल हृदय को आघात न पहुँचाये। प्रभो! सदा की भांति भक्त की श्रद्धाञ्जलि अब की बार भी स्वीकार हो, बाह्यरूप अथवा कुरूप की ओर ध्यान न देते हुये भीतरी भाव को ही अंगीकार कीजिये। "भिलनी के बेर सुदामाके तण्डुल रुचि रुचि भोग लगाये।"

महात्मा गान्धी और आर्य समाज

२९ मई के यंग इन्डिया में हिंदू मुसलमानों का तनाज़ा! शीर्षक एक विस्तृत लेख महात्मा जी की लेखनी से निकला है इसमें उन्होंने इन दो महान् जातियोंके वर्तमान वैमनस्य और झगड़े की उत्पत्ति के क्या कारण हैं और इनका क्या इलाज है? उसी महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार प्रगट किये हैं। शोक कि इस अंक में हमारे पास उतना स्थान नहीं कि हम महात्मा जी के लेख के समस्त अगों पर अपने विचार प्रगट करसकें। अतः हम महात्मा जी के आर्यसमाज सम्बन्धी विचारों की ही आलोचना करेंगे। आधुनिक शुद्धि आन्दोलन को महात्मा जी ने इस झगड़े का एक मुख्य कारण माना है और क्याकि आर्यसमाजी ही विशेष कर इस शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक हैं। अतः परोक्षरूप से महात्मा जी ने आर्यसमाज को ही इस झगड़े का मुख्य कारण ठहराया है। केवल इतना ही नहीं, महात्मा जी ने आर्यसमाज के प्रवर्तक, आर्यसमाज के धर्म, ग्रन्थ उसकी कार्यप्रणाली और उसके नेताओं की भी बड़ी कड़ी समालोचना की है। यह कोई बुरी बात नहीं। आर्यसमाज अपनी बुराइयां अथवा त्रुटियां सुनने से नहीं घबराता और फिर महात्मा गान्धी जैसे निष्पक्ष व्यक्ति के मुख से। हमें शोक है तो केवल इतना ही कि महात्मा जी ने इस अवसर पर उस विवेचना से काम नहीं लिया जोकि उनकी विचार शैली का एक प्रधान अंग है। अस्तु, महात्मा जी ने आर्यसमाज पर निम्नलिखित दोष लगाये हैं:—

(१) स्वामी श्रद्धानन्द जी की तकरीरें ऐसी होती हैं जिन पर कई बार बहुतों को गुस्सा आजाता है। ……वह निडर और बहादुर आदमी हैं परन्तु दुर्भाग्य से वह यह मानते हैं कि प्रत्येक मुसलमान आर्यसमाजी बनाया जा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सक्ता है उन्हें अपने तथा अपने काम पर श्रद्धा और एतबार है। पर यह जल्दबाज़ हैं और थोड़ी सी बात पर जोश में आजाते हैं आर्य-समाज की परम्परा की विरासत उन्हें मिली है।

(२) स्वामी दयानन्द महात्मा जी के लिये सन्मान के पात्र हैं। परन्तु इतने बड़े सुधारककी लिखी "सत्यार्थप्रकाश—जोकि आर्यसमाज की बाइबिल है बड़ी ही निराशाजनक पुस्तक है।

(३) स्वामी दयानन्द ने अनजान में जैन धर्म इस्लाम, इसाइयत और खुद हिंदू मत के अर्थ का अनर्थ किया है।

(४) उन्होंने दुनियाँ के सब से ज्यादह सहनशील और उदार धर्म को तंग बना डालने की कोशिश की है।

(५) स्वयं मूर्तिभञ्जक होते हुए भी उन्होंने सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में मूर्ति पूजा की स्थापना की है क्योंकि उन्होंने वेद के एक एक अक्षर को ईश्वर स्वरूप बना दिया है।

(६) आर्यसमाज की जो आज इज़्ज़त है वह 'सत्यार्थप्रकाश' की शिक्षा के गुणों के कारण नहीं वरन् उस के संस्थापक के महान् और उदात्तशील की बदौलत है।

(७) जहां कहीं आर्यसमाजी हैं वहाँ चेतना और प्राण हैं, परन्तु तो भी उनकी दृष्टि संकुचित और स्वभाव विवाद प्रिय है।

(८) आर्यसमाजी उपदेशक को दूसरे मत के खण्डन में जो मज़ा आता है वैसा शायद ही किसी बात में आता हो।

(९) आर्यसमाजी मुसल्मान औरतों को भगा ले जाते हैं और उन्हें आर्यसमाजी बना लेते हैं।

महात्मा जी ने उपरोक्त नौ दोष आर्य्य-समाज पर लगाये हैं। यह हम आगे चल कर विचार करेंगे कि उनमें कहां तक यथार्थता है परन्तु हमें शोक से कहना पड़ता है कि यह दोष लगाकर महात्मा जी ने अपनी उज्ज्वल न्यायपरता पर एक स्याह धब्बा लगाया है जो कि आंखों और हृदय को बड़ा कष्ट-प्रद है। यह हम इस लिए नहीं कहते कि महात्मा जी के लगाये दोषों को हम निर्मूल मानते हैं वरन इसलिए कि इस स्थल पर आर्य्यसमाज और केवल आर्य्य-समाज के ही छिद्रान्वेषण की कोई आवश्यकता न थी। क्या महात्मा जी की सम्मति में आर्य्यसमाज और केवल आर्य्य-समाज ही इस तनाज़े के लिये ज़िम्मेवार है? क्या महात्मा जी समझते हैं कि मुसलमान इस दोषसे सर्वथा मुक्त हैं? यदि नहीं तो केवल आर्यसमाजकी इतनी कड़ी समालोचना क्यों? आर्यसमाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज की ही शिक्षा विरासत में ली तो क्या मुसलमानों ने इसलाम की शिक्षा विरासत में नहीं ली? आर्यसमाज ने तो केवल जल्दबाज़ी और विवादप्रियता ही सिखलाई है, परन्तु इसलाम ने? इस्लाम बड़ा धर्म है उसने संसार में तीव्र स्फूर्ती पैदा की। परमात्मा की एकता और मनुष्य मात्र के लिये भाईपने और बराबरी का भाव फैलाया संसार का बड़ा उपकार किया। इस के पहले प्रवर्तक निसन्देह आदर्शवादी थे। हम महात्मा जी से पूछ सकते हैं कि क्या इस्लाम की यही शिक्षा है? यदि ऐसा ही है तो फिर ख्वाजा हसन निज़ामी ने रंडियों और भड़ुओं से तबलीग का काम लेना कहां से सीखा; आगाख़ान ने भोले भाले आदमियों को धोखा देने और लूटने की शिक्षा कहां से पाई, एक अनाचारी और व्यभिचारी मुसलमान के हृदय में शुद्ध विचारों की उपस्थिति और इस कारण अन्य मतावलम्बी महात्मा से उसकी श्रेष्ठता, मौलाना मुहम्मद अली को किसने सिखाई; अथवा गुण्डापन जो कि महात्मा जी के शब्दों में मुसलमानों की विशेषता है हिन्दुओं की नहीं—मुसलमानों में कहां से आया? यदि मुसलमानों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में यह बातें उन्हें इस्लाम से विरासत में नहीं मिलीं तो क्या आर्यसमाजियों ने ही महात्माजी के बतलाये अवगुण—जल्दबाज़ी, विवादप्रियता और संकुचिता—जो उपरोक्त मुसलमानी अवगुणों से यदि कहीं कम नहीं तो किसी प्रकार अधिक निन्दास्पद भी नहीं आर्यसमाज से विरासतमें ली है। जो नियम एक पर लागू है क्या वह दूसरे पर नहीं। क्या यह न्याय है अथवा नीति ?

महात्मा जी ने वेद की आलोचना की, स्वामी दयानन्द की आलोचना की, सत्यार्थ-प्रकाश की आलोचना की। हम पूछते हैं कि इस स्थल पर इस की क्या आवश्यकता थी। यदि थी तो क्या हम पूंछ सकते हैं कि—कुरान, हज़रत मुहम्मद और इसलाम धर्म को हदीसें किस न्याय नियम के अनुसार इस आलोचना से बच सकते हैं ? फिर यह ऐसा क्यों नहीं किया गया ? इसका ठीक २ उत्तर तो महात्माजी स्वयम् ही दे सकते हैं हमारी तुच्छ बुद्धि में तो यही आता है कि महात्मा जी के हृदय में हिन्दू—मुसलिम ऐक्य ने इतना घर कर लिया है कि इस समय इस प्रश्न से बढ़कर उन के लिये कोई प्रश्न नहीं। वह दोनों में दोष देखते हैं परन्तु हिन्दुओं के दोषों को वह निर्भय होकर बतला देते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि हिन्दू उन्हें शान्ति से सुनने के लिये तैयार हैं। मुसलमान उन्हें भय है कि इतनी शान्ति से अपने दोष सुनने को तैयार न हों। अतः उनमें दोष रहते हुए भी इस समय इनको प्रकट करने से कोई लाभ नहीं, वरन सम्भावना यह है कि हिन्दू—मुसलिम—ऐक्य को धक्का लगे। ऐक्य स्वराज्य और अन्त में सत्य का एक रूप है अतः इस अन्तिम सत्य की प्राप्ति के निमित्त जहां हिन्दुओं के सम्बन्ध में पूरा अखंड सत्य-जैसा महात्मा जी उसे समझते हैं- कहने में कोई हानि नहीं वहां इस समय मुसलमानों के विषय में अधूरा सत्य कहना ही उचित है।

स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज की शिक्षा

महात्मा जी का पहिला आक्षेप स्वामी श्रद्धानन्द जी पर है। हम इस विषय को व्यक्तिगत विषय नहीं बनाना चाहते अतः स्वामी जी के पक्ष में कुछ न लिखेंगे। स्वामी जी ने स्वयं भी अपने ऊपर लगाये आक्षेपों का कोई उत्तर न देने का निश्चय करके बड़ा अच्छा किया है। सन्यासी का गौरव इसी में है। स्वामी जी आर्य समाज के एक मुख्य नेता और कार्यकर्ता हैं। आर्य समाज के लिये उनके हृदय में जो लगन है वह किसी से छिपी नहीं। उन का सारा जीवन समाज की सेवा में बीता है। समाज के लिये उन का त्याग एक उज्वल उदाहरण है। वह हमारे पूज्य हैं। अतः हमारा उन के पक्ष में कुछ लिखना पक्षपात रहित कदापि न समझा जायगा। परन्तु महात्मा जी ने स्वामी जी को आर्य समाज के साथ इस प्रकार मिला दिया है कि आर्यसमाज की स्थिति स्पष्ट करते हुए स्वामी जी पर लगाये हुए दोषों का स्वयं निरूपण हो जाता है। महात्मा जी लिखते हैं कि "दुर्भाग्य से स्वामी जी यह समझते हैं कि प्रत्येक मुसलमान को आर्य-समाजी बनाया जा सकता है।" भगवन्! यह विश्वास केवल स्वामी जी का ही नहीं वरन् प्रत्येक आर्य समाजी बाल, युवा, वृद्ध, नर और नारी का समान है। न केवल मुसलमानों को ही वरन् हिन्दू, जैन, ईसाई, समस्त संसार को हम आर्यसमाजी बनाना चाहते हैं। हमारा अटल विश्वास है कि एक दिन हम अवश्य सफल होंगे। जिस दिन हमारा यह विश्वास हट जायगा उसी दिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्यसमाज की आवश्वकता न रहेगी । हम अपने समाज मन्दिरों को, अपनी अन्य सारी संस्थाओं को स्वयं अपने हाथों ताला लगा देंगे। आर्य समाज एक सत्य का प्रतिनिधि है। प्रत्येक आर्यसमाजी का विश्वास है आप उस से चाहे सहमत न हों - कि इस सत्य का आश्रय लेकर ही मनुष्यमात्र परमानन्दको प्राप्त हो सकताहै। प्रत्येक प्राणी को इस आनन्द प्राप्ति के योग्य बनाना हम अपना कर्तव्य और जीवन का लक्ष्य समझते हैं। महात्मा जी लिखते हैं 'दुर्भाग्य से'। यह क्यों ? क्या आर्यसमाज की शिक्षा इतनी बुरी है कि जो इस पर चला उस का भाग फूटा ? या इस लिये कि यह असम्भव है । महात्मा जी अहिंसा धर्म के कट्टर पक्षपाती हैं । उन का अटल विश्वास है कि इस के बिना संसार का कल्याण नहीं। उनका प्रयत्न यही है कि प्राणीमात्र को इस धर्ममार्ग पर लाया जाय और उनका विश्वास है कि लाया भी जा सकता है। तो क्या हम यह समझ लें कि महात्मा जी का यह विश्वास दुर्भाग्य सूचक है ? यदि नहीं तो क्या महात्मा जी बतलाने की कृपा करेंगे कि आर्यसमाज के लिये ही यह दुर्भाग्य क्यों है ?

महात्मा जी लिखते हैं कि "स्वामी जी जल्दबाज़ हैं"। इस का उत्तर हम आगे चल कर आर्यसमाज के ही प्रसंग में देंगे ।

स्वामी दयानन्द, सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज

महात्मा जी लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द मेरे लिये सन्मान के पात्र हैं। उन दयानन्द के शील के प्रति महात्मा जी का असीम आदर भाव है। 'उनके ब्रह्मचर्य को मैंने अपने लिये हमेशा अनुकरण योग्य माना है । उन की निर्भयता ने मुझे हमेशा मुग्ध किया है। यह सब होते हुये भी 'सत्यार्थप्रकाश'—जोकि आर्यसमाज की बाइबिल है, इतने बड़े सुधारक की कृति होते हुये—जैसाकि स्वामी दयानन्द थे-बड़ी निराशाजनक है।' 'सत्यार्थ प्रकाश' महात्मा जी के लिये निराशाजनक हो सकती है, परन्तु महात्माजी जब तक इस विषय में कोई दलील न दें हमारे लिये कुछ भी कहना कठिन है । परन्तु यह हमारी समझ में नहीं आया कि यदि स्वामी दयानन्द ऐसे ही महान् हैं जैसा महात्मा जी उनको बतलाते हैं, यदि वह एक वास्तविक सुधारक थे तो उनकी कृति 'सत्यार्थप्रकाश' जोकि दयानन्द के प्रेरक मनोभावों का वास्तविक स्वरूप दिखलाती है किस प्रकार इतनी निराशाजनक हो सकती है ? महात्मा जी कहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने अजान में जैन धर्म, इसलाम और ईसाई मत के अर्थ का अनर्थ किया है । कदाचित् इसी कारण महात्मा जी को सत्यार्थप्रकाश निराशाजनक लगी है । इन धर्मों के संबंध की बातों में महात्मा जी ने दयानन्द के अज्ञान की कल्पना की है। हम महात्माजी को विश्वास दिलाते हैं कि योगीराज दयानन्द ने भूल कर कुछ नहीं लिखा । उन्होंने जो कुछ लिखा खूब सोच बिचार, भली प्रकार छान बीन करके इन धर्मों के आचार्यों से पूछ तांछ कर लिखा है। महात्मा जी की तरह स्वामी दयानन्द ने भी अपनी गुलखलासी का कोई रास्ता रहने नहीं दिया है। स्वामी दयानन्द ने वेद को और एकमात्र वेद को सब सत्य विद्याओं का स्रोत माना है। वह ईश्वर की वाणी है और इस कारण स्वतः प्रमाण है। संसार के प्रचलित धर्म भी या तो वैदिकधर्म के बिगड़े हुये रूप हैं अथवा मनुष्य के मस्तिष्क की कल्पना हैं। इसी लिये उन्होंने प्रत्येक धर्म को वैदिकधर्म की ही कसौटी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर परखा। जो इस पर पूरा उतरा वह सोलह आने सच्चा। शेष में जितना खोट हो वह अवैदिक खोट है और इसका दयानन्द ने घोर प्रतिरोध किया है। महात्मा जी स्वयं लिखते हैं कि 'सब धर्म थोड़े बहुत अंश में सच्चे हैं क्योंकि सब की उत्पत्ति एक ही ईश्वर से हुई है। फिर भी सब धर्म अपूर्ण हैं क्योंकि वह हमें अपूर्ण मनुष्य के द्वारा मिलते हैं" बिल्कुल यही धारणा स्वामी दयानन्द की थी। उन्होंने सब धर्मों में विद्यमान सत्य को ईश्वरदत्त माना है और उनके आगे सिर नवाया है। केवल अपूर्ण मनुष्यों द्वारा सत्य में मिलाई हुई खोट का ही उन्होंने खण्डन किया है। जहां कदाचित् महात्मा जी अपने अन्तरात्मा को ही इस सत्य असत्य के जांचने की कसौटी मानते हैं, वहां ऋषि दयानन्द ने वेद को ऐसा माना है। अन्तरात्मा अपनी परस्थिति के अनुसार भूल कर सकता है उस समय सत्य का निर्णय कैसे हो? ऋषि दयानन्द कहते हैं वेद को देखो—जो वह कहता है वही सत्य है। क्योंकि वेद सत्य प्रभू की कल्याणी वाणी है।

महात्मा जी ने एक और बात लिखी है 'सत्यार्थप्रकाश' आर्यसमाज की बाइबिल है। महात्मा जी का यह लिखना प्रगट करता है कि आर्यसमाज के विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है। "सत्यार्थप्रकाश" आर्यसमाज में एक बड़े मान्य की पुस्तक है परन्तु वह हमारी बाइबिल नहीं। हमा एकमात्र धर्म ग्रन्थ वेद हैं उनके अनुकूल जहां से भी हमें शिक्षा मिलती है वह हमारे लिये मान्य है। "सत्यार्थप्रकाश" हमारे लिये इसी लिये मान्य ग्रन्थ है कि वह वेदानुकूल धर्म का प्रतिपादन करती है। यदि कल को हमें कोई यह सिद्ध करदे कि "सत्यार्थप्रकाश" का अमुक वाक्य वैदिक अर्थ के विरुद्ध है तो हमारे लिये "सत्यार्थप्रकाश" का वह भाग सर्वथा त्याज्य हो जाता है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक गुरू दयानन्द ने वेद को ही सब सत्य विद्याओं का पुस्तक माना और उसी का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का कर्तव्य बतलाया है।

अनुदार और मूर्तिभंजक स्वामी दयानन्द

परन्तु ऐसा करके किंचित् महात्मा जी की सम्मति में "दयानन्द ने सबसे ज्यादह सहनशील और उदार धर्म को तंग बना डालने की कोशिश की है। स्वयं मूर्तिभञ्जक होते हुये भी उन्होंने सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में मूर्ति पूजा की स्थापना की है क्योंकि उन्होंने वेद के एक २ अक्षर को ईश्वर स्वरूप बना दिया है"। हम यहां यह स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि महात्मा जी के लेख का यह अंश हमारी बिल्कुल समझ में नहीं आया। महात्मा जी का यह अभिप्राय कदापि नहीं हो सकता कि दयानन्द ने वेदों का आश्रय लेकर जो हिन्दुओं को जात पांत की ज़ंजीरों को तोड़ने, विधवा की पुकार के सुनने, अछूतों का उद्धार करने की शिक्षा दी इससे हिन्दू धर्म को अनुदार बना दिया। दयानन्द ने कहा है कि सब मनुष्य परमात्मा के अमृतपुत्र हैं अपनी योग्यतानुसार--जो कि उनके अपने स्वतन्त्र कर्मों का फल है--परम पिता के राज्य में सुख भोग के समान अधिकारी हैं। हिन्दू धर्म कहता था कि 'स्त्री शूद्रो नाधीयताम्', दयानन्द ने इस सिद्धान्त का घोर विरोध किया; हिन्दू लोग स्त्रियों और शूद्रों को पैर की जूती समझ, उन पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे। दयानन्द ने उन्हें ऐसा करने से रोका। हिन्दू कहते थे कि हमारा धर्म ही सच्चा धर्म है परन्तु इस सत्य से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई अहिन्दू लाभ नहीं उठा सकता था, दयानन्द ने मुसलमान, ईसाई इत्यादि प्रत्येक के लिये वैदिक धर्म का द्वार खोल दिया। क्या इन कारणों से दयानन्द अनुदार सिद्ध होते हैं। यह सत्य है कि वेद विरुद्ध किसी भी धर्म, सिद्धान्त और आज्ञा के साथ समझौता करना दयानन्द ने त्याज्य बतलाया है और आर्यसमाज दृढ़तापूर्वक ऋषि की इस आज्ञा पर स्थिर है। वह धार्मिक मामलों में समझौता करने को तैयार नहीं। वह विष-मिश्रित अमृत को स्वीकार करने से इन्कार करता है। आचारहीन वाममार्गियों को, कबरें पूजने वाले, मुंह पर थुकवाने वाले, झूठा खाने वाले हिन्दुओं को वह सत्य धर्म से भ्रष्ट समझता है और डंके की चोट ऐसा कहता है। यह सब बातें रखते हुये व्यक्तियों के लिये वैदिक धर्म का दर्वाज़ा बन्द है। क्या महात्मा जी चाहते हैं कि जिसकी जो इच्छा हो वह करता रहे और तिस पर हिन्दू अथवा वैदिक धर्मी कहलाता रहे? अगर यह बात है तो निःसन्देह हम अनुदार हैं; और हमारी दृष्टि संकुचित है, हम ऐसी उदारता को दूर से ही प्रणाम करते हैं। हम अपने पक्ष को महात्मा जी के उदाहरण से ही स्पष्ट करते हैं। आज कल महात्मा जी भरसक यत्न कर रहे हैं कि स्वराज्यपार्टी का कोई भी सदस्य कांग्रेस की कार्यकर्तृ-सभा का सभासद न बन सके। तो क्या महात्मा जी अनुदार हैं? अपने विश्वास पर दृढ़ रहना और उसके अनुकूल जीवन को बनाना दृष्टि को संकुचित नहीं करता, हां हठ से दूसरे की बात को न सुनना, उसपर विचार न करना अवश्य हृदय को संकुचित करता है। परन्तु आर्यसमाज का तो नियम ही यह है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वथा तत्पर रहना चाहिये।

महात्मा जी ने दयानन्द को मूर्तिपूजक ठहराया है, ऐसा क्यों? दयानन्द ने वेद के एक एक अक्षर को सत्यस्वरूप माना है। हमें महात्मा जी क्षमा करेंगे यदि हम बड़े विनीत भाव से उन से प्रार्थना करें कि महाराज आप इस विषय पर कुछ न कहें। वेदों पर सम्मति देने का आप को अधिकार नहीं। यह आप तभी कर सकते हैं यदि आप यह सिद्ध करदें कि वेदों का ज्ञान कई स्थलों पर मिथ्या है। परन्तु ऐसा करना आप के अधिकार से बाहर है। दयानन्द योगी था, संस्कृत का निपुण पंडित था। आपने न वेदों को पढ़ा है और न संस्कृत के पंडित होने का आपका दावा है। फिर आप किस प्रकार दयानन्द के किये हुये वेदार्थ की विवेचना करने का अधिकार रख सकते हैं? दयानन्द जिस समय अपना वेद भाष्य कर रहे थे अनेक स्थलों पर जहाँ उन्हें अपने किये अर्थों में भ्रम प्रतीत होता था वह रुक जाते थे, इस अवस्था में वह योग समाधि द्वारा ही अपने भ्रम को दूर करने में समर्थ होते थे। उनकी संस्कृत की विद्वत्ता अद्वितीय थी। उनके वेदार्थ की शैली एक वैज्ञानिक शैली है। श्री अरविन्द घोष संस्कृत के महान् पंडित हैं। उनका मत है कि वेदों का यदि ठीक २ अर्थ होसकता है तो वह दयानन्द की ही शैली से। महात्मन्! आप हमें क्षमा करेंगे यदि इस विषय में हम आप की अपेक्षा श्रीयुत घोष महाशय के वचनों को अधिक मान दें। हम नहीं समझते किस प्रकार दयानन्द ने वेदों को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मान कर मूर्तिपूजा के सूक्ष्म रूप की स्थापना की।

"सत्यार्थप्रकाश" आर्यसमाज के लिये मान की वस्तु नहीं।

आगे चलकर महात्मा जी लिखते हैं कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आजकल जो आर्य्यसमाज की गति है वह "सत्यार्थप्रकाश" के कारण नहीं, वरन् उसके संस्थापक के महान् और उदात्तशील की बदौलत है। महात्मा जी स्वयं मानते हैं कि आर्य्यसमाज ने देश जाति और धर्म की बड़ी सेवा की है, जहां कहीं आर्यसमाजी हैं वहां जीवन और चेतना है। परन्तु इसका कारण स्वामी दयानन्द के विमल जीवन को ठहराते हैं। भगवन! किसी भी महापुरुष का जीवन तभी हितकर होसकता है यदि हम उससे शिक्षा ग्रहण कर उस पर चलने का यत्न करें, उसके सदुपदेशों को कार्यरूपमें परिणत करें। स्वामी दयानन्द का जीवन उनके विचारों का प्रतिबिम्ब था। किसी भी महापुरुष के जीवन को आप उसके विचारों से पृथक् नहीं कर सकते। वह अपने विचारों की सृष्टि में निवास करता है और उन्हीं के अनुकूल अपना आचरण बनाता है। यह बात हो नहीं सकती कि अशुद्ध विचार शुद्ध जीवन के प्रवर्तक हों। यह तो वही बात है कि सूर्य प्रकाशमय है परन्तु अन्धकार का कारण है; गंगा जल शान्तिदायक है परन्तु वह कड़वा और गरम है। दयानन्द वही था जो उसके विचार थे; उसके विचार वही थे जिनके अनुकूल वह कर्म करता था, उसके कर्म ही उसके शील का कारण हैं। दयानन्द के विचार "सत्यार्थ प्रकाश" में बन्द हैं। यदि आप दयानन्द के जीवन को समझना चाहते हैं तो "सत्यार्थ-प्रकाश" को अवश्य पढ़ना पड़ेगा। "सत्यार्थ-प्रकाश" में ऋषि ने संक्षेप से वैदिक जीवन का तत्त्व और आदर्श समझाया है। दयानन्द क्यों इतना महान् था इसका उत्तर "सत्यार्थप्रकाश" ही दे सकता है। दयानन्द "सत्यार्थप्रकाश" है और "सत्यार्थप्रकाश" दयानन्द। आप दोनों को अलग नहीं कर सकते। आर्यसमाज का मान दयानन्द से है क्योंकि वह दयानन्द के "सत्यार्थप्रकाश" में बतलाये वेदमार्ग का अनुसरण कर रहा है।

झगड़ा करना और खण्डन आर्यसमाजियों के गुण हैं।

फिर महात्मा जी लिखते हैं कि आर्य-समाजी विवाद-प्रिय हैं; उनके उपदेशकों को खण्डन में बड़ा आनन्द आता है। आर्यसमाज खण्डन से नहीं घबराता वरन सत्य स्थापना के लिये इस को परम आवश्यक समझता है। धर्मराज्य हो ही नहीं सकता, यदि पाप राज्य का नाश न किया जाय। भूमि में बीज बोने से पहिले उसके भीतर से रोड़े, कंकड़ अवश्य बाहर निकालने होंगे; घास फूंस अनावश्यक और हानिकारक वनस्पतियों को अवश्य उखाड़ बाहर करना होगा। यही सिद्धान्त आर्यसमाज का है, इसी के अनुकूल उसके उपदेशक श्रोताओं के मनों में शुद्ध भाव डालने से पहिले उनके दिल में पहिले से विद्यमान भ्रममूलक, कुतर्क-निर्भर भावों को बाहर निकालना आवश्यक समझते हैं और क्योंकि यह झूंठे विचार एक प्रकार से मन में जड़ पकड़ गये हैं इसलिये इन्हें समूल उखाड़ने में बड़े बल का प्रयोग करना पड़ता है। इस बल प्रयोग से लोग घबरा उठते हैं और चीत्कार करने लगते हैं, परन्तु होश में गन्दे पीपमय फोड़े को चीरा देते समय कौन व्यक्ति डाक्टर से प्रसन्न होता है? तब क्या डाक्टर अपना काम करना छोड़ दे? आर्यसमाज को इतनी खण्डन की क्यों आवश्यकता पड़ी यह ठीक २ जानने के लिये हमें उस समय की अवस्था को न भूल जाना चाहिये जब कि आर्यसमाज का जन्म हुआ था। अंग्रेज़ी सभ्यता ने हमारी आंखों को चकाचौंध कर दिया था, पादरियों और मुसलमान प्रचारकों के आक्रमणों ने अपने धर्म से हमारा विश्वास हटा दिया था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने पूर्वजों को हम लकड़हारे और पनिहारे ही समझते थे। वेद और शास्त्रों को हम जंगलियों की बिलबिलाहट से अधिक दर्जा न देते थे, अपना रहन सहन छोड़ विदेशियों की नकल कर अपने को कृतकृत्य मानते थे। हिन्दुस्थानी इतिहास निकम्मा, हिन्दुस्थानियों के पूर्वज असभ्य जंगली, उनका धर्म ग़लत, उनका रहन सहन बेढंगा, उनका आचार व्यवहार निन्दनीय, यहां तक कि भारतीय रमणियां भी घृणित होरही थीं। काले चमड़े वाला साहब बनने में ही हम अपना गौरव समझते थे। मुसलमानी सभ्यता में मुसलमानों ने हम पर जो प्रहार किया वह हमारे शरीर पर था, वह केवल बलात् ही हमें मुसलमान बनाते रहे थे, हमारे मनों को न जीत सके थे; परन्तु अंग्रेज़ी सभ्यता में अब हमने आत्मसमर्पण कर दिया हुआ था। ऐसी अवस्था में ईसाइयों और मुसलमानों ने हिंदुओं को एक तर मवाला समझा और दबादबी हड़प करने लगे। हिन्दू घटने लगे, ईसाई और मुसलमान बढ़ने लगे। विनियुक्त स्वार्थ के पक्षपाती हमारे धर्म नेताओं ने उस समय आंखें मूंद लेना ही अपना कर्तव्य समझा। यह अवस्था थी जब कि आर्यसमाज ने जन्म लिया। इस कड़े समय में हिन्दू धर्म की, हिन्दू जाति की, आर्य सभ्यता की यदि किसी ने रक्षा की तो वह आर्यसमाज था। उसने नदी का रौ फेर दिया। जो आक्षेप ईसाई पादरी और मुसलमान वाअज़ हमारे धर्म पर करते थे उनका मुंह तोड़ जवाब दिया। जो दोष यह हम पर लगाते थे उन को उन्हीं के इतिहास और धर्मग्रन्थों के आधार पर आर्यसमाज ने उन्हीं पर घटा कर सिद्ध किया कि इन धर्मों की शिक्षा सत्य पर निर्भर नहीं। ऐसा करने में आर्य समाज ने केवल Physician heal thyself (वैद्य महाशय पहले अपना तो इलाज करो) के सिद्धान्त पर अमल किया। इस समय यदि आर्यसमाज खण्डन न करता तो कोई बतला सकता है कि वह क्या करता? जब घर के चारों ओर आग लग रही हो, चोर उचक्के इस सुअवसर को पाकर घरबार की सामग्री लूट रहे हों तो क्या कोई घर के भीतर बैठ कर परमात्मा का ध्यान कर सकता है या आत्म उन्नति कर सकता है? जब आप ही न रहे तो उन्नति किसकी? परन्तु आज यह अवस्था इतनी भयानक नहीं है और इसी लिये "आर्यसमाजी उपदेशक दूसरे धर्मों की आलोचना करना भूल गया है। उसकी शक्तियां जाति के रचनात्मक कार्य में अधिक लगती हैं।" परन्तु भगवन्! हमें अपना कार्य करने नहीं दिया जाता। हम अपने किये पापों का प्रायश्चित्त कर अपनी भूलों को सुधारना चाहते हैं परन्तु हमें बीच में ही रोक दिया जाता है। हम अपने "अछूत" भाइयों को गले लगाने को आगे बढ़ते हैं, मौलाना मुहम्मदअली बोल उठते हैं "आधे आधे बांटलो" मानो यह भी गाजर मूली हैं; हम अपने मलकाने भाइयों को—जिन्हें हमने मूर्खता से अपने से अलग कर दिया था—उनके पुनः अधिकार देने को तय्यार होते हैं—समस्त मुस्लिम भारत हाथ धो हमारे पीछे पड़ जाता है। ऐसी अवस्था में आप ही बतलाइये हम क्या करें? क्या आंखें बन्द कर चुपचाप बैठ जायें, या खुली आंखें परन्तु संज्ञाहीन की भांति हम अपने दिल के टुकड़ों को अलग होने दें और चूं न करें। यदि चुप रहें तो अपना नाश अपने सामने देखें, यदि बोलें तो आप हमें विवादप्रिय, झगड़ालू और खण्डनप्रिय कहते हैं। करें तो क्या करें। आप ही बतलाइये?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आर्यसमाजी और स्त्रियों का भगाना

आर्यसमाजी मुसलमान स्त्रियों को भगा कर ले जाते हैं! शिव! शिव। हमारी आँखें क्यों न फूट गयीं जिस दिन उन्होंने महात्मा जी की लेखनी से यह वाक्य देखे। महात्मा जी और यह इल्ज़ाम! इसकी तो स्वप्न में भी कल्पना न थी। अबतक का हमारा पिछला तजरुबा यही कहता है कि महात्मा जी ने कोई ऐसी बात न कभी लिखी और न कभी कही है जिसके लिये उनके पास पूरा २ सबूत न हो। परन्तु शोक यहां पर ऐसा नहीं। महात्मा जी ने अपने विचार की पुष्टि में कोई प्रमाण नहीं दिया आप लिखते हैं "मैंने सुना है"। तब क्या, जैसा कि मोपलों के सम्बन्ध में कही हुई डाक्टर सय्यद मुहम्मद की बातों पर विश्वास कर लिया, आपने इस पर विश्वास कर लिया? यदि नहीं तो क्या "यद्यपि मुझे इस पर विश्वास नहीं" यह चार शब्द उसके साथ जोड़ देते तो उचित न था? आप १२ जून के यंग इन्डिया में लिखते हैं कि "मैंने तो जो बात कान पर आई उसे कह कर दोनों फरीक को यह मौक़ा दे दिया है कि वह इस इल्ज़ाम को झूठ साबित करें। भगवन्! यह किस प्रकार? क्या आपने कोई उदाहरण दिया जिसे हम झूठा सिद्ध करें। आपको सन्देह है कि आर्य समाजियों ने ऐसा किया हो। आपको आर्य समाजियों ने विश्वास दिलाया कि यह असत्य है फिर आपको विश्वास क्यों नहीं आता? डाक्टर सय्यद महमूद पर इतना विश्वास और हम ग़रीबों पर इतना अविश्वास! शोक हमें आपकी न्यायपरता समझ में नहीं आती।

हमने संक्षेप से महात्मा जी के लगाये दोषों का उत्तर दे दिया। एक बात और महात्मा जी ने कही है। आर्यसमाजी बड़े जल्दबाज़ हैं, उतावले हैं, असहिष्णु हैं। सम्भव है हम ऐसे ही हों। गतवर्ष एक सिक्ख सज्जन ने सिक्खों के विषय में इस से भी बढ़कर बात कही थी। उसने कहा था कि सिक्ख एक बारूद का ढेर हैं जो कि ज़रा दियासलाई दिखलाई और झट भक से उड़ गया। मुसलमानों के विषय में महात्मा जी स्वयं मानते हैं कि बात २ में उनकी तलवार म्यान से बाहर निकलने को उतावली रहती है। और यह बात पंजाब के आर्य, सिक्ख और मुसलमानों में अधिक पाई जाती है। पंजाब में ही आर्यसमाज का अधिक प्रचार और अधिक ज़ोर है अतः बाहर वालों की दृष्टि में पंजाबी आर्य-समाजियों को सन्मुख रख कर आर्यसमाज की तुलना की जाती है। इसी कारण जो प्रान्तीय दोष हमारे में हैं वह भी आर्यसमाज के सिर मढ़ दिये जाते हैं। यह कहना कि आर्यसमाज भी इन दोषों को ठीक नहीं कर सका कदाचित् अधिक ठीक होता, परन्तु यह कहना कि आर्यसमाजी होने के कारण उन में यह दोष हैं ठीक नहीं। यह बहुतों का मत है कि पंजाबियों के विचार और कार्य में बहुत कम अन्तर होता है। जहां जो उनके मन में आया वह झट उसे कार्य में लाने के लिये तत्पर होजाते हैं। यह पंजाबियों का ऐसा स्वभाव होने के कारण है। पंजाब आरम्भ से ही सैनिक प्रान्त रहा है। एशिया से जितने भी आक्रमण भारत पर हुये उन सब में पहली तलवार पंजाब ने ही अपनी छाती पर ली। भारत का क्षत्रिय प्रान्त होने के कारण इस में क्षत्रियत्व का होना आवश्यक था। यही कारण है कि प्राचीन समय में भी और मुसलमानी काल में भी पंजाब कभी विद्या का केन्द्र नहीं बना, न ही यहां किसी विचारक ने जन्म लिया। परन्तु इसने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शत्रु की तलवार को अपने सीने पर खाकर भारत के अन्य प्रान्तों को इस योग्य अवश्य बनाया, ऐसी अवस्था में कुछ २ उतावलापन पंजाबी स्वभाव में आजाना आवश्यक था। और फिर भारतव्यापी धर्मयुद्ध में भी तो पंजाब ने क्षत्रिय वीर का धर्म निभाया है। यह सौभाग्य पंजाब को ही प्राप्त है कि मुसलमानों और ईसाइयों के धार्मिक आक्रमणों का उत्तर दे। पंजाबी स्वभाव के उतावलेपन का यह कारण है। परन्तु जहां यह उतावलापन दोष है वहां यह गुण भी तो है। यह इसी स्वभाव का फल है कि महात्मा जी को अहिंसात्मक असहयोग का सब से उज्वल क्रियात्मक उदाहरण पंजाबी अकाली वीरों ने ही अपने चरित्र से दिया है। .....

आर्यसमाजी तुनक मिज़ाज हैं। इस विचार की पुष्टि में महात्मा जी १२ जून के यंग इन्डिया में उन प्रस्तावों, लेखों और गुस्से (protest) की झड़ी को पेश करते हैं जो कि इस विवाद में आर्यसमाजियों की ओर से उनके विरुद्ध लग गई है। प्रभु! आप का उदाहरण ठीक नहीं। इस मामले में आप आर्यसमाजियों पर जल्दबाज़ी का दोष नहीं लगा सकते। आर्यसमाज रूपी माता से जन्म लेकर माता की ही गोद में आर्यसमाजियों ने अपना बाल्यकाल बिताया, उसी माता के दूध से उनका पालन पोषण हुआ, उसी माता की छत्रछाया में वह युवा और वृद्ध हुये, और उसी की गोद में वह परगति पाने के इच्छुक हैं। माता का खून उन की नस नस में चक्कर लगा रहा है। माता के दिये हुये विचार ही उनके मस्तिष्क में विद्यमान हैं। माता से इतना गहरा सम्पर्क होने के कारण हम जानते और इतनी अच्छी तरह जानते हैं कि और कोई नहीं जानता, कि हमारी मां कितनी महान् है, उसका हृदय कितना कोमल है, उसके भाव कितने शुद्ध हैं, उसका स्नेह कितना उच्च है, उसका प्रेम भी कितना मीठा है और उसका त्याग कितना अद्वितीय है। हम अपनी माता की रग रग को और नस २ को जानते हैं। हमें यह सोचनेकी आवश्यक्ता नहीं कि वह क्या है! उसका निर्मल उज्वल शुद्धस्वरूप सदा हमारी आंखों के सामने है। यदि उस पर कोई दोष लगाया जाता है तो हम तत्काल जान जाते हैं कि इसमें कितनी वास्तविकता है। यदि वह दोष निर्मूल है तो उसे समझने में देर नहीं लगती। यही कारण है कि आपने जो आर्यसमाज पर दोष लगाये उनका वास्तविक मूल्य समझने में हमें देरी नहीं लगी। अतः आपके दोषों का तत्क्षण विरोध हमारी तनुक मिज़ाजी का सबूत नहीं।

भगवन्! क्रिया और प्रतिक्रिया समस्त प्राणी जाति का गुण है। आप छुई छुभोएं। यदि शरीर में जीव और प्राण हैं तो आपको तत्क्षण उत्तर मिलेगा, यदि शरीर मुर्दा है तो तलवार से काटने पर भी कुछ न बनेगा। यही दशा मानसिक जीवन की है। जो सभा या सुसाइटी मुर्दा है, संज्ञाहीन है, उसपर कितने भी आक्रमण हों कोई उत्तर नहीं मिलेगा। उसकी अवस्थामें उत्तर का न मिलना उसकी सहिष्णुता का आवश्यकीय द्योतक नहीं। आर्यसमाज एक जीवित-जागृत संस्था है। इसमें युवा काल का रक्त प्रवाह बह रहा है। यदि कोई इस से टक्कर लेगा तो यह सृष्टि नियम के अनुकूल आक्रमण को अवश्य रोकेगा। दल बल से रोकेगा। क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होगी। इसे आप तनुक मिज़ाजी कहें, असहिष्णुता कहें, जो चाहें कहें यह जीवन का प्राकृतिक लक्षण है।

हमारा काम समाप्त हो गया। अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार हमने आर्यसमाज की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने का यत्न किया है यदि इसमें हमसे कोई भूल हो गई हो तो हमें उसके लिये हार्दिक पश्चात्ताप होगा। एक बात अन्त में और लिख कर हम अपनी विचारमाला को समाप्त करते हैं। आर्यसमाज निर्दोष है, परन्तु सारे आर्यसमाजी भी ऐसे ही हैं यह हम नहीं मानते। व्यक्तिगत रूप से हम में से अनेकों में अनेक दोष हैं। महात्मा जी के बतलाये हुये दोष भी हैं और उनके अतिरिक्त और कितने ही दोष होंगे, परन्तु इनका कारण हमारी अपनी वैयक्तिक दुर्बलता है, आर्यसमाज की शिक्षा नहीं। हमारी निजी कमजोरियों से उत्पन्न दोषों को संस्था के सिर मढ़ना ठीक नहीं। हमारा कर्तव्य है कि महात्मा जी ने हम पर जो दोष लगाये हैं उन पर विचार करें और जहां तक वह हम में हों उन को दूर करने का यत्न करें, उनके अतिरिक्त और भी जो हम में दोष हैं और जिन से हम परिचित नहीं उनका भी संशोधन करें। महात्मा जी से यही प्रार्थना है कि इस आत्मशुद्धि के लिये हमें आशीर्वाद दें और उस पतितपावन जगन्नियन्ता से याचना है कि हमें बल दें, बुद्धि दें जिससे हम सत्यार्थ से कभी विचलित न हों।

जीवन-ज्योति

लेखक-श्री० हरिशङ्कर शर्म्मा कविरत्न

जीवन की ज्योति जगादो

अघ—अनाचार का क्षय हो, आशा से भरा हृदय हो,
वेदों का भानु उदय हो, ऐसा शुभ दृश्य दिखादो,
जीवन की ज्योति जगादो।

सब सदाचार में रत हों, फैले न अनेकों मत हैं,
सत्कर्म करें, उन्नत हैं, वह शिक्षा-सुधा पिलादो,
जीवन की ज्योति जगादो।

बन वीर, न हिम्मत हारें, प्राणों को प्राण पर वारें,
सद्धर्म सदा विस्तारें, सुखमूल सुरीति सिखादो,
जीवन की ज्योति जगादो।

आदर्श बनें गृहजीवन, हैं निर्मल प्यारे तन मन,
परहित साधन ही हो धन, ऐसा सन्मार्ग सुझादो,
जीवन की ज्योति जगादो।

पहला सा गौरव पावें, बिछुड़ोंको फिर अपनावें,
पतितों को गले लगावें, मिथ्या भय-भाव भगादो,
जीवन की ज्योति जगादो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तमाखू

लेखक—श्रीयुत प्रो० रामशरण सक्सेना एम० एस० सी०

तमाखू का पौदा पहिले पहिल अमरीका में बोया जाता था। कहते हैं कि स० १४९२ ई० में जब कोलम्बस अमरीका के समीप क्यूबा द्वीप में पहुँचा तो उसने देखा कि यहां के जंगली लोग तमाखू की पत्ती में आग लगा कर पीते और मुख तथा नासिका से धुआं बाहर निकालते थे। कोलम्बस तमाखू का पौदा अमरीका से यूरप में लाया। वहां से मुसलमानों द्वारा यह एशिया में पहुंचा। लोग इसके कुछ ऐसे मतवाले बने कि बिना किसी सोच विचार के बहुतों ने इसे गृहण किया और बड़ी ऊंची पदवी पर पहुँचाया। यहां तक कि आज कल भारतवर्ष के कोने कोने में यह बोया जाता है और सिख लोगों की थोड़ी सी संख्या छोड़ कर देश के समस्त लोग इसका सेवन करते हैं। कहीं २ पर तो इसका प्रचार इतना बढ़ गया है कि स्त्रियां भी हुक्का पीती हैं। छोटे २ बच्चे तो प्रायः बहुत से स्थानों में पीते ही हैं। कुछ लोगों में भ्रम से फैल गया है कि इसके धुएं से बहुत से रोग विनष्ट हो जाते हैं और इसलिये बहुत से माता पिता नन्हें बालक के मुंह में तमाखू का धूआं केवल इस लिये छोड़ते हैं कि वह मसान इत्यादि के रोग से सुरक्षित रहे।

तमाखू पीने, खाने, सूंघने और लेप करने के कामों में आता है। इसके पीने की वर्तमान काल में दो विधियां हैं एक पुरानी हुक्के द्वारा पीने की, दूसरी नवीन चुरट, सिगरट, बीड़ी इत्यादि के रूप में पीने की। जो लोग इसे हुक्के द्वारा पीते हैं वह तमाखू में गुड़ का शीरा मिलाकर खूब कूटते हैं फिर इस कूटे हुये तमाखू को चिलम में जलाकर इसका धूआं खींचते हैं, जो हुक्के के पानी में से गुज़र कर नली द्वारा होता हुआ मुख में प्रविष्ट होता है। अंत में उसे श्वास द्वारा मुख तथा नासिका से बाहर निकाल देते हैं। इस विधि से बहुत से घुलन शील गैस जो तमाखू के धुएं में उपस्थित होती है पानी में घुल कर कम हो जाती है। नवीन विधि के अनुसार तमाखू पीने में परिश्रम तो कुछ नहीं करना पड़ता अपितु तमाखू से उत्पन्न हुई सम्पूर्ण गैसें मुख द्वारा सीधी शरीर में पहुँचती हैं। पीने का तमाखू नाना प्रकार का बाज़ार में बिकता है। जो तमाखू बहुत तेज़ होता है उसे लोग बड़े चाव से मोल लेते और पीते हैं और दूर २ से कड़वा तमाखू मंगाते हैं। बहुत से सुगंधित खमीरे के तमाखू भी मिलते हैं जिनके लिये लखनऊ बड़ा प्रसिद्ध है। उसी प्रकार सिगार और सिगरिट भी विविध प्रकार की बाजारों में मिलती हैं शौकीन लोग हुक्के तथा सिगार पर अपना पर्याप्त धन व्यय करते हैं।

पीने के सिवाय तमाखू पान के साथ खाया भी जाता है। कहीं पर तो इसका प्रचार इतना बढ़ गया है कि घर २ में स्त्री पुरुष दोनों ही पान चबाते हैं और साथ ही तमाखू का प्रयोग करते हैं। पान के साथ तमाखू का कुछ ऐसा संबन्ध सा हो गया है कि ऐसे लोग कम मिलेंगे जो केवल पान ही खाते हों और तमाखू नहीं खाते। पीने का तमाखू भी नाना प्रकार का बाज़ार में मिलता है। यह पत्ती, चूर्ण, दाना, गोली, और शीरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के रूप में बिकता है। इसके भी शौकीन लोग बड़े दीवाने होते हैं।

कुछ प्रान्तों में ऐसे लोग भी मिलते हैं जो न तो तमाखू खाते हैं और न पीते हैं परन्तु नासिका द्वारा सूंघते हैं। उनके पास सदैव ही हुलास शीशी में बन्द रहती है और दिन भर सूंघते हैं। हुलास चूर्णरूपमें बिकता है और इसके भी बहुत से नमूने पाये जाते हैं।

तमाखू की पत्ती में कई एक ऐन्द्राइकक्षार (Alkaloid) होते हैं जिनमें से मुख्य निकोटीन [Nicotine] है यह देखनेमें तैल जैसा द्रव होता है जिसमें अप्रियगंध आती है और जो पानीमें घुल जाती है। इसकी मात्रा २ प्रतिशतक से ८ प्रतिशतक होती है। साधारणतया निकोटीनकी मात्रा ६ या ७% होती है। यह अत्यन्त ही विषैला पदार्थ है। इसकी जितनी अधिक मात्रा तमाखू में उपस्थित होती हैं तमाखू उतना ही अधिक कड़ुआ और उत्तम गिना जाता है। लोग उसे उतनाही अधिक पसन्द करते हैं।

निकोटीन (Nicotine) पर बहुतसे परीक्षण हुये हैं। उन्होंने यही सिद्ध किया है कि यह बड़ा घातक विष है। इसके $\frac{१}{६०}$ ग्रेन से कुत्ता १० मिनिट में मर जाता है। इस विष से मनुष्य ३० सैकिन्ड में ही मरते देखे गये हैं। विश्लेषण करने से पता लगा है कि एक पौन्ड या आध सेर तमाखू में ३८० ग्रेन या २ तोले १॥ माशे निकोटीन (Nicotine) उपस्थित होती है और वह इतना विष है कि यदि आध सेर तमाखू इस भांति पिया जावे कि उसका पूरा २ असर हो तो उस से ३०० मनुष्यों की मृत्यु हो सकती है। सिगार के विषय में भी यही है कि यदि एक सम्पूर्ण सिगार एक साथ पिया जावे तो वह दो मनुष्यों की जान का घातक हो सकता है। जब छोटे बच्चों के मारने की प्रथा प्रचलित थी तो स्त्रियां हुक्के की चीकट बच्चे के मुख में रख दिया करतीं थीं। चीकट में निकोटीन उपस्थित होने के कारण बच्चे की तत्काल मृत्यु हो जाती थी। जहां सांप अधिक निकलते हैं वहां के लोग सांप के मुख में हुक्के की चीकट डालकर मार डालते हैं। निकोटीन सांप के लिये बड़ा तीव्र विष है जिससे सांप की मृत्यु तत्काल ऐसे हो जाती है जैसे बिजली के गिरने से। अफ़रीका की कुछ जातियां सांप को तमाखू के तैल से ही मारती हैं जिसे यह पत्तियों को गरम करके निस्सारण द्वारा प्राप्त करतीहैं। उससे और अन्य हानिकारक कीटाणु भी मारे जाते हैं। हुक्के के पानी में निकोटीन घुली होने के कारण विशेष प्रकार की अप्रिय गन्ध आती है और यह कीटाणु इत्यादि मारने के काम आसकता है। यह तो सब हुक्के पीने वाले जानते हैं कि हुक्के का पानी ऐसी जगह नहीं फैंकना चाहिये जहां मनुष्य गुजरते हैं क्योंकि उस के वाष्प का आंखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और रतौंदी आने लगती है अर्थात रात के समय दीखना बंद हो जाता है।

तमाखू का विष इतना तीव्र होता है कि यदि कोई इसे हुक्के या सिगरट द्वारा पिये भी नहीं केवल इसके हलके धुयें में दो चार मिनिट बैठने से मूर्छित हो जायगा। यह देखा गया है कि जो लोग तमाखू नहीं पीते वह यदि हुक्के का धुआं सूंघलें तो उनको तत्काल उल्टी (कै) आजाती है और शरीर चक्कर खाने लगता है। जहां तमाखू बोया जाता है उसके खेतों के किनारे २ थोड़ी देर तक घूमने से मूर्छा आजाती है। यदि तमाखू की पत्ती गरम करके पेट पर बांध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ली जावे तो थोड़े समय में ही जी मिचलाने लगता ह, उल्टी होने लगती है और मनुष्य की बुरी अवस्था हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि तमाखू कितना विषैला पदार्थ है।

तमाखू को जब जलाते हैं तो इसके धुंये में निकोटीन (Nicotine) के सिवाय और भी कई विषैले पदार्थ होते हैं जिनमें से मुख्य यह हैं:—

पाईरिडन (Pyridine), पिकौलीन (Picoline); उदगन्धिद (Sulphuritted hydrogen) कर्बनिक ऐसिड गैस (Carbondioxide) कर्ब एकऔषित (Carbon monoxide) उदसायनिकाम्ल (Hydrocyanic acid) इत्यादि। इनके पृथक २ गुण बताने की आवश्यक्ता नहीं। यह कहना पर्याप्त है कि यह विषैले पदार्थ वाष्परूप में जब शरीर के अन्दर प्रविष्ट होते हैं तो इनका बहुत कुछ अंश खून में मिलकर शरीर में ही रह जाता है, जो नाना प्रकार के रोगों का उत्पादक होता है। विषैला खून होने के कारण शरीर का रंग पीला पड़ जाता है, आंखों से पानी बहने लगता है, खांसी आने लगती है, जिस से बार २ थूकना पड़ता है इत्यादि। उदसायनिकाम्ल (Hydrocyanic acid) की तनिकसी मात्रा ही जीवन की घातक होती है। ज्वार के खेतों में जब तक वर्षा नहीं होती पशुओं को नहीं चरने देते, क्योंकि उसकी कोंपल में कुछ अंश इसी अम्ल का होता है जिसको गांव के लोग भौंरी के नाम से कहते हैं और जिसके खाते ही क्षण भर में पशु मर जाते हैं। कर्बन एक औषिद (carbon monoxide) भी ऐसा ही विषैला गैस है। जो लोग कमरे में आग जलाकर दरवाज़ा बन्द करके सो जाते हैं सुबह को प्रायः मरे हुए पाये जाते हैं। ऐसी मृत्युओं की रिपोर्ट डाक्टरी की पत्रिकाओं में पाई जाती है। उदगन्धिद (sulphuretted hydrogen) भी विषैला गैस है। यह सब बातें इसकी पुष्टी करती हैं कि तमाखू का धुंआं कितना विषैला है।

जो लोग तमाखू को चिलम में जलाकर और धुयें को हुक्के के पानी में से गुजार कर मुख द्वारा भीतर ले जाते हैं उन्हें सिगरेट और बीड़ी पीने वालों की अपेक्षा कम हानि होती है क्योंकि धुयें को मुख तक पहुंचने से पूर्व बहुत चलना पड़ता है जिस से बहुत से घुलनशील पदार्थ पानीमें घुल जाते हैं, कुछ ठंढे होकर नलों में चीकट के रूप में जम जाते हैं, कुछ नहचे का कपड़ा चूस लेता है, और शेष भाग शरीर के अन्दर प्रविष्ट करता है, फिर इस का जो कुछ अंश रक्त चूस लेता है वही हानि का कारण बनता है। सिगरेट पीने वाले के जले तमाखू से उत्पन्न हुई सम्पूर्ण गैसें सीधी शरीर में प्रविष्ट होती हैं जो बड़ी हानि पहुंचाती हैं। जो तमाखू खाते या नासिका द्वारा सूंघते हैं वह भी बड़ी हानि उठाते हैं। डाक्टरों का मत है कि तमाखू का विष केवल पीने, खाने, या सूंघने वालों को ही नहीं सताता अपितु उनकी संतान तक को भी हानि पहुंचाता है।

जब लोगों को तमाखू पीने की आदत पड़ जाती है तो बिना उसका सेवन किये न तो उन्हें भोजन ही पचता है, और न शौच ही आता है, और इससे लोग यह समझने लगे हैं कि पाचन शक्ति बढ़ाने अर्थात् बदहज़मी दूर करने के लिये तमाखू बड़ी उत्तम दवा है। परन्तु डाक्टरों के अनुभव में यह बात आचुकी है कि प्रायः तमाखू का प्रयोग पाचन शक्ति की निर्बलता का कारण होता है। यह बात तो सिद्ध हो चुकी है कि जितने भी नशे के पदार्थ हैं वह शरीर में पहुंच कर अंतड़ियों में उत्पन्न हुये उस रस की मात्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को कम कर देते हैं जो पाचन में विशेष सहायता करता है, साथ ही वह मेदे की चैतन्यता में निर्बलता उत्पन्न कर देता है जिसका स्पष्ट परिणाम पाचन शक्ति की निर्बलता होती है। तमाखू इस अंश में विशेष रूप से हानि पहुंचाता है। हुक्का पीने वालों को जब भूख लगती है तो हुक्का पीने से भूख नष्ट होजाती है। यद्यपि शरीर को उस समय भोजन की आवश्यकता तो होती है परन्तु उसके लिये रुचि नहीं रहती जिसका परिणाम शरीर की निर्बलता होती है, इसका कारण डाक्टर लोग यह बताते हैं कि तमाखू के प्रभाव से मेदे (Stomach) की चैतन्यता विनष्ट हो जाती है जिस से पाचन शक्ति में निर्बलता आजाती है। जो लोग तमाखू सूंघते हैं तो इसी प्रकार की अवस्था नासिका में उत्पन्न हो जाती है और फिर इसके सहयोग से मेदे तक अचैतन्यता जा पहुंचती है।

डाक्टरों का मत है कि लकवे (Paralysis) का रोग देशों में जो इतना बढ़ रहा है इसका मूल कारण प्रायः तमाखू का प्रयोग है। तमाखू के प्रयोग से आंखों की शक्ति भी निर्बल होजाती है जिसके कारण भिन्न २ रंगों में भेद करना असम्भव हो जाता है। इस रोग को Colour blindness कहते हैं। इस रोग के रोगियों की संख्या नित्य बढ़ने का मुख्य कारण तमाखू का प्रयोग बतलाया जाता है।

उक्त बातों से स्पष्ट है कि तमाखू कैसा विषैला पदार्थ है जिस से छोटे, बड़े, स्त्री, पुरुष सब को ही बचना चाहिये। लोगों को हानि से बचाने के लिये डाक्टर महोदयों ने बहुत से संयम पट (Temprance chart) प्रकाशित किये हैं जिन में स्पष्टरूप से यह बताया गया है कि तमाखू के प्रयोग से रक्त, आंख, दिल, दिमाग़ इत्यादि पर उसका कैसा बुरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षा विभाग के बड़े अधिकारियों की ओर से अध्यापकों तथा उपाध्यायों को विशेष हिदायत होती है कि वह लड़कों को तमाखू पीने से रोकें। भारतवर्ष में तमाखू का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि जब तक प्रत्येक व्यक्ति विशेष यत्न न करे तब तक इसकी जड़ उखड़ना बड़ी कठिन है। इस लिये जातीयता के लिये सम्मान रखने वाले प्रत्येक देश हितैषी का कर्त्तव्य है कि वह नवयुकों को तमाखू के प्रयोग से बचावें।

भानु-भुवन या मोहन-माया

अनुवादिका—कुमारी सुमित्रादेवी जलविद्

पात्र पुरुष

अम्बालाल सेठ—बम्बई के एक धनी मत-पत्नीक, वानप्रस्थ आश्रमी सज्जन, गांधी के अनन्य भक्त बनकर साबर-मती के तीर पर रहने वाले एक गृहस्थ, पत्नी के स्वर्गवास के पश्चात् अहमदाबाद में आ बसे थे।

नरोत्तमदास—अम्बालाल के दामाद, मधुरी के पति, गुजरात कालिज में रसायन-शास्त्र के अध्यक्ष।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साराभाई—विद्याभ्यास के लिये बचपन से विलायत में रहने वाला अम्बालाल का इकलौता पुत्र। पाश्चात्य सभ्यता के रंग से रंजित नकली युरोपियन जेंटलमैंन।

मोहनदास—नरोत्तमदास का बालमित्र, एक अनुभवी नरसिंह।

जीवराज—अहमदाबाद के प्रसिद्ध वैद्य।

हीरासिंह—पंजाब के एक बड़े प्रतिष्ठित जागीरदार, असहयोगी पुत्रके पिता। न्हानालाल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, सी. एफ. एन्ड्रूज़, अनूपराय इत्यादि।

स्त्री

मायावती—सेठ अम्बालाल की बहिन, काव्य कल्पना में पागल ललना।

मधुरी—सेठ अम्बालाल की पुत्री, नरोत्तम की पत्नी, टैगोर की कविता में मस्त युवती।

पुष्पा—मधुरी की छोटी भगिनी।
दास, दासी आदि।

प्रथम अंक

स्थान—साबरमती के तीर अम्बालाल सेठ का बंगला।

(अम्बालाल सेठ महात्मा गांधी के अनन्य भक्त हैं, जब से देश में असहयोग की धूम मची है तबसे अपनी मिलका धंधा छोड़कर, सच्चे असहयोगी बनकर अहमदाबाद में साबरमती के तीर पर आ बसे हैं। अब तक बम्बई में रह कर खूब धन सम्पत्ति एकत्रित करली है, स्त्री का देहावसान हो गया है, अतः यहीं पर एक बड़ा सुन्दर बंगला लेकर अपना समय गांधी की भक्ति में व्यतीत करने के लिये आ बसे हैं। इनकी बैठक क्या है? मानो एक अजायब घर है। जिसमें बड़ी बड़ी अमूल्य वस्तुओं का संग्रह करके उन्हें बैठक की शोभा वृद्धि के लिये योग्य स्थान दिया गया है। बैठक में छत पर टंगे हुए झाड़ फानूस, मर्यादापूर्वक रक्खी हुई मेज़, कुर्सियां उसकी आभा को बढ़ा रही हैं। इस घर में अम्बालाल का ही राज्य नहीं है अपितु उनकी भगिनी मायावती तथा ज्येष्ठ सुतादि भी अपना पूरा हक़ समझती हैं। सेठ जी महात्मा जी के भक्त हैं, मायावती कवि न्हानालाल की कविताओं से मुग्ध हो काव्य कल्पना में दीवानी हैं, उनकी बड़ी पुत्री मधुरी रवीन्द्र बाबू की रचनाओं में मस्त हो मस्तानी बनी हैं। अतः प्रत्येक ने अपने अपने देवताओं की प्रतिमाओं को पृथक् पृथक् कमरे में स्थान देकर बड़े बड़े साजों से सजाकर आद्रत किया है। यद्यपि सेठ जी पूरे असहयोगी हैं तथापि, उनके अजायब घर में प्रायः आधी से ऊपर वस्तुएं विदेशी हैं। उन्हें खद्दर के आच्छादनों से छिपाकर स्वदेशी बनाया गयाहै, मानो किसी युरोपियन को जबरदस्ती हिन्दू धर्म का पाठ पढ़ा कर हिंदू बनाया गया हो)।

इस अजायब घर की ख्याति सुन कर दूर दूर से प्रेक्षकगण आते हैं, जब देखो तब बैठक के द्वार पर जमघट जमा ही रहता है। अनूपराय को कभी खाली बैठा नहीं पाते। यह सदा दर्शकों को अजायब घर दिखाता हुआ ही मिलता है। इस समय भी एक पार्सी एक क्रिश्चियन, तथा एक प्रेमीयुगल देखने की चाह से अन्दर मौजूद हैं। वह प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वस्तु को देख देख कर उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं।

अनूप०—(वृद्ध पारसी को दर्शक पंजिका दिखाकर) आप में से किसी ने इस में अपना नाम न लिखा हो तो लिखते जाइये और यदि आपकी इच्छा हो तो कोई अच्छा सा श्लोकादि भी साथ लिखते जाइयेगा। (पुस्तक दर्शकों के आगे रखता है, अमेरिकन महिला नाम लिखने आती है उसे कुछ ठहर कर कहता है-'कोई श्लोक या वाक्य भी साथ लिख दें)'

[प्रणयी युगल धीरे २ प्रेमालाप कर रहे हैं]

मोती—मणि! प्रिये तुम्हें मानना ही पड़ेगा।

मणि—परन्तु मोती! मैं क्या करूं, मेरा साहस नहीं पड़ता, मुझे लज्जा.....

मोती—इसमें लज्जा कैसी? कल तो फिर पंचमी है.....

अनूप०—(दोनों को देखकर) आप लोग अजायब घर देखेंगे क्या?

मोती—हां जी देखेंगे क्यों नहीं।

अनूप—अच्छा तो सब इस ओर आइये। [दांई ओर लेजाकर कवि न्हानालाल के बस्टसे दिखाना प्रारम्भ करता है।] मोती और मणी दूसरी रवीन्द्रबाबू की प्रतिमा की आड़ में खड़े होकर प्रेमालाप में प्रदर्शिनी की सुध भूल जाते हैं।

पारसी—तो क्या बाबा सचमुच ईस में रविण्डरनाठ टागोर रहते थे?

अनूप—(उसको उत्तर देता है और क्रिश्चियन को कौच पर बैठा देख कर कहता है) प्रदर्शिनी के आसनों पर बैठने की मनाही है।

क्रिश्चियन—टो फेर आदमी यहां आकर बैठे कहां? खड़े खड़े टो पांव भी दूखने लगा। [सिग्रेट पीता है]

अमेरिकन महिला—Oh my! And so, you say your great man Gandhi had pitched his camp right here, eh?

अनूप—(मोती और मणि को साथ न देख कर दूसरी ओर देखता है, फिर उन्हें रवीन्द्र की प्रतिमा पर हाथ लगाते देख कर कहता है) प्रदर्शिनी की किसी भी वस्तु को मत छूओ।

मोती—[उस के शब्दों पर ध्यान न देकर] परन्तु मणि! इस का सत्य कारण तो कहो।

मणि—[तिरछी निगाह फेंक कर] तुम्हारा निरन्तर विदेश वास मुझ से सहन नहीं होता।

मोती—[हर्ष और क्षोभ के पूर्णावेश में] ओ हो, मणि! तुम भी.....[उस का हाथ पकड़ता है]।

अनूप—[दोनों को वहां ही देख कर पास जाता है और कहता है] आपने नाम दर्ज किया क्या?

मोती—[चकित होकर] हैं, क्या?

अनूप—[अपने शब्दों पर खूब ज़ोर देकर] मैं आपसे पूछता हूँ कि आपने दर्शक-पंजिका में अपना नाम दर्ज किया है कि नहीं?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोती—नाम लिखूं ? किस लिये ? [यहां क्या हो रहा है इस की सुध उसे न थी, परन्तु मणि यह सब देख कर मोती को पांव से धकेल कर नाम लिखने जाती है]।

अनूप—यदि इच्छा हो तो कोई अच्छा सा श्लोक भी लिख दें।

मोती—अच्छा कृपानिधान ! (दोनों नाम लिखते हैं, अनूप अपने काम में लगता है)

अनूप—(एक योग्य वक्ता की भांति खड़ा होकर बोलता है) देवियो और सज्जनों ! इस स्थान पर आज से २५, ३० वर्ष पूर्व अहमदाबाद के कलेक्टर का बंगला था। यहां जब सत्येन्द्र नाथ टैगौर कलेक्टर नियुक्त होकर आये तब वे अपने साथ अपने अनुज विश्वविख्यात, भारतभूषण कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ को भी लाये। मतलब यह कि गीतांजलि, भाली चित्रादि के रसिककर्ता का बाल्य काल यहीं व्यतीत हुआ था। (क्रिश्चियन के सिग्रेट के धूएं से अमेरिकन स्त्री छींकती है। अतः अनूप अपना भाषण स्थगित कर धूम्रपान का निषेध करता है और फिर बोलना आरम्भ करता है) आहा! कविराज की कल्पना शक्ति कैसी विलक्षण है और कैसे गूढ़ विचार हैं। (क्रिश्चियन को) सुनते हो ! यहां धूम्रपान की सख्त मनाही है। सिग्रेट पीनी है तो बाहर जाओ।

क्रिश्चियन—अच्छा साहिब [उठ कर चल देता है]

अनूप—[क्रिश्चियन से पारितोषक की आशा थी उसके नष्ट होजाने से गुनगुनाता है] कैसा असभ्य है ? अच्छा सुनो [न्हानालाल का बस्ट दिखा कर] देखो इस दैवीमुख से कैसी अमृत-धारा बहती है। वाक्देवी की तुष्टता से कैसे वचन उच्चरित होते हैं !

अमेरिकन महिला—Sure this gug is not Tagore as I saw him way back in salt lake city in the fall of.

अनूप—[अंग्रेजी नहीं जानता इस लिये चौंकता है, परन्तु शीघ्र भूल समझ जाता है अतः बात काट कर, एक मेज के पास जाकर मयूर पंख की लेखनी निकाल कर उस ललना को दिखा कर उसका ध्यान इधर बटाता है] देखिये ! सरस्वती प्रेषित यह अमर लेखनी देखिये। यह रवीन्द्र बाबू की असाधारण लेखनी है, इसे अम्बालालकी पुत्री मधुरी ने बड़े यत्न से प्राप्त किया है।

अमेरिकन महिला—Let me see it [हाथ में लेती है, अन्य प्रेक्षक रवीन्द्र की मूर्ति देख रहे हैं, उनका ध्यान उधर ही है] How much ? [हाथ में लटकते हुये बटुए में से पैसे निकालती है]।

अनूप—[दाम बढ़ाता है] नहीं मेम साहब यह बिकाऊ नहीं है [कलम रख देता है, बांई ओर से बहुत सुन्दर वेश में माया आती है]।

माया—प्रेक्षकों को देख कर संकुचाती है। ओह प्रभु ! हद्द होगई अब तक भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दर्शकों का झमेला है। [उल्टे पांव लौट जाती है]

पारसी—[अनूप० से] क्यों रे बाबा! यहां आकर फेर चले जाने वाली औरट कौन ठी?

अनूप—अरे! यह तो इस बंगले के आधुनिक मालिक सेठ अम्बालाल की बहिन मायावती थी। लोग इन्हें मिस माया के नाम से पुकारते हैं तो खुश होती हैं। [टैगोर का एक चित्र दिखलाता है] यह देखिये! भारत के कवीन्द्र की दैवी मुखाकृति। यह त्रिकालगामी दृष्टि से किस भांति छिप सकती है? अच्छा अब यह देखिये, इधर आइये।

मोती—[आत्म कथा में मग्न किंचित् उच्च-स्वर से बोल उठता है] और फिर तू इसका मुख देख कर विरह व्यथा सहन करेगी।

अनूप—हैं, हैं, क्या? [सब मुस्कराते हैं] [प्रेक्षकों से] यह देखिये, भारत के वर वीर, असहयोग के महारथी, महात्मा गांधी का चित्र! इस महात्मा के लिये मैं अधिक क्या कह सकता हूँ जो आप न जानते होंगे। अफ्रीका से लौटने पर प्रथम यहीं आकर रहे थे और उनके पादारविंद से पावन धरणी को इसके आधुनिक मालिक ने अपना निवृत्ति काल व्यतीत करने के लिये ही खरीदा है। बम्बई के प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, साहसी व्यापारी अम्बालाल सेठ को कौन नहीं जानता है? परन्तु महात्मा गांधी और कविराज के निवास स्थान में बसकर वे उन्हीं के तुल्य विश्व विख्यात होना चाहते हैं। (दर्शकगण महात्मा जी की प्रतिमा देखने में मस्त हैं और अनूप-राय की वक्तृता सुन रहे हैं, इस बीच में अम्बालाल सेठ दूसरे द्वार से प्रविष्ट हो दर्शकों को देख निस्तब्ध खड़े होकर सुनते हैं) सेठ सज्जन पुरुष हैं। राज्यकार्य तथा सामाजिक व्यवहार में अग्रणी हैं। साहित्य के शौकीन तथा कला कौशल में प्रवीण हैं। प्रजा के नेताओं के लिये तथा देश के उद्धारकों के लिये, जनता में उच्च भावना भावित करने के पक्षपाती हैं, अतः अपनी उदारवृत्ति से इन्होंने अपना आवास गृह भी एक अजायब घर की तरह खुला रखा है। लाखों रुपये खर्च करके इन्हों ने हिंद के विख्यात नर वीरों की स्मारक वस्तुएं अनेक मुसीबतें सहकर संग्रह की हैं। यह देखिये (महात्मा गांधी के चित्र के ऊपर टंगे हुये स्वर्ण के चौखटे में जड़े हुए बड़े कद के चित्र की ओर इशारा करता है) अम्बालाल सेठ की तस्वीर।

पारसी—यह स्वयं सेठ जी हैं क्या? (टक-टकी लगा कर देखता है) मस्तिष्क तो ऐसा नहीं दीखता। यह भाग्य का फेर है।

अमेरिकन स्त्री—Just like your other great guns of commerce. Hearey, brutish, anything but refined, spiritual, artistic! (उसकी ओर पीठ करके खद्दर पर निकली हुई महात्मा जी की तस्वीर देखती है, अंबालाल सेठ दुःखी होकर उसी द्वार से लौट जाते हैं)।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनूप—[विषय बदलने के लिये] [मूर्ति की बाईं ओर अलमारी के पास पड़े हुए आसन को दिखा कर कहता है] यह कौच देखो, यह गांधी जी का प्रियतम विरामासन है। सेठ अंबालाल प्रति दिन प्रातः इसी आसन पर बैठ कर नवजीवन की अर्चना करते हैं। [दक्षिण ओर का द्वार दिखा कर] मेरे साथ आइये देखिये यह सेठ का अभ्यास गृह है। आगे बढ़िये महात्मा जी का निजी पुस्तकालय दिखाऊं, इसे नवजीवन मन्दिर कहते हैं।

पारसी—और टागोर वाला रूम कहां है ?

अनूप—[बाईं ओर की भीत का ओर दिखा कर] इस भीत की दूसरी ओर कविराज का शयन गृह है। अब यहाँ मायावती रहती है और इसका नाम भानु-भुवन रक्खा है। हम लोग नव-जीवन मंदिर देख कर भानु-भुवन अथवा मायामहल में जायेंगे [दर्शक-गण कवि नन्हालाल के बस्ट को देखते हुए निकल जाते हैं, केवल अमेरिकन ललना पीछे रह जाती है]।

अमेरिकन स्त्री—[एकान्त पाकर जिस मेज में कलम रखी थी वहां जाकर बटुए में से सोने की मोहरें निकाल कर अनूप को ललचाती है] Come ! out with your great man's pen! five gold Sovereigns for it !

अनूप—No, Lady Pen not sell ! [खाना खोलता है] खाने में कलम देख कर ललना झपटती है और पांच मोहर मेज पर रखती है, अनूप उठा कर अपनी जेब में डालता है, पुनः दोनों दायीं ओर के द्वार से निकल जाते हैं।

मणी—नहीं प्रियतम ! नहीं ! कोई देख लेगा तो.....

मोती—देख, अब कोई नहीं है ! मणि प्रिये ! यह अंतिम.....कितने वर्षों के पश्चात् फिर .....[अनूप फिर लौटता है]

अनूप—ओ, हो, ही, ही, ही, (हंसता हुआ लौट जाता है) यह काम छोड़ने योग्य नहीं है। मैंने ७५ वीं लेखनी बेची है और यदि आज के जैसा बिल्ला जाल में फंस जाय तो नौकरी ढूंढनी ही न पड़े (हंसता है और फिर अदृश्य होता है मणि तथा मोती भी शरमिंदा हो जाते हैं)

(बाग़ की ओर से साराभाई का प्रवेश)

साराभाई—कैसा स्वागत होगा—पिता जी तो अब भी मुझ से रूठे प्रतीत होते हैं। (अम्बालाल सेठ की तस्वीर पर ध्यान जाते ही) यही हैं। बूढ़े में बहुत अन्तर नहीं दीखता। मुझ से जैसी क्रूरता करते हैं वैसी यदि लड़कियों से न करते हों तो अच्छा हो। (साराभाई का वेश भूषा सब युरोपियन सी है)

पुष्पा—(बिलौरी काच का जल सींचन हाथ में लिये आती है। साराभाई को देख कर जरा लज्जित होती है) ओह !

साराभाई—(एक दम पीछे हट कर) पुष्पा ! ठीक यही है। बड़ी होगई है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पा—[पहिचानती नहीं है, परन्तु सभ्य देख कर स्वागत करती है] आप प्रदर्शिनी देखने आये हैं ? (उत्तर में साराभाई दौड़ कर पुष्पा का हाथ पकड़ते हैं पुष्पा घबराती है)

पुष्पा—अरे ! अरे ! यह क्या करते हो ? मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो, (जल पात्र साराभाई के मुख पर फैंकती है)

साराभाई—(खूब हंसते हैं) पुसी ! माई डीयर पुसी ! भाई को भी भूल गई हो क्या ?

पुष्पा—कौन ? सारु ? जाओ जाओ (जलपात्र मेजपर रख कर उसकी ओर देखती है)

साराभाई—बेबी ! क्या मुझ में बहुत परिवर्तन हो गया है ?

पुष्पा—मैंने तो अब पहिचाना। हां बहुत परिवर्तन हो गया है, तब तो कैसे कोमल, निर्बल और बालक जैसे थे ?

साराभाई—और अब अधेड़ पुरुष बन गया हूं ? क्यों बेबी ?

पुष्पा—कैसी बड़ी लम्बी दाढ़ी है, जो टैगोर को भी मात करती है। (स्नेह के आवेग में) तुमने सत्यतः मुझे बहुत डराया था अच्छा सारु ! अब मैं तुम्हारा बदला लेती हूँ। (साराभाई का कोट पकड़ती है)

साराभाई—तुम तो डर कर, पर्वत की तरह स्तम्भित हो गई थीं ?

पुष्पा—हां ! अपनी आत्मरक्षा के लिये भागने को थी।

साराभाई—बेबी ! सचमुच तुमने मुझे नहीं पहिचाना ?

पुष्पा—नहीं। तो थोड़ी देर ठहरो। मैं पिता जी को बुला लाऊं।

(जाना चाहती है)

साराभाई—[उसका हाथ पकड़ कर रोकते हैं] नहीं। जरा ठहरो। अब भी क्या पिता जी पूर्ववत् मुझ से नाराज हैं।

पुष्पा—[एक ठंढा सांस खींच कर] हां तुम्हारा नाम लेते भी नहीं और लेने भी नहीं देते।

साराभाई—हां पिता जी का क्रूर स्वभाव न बदला ?

पुष्पा—नहीं, मधु को या मुझे तुम्हारे पास पत्र लिखने की मनाही तो नहीं करते परन्तु जैसे तुम्हारी पर्वाह ही न हो ऐसे कभी तुम्हारी पूंछ ताँछ नहीं करते।

साराभाई—परन्तु मेरा क्या अपराध है ? यह समझ में नहीं आता।

पुष्पा—अपराध ? इतने वर्ष तुम्हें विलायत में बसाया सो क्या व्यापारी बनने के लिये ? [पुष्पा हंसती है] स्वयं मुझ को तो इस विषय में कुछ दुःख नहीं है परन्तु मधु और पिता जी के लिये तो तुम्हारा सिविल सर्विस की परीक्षा में फेल होना ही बड़ा भारी अपराध है।

साराभाई—[हंसता है] सिविल सर्विस नौकरी नहीं है क्या ?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पा—हां, हां, परन्तु सरकारी अमलदारी तो होती ?

साराभाई—इसे तो विदेशियों की गुलामी कहते हैं।

पुष्पा—हां, अब तो कदाचित् पिता जी भी यही कहेंगे। परन्तु व्यापारी के यहां नौकरी करके तुमने कुल की बड़ाई में कुठाराघात करके पिता जी की सब आशायें मिट्टी में मिलादीं।

साराभाई—(कुछ अप्रसन्न होकर) परन्तु प्रत्येक क्या प्रत्येक परीक्षा में पास होता है ? मैं फेल न होता तो और किस प्रकार पास होते ? हम लोगों को कौनसी नौकरी की अपेक्षा थी ? परन्तु औरों के लिये तो पेट पूर्तिका साधन था। यदि धनी लोग परीक्षायें करलें तो ग़रीबों के पेट पर लात मारना कहलावेगा।

पुष्पा—सो हम क्या नहीं समझते हैं भाई ! परन्तु पिता जी के साथ सिर खप्पी कर लेना। यदि सरकारी नौकरी नहीं करनी थी तो बैरिस्टर ही बन जाते ? उसे भी क्यों रद्द कर दिया ?

साराभाई—मेरी अपेक्षा तो तुम भली प्रकार बैरिस्टरी कर सकती हो। देखो बेबी ! मुझे हवा खाने के लिये बहुत से वर्षों का समय मिला है अब कुछ काम करने को भी मन होता है। सो न करूं क्या ? बैरिस्टर बन कर १० वर्ष तक बम्बई में मक्खियां मारने के सिवाय क्या मिलता ?

पुष्पा—तुमने कभी प्रयत्न किया था क्या ? [दोनों भाई बहिन हंसते हैं] पिता जी तो यही समझते हैं कि तुमने गोपालदास के यहां नौकर रह कर हमारा नाक कटवा दिया है।

साराभाई—परन्तु अब तो मैं नौकर नहीं हूं, बल्कि उसका भाईबाल हूं, और योरप के समस्त जौहरियों में श्रेष्ठ गिना जाता हूँ ?

पुष्पा—भाई ! यह तो तुम जानते ही हो कि यदि कोई पिताजी का सामना करे तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुमने उनका कहना किया होता तो शायद जज या सर नाइट भी बन गये होते।

साराभाई—[हंस कर] पिता जी तो असहयोगी बन गये हैं न ?

पुष्पा—सो अपने लिये बने हैं न कि तुम्हारे लिये। तुम तो सरकारी नौकर होते या बैरिस्टर होते। तुम्हें अपना काम करना ही पड़ता (दोनों हंसते हैं)

साराभाई—अच्छा ये बातें फिर होंगी। कहो सब कुशल तो हैं ?

पुष्पा—नम्बर वन्। पिता जी, फूफी, मधु और उसके पति (मज़ाक में सबको अपने आप झुक कर प्रणाम करती है) सेवक.....

साराभाई—बेबी ! तुम बहुत बिगड़ गई हो, क्या कभी तुमने अपना मुख मुकर में देखा है ?

पुष्पा—[हर्ष से पुलकित होकर]

" मुखड़ा क्या देखें दर्पन में !
मुखड़ा क्या देखें दर्पन में ! "

हां तो भी दिन में तीन बार अवश्य देख लेती हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साराभाई—तुम कैसी सुन्दरी पुतली हो सो जानती हो क्या ?

पुष्पा—[पुनः झुक कर प्रणाम करती है] महाशय ! आप जब विदेश गये थे तब मैं आठ वर्ष की भी नहीं थी। वह भूल गये क्या ?

साराभाई—और मधु ? बारह वर्ष की थी ? अब तो उसका विवाह भी हो गया !

पुष्पा—और विवाहको भी दो वर्ष बीत गये।

साराभाई—मधुरी का गृहस्थ जीवन किस प्रकार व्यतीत हो रहा है ?

पुष्पा—[ठंढी आह भर कर] हां अच्छा है, परन्तु मधुरी ज्यों ज्यों बड़ी हो रही है त्यों त्यों नादान बन रही है।

साराभाई—क्यों भला ?

पुष्पा—मैंने तुम्हें लिखा था न कि पहिले यहां हिन्द के दो नेता रह चुके हैं इस लिये पिता जी ने, इस भूमि को पतितोद्धारिणी समझ कर यह बंगला खरीद लिया है।

साराभाई—हां, हां, म० गांधी, और टैगोर की बात और भी कहीं से सुनी थी।

पुष्पा—बस तभी से मधुरी और उसके पति का कलह जागृत हुआ है। पिता जी तो गांधी में इतने लीन हो गये हैं कि अपना निवास स्थान भी अजायब घर बना दिया है, और मधुरी को टैगोर का मद चढ़ा है। प्रथम उसने टैगोर के समस्त ग्रन्थ अंग्रेज़ी में पढ़े, फिर बंगला सीखकर उस में पढ़ने शुरू किये। अब उनका गुजराती भाषा में अनुवाद कर रही है। उठते, बैठते, सोते, जागते, चलते फिरते, जब देखो तब टैगोर ही टैगोर का जाप जपती है, गत वर्ष तो टैगोर का नाम भी न जानती थी।

साराभाई—परन्तु इस से पति-पत्नि में कलह कैसे हुआ ?

पुष्पा—भाई ! तुम क्या समझो ? मधु प्रत्येक बात में हद कर देती है। पल में आनन्द की सीमा उलंघन कर जाती है तो पल में उसके खेद की पराकाष्ठा ही नहीं रहती। उसका पति तो बड़ा सरल और भला है, अपने कार्य में भी दक्ष है, परन्तु मधु पर न जाने कौन-सा भूत सवार है कि प्रेम-प्रणय करने पर भी उसको उपेक्षा ही करती है। उस का यह स्वभाव ही नरोत्तम को अखरता है।

साराभाई—मधु उसे उपेक्षा से क्यों देखती है, उसकी परवाह क्यों नहीं करती ?

पुष्पा—क्यों न हो ? जब कि नरोत्तमदास को ओक्सिजन और हाइड्रोजन की खोज में गीतांजलि पढ़ने का अवसर ही न मिला। और यदि उसने उसे पढ़ा भी होगा तो मधु की तरह महत्व क्यों नहीं दिया ? बस यही कारण है कि नरोत्तम को देख कर यही कहा करती है कि—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

साराभाई—घेबी ! यह तो प्रणय कलह है ?

पुष्पा—परन्तु मुझे तो यह गंभीर मामला दीखता है। अभी कल ही के झगड़े में दोनों में इतना वैमनस्य हुआ कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२४ घंटे में एक दूसरे के साथ एक शब्द भी नहीं बोले। प्रायः प्रतिदिन ऐसा ही हुआ करता है इसीलिये नरोत्तम सर्वदा शोकसागर में निमग्न रहते हैं। [दोनों कुछ देर ठहर कर] भाई ! तुम ही इसे कुछ समझाओ। तुम से हो कुछ डरती है, और स्नेह भी करती है। पिताजी तो गांधी भक्ति में लीन हैं, अतः मधुरी के स्वभाव को जान कर उसे कुछ नहीं कहते। तुम कहोगे तो अवश्य समझ जावेगी, वह तुम्हें मिलने के लिये बहुत उत्सुक हैं? कहो तो, बुलाऊं?

साराभाई—नहीं अभी नहीं। सब बातों का विचार करते हुए यही अच्छा है कि मैं आज अदृश्य ही रहूँ। पिता जी घबरा कर कहीं कोश में ही ढूंढ़ने लगें कि मैं उन का हो पुत्र हूं।[दोनों हंसते हैं] कल ही तार आनेवाला है, इसलिये यदि मैं स्टार आफ इण्डिया के रिब्बन के साथ पिता जी को मिलूंगा तो उनकी घबराहट कम हो जावेगी।

पुष्पा—हाँ, यही ठीक होगा।

साराभाई—बेबी ! तुम नहीं जानती हो कि तुम्हारे भाई कौन हैं?

पुष्पा—स्टार आफ इण्डिया-तब तो तुम सचमुच नाइट अरे नहीं, सर नाइट बन गये हो?

साराभाई—[उपेक्षा से] और यदि चाहूं तो बेरोनेट भी बन सकता हूं।

पुष्पा—परन्तु इस विषय में तुमने हमें तो लिखा ही नहीं?

साराभाई—सत्याग्रहियों को इस से आनन्द होता है?

पुष्पा—[किंचित् अप्रसन्नमुख हो] हां, यह भूल गई थी। पिता जी अब इस से भी प्रसन्न नहीं होंगे।

साराभाई—वे कहेंगे तो हम ज़ोर देकर सरकार को एक बड़ा लम्बा चिट्ठा लिख कर, रवीन्द्रनाथ की तरह खिताब और मैडल वापिस कर देंगे। कारण में कहेंगे कि हम असहयोगी हैं।

पुष्पा—[खिन्न चित्त होकर] हां ! यही ठीक होगा।

साराभाई—परन्तु इस में Legion d'honneur का Grand Cross को अस्वीकृत करने की आवश्यकता नहीं है।

पुष्पा—[पुनः हंसती है] हां यह तो होगा, परन्तु भाई यह तो बताओ कि तुमने कौन से काम किये कि तुम इतने उच्च पदाधिकारी हो गये?

साराभाई - बेबी ! यह तुम न समझ सकोगी परन्तु हठ करती हो इसलिये कहता हूं। एक बार मैंने ब्राज़ील से क़ाफ़ी मंगाकर आफ्रिका में उत्पन्न करने का अवसर बताया, और उसी के द्वारा लाखों अंग्रेज़ों और फ्रेंच लोगों को निवास स्थान दिखाया तथा पेटपोषण का साधन बताया था। यह बदला उसी का है। [इतने में दर्शकों के साथ अनूप० का प्रवेश और उद्यानके द्वार से प्रस्थान] परन्तु यह क्या? इस बंगले को होटल बनाया है या पाठशाला? ये पशु यहां कैसे आये थे?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साराभाई—तुम कैसी सुन्दरी पुतली हो सो जानती हो क्या ?

पुष्पा—[पुनः झुक कर प्रणाम करती है] महाशय ! आप जब विदेश गये थे तब मैं आठ वर्ष की भी नहीं थी। वह भूल गये क्या ?

साराभाई—और मधु ? बारह वर्ष की थी ? अब तो उसका विवाह भी हो गया !

पुष्पा—और विवाहको भी दो वर्ष बीत गये।

साराभाई—मधुरी का गृहस्थ जीवन किस प्रकार व्यतीत हो रहा है ?

पुष्पा—[ठंढी आह भर कर] हां अच्छा है, परन्तु मधुरी ज्यों ज्यों बड़ी हो रही है त्यों त्यों नादान बन रही है।

साराभाई—क्यों भला ?

पुष्पा—मैंने तुम्हें लिखा था न कि पहिले यहां हिन्द के दो नेता रह चुके हैं इस लिये पिता जी ने, इस भूमि को पतितोद्धारिणी समझ कर यह बंगला खरीद लिया है।

साराभाई—हां, हां, म० गांधी, और टैगोर की बात और भी कहीं से सुनी थी।

पुष्पा—बस तभी से मधुरी और उसके पति का कलह जागृत हुआ है। पिता जी तो गांधी में इतने लीन हो गये हैं कि अपना निवास स्थान भी अजायब घर बना दिया है, और मधुरी को टैगोर का मद चढ़ा है। प्रथम उसने टैगोर के समस्त ग्रन्थ अंग्रेज़ी में पढ़े, फिर बंगला सीखकर उस में पढ़ने शुरू किये। अब उनका गुजराती भाषा में अनुवाद कर रही है। उठते, बैठते, सोते, जागते, चलते फिरते, जब देखो तब टैगोर ही टैगोर का जाप जपती है, गत वर्ष तो टैगोर का नाम भी न जानती थी।

साराभाई—परन्तु इस से पति-पत्नि में कलह कैसे हुआ ?

पुष्पा—भाई ! तुम क्या समझो ? मधु प्रत्येक बात में हद कर देती है। पल में आनन्द की सीमा उलंघन कर जाती है तो पल में उसके खेद की पराकाष्ठा ही नहीं रहती। उसका पति तो बड़ा सरल और भला है, अपने कार्य में भी दक्ष है, परन्तु मधु पर न जाने कौन-सा भूत सवार है कि प्रेम-प्रणय करने पर भी उसको उपेक्षा ही करती है। उस का यह स्वभाव ही नरोत्तम को अखरता है।

साराभाई—मधु उसे उपेक्षा से क्यों देखती है, उसकी परवाह क्यों नहीं करती ?

पुष्पा—क्यों न हो ? जब कि नरोत्तमदास को ऑक्सिजन और हाइड्रोजन की खोज में गीतांजलि पढ़ने का अवसर ही न मिला। और यदि उसने उसे पढ़ा भी होगा तो मधु की तरह महत्व क्यों नहीं दिया ? बस यही कारण है कि नरोत्तम को देख कर यही कहा करती है कि—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

साराभाई—घेबी ! यह तो प्रणय कलह है ?

पुष्पा—परन्तु मुझे तो यह गंभीर मामला दीखता है। अभी कल ही के झगड़े में दोनों में इतना वैमनस्य हुआ कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२४ घंटे में एक दूसरे के साथ एक शब्द भी नहीं बोले। प्रायः प्रतिदिन ऐसा ही हुआ करता है इसीलिये नरोत्तम सर्वदा शोकसागर में निमग्न रहते हैं। [दोनों कुछ देर ठहर कर] भाई! तुम ही इसे कुछ समझाओ। तुम से हो कुछ डरती है, और स्नेह भी करती है। पिताजी तो गांधी भक्ति में लीन हैं, अतः मधुरी के स्वभाव को जान कर उसे कुछ नहीं कहते। तुम कहोगे तो अवश्य समझ जावेगी, वह तुम्हें मिलने के लिये बहुत उत्सुक हैं? कहो तो, बुलाऊं?

साराभाई—नहीं अभी नहीं। सब बातों का विचार करते हुए यही अच्छा है कि मैं आज अदृश्य ही रहूँ। पिता जी घबरा कर कहीं कोश में ही ढूंढ़ने लगें कि मैं उन का ही पुत्र हूं।[दोनों हंसते हैं] कल ही तार आनेवाला है, इसलिये यदि मैं स्टार आफ इण्डिया के रिब्बन के साथ पिता जी को मिलूंगा तो उनकी घबराहट कम हो जावेगी।

पुष्पा—हाँ, यही ठीक होगा।

साराभाई—बेबी! तुम नहीं जानती हो कि तुम्हारे भाई कौन हैं?

पुष्पा—स्टार आफ इण्डिया-तब तो तुम सचमुच नाइट अरे नहीं, सर नाइट बन गये हो?

साराभाई—[उपेक्षा से] और यदि चाहूं तो बेरोनेट भी बन सकता हूं।

पुष्पा—परन्तु इस विषय में तुमने हमें तो लिखा ही नहीं?

साराभाई—सत्याग्रहियों को इस से आनन्द होता है?

पुष्पा—[किंचित् अप्रसन्नमुख हो] हां, यह भूल गई थी। पिता जी अब इस से भी प्रसन्न नहीं होंगे।

साराभाई—वे कहेंगे तो हम ज़ोर देकर सरकार को एक बड़ा लम्बा चिट्ठा लिख कर, रवीन्द्रनाथ की तरह खिताब और मैडल वापिस कर देंगे। कारण में कहेंगे कि हम असहयोगी हैं।

पुष्पा—[खिन्न चित्त होकर] हां! यही ठीक होगा।

साराभाई—परन्तु इस में Legion d'honneur का Grand Cross को अस्वीकृत करने की आवश्यकता नहीं है।

पुष्पा—[पुनः हंसती है] हां यह तो होगा, परन्तु भाई यह तो बताओ कि तुमने कौन से काम किये कि तुम इतने उच्च पदाधिकारी हो गये?

साराभाई - बेबी! यह तुम न समझ सकोगी परन्तु हठ करती हो इसलिये कहता हूं। एक बार मैंने ब्राज़ील से क़ाफ़ी मंगाकर आफ्रिका में उत्पन्न करने का अवसर बताया, और उसी के द्वारा लाखों अंग्रेज़ों और फ्रेंच लोगों को निवास स्थान दिखाया तथा पेटपोषण का साधन बताया था। यह बदला उसी का है। [इतने में दर्शकों के साथ अनूप० का प्रवेश और उद्यानके द्वार से प्रस्थान] परन्तु यह क्या? इस बंगले को होटल बनाया है या पाठशाला? ये पशु यहां कैसे आये थे?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पा—नहीं नहीं, ये तो दर्शक थे ? हां यदि पिता जी इसे विद्यापीठ को देदें फिर इस में पाठशाला लगे तो कोई आश्चर्य नहीं है) देखो लोग पिताजी की उदारता से कैसा अनुचित लाभ उठाते हैं। परन्तु अपनी धुन के धुनी पिताजी इसकी पर्वाह ही नहीं करते। अब यदि तुम्हें जाना हो तो चले जावो। पिता जी यहां आतेही होंगे।

सोराभाई—अच्छा जाता हूँ, परन्तु याद रखना बहिन ! मेरी वह बात किसी से न कहना। (प्रस्थान)

पुष्पा—[सोराभाई को देखकर] कितना बड़ा हो गया है, और कैसा गठीला नव-युवक हो गया है। [उद्यान में जाती है। थोड़ी देर में अम्बालाल आते हैं]

अम्बालाल—[स्वगत] लोकप्रिय होना बड़ा कठिन है। देखो मैं लोगों को अपना बंगला और उस में मौजूद पदार्थों को मुफ़्त में ही अजाइब घर की भाँति दिखाता हूं। और लोग, धन्यवाद के बदले मुझे जन्ममूर्ख बताते हैं [अपने चित्र को गौर से देखते हैं। बाग में से नये पुष्प लिये पुष्पा का प्रवेश]

पुष्पा—[फूलदान में फूल रखती है और ताजा पानी उस में डालती है] पिता जी ! अपनी फोटो देख रहे हैं क्या ?

अम्बालाल—हां, तुम्हें कैसी प्रतीत होती है ?

पुष्पा—चित्रकार ने आपको बड़ा उत्तम और सुन्दर दर्शाया है।

अम्बालाल—[आनन्द से] अच्छा ?

पुष्पा—हां बहुत ही सुन्दर।

अम्बालाल—[चिढ़कर] ऐसे है ?

पुष्पा—पिताजी ! सभा कब होगी, और हम कब जावेंगे ?

अम्बालाल—यहाँ से दर्शक चले जायं फिर चलते हैं।

पुष्पा—[अप्रसन्न होकर] प्रतिदिन दर्शक !

अम्बालाल—[किंचित् अहंभाव से] क्यों न आयें ? आज तो यह तीसरा ग्रुप है। इस में एक अमेरिकन महिला भी है। परन्तु साधारणतया दर्शक लोग प्रायः अज्ञानी और विवेकशून्य होते हैं।

पुष्पा—(हंसती है) क्यों ? आज किसी ने कुछ कह दिया है क्या ?

अम्बालाल—[फोटो देखकर] कहते हैं कि मुझ में ज्ञान और बुद्धि नहीं है।

पुष्पा—सचमुच क्या यही कहते हैं ?

अम्बालाल—हां, इस में विचित्रता ही क्या है ! तुम भी तो यही कहती हो कि चित्रकार ने मुझे चित्र में बहुत सुन्दर दिखाया है।

पुष्पा—[उस की मानसिक वेदना समझ जाती है] नहीं पिता जी ! मैं तो यह कहना चाहती थी कि चित्रकार ने आपको १० वर्ष छोटा दिखाया है। इसमें आप को बुरा लगा क्या ? [अम्बालाल सिर हिलाते हैं] इसी दर्शक पंजिका में नाम दर्ज होते हैं क्या ?

अम्बालाल—हां इसी में।

पुष्पा—चलिये देखें। क्या क्या लिखा है ? [मेज के पास खड़ी होकर पुस्तक खोलकर पढ़ती है] अहा ! इसे पढ़ने में खूब आनन्द आता है। लीजिये प्रारम्भ में मंगलाचरण ही है "अम्बालाल सेठ को मेरा सादर नमस्कार"

अम्बालाल—इस में तो सभ्यता है।

पुष्पा—[आगे पढ़ती है] " स्थान सुन्दर है, परन्तु एक विश्रान्तिगृह की न्यूनता है "।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अम्बालाल—इन लेगों के लिये एक धर्मशाला बनवाऊं क्या ?

पुष्पा--[पढ़ती है] gertrude Davis, Passionate admirer of RabindraNath Tagore हमारी मधु की भांति ही है, Oh, if only the walls of this house could speak.

अम्बालाल—[हर्षित होकर] हां, ठीक है।

पुष्पा--[पढ़ती है] They would weep, what a fall From Tagore to Ambalal.

अम्बालाल—[निस्तेज और हताश होकर] आगे पढ़ो।

पुष्पा—[पढ़ती है] " The best cycle is B. S. A."

अम्बालाल—दर्शक पंजिका में भी इश्तिहार!

पुष्पा—[पढ़ती है] " मैं मणि को आभरण चाहूंगा" "मैंने मोती को अपना सर्वस्व अर्पण किया", यहभी खूब है।

अम्बालाल—क्या तुम्हें नहीं मालूम होता कि यह बंगला हमारे निवासगृह के स्थान में प्रेमियों के मिलने का स्थान बन गया है ? [बायीं ओर से यकायक हाथमें कागज़ लिये रोषावेग से पूरित मायावती का प्रवेश]

माया--मुझ से यह न सहा जायगा। अरे अब तो हद हो गई।

अम्बालाल—क्यों ? क्या है माया ? [पुष्पा जल पात्र उठाकर फूलों को पानी देने चली जाती है]

जलपात्र लेकर पुष्पा फूलों को पानी देने जाती है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माया—देखो तुम्हारा अनूपराय बिना किसी सूचना के ८-१० आदमियों को लेकर मेरे कमरे में घुस आया है।

अम्बालाल—अच्छा तो फिर इस में क्या हुआ ?

माया—पूंछते हो क्या हुआ ? मैंने पूरी तरह से ड्रेसिंग भी नहीं किया हुआ था।

अम्बालाल—जब तुम भली प्रकार जानती हो तो इस समय तक पूरी तरह से ड्रेसिंग क्यों न किया था ?

माया—वाह खूब कहते हो। अपने घर में भी किसी तरह चैन नहीं लेने देते हो। मैं आज तक एकान्तमें शान्त चित्त से एक शब्द भी नहीं लिखने पाई हूं।

अम्बालाल—एक शब्द के लिये एकान्त ? किस लिए चाहती हो ?

माया—मैं छोटे छोटे नाटकों की ढब से कुछ लिखना चाहती हूँ।

अम्बालाल—माया। बहिन ! यह तुम्हारा काम नहीं है। तुम घर सम्भालो। यदि पुष्पा न होती तो प्रभु जानते हैं इसकी दशा क्या हो जाती ?

माया—मुझे गृहकार्य अच्छे नहीं लगते और न मुझ से होते ही हैं। आप बतायें क्या कवि न्हानालाल और सरोजिनी नायडू घर संभालते हैं ?

अम्बालाल—हरे ! हरे ! हरे ! तुम अपने आपको सरोजिनी नायडू समझती हो ? बहिन माया ! देखो इस बात को मत भूलो कि तुम इस घर में सब से बड़ी स्त्री हो, घर की मुखिया और स्वामिनी हो।

माया—सो केवल गदहों की तरह काम करने के लिये। क्यों ?

अम्बालाल—सौ सेवकों के होते हुए भी तुम्हें गदहा ही बनना पड़ा ? घर का काम तुम स्वयं नहीं कर सकती हो परन्तु देख रेख तो रखनी चाहिये। सचमुच कवि न्हानालाल ने तुम्हें सिर चढ़ा रक्खा है और रवीन्द्र बाबू ने मधुरी को पागल बना छोड़ा है इस लिये समस्त घर का भार, इस बिचारी बेबी पर रहेगा, क्यों ?

पुष्पा—पिता जी ! आप मेरी चिन्ता न कीजियेगा मुझे घर के काम बहुत रुचते हैं।

माया—और मुझे अखरते हैं। स्वभाव की भी कोई औषधि है ?

अंबालाल—परन्तु तुम म० गांधी के वचन भूल गई हो.....

माया—अब बताओ, तुम पागल हो कि मैं ? जहाँ देखो वहीं महात्मा जी का प्रमाण !

अम्बालाल—[रोष में] महात्मा जी तुम्हारे मन को भ्रमित करने वाले न्हानालाल से हज़ार दर्जे ऊंचे हैं ! उन की ऐसी अवज्ञा.....

माया—मैं कहां करती हूँ ? मैंने तो यही कहा है कि सब अपने अपने स्थान में शोभा देते हैं। म० गांधी राजनीति के विषय में एक हैं और राज्य शासन के विषय में गांधी का वाक्य भरत वाक्य है। परन्तु काव्य रचना में.....[प्रेक्षकों के साथ अनूप का पुनर्प्रवेश]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुष्पा—[उन्हें देख कर घबराती है] ओह ! [जल पात्र लेकर भाग जाती है]

माया—ओह ! फिर वही बला [सेठ अंबालाल उन में से प्रत्येक को सभ्यता से नमस्कार करते हैं]

अनूप०—चलो अब बाग में चलें वहाँ आप को प्रेम मन्दिर दिखाऊंगा ।

पारसी—बोह क्या होगा, भला ?

अनूप—आप देखेंगे तभी मालूम होगा । कहा तो यह जाता है कि रवीन्द्र बाबू ने उसे बनवाया था परन्तु अब तो सेठ के दामाद नरोत्तम दास का प्रयोगालय है । चलिये [सब बाग की ओर से उस में प्रविष्ट होते हैं। अमेरिकन महिला सेठ की ओर एक रुपया फेंक जाती है]

अमेरिकन महिला सेठ की ओर एक रुपया फेंकती है

अम्बालाल— हरे ! हरे ! माया ! देखा तुमने ! वह स्त्री मेरी ओर रुपया फेंक गई है। तुम्हारा क्या विचार है, उसने किस लिये फेंका होगा ?

माया—तुम्हें बंगले का नौकर समझ कर इनाम दिया होगा !

अम्बालाल—[मान हानि मान कर] लोक-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रिय बनने के लिये उदार बनने का यह परिणाम !

मायावती—[क्रोध से] यह तो अभी कम है। आश्चर्य तो इस बात का है कि यह बंगला अब तक तुम्हारे हाथ में क्यों रह गया है ? (बाग में से मोती मणी आते हैं, यहां लोगों को देख कर उल्टे पांव लौट जाते हैं) यह स्थान तो धर्मशाला से भी अधिक हीन हो गया है। यदि इन दर्शकों में से कोई सारा भेद ले जाय और रात को सोते हुओं को जान से मार डाले तो आश्चर्य ही क्या है।

अम्बालाल—जाओ। जाओ तुम व्यर्थ बातें बनाती हो। मैं तो सोच रहा हूं कि इसे विद्यापीठ के अर्पण कर दूँ।

माया—यदि ऐसा ही करना है तो देर क्यों करते हो ? जानते हो ! अधिक विलम्ब करोगे तो इस का एक भी कौच न बच रहेगा। यह देखो इस कौच की झालर किसी ने काट डाली हैं (दिखाती है) यह भी किसी गांधी का स्मारक चिन्ह लेने वाले का काम होगा। और मेज के खाने में कलम तो एक भी नहीं बचती।

अम्बालाल—शिव ! शिव ! यह तो हद होगई।

[नरोत्तम दास का प्रवेश]

नरोत्तम—[रोष से] कोई बतला सकता है कि यह एक घर है या रेलवे स्टेशन ?

अम्बालाल—परन्तु नरोत्तम .....

नरोत्तम—मैं आपको स्पष्ट कहता हूं कि यदि आज के पश्चात् किसी ने मेरे प्रयोगालय में पांव धरा तो मैं डाइनमाइट द्वारा पलभर में साफ मैदान करदूंगा।

माया—मैं अपने कमरे में अंदर से कल चढ़ा दूँगी।

नरोत्तम—मुझ से यह व्यवहार नहीं सहा जाता।

माया—इन का व्यवहार ऐसा है कि उल्टी आती है।

अम्बालाल—सब को सन्तुष्ट करना कैसा कठिन काम है ?

नरोत्तम—परन्तु इस विधि से कोई सन्तुष्ट न होगा।

अम्बालाल—मुझे तो बहुत संतोष होता है।

माया—सो जाना हुआ है—

अम्बालाल—जिस समय मैंने यह बंगला खरीदा था, मुझे अपार आनन्द हुआ था। कई वर्षों तक मैं स्वप्नावस्था में महापुरुषों के संग रहता था, उनके निवास स्थानमें बसता था, परन्तु आज मैं यहां इस प्रकार निवास करता हूँ जैसे म० गांधी और रवीन्द्र का औरस हूँ। जहां वे शयन करते थे तहां सोता हूं, वे बैठते थे वहाँ बैठ कर निरन्तर बिचार करता हूँ ?

नरोत्तम—कैसे ?

अंबालाल—क्या आप स्वयं यह अनुभव नहीं करते कि यहां का वायुमण्डल ही भिन्न है ?

नरोत्तम—हाँ, पुराने खंडहरातों का सा दीखता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंबालाल—क्या यहां की भीतों में से यश और महत्ता के झरने नहीं झरते ?

नरोत्तम—मेरी दृष्टि में तो चूना झड़ता नज़र आता है, और दर्शकों के बारंबार आने जाने में ज़हरीले जन्तु प्रविष्ट होते होंगे ?

अंबालाल—तुम चाहे कुछ कहो। परन्तु मुझे तो इन जन्तुओं द्वारा प्रजा को प्रेरित करने वाली धर्मोत्पत्ति नज़र आतीहै।

नरोत्तम—Microbes में से धर्म भी उत्पन्न होता है यह तो आज ही जाना है! हां, रोग उत्पन्न होते हैं सो कई वर्षों से जानता हूं।

अम्बालाल—[उसके वचन पर ध्यान न देकर एक कौच पर बैठ जाता है] जब मैं यह ध्यान करता हूं कि इस आसन पर जिस पर मैं बैठा हूँ कभी महात्मा जी बैठे होंगे.....

नरोत्तम—अतः इस पर बैठना आपको सुखद प्रतीत होता है ?

अम्बालाल—यदि सुखद न हो तब भी क्या ? परन्तु तब मैं यही समझता हूं मानो मैं विक्रमादित्य के राज्य सिंहासन पर बैठा हूं।

मायावती—[अम्बालाल का साथ देकर] हां देखिये इस मेज को! इस पर शायद कभी कवि न्हानालाल ने "गुणिदल गुजरात" इस रचना की एक पंक्ति लिखी होगी!

अम्बालाल—[माया को अपनी ओर देखकर] हां, देख यह टेबल! जहां किसी परम सिद्ध मनुष्यने अपनी अद्भुत साधना पूरी की होगी। इसे देखते ही क्या तुम्हें लेखनी उठाने का मन नहीं होता ?

नरोत्तम—किस लिये ?

अम्बालाल—काव्य रचना के लिये। देखो तो सही, माया अभी से लेखनी उठा कर लिखने भी लग गई है।

माया—[नरोत्तम को उत्तर का अवसर न देकर] हां! इसीलिये, इस घर को तुम अपने लिये या हम सब के लिये रहने दो परन्तु सब दुनियां को यहां आमन्त्रण देने की आवश्यकता नहीं है।

अम्बालाल—परन्तु यदि दुनियाँ मेरे सुख और ऐश्वर्य्य को जानने ही न पाये तो मैं किस प्रकार सुखी हो सकता हूं। सुख छिपाना स्वार्थपरता की पराकाष्टा है।

माया—'स्नेहीजनसंविभक्तं दुःखमपि सह्यं भवति' यह तो कवि कह गये हैं परन्तु 'सर्वजनसंविभक्तं सुखमधिकतं भवति' यह आज ही सुना।

अंबालाल—[बाग में जीवराज को आते हुए देखता है] यह लो वैद्यराज आगये।

[जीवराज का प्रवेश]

नमस्ते अस्तु वैद्यराज!

(अपूर्ण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रार्थना

लेखक—'गुलाब'

चले मत तुम योंही जाना ।

मैं अनाथ हूँ, विश्व विदित तुम हो नाथों के नाथ ।
मुझ अन्धे का तुम न छोड़ना अन्धे पथ में हाथ ॥

मुक्ति का मारग दिखलाना ।
चले मत तुम योंही जाना ॥ १ ॥

मेरी अश्रुभरी आंखों को देख विश्व—आधार !
कमल नेत्र से करुण-बहाना तुम आंसू की धार ॥

न हंसना देख म्लान बाना ।
चले मत तुम योंही जाना ॥ २ ॥

आ जावे यदि मधुर घड़ी यदि होवे रम्य प्रभात ।
तो उज्वल प्रकाश फैलाना मेरे जीवन ! तात !!

कुहासे से न दिवस छाना ।
चले मत तुम योंही जाना ॥ ३ ॥

मैं कविता बनकर यदि छेड़ूं विश्व विमोहन राग ।
नाच नाच तुम मुझे रिझाना ले अनन्त अनुराग ॥

मोह प्राणों में भर जाना ।
चले मत तुम योंही जाना ॥ ४ ॥

कांटेदार कठिन कानन के बीन धरूं यदि फूल ।
तो, न उन्हें मुरझाने देना करना स्वयं कुबूल ॥

फूल भक्तों पर बरसाना ।
चले मत तुम योंही जाना ॥ ५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फ़रेब—ख़याल !

लेखक--श्रीयुत राजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद'

मेरे ग़मगुसार दिल ! क़यामत तक मेरा साथ देनेवाले दिल ! तू इतना क्यों बेचैन है ? तू क्या चाहता है ?.....क्या कहा ? तुझे नहीं मालूम ! फिर इतना क्यों तड़फता है ? खुद भी परेशान होता है मुझे भी परेशान करता है। ठहर--ठहर ! ज़रा दम तो लेले। न मानेगा, तेरा तड़फना बन्द न होगा— तू मचलता ही जायेगा ! भोले भाले नादान बच्चे की तरह फैल मचाता ही जायेगा ? अच्छा मचा ! लेकिन याद रख ! तेरी ख्वाहिश कभी पूरी न होगी । तू रोयेगा और खूब रोयेगा। रोते २ तेरी हिचकियां बंध जायेंगी--तुझे तसल्ली देनेवाला कोई न होगा तेरे गुबार, तेरे अरमान, तेरी हसरत आंखों की राह आंसुओं के दरिया होकर वह निकलेंगे। तू उसमें गोते लगायगा, चन्द गोते खाकर डूब जायगा--तुझे कोई न बचा सकेगा--क्या कहा ? तू क्यों रोयेगा ? ठीक है ! क्यों रोयेगा ?

उफ़ ! बेचैनी ! ग़ज़ब की बेचैनी है ! क्या करूं ? कहां जाऊं ? एक से एक प्यारी सूरतें इन्हीं नज़रों से गुज़र चुकीं हैं--कितनी ही दिल फरेब अदाओं की चोटें झेल चुकी हैं, कितने ही तीरे मिज़गां के तीर का निशाना बन चुकी हैं। कितनी ही प्रेमपूर्ण कहानियां लिख डालीं, मगर ऐसी बेचैनी तो कभी नहीं हुई--ऐसे भाव तो कभी नहीं उभड़े।

आह ! तुझ पर क्या गुजरती है ? तू ही जानता है। दिल में तूफान उठ रहा है, दिमाग़ में जोर शोर से आंधी चल रही है, होशो हवास ने साथ छोड़ दिया--अक्ल ने अलविदा कहकर रुख़सत ली। किसके लिये, एक रक्त और मांस के बने हुए पुतले के लिये ! छिः ! क्या वह तमाम उम्र ऐसा ही हसीन बना रहेगा ? क्या उन चिकने गुलाब को मात करने वाले रुखसारों पर झुर्रियां न पड़ जायेंगी ? क्या उस स्याह फ़ाम लहराती हुई जुल्फों पर सफेदी न छा जायगी ? क्या इस चन्दरोजा फस्ले बहार पर मौसिमे ख़िजां का दौरा न होगा ? अहले शबाब के फूल मुरझा कर हुश्न की डाली से गिर न जायेंगे ? याद रख ! वह फूल जिन पर तू जान देता है--जिनपर मर मिटने का दम भरता है। वह गर्दोगुबार आलूदा जमीन पर गिर कर बिखर जायेंगे--सरे राह पैरों के नीचे कुचले जायेंगे--क्या तुझे रंज न होगा ? क्या तेरे आंखों से दो बूंद आंसू न गिरेंगे ? क्या तू न रोयेगा ?

मेरे सरसब्ज़ गुलशन को वयाबान बनाने वालें, परिस्तान को कब्रिस्तान बनानेवाले, देवता को शैतान बनानेवाले दिल ! मुझपर रहम कर ! मुझे गुमराह मत कर ! मेरी नज़र उधर से मत हटा । जहाँ मेरे होशोहवास गये हैं वहीं इनको भी जाने दे ! दीवानें के पास इनका क्या काम ? मैं होशो हवास खोकर मजनूं बनूंगा-- घरबार छोड़कर सहरा की खाक छानूंगा-तेरी गली में आकर "हाय लैला" की आवाज लगाऊंगा, तू खिडकी खोलकर झांकेगा--मेरी हालत पर मुसकरायेगा--खिलखिला कर हंस देगा, मैं कलेजा थाम कर तेरे दर पर बैठ जाऊंगा--तू ठोकरें मारकर मुझे उठा देगा,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं सर्द आह मार कर तेरी तरफ हसरत भरी हुई निगाहों से देखता हुआ चल दूँगा। क्या तुझे मेरी जुदाई का रंज न होगा? तू न रोयेगा? हाँ हां क्यों रोयेगा?

फिर आया! मेरी आंखों के सामने फिर आया! क्या करूं? आखें बन्द कर लूं! यह क्या? तू फिर आगया! आखें बन्द कर लेने पर भी आगया--क्यों? समझ गया तू मेरे नजरों में समाया हुआ है--मेरे दिल में तसव्वर की तरह घुसा हुआ है। मेरे रग २ में बसा हुआ है--तुझसे छिपकर कहां जाऊं? आंखें खोलता हूं, तुझे देखता हूँ, बन्द करता हूँ तुझे पाता हूँ-सोता हूँ ख्वाब में तू नज़र आता है--तेरा तसव्वर चैन नहीं लेने देता। जिधर देखता हूं तू ही तू है!!

"सम्मोह"

लेखक--श्री० मार्कण्डेय पांडे

(१)

कैसे भूला जा सकता है, जिस को देखा अभी अभी।
अंकित है मम मन मन्दिर में, प्रतिमा सुन्दर सभी अभी॥
जब उस अतुलित चन्द्रप्रभा का, खिंच आताहै चित्र कभी।
होते नीर निमग्न नयन हैं, लग जाती झड़झड़ी तभी॥

(२)

तृण-शैया पर बन्दीगृह में, ध्यान लगाये सोया था।
दर्शन हित मम हृदय विचारा, जी खोल खोलकर रोया था॥
अर्ध-रात्रि निस्तब्ध समय में, देख रहा था स्वप्न विचित्र।
देवी के हा! नाममात्र से, खिंच आती है मूर्ति सचित्र॥

(३)

स्वप्नावस्थित देख रहा था, आई इक बाला मम पास।
उसके चिंतित-मुखपर सहसा, हुआ विलोकित कृत्रिम हास॥
स्वर्गिक मुख पर खेल रही थी, एक अनोखी शान्त मली।
सौम्यमूर्ति के अवलोकन से, खिल जाती थी हृदय कली॥

(४)

कांतार कुसुम की माला ले, मैं चला उसे पहिनाने को।
अन्तरधान हुई वह जननी, कहां कान्ति वह पाने को॥
मेरे कर्ण-कुहर में आया, मां ने जो ये शब्द कहे।
निद्रा टूटी शान्त हुआ पर, अब तक हैं वे गूंज रहे॥

\+ + + +

स्नेह सुमन की माला होगी, जभी ऐक्य की डोरी में।
पहिनूंगी मैं उसे सुखी हो, स्वतंत्रता की लोरी में॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैज्ञानिक संसार

रबड़ का फर्श

एक लेखक का विचार है कि वह दिन शीघ्र आने वाला है जब कि रबड़ के फर्श का भी उतना ही रिवाज हो जायगा जितना आजकल रबड़ की जूतों की एड़ियों का है। गत तीन वर्ष से भिन्न २ प्रकार के रंगों के रबड़ के फर्श लगाने के स्लेट बनाये जारहे हैं जिन में राई के धागों की मात्रा बहुत कम करदी गयी है। इन को देखकर बहुत से लोगों को विश्वास होगया है कि यह कई प्रकार के मकानों में फर्श लगाने के काम आसक्ते हैं। रबड़ के साथ सीमैंट का मेल करने से ऐसा उत्तम फर्श तय्यार होता जैसा किसी भी अन्य पदार्थ से आजकल बनाया जाता है। इस में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं, सिवाय इस के कि आजकल के स्थायी फर्शों की अपेक्षा उस में आरम्भिक व्यय कुछ अधिक होता है। यह रबड़ की सीमैंट का फर्श एक बार लगा लेने से मकान की आयुभर पुनः लगाने की आवश्यकता न होगी। अनुमान किया जाता है कि दस वर्ष के भीतर २ अमरीका में १००, ०००, ०००, वर्गफुट रबड़ का फर्श प्रति वर्ष लगा करेगा।

मिश्र की पुरानी घड़ी

मानवजाति के प्राचीन इतिहास में कई स्थलों पर समय को ठीक २ नापने का इतना अप्रमत्त वर्णन आता है कि यह अनुमान सर्वथा सत्य प्रतीत होता है कि प्राचीन समय में भी किसी न किसी प्रकार की घड़ियों का प्रयोग रहा होगा। हमारे ज्योतिष शास्त्र में घड़ी, पल इत्यादि शब्द समय की बांट के सूचक हैं। रेत घड़ी का विवरण तो हमारे बहुत से पाठक जानते होंगे। अब मिश्र देश की पुरानी दो जल घड़ियों का पता चला है जिसमें एक तो ३५सौ वर्ष पुरानी प्रतीत होती है, और दूसरी इससेभी पुरानी। पहली घड़ी में जल के एक रस बाहर निकलने से समय नापा जाता था और दूसरी में जल के भीतर आने से। दोनों में वर्ष भर के बारह महीनों दिन और रात के भिन्न २ परिमाण के अनुकूल बारह २ भिन्न भिन्न परिमाणमाला खुदी हुई हैं। इससे पता चलता है कि उन दिनों में घन्टा वर्ष के मास के अनुसार छोटा बड़ा होता था।

फांसी देने की नवीन रीति

नैवाड़ा, अमरीका में एक कानून पास हुआ था कि आगे को मृत्यु दंड साधारण रीति से फांसी पर लटका कर न दिया जाय वरन् किसी बिषैली गैस द्वारा शीघ्र से शीघ्र पीड़ा रहित तरीके से अपराधी के प्राण लिये जायें। इस कानून के अनुसार गत मार्च में सब से पहिला दण्ड मिला। अपराधी एक चीनी हत्यारा था। उसे एक ऐसे कमरे में बन्द कर दिया जिस में से जरासी भी गैस बाहर नहीं निकल सक्ती थी। अन्त में उस कमरे में हाईड्रोसायनिक गैस पहुंचाई गयी। भीतरसे अपराधी की अवस्था देखने के लिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक शीशों वाली खिड़की रखी हुई थी। कोई ६ मिनिट तक वह सिर पटकता रहा और इसके बाद शांत होगया। विज्ञानकी दृष्टि से विचार यह था कि मृत्यु के पीछे उसे पुनर्जीवित करने का यत्न किया जायगा। परन्तु वह समय जिस के पश्चात् मृत्यु गृहमें कोई अन्य व्यक्ति अपने जीवन को संकट में डाले बिना जा सकता था इतना लम्बा था कि यह प्रयत्न छोड़ना पड़ा। अपराधी को इस प्रकार दण्ड देने के फैसले के विरुद्ध अमरीका की सब से बड़ी अदालत में अपील की गई थी कि मृत्युदण्ड का यह तरीका अति निर्दय और अमानुषिक है। अदालत ने यह मानने से इनकार कर दिया कि पीड़ा रहित मृत्युदण्ड की एक रीति दूसरी से अधिक निर्दयी है और अपील खारिज कर दी।

क्या भूगर्भ-ताप हमारे काम आसक्ता है ?

ज्यों २ हम भूगर्भ के भीतर घुसते जायं गरमी बढ़ती जाती है। भिन्न भिन्न स्थानों पर ७० फुट से २५० फुट नीचे जाने पर ताप एक दर्जा बढ़ जाता है। मनुष्य पृथ्वी के ऊपर पांच मील तक ऊंचा चढ़ गया है। यदि वह पृथ्वी के भीतर भी ५ मील तक घुस सके तो तापके बड़े भारी केन्द्र में पहुंच जायगा। उसके मन में यह विचार अवश्य आयेगा कि इस ताप को पृथ्वी के वक्षस्थल पर किस प्रकार लेजाया जाय, जिससे कि वह मानवजाति के काम में आसके। अमरीका की खनिक समिति (Bureau of Mines) इस परिणाम पर पहुंची है कि यह विचार स्वप्न कोटि से बाहर नहीं निकल सकता। असीम खर्च कुछ बड़ी कठिनाई नहीं है। यद्यपि ५ मील गहरा गढ़हा खोदने में ५ करोड़ रुपये के लगभग खर्च होगा परन्तु कठिनाई यह है कि किसी भी भूगर्भ स्थित चट्टान में ताप की मात्रा, तापमापक-यन्त्र द्वारा आये हुये परिमाण के अनुसार नहीं, वरन् चट्टान की ताप-प्रवाहक शक्ति से परिमित है। इसको समझने के लिये जल का उदाहरण लीजिये। किसी भी पथरीली चट्टान में से कितना जल रिसरिस कर नीचे गिर सकता है इसका प्रमाण ऊपर रखे हुये जल की मात्रा अथवा दबाव पर निर्भर नहीं वरन् चट्टान में सूक्ष्म छिद्रों की नाप पर अवलम्बित है। इसी प्रकार चट्टान द्वारा कितने समय में कितना ताप निकल सकता है, समझिये। इस ताप की मात्रा बहुत कम है। यह पहिली कठिनाई है। दूसरी कठिनाई यह है कि ताप भूमि के ५ मील भीतर विद्यमान है, उसे ऊपर कैसे लाया जाय ? एक विचार यह है कि ऊपर से लोहे के नलकों द्वारा पानी डाला जावे, ज्यों २ वह नीचे जायगा गरम होता जायगा--और फिर पानी से गरमी लेकर अन्य काम में लाई जासक्ती है। परन्तु पानी की यह गरमी हमें भूमि से पांच मील नीचे प्राप्त है, अतः हमारे किसी काम की नहीं। गरम जल को ऊपर लाते समय वह उसी वेग से ठंढा होगा जिस से कि वह नीचे जाते हुए गरम हुआ था और लौटकर आने पर हमें उतना ही ठंढा मिलेगा जितना हमने भीतर डाला था। यदि लौटने वाले लोहे के नल के को हम किसी प्रकार ताप के नष्ट होने से सुरक्षित भी कर सकें तब भी यह ताप हमें इतना महंगा पड़ेगा कि तब तक हमारे किसी काम का न होगा, जबतक हमें कोयले का ताप आजकल जितना सस्ता मिलता है उससे सस्ता न पड़े।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संगीत और पुष्प

संगीत और राग इस जगत में कोमलता और मधुरता, अतः आनन्द के एक रूप हैं। परन्तु ऐसे भी प्राणी हैं जिन्हें न केवल यही कि सङ्गीत से कोई प्रेम नहीं वरन् इससे वास्तविक घृणा है। कोमल माधुर्य्यमय सौन्दर्य्य का दूसरा प्रतिनिधि संसार के अनेक पुष्प और कुसुम हैं। सौन्दर्य्य सौन्दर्य्य को चाहता है, कोमलता कोमलता की आकर्षक है। जैसे को तैसा चाहता है यह संसार की एक परीक्षित बात है। सदाचारी सदाचारी से अथवा चोर चोर से घृणा करे यह बात संसार में देखी नहीं जाती। सौंदर्य लावण्य से, सुन्दरता रमणीयता से घृणा करे, क्या यह सम्भव है? आज हम अपने पाठकों को इस अनन्त संसार के अतुल भण्डार से एक ऐसी ही लीला का दर्शन कराते हैं।

अभी इन्हीं दिनों यह बात देखने में आई है कि कई प्रकार के ऐसे भी पुष्प हैं जिनको संगीत से बड़ी घृणा है। जहां पर दिन में कई घण्टों तक बराबर शब्द होता रहे, वहां के निकटवर्ती कोई २ फूल उस शब्द की आवाज़ से अपना मुख फेर लेने की आदत गृहण कर लेते हैं। Cyclamen और Carnation जाति के पुष्प संगीत से बड़ी बुरी तरह से प्रभावित होते हैं। एक स्थान पर जहां कि नृत्य-संगीत होरहा था इन पुष्पों से मण्डप सजाया गया था। कुछ घण्टे के पीछे देखा गया कि सब के सब फूलों ने जान बूझकर संगीत स्थान की ओर अपनी पीठें फेर लीं। उन का मुख संगीत की ओर फेर कर रखा गया, परन्तु थोड़ी देर पीछे उन्होंने इस ओर से फिर अपना मुंह फेर लिया। एक प्रकार का सफैद कमल का फूल होता है, उसने भी ऐसा ही किया। इस 'घृणा' का क्या कारण! अभी तक वैज्ञानिक इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके।

हमारी मंजूषा

अलंकार तथा गुरुकुल समाचार—यह स्नातक मण्डल गुरुकुल कांगड़ी का मुखपत्र अभी दो मास से सिद्धहस्त लेखक श्री० प्रोफेसर सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के सम्पादकत्व में गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित होने लगा है। वार्षिक मूल्य ३) रु० है। विदेश के लिये ४) है। श्रावण का अंक हमारे सामने है। इसमें रायल ८ पेजी आकार के ४ फार्म या ३२ पृष्ठ हैं। इस में ४ मनोहर भावपूर्ण कवितायें और ५ लेख हैं जिन में से 'शब्द शास्त्र तथा प्राचीन आर्यसभ्यता' नामक लेख, 'क्रांति करो पर शान्त बने रहे' नामक कविता विशेष रूप से पढ़ने योग्य हैं।

आर्य्यसमाज में इनेगिने ही पत्र हैं तिस पर आर्यभाषा की उच्च कोटि की मासिक पत्रिकायें अभी तक केवल दो ही थीं, एक ज्योति, दूसरा आर्य। अतः आर्य्यभाषा साहित्य की वृद्धि के लिये जितने भी उत्तम पत्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हों उतना ही अच्छा है। हम सहयोगी 'अलंकार' का हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि सञ्चालक महोदय शीघ्र ही इस के आकार प्रकार इत्यादि उन्नत करके इसे आर्यभाषा का सचमुच अलंकार बनाने की चेष्टा करेंगे। आर्य्यजनता को इसे अवश्य मंगाना चाहिये।

परवार बन्धु—भारतवर्षीय जैन परवारसभा का मुख पत्र है। सम्पादक श्री पं० दरबारी लाल साहित्यरत्न न्यायतीर्थ हैं। पृष्ठ संख्या ५६, वार्षिक मूल्य टाइटिल पेज पर नहीं है। यह जबलपुर से दो वर्षों से निकलता है। आकार प्रकार अच्छा है। लेख और कवितायें भी उत्तम होती हैं।

आर्य्यजगत्—यह नया आर्य्यभाषा का साप्ताहिक पत्र अभी थोड़े दिन से ही लाहौर से आर्य्य गज़ट के सम्पादक ला० खुशालचंद जी के सम्पादकत्व में निकलने लगा है। वार्षिक मूल्य ४) यह आर्य्य प्रादेशिक सभा का मुख पत्र है।

प्राप्ति स्वीकार—

१. कल्पवृक्ष—वार्षिक मूल्य २॥) कल्पवृक्ष कार्य्यालय उज्जैन से प्रकाशित

२. वन्दे जिनवरम आणि राजहंस मराठी का मासिकपत्र मूल्य २॥) कृष्णजी रामचन्द्र लाटकर, वन्देजिनवरम् प्रेस बेलगांव से प्राप्त।

३. विज्ञापक—वार्षिक मूल्य २।) यह पत्र बड़ौदा की सुप्रसिद्ध जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

४. भूगोल—सम्पादक रामनारायण मिश्र बी. ए. वार्षिक मूल्य ३। यह सचित्र मासिकपत्रिका अभी तीन मास से मेरठ से निकलने लगी है। लेख भूगोल के विज्ञान सम्बन्धी ही रहते हैं। पत्रिका शिक्षित वर्ग के देखने योग्य है।

५. वीर—भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद का पाक्षिकपत्र है मूल्य २॥) मिलने का पता—राजेन्द्रप्रसाद जैन प्रकाशक 'वीर' बिजनौर यू० पी०

हमारे पास निम्न पुस्तकें भी बहुत दिनों से आई हुई हैं, किन्तु इनकी समालोचना अगले अंक में होगी, प्रेषक महोदय देरी के लिये क्षमा करें।

१. भाषा विज्ञान—रचयिता श्यामसुन्दर दास जी बी० ए०

२. उपयोगितावाद।

३. जातक कथामाला।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

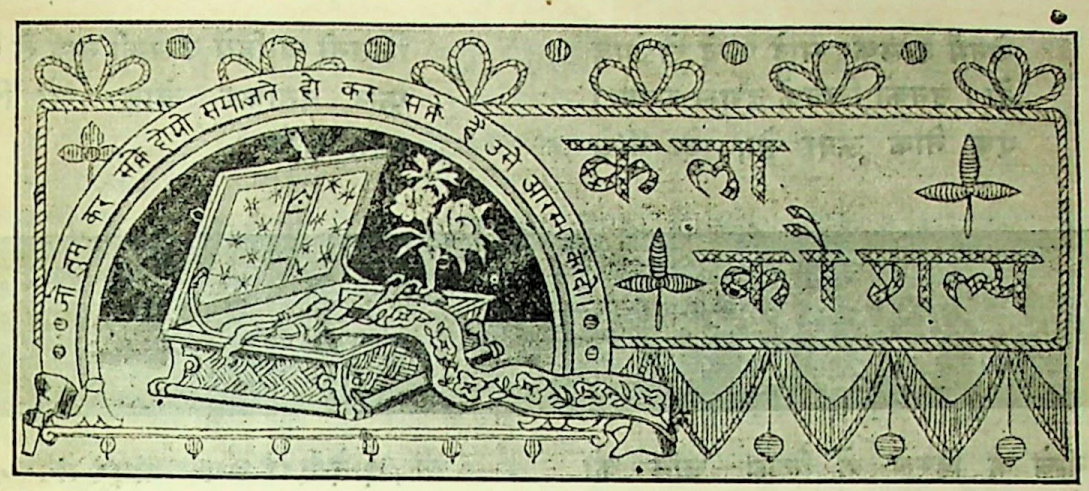

इलियन लेस

लेखिका—श्रीमती ओ३मवती देवी

संकेत:—चेन के लिए "चै" तेहरे क्रोशिये के लिए "ते" दोहरे क्रोशिये के लिए "दोहरा" सादा क्रोशिया = "सादा" कंगूरा वा नोक

वस्तुएं:—खूब महीन तागे वा रेशम से ६ नं० के लोहे के क्रोशिये से यदि यह बीनी जाय तो बढ़िया २ कपड़ों के ऊपर लगानेवाली बड़ी सुन्दर लेस बनती है। केवल एक साथ न बनकर पहिले इसका एक ऊपर का हिस्सा टुकड़े २ बनाकर जोड़ लेते हैं फिर नीचे चार पंक्ति और बीनी जाती हैं और ऊपर २ पक्ति और बीनी जाती हैं तब लेस पूरी होती है।

आरम्भ में ८ चेन करके एक सादा फंदा पहिली चेन में डालकर छल्ले के रूप में करो।

१ घेरा:—छल्ले के अन्दर बीनो, ३चे, पहिले ते के लिए, ५ते., ५चे., ६ते., ५चे., ६ते., ५चे., १ सादा. चेनों के सिरे पर जो तेहरे के स्थान में पहिले बीनी थी।

२ घेरा:—*१ दोहरा प्रत्येक तेहरे के ऊपर, ५चे., १ दोहरा चेन के छल्ले के बीच में ५चे., १ दोहरा उसी में, ५चे., १ दोहरा. तेहरे पर., इस * चिन्ह से बनाओ और अन्त में सादा फन्दा करके जोड़ दो।

३ घेरा:—*१ दोहरा, हर एक दोहरे पर जो झुंड में हैं, ५चे., १ दोहरा पहिले चेन के छल्ले में, ७चे., १ दोहरा अगले छल्ले में, ५चे., पिछला छोटा छल्ला छोड़ दो फिर उसी प्रकार * आरम्भ की तरह दोहरों पर दोहरे बीनो और घेरे को सादे फन्दे से जोड़ कर पक्की तरह सफाई से समाप्त कर दो, धागा तोड़ दो। यह एक तिकोना ऊपर का फूल तैयार हुआ। इसी प्रकार एक और बीनो और उनको पिछले घेरे में के ७ चेन के अन्तवाले छल्ले के आने पर ४थी चेन के साथ अगले फूल की पिछली ४थी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

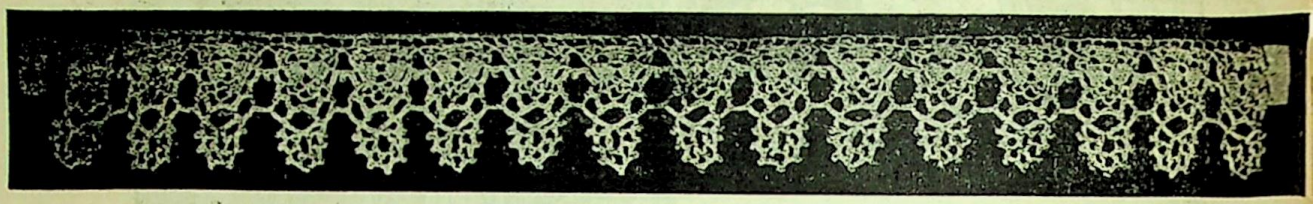

नीचे के हिस्से के लिए:—धागे को दाहिने हाथ की तरफ के पहिले तेहरे से जोड़ दो, ५चे., ५ दोहरे छोड़कर १ दोहरा बीनो पिछले में बीनो, ५चे., १ दोहरा पहिले छेदमें, ७चे, १ दोहरा. अगले में,७चे.,१दोहरा अगले में., ५चे १ दोहरा दोहरे पर ५चे., ४ दोहरे छोड़कर १ दोहरा पिछले दोहरे पर, ५चे., १ दोहरा दूसरे नमूने के दाहिनी तरफ के दोहरों के झुंड में के पहिले दोहरे पर, और फिर ऊपर बताई हुई के अनुसार सारी पंक्ति बीनो।

२ पंक्ति:—५ दोरे पहिले छल्ले में २ दोहरे १ कंगूरा (४ चेन करके सादा फन्दा दोहरे पर लौट कर बीनकर जो नोक सी बनती है) २ दोहरे दूसरे छल्ले में, ३ दोहरे, १ कंगूरा ३ दोहरे ३सरे और चौथे छल्ले में, २ दोहरे, १ कंगूरा, २ दोहरे ५ वें छल्ले में ५ दोहरे बराबर बिना नोक अगले छल्ले में, ३ दोहरे, १ कंगूरा ३ दोहरे अगले छल्ले में जो कि दो फूलोंके नमूने के बीच में है और इसी प्रकार सारी पंक्ति हर एक फूल के ऊपर बीनो।

३ पंक्ति:—धागे को पहिले कंगूरे पर जोड़दो, ५चे., १ दोहरा अगले कगूरे में १० चे., १ दोहरा अगले कंगूरे में, ५चे., १ दोहरा अगले कंगूरे में, ५चे.; १ कंगूरा अगले नमूने के पहिले कंगूरे में, और इसी प्रकार सब कहीं दोहराओ।

४ पंक्ति:—५ दोहरे बीचवाले छल्ले से पहिले छल्ले में, बीच के छल्ले में पहिले ५ दोहरे, ६ कंगूरे (४ चेनो के) बीन कर एक सादा फंदा पहिले कंगूरे में डालकर सब ६ कंगूरों को एक छल्ले में बना लो, फिर ६ दोहरे और १० चेनोंवाले छल्ले में बीनो, लौटो। ५चे., १ दोहरा हरएक कंगूरे में बीनो, ५ चे., १ दोहरा १० चेन के छल्ले में के पहिले दोहरे पर लौटो। २ दोहरे १ कंगूरा, २ दोहरे, हरएक ५ चेनों के छेद में, ५ दोहरे फूल के अगले छल्ले में, ५ दोहरे दो फूलों के बीच में के छल्ले में, और इसी प्रकार हर फूल पर आरम्भ से दोहराओ। अब ऊपरके किनारे के लिए—धागा जोड़ कर २ चेन, २ छोड़ो, १ तेहरा सारी लेस पर।

२ पंक्ति:—३ दोहरे हर एक दो चेन के छेद में।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय महिलाओं का अपनी बहिनों के प्रति कर्त्तव्य

लेखिका—कुमारी शिवरानी देवी विदुषी

प्रायः देखा जाता है कि बहुत सी बहिनें अपनी प्रिय पुत्रियों को विद्या पढ़ाना उचित नहीं समझतीं और अगर विद्या पढ़ाती भी हैं तो अधूरी। केवल चिट्ठी पत्री लिखने के लायक। यह ठीक नहीं, क्योंकि इस अर्धशिक्षा से हानि के सिवा लाभ नहीं। वह ज्ञान धर्म और वेद शास्त्र की पुस्तकों को नहीं पढ़ सकतीं और न यह समझतीं कि हमारा धर्म क्या है, उस की किस प्रकार रक्षा करनी चाहिये।

चुकी हैं और अपना २ चमत्कार दिखला चुकी हैं। सीता महारानी, दमयन्ती, द्रौपदी, इत्यादि जिन्होंने राजसुख और सन्तान प्रेम को तिलांजलि देकर के अपने पति के साथ वनों में भ्रमण किया और अनेकों कष्ट भोगे। महारानी कौशिल्या और महारानी सुमित्रा कैसी २ शिक्षिता थीं, जिनके पुत्र उनकी शिक्षा से ऐसे २ आज्ञाकारी, यती, ब्रह्मचारी एवं बलवान् हुये जिन्होंने सहस्रों राक्षसों का वध किया और जिन की कीर्त्ति आज तक संसार में वर्त्तमान है और सर्वदा रहेगी।

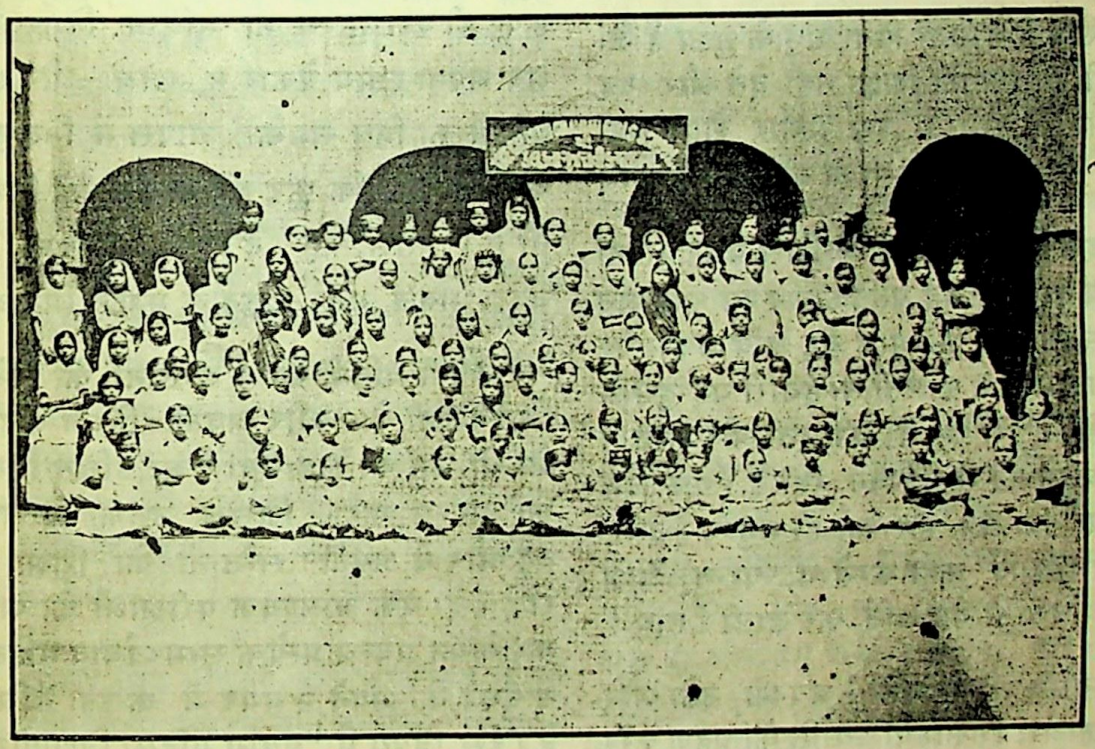

गुजराती कन्या पाठशाला

वग़ैर पढ़े हुए उनको यह ज्ञात नहीं होगा कि हमारे भारतवर्ष में प्राचीन काल में कैसी २ शिक्षिता महिलायें पदार्पण कर

प्यारी बहिनो! अगर वे स्त्रियां ही शिक्षित न होतीं तो उनके पुत्र ऐसे तेजस्वी, यशस्वी, बलवान्, और जगत-प्रसिद्ध किस प्रकार होते?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियाँ अशिक्षित होने के कारण मैके में मा, बहिन, भावज और नौकर चाकर इत्यादि से लड़ाई झगड़ा किया करती हैं, और जब पति गृह को जाती हैं तो सास व ननद, देवरानी व पति तक से लड़ती हैं और उनकी बुराइयाँ लिख २ कर पिता के यहां भेजती हैं। जिसका परिणाम अति हानिकारक होता है। जब माता पिता सुनते हैं तो उनका हृदय भी दुःखी होता है और इधर भी यह ज्ञात हो जाने पर कलह होती है। परन्तु यह उनका अपराध नहीं है यह तो उन माता पिता का अपराध है जो शिक्षा नहीं देते, क्योंकि कहा है—

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथाः॥

सच है वे माता पिता शत्रु के तुल्य हैं जो अपनी सन्तान को शिक्षा नहीं देते और वह सन्तान भी सभा में इस प्रकार शोभा नहीं पाती जिस प्रकार हंसों के बीच में बगुला।

इस अविद्या ने हम पर किस कदर अपना प्रभाव डाला है यह पाठिकायें स्वयं अनुमान कर सकती हैं। जो आज यह अविद्या हम पर अपना प्रभाव न डालती तो हमारी यह दुर्गति क्यों होती कि अब पैर की जूती और सन्तान पैदा करने की मैशीन बन रही हैं। एक दिन वह था कि जब हम को ही मनुष्य—देवी लक्ष्मी इत्यादि कहा करते थे, परन्तु आज इस अविद्या ने यह गति कर डाली! हाय!

प्यारी बहिनो, उठो! अब भी उठो और चेत जाओ! शिक्षारूपी ज्योति को ग्रहण करो और आलस्यरूपी निद्रा के अन्धकार को त्याग दो। स्वयं विदुषी बनो और अपनी बहिनों को जो घोर अन्धकार में पड़ी हुई हैं, विदुषी बनाओ। प्यारी शिक्षित महिलाओ तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम अन्य देवियों के उपकारार्थ अपने २ नगर में स्त्रियों की एक सभा करो और उसमें स्त्री शिक्षा, मितव्ययता, बच्चों के पालन पोषण, उनकी शिक्षा और गृह सम्बन्धी विषयों को अच्छे प्रकार से सब उपस्थित महिलाओं को समझाओ। गृहस्थ आश्रम के अर्थ क्या हैं? इसमें कब पदार्पण करना चाहिये? और किस प्रकार रहना चाहिये? और हमारा परम धर्म है कि हम अपने पूर्वजों की सेवा करें—इत्यादि विषयों पर ऐसी शिक्षायें देनी, व ऐसे कार्य करने उचित हैं जिस से इस भारत की स्त्रियाँ सुधरें और यह भारत मिट्टी में न मिले, जो इस समय परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़ रहा है।

प्यारी बहिनों! अब संभल जाओ, तुम्हारे ऊपर ही इस भारत का भविष्य निर्भर है। अब अपना समय बेकार न खोओ और सब बहिनों को प्रिय समझो, आपस में मिलजुल कर रहो, क्योंकि फूट ही आपत्ति की निशानी है। सास, बहू देवरानी, जिठानी, व ननद, भावज, भाई, बहिनोंके झगड़े मिटाओ।

अपनी बहिनों को व सन्तानों को यथोचित शिक्षा दो—और अपनी निर्धन बहिनों को भी धन की सहायता देकर उचित शिक्षा का प्रबन्ध करो, जिससे उनका उत्साह बढ़े और वे अपनी सन्तानों को शिक्षा दे सकें। दो एक आवश्यक परीक्षाओं को पास कराने का प्रबन्ध प्रत्येक सामर्थ्यवान महिला व पुरुष को अपने २ नगर में कराना उचित है। इस विषय में "प्रयाग महिला विद्यापीठ" ने जो कार्य कर दिखाया है वह प्रशंसनीय है—वह दिन पर दिन उन्नति कर रही है और महिलाओं का उपकार करने में तनमन धन से तत्पर है—धनवान महाशयों का कर्त्तव्य है कि उसकी सहायता करें—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु केवल परीक्षा दिलवा देना ही हमारी प्रिय बहिनें को अपना मुख्य कर्त्तव्य न समझ लेना चाहिये, वरंच परीक्षा सम्बन्धी विषयें को पढ़ कर उन का प्रयोग भी करना उचित है। जब तक उनका प्रयोग न किया जायगा, तब तक सुधार नहीं हो सकता। जैसे—भोजन बनाने की विधि, कपड़ा सीने का गुण, इत्यादि किताबें से पढ़ कर प्राप्त कर लिया परन्तु जब तक हाथ से स्वयं न करेंगी, तब तक न कपड़ा ही सीं सकती हैं, न भोजन ही बना सकती हैं। यदि प्राप्त हुये ज्ञान से करें भी तो ठीक न होगा। उनके लिये गृह--सम्बन्धी पूर्ण विषयें व कार्यों का जानना परमावश्यक है। जैसे घर में मेल से रहना, घर का काम काज स्वयम् हाथ से करना, आय और व्यय का विचार करके प्रत्येक गृहकार्य करना। अपने सम्बन्धी और रिश्तेदारें का सम्मान करना, पूर्वजों की सेवा करना, किसी को कटु वचन न कहना, अपने से छोटें को प्यार से रखना, अपने घर और बच्चें को स्वच्छ रखना, और उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना, स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयें पर ध्यान देना, भोजन इत्यादि का ठीक समय पर तय्यार करना, अपने कुल के व समाज के नियमें का पालन करना, इत्यादि, यह ऐसे कार्य हैं जिन पर कटिबद्ध न रहने से कुल में कलङ्क का टीका लगता है।

हमारी प्रिय बहिनें को उपरोक्त गृह-सम्बन्धी शिक्षा अवश्य देनी चाहिये। शिक्षा-रूपी दीपक तम रूपी रात्रि के लिये रवि का काम देती है।

शोक है कि भारतीय महिलायें अशिक्षित होने के कारण उन्नति नहीं कर सकतीं। अगर इनको शिक्षा दी जावे तो यह पुरुषें से शीघ्र और अधिक शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। अबतो वर्तमान समय में हमारी बहिनें का केवल इतना ही कर्त्तव्य समझा जाता है कि रूखा सूखा, मोटा झोटा भोजन तय्यार कर दें और टहलवे की तरह दिन रात घर का काम करती रहें, और सास ननद की झिड़कियां सहती रहें, और गहने कपड़े में मस्त घर की चार दीवाली के अन्दर छिपी बैठी रहें, बाहर की हवा न लगे। परन्तु इनकी यह पदवी नहीं, शास्त्रें में, वेदें में इन को गृहलक्ष्मी, देवी कहा है और वास्तव में यह लक्ष्मी हैं ही, इनका सत्कार करना उचित है--देखिये 'मनु'जी ने कहा है:-

जिस घर में नहिं होत है, नारिन को सत्कार।
कहत मनु निज शास्त्रमें, सो घर होत उजार॥

इसलिये इनका आदर करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। और इनके वह बड़े कर्त्तव्य हैं जो एक सच्चे प्रतिपालक के होने चाहिये। अपनी प्रजा को सुखी व अमन चैन से रक्खे और उसका समुचित सुधार करें, इत्यादि।

मैं आशा करती हूँ कि मेरी प्यारी बहिनें मेरे इस विषय पर अवश्य ध्यान देंगी और इस से कुछ लाभ उठावेंगी, ताकि हम अभागी बहिनें में शिक्षा का प्रचार हो। अविद्यारूपी तम का शिक्षारूपी रवि से नाश हो और हम सब महिलायें स्त्री शिक्षा पर ध्यान देकर, सुशिक्षिता होकर देशोद्धार करें। प्राचीन महिलाओं की तरह विदुषी बनें और अपनी सन्तान को ब्रह्मचारी व शिक्षित बनावें।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"कान्हा"

लेखक—श्री बलवन्तराय सचदेव लाहौर

(अप्रेल के अंक से आगे)

मेरी पांचवीं की परीक्षा में भी तीन महीने रह गये। माता ने फिर मुझे दिल्ली भेजा कि बहू को ले आवे। मैं अपने पिता के साथ दिल्ली गया और कान्हा को लिवा लाया। इस एक वर्ष में मैं तो शायद ही बढ़ा हुआ हूंगा परन्तु कान्हा आगे से भी दूनी मालूम देने लगी और उसका मुख गुलाब की तरह खिल उठा। कान्हा को आये एक ही महीना हुआ होगा एक दिन रात को मेरी माता को बुखार हो गया और साथ ही खांसी आने लगी। भाग्य में दुख और शोक तो था ही कोई पांच रोजके बुखार में ही मेरी माता का स्वर्गवास हो गया। जिस समय वह मरीं, मैं उसके साथ चिपट कर बावलों की तरह "माता जी" "माता जी" कह कर पुकारने लगा परन्तु वहां सुन कौन रहा था? मृत्यु से दो दिन पहिले शाम को जब मैं उनके पास गया था, तब उन्होंने मुझे पास लिटा लिया था और थोड़ा हंस कर प्यार किया था।

मैं उन की गोद में बैठना चाहता था परन्तु उन को कहीं कष्ट अधिक न हो जावे इस लिये न बैठा। हाय! मैं व्यर्थ ही डरा, गोद में भी न बैठ सका! कुछ तो सुख मिलता! कुछ तो धीरज होता! उसके बाद वह फिर न हंसी। आज वह बिल्कुल सफेद हो गई थीं। आंखें आधी बन्द थीं—सांस नहीं था—शरीर गर्म था। हाथ पैर नर्म थे—कान्हा रो रही थी और स्त्रियां भी रो रहीं थीं। पिता जी दौड़े दौड़े गये, डाक्टर को बुला लाये। दांत निकाल कर गिड़गिड़ा कर उनसे प्रार्थना की कि—"डाक्टर साहिब। फीस चाहे जो लो पर इन्हें एक बार अच्छी तरह देख दो क्या यह बेहोश हो गयी हैं? शरीर देखिये कितना गर्म है?" डाक्टर ने करुणा दृष्टि से उनकी ओर देखा। और प्रेम से उनके कन्धे पर हाथ धर कर कहा—"मर्द हो मर्द की तरह विपत्ति में धैर्य धरो। व्यर्थ की आशा और मृगतृष्णा को छोड़ दो। यही भगवान की इच्छा है और वह पूरी हुई।"

मेरे हाथ पांव फूल गये। दिल बैठ गया, और मैं पागलों की तरह कान्हा के कन्धे का सहारा लेकर रोने लगा। पिता ने आवाज करारी बनाई रखी—आँसू भी नहीं गिरने दिये पर उनका भी मन नीचे को धंसने लगा। और वह धड़क से चारपाई पर गिर पड़े॥

इतना कहकर महेन्द्र खूब ज़ोरसे रो पड़ा।

रघुः—महेन्द्र माता की याद से रोना तो आता है, परन्तु भाई रोओ मत, कहो आगे बात क्या है जो तुम्हें आज कल दिन रात सोच में डाले रहती है।

मैं:—नहीं रोता कहाँ—हूं—बात ही तो सुनाता हूं। माता की मृत्यु के बाद हम घर में सारे ही बहुत उदास रहा करते थे। पिता जी ने तो अपना कमरा दूसरी छत पर बना रखा था और वहीं दिन रात बैठा करते थे। मेरी परीक्षा में अब एक ही महीना रहता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था। पिछले दो महीने नतो मैं पढ़ाही था और न स्कूल ही गया था, इस लिये मुझे गणित अच्छी तरह नहीं आती थी। मैंने घर पर पढ़ाने वाला एक मास्टर नियुक्त किया था। इन घर वाले मास्टर जी का नाम मंगलदास था, आयु इनकी कोई चौबीस पच्चीस वर्ष की होगी, एफ ए. पास थे डील डौल से भी अच्छे थे। मुझे सात रुपये महीने पर एक घंटा रोज पढ़ा जाया करते थे।

एक महीने में मैं ने परीक्षा के लिये तैयारी कर ली और परीक्षा दे दी। पास हो जाने के बाद जब मैं छठी कक्षा में हुआ तो पढ़ने लिखने में किसी से कम न था।

एक दिन प्रातः के समय मंगलदास मेरे पिता को मिलने आया और मिलने के बाद उसी दिन से फिर मुझे पढ़ाने लगा। मैंने उस दिन तो पढ़ लिया परन्तु रात को पिता जी से कहा कि मंगलदास के पढ़ाने की अब मुझे कोई आवश्यकता नहीं लेकिन उन्हों ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि बेटा सात रुपये की तो बात है। अच्छा है जो तुझे वह एक घंटा पढ़ा जाया करेगा।" मैं चुप हो गया और नीचे चला गया।

अब वह मुझे रोज रात के समय पढ़ा जाता था, परन्तु रघु क्या कहूं लज्जाआती है। होंठ फड़क उठते हैं। यह महल, यह ठाठ, यह नौकर चाकर सब मानों कान्हा के लिये तुच्छ थे; बस और क्या चाहती थी। मंगलदासके देखते ही हंसती थी, घुल घुल कर मेरे सामने ही उसी से बात करती थी जैसे वह उसी का सगा था। इज्जत आबरु सब कच्चे धागे में बन्धे लटक रहे थे और वह कच्चा धागा उसीके हाथमें था। कान्हा ने इस बात को न जाना और लगी इस कच्चे धागे को दोनों हाथों से तोड़ने।

मास्टर साहिब की क्या कहूं मुझे तो सवाल निकालने को देदेते और आप कान्हा के साथ बात आदि करने में लगे रहते थे। पढ़ना तो एक घंटा होता था परन्तु आजकल एक क्या दो दो घंटे बैठे रहते थे। मैं अभी तक बुद्धू का बुद्धू ही था, और बिना समझे बूझे उनके प्रेमालाप में कभी कभी शामिल हो हंस भी देता था। वह मुझे तो अवश्य ही खुश रखते थे। और जब कभी मैं लम्बा सवाल निकालने बैठता था तो वह दोनों हंसते हंसते दूसरे कमरे में भी चले जाया करते थे। रात का समय होता था, नौकर चाकर आदि सब घर से बाहर हमारे घर के पास ही छोटे बने हुए घरों में रहते थे। मेरे घर में प्रेम सरोवर लहरें मार रहा था। उस समय मैं प्रेम का कंगाल नहीं था—वह प्रेम नहीं पाप था, तब मैंने पाप की परवाह न की। मैंने उसे देख कर भी न देखा और बे समझ गधे की तरह जानकर भी न जाना, परन्तु आज उसे सोचकर भी कांप उठता हूँ?

मैं एक श्रेणी और आगे बढ़ा और सातवीं श्रेणी की हवा खाने लगा। इन्हीं दिनों में कान्हा का भाई आया और कान्हा को दिल्ली लिवाले गया। मास्टर साहिब तो आजकल भी आया करते थे परन्तु उनका मुख कभी कभी उदासीनता की झलक अवश्य ही दिखा देता था। आजकल वह एक ही घंटा पढ़ा कर चले जाते थे, उस एक घंटे में भी वह आधा घंटा कान्हा की बातें करते थे। कान्हा को गये कोई तीन महीने हुए होंगे। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस दिन रविवार था। स्कूलसे छुट्टी थी मेरे पिता नीचे आये और मेरे ससुर का पत्र हाथ में ले कर के खुशी से बोले:—"पुत्र बधाई हो तेरे घर बेटा उत्पन्न हुआ है"। मैंने सिर नीचे कर लिया। परन्तु यह मालूम नहीं क्यों?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिता जी ने लड्डुओं के कितने ही टोकरे मंगवाये और पानी की तरह लोगों के घरों में बहा दिये। उस दिन जब मंगलदास पढ़ाने को आया तो पिता ने कहा "आज महेन्द्र को मत पढ़ाइये, आज खुशी का दिन है, लीजिये लड्डू खाइये, महेन्द्र के घर लड़का हुआ है।"

यह सुनते ही मास्टर साहिब चुप कर गये और कुछ सोचते हुवे बनावटी सी हंसी हंस दी।

कान्हा आपने मायके से तीन महीने के बाद आई, क्योंकि बच्चे के जन्म के बाद उसे कुछ बुखार रहता था। वह अब दुबली थी। मंगलदास से अब इतना हंसहंस के बातें नहीं करती थी जितना कि पहिले—परन्तु बातें आदि होतीं अवश्य थीं।

मैं अब आठवीं में हुआ इसी वर्ष मेरा क़द्द आदि भी बढ़ गया, दुनिया की हवा भी मेरे ऊपर असर करने लगी और इन्ही दिनों पण्डित जी ने हमें स्कूल में बताया के ब्रह्मचर्य आश्रम और गृहस्थआश्रम क्या हैं। मैंने पंडित जी से एक पुस्तक पढ़ने के लिये इस बारे में ली और उस में लिखा हुआ खुलासा हाल पढ़ा। गृहस्थाश्रम के पढ़ते ही मेरा दिल हवा होने लगा बार बार विचार आया कि "यह बेटा मेरा २ कह कर पुकारते हैं कैसे हुआ?" मैंने वह पुस्तक पडितजी को वापिस करदी। इस वर्ष में रघु! मैं क्या कहूं मैं तो बिलकुल ही बदल गया था। जितना बेवकूफ होता था उतना ही चालाक हो गया। अब मंगल ने मुझे पढ़ाना ही क्या था. उस का मुंह देखते ही मेरा कलेजा उबल उठता था परन्तु पिछली बातों का स्मर्ण आते ही मेरे होश गुम हो जाते थे।

एक दिन मंगलदास मुझे पढ़ाने को आया, अलज़बरे का सवाल निकालने को दिया। सवाल देते ही आप साथ वाले कमरे में चले गये जहां कान्हा बच्चे को सुला रही थी। कान्हा ने मुझे द्वार के पीछे बातें सुनने के लिये खड़ा होते देख लिया था, इसलिये वह घबरा उठी और मंगलदास को वहाँ से जाने को कहा, परन्तु उसने मुझे नहीं देखा था, वह वहीं बैठा रहा और लगा प्रेम वार्त्तालाप बातें करने। ज्यों ज्यों वह बातें करता था त्यों २ कान्हा का मुंह फीका पड़रहा था। कान्हा की रोनी सी सूरत बन गई और वह बच्चे को उठा पिछले दालान में चली गई। मंगलदास कुछ देर तो उस के मुंह की तरफ देखता रहा परन्तु पीछे निराश हो कर फिर वापिस लौट आया। मैं भी झट वहां से हट कर कुर्सी पर आ बैठा।

उस दिन मैं ने किसी न किसी तरह गुस्से को रोक कर घंटा व्यतीत कर दिया। परन्तु ज्यों ही मंगलदास घर से बाहर हुआ मैं दौड़ा हुआ पिता जी के पास गया और इधर उधर की बातों में मैंने कह दिया कि मंगलदास का हिसाब ठीक कर दीजिये क्योंकि मैं अब उससे पढ़ना नहीं चाहता। पिता जी ने फिर ज़ोर देकर कहा—बेटा सात रुपये की तो बात है कुछ उससे भी पढ़ लिया कर। मैं ने उत्तर में कह दिया कि मुझे अब मास्टर की बिल्कुल आवश्यक्ता नहीं और न ही मैं उन से घर पर पढ़ूंगा। बस क्या था, छुट्टी हुई। जितना नहाए उतनाही पुण्य काफ़ी था। पिता जी ने मुझे हठ करता देख मेरी बात मान ली और दूसरे ही दिन उसको वेतन दे बिदा किया। अब कान्हा की सुनो। वह दालान से तब वापिस आई जब मगलदास मेरे कमरे से बाहिर हुआ। आते ही सीधी रसोई में चली गई और मैं ऊपर पिता जी को मिलने गया, मैंने तो उस दिन भोजन कर लिया परन्तु कान्हा ने भोजन को खाना क्या? छूआ तक भी नहीं। (अपूर्ण)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या गुरुकुल समाचार

गत मास से यहां पर गर्मी का प्रभाव बहुत घट गया है प्रायः दो चार दिन बाद वर्षा होती रही है इस कारण वायु ठंढी ही रही है। कोठी की छत्तों पर ब्रह्मचारिणियों तथा कार्य्य कर्तृयों के विस्तरों की पंक्तियां बहुत शोभायमान थीं विशेषतः चांदनी रात्रियों में। परन्तु वर्षा के आगमन पर उन लोगों का विस्तरे उठा कर अर्ध सुप्त अवस्था में उठ कर जाना भी गुरुकुलमें बड़ी सनसनी फैलाता रहा है।

गत दो मास में कोई ब्रह्मचारिणी दीर्घ रोगी नहीं हुई प्रायः सभी स्वस्थ रही हैं। परन्तु परस्पर में असावधानी से खेल कूद करते हुये एक दूसरे को धक्का देदेने से एक ब्रह्मचारिणी के बांह की हड्डी टूट गई थी किन्तु उसी समय इलाज शुरू होगया और अब वह बांह प्रायः ठीक ही है।

ब्रह्मचारिणियों के तौलने की मशीन भी प्राप्त हुई है अतः आषाढ़ मास में इन सबकी तौल की गई है।

पिछले दिनों में बकरीद पर कई दिनों तक हिन्दू मुसलिम वैमनस्य के कारण शहर में बड़ा भीषण दृश्य होता रहा है जो सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है। उन दिनों में कन्या गुरुकुल में परमात्मा की कृपा ही रही। यद्यपि अनिष्टकी आशंका दिन रात बनी रहती थी और गुरुकुल के प्रेमियेाँ को इसकी रक्षा के लिये बड़ी चिन्ता रहती थी, अतः यहां पर दिन रात स्वयं सेवकों का दल रक्षा करता रहता था, तथापि गुरुकुलवासिनी देवियें में भय का संचार नहीं था। इसी दुर्घटना की आशंका से ही कन्या गुरुकुल में टेलीफोन भी लगवाया गया और शस्त्रधारी सेवकों के लिये शस्त्र प्राप्त कर लेने का भी यत्न किया गया।

टेलीफोन

कन्या गुरुकुल में हर एक नई बात बड़ी सनसनी फैलाने वाली होती है चाहे कितनी ही छोटी हो। जिस दिन यहां पर टेलीफोन आया उसी दिन से लड़कियें के लिये एक नया तमाशा उपस्थित होगया। एक तो इन दिनों टेलीफोन का उपयोग भी अधिकता से होता था दूसरे नई चीज़ थी। घंटी हुई और कन्यायें तमाशा देखने उपस्थित हुईं।

कार्य्यकर्तृ देवियों में न्यूनता

गत मास में यहाँ कई स्थान रिक्त हुये जिनकी पूर्ति अभी तक नहीं हुई है। श्रीमती चन्द्रवती जी अध्यापिका ज्वर से पीड़ित हो कर एक मास के अवकाश पर जामपुर चली गई थीं वह १५ अगस्त को आवेंगी। श्रीमती रमादेवी भंडारिन एक मास की छुट्टी पर घर गई थीं वह भी दो चार दिन में आने वाली ही हैं। कुमारी सुमित्रा देवी तथा सुभद्रा देवी जी अध्ययनार्थ जलन्धर विद्यालय चली गई हैं। कई देवियों के कार्य करने के लिये प्रार्थना पत्र आये हुये हैं आशा है कि रिक्त स्थान की शीघ्र ही पूर्ति हो जावेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बृहद्वकाश

कई संरक्षकों के पत्र पर पत्र आरहे हैं कि लड़कियाँ छुट्टियों में घर जा सकेंगी या नहीं। यह सूचना उनको कई बार दी जा चुकी है अब फिर भी दी जाती है कि कन्यायें छुट्टियों में घर नहीं जा सकेंगी। पहिले १४ जुलाई की छुट्टियों में देहरादून भेजने का विचार था, कोठी भी किराये की ली हुई थी परन्तु डाक्टरों की सम्मति यह थी कि मलेरिया में कन्यायें लौट कर यहां न आवें, अतः पीछे ही जावें। इस सम्मति का आदर करते हुये यही निश्चय था कि १५ अगस्त को कन्यायें देहरादून जावेंगी। परन्तु पिछले दिनों दिल्ली की दुर्घटनाओंके कारण कन्यागुरुकुलमें जो विशेष प्रबन्ध करना पड़ा उसको दृष्टि में रखकर प्रबन्धकर्ताओं की सम्मति यह हुई कि यतः इन्हेंने १५ अगस्त को जाना ही है अतः इन्हें अभी भेज दिया जावे। इस फैसले के अनुसार ब्रह्मचारिणियां २८ जुलाई को देहरादून चली गई हैं।

यात्रा में कौन २ गई हैं।

विदेश यात्रा दो दिन के लिये भी करनी हो तो प्रत्येक मनुष्य को कुछ तैय्यारी करनी ही पड़ती है फिर यहाँ पर लग भग एक सौ देवियों की यात्रा थी। ४, ५ दिन तक कपड़े विस्तरे समान आदि ठीक होता रहा और गुरुकुल की कार्य्यकर्तृ देवियों के लिये यह दिन बहुत कार्य्य के थे। ब्रह्मचारिणियाँ यात्रा की खुशी में फूली नहीं समाती थीं। जहां देखो यात्रा की ही चर्चा हो रही है। प्रायः सभी लोग हर्ष से उत्साहित थे। नौकर चाकर सभी उत्सुक थे। कन्याओं के साथ उनकी प्रधान अधिष्ठात्री तथा अन्य सभी अध्यापिकायें और कर्मचारी गण गये हैं केवल आचार्य्या और उनके साथ दो पुपिल टीचर जिन्होंने विशेष परीक्षा की तैय्यारी करनी है रह गयीं हैं। देहरादून में बाहरी प्रबन्ध के लिये गुरुकुल कांगड़ी से वहां के कार्यालयध्यक्ष श्री अमरनाथ सप्रू जी भेजे गये हैं और सब भांति उत्तम प्रबन्ध रखने का यत्न किया जारहा है।

पत्र व्यवहार

कई संरक्षकों के पत्र देहरादून का पता जानने के लिये गुरुकुल कार्यालय में आ रहे हैं। इन संरक्षक महाशयों तथा सब लोगों की सूचना के लिये यह बतलाना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि जिन लोगों को अपनी कन्याओं के सम्बन्ध में कुछ विशेष सूचना लेनी हो वह देहरादून के पते पर पत्र व्यवहार न करें वरन् पहिले की तरह यहीं कन्या गुरुकुल के पते पर ही करें। यहीं के कार्यालय से उन्हें सूचनायें मिल सकेंगी। यहीं पर शुल्क इत्यादि भी भेजते रहें क्योंकि कार्यालय विभाग यहीं पर है।

शुल्क

कन्या गुरुकुल कार्यालय में कई पत्र कन्याओं के शुल्क कम करने या सर्वथा मुक्त करने के सम्बन्ध में आये हैं। हमें बड़ा दुःख है कि गुरुकुल के पास अभी तक कोई निधि इस अंश की पूर्ति के हेतु नहीं है, अतः हमें ऐसे प्रस्तावों को साफ़ इन्कार करना पड़ता है। आर्य्यजनता को चाहिये कि कन्याओं के लिये कुछ छात्र वृत्तियां निकाले ताकि इस प्रकार की त्रुटि पूर्ण हो सके। गुरुकुल की सभा ने तो वर्तमान ८—९ मास के आय के अनुमान से यह निश्चय किया है कि मासिक शुल्क ११) से १५) कर दिया जाय और कन्याओं को वस्त्र पुस्तकें इत्यादि यहीं से देनी चाहिये। प्रस्ताव देर से पास होचुका है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु अभी तक उस को प्रयोग में नहीं लाया जा सका। अब शीघ्र ही यह सूचना सर्कय लर पत्र के रूप में संरक्षकों के पास पहुंचेगी और कम से कम आगामी प्रवेश की तिथि से यह नियम अवश्य लागू होगा।

आगामी प्रवेश कब होगा।

आगामी प्रवेश की तिथि अभी तक निश्चित नहीं है किन्तु जनता के सन्तोष के लिये इतना कहा जा सकता है कि नवम्बरसे पूर्व प्रवेश न हो सकेगा। कन्या गुरुकुल का वार्षिक उत्सव मनाने की जो तिथि निश्चित होगी उसी के साथ ही प्रवेश की तिथि होगी अतः अभी तीन महीने तक धैर्य्य धारण करें।

आगामी प्रवेश में आयु का प्रश्न

यद्यपि सभा के विशेष नियम के अनुकूल प्रारम्भमें गुरुकुल में ११ वर्ष या कुछ ऊपर की कन्यायें भी प्रविष्ट कीगई थीं तथापि आयु का नियम अब प्रति वर्ष शिथिल नहीं होगा। अतः ८-९ वर्ष से ऊपरकी कन्याओं के संरक्षकों को चाहिये कि प्रार्थना पत्र भेजकर कन्याओं को अवश्य प्रविष्ट कर लेने के लिये बाधित करने का कष्ट न उठावें, किंतु सभा के नियमों का पालन करें और नियम पालन करने का ही आदर्श रक्खें। यदि गुरुकुल की आयु से ऊपर कन्या हो चुकी है तो उसके शिक्षण के प्रबन्ध का भार स्वयं ही उठावें न कि गुरुकुलको नियम भंग करनेका पाठ पढ़ावें।

—:o:—

विचार प्रवाह

ज्योतिका विशेषांक और आर्यसमाज।

ज्योति का विशेषांक जो कि कन्या गुरुकुल के अंक के रूप में गत मास निकला था उसके सम्बन्ध में हमारे पास कई सज्जनों क पत्र आये हैं। जिनमें से कई स्वयं पत्रों के सम्पादक भी हैं और प्रतिष्ठित पत्रों के। परन्तु आर्य्य समाजी नहीं। इस से ज्ञात होता है कि ज्योति का विशेषांक आर्य्यसमाज से बाहिर कुछ दिलों को अपनी ओर खींचने की शक्ति रखता है। परन्तु खेद है कि इनी गिनी दो चार सभाओं को छोड़कर किसी भी समाज ने इस के लिये विशेष रूप से आर्डर नहीं भेजे। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज में अपनी चीज़ की क़दर करने की आदत है ही नहीं। हम ज्योति के विशेषांक की तारीफ़ नहीं करते क्योंकि हमारी दृष्टि में हम उसे जिस रूप में जनता को देना चाहते थे वह इस से कहीं बढ़कर थी, जोकि कन्या गुरुकुल के कार्य्य भार के कारण समग्र रूप से पूर्ण न हो सकी। परन्तु बाहरी जनता की दृष्टि में इस विशेषांक का कुछ मूल्य है। वहाँ से बराबर माँग आरही हैं, परन्तु आर्य समाज चुप है। हम पूछते हैं कि और कुछ नहीं तो क्या कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के दर्शन करने और उसके विषय में कुछ जानने की इच्छा से ही प्रेरित होकर आर्य समाजी भाइयों को उचित न था कि प्रत्येक समाज के जितने सभासद हों वह ज्योति के ग्राहक तो बेशक न बनते किन्तु इस विशेषांक को तो केवल ।-), ।=) आने खर्च करके अपने पास रखते? परन्तु उन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या गुरुकुल के सम्बन्ध में प्रकाशित इस प्रथम सूचना का—जिसके द्वारा गुरुकुल की प्रसिद्धि होती है—उचित आदर नहीं किया। आर्य जगत में इस अङ्क का कुछ मूल्य नहीं, कुछ क़दर नहीं!

क्या आर्य्य जनता का कन्या गुरुकुल से यही प्रेम है?

यदि यह उदासीनता के भाव ही सचमुच उनके कन्या गुरुकुलके प्रति भाव की झलक है तो हम निस्सन्देह कहेंगे कि कन्या गुरुकुल का भविष्य निराशा जनक है। कोई भी संस्था बगैर जनता की सहायता के नहीं चल सक्ती फिर कन्याओं के शिक्षणालय? इसमें धनकी बड़ी भारी आवश्यकता है। अभी तो आर्य जनता ने इसे भुलाया ही हुआ है क्योंकि जनता से इसके सम्बन्ध में धन के लिये अपील ही नहीं हुई है, परन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि कन्या गुरुकुल के प्रति उनका कोई कर्त्तव्य ही नहीं है।

हम आर्य्य जनता और आर्य्य समाजों को पुनः याद दिलाते हैं कि वह ज्योति के कन्या गुरुकुलांक के लिये शीघ्र आर्डर भेज कर मंगा कर पढ़कर देखें कि कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ क्या है? इसे क्या बनाना है और किस प्रकार, इन आवश्यकताओं को पूर्ण करना है। दाम बहुत नहीं खर्च होते हैं केवल ॥) प्रति अंक और इकट्ठा में

१० प्रति ४॥)
१५ प्रति ६)
२० प्रति ७॥)
५० प्रति १३)
१०० प्रति २५)

डाक व्यय अलग देना होगा।

दिल्ली का हिन्दू मुस्लिम फिसाद

यों तो हिन्दू मुसल्मानों के फिसाद हमेशा से चलते ही चले आये हैं परन्तु कई वर्षों से जबसे मुलतान, मलावार, सहारनपुर गोंडा, मेरठ इत्यादि में दंगे फिसाद हुये हैं तब से दोनों जातियों में वैमनस्य के कारण कहीं न कहीं झगड़े होते ही सुनाई पड़ते हैं। कहां तो आज से चार पाँच वर्ष पूर्व जब महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था तो उस समय यह अवस्था थी कि लोगों ने गीत बनाये थे कि "हिन्दुओं की राम नौमी आई, हिन्दू मुसलमान रल मिल मनाई" मुसलमानों के त्यौहार पर हिन्दुओं ने मिठाई इत्यादि बांट कर अपनी ऐक्यता को प्रमाणित किया और मुसलमानों ने हिन्दुओं के त्यौहारों पर। परन्तु आज हम यह देखते हैं कि कोई मुस्लिम पत्र, कोई मुस्लिम नेता ऐसा नहीं जो निष्पक्षपात भाव से हिन्दू मुस्लिम झगड़े के प्रश्न पर विचार कर सके। और हिन्दू तो हैं ही कायर। कायरता अपने आप में ही बड़ा भारी दोष है।

सच है 'मनके हारे हार है, मनके जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये मन ही की परतीत॥

मन बड़ा बली है। मनकी प्रवृत्तियों को दबा लो तो विजयी बन कर संसार के मालिक बने रहोगे, मनकी लगाम ढीली छोड़ो तो फिर खाई खंदक में ही गिरते पड़ते चलोगे। मुसलमानों और हिन्दुओं में भक्षक और भक्ष्य का सम्बन्ध रहा है और मुसलमान हमेशः बलात्कारी ही हुए हैं। सभी नहीं किंतु अधिकांश में यही यथार्थता है। कदाचित यह उनके अत्यधिक मांस, मद्य सेवन द्वारा ही ऐसी राक्षसी प्रवृत्ति हो गई है और अब पीढ़ी दर पीढ़ी जड़ पकड़ गई है परन्तु है यही। महात्मा गाँधी जी ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने आत्मसंयम के बल द्वारा उनकी यह प्रवृत्ति दूर करने की चेष्टा की थी, प्रारम्भ में वह कुछ सफल प्रयत्न दीख पड़े, परन्तु यह प्रभावक्षणभंगुर था, उनके मनके ऊपर अमिट तरीके से अंकित नहीं किया जा सका था। इतने में संसार की कई घटनायें आपहुंची और उनके पुरुषार्थ को मटियामेट करने लगीं। हिंदू और मुसलमान दोनोंको परस्पर अत्यन्त अविश्वास है और अविश्वास रहते हुये कोई स्थाई मेल नहीं हो सकता।

यद्यपि हिंदुओं और मुसलमानोंके झगड़ों में दोनों पक्ष के दुष्ट मनुष्य, गुण्डे ही लड़ाइयां करते हैं, भद्रपुरुष इस दंगे फिसाद में क्रियात्मक रूप से शामिल नहीं होते वरन बीच बचाव करने को खड़े होते हैं। परन्तु यदि दिल को टटोलो तो पता लगता है प्रत्येक को अपने मतावलम्बियों के साथ ही दिली सहानुभूति होती है। क्यों? इस लिये कि मन में संस्कार पड़े हुये हैं वह अपना प्रभाव डालते हैं। दिल्ली के दंगे फिसाद में भी यही दशा दीख पड़ी। नेता लोग अन्य बातों में लगे रहनेके कारण पहलेतो परिस्थिति को संभाल नहीं सके और फिर वह सच्ची घटनाओं के जानने और प्रकाशित करने की ओर से उपेक्षा रखते रहे हैं। हिंदू मुसलमानों में जब तक भक्ष्य और भक्षक का सम्बन्ध रहेगा कभी भी मेल नहीं होगा। मुसलमानों के नेताओं का बल इस ओर लगना चाहिये कि वह मुसलमान जनताकी मानसिक गति को उनकी भूलें, बतलाते हुये और शांत रखते हुए सम चाल से चलाने का प्रयत्न करें और हिंदू नेताओं को चाहिये वह हिंदुओं के ऊपर दबाव डालकर उन्हें शुद्धि और संगठन के नाम पर उद्धत न बनने दें। परन्तु परस्पर के अविश्वास को प्रत्येक मौके पर उखाड़नेकी सोचें। अधिकार और कर्तव्य दोनों दलों के समान हों तभी यह दंगा फिसाद रुक सकेगा। वरना जब जब अवसर उपस्थित होगा तब २ यह दोने गुलाम जातियां-जोकि शासकों की मशीनगने के डर से ही दबी रहती हैं—उभरती रहेंगी और आपस में लड़ मरकर विदेशी शास की नींव को सींचती रहेंगी।

हिंदुओ! सोचो तो सही कि हज़ारे गायें पलटन के लिए कटती हैं परन्तु तुम चू तक नहीं करते। किंतु अपना भाई यदि ऐस करता है तो तुम गौमाता की रक्षा के नाम पर उससे अपना दिली गुब्बार निकालने क यत्न करते हो। हम मानते हैं कि गौहत्य पाप है, महापाप है और किसी को सह नहीं करना चाहिये। परन्तु पक्षपात क्यों अगर आपमें इतनी ही भक्ति और प्रेम है तो गौहत्या सर्वथा रोकिये। गौ के बचाने के नामपर सैकड़ों भाइयों की हत्या करा लेन अबलाओं पर अत्याचार करने के मौके देन मशीनगनों द्वारा मानव जाति को भुन जाने का मौका देना कहाँतक बुद्धिमत्ता है?

दूसरी ओर मुसलमान भाइयो! अग आप अपने हिन्दू भाइयों का चुनौती देते हु इस प्रकार के जुलूस निकाल क गाय की कुर्बानी करते हो तो सैकड़ों ब हवन और बहुतों पर अत्याचार करके अप जाति और अपने धर्म को कलंकित करते यही क्या त्यौहार मनाने का आनन्द है कदापि नहीं। त्यौहार आनन्द और हर्ष मन के लिये होते हैं उन्हें उसी प्रकार के काम लाना चाहिये। दोनों दलों के नेताओ? प्र के दिलों को पुनः प्रभावित करो और अप सद्भाव तथा निष्पक्षपात फैसले द्वारा दो दलों के मन मुटाव को दूर करके पुनः भ्रा भाव स्थापित करो। तभी देश में शा रहेगी। तभी स्वराज्य का प्रवेश होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य में कांग्रेस का कर्त्तव्य।

चूंकि हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य दिनों दिन बढ़ता ही जाता है और शांत होने के उपाय सोचने की बजाय उल्टा ही मार्ग ग्रहण किया जारहा है इसलिये देश की महासभा का कर्त्तव्य है कि वह सब से प्रथम अपना ध्यान इस ओर लगाये और इस समस्या को शीघ्र ही हल करके फिर दूसरी ओर लगे। अबतक तो पंजाब को ही हिन्दू मुस्लिम झगड़ों का केन्द्र कहते थे, परन्तु घटना चक्र ऐसा है कि पता चलता है कि यह वैमनस्य भारत व्यापी है। नहीं २ देशी राज्यों में भी कूट २ कर भरा है। तब क्या कांग्रेस का कर्त्तव्य और भी अधिक नहीं हो जाता कि वह इस प्रश्न की अवहेलना न करके इसे सन्मुख होकर देखे और हल करने के उपायों पर विचार करे।

हमारी सम्मति में हिन्दुओं का यह विश्वास है कि ऐक्य के नाम पर हिन्दू नेता भी मुसलमानों की ज्यादती की ओर से आंख मींच लेते हैं और हिन्दू दोनों तरफ से संकट उठाते हैं। मुसलमान जनता भी अत्याचार करे और हिन्दू और मुसलमान नेता आँखें मींचे रहें। हिन्दुओं का यह भ्रम मूलक विश्वास दूर करने के लिये कांग्रेस की ओर से प्रयत्न हो। इस दुर्घटना की जाँच के लिये कमेटी बैठे, उस के सदस्य ऐसे हों जिन पर दोनों दलों को पूर्ण विश्वास हो और वह अपनी जो रिपोर्ट दें उस पर कार्य्य किया जाय। दूसरी ओर मुसलमानों को शुद्धि और संगठन से शिकायत है अतः कांग्रेस इसका प्रयत्न करे कि न मुसलमान ही हिन्दुओं को बलात्कार मुसलमान बनावें, न हिन्दू शुद्धि की घोषणा करें। दोनों ही अपने २ धर्म में इच्छुक लोगों को प्रविष्ट कर लिया करें परन्तु यदि दोनों में से किसी दलके लोगोंको किसी एक दूसरे की ओर से कुछ शिकायत हो तो परस्पर में एक दूसरे का सिर न तोड़ कर कांग्रेस से नियत की हुई सभा द्वारा अपना फैसला करा लिया करें। इस प्रकार सम्भव है कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य स्थिर रहसके।

मुस्लिम संगठन

महात्मा गांधी ने यह निश्चय किया है कि वह कुछ नेताओं को साथ लेकर पंजाब और दिल्ली का दौरा करेंगे और वहां की हिन्दू मुस्लिम एकता की जटिल समस्या को पूर्णतया समझ कर उसके हल करने का प्रयत्न करेंगे। महात्मा जी के साथ जो नेताओं के आने की घोषणा है उनके सम्बन्ध में अभी से ऐसे भाव हो रहे हैं कि जिनसे पता लगता है कि जनता का उनकी शक्ति पर विश्वास हटचुका है। कारण यह है कि जिन मुसलमान नेताओं ने हिन्दू मुस्लिम ऐक्य पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की घोषणा दी थी ओर जो प्राण पण से भी ऐक्य कायम रखने की चेष्टा करते रहे थे वहभी आज बदल चुके हैं। पंजाब के मुस्लिम नेता जिन पर हिन्दुओं का भी पूर्ण विश्वास था और जो महात्मा गांधी के पूर्ण हाथ बटाने वाले रहे हैं उन महामान्य डाक्टर किचलू पर भी लोगों को अविश्वास होरहा है। कारण कि जेल से निकलने पर उन्होंने शपथ की थी कि वे हिन्दू मुस्लिम एकता को पुनः कायम किये बिना दम न लेंगे। इस सम्बन्ध में उन्होंने क्या २ काम किये और कितने सफल प्रयत्न हुये यह तो दैव जाने परन्तु आज उनकी तरफ से यह घोषणा अवश्य निकलती है कि "मैं अपना समय मुस्लिम संगठन में खर्च करूंगा।" मुस्लिम संगठन के नाम से लोग दहल उठे हैं। परन्तु हम डा० किचलू जी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से नम्रता पूर्वक अनुरोध करेंगे कि वह मुस्लिम संगठन अवश्य करें और उस में मुसलमान गुण्डों और दुष्ट लोगों को अपने उत्साह पूर्ण व्याख्यानों और उपदेशों से अत्याचार, बलात्कार निर्बलों की हत्या इत्यादि राक्षसी कार्य्यों से दूर हटने की शिक्षा देवें। और मुसलमान समाचार पत्रों तथा पैम्फलेट लेखकों को यह समझाने का यत्न करें कि वह झूंठी और रोष दिलाने वाली बातों को छाप कर लोगों को भड़काने से उपरत रहें, तथा दूसरे धर्म वालों पर गन्दे, कुटिलता पूर्ण आक्षेप करने में अपनी शक्ति न लगा कर हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के लिये अभीष्ट बातों की ओर झुकें, अपने नेताओं के वचनों को सुनें उनका पालन कर के अपनी जाति को सुसंगठित करें। यदि संगठन से यह अभिप्राय हो तो प्रत्येक प्रान्त और शहर में इस प्रकार के मुस्लिम संगठन होने चाहियें ताकि देश में शान्ति स्थापित रहे।

विलायत को भारत की याद

अभी हाल ही में वृटिश पार्लियामेन्ट की लार्ड सभा ने फिर भारत को स्मर्ण किया है, क्योंकि भक्त लोगों पर जब २ भारी भीड़ पड़ती है तभी वह अपने इष्ट देव की आराधना और स्मर्ण करते ही हैं। वृटिश सर्कार भी भारत की हित चिन्तक है अतः गहरे समय में पुनः भारत को स्मर्ण करलेना क्या नई बात है? कहा जाता है कि इस सभा में भारतीय व्यवस्था पर फिर वाद विवाद हुआ। सब दलों के सदस्यों ने गौराङ्ग उच्च पदाधिकारी कर्मचारियों के 'कम वेतन' पर बड़ा खेद प्रगट करके भारत की पुरानी सूखी हड्डियों में से और रक्त निकालने का प्रयास किया है। परन्तु गरीब, भूखसे पीड़ित भारतीय कर्मचारियों का ध्यान भी न आया। लार्ड पील ने साम्राज्य वादियोंके अनियन्त्रित शासन के प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुये सब प्रकार के सुधारों के पक्ष में अपनी सम्मति प्रगट की। ली कमीशन की रिपोर्ट को शीघ्र ही काम में लाने की कोशिश पर ज़ोर दिया गया और उसकी खूब जी खोल कर प्रशंसा भी की गई। इसके बाद स्वर्ग-वासी गोपीनाथ साहा की देशभक्ति के प्रसंग में महाशय देशबन्धु दास ने जो अपने विचार प्रगट किये हैं उन्हीं को लेकर लार्ड महोदय पील ने दास महोदय की न केवल निन्दा ही की वरन उन्हें दण्ड देने की भी धमकी दी जिस पर लार्ड ओलिवियर ने इस का विरोध करते हुये कहा कि देशबन्धु जी बड़े सच्चरित्र सज्जन हैं परन्तु भारत में कुछ सज्जनों की मानसिक वृत्तियां ही परिवर्त्तित हैं और वह समझते हैं कि गुप्त समितियों और हत्या काण्डों द्वारा ब्रिटेन के डरा २ कर ही हमारे भारतको अभीष्ट सिद्धि होगी ऐसे विचारकों में से देशबन्धु दास भी एकहैं।

ब्रिटिश सर्कार भारत के विषय में चाहे कितना ही भ्रम जनक जाल फैलाये परन्तु भारत वासियों का अधिकाँश भ्रम दूर हो चुका है। उन्हें यह अच्छी तरह पता लग गया है किमाँगने से अब कुछ नहीं मिलेगा जो कुछ मिल सकता है वह अपने आपको स्वावलम्बी बनाने से ही मिलेगा।

बेलगांव कांग्रेस में सभापति कौन हो?

आगामी कांग्रेस के सभापति चुनने का प्रस्ताव सन्मुख है। भारत के बीस प्रान्तों से भावी सभाध्यक्ष के चुनाव के सम्बन्ध में मत लिया गया है जिसमें से गुजरात ने कोई मत ही न देने का निश्चय किया है। अजमेर-मेवाड़ ने अभी तक कोई सम्मति नहीं भेजी बाकी १८ प्रान्तों में से १६ की सम्मति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Found

महात्मा गान्धी जी के अध्यक्ष बनाने के पक्ष में है, ८ श्री सरोजिनी नायडू के पक्ष में और ८ श्री० राजगोपालाचार्य के पक्ष में । शेष नेताओं को इतनी भी नहीं मिली। इस से स्पष्ट है कि भारतीय जनता महात्मा जी की ओर ही टक टकी लगाये है। समस्या विकट है। महात्मा जी दो वर्ष से देश की अवस्थासे सर्वथा अनभिज्ञ रहे हैं। इतने अवसर में घटना चक्र बड़ी प्रबलता से चलता रहा है। परिस्थितियां बदलती रही हैं। नेताओं ने एक दूसरे के छिद्रान्वेषण के कार्य्य के और बुरा भला कहने के सिवाय कोई कार्य नहीं किया। कांग्रेस का कार्यक्रम स्थगित रहा, जनता का विश्वास नेताओं पर से उठ चला है और हिंदू मुस्लिम ऐक्य की कच्ची मूल को उपद्रवों की धारायें तोड़ चुकी हैं। इस समय भारत की नाव के मांझी बनने का यदि किसी को अधिकार है तो वह महात्मा गांधी जी को ही है। यदि किसी प्रकार इसकी रक्षा हो सक्ती है तो वह महात्मा के हाथों में ही इसका इलाज है। परन्तु वह महात्मा क्या कहते हैं ? सुनो। वह १७ जुलाई के यंग इन्डिया में लिखते हैं कि:-

भावी कार्यावली का चित्र जब मैं अपनी आंखों के सामने खींचता हूं तो मेरा हृदय कांपने लगता है। साल भर तक प्रधान कर्मचारी के नाते अन्य कर्मचारियों से काम कराने का विचार ही मुझे घबराहट में डाल देता है। देशकी गति न समझ सकने के कारण राष्ट्र पोत के पतवार थामने के लिये मैं अपने को अयोग्य समझता हूं। चरखा, हिंदू मुस्लिम एकता अछूत, समस्या के अतिरिक्त मैं और कोई कार्य क्रम जानता ही नहीं। वृटिश माल का वहिष्कार और कौंसिलों के कार्य क्रम के सम्बन्ध में जनता में उत्साह फैलाने जैसा कोई कार्य्यक्रम सफल कराना मेरे लिये सर्वथा असम्भव है। अनेक सम्भावनाओं के ये थोड़े से नमूने हैं। इनमें सहायता करना यदि मेरे लिये सम्भव न हो तो अन्ततः भीतर से इनका विरोध करना उचित नहीं है। जिस कार्य्य में मेरा विश्वास नहीं है वा नहीं हो सकता उसे करना मेरे स्वभाव के विरुद्ध है"

इन विचारोंके साथ बहुतसे लोगोंका मत भेद है अतः कांग्रेस का अध्यक्ष बनकर कौन अधिक उपयोगी होगा यह कहना बड़ा कठिनहै

बाढ़ या दैवकोप !

उत्तरी भारत में अब तक वर्षा बहुत कम हुई है और सम्भावना अनावृष्टि की है। लोगों को भय है कि कहीं सूखा ही न पड़े परन्तु दैव की प्रतिकूलता देखिये कि दक्षिण भारत में बाढ़ की बड़ी भयंकर खबरें आरही हैं। नदी के बन्द टूट रहे हैं, गांव डूब रहे हैं, मकान गिर रहे हैं हजारों लोग घर बार विहीन हो रहे हैं। मद्रास में कई मील तक रेलवे लाइन पर भी बहुत खतरा है फसल को भी बहुत नुकसान हो रहा है।

कहते हैं कि 'छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति' भारत के विषय में यह पूर्ण रूप से लगता है। यहां पर प्रति वर्ष कुछ न कुछ अनिष्ट होते ही रहते हैं, कभी रोग, कभी दुर्भिक्ष कभी बाढ़। तिस पर भी विदेश में यहां से खिंचा खिंची होती रहती है। हा भारत ! तू किस प्रकार बचेगा। तेरी सन्तान या तो ऐशो आराम में मस्त है या फांकों से मर रही है। भाई भाई के गले पर छुरी चला रहे हैं। तेरे उद्धार की ओर इनका ध्यान ही नहीं वरना क्या यह ऐसे गाढ़ समय में अपनी शक्ति का ह्रास परस्पर के विवादों में व्यय करते ! भारत तू अपने इन अबोध बच्चों की अन्तरात्मा में धार्मिक भाव, सार्वभौमिक प्रेम और दया के सञ्चार के लिये परमात्मा से प्रार्थना कर और उसकी अकृपा को दूर करनकी याचना कर तभी तेरा कल्याण होगा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया हुआ

४७००० एजेन्टों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फाय । मूल्य ॥)
डा० ख० १ से २ तक ≡)

दद्दुगजकेसरी

दाद की दवा

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≡) १२ लेने से २।) मे घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइये, बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ।।।) डा० ख० ≡)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगा कर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा।

मुख विलास पान

पान में खाने देखो दुनियाँ में नई चीज़ है, इस की सिफत को आज़मा कर देखो। कीमत बड़ी डिब्बी ३।।), छोटी डिब्बी १॥≡) फी दरजन।

पं० प्यारेलाल शुक्ल हूलागंज

कानपुर।

—*—

जल्दी कीजिये संस्करण समाप्त होने वाला है।

स्त्रियों और कन्याओं के लिये

अपूर्व पुस्तक !

आर्ष पाठावलिः

(प्रथमभाग)

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित

यह पुस्तक ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में से चुनी २ सरल सिद्धान्त की बातों को लेकर बहुत मनोरजक पाठों में लिखकर रची गई है। प्रत्येक पाठ में बड़े खूबसूरत चित्र हैं। प्रथम चित्र रंगीन है, जिसमें अध्यापिका बच्चों को "ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्याप्रेमी शूद्र झंडा लेकर वेद पढ़ने का अधिकार मांग रहा है वह चित्र तथा अन्य भी चित्र बड़े शिक्षाप्रद हैं।

पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं, काग़ज़ व छपाई बढ़िया है इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है।

मूल्य { बिना जिल्द ॥≡)
सजिल्द ॥।)

पं० वज़ीरचन्द शर्मा
अध्यक्ष वैदिक पुस्तकालय,
लाहौर रोड, लाहौर।

महा भारत

भाषा भाष्य समेत सरल और सुबोध अनुवाद प्रतिपास १०० पृष्ठ दिये जाते हैं। मूल श्लोक और उसका सरल अर्थ मुद्रित हो रहा है।

१०० पृष्ठों का एक अंक, इस प्रकार के १२ अंकों का अर्थात् १२०० पृष्ठों का मूल्य मा० आ० से ६) और वी० पी० से ७) रु० है।

अति शीघ्र ग्राहक बन जाइये। नमूने का पृष्ठ मंगवाइये। और अपने मित्रों को बताकर ग्राहक बढ़ाने की सहायता कीजिये।

कागज और छपाई अति सुंदर है। चित्र भी दिये जांयगे।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल,

औंध (जि० सातारा)

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का

साप्ताहिक मुखपत्र

॥आर्यमित्र॥

मूल्य केवल ३॥)

प्रति वृहस्पतिवार को आगरे से प्रकाशित होता है

सम्पादकः—

पं० हरिशङ्कर जी शर्मा 'कविरत्न

यदि आप वैदिकधर्म, प्राचीन भारतीय सभ्यता, वैदिक साहित्य, वैदिक सिद्धान्त, भारतीय ऐतिहासिक खोज, साहित्य चर्चा, आधुनिक आर्यसमाज की गति, इत्यादि विषयों पर प्रसिद्ध २ आर्यनेता तथा विद्वानों के लेख पढ़ना चाहते हैं, यदि आप सामाजिक सिद्धान्तों पर गम्भीर और विचारपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणिय पढ़ना चाहते हैं, और यदि आप संसार भर के समाचार तथा विशेष कर आर्यजगत् के समाचार जानना चाहते हैं तो शीघ्र ही—

आर्यमित्र के ग्राहक बनिये

हिन्दी में आर्यसमाज का एक मात्र अद्वितीय पत्र है।

पता—आर्यमित्र, आगरा।

सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय दरियागंज दिल्ली में पं० अनन्तराम शर्म्मा के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष ५

ज्योति

ओ३म् व्यवात्ते ज्योतिरभूदप त्वत्तमो अक्रमीत्॥

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महा भारत

भाषा भाष्य समेत सरल और सुबोध अनुवाद प्रतिपास १०० पृष्ठ दिये जाते हैं। मूल श्लोक और उसका सरल अर्थ मुद्रित हो रहा है।

१०० पृष्ठों का एक अंक — बल-के १२ अंक का मिश्र हिन्दी आनर्स ३४२

५ मासावतरण ले०—श्री० पण्डित सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज ३४७

६ मेरी काश्मीर यात्रा ले०—श्री० प्रो० लक्ष्मणस्वरूप जी यम० ए० पी० यच० डी० ३४८

७ परिवर्तन (गल्प) ले० —श्रीकृष्ण पांडे ३५४

८ वैज्ञानिक संसार ३६७

९ कुसुमोद्यान ३७१

१० हमारी मञ्जूषा ३७४

११ वनिता विनोद ३७७

१२ कन्यागुरुकुल समाचार ३८१

१३ विचार प्रवाह ३८३

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त

साप्ताहिक मुखप

॥ आर्यमित्र

मूल्य केवल

प्रति वृहस्पतिवार को आगरे से प्र

सम्पादकः —

पं० हरिश्च

ग्राहकों इस का ४॥) है। २॥) है। सहित वार्षिक ३) प्रति वर्ष है।

तीं, जो मिलती हैं से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

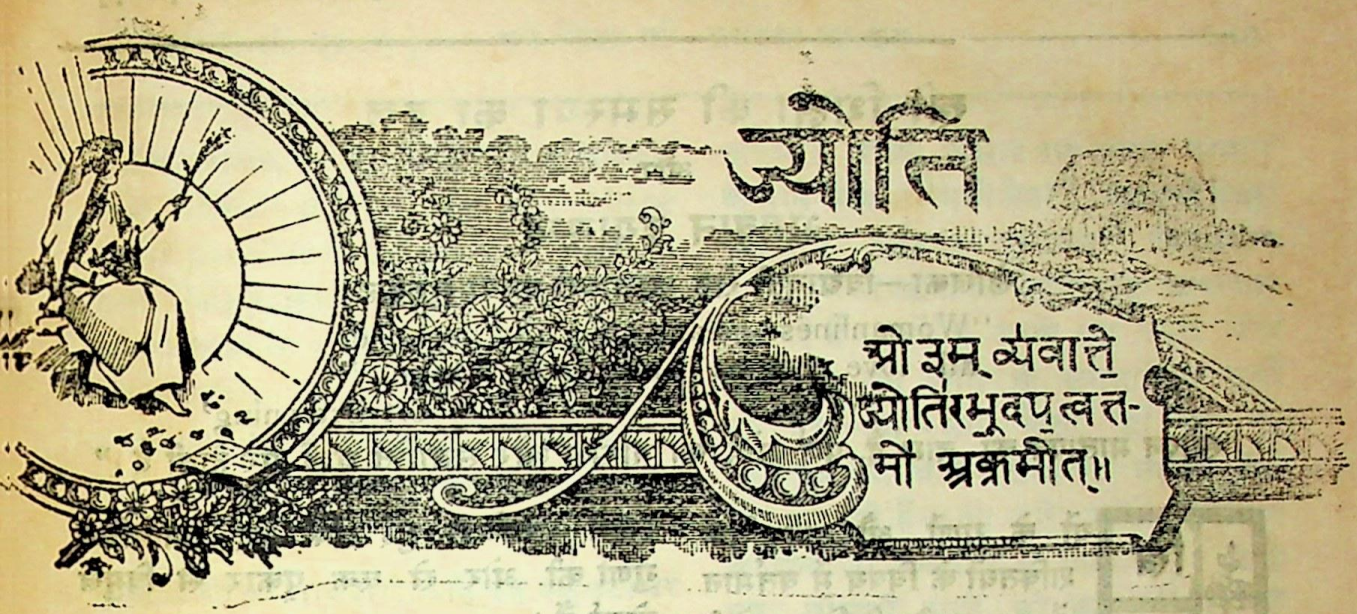

वर्ष ५ | कार्तिक १९८१—नवम्बर १९२४ ई० | संख्या ७

आह्वान-गीत।

ले० सुकवि "गुलाब"

(१)

आओ, देवि! हृदय मन्दिर में, वीणा मधुर बजाओ।
मुक्त कण्ठ से तुम कविता के, छन्दों में कुछ गाओ॥
गाओ, गेय गीत गाओ।
गाओ तुम अनुराग गीत मां! महिमा तान सुनाओ।
आओ देवि! हृदय मन्दिर में, वीणा मधुर बजाओ॥

(२)

भक्ति भाव मम प्राण निरन्तर, मां! तुम पर ही वारे;
मेरे यश प्रसून की माला, सोहे कण्ठ तुम्हारे॥
गाओ तुम अनन्त स्वर से—
सरि-गम स्वर में दया दृष्टि कर, अमृत बूंद बरसाओ।
आओ देवि! हृदय मन्दिर में, वीणा मधुर बजाओ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री शिक्षा की समस्या का हल
और
भगवान दयानन्द

लेखिका—विद्यावती सेठ आचार्य्या कन्या गुरुकुल

"Womanliness means only motherhood;
all love begins and ends there."
'Robert Browning'

"स्त्रीपन मातापन का नाम है, पूर्ण प्रेम का आरम्भ और समाप्ति वहीं पर होती है।"

यों के गुणों, और प्राकृतिक शक्तियों के विषय में वर्तमान में प्रायः सभी स्त्री शिक्षा प्रेमी विचारक कुछ न कुछ लिखते रहते हैं। स्त्री शिक्षा की समस्या को हल करते समय इन गुणों पर विचार करना परम आवश्यक है। कुछ समय पूर्व जब स्त्री शिक्षा का प्रचार भारत में बहुत कम था तब तो यह प्रश्न जनता के सामने नहीं आये थे। क्योंकि हमारी कन्यायें अशिक्षिता रहती हुई भी अपनी दादी माता, बुआ, चाची, नानी, मासी आदि स्त्रियों के बीच में रहती हुई उनके शिक्षणालयों में क्रियात्मक रूप से प्रायः उन सभी विषयों की शिक्षा गृहण कर लेती थीं जो उस ज़माने के अनुसार उन देवियों की दृष्टि में कन्याओं को गृहस्थ में जाकर लाभकारी होते थे। इतना ही नहीं। वह लोग साधारण रीति से आचार व्यवहार और शील स्वभाव की भी शिक्षा देती थीं। कई घरों में स्त्रियों के अच्छे बुरे स्वभाव के अनुसार उनके घर की कन्याओं की इस शिक्षा में भी भेद होता था। परन्तु जब से भारत के सामने पाश्चात्य आदर्श आया और कन्याओं के लिये स्कूल, कालिज बने, तब से लड़कियां भी किताबी विद्याके गृहण करने में इतनी दत्तचित्त हुईं कि वह स्त्रियोचित गुणों की ओर से एक प्रकार से विमुख होगई हैं।

विज्ञान के नये २ आविष्कार, तथा भोग बिलास के साधनों के लिये अत्यन्त लालसा से प्रेरित नर, नारी केवल अपनी इस लालसा की तृप्ति की ओर ही झुके हुये हैं। इस उद्देश्य में जो भी रुकावटें हों उन्हें दूर करना ही एक मात्र ध्येय हो रहा है। लोभ तो परमात्मा बन गया है, और मनुष्य इस परमात्मा का उपासक। जब से स्त्री-स्वाधीनता का प्रश्न उपस्थित हुआ है तब से पाश्चात्य देशोंमें घर के सुख ही नहीं रहे। वहाँ की दशा तो इस एक पैराग्राफ में ही स्पष्ट रूप से वर्णित है। वहां की स्त्रियां अब यह अनुभव करने लगीं हैं कि:—

"When already they say the women of to-day want to be 'freed' from the inferior duties of mother and housewife, in order to devote themselves to higher callings, as self-supporting and independent members of society, how much more will that be the case with the women of the future! As these "higher callings" however, for the majority consist, and will continue to consist, in monotonous labour in factory,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

store, office, and such occupations, it is difficult to conceive how these tasks possibly bring greater freedom and happiness than the broad usefulness in a home, where women is sovereign—yea, under the inspiration of motherhood, Creator in her sphere, & where she is directly working for her own dear ones-"

दूसरे लोगों की ताबेदारी, चाहे वह स्कूलटीचर के रूप में हो, चाहे नर्स के रूप में, चाहे फैक्टरी, स्टोर्स, दफ्तर के कार्य इत्यादि भिन्न २ रूप में हो तथापि ताबेदारी ही तो है। तो इस से तो स्त्री का घर में साम्राज्ञी बनकर रह कर अपने निजी सम्बन्धियों की टहल सेवा कर लेना कितना उत्तम है? अगर घर में रहकर स्वतन्त्रता नहीं है तो बाहरी जीवन में तो बहुत ही बन्धन है? यह स्वतन्त्रता कैसी? अतः वहां पर गृहस्थ सुखों का आदर्श पुनः सामने आने लग पड़ा है। परन्तु हमारे भारत में अभी उसी स्वाधीनता की लहर है जिसे गृहण कर पाश्चात्य देश अब छोड़ने की ओर हैं। क्या कीचड़ लगाकर धोने की अपेक्षा पहिले ही कीचड़ से दूर रहना अधिक श्रेष्ठ नहीं?

हमारे यहां जो आजकल स्त्री शिक्षा का प्रचार है उस में इन बातों को बिलकुल भुला दिया गया है कि स्त्री और पुरुष की अपनी २ भिन्न शक्तियां हैं, भिन्न २ क्षेत्र हैं और भिन्न २ तरीके से उनकी शक्तियों का विकास होता है। इस भूल का एक मात्र कारण यह है कि आज कल सारे सभ्य संसार का यह मत हो रहा है कि स्त्री पुरुष के समान अधिकार हैं। उन्हें समान शिक्षा मिलनी चाहिये, समान क्षेत्र मिलने चाहिये और उन के समान अधिकार होने चाहिये और समान कर्तव्य! सभ्य संसार इस समय 'समान' के माने 'एक ही' माने बैठा है! अतः स्त्री शिक्षा पक्षपाती वर्तमान सुधारक विशुद्धभाव रखते हुये भी स्त्रीजाति के प्रति बड़ा अत्याचार कर रहे हैं। क्योंकि उनके इस उल्टी गंगा बहाने से स्त्री जाति के स्वाभाविक गुणों का एक दम लोप होता जा रहा है; और वह एक विचित्र तरह की व्यक्ति विशेष बन रही हैं—जो न तो पुरुषों की संख्या में गिनी जा सकती हैं न स्त्रियों की। उन्हें हम बीसवीं सदी की स्त्रीत्व-विहीन-स्त्री कह सकते हैं।

परमात्मा की सृष्टि में स्त्रियों का जीवन-क्षेत्र बिलकुल स्पष्ट और निर्विवाद है। वह घरकी ही नहीं वरन मानव-समाज की 'श्री', 'सरस्वती', 'लक्ष्मी', 'अन्नपूर्णा', 'देवी' भगवती हैं। इसलिये स्त्रियों को जननी और पत्नी बन कर ही देश और जाति के सन्मुख सेवार्थ उपस्थित होना है। इस उद्देश्य से शिक्षा का ढंग निर्माण करना चाहिये था। परन्तु अफसोस! कि वर्तमान युग में सभ्य संसार का आदर्श बदल गया है। कुछ वर्षों पहिले किसी को स्त्री के जीवनलक्ष्य में शक ही न था। मातृत्वशक्ति का गुण गान करना इतना स्वाभाविक था जितना कि सूर्य का गुण बखान करना, व परमात्मा की महिमा का वर्णन करना, समुद्र के—ऐसे समुद्र के गीत गाना जिस की थाह किसी ने न पाई हो। जिस प्रकार भौतिक संसार में सूर्य और समुद्र महान और बली हैं, इसी प्रकार माता की महिमा थी। हां यह सभी जानते थे कि संसार में ऐसी भी स्त्रियां हैं जिन में मातृत्व शक्ति का अभाव है, क्योंकि संसार में ऐसे भी देश हैं जहां जीवन रक्षा के साधन नहीं हैं। सभी को पता था कि स्त्री जाति में समष्टिरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से एक ऐसी शक्ति विद्यमान है जिस की विद्यमानता जीवन के लिये उतनी ही उपयोगी है जितनी कि हवा और रोशनी और जल। वह शक्ति केवल उत्पन्न करना ही नहीं वरन पालन पोषण करना तथा प्रेम सेवा और शिक्षा करना है। हम जानते थे कि स्त्रियों में--जो कि प्रकृति की तरफ से संसार के लिये बड़ी शुभ भेंट हैं—वह विशुद्ध भाव विद्यमान हैं जिन के कारण मानव जीवन जन्म से मरण पर्यन्त 'मानव' बना हुआ है। वह गुण जिसने माता को बच्चे की भाग्य विधाता बनाया है, पत्नी को पुरुष की शोभा और सुख बनाया, तथा नानी व दादी को सारे कुटुम्ब या सारे ग्राम की सेनिका बनाया। यह वही प्रेम का भाव है जो कि घर के सारे कुटुम्बियों को तो आच्छादित करता ही है, परन्तु घर के बाहर उन अनाथों और दीनों तक भी पहुंचता है जिन के स्नेही सम्बन्धी नहीं रहे और जिनका अपना घर भी कोई नहीं। इतना ही नहीं पशु और पक्षी के ऊपर भी इस का प्रकाश पड़ता है। यह मातृत्व-शक्ति अथाह थी। इसका स्वभाविक गुण ही यह था कि दूसरों के लिये त्याग करना, दान देना, प्रीति से पालन करना, तथा दया का भाव रखना। अपने सुख और आराम को दूसरों पर न्यौछावर करके ही सुखी होना अथवा यों कहिये कि अपने जीवन को दूसरों के जीवन में देखना; स्वार्थ को परार्थ में बदल देना। अतः इन गुणों की खान स्त्री जाति को पुरुषों के साथ एक ही प्रकार की शिक्षा देना कितना अनुचित और हानि कारक है। अतः जिन जिन देशों में Co-education अर्थात् लड़के लड़कियों को एक साथ पढ़ाने की प्रथा है वहां कितना अनर्थ है।

इस के अतिरिक्त स्त्रियां जातीय आचार शास्त्र की रक्षिका हैं और उन्हीं द्वारा आचार-शास्त्र के नियम प्रगट होते हैं। पीछे से पुरुष अपनी तर्कना से उन्हें नियम बद्ध कर लेते हैं। Ellen key का कथन है कि:—

"In many cases, then, woman has modified the moral code, and again has conserved it, by virtue of her stubborn tenacity, which is one with her best traits-tenderness faithfulness & piety. This conservatism, on the other hand, is the reverse side of what is intellectually the weakest of her characterestics, her aversion to the serious mental labour involved in the examination of new ideas....."

स्त्रियों की दयाशीलता, भक्ति और आचार शुद्धता—जो कि उनके कट्टर पने का दूसरा नाम है-के कारण ही आचार-शास्त्र की रक्षा हुई है। जब यह बात स्पष्ट है तो स्त्रियों के लिये ब्रह्मचर्य्य रखना और गन्दी पुस्तकों को न पढ़ना, न पढ़ाना कितना आवश्यक हो जाता है। इस लिये जहां हम स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों के समान नहीं चाहते, जहां स्त्री पुरुषों का सह-पढ़न हानि कर है, वहां पर कन्याओं की पाठविधि भी परिवर्तन करने योग्य है। यद्यपि कुछ शिक्षा सुधारकों ने इधर ध्यान देकर पाठविधि में इतना परिवर्तन किया है कि कन्याओं की पाठ विधि में गृह सम्बन्धी शिक्षा, चिकित्सा, पाकविधि, सिलाई इत्यादि विषय भी रख दिये हैं परन्तु अभी तक किसी भी वर्तमान प्रचलित पाठ प्रणाली में सुधारकों का ध्यान इस ओर नहीं गया है कि कन्याओं को अश्लील ग्रन्थ नहीं पढ़ाना चाहिये। चाहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा की पाठ्य पुस्तकें उठालें; चाहे शास्त्री, विशारद, मध्यमा, इत्यादि की उठालें, अश्लील ग्रन्थों से शून्य कोई भीनहीं हैं। कारण यह है कि पुस्तक-विवेचन-समिति का लक्ष्य ही दूसरा है। उन्हें इसकी खबर ही नही है कि मनुष्य जो कुछ पढ़ता, सुनता, देखता है उसका चित्र उसके हृदय पटल पर खिंच जाता है, संस्कार जम जाता है, और उपयुक्त उत्तेजना मिलते ही विकसित हो जाता है यदि किसी अंश में संस्कार प्रबल न हुये तो उसका कारण उनका लुप्त होना नहीं वरन परिस्थिति ही है।

जब पाठ्य पुस्तकों के प्रभाव का इतना प्रचण्ड और तीव्र वेग है तो क्या शिक्षा सुधारकों के लिये यह आवश्यक नहीं कि कन्याओं के लिये ऐसे २ ग्रन्थ चुने जो कि शुद्ध पवित्र भावों से भरे हों, अश्लीलता की छाया मात्र भी जिन में न हो और जो उच्च जीवन बनाने में सहायक हों।

हम जानते हैं कि हमारे भारत वर्ष का Culture ज्ञान भण्डार Classical sanskrit उच्च कोटि के संस्कृत ग्रन्थों में भरा हुआ है, और यदि उसकी रक्षा करनी है और उसे पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रखना है, तो जाति की भावी माताओं को—अर्थात् वर्तमान समय की कन्याओं को संस्कृत साहित्य और संस्कृत भाषा की शिक्षा देनी ही चाहिये। परन्तु जिस प्रकार वर्तमान में कन्यायें धोटा लगा कर शास्त्री विशारद बनती जा रही हैं, उस से केवल संस्कृत भाषा की हंसी ही होती है। वर्त्तमान समय के नवीन ढंग से सुशिक्षा प्राप्त सज्जनों की दृष्टि में वह न घरकी रहती हैं न घाट की। न उन्हें गृहस्थ कार्य ही आते हैं न वह पाश्चात्य आदर्श के अनुसार पुरुषों के साथ प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देने योग्य ही बनती हैं। और नहीं वह उस उच्च आदर्श के भावों से पूरित होती हैं जिन के कारण स्त्री को मानव जीवन का प्राण बताया गया है। अतः मध्य कालीन संस्कृत का पुनः प्रचार करना प्राचीन आर्य्य सभ्यता का पुनरुद्धार करना नहीं है। अतः यदि शिक्षा की समस्या का—ख़ासकर स्त्री शिक्षा की समस्या का वर्तमान नवीन विकास तथा प्राचीन आर्य्य सभ्यता के अनुकूल किसी ने हल बतलाया है तो वह भगवान दयानन्द जी ही हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का वर्णन करते हुए संक्षेप से ऋषि ने सारे आवश्यक विषयों पर प्रकाश डाल दिया है। आपने जहां अश्लील ग्रन्थों को त्याज्य बताकर उन्हें फेंक देने का उपदेश दिया है वहां पर कुछ ग्रन्थ उदाहरण रूप से ऐसे बता दिये हैं जिन्हें पाठविधि में प्रविष्ट करना चाहिये। और स्त्री शिक्षा का तो वर्णन करते हुये उन्हों ने उन सारे विषयों का उल्लेख एक तरह कर दिया है जो कि स्त्री जाति के लिये उपयोगी हो सकते हैं और जिन के सीख लेने से स्त्रियां न केवल अपना ही कल्याण कर सकती हैं वरन जाति, देश और संसार का।

अमरीका और युरोप आदि सभ्य देशों से यह आवाज उठ रही है कि:—

" As guides in the instruction of young women I would choose noble matrons, serene as priestesses who themselves have fulfilled the mission of motherhood--women ripened into sweetness of wisdom, and power to import vividly the fruits of their experiences to the young who, some day standing before the serious task of making a home and bringing up children, may perhaps

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

by a single word of advice remembered in time save life's happiness for themselves"

ऋषि दयानन्द भी यही कहते हैं कि लड़कियों की शिक्षिका अध्यापिका ही हों। पुरुष नहीं। और वह पूर्ण विद्या युक्त, अनुभवी तथा धार्मिक हों। लड़कियों की शिक्षा प्रणाली में पाठ्य विषय जो उन्हों ने रक्खे हैं उन में वह विषय भी हैं जिन से लड़कियों को सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्धन और सुशिक्षा करने का ज्ञान प्राप्त हो सके, घर के कार्य्य ठीक प्रकार कर सकें, सम्बन्धियों से उचित व्यवहार करना सीखें, सुमधुर पुष्टिकारक औषधियुत अन्नपान बनाना सीखें तथा सब से बढ़कर बात यह है कि अपने जीवन को तथा दूसरों के भी जीवन को धार्मिक भावों से भर सकें। इस के लिये ब्रह्मचर्य्य के नियम पालन करते हुये गुरुकुल में रह कर आचार्य्या से शिक्षा गृहण करने का आदेश है। इसी आदेश की ओर वर्तमान दार्शनिक लौट २ कर आ रहे हैं, और वह समय दूर नहीं जब कि योरूप और अमरीका में इसका प्रचार बड़े प्रबल रूप से होगा क्योंकि वहां के सुधारकों के विचार इसी प्रकार के हो रहे हैं। स्त्री शिक्षा के प्रश्न का हल अगर किसी ने वर्तमान युग में कर पाया है तो वह ऋषि दयानन्द ने ही किया है। पाश्चात्य देशों के अनुभव भी फेल हुये हैं। भारत के अन्य सुधारकों ने तो पाश्चात्य प्रणाली का ही अनुकरण किया अतः उनको तो सफलता क्या ही मिलनी थी।

अतः आर्य्य समाज की वर्तमान संस्था कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की रचना ऋषि दयानन्द की इसी शिक्षा प्रणाली को कार्य्य में परिणत करने के लिये एक नया तजुरुवा है। परमात्मा करे यह अपने इस उद्योग में सफल हो के सभ्य संसार के सन्मुख ऋषि की स्कीम रखकर संसार में पुनः देवियां--धरेलू देवियां उत्पन्न करके संसार की रक्षा करे।

* नोट—इस विषय में विशेष जानना हो तो ज्योति का कन्या गुरुकुल अंक कन्या-गुरुकुल दिल्ली से मंगाकर देखिये।

चक्रवर्ती गुरु महर्षि दयानन्द जी

लेखिका—श्रीमती सुनीतिदेवी।

"सर्व संसार के सुधारक १०८ श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती जी"

यदि अपने पवित्र हृदयरूपी मन्दिर में बैठ कर विचारिये तो यह प्रश्न अवश्यमेव उत्पन्न होगा कि सर्व-संसार मित्र वा सार्वभौम सन्यासी दयानन्द क्या भारत हितैषी वा भारत--जीवन संचारक नहीं थे? तो हृदय रूपी मंदिर में आवाज़ यही आवेगी कि "हां थे"। आपने समग्र भारतवर्ष में ही क्या सर्व संसार-भर में जागृति प्रदान की है। आपने पौराणिक धर्मियों को भी वेद के आधार से धर्म्म का सच्चा स्वरूप दिखाया है। आप जैसा निर्भय सत्यवक्ता संसार भर में दुर्लभ है।

स्त्री शिक्षण का मार्ग भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी दर्शा गये हैं। आज हम सब भारतवासी उन्हीं के बतलाये हुवे मार्ग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर चल रहे हैं। एक समय जब कि आर्यों की पवित्र भूमि भारतवर्ष में प्रायः वास्तविक धर्म्म का लोप हो चुका था, लोग अन्धकार में पड़े पृथक् २ अपने राग अलाप रहे थे, आर्य्य सन्तान टिमटिमाते हुवे दीपकों के प्रकाश में अलग २ खिचड़ी पका रही थी वेद का नाम पुकार २ कर "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" जैसे अनार्य वाक्यों का आश्रय लेकर यज्ञ में पशुवध किया जा रहा था, जिस समय विधवायें अपने असहनीय दारूण दुःख से भारतवर्ष को अति दुःख सागर में डुबा रही थीं, जिस समय वर्णाश्रम व्यवस्था भारतवर्ष में लोप हो चली थी और वेद भगवान् का प्रकाश भी प्रायः अस्त हो चुका था, उस समय जगत् पिता की महान् कृपा से पांच सहस्र वर्ष के लगातार धार्मिक विप्लवों के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी का आर्विभाव हुवा। अब जो पुराणमतावलम्बियों के मान्यवर पुरुष बालविधवाओं के दुःख भञ्जन के पवित्र व्रत में दीक्षित दृष्टिगोचर होते हैं, अथवा जो आर्य्य जाति में एकमत दीख रहा है, यह सब कुछ स्वामी दयानन्द जी की ही महती कृपा का परिमाण है। आज इतने परिवर्त्तनों के पश्चात् जिस आदर्श पर सभ्य संसार पहुंचा है उस के मूलतत्वों को महर्षि दयानन्द की दीर्घ दृष्टि ने अर्धशताब्दि पूर्व ही देख लिया था।

आज कल का शिक्षा सरणी का प्रथम मूलतत्व गुरुशिष्यों का सतत सम्बन्ध और सार्व कालिक सहवास ही माना जाता है और सम्प्रति साश्रम-विश्वविद्यालयों की पवित्र स्थापना का नाद चारों ओर से सुनाई दे रहा है किन्तु महर्षि स्वशिक्षा विधि में गुरुकुलों की स्थापना पर—जिस में शिष्यों को स्वगुरुवों के साथ सदैव ही रहना अनिवार्य्य है—बहुत समय पूर्व विशेष बल दे चुके थे, और उसको ही शिक्षा का एक मात्र साधन बतला चुके थे। महर्षि की शिक्षा विधि का दूसरा मूल तत्व और वस्तुतः शिक्षा का आधार-स्तम्भ जिस पर अभी तक सभ्य संसार में यथेष्ट बल नहीं दिया गया है, परन्तु उसकी उपादेयता यत्र तत्र स्वीकार की जा रही है तथा समय आवेगा कि उस का महत्व पूर्णरूप से माना जायेगा और अब सब भारतनिवासी मुक्त कण्ठ से उच्चारण करते हैं वह यह है कि महर्षि द्वारा स्थापित आर्य्य समाज ने भारतीय जन साधारण ने स्वशक्ति भर नितान्त निशुल्क नहीं तो अत्यल्प मूल्य पर शिक्षा प्रचार का भारी प्रयत्न किया है।

हमारे आर्य्य समाज के मुख्य केन्द्र पंजाब तथा संयुक्त प्रान्त में पचासों शिक्षणालय, बालकों के लिये गुरुकुल, कालिज, स्कूल तथा पाठशालायें और कन्याओं के लिये कन्या विद्यालय और पाठशालायें आर्य्यसमाज की ओर से संस्थापित हैं और शिक्षा के पवित्र मन्दिर से बहिष्कृत अबला तथा अधम जातियों में शिक्षा प्रचार में आर्य्य समाज ने विशेषतः नामोल्लेख्य प्रयत्न किया है। यह सब महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा प्रचारणी विभूति का ही चमत्कार है।

जब कि महर्षि दयानन्द जी के प्रादुर्भाव से पूर्व भारत वर्ष उन अगणित कुरीतियों तथा कुप्रथायों का आखेट स्थल बना हुआ था जिन को अब परम सनातनी भी हेय और त्याज्य समझते हैं—उस समय उनके विरुद्ध शब्द उठाने का बहुत ही कम उदार पुरुषों को साहस होता था। उनके उन्मूलन में सप्रयत्न होने और स्वयं आदर्श बन कर दिखलाने की तो बात ही क्या है? उस निविड़ अन्धकार के समय एक हमारे आदित्य ब्रह्मचारी श्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ही थे जिन्होंने स्वयं आज हम सब को वेद विद्यारूपी सूर्य्य का दर्शन करा दिया है। आज आर्य्य जाति की जड़ को खोखला करने वाली उन कुप्रथाओं को किसी कंदरा में भी शरण नहीं मिलती।

महर्षि ने जन्म से जाति पांतिके विचार को हिलाकर गुण कर्म्म तथा स्वभावानुसार वैदिक वर्णाश्रम की मर्य्यादा का परिचालन किया। महर्षि के प्रभाव से जिन समुदायों के व्यक्ति परमपिता की कल्याणी वाणी के श्रवण मात्र तक के अधिकार से वंचित थे उन में भी आज कल कई महाशय पण्डित तथा शास्त्री पदवी से विभूषित हैं। यही ऋषि दयानन्द की विजय है, यही उनकी महत्ता की सूचना है। आओ आज दीपावली के दिन हम सब उनके गुण गान करते हुये उनके बताये मार्ग का अनुसरण करके कल्याण के भागी बनें।

शरद ऋतु-वर्णन

ले०—श्री० बलवन्त मिश्र-हिन्दी आनर्स अ० माडर्न स्कूल दिल्ली

यह संसार परिवर्तन शील है। इसमें प्राणीमात्र की दशा सदैव पलटा खाया करती है, एक ही दिन में समृद्धिशाली-व्यक्ति, दीन व्यक्ति, और दीन व्यक्ति समृद्धिशाली व्यक्ति हो जाता है। प्राणीमात्र ही नहीं, समय, प्रकृति सभी में परिवर्तन होता रहता है। प्रकृति प्रभु की प्रतिनिधि है। जो लोग प्रकृति-पूजक हैं वे भी प्रकारान्तर से ईश्वर की पूजा कर रहे हैं क्योंकि ईश्वर हर जगह विराजमान है। क्या बिना ईश्वर की कृपा से रंग बिरंगे फूलों का दर्शन, नरम २ घासों और हरी २ पत्तियों के सौंदर्य्य, प्राप्त हो सकते हैं? समय का परिवर्तन ही ऋतु की संज्ञा कही जाती है। समय जब जब बदलता है उसके अनुसार उसका नाम हो जाता है। बसन्त, ग्रीष्म, पावस, शरद, हेमन्त, और शिशिर, इन्हीं को षटऋतु कहते हैं। बसन्त की छटा कुछ और ही होती है, ग्रीष्म उससे बिलकुल बदला हुआ। पावस तो विलक्षण ही ढंग से संसार में प्रवेश करता है। इनके पश्चात् शान्तरस के रूप में भगवान की प्रतिनिधि स्वरूप शरदऋतु का आगमन होता है।

जिस समय श्री शरद का अनुपम राज्य इस पृथिवी पर होजाता है स्वयं पृथ्वी कीचड़, मिट्टी, कीड़े मकोड़े और नाना प्रकार के विषैले जीव जन्तुओं से रहित होकर इस प्रकार शुद्ध होजाती है जैसे माया मोह, अन्धकार और नाना प्रकार के दुर्विचारों को त्याग कर मति शुद्ध होजाती है। शरद के आते ही बादलों का गर्जना, और बूंदों की विषम झरी मिट गई, नदियां अपने कल कल नाद से चित्त को आनन्दित करने लगीं, उनके किनारे बालुका, और इधर उधर की मिट्टियां बिछी हुई हैं जिसे देख चित्त विश्राम करना चाहता है। वे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी चंचल धारा को छोड़ इस प्रकार शान्त होगई हैं मानों चंचल स्वभाव की स्त्रियां चपलता छोड़, शान्त अवस्था में होकर, देश के सामने अपना निर्मल विचार रख आनन्दित करती हैं। नदियों को देख कर सहसा चित्त में प्रश्न उठने लगता है कि भगवान की लीला कैसी विचित्र है? पावस ऋतु में किस तरह अपनी तीक्ष्ण धारा के घमण्ड से ये किनारे के वृक्ष, गांव और अनेक प्रकार के जीवों को बहा ले जाती थीं और इस समय ऐसी शांत होगई हैं, ठीक है "सब दिन होत न एक समान" हाँ! हां! अब तो मोरों का गर्जन सुनाई नहीं देता, न मालूम उन्हें क्या होगया, जैसे किसी का सर्वस्व नष्ट होजाय ऐसी ही दशा शरदऋतु में मोरों की होजाती है। जैसे वृक्षों पर सदा पुष्प नहीं रहता, सब दिन रुपये पैसे नहीं रहते, वैसे ही मोरों का घमण्ड भी भगवान ने चूर २ कर डाला। हां सारस, शुक और हंसों का भाग्य उदय हुआ है, वे बन ठन कर विहार करने लगे। पृथ्वी पर जल, फल, और नये २ तृण स्वादयुक्त होने से अनेक पक्षी आनन्द करने लगे। आकाश में इधर से उधर अपनी मधुर वाणी सुनाने लगे। शीतल सुगन्ध वायु से वर्षा काल की सारी थकावट जाती रही। किसान अपने खेत में बैल लिये जोतने, बोने और जल सिंचन करने लगे। तालाब में फूले हुए कमल विविध वायु के झोकों से इधर उधर इस प्रकार झिलमिला रहे हैं मानो सुविचारी, ब्रह्मचारीगण झूम झूम कर अपना पाठ याद कर रहे हों। अंगूर, सेव, अमरूद, अनार, नाशपाती और मेवे का बाज़ार गर्म है। नीबू, अनार और संतरे के फलों से लदी हुई उनकी डालियां भार से नवित होकर यह शिक्षा दे रही हैं कि धनवान्, विद्वान्, बलवान्, और सन्तानवान सब को नम्र होकर रहना चाहिए। शरद काल की निशा भी परम सुहावनी होती है। नक्षत्र तारागणों से आकाश मंडल इतना रुचिर और रूपवान प्रतीत होता है मानो प्रकृति की सुन्दर वाटिका खिली हो। अनेक शुभ्र बूटियां पर्वतों के शिखर पर इतनी सुन्दर दिखाई देती हैं जैसे अन्धकार समूह में खद्योत समूह चमकते हुए अच्छे लगते हैं। इस प्रकार के गुण, गान, और निरीक्षण से शरद ऋतु की महिमा का वर्णन होना कठिन है। शरद को तो जिस रूप में देखा जाय सभी रूप सुखकारी ही प्रतीत होते हैं। यहां पर अब कवियों की सूझ का भी दिग्दर्शन कराना चाहिये। सर्वप्रथम गोस्वामी तुलसीदास जी का शरद-वर्णन -जो उनके सर्वमान्य ग्रन्थ रामायण में है- अत्यन्त शिक्षाप्रद और समय के उपयुक्त है, जिससे पाठकगण अच्छी तरह परिचित हैं। उन्होंने तो शरद ऋतु की प्रतिमा ही खड़ी कर दी है—उसका थोड़ा सा नमूना रख कर उनके और ग्रन्थ का दर्शन पाठकों को कराना उचित है।

वर्षा बिगत सरद ऋतु आई,
लक्षमण देखहु परम सुहाई।

फूले कांस सकल महि छाई,
जनुवर्षाकृत प्रगट बुढाई।

उदित अगस्त पंथ जल सोखा,
जिमि लोभहिं सोखई संतोषा।

सरिता सर निर्मल जल सोहा,
संत हृदय गत जस मद मोहा।

रस रस सूखि सरित सर पानी,
ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी।

जानि शरद ऋतु खंजन आए,
पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंक न रेनु सोह अस धरनी,
नीति-निपुन नृपकी जस करनी।
जल संकोच विकल भये मीना,
बिबिध कुटुम्बी जिमिधन हीना।
बिनु घन निर्मल सोह, अकासा,
हरिजन इव परिहरि सब आसा।
.....इत्यादि.....

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद ऋतु पाइ।
सदगुरू मिले ते जाहिंजिमि, संसय भ्रम समुदाइ॥

इस प्रकार नीतियुक्त शरद ऋतु का वर्णन गो स्वामीजी ने प्रवर्षण गिरि पर महाराजा रामचन्द्र जी के मुख से शिक्षा-रूपेण लक्ष्मण जी को समझवाया है। धन्य है गो स्वामी जी! रामायण की रचना करके आपने संसार का बड़ा भारी उपकार किया है। उनकी कवित्तावली, विनयपत्रिका तथा तुलसी सतसई देखने का लाभ हरएक हिंदी-प्रेमी को करना चाहिए। अपनी सतसई में गोस्वामी जी ने शरद ऋतु को कामनी बनाया है और श्री रामचन्द्र की कीर्ति की उपमा दे डाली है। इस प्रकार कामिनी भूषण, बसन, केश, का वर्णन करके शरद ऋतु प्रकाश का कामिनी के चिबुक के सुन्दर तिल से उपमा दी है। सुनिए वह क्या कहते हैं।

प्रभु गुण गण भूषण बसन,
बचन विशेष सुदेश।
राम सुकीरति कामिनी,
तुलसी करतब केश।
रघुवर कीरति तिय बदन,
कूव कहैं तुलसादास।
शरद प्रकाश आकाश छवि,
चारू चिबुक तिल जास।
तुलसी शोभत नखत गण,
शरद सुधाकर साथ।
मुक्ता झालर झलक जनु,
राम सुयश शिशु हाथ।

कविवर केशवदास जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "रामचंद्रिका,, के तेरहवें प्रकाश में शरद सुन्दरी का वर्णन सीता वियोग दुखित रामचन्द्र जी से लक्ष्मण के प्रति कराया है।

बीते वर्षा काल यों,
आई सरद सुजाति।
गये अंध्यारी होति ज्यों,
चारु चांदनी राति।
दन्तावलि कुन्द समान मनो,
चन्द्रानन कुन्तल भौंर घनो।
भाहैं धनु खंजन नैन मनो,
राजीवनि ज्यों पद पानि भनो।
हारावलि नीरज ही यरमें,
हैं लीन पयोधर अम्बर में।
पाटीर जुन्हाइहिं अंग धरे,
हंसी गति केशव चित्त हरे।
श्री नारद की दरसे मति सी,
लोपे तम ताप आकीरति सी।
मानो पति देवन की रति सी,
सन्मारग की समझौ गति सी।

फिर इतना वर्णन करने के पश्चात् उसी शरद को कुलीन वृद्धा दासी की उपमा दी है। कहते हैं:—

लक्ष्मण दासी वृद्ध सी, आई सरद सुजाति।
मनहु जगावन को हमहिं, बीते बरषा राति।

इस प्रकार "रामचन्द्रिका" ग्रन्थ में केशवदासजी ने शरद वर्णन किया है। लेख विस्तृत होने के भय से अर्थ का स्पष्टी क-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रण नहीं किया जाता है। इनका यह ग्रन्थ बड़ा ही क्लिष्ट और गहन विषय से सम्पादित है।

रसराज के बनाने वाले कविवर मतिराम जी ने अपनी पतिव्रता वियोगिनी नायिका को शरद काल का आगमन होने से परम आनन्द पहुंचाया है। वह कहते हैं:—

शरद चन्द्र की चांदनी, जारि डारि किन मोहिं।
वा मुख की मुसकानि सम, क्यों हूं कहो न तोहिं।

परन्तु शरदागमन और साथ ही प्रीतमागमन से वह अत्यन्त प्रसन्न है।

पिया गमन शरदा गमन, विमल-बाल मुख-इन्दु।
अंग अमल पानिय भयो, फूले दृग अरविन्द।

बुलन्द शहर वासी कवि सेनापति जी शरद वर्णन इस प्रकार करते हैं:—

विविध वरन सुर चाप ते न देखियत,
मानो मनि भूषन उतरि धरे भेष हैं।
उन्नत पयोधर बरसि रसु गिर रहे,
नीके न लगत फीके सोभा के न लेस हैं।
सेनापति आये तें सरद ऋतु फूलि रहे,
आस पास कास खेत २ चहुं देस हैं।
जीवन हरन कुंभ जोनि के उदै ते भये,
बरषा विरिंचता के सेत मानो केस हैं।

ग्वाल कवि का वर्णन सुनिए:—

मोरन के सोरन की नैकौ न मरोर रही,
घोर हूं रही न घन घने या फरद की।
अम्बर अमल सर सरिता विमल जल,
पँक को न अँक औ, न उड़नि गरद की।
ग्वाल कवि चित्त में चकोरनके चैन भये,
पँथिन की दूर भई दूखन दरद का।
जल पर, थल पर, महल अचल पर,
चांद सी चमकि रही चांदनी सरद की।

पदमाकर कवि का भी कथन ध्यान से सुन लीजिए। वे अपने कन्हाई के मुकुट पर कैसे मोहित हैं:—

तालन पै, ताल पै, तमालन पै, मालन पै,
बृन्दावन वीथिन बहार बंसीवट पै।
कहै पदमाकर अखण्ड रास मंडल पै,
मन्डित उमड़ि महा कालिन्दी के तट पै।
छिति पर, छान पर, छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाड़िलो के लट पै।
आई भले छाई यह सरद जुन्हाई जिहि,
पाई छवि आजु ही कन्हाई की मुकुट पै।

बिहारीलालजी का सिर्फ एक दोहा सुन लीजिए। उनके शरद रूपी बहादुर राजा का प्रबन्ध बड़ा ही अच्छा है।

घन-घेरो छुटिगो हरखि चली चहूँदिस राह।
कियो सुचैनो आय जग, सरद सूर नर नाह॥

अन्त में सच्चे वैष्णव रीवां के महाराज़ कवि जयसिंह जी कृत "हरिचरित्र चन्द्रिका" ग्रन्थ कथित शरद वर्णन भी सुनिये। इनकी सूझ कितनी मान्य है।

बर्षा गई शरद ऋतु आई,
नवल बधू सम सुखद सुहाई।
कमल बदन खंजन चख छाजैं,
सुरंग सुमन बर बसन बिराजैं।
कल मराल नव नूपुर बाजत,
सुनि मुनि मानस मान बिभाजत।
फूली कांस सुदुति धरि धाई,
पतिव्रता कीरति जिमि पाई।
बर सर लसहिं सरोरुह फूले,
सुकृता भूप प्रजागन तूले।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महिजल सूखो प्रगटी महिइमि,
नस तप खंड लसत श्रुतिपथ जिमि।
सरि, सर जल इमि निर्मल छाजत,
जिमि तजि विषय बिरागी राजत।

कुकुभ कुटज आदिक बिना, बिकसे कुसुम निकाय
जिमि खल मद मथि नृप नगर, राख्यो सुजन बसाय

जल बिन जलद सेत छवि छाजत,
सब धन दै जिमि दाता राजत।
निर्मल भयो गगन घन फूटे,
जिमि हिय विषय बासना छूटे।
लसत इन्दु उडगन मिलि ऐसो,
नृप नय निपुन प्रजा जुत जैसो।
परसि चांदनी योंछित सोही,
सती सो सौति पाइ जिम जोही।
जन मन रंजन खंजन कैसे,
पूरव पुण्य समय फल जैसे।
जल चर नित जल घटत न जानहिं,
आयु कमति जिमि जन नहिं मानहिं।
रवि संताप शरद शित नाशत,
मोह नशत जिमि ज्ञान प्रकाशत।

परसि कमल कुवलय बहत, वायु ताप नसि जाय,
सुनत बात हरि सुनिजुत जिमिजन पाप पराय।

बन घाटिका उपबन मनोहर,
फूल फल तरु मूल सों।
सर सरित कमल कलाप कुवलय,
कुमुद बन बिकसे गंसे।
सुख लहत यों फल चखत मधु,
पीयत मधुप सोनीति सों।
मनु मगन ब्रह्मानन्द रस,
जोगीस मुनिगन प्रीतिसों।

इस प्रकार महाराजा जयसिंहजी ने और भी शरद वर्णन किया है जो बहुत ही मधुर और सरल शब्दों में लिखा गया है। अन्त में महाकवि देवदत्तजी ने जो माधव और श्री राधिकाजी के भेष में लीन होकर शरद वर्णन बृहत रूपेण किया है उसका एक पद्य नमूने के लिए रखता हूं।

नगर निकेत, रेत, खेत, सब सेत-सेत,
ससिके उदेत कछु देत न दिखाई है।
तारका मुकुत माल झिल मिल, झालरनि,
विमल, वितान नभ आभा अधिकाई है।
सामुद समोद बृज कुमुद विनोद देव,
चहुं कोर चांदनी की चादर बिछाई है।
राधा मधु मालतिहि माधव मधुप मिले,
पालिक पुलिन भीनी परिमल झाई है।

इस प्रकार कवियों ने शरद महिमा गाई है। वास्तव में शरद-काल मनुष्य मात्र के लिये तो परम ही सुखकारी है। यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में सफल होना चाहता है तो नियम पूर्वक अपना पाठ शरद के ऊषा-काल में अध्ययन करे। प्रातः वायु सेवन करने वाला मनुष्य शरद ऋतु के प्रातः कालीन दृश्य में कोई ख़ास बात पावेगा। शरद ऋतु अनेक प्रकार की शिक्षा, सौन्दर्य तथा शान्त रस का पाठ, पाठकों को पढ़ा जाती है। पढ़ने वाला, ग्रहण करने वाला, यह सुन्दर सुंयोग भला कब छोड़ सकता है? यदि यह शरद वर्णन पाठकों को कुछ भी शिक्षाप्रद तथा साथ ही मनोरंजक हुआ तो क्रमशः अन्य ऋतुओं का वर्णन भी उनके सन्मुख उपस्थित करता रहूंगा।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ मासावतरण ॥

लेखक—श्री पं० सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज

—————:०:—————

* मार्ग शीर्ष *

———:०:———

एक टक हम देखते जिसको रहे,
हृद्य हिम—ऋतु मार्ग[1] में वह आगई।
धुल चुके धारा—धरों से पूर्व तक,
अब उन्हीं पर मञ्जुता छाई नई।

* * * *

वह श्वसन[2] की शीतता, शुचि-स्निग्धता,
औ' उषा की कान्तता, कमनीयता।
म्लान-मन को भी मुदित करती, अहो!
बाल—रवि की वह रुचिर—रमणीयता।

* * * *

शर्वरी के, शस्य पर हिम[3]—पात ने,
वे बना मोती अनोखे से दिये।
बाल—मन कहता जिन्हें लख,-ये बने,
सत्य मोती, तो हमें क्या चाहिये?

* * * *

चाहते बल के लिए बल हीन थे—
जो समय, वह शीत का अब है यही!
जो प्रवासी हैं, उन्हीं के चित्त में,
देश—दर्शन की विकलता छा रही।

* * * *

१—मार्ग—मार्ग शीर्ष;
२—श्वसन=वायु;
३—हिम—ओस;

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरी काश्मीर यात्रा

लेखक—श्रीयुत प्रो० लक्ष्मण स्वरूप जी पी० एच० डी०

काश्मीर देखने को नेत्र तरस रहे थे। चिरकाल से अभिलाषा थी, हृदय व्याकुल रहा करता था। जब जब यात्रा की ठानी कोई न कोई विघ्न आन उपस्थित हो गया। सब प्रबन्ध निष्फल हुए। निराशा और उत्कण्ठा से दुगनी वेदना होती थी। Thomas Moor और Shelly के काश्मीर सम्बन्धी काव्य कई बेर पढ़े थे। जब कभी उन के किसी पद्य का स्मरण होता था तो दिल में एक मीठा दर्द उठता था, लम्बी सांस खुद ब खुद निकल जाती थी। आंसुओं के दो चार कतरे भी गिर पड़ते थे। देखें कब काश्मीर देखने का अवसर मिलता है?

इस ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों में फिर निश्चय किया, प्रस्थान की तिथि नियत करदी गई। अकस्मात् एक आवश्यक कार्य्य बस मुझे देहली और शिमले जाना पड़ा। मैं अभी शिमले ही था, कार्य्य समाप्त नहीं हुआ था, कि प्रस्थान की तिथि आन पहुंची। काम को अधूरा छोड़ लाहौर भागा और जब तक रावलपिंडी की गाड़ी में न बैठ गया काश्मीर पहुंचने का विश्वास न हुआ।

गरमी बहुत थी, गाड़ी खचाखच भरी थी, असबाब अधिक था, अतः बड़ा कष्ट हुआ। एक तो गरमी और भीड़ दूसरे कुछ मुसलमान यात्रियों ने हिन्दू-मुसलिम प्रश्न पर विवाद छेड़ दिया। बस फिर क्या था। ऐसा गरमा गरम विवाद हुआ कि विवादी पसीना पसीना हो गए। गरमी और भीड़ से जो कमी रहगई थी विवाद ने पूरी करदी।

प्रातःकाल पिण्डी पहुंचे। सारा दिन मोटर इत्यादि की प्राप्ति में लग गया। २५ जून को प्रातः काल ५ बजे पिंडी से प्रस्थान किया। हमने निश्चय कर लिया था कि सांयकाल तक काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में पहुंचना है, इस लिए प्रातःकाल ५ बजे चले। सड़क पर कुछ दूर निकल जाने पर सम्मुख पर्वत के नितम्ब में अग्नि लगी हुई थी। अन्धकार में प्रज्वलित अग्नि दूर से बहुत ही शोभायमान प्रतीत होती थी।

अग्नि फैली हुई थी। ज्वालाओं ने अनेक वेश धारण किए हुए थे। कहीं कहीं किसी वैद्युत नगर का तोरण प्रतीत होते थे। किसी स्थान पर मण्डपाकार बन गये थे मानो अप्सराओं के नृत्य की तैयारियां हो रही हैं। यह दृश्य बहुत ही मनोहर था, कितने ही मीलों तक दिखाई देता रहा। ७॥ बजे मरी पहुंचे। मार्ग में थोड़ी थोड़ी दूर पर मोटर के इंजन में ठण्डा पानी भरना पड़ता था क्योंकि चढ़ाई के कारण इंजन बहुत जल्दी गरम हो जाता था। मरी बड़ा रमणीक स्थान है लग भग ७००० फुट ऊंचा है। चील और देवदारु के बहुत से जङ्गल हैं। हमें २०० मील की यात्रा एक दिन में करनी थी सो हम मरी में नहीं ठहरे। कुछ मित्र लोग जिन को हमारे आने की सूचना मिल चुकी थी हम से मिलने आए, मार्ग में भोजन निमित्त मिष्टान्न भी लाए। मरी के पश्चात् एक दम उतराई आई, कोहाले १० बजे पहुंच गए। यहां वितस्ता अर्थात् जेहलम नदी के दर्शन हुए। नदी पार कर हम काश्मीर नरेश के राज्य में प्रविष्ट हुए। कोहाले के पश्चात् मार्ग नदी के तट के साथ साथ घूमता हुआ जाता है। कितने स्थानों पर पर्वत काट कर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्ग बनाया है। जेहलम नदी की वादी (valley) बहुत रमणीक है। पर्वतों का दृश्य मनोहर है थोड़ी थोड़ी दूर पर दृश्य बदलता रहता है। दोमेल नाम के नगर में बारह बजे पहुंचे। यहां राजकीय वैद्य आगन्तुकों की परीक्षा करता है। हैजा, प्लेग इत्यादि रोगों से ग्रसित रोगियों को आगे जाने नहीं दिया जाता। यहां चुंगी है, बड़ी सावधानी से पड़ताल की जाती है। राज्य की ओर से लगाया हुआ कर कुछ अधिक प्रतीत होता है। इस नगर का नाम दोमेल इस लिये है कि यह जेहलम और कृष्णगंगा का संगम स्थान है। कृष्णगंगा जेहलम में मिलती है। किन्तु दोनों नदियों का जल दूर तक पृथक् २ स्पष्ट दिखाई देता है। जेहलम का जल श्वेत और कृष्णगंगा का जल श्यामवर्ण का है। जिस प्रकार प्रयाग में गंगा और यमुना का दृश्य है उसी प्रकार का दृश्य दो मेल में देखने में आता है। यहां से एबटाबाद (Abbotabad) को पक्की सड़क जाती है। चुंगी और भोजन इत्यादि से निश्चिन्त होकर चले ही थे कि मोटर के अगले पहिए में पंकचर Puncture होगया। खैर, ठीक कर फिर चले। वायु बिल्कुल बन्द थी। धूप तेज थी। प्यास और गरमी से चित्त व्याकुल होगया। इसी दशा में मोटर की रफ्तार तथा हिलोरों से कुछ निद्रा आगई। सिर जो एक ओर झुका तो टोपी गिर गई। मोटर से उतरते समय जब टोपी की खोज हुई तो मालूम हुआ कि श्रीमती टोपी जी मार्ग पर ही रह गई हैं और अब उनके पहुंचने की कोई सम्भावना नहीं है।

मुझे मार्ग में एक बात देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। जहां तहां बैलगाड़ियां खड़ी थीं। बैल खुले हुए भूसा खा रहे थे। हांकने वाले सो रहे थे। स्थान स्थान पर यही हाल देखा। मैंने सोचा कि सारा दिन तो यह विश्राम करते हैं फिर यह चलते किस समय हैं? कुछ काल के पश्चात् मालूम हुआ कि मोटरों के मार्ग को खुला रखने के लिए बैलगाड़ियों की दिनयात्रा बन्द कर दी गई है। वह केवल सायंकाल के पश्चात् ही चल सकती हैं और सूर्य उदय होते ही ठहर जाती हैं।

इस सड़क पर प्रत्येक पड़ाव पर डाकबंगले तथा हिंदू-विश्राम-स्थान बने हैं। रसोई बनाने के लिए कश्मीरी ब्राह्मण राज्य की ओर से हिंदू विश्राम स्थानों में नियत हैं। सब सामग्री मौजूद रहती है। याली के कहने की देर होती है झट भोजन तैयार होजाता है। खर्च भी अधिक नहीं होता।

पर्वतों के मध्य घूमती, चक्कर काटती, धीरे धीरे क्रमशः ऊपर चढ़ती हुई सड़क बहुत सुन्दर लगती है। पर्वतों का दृश्य अद्भुत, आश्चर्य जनक है। कहीं २ किसी दुर्गम दुर्ग के उच्च प्रकार के समान सीधे जेहलम में धंस गये हैं। कहीं भयंकर रूप धारण कर शुष्क बंजर गंजे रुण्ड मुण्ड से खड़े हैं। कहीं चित्ताकर्षक पुष्पों से लदे हैं। कहीं चील के वृक्षों से ढके हैं। कहीं गुलम लता से आच्छादित हैं। कहीं सुहावनी हरी २ घास के बिछौने बिछे हैं। कहीं ऐसी मनोहर साफ़ सीधी ढलवान हैं कि लुढ़कनेको जी चाहता है। बीच बीच पानी के झरने झरते हैं दूर से ऐसा प्रतीत होता है मानो पिघली हुई चांदी की धारा बह रही है अथवा किसी सूक्ष्म रेशमी वस्त्र की कोई लम्बी पगड़ी पड़ी है। १५ बीस मील की रफ़्तार से दौड़ती हुई मोटर में पर्वतों का दृश्य रम्यतर प्रतीत होता है। नीचे जेहलम नदी पत्थरों पर उछलती कूदती कोलाहल कर रही थी। सड़क पर मोटर २० मील की रफ्तार से शोर कर रही थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आक्रमण कर रहा था । मानो प्रकृति देवी ने रजोगुण रूप धारण किया है। ऊड़ी और चुनारी होते हुए हम सायंकाल ६ बजे बारामूले पहुँचे। बारामूले से श्रीनगर तक ३५ मील में सड़क के दोनों किनारे सफ़ैदे के वृक्ष लगे हैं। यह वृक्ष ताल और खजूर से भी अधिक लम्बे हैं। वृक्ष बहुत समीप २ लगे हैं, उनके मध्य अन्तर बहुत थोड़ा है । दूर तक एक ७०, ८० फुट ऊंची हरी दीवार सी प्रतीत होती है। यह संसार भर में सब से अधिक लम्बा Avenue है। श्रीनगर से अनन्तनाग तक भी इसी प्रकार के सफ़ैदे के वृक्ष लगे हैं। बारामूले से एक रास्ता गुलमर्ग को जाता है, दूसरा झील वुलर को तीसरा श्रीनगर का। हमने यहां भी विश्राम, करना उचित न समझा। चले ही गए और ८ बजे तक श्रीनगर में पहुँच गए। अंधेरा होचुका था। रात्रि व्यतीत करने की चिन्ता हुई। अंधेरे में स्थान तलाश करना कठिन था। किंतु एक मित्र हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हीं के घर रात गुज़ारी। अगले दिन शिकारे पर बैठ कर जेहलम नदी की सैर करते रहे। लगभग ८० नौकाओं का निरीक्षण कर हमने एक मनभायी घरेलू नौका Houseboat किराए पर कर ली । घरेलू नौका गृह संबंधी सारे सामान से सुसज्जित होती है। बस वहां जाकर रहना ही होता है। सायंकाल से पहले ही मैं नौका में चला आया। चुनारबाग के समीप नौका को लगा दिया।

श्रीनगर

श्रीनगर जेहलम नदी के दोनों तटों पर बसा हुआ है। नदी के किनारे ६, ७ मील का विस्तार है। आर पार जाने के लिए सैकड़ों शिकारे स्थान २ पर खड़े रहते हैं। राज्य की ओर से नदी पर ७ पुल बांधे गए हैं। पुल को कश्मीरी भाषा में कदल कहते हैं जैसे मीरांकदल, जैनाकदल इत्यादि। यह पुल लकड़ी के बने हैं। खूब पक्के और मजबूत हैं। कभी २ जब जेहलम नदी में अत्यधिक चढ़ाव होता है तो यह पुल बह भी जाया करते हैं। श्रीनगर के मध्य में जेहलम बहती है। एक ओर डल नाम की बहुत ही सुन्दर झील है, बहुत सी नहरें बनी हैं। प्रत्येक स्थान पर बाजार में, गली में घरों में, जाना होता है तो नौका पर लोग जाते हैं। घोड़ा गाड़ी टांगे इत्यादिकों से नौका का प्रयोग अधिकतर है। श्रीनगर की प्रायः इटली देश के सुप्रसिद्ध नगर वेनिस Venice के साथ तुलना की जाती है। वेनिस पुराना नगर है। सफ़ाई कुछ कम है। श्रीनगर भी बहुत गंदा है। दोनों स्थानों में पक्की सड़कों की अपेक्षा नहरें इत्यादि ही मार्ग का काम देती हैं। इन्हीं दो बातों में समानता है। श्रीनगर की रमणीकता सौंदर्य तथा हरयावल वेनिस से अधिक हृदयङ्गम है।

पर्वत के एक ऊंचे शिखर पर श्रीशंकराचार्य निर्मित शिव मन्दिर है। प्रातः साँय समय बहुत से यात्री इस पर्वतपर चढ़ा करते हैं। पिछले बरस मायसूर नरेश यहां पधारे थे। वह मन्दिर के शिखर पर एक बहुत बड़ा वैद्युत लैम्प लगवा गए हैं। सायकाल के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी अद्वितीय चन्द्रमा का उदय हुआ है। मन्दिर का ज्योतिर्मय शिखर काश्मीर में बहुत दूर से दिखाई देता है। श्रीशंकराचार्य जी की चोटी पर चढ़ कर श्री जेहलम valley वादी का कौतूहल जनक दृश्य दिखाई देता है। नदी एक पतली रेखा बन जाती है। हरे हरे शाली के खेतों में बलखाती हुई बहुत ही मनोहारिणी प्रतीत होती है। यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दृश्य ऐसा चित्ताकर्षक था कि घण्टों निरीक्षण करने पर भी जी न ऊबे। श्रीशंकराचार्य के सन्मुख एक छोटा सा पर्वत है जिसे हरि पर्वत कहा जाता है। इस पर अकबर ने एक क़िला बनाया था। अब यह क़िला जेलखाने का काम देता है।

निशात बाग़।

रविवार के दिन पुरुष स्त्री निशात बाग़ की सैर में व्यतीत करते हैं। यह बाग़ श्रीनगर से आठ मील एक पर्वत के दामन में बना है। जहांगीर ने नूरजहां के विनोद के लिए बनवाया था। बाग़ के सौन्दर्य का वर्णन करना असंभव है। कृत्रिम जलप्रपात, सहस्रों फहवारे, क्रमशः ऊंचे उठते हुए चबूतरे, नाना रंग के पुष्पों की कतारें मखमल से भी कोमल हरी घास के विस्तृत मैदान, वटवृक्ष से अधिक शीतल और गूढ़ छाया देने वाले चुनार के विशाल वृक्ष. पर्वत का दृश्य, झील का नज़ारा, तथा काश्मीर देश की रूपवती लावण्यमयी युवतियों को देख कर आगन्तुक चकित हो जाता है। संशय उत्पन्न होता है कि यह स्वप्न है अथवा जागृति है? पुराणों में इन्द्र के नन्दनवन का जो चित्र खींचा गया है, मेरे विचार में वह निशात बाग़ के आधार पर लिखा गया है। मैं समझता हूँ मुसलमानी बहिश्त की तस्वीर बनाने वाले ने। निशात का नमूना गढ़ने का प्रयत्न किया है रविवार के दिन सब फहवारे तथा जलप्रपात चलते हैं। दृश्य ऐसा मनोहर होता है कि कुछ काल तक तो मृत्युलोक भी स्वर्गलोक बन जाता है। काश्मीर देश की युवतियां क्या हैं? बस अप्सराए हैं। उन में रूप की राशि बहुत अधिक है।। योरुप की नारियां भी उनके सम्मुख मन्द पड़ जाती हैं। निशात बाग़ क्या है? हृदय का नन्दन है। मैंने सारे योरुप की सैर की है। स्विटजरलैण्ड भी घूमा है। पर ऐसा रमणीक मनोहर, सुन्दर, और हृदयङ्गम स्थान नहीं देखा।

शालामार बाग़

निशात से लगभग दो मील के फासले पर है। यह भी जहांगीर का बनवाया हुआ है। रविवार को यहां बहुत भीड़ रहती है। मध्य में एक बारादरी बनी हुई है। शिल्पशास्त्र अथवा कारागरी का अच्छा नमूना है। शालामार के मध्य में एक छोटी सी नहर बहती है, यहां भी बहुत से जल प्रपात हैं। चुनार के वृक्षों की शीतल छाया, कोमल घास का कालीन, प्रपातों से झरता हुआ जल, मित्रों से गोष्ठी, चाय, फल, मिठाई इत्यादि से परस्पर प्रीतिवर्धन बहुत संतुष्ट करते हैं। लाहौर का शालामार बाग़ इसी इसी की नकल है।

शालामार से तीन मील आगे हारवन नाम का महासरोवर है। जल मीठा और स्वादु है। भले प्रकार सुरक्षित किया गया है। इसी सरोवर से श्रीनगर के लिए पीने का पानी लिया जाता है। जब हम सरोवर पर गए तो एक लम्बा सांप पानी में तैर रहा था, इतनी तेजी से पानी को चीरता हुआ जा रहा था कि अचंभा होता था। शायद मोटर नौका भी इतनी रफतार से नहीं जाती।

डलझील में दूसरे तट पर नसीम बाग़ है। यहां तम्बू लगाने के लिए विस्तृत खुले मैदान हैं। बहुत से अंग्रेज यात्री श्रीनगर को अच्छा न समझ, यहां तम्बू लगा कर रहते हैं। डल झील के ऊपर बहते हुए खेत हैं। इन खेतों में शाक पात बहुत अच्छा होता है। लकड़ी के तख्तों पर मट्टी डाल कर खाद बना लिया जाता है, फिर बीज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बोया जाता है। यह तख्ते किनारे के साथ खूंटों से बांध दिये जाते हैं। प्रायः चोरी हो जाती है। खूंटे से रस्सी खोली और शाकपात से लदे हुए खेत के खेत को चुरा कर दूसरे दूर स्थान पर ले गए। संसार भर में खेत की चोरी केवल श्रीनगर में ही हो सकती है।

श्रीनगरसे ५ मील चश्मा शाही है। यहां पृथ्वी में से स्वयं जल बाहिर निकलता है। इस जलमें कुछ ऐसे प्राकृतिक पदार्थ मिले हैं कि अजीर्ण के रोग झट हर लेते हैं. स्वास्थ्य के इच्छुक बहुत से वृद्ध स्त्री पुरुष यहां जल सेवन करने आते हैं। काश्मीर की महाराणी जी सांयकाल के समय नित्य यहां आती हैं और जलपान करती हैं।

गान्दरबल

श्रीनगर में गरमी बहुत थी। जल के ऊपर रहने से मच्छर बहुत सताते थे, सो नौका के हांजी के कथनानुसार हमने गांदरबल की ओर प्रस्थान कर दिया। नदी के रस्ते गान्दरबल पहुंचने में दो दिन लगते हैं। हम अपनी house boat के बरामदे में आराम कुरसी पर बैठे हुए थे। हांजी लोग लम्बे २ बांसों से नौका खेह रहे थे। साथ की दूसरी नौका में हमारा रसोइया भोजन बना रहा था और शिकारा रसोई वाली नौका के साथ बंधा था। जब रसोई से कोई वस्तु मंगानी होती थी झट शिकारे पर आजाती थी। नौका चलते २ भोजन बना। नौका चलते २ में हमने खाया। यह हमारे लिए एक नया अनुभव था। हमने दूसरे नगर में जाना था। हम यात्रा कर रहे हैं, लेकिन न हमें अस्बाब बांधना पड़ा, न सफ़र की कुछ तैय्यारी करनी पड़ी। पलंग पर बिस्तरा बिछा था। हजामत का सामान ताक के ऊपर रखा था। मेज पर चाय के प्याले धरे थे। ऐसा प्रतीत होता था। कि हम घर में बैठे हुए हैं और घर का घर ही यात्रा कर रहा है। घरेलू नौका की यात्रा बहुत ही आनन्ददायक होती है। इस यात्रामें तनिक भी कष्ट नहीं होता। पहली रात हम शादीपुर ठहरे। अगले दिन मध्याह्नके पश्चात् दो बजे गांदरबल पहुंचे. गांदरबल एक छोटा ग्राम है, सिन्धु नदीके तटपर बसा है। यहां गरमी कुछ कम है। दृश्य मनोहर है। जलवायु अच्छा है। गांदरबल से ३ मील क्षीरभवानी का मन्दिर है। यहां अष्टमी के दिन मेला लगता है। दूर २ से यात्री लोग जमा होते हैं। मन्दिर के समीप एक छोटा सा चश्मा इसी चश्मे में है क्षीर और मिठाई चढ़ाई जाती है। क्षीर और मिठाई के सड़ने से वहां इतनी दुर्गन्ध आती है कि क्षण भर ठहरना कठिन हो जाता है।

गांदरबल से ५ मील मानसबल नाम का सरोवर है। यह एक बड़ी मील है। ऊंचे २ पर्वतों के मध्य में स्थित है। शिकारे में बैठकर हम एक किनारे से दूसरे किनारे पर गए। स्थान २ पर बहुत गहरी है। किनारे के पास २ जल के भीतर किसी प्रकार का घास उत्पन्न होता है। घोड़े बैल इत्यादि बड़े चाव से इसे खाते हैं, सरोवर का दृश्य भी बहुत हृदयङ्गम है।

गांदरबल से सुनमरग तीन दिन का रास्ता है। हम घोड़ों पर सवार होकर चल दिए। भोजन इत्यादि की सामग्री दो सप्ताह के लिए साथ बांध ली। मार्ग में खाद्य पदार्थ नहीं मिलते, केवल दूध मिलता है। पहले दिन कांगन के डाकबंगले में विश्राम हुआ। डाक बंगला सिन्धु नदी के तट पर बना है। चारों तरफ पर्वतों पर शाली और मक्का के खेत हैं, यह खेत बहुत ही अच्छे लगते हैं। रात चांदनी थी। चन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देव की श्वेत किरणों ने सिंधु धारा को रजित धारा में प्रवर्तित कर दिया। निर्मल ज्योति में पर्वतों के शिखर और वृक्षों के झुण्ड बहुत ही विचित्र लगते थे।

अगले दिन प्रातःकाल प्रस्थान किया। मार्ग में बहुत से यात्रियों से भेंट हुई। सड़क सिन्धु नदी के साथ साथ चली गई है। अनेकानेक पर्वतों झरनों को देखते हुए हम एक बजे गूण्ड पहुंचे। वहां भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हो विश्राम किया। यहां पर हमारी एक अङ्गरेज से भेंट हुई। वह और उसकी मेम सुनमरग जा रहे थे। प्रातःकाल फिर कूच हुआ, आज चढ़ाई बहुत थी। कहीं कहीं घोड़े पर बैठ कर चढ़ना भयानक था। एक पग के फिसलने से मनुष्य सहस्रों फुट नीचे नदी में गिरता और उसकी हड्डी बोटी का भी पता न चलता। सायंकाल को हम सुनमरग पहुंचे। यह स्थान ऊंचे पर्वत पर बना है। इसका सौन्दर्य इसी बात में है कि इतनी ऊंचाई पर इतना खुला विस्तृत और हमवार मैदान है। यहां वायु बहुत शीतल है। सरदी भी बहुत है। यह स्थान आबादी से बहुत दूर है। केवल चरवाहे लोग भेड़, बकरी, गाय भैंसों को चराने के लिए ग्रीष्म ऋतु में ले आते हैं और सितम्बर में वापिस लौट जाते हैं। सुनमरग में केवल चार पांच मनुष्य रहते हैं। एक तो डाक बंगले का चौकीदार, एक डाकखाने का बाबू, एक तारघर का बाबू, और एक दुकानदार। सरदीमें दुकानदार तो नहीं रहता, सरकारी नौकरों को रहना पड़ता है।

सुनमरग से अगला पड़ाव बालथल है। बालथल से तिब्बत, स्करदू, लेह, और चीन देश को सड़क जाती है। हम जोजिलापास Zojila-pass जो १२००० फुट ऊंचा है, और हमेशा हिम से आच्छादित रहता है, तक गये। चार मील तक बीस फुट गहरी बरफ के ऊपर चले। जोजिला के ऊपर दो अंग्रेज महिलाओं से भेंट हुई। यह दोनों युवतियां परिश्रम की परवाह न कर और भय को तिलाञ्जलि दे दुर्गम पर्वत स्थानों पर अकेली भ्रमण कर रही थीं। इन के साहस और धैर्य की प्रशंसा करना उचित है। बालथल में केवल डाक बंगले का चौकीदार रहता है। कोई वस्तु यहां नहीं मिलती। न कोई आबादी है। बालथल के आस पास पर्वत पर जंगल ही जंगल है। यहां भूर्जपत्रों के वृक्ष बहुत होते हैं। इस जंगल में घूमते एक दिन दो तीन मील पर एक तम्बू दिखाई दिया। कौन रहता है यह जानने की प्रबल इच्छा हुई, वहां गया तो क्या देखा कि निर्जन वन में एक अंगरेज युवती अकेली निवास करती है। दो तीन अनुचर साथ हैं। इस प्रकार आबादी से दूर निर्जन और दुर्गम स्थान में भिन्न जाति व भिन्न धर्म के पुरुष अनुचरों के मध्य एक युवती का अकेले रहना कितने साहस का काम है। परन्तु उसे तनिक भी भय न था। न पुरुषों के बलात्कार का डर था, न जंगली जानवरों, रीछ, इत्यादिकों का भय था। मैं कहता हूँ धन्य है वह जाति जिस की स्त्रियों का हृदय इस प्रकार निर्भय और साहस से पूर्ण है, ऐसी माताओं की सन्तान कितनी सबल होगी यह अनुमान किया जा सकता है।

बालथल से अमरनाथ केवल १० मील है। परन्तु मार्ग बहुत कठिन है। कोई सड़क तो है नहीं, केवल एक पानी का नाला है। यह बारह महीने जमा रहता है। इस नाले के ऊपर के भाग की जमी हुई बरफ पर चलना पड़ता है। जब गरमी अधिक होती है तो ऊपर की बरफ कुछ कुछ पिघल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाती है। जहां तहां बरफ में गढ़े पड़ जाते हैं। यदि मनुष्य किसी गढ़े में गिर जाय तो सीधा यमलोक पहुंचता है। एक तो नाले के ऊपर बरफ पर चलना, दूसरे दस मील पर्य्यन्त सीधी चढ़ाई। बरफ पर साधारणतया चलते हुए पुरुष पगपग पर फिसलता है, यदि सीधी चढ़ाई हो तो फिसलना बहुत ही सहल हो जाता है। ऐसी दशा में इस मार्ग से अमरनाथ जाना विपत्ति को बुलाना था। सो हम वापस गान्दरबल को चले। मार्ग में मेरा एक साथी घोड़े से गिर गया पत्थर पर गिरने के कारण उसके हाथ में चोट आई। कोई वैद्य नहीं, औषधि नहीं, जंगल या मैदान। सो अपना ही इलाज किया। घोड़े की लीद तेल में गरम कर बांध दी। गान्दरबल तक इसी औषधि का प्रयोग होता रहा। इसी से आराम भी होगया।

अमरनाथ की यात्रा

श्रीनगर से हम पहले ही पहलगाम पहुंच गये थे। मार्ग में अनन्तनाग, वेरीनाग कुक्कुडनाग, अच्छाबल इत्यादि अनेक रमणीक स्थान देख। वेरीनाग से ही जेहलम नदी का निकास होता है। पहलगाम लिदर नदी के तट पर पर्वत स्थान है। लगभग ७००० फुट ऊंचा है। दो तरफ पर्वत हैं। दूर से हिमालय के हिम से आच्छादित शिखर दिखाई देते हैं मध्य में लिदर बहता है। एक ओर अमरगंगा बहती है। दोनों का संगम पहलगाम पर होता है। यह वादी बहुत रमणीक है। मानों प्रकृति ने स्वयं एक सुन्दर उद्यान रचने का प्रयत्न किया है। यहां पक्के मकान नहीं है। सब लोग तम्बू में रहते हैं। तम्बू का जीवन स्वतन्त्र जीवन है, कुछ थोड़ा कष्ट होता है पर आनन्द बहुत आता है। यहां वृष्टि कम है। ग्रीष्म ऋतु में सारी पहाड़ी यात्रियों के तम्बुओं से भर जाती है। बहुत से लोग जल वायु सेवन के लिये महीनों यहां रहते हैं।

अमरनाथ पहलगाम से तीन पड़ाव है। चढ़ाई बहुत होने से और मार्ग कठिन होने से यह यात्रा बहुत ही कठिन यात्रा है। पर धर्ममें श्रद्धा रखने वाली वृद्धा स्त्रियां नंगे पांव बरफ पर चलती हैं और सब कष्ट सह लेती हैं। इस बेर ५ सहस्र के लगभग यात्री लोग थे। ६ महीने के गोदी के बालक से लेकर ७५ बरस की वृद्धा तक सब उमरों के स्त्री पुरुष शामिल थे। यात्रा निर्विघ्न समाप्त हुई। मार्ग में १८००० फुट तक चढ़ना होता है। मार्ग में सरोवर वन उपवन पर्वत शिखर अमरनाथ तथा हिमालय की कन्दराओं के अद्भुत विचित्र और मनोहर दृश्य दिखाई देते हैं। उनका वर्णन फिर कभी करेंगे।

परिवर्त्तन।

(बंगाल की "एकाल सेकाल" के आधार पर)

लेखक—श्रीकृष्ण पाण्डे

(गतांक से आगे)

४

ग भग एक सप्ताह से शोभा एक प्रकार से कैद है। कारण सतीश की

बुआ आई हुई हैं और उनका आना विशेष कर शोभा के विवाह के लिये भी हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोलह सत्रह वर्ष की लड़की होगई, अबतक विवाह नहीं हुआ इस बात को वृद्ध बुआ कब देख सकतीं थीं। पहले तो उन्हों ने पत्र द्वारा ही तकाजा किया लेकिन उसका कुछ फल न होता देख लाचार होकर उन्हें स्वयं आना पड़ा। उनको आये प्रायः एक सप्ताह होगया है अतः आजकल शोभा उदास ही रहती है। निर्मल बाबू रोज आते हैं, भाई सतीश उनसे रोज ही घंटों गप्प लड़ाया करते हैं, लेकिन स्वतन्त्र—प्रकृति शोभादेवी उनसे मिल नहीं सकती, दो बातें करके अपने सन्तप्त हृदय को शान्त नहीं कर सकती, इस बात की चिन्ता से वह दिन रात उदास ही रहती है।

संध्या के चार साढ़े चार बजे होंगे। शोभा अपने पलंग पर पेट के नीचे तकिया देकर किसी अंग्रेज़ी पुस्तक का पन्ना उलट रही है, उसका मन पढ़ने में नहीं लगता। पास ही में एक कोच पर सतीश बाबू कोई मासिक पात्रका पढ़ रहे हैं। दोनों जने अपने ध्यान में मस्त थे, इतने में ही हाथ में सुमिरनी लिये, चौखट के बाहर से ही बुआजी ने कहा-"हांरे सतीश? शोभा के ब्याह का क्या ठीक हुआ? क्या अभी तक ब्याह का समय नहीं हुआ?"

शोभा ने पुस्तक से आंख उठाकर वक्र दृष्टि से बुआ की ओर देख कर कहा "इसमें समय असमय क्या! जब सुविधा होगी तब होजायगा। इतनी जल्दी काहे की है?" सतीश ने नम्रशब्द में कहा "भीतर आओ न बुआ मां?" "नहीं २ यह कैसे हो सकता है। इस घर में आने से उनका धर्म चला जायगा हम लोग तो सब विधर्मी हो गये।" कहते २ शोभा ने बुआ को देख, उपेक्षा पूर्व हंसी हंसी "चुप रहो शोभा! तुम क्या कह रही हो, इसका भी कुछ ध्यान है या नहीं? अच्छा बुआ मां, इस घर में आने में तुमको भी इतना संकोच क्यों है?"

वृद्धा के उत्तर देने पहले ही शोभा ने कहाः—

"यह सब कुशिक्षा का फल है भैया!"

सतीश अनेक चेष्टा करने पर भी यह नहीं समझ सका कि स्नेहमयी बुआ के प्रति शोभा के इतने विराग का क्या कारण है?

"चलो शोभा छत पर बातें करें।" यह कह वह कमरे के बाहर चला गया।

वृद्धा बुआ ने दीर्घ स्वाँस लेकर कहाः—"शोभा यहीं रहे तुम चलो।"

"यह क्या? विवाह की बात तो शोभा के सामने होना ही ठीक है। उसका मत लेकर ही विवाह का प्रबन्ध किया जायगा।" विरक्त होकर शोभा बोली--"मैं यहीं अच्छी हूं। इन सब व्यर्थ की बातों को मैं पसन्द भी नहीं करती।"

शोभा के मंहसे अपने प्रति ऐसे तिरस्कार पूर्ण वाक्य सुनकर वृद्धा के मन में बड़ा दुःख हुआ। किंतु ममता और भविष्यत् चिन्ता से उसका हृदय कांप गया। उसने स्नेह-पूर्ण शब्दों में कहा "बेटी, मैंने तुझे अपनी लड़की की तरह पाल पोस कर इतना बड़ा किया है। मेरी बात मानो, सतीश जो कुछ करें उसमें आपत्ति न करो"

"पाल पोस कर इतना बड़ा किया है इस के लिये मैं चिर कृतज्ञ हूं, जिस प्रकार होगा मैं इसका बदला दूंगी। लेकिन अपने जीवन को इस प्रकार दुःख के अथाह समुद्र में डाल देना मेरे लिये असम्भव है।"

शोभा की इस बात को सुनकर बुआ और सतीश दोनों चुप रह गये, उनके अप-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मान की सीमा न रही, दुःखपूर्ण स्वर से से सतीश बोलाः—"चलो बुआ मां हम लोग छत पर चलें।" दोनों जने छत पर आगये। बुआ ने एक निश्वास छोड़कर पूंछाः—"ये निर्मल बाबू कौन हैं रे ?"

सतीश—"वह एक डाक्टर हैं, देश से आकर यहीं डाक्टरी करते हैं "

बुआ०-"उनसे तेरा सम्बन्ध ?"

"सम्बन्ध और क्या होगा वह एक शिक्षित पुरुष हैं, उनसे परिचय होना ही बड़े भाग्य की बात है।"

यह कहती हुई शोभा दोनों के बीच आकर खड़ी होगई। शोभा को एकाएक यहां देख दोनों को बड़ा आश्चर्य्य हुआ।

"शोभा ! मैं तेरे भले ही के लिये कहती हूं मेरी बात मानले बेटी ! और जो तेरे मन में आवे सो कर लेकिन बाहरी लोगों से इस तरह का मिलना छोड़ दे।"

"इसमें तुमको हस्ताक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं बुआ मां !" कह कर शोभा आकाश की ओर देखने लगी। मामला बढ़ जाने के भय से सतीश ने बात का रुख पलट कर कहा" जो सम्पत्ति पिताजी छोड़ गये हैं, उसमें से शोभा के विवाह के लिये दस बीस हज़ार रुपया खर्चने में मुझे कुछ कष्ट न होगा। किन्तु"

बुआ० "किन्तु क्यारे ?"

सतीश—"शोभा विवाह के लिये बिलकुल तैयार नहीं है।"

बुआ—"उसके लिये इतनी चिन्ता किस बात की है, मुंह से तो बोले-लेकिन तू बड़ा भाई है, जो करदेगा वह उसे मंजूर करना ही होगा।"

शोभा इतनी देरतक आकाश की ओर देख रही थी, इन लोगों की बात की तरफ उसका ध्यान ही नहीं था, किन्तु बुआ के इस कथन ने उसको चौंका दिया, उसने आवेश के साथ कहा "वह जमाना गया बुआ मां। अब हम भी अपने अधिकारों को समझने लगी हैं और भैया भी बिना मेरी मर्जी के कुछ नहीं कर सकते यह मैं कहे देती हूं।"

"मेरा भी यही मत है। पिताजी ने शोभा को अपने मन माफिक शिक्षा दी है, अच्छा बुरा समझने की शक्ति भी उसमें है वह जो चाहे करे।"

"हे भगवान ! भाई बहन दोनों की एक मत।" कहकर वे चुप हो गईं, थोड़ी देर बाद फिर बोलीं। देख, कोई लड़का मिले तो" शोभाने बीच ही में बाधा देकर निशंक होकर कहा-"ये मनका काम है बुआ मां ! हां तुम लोगों की चेष्टा से किसी के साथ भी व्याह हो सकता है, लेकिन उसके लिये मैं तैयार नहीं हूँ। इसके अलावा ऐसा कोई नजर भी नहीं आता जिससे मेरा मन मिला हो, लेकिन यह निर्मल बाबू ठीक पढ़े लिखे शिक्षित पुरुष हैं।"

शोभा की निर्लज्जता देख सतीश आश्चर्य्य करने लगा। कोई भी हिन्दू रमणी इस प्रकार कह सकती है यह उसकी समझ में नहीं आया। लेकिन साथ ही बुआ के मन में आशा का संचार हुआ। उसने पूंछाः—"क्यों सतीश इनसे शोभा का व्याह नहीं हो सकता ?"

"उनका विवाह हो गया है।" कहकर सतीश चुप हो गया।

यह सुनकर शोभा के मन में बड़ा दुःख हुआ, वह कठपुतली की तरह वहां खड़ी थी। वहीं खड़ी रह गई, उसके मुख से एक शब्द तक नहीं निकला। बुआजी भी उदास होगई थीं, शोभा के उक्तकथन से उनको कुछ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आशा हुई भी लेकिन सतीश ने निराश कर दिया। सब कोई चुप हैं, थोड़ी देरतक ऐसी ही निस्तब्धता रही। इतने में ही नीचे से निर्मल ने पुकारा "सतीश बाबू।"

आवाज़ सुन कर शोभा नीचे आने लगी लेकिन बुआने हाथ पकड़ कर कहा:—"शोभा तू मत जा बेटी।"

यह सुनते ही शोभा का मुंह लाल होगया। उसका जी निर्मल से मिलने के लिये छटपटाने लगा। "बुआ जी जब मना कर रहीं हैं तब यहीं रह शोभा, तू न गई न सही।" यह कह कर सतीश चला गया। शोभा थोड़ी देर तक तो चुप रही लेकिन वह अपने मन को रोक नहीं सकी। क्रोध और घृणा से उसका चेहरा लाल होगया, उसके होठ फड़कने लगे, उसने झटके से अपना हाथ छुड़ा कर कहा:—"न गई सही। लेकिन इन कुरुचियों को अपने हृदय में स्थान देते तुम लोगों को लज्जा भी नहीं आती? मैं यह कहे देती हूँ कि इस तरह से मुझे बचा नहीं सकते।" इतना कह कर शोभा वेग से अपने कमरे में चली गई।

नीचे बैठक में सतीश से इधर उधर की बातें करते २ निर्मल ने पूंछा "इधर शोभा नहीं दिखाई देती? उसकी तबीयत तो ठीक है न?"

"हां तबीयत ठीक है। लेकिन देश से बुआ जी आई हैं वे इन सब बातों को अच्छा नहीं समझतीं।"

निर्मल ने आश्चर्य्य से पूंछा "किन सब बातों को?"

सतीश ने कोई जवाब नहीं दिया। निर्मल ने थोड़ी देर ठहरकर फिर कहा "ओह! समझ गया। ये बुड्ढे ही सब चौपट कर देंगे, उन्हें उच्च कोटि की शिक्षा तो मिली ही नहीं है, जैसे स्वयं पिंजरे में बंध रहना पसन्द करती हैं, वैसे ही दूसरे को भी स्वतन्त्र नहीं रहने देतीं।"

सतीश ने नम्रता से उत्तर दिया-"देखिये निर्मल बाबू! मैं किसी को दोष देना नहीं चाहता, कारण कौन ठीक है, और कौन बेठीक है इसका निर्णय अभीतक मैं नहीं कर पाया हूँ।"

"क्या आप भी अभी तक इन कुसंस्कारों को नहीं छोड़ सके?"

सतीश ने कहा—"मैं नहीं कह सकता कि इनको कौन छोड़ सका है। सम्भव है आप इसमें सफल होगये हों, लेकिन मैं तो आज तक सफल नहीं हो सका।"

निर्मल ने कहा—"लेकिन आप का रहन सहन देख कर कोई सन्देह नहीं कर सकता कि……"

सतीशने बात काटकर जवाब दिया—… आप का यह कहना ठीक है। लेकिन फिर भी मैं अपने बड़ों की निन्दा किस साहस से कर सकता हूं।"

"इसमें साहस की क्या बात है भैया? सत्य को कोई नहीं दबा सकता।" यह कहती हुई शोभा सतीश के पास आकर खड़ी हो गई। शोभा को वहां देखकर सतीश ने कोमलता से कहा-"तुम यहां क्यों बहिन?"

शोभा इसका कुछ उत्तर न देकर सतीश के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गई। कुछ देर बाद निर्मल ने एक निस्वास फेंक कर कहा "यदि इसमें आप कुछ दोष समझते हैं तो आपको ऐसी बुरी चाल छोड़ देनी चाहिये। कारण यह कि मनुष्य नाम से परिचय देने के पहिले अपना सिद्धांत ठीक रखना चाहिये।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"यह तो ठीक ही है। जिसके मत का कुछ ठीक नहीं उसके अस्तित्व के ऊपर विश्वास कैसे किया जायगा।"

यह कहकर शोभा ने निर्मल की बात का समर्थन किया। सतीश के विस्मय की सीमा नहीं रही, उत्तेजना वश मनुष्य इस क़दर बर्बर हो जाता है उसने आज ही देखा। साथ ही साथ शोभा के भविष्य की चिन्ता ने उसे और भी धर दबाया। निर्मल के साथ इतनी घनिष्टता करके उसको पछताना पड़ा लेकिन अपने मनके भावों को दबाकर उसने शोभा से कहाः— 'शोभा! पान तो ले आ बहिन। आज तो निर्मल बाबू को चाय भी नहीं पिलाई।"

निर्मल को अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई कि एक मित्र से मिलने आकर कितनी बर्बरता से बातें कर रहा हूँ। लेकिन इतने पर भी अपनी बात को मजबूत करने के लिये उसने कहाः—"सतीश बाबू! आप चाहे जो कहें किन्तु विचार करने पर आपको स्त्री शिक्षा और स्त्री-स्वाधीनता को स्वीकार करना ही होगा, इसके बिना चल नहीं सकता।"

"दुःख है कि शिक्षा और स्वाधीनता को स्वीकार करते हुए भी मैं आपकी तरह यूरोपीय शिक्षा पद्धति का पक्षपाती नहीं हूं, मुझे इससे कुछ भय होता है। और प्राचीन परिपाटी यह तो कभी बन्द होही नहीं सकती।" इतना कहकर सतीश ने घृणा के साथ अपना मुंह घुमा लिया।

निर्मल कुछ न कहना ही चाहता था कि सतीश ने फिर कहा! "क्षमा कीजिये। मुझे एक ज़रूरी काम है। इस फालतू विषय पर तर्क करने का मुझे बिलकुल समय नहीं है। फिर भी मैं कहे देता हूं कि जो काल की दुहाई देते हैं वह कुछ नहीं कर सकते।"

शोभा अभी तक चुप बैठी थी, लेकिन निर्मल के प्रति सतीश के इस बर्ताव को वह न सह सकी उसने कहा-"भैया! अपने घर आये एक भले मनुष्य का इस तरह अपमान करते तुम्हें कुछ भी संकोच नहीं होता। वह तुमसे कुछ भीख मांगने नहीं आये हैं।" सतीश शोभा की बात का उत्तर दिये बिना ही ऊपर चला गया। सतीश के इस व्यवहार से निर्मल ने अपना घोर अपमान समझा, उसके तमाम बदन से पसीना बहने लगा। अपनेको संभाल न सकने के कारण वह शीघ्रता से घर के बाहर चला गया।

दो दिन से निर्मल सतीश के यहां नहीं जाता उस समय वह मैदान में घूमने चला जाता है। आज मैदान से आकर अपनी बैठक में रणधीर को पुस्तक पढ़ते देख उसने आश्चर्य्य से पूंछा "तुम कब आये रणधीर?"

"आज दोपहर को आया हूं, सारा कलकत्ता ढूंढ़ डाला तब कहीं आपका पता लगा है।" कह कर रणधीर हंसने लगा। निर्मल ने कोट खोलते २ पूछा "घर में मां बाबू जी मजे में हैं न?"

रणधीर ने व्यंग से कहा - "ठीक हैं या नहीं इससे तुमको क्या मतलब?"

निर्मल०—"यह व्यंग किस लिये रणधीर?"

रणधीर०—निर्मल अगर तुम्हारे लड़का होता और वह भी एक ही, तब तुम्हें मालूम पड़ता कि अपने इकलौते बेटे को विदेश भेजने के बाद माता पिता दुःख में रहते हैं या सुखमें। अभी तुम इन सब बातों को क्या समझोगे?" निर्मल ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया, उस को निरुत्तर देखकर रणधीर ने फिर कहा—"निर्मल तुम से ऐसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आशा तो किसी को नहीं थी, यह तुम क्या कर रहे हो भाई?"

रणधीर की यह प्रेम भरी फटकार सुन कर निर्मल के हृदय में उथल पुथल मच गई।

उसने व्यग्रता से पूंछा "भाई रणधीर! अब यह पहेलियां बुझाना तो छोड़ दो और साफ़ २ कहो बाबू जी मजे में हैं न?"

रणधीर०—"किसी तरह अभी तक बचे हुए हैं। निर्मल! जो होगया सो होगया अब भी घर लौट चलो। अपनी माताके दुखित हृदयको शान्ति देना चाहते हो तो मेरे साथ घर चलो।"

निर्मल०—"अच्छी बात है। मै घर चलने तैयार हूँ।"

रणधीर०—'तो तैयार हो जाओ, आज ही रात की गाड़ी से जाना होगा।"

निर्मल०—"आज ही ? इतनी जल्दी क्यों?" इतना कह कर निर्मल चुप हो गया। उसकी आंखों के सामने शोभा की मूर्ति फिरने लगी। उसके मन में आया कि जाते समय एक बार शोभा से मिल आऊं। लेकिन सतीश बाबू के साथ जो बातें हुई उस अपमान की बात याद कर उनके घर जाने का साहस नहीं हुआ। बहुत देर तक सोचते रहने पर भी वह शोभा से मिलने का कोई मार्ग तय नहीं कर पाया। उसको इस तरह चिंता करते देख रणधीर ने पूंछा "क्या सोचते हो निर्मल?"

निर्मल०—"रणधीर मां बहुत कातर हो रही है क्यों? मुझे आज ही चलना चाहिये?"

ठीक इसी समय युरोपीय महिला के वेश से सुसज्जित शोभा ने कमरे में प्रवेश कर के कहा—"निर्मल बाबू! मालूम होता है आप रुष्ट होगये। ऐसी तर्क तो अनेक बार होती हैं। इस पर इतना मान करना होता है छिः।"

निर्मल ने शोभा की बात का उत्तर न देकर पूंछा "आपकी तबियत तो ठीक है न?"

"तबीयत तो ठीक ही है। लेकिन आप बात क्यों उड़ा रहे हैं। पहले मेरी बात का उत्तर दीजिये, आप रुष्ट क्यों होगये।" इतना कह कर शोभा ने तीव्र दृष्टि से निर्मल की ओर देखा। निर्मल ने हंसते २ कहा-"नहीं २ इसमें रुष्टता की कौनसी बात है। कार्य अधिक होने के कारण नहीं आ सका।" इन दोनों की बातें होती देख रणधीर वहां से यह कह कर चला गया कि "मैं थोड़ी देर में लौट कर आता हूँ तुम तैयार रहना।"

रणधीर के वहां से जाते ही निर्मल ने एक लम्बी सांस ली, उस को भय था कि शोभा की बातें सुन कर तेज स्वभाव रणधीर कुछ कह न बैठे। लेकिन उसके चले जाने पर वह भय दूर होगया।

"यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि आप रुष्ट नहीं हैं। कल मैंने एक गार्डन पार्टी की है उसमें आपको शरीक होना पड़ेगा।"

निर्मल—"लेकिन मैं तो आज ही देश जा रहा हूं।"

शोभा—"नहीं २ यह कभी हो सकता है? आप ही के लिये तो यह आयोजन किया गया है। अगर आप मेरी इस प्रार्थना को अस्वीकृत कर देंगे तो मुझे बड़ा दुःख होगा तीन बजे तक जरूर आइयेगा हम लोग आप की अपेक्षा करेंगे।" इतना कह कर शोभा चली गई। निर्मल "हां या ना" कुछ जवाब

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं दे पाया, केवल उसे गाड़ी तक पहुंचाकर लौट आया। आकर देखा कि रणधीर बाहर से लौट आया है। उसने निर्मल के आते ही कहा—"सारा इन्तजाम ठीक है एक बार चल कर देखलो और कोई चीज़ तो नहीं लेनी है?"

"देखता हूँ आज मैं नहीं जा सकूंगा। तुम जाकर मां से कह देना कि मैं दो दिन बाद आऊंगा।"

रणधीर ने पूंछा "यह सब चालबाजी रहने दे-क्यों आज क्या है?"

निर्मल—"एक सख़्त केस है।"

रणधीर—"इस पर मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि एक मनुष्य के जीवन मरण की समस्या है।"

इतने में नौकर ने चाय का प्याला सामने लाकर रख दिया। चाय पीते २ निर्मल ने पूंछा "क्यों रणधीर मेरे न जाने से मां को बहुत दुःख होगा?"

रणधीर—"मां को तो दुःख होगा ही साथ ही एक मनुष्य जो मर रहा है, उसे बचाना क्या तुम्हारा फ़र्ज़ नहीं है?

बिमला को बहुत ज्यादा कष्ट है। निर्मल! उसको बचाओ, हाथ आई लक्ष्मी की अवहेलना मत करो, नहीं तो पछताओगे। वह दिनों दिन सूखी जा रही है, उसकी दशा को देख कर मां ने भी खाना पीना छोड़ दिया है।"

निर्मल—"रणधीर क्या यह सच है?"

रणधीर"नहीं तो क्या मैं झूंठ कहता हूं।"

निर्मल ने सोचा—"क्या मैं बिमला को सुख दे सकूंगा? वह मेरे मन लायक होगी? वह गांव की लड़की क्या शोभा की तरह स्वाधीनता पूर्वक मेरे साथ व्यवहार कर सकेगी? नहीं! मेरा उसका मेल कभी नहीं मिल सकता! मैंने उसे अच्छी तरह पहचान लिया है, उसका वह लम्बा घूंघट मुझे पसंद नहीं, वह किसी तरह शोभा की तरह नहीं हो सकती।" इतने में ही रणधीर ने उसका ध्यान भंग करके कहा "क्या सोच रहे हो? अच्छी तरह विचारलो अगर किसी तरह जा सकते हो तो आज ही चलो देखो तुम्हारे लिये दो प्राणी मर रहे हैं उन को और ज्यादा कष्ट मत दो।"

रणधीर की इस बात ने निर्मल के हृदय पर बड़ा असर किया। उसके कानों में रहरह कर कोई कहता था कि उन्हें ज्यादा कष्ट मत दो—वह विचलित हो गया। शोभा को भूल गया, उसके निमंत्रण को भूल गया, शोभा की आरजू मिन्नत पर उसका बिल्कुल ध्यान नहीं रहा उसने कहा-- "अच्छी बात है, तब आज ही चलो। जो होगा सो देखा जायगा" रणधीरने घड़ी देखी, गाड़ी छुटने में अभी आधे घंटे की देर थी, सामान सब पहले से ही तैय्यार था-कम्पाउन्डर को कुछ आवश्यक बातें समझा कर निर्मल जाने को तैय्यार होगया। दोनों जने एक भाड़े की मोटर Taxi पर चढ़ कर हावड़ा स्टेशन पहुंचे।

(६)

दोपहर का समय है। कड़ाके की धूप पड़ रही है, मनुष्य क्या पशु पक्षी तक भी इस समय अपने घोंसले को छोड़ना नहीं चाहते। ऐसे समय हाथ में एक कैन्विस का बेग लिए सूट बूट से सुसज्जित निर्मल बाबू घर के दरबाजे पर आकर खड़े हुए।

निर्मल "मां" को पुकार कर चुपचाप अपराधी की तरह वहीं खड़े रहे, आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ी। घर के अन्दर आवाज़ सुन कर किसी ने कहा—"शान्ति देख तो ऐसे कड़ाके की धूप में कौन आया है?" शान्ति के आते न आते निर्मल घर के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भीतर घुस पड़ा और हाथ की बेग जमीन पर रख कर फिर पुकारा "मां" ! करुणामयी किसी काम में व्यस्त थी, निर्मल की आवाज़ उनके कानों में पड़ी, उन्होंने पुकारा—"शांति" शांति ने हंसते २ वहीं से चिल्ला कर कहा-- "मांजी भैया आगये।" "निर्मल आगये बेटा"? कहती हुई करुणामयी अपने हाथ का काम अधूरा छोड़ कर चली आई। मां के चरणों में प्रणाम करते समय निर्मल के मस्तक पर दो एक गरम २ आंसुओं की बूंदें पड़ीं। माता ने पुत्र को गले से लगा कर स्नेहपूर्वक कहा—"बेटा ! मुझे एक दम भूल गये। वहां अच्छी तरह थे न? किसी बात की तकलीफ तो नहीं हुई।"

निर्मल ने अपने शरीर की ओर देखा, उसे कुछ भी फर्क मालूम नहीं पड़ा, पर न मालूम क्यों वह नहीं कह सका कि अच्छी तरह है। मांने अपने अंचल से ललाट का पसीना पोंछते २ कहा "रेल में किसी बात की तकलीफ तो नहीं हुई?"

"नहीं! तुम लोग सब कोई अच्छी तरह हो न?"

"हम लोग और अच्छी तरह! जिस दिन तेरा लड़का इसी तरह विदेश चला जायगा उस दिन तू समझेगा कि हम लोगों की क्या हालत थी। अच्छा, बातें फिर होंगी पहले जाकर हाथ मुंह धोले" इतना कह कर करुणामयी स्नान के लिये पानी आदि का प्रबन्ध करने गई निर्मल-भी अपने कमरे में जा कर कपड़ा खोल कर धोती गमछा ले नहाने चला गया।

रात के करीब ९ बजे होंगे, अभी थोड़ी देर हुई निर्मल बाहर से आकर कपड़े खोल कर पुस्तक पढ़ रहा है। आधे घण्टे तक पुस्तक के पन्ने उलटने के बाद उसने विरक्त होकर पुस्तक रख दी।

चन्द्रमा आकाश के मध्य भागमें आगया, खिड़की द्वारा चन्द्रमा की स्वच्छ चांदनी निर्मल के मुख पर पड़ रही थी, कभी २ हवा का झोंका आकर उसके घुंघुरवाले बालों को उड़ाने की चेष्टा करता था। देखते २ सामने की टेबिल क्लाक में ११ बज गये, लेकिन अभी तक विमला का पता नहीं। अब और ज्यादा देर तक अकेले बैठे रहना निर्मल के लिये असम्भव होगया। अकेले बैठे रहने के कारण उसे फिर शोभा की याद ने दबाया। सोचते२ उसके मुख से एका-एक निकल पड़ा "वास्तव में शोभा को सूचना दिये बिना मेरा यहाँ चला आना अनुचित है।"

शोभा का आग्रहपूर्ण निमन्त्रण, कातर प्रार्थना, उस के प्रति अपनी उपेक्षा, बिना सूचना दिये चोर की तरह से चले आना आदि २ बातें उस के मन को चंचल करे देती थीं। शोभा के भोले भाले चेहरे की याद, उस के कोमल मुख से निकली हुई प्रार्थना उसे रह रह कर याद आती थी।

इतने में ही किसी के पाजेब की मधुर झंकार ने निर्मल का ध्यान भंग कर दिया उसने पीछे मुड़ कर देखा कि एक कोने में विमला खड़ी २ काँप रही है। आंखें चार हुईं—अपने मनोभावोंको दबाकर, अपनी समस्त शक्ति लगा कर, विमला ने पैरों पड़ कर नमस्कार किया, निर्मलने प्रेम पूर्वक खींचकर अपनी बगल में बैठा लिया, विमला ने निर्मल के इस व्यवहार से लज्जित होकर कहा—"हैं, हैं यह क्या करते हैं।" कह कर विमला दूर जाकर खड़ी होगई। निर्मल को उसके इस व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया, उसने कर्कश स्वर में कहा "मुझ से बातें करने में इतनी नफरत है तो बोलो मैं दूसरे घर में चला जाऊं। विमला निर्मल के इस व्यवहार से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और भी घबरा गई। किवाड़ बन्द करते २ उस ने कहा—"जरा धीरे बोलिये, मां अभी तक जाग रही हैं।"

जैसे आग में घी डालने से वह और भी धधक उठती है, ठीक यही हालत निर्मल की हुई। इस बार उसने और भी कड़े स्वर में कहा "धीरे बोलूं। क्या किसी का डर पड़ा है? छीः कैसे जंगली आदमीसे पाला पड़ा है क्या तुम किसी तरह अपनी इन सब आदतों को नहीं छोड़ सकती?"

विमला ने कुछ जवाब नहीं दिया। निर्मल ने फिर कहा "मैं चाहता हूं तुम भी उस की तरह हो जाओ।"

"मैं तुम्हारे लिये सब कुछ त्याग सकती हूँ, बोलो, तुम क्या चाहते हो?" इतना कह कर विमला निर्मल के मुंह की ओर देखने लगी। निर्मल ने कुछ जवाब नहीं दिया, चुपचाप खड़ा रहा। विमला ने फिर कहा "तुम्हें खुश रखने की चेष्टा करने में मैं कुछ त्रुटि न करूंगी, यदि न भी सकूं कुछ भूल हो तो तुम सुधार देना।"

निर्मल को इस बार भी निरुत्तर देख कर विमला ने फिर कहा "केवल मेरे ही नहीं, तुम घर भर के प्राण हो। तुम को जिस बात से सुख होगा, जिस से तुम आराम से रह सको, वह तो करना ही होगा, नहीं तो मां और बाबूजी कोई भी नहीं बच सकते।" निर्मल ने नरम होकर पूंछा "तुम लोगों के प्रति मैंने बहुत अन्याय किया है। क्यों विमल?"

विमला ने कहा—"न्याय अन्याय का निर्णय मैं किस प्रकार कर सकती हूं पर माँ को बहुत कष्ट होता था।"

निर्मलने आग्रहसे पूंछा "और तुम?" विमला ने कुछ उत्तर नहीं दिया। "तो तुम्हें तो कोई कष्ट नहीं था क्यों?" "कष्ट नहीं था? इससे ज्यादा स्त्री के लिये और क्या कष्ट हो सकता है।" उसने धीमे स्वर से कहा "तुम तो सुख में थे तुम्हारे सुख में ही सुख है।" आगे और कुछ कहने की शक्ति विमला में नहीं थी। उस की बड़ी २ आँखों से आंसुओं की की बूंदें गुलाब जैसे कपोलों पर मोती की तरह चमकने लगीं।

निर्मल ने फिर पूंछा "तो तुम्हें कोई दुःख नहीं था, क्यों विमला?"

हाय! इतनी देर का रोका हुआ श्रोत एक बारगी बांध कर वह निकला। विमला अपने को संभाल न सकी। अपराधी की तरह थर थर कांपने लगी। उसने निर्मल के पावों पर गिर कर रोते २ कहा "ऐसा मत कहो, मेरे देवता! ऐसा मत कहो, तुम्हें मेरे सिर की कसम है अब फिर ऐसी बात मत कहना।"

विमला के इसव्यवहार ने निर्मल को मुग्ध कर लिया। इस समय उसे शोभा का प्रेम, आदर, सब कुछ निस्सार जान पड़ा। वह सोचने लगा "क्या शोभा का प्रेम इस से बढ़ कर है? नहीं! इसमें वास्तविकता है उसमें नकल है, यह पवित्र है, वह कलुषित है, यह अधिकारी है और वह अनाधिकारी है, लेकिन न मालूम क्यों मन बार २ शोभा की ओर खिंचा जाता है। यह सब जानते हुए भी मैं उसे नहीं भूल सकता, भूलने की कोशिश करता हूँ लेकिन लाख चेष्टा करने पर भी मैं उसे नहीं भूल सकता। तब क्या शोभा का दरजा विमला से ऊंचा है? नहीं, नहीं, शोभा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।" अपने प्रश्न का कोई उत्तर न पा-कर विमला को और भी ज्यादा कष्ट हुआ वह फूट २ कर रोने लगी, उसका 'आंचल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आंसुओं से तर हो गया। निर्मल ने उसे जमीन से उठा कर छाती से लगा लिया, अपनी चद्दर से उसके आंसू पोछते २ कहा —"विमला मैं नहीं समझता था कि गांव की स्त्रियों में भी इस तरह प्रेमभाव होता है। तुमने मेरा भ्रम दूर कर दिया।"

नित्य के अभ्यास के कारण विमला पांच बजे भोर ही उठ बैठी। स्वामी की नींद न खुल जाय इस ख्याल से बहुत ही धीरे २ पांव उठाकर जाने लगी, किन्तु आखिर किवाड़ खोलते समय निर्मल की नींद खुल गई। विमला को इतनी जल्दी जाते देख, उसके विस्मयकी सीमा न रही।

"यह क्या विमला ! इतनी रात को कहां जाती हो ?"

"अब रात कहां है, भोर के पांच बज गये। माजी उठ गई होंगी, उनके स्नान के लिए पानी आदि ठीक करना है।"

" क्या घर में कोई दाई नहीं है ?"

" दाई क्यों नहीं है ! लेकिन दाई क्या २ करेगी ? घर में एक दो काम तो नहीं है। अगर मैं देर तक सोती रहूँगी तो माजी अपने मन में क्या समझेंगी।" इतना कह कर विमला जल्दी से कमरे के बाहर जाने लगी। निर्मल ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"क्या मेरे पास बैठने में कुछ बुराई है विमला ? थोड़ी देर बैठो तुम से कुछ बातें करनी है।"

"देखो बहुत देर हो गई अभी बातें करने का समय जरा भी नहीं है।"यह कह कर अपना हाथ छुड़ा कर वह शीघ्रता से कमरे के बाहर चली गई। निर्मल यह कहता हुआ "ओह ! इस जंगलीपन को मैं जरा भी पसन्द नहीं करता छी छी कितनी असभ्यता है हे ईश्वर ! मैं यहां कैसे रहूँगा।" अपने बिछौने पर सो गया। थोड़ी देर तक करवट बदलने के बाद उसे फिर नींद आगयी। खुली हुई खिड़कीसे धूप आकर उसके मुंह पर पड़ रही है तब भी वह अचल भाव से सोया पड़ा है। ऐसा मालूम पड़ता है कि वह कोई स्वप्न देख रहा है, क्योंकि उसके चेहरे पर चंचलता और कभी मुस्कराहट दिखाई पड़ती है। क्या सपना देख रहा है, यह तो मालूम नहीं, पर वह स्वप्न जरूर देख रहा है।

विमला किसी काम से कमरे में आई थी, निर्मल के मुंह पर धूप आती देख वह खिड़की बन्द करने लगी, आवाज सुनकर निर्मल जाग पड़ा। विमला को सामने खड़ी देख, आंखे मलते २ उसने कहा 'रोज सवेरे चा पीने का अभ्यास पड़ गया, है, स्टोव जला कर जरा चा तो बना देना।"

विमला—"जरा धीरे बोलो, बाहर सब सुनेंगे तो क्या कहेंगे।"

"सुन लेंगे तो क्या होगा ? स्टोव उतारो न।"

विमला ने अपनी आंखों से स्टोव देखा नहीं था, फिर वह उसे जलाना क्या जाने ? अतः वह कहीं की चीज कहीं रखने लगी। निर्मल ने विरक्ति से कहा "यह भी नहीं जानती ? इधर लाओ, मैं बतादूँ।"

"रहने दो इतनी जल्दी किस बात की है रात को बता देना।" निर्मल जल भुनकर राख हो गया। उसने क्रोध से कहा "रात को बताने से तो काम नहीं चलेगा, चा तो मैं अभी पीऊंगा।"

"अच्छी बात है, मैं 'रसोई घर से बना लाती हूं।"

' ओहो ! मुहा मुही करने में भी तुम कम नहीं हो। जू जू होकर दिन रात अकेले और कोई भले ही रह सके पर मैं नहीं रह सकता।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

"गुस्सा क्यों करते हो सिखादो न।" कह कर विमला स्टोव निर्मल के सामने रखकर खिड़की बन्द करने को उठी। निर्मल ने ताज्जुब से पूंछा, "कहां जाती हो?"

"कहीं नहीं—खिड़कियां बन्द कर रही हूँ।" कूद कर विमला ने कमरे की सब खिड़कियां बन्द करदीं। घरमें अन्धकार होगया। निर्मल ने रूष्ट होकर होकर कहा "रहने दो, कोई जरूरत नहीं, तुम जाओ, दिनकी वक्त भी बत्ती जलाकर मैं नहीं रह सकता।"

"अच्छा बगल वाली खिड़की खोल देती हूँ।" कहकर उसने पास वाली एक खिड़की खोलदी, घर में कुछ उजेला हो गया। निर्मल ने स्टोव ठीक करके कहा "सब ठीक कर दिया है। जल चढ़ादो।"

"अच्छा" कहकर विमला ने पतीली में पानी चढ़ा कर उसमें चा छोड़ दी। निर्मल अपने क्रोध को दबा नहीं सका, वह पतीली फैंक कर बाहर चला गया।

निरापराध पीड़ित-हृदया विमला वहीं खड़ी २ आंसुओं की वर्षा करने लगी, थोड़ी देर बाद अपने आंचल से आंखें पोंछ कर कमरे के बाहर आई। बगल के कमरे से करुणमयी ने पुकार कर कहा बहू! "निर्मल को जलपान दे आओ।"

विमला निरउत्तर।

करुणमयी ने फिर कहा—"खड़ी २ क्या सोचती हो, जाओ बिना जलपान किये उस को तकलीफ होगी।"

इस बार विमला ने अपराधी की भांति कांपते हुए स्वर में रोते २ कहा—"वह घर में नहीं हैं। चले गये।"

"चला गया, तुमने रोका क्यों नहीं? इस तरह उदासीन रहने से मैं उसे किसी तरह नहीं रख सकती वह फिर चला जायगा।"

विमला फिर निरउत्तर!

गांव में आये निर्मल को चार पांच दिन होगये। यह चार पांच दिन पहाड़ के समान होगये। उसका मन रह रह कर कलकत्ते जाने को होता था। यहां आकर उसने विमला के द्वारा शोभा को भूलने की चेष्टा की, लेकिन कृतकार्य नहीं हुआ। २-३ दिन तक किसी प्रकार अपने मनको बहलाये रहा, विमला के प्रेम में अपने को लीन करदेना चाहा, पर सब विफल हुआ। आखिर लाचार होकर आज वह कलकत्ते जाने की तैयारी करने लगा। वृद्ध सदानन्द ने जब करुणामयी के मुंह से उसके जाने का समाचार सुना तो उन्हें कुछ भी आश्चर्य्य नहीं हुआ, चेहरे पर जरा भी परिवर्तन के लक्षण दिखाई नहीं दिये, अचल स्थिर बैठे २ एक टक करुणा मयी की ओर देख कर मुस्कराने लगे। मानो इस सम्बन्ध की सब बातें वे पहले से जानते हों। उन्हे इस प्रकार चुप बैठे देख कर करुणामयी कुछ रूष्ट होगई। उसने कहा-"सोच क्या रहे हो, जिसतरह हो उसे कलकत्ते मत जाने दो।"

सदानन्द ने पत्नी के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि एक पुस्तक लेकर पढ़ने लगे। उन्हें निरुत्तर देख कर करुणामयी बड़बड़ाती हुई घरके बाहर चली गई।

निर्मल अपने कमरे में बैठा २ अपनी ट्रंक ठीक कर रहा था, इतने में ही उसे हुक्का पीने की सी आवाज सुनाई पड़ी, उसने सिर उठा कर देखा कि सामने से सदानन्द नारियल का हुक्का पीते २ आ रहे हैं।

पिता को देखकर निर्मल ने खड़े होकर प्रणाम किया। अशीर्वाद दे वृद्ध एक चौकी पर बैठ गये, थोड़ी देर बाद हुक्का पीते २ बोले "निर्मल! अब मैं बुड्ढा होगया हूं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब मुझसे यह गृहस्थी का काम नहीं होता तुम अपने पास सब हिसाब किताब रक्खो, मुझे अब ईश्वर भजन करने के लिये छोड़दो।"

"यह कैसे हो सकता है?" कहकर निर्मल ने सिर झुका लिया। सदानन्द ने धुआं फेंकते हुए कहा-"जिस तरह से हो जब होना ही होगा तब वादविवाद से लाभ?"

निर्मल ने विनीत भाव से कहा-"मैंने जो डिसपैन्सरी खोली है?" "उसे बन्द करदो" कहकर सदानन्द ने फिर हुक्का पीने में अपना ध्यान लगा दिया। निर्मल ने थोड़ी देर बाद फिर कहा "उसमें जो इतना रुपया खर्च कर दिया है। अब....." "....यह कहने से तो काम नहीं चलेगा। रुपया जाता है जाय, उसके लिये मैं तुम्हें घर नहीं छोड़ने दूंगी।" कहते हुए करुणामयी बीच में आकर खड़ी होगई।

निर्मल ने उत्तेजित होकर कहा "मैं यहां किसी तरह भी नहीं रह सकता, इतना लिख पढ़ कर देहात में अपनी सारी पढ़ाई को नष्ट करदूं, क्या आप लोगों की इच्छा है?"

सदानन्द ने मुसकराते हुए कहा "वर्तमान शिक्षा दीक्षा ने तुम लोगों का दिमाग बिगाड़ दिया है। ग्राम्य जीवन का आनन्द तुम लोग क्या जानो? तुम्हारा मन बनावटी चीजों पर लट्टू है, प्राकृति का वास्तविक सुख तुम अनुभव नहीं कर सकते। तुम्हारे बड़े बड़े शहरों की विद्या वहीं रहे तो अच्छा है, हम देहात में उसका नाम भी नहीं चाहते। तुम्हारी शिक्षा का उपदेश है पालसी (Policy) और झूंठ और हमारी यह देहाती विद्या है धर्म और सच्चाई की।"

निर्मल इसका कुछ जवाब देना ही चाहता था कि करुणामयी ने बीच ही में रोक कर कहा "मैं यह सब कुछ नहीं जानती अगर जाना ही है तो मुझे भी अपने साथ ले चल, मैं यहां नहीं रहूँगी।"

"अच्छी बात है चलो।"

सदानन्द ने हंसते हंसते कहा 'सावधान निर्मल! लोभ के फेर में मत पड़ो वर्ना मुंह की खानी पड़ेगी। परमात्मा ने जो कुछ दिया है, उसी को लेकर सन्तोष करो।"

इतना कहकर सदानन्द करुणामयी के साथ घरके बाहर चले गये। निर्मल अकेला रहगया, वह कुछ बात नहीं कर पाया कि इस जंजाल से किस तरह छुटकारा मिलेगा। बहुत देर तक सोचने के बाद ट्रंक को योंही खुली छोड़कर बाहर घूमने चला गया। रात को जब विमला से मुलाकात हुई तब उसने गम्भीर स्वर में कहा-"विमला! इस तरह जोर जबर्दस्ती करके पिंजरे के पक्षी की तरह रोक रखने से कोई लाभ नहीं। और इस तरह मैं रह भी नहीं सकता। स्वाधीनता में कितना आनन्द है यह तो तुम जानती नहीं लेकिन जिसने एक बार इसका स्वाद पा लिया है, वह उसे कभी नहीं छोड़ सकता।"

विमला ने हिम्मत करके कहा-"किसी को जबर्दस्ती रोक रखने की शक्ति मुझ में नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर भी मनुष्य अपनी शक्ति के बाहर काम नहीं कर सकता। फिर अपने मन माफिक शिक्षा देने का धैर्य्य होता तो भी एक बात थी। पर जिसमें इतनी भी धैर्य्य नहीं....."निर्मल ने बीच ही में बात काट कर कहा".....ठीक कहती हो विमल मुझ में धैर्य्य बिलकुल नहीं है। फिर जब रोक नहीं सकती तो आगे के लिये अमंगल का पथ क्यों तैयार कर रही हो?"

"मैं तुम्हारे लिये अमंगल का रास्ता तैय्यार करूंगी? हाय! क्या वह मैं कर सकती हूं? तुम चाहे मुझे अपने चरणों में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थान दो वा त्याग दो, चाहे तुम्हारी और कोई भी क्यों न हो, लेकिन तुम मेरे हो, मैं क्या प्राण रहते तुम्हारे अमंगल की कामना कर सकती हूँ ?"

विमला चुप होगई, थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा। आखिर निर्मल ने इस सन्नाटे को भंग किया। उसने एक लम्बी सांस लेकर पुकारा—"विमला ?"

"क्या कहते हो ?" कहकर विमला निर्मल की ओर आशा ही न दृष्टि से देखने लगी। निर्मल ने उसका हाथ पकड़ कर कातर स्वर में पूछा "इतनी दृढ़ता है विमल ?"

'है क्यों नही, भले घर की बहू हूं, मगर इतनी दृढ़ता न हो तो कोई घर में जगह नहीं देगा। बाहर घूम कर दूसरे के दरवाजे पर भिक्षा मांगने से गुजारा नहीं चल सकेगा।" निर्मल चौंक पड़ा, बिमला के मुंह से "भिक्षा" शब्द सुनकर उसको अपनी अवस्था का ध्यान हुआ। वह भिक्षक है। और उसी भिक्षा को चिरजीवन की संगिनी बनाने के लिये वह आज निरालम्ब भाव से घर छोड़ कर जारहा है। उसने वेदना पूर्ण स्वर में कहा—"विमल ! तभी तुम को इतना सुख है। हाय मैं बड़ा ही अभागा हूँ"

विमला रोने लगी। निर्मल तो अभागा नहीं था, एक दिन उसके समान भाग्यवान गांव में कितने पाये जाते थे ? विमला के साथ ब्याह करने के बाद ही निर्मल में यह परिवर्तन हुआ है। आशाहीन विमला ने रूंधे हुए गले से उत्तर दिया—"तुम तो अभागे नहीं थे, शनिग्रह के पीछे लगने के कारण तुम्हारी यह दशा हुई है।"

"वह ग्रह कौन सा है विमल ?"

"यह देखो" कह कर विमला निर्मल के पांवों पर गिर पड़ी।

"मैं ही दुष्ट ग्रह बनकर तुम्हारे गले पड़ी थी, मेरा समय पूरा होगया है। केवल दो दिन के लिये और अपेक्षाकरो, मैंने भैया को ले जाने के लिए चिट्ठी लिखी है। बस मैं यही चाहती हूँ। देखो, मैंने आजतक तुमसे कुछ नहीं मांगा है, आज मुझे निराश मत करो"

विमला फूट २ कर रोने लगी।

विमला को अपनी छाती से लगा कर उसके आँसू पोंछते २ निर्मल ने कहा "भूल, एकदम भूल समझ रही हो विमल ! तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। मैं यह जानता हूँ कि अपने ख्याल से आप तंग हूं। और फ़िर इस घर में तुम्हें छोड़कर भी मैं नहीं रह सकता। मैं पथ भ्रष्ट पागल हूं मुझे अपने हृदय से लगा लो....." कहते २ उसने फिर विमला को गले से लगा लिया। इतने में ही घड़ी में ११ बज गये। निर्मल ने फिर कहा—"मैं इधर उधर दोनों तरफ़ से गया। दोष किया है बोल के दूसरे की तरह त्याग मत करो, उससे मैं और भी पागल होजाऊं गा। जिस से मैं सुखी हो सकूं, ठीक हो सकूं उसीके लिए चेष्टा करो, क्यों कर सकोगी ?"

"सकूंगी क्यों नहीं ? सकूंगी। जिस देश की स्वजाति पति के लिये प्राण दे सकती है, स्वामी की आज्ञा से हंसते २ जलती हुई चिता में कूद पड़ती है, उस देश में जन्म लेकर अगर मैं इतना भी नहीं कर सकूं तो उसके नाम में कलंक लगेगा।" कहते २ वह निर्मल की छाती पर सिर रख कर उसके मुंह को एक टक देखने लगी। थोड़ी देर के बाद निर्मल के गले में अपनी बांहें डालकर कहा—"ऐसा सुख सौभाग्य कोई स्वेच्छा से त्याग सकता है। लज्जा ! लज्जा क्या है ? ऐसे सुख के लिये तुम्हें प्रसन्न करने के लिए उसको बलि देने में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई दुःख नहीं।" धीरे २ निर्मल सोगया, विमला भी उसकी छाती पर सिर रख कर उसके मुंह को देखने लगी। अजीब दृश्य था, दोनों जने चुप थे दोनों एक दूसरे को देखते थे। निर्मल ने पुकारा "विमल ?"

अस्पष्ट स्वर से विमला बोली "क्या ?"

"क्यों सकोगी न ?"

"हाँ सकूंगी।"

अपूर्ण

वैज्ञानिक संसार

(१) नैसर्गिक जीवन के लाभ

यह देखने के लिए कि सूर्य के प्रकाश में तपेदिक अथवा राजयक्ष्मा रोग को दूर करने की कितनी शक्ति है लण्डन की प्रान्तीय कमेटी में गत गरमियों में एक तजरुबा किया जिसमें कि ३५ लड़के ऐसे स्कूल में पढ़ने के लिये जाते रहे जहां कि स्कूल कमरों के भीतर न लगकर बाहर खुली हवामें ही लगता था। उनके शरीर पर बहुत थोड़े और पतले कपड़े होते थे। इस का अभिप्राय यह था कि सूर्य की किरणें उनके शरीर को भली प्रकार छू सकें और उसको गेहुंआं रंग प्रदान कर सकें। कुछ ही सप्ताह पीछे देखा गया कि लड़के अधिक तेज अधिक चालाक, अधिक प्रसन्न दिखलाई देने लगे।

यह एक छोटा सा तजरुबा है परन्तु आधुनिक सभ्यता के कृत्रिम जीवन की बड़ी कड़ी समालोचना है। इस सभ्यता का यह एक विशेष गुण है कि पहिले उल्टे सीधे मार्ग का अवलम्बन कर रोग उत्पन्न किये जावें और फिर उन को दूर करने के उपाय ढूंढे जाव। इसी में मानव बुद्धि की पराकाष्ठा की उन्नति मानी जाती है। नैसर्गिक जीवन व्यतीत करने वाले; थोड़े और ढीले ढाले वस्त्र पहनने वाले; सादा पुष्टिकारक भोजन करने वाले, व्यक्तियों को जंगली अथवा अर्धसभ्य की उपाधि दी जाती है। परन्तु प्रकृति देवी अपने नियमों की अवहेलना करने वालों से बड़ा कड़ा कर वसूल करती है। क्या हमारे भारतीय भाई बहिन इस ओर ध्यान देंगे ?

(२) इटली में दलदलों का सुधार।

संसार के कितने ही स्थानों में बड़े २ दलदल हैं। जिनमें यदि कोई मनुष्य अथवा पशु भूल से घुसे तो उसका जीवित निकलना असम्भव हो जाता है। भूमि का कितना बड़ा क्षेत्रफल बेकार पड़ा रहता है। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह दलदल मच्छर, मक्खी इत्यादि को पैदा करने में बड़ी सहायता देते हैं जिससे कि आस पास के स्थान सदा ही भयंकर मलेरिया ज्वर के प्रकोप से पीड़ित रहते हैं। अब इस ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया है। बड़ी २ नालियां खोद कर इन दलदलों में से पानी निकाल दिया जाता है, या यों कहिये कि निचोड़ लिया जाता है और फिर जो गढ़े इत्यादि रह जाते हैं उन्हें भर दिया जाता है। ऐसा करने से यह भूमि बड़ी उपजाऊ बन जाती है, इटली की राजधानी रोम के दक्षिण की ओर की दलदलों में से अब ७० मन प्रति एकड़ के हिसाब चावल पैदा होते हैं। इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुधरी हुई भूमि पर गेहूं, जौ चुकन्दर, टमाटर, अलफा अलफा घास तथा सन बोया जाता है। टमाटर तो इतने होते हैं कि ५५०० मन प्रतिदिवस का अचार मुरब्बा डाला जाता है। ६००० एकड़ से ऊपर भूमि को जहां पहिले दलदल थे-सुधार लिया गया है।

(३ बिजली द्वारा सोने के वर्क बनाना।

सोने चांदी के वर्कों का यूनानी हकीम बड़ा प्रयोग करते हैं। हमारे पाठक जानते हैं कि यह वर्क चांदी और सोने के पत्तरों को चमड़े के टुकडों के भीतर रख कर और हथौड़े से घण्टों कूट कर बनाये जाते हैं। सोने का वर्क चांदी के वर्क से कहीं पतला होता है। अन्य सब धातुओं की अपेक्षा सोने में यह गुण है कि इस का वर्क और इसकी तार सब से अधिक पतली बनायी जा सक्ती है। आज तक सारे संसार में सोने के वर्क बनाने का एक ही तरीका था। परन्तु अब इनके बिजली द्वारा बनाने के एक नये तरीके का आविष्कार किया गया है। हमारे बहुत से पाठक जानते होंगे कि पीतल, तांबा, निकल इत्यादि पर बिजली द्वारा सोने अथवा चांदी का गिल्ट चढ़ाया जाता है। इसे ही सोने का पानी चढाना कहते हैं। एक बड़े बर्तन में सोने के लवण का घोल बनाकर उसमें जिस चीज़ पर मुलम्मा करना हो वह लटका दी जाती है और फिर बिजली की बैटरी द्वारा इस घोल में से विद्युत प्रवाहित की जाती है। इस का फल यह होता है कि घोल में से सोना-विशुद्ध सोना निकल कर उस वस्तु पर बैठन लगता है। जितनी अधिक देर उस वस्तु को घोल में लटका कर विद्युत चलायी जायगी उतनी ही मोटी सोने की तह उस चीज़ पर चढ़ जायगी। इसी नियम को काम में लाकर महाशय लटन और [illegible] ने सोने के वर्क बनाने की विधि निकाली है। दो घूमने वाले पहियों पर चांदी का बड़ा लम्बा फ़ीता चढ़ा दिया जाता है। यह फीता सोने के घोल वाले बर्तन में डूबा रहता है। इस चांदी के फ़ीते के एक ओर ऐसा मसाला लगा दिया जाता है कि इस ओर सोना न चढ़ सके। अब बैटरी से बिजली चलाई जाती है और जितना मोटा सोने का वर्क बनाना हो उसके अनुसार तेज़ी से फीते वाले पहिये घुमाये जाते हैं। इस से इस फीते के ऊपर एक ओर सोना चढ़ जाता है। अब फिर इस सोना चढे चांदी के फीते को घूमने वाले पहियों द्वारा, इसके नीचे सैल्योलोज़ का एक और फीता लगा कर शोरे के तेज़ाब में से निकाला जाता है। यह इस तेज़ाब में इस प्रकार डूबता है कि सैल्योलोज का फीता तेज़ाब के भीतर रहे और उसके ऊपर का सोने चांदी का फीता तेजाब के ऊपर इस प्रकार तैरता रहे कि सोना ऊपर की ओर हो और चांदी नीचे की ओर। तेज़ाब चांदी को खा लेता है और अब सोने का फीते जैसा वर्क सैल्योलोज़ के फीते पर बैठ जाता है। अब पहियों को घुमा कर इस सोने और सैल्यलोज के फीते का पानी में से निकाला जाता है जिससे तेज़ाब भी धुल जाता है और सोने का वर्क पानी पर तैरने लगता है, इसके पश्चात् इसे अलकोहल (मदिरा सार) में धोकर कोयले के पहियों के सहारे लपेट लिया जाता है और गरम हवा से उड़ाकर कागज पर रख दिया जाता है।

४—रबड़ की सड़कें

हम ज्योति के किसी पिछले अंक में रबड़ के नवीन उपयोगों के विषय में कुछ लिख चुके हैं। उन में से एक सड़कों पर [illegible] है। जो बात पहिले कल्पना में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ही थी वह अब वास्तविक रूप से कार्य में परिणत हो गयी है। अमरीका के सिन सिनाटी नगर के उत्तर भाग की ओर एक बड़ा भारी खुलने और बन्द होने वाला पुल है। इस पुल पर से समस्त नगर से अधिक गाड़ियां और मोटरें निकलती हैं। अनुमान किया गया है कि प्रति घण्टा एक सहस्र गाड़ी आती और एक सहस्र ही जाती हैं। इस पुल पर रबड़ का फर्श लगाया गया है। रबड़ की "ईंटें" १२ इंच लम्बी, ६ इन्च चौड़ी और १ इन्च मोटी हैं। इनको सड़क के साथ जोड़ना सुगम काम नहीं। रबड़ प्रायः ऊपर को उठ आता है। इन ईंटों का एक सिरा दोहरा बनाया जाता है। इस की दोनों परत में दूसरी ईंट का सिरा डाल कर ऊपर से कीलों से ठोक दिया जाता है। जहां पर नीचे लकड़ी हो वहां तो यह विधि काम में आ सकती है, परन्तु पत्थर अथवा सीमैन्ट की सड़क पर इस प्रकार रबड़ को ठोका नहीं जा सका। ऐसी सड़कोंपर पहिले रबड़ मिला हुआ सीमैन्ट बिछा दिया जाता है और फिर ऊपर से रबड़ की ईंटें बिठा दी जाती हैं। घोड़े के पांव की तेज से तेज नाली अथवा भारी से भारी लोहे के पहिये इस फर्श पर ज़रा सी लकीर का चिन्ह नहीं बना सकते।

यह फर्श लग भी बड़ी जल्दी जाता है। आठ आदमी एक घंटा काम करके ६० वर्ग फुट फर्श लगा सके हैं।

घोड़ों और गाड़ियों के इस फर्श पर चलने से जो बात सब से पहिले ध्यान में आती है वह किसी प्रकार के शब्द का न होना है। यह बात जतलाती है कि हस्पतालों अथवा बड़े २ दफ्तरों और अन्य विशेष २ इमारतों के पास वाली सड़कों पर रबड़ का लगाया जाना कितना लाभ दायक हो सका है।

५—वृद्ध का युवा बनना

दुर्बल, रोगी और वृद्ध कौन है जो पुनः यौवन का आनन्द नहीं लेना चाहता? परन्तु क्या यह सम्भव है? कितने ही वैद्य और डाक्टर कह उठेंगे कि यदि उनका इलाज किया जाय तो शरीर में पुनः बल और फुर्ती का संचार हो सका है। परन्तु बहुधा देखा गया है कि यह इलाज चिर स्थायी नहीं हो सका और फिर एक ७० वर्ष के बूढ़े के लिये, जिसके हाथ पैर ढीले पड़ गये हों, शारीरिक बल लुप्तप्राय हो गया हो और मानसिक शक्तियां क्षीण हो गई हों, ऐसी अवस्था का लाना जिसमें कि वह पुनः यौवन सुख का आनन्द ले सकें, अपने शरीर और दिमाग से बल फुर्ती और उत्साह के काम कर सकें, साधारण वैद्य और डाक्टर की शक्ति से बाहर है। परन्तु पैरिस के प्रसिद्ध डाक्टर वारोनाफ का दावा है कि वह यह सब कुछ कर सकता है।

यह किस प्रकार सम्भव है। आज हम यही रोचक कथा अपने पाठकों को सुनाते हैं। मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के शरीर में कुछ गिल्टियां होती हैं। इन में से कितनी का तो नाड़ियों द्वारा शरीर के अन्य भागों से सम्बन्ध होता है और कितनी ही ऐसी होती हैं जिन में कोई भी नस नाड़ी का मेल दिखलाई नहीं देता। यह नाड़ी विहीन गिल्टियां शारीरिक क्रियाओं में एक बड़ा आवश्यक स्थान रखती हैं, यह अबडाक्टरों को शनैः २ पता लग रहा है। इन गिल्टियों में रिस २ कर कई प्रकार के रस निकलते रहते हैं जो कि मनुष्य प्राणियोंके शरीरमें एकत्र हुये विषयुक्त द्रव्य का नाश करते रहते हैं और अन्य प्रकार से भी शारीरिक क्रियाओं के सहायक होते हैं। रोग अथवा वृद्धावस्था के कारण इन गिल्टियों की क्रिया बन्द हो जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा बहुत कम हो जाती है। यही एक कारण है कि प्राणियों की शक्तियां क्षीण हो जाती हैं। अब तक पूर्वी अथवा पश्चिमी वैद्यक-शास्त्र के ज्ञानियों को यह पता नहीं लगा कि किस प्रकार इस क्रिया को पुनः उत्तेजित किया जा सकता है। औषधि द्वारा यह काम नहीं हो सकता। तब फिर? यदि किसी प्रकार यह गिल्टियां बदली जा सकें और इनके स्थान में नवीन गिल्टियां लग सकें। हमारे पाठकों के मन में यह स्वभाविक प्रश्न उठ सकता है कि यह नवीन गिल्टियां कहां से आवेंगी? डाक्टर वारोनाफ उत्तर देते हैं कि बन्दरों से। किंचित् हमारे पाठक इस उत्तर से चौंक उठें। परन्तु इस में चौंकने की कोई बात नहीं। डाक्टर महोदय जी कहते हैं उन्होंने वह सिद्ध कर दिखाया है। आज तीन वर्ष से अधिक हो गये कि गिल्टी जोड़नेके समाचारों ने संसार में हलचल पैदा करदी थी। इस समय में नवजीवन प्रदान सरजरी का निर्माता बराबर अपने काम में लगा रहा और उसे इस में कहां तक सफलता हुई यह उसने अभी २ एक प्रेस के रिपोर्टर से बात चीत करते समय बतलाया है।

उन्होंने कहा कि मेरी चिकित्सा के के सम्बन्ध में कुछ अशुद्ध बातें फैल गयी हैं जिनका मैं अन्त करना चाहता हूं और मैं उत्सुक हूं कि बन्दर की गिल्टियों को मनुष्य के शरीर में पैवन्द लगाने में मुझे जो सफलता हुई है उसको संसार को बतला सकूं।

यह प्रश्न करने पर कि किस अभिप्राय से पहिले पहल उसने यह विचित्र प्रकार का आप्रेशन आरम्भ किया था। यह उत्तर दिया कि क्षीण स्वास्थ का पुनः सुधार ही एक मात्र मेरा ध्येय था। मेरी इच्छा थी कि शक्ति और स्फूर्ती को पुनः ला सकूं अपने रोगी की चक्षु की कमज़ोरी, पट्ठों की दुर्बलता; स्मरण—शक्ति की कमी और उसकी अन्य सब ही मानसिक निर्बलताओं को दूर कर सकूं।

मुझे अपने कार्य में जो सफलता हुई है उसके भरोसे मैं कह सकता हूँ कि मुझे अपने विचारों की सत्यता और अपने ज़र्राही के तरीकों की यथार्थता में किंचित मात्र भी सन्देह नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि मुझे कभी भी असफलता नहीं हुई, परन्तु इस असफलता का कारण मुझे सदा पता लगता रहा है। मेरा दावा है--और इसको कोई भी झूठा सिद्ध नहीं कर सकता कि मेरे आप्रेशन से पुनः यौवन का संचार हो सका है। केवल एक ही शर्त है कि रोगी के अंगों में रोग के कारण कोई परिवर्तन न होगया हो।"

डाक्टर वारोनाफ ने बतलाया कि उसके पास इतने रोगी आते हैं कि वह सब की प्रार्थनाओं को पूरा करने में असमर्थ है। एक वर्ष हुआ उसने लन्डन में अंग्रेज़ी सरजनों की सभा में अपने तरीकों का परिचय दिया था और उस समय से लेकर आजतक उसने कितने ही अंग्रेजों पर सफलता पूर्वक आप्रेशन किया है। और अब उसकी विधि द्वारा आप्रेशन करने वाले कितने ही उसके अनुयायी हो गये हैं।

यह पूछने पर कि कौन कौन लोग इसके पास इलाज के लिये आते हैं यह उत्तर मिला कि, लेखक नाटककार, कवि, सम्पादक, शिक्षक इत्यादि वह मनुष्य जिन की आजीविका का भार उनके मस्तककी शुद्ध क्रियाओं पर निर्भर है। उन्होंने बतलाया कि इन में से एक की अवस्था इतनी क्षीण हो गई थी कि वह एक पंक्ति भी लिखने में असमर्थ था। डाक्टर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वारोनाफ ने कुछ सन्देह से ही उसका आप्रेशन किया। इसके ६ मास ही पीछे इस मृतप्राय व्यक्ति में इतनी शक्ति आ-गयी कि उसने एक नाटक लिखा जिससे कि उसको आश्चर्यजनक आमदनी हुई।

उन्होंने एक और विचित्र व्यक्ति का वर्णन किया। वह एक स्कूल मास्टर था और ६९ वर्ष की आयु में वह शिक्षक धर्म पालने में सर्वथा असमर्थ हो गया। यदि वह एक वर्ष और—७० वर्ष की आयु तक—अपना काम करले तो उसे पैन्सन मिल सकती थी अन्यथा नहीं। दो वर्ष हुये कि उसने आप्रे-शन करवाया। इससे न केवल वह अपने कार्य को पैन्सन के समय तक ही करने में समर्थ हो गया, वरन् उसमें इतनी मानसिक शक्ति आ गयी कि वह ७० वर्ष की आयु में पैन्शन लेने के पश्चात एक सफल वकील का काम करने लगा।

डाक्टर वारोनाफ के आप्रेशन के लिये सब गिल्टियां बन्दरों से आती हैं अतः पशु प्रेमीजन इन के भाग्य के लिये बड़े उत्सुक हैं। उन से पूंछा गया कि क्या गिल्टी निकालने के पश्चात् बन्दर झटपट मर जाते हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि कदापि नहीं। यह ठीक है कि इसके पश्चात् वह शीघ्र काबू में आजाते हैं और उनकी चाला-की और स्फुर्ती भी कुछ कम हो जाती है "मेरे पास इस प्रकार के बहुत से बन्दर हैं परन्तु सब का स्वास्थ्य खूब बढ़िया है।"

कुसुमोद्यान

वास्तविक निवार्य विष

लेखक—श्री बर्नर्ड हाऊटन

"प्रजा असन्तुष्ट है अतः उसके ये कोई युद्ध छेड़ देना चाहिये" यह बचन रूसकी महारानी कैथेराथिन ने कहे थे। अंग्रेजी शासकवर्ग की भी यही नीति है। जब असन्तोष गहरा और तीव्र हो जाता है, जब जन साधारण शासन के जूये के नीचे तंग आजायें और शान्त रहें, तब इस शासक-वर्ग की प्रतिनिधि सरकार एक कमेटी को नियुक्त कर देती है। यह अशान्ति को दूर करने के लिये कोई कार्य करना नहीं चाहती, यदि सम्भव हो तो यह अवस्था को वैसी ही छोड़ देना चाहती है जैसी कि वह है। जो सुख भोग रहे हैं उनके लिये संसार आनन्दमय है। परन्तु—और नहीं तो समय टालने के ही लिये—कुछ करना ही पड़ेगा। कमेटी की नियुक्ति से न केवल समय ही टल जाता है वरन् इससे सरकार को प्रजा के क्रोध की सीमा और उसके कारणों का भी ठीक २ ज्ञान हो जाता है और इसके निवारण की विधि—जिसे सर-कार सौजन्यता से 'उपाय' का नाम देती है परन्तु जिसे साधारण भाषा में इस क्रोध के शान्त करने के लिये न्यून से न्यून शक्ति-सुख-त्याग कहना ही उपयुक्त होगा—का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी निश्चय कर सकती है। प्रजा भी इस कमेटी की नियुक्ति का स्वागत करती है। क्योंकि यह प्रजा को ऐसा स्थान दे देती है जहां जाकर वह अपने कष्टों का बखान कर सके, अपने पक्ष के समर्थन में घटनाओं और दलीलों को पेश कर सकें और बतला सकें कि वह क्या चाहती हैं। इस प्रकार कमेटी के सिर पर शासक और शासित दोनों का आशीर्वाद रहता है। यह दो विपक्षी सेनाओं के बीच संधि प्रसंग की सूचक है।

सब से अधिक पक्षपातयुक्त संस्था

परन्तु वह सज्जन अपने को धोखा देते हैं जिनका यह विश्वास है कि सरकार एक निष्पक्ष न्यायाधीश की भांति उस शहादत पर कार्य्य करेगी जो कि गवाहों ने कमेटी के सामने दी है। कोई भी सरकार निष्पक्ष नहीं होती, वरन इस के विपरीत यह संसार में सब से अधिक पक्षपात में फंसी हुई संस्था होती है। चाहे यह कुछ भी कहे परन्तु यह सदा उनके हित का ही कार्य करती है जिनकी यह प्रतिनिधि होती है अथवा शासक वर्ग गवाहों की गवाही और कमेटी की रिपोर्ट को पढ़ने के पश्चात या तो यह आलमारियों में बन्द कर देती है जैसा कि अंगरेजी सरकार ने कोयले की कानों के विषय में सैंकी कमीशन की रिपोर्ट को किया था, या बड़े आडम्बर युक्त शब्दों में एक तुच्छ से सुधार की घोषणा करती है जैसा कि लार्ड कर्जन ने शिक्षा—सम्बन्धी-भारतीय कमेटी की रिपोर्ट पर किया था।

बहुत से मनुष्यों को जो कमेटियों में विश्वास होता है उसका बड़ा भारी कारण यह है कि उनको शासकवर्ग में सरल शिशु तुल्य विश्वास होता है वह भूल जाते हैं कि सरकार ने कितनी बार प्रजा को धोखा दिया है, वह लच्छेदार परन्तु सारहीन शब्दों को 'खुलेमुंह से सुनते हैं वह सरकार के प्रत्येक चालाकी से भरे हुए शब्द से किंकर्तव्यविमूढ की भांति हो जाते हैं। उनका "विश्वास इतना प्रबल है कि वह दस सहस्र धोखे खाजों से धोखा खाकर भी एक बालभर नहीं हिलता।"

झूंठ का व्यापार।

मनुष्य स्वभाव की इस विश्वासशीलता पर प्रत्येक सरकार अपना वाणज व्यापार करती है। उदाहरण के लिये प्रत्येक सरकारने गत महा युद्ध के समय झूंठ बोला और खुले खजाने झूठ बोला। अंगरेज़ा सरकार इस में किसी ओर से कम नहीं रही। उस समय जब कि जोश बढ़ा हुआ था और भय की आशंका थी प्रजा का इन मिथ्या वाक्यों पर विश्वास कर लेना कुछ समझ में आ जाता है परन्तु आज कल शांति के समय में नहीं। परन्तु अब भी लाखों मनुष्य ऐसी बातों को—जो भली प्रकार मिथ्या सिद्ध हो चुकी हैं—सत्य मानते हैं जैसा कि जर्मनी ने ही लड़ाई की साज़िस की; इंग्लैण्ड युद्ध में इसी लिये सम्मलित हुआ कि बेलज़ियम पर धावा किया गया था; अथवा यह अन्ध विश्वास कितना आश्चर्यजनक है—कि मिनिस्टर ने केवल प्रजा तन्त्र की रक्षा के ही लिये युद्ध किया। मिस्टर ऐस्किथ और लायडजार्ज से खे मनुष्य-जिनके विषय में यह पता है कि उन्होंने महत्व के समय में जान बूझ कर झूंठ बोला—पब्लिक व्याख्यानों में लानतें फटकार बतलाये जाने के स्थान में आज भी अंगरेजी प्रजा की बड़ी भारी अंश के विश्वासपात्र और प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति हैं अतः इस में कोई आश्चर्य नहीं यदि कमेटी के मामले में सरकार जनता में अपना पुराने ढर्रे के सर्वथा विपरीत-यह विश्वास बिठला सके कि इस बार वह न्याय से पक्षपात रहित हो काम करेगी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रश्न हो सकता है कि यदि गवाहियों के बल पर नहीं तो किस प्रकार सरकार किसी विषय का—जिसका उसकी अपनी शक्ति से सम्बन्ध हो--जैसा कि आजकल भारत में है, निर्णय करती है ? हमें इतिहास से इसका उत्तर मिलता है। अपने विपक्षियों की शक्ति को जांच कर ही अपने चलन को ढालती है और निश्चय करती है कि यदि दबना ही पड़े तो कहां तक दबना चाहिये। यदि जनता एकमत और प्रबल है तो सुधार उदार दृष्टि से दिये जाते हैं, यहां तक कि आवश्यक्ता पड़ने पर शासक वृन्द अपना सिंहासन तक छोड़ने को तय्यार हो जाते हैं। यदि इसके विपरीत प्रजा अथवा उसके नेता सोचविचार में पड़ जायें और कांपने लगें तो उन्हें अपने स्वामी की थाली के बचे खुचे जूठे टुकड़े ही मिलेंगे। यह न्याय का प्रश्न नहीं है। यह तो समय को टालने का प्रश्न है। यद्यपि सरकार न्यायधीश के वस्त्र पहन कर न्याय की परिभाषा में बात चीत करती है परन्तु इसके कृत्य उस फौजी जनरल के समान होते हैं जिन के सन्मुख शत्रु खड़ा हो। पक्ष और विपक्ष पर विचार करने के बहाने यह बड़ी सावधानी से जनता की शक्ति को नापती रहती है। यह उन की संख्या और उनकी कार्यप्रणाली को जांचती है, उसके नेताओं के स्वभाव को देखती है, आपस में उनमें एकता है अथवा मतभेद। उनकी दलेबन्दी और साधन कैसे हैं ? सब से अधिक मत वाली कौनसी पार्टी है ? अथवा उन सब बातों की जांच करती है जो कि एक सुयोग्य सेनापति अपने शत्रु की सेना में देखता है। क्या हिन्दू मुसलमानों में आपस में दंगे होते हैं ? जातीय महासभा में एकता है अथवा फूट ? राजनैतिक भारत किस के पीछे चलता है महात्मा गांधी के अथवा स्वराज्य दल के ? उन की कार्यशैली क्या है ? क्या जनता के विचार प्रतिदिन सरकार के विरुद्ध बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार के प्रश्न शिमले के शासक देवता अपने से पूंछते हैं और इस पर उस समय तक विचार करते रहते हैं जब तक कमेटी गवाहियों के सुनने और अपनी न्यूनाधिक एकमत रिपोर्ट लिखने में लगाती है। जब प्रजा कमेटी के सन्मुख पेश की गयी घटनाओं और गवाहियों की प्रशंसा करती है सरकार प्रजा की शक्ति का अनुमान करती रहती है और सोचती रहती है कि यदि उसे पीछे हटना ही पड़ा तो कहां तक हटना चाहिये। वास्तविक निर्णायक बात प्रजा की शक्ति है। यही इस समस्त मामले की जड़ है।

२ भारत के लिये चीन का प्रेम

हमारे कवि सम्राट ठाकुर रवीन्द्रनाथजी के चीन देश में पधारने पर वहां के एक प्रसिद्ध तत्ववेत्ता दार्शनिक डा० टियांग ची. चाऊ ने उन्हें एक बड़ा उत्तम मानपत्र प्रदान करते समय कहा कि:—

"हमारे चीनी अनुभव संसार में भारतीय विचारों का इतना घनिष्ट मेल हो गया है कि हम उसे अलग नहीं कर सकते। उसी के सहारे हम लोगों ने अपनी शक्तियों को उन्नत किया है और शुभ फलों की प्राप्ति की है। दुर्भाग्य से हम चीनी और भारतीय लग भग एक सहस्र वर्ष से जुदा किये हुये हैं। और दोनों ने पृथक् २ अपनी उन्नति का मार्ग अनुसरण किया है। इन जुदाई के दिनों में हम पर आपत्तियां भी आई हैं और हमने क्या २ दुःख नहीं सहे ? हमें भभकाया गया, चिढ़ाया गया, पैरों के तले कुचला गया और भी सभी तरह के संकट पहुंचाये गये यहां तक कि न केवल हम लोग नफ़रत की निगाह से देखे गये, वरन् हम ने भी अपने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप अपना आत्माभिमान खो दिया। लेकिन हमें मनुष्य के पुरुषार्थ के अमृत होने में विश्वास है और जो बीज हमने बोया है वह समय पकने पर फलीभूत होगा ही।..... भारतीय और चीनी दोनों सभ्यतायें प्राचीन गाथाओं से भरी होते २ बुढागई हैं तथापि मैं अनुभव करता हूं कि उनमें हमेशः रहने वाले युवापन का सा बल है जो कि आज भारत में टैगोर और गांधी दो व्यक्तियों के रूप में प्रगट हुआ है।"

आगे चल कर वही महाशय कहते हैं:—

"एक हज़ार वर्ष की जुदाई के बाद—जिस समय भी हम दोनों एक दूसरे के लिये प्रेम के भाव रहते रहे हैं:—यह हमारा बड़ा भाई भारत पुनः हमारे पास भ्रातृभाव से उत्तेजित होकर आया है। हम दोनों के मुखों पर दुःखों की निशानियां हैं। हमारे बाल बुढ़ापे से पक गये हैं, हम अचम्भे में आकर देख रहे हैं। मानों अभी सोते हुए उठे हों! परन्तु जब देखते हैं तो हमारे छोटेपन की क्या बातें और क्या यादगारियां हमारे मनों में उठती हैं? हा! उन दिनों की याद आती है जब कि हम दोनों एक दूसरे के सुख दुख के संगी हुआ करते थे। अब जो हमें पुनः परस्पर आलिंगन करने का मौका हाथ लग गया है तो अब हम एक दूसरे से जुदा नहीं होने देंगे।"

(यंगइंडिया)

रे सूत का मैच

प्रधान का पारितोषक

महात्मा गांधी 'यंगइंडिया' में लिखते हैं:—

"आंध्रदेश, बंगाल और गुजरात में इस पारितोषिक को ले लेने की प्रबल स्पर्धा हो रही है। केवल एक महीना ही इनाम जीतने के लिये रह गया है। हमें आशा है कि एक न एक प्रान्त इनाम ले ही जायगा। मैं अपनी इस आशा को छिपाना नहीं चाहता कि गुजरात बहुत दृढ़ है अतः जल्दी हारने वाली नहीं है। लेकिन हर एक को शर्तें तो समझ लेनी चाहियें। जो सूत अवधि बीतने पर आयेगा वह इस स्पर्धा में नहीं शामिल किया जायगा और न ही कोई पैकेट जिसमें दो हजार गज से कम एकसाँ कते हुए सूत का गट्ठर होगा। मौलाना मुहम्मदअली को बहुत भरोसा है कि गुजरात हार जायगा और आंध्र देश या बंगाल इनाम ले जायगा। उन को गुजरातसे द्वेष नहीं है परन्तु वह चाहते हैं कि उनका इनाम कोई ले। और उनका विचार है कि गुजरातको इस स्पर्धामें हारनेसे हानि नहीं है। गुजरात की हार भी जीत होगी यदि इस स्पर्धा का नतीजा यह हो कि कातने वालों की खूब संख्या बढ़े। वह यह नहीं चाहते कि इत्तफाक से किसी प्रान्त की जीत हो जावे। वरन विजय मेहनत और इमानदारी से प्राप्त करनी चाहिये।

हमारी अंजुषा

हमें इस त्रैमासिक पत्र का तीसरा खण्ड समालोचना के लिये प्राप्त हुआ है। पहिले दो खण्ड कोई ३॥ वर्ष के लगभग हुआ प्रकाशित हुए थे। हमने वह नहीं देखे।

गीतानुशीलन—सम्पादक श्री गणेश चन्द्र प्रामाणिक प्रकाशक राष्ट्रीय हिंदी मन्दिर जबलपुर। वार्षिक मूल्य २) एक प्रति के ॥=)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कई कारणों से इस बीच में यह काम बन्द करना पड़ा। अब दूसरे खण्ड के आगे से यह पुनः आरम्भ होता है। इस खण्ड में ७,८ और ९ (अधूरा) यह तीन परिच्छेद हैं। पहिले ५ परिच्छेदों में क्या था यह हम नहीं जानते। इन परिच्छेदों में भारतीय आर्य जाति में समाज—सेवा के ज्ञान का लोप; समाज-सेवा ज्ञान के लोप से केवल पारलौकिक मंगल ही धर्म का पूर्ण रूप माना गया है, तथा पांच हज़ार वर्ष पूर्व के भारतीय आर्यों के धर्म विचार, इन तीन विषयों पर विवेचनात्मक दृष्टिसे विचार किया गया है। विचार करते समय तत्कालीन इतिहास, शास्त्रों और वेदों का आश्रय लिया गया है। यद्यपि हम लेखक के सब विचारों से सहमत नहीं तो भी यह कहे बिना नहीं रह सकते कि पुस्तक एक विस्तृत पठन पाठन, मनन और परिश्रम का फल है। ऐसा प्रतीत होता है कि अभी यह गीता की भूमिका मात्र है। विचार की शैली तुलनात्मक और उदार है। गीता प्रेमियों के लिये बड़े काम की पुस्तक है प्रकाशक विश्वास दिलाते हैं कि अब से इसके प्रति वर्ष ४ अंक बराबर निकलते रहेंगे।

१. स्वदेश का विशेषांक—गोरखपुर का स्वदेश हिंदी का एक पुराना साप्ताहिक है। अपने स्वामी तथा सम्पादक श्रीयुत दशरथ-प्रसादजी द्विवेदीकी शुद्ध मनोभावनाओं का ही प्रतिविम्ब रूप यह पत्र है। अन्यथा आज कल की उपयोगिता की दृष्टि से यह बहुत पीछे है यह हर्षकी बात है कि अबकी बार इस पुराने मातृभाषा सेवक का भी विशेषांक निकला है। इस अंक के सम्पादक हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री पंडित बेचन शर्मा जी उग्र हैं। इसमें कुल मिला कर ४८ पृष्ठ ३९ लेख और कविता हैं। अंक अच्छा निकला है। कितने ही लेख विचारणीय और पठनीय हैं। श्रीयुत सम्पूर्णानन्द जी का काँग्रेस में श्रीमती बीसेन्ट का पुनः प्रवेश, श्री प्रेमचन्द जी का रामायण काल की सामाजिक अवस्था तथा श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी का हिंदू समाज की स्थिति, शीर्षक तथा अन्य भी कई लेख पढ़ने योग्य हैं। ३ पृष्ठ कारटून भी हैं जो कि बढ़ियानहीं बन सके।

इस अंक के लिये हम सम्पादक और संचालक महोदय को बधाई देते हैं। क्या हम आशा रखें कि यह स्वदेश की काया पलट का कारण है।

२. कन्या शिक्षा—लेखक पं० चन्द्रशेखर शास्त्री, प्रकाशक हिन्दी-पुस्तक-भवन, १८१ हरिसनरोड, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या ९३ मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक 'हिन्दी पुस्तक माला' का बारहवां पुष्प है। इस में लेखक महोदय ने एक कन्या के जीवन में जिन २ व्यावहारिक बातों की अधिक आवश्यक्ता होती है उन २ उपदेशों को रोचक, सरल और स्वाभाविक रूप से जीवन में घटा कर कहानी रूप में परिणत किया है। यों तो कन्याओं की शिक्षा के मोटे से मोटे पोथे भरे पड़े हैं, किन्तु इतनी सी पुस्तिका में जो सार कूट २ भर दिया गया है वह सच्ची शिक्षा प्रति कन्या को अत्यन्त लाभकारी एवं प्रयोजनीय है। गृहाश्रम में प्रवेश कर गृहस्थी को सुचारुरूप से चला सक इस प्रकार की नौ शिक्षाएं चित्ताकर्षक शैली से इस में सन्निविष्ट की हैं। शास्त्री जी को ऐसी उपयोगी पुस्तक रचने के लिये धन्यवाद है। यदि मूल्य सस्ता रखते तो और भी अच्छा होता।

३. दर्पचूर्ण—अनुवादक म० भगवती प्रसाद खेतान प्रकाशक—कुंजलाल कानो-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ड़िया, १०।१।१ सैयद सालीलेन, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या ५६। मूल्य ।)

यह एक भावपूर्ण कहानी है जिस में स्त्रियों के दो स्वरूप का वर्णन है?

एक ओर इन्दुमतिकी शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणालीके दुष्परिणामों को दर्शाती हुई उस पर कुठाराघात करती है। दूसरी ओर सरला विमलाका शान्तमय सादाजीवन उचित शिक्षा का उदाहरण है। जिसमें पति, भ्राता, स्वजन, सभीका उपयुक्त मान, सम्मान, धर्म प्रीति पालन के सजीव उदाहरण हैं। दोनों में ही वाद विवाद रहता है किंतु अन्त में असहिष्णुता पर सन्तोष; अहंकार पर क्षमा, अधिकार पर प्रेम की विजय होती है। इससे स्त्री पुरुष दोनों ही को उचित शिक्षा मिल सकती है। पुस्तक रोचक है।

४. विधवा—लेखक पं० राजाराम शुक्ल। प्रकाशिका श्रीमती फूलकुमारी मेहरोत्रा, सम्पादिका—"स्त्री दर्पण" कानपूर पृष्ठ संख्या ८०। मूल्य ॥)

प्रायः २० पृष्ठ तो अवतरिणका, प्रस्तावना इत्यादि के हैं बाकीमें १५ कवितायें अलग २।

विधवाओं की करुणाजनक भिन्न दशाओं का वर्णन है 'विधवाओं का वेष', उनका विवेक, व्रत, विजय इत्यादि उत्तम २ पद्य हैं यदि ध्यान पूर्वक पढ़ें तो उन्हें कई अंशों में लाभ पहुंच सकता है।

५ गुप्त सन्देश दूसरा भाग—लेखक डाक्टर युद्धवीर सिंह। प्रकाशक अपर इन्डिया होमियोपैथिक वर्कस, पीपल महादेव—देहली पृष्ट संख्या १०८। मूल्य ॥)

डाक्टर महोदय से हमारे पाठक कौन नहीं परिचित! गुप्त सन्देश के द्वितीय भाग का हम हृदय से स्वागत करते हैं। पहला भाग दो वर्ष हुए प्रस्तुत हुआ था अब यह भाग सचित्र सन्मुख है। इसमें ११ चित्र हैं।

हम लोगों में आजकल इस प्रकार का ज्ञान स्त्री पुरुषोंको प्रदान करनेकी प्रथा ही नहीं हैं। किसी भी गृहाश्रम में प्रवेश करने वाली कन्या को उसके भावी जीवन की सब से आवश्यक शिक्षा से वंचित करना उसको बिना अपराध शूली पर लटकाना है। गर्भ धारण के पूर्व उसका विज्ञान होना कितना उपयोगी है, यह आजकल के सभी धुरंधर विद्वानोंका मत है। अतः माता बननेके पूर्व उसकी परिस्थिति का ज्ञान होना अत्यन्तावश्यक है। आर्य्य भाषा में इस प्रकार की शिक्षा के लिये कोई साधन नहीं है उसी क्षति की पूर्ति के लिये नववधुओं और नवपरिणीता कन्याओं को सजीव करने के लिए भावी सन्तानों को माताओं की अयोग्यता से मृत्यु के ग्राससे बचाने के लिए, इस पुस्तक का जन्म हुआ है। इस में स्थान २ पर उपयोगी चित्र भी हैं। जिससे बीज बपन से आरम्भ कर फलरूप का तक विधान पूर्णतया समझ में आजाय। प्रत्येक कन्या की शिक्षापूर्ति के पहिले उच्चकक्षाओं में इस पुस्तक का अध्ययन कराना अत्यावश्यक है।

स्त्रियों की ओर से हम डाक्टर जी के इस सत् प्रयास के लिये हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

६ श्रीकृष्ण उपदेश—लेखक पं० जगदीशनारायण तिवारी (हिमन्तपुर, बलिया) प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-भवन, १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या १२०। मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक भगवद्गीता का सरल पद्यों में अनुवाद है। लेखक ने भारत भारती की भाँति सुबोध शब्दों में प्रत्येक श्लोक को उसी स्थान पर रूपान्तर करके रख दिया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। पद्य अच्छे याद करबे वाले हैं। संस्कृत न जानने वाले इसको अच्छी तरह मनन कर सकते हैं। आशा है गीता के पाठी लोग इसका स्वागत करेंगे।

वनिता विनोद

स्त्री जगत्

श्रीमती एलेक्ज़न्डरा डेविड नील एक फ्रान्सीसी महिला हैं। आप सब से पहिली स्त्री हैं जिसने कि तिब्बत को पार किया है। आप चीन से लासा और दारजिलिंग होती हुई कलकत्ता पहुंचीं और वहाँ के बौद्धविहार में तिब्बत पर व्याख्यान दिया। आप पाली और संस्कृत में बड़ी योग्यता रखती हैं।

—०—

आजकल ट्रावन्कोर रियासत का शासन का भार बड़ी महारानी के कन्धों पर है। आप के शासन सम्भालने पर रियासत के पोलिटिकल एजेन्ट म० काटन आप से भेंट करने गये। परन्तु अंग्रेज़ी शिष्टाचार के नियमानुसार इसके बदले में महारानी म० काटन के घर इनसे मिलने नहीं गयीं। इस पर एजेन्ट साहब ने महारानी के पास अपनी शिकायत की। महारानी ने बड़ा सुन्दर उत्तर दिया। इन्होंने कहा कि महाशय काटन अविवाहित हैं अतः वह उनके घर पर उनसे भेंट करने जाना उचित नहीं समझतीं।

—०—

लन्डन के सेन्ट मेरी हस्पताल के अध्यक्षों के सामने वहां के पुरुष विद्यार्थियों ने एक अर्ज़ी भेजी है कि अब से स्त्रियों को इस हस्पताल में पुरुषों के साथ शिक्षा न दी जाय, अन्यथा विश्वविद्यालयों से उपाधि प्राप्त कोई पुरुष वहां शिक्षा ग्रहण करने नहीं आयेंगे। यह उन्होंने इस लिये नहीं नहीं किया कि वह स्त्री पुरुषों के साथ मिल कर पढ़ने की प्रथा को आचार की दृष्टि से चिंताजनक समझते हैं वरन् यह इस लिये किया गया है कि वह स्त्रियों को पुरुषों से न्यून समझते हैं।

—०—

२१ अक्टूबर को पूना में मुसलमान महिलाओं की एक कांफ्रेंस हुई। इसमें बेगम नफीस दुलहन साहिबा ने प्रधाना का पद ग्रहण किया। आपने अपने भाषण में कहा कि सामाजिक सुधारों की बड़ी आवश्यकता है, इसके लिये स्त्रियों का शिक्षित होना परमावश्यक है। परदा इसलाम धर्म का अंग है अतः उसे छोड़ना अधर्म होगा।

श्रीमती मौलवी बेगम ने कहा कि हमें टर्की और मिश्र की स्त्री समाज से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। वहां वह कितने क्रांतिकारी परिवर्तन कर रहा है। हमें अपनी हिंदू बहिनों और मिश्र की सहधर्मिणियों के पदचिन्हों पर चल कर लाभ उठाना चाहिये।

इससे प्रतीत होता है कि अब भारतीय मुसलिम महिलायें भी परदेसे तंग आगई हैं। परन्तु भारत में इसलाम एक बड़ा संकुचित धर्म है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अतः यहां किसी भी सुधार की बहुत कम आशा है।

—०—

मैसूर विश्वविद्यालय के गत कान्वोकेशन के अवसर पर डाक्टर वैसेन्ट ने नवस्नातकों को अभिभाषण दिया। भारत में मैसूर विश्वविद्यालय ही पहिली संस्था है जिसने कि इस सम्भाषण के लिये किसी स्त्री को आमन्त्रित किया हो, और श्रीमती ऐनी वैसेन्ट पहिली महिला हैं जिन्हें यह मान प्राप्त हुआ है। श्रीमती का सम्भाषण भी इस अवसर पर दिये गये भाषणोंसे भिन्न प्रकार का था। आपने पुराने वैदिक समय में बौद्धकाल और मुसलिम राज्यके दिनोंकी शिक्षा के मुख्य अंगों पर प्रकाश डालते हुए तक्षशिला और नालिन्दा का वर्णन किया, फिर आपने बतलाया कि किस प्रकार अंग्रेज़ी राज्यकाल में हमारी देशी शिक्षा प्रणाली का अन्त हुआ, और किस प्रकार अब मातृभाषा द्वारा शिक्षा ही हमें उन्नत कर सकती है। सेवा-प्राणीमात्र की सेवा ही शिक्षा का ध्येय है।

—०—

ग्रीस में स्त्रियों की जातीय सभा ने अपने सदस्यों से स्त्रियों के सार्वजनिक कार्य करने के विषय में सम्मति मांगी थी। ८० प्रति शतक ने यही सम्मति दी है कि अभी स्त्रियों को केवल म्यूनिसिपल कमेटियों की ही सदस्या बनना चाहिये।

—०—

एम० बी०, बी० एस० परीक्षा इंग्लैन्ड की सब से बड़ी डाक्टरी परीक्षा है। इस वर्ष इस में ७६ स्त्रियाँ बैठी थीं जिन में से ३४ पास हुईं। एक स्त्री ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

—०—

मैकसिको (अमरीका) में सैन्टाफीक गवर्नर की अनुपस्थिति में उस की मन्त्रिणी श्रीमती सोलिडाड चेकन गवर्नर का काम कर रही हैं। यह अमरीका के इतिहास में पहिला अवसर है कि किसी स्त्री ने ऐसा उच्च पद प्राप्त किया हो।

—०—

सरदार गुरुबख्श सह पंजाब कौंसिल में प्रस्ताव पेश करने वाले हैं कि पंजाब में कौंसिल के चुनाव के लिए स्त्रियों को भी वोट देने का अधिकार दिया जाय।

—०—

इंगलैन्ड की पिछली पार्लियामेंट में ८ स्त्री सदस्या थीं। अब की बार केवल ४ ही चुनी गईं। इनमें से ३ अनुदार दल की हैं और एक मज़दूर दल की।

—०—

कलकत्ते में मिस्टर हारेस स्टीफन और उसकी सगी बहिन मिस ऐथल सैमना पर आपस में विवाह करने का अभियोग चल रहा है। यह कहा जाता है कि जब वह बालक ही थे उनका घर जल गया और सरकार ने उनकी रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। उनके नामों से पता नहीं लगता था कि वह भाई और बहिन हैं। यह न जानते हुए वह आपस में प्रेम करने लग पड़े और १५ वर्ष हुए विवाह कर लिया। उनके एक सन्तान भी हुई। परन्तु अब उनकी माता को उनका पता चल गया और उसने उन्हें पहिचान लिया। स्टीफन ने मैजिस्ट्रेट से प्रार्थना की है कि उसे अपनी बहिन को साथ रखने की आज्ञा दी जाय।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

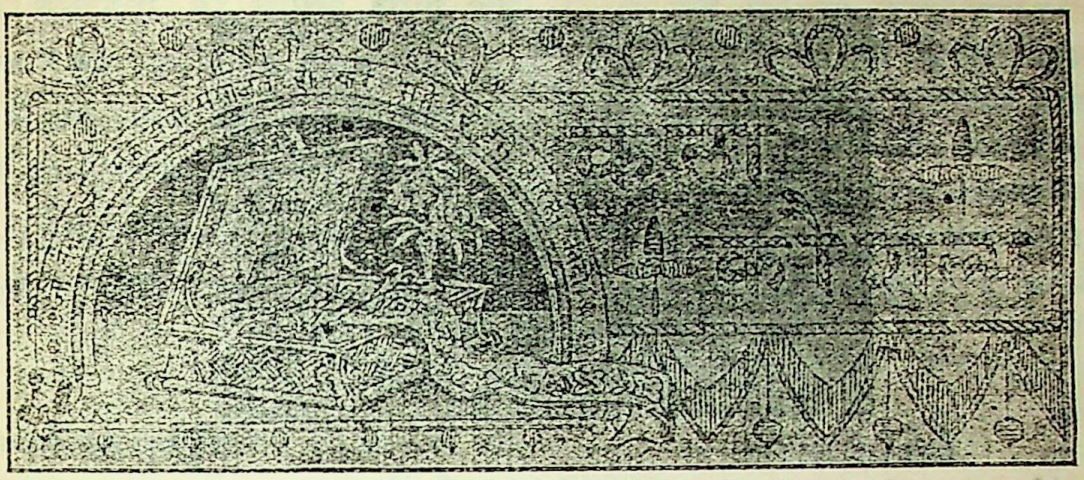

बच्चों की बन्डी

ले०—श्रीमती ओ३म् वती जी

यह बन्डी जितनी महीन, कसी, बीनी जाय उतनी ही अच्छी होती है, और छोटे बच्चों के लिये बहुत उत्तम है।

आवश्यक वस्तुयें:—आधपाव ४ तार का मुलायम ऊन, ८ नं० का हड्डी का क्रोशिया और १० बटन।

पीठ के लिए ३९ चेन से आरम्भ करो लौटो और ३८ दोहरे बीनो, हर पंक्ति में आर फन्दों के पिछल धागे में बीनो जिस में धारियां बन जाँय। ऐसी ७ पंक्ति और बना कर ९ वीं पंक्ति में:—

१४ दोहरे बीनो, और लौट पड़ो उसी पर फिर बीनो।

फिर ८ पंक्ति उसी प्रकार ३८ दोहरों की बीनो।

१९ पंक्ति:—३० दोहरे बीनो लौटो और फिर उलट कर ४ पंक्तियाँ ३० फन्दों की बीनो। २५ वीं पंक्ति के अन्त में ९ चेन बनाओ और ४ पंक्तियां ३८ दोहरों की हर पंक्ति में बनाओ।

३० पंक्ति:—१४ दोहरे, लौटो और उसी पर फिर बीनो उसी पर

३२ पंक्ति:—२८ दोहरे बीनो

३३ पंक्ति—१४ दोहरे बीनो और लौट कर इसी पर बीनो। फिर ६ पंक्तियां ३८ दोहरों की हर एक में बीनो।

४१ पंक्ति:—१४ दोहरे, लौटो, और इन पर उलट कर बीनो।

४३ पंक्ति:—३८ दोहरे बीनो।

४४ पंक्ति:—१४ दोहरे और लौट कर उसी पर फिर ५ पंक्ति ३८ दोहरों की बीनो।

५१ पंक्ति:—३० दोहरे, लौटो और उसी पर फिर बीनो। इन्हीं ३० फ़न्दों पर ४ पंक्ति और बीनो।

५७ पंक्ति:—३० दोहरे, ९ चेन, लौटो और ३८ दोहरे उलट कर बीनो, ६ पंक्तियाँ प्रत्येक में ३८ दोहरे की बीनो।

६५ पंक्ति:—१४ दोहरे, लौटो और उसी पर फिर बीनो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

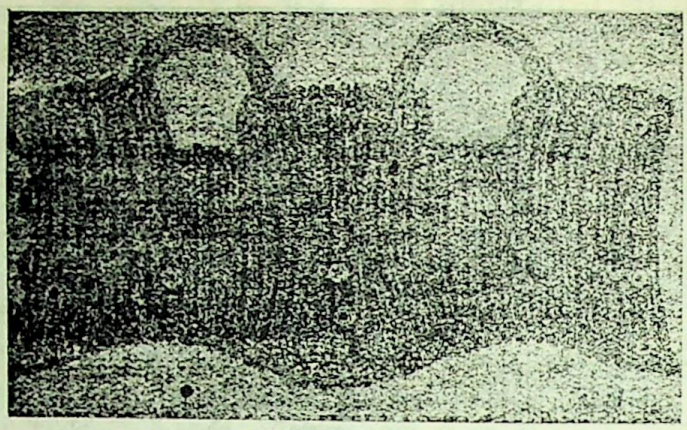

६७ पंक्ति:—३८ दोहरे बीनो और ७ पंक्तियाँ और ३८ दोहरों की बनाओ और फिर ऊन पक्का करके समाप्त करदो।

किनारे के लिये बन्डी के नीचे ऊपर सब कहीं पहली नोक में ऊन जोड़ कर १ दोहरा * २ चेन, २ तेहरे उसी में १ दोहरा अगले में * चिन्ह से बार २ बीनो। कन्धों की पट्टी के लिये २० चेन बनाओ और ६ पंक्तियाँ सीधी, उल्टी दोहरों की धारीदार बीनो। फिर कन्धों पर सफाई से सींदो। बाँयी तरफ चार बटन टाँको और उसी के अनुसार मोटी सुई से घर बनादो। बाकी ६ बटन चित्र के अनुसार नीचे जांघियाँ बांधने के वास्ते टाँक दो। यह बन्डी तैयार होगई।

गृह-प्रबन्ध

१. यदि रंगीन वस्त्रों पर फलों के दाग़ लग जायें तो उनको दूर करने की सब से उत्तम विधि यह है कि पहले अमोनिया के साथ स्पंज द्वारा रगड़ा जाय और फिर पैट्रोल के साथ।

२. अलमारियों तथा संदूकों में से गरम कपड़े के कीड़ों को निकालने के लिये कपड़ों पर लौंग के मोटे २ टुकड़े छिड़क देने चाहिये। यह फिनाइल की गोलियों की अपेक्षा अधिक उपयोगी हैं।

३. किसी कमरे में से मक्खियों को दूर करने का उत्तम उपाय यह है कि प्रति दिन प्रातः काल किसी खूब तपे हुये बर्तन में २० बून्द कारबालिक एसिड की डालकर कमरे में रख दीजायें इस के धुंये से सब मक्खियां निकल जाँयगी।

४. चूहे इत्यादि के मरजाने के कारण अथवा नाली साफ करने पर कई बार घरों में बड़ी दुर्गन्ध हो जाती है जो कि मरे हुये जीव अथवा दुर्गन्ध के अन्य कारण को दूर करने पर भी नहीं हटती। यदि आंच पर एक लोहे का बर्तन रखकर खूब तपा लें और उसमें कहवा (Coffee) के साबुत बीज डालकर मकान में सब स्थानों पर घुमावे तो यह दुर्गन्ध सर्वथा दूर हो जाती है।

५. सरदियों में अधिक पानी में काम करने के कारण प्रायः हाथ फट जाते हैं। यदि हाथों को दिन में एक बार राई को पीस कर उसके चूरण से, अथवा पानी में चोकर को उबाल कर उस जल से धोया जाय तो उनके फटने का भय नहीं रहता। फटने पर इलाज के लिये खांड मिले पानी से धोना अथवा कभी २ खट्टे के रस को ऊपर मलना उपयोगी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

६. गुलदस्तों को अधिक समय तक हरा रखने की एक विधि यह है कि जिस पानी में उन्हें रखा जाय उसमें एक बड़े चमचे भर पिसा हुआ कोयला डाल दिया जाय। पुनः कोयला अथवा पानी कुछ भी बदलना न पड़ेगा।

७. यदि गुलदस्ता मुर्झा गया हो तो उसको पुनः हरा करने के लिये उसकी डंडियों के निचले तिहाई भाग को उबलते हुये पानी में भिगो दो और जबतक पानी ठंडा न हो जाय भीगने दो। अब भीगे हुये भाग को काट कर पुनः ठण्ढे पानी में रख दो इस प्रकार करने से वह पुनः हरे हो जांयगे।

कन्यागुरुकुल समाचार

कन्यायें गत अक्टूबर की १९ ता० को देहरादून से सकुशल वापिस आगई थीं और २० तारीख से विद्यालय खुल गया नियम पूर्वक पठन पाठन का आरम्भ हो गया है। यद्यपि बाढ़ और अति वृष्टि के कारण अधिक दिन ठहरना पड़ा और प्रबन्ध में कुछ कठनाई भी हुई तथापि अधिकांश ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ बहुत बहुत उन्नत हुआ है क्योंकि बहुत से माता पिता जो मिलने आये हैं उनका यह कहना है कि हमारी लड़की का स्वास्थ बहुत अच्छा हो गया है।

जन्मोत्सव

गत वर्ष दीपावली के दिन ही गुरुकुल की स्थापना हुई थी अतः दीपावली का दिवस गुरुकुल का जन्म दिन था उस दिन चूंकि ऋषि उत्सव भी होता है और जनता ने परम्परा गत रीति से रात्रि को दीपावली भी करनी होती है अतः कन्या गुरुकुल का उत्सव हटा दिया गया था। किन्तु गुरुकुल वासियों ने अपनेनिजी तौर पर उसे बड़े हर्ष और समारोह से मनाया।

पहिले वृहद हवन किया, भजन इत्यादि हुए; फिर लड़कियों ने कुछ बड़ी उत्तम शिक्षाप्रद और मनोरंजक खेलें कीं, फिर सहभोज हुआ। दो चार दर्शिकायें भी उपस्थित थीं।

वार्षिक परीक्षायें

दिसम्बर मास के प्रारम्भिक सप्ताह में कन्याओं की वार्षिक परीक्षायें होंगी, जिन में सफल होने से उन्हें ऊंची श्रेणी में चढ़ाया जायगा। लगभग तीन मास की छुट्टी—जो कि दिल्ली की विशेष परिस्थिति के कारण देनी आवश्यक थी—के कारण लड़कियों के पठन में बहुत हानि हुई है। यद्यपि यात्रा पर प्रायः सभी अध्यापिकायें साथ थीं, तथापि नियमानुसार पठन पाठन न रहने से बालिकाओं ने प्रायः बहुत कुछ पढा पढ़ाया भुला दिया था। अतः उन्हें अब बड़े परिश्रम से पुनः परीक्षा में सफलता प्राप्त करने योग्य बनाया जा रहा है। कन्यायें भी पठन पाठन में दत्त चित्त हैं।

उत्सव

परीक्षा के बाद २८, २९, दिसम्बर १९२४ को यहां पर वार्षिक उत्सव होना निश्चय हुआ है, जिसके प्रथम दिन नव प्रविष्ट ब्रह्मचारिणियों का चुनाव होगा और दूसरे दिन उत्सव का समारोह।

कन्याओं के प्रवेशार्थ बहुत से पत्र आ रहे हैं और बहुत से प्रवेश पत्र भी भरे हुए आगये हैं, किंतु कार्य्य को उत्तम रीति से संचालन करने का ख्याल करके और जनता की भी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यही निश्चय हुआ है कि इस वर्ष केवल ३० कन्यायें ही ली जावें। अतः कन्याओं के संरक्षकों को चाहिये कि शीघ्र प्रार्थना पत्र भेजें। २५ नवम्बर के बाद आये हुये प्रार्थना पत्रों पर विचार करना कठिन होगा।

आश्रम में स्थानाभाव

पाठकों को याद होगा कि गत वर्ष भी यही सूचना दी गई थी कि यद्यपि वर्तमान कन्या गुरुकुल का भवन दिल्ली की एक बड़ी भारी कोठी में है, और अपनी तरफ से भी चार टीनके कमरे डाले गये थे, तथापि यहां पर जो लड़कियां और अन्य कर्मचारीगण मिलाकर एक सौ से ऊपर जन हैं उनके लिए स्थान पर्य्याप्त नहीं है। संरक्षक भी जो सपरिवार एक दो दिन के लिए आजाते हैं उनके ठहरने का स्थान न होने से उनको भी कष्ट होता है, और प्रबन्धकर्त्ताओं को भी और इस वर्ष कन्याओं की वृद्धि होने पर स्थान की तंगी और भी रहेगी। अतः उस तकलीफ को कुछ कम करने के हेतु कोठी के इर्द गिर्द कुछ छप्पर या टीन के कमरे और डालने का विचार किया जा रहा है। इन के बन जाने पर आशा है स्थान की तकलीफ न रहेगी।

कन्या-गुरुकुल के लिये धन की अपील

एक वर्षसे ऊपर गुरुकुल को खुले होचुके हैं, अभी तक जनता ने यह नहीं सोचा कि यहां पर रुपये की भी आवश्यकता होती होगी या नहीं? जनता को केवल एक ही बात का ख्याल है कि कन्याओं को भरती की जाय और उन्हें उत्तम शिक्षा प्राप्त हो, वह आनन्द से रहें। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो। हमें भी इसी में प्रसन्नता है अतः इसी की फिकर है और उसके लिए प्रयत्न भी भरसक बहुत किया जा रहा है, परन्तु हमारे पास एक बात की बड़ी भारी कमी है जिसके कारण हमें महा कष्ट भी होता है। वह है धनाभाव! कई संरक्षक अपनी कन्याओं की आधी फीस कराने के लिए लिखते हैं, कई मुफ्तमें रखने के लिए, कइयों का कहना होता है कि १५) शुल्क बहुत हैं, कई कहते हैं कि जब हम लड़कियों से मिलने आते हैं तो ठहरने का स्थान आराम का नहीं मिलता है। एक दो सज्जनों ने यहां तक भी बाधित किया कि उन्हें ठहरने के लिए कार्य्यलय का कमरा खाली कर देना पड़ा। अस्तु कहनेका मतलब यह है कि सभी की इच्छा यह है कि बालकों के गुरुकुल की भांति कन्या गुरुकुल में भी जनता को सभी सुविधायें हों। परन्तु हों कहां से? बालकों के गुरुकुलों में जनता ने लाखों दिये हैं। बहुत वर्षों से वह कार्य चल रहे हैं। परन्तु यहां तो अभी एक ही वर्ष हुआ है और दान के नाम तो यहां के लिए लोगों की जेब ही खाली हैं। लोग कहते हैं कि कन्यागुरुकुल से डेपुटेशन निकले, दान मांगे, तो धन एकत्र हो जाए। परन्तु डेपुटेशन ले कौन जाय? यहां तो आगे ही कार्यकर्तृ देवियां आवश्यकता से न्यून हैं और यदि यह भी बाहर घूमती रहें तो कन्याओं को शिक्षा कौन दे? ऋषि दयानन्द जी कहते हैं कि बच्चों को कुचेष्टा से बचाने के हेतु आवश्यक है कि उनके शिक्षक सर्वथा उनके साथ रहें? परन्तु यदि वह बाहर बाहर धन माँगती रहें तो वह बच्चों के साथ कैसे रहें और उनका प्रभाव बच्चों पर कैसे पड़े? संगत का प्रभाव तो पड़ता है परन्तु धन लाने से बच्चों को क्या लाभ? दूसरी बात और भी है। वह यह कि जाति को यह भी सोचना चाहिये कि स्त्रियों से भिक्षा मंगाना उचित भी है? मनु महाराजने स्त्रियोंको लक्ष्यमें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रखकर कहा है कि "जहां इन की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं" अर्थात देवता तुल्य सन्तति होती है "इन स्त्रियों को सत्कार और उत्सव के समय पिता, भ्राता, पति, देवर इत्यादि सदा उपहारों के दान से सत्कार किया करें"। कन्या गुरुकुल स्त्री जाति की संस्था है स्त्रियां ही अन्तरंग प्रबन्ध सम्भाल रहीं हैं अतः उन्हें बाहरी, पुरुषों के करने योग्य कार्य्यों के लिये बाहर २ घूमने का ढर्रा चलाने से जहां उनके प्रबन्ध में गड़बड़ होगी वहां पर स्त्री जाति के स्त्री-सम्बन्धी गुणों की रक्षा—जिस के लिये गुरुकुल खुला है—भी नहीं होगी। देवियों का लक्ष्य स्थिर रूप से लगातार सेवा करने का न होगा। उन्हें घूमना घामना ही पसन्द होगा। उससे फिर अनिष्टकर बातें फैलेंगी और लाभ के स्थान में हानि होगी। अतः हम कन्याओं के संरक्षकों, आर्य्यसमाजों और अन्य भारतीय जनता से याचना करते हैं कि वह कन्या गुरुकुकल से किसी डेपुटेशन जाने का आसरा न देखें, वरन् कन्या गुरुकुल को धन सम्पन्न करना अपना ही कर्तव्य समझें। यदि धनाभाव के कारण इस गुरुकुल को कुछ सङ्कट हुआ तो उसके लिये वही उत्तरदाता होंगे।

संरक्षकों और समाजों के लिए धन एकत्र करने के सम्बन्ध में गुरुकुल कार्यालय से पत्र भेजे जारहे हैं। इस समय ८५ कन्यायें हैं अगर इनके संरक्षकों में से ५० संरक्षक भी अपने २ हिस्से का १००) का दान भेज दें तो ५ हज़ार रुपया यों ही आ सकता है। इसी प्रकार सारे भारत में कितनी ही आर्य-समाजें हैं अगर वह भी अपनी वार्षिक आय में से औसत रूप से ५०) भी भेजें तो कितने हज़ार रुपये हो सकते हैं?

अभी तक कन्या गुरुकुल से कोई अपील नहीं निकाली गई। परन्तु अब उत्सव निकट है। एक वर्ष का खर्च करके कोष भी खाली होचला है अतः स्त्रीशिक्षा के प्रेमी और गुरुकुल के हितैषी लोगों तथा अन्य धनाढ्यों से प्रार्थना की जाती है कि शीघ्र ही रुपया एकत्र करके कार्यालय में भेजना प्रारभ करदें ताकि उत्सव तक अच्छी धनराशि एकत्र होजावे। आशा है कि सब सज्जन और देवियाँ इस पर ध्यान देंगी।

विचार प्रवाह

भगवान दयानन्द की स्मृति में।

दीपावली का शुभ दिवस है, अमावास्या की घोर अन्धकारमय रात्रि का आगमन! ऐसे समय में भगवान दयानन्द का हृदय अपने प्रीतम के दर्शन के लिये छट पटा रहा है। स्वामी की आज्ञा है कि "संसार में जा और मानव हृदय से अन्धकार का नाश कर।" प्रसन्न चित से, उल्लसित मन से प्रभु की आज्ञा शिरोधार्य की। पुनः आज्ञा होती है कि "दयानन्द बस"। दयानन्द अपने मनमें समझता है कि अभी मैं और अधिक कार्य कर सकता था। परन्तु स्वामी की आज्ञा है, क्या मजाल जो हृदय में तनिक भी शोक हो, चितवन पर ज़रा भी बल हो "भगवन् तेरी इच्छा पूर्ण हो" और प्रसन्नता, उत्कण्ठा और प्रेम से मृत्युञ्जयी दयानन्द अपने सृजनहार के सन्मुख जा उपस्थित होता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि भगवान दयानन्द क्या थे ? शिक्षित भारत उस महान आत्मा को जानता है; धार्मिक संसार उसके लोहे को मानता है। दयानन्द की दीन-सेवा, अबलाजन-रक्षा, सत्य शोधन, धर्मानुराग सब पर विदित है। परन्तु दयानन्द का कृत्य इससे कहीं महान है। उसने वह काम किया जो विरला ही कर सकता है। दीनों की सहायता करना आसान है; प्रचुर विद्या की प्राप्ति भी कठिन नहीं, अत्याचारी नृप का शासन उलट देना भी इतना दुस्तर नहीं; परन्तु मानव हृदय को विचार-स्वतंत्रता की शिक्षा का दान ऐसा महत्व का कार्य है कि जिसकी कोई उपमा नहीं। भगवान दयानन्द का मनुष्य मात्र पर यदि कोई ऋण है-जिसका कि कोई मूल्य नहीं-तो वह यह अमेय, शुद्ध, स्वतंत्रता का दान है। दयानन्द तुम महान हो; तुम धन्य हो।

प्रिय पाठको ! आओ हम आज दीपावली के दिन भगवान दयानन्द और उनके कृत्यों का चिन्तन करें; श्रद्धा और भक्ति के प्रेम प्रसून से उसकी पुण्य स्मृति की आराधना करें, परमदेव परमात्मा से उस महान आत्मा के पद चिन्हों पर चलने के योग्य बनने की याचना करें और उसके सदुपदेशों के अनुसार इस जीवन को ढालने का व्रत धारण करें।

दीन और असहाय के रक्षक, अबला और पतितों के सहायक दयानन्द तुम्हें हमारा नमस्कार हो ! भारत के उद्धारक और संसार के पथ प्रदर्शक दयानन्द तुम्हें हमारा नमस्कार हो ! शारीरिक बल, तेज और शक्ति के पुंज, निभय, निर्भीक, आत्मिक बल के निधि, दयानन्द तुम्हें हमारा नमस्कार हो ! वर्णाश्रम धर्म के उद्धारक, सत्य धर्म के प्रसारक, दयानन्द तुम्हें हमारा प्रणाम हो ! शुद्ध ज्ञान के प्रकाशक और मिथ्या ज्ञान के विनाशक दयानन्द तुम्हें हमारा प्रणाम हो ! विशाल ज्ञान राशि के प्रभु, विपुल ब्रह्म विद्या के स्वामी दयानन्द तुम्हें हमारा प्रणाम हो। विश्व प्रेम के मूर्तिमान अवतार, श्रद्धा और भक्ति जल के पुञ्ज दयानन्द तुम्हें हमारा नमस्कार हो ! आनन्द कन्द दयानन्द तुम्हें हमारा शतबार प्रणाम हो !

इंग्लैंड का शासन अनुदार दल के हाथ।

गत मास हमने मज़दूरदल सरकार के पराजय के विषय में लिखा था। उसके पश्चात् चुनाव हुआ और उसका फल निकला अनुदार दल की विजय, मज़दूरदल की हार और बहुत बुरी तरह से हार तथा उदार दल का सर्वनाश। भविष्यत में क्या होगा यह कहना कठिन है, परन्तु इस समय अनुदार दल बहुत प्रसन्न है, वह आगामी पांच वर्ष तक अपने शासन को निष्कण्टक समझता है क्योंकि पार्लियामेंट के ६१५ सदस्यों में से ४०० के लगभग अनुदार विचार के हैं और शेष मज़दूर उदार दल, तथा अन्य विचारों के। यह सब मिल कर भी पार्लियामेंट में उदारदल को किसी भी अवसर पर हरा नहीं सकते। सो अब पांच वर्ष तक इंग्लैंड से अनुदार विचारों और अनुदार कृत्यों की धारा बहेगी। हमें मज़दूर सरकार के पराजय पर हार्दिक खेद है।

यह खेद इस लिये नहीं कि हमें भारत के सम्बन्ध में उससे कुछ आशा थी। भारत के किसी भी दल को यदि कोई आशा रही भी हो तो मज़दूर सरकार ने उसे अपने जीवनकाल में ही तोड़ डाला था। भारत के संबन्ध में सब एक जैसे हैं। यह है भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सृष्टि नियम के अनुकूल। जातियां और राष्ट्र अपने ही पौरुष और बल से बना करते हैं। कोई भी बाह्य मित्र चाहे वह कितना भी शक्तिशाली और सदय हृदय हो-जाति के हृदय में मानसिक बल और शक्ति नहीं भर सकता। फिर मज़दूर सरकार ने तो कोई मित्रता के लक्षण भी नहीं दिखलाये। अतः हमारे लिये यह सब एक से हैं—

कोऊ नृप होय हमें का हानी।
बान्दी छोड़ न होउब रानी॥

अतः मज़दूर दल के पराजय पर हमारा शोक स्वार्थमयी आशा पर निर्भर नहीं। मज़दूर दल के विचार उदार हैं, इस में सन्देह नहीं। वह शक्ति शाली होकर इंग्लैन्ड की जनता का-वास्तविक प्रजा का अधिक उपकार करते यह निर्विवाद है! जन साधारण में से चुने हुये शासक उनकी आवश्यकताओं और कष्टों को भली प्रकार अनुभव कर सकते हैं और समवेदना से उनको दूर कर सकते हैं। इन प्रजाहित सम्बन्धी स्निग्ध कृत्यों का शुभ प्रभाव न केवल इंग्लैन्ड पर ही पड़ता, अपितु संसार के समस्त देशों के पद दलित और धन तथा ऐश्वर्य के मद से मस्त मनुष्यों से पीड़ित जनता के हृदय में उत्साह और साहस का संचार करता। संसार से उदारता और अनुकम्पा की राशि का कम होना यही हमारे लिये शोचनीय है। अतः इस विपत्ति में--जो कि केवल मज़दूर दल की ही विपत्ति नहीं—हमारी हार्दिक सहानुभूति है।

अनुदार सरकार की भारत के सम्बन्धमें क्या नीति होगी यह स्पष्ट है। यह "फ़ौलादी पंजे" का शासन होगा। कठोरता और अत्याचारों के राज्य की पूरी २ सम्भावना है। इंग्लैंड के महामन्त्री लार्ड बैल्डविन चुनाव संबन्धी अपनी वक्तृता में ही इस की पूरी २ घोषणा दे गये हैं। यह निर्जीव, पाषाण हृदय, कठोर शासन, हमारे लिये हितकर ही सिद्ध होगा। भारत में भिन्न २ दलों की एकता का सहायक होगा, दूसरों के मुंह की ओर ताकने की अपेक्षा हम अपने पैरों खड़े होने का अधिक यत्न करेंगे। और हमारे इस उद्यम में उदार संसार की सात्विक सहानुभूति और सहायता साथ होगी।

बंगाल में अनियन्त्रित दमन

गत मास भारत के राजनैतिक क्षेत्र की सब से महत्व पूर्ण घटना बंगाल में दमन नीति का पुनः प्रादुर्भाव है। लार्ड रैडिंग ने बंगाल के गवर्नर की इस समय पूरी २ सहायता दी है। बंगाल सरकार का मत है कि बंगाल में षड़यंत्रकारियों की बड़ी भारी संख्या है जो कि डराकर, धमका कर, लूटकर, और नर हत्या तक करके भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में विश्वास रखते हैं। इस लिये शासक वर्ग तथा उनके सहायक और शान्तिमयी जनता सुरक्षित नहीं रह सकती। न जाने वह किस समय और किस को पिस्तौल अथवा बम्ब का निशाना बना डालें देश का साधारण कानून इस दल का नाश करने में असमर्थ है। इसी लिये बंगाल सरकार के कहने से वाइसराय ने अपने अनियन्त्रित अधिकारों से एक नवीन सूत्र अथवा "आर्डिनांस" की घोषणा की है। अर्डिनांस बंगाल मे कानून के बराबर काम करेगी। इसकी तथा १८१८ के रैग्युलेशन की तीसरी धारा के अनुसार सरकार जिस किसी व्यक्ति को भी जब चाहे बिना वारेन्ट पकड़ कर, चाहे बिना मुकदमा चलाये क़ैद कर दे, अथवा एक विशेष अदालत के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जो कि इसी काम के लिये बनाई गयी है—सामने पेश कर उस पर अभियोग चलाये। जिन लोगों पर सरकार को सन्देह होगा वह स्वतन्त्रता पूर्वक कहीं आ जा न सकेंगे, उन्हें पहिले से सरकार को अपने स्थानांतर गमन की सूचना देनी होगी और निश्चित समय पर पुलिस के पास हाज़री देनी होगी।

इस आर्डिनांस के अनुसार बंगाल में बड़े ज़ोर शोर से काम शुरू हो गया है। कितने ही व्यक्ति पकड़ लिये गये हैं। इन में कितने ही प्रजा के मानपात्र, प्रसिद्ध नेता हैं जिन पर षड़यन्त्र—कारी होने की शंका करना अपने साथ ही अन्याय करना है। बंगाल में स्वराज्य पार्टी का जोर है। बंगाल कौन्सिल में स्वराज्य पार्टी ने सरकार को न्याय का ढोंग रचते हुए स्वेच्छाचारिता से काम करने नहीं दिया अतः सरकार उनसे खिज़ गयी है। हमारा विश्वास है कि किसी भी षड़यन्त्रकारी दलको वह साधारण नियमों से कुचल सकती थी परन्तु यह साधारण नियम किसी भी नियमानुसार कार्य करने वाले विरोधी दलको—जैसा कि आजकल बँगाल की स्वराज्य पार्टी है—छू नहीं सकी थी, अतः उसे यह विशेष अनियमित नियम गढ़ने पड़े। इनके अनुसार वह निर्भय और निर्भीक होकर जिस स्वराज्य पार्टी के सदस्य को चाहे पकड़ सकती है। जिन महानुभावों और अहिंसाव्रत धारी नेताओं को सरकार ने अबतक पकड़ा है उनका विचार करते हुये सरकार का यह कहना कि वह प्रजाहित से प्रेरित होकर, शान्तिप्रिय जनता की रक्षा के निमित्त ही ऐसा कर रही है, केवल राजनैतिक ढोंग मात्र ही प्रतीत होता है।

सब से पहला विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या बंगाल में इस प्रकार का कोई विस्तृत षड़यन्त्र है जिसकी उपस्थिति के ज्ञान का सरकार दावा करती है? यह बात ठीक है कि गत दो वर्ष में कुछ एक निरपराध व्यक्तियों की हत्या की गई है परन्तु क्या इससे ही षड़यन्त्रके विस्तारको स्वीकार कर लिया जाय? यह कहा जा सकता है कि इस समय जिन सत्तर अस्सी आदमियों को पकड़ा गया है वह बड़ी खोज और विचार के बाद पकड़े गये हैं। सरकार ने पिछले क्रांतिकारियों को पकड़ने में भूल नहीं की अतः अब वह भूल करेगी यह सम्भावना बहुत कम है। (पुलिस कमिश्नर ने ऐसे विचार प्रगट किये हैं।) अतः इन अस्सी क्रांतिकारियों का पकड़ा जाना ही यह सिद्ध करता है कि बंगाल में विस्तृत षड़यन्त्र है। परन्तु यह युक्ति घोड़े के आगे गाड़ी जोतने के समान है। प्रजाका विश्वास है कि जो लोग पकड़े गये हैं वह षड़यन्त्र के कर्मचारी नहीं। इन के गृहों से, तलाशी लेने पर भी, किसी प्रकार के गोला बारूद का न मिलना ही सिद्ध करता है कि वह षड़यन्त्रकारी नहीं हैं। उन मे ऐसे व्यक्ति हैं जो कि अहिंसाव्रत धारण किये हुये हैं, जिन के विषय में यह विचार भी नहीं आ सकता कि वह ऐसी जघन्य और निन्दनीय संस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं। यदि सरकार के पास उनके दोषों को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त सामग्री है तो उन्हें चोरों की भांति चुपके से उड़ा लेने की क्या आवश्यकता? उनपर खुली अदालत में अभियोग चलाया जाय और उन को दोष सिद्ध किया जाय, इस अवस्था में प्रजा अवश्य सरकार का साथ देगी। कोई भी न्यायाशील, धर्मभीरु व्यक्ति प्रमाणित अपराधी का साथ देने को तैय्यार नहीं होसक्ता। यदि सरकार विचारशील भारतीय जनता के इस प्रकार के षड़यन्त्र को यदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई हो-दबाने के लिये सहायता और सहानुभूति चाहती है तो उसका एक मात्र उपाय यह है कि वह जनता को अपना विश्वासपात्र बनाये और इन षडयन्त्र कारियों के दोष को खुली न्याय सभा में प्रमाणित करे, अन्यथा सरकार के पुराने कृत्य ऐसे नहीं कि सरकार के कहने मात्र पर जनता विश्वास करले।

परन्तु यदि यह मान भी लिया जाय कि सरकार का यह कथन कि बंगाल में एक बड़ा षडयन्त्रकारी दल विद्यमान है ठीक है तो भी इसको कुचलने का सरकार ने जो मार्ग पकड़ा है वह ठीक नहीं है। प्रत्येक कार्य के लिये कारण हुआ करता है। किसी कार्य को रोकने के लिये कार्य कारण को समझना और उसका दूर करना ही अच्छा हुआ करता है। जो डाक्टर केवल रोग के लक्षणों को दूर करना चाहता है और उसके उत्पादक कारणों की अवहेलना करता है उसे कोई बुद्धिमान नहीं कह सक्ता। समय २ पर इस प्रकार के उत्पातों का हो जाना भारत के सामाजिक जीवन में किसी गहरे रोग का सूचक है और केवलमात्र उन उत्पातों का दबाना रोग का इलाज नहीं। जिस आधार पर षडयन्त्रकारी अपना काम करते हैं, फलते और फूलते हैं, अबोध युवकों के मन में अपने कृत्यों के लिये साधुभाव पैदा कर लेते हैं उस आधार को ही मिटा देना उस रोग का एक इलाज है। जनता में अपनी और राजनैतिक अवस्था के सम्बन्ध में गहरा असन्तोष है। यदि सरकार को जनता से प्रेम है, यदि सरकार इस प्रकार के उत्पातों को जड़ से नाश करना चाहती है, तो प्रजा के इस असंतोष के कारणों को दूर करे, प्रजा की सामाजिक और आर्थिक अवस्था को सच्चे दिल से उन्नत करे तब वह देखेगी कि इस प्रकार के षडयन्त्र के लिये कोई अवलम्ब ही न रहेगा और वह स्वयं बिना किसी प्रकार के दमन के नष्ट हो जायेंगे। 'न रहे बांस न बजे बांसरी'।

यदि सरकार ने अपनी दमन नीति को न छोड़ा तो हमें भविष्य बड़ा निराशाजनक प्रतीत होता है। इस से पहिले भी बंगालमें इस प्रकारके षडयन्त्रों की एक लहर चली थी और सरकार ने बल पूर्वक उसे दमन करने का भरसक यत्न किया था। आज सरकार का यह कहना कि अब भी बंगालमें षडयन्त्र है स्वयं ही सिद्ध करता है कि सरकार को अपनी दमन नीति में सफलता नहीं हुई। जिस नीति में सरकार पहिले असफल हो चुकी है उसी को पुनः गृहण करना कोई बुद्धिमता नहीं। इतिहास हमारे शिक्षा गृहण करने के लिये होता है, पढ़ने और भूल जाने के लिये नहीं। इस प्रकार की दमन-नीति—जिस का प्रजा वात्सल्य और न्याय आधार न हो—सदा विफल मनोरथ रहती है, उसका प्रभाव सदा उल्टा पड़ता है। जिस रोग का वह इलाज करना चाहती है उसे और चमका देती है। आजकल के कितने ही सभ्यताभिमानी पुराने राज्य रूस के बोलशिविक नाम से डरते हैं, बोलशिविज़िम शब्द से उन्हें कंपकंपी आने लगती है। परन्तु क्या यह सत्य नहीं कि रूस के ज़ार की अत्याचार परायण शासन-नीति और दमन-मार्ग ही इस के वास्तविक जन्म दाता हैं? देश में वास्तविक असंतोष था, प्रजा दुखी; पीड़ित थी, प्रजा की दीन हीन दशा को सुधारने के लिये कोई यत्न न करके उसका रक्त चूसा गया; इसी से षडयन्त्रकारियों की रचना हुई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस चेतावनी पर भी रूस सरकार ने ध्यान न दिया और वास्तविक असंतोष और उसके कारणों को दूर करने के स्थान में अपनी उद्दण्ड दमन-नीति को बराबर जारी रखा। षडयन्त्रकारियों को बड़े बलपूर्वक दबाया गया परन्तु इस सब का फल क्या हुआ? बोलशिविज़्म का जन्म, जिसके आगे न ज़ार रहा न ज़ार का शासन! भारत सरकार को भी यह सोच लेना चाहिये कि कहीं उसकी दमन-नीति का भी तो ऐसा ही फल न निकलेगा? हम बोलशिविज़्म के पक्षपाती नहीं, उसके कितने ही मुख्य नियमों से हमें मतभेद है अतः हम नहीं चाहते कि हमारे देश में बोलशिविज़्म की लहर चले परन्तु हमें आशंका अवश्य है कि कहीं सरकार की दमन-नीति यह कार्य कर न दिखलाये।

सरकार अपनी दमन नीति में अवश्य असफल रहेगी यह निश्चय है। इस समय षडयन्त्रकारियों के साथ किसी की भी सहानुभूति नहीं है। यदि उन पर साधारण कानून के अनुसार अभियोग चलाये जायें तो इस से उनको कोई महत्व नहीं मिलता, परन्तु यदि बिना अपराध बतलाये उनको बन्दी कर लिया जाय, या अधूरे कानून का आश्रय लेकर उनको प्राण दण्ड अथवा अन्य किसी प्रकार का दण्ड दिया गया, तो वह सर्वसाधारण की दृष्टि में वीर और शहीद का स्थान प्राप्त कर लेंगे। उनके कष्टों पर, उनके वास्तविक कारण से अज्ञानता रहने से जनता के मन में दया और अनुकम्पा का भाव उत्पन्न हो जायगा। यह षडयन्त्रकारी भूले और भटके हुये युवक हैं जो कि मातृ-भूमि को रक्त की नदियों में से खेंचकर स्वतंत्रता की वेदी पर बिठलाना चाहते हैं, अथवा उस शासन का अन्त करना चाहते हैं जिसमें माता की सन्तति अन्न और वस्त्र के लिये तड़फ रही है, जिसकी मानमर्यादा की भावनाओं को क्षण क्षण पर ठुकराया और अपमानित किया जाता है। अपने देशवासियों के क्लेशों से पीड़ित होकर, अपने किसी स्वार्थ से नहीं, वह इस उलटे मार्ग का अवलम्बन करते हैं। अतः उनके जैसे मतिमन्द और विवेक शून्य अन्य युवकों के हृदय में उन की शहादत अनुकरण का भाव पैदा कर सकती है। सरकार का जो आशय है कि वह दमन द्वारा इस प्रकार के विचार रखने वालों के हृदय में इतना भय और आतंक पैदा कर देगी कि वह प्राण दण्ड अथवा अन्य प्रकार के कठोर दण्ड के भय से इस काम से बचे रहेंगे वह विफल होगा। एक समय था जबकि लोगों के मन में कायरता थी, वह सरकार की रीति और नीति के विरुद्ध लिखकर या बोलकर अभियोग चलाये जाने पर भयभीत हो अपने बचाव के अनेक प्रकार के मार्ग सोचा करते थे, और कानून की तोड़ मरोड़ और वकीलों के शब्दाडम्बर द्वारा अपने बचाव का मार्ग ढूंढा करते थे। जब इस मानसिक दुर्बलता के समय भी सरकार दमन नीति में सफल न हो सकी तब अब तो उसकी सफलता और भी कठिन है। महात्मा गाँधी के पुण्य प्रताप और निरन्तर उद्योग का फल है कि आज लोगों के हृदय में अपने विचारों के लिये वह भय नहीं जो उन्हें दबा सके। क्या चार वर्ष पहिले यह सम्भव था कि कोई भारत के लिये पूर्ण स्वतन्त्रता की आवाज़ निकाल सकता? परन्तु आज कितने ही व्यक्ति निर्भय होकर इसकी घोषणा कर रहे हैं। सो यदि सरकार का बल प्रयोग कहीं निर्दोषियों पर भी जा पड़ा—जिसकी बड़ी सम्भावना है—तो उन की निर्दोषता ही उनको अभय कर देगी। फिर इस से निराशा की और भी वृद्धि होगी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कई युवक यह समझने लगेंगे कि वह रोटी मांगते हैं और उन्हें पत्थर दिये जाते हैं। इस निराशा से उनके और भी उद्दण्ड हो जाने का भय है। जिस बात को रोकना चाहते हैं उसकी और भी वृद्धि की आशङ्का है।

इस दमन नीति का एक परिणाम यह होगा कि सरकार का धार्मिक गौरव (Moral prestige) नष्ट हो जायगा। आज हम यह अपने सामने देख रहे हैं। गोरे शाही समाचार पत्रों को छोड़ कर क्या भारत में कोई नेता, कोई पत्र ऐसा है जो सरकार की नीति का समर्थन करता हो? चारों ओर से—चाहे वह उदार दल वाले हों अथवा राष्ट्रीय दल वाले, स्वराज्यवादी हों अथवा असहयोगी; सभी सरकार की नीति की घोर निंदा कर रहे हैं। इलाहाबाद का 'लीडर' पत्र उदारदल का एक मात्र मुख्य पत्र है; मदरास का "जस्टिस" अछूत जाति का पत्र होने से सर्व प्रकार के जातीय राजनैतिक आन्दोलन और संस्थाओं का कट्टर विरोधी और सरकार की नीति का अक्षरशः पक्षपाती रहा है। आज यह दोनों पत्र भी इस दमन को देख कर सरकार की निंदा कर रहे हैं। उदारदल के मुख्य नेता श्रीयुत शास्त्री महोदय ने भी इस की बड़ी कड़ी आलोचना की है। श्रीमती ऐनीविसेन्ट भी स्वराज्य पार्टी पर किये गये इस आक्रमण का विरोध किया ही चाहती हैं। हम पूंछते हैं कि आज कौन सरकार के साथ है? क्या सरकार का यह दावा है कि वह जो कुछ करती है वही ठीक है और बाकी का समस्त भारत मूर्ख है? यदि उसकी यह धारणा है तो यह दर्प और अहंकार की पराकाष्ठा है और दर्प का नाश अवश्यम्भावि है। ऐसा भी काम क्या जिससे किसी को प्रेम न हो, सहानुभूति न हो, विश्वास न हो। कोई भी प्रजाहित का कार्य प्रजा को साथ लिये बिना नहीं हो सकता।

क्या सरकार और आगे पग उठाने के पूर्व अपनी इस नीति पर पुनः विचार करेगी और अपने गौरव को नष्ट न करने वाले मार्ग का अवलम्बन करेगी? यदि सरकारके पुराने इतिहास पर दृष्टि डालें तब तो कोई आशा नहीं। प्रभु ही भला करें।

क्या यह प्रजाहित के लिए है?

सरकार कहती है कि शांति प्रिय जनता की षड़यन्त्र कारियों द्वारा की गई नर हत्या का विरोध करने के लिये ही उसे ऐसे कठोर उपायों का अवलम्बन करना पड़ा है। वह यह सह नहीं सकती कि निर्दोष व्यक्तियों की हत्या हो। उस हत्या को रोकना किसी भी सभ्य सरकार का धर्म है।

भारत में इस प्रकार के षड़यन्त्रों के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता लगता है कि आजतक इन मूर्खों द्वारा अधिक से अधिक बीस पच्चीस आदमियों की हत्या हुई होगी और एक दो लाख का धन हरण किया गया होगा। प्रजा की इतनी आपत्ति भला प्रजावात्सल्य सरकार किस प्रकार सहन कर सकती है। उसको रोकने के लिए भरसक यत्न करना उसका धर्म है। यही लार्ड लिटन और लार्ड रेडिंग का दमन के पक्ष में उत्तर है।

क्या हम पूंछ सकते हैं कि यदि सरकार को प्रजा से इतना प्रेम है तो दूसरी ओर प्रजा के दुःख हरण के लिये क्यों नहीं मड़पड़ता? गत तीन वर्षों से हिंदू मुसलमानों में आपस में दंगे फिसाद होरहे हैं। सहस्रों आदमी मारे जाचुके हैं और लाखों की धन सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है। क्या यह अबलाओं और निरापराधियों की हत्या, प्रजा धनों का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपमान सरकार के दिल पर चोट नहीं लगाता ? क्या इन दंगों में प्राप्त मृत्यु मीठी है ? और षड़यन्त्र कारियों के द्वारा प्राप्त मृत्यु अधिक भयावनी है ? यदि नहीं, तो हम पूंछते हैं कि सरकार ने इन हत्याओं के रोकने के लिये क्या किया ? इस ओर सरकार का प्रजा प्रेम क्यों नहीं झुकता ? क्या इस उपद्रव को रोकने के लिये वायसराय महोदयने आर्डिनांस नहीं निकाल सकते ? फिर क्यों इधर ध्यान नहीं दिया जाता ? क्यों इन आपस के फिसादों को असम्भव नहीं बना दिया जाता ? क्या इस अवहेलना का कारण यह है कि जनता आपस में कटती मरती है और इस से शासकवर्ग की अपनी स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता वरन् वह और दृढ़ होरही है। परन्तु फिर सरकार का प्रजाहित और जनता की रक्षा का दावा कहां रहता है ?

पंचदश हिंदी साहित्य सम्मेलन।

८ नवम्बर १९२४ को देहरादून में पंचदश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन बड़े समारोह के साथ प्रारम्भ हुआ। इस वर्ष यद्यपि प्रथम मनो-नीत सभापति श्री राधाचरण जी अस्वस्थ होने के कारण पधार न सके तथापि उनके स्थानापन्न माधवराव सप्रेजी ने यह पद स्वीकार कर सम्मेलन की आभा को कुछ कम नहीं बढ़ाया। इस वर्ष सम्मेलन में कई विशेषतायें थीं उन में से दो चार उल्लेख्य हैं। प्रथम तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदगान से सम्मेलन का प्रारम्भ, दूसरी बहुसंख्या में बिना परदे के देवियों का उपस्थित होना, तथा नाभा नरेश का शुभागमन।

सभा मंडप खूब सजा हुआ था। पहिले स्वागताध्यक्ष पं० नरदेव शास्त्री जी ने अपना मुद्रित भाषण पढ़ा जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया, फिर सभापति का निर्वाचन हुआ। श्री० पंडित जगन्नाथ चतुर्वेदीजी ने सभापति का निर्वाचन करते हुये अपने चित्तविनोदात्मक भाषण में जो शब्द जाल बनाया था वह भी शब्द रचना की दृष्टि से उल्लेख्य योग्य है। आपने कहा कि-"हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् सप्रेजी इस सभापति के पद के लिये सर्वथा उपयुक्त हैं। पूज्यपाद राधाचरण जी गोस्वामी मनोनीत हुये थे ! पर विधि की विडम्बना से इस सम्मेलन में राधा जी तो पधारे नहीं, माधव जी पधर गये। माधव ने भारतवर्ष में गीता प्रगट की और आपके मनोनीत माधव ने भी हिंदी जगत में गीता प्रगट की। राधा चरण तो आये नहीं पर माधवचरण आये" सभापति के निर्वाचन के पश्चात् हमेशः की कार्य्यवाही हुई। सभापति का मौखिक हिंदी भाषण बहुत प्रभावशाली था। इस के बाद सम्मेलन के मन्त्री ने वार्षिक रिपोर्ट सुनाई, सहानुभूति के तार, पत्र पढ़े गये। और फिर वक्तायें हुईं। श्रीमती पार्वती देवी ने बड़ी ओजस्विनी वक्तृता द्वारा हिंदी प्रचार पर बल दिया। हेमन्त कुमारी चौधरी की भी वक्तृता हुई।

इस वर्ष पास हुये प्रस्तावों की संख्या थोड़ी रही, परन्तु उपयुक्त प्रस्ताव थे जिनकी सूची अगले अंक में दी जा सकेगी। स्थानीय सज्जनों ने सूरदास नाटक खेला। कवि सम्मेलन भी हुआ। आगामी अंक में इस का कुछ विस्तृत वर्णन देने का प्रयास किया जावेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES

This is the very newest style wristlet watch. These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

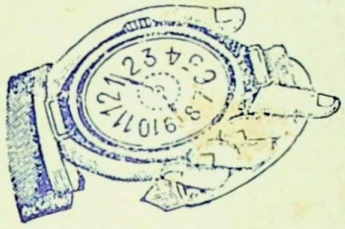

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra.

N. B.—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial Alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-rike freshly plucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
½ Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
„ „ Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

भारत सरकारसे रजिस्ट्री किया हुआ

४७००० एजेन्टों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस के सेवन करने से कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त इन्फ्लूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≋)

दद्दुगजकेसरी

दाद की दवा

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।) डा० ख० १ से २ तक ≋) १२ लेने से २) म घर बठे दगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बचों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइये, बच्चे इस खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ≋)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगा कर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महा भारत

भाषा भाष्य समेत सरल और सुबोध अनुवाद प्रतिमास १०० पृष्ठ दिये जाते हैं। मूल श्लोक और उसका सरल अर्थ मुद्रित हो रहा है।

१०० पृष्ठों का एक अंक, इस प्रकार के १२ अंकों का अर्थात् १२०० पृष्ठों का मूल्य मा० आ० से ६) और वी० पी० से ७) रु० है।

अति शीघ्र ग्राहक बन जाइये। नमूने का पृष्ठ मंगवाइये। और अपने मित्रों को बताकर ग्राहक बढ़ाने की सहायता कीजिये।

कागज और छपाई अति सुंदर है। चित्र भी दिये जांयगे।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल,

औंध (जि० सातारा)

☞ BE REST ASSURED—

THAT OUR

WALL CLOCK

'TIC-TAK' (Regd.)

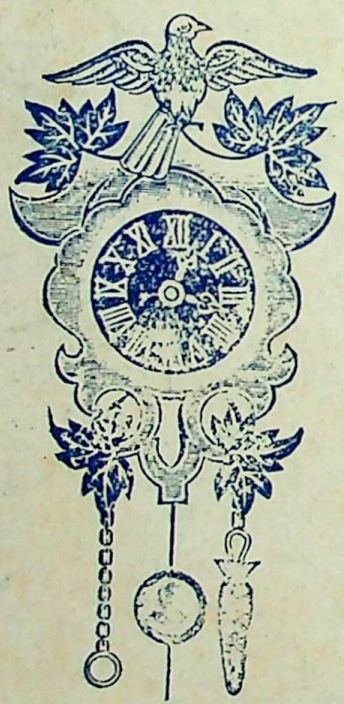

GIVE YOU PERFECT TIME.

OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.

PRICE Rs.

THREE only.

Order now if you have not already orderd.

Peter Watch Co.,

Post Box No. 27,

MADRAS.

सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय दरियागंज दिल्ली में पं० अनन्तराम शर्म्मा के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ५] मार्गशीर्ष १९८१—दिसम्बर १९२४ [खण्ड ५, संख्या ८

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची।

—:(*):—

विषय		पृष्ठ
१.	परिचय-लेखक 'जीवन' ...	३६१
२.	लड़का या लड़की ... ... ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्ता लंकार	३६२
३.	शुभ सन्देश— ... ... ले०-जगन्नारायण देव शर्म्मा कवि पुष्कर	३६६
४.	मनुष्यों और पशु पक्षियों के कार्यों में भेद— ... ... ले०—श्री० गुरुदत्त सिद्धान्तालंकार	३६८
५.	परिवर्तन—ले०—श्रीकृष्ण पांडे	४०३
६.	भानुभवन या मोहन माया ... अनु० - कुमारी सुमित्रा देवी	४०७
७.	रामलीला के राम ... ... ले०—पं० सन्तलाल द्विवेदी	४१५
८.	नवयुग—ले०—'श्रीहरि'	४१८
९.	वैज्ञानिक संसार ...	४१८
१०.	हमारी मंजूषा ...	४२१
११.	कुसुमोद्यान ...	४२१
१२.	वनिता विनोद ...	४२६
१३.	विचार प्रवाह ...	४३६

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष जनवरी से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआडर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

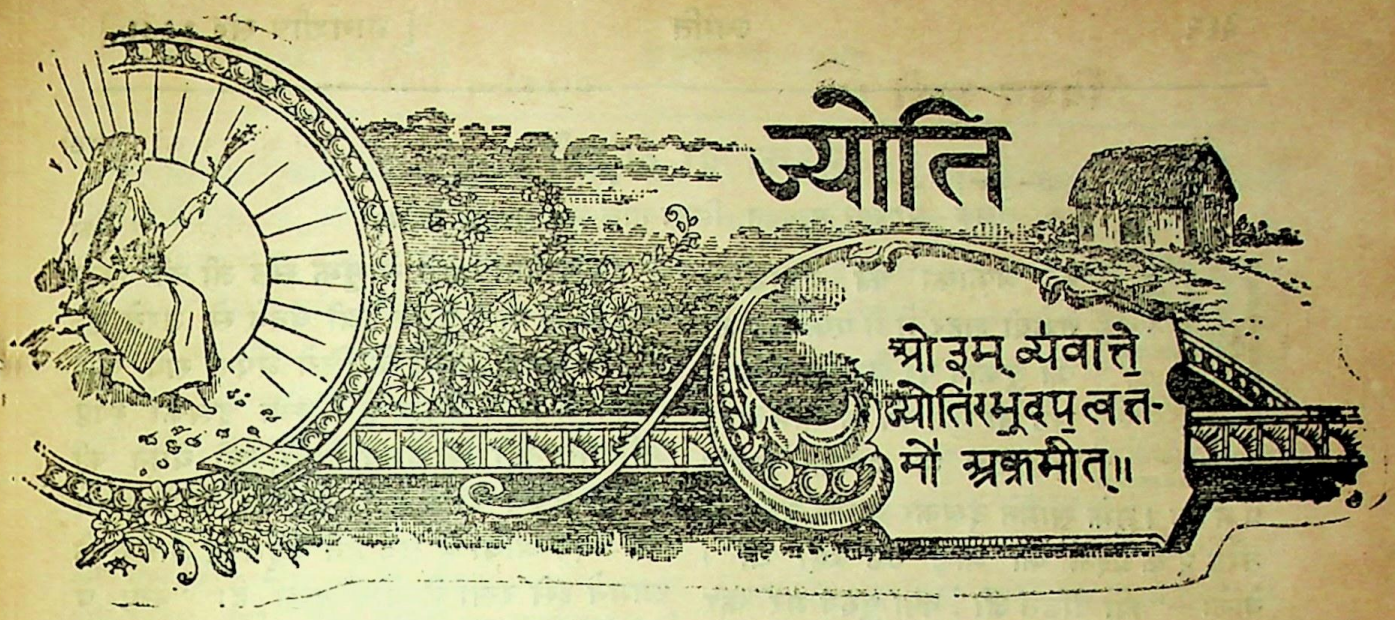

वर्ष ५ | मार्गशीर्ष १९८१–दिसम्बर १९२४ ई० | संख्या ८

'परिचय'

लेखक—"जीवन"

'कौन हैं ये ?' ये जननि के लाल हैं।
काल अरि के, बन्धुओं के ढाल हैं।
'काम इनका ?' दूसरों का काम है।
'धाम इनका ?' देश सारा धाम है। १।

'स्नेह ?' बस कर्त्तव्य ही से स्नेह है।
'देह ?' उसके सामने क्या देह है।
'लक्ष्य ?' दुनियां दासता से मुक्त हो।
हो सुखी, स्वाधीनता से युक्त हो। २।

'पथ ?' पसंद विचित्र ! कंटकपूर्ण है।
'रथ ?' अनोखा, चक्र चारो चूर्ण है।
'हय ?, हिचकते हैं, हटाते पैर हैं।
'सारथी ?' 'अद्भुत ! न लूंगा शस्त्र मैं,। ३।

'अस्त्र ?' इनके हाथ ही हथियार हैं।
प्राण देने के लिए तैयार हैं—
जो; भला फिर अस्त्र ले वे क्या करें ?
'डर ?' बिगाड़ा है नहीं, फिर क्यों डरें? ४।

'भाव ?' इनका हृदय है भावा-भरा।
'दुःख ?' चसका दुःख का इनको बड़ा।
'सुक्ख ?' इनके वास्ते तो शाप है।
'नीति ?' अरि को दुःख देना पाप है। ५।

'प्रीति ?' तो क्या मारते हैं ये कभी ?
'जीत फिर ?' तो हारते हैं ये कभी ?
'किस तरह ?' इनका अटल विश्वास है ?
नम्रता से शत्रु बनता दास है। ६

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लड़का या लड़की

लेखक—प्रोफ़ेसर सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, गुरुकुल काँगड़ी

ईस्ट अफ़्रीका की राजधानी नैरोबी शहर में मैं एक सेठ जी की दुकान पर बैठा हुआ था। सेठ जी गुजरात के रहने वाले थे। धर्म से आपको विशेष प्रेम था। मुझे सामने देखकर आपके हृदय में तरह २ के प्रश्नों की भीड़ उठ रही थी। बोलेः—"क्यों पंडित जी! क्या पुरुष मर कर स्त्री भी हो सकता है?" मैंने जो भी उत्तर देना था देकर सोचना शुरू किया। "पुरुष, स्त्री बनने से घबराता है। सारे संसार की सम्पत्ति मिलने पर भी पुरुष स्त्री बनने के लिये तैयार नहीं दीखता। क्या सचमुच स्त्री-योनि पुरुष की अपेक्षा निचले दर्जे का जीवन है?" पहले मेरे सामने ऐसे प्रश्न कभी नहीं आये थे। नैरोबी के सेठ जी के जीवन का तो यह बड़ा भारी प्रश्न मालूम पड़ता था। उनकी दुविधा को देख कर मुझे बहुत हंसी आती और कभी २ तो मज़ाक करने की यहां तक सूझती कि उन्हें जाकर कहूँः—"दूसरा कोई स्त्री बने या न बने, आप तो अगले जन्म में ज़रूर स्त्री बनोगे।"

सर्दियों के दिन थे। मैं बैठा हुआ पुस्तक पढ़ रहा था। पास के कमरे में कुछ बहनें आग ताप रहीं थीं। एक बहिन बोलीः—"न जाने क्या पाप किया था कि परमात्मा ने स्त्री-योनि में डाल दिया। अब तो रोज़ परमात्मा से यही प्रार्थना करती हूं कि अगले जन्म में किसी भी तरह से पुरुष बनावे। आज़ादी नहीं, चलना फिरना बन्द, हंस नहीं सकतीं, बात नहीं कर सकतीं, मनमाना काम नहीं कर सकतीं। पापों का फल नहीं तो क्या है?"

इस बात चीत ने मुझे सेठ जी की फिर याद करा दी। पुरुष, स्त्री बनने से डरते हैं; स्त्रियां, पुरुष-जीवन के लिये अपना सब कुछ वारने के लिये तैयार हैं। क्या इसका स्पष्ट अभिप्राय नहीं कि पुरुष योनि, स्त्री योनि की अपेक्षा उच्च योनि है? जब से मेरे सामने यह प्रश्न आया है तब मैंने बहुत से भाइयों के सामने इसे रखा है और पूछा हैः "क्या वे अगले जन्म में स्त्री होना पसन्द करेंगे?" प्रश्न करते साथ ही सब के हाथ कानों की तरफ़ गये और वे दीर्घ श्वास लेकर परमात्मा को स्मरण करते हुए बोलेः "भगवान् कभी ऐसा न करे"! इसके प्रतिकूल मैंने माताओं और बहनों के सामने भी यही प्रश्न रख कर पूछाः—"क्या वे अगले जन्म में भी स्त्री होना चाहती हैं?" सर्द आहों से सदा उत्तर निकला—"नहीं!"।

कई दार्शनिक, आत्मा को भी पुमान् तथा स्त्री मानते हैं उन के मत में पुरुष किसी भी जन्म में स्त्री नहीं हो सकता; स्त्री किसी भी जन्म में पुरुष नहीं हो सकती। स्त्रियों से यदि पूंछा जाय कि वे इस सिद्धान्त के विषय में क्या समझती हैं तो मुझे निश्चय है कि वे झुंझला कर उत्तर देंगी कि यह सिद्धान्त किसी पुरुष की गढ़न्त है। यदि किसी स्त्री को दार्शनिक सिद्धान्त निकालने की छुट्टी होती तो वह कहती कि प्रत्येक स्त्री अगले जन्म में पुरुष बन जाती है और पुरुषों को स्त्री जन्म लेकर सड़ना पड़ता है!

यूरुप के पुरुषों तथा स्त्रियों का भी यही हाल है। जिस जहाज़ से मैं भारत को लौट रहा था उस में कई अंग्रेज़ भी थे। नैरोबी के सेठ जी का प्रश्न मेरे दिमाग़ में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताज़ा ही था। बात चीत में मैंने अपने एक अंग्रेज दोस्त से भी यही प्रश्न कर दिया। वह बड़ी ज़ोर से टेबल पर हाथ पटक कर बोलाः—"छिः! स्त्री होना परमात्मा के न्याय में सब से बड़ा दण्ड है। उन का जीवन पशुओं से भी अधिक पशुता का होता है।" वह अंग्रेज़ काफ़ी पढ़ा लिया था और पुनर्जन्म के सिद्धान्त में भी विश्वास करता था।

मुझे इस सम्बन्ध में किसी अंग्रेज़ स्त्री के विचारों को सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ परन्तु यदि कल्पना कोई चीज है तो मैं उन के विषय में भी यही कल्पना कर सकता हूँ। युरुप में स्त्रियों को पर्याप्त स्वतंत्रता मिली हुई है परन्तु वहां की देवियां भी उन पर किये गये अत्याचार के लिये परमात्मा को कोसती ही होंगी, यही मेरा विश्वास है।

मुझे निश्चय है कि मेरी इन पंक्तियों को जो भाई बहिन पढ़ेंगे वे सिर हिला २ कर दस बार कहेंगे—"लिखा तो बिल्कुल ठीक है!"

* * *

ठीक या गलत, मेरे हृदय में बार २ यही विचार उठता है कि स्त्री-योनि के प्रति जो घृणा के विश्वव्यापी भाव दिनों दिन प्रबल हो रहे हैं? क्या वे यथार्थ हैं? क्या उन का निवारण नहीं किया जा सकता? क्या स्त्रियों को जिस योनि में परमात्मा ने उत्पन्न किया है उसी में उन्हें सन्तोष नहीं दिया जा सकता स्त्रियां दिल मार, कर दूसरा कोई चारा न होने के सबब से ही नहीं परन्तु इच्छा पूर्वक स्त्री होना पसन्द करें, क्या ऐसी अवस्था नहीं लायी जा सकती? मैं तो इस से भी एक दम आगे बढ़ कर सोचता हूँः—क्या पुरुषों के हृदय में भी स्त्री जन्म के प्रति ऐसे सन्मान के भाव को उत्पन्न नहीं किया जा सकता जिस से पुरुष भी अगले जन्म में स्त्री होना ही पसन्द करने लगें।

इस में कोई सन्देह नहीं कि समाज के अत्याचारों से पीड़ित बहिनें इन बातों को पढ़ कर उदासी की हंसी हंस देंगी: स्त्रियों के दैवीय भाव को न पहिचानने वाले अत्याचारी पुरुष थोड़ा सा खांस कर विषाद के अन्धकारमय आवरण से मस्तिष्क मंडल को ढांप लेंगे, परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि विवेकी भाई बहिन इन प्रश्नों को सुन कर माथा खुजलाएंगे और सोचेंगे—"क्या स्त्रियों के प्रति इस घृणा का अन्त नहीं हो सकता!"

* * *

मैं अपने देश के इतिहास के पन्नों को पलट रहा था। मैंने पढ़ा कि मेरे देश की माताएं मध्य कालीन इतिहास में लड़की को पैदा होते ही श्मशान का तरफ़ ले चलती थीं। मैंने पुस्तक बन्द कर उन बहिनों को स्मरण किया और उनकी स्मृति में उबलते हुए आंसू बहाने लगा। न जाने जिस कन्या को जीते जी लुप्त कर दिया गया, किस घर की रानी बनती किस हृदय-मही का शासन करती और किन नृसिंहों को जनती!

मैंने पढ़ा कि प्राचीन काल में पत्नियां हृदय---सम्राट् पतिदेव के मरते ही उसके साथ सती हो जाती थीं। मैं ढूंढने लगा कि क्या कोई पति भी अपनी प्राणप्रिया पत्नी के संसार को छोड़ते ही उसके साथ कूच कर गया है? मेरे देश का इतिहास इस विषय में मौन साध कर खड़ा हो गया! कुछ काल अनन्तर पत्नी के लिये सती होना बाधित हो गया और पति परमात्मा के पवित्र नियमों का उच्छृङ्खलता से उल्लंघन करने लगा। यदि स्त्रियों पर यह अत्याचार न होता तो न जाने शायद स्त्रियां आज अपने भाग्य से सन्तुष्ट ही दिखाई देतीं!

मेरे मित्र का आठ बरस की एक लड़की थी। लड़की की माता को उसकी छोटी से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छोटी भूल पर भी इतना क्रोध उठता था कि वह ज़रा २ सी बात पर लड़की का गला घोंटने तक लपकती थी। वह लड़की को उसके किसी वैय्यक्तिक दोष के कारण नहीं किन्तु केवल लड़की होने के कारण ही परमात्मा की तरफ़ से अपने कुल पर भयंकर शाप समझती थी। मैं बैठा २ सोचता था—"बेचारी भूल गई कि यह स्वयं किसी समय लड़की थी और अब भी मनुष्य नहीं हो गई!" परन्तु फिर एक दम विचार आता—"इस का भी क्या दोष है? यह लड़की को किसी द्वेष के कारण नहीं परन्तु प्रेम के कारण ही मारना चाहती है। स्वयं स्त्री होने के कारण स्त्री होने के परिणामों से भली भांति परिचित है!"

मुझे एक विवाह में सम्मिलित होने का निमन्त्रण मिला। पता चला कि लड़की ने लड़के को कभी देखा तक न था। याद आया कि भारत में तो यह रोज़ की कहानी है। यहां की लड़कियों को चाहे कितनी ही शिक्षा दी जाय, उन से आशा की जाती है कि विवाह के विषय में वे मुंह न खोलें। चुप रहें, हृदय के कपाट पर ताला ठोक दें। हमारी बहिनें भी ऐसे वायु मण्डल में पल कर यही समझने लगी हैं। वे समझती हैं कि खाने पीने, चलने, फिरने में वे पुरुषों की तरह जीवित हैं परन्तु विवाह के प्रश्न में वे मट्टी का ढेला हैं। लड़कियां सोचती होंगी कि यदि वे लड़का होतीं तो स्वतंत्र इच्छा से जैसी मर्जी होती किया करतीं। अफ़सोस कि इस जन्म में वे लड़की बन नहीं सकतीं और अत्याचारपूर्ण अवस्थाओं को बदलने के लिये उन की तरफ़ से कोई उद्योग नहीं।

बैंगलौर में मुझे एक अंग्रेज़ी तरीके की शादी में सम्मिलित होना पड़ा। नाटकों में भी जिन बातों को असभ्य समझा जाता है वे बातें यहां सभ्य समाज में दिखाई दीं। स्त्रियों में जो स्वतन्त्रता मैंने वहां देखी उसे देख कर बड़ा हर्ष हुआ परन्तु, खेद से, वहां स्त्रियों में गम्भीरता का सर्वथा अभाव पाया। भारत की छोटी से छोटी लड़की गहरे से गहरा बनने का प्रयत्न करती है—कम से कम दिखावट तो अवश्य कर लेती है—परन्तु वहां तो उथले से उथला बनने का प्रयत्न था। कोई गहराई नहीं, शब्दों का कुछ अर्थ नहीं। जिस जीवन को उथला बनाने में दिन रात की मेहनत ख़र्च की जाय उसे मानवीय स्वभाव कैसे सराह सकता है। इसीलिये तो स्त्रियों को इतनी स्वच्छन्दता होते हुए भी युरुप की विरली ही स्त्रियां फिर से स्त्री बनने के लिये तैयार होंगी!

* * *

क्या स्त्रियों के प्रति घृणा के भाव का अन्त हो सकता है?"—हां, हो सकता है! एक ऐसा वायु मण्डल उत्पन्न करने की आवश्यकता है जिस में हमारी माताएं, बहिनें और देवियां खुली सांस ले सकें। ऐसी प्रबल लहरों को चलाने की जरूरत है जो स्त्री-जन्म की तुच्छता के विचारों को रेतीली चट्टानों से टकरा कर उन्हें चूर २ कर दें। ऐसे भावों को फैलाना ज़रूरी है जो 'देवी' शब्द का उच्चारण होते ही हमारे उन्नत मस्तिष्क को सन्मान के बोझ से नत कर दें। स्त्रियों के प्रति घृणा का भाव स्वयं काफूर हो जायगा।

परन्तु ऐसा वायुमंडल कैसे उत्पन्न किया जाय? ऐसी लहरें कैसे चलायी जांय? ऐसे भाव कैसे फैलाए जांय?

मेरा उत्तर है:—"क्रियात्मक जीवन से!"

स्त्रियां प्रत्येक कार्य के लिये पुरुषों की तरफ़ देखा करती हैं। यदि यह कार्य भी पुरुषों के हाथ से ही करवाना है तो इस काम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को हाथ न लगाना ही अच्छा है। पुरुषों से ही यह काम हुआ तो जिस बात का अभी तक रोना रोया है वह पक्की हो जायगी और स्त्रियों की निस्सारता सदा के लिये प्रमाणित हो जायगी। स्त्रियों को स्वयं हिम्मत करनी चाहिये। उन्हें अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिये कि उन्हें कोई मट्टी का ढेला कह कर न ठुकरा सके।

अब तक उल्टी लहरें छोड़ी गई हैं। स्त्रियों को किवाड़ों में बन्द रखा गया है। उन का दम घोंटा गया है। उन्हें प्राण-वायु की बहुत न्यून मात्रा दी गई है। क्या हमारी बहिनें इन बन्धनों को झटका देकर नहीं तोड़ सकतीं! लड़कियों को लड़के बनने की ज़रूरत नहीं, लड़की रहते हुए ही अपने अधिकारों को समझने की ज़रूरत है! पुत्रियों को पिताओं से, बहिनों को भाइयों से और पत्नियों को पतियों से फैसला करना चाहिये। लड़कियां जी कड़ा कर माता पिता से पूंछ लें कि क्या उन्हें सास की कहानियें सुना २ कर ही डराया जायगा या उनके साथ भी लड़कों का सा बर्ताव किया जायगा! बहिनें अपने भाइयों से पूछ लें कि क्या वे स्वयं शिक्षा तथा स्वतन्त्रता पर एकाधिकार रखेंगे या उन्हें भी अपनी इच्छा से हाथ पैर हिलाने का मौका देंगे! पत्नियां अपने पतियों से प्रश्न करें कि क्या उन्हें प्राणधारी जीव समझा जायगा या परमात्मा की फूंक का खेल समझकर उन्हें खिलौना मात्र बनाया जायगा। जब हमारी बहिनों में यह हिम्मत आ जायगी तब उनके प्रति घृणा के भाव का अन्त हो जायगा और उनके क्रियात्मक-जीवन से उन का विजय होगा।

लोग कहेंगे, मैं स्त्रियों में बग़ावत फैला रहा हूं। मैंने एक भाई को यह लेख पढ़ कर सुनाया। वे बोले: अछूतों को भड़का कर आप लोगों ने सिर पर चढ़ाया अब स्त्रियों को भड़काइये और सिर चढ़ाइये। एक भूत के मारे ही जान आफ़त में थी अब दो भूतों से वास्ता पड़ेगा। मैं हंस पड़ा। मैंने कहा:- पहिले पुरुष सिर चढ़े हुए थे अब स्त्रियां चढ़ जांय तो बैलेन्स पूरा हो जायगा। या दोनों ही चढ़े रहेंगे या दोनों ही उतर जांयगे!

मैं ज्योति का कन्या गुरुकुलांक पढ़ रहा था। उस में 'एक एम० ए०' महोदय के लेख में पढ़ा:- "व्याख्यान जितना लम्बा चाहो दिलवा लो, शेक्सपीयर और टालस्टाय के लेखों में से चुने २ शब्द सुन लो...उन्हें तो मेम साहब बनने का शौक चर्राया है और वह तो प्रायः अपने साहब बहादुर के साथ और उनकी अनुपस्थिति में कभी २ उनके मित्रों के साथ सिनेमा की सैर करना जानती हैं।"

हां! यदि स्त्रियों को सिर पर चढ़ाने का यही परिणाम होना है तो मैं भी कान पर हाथ लगाता हूँ। इस से तो बेशक बैलेन्स पूरा नहीं होगा लेकिन बग़ावत ही फैलेगी। भारत की सुशील तथा गम्भीर देवियां युरोपियन महिलाओं की तरह उथली होने लगेंगी। प्रश्न फिर भी वैसे का वैसा बना रहेगा। योरुप की बहिनें भी तो स्त्री-जन्म को धिक्कारती हैं। वे भी अपने जीवन से सन्तुष्ट नहीं। शिक्षा, स्वतन्त्रता तथा अधिकारों ने मिलकर भी तो स्त्री योनि को पुरुष योनि के बराबर नहीं बनाया!

स्त्रियां जहां अपने अधिकारों के लिये लड़ें वहां अपने कर्तव्यों का भी ध्यान रखें। शास्त्रों के अनुसार स्त्री का स्त्री होने के कारण महत्व नहीं परन्तु माता होने के कारण ही महत्व है। युरुप की स्त्रियाँ स्त्री भाव में ही रहती हैं और इसीलिये लाख करने पर भी उन में स्त्री जन्म के प्रति सन्मान नहीं उत्पन्न किया जा सकता। वे जब तक इसी भाव में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहेंगी तब तक उनका जीवन भी उथला ही रहेगा। वे गन्ध हीन किंशुक पुष्प की तरह, सत्वहीन ढोल की तरह तथा चेतनाहीन लोहार की धौंकनी की तरह संसार में जियेंगी। उनकी क़दर इससे बढ़कर न हो सकेगी। प्रत्येक स्त्री को सब से बड़ा अधिकार माता बनने का दिया गया है और इसी लिये उसका सब से बड़ा कर्तव्य भी यही है। युरुप की महिलाएं यही सोचती हैं कि वे कितने नवयुवकों का मन हरती हैं; भारत की देवियों का आदर्श यह है कि वे कितनों के लिये माता का कार्य कर सकती हैं। युरुप के पुरुष, स्त्री के प्रति उस के स्त्री होने के कारण खिंचते हैं; भारतीय आदर्श में वही पुरुष, स्त्री के प्रति खिंचने का अधिकारी हैं जो उस में वर्तमान मातृ---शक्ति के सन्मुख सिर झुकाते हों। जब हमारी बहिनें इन आदर्शों को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप से घटा-लेंगी तब वे केसू के फूल की जगह कमल पुष्प बन जांयगी और तब स्त्रियों के प्रति घृणा के स्थान में संसार भर में उनके प्रति सन्मान का भाव उत्पन्न हो जायगा। तब सर्दियों के दिनों में मेरे पास वाले कमरे में आग सेकती हुई मेरी बहिन खुशी के मारे उछल पड़ेगी और कह उठेगीः "आहो मैं लड़की हूँ, लड़का नहीं!"

शुभ सन्देश।

ले०---पं० जगन्नारायणदेव शर्मा 'कविपुष्कर'।

(१)

दुखमयी दुर्भावनायें छोड़ के, काम जो आकर पड़ा उसको लखो।
मत अविद्या के निरन्तर दास हो, दीनता-दुर्दैव का कटु फल चखो॥

(२)

जाति जीवन को बचाओ कटि कसो, कूट-वाद विवाद से मित्रो! बचो।
कार्य- साधन के लिये उद्योग से, कुछ नियम सच्चे सुधारक के रचो॥

(३)

धर्म धन का न नाश होने दो, एक होकर गहो भली शिक्षा।
पैर पर हो खड़े बनो स्वामी, मांगने मत चलो उदर-भिक्षा॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४)

वर्ण-आश्रम को पुनर्जीवित करो भीरुता की रज्जु को अब तोड़ दो।
संघटन में पूर्ण तुम सब भाग लो, ऊपरी सब ढोंग अपने छोड़ दो॥

(५)

मत अधमता में पड़े दिन दो गंवा, नीच-निन्दा मौन मारे मत सहो।
शीघ्र निज कर्त्तव्य पै आरूढ़ हो, सत्यव्रत को शुद्ध मन होके गहो॥

(६)

हिन्दुओ! अब उठो बहुत सोये, मोह की है निशा बुरी बीती।
तुम समय से न काम क्यों लेते? चाहते जो सुकीर्ति को जीती॥

(७)

प्राण रहते प्रण न जाने दो कभी, देह की ममता वृथा की मत करो।
एक ईश्वर को सभी कुछ मानके, दूसरे नर से न किंचित भी डरो॥

(८)

जो न दोगे ध्यान अपने गर्व में, तो तुम्हारा स्वत्व भी छिन जायगा।
और तुम्हारा नाम जो सर्वोच्च है, तुच्छ श्रेणी में कहा गिन जायगा॥

(९)

संघ की शक्ति है बड़ी कलि में, प्रेम, का भाव ही अनूठा है।
स्वार्थ तज जो इन्हें न अपनाया, चाटता अन्त में अंगूठा है॥

(१०)

पूज्य अपनी मान रक्षा के लिये, तुम सकल संसार को दो यह बता।
'कल्प तरु हम हैं' न झूंठे वृक्ष हैं, यह नहीं अब तक किसी को है पता॥

(११)

मर गई जग में अनेकों जातियाँ, दुष्टता कर और मर मर जायंगी।
पर हमारी जाति के अस्तित्व की, सत्यता दृढ़ता-ध्वजा फहरायेंगी॥

(१२)

हम किसी से न द्वेष हैं करते, और न दुःख अन्य का कभी लखते।
जो हमें हाथ पर लिये रहता, हम उसे शीश पै सदा रखते॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनुष्यों तथा पशु पक्षियों के कार्यों में भेद ।

क्या मनुष्य में स्वतन्त्र कार्य करने की शक्ति (FREE WILL) विद्यमान है वा नहीं?

लेखक—श्री० गुरुदत्त सिद्धान्तालंकार

(अक्टूबर से आगे)

गतांक में हमने मनुष्य के स्वतन्त्र कार्य्य करनेकी शक्तिकी विद्यमानताको निरूपण करते हुए बहुत से प्रमाण और युक्तियां अपने पक्ष के समर्थन में दी थीं। उपर्युक्त सारी युक्तियों के अतिरिक्त एक और प्रबल युक्ति हमें मनुष्य में स्वतन्त्र कार्य्य करने की शक्ति (Free will) को मानने के लिये बाधित करती है। संसार के अन्दर पाप और पुण्य की सत्ता भी हमें मनुष्य में स्वतन्त्र इच्छा (Free will) मानने के लिये बाधित करती है। पाप, पुण्य की सत्ता को दुनियाँ के सभी धर्म तथा सभी तत्वज्ञानी और विचारक मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं। यदि मनुष्य के अन्दर कोई ऐसी चेतन-सत्ता विद्यमान नहीं है जोकि कार्य्य करने में पूर्ण स्वतन्त्र हो तथा अपनी इच्छा के अनुकूल शरीर पर शासन कर सके, जबतक कि मनुष्य के कार्य उस के अपने स्वतन्त्र निर्णय के परिणाम न हों, तबतक मनुष्य को धर्मात्मा अथवा अधर्मात्मा, पुण्यात्मा वा पापी किस प्रकार ठहराया जा सकता है? यदि हमारी सारी क्रियायें तथा कार्य किसी आन्तरिक स्वतन्त्र चेतन सत्ता द्वारा न की गई हों, अपितु वे बाह्य द्रव्य (Matter) से उत्पन्न (Sensation) इन्द्रियानुभवों से उत्पन्न होने वाली मस्तिष्क सम्बन्धीअणुओं (Cerebral atoms की गति का अथवा उनकी विशेष २ अवस्थाओं का परिणाम हों तो फिर मनुष्यों और पशु, पक्षियों के कार्यों में कुछ भी भेद न हुआ। क्योंकि पशु पक्षियों के कार्य भी ठीक इसी प्रकार के होते हैं। बाह्य द्रव्य (Object) पशु पक्षियों में एक नियत (Impulse) को पैदा करता है। उनके सारे कार्य्य बाह्य पदार्थ वा द्रव्य से उत्पन्न होने वाले इन्द्रियानुभवों (Sensations) द्वारा उत्पन्न नर्वस के अणुओं की गति अथवा नर्वस सम्बन्धी अणुओं की विशेष २ अवस्थाओं के परिणाम मात्र होते हैं। यदि पशु पक्षियों और मनुष्यों के कार्यों में कुछ भी भेद न माना जाय, तथा मनुष्यों के कार्य भी पशु, पक्षियों की तरह यान्त्रिक माने जांय तो फिर मनुष्योंको भी पशु पक्षियों की तरह सदाचारशून्य (Non-moral) प्राणियों की श्रेणी में गिना जाना चाहिये। यदि मनुष्य के सारे कार्य यान्त्रिक माने जांय और उसमें स्वतन्त्र इच्छा को न माना जाय, तो फिर पाप, पुण्य, कर्त्तव्याकर्त्तव्य तथा आचार, अनाचार में कुछ भी भेद नहीं किया जा सकता। क्योंकि जब पाप और पुण्य दोनों ही मस्तिष्क सम्बन्धी अणुओं (Cerebral atoms) की गति अथवा उनकी विशेष २ अवस्थाओं के ही परिणाम मात्र हैं, तो फिर पाप पुण्य में तथा आचार और अनाचार में कुछ भी भेद नहीं रहता। यदि मनुष्योंके कार्य भी पशु पक्षियोंकी तरह यांत्रिक ही होते हैं, तथा उसमें स्वतंत्र कार्य करने की शक्ति नहीं है, यदि Sensation द्वारा उत्पन्न मस्तिष्क संबंधी अणुओं की गतियां अथवा इनकी विशेष २ अवस्थायें ही केवल मात्र मनुष्यों के कार्यों की नियामक हैं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा मनुष्यों में स्वतंत्र कार्य करने की शक्ति को रखने वाली कोई चेतन सत्ता विद्यमान नहीं है, तब फिर पापी और पुण्यात्मा के कार्यों में कुछ भी भेद नहीं रहता। पापी मनुष्य के पाप कर्म उसके मस्तिष्क संबंधी अणुओं की भिन्न २ गतियों और विशेषावस्थाओं के परिणाम हैं, जिन्हें कि वह करने के लिये बाधित है। तब फिर पापी को अपने पाप कर्मों के लिये दंड क्यों दिया जाय? क्योंकि जब वह कार्य करने में स्वतंत्र नहीं है, तथा यंत्र और कला की तरह प्रकृति के आधीन है, ऐसी अवस्था में उसे अपने कार्यों का ज़िम्मेवार ठहराना तथा उनके लिये उसे दंड देना महान् अन्याय है। इसी तरह महात्मा गांधी जैसे पुण्यात्मा मनुष्यों को भी अपने पुण्य कार्यों के लिये किसी प्रकार का भी पुरस्कार, श्रेय तथा साधुवाद न मिलना चाहिये, क्योंकि यह उनके अपने प्रयत्न का परिणाम तो है ही नहीं, तो फिर उनकी प्रशंसा क्यों की जाय? इस तरह मनुष्य में free will को स्वीकार न करने से पाप और पुण्य की सत्ता ही इस दुनियां से नष्ट हो जाती है। जड़वादी वैज्ञानिक यह समझ ही नहीं सकता, कि वह अपने चन्द तुच्छ विश्वासों की रक्षा के लिये सदाचार और पुण्य जैसे अमूल्य रत्नों का नाश कर दुनियां को तबाह करना चाहता है।

यदि मनुष्य में Free will को स्वीकार न किया जाय, तो इस अवस्था में मनुष्य में उत्पन्न होने वाले सदाचार संबंधी संघर्ष (moral struggle) का-जिसे हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य में देवासुर संग्राम के नाम से पुकारा गया है—कुछ भी समाधान नहीं दिया जा सकता। क्योंकि मनुष्यों के कार्यों को यांत्रिक समझने वाले शुद्ध जड़-वादी वैज्ञानिकों को यह स्वीकार करना पड़ेगा, कि जैसे बाह्यद्रव्य पशु पक्षियों में एक नियत Impulse को पैदा करते हैं, तथा उनके कार्य उनमें बाह्य द्रव्यों द्वारा उत्पन्न नियत आँतरिक Impulse के प्रकाशक मात्र ही होते हैं—चूंकि प्रत्येक द्रव्य मस्तिष्क संबंधी अणुओं (cerebral atoms) में अपनी प्रकृति वा स्वभाव के अनुकूल एक नियत गति को ही पैदा कर सकता है-इस अवस्था में हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है, कि बाह्यद्रव्य द्वारा मस्तिष्क संबंधी अणुओं में दो परस्पर विरोधिनी गतियां किस तरह उत्पन्न हो सकती हैं? शुद्ध जड़वादी वैज्ञानिक न तो इसका कोई संतोष जनक समाधान ही कर सकते हैं और न ही वे इसका कोई भौतिक कारण ही बता सकते हैं। जिस प्रकार चूहे को देखते ही बिल्ली के नर्वस में एक विशेष प्रकार की गति उत्पन्न होती है, जिसकी प्रतिक्रिया अथवा जवाब के रूप में बिल्ली चूहेको देखते ही ज्ञानरहित मैशीन की तरह अंधाधुन्ध उसे पकड़ने के लिये दौड़ती है उस में किसी प्रकार का संघर्ष वा तर्कवितक पैदा नहीं होता। इसी प्रकार पशु, पक्षियों का प्रत्येक कार्य यन्त्रकी तरह नियत, अन्धाधुन्ध (Blind) तथा बिचार और संघर्ष रहित होता है। परन्तु मनुष्यों के कार्य पशु पक्षियों से बिल्कुल बिरुद्ध होते हैं। मनुष्यों में एक विशेष प्रकार का सदाचार संबंधी संघर्ष समय २ पर उत्पन्न होता है यह एक अनुभूत सचाई (fact) है। पापी से पापी पुरुष से लेकर ऊंचे से ऊंचे धर्मा-त्मा पुरुष तक प्रत्येक से इस उपर्युक्त सचाई की साक्षी ली जा सकती है। एक द्रव्य मनुष्य के मस्तिष्क संबंधी अणुओं में किस प्रकार इस तरह गति को पैदा कर सकता है, जो कि उस द्रव्य की स्वभाविक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकृति (Inherent nature) के विरोधी भाव या भावसमूहों को उत्पन्न करे ? एक महात्मा वा साधु स्वभाव पुरुष के मन में अपने कट्टर दुश्मन को देख कर एक दम बदले और क्रोध के भावों के साथ २ इनके विरोधी करुणा और क्षमा के भाव उत्पन्न होते हैं। उस समय इन दोनों प्रकार के परस्पर विरोधी भावों में संघर्ष उत्पन्न होता है। यदि मनुष्य में (Free will) को न मान कर उसके सभी कार्यों को यांत्रिक ही समझा जाय, तो इस अवस्था में किसी प्रकार का भी सदाचार संबंधी संघर्ष मनुष्यों में उत्पन्न न होना चाहिये। परन्तु यह संघर्ष जीवन में समय २ पर प्रत्येक मनुष्य में उत्पन्न होता है। यह एक अनुभूत सचाई है, इस से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। यदि मनुष्य में स्वतन्त्र कार्य करने की शक्ति को स्वीकार न किया जाय, तथा उसके प्रत्येक काय को यान्त्रिक ही माना जाय तो ऐसी अवस्था में मनुष्य में उत्पन्न होने वाले सदाचार संबंधी संघर्ष वा देवासुर संग्राम का जड़वादी वैज्ञानिकों तथा डार्विन और हैकल के अनुयायियों की तरफ से कोई भी संतोषजनक, भौतिक कारण नहीं बताया जा सकता।

मैकेनिज़्म (यंत्रविद्या) का यह सिद्धान्त है, कि भौतिक और यान्त्रिक गतियां सीधी रेखा में चलती हैं, तथा जबतक उनकी दिशा न बदली जाय, तबतक वे सीधी एक ही दिशा में चलती हैं। कोई भी यांत्रिक वा भौतिक गति एक क्षण वा एक ही समय में दो भिन्न २ वा विरोधी दिशाओं में कभी नहीं चलतीं। यंत्रविद्या (मैकेनिज़्म) के इस उपर्युक्त नियम के अनुकूल एक बाह्य पदार्थ (Object) एक ही समय में एक दिमाग़ के अणुओं में किस प्रकार से दो या दो से अधिक परस्पर विरोधिनी गतियों को उत्पन्न कर सकता है? यान्त्रिकता के सिद्धान्त को स्वीकार करने पर यह हमारी समझ में आ ही नहीं सकता, कि काम के भावों को पैदा करने वाले पदार्थ को देख कर एक महात्मा के मस्तिष्क संबन्धी अणुओं (Cerebral atoms) में इस प्रकार की गति कैसे उत्पन्न होती है, कि महात्मा को उस पदार्थ से घृणा पैदा होती है, तथा उस पदार्थ के स्वाभाविक गुण (Inherent nature) के विरोधी ब्रह्मचर्य्य संबन्धी भाव तत्काल ही उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं। कारण के विरोधी गुण भी परिणाम व कार्य में उत्पन्न हो सकते हैं, यह विचार तर्क और विज्ञान दोनों के ही विरुद्ध है। इसके स्वीकार करने पर हमें असत् से सत् की, तथा शून्य से भावमय पदार्थों की उत्पत्ति मानने के लिये बाध्य होना पड़ता है। यह सिद्धान्त केवल विज्ञान विरोधी ही नहीं अपितु बिलकुल मूर्खतापूर्ण (Absurd and Nonsense) है। अतः जड़वादी वैज्ञानिक तथा डार्विन और हैकल के अनुयायी मैकेनिज़्म के सिद्धान्त के अनुसार भी मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले सदाचारसंबन्धी संघर्ष (Moral struggle) का कोई भौतिक कारण नहीं बता सकते। मनुष्य के कार्यों को यान्त्रिक मानने पर मन में देवासुर संग्राम का छिड़ना मैकेनिज़्म के गति संबंधी सिद्धान्तके विरुद्ध है। परन्तु यह एक अनुभूत सचाई (fact) है, इससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। अतः जबतक मनुष्य में स्वतन्त्र कार्य करने की शक्ति को स्वीकार न किया जाय, तबतक मनुष्य में उत्पन्न होने वाले इस सदाचारसंबन्धी संघर्ष का भी कोई सन्तोषजनक समाधान नहीं दिया जा सकता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि मनुष्यों के कार्य को पशु, पक्षियों के कार्यों का तरह यांत्रिक माना जाय तथा मनुष्यों में एक ऐसी स्वतन्त्र चेतन अधिष्ठातृ सत्ता को स्वीकार न किया जाय, जो कि शरीर तथा मस्तिष्क की हरकतों और क्रियाओं का निरीक्षण करे, तथा इन्द्रियों,मन,तथा मस्तिष्कादि साधनों द्वारा अपने अनुकूल क्रियाओं को तो करवाये, परन्तु प्रतिकूल अथवा विरोधी कार्यों का विरोध करे तो इस अवस्था में मनुष्यों के कार्य भी पशु पक्षियों के कार्यों की तरह नियत और विकल्प रहित होने चाहियें।

कहा जा सकता है, कि मस्तिष्क की भिन्नता के कारण मनुष्यों के कार्यों में भिन्नता संभव है। क्योंकि संतति में मस्तिष्क पूर्व वंशजों अथवा माता पिता द्वारा संक्रान्त होता है, अतः संतति का मस्तिष्क पिता वा वंश के अनुकूल होता है। मस्तिष्क के भिन्न होने के कारण बाह्य द्रव्य या बाह्य परिस्थितियां भी प्रत्येक मनुष्य पर भिन्न २ प्रभाव डालती हैं, अतएव मनुष्यों की क्रियायें भी भिन्न होती हैं। वंशानुगत और पैतृक संस्कारों के अतिरिक्त शिक्षा भी मनुष्य के मस्तिष्क और उनकी क्रियाओं पर बड़ा भारी प्रभाव डालती है। भिन्न २ शिक्षा तथा समाज और राष्ट्र के भिन्न २ रीति रिवाज भी क्रिया भेद के प्रधान कारण माने जा सकते हैं। परन्तु परिस्थिति, पैतृक और वंशानुगत संस्कारों तथा शिक्षा के एक जैसा होने पर भी हम पिता पुत्र तथा भाई२ के संस्कारों तथा क्रियाओं में आकाश और पाताल का भेद पाते हैं। शुद्ध जड़वादी तथा भौतिक विकासवाद के अनुयायी इसका कोई संतोषजनक भौतिक कारण नहीं बता सकते। बालक मूलशंकर (स्वामी दयानन्द) में अपने वंश वा माता पिता द्वारा ही मस्तिष्क संक्रान्त हुआ था, माता पिताने उसे अपने अनुकूल ही शिक्षा दिलवाई थी। बालक मूलशंकर के बन्धु बांधव लोग,गुरुजन तथा उसके चारों ओर की सामाजिक परिस्थिति और सामाजिक रीति रिवाज उसके अनुकूल न थी। परन्तु बालक मूलशंकर और उसके माता पिता की प्रवृत्तियों और क्रियायों में आकाश पाताल का भेद दिखाई देता है। बालक मूलशंकर की बाल्य अवस्था से ही वैराग्य की ओर प्रबल प्रवृत्ति दिखाई देती है। बहिन की मृत्यु हो जाने पर माता पिता तो सर्वधारण पुरुषों की तरह रोने धोने में प्रवृत्त होते हैं, सारा घर तथा सारे बन्धुबांधव लोग शोकमें निमग्न हैं, परन्तु बालक मूलशंकर की आंखों से एक भी शोक का अश्रु नहीं टपका, वह तो उस दृश्य को देखकर एक तरफ निश्चेष्ट खड़ा हुआ किसी और ही गहरी विचारधारा में मग्न है। उस समय उसके हृदय और दिमाग़ वैराग्य की लहरों से आक्रान्त हो रहे हैं। ज्यों २ माता पिता उसे संसार के कड़े बन्धनों में जकड़ना चाहते हैं, त्यों २ मूलशङ्कर के हृदय में वैराग्य का अंकुर धीरे जड़ जमाता जाता है तथा वैराग्य की तरंगें प्रबल होती जाती हैं। ज्योंही माता पिता ने मूलशङ्कर को विवाह और गृहस्थ के कड़े बन्धनों में जकड़ने का पूरा उपक्रम बांध लिया, उसी समय मूलशङ्कर न घर को त्याग कर जंगल की राह पकड़ ली। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध भी राजवंश मेंउत्पन्न हुए थे, उनमें राजवंश का मस्तिष्क उसके माता पिता तथा वंश द्वारा संक्रान्त हुआ था। परन्तु बुद्ध की प्रवृत्तियां बाल्यावस्था से ही अपने माता पिता वा अन्य पूर्व वंशजों के विरुद्ध थीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसमें बाल्यावस्था से ही ब्राह्मणों और सन्यासियों की वैराग्यमयी सात्विक वृत्ति की प्रधानता थी। माता पिता तथा गुरुओं की तरफ से महात्मा बुद्ध की इस प्रवृत्ति को दबाने का यत्न किया गया। महात्मा बुद्ध को राजकीय ठाठ बाठ से वैराग्य की विरोधिनी राजसिक शिक्षा दी गई। महात्मा बुद्ध को राजसी ठाठ में पाला पोसा गया, उसपर चारों ओर से कड़ी निगरानी रखी गयी। भोग ऐश्वर्य और शृङ्गारमयी परिस्थिति में उसे रखा गया कि उसमें वैराग्य के भाव उत्पन्न ही न होने पायें, यहां तक कि माता पिता ने उसे विवाह और गृहस्थ के बन्धनों में भी फांस लिया, परन्तु अन्तिम परिणाम इन सब के विरुद्ध हुआ। वैराग्य की प्रबल लहर ने महात्मा बुद्ध के हृदय को आक्रान्त कर लिया, इससे प्रभावित होकर बुद्ध ने सारे राजकीय ठाठबाठ, ऐश्वर्य, भोग विलास और राजमहल को लात मार तथा साधुओं का वेश धारण करके जंगल की राह पकड़ ली। उपर्युक्त उदाहरणों में बालक मूलशंकर तथा महात्मा बुद्ध के कार्य उनके पैतृक और वंशानुगत संस्कारों, शिक्षा, रीति रिवाजों तथा उनके चारों ओर की बाह्य परिस्थितियों के विरोधी हैं। यदि मनुष्य के कार्य भी केवल मात्र मस्तिष्क सम्बन्धी अणुओं की गति या विशेष २ अवस्थाओं के ही परिणाम समझे जांय, तथा पशु पक्षियों के कार्यों की तरह यांत्रिक माने जांय, तथा आत्मा में कृतत्व-शक्ति वा कृतत्वके गुण (Causal efficacy) को न माना जाय, तो इस प्रकार का विरोध तथा कार्य वैलक्षण कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है।

जड़वादी तथा भौतिक विकास सिद्धांत के अनुयायी लोग इस उपर्युक्त Fact का न तो सन्तोषजनक समाधान ही कर सकते हैं और न ही वे इसके लिये कोई भौतिक कारण ही दे सकते हैं। यदि मनुष्य के काया को केवल मात्र उनके मस्तिष्क संबन्धी अणुओं की गति का ही परिणाम माना जाय तथा पशु, पक्षियों के कार्यों की तरह यान्त्रिक माना जाय, तो ऐसी अवस्था में यह प्रश्न उठता है, कि मनुष्यों के कार्य भी पशु पक्षियों की तरह नियत, अटल और विकल्पशून्य क्यों नहीं हैं? मनुष्यों में हर-क्षण नाना प्रकार के संकल्प क्यों उठते रहते हैं? मनुष्यों के कार्यों को यान्त्रिक मानने की अवस्था में एक यह भी शंका उठती है कि जैसे पशु, पक्षियों के कार्यों, क्रियाओं और हरकतों की पूर्व कल्पना (Prediction) हम भली भांति कर सकते हैं, कि अमुक २ पदार्थ के प्रत्यक्ष या दृष्टिगोचर होने पर तथा अमुक २ अवस्थाओं में अमुक २ पशु पक्षी निम्न २ क्रियायें अथवा निम्न २ हरकतें करेंगे, वैसे मनुष्यों के कार्यों के विषय में इस प्रकार की पूर्व कल्पना करना एक प्रकार से असम्भव है। जैसा कि पहिले ही बताया जा चुका है, कि मनुष्यों के कार्य और मार्ग परस्पर एक दूसरे से इतने ज़्यादा भिन्न हैं, कि उनके विषय में पूर्वकल्पना करना बिल-कुल असम्भव है। इन उपर्युक्त आक्षेपों के अतिरिक्त यान्त्रिकता के पक्ष पर अन्य भी बड़ी २ आपत्तियां उठाई जा सकती हैं। यदि मनुष्यों के कार्यों को नियत और यान्त्रिक मान लिया जाय, तो फिर आचार अनाचार, पाप पुण्य कर्त्तव्याकर्त्तव्य में कुछ भी भेद नहीं रहता। मनुष्यों के कार्यों को यान्त्रिक मानने पर इनकी सत्ता ही बिलकुल नष्ट होजाती है। इस अवस्था में सारा का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सारा सदाचार शास्त्र तथा सदाचार की निर्णायक भिन्न २ कसौटियां बिलकुल ही व्यर्थ हो जाती हैं। अतः उपरि वर्णित दोषों के कारण यान्त्रिकता का पक्ष केवल ग़लत ही नहीं, अपितु संसार और मनुष्यमात्र (Humanity) के वास्ते परम घातक सिद्ध होता है अतः हमें मनुष्य में स्वतन्त्र कार्य करने की शक्ति को अवश्य ही स्वीकार करना चाहिये।

परिवर्तन

(बंगाल के एकाल सेकाल के आधार पर)

(गतांक से आगे)

ले०—श्रीकृष्ण पांडे

फिर दोनों चुप होगये। स्वामी के कधेपर कंधा रख कर विमला सो रही थी, दुःख, दुर्भाग्य के प्रलय का गाढ़ अंधकार थोड़ी देर के लिये सुख सौभाग्य की उज्वलता से ढक गया। वर्षा बीत गई, तरंग का भी भय नहीं रहा। अपने दुर्लभ प्रेम से चुम्बन दान देकर निर्मल कहने लगा "शोभा! वह कौन है? उसके साथ मेरा क्या सम्बन्ध? केवल दो दिन की मुलाकात मात्र। और तुम, तुम चिरजीवन की—जीवन मरण की संगिनी हो।"

शोभा चाहे कोई क्यों न हो, उसके साथ स्वामी का चाहे जो सम्बन्ध हो, एक आर्य रमणी को, हिंदू गृहस्थ की बहू को, इसके विचारने की कोई आवश्यता नहीं। तबभी विमला का हृदय एक बार कांप उठा। उसने अस्पष्ट स्वर में कहा—"शोभा कौन? वह चाहै कोई हो, लेकिन तुम-तुम मेरे हो।"

इलाहाबाद के एक बड़े जमींदार बा. पूलिन बिहारी के एक मात्र पुत्र बा० नन्दकिशोर के साथ सतीश ने शोभा का विवाह कर दिया यद्यपि शोभा इस ब्याह के बिलकुल विरुद्ध थी, लाख चेष्टा करने पर भी वह निर्मल की याद को अपने दिल से दूर नहीं कर सकी, परन्तु भाई सतीश के अनुरोध की रक्षा न करने से उसे दुःख होगा, यह समझ और सतीश के विशेष आग्रह करने पर वह राजी होगई। दोनों ओर से बड़े २ आयोजन होने लगे। सतीश ने मन खोलकर खर्च किया, अगर उसे कोई खर्च कम करने के लिये कहता तो वह नम्र शब्दों में यही उत्तर देता कि-"मेरे एक ही बहिन है और वह भी दुर्भाग्य से मातृ पितृ हीन, अगर आज पिता जी या मां होतीं तो न मालूम और क्या २ होता, मैं तो कुछ भी नहीं करता हूँ।" बस इसके आगे किसी को कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं होती।

शोभा को ससुराल गये कई दिन हो गये, सतीश का अकेले घर में मन नहीं लगता। उसका कोई ऐसा मित्र भी नहीं जिसके यहां जाकर घंटा आध घंटा दिल बहला आवे, केवल एक निर्मल बाबू से ही उसका इतना परिचय था सो वह भी यहां नहीं हैं। इसीलिये वह मैदान में घूमने की गरज से घर से बाहर निकला, वह हरिसन रोड़ के चौहराहे पर पहुंचा होगा कि उसने निर्मल को ट्राम पर जाते देखा। दूरसे ही सतीश ने पुकारा "निर्मल बाबू! घर से कब आये?" निर्मल ट्राम से उतर पड़ा, उसने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सतीश के नमस्कार का उत्तर देते हुए कहा "आज सवेरे, कहिये आप सब मजे में हैं न?" "परमात्मा किसी तरह दिन काट देता है। कहिये घर से सब कोई को ले आये न?"

"नहीं अकेला मैं ही आया हूं।"

सतीश ने आग्रह से पूछा "कहां जारहे हैं, चलिये घर चलें। आजकल शोभा भी नहीं हैं सो....."निर्मल ने बीच ही में बात काट कर पूंछा "क्या शोभा यहां नहीं है, उसके तो बाहर जाने की कोई बात नहीं थी?"

सतीश—"नहीं बाहर जाने की तो कोई बात नहीं थी, लेकिन मन माफ़िक वर मिलने से विवाह में देर करने का साहस नहीं हुआ।"

निर्मल पूरी बात नहीं सुनने पाया, न मालूम किसने उसके कानों को बन्द कर दिया, उसके पैरों तले की मिट्टी निकल गई, सारा शरीर अवसन्न हो गया, और उस में अधिक देरतक खड़े रहने की शक्ति नहीं रही। अतः वह टेलीफोन के खम्भे का सहारा लेकर खड़ा २ कांपने लगा। उसकी यह हालत देख कर सतीश के आश्चर्य्य की सीमा नहीं रही। वह मन ही मन कहने लगा "यह देश का कितना गहरा अधःपतन है, जो शिक्षा के अभिमान से अपने आपको सर्वश्रेष्ठ समझते हैं वही इतने भ्रांत, इतने चरित्र हीन हैं, हाय अफ़सोस!" सचमुच ही उसके मन में बड़ा दुःख हुआ। उसने सहानुभूति पूर्ण शब्दों में कहा "हैं, हैं, यह क्या? आपतो रास्ते में ही बैठ गये, मेरे उधर चलिये न?"

निर्मल ने अपने आपको सम्भालते हुए बड़े कष्ट से उत्तर दिया "सतीश बाबू! माफ कीजियेगा। एकाएक मेरा शरीर कुछ गड़-बड़ होगया है अब मैं नहीं जा सकूंगा, क्षमा करें। कृपा करके एक गाड़ी मुझे भाड़े करदें ताकि मैं घर जा सकूं"। "अच्छी बात है।" कहकर उसने एक गाड़ी किराये पर कर निर्मल को उसमें बैठा, नमस्कार कर बोला "अच्छा, अभी आप जायं, किन्तु ऐसी अवस्था में आपका अकेले यहां आना अच्छा नहीं हुआ। अच्छा, स्वस्थ होने पर एक बार मुला-कात कीजियेगा।" यह कहकर सतीश चला गया। थोड़ी देर बाद ही गाड़ी निर्मल के दरवाजे पर पहुंच गई। गाड़ी वाले को भाड़ा चुका निर्मल अपने कमरे का दरवाजा बन्द करके सोगया। लेकिन चेष्टा करने पर भी उसे नींद नहीं आई, वह पड़े २ जमीन आस-मान के कुलावे मिलाने लगा। सोचते २ उसने अस्पष्ट स्वर में कहा "विमल! मेरे जीवन को इस प्रकार विफल करना क्या ठीक था? तब भी तो तेरी स्मृति को नहीं भूल सकता, तुम अगर किसी तरह मुझे रोक सकती तो आज मेरी यह दशा नहीं होती।" इतने में ही किवाड़ खोलकर बहरा ने प्रवेश किया, निर्मल ने पूंछा "क्या है?" बहरा ने डरते २ कहा "एक बाबू....." निर्मल ने कड़े स्वर में कहा "कह नहीं सका, तबीयत खराब है इतनी रात को नहीं जायेंगे।"

'इसका कुछ दोष नहीं जो कुछ भी कसूर है, सो मेरा है। सन्तान की माया के कारण असमय में ही आपको कष्ट दिया, इस को क्षमा करें।"

आगन्तुक वृद्ध का कातरभाव देख निर्मल पलंग से उठकर खड़ा हो गया और नमस्कार कर सहानुभूति से पूंछा "कहिये २ आपका क्या काम है?"

वृद्ध ने करुणस्वर से कहा 'डाक्टर बाबू! दया कीजिये। आपको कष्ट तो अवश्य होगा पर क्या करूं मेरी मातृहीना कन्या इस वक्त बड़े कष्ट में है।"

निर्मल ने बीच ही में बाधा देकर कहा "इतनी आजीजी की कोई जरूरत नहीं, मेरा तो यही काम है। कहिये कहां चल ना होगा?"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृद्ध ने कहा "यहीं पास में। इसी लिये तो यह सोच कर चला आया कि इतनी रात को किसे ढूंढने जाऊंगा, आप तो बगल ही में रहते हैं।"

निर्मल ने वृद्ध की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया, जल्दी से एक कमीज पहन और अपनी डाक्टरी कीबेग लेकर वृद्ध के साथ कमरे के बाहर चला आया। रास्ते में उसने रोगी की हालत जानने के लिये वृद्ध से कई प्रश्न किये लेकिन उसकी आशा पूर्ण नहीं हुई। लगभग १०-१५ मकानके बाद वृद्ध का मकान आगया, दोनों जने रोगी की शय्या के पास जाकर खडे हो गये। एक साफ़ सुथरे बिछौने पर एक युवती उत्सुक नेत्रों से बाहर की ओर देख रही थी,जैसे किसी की प्रतीक्षा कर कर रही हो। युवती से आंखे,मिलते ही क्षीण हंसी के साथ निर्मल ने सिर झुका लिया। युवती ने वृद्ध की ओर लक्ष करके कहा "बाबूजी आप आगये।" वृद्ध ने कन्या की बात पर कुछ ध्यान न देकर निर्मल से कहा "डाक्टर बाबू। यही मेरी एक मात्र कन्या है। आज सबेरे से ही माथे की वेदना से ही छटपटा रही है अभी आध घण्टे से तो दर्द और प्यास के कारण चिल्ला रही थी।"

युवती ने अपनी रसीली आंखों से कटाक्ष छोड़ मुस्कराते हुए कहा "ऐसी कोई बात नहीं है डाक्टर बाबू! किसी ने कहा है कि अधिक स्नेह होने से अनिष्ट की आशंका होती है, यह भी वही बात है?",

तरुण रमणी के कोमल कण्ठ से निकली हुई मधुर वाणी निर्मल के हृदय में वीणा की तार की तरह झंकारने लगी। वह अपने आपको भूल गया,शोभा और बिमला की बातें का उसे ध्यान तक नहीं रहा,थोड़ी देर के लिये उसका दग्ध हृदय शीतल होगया। लेकिन क्षण भर बाद ही उसने अपने को संभाल लिया। वृद्धने सस्नेह कहा "इस तरह रोग को मत छिपाओ नीलिमा?"

"रोग तो और कुछ नहीं, माथा दर्द करता था सो ओड़ी कालन दिया, थोड़ी देर में मिट जायगा" निर्मल इतनी देर तक अपने विचारों में मस्त था, रोगी के मुख से रोग सुनकर उसने वृद्ध से कहा—

"अब केवल दो तीन घण्टा रात और बाकी है, सुबह तक ओड़ी कोलन देकर काम चलावें सुबह खबर दीजियेगा। अगर आवश्यकता होगी तो प्रेसक्रीप्सन लिख दूंगा।" "यही ठीक है" कह कर नीलिमा ने भी निर्मल का समर्थन किया। वृद्ध ने फिर कहा "जरा नाड़ी देख लेते तो ....।" "नाड़ी क्या देखूंगा, केवल माथे का दरद तो है, और तो कुछ नहीं? अच्छा अब मैं जाता हूँ।" कह कर वह चेयर से उठ गया, वृद्ध एक दस रुपये का नोट देने लगे, निर्मल ने नम्र शब्दों में कहा—"इसकी कोई आवश्यकता न थी, मुझे तो कुछ करना नहीं पड़ा।"

वृद्ध ने संकोच के साथ कन्या की ओर देखा, नीलिमा ने पिता के हाथ से नोट लेकर कहा "नहीं ऐसा मत कीजिये। विजिट न लेने से पिता जी के मन में कुछ खटका होगा। सम्भव है वह समझने लगें कि कोई सख़्त बिमारी है।"इतना कहते २ नीलिमा ने निर्मल की पाकिट में नोट डाल दिया। निर्मल भी इसका विरोध न कर सका, अतः शीघ्रता से सीढ़ी उतर कर बाहर रास्ते पर आगया।

रोगी को देख कर जिस वक्त निर्मल घर लौट कर आया, उस समय आकाश का पूर्व भाग स्वच्छ हो गया था। शिशु की तरह सरल हंसी के साथ प्रकृति प्रभात को वरण करने के लिये प्रतीक्षा कर रही थी। शीतल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हवा के लगने से निर्मल का शरीर पुलकायमान हो गया, भोर होने में थोड़ी देर जान कर वह बाहर ही गाड़ी वारन्डे में ईज़ी चेयर पर लेट गया और प्रातः काल की प्रतीक्षा करने लगा। सारी सारी रात बिना खाये पिये, जाग कर अपनी वर्त्तमान अवस्था से युद्ध करते २ वह शिथिल हो गया था, इस से इस समय की ठंडी हवा के लगते ही उसे नींद आगई, वह सारी चिन्ताओं को त्याग कर शान्तिदायिनी निद्रा देवी की गोद में आराम करने लगा।

प्रातःकाल के सूर्य की प्रथम किरण के निकलते ही किसी ने पुकारा 'निर्मल बाबू।"

निर्मल की नींद खुल गई दोनों हाथों से आंखें पोंछते २ उसने सतीश को सामने खड़े देखा। इतने सबेरे सतीश के आने का क्या कारण है यह उसकी समझ में नहीं आया, उसने आश्चर्य से पूंछाः "इतने सबेरे आप कैसे आये ?"

सतीश ने धीरता से कहा " मालूम होता है कि आप इस से ताज्जुब करते हैं। आप तो जानते ही हैं कि मुझे घूमने का रोग है, मेरे लिये सुबह शाम क्या ? सोचा कल आप को ऐसी अवस्था में अकेले छोड़ कर चले जाना मुझे उचित नहीं था, इसी से इस वक्त आगया।"

"बैठिये मैं हाथ मुंह धो आऊं" कह कर निर्मल जाने के लिये तय्यार हुआ, लेकिन सतीश ने रोक कर कहा "कोई जरूरी काम है क्या ? नहीं तो ८ बजे के पहले आपकी नींद ही नहीं खुलती ?"

"एक केस है।"

सतीश ने कहा 'इसी बीच में हाथ में केस भी ले लिया। दो दिन ठहर कर शरीर को कुछ स्वस्थ कर लेते।" निर्मल इसका कुछ उत्तर न देकर हाथ मुंह धोने चला गया। नीलिमा के यहां से आने के बाद से ही वह इस समय की प्रतीक्षा कर रहा था अतएव ऐसे समय सतीश की इतनी घनिष्टता दिखाना उसे पसंद नहीं आया। हाथ मुंह धोकर जब उसने सतीश के उठने का कोई लक्षण नहीं देखा और नौकर ने भी चा की टेबिल सजा दी, तब लाचार होकर शिष्टाचार की खातिर उस ने कहा-"लीजिये चा पीजिये। चा पीजिये।"

सतीश ने मुस्करा कर कहाः "क्षमा करें मैं नहीं पीता।" निर्मल ने आश्चर्य से पूछा, "कितने दिन से त्याग दिया ?" "जिसको कभी ग्रहण ही नहीं किया, उसका त्याग क्या ?" निर्मल ने कहा "इतने दिन मुझे आपके यहां आते आते जाते हुए मैंने कभी ऐसा नहीं सुना ?" सतीशः "इसके लिये आप कुपित क्यों होते हैं ? न मालूम क्यों मेरी यह धारणा है यह चाल हमारे में बड़े भारी रोग की तरह फैल रही है।"

निर्मल-"किंतु आप इस से सर्वथा अलग हैं, यह तो मैं स्वीकार नहीं कर सकता ?"

सतीश—"आपका तो यहना ठीक है। अपनी इस कमज़ोरी से मैं स्वीकार करता हूँ। शोभा के लिये अनेक काम मुझे अपने मत के विरूद्ध करने पड़ते हैं, आप यह भली प्रकार से जानते हैं कि उसके मन को कष्ट पहुंचाने में मैं असमर्थ हूं।" उत्तर कर बात बढ़ाने की अवस्था इस समय निर्मल की नहीं थी। चा पीते २ उसने बेहरा से कपड़े लाने के लिये कहा।

सतीश उठकर खड़ा हो गया और बोला "अच्छा अभी मैं जाता हूँ। विचारा था आप से दो चार बातें कहूँगा, लेकिन आप अभी बाहर जाते हैं, तब व्यर्थ समय नष्ट करना उचित नहीं और आप भी इस से विरक्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होंगे।" निर्मल इस बार भी चुप रहा। सतीश ने बाहर की तरफ़ पांव बढ़ाकर निर्मल को लक्ष्य करके कहा "मुझे मित्र कह कर पुकारेंगे ऐसी आशा मैं नहीं करता, और मेरी बातें आप को अच्छी लगेंगी इस का भी मुझे विश्वास नहीं। तब भी दो दिन का परिचय होने पर भी बाध्य होकर कहना पड़ता है कि आपका अकेले कलकत्ते में रहना ठीक नहीं……।"

"निर्मल ने बीच ही में बाधा देकर कहा क्षमा करें इस वक्त मुझे समय बहुत ही कम है, जो उपदेश देना चाहें वह फिर कभी फुरसत के समय दीजियेगा। उस समय आप भी अपने मन की बातें कह कर हलके होंगे और मैं भी उस का उत्तर देने में समर्थ होऊंगा।"

सतीश ने जाते २ कहा "चाहे आप मुझ पर क्रोध करें चाहे गाली दें, लेकिन ज़रा अपने शरीर की ओर ध्यान दें। रास्ता चलते २ जो व्यक्ति गिर सकता है, उसका रोगी के मकान से सकुशल लौटकर आना विडम्बना मात्र है। और फिर आप को तो कोई ऐसा अभाव नहीं है।" सतीश की बात का कोई उत्तर न देकर निर्मल घर के बाहर चला गया। सतीश भी उसके पीछे २ घर के बाहर निकला, रास्ते पर नीलिमा के पिता के साथ निर्मल को जाते देख कर वह मुस्करा कर मन ही मन कहने लगा--

"इस बार जोड़ा ठीक मिला है, इन को न तो धर्माधर्म का भय है, न समाज की परवाह। जब एक बार घर में घुस पड़े हैं तब वहाँ से जल्दी भाग निकलना मुश्किल है। यही तो सोचता था कि डाक्टर बाबू को एकाएक इतना कर्तव्य ज्ञान कैसे हो गया? जो निर्मल बाबू दस बार बुलाने पर भी नहीं जा सकते थे, वह इस तरह बिना बुलाये ही रोगी देखने कैसे जाने लगे? असली बात का पता तो अब लगा है।" यह कहते २ वह दूसरी तरफ चला गया।

भानु भुवन या मोहनमाया

अनु०—कुमारी सुमित्रा देवी जलविद

(सितम्बर के अंक से आगे)

नरोत्तम—इसके लिए मैं कब निषेध करता हूँ। पहिले दो दिन यह मोहक अवश्य प्रतीत होगी। जब कभी कहीं से उस से व्यवहृत कोई वस्तु, नोट बुक्स, कोरे कागज़, नामांकित कार्डादि मिलें तो नूतन और वर्णनातीत आनन्द होता है। मोदी के यहां से कुछ मंगाने के लिए, चिट्ठी लिखने के लिए उस लेख सामग्री का उपयोग करने में आह्लाद भी बहुत होगा, हानि कुछ भी न होगी, लाभ ही होगा क्योंकि रवि बाबू की कही जाने वाली लेखनी से यह फ़रमाइश लिखी गई है अतः मंगाई गयी वस्तु के मूल्य में वृद्धि नहीं होगी। अच्छा, देखो! मैं भी दूरदर्शी बन सकता हूं कि नहीं?

मधुरी—(कटाक्ष से) हां अति दूरदर्शी (नरोत्तम कटाक्ष को नहीं देखता, अपने में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ही मस्त रहता है और चलता है)

नरोत्तम—परन्तु पुराने स्लीपर ! ओह ! इन में कविता कैसे और कहां से समा गई !

मधुरी—आवश्यकता हो तो मैं इन्हें आपकी भेंट कर दूं ।

नरोत्तम—कवि पर यथेच्छ मोह रखो, लेखक के लिए जी खोलकर अभिमान करो, इसके लिए मैं तुम्हें नहीं रोकता । परन्तु इस मनुष्य का चिन्तन मत करो, यही मेरी याचना है ।

मधुरी—सीधी तरह से क्यों नहीं कह देते कि तुम उस के प्रति छन्दी हो ?

नरोत्तम—परन्तु मैं तो कब से यही गीत गा रहा हूँ कि वह मनुष्य—जिसे तुमने अपनी आँखों देखा भी नहीं है—तुम्हारे सर्वस्व का स्वामी बन चुका है, यह देख मुझे बड़ा दुःख हो रहा है।

मधुरी—तब क्या तुम मुझे अपनी निजी सम्पत्ति समझते हो ? यदि ऐसे ही है ? तो एक बोर्ड (तख्ता) पर यह लिखकर कि "यह मेरी निजी सम्पत्ति है, इस पर अधिकार करने वाले व्यक्ति पर मुकद्दमा दायर किया जायेगा" उसे मेरे गले का हार क्यों नहीं बना देते ?

नरोत्तम—निजी सम्पत्ति नहीं तो न सही । परन्तु इतना अवश्य कहूंगा कि दिन भर एक ही मनुष्य की आराधना करना उचित नहीं है । कल रात सोते हुए भी·····(ज़रा हिचकिचाते हैं)

मधुरी—(अधीरता से) हां हां कह डालो ।

नरोत्तम—आधी रात के समय तुम्हारे मुख से अपने नाम के सिवाय अन्य व्यक्ति का नाम सुनने की आशा भी न रखता था । तो भी रवि बाबू का नामोच्चारण ·····

मधुरी—तब इसका अभिप्राय यह कि स्वप्नावस्था में भी जिह्वा पर काबू रखा जाय-

नरोत्तम—अहर्निश एक ही व्यक्ति का चिन्तन न करो तो स्वप्न में भी ऐसा न हो ।

मधुरी—(क्रोध से) मेरे आदर्श के अनुकूल यदि एक लेखक की कृति में मुझे साधन मिलें और मैं उनका अभ्यास करती हूं तब उस में भी तुम अपराध बताते हो । और स्वयं इसकी पूर्ति नहीं कर सकते । तुम्हें तो रसायन शास्त्र के नीरस नियमों तथा मुरली नाद के सिवाय किसी में भी रसास्वादन नहीं होता, इसलिए क्या औरों को भी अन्य विषयों में रस न लेना चाहिये ? मेरी चाही हुई वस्तु का तुम प्रतीकार करो इस में मुझे कुछ उज्र नहीं । बस मैं इतना ही चाहती हूँ कि जिन पुस्तकों द्वारा मेरी आत्मा तुष्ट हो, जिन सूर्य्य रूपी काव्य ग्रन्थों द्वारा मेरी मुरझाई हुई हृदय-कलि विकसित होती है उन्हें प्रेम दृष्टि से देखने की आज्ञा प्रदान करो । मैं आपको स्पष्ट कह देती हूँ मैं रवि बाबू की पुस्तकों पर दीवानी बनी हूं । क्योंकि वह एक ऐसी आत्मा है जिस ने स्वयं बहुत कुछ सहन किया है, और अनुभव प्राप्त किया है, जो तुम्हारे लिए स्वप्न तुल्य है ।

नरोत्तम—(व्यंग से) और जो मेरे लिए असम्भव है ?

मधुरी—जीवन की उपयोगिता, प्रेम की वास्तविकता, का ज्ञाता केवल वही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नरोत्तम—निःसन्देह।

मधुरी—स्त्री-हृदय का सच्चा परीक्षक, प्रेमियों का महारथी, विश्वासी और नायक है। हमारा शोक, हमारा हर्ष, हमारा आदर्श, हमारी अपूर्णता कुछ भी इस से अज्ञात नहीं है। दुखी दिल शान्ति का आश्रय ले निद्रावश-वर्ती हो यह मंत्र वही जानता है। वही केवल.....

नरोत्तम—और मैं तो इस में से अंश मात्र भी नहीं जानता, क्यों?

मधुरी—(अपनी ही धुन में) इस महानुभाव को मैं कभी मिली नहीं हूं, कदाचित मिल भी न सकूंगी। परन्तु देखे बिना, बोले बिना, मैं उन्हें हज़ारों में से पहिचान लूंगी यह मेरा पूर्ण विश्वास है। इस के सदृश आकृति, आत्मा, हृदय कहां होगा?

नरोत्तम—(सिर पर हाथ धर कर) ओ! ओ!

पुष्पा—(बाहर जाने के लिए तैय्यार होकर आती है)। मधु भगिनी! तैय्यार हो क्या?

मधुरी—हां पुसी! (जाते जाते नरोत्तम से) इस आन्तरिक व्यथा को फिर से ताजा करने में कुछ सार नहीं है। तुम मेरे हृदय की परीक्षा न कर सकोगे। और हम पूर्ववत सुखी अब कभी न हो सकेंगे।

("प्रियतम! प्रीत के दिन वे गये व्यतीत" यह गाती जाती है)।

प्रस्थान

नरोत्तम—(अकेले ही)-जाओ जाओ, सदा के लिए जाओ। यह अपमान की पराकाष्ठा है। जीवन नीरस होगया है। इस से तो भागना या मरना भला है।

(मोहनदास उद्यान की ओर से आता है। यह सुन्दर नाटा युवक है, प्रवासी होने से विदेशीय वेश में है, परन्तु आकृति पर सरलता, मृदुता, सज्जनता का आभास वर्त्तमान है। देखने में आर्य्यसन्तान है यह सहजही प्रतीत होता है)।

मोहन—यह रहे भाई साहिब!

नरोत्तम—(नवागन्तुक को नहीं देखता, पूर्वस्थिति में ही बोलता चला जाता है)

इसके हृदय में मेरे प्रति तनिक भी भावना नहीं है। यदि होती तो क्या इस प्रकार अवहेलना करके चली जाती? बस अब तो किसी न किसी तरह से भाग ही जाऊंगा। (समीपस्थ मंच पर वेग से हाथ पटकता है, दांयी ओर से जाना चाहता है, इतने में मोहन मिलता है, बाहर से मोटर के जाने का शब्द सुनाई पड़ता है)

मोहन—क्यों भाई! कहां प्रयाण करोगे?

नरोत्तम—कौन? तुम हो मोहन? अहो मेरे बाल सखा मोहन! (दोनों हाथ मिलाते हैं)

मोहन—हां परन्तु कहो तो अकेले में क्या प्रलाप कर रहे थे?

नरोत्तम—वह फिर कहूँगा। तुम कब आये, कहां से आये यह तो बतलाओ?

मोहन—कल आया हूं। अदन से। मुसलमान के वेश में मक्का मदीने पैदल यात्रा कर आया हूं। फिर पैदल ही अदन होता हुआ मेल से बम्बई पहुंचा, वहां तुम्हारी खोज की, तब तुम्हारा निवास स्थान अहमदाबाद सुन यहीं भागा आया हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नरोत्तम—(सन्तुष्ट होकर) बहुत अच्छा किया भाई ! हम कितने काल में मिले ?

मोहन—पांच वर्ष हुए होंगे। तुम और मैं विलायत से दोनों साथ ही चले थे, फिर सिकंदरिया से तुम भारत के लिए चल पड़े। तुम्हें यहां आने की जल्दी थी और मुझे मिश्र की महा कबरें देखनी थीं। और फिर तुर्कों का नव ! वीर मुस्तफा कमाल देखना था, ईरान की सैर करनी थी, और मक्का मदीने हज्ज के लिए जाना था। इस में सहज ही पांच वर्ष व्यतीत होगये।

नरोत्तम—(हंसता है) मक्के जाकर हज्ज भी कर आये ! मुसलमान बने बिना ही ?

मोहन—तब क्या तुम अभी तक यही समझते हो कि अकेला बर्टन ही अरबिस्तान की यात्रा कर सकता है ? मैंने तो अपने पड़दादा के समय में अरबी सीखी थी, फिर कलमा पढ़ने में भय ही क्या था ? और बाकी कोई सु····· तो देखता ही नहीं मुसलमान होने में फिर क्या कमी थी ? अब तो यहां भी हिन्दू मुसलमानों में भ्रातृभाव समझा जाने लगा है क्यों ?

नरोत्तम—अब तुम्हें मोहनदास हाज की उपाधि देनी होगी (दोनों हंसते हैं)

मोहन—हां यदि तुम एक सप्ताह भर यहां रहने दो तभी स्वीकार करूंगा।

नरोत्तम—अरे सप्ताह क्या ? वर्ष, पांच वर्ष, आमरण यहीं रहो।

मोहन—तुम तो जैसे के तैसे स्नेही बने रहे। नरोत्तम ! मैंने तुम्हें बहुत पत्र लिख कर तुम्हारी आंखें नहीं पकाईं, परन्तु इस से मैं तुम्हें विस्मरण नहीं कर बैठा था। (केस खोलकर) देखो यह प्रत्येक देश के स्मारक फोटो हैं। (दोनों चित्र देखते हैं)

नरोत्तम—(एक फोटो हाथ में लेकर) यह शेख कौन हैं ? मानो खुद उपमुहम्मद पैगम्बर ही हों।

मोहन—नहीं पहचानते ? यह तो दमाकस में लिया गया इस सेवक का अन्तिम चित्र है। छः मास तक वहां शेख मोमीन के रूप में रहा। मिश्र में तीन मास तक मुर की मूर्ति बनकर रहा। तुर्क में पारसी बनकर, ईरान में हिन्दवासी के रूप में और फिर अरब में दमास्कस में शेख मोमीन ज़िराफ़ बादी बन कर रहा। (दोनों हंसते हैं) यात्रा का बहुत सा हाल तुम्हारे लिये सुनने के योग्य है।

नरोत्तम—मैं जिन्दगी पर्य्यन्त सुनूंगा परन्तु यहां नहीं।

मोहन—(साश्चर्य्य) जिन्दगी भर। परन्तु यहां क्यों नहीं ? तुम्हारा विवाह तो हो ·····क्यों ?

नरोत्तम—विवाह कर के पछताया। अब तो मुझे तुम्हारे साथ तुम्हारे ही समान यात्रा करनी है। जहाँ स्त्रियों का नाम न होगा ऐसे प्रदेश में जाकर तम्बू गाड़ेंगे। चलो जल्दी चलें पहली ही ट्रेन से बाम्बे चलें।

मोहन—बम्बई से तो मैं यहां आया हूं। क्यों जाना है ? और अभी अभी ?

नरोत्तम—हां--हां--हां इसी क्षण। गाड़ी के आने में आध घण्टे की देर है।

मोहन—परन्तु इतनी शीघ्रता की क्या आवश्यकता है ?

नरोत्तम—मैं तो जब तुम आये थे उसी समय Luggage Pack करने जा रहा था।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोहन—हां मैं ने भी देखा था कि भाई साहिब हवा में लैक्चर दे रहे थे। समझा कौलिज में विद्यार्थी न आते होंगे अतः अकेले ही बोलने की टेव पड़ गई होगी! तनिक क्रोधाभास भी हुआ था। क्यों क्या यह दुनियां नहीं भाती?

नरोत्तम—बिलकुल नहीं। मैं तो इसे देखते ही विषमय हो जाता हूँ। चलो, जल्दी मेरे साथ Packing में सहायता करो। यह ज़हरीला घर मुझ से जितनी जल्दी छूटे उतना अच्छा है।

मोहन—ज़हरीला, मैंने तो स्टेशन पर सुना था कि यह घर, यह बंगला अमरलोक है। यहां टैगोर, एवं गांधी जी भी बस चुके हैं।

नरोत्तम—तभी तो कहता हूं न कि मुझे यहाँ नहीं रहना है।

मोहन—[आश्चर्य में डूब कर] यहां टैगोर और महात्मा जी रहे हैं इस लिए तुम्हें नहीं रहना है?

नरोत्तम—[ज़रा चिढ़कर] हां, हां तुम्हें कहा तो इस घर में भूत है जो मेरे श्वसुर को लग गया है, और उसकी बहिन को नचाता है तथा मेरी स्त्री को बहकाता है।

मोहन—सचमुच?

नरोत्तम—मेरे श्वसुर को गांधी जी का भूत लग गया है, फूफी को न्हानालाल का प्रेत लगा है और मेरी स्त्री को टैगोर के स्वप्न दिलाता है वह उसके लिए पागल हो गई है।

मोहन—पागल? वह उसे जानती है क्या? मैं तो कई वर्ष व्यतीत हुए टैगोर को अमेरिका में मिला था और तब भी सचमुच बहुत·····बहुत सी अमेरिकन लड़कियां उस के लिए पागल बन गई थीं।

नरोत्तम—परन्तु मेरी मधुरी ने तो अपनी आंखों देखा ही नहीं और भाग्य से उसका चित्र भी शायद ही देखा होगा।

मोहन—तब फिर?

नरोत्तम—परन्तु उस की प्रत्येक रचना नाटक उपन्यास, काव्य उसने देखी और पढ़ी हैं तथा पढ़कर उन का मनन करती है। पहले तो उस पर पागल बनती थी अब तो अपने आप को उस पर बलिदान करती है। दिन भर उसी का चिन्तन करती है और रात को उसी के स्वप्न देखती है। पहले तो टैगोर ने उस की बुद्धि जीती थी, अब तो उस का मन भी जीत लिया हो ऐसा जान पड़ता है। मधुरी ने उसे कभी नहीं देखा है, परन्तु वह उसे मनुष्य रूप में देवता, एवं परम ज्योतिस्वरूप ईश के तुल्य समझती है। उस की दृष्टि में टैगोर के सामने मैं क्या चीज हूं? इस से पहले वह मेरी अवहेलना मात्र करती थी, परन्तु अब तो दुत्कारने भी लगी। कोई आश्चर्य नहीं कि उसे मेरा ख्याल भी न हो। और यदि होगा भी तो यही कि किस तरह मैं इस का सामना करूं।

मोहन—[गम्भीर बन कर] तुम राई का पर्वत, या बात का बतंगड़ तो नहीं बना रहे?

नरोत्तम—तुम्हें क्या जान पड़ता है?

मोहन—मुझे तो तुम्हारी बातों से यही लगता है कि तुम्हारी पत्नी को क्षणिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोह उत्पन्न हुआ है जो स्वयं ही नष्ट हो जावेगा। यह एक तरह की बालिशता है। और कुछ नहीं।

नरोत्तम—तुम भी मेरे श्वसुर की न्याई मुझे जलाया चाहते हो।

मोहन—(तनिक हंसकर) अज्ञान में भी महा पुरुषों के विचार एक ही रहते हैं-उस में निम्न प्रमाण है---"सतां ही संदेह पदेषु वस्तुष्वन्तःकरणमेव प्रमाणम्"।

नरोत्तम—मुझे तो मधुरी में बालिशता तथा मूर्खता का अंश भी नहीं दीखता। मैं अपनी स्त्री को जितना चाहता हूँ, उतना और कोई अपनी को न चाहता होगा, तिस पर भी उसके द्वारा इतना त्रास पाकर रहना पड़ता है। हम में शृंखला की एक एक शृंका भिन्न भिन्न हो, हमारे हृदय की तार भिन्न भिन्न हों, हमारे विचार में, आशा में, उम्मेद में, आदर्श में, कुछ भी समता न हो; भाषा भिन्न हो, बुद्धि भिन्न हो, और उद्देश भी भिन्न हो, वहां सुख कैसे हो सकता है? फिर भी तुम उसे नादानी ही कहते हो? अफ़सोस! मुझे तो यह भ्रममय वचन शूल के समान अखरते हैं।

मोहन यह मामला मेरी धारणा से कहीं अधिक टेढ़ा दिखाई देता है, और अब तो मुझे तुम्हारे साथ दिलसोजी होती है। परन्तु इस प्रकार निराश मत बनो। दुनियां में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो असम्भव हो। टैगोर कोई उसकी.....

नरोत्तम—यदि हों तब तो बात ही क्या है? मैं नहीं मान सकता कि टैगोर इस प्रकार के उन्माद को उत्तेजना देने के पक्षपाती हों। (मोहन का हंसना) तुम हंसो, भले हंसो, परन्तु मैं तो उसे पर स्त्री के हृदय का चोर नहीं मानता।

मोहन-आजकल की यह लोक भक्ति ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को प्यारी लगती है। अज्ञान में या ज्ञान में इस प्रकार की आस्था को उत्तेजना दिलाने से ही वे पूजापात्र बनते हैं। और टैगोर को तो मैंने अमेरिका में इंग्लैण्ड में और फ्रांस में देखा है। उसे ऐसी भक्ति अप्रिय नहीं है।

नरोत्तम-अस्तु! यदि वे सामने होवें तभी उन पर ठीक आलोचना हो सकती है। इस में यदि मैं नीचा देखूं तब भी अच्छा हो। उससे मेरी आधीरता का तो अन्त अवश्य हो सकेगा। परन्तु यह तो प्रेत के साथ लड़ाई है। भला मायावी मूर्ति का छेदन किस प्रकार हो सकता है? तलाक न होगा तो न सही, भाग तो अवश्य सकूंगा।

मोहन----यह तो मूर्खता कहलावेगी, भागता कौन है? मैं तो तुम्हें कहता हूँ कि तुम्हारी स्त्री के हृदय में क्षणिक मोह पैदा हुआ है, यह चिरस्थायी नहीं है। अमेरिका में मैंने एक ऐसी स्त्री देखी थी जिसे पहिले टालस्टाय का मोह लगा था, तब उसे सारा संसार टालस्टय का ही स्वरूप प्रतीत होता था। फिर इब्सन का प्रेम लगा तब सर्वत्र इब्सन ही इब्सन दीखता था। भाषा में, भाव में, वेश में, सभी स्थल में, इब्सन की ही मूर्ति उसे दीखती थी। यहां तक की रीति रिवाज में भी इब्सन का ही रूप देखती थी। तत्पश्चात उसे घरनार्ड शा की लगन लगी। तब क्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था परमाणु अणु-त्रिसरेणु सब में शाँ ही शाँ नज़र आने लगा। और शाँ की धुन में मस्त रहने लगी। ये तो सब गृहपति सूर्य्यदेव गिनाये। इनमें छोटे छोटे तारे तो अनेक आगये होंगे। मैं जब वहां से निकला तब उस लड़की को आँ हेन्री की भक्त सुना था। उस समय टालस्टाय, इब्सन, शाँ आदि २ सब पांव ठण्ढे समझ रहे थे। सो ठीक तुम भी ऐसा ही समझो। (नरोत्तम सिर हिलाता है) आज टैगोर, कल न्हानालाल। परसों न मर्द, तो तरसों मुन्शी की···। ये सब उठेंगे और अस्त होंगे। परन्तु तुम्हें कुछ आ जावे तो तुम्हारा प्रकाश सदा आलोकित रहेगा।

नरोत्तम—मुझे क्या नहीं आता।

मोहन—तुम अपनी स्त्री का दर्द नहीं समझ सकते हो। वह पापी नहीं केवल बीमार है, इसे खरीखोटी मत सुनाओ परन्तु उपचार करो, इस का ध्यान रखो, फिर स्वयं सुधर जावेगी।

नरोत्तम—उपचार नहीं हो सकता। मैंने जितने पत्थर हैं उतने देवताओं को मनाया, परन्तु इसका भूत न टला।

मोहन—तुम्हारी चिकित्सा ही ठीक न हो तो फिर परिणाम क्यों कर ठीक हो?

नरोत्तम—अच्छा यह कहते हो? परमेश्वर करे तुम मेरे स्थान पर हो जावो तब पता लगे।

मोहन—देखो! सुनो। इस समय तुम्हें टैगोर मिलें तो शायद तुम उसे जी जान से मारने को तत्पर हो जाओ?

नरोत्तम—अवश्य।

मोहन—परन्तु यह है तो असम्भव।

नरोत्तम—तब फिर?

मोहन—तब फिर उसकी स्थूल देह को त्याग कर उसकी सूक्ष्म देह का ध्यान करो।

नरोत्तम—सूक्ष्म देह?

मोहन—हां! अर्थात् वह देह जिसकी प्रतिमा तुम्हारी स्त्री ने अपने हृदय में अंकित की है उसे तोड़ दो, उसका अन्त ला दो।

नरोत्तम—किन्तु यह हो कैसे सकता है?

मोहन—मिसिस नरोत्तम को यह विश्वास दिला दो कि उसका मान्य महापुरुष वास्तव में साधारण मनुष्य श्रेणी में से ही एक हैं। बल्कि सामान्य से भी क्षुद्र और निकृष्ट है। और तो विचारे दुनियां अच्छी बुरी देख कर बिना किसी प्रकार ननुनच के उसमें स्थित होकर चुपचाप जीवन यात्रा करते हैं, परन्तु विरंचि ने इसे अन्य मनुष्यों से २ अणु बड़ा बनाया अतः इसे तनिक सा दुख हो अथवा लेशमात्र क्लेश हो तो सारी दुनियां इसके विलाप से भड़क उठती है। प्रिन्स आफ वेल्स घोड़े पर से गिर जांय और उनके चोट पहुंचे तो राईटर लोग स्थान २ पर तार भिजवाते हैं, उसी प्रकार टैगोर की ऊंगली दुखती हो तो ऐसी बीसियों मुग्धाएं इसे प्रलय काल आया समझती होंगी। जिसे सुख सामग्री की कमी न रही हो, और जो जीवन पथ पर पद २ पुष्प वृष्टि द्वारा सत्कृत किया गया हो, उसे जनता की और खासकर क्षुद्र स्त्री वर्ग की आस्था को उत्तेजित करने की आदत पड़ जाती है। टैगोर में इस दुर्गुण का प्रवेश हुआ है कि नहीं, मुझे इसका ठीक ज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं है। परन्तु तुम अपनी स्त्री में यह विश्वास बिठा दो। इससे उसकी मानसिक पूजा आप ही नष्ट हो जावेगी।

नरोत्तम—यह सब कहना जितना सरल है उतना ही करना कठिन है।

मोहन—कठिन क्योंकर ?

नरोत्तम—मधु इसके विरुद्ध एक भी वचन न मानेगी।

मोहन—नहीं कैसे मानेगी ? यदि मैं मनवा दूँ तब ?

नरोत्तम—तुम ?

मोहन—हां ! और सो भी एक ही दिन में। मैं टैगोर को देख चुका हूँ, उसके सहवास में आ चुका हूँ, जहां मैं उसकी रचनाओंकी प्रशंसा करूंगा वहां उसकी मनुष्यता अर्थात् नीचता को भी साथ ही सिद्ध कर दूँगा।

नरोत्तम—शाबास !

मोहन—उसा हीरा वास्तव में कोयले का टुकड़ा है तुरन्त बता दूंगा। अपनी स्त्री को कभी मेरा परिचय दिया है कि नहीं ?

नरोत्तम—अनेकवार-यहाँ सब तुम्हें मेरे सर्वोत्तम मित्र की हैसियत से जानते हैं। (दरवाज़े खड़खड़ाने का शब्द सुन पड़ता है। पास जाकर) कौन है ? (चिट्ठीरसा बहुत से समाचार पत्र और चिट्ठियां देता है, वह ले आता है) देखो यदि तुम्हें इस प्रकार का कोई ढोंग रचना हो तो शीघ्र करो। फिर तो एक दो दिन में स्वयं रवीन्द्र यहां आने वाले हैं।

मोहन—पहिले पत्र पढ़ लो पुनः हम द्रोणाचार्य्य बनकर अभिमन्यु को मारने के लिए व्यूह रचना करेंगे।

नरोत्तम—पत्र तो केवल एक ही है (पत्र खोलता है, एक चित्र गिरता है) आ हो ! यह क्या ? (साथ एक नामाँकित कार्ड भी निकलता है) यह कार्ड कैसा ? (पढ़ता है) बहिन।

(पत्र पर पता देखता है)

तुमने मांगा अतः चित्र (प्रतिकृति) भेजता हूँ परन्तु तुम्हारे लिए इस का क्या उपयोग होगा यह नहीं समझ सका।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
का अभिवादन

(क्रोधावेश में) यह देखा ? अब क्या कहते हो ?

मोहन—पहिले तो यह कि तुम्हारी स्त्री को यह फ़ोटो नहीं मिलनी चाहिये। (फोटो देखता है) है तो वस्तुतः मोहक मनुष्य ! भारतवर्ष को कविराज मनुष्य कांति में भी कमी नहीं है। (मंच पर फेंकता है, वह उसके अपने फोटो के पास जा गिरता है)

नरोत्तम—यह इसे न मिलेगी तो फिर लिखेगी।

मोहन—(यकायक) हां यह भी ठीक है।

नरोत्तम—अतः इस से तो दे देना ही भला है। फिर जो होगा सहन कर लेंगे। मैं स्वयं ही दूँगा और फिर देखूंगा कि वह……(धुन में दोनों फोटो उठा कर लिफाफे में डालता है)

मोहन—यह नहीं, यह नहीं, यह तो मेरा है (हंसता है) कहीं तुम्हारी स्त्री मुझे ही (बीच में ही वाक्य छोड़ता है)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और से नया विचार सूझता है, उसी समय वही विचार नरोत्तम को भी होता है, दोनों एक दूसरे के विचार को इंगति से समझते हैं और हाथ मिलाप से सम्मति स्वीकार करते हैं) यही क्यों ठीक है न ?

नरोत्तम—हां यही युक्ति ठीक है।

मोहन—अब विजय अवश्यम्भावी है (पुनः हस्त मिलाप (Shake hand) करते हैं,) इसे दैवी प्रेरणा समझो। (रवीन्द्र की फ़ोटो उठाकर अपने केस में रखता है) यह मैं तुम्हें पीछे से दूँगा, जब मिसिस नरोत्तम को इसका ठीक ठीक परिचय मिल जावेगा तब ही दूंगा।

रामलीला के राम

लेखक—श्रीयुत पं० सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज,

"पण्डित जी ! मुझे क्षमा करें; कहूँगा सच, कि—"आर्य-समाजियों को यह सिड़ उन के आर्यत्व के जन्म-काल के साथ ही हो जाती है, कि वे हिन्दुओं की बात बात पर व्यङ्ग-वर्षा करें ! उनके किसी भी कृत्य को गौरव न दें वरना कई बातें हिन्दुओं की गूढ़ आशय वाली होती हैं।"

मैं—'जो ऐसी हैं, उनको सभी आर्य अच्छी समझते हैं। किंतु बुराई की बातों को बुरी कहना ही उन का आर्यत्व है।"

विश्वनाथ—"नहीं, किसी किसी को बिना समझे भी 'दूषित' कह डालते हैं। देखिए, यह राम-लीला ही है। आर्य-जन कोई भी अच्छाई इस में नहीं देखते। किन्तु देखा जाय तो पूर्वजों के गौरव-गुम्फित पवित्र-चरित्र, सरल हृदय बालकों के मृदु-मानस-पटों पर इससे उत्तमतया अङ्कित होते हैं। 'श्रव्य' के साथ यदि 'दृश्य' भी हो, तो बहुत पूरा प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ किसी विज्ञापन को ही देखलें—उसमें "शिर के लिए" किसी "तैल" का सुन्दरसा नाम और उसका प्रगुण गुण-गान-गुञ्जार सत्य और कितना भी सुन्दर क्यों न हो, वह लोगों को उतना विश्वास नहीं दिलाता। उसके लिये वैसी श्रद्धा नहीं जमाता, जैसे कि उसके गुणों का अभिव्यंजक हाफ़टोन कोई चारु-चित्र श्रद्धा समुत्पादक होता है। लम्बे और गहरे, कोमल और काले बाल करने वाले तैल के विज्ञापन में, लम्बे, गहरे-कोमल-काले केशों वाली ललित-ललना का एक चारु चित्र दर्शकों के हृदयों पर बड़ा असर डालता है। उस तैल के गुणों में विश्वास स्थिर कर देता है। ऐसे ही प्राचीन गाथा के किसी भी 'श्रव्य' के साथ, उसके भावों का दृश्य हो, तो वह पूर्ण-प्रभाव डालता है।"

मैं—"आर्य-जन इस सिद्धान्त के विरोधी तो नहीं। वे यह नहीं चाहते, कि 'श्रव्य' के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

साथ दृश्य हो ही नहीं !' हो, परन्तु उस श्रव्य की यथार्थता का बाधक नहो !; क्यों—?"

विश्व—"मेरा भी तो यह अभिप्राय नहीं कि बाधक रहे।"

मैं—"तो बस; आपका आशय इन राम-लीलाओं से सिद्ध नहीं हो सकता !; आधुनिक लीलाओं के पात्रों में पात्रत्व नहीं। उन से रामायणी गाथा का लाघव ही फैलता है। वे राम आदि महापुरुषों के पवित्र-चरित्र को दृढ़-मूल नहीं करते !"

विश्व—"कैसे-?"

मैं—" स्पष्ट है। लीला के दर्शकों में से बालकों को तो क्या—किसी वयोवृद्ध से ही पूंछ देखिए, कि—भरत-मिलाप के दिन राम की कितनी आयु थी ?; एक सही नहीं बता सकेगा ! हर वर्ष (निभूछिए) पाउडर से धवल-मुख किए, बालकों को राम बनाया देखते हैं ! फिर सही कैसे बता सकें ? बताएं तब, जब भरत-मिलाप के दिन कम से कम बावन (५२) वर्ष की आयु का पुरुष राम बनाया जाता हो। और ऐसे ही भरत-लक्ष्मण आदिक। श्मश्रुहीन छोटे छोटे बालकों के मुख पर मुरदा-संख आदि का पाउडर लगा कर रामलीला क्या करते हैं—केवल ग़लत फ़ैमी और लोगों में दुर्वृत्तियां बढ़ा रहे हैं "!

विश्व—" हैं, बावन वर्ष का राम—? "

मैं—" हां बावन वर्ष का !; देखिए मैं समझाता हूँः—

राम विवाह-काल में न्यून से न्यून पच्चीस वर्ष के थे।"

विश्व—" वाह, साहिब ! यहां तो आपने बाल्मीकि की बात भी ठुकरा दी। वे "राम-लक्ष्मण को मांगने पर, महर्षि विश्वामित्र को श्री दशरथ के उत्तर द्वारा" स्पष्ट लिखते हैः—

ऊनषोडषवर्षो मे रामो राजीव-लोचनः।
न युद्ध-योग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः॥
(बाल कां०स० २०)

अर्थात्—मेरा कमल-लोचन राम पन्द्रह (१५) ही वर्ष का है। राक्षसों के साथ लड़ने की इस में योग्यता नहीं। इस से सिद्ध होगया कि पन्द्रहवें वर्ष में राम तारकादि से लड़ने आए। ब्रह्मर्षि का काम ५-६ ही दिनों का था। जाने-आने के दिन लगा कर, जनक के यहां पहुंचने में एक-डेढ़ मास समझ लीजिए ! बस, तभी विवाह हुआ !"

मैं—" इस समय रामायण की आलोचना तो करता नहीं हूँ। किन्तु यह अवश्य कहना पड़ेगा कि रामायण को अक्षरशः सत्य (वेदवत्) मानना बड़ी भूल है। इस के हर प्रसंग में थोड़ी-बहुत असंगत, असम्भव, तथा सामञ्जस्य-शून्य बातें पड़ी हुई हैं। उन्हें 'धूर्तों द्वारा प्रक्षिप्त' कहें, तो ठीक होगा। और इस का पारायण करने वाले साहसिकों को सहज ही में यह भी पता लग जाता है, कि इसके आद्यन्त के 'बाल' और 'उत्तर' दोनों काण्ड अनार्ष हैं, ऋषि बाल्मीकि-कृत नहीं। इसी से यह "ऊन षोड़ष वर्षो में..." उनके विवाह-काल के निश्चय में प्रमाण नहीं।

—दूसरे श्री दशरथ महाराज की अन्त्येष्टि होने के पश्चात्, पुरोहित श्रीवशिष्ठ जी ने "राज्य सम्हालने के लिए" श्री भरत जी से कहा, तब उत्तर में श्री भरत जी ने सब से प्रथम यह कहा हैः—

"चरित-ब्रह्मचर्यस्य विद्या-स्नातस्य धीमतः।
धर्म्मे प्रयतमानस्य को राज्यं मद्विधो हरेत्॥
(अयोध्या कां० स० ८२)

अर्थात्—"विद्या व्रत-स्नातक; बुद्धिमान, धर्मात्मा, राम के राज्य को मुझ जैसा कौन हर सकता है (अर्थात् किसी की शक्ति नहीं।)"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो सोचिए, विद्या-व्रत-स्नातक कहीं पन्द्रह वर्ष का बालक होसकता है? सूत्र-ग्रन्थ अड़तालीस वर्ष के ब्रह्मचारी ही को "विद्या-व्रत स्नातक" राम के काल में भी कहते थे, और अब भी कहते हैं! भरत जैसे धर्मात्मा पुरुष-पुंगव पन्द्रह वर्ष ही के गृही को कैसे "विद्या-व्रत-स्नातक पुकार सकते हैं? जो पन्द्रह वर्ष का बालक ही विद्या-व्रत स्नातक होसकता है, तो देश के स्कूलों-पाठशालाओं के पिलंजू पिलपिले-से पन्द्रह वर्ष के सभी बालक (आजकल के) विद्या-व्रत-स्नातक हुए, और सत्रह अट्ठारह वर्ष की अवस्था के कुमार तो उनसे भी अच्छे हुए! इतना अंधेर!! फिर गुरुकुलों-ऋषिकुलों की जनता भूल ही से आवश्यकता समझती है! अनेक प्रसंगों में, राम के विशेषणों में, उन्हें "चारों वेद के ज्ञाता" कहा गया है, रामायण ही में। फिर चारों वेदों के—धनुर्वेदादि वेदाङ्गों के—पूर्ण ज्ञान के लिए "पन्द्रह वर्ष की अवस्था" कैसे फल सकती है?—हृदय से तो पूंछिए!

—राम विद्या-व्रत-स्नातक सिद्ध हुए हैं। मानना तो योग्य है कि उनका विवाह अड़तालीस वर्ष की अवस्था में हुआ; परन्तु न सही, तब भी कम से कम पच्चीस वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हुआ मानना होगा। क्योंकि पच्चीस वर्ष की आयु "ब्रह्मचर्य" के लिए न्यून से न्यून नियत है। क्यों—?"

विश्व—"बात तो ठीक है!"

मैं—'तो विवाह में राम थे पच्चीस वर्ष के। तत्पश्चात् बारह वर्ष तक श्री राम सीता सहित राजाधिराज रघुराज श्री दशरथ की छत्र-छाया में—उनकी कृपा क्रोड़ में आनन्द करते रहे। विविध गार्हस्थ्योचित-भोग भोगते रहे। श्री दशरथ महाराज ने विवाह से १३ वें वर्ष में "राम के युवराज बनाने की चर्चा" चलाई। यह बात परिव्राजक-वेषा-धारी रावण को उसके प्रश्न के उत्तर में, पन्चवटी देश में, सीता अपनी अतीत-जीवनी सुनाती कह रही हैं:—

उषित्वा द्वादश समा इक्ष्वाकूणाँ निवेशने।
भुञ्जाना मानुषान् भोगान्, सर्वकाम समृद्धिनी
ततस्त्रयोदशे वर्षे राज मन्त्रयत प्रभुः।
अभिषेचयितुं रामं समेतो राज मन्त्रिभिः॥

(अरण्य का० स० ४७)

अर्थात्—"ऐक्ष्वाकु महात्मा दशरथ के भवनों में १२ वर्ष तक रहकर, मानुषी-भोग भोगे। फिर तेरवें वर्ष में रामाभिषेकार्थ मंत्रियों सहित महाराज ने मन्त्रणा की।" तो विवाह के बारह वर्ष पश्चात् अयोध्या में सुख से रहे। अब गिनिए—२५ और १२=३७ हुए।

—अब चौदह वर्षों की वन-निवास की समाप्ति। तो हिसाब करलें कि-३७+१४=५१ हुए। यों इक्यावन वर्ष अयोध्या लौट आने से भरत के मिलने से-पूर्व ही राम की आयु के गत हो लिए। अब अयोध्या-राज्य सिंहासन पर आसीन हुए तो कम से कम ५२ वर्ष की अवस्था में हुए!

—सो न्यून से न्यून बावन वर्ष का पुरुष 'राम' बना कर, यदि लीला में दिखाए जाएं तो लोगों को राम की जीवनी का कुछ पता लगे। नहीं तो दुर्भाव भरे मूर्ख-गुण्डे-दुश्चरित्र यवनों तथा 'हिंदू' कहलाने वाले दुश्चरित्री राक्षसों के राम-सीता के इर्द-गिर्द लगे रहने और घूमने के अतिरिक्त और क्या फल होसकता है?"

विश्व—"ओः! बावन वर्ष का बुढ्ढा राम बने? सब आनन्द मिट्टी में मिल जाए, और सारा खेल बिगड़ जाए!!

—:o:—

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवयुग

लेखक—'श्री हरि'

क्या कहिये रहिये चुप हो, अब अनुपम युग यह आया रे।
निगमागम की आन गई है, करत सभी मन भाया रे॥ ध्रुव॥

दया, धर्म, सत्कर्म सर्म की, रही न जगमें छाया रे।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने, सब को नाच नचाया रे॥ १॥

प्रचुर प्रपञ्च प्रवञ्चित अञ्चित, अनुपम जग की काया रे।
स्वार्थ सिन्धु की तरल तरंगें, प्रिय परमार्थ डुबाया रे॥ २॥

विमल विवेक, विराग, राग सब, दम्भ समूह समाया रे।
पावन प्रेम नेम के बदले, छल बल चाल चलाया रे॥ ३॥

उर कम्पत झम्पत युग लोचन, सोचत मन अकुलाया रे।
"श्रीहरि" अशरण शरण चरण में, आर्त भक्त यह आया रे॥ ४॥

* * *

वैज्ञानिक संसार

१. सूर्यताप से भोजन पकाना

सूर्य से हमें प्रकाश और ताप प्राप्त होते हैं, परन्तु मनुष्य को इतने पर ही शांति नहीं। वह सूर्य भगवान से और भी सेवा लेना चाहता है। इस उद्देश से कितने ही प्रयास किये जा चुके हैं जिन में से कुछ तो सफल हुये हैं और कुछ विफल।

एक सूर्य के ताप से तपने वाला भाजी पकाने का यन्त्र तय्यार किया गया है जिस में कि रोटी पक सकेगी और शांस उबल सकेगा।

इस चूल्हे के भीतर थरमामीटर द्वारा माप कर देखा गया है कि ३०० दर्जे का ताप था और यह बहुत सम्भव है कि कोयला,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लकड़ी, गैस, तेल अथवा इसी प्रकार के अन्य साधारण ईन्धन जलाये बिना भोजन पकाया जा सकेगा।

२. लकड़ी जलने पर कड़ कड़ शब्द क्यों करती है ?

जब लकड़ी जलती है तो उस में से प्रायः चिड़ २ की आवाज़ आती है। इस का क्या कारण है ? लकड़ी में कितने ही नन्हें २ सूराख अथवा कोष होते हैं जिन में से कि कितनों ही में जल रहता है। जब लकड़ी गरम हो जाती है तो यह जल वाष्प बन जाता है और कोषों को तोड़ देता है। यह एक छोटे से धड़ाके का शब्द उत्पन्न करता है। ऐसे ही कितने ही धड़ाके मिल कर लकड़ी का चिड़ २ शब्द पैदा करते हैं।

३. एक मिनट में ३३ मील उड़ना

महाशय लिन्डी क्रिस्टर स्वीडन के एक प्रसिद्ध वायुयान और हवाई जहाज़ बनाने वाले हैं। आपने अनुमान लगाया है कि भविष्यत में योरोप और अमरीका के बीच हवाई जहाज़ द्वारा भूमि से दस मील ऊंचा उड़कर दो घन्टे में सफर किया जा सकेगा। इन दो महाद्वीपों में २००० मील का अन्तर है। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ज्यों २ हम ऊपर उठते जाते हैं कम होती जाती है अतः वह जहाज़ जोकि पृथ्वी के निकट १०० मील प्रति घन्टा के वेग से चलता है इस से १० मील ऊंचा उठकर १२०० मील प्रति घन्टा उड़ सकेगा। परन्तु इतनी ऊंचाई पर वायु बड़ी ही सूक्ष्म अवस्था में होगी और इस सूक्ष्म वायु में इन्जन और मशीन का चलना बड़ा कठिन हो जायगा। परन्तु महाशय लिन्डी क्रिस्टर का कथन है कि यह कठिनाई धकेलने वाले इंजन में ऐसे पंखे लगा कर दूर की जा सकती है जो कि हलके और भारी वायु की सूक्ष्मता के अनुसार बदले जा सकें और मोटर गैस को दबाने के लिये विशेष प्रकार की मशीन लगाने से अधिक दबाव पैदा किया जा सकता है। इस प्रकार की मोटर की शक्ति संभवतया २००० घोड़ों के बराबर होगी।

४. शारीरिक लम्बाई और बुद्धि

मनोविज्ञान के एक अमरीका निवासी पण्डित डाक्टर हैनरी कैरट का कथन है कि सबसे अधिक तीक्ष्ण बुद्धि वाला मनुष्य वह है जिस की भुजा और टांगे लम्बी हों और बाकी शरीर छोटा। उन का मत है कि छोटी भुजा और टांगों वाले मनुष्य किसी तीक्ष्ण बुद्धि वाले कार्य की अपेक्षा किसी ऐसे कार्य के लिये जिस में कि दुरुस्ती और स्थिरता की आवश्यकता हो अधिक उपयुक्त हैं।

डाक्टर कैरट और डाक्टर सैन्ट ने कराडि ने इस मत का कोलम्बिया विश्व विद्यालय के ३०० विद्यार्थियों पर मानसिक रोगों के सम्बन्ध में परीक्षण किया। परीक्षा-फल से यही प्रतीत होता था कि शारीरिक गठन और बुद्धि में बड़ा भारी सम्बन्ध है।

जिन व्यक्तियों पर परीक्षा की गयी उन में से ७६ प्रति शतक छोटे शरीर और लम्बी टांगों वाले, ४० प्रति शतक मध्यम आकार वाले और १५ प्रति शतक बड़े शरीर और छोटी टांगों वाले पुरुषों में बुद्धि की प्रबलता पाई गई।

अमरीका के कितने ही प्रसिद्ध विद्वान कार्य कर्ता जैसा कि हैनरी फोर्ड, राकफैलर, जरनैल पर्शिंग, बूथ टर्किंगटन, डेविड बार्थ ग्रिफिथ, जार्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन और प्रधान विलसन लम्बी टांगों और छोटे शरीर वाले आदमी थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

५ आकाश का रहस्य

वैज्ञानिकों ने सूर्यलोक और चन्द्रलोक को तोल लिया है; हमें उन सितारों के अन्तर का ज्ञान है जिनका प्रकाश हमारे तक पहुंचने में कितनी ही शताब्दी चाहियें; हम बहुत दूर व्यापी सितारों पर बहुत ही थोड़े परिमाण में बढ़े हुये ताप को माप सकते हैं। इतना होने पर भी आकाश पहेलियों से भरा पड़ा है जिनको बूझने के लिये ज्योतिषी अपनी सारी विद्या का ज़ोर लगा रहे हैं।

उदाहरण के लिये प्रकाश रहित सितारों को ही लीजिये। किंचित पाठकों के मन में यह कभी विचार भी न आया होगा कि ऐसे भी सितारे हैं, परन्तु वास्तविक बात यह है कि प्रत्येक प्रकाशवान सितारे के साथ २ जो कि हमें किसी साफ शुद्ध रात्रि में दिखलायी देता है हज़ारों ऐसे सितारे हैं जो ठंढे पड़ गये हैं और इसी कारण हमें दिखलाई नहीं देते। परन्तु मृत अवस्था में होने पर भी यह आकाश में एक भयानक गति से दौड़ रहे हैं।

२ फरवरी १९०१ को परसियस नाम के तारा समूह में एक अद्वितीय प्रकाश वाला सितारा चमका। यह कोई नवीन सितारा नहीं था। वास्तविक बात यह थी कि एक प्रकाश रहित सितारा या तो किसी इसी प्रकार के दूसरे सितारे से अथवा गैस केबड़े भारी बादल से -- जो कि आकाश में लटके रहते हैं टकरा गया था। इसका फल यह हुआ कि एक इतना बड़ा धड़ाका हुआ कि हम उसका अनुमान भी नहीं कर सकते।

यह प्रकाश रहित सितारे और गैस के बादल आकाश की सब से बड़ी पहेली हैं। तीन वर्ष हुये कि एक हालैन्ड के वैज्ञानिक ने ऐसे रहस्यमय बादल का पता लगाया जो कि १४०००००००००००० मील लम्बा और हमारे सूर्य मण्डल से इससे दुगना परे था। चाहे यह गैस हो चाहे रेणु कण—यह हमें पता नहीं और सम्भवतया हमें इसका कभी पता भी नहीं लगेगा।

६ घड़ी के जवाहिर

प्रत्येक घड़ी में- जिसको हम घड़ी का नाम दे सकते हैं-मणि अथवा जवाहिर जड़े रहते हैं जिन के आश्रय उस के गतिमान भाग घूमते रहते हैं अथवा यूं कहिये कि इन भागों की धुरी नन्हें २ जवाहिरों पर टिकी रहती है। इसका कारण यह है कि यह जवाहिर चिरस्थायी होते हैं और शीघ्र नहीं घिसते। बढ़िया घड़ियों में प्रत्येक धुरी के ठहरने के स्थान पर जवाहिर जड़े रहते हैं। सो घड़ी बेचने वालों का यह कहना कि अमुक घड़ी में इतने जवाहिर हैं और अमुक में इतने असत्य नहीं होता हां उत्तम घड़ियों में बढ़िया प्रकार के जवाहिर होते हैं और साधारण में घटिया। बढ़िया जवाहिर नीलम और माणिक होते हैं, मध्यम श्रेणी के याकूत और सब से निचले दर्जे के साधारण पथरी (Rock crystal)।

जैसा हमने ऊपर कहा यह जवाहिर चूल के स्थान पर जड़े जाते हैं। घड़ी में सात से लेकर २३ तक इस प्रकार की चूल रहती हैं जब तक यह जवाहिर बढ़िया न हों और पहियों की धुरी इन से बनी चूल में ठीक २ न बैठे, घड़ी कदापि ठीक समय न देगी। आज कल घड़ियों की यह जवाहिर की चूलें छोटे २ धातु के टुकड़ों में का जवाहिर जड़ कर बनी बनाई बिकती हैं और प्रत्येक घड़ी साज के पास रहती हैं। इन टुकड़ों की कारीगरी घटिया बढ़िया सब प्रकार की होती है और घड़ी साज़ को किसी भी घड़ी की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मरम्मत करने के लिये सावधानी से बढ़िया टुकड़ा ढूंढ़ना पड़ता है। कोई ऐसा टुकड़ा जिस के जवाहिर बिल्कुल मध्य में न हों घड़ी के एक भाग की गति को ख़राब करके सारी घड़ी का सत्यानाश कर देता है। यही कारण है कि प्रसिद्ध और नामी घड़ी साज़ एक साधारण घड़ी साज़ की अपेक्षा मरम्मत के अधिक दाम मांगते हैं।

कई बार छलांग मारने अथवा कूदने से चूल ज़रा सी टेढ़ी हो जाती है; घड़ी चलती रहती है और घड़ी का मालिक उस छलांग को सर्वथा भूल जाता है। एक या दो सप्ताह पीछे घड़ी बन्द हो जाती है। छलांग या धक्के से कोई छोटी सी चूल एक ओर को झुक गयी परन्तु इतना नहीं कि घड़ी एक दम बन्द होजाती। अब यह चूल धातु के टुकड़े में घूमने लगती है और घिस जाती है अब जब तक नई चूल न डाली जायगी घड़ी न चलेगी। इस प्रकार के धक्के कलाई पर बांधने की घड़ियों को बहुत लगते हैं। यदि हम घड़ी के लिए शरीर को कोई ऐसा स्थान ढूंढे जहाँ पर कि उसे अधिक से अधिक धक्के लग सकें तो वह कलाई के अतिरिक्त और कोई न होगा क्योंकि यह बड़ी शीघ्रता से हिलाई जाती है और एक दम बन्द करदी जाती है।

कई बार छलांग से जवाहिर में तरेड़ आजाती है, परन्तु तो भी घड़ी चलती रहती है। जब कोई जवाहिर इस प्रकार टूट जाता है तो इस का सिरा खुरदरा होजाता है और चूल इस खुरदरे सिरे के साथ घड़ी २ रगड़ खाकर शीघ्र ही कट जाती है। अब एक नये जवाहिर से ही काम न चलेगा वरन चूल भी नई लगानी पड़ेगी।

हमारी भंजूषा

सरल शरीर विज्ञान अनुवादक शरीर विज्ञान के एक विद्यार्थी। प्रकाशक-साहित्य सम्वर्द्धिनी समिति ११७, हरिसन रोड कलकत्ता, पृष्ठ संख्या १५८, सचित्र सुन्दर रेशमी जिल्द मूल्य केवल ॥।)

यह पुस्तक श्री विष्णु-सस्ती-पुस्तक-माला की एक मणि है। प्रकाशक ने यह निश्चय किया हैं कि विज्ञान के भिन्न २ विषयों पर सरल भाषा और सरलशैली में सर्व-साधारण के समझने योग्य दस पुस्तकें निकाली जावें जिनको केवल छपाई और कागज़ की लागत मात्र पर ही बेचा जावे। यह उद्देश्य कितना उच्च है इसकी उचित प्रशंसा नहीं की जा सकती। श्री नारायण-दास जी बाजोरिया का यह संकल्प मातृ-भाषा की विशुद्ध सेवा हेतु है और इसके लिए वह प्रत्येक हिंदी प्रेमी के धन्यवाद के पात्र हैं।

यह पुस्तक क्या है यह इसके नाम से ही पता लग जाता है। हमारे शरीर की रचना, उसके भिन्न २ अवयव और उनकी क्रियाओं का ज्ञान जन--समाज के लिये कितना आवश्यक है यह सब ही मानते हैं। इस ज्ञान के न होने से हमारे वैयक्तिक और जातीय स्वास्थ को कितनी हानि हो रही है यह कहने की आवश्यकता नहीं। इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तक के पाठ से जनता को अपने शरीर सम्बन्धी अनेक बातों का ज्ञान होगा जो कि निज स्वास्थ रक्षा के लिये बड़ा सहायक होगा। २८ सुन्दर स्पष्ट चित्र देकर शरीर सम्बन्धी अनेक क्रियाओं तथा अवयवों का स्पष्टीकरण किया गया। पुस्तक सर्वथा उपयोगी है।

सुभाषित मंजूषा लेखक तथा प्रकाशक चौ० रामसिंह मेम्बर पञ्जाब लेजिस्लेटिव कौन्सिल पृष्ठ ३१२ मूल्य १॥), पुस्तक मिलने का पता मैनेजर वैदिक पुस्तकालय धण्डरां पोस्ट इन्दौरा ज़िला कांगड़ा तथा म० राजपाल मैनेजर आर्य पुस्तकालय अनारकली लाहौर।

इस पुस्तक में लेखक ने मानव-हृदय को शुद्ध तथा उच्च बनाने वाले तथा उसकी पवित्रता के द्योतक वेद शास्त्र, उर्दू हिंदी तथा फार्सी के कवियों के अनेक वचन एकत्र किये हैं। एक विषय विशेष पर इन शास्त्रों तथा तुलसी, कबीर, वृन्द, भर्तृहरि, सादी हाफ़िज़, हाली, अकबर इत्यादि अनेक भक्तों तथा कवियों के वचनों का एक स्थान पर संग्रह कर दिया है। पुस्तक बड़े परिश्रम से लिखी गई है और आत्मिक उन्नति के इच्छुकों, साहित्य सेवियों, व्याख्यान दाताओं तथा विद्यार्थियों के बड़े काम की है। चौधरी जी का उद्योग सर्वथा प्रशंसनीय है।

३. ४. ५. महाशय राजपाल मैनेजर आर्य पुस्तकालय अनारकली लाहौर से हमें समालोचना के लिये तीन पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। पहिली का नाम है—

हमारे ऋषि की प्यारी बातें—पृष्ठ ९६ मूल्य ।≈) इसके लेखक हैं हिंदी तथा उर्दू उर्दू के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत सुदर्शन जी। इसमें ऋषि दयानन्द के जीवन सम्बन्धी मुख्य २ घटनाओं का सरल मनोहर तथा शिक्षाप्रद शैली में वर्णन किया गया है। पुस्तक बालकों के लिये लिखी गई है और उनका जहां इसके प्रत्येक पाठ से मनोरञ्जन होगा वहां अनायास ही उन्हें उत्तम शिक्षा भी मिलेगी। दूसरी पुस्तक है उपदेश मंजरी पृष्ठ १७८ मूल्य ॥≈)। इस का सम्बन्ध भी स्वामी दयानन्द से है। श्री स्वामी जी ने जुलाई और अगस्त १८७५ में १५ व्याख्यान दिये थे जो कि संस्कृत में थे। इन्हें एक सज्जन ने पहिले पहल गुजराती भाषा में छपवाया फिर इन का हिंदी अनुवाद हुआ और उसी हिंदी अनुवाद का श्री मुन्शीराम जी जिज्ञासु (स्वामी श्रद्धानन्द जी ने) उर्दू भाषा में अनुवाद कर १८९८ में प्रकाशित किया। यही इसी उर्दू पुस्तक का दूसरा संस्करण है। स्वामी जी के व्याख्यानों का विषय है ईश्वर सिद्धि, धर्मा--धर्म, वेद, जन्म, यज्ञ और संस्कार इतिहास, नित्य कर्म और मुक्ति, स्ववर्णित जीवन चरित्र। ऐसे गूढ़ और भाव पूर्ण विषयों पर ऐसे महानात्मा के विचार क्या महत्व रखते हैं यह कहने की आवश्यक्ता नहीं। इन व्याख्यानों द्वारा स्वामी जी कृत सत्यार्थप्रकाश में वर्णन किये गये अनेक विषयों और सिद्धान्तों पर विशेष प्रकाश पड़ता है। इसका दूसरा संस्करण निकाल कर प्रकाशक ने आर्यसमाजियों और ऋषि भक्तों का उपकार किया है। तीसरी पुस्तक का नाम है अमृतपृष्ठ ११२ मूल्य ॥)। यह बच्चों के लिये छोटे २ मनोहर कहानियों का संग्रह है। इस के लेखक भी उपरोक्त श्रीसुदर्शन हैं। इस में १२ कहानियां हैं और प्रत्येक के द्वारा बड़ी सरल रीति से उत्तम शिक्षा का पाठ दिया गया है। जहां बच्चों के दिल बहलाव का सामान है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वहां उनके आचार और बिचारों को उच्च और शुद्ध बनाने का,उनकी अनजान मेंही,यह कहानियां बड़ी उत्तम साधन हैं। हम श्री राजपाल जी को इस प्रकार का बालोपयोगी साहित्य प्रकाशित करने के लिये बधाई देते हैं। इन तीनों पुस्तकों की भाषा उर्दू है हमें आशा है कि हिंदी में भी इनका शीघ्र प्रकाशन होगा।

सनातन धर्म में शुद्धि--लेखक तथा प्रकाशक पं० शिवकुमार शास्त्री, मन्त्री हिन्दू-शुद्धि सभा गोरखपुर। मूल्य ⁻)

इस छोटी सी पुस्तक में यह दिखलाया गया है कि हिंदू धर्म में शुद्धि कोई नवीन आन्दोलन नहीं है। लेखक ने शास्त्रों तथा इतिहास के आश्रय से यह सिद्ध किया है कि हिंदू धर्म पतितों को उभारने तथा विधर्मिओं को स्वधर्म में मिलाने का कार्य प्राचीन समय से करता रहा है।

महात्मा गांधी को चैलेंज-लेखक व प्रकाशक श्री मंगलानन्दपुरी आर्यसमाज कानपुर, मूल्य ⁻)

इस छोटे से पेम्फलेट में महात्मा गांधी जी के हिंदू मुसलिम एकता सम्बन्धी विचारों की आलोचना की गयी है। हमें शोक है कि पुस्तक की शैली ऐसी नहीं जिस से आर्य समाज का गौरव बढ़ सके। अपनी विपक्षी को उत्तर देते समय हमें सौजन्यता और सहिष्णुता को भूल न जाना चाहिये।

शान्ति-वाणी--माता मैत्रेयी कृत बंगला पुस्तक का अनुवाद, प्रकाशक अध्यापक जी यदुनाथसिंह मेरठ कालेज मेरठ। पृष्ठ ५८ मूल्य ॥)

१५ वर्ष बीते ठाकुर दयानन्द ने आसाम में आरुणाचल आश्रम की स्थापना की थी, उद्देश्य था संसार--शांति। इसमें आप अपने अनुयायी स्त्री पुरुषों को शांति का उपदेश देते रहे हैं। आप के भक्त आपको भगवान का अवतार मानते हैं। जैसा कि कई मत मानते हैं कि संसार की अवस्था बहुत बिगड़ जाने पर भगवान स्वयं देह धारण कर इसे ठीक करने आवेंगे, वही इन आश्रम वासियों का मत है। पुस्तक में दिखलाया गया है कि समस्त जगत में ईर्षा, द्वेष, लड़ाई, झगड़ा इत्यादि पापमय विकारों से घृणा और प्रेम और शान्ति से प्रीति का प्रादुर्भाव हो चुका है, अतः भगवान के आने के लिये समय सर्वथा अनुकूल है। इसीलिये ठाकुर दयानन्द के रूप में भगवान ने जन्म लिया है। हमें पुस्तक पढ़कर पंजाब के मिरज़ा गुलाम अहमद क़ादयानी का स्मरण होता है। हमें संदेह है कि संसार 'दयानन्द' जी को भगवान एवं अपना गुरु, मानने को तय्यार होगा।

६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) रखना विश्वप्रेम का परिचय नहीं देता।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

क्या स्त्रियां पुरुषों के तुल्य चतुर होती हैं ?

महाशय जेम्स डी. विनलैन्ड ने "पापुलर साइन्स मन्थली" में इस उपरोक्त विषय की आलोचना की है जिसमें से बहुत आवश्यक भाग हम नीचे उद्धृत करते हैं। वह कहते हैं कि:-

"बहुत से लोग-चाहे वह अपनी माता, पत्नी या बहिन का मान और आदर कितना ही अधिक क्यों न करते हों--यह निश्चय मानते हैं कि स्त्रियों में दिमाग़ी शक्ति नहीं होती। और यह इतिहास में मैडेम क्यूरी, हेटी ग्रीन, जार्ज इलियट, और क्लेरा बार्टन सरीखी स्त्रियों के विद्यमान रहते हुये भी। मालूम होता है कि मानसिक शक्ति में पुरुषों की उत्तमता का भाव प्रत्येक पुरुष में जन्म से ही होता है। विल स्मिथ महाशय तो अपने को इतना विज्ञ समझते हैं कि वह अपनी धर्मपत्नी को अपनी 'Expert' सम्मति प्रायः सभी विषयों पर देते रहते हैं यहां तक कि गृह-प्रबन्ध और बच्चों की देख रेख में भी सलाह देते संकोच नहीं करते। और प्रायः यदि उन की धर्मपत्नी कहीं यह कहदे कि 'आप समझते भी हैं कि आप क्या बोल रहे हैं' तो दाम्पत्य कलह उत्पन्न हो जाती है।

क्योंकि विल स्मिथ की मानसिक शक्ति उसकी पत्नी या-किसी भी स्त्री से हमेशः बढ़ चढ़ कर ही रहती है! इस पर तुर्रा यह कि यह इसे सिद्ध भी कर सकते हैं। वह अपने पक्ष की पुष्टि में उदाहरणों की भरमार पेश कर सकते हैं। परन्तु खेद यही है कि दश में से नव उदाहरण अशुद्ध ही होते हैं। वास्तव में विल स्मिथ बिल्कुल ग़लती पर हैं। उनकी धर्मपत्नी की मानसिक शक्तियां हैं—और शायद उतनी ही जितनी कि स्मिथ साहब की या उनसे बढ़ कर भी। मनोविज्ञान का यही सिद्धांत है और मनोविज्ञान--शास्त्र अनुमान, औसत या साधारण नियमों पर नहीं चलता।

अभी हाल में ही मनोविज्ञान--शास्त्र ने ऐसे तजुर्बे किये हैं और स्त्री पुरुषों को वैज्ञानिक रीति से एक ही गज़ से नाप कर यह फैसला किया है कि विल स्मिथ और उनकी पत्नी मेरी चतुराई में लगभग बराबर हैं।

कोलोराडो कालेज में ११५ पुरुषों और १११ स्त्रियों के दिमाग़ों की बड़ी सूक्ष्म परीक्षा की गई थी। और दोनों स्त्रियों और पुरुषों की औसत गणना एक ही थी अर्थात १४२ पाइन्ट। इडाहो युनीवर्सिटी, मिनीसोटा युनीवर्सिटी, सदर्न मेथोडिस्ट युनीवर्सिटी तथा कोलोराडो कालेज के विद्यार्थियों को मिलाकर परीक्षण किया गया जिसमें ३१७ 'पुरुष और १५७ स्त्रियां थीं' तो पता चला कि अपनी पढ़ाई में अव्वल और दोयम वर्ग प्राप्त करने में स्त्रियों की औसत ७५.२ और पुरुषों की ७५'४ है।

कुछ महीने हुये हार्डवर्ड युनीवर्सिटी के पुरुष विद्यार्थियों तथा रेडक्लिफ कालेज की स्त्री विद्यार्थिनियों को मिलाकर मनोविज्ञान-शास्त्र के अनुसार परीक्षा ली गई थी जिसमें एक स्त्री और पुरुष ८६ प्रति शतक औसत नम्बर लेकर प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुये थे। हार्डवर्ड के एक विद्यार्थी ने कम से कम जो नम्बर प्राप्त किये वह आठ थे, जबकि स्त्रियों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के कम से कम नम्बर २८ प्रति शतक थे। पुरुषों के लिये औसत नम्बर ५०.५ थे जब कि स्त्रियों के लिये ५५.।

यदि हम किंडरगार्टन से लेकर कालेज तक की पढ़ाई की जांच करें तो पता चलता है पुरुष और स्त्री विद्यार्थियों में बहुत कम फ़र्क रहता है। और एक ही प्रकार की योग्यता रखने वाले स्त्री पुरुषों के कार्यों के फल में भी कोई विशेष उत्तम या मध्यम का फ़र्क नहीं निकलेगा।

मैं अमरीका के प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्त्री पुरुषों की सूची बताने वाली पुस्तक को लेता हूं। अगर स्त्री पुरुषों की करीब एक सी ही योग्यता हो तो इस पुस्तक में विख्यात स्त्रियों के बहुत से नाम होने चाहियें यद्यपि उतने नहीं जितने कि पुरुषों के है। परन्तु यह इस लिये है कि अभी थोड़े ही समय से स्त्रियां उन कार्यों को करने लगी हैं जिनके कारण वह जनता की दृष्टि में पड़ती हैं। इस पुस्तक को कहीं से खोलें तो हमें मेरा या हार्नट-लैन्सडेल पुस्तक रचयित्री, मेराया फ्लोरेन्स लैंसिंग लेखिका, मार्क्विस कलेरा लान्ज़ा लेखिका, लिन्डा हल लार्नड गृह की अर्थशास्त्र वेत्ता, मेरी, आगस्ट लेसली लेखिका, हल्डा लशन्का गानशास्त्रज्ञ, लैला डेविस लास्कर समाज सेविका,—इत्यादि दो चार पृष्ठों पर एक दर्जन के लगभग नाम 'विख्यात व्यक्ति' शीर्षक में मिलेंगे।

परन्तु स्त्री पुरुषों की इस बराबरी का यह मतलब कदापि नहीं कि उन में एक समानता है। स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं एक दूसरे की नकल नहीं। इन दोनों जातियों में सामाजिक नियम तथा प्राणि-शास्त्र के अनुसार बड़े आवश्यकीय भेद हैं।

प्रोफेसर एडवर्ड ली थार्न डाइक, जो कि कोलम्बिया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान-शास्त्रज्ञ विख्यात हैं उन्होंने दोनों जातियों की मानसिक वृत्तियों के ख़ास २ भेदों को पृथक् पृथक् किया है। उनका कहना है कि स्त्रियां वर्णन विन्यास, अंग्रेजी, विदेशीय भाषाओं, तत्क्षण की यादगारी तथा स्मर्ण शक्ति में पुरुषों से बढ़कर रहती हैं और उनका कहना है कि पुरुष इतिहास, युक्ति, भौतिकी, रसायन--शास्त्र और चेष्टा की सूक्ष्मता में बढ़े हुए हैं।

एक वैज्ञानिक एक निबन्ध लिख रहे थे मैं भी उस समय पास था। वह प्रायः लिखते २ ऊपर मुंह उठाकर पूंछते रहते थे कि "Receivership" "Stupefy" "battalion" या अन्य "Sticker" शब्दों के हिज्जे क्या हैं। उसकी १३ वर्ष की लड़की जो कि हाई स्कूल की पहिली श्रेणी में थी बिना संकोच के बता देती थी परन्तु उसे यह आश्चर्य होता कि एक आदमी जो कि इतना पढ़ा लिखा गिना जाता है हिज्जे कराना भी नहीं जानता।

बिल स्मिथ को शायद ही कभी जन्म दिन, विवाह की वर्ष-गांठ या परिवार की अन्य आवश्यकीय घटनाओं की तिथियां याद रहती हों। नाहीं उसे यह याद आता है कि पिछली वर्षा के बाद उसने अपना छाता घर के किस कोने में रक्खा था। किन्तु क्या उस की स्त्री भूल सक्ती है? कदापि नहीं।

चूंकि स्वभावतः स्त्रियों की रुचि भाषा की ओर है इसलिये यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं कि समग्र संसार की विख्यात स्त्रियों में से ३९ प्रति शतक ऐसी हैं जो कि साहित्य के कारण ख्यात हैं। इंगलैंड की प्रायः सभी ख्यात देवियां लेखिकायें हैं। फ्रांस ने ऐसी देवियां तैय्यार की हैं जिन में लेखि-कायें, नाटक करने वालियां और राजनीतिज्ञ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी हैं। इटली और जर्मनी ने गानवाद्य-वेत्तायें पैदा की हैं और अमरीका के संयुक्त प्रांत ने सुधारकायें। बेशक इनके अतिरिक्त और भी पेशेवाली मशहूर देवियां हैं परन्तु इनकी सब से अधिक संख्या है। संयुक्त प्रांत में राजनीतिक क्षेत्र में जो कुछ स्त्रियां कर रही हैं उसे हम जानते ही हैं।

अभी हाल ही में स्त्रियों ने विज्ञान के क्षेत्र को भी सँभालने का यत्न किया है और संयुक्त प्रान्त की मनुष्य गणना विभाग से मुझे पता लगा है कि इन १० वर्षों में रसायन शास्त्र तथा धातु शोधन में स्त्रियों की संख्या तिगुनी हो गई है। इतने ही अरसे में कालिज की प्रिंसिपल और प्रोफेसर के कार्य्य में स्त्रियों की संख्या जो कि ३००० से कम थी अब १०००० से ऊपर हो चुकी है। १८००० वकील और जज्ज के रहते हुये आज हमारे पास १० वर्ष पहिले की अपेक्षा तिगुने वकील और जज्ज स्त्रियां हैं। ४००० बंक की अफसर हैं, और इतनी ही वस्तु तैयार करने के धंधों की अफसर हैं, और स्त्रियां डाक्टर, दांत बनाने वाली और पुरोहित तो असंख्य हैं। १० वर्ष पहिले जहां केवल ३३ मोटर चलाने वालीं स्त्रियां भी वहां पर आज १००० हैं।

यह सूचना बड़ी मार्के की है। क्या इससे पता चलता है कि मनोविज्ञान ने प्राचीन देवियों की इन क्षेत्रों में शक्ति केवल इसी लिये व्यर्थ पाई थी कि उनकी पहिली शिक्षा और परिस्थितियां इस प्रकार की थीं कि उनकी इधर रुचि नहीं थी?

एक समय स्त्रियां पुरुषों से कम इस लिये तौली गईं थीं कि उनके दिमाग़ पुरुषों की अपेक्षा छोटे हैं। उस के बाद मनोविज्ञान--वेत्ताओं को पता लगा कि दिमाग़ के आकार पर उसकी शक्ति निर्भर नहीं है, वरन् उस दिमाग़ के अन्दर जितने छिद्र हों और प्रायः करक छोटे दिमाग़ में बड़े की अपेक्षा अधिक छिद्र होते हैं।

जब विल स्मिथ यह कहता है कि उसकी धर्मपत्नी के दिमाग़ नहीं है तो उस का मतलब यह होता है कि उसकी मनोभाव तथा स्वभाव की शक्तियां उससे भिन्न हैं। यह शक्तियां नापी नहीं जा सकतीं और इनका पता भी नहीं लगता। प्रोफेसर थ्रोन्डाइक कहते हैं कि स्त्रियां मनोभावों, स्वभाव की मृदुता, जल्दबाजी, धार्मिकता, सहानुभूति, धैर्य्य, झूठा अभिमान, और लज्जा में अधिक वेगवाली हैं। दूसरी ओर पुरुष गुस्सा करने, स्वगुणज्ञान, हसी ठट्ठा, स्वाधीनता और तेजपन में तीव्र होते हैं, उनका मतलब औसत स्त्री और औसत पुरुष से है क्योंकि तुम्हें शायद ऐसा भी कोई पुरुष मिलेगा जो कि स्त्रियों की अपेक्षा बच्चों में अधिक रुचि रखता हो और कुछ स्त्रियां ऐसी भी मिलें जो कुछ पुरुषों की अपेक्षा अधिक आत्माभिमानी और आत्मश्लाघा प्रिय हों।

स्त्रियां व्यक्तियों में रुचि रखती हैं पुरुष वस्तुओं और घटनाओं में। पुरुषों की रुचि यह जानने की ओर होती है कि लोगों ने क्या २ किया? एक पुरुष वोटर के लिये किसी स्टेट या संयुक्त प्रान्त के गवर्नर की हैसियत में अमुक मनुष्य जो प्रधानी के लिये तैयार है उसके विषय में व्यवस्था पत्र कैसे हैं यह जानना लाभकारी है, बनिश्वत उसके कि वह अपने कुटुम्ब से प्रेम करता है या नहीं, गिरजे जाता है नहीं।

परन्तु यदि व्यक्ति-स्वभाव का परिचय पाना हो तो विल स्मिथ को अपनी स्त्री से हार माननी चाहिये। चूंकि स्त्रियां बच्चों का पालन पोषण करती हैं अतः उन्हें मनुष्य के विशुद्ध स्वभाव का—जब कि उस पर अभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

झूंठ, दग़ाबाज़ी और चालाकी का असर नहीं हुआ है—अधिक ज्ञान होता है। चूंकि मिसेज़ स्मिथ में स्वभावतः मनुष्य-मात्र के ख़ास गुणों का शुद्ध ज्ञान होता है अतः वह विल स्मिथ के स्वभाव को उस से बहुत बढ़कर जानती है जितना कि विल स्वयं जानता है।

यथार्थ में मनोविज्ञान यह बात बतलाने में कि पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान नहीं हैं चाहे कुछ प्रमाण दें तथापि विल स्मिथ का यह भाव कि वह अपनी स्त्री से ही नहीं बल्कि सब स्त्रियों से बढ़कर बुद्धिमान है—और इस भाव को बहुत से अन्य पुरुष भी रखते हैं—हमेशा स्थायी रहेगा। इसका कारण जानना सहल है। स्त्रियों का स्वभाव दबने वाला है, पुरुषों का उद्धत है। और जब स्मिथ साहब की धर्मपत्नी गृह कलह मिटाने के लिये चुप साध लेती है तो विल महाशय धूर्तता से समझने लगते हैं कि उनकी शक्ति बड़ी है।

और भी चूंकि हमारी सामाजिक अवस्था के अनुसार पुरुष धनोपार्जन करता है अतः उसके पक्ष में पलड़ा झुका रहता है। यह एक मनुष्य मात्र की कमज़ोरी है कि जब वह शक्तिशाली होता है तो अपने को सब से अधिक बुद्धिमान समझने लगता है।

पुरुष जाति स्त्रियों की अपेक्षा अधिक चंचल स्वभाव की है। पुरुषों में प्रतिभाशाली भी होते हैं, तो आशातीत मूंढ भी होते हैं। मनोविज्ञान-शास्त्र बतलाता है कि सौ में से एक आदमी प्रायः किसी स्त्री की अपेक्षा अधिक चतुर होगा। सीज़र नैपोलियन, लायडजार्ज, एडिसन जैसे लोग प्रायः हमेशः पुरुष ही होंगे—परन्तु इसी प्रकार सब से बढ़कर मूढ़ भी पुरुष ही होंगे। यह औसत दर्ज के आदमियों के लिये—जो कि महापुरुषों की कीर्ति में अपनी कीर्ति समझते हैं—गौरव की बात नहीं है, परन्तु विज्ञान द्वारा यही सिद्ध होता है।

पुरुष और स्त्रियां समान हैं, एक दूसरे के पूरक हैं। उनका सृष्टि के अन्त तक, ढूंढने, छिपाने, प्रेम करने और नफ़रत करने में समय जायगा और वह इन्हीं ऊपरोक्त सिद्धान्तों के अनुकूल जीवन व्यतीत करेंगे। (माडर्न रिव्यू)

दाढ़ी-चुटिया-सम्मेलन।

"मिला दो चुटिया-दाढ़ी को। पाट दो गहरी खाड़ी को॥
फूंक दो प्रीति-रीति का शंख। काट दो वैर-भाव का पंख"॥
यही उपदेश लीडरों का। मान, दल चला गीदड़ों का॥
साधकर असहयोगका योग। हुआ हिन्दू-मुस्लिम संयोग॥
नाम को रहा नहीं कुछ भेद। मुसल्मां लगे मानने वेद॥
लगे हिंदू कुरान पढ़ने। मियां साहब पुराण पढ़ने॥
खिलाफ़तकी आफ़त निज मान। किया हिंदू ने चन्दा-दान॥
कमेटी लगी जोर चलने। शत्रु सब लगे हाथ मलने॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मियांने गो-रक्षा का बाज़ । सुनाया, खोला दिल का राज़ ॥
बुरी गो-हत्या बतलायी ! बात हिंदू के मन भायी ।
मगर यह सब थी पोलमपोल । खोखली थी भीतर से ढोल ॥
बड़े हत्यारे वे निकले । कृतघ्नी घोर नीच निकले ॥
इसीसे भूल सकल उपकार । हमींपर करते हैं वे वार ॥
मान-धन सतियों का हरते । प्राणका नाश किया करते ॥
अभी तो कलकी ही है बात । किया दिल्लीमें जैसा घात ॥
लखनऊ की बारी आयी । तबाही हिंदू पर आयी ॥
लगे हाथों देखा कोहाट । जहां का बिगड़ा सारा ठाट ॥
वहां के लूटे सभी हिंदू । जान ले भगे सभी हिंदू ॥
कभी महलों में जिनका वास । भरी दौलत थी खासी पास ॥
बने उनको मुहाल हुये अब हैं । बने वे आज दिगम्बर हैं ॥
दे रहे मूँछों पर हैं ताव । मियां जी का पूरा है दांव ॥
दिखायी फिर नादिरशाही । मचा कर यों गुण्डेशाही ॥
शिखा-दाढ़ी का नक़ली मेल । मिट गया, निकला पूरा खेल ॥
साफ़ अब ख़ाका उतरा है । नक़ली चौतरा है ॥
लगाई आग, मूर्ति दी तोड़ । मियां ने हिंदूका सिर फोड़ ॥
मनाते हैं अब खुशियाली । दे रहे हिंदू को गाली ।
छोड़कर लीडर-गण की आश । छिन्न कर दुर्बलता का पाश ॥
सभी हिंदू बलवान् बनो । भीमअर्जुन सन्तान बनो ॥
बनो हे हिन्दू गण बलवान् । इसी से राजी हो भगवान ॥
तुम्हें हिंदू रहने देंगे । किसी विधि से जीने देंगे ॥
दिखा दो फिर प्रताप सा ताप । शिवाजी का सा पुनः प्रताप ॥
मिट गयी जब नौरंगशाही । रहे कब तक गुण्डेशाही ?

— ईश्वरी प्रसाद शर्मा ।
(मतवाला)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री—जगत्

गत मास की १३ तारीख़ को अली बान्धवों की वयो वृद्ध माता पूजनीया-बी अम्मां का देहली में देहान्त होगया। आपका निस्वार्थ और उत्साह पूर्ण और धैर्यमय जीवन स्त्री संसार के लिये सर्वथा अनुकरणीय रहेगा।

हमारे राजे और रानियां कितने स्वतन्त्र हैं यह बस्तर की राजकुमारी के विवाह की चर्चा से पता चलता है। बस्तर की पटरानी वर्त्तमान नाबालिग राजकुमारी प्रफुल कुमारी देवी का विवाह मयुरभंज के राजकुमार से करना नहीं चाहती। राजकुमारी स्वयं भी अपनी माता से सहमत है, परन्तु अंग्रेज़ी राजकर्मचारी चाहते थे कि विवाह मयुरभंज में ही हो। अब वाइसराय महोदय ने भी इन्हीं का समर्थन किया है। क्या यह दुःख का विषय नहीं कि राजकुमार और राजकुमारियों को अपना विवाह करने की इतनी भी आज़ादी प्राप्त नहीं जितनी कि साधारण आदमियों को है?

बीबी राजेन्द्र कौर अकाली महिला को जालन्धर में एक व्याख्यान के सम्बन्ध में ६ मास का कारागार दण्ड मिला था। उनके ६ मास पूरे कर जेल से छुटने पर अमृतसर की अकाली देवियों ने उनका स्वागत किया।

लन्डन में अभी २ एक श्रमजीवी स्त्रियों की परिषद् हुई थी। उसने प्रस्ताव पास किया है कि परिषद आशा करती है कि गवर्मैन्ट ऐसे कानून का समर्थन करेगी जो कि भारत को कैनेडा, अस्ट्रेलिया इत्यादि अन्य उपनिवेशों जैसा राज्य देने का प्रतिपोषक हो।

रूस की वर्तमान बोलशविक सरकार ने कितनी ही धनी महिलाओं के हीरों के गहने ज़ब्त कर लिये थे। अब सोवियट, सरकार इनका एक भाग जिसके तोल का अन्दाज़ा ४ मन ८ सेर का है बेचना चाहती है। अन्तर्जातीय हीरे के व्यापारियों की समिति इस से बड़ी भयभीत है। वह कहती है कि रूस सरकार जितने हीरे बेचना चाहती है वह साधारणतया १० वर्ष में बिकते, इसका फल यह होगा कि हीरों का व्यापार मलियामेट हो जायगा।

मिस कारनीलिया सोराब जी को कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत करने की आज्ञा मिल गयी है। आप बंगाल में पहिली वकील महिला हैं।

कैथोलिक स्त्री सेवा संघ बम्बई ने प्रान्त के भिन्न २ स्थानों पर ऐसी श्रेणियाँ खोलने का प्रबन्ध किया है जहाँ कि स्त्रियों को अपने तथा बच्चों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में शिक्षा दी जा सके। शिक्षिका एक डाक्टरनी होंगी और शिक्षा के विषय शरीररचना, गर्भवती माता की रक्षा; बच्चों की रक्षा; उनका आहार तथा साधारण रोग। इन विषयों पर एक छोटी सी पुस्तक भी तैयार की जा रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजमाता महारानी अलैक्षेन्डरा ने गत ४ दिसम्बर को अपनी ८० वीं सालगिरह मनाई। इस अवसर पर सैन्डरिंगंहम में एक सहभोज हुआ जिसमें इंग्लैन्ड के राज परिवार के अतिरिक्त नारवे देश की राज महिषी तथा राजकुमार भी सम्मलित थे।

———

मिस सुधांशुवाला हाज़रा पटना हाईकोर्ट की वकील हैं। अभी आप अपने प्रति पक्षी मा० प्राण कृष्ण पारिज प्रोफेसर कटक कालिज को बहुत बुरी तरह से हरा कर पटना विश्वविद्यालय की सैनट की सदस्य चुनी गयीं हैं। आप विश्वविद्यालय की (Syndicate) (कार्यकर्तृ सभा) की मैम्बरी के लिये भी खड़ा होना चाहती हैं। यह समस्त भारत में एक अद्वतीय मान है।

———

इस वर्ष सोनपुर में दो विचित्र लड़कियां आई थीं। दोनों एक में सटी हुई थीं। उनके कमर का हिस्सा तो एक था, परन्तु पैर चार थे। कमर के ऊपर दो सुन्दर मूर्तियां अलग हो गई थीं। उनकी अवस्था १४-१५ वर्ष की कही जाती है। दोनों को भूख प्यास निद्रा एक ही साथ लगती है। यह आपस में बातें भी करती हैं इनके नाम गंगा और गौरा है।

गत २३ सितम्बर को मा० जोशी ने लैजिसलेटिक एसैम्बली में इस आशय का एक बिल पेश किया कि कारखानों में काम करने वाली गर्भवती स्त्रियों को प्रसव से कुछ पहिले और सन्तान होने के कुछ समय बाद तक कारखानों में काम करने की आज्ञा न मिलनी चाहिये और इस समय के लिये कारखानों के मालिक उनको घर बैठे एक चौथाई वेतन दें।

———

श्रीमती बसन्ती देवी ने कांग्रेस के ध्येय को स्वीकार कर उस पर हस्ताक्षर कर दिये हैं और आपने श्री देवदास गांन्धी से चरखा कातना सीखना आरम्भ कर दिया है।

———

लाहौर में स्त्रियों को दस्तकारी सिखाने के लिये दो स्कूल हैं। एक सरकारी ज़नाना दस्तकारी स्कूल है। जो ५४०००) के ख़र्च पर चल रहा है। इस में से ११०००) छात्र वृति के रूप में दिया गया है। इस में २० के लगभग दैनिक उपस्थिति रहती है। दूसरा सर गंगाराम का हिंदू और सिक्ख स्त्रियों के लिये दस्तकारी स्कूल है। यह गत वर्ष आरम्भ किया गया था। इस पर १ लाख से अधिक खर्च हो चुका है और इस में ७० स्त्रियाँ और लड़कियां शिक्षा पाती हैं।

———

गृह-प्रबन्ध

रंगने के पीछे किसी भी वस्त्र को मरोड़ देकर न निचोड़ो। इसे नरमी से दबाकर निचोड़ लो और पानी को टपक जाने दो।

* * *

रंगने से पहिले सब कपड़ों के बटन, हुक इत्यादि उतार लो। एक बार रंग में उबालने के पीछे उस में थोड़ा सा नमक डाल दो और १५ मिनट तक फिर उबालो। इससे रंग पक्का हो जायगा।

* * *

अचार के बर्तन के नीचे जो सिरका रह जाता है उसे सब्ज़ी भाजी में थोड़ा २ डालने से यह बहुत स्वादिष्ट बन जाती है।

* * *

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कई घरों में डबल रोटी खाने का रिवाज़ पड़ता जाता है। बासी होने पर यह कभी २ बू देने लग पड़ती है। इसकी बदबू दूर करने का सुगम उपाय यह है कि इसे दूध में भिगोदो और फिर भट्टी अथवा चूल्हे की आंच में सेंक कर उसे करारा तथा भुरभुरा करलो।

* * *

कितने ही घरों में दीवारों पर काग़ज़ लगा रहता है। मैला होने पर इसको साफ़ करने की उत्तम विधि यह है कि कम से कम तीन दिन की बासी डबल रोटी लेकर उसके टुकड़े से दीवार को आहिस्ता २ नीचे की ओर रगड़ो।

* * *

पीतल के बर्तनों पर कलई चढ़ाने अथवा अन्य किसी प्रकार का पालिश चढ़ाने से पहिले उन्हें साबुन और पानी से भली प्रकार धो डालो और फिर मट्टी का तेल और ठंढी राख को मिलाकर इस से खूब मांजो।

* * *

तांबे की चीज़ों को खट्टे के रस अथवा सिरके और नमक से रगड़ कर साफ़ करो, फिर साबुन के पानी से धो डालो। जलने के अथवा अन्य काले २ धब्बे राख से रगड़ कर उतार दो और फिर पालिश करो। सब से पीछे मशीन के तेल में भीगे कपड़े से पोंछ दो।

* * *

नौकर प्रायः आंच जलाने में मिट्टी के तेल से काम लेते हैं परन्तु जिसप्रकार लकड़ी अथवा कोयलों पर उड़ेल कर वह काम करते हैं उस से तेल भी अधिक लगता है और बू भी फैलती है। यदि किसी पुराने टीन के बर्तन में कुछ कोयले अथवा लकड़ी के टुकड़े मट्टी के तेल में भिगो दिये जांय और इन्हें आवश्यकता पड़ने पर काम में लाया जाये तो ऊपर बतलाये दोष दूर हो जाते हैं।

* * *

कलाकौशल।

पंच पतिया लेस और कोना।

ले०—श्रीमती ओ३म्वती जी

संकेतः—चेन के लिये "चे"; तेहरा क्रोशिया = "ते"; दोहरा क्रोशिया = दोहरा "दो"; लम्बा तेहरा = "ल. ते"; ।

लैस्यट = (३ चेन, २ छोड़ कर, १ दोहरा अगले फन्दे में, ३ चेन दो फन्दे छोड़ कर १ तेहरा अगले फन्दे में)। "लै" एक बार वा बन्द लैस्यट = "ब" (यह लैस्यट के ऊपर बनाया जाता है,) ५ चेन, १ तहरा लैस्यट के तेहरे पर।

ख़ाना = २ चेन, दो फन्दे छोड़ो १ ते, अगले फन्दे में। यदि ३६ नं० का काटन हो, ५॥ नं० का क्रोशिया हो तो ३॥ इंच चौड़ी लेस होगी।

आरम्भ में ५० चेन करो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

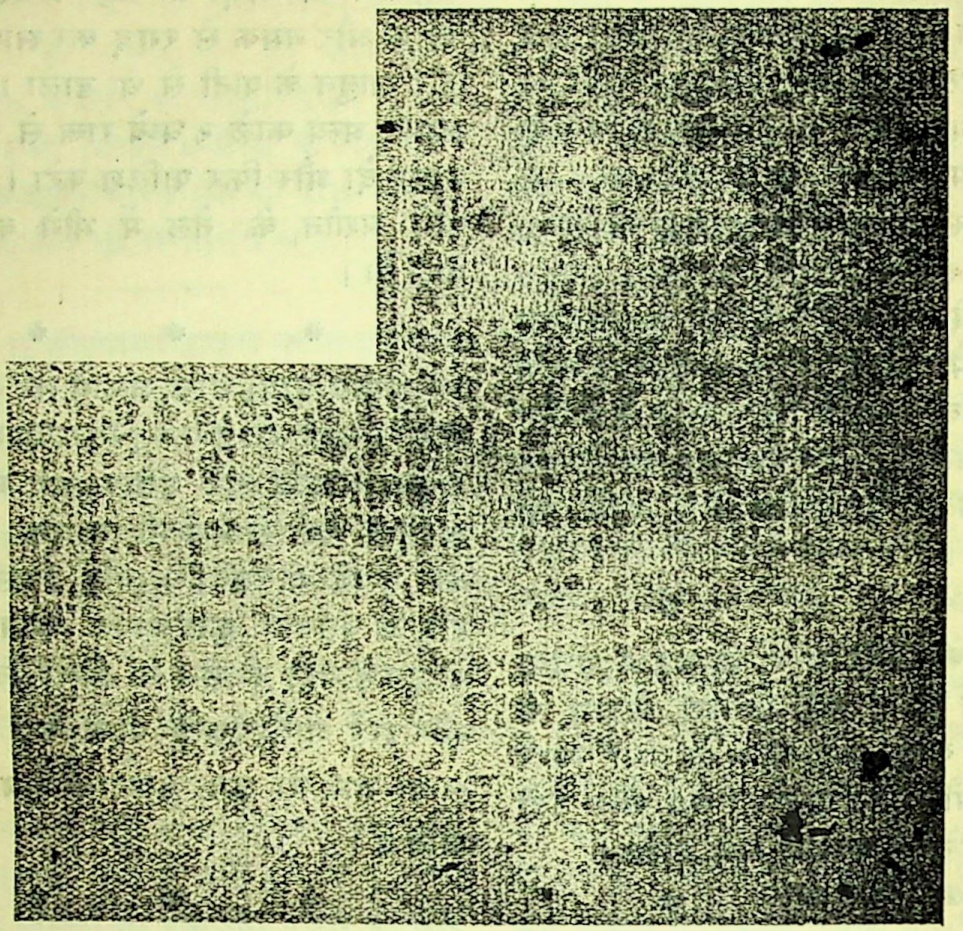

१ पंक्तिः—१ तेहरा क्रोशिये से ७वीं चेन में ६ ते. अगली ६ चेन में, ६ लैस्यट, १ ते. अन्त वाले घर में।

२ पंक्तिः—३ चेन तेहरे की जगह, १ ते दूसरे तेहरे पर, ६ बन्द लैस्यट, ६ ते. पिछले ६ तेहरों पर।

३ पंक्तिः—१३ चेन, १ ते, क्रोशिये से ८वीं चेन में, ५ ते. अगली ५ चेनों में, १ ते. झुंड के पहिले ते. पर, ७ लै. १ ते. पिछले ते पर।

४ पंक्तिः—३ चे. तेहरे के लिये १ ते अगले ते. पर, ४ ब. लै. १२ ते. अगले दो लैस्यटों पर, १ ब. लै ६ते, ६ ते. पर।

५ पंक्तिः—१३ चे, १ ते. ८ वीं चेन में, ५ ते. अगली ५ चेनों में, १ ते. पहिले तेहरे पर, २ लै. १२ ते. अगले १२ ते. पर, २ चे. ३ ते. पहिले बार पर १ ते. अगले ते. पर, ५ ते. बार पर, १ ते. अगले ते. पर, ३ ते. अगले बार पर, २ चे. १ ते. अगले ते. पर, १ लैस्यट, १ ते. पिछले ते पर।

६ पंक्तिः—३ चे १ ते अगले ते. पर, १ ब. लै., २ चे. १३ ते. तेहरों पर, २ चे. १३ ते. २ बार, ६ ते. ते. पर।

७ पंक्तिः—१३ चे. १ ते. ८वीं चे, में, ५ ते. ५ चे पर, १ ते. पहिले ते. पर, ३

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लैस्यट, २ चे. २ ते. छोड़कर २५ ते. बराबर, २ चे. १ ते. अगले ते. पर, १ लै. १ ते. पिछले ते. पर।

८ पंक्तिः—३ चे. १ ते. अगले ते. पर, १ बार, २ चे. १३ ते. २ ख़ा. ३ ते. अगलों पर, २ चे. २ ते. छोड़ो, १० ते. (१ ख़ा और १ लैस्यट पर) २चे ६ ते।

९ पंक्तिः—१३ चे १ ते ८वीं चे. पर, ५ते. ५ चे. पर, १ ते. ते. पर, २ लैस्यट, २ चे. ३ते. बार पर, १० ते. अगले १० ते. पर, २ ते. खाने पर, १ ते. ४ ते. में के पहिले ते. पर, १ खा. २ ते. अगले ख़ा. पर, १ ते. ते. पर, २ ते. ख़ा. पर, १ ते. अगले ते. पर, १ ख़ा. ३ ते. १ लै. ३ चे. १ ते. ते. पर, लै. १ ते. ते. पर।

१० पंक्तिः—३ चे ते. के लिये, १ ते. ते. पर १ बार, १ ख़ा. १ बार, ३ ते, १ ख़ा. ६ ते. १ ख़ा. १५ ते. १ खा. २ बार ६ ते. अन्त वालों पर।

११ पंक्तिः ७ चे. सादे फन्दे तेहरों के झुंड के पिछले तेहरे पर तक, ३ चे. ते. की जगह, ५ते. बार पर १ते ते. पर, २ लै ६ ते. ते पर, १ ख़ा. २ ते. ख़ा. पर, १ ते ते. पर, २ख़ा २ते. ख़ा पर, ४ ते. तेहरों पर, ५ ते बार पर, १ ते. ते. पर, १ ख़ा. २ लै १ ते. अन्त वाले पर,

१२ पंक्तिः—३चे. १ते. १ बार, १ख़ा १२ते. ते. पर, २ते. ख़ा. पर, १ते. ते. पर, २ते. ख़ा. पर, ४ ते. ते. २ ते. ते. खा. पर, १ ते. ते. पर, १ ख़ा, ३ बार, ६ ते.।

१३ पंक्तिः— ७ चे. सारे फन्दे तेहरों के झुंड पर, ३ चे. ते. की जगह ६ ते. २ लै. १२ ते. १ ख़ा. १२ ते. १ ख़ा. १ लै. १ ते.।

१४ पंक्तिः—३चे. ते. के लिये, १ ते. १ बार १२ ते. १ ख़ा. १२ ते. २ बार, ६ ते.

१५ पंक्तिः—७ चे, सादे फन्दे तेहरों के झुंड पर, ३ चे. ६ ते. १ लैस्यट, १२ ते. ४ लैस्यट १ ते.।

१६ पंक्तिः—३चे. १ ते. ७ बार ६ ते.।

१७ पंक्तिः—७ चे सादे फन्दे सब तेहरों पर ३चे ते. के लिये, ६ ते. ६लैस्यट, १ ते.

१८ पंक्तिः—३चे १ते. ६ते ६बार, अन्त पर, यह लेस हो गई।

अब कोना शुरु होगा।

१ पंक्तिः—१३ चे १ ते. ८वीं चे. में, ५ ते. चेनों में, १ते. पहिले ते पर, ७ लैस्यट।

२ पंक्तिः—८ चे. १ ते. लैस्यट के ते. पर, ३ बार, १२ ते. २ लैस्यटों पर, १ बार ६ ते.।

३ पंक्तिः—१३चे. ६ते. ८वींचेन से लेकर, १ते. ते. पर, २ लै. १२ ते. २ चे. १२ ते. अन्त तक।

४ पंक्तिः—३ चे. १२ते. २ चे १२ ते. पर, २ बार, ६ ते.।

५ पंक्तिः—१३ चे १ ते. ८वीं चे पर, ५ ते चे. पर १ ते. ते. पर, ३ लैस्यट, २ चे. २ छोड़ो, १६ ते. बराबर।

६ पंक्तिः—३ चे. ६ ते. २ ख़ा. ३ ते. ते. पर, २ चे, २ छोड़ो, १० ते. २ बार, ६ ते. पिछले ते. पर।

७ पंक्तिः—१३ चे १ ते. ८ वीं चेन में, ५ ते. चेनों में, १ ते. ते. पर, २लैस्यट २ चे १६ ते. २ चेन, २ ते. छोड़ो ७ ते. अगले २ खानों पर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

८ पंक्तिः—३ चे., ६ ते., २ चे., १६ ते , २चे , १ ते., २ बार, ६ ते., तेहरों पर।

९ पंक्तिः—७ चे., सादे फ़न्दे तेहरों के झुंड पर, ३चे., ते. के लिये ६ ते., २ लै, ६ ते.,२ चे., २ छोड़ो, १ ते , ते, पर, २ ते , ख़ा. पर, १ ते , अगले झुंड के पहिले ते. पर,।

१० पंक्तिः-६चे , २ते., छोड़कर, १ ते , २चे., २ चे., छोड़कर, १ ते , ३ चे , ३ ते , छोड़ो, १ ते., ३ बार, ६ ते., ते , पर

११ पंक्तिः ७ चे., सादे फ़न्दे सब तेहरों पर, ३ चे , ६ ते., ३ लैस्यट।

१२ पंक्तिः-८ चेन, १ ते , लैस्यट पर के पहिले ते., पर, २ बार, ६ ते., पिछले ते, पर।

१३ पंक्तिः ७ चे , सादे फ़न्दे तेहरों पर, ३ चेन, ६ ते , १ लैस्यट।

१४ पंक्तिः-६ चे., १ ते., लैस्यट के पहिले ते., पर, ६ ते., पिछलों पर।

१५ पंक्तिः-७ चे., सादा फ़न्दा सारे तेहरों पर, १३ चे,।

१६ पंक्तिः-१ ते., ८ वीं चेन में, ५ ते., अगली ५ चेनों में, सादा फ़न्दा ३सरी चेन में बार की, बाकी दो चेनों में भी ६ ते., तेहरों पर।

१७ पंक्तिः-१३ चेन, १ ते., ८ वीं चेन मे ६ते. २ लैस्यट १ तेहरों पर और दूसरा लैस्यट के किनारे पर, सादे फ़न्दे तीसरी चेन से लेकर अन्त तक ।

१८ पंक्तिः-२ बार., ६ ते, अन्त वालों पर।

१९ पंक्तिः-१३ चे., १ ते., ८ वीं चेनमें , ६ ते. और ३ लैस्यट, १ ख़ा. २ चेन, सादा फ़न्दा तेहरों में के पहिले ते. पर, २ सादे अगली २ चेनों पर।

२० पंक्तिः-१० ते, खाने और लैस्यट पर, २ बार ६ ते.,।

२१ पंक्तिः-१३ चे, १ ते., ८ वीं चेन में ६ ते और, २ लैस्यट, २ चेन ३ ते, बार पर, १० ते., तेहरों पर, ३ ते खान पर, २ चेन, सादे फ़न्दे ४ थे तेहरे पर से अन्त तक।

२२ पंक्तिः-२ चे., १६ ते , १ ख़ा., २ बार, ६ ते. तेहरों पर।

२३ पंक्तिः-७ चे, सादे फ़न्दे सारे तेहरों पर, ३ चे, ६ तेहरे, २ लैस्यट, ६ ते , २ चे, २ छोड़ो, ४ ते, खाने पर, २ चे , १ ते. किनारे वाले ७ तेहरों के झुन्ड पर, २ चेन, सादे फ़न्दे ४थे तेहरे से लेकर ७वें तेहरे पर तक।

२४ पंक्तिः-१३ ते., बराबर, १ ख़ा. ३ बार, ६ ते., तेहरों पर।

२५ पंक्तिः-७ चे., सादे फ़न्दे तेहरों पर, ३ चे. ६ ते. २ लैस्यट १३ ते. २ चेन ३ ते. तेहरों की पहिली पंक्ति के किनारे ३ ते, दूसरे तेहरों के झुन्ड के ऊपर, सादे फन्दे १०वें तेहरे पर से १३वें तेहरे के ऊपर तक।

२६ पंक्तिः-६ ते , ६ तेहरों पर, २चेन, १३ते २ बार, ६ ते., तेहरों पर॥

२७ पंक्तिः ७ चे,सादे फन्दे तेहरों पर, ३ चे, ६ते, १ लैस्यट, १३ते. २ लैस्यट, ३चे, १ दोहरा, अगले १३ तेहरों में के १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिछले तेहरे पर, ३चे., सादे फन्दे बार के तेहरे पर, और पिछली बार की चनों पर।

२८ पंक्ति -६ बार, ६ ते., तेहरों पर।

२९ पंक्तिः-७ चे., सादे फन्दे तेहरों पर, ३चे ६ ते. ६ लैस्यट, १ ते. सिरे की लकीर पर। यह कोना समाप्त हुआ।

अब दूसरी पंक्ति से १८ वीं पंक्ति के अन्त तक लैस की अगले फूल के लिये बीनो बार २ जितनी लम्बी चाहिये।

किनारे के लियेः—पहिले तेहरों के झुन्ड के किनारे के छेद में सूत को बांधलो, ३ चेन, * १ दोहरा, अगले छेद में ५ चेन, १ दोहरा, ६ चेन, १ दोहरा ५ चेन, १ दोहरा सब उसी छेद मे, ३ चे, एक लम्बा तेहरा दो नोंकों के बीच कीजगह पर, ३ चे, फिर उसी तरह ५ चेन १ दोहरा···इत्यादि इस* निशान से सारे फूलों पर॥

संगीत विद्या। ❀

[ले० श्रीमती सुशीलादेवी जी धर्म पत्नी रायबहादुर ला० सुलतान सिंह जी दिल्ली।]

प्यारी बहनों!

जिस आसन को आपने मुझे प्रदान किया है मैं सर्वथा उसके अयोग्य हूं। यह आसन बड़ा ही उच्च है इसकी रक्षा तो वही व्यक्ति कर सकता है जो संगीत शास्त्र का पारंगत हो, मेरी तो संगीत-सागर तट तक भी पहुंच नहीं है। आपकी सहायता से सम्भव है किनारे तक पहुँच जाऊं। ऐसी अवस्था में आप संगीत पर यदि मुझ से सुनने की आशा रखने पर निराश हों तो आश्चर्य ही क्या है। अपनी योग्यता के अनुसार जो कुछ इस विषय में मुझे ज्ञात है मैं मैं आपके सामने रखती हूँ।

मनुष्य का जितना काम है, सब का उद्देश्य सुख है। बुरा या भला जो भी काम मनुष्य करता है, उसमें उसका ध्येय यही होता है कि इस काम के करने से हमको सुख मिलेगा। सुख मिले या दुःख यह तो उस काम पर निर्भर है, पर मनुष्य की आकांक्षा सुख ही प्राप्त करने की होती है। सचमुच सुख क्या है इसके समझाने की विशेषतः आवश्यकता नहीं। सभी लोग जानते हैं कि सच्चा सुख तन-धन में नहीं है। सच्चा सुख यदि कहीं है तो अन्तःकरण में। बाहरी ठाठ बाट, लम्बी चौड़ी बातों से भले ही कुछ मिनटों या घंटों के लिए सुख मिल जावे पर अन्तःकरण का सुख स्थायी होता है, वह अमिट और अचल होता है। जो बात, जो शिक्षा अन्तःकरण स्वीकार कर लेता है क्या वह उपदेश कभी भूलने की चीज़ हो जाता है? कभी नहीं। अन्तःकरण जिस

❀ हरि कीर्तन मंडल के द्वितीयाधिवेशन में सभानेत्री की हैसियत से श्रीमती सुशीला देवी ने इस को पढ़ा था। संपादिका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बात को स्पर्श न करेगा। उस बात को हज़ार उपाय से समझाइये सफलता कदापि न होगी। अन्तःकरण को खींचने की शक्ति किस विद्या में है। विचार कर देखिए तो वह विद्या "संगीत" है। यदि इतना प्रभुत्व संगीत को प्राप्त न होता तो कदापि भर्तृहरि जी इस श्लोकार्ध को न कहते कि "संगीत साहित्य कला विहीनः साक्षात्पशु पुच्छ विषाण हीनः।" इसका मतलब यह हुआ कि जो संगीत और साहित्य कला से हीन होता है वह सींग-पूंछ रहित पशु है। इस प्रकार के वाक्यके सहन करने का आसाधारण कार्य मनुष्य के सिर पर है। हमको इस स्थान पर विशेष चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम जानते हैं कि हम लोग संगीत और साहित्य से शून्य नहीं। हम यह भी जानते हैं कि हमारा हृदय 'कला' प्रिय है। यदि यह बात न हो तब तो बेशक हमारी मनुष्य नहीं पशु संज्ञा हो सकती है। इस बात को यों समझिए। देखिए! चक्की चलाने वाली ग्रामीण बहनें गीत के द्वारा अपने श्रम को भुला देती हैं। खेत में काम करने वाला किसान अपने पसीने को गा कर पोंछ डालता है। राजगीर बड़े से बड़ा पत्थर तिमंज़िले मकान पर चढ़ा देता है। इसी तरह चरवाहा-हलवाहा-बड़ा छोटा सब की ओर निगाह फेर कर देखिए तब स्पष्ट हो जायगा कि गाने और रोने से कोई वंचित नहीं-रेवड़ी बेचने वाला, चूरन, दिया सिलाई, और पान बेचने वाले भी गाने का आधार लेते हैं कोई गुन गुनाता है, कोई अलग गाता है। कोई चार आदमियों में बैठ कर अपने गुण से लोगों को मुग्ध करता है। एक राहगीर से लेकर बड़े बड़े महर्षि तक संगीत का आश्रय लेकर मोक्ष अधिकारी हो जाते हैं। भगवान का आराधन करने के जो पद हैं-वे गाने के लिये हैं। ऋषि महर्षि भक्त उपासक सभी उसका आश्रय लेते हैं। उन पदों को गा-कर भगवानकी पूजा करते हैं। अब तो भगवान के भजने वाले जिन पदों को गाकर भगवान का आराधन करते हैं उनका नाम ही 'भजन' होगया। इस समय भी भारतवर्ष में कोई भी ऐसा संप्रदाय न होगा जिस में भजन का आदर न हो। इस प्रकार से संगीत का प्रचार किसी न किसी रूप में सर्वत्र है पर हां यहां हमें प्रौढ़ संगीत की ओर भी कुछ ध्यान देना चाहिए।

हमारे प्रौढ़ साहित्य के प्रचारकों और पुष्टिकारकों में श्री स्वामी हरिदास और मियां तानसेन का नाम बड़े गौरव से लिया जा सकता है। बड़े बड़े राजा और बादशाह संगीत प्रेमी होगये। सभी राज दरबार कार-बार में संगीत का जो इतना प्रचार हो गया, इसका यही तो कारण है! आज तो मसजिद के सामने बाजा बजाना चाहिए या नहीं इस बात का झगड़ा होता है पर उस समय स्वयं अकबर बादशाह बगल में वीणा दबा कर स्वामी हरिदास के दर्शनों को गया था ऐसी ही कथाएँ संगीतज्ञ जनों के आदर के सबन्ध में सुनने में आती हैं। उस प्रौढ़ संगीत का बीच में खूब ह्रास हुआ। यह ह्रासता यहां तक बढ़ी कि गंदे गाने होने लगे और उन गन्दे और भ्रष्ट गीतों का आदर संसार करने लगा। भारत की प्राचीन संपत्ति को नष्ट करने में भ्रष्ट संगति ने भी पूरा भाग लिया)-कहां तो शुद्ध और सुन्दर संगीत का हर जगह प्रचार था कहां अशुद्ध और भ्रष्ट गीतों ने अपना क़ब्ज़ा जमा लिया! मेघ-दीपक इत्यादि रागों का गुण लोप होने लगा। सर्प और हिरण जिस संगीत से मुग्ध हुआ करते थे, वे बातें स्वप्न होगईं। भैरवी और आसावरी का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोगनाशक प्रभाव लोगों की दृष्टि में घटगया। सितार के स्वर पर चिड़ियों का नाच अब बंद हो गया। इसके साथ ही साथ साहित्य और समाज का भी उच्चादर्श कम होगया। चरित्रत्व में शीलता आने लगी, स्वर-ताल-राग-नृत्य इत्यादि बातें लुप्त हो गईं इनका स्थान अशुद्ध गीतों ने ले लिया। शान्त रस को दूर हो जाने की नौबत आगई। महे शृंगार का साम्राज्य हो गया। ध्रूपद और भीम पलासी को लोग समझते ही नहीं थे। संयम-नियम का जो उच्च उपदेश था उसका लोप हो गया और अश्लीलता का राज्य! संगीत के साथ ही संस्कृत और हिंदी का भी आसन डिग गया था क्योंकि संगीत की माता तो संगीत ही है। सूर तुलसी हित हरिवंश के हृदय हिलाने वाले उपदेशात्मक भजन मीरा नरसी और कबीर के हृदयोद्-गार कौन सुनाने लगा। सभी बातें स्वप्न हो गईं। पर भगवान की कृपा से भारत का दिन फिर फिरा और पं० विष्णुदिगम्बर ने अवतार लिया। आपने संगीत का पुनरुद्धार किया। आपके शिष्य प्रशिष्य देश देशान्तर में विचर कर शुद्ध संगीत का प्रचार कर रहे हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम इसमें तन मन और धन से हाथ बटावें।

प्रेम

—०—

लेखक—मुकुन्द

प्रेम पर स्थित सारा-संसार।
हम में, तुम में, इस मन्दिर में, प्रेम का ही तो है संचार॥
प्रेम पर स्थित सारा-संसार॥ १॥
सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, पताल को, प्रेम का है केवल आधार।
क्योंकि जल-स्थल,व्योम-वायु में, प्रेम की ही बहती है धार॥
प्रेम पर स्थित सारा-संसार॥ २॥
बन, उपवन में, जग-कण-कण में, प्रेम का ही छाया है सार।
तन में, धन में, सब सुमनों में, प्रेम-मधुकर करता गुंजार॥
प्रेम पर स्थित सारा-संसार॥ ३॥
कहें कहां तक दृष्टि, बुद्धि, मन, जहां तक जाते इस का कार।
प्रेम ईश का रूप-दूसरा, प्रेम पर है त्रिभुवन का भार॥
प्रेम पर स्थित सारा- संसार॥ ४॥
निश्छलता, अकुटिलता, सतता, और इसका उदारता सार।
आदर, भक्ति, विरक्ति करुणता, मुद, ममता का है आकार॥
प्रेम पर स्थित सारा-संसार॥ ५॥
शोक-हर्ष, आशा निराश, भय- निर्भयता, अदुलार- प्यार।
इन विरुद्ध-भावों का स्थल, है, प्रेम की महिमा अपरम्पार॥
प्रेम पर स्थित सारा-संसार॥ ६॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फैक्टरी के काम से स्त्रियों को हटाने की आवश्यकता

स्त्रियों के लिये घर में जितना काम है उसे अगर वह पूरी जिम्मेवारी के साथ करें तो उन्हें घर के बाहर धन्धे ढूढ़ने के लिये न तो समय ही रहता है और न आवश्यक्ता ही होगी। क्योंकि जितना समय वह बाहर बिता कर धनोपार्जन करती हैं उतना ही उनके परिवार को कष्ट होता है, उनका घर ख़राब होता है और बच्चे रुलते हैं। पाश्चात्य सभ्यता ने हमारे भारत के सामने यह आदर्श रक्खा है कि घरके काम दूसरों को दो, दूसरों के काम आप करो। विलायत में ही क्या सारे पश्चिमी देशों में स्त्रियां बाहर२ घूमती तथा जीवन के काम करने के घन्टे फैक्टरी या दफ्तरों में बिता देती हैं और फिर उनके बच्चों को सम्भालने के लिये आश्रम, स्कूल, स्पताल बनते हैं, घरकी रोटी की जगह होटल, तन्दूर! तथा और सैंकड़ों प्रकार से घरेलू धन्धे टके देकर दूसरों से करवाते हैं। अगर सोचा जाय तो जितना स्त्रियां नगद कमाकर लाती हैं उस से कहीं ज्यादः धन के रूप में न सही परन्तु लाभ के रूप में उन के बाहर रहने से नुक़सान हो जाता है। अब तो पाश्चात्य लोग भी इसको स्वीकार करते हैं, परन्तु एक चला हुआ ढर्रा जल्दी बन्द होना मुश्किल होता है।

भारत में भी यही चलन शुरू हो चुका है परन्तु इसके विरुद्ध आवाज़ें बहुत जल्दी उठने लगपड़ी हैं। अतः मज़दूर श्रेणी के लोगों तक ही यह परिमित हैं। या यों कहिये कि यह भाव विद्यमान तो सभी श्रेणी में है, इसका प्रकाश यहां पर अभी दो स्वरूप में है: एक तो वही मज़दूर श्रेणी जिसकी बाबत हम आज लिखना चाहते हैं, दूसरी है ब्राह्मण-वृत्ति नाम की मज़दूर श्रेणी। अथवा यों कहिये कि अध्यापिका उपदेशिका, प्रचारिका का काम कमाई करने की दृष्टि से करने वाली श्रेणी। दूसरी श्रेणी ने अभी वह विकटरूप धारण नहीं किया है जो कि पाश्चात्य देशों में है, तथापि आर्य सभ्यता की जड़ में कुठारा घात शुरू होगया है। अस्तु इस विषय पर हम फिर कभी लिखेंगे। आज हम ज्योति की पाठिकाओं को यह बतलाना चाहते हैं कि हमारे पढ़े लिखे भाई इस विषय में क्या विचार करते हैं।

महाशय यस. पी. नादकर्णी एक मासिक पत्र में उद्योग धंधेके विषय में लिखते हुये कहते हैं कि "सब से अधिक आवश्यक्ता यह है कि स्त्रियों को फैक्ट्री के काम से सर्वथा मुक्त कर दिया जाय। क्योंकि उनके ऊपर रसोई और बच्चों के पालन पोषण का भार तो होता ही है इससे इन विचारियों पर और भी अधिक कष्ट पड़ता है। ख़ास कर भारतवर्ष में जहाँ पर मज़दूर सस्ते और बहुत मिलते हैं- स्त्रियों को विशेषरूप से फैक्ट्रीके स्वास्थ्य के नष्ट करने वाले श्रम से अलग रखना चाहिये। स्त्रीही गृहस्थ जीवन की प्राण है। जब तक वह उचित देख रेख न करे तो घर में कोई अच्छाई नज़र नहीं आती। यह स्त्री के ही हाथ में है कि वह चाहे गृहस्थ सुख को बनावे या मिटावे। पहिले तो बच्चों का पालन पोषण और शिक्षा में ही समय का बहुत हिस्सा बीत जाता है जो कि अगर वह दिन के दस घंटे फैक्ट्री में काम करें तो बचाही नहीं सकतीं। इसका नतीजा यह होता है कि हमारी सन्तान-जाति की भावी धरोहर माता की देख रेख और रक्षा न प्राप्त कर कमज़ोर और बुरी बन रही है। स्त्री के बहुत समय तक घर से बाहर रहने के कारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा सारा ध्यान फैक्टरी के कार्यों में बिताने से उनका घर एक प्रकार का स्तबल बन जाता है जहाँ पुरुष, स्त्री और बच्चे अन्न खाकर आराम कर लेते हैं। यदि स्त्री फैक्टरी में काम न करे तो जो मज़दूरी की हानि होगी वह एक तो पुरुषों की मज़दूरी कुछ अधिक बढ़ जाने से पूरी हो जायगी और शेष घर में रहती हुई जो काम स्त्रियां कर सकती हैं जैसे कि चर्खा कातना, चक्की पीसना या कुछ घंटे किसी के बच्चे खिलाने का काम ले लेना या मिल के लिये रद्दी बटोरना और भी बहुत प्रकार के धंधे हैं जिन से आमदनी बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार मजदूर लोगों के परिवारों में कहीं अधिक सुख और शान्ति होगी।"

भारतीय महिला विश्व-विद्यालय

'स्त्री धर्म' लिखता है कि भारतीय-महिला विश्व विद्यालय का दीक्षान्त संस्कार बड़ी धूम धाम से मनाया गया। यद्यपि यह संस्था एक आना भी दान या ग्रान्ट के रूप प्राप्त न होने पर ही शुरू की गई थी, किन्तु इसने लोगों का ध्यान और सन्मान इतना आकृष्ट किया कि इसके छठे वर्ष में ही इसे १८ लाख रुपयों का दान प्राप्त हो गया और इस नवे वर्ष में इसके पास नवीन कालिज का मन्दिर है एक आश्रम है। और उपाध्यायों तथा विद्यार्थियों के घर भी हैं। इन नवीन इमारतों पर २,५०,००० रुपया लगा है। यह बड़े हर्ष और गर्व की बात है कि इस विश्व-विद्यालय ने गत तीन वर्षों में ८६००० रुपयों का कर्ज भी धन एकत्र करके पाट दिया है। अब कालेज निश्चित उन्नति पथ पर है। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने अब बम्बई में एक नया स्कूल भी खोला है! और ६ अन्य स्कूल और २ कालेज भी इस विश्वविद्यालय की सहायता करते हैं और इसी के अधिकार में हैं। २० से ऊपर महिलायें इसमें स्नातिका बन कर निकल चुकी हैं। ६ देवियों और ५० पुरुषों ने गत वार्षिक सिनेट की मीटिंग में भाग लिया था। जिस से यह बखूबी पता लगता है कि इस शिक्षा के केन्द्र में कितने विख्यात शिक्षा प्रश्न पर विचार करने वाले सज्जन आकृष्ट हुए हैं।

विचार प्रवाह

वेद का वैज्ञानिक अनुशीलन

अगस्त मास के अन्त में आक्सफोर्ड में धर्म प्रचारकों की एक सभा हुई थी जिसका मुख्य उद्देश्य धर्म और विज्ञान के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार करना था। सभापति का आसन मान्यस्पद पादरी ईंगे साहब ने ग्रहण किया था। आप अपने उदार विचारों तथा विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान तथा उसके प्रति सहानुभूति के लिये प्रसिद्ध हैं। आप का भाषण बड़े महत्व का था। आपका कथन है कि यदि धार्मिक विश्वास मनुष्य स्वभाव के अमिट तत्व पर आश्रित है तब इस से बढ़ कर और कौन सी विपदा हो सकती है कि इन विश्वासों और विज्ञान की शिक्षा में एक न मिटने वाला भेद भाव बना रहे। यह भेद भाव एक बड़े भयावने फोड़े के समान है जिस पर कोई पट्टी नहीं बांधी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जा सकती। इस घाव को यथा शक्ति भरने का यत्न करना इस कान्फ्रेंस का मुख्य उद्देश्य है, परन्तु धार्मिक सचाई उस समय ज्ञान पर निर्भर होती है जब कि उसका प्रकाश हुआ हो। यह ज्ञान उस समय का विज्ञान है और ज्यों २ यह बदलता जाता है धार्मिक सचाई नगीने की भांति पुराने विचारों के ढाञ्चे में जड़ी रह जाती है। अतः धर्म और विज्ञान में सन्धि करवाने वालों का उद्देश्य देश और काल से भी ऊपर रहने वाले धार्मिक सत्य को इस पुराने ढांचे से निकाल कर विशुद्ध और वास्तविक रूप में प्रकट करना है। यह विशुद्ध सत्य, पादरी इंगे के मत में नेकी, सचाई और सुन्दरता है। संसार में यही सब से बढकर अस्तित्व रखने वाली वस्तु हैं। यह अनादि हैं। अतः परमात्मा का—जिसमें कि इनकी परा-काष्ठा है-अस्तित्व अवश्य है।

क्या पादरी साहब के कथन का यह अभिप्राय नहीं कि सत्य, निर्मल शुद्ध सत्य सदा एक रस रहता है। मनुष्य अपने बदलने वाले अथवा बढ़ने वाले ज्ञान से इसके रूप में-बाह्य रूप में परिवर्तन करता रहता है। जो अनादि और अनन्त सत्य है, वह सदा एक सा बना रहता है और उसके पहिचानने के लिये विज्ञान और धर्म में कोई झगड़ा नहीं।

मनुष्य अल्पज्ञ है, बिना सिखाये वह कुछ नहीं सीख सक्ता। अतः यदि उसको इस सदा एक रस रहने वाले सत्य का ज्ञान कुछ लाभ दे सक्ता है तो उसी अवस्था में जब वह आरम्भ से ही उसे प्राप्त हो। अतः ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ही होना चाहिये। और यह ईश्वरीय ज्ञान सदा एक रस बना रहेगा। विज्ञान को इसके परिवर्तन करने की कोई शक्ति न होगी।

कौन सा ऐसा ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य को प्राप्त हुआ? इस का निर्णय संसार में बहुत कुछ कलह और क्लेश को दूर कर देगा। क्या विचारशील इस ओर ध्यान देंगे? आज कल की खोज के अनुसार "वेद संसार के पुस्तकालय में सब से प्राचीन पुस्तक हैं" और संसार में एक बड़ी भारी जन संख्या इस को ईश्वरीय ज्ञान मानती है। अतः एक रस रहने वाली सचाई, प्रेम और सुन्दरता के दृष्टि कोण से वेद का अनुशीलन और मनन, प्रत्येक वैदिक धर्मी का, प्रत्येक सत्याभिलाषी विधर्मी का और प्रत्येक सत्य प्रेमी वैज्ञानिक का कर्तव्य बन जाता है।

अध्यात्मवाद और प्रकृतिवाद

प्राणियों में जिस को जीवन नाम से पुकारा जाता है यह क्या वस्तु है? क्या यह इस जड़ प्रकृति के भिन्न २ अवयवों को विशेष प्रकार से आपस में रसायनिक संयोग का परिणाम है—जैसा कि कुछ वैज्ञानिक मानते हैं—अथवा यह जड़ प्रकृति से कोई सर्वथा भिन्न वस्तु है जैसा कि अन्य विद्वानों का मत है। फिर विकासवाद के सिद्धान्त के अनुसार क्या प्राकृतिक मूल परमाणुओं से आरम्भ कर प्राकृतिक वस्तुओं का प्रादुर्भाव और फिर इन से "जीवनमय" अति सूक्ष्म जीवों की रचना नहीं होती? उपरोक्त कान्फ्रेंस में प्रोफैसर हाल्डेन और मैकब्राईड को इन दो प्रश्नों पर प्रकाश डालने के लिये निमन्त्रित किया गया। यह दोनों सज्जन प्रचारक न होते हुये भी सत्य की खोज के लिये धर्म के प्रति साधु भाव रखने वाले हैं और साथ ही अपने २ विषय में बड़े प्रवीण और धुरन्धर विद्वान हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रोफेसर हाल्डेन ने बड़े बल पूर्वक कहा कि प्राणियों की क्रियायों की व्याख्या भी हम जड़ प्रकृति के नियमों के आधार पर कदापि नहीं कर सकते। कल्पना में हम ऐसी मशीनों को-केवल प्राकृत तत्वों और प्राकृत नियमों द्वारा-गढ़ सके हैं जो कि थोड़ा बहुत जीवों की क्रियाओं के सदृश काम करती हैं, परन्तु ज्यों २ इन क्रियाओं के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों २ हमारी यह कृत्रिम मशीनें अधिक पेचीदा और संकीर्ण बनती जाती हैं—और हमारे इस सारे प्रयास की अनुपयोगिता उस समय सिद्ध होती है जब कि हम यह बतलाने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं कि स्वयं वह क्या "यन्त्र" है जिस के द्वारा इन मशीनों की उत्पत्ति होती है अथवा यह इतनी संकीर्ण और दुर्गाह्य रचना अन्डे से बाहर आती है।

प्रोफेसर हाल्डेन के उपरोक्त विचार इस भाव की पुष्टि करते हैं कि विज्ञान अब प्रकृतिवाद और केवल प्रकृतिवाद को छोड़कर आत्मवाद की ओर आरहा है। प्रकृति से भिन्न आत्मा का भी कोई अस्तित्व है यही अब वैज्ञानिक लक्ष बन रहा है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक हक्सले का कथन है कि मैं प्रकृति की कोई ऐसी कल्पना नहीं कर सकता जो कि उस मन के बाहर हो जिस में कि उस का चित्र खेंचा गया है अब दिन प्रति दिन एक वैज्ञानिक सत्य का रूप धारण कर रहे हैं।

प्रोफेसर मैक ब्राईड ने कहा कि विकास वाद के सिद्धान्त को मान कर हमें बाइबिल के मूसा के उस सिद्धान्त को जो कि सात दिन में सृष्टि की उत्पत्ति मानता है और सेन्ट पाल का पाप पुण्य का सिद्धान्त और आदम का अदन के बाग़ से पाप के कारण निकाले जाने के सिद्धान्त को तिलाञ्जली देनी होगी। उन्होंने एक और बात की ओर ध्यान दिलाया कि विकास वाद के सिद्धान्त के अनुसार अयोग्य जीवों का सृष्टि से नाश हो जाता है, अधिक योग्य और बलवान जीव अपने से छोटों को या तो मार भगाते हैं या खा जाते हैं। इस में कितना अत्याचार और रक्तपात होता है यह सहज में कल्पना की जा सकती है। क्या कोई परमात्मा जिसकी सृष्टि में इतना अत्याचार और रक्तपात होता हो दयावान् कहला सकता है? प्रोफेसर मैकब्राईड ने आगे चलकर यह बतलाया विकास वाद का यह सिद्धान्त कि "जो योग्य हैं वह स्वयं बच रहते हैं और अयोग्य नष्ट हो जाते हैं" जीवों के विकास की उतनी ही व्याख्या करता है जितना कि यह कहना कि गन्दे पत्तों को काटने वाले चक्कू पौदों और वृक्षों की बढ़ने की शक्ति का कारण हैं, विकास को आगे ढ़केलनी वाली शक्ति प्राणियों में वह बल है जो कि उन्हें आपदाओं का मुकाबला करना और उन पर विजय पाना बतलाती है और जो शक्तियां माता पिता प्राप्त कर लेते हैं वह उन की सन्तान में पहुंच जाती हैं। इस प्रकार विकास केवल जीवन संबन्धी घटना है जो कि केवल जीवित प्राणियों द्वारा ही घटी जाती है और इस का, उदाहरण के लिये जैसा कि हर्बर्ट स्पैन्सर ने किया था-पृथिवी के गरम गोले के ठंढा होने में जिन भौतिक और रासायनिक क्रियाओं का प्रादुर्भाव हुआ-पर घटाना इसके मूल अर्थ को नष्ट कर देना है।

हमारे पाठक देखेंगे कि इस प्रकार विज्ञान धर्म के निकट तट आ रहा है। एक समय था जब कि आत्मा के अस्तित्व से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वथा इन्कार था और प्रकृति से ही 'आत्मा' नाम के 'गुण समूह' की उत्पत्ति मानी जाती थी। हमारा विश्वास है कि यदि ईसाई मत के स्थान में आधुनिक वैज्ञानिकों के सन्मुख शुद्ध सनातन वैदिक धर्म उपस्थित होता तो योरोप में जो धर्म और विज्ञान का प्रबल झगड़ा चलता रहा है कदापि न चलता। आज कल भी विज्ञान का जो धर्म से मेल दिखलाई दे रहा है उसका बड़ा भारी कारण ईसाई मत का अपने कितने ही सिद्धान्तों को छोड़ देना है। अभी तक प्रोफेसर मेकब्राईड की समझ में नहीं आता कि दयालु प्रभु की सृष्टि में इतना अत्याचार और रक्तपात क्यों? ईसाई मत के पास इसका कोई उत्तर नहीं। परन्तु यदि वह इन घटनाओं को वैदिक धर्म की कर्म फिलासफी और आवागमन के सिद्धांत के प्रकाश में देखें तो दयामय भगवान् की अनन्त दया के समुद्र में आनन्द के हिलोरे लेने लगें।

क्या यही उत्तरदायी शासन है?

हमें प्रति दिन सांझ सवेरे यह जतलाया जाता है कि पढ़े लिखे हिंदुस्तानी एक कृतघ्न श्रेणी के व्यक्ति हैं। सरकार उनके लिये इतना करती है, और वह फिर किसी प्रकार का अहसान नहीं मानते। हमने इन्हें उन के योग्य न जानते हुए भी उन्हें शासन-सुधार दिये कि यह उन को लेकर अपनी शासन सम्बन्धी योग्यता को बढ़ाकर राज्य काज चलाने की जांच सीखें परन्तु यह उन से सन्तुष्ट नहीं। सरकार और भी अधिकार देने को तैयार है किन्तु तब जबवह यह सिद्ध कर देंगे कि वह इन पहिले दिये हुये अधिकारों का सपदुयोग करने के योग्य हो गये हैं। वैसे यह अधिकार भी कुछ कम नहीं हैं इत्यादि.....

किसी भी जाति का यह जन्म सिद्ध अधिकार है कि वह अपनी रक्षा और उन्नति का स्वयं प्रबन्ध करे। इसमें किसी प्रकार की बाधा का पड़ना या तो उस जाति की अपनी अयोग्यता अथवा बाधा डालने वालों की क्रूर निरंकुशता का प्रमाण है। हम इस कार्य के अयोग्य बतलाये जाते हैं। यह ठीक हो सकता है। परन्तु क्या हमारी अयोग्यता ही इस अधःपतन का एक मात्र कारण है? क्या वर्तमान नौकरशाही की निरंकुशता इस के लिये जिम्मेवार नहीं? क्या हमें अपनी इच्छा पूर्वक शांति से अपनी उन्नति करने की आज्ञा दी जाती है? क्या हम जो कुछ अपने देश और देशवासियों के लिये करना चाहते हैं उस के मार्ग में रोड़े नहीं अटकाये जाते? हमें कहा जाता है कि हम वर्तमान सुधारों के द्वारा ही अपने देश की बड़ी उन्नति कर सके हैं। परन्तु क्या यह सत्य है? किंचित् इसकी पड़ताल तो करें। वाइसराय की कौन्सल में नमक पर कर लगाया जाता है परन्तु क्या यह हमारे प्रतिनिधियों की अनुमति से? इग्लैन्ड की प्रदर्शनी पर ख़र्च मंजूर किया किया जाता है इसमें किस की आज्ञा है? कर बढ़ाने के लिये कमेटी बनाई जाती है इसमें क्या हमारे प्रतिनिधि सहमत हैं? ली कमीशन की रिपोर्ट क्या हमारे घोर विरोध के रहते हुये भी पास नहीं करदी जाती, सार्वजनिक मांग होते हुए भी क्या गोल मेज़ काम्फ्रैन्स के पास हुए प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में नहीं फेंक दिया जाता? क्या यही लैजिस्लेटिव ऐसेम्बली है जिसके विषय में कहा जाता है कि हमें बड़े अधिकार प्राप्त हैं? हम पूछते हैं कि वह कौन सा काम है जिसे नौकर-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शाही करना चाहती है और वह इतनी ही स्वतन्त्रता से नहीं कर लेती जितनी कि "सुधारों" से पहिले किया करती थी ? अब प्रजा प्रतिनिधियों के कौन से प्रस्ताव को वह अपनी इच्छा के विरुद्ध स्वीकार करती है ? कहने को तो सब काम कौन्सिलों और ऐसेम्बली की आज्ञा से किये जाते हैं, इनकी अनुमति का ढोंग तो अवश्य रचा जाता है परन्तु होना वही है जो नौकरशाही के मन में हो। यहां पंजाबी की कहावत भली प्रकार चरितार्थ होती है-"पंचों का कहना सिर माथे पर। परन्तु परनाला वहीं रहेगा"। यही सुधार है जिनका ढिंढोरा पीटा जाता है और कहा जाता है कि यदि शांति पूर्वक हमारा कहना मानते रहोगे तो १० वर्ष पूरे होने पर तुम्हें ऐसे ही और सुधार न दिये जायंगे। भारतवासी बच्चो! रोना और मचलना छोड़ दो और प्रजा वत्सल सरकार का कहना मानो तुम्हें समय आने पर ऐसे ही और भी खिलौने दिये जायंगे। और यदि तुम कहना नहीं मानोगे और व्यर्थ की ज़िद करोगे तो तुम्हें आगे भी कुछ नहीं मिलेगा; तुम्हारा यह भी खिलौना खोस लिया जायगा और साथ ही मार भी पड़ेगी। धन्य है सरकार का प्रजा प्रेम !

भारत सरकार और कोहाट की पीड़ित हिन्दू प्रजा

कोहाट की दुर्घटना इतनी भीषण और रोमाञ्चकारी थी कि इस को अद्वितीय कहा जा सकता है। किसी भी सुरक्षित और सुव्यवस्थित राज्य में ऐसी घटना का होना राज्य के मुख पर कालिमा का अमिट टीका लगाने के लिये काफी है। सैकड़ों व्यक्तियों का मारा जाना और आहित होना, विशाल भवनों का अग्निदाह, बाल और अबलाओं का निरादर और असीम कष्ट से पीड़ित होना, करोड़ों के धन और माल का लूटा जाना तथा सहस्रों बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री और पुरुषों का अपने नगर, अपनी जन्म भूमि को विदीर्ण हृदय और अश्रुपूर्ण नेत्रों से छोड़ने पर बाधित होना, कोई साधारण घटना नहीं। इस की क्रूरता और भीषणता इतनी प्रखर थी कि इसने महात्मा गान्धी सरीखे धीर वीर के हृदय को भी हिला दिया। महात्मा गांधी का २१ दिन का अनशन व्रत इसी पीड़ा और अनुताप का फल था कि जिसने उनके हृदय को आत्म संताप और क्षोभ से भर दिया था।

एसैम्बली में प्रश्न किये जाने पर सरकार ने वचन दिया था कि इस मामले की तुरन्त और पूरी खोज की जायगी। आज प्रायः ३ मास पीछे भारत सरकार ने अपनी खोज को एक विज्ञप्ति रूप में प्रकाशित किया है। यदि सरकार ने एक व्यक्ति की, चाहे वह मैजिस्ट्रेट ही क्यों न हो--रिपोर्ट के आधार पर ही अपना मत बनाना था तो हमें समझ में नहीं आता कि इतनी देर लगाने की क्या आवश्यकता थी। यह तो 'खोदा पहाड़ और निकला चूहा' वाली बात है।

सरकार ने अपने वक्तव्य में इस दुर्घटना को घटा कर दिखलाने का यत्न किया है परन्तु वह सर्वथा विफल रही है। ध्यान से पढ़ने से सहज में ही पता लगता है कि सरकार अपने मुंह से स्वयं अपराधी ठहरती है। इस घटना के सम्बन्ध में कुछ दिन हुये ला० लाजपतराय जी ने लिखा था:—

"मैं ब्रिटिश शासन या किसी भी विदेशी शासन का भक्त नहीं हूँ, तथापि मैं यह मानता रहा हूं कि इस देश में ब्रिटिश शासन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के रहने का एकमात्र औचित्य यही है कि यह शासन अल्प संख्यक लोगों की रक्षा करने में समर्थ है। पर जब यह देखा जाता है कि एक नगर की सारी जाति के मनुष्य जिनकी संख्या ३५०० थी उस नगर को छोड़ कर सरकारी सहायता से इस लिए भाग रहे हैं कि अगर नहीं भागते तो बहु संख्यक समाज के खूंखार लोगों के हाथों जान से मारे जाते हैं, तो ब्रिटिश शासन के अस्तित्व के इस औचित्य पर से भी विश्वास हट जाता है, क्योंकि इस हालत से तो यही मालूम होता है कि अंग्रेज़ हाकिम, कम से कम पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश के अंग्रेज़ हाकिम नालायक हैं या प्रामाणिक (सच्चे) नहीं हैं। 'लिश-ला' का नाम हम लोगों ने प्रायः सुना है। यह लिश-ला क्या है? न्याय के सीधे मार्ग को उलट देना और क़ानून के अनुसार हाकिमों को काम न करने देना। कोहाट में जो कुछ हुआ क्या वह इस प्रवृत्ति का उदाहरण नहीं है? कोहाट के इस काण्ड से साम्प्रदायिक झगड़े को एक नया रूप प्राप्त हुआ है, जिसको खास कर उन लोगों को ध्यान में रखना होगा जो झगड़े की बुनियाद को बिना सोचे वहां झगड़े को दाब रखने और एकता का दृश्य निर्माण करने गये थे।"

इस प्रकार के विचार किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति के हृदय में आये बिना नहीं रह सकते। क्या सरकार के पास इन आक्षेपों का उत्तर है? जिस Law और Order कानून और सुव्यवस्थाकी डींग मारी जाती थी वह कोहाट के समय कहां चली गयी। यदि यह मान भी लिया जाय कि हिन्दुओंने ही मुसलमानों को उत्तेजित किया जैसा कि सरकार का मत है तो क्या यह इतना बड़ा कसूर था जिसके बदले उन के घरों को आग लगा दी जाय, उनकी धन सम्पत्ति को लूटा जाय, उनकी स्त्रियों और बच्चों पर अत्याचार किये जांय और उन्हें नगर छोड़ने पर विवश किया जाय? यदि यह कसूर इतना भीषण नहीं था तो फिर सरकार ने यह सब उत्पात क्यों होने दिया? इस मार पीट लूट खसोट को रोका क्यू नहीं? सरकार कहती है कि डिप्टी कमिश्नर को तलाक की क़सम का ज्ञान नहीं था अन्यथा १० तारीख को दुर्घटना का इतना तीव्र रूप न होता। डिप्टी कमिश्नर की इस अज्ञानता के लिये कौन जिम्मेवार है? क्या सरकार ने अपना यह अपाहिज और निकम्मापन स्वीकार कर अपनी अनावश्यक्ता सिद्ध नहीं कर दी? हमें हर समय यह बतलाया जाता है कि यदि वर्तमान सरकार न हो तो हिन्दू मुसलमान आपस में लड़ कर एक दूसरे का सर्व नाश कर दें। परन्तु क्या यह सर्वनाश इसी सरकार के सामने नहा हुआ? यदि इस सरकार के रहते हुये भी यह घटना हो सकती है तो इस का होना न होना एक बराबर।

सरकार ने अपना प्रस्ताव प्रकाशित करके पीडित हिन्दू-हृदय का किसी प्रकार शान्त नहीं किया। बैठे बैठाये कोई अपने ऊपर आपत्ति नहीं लेता। हिन्दुओं ने अपनी इच्छा से अपना नाश नहीं किया। यह माना कि उन का कसूर था, परन्तु क्या दूसरा पक्ष सर्वथा निर्दोष है। यदि अंग्रेजी सरकार के स्थान में आज कोहाट में मुसलमानों का राज्य होता और ऐसी दुर्घटना होती तो हम नहीं समझ सकते कि मुसलमान शासक कोई इस से भिन्न प्रकार की विज्ञप्ति निकालते जो कि अंग्रेजी सरकार ने आज निकाली है। खोज करने वाला मैजिस्ट्रेट कहता है कि रावलपिंडी मेरी हद से बाहर है अतः मैं यहां पर आश्रित हिन्दुओं को मिल कर उन का पक्ष नहीं जान सका। क्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह खोज भारत सरकार की ओर से नहीं हुई, क्या रावलपिंडी भारत सरकार के आधीन नहीं ? फिर क्या हिन्दू पक्ष को न सुनने का यह उचित बहाना है ? यदि वह मर्माहत हिन्दू इस से यह नतीजा निकालें कि सरकार-किसी भी कारण से हो-हमारे साथ न्याय करना नहीं चाहती, हमारी पीड़ा को सुनना आवश्यक नहीं समझती तो क्या यह अनुचित होगा ?

हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि पंजाब के हिन्दुओं के मन में यह विचार दृढ़ होता जा रहा है कि अंग्रेज़ी शासन में हमारी वह रक्षा नहीं होती जो होनी चाहिये। हिन्दू-हृदय में इस भाव का उदय होना सरकार के लिये भी श्रेयस्कर नहीं है। अब तक तो हम यह सुनते थे कि अंग्रेज़ी राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं परन्तु आज हमें पता लगा कि बकरी के लिये इस राज्य में कोई स्थान नहीं। हिन्दुओ तुम्हें दूसरों की ओर-चाहे वह प्रतापी ब्रिटिश सरकार ही क्यों न हो-ताकना छोड़ देना चाहिये। अपने पैरों आप खड़ा होना सीखो। अपनी दुर्बलता और कायरता को दूर करो। जाने की अपेक्षा मृत्यु से अधिक प्यार करो तभी तुम जी सकते हो अन्यथा जो आज हुआ है वह कल फिर हो सकता है। ब्रिटिश सरकार फिर भी तुम्हें बचाने में असमर्थ रह सकती है।

क्या हिन्दुओं को कोहाट लौट जाना चाहिए ?

वाइसराय की इस विज्ञप्ति को महात्मा गान्धी ने 'खुला चैलन्ज' का नाम दिया है। आपने हिन्दुओं को सलाह दी है कि उन्हें सरकार के कहने मात्र पर कभी कोहाट लौट कर न जाना चाहिए वरन् जब तक कोहाट के मुसलमान उन्हें स्वयं न बुलाएं तब तक उधर ताकने का भी नाम न लेना चाहिये। क्या हम विनय पूर्वक महात्मा जी से पूछ सकते हैं कि क्या वह कोहाट के मुसलमानों को देश के अन्य मुसलमानों से भिन्न समझते हैं ? क्या उनके हृदय में वह लालसा और उनके मस्तक में वही विचार काम नहीं रहे जो कि बाहर के मुसलमानों को हिला रहे हैं। फिर महात्मा जी किस आधार पर यह समझ रहे हैं कि बाहर के वायु मण्डल में रहने वाले मुसलमानों की आकांक्षाओं और विचारों से वह कोहाट के मुसलमान प्रभावित न होंगे। पंजाब ही इस फूट की विषधारा का स्रोत है। यहां के मुसलमान जो आज सोचते हैं वही कल सारे भारत वर्ष के मुसलमान स्वीकार कर लेते हैं। एक ही उदाहरण पर्याप्त है। मिस्टर जिन्हा पक्के नैशनलिष्ट हैं, कभी भी भिन्न २ धर्मों के आधार पर प्रतिनिधि चुनने के विरुद्ध थे। गत वर्ष वह पंजाब में आये और अपने विचारों को एक दम उलट गये। अतः हम बाहर न जाकर केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि पञ्जाब के मुसलमानों के हृदय में आज हिंदुओं के प्रति विश्वास नहीं, उनके लिये दया नहीं और उन पर किसी प्रकार का प्रेम नहीं। आज वह उन के लिये पूरे 'काफिर' हैं। कोई ऐसा तरीका नहीं जिसे मुसलमान अपने इन 'काफरों के कुचलने के लिये उचित न समझते हों। पञ्जाब की कौन्सल में हिन्दू कर्ज़ा देने वालों के विरुद्ध मुसलमान सदस्यों का बिल पेश करना इनका ताज़ा उदाहरण है। पंजाब विश्वविद्यालय जैसी शिक्षा सम्बन्धी संस्था में भी मुसलमानों का अपना अलग नाव मांगना उनके हिन्दुओं के प्रति अविश्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और प्रतिहिंसा के भाव का द्योतक है। जब हिंदुओं के प्रति पंजाब के मुसलमानों के इस प्रकार के भाव हैं तो यह आशा करना कि कोहाट के मुसलमान इन नीच भावों से ऊपर उठ सकते हैं महात्मा गांधी जैसे आशा-पूर्ण हृदय का ही काम है। हमारी सम्मति में तो वह दिन अभी बहुत दूर है जब कि कोहाट के मुसलमान अपने हिंदू भाइयों से निष्पक्षता और सहृदयता से वापिस बुलाने का आग्रह करेंगे और इस शुभ दिन की-इस से पहिले कि देश की हिंदू मुसलिम समस्या का हल न हो जाय-आशा रखना दुराशा मात्र है। जो हृदय इतना क्रूर और भयंकर अत्याचार कर सका है वह आज एक दम मल रहित हो जायगा यह महात्मा जी के साधु स्वभाव और सरलता का ही सूचक है। हम तो समझते हैं कि सरकार और मुसलमानों की वर्तमान अवस्था को विचार में रखते हुए हिंदुओं को कोहाट लौटने का विचार सर्वथा मन से निकाल देना चाहिये और पंजाब के हिंदुओं को अपने इन भाइयों को कोहाट से बाहर पुनः अपना जीवन आरम्भ करने योग्य बनाना अपना धर्म समझना चाहिये।

पञ्जाब पोलिटिकल कान्फरैन्स

इस मास की ६ और ७ तारीख को महात्मा गांधी के सभापतित्व में लाहौर में पंजाब प्रान्तीय- राजनैतिक- कान्फ्रैंस की बैठक हुई। महात्मा गांधी ने अपनी वक्तृता में हिन्दू मुसलिम एकता, अछूतोद्धार और खद्दर पर ही बल दिया। उनके लिये हिन्दू मुसलमानों के झगड़ों के गढ़ में पहुंच कर हिन्दू मुसलिम एकता पर बल देना स्वाभाविक और परमावश्यक था। इस के अतिरिक्त कान्फरस में साधारण श्रेणी के अनेक प्रस्ताव पास हुये। महात्मा जी के मत में कान्फरैंस से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। लाला लाजपतराय जी इसको आशा से बढ़कर सफल बतलाते हैं। उन का कथन है कि मुसलमानों के घोर असहयोग के रहते हुए भी जनता का उसमें भाग लेना सूचित करता है कि अब भी जन समाज के हृदय पर कान्फ्रैंस का कितना प्रभाव है। हमारी तुच्छ सम्मति में तो यदि उस कान्फरैंस का कुछ लाभ हुआ है तो केवल इतना ही कि इसने मुसलमानों के हृदयगत विचारों पर से परदा उठा लिया है। आज निष्पक्ष भारतीय देख सकते हैं कि मुसलमानों के दिल में न्याय, एकता, जातीयसेवा और देशानुराग का कितना विचार है। कान्फ्रैंस की तिथियां निश्चित होने के पीछे उन्हीं दिनों में मुसलमान खिलाफत कान्फरस करने का निश्चय करते हैं और फिर वह भी लाहौर में नहीं वरन् अमृतसर में जिस से कि मुसलमान भूलकर भी राजनैतिक कान्फ्रैंस में भाग न ले सकें। राजनैतिक कान्फरैंस के कार्यकर्त्ताओं का अनुनय विनय कि दोनों कान्फ्रैंस एक ही दिनों में न की जांय सब बहरे कानों पर पड़ता है। प्रसिद्ध राजनैतिक नेता डाक्टर किचलू, जो अभी अक वर्ष भी नहीं बीता, हिन्दू मुसलिम एकता के लिये मर मिटने को तय्यार थे आज कान्फरैंस के पंडाल में पग रखना भी पाप समझते हैं। वरन सैयद हबीब के कथनानुसार भरसक यत्न करते हैं कि कोई भी मुसलमान सज्जन इसमें शरीक न हो सके। महात्मा गांधी को इन सरीखे एकता के मुसलमान पुजारिओं के कृत्यों पर ध्यान देना चाहिये।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES

This is the very newest style wristlet watch. These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

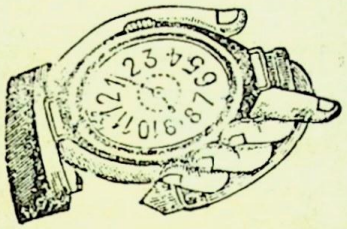

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra.

N. B.—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial Alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers Notice minutely the delightful-like freshly plucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for.

LILYOF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re 1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
½ Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
" " Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

भारत सरकारसे रजिस्ट्री किया हुआ

४७००० एजेन्टों द्वारा बिकना दवा की सफलता का सब से अच्छा प्रमाण है

सुधानिधि

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिस सेवन करने से कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त इन्फ्लूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है। मूल्य ॥) डा० ख० १ से २ तक ≋)

दद्रुगजकेसरी

दाद की दवा

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घण्टे में आराम करने वाली सिर्फ यही एक दवा है। मूल्य फी शीशी ।)- डा० ख० १ से २ तक ≋) १२ लेने से २) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बचों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइये, बच्चे इस खुशी से पीते हैं। दाम फी शीशी ॥।) डा० ख० ≋)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगा कर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महा भारत

भाषा भाष्य समेत सरल और सुबोध अनुवाद प्रतिपास १०० पृष्ठ दिये जाते हैं। मूल श्लोक और उसका सरल अर्थ मुद्रित हो रहा है।

१०० पृष्ठों का एक अंक, इस प्रकार के १२ अंकों का अर्थात् १२०० पृष्ठों का मूल्य मा० आ० से ६) और वी० पी० से ७) रु० है।

अति शीघ्र ग्राहक बन जाइये। नमूने का पृष्ठ मंगवाइये। और अपने मित्रों को बताकर ग्राहक बढ़ाने की सहायता कीजिये।

कागज और छपाई अति सुंदर है। चित्र भी दिये जांयगे।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल,

औंध (जि० सातारा)

☞ BE REST ASSURED—

THAT OUR

WALL CLOCK

'TIC-TAK' (Regd.)

GIVE YOU PERFECT TIME.

OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.

PRICE Rs.

THREE only.

Order now if you have not already orderd.

Peter Watch Co.,

Post Box No. 27,

MADRAS.

सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय दरियागंज दिल्ली में पं० अनन्तराम शर्म्मा के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] श्रावण १९८२—अगस्त १९२५ [खण्ड ६, संख्या ४

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची.

विषय		पृष्ठ
१ आराधना (कविता)	:	१५७
ले०—पं० जगन्नारायणदेव शर्मा कवि पुष्कर		
२ वैदिक प्रार्थनायें और सामाजिकधर्म		१५८
ले०—श्री० रामदेवजी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी		
३ अखण्ड ज्योति (गीत)	:	१६२
ले०—श्रीयुत राजाराम शुक्ल		
४ स्त्रियों के मताधिकार	:	१६३
ले०—प्रकाश		
५ मासावतरण (कविता)	:	१७०
ले०—श्री० आयुर्वेदाचा पं० सन्तलाल वैद्य		
६ हर्ष-विषाद	: :	१७१
ले०—आज़ाद		
७ विपद् के प्रति (कवित)	:	१७४
ले०—मुकुन्द		
८ मोहिनी के आंसू	:	१७५
ले०—श्री० सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज		
९ कुसुमोद्यान	: :	१८२
१० हमारी मञ्जूषा	: :	१८६
११ विचार प्रचार	: :	१८८
१२ वनिता विनोद	:	१९४–१९५
स्त्रीजगत्	: :	१९४
१३ महिला समाज की वर्तमान दशा		१९६
ले०—कुमारी शकुन्तला देवी 'हिन्दी प्रभाकर'		
गृह-प्रबन्ध	: :	१९८
१४ तो क्या यह सब स्वप्न ही था		१९९
ले०—सत्यवती मल्लिक श्रीनगर		
१५ मेरी बहिन	: :	२०३
ले०—श्रीचन्द		
१६ माताओ और बहिनो संगठन करो		२०८
अनुवादक—श्री० रघुनाथ प्रसाद पाठक		
१७ कन्या गुरुकुल समाचार	:	२११

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।

६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

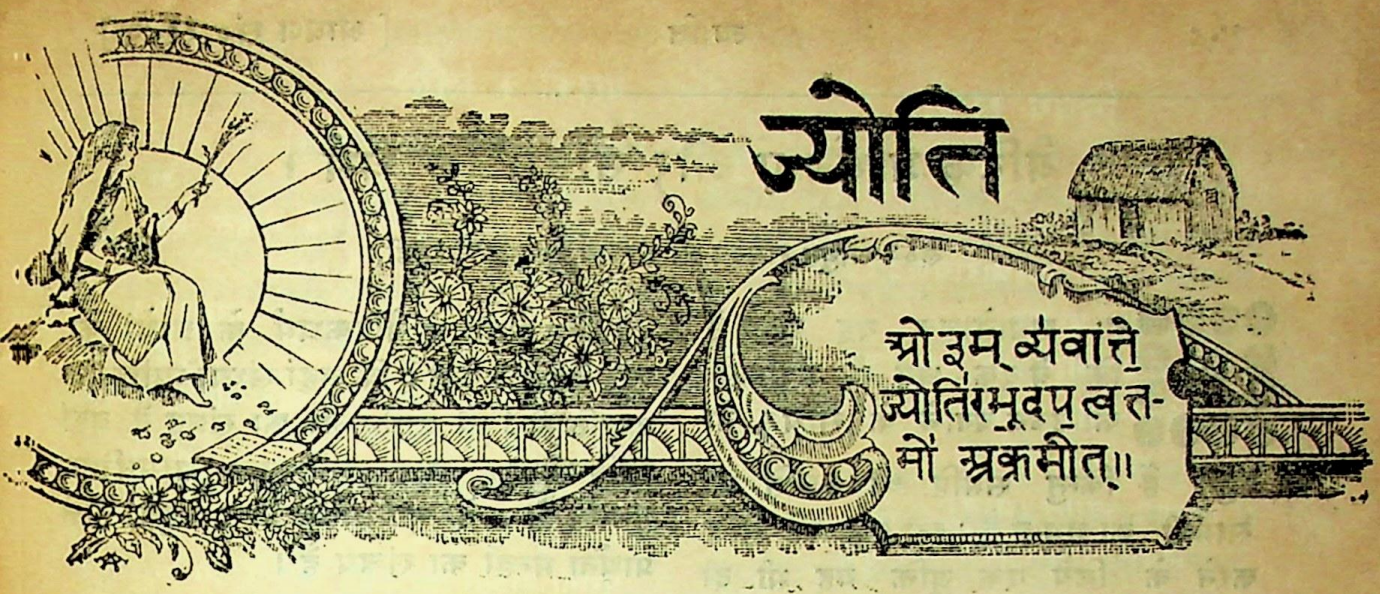

वर्ष ६ | श्रावण १९८२—अगस्त १९२५ ई० | संख्या ४

आराधना।

[ले०—पं० जगन्नारायणदेव शर्म्मा, कविपुष्कर]

परम पिता तू जग का स्वामी।
अलख अगोचर अन्तर्यामी॥
तेरी सत्ता सत्य स्वतंत्र।
हे साधन अद्वैत सुमंत्र॥
हम सब प्राणी अनुचर तेरे।
सर्व कार्य हों तेरे प्रेरे॥
निर्भय जीवन करें विकास।
करे हृदय में ज्ञान निवास॥
उच्च ध्येय से शीघ्र मिलादे।
सदुपदेश का अमृत पिलादे॥
असद् वस्तु को जायं भूल।
तुझे प्राप्त हों मंगल-मूल॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिक प्रार्थनाएं और सामाजिक धर्म।

ले०—श्रीयुत रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी

प्रायः समालोचक यह कहते हैं कि वैदिक धर्म में व्यक्तियों को उच्च बनाने के साधन तो बहुत हैं किन्तु समष्टि की उन्नति की सामग्री का अभाव है। इस पक्ष को सिद्ध करने के लिये एक युक्ति यह भी दी जाती है कि जिस प्रकार मुसलमान और ईसाई मसजिदों और गिर्जों में एकत्रित होकर सम्मिलित प्रार्थनायें करते हैं; इस प्रकार की सम्मिलित उपासना की रीति आर्य लोगों में कभी नहीं रही और न ही आर्य धर्म समष्टि की उन्नति की ओर ध्यान देता है; योरूप में सामाजिक धर्म उन्नति पर है। वहां लोग अपने आपको समाज का एक आवश्यक अंग समझते हैं और समष्टि को व्यक्ति का एक विस्तृत रूप ही ख्याल करते हैं। इसके विरुद्ध हिन्दु लोगों में जहां कोई २ पुरुष सर्वोत्कृष्ट चरित्र को संघटित करके महात्मापन की पदवी प्राप्त कर लेता है वहां समाज अधोगति को प्राप्त हो रही है और कोई अपना कर्तव्य नहीं समझता कि उसको उठाये। समाज की उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाला कोई विरला ही भद्र पुरुष होगा भारत और पश्चिम में इस भेद को भी आर्य्य धर्म के ही गले मढ़ा जाता है। कई २ आर्य्यनेता भी कभी २ कहते सुनाई देते हैं कि आर्य्य-धर्म में संशोधन होना चाहिये और उसमें सामाजिक धर्मका समा—वेश करना चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन महानुभावों के यह विचार हैं उन्होंने कभी वेदों और आर्यग्रन्थों के पृष्ठों को पलट कर भी नहीं देखा।

जिन लोगों ने वैदिकधर्म के ग्रन्थों को पढ़ा है वह जानते हैं कि जहां संध्या व्यक्तिगत उन्नति के लिये प्रार्थनाओं का संग्रह है वहां स्वस्तिवाचन और शान्तिपाठ सामाजिक उन्नति के भावों को प्रतिबोधित करने वाले प्रार्थना मन्त्रों का संचय हैं।

स्वस्तिवाचन और शान्तिपाठ में और उनसे पूर्व जो आठ प्रार्थना के मन्त्र आते हैं उस में भी एक वचन कहीं नहीं आता पहिले मन्त्र में यह शब्द आते हैं कि "यद्भद्रं तन्न आसुव" इसके स्थान में "यद्भद्रं तन्मम आसुव" नहीं आता; इस लेखमाला में हम शान्ति पाठ के मन्त्रों की व्याख्या करेंगे ताकि हमारे पाठकों को पता लगे कि यह मन्त्र किस प्रकार देशभक्ति और समाजसेवा के भावों को प्रतिबोधित करने वाले हैं और सामाजिक शान्ति के सर्वोत्तम उपायों को बतलाने वाले हैं।

पहिला यह है:—

१ शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं-योः शन्न इन्द्रा पूषणावाजसातौ॥

इस मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि इन्द्र और अग्नि हमारेलिये शम हों, इन्द्र और वरुण हमारे लिए शांतिदायक हों, इन्द्र और पूषणा हमको शान्त करें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन्द्राग्नि

अग्निदेवता सदा ही सभ्यता केसाथ जुड़ा रहा है जो लोग नितान्त असभ्य और जंगली हैं वे आग जलाना भी नहीं जानते और नाहीं खाना पकाना जानते हैं। सभ्यता की वृद्धि के साथ अग्नि का प्रयोग बहुत बढ़ता जाता है यहां तक कि बिजली के रूप में अग्नि के द्वारा खाना भी पकता है पंखा भी होता है और कारखाने भी चलते हैं।"

वेदमन्त्र में यह बतलाया है कि अग्नि, इन्द्र अर्थात् परमात्मा के साथ संयुक्त होनी चाहिये। प्राचीन काल में जबकि सभ्य लोगों की अग्नि, इन्द्र होती थी तो उसके द्वारा बड़े २ यज्ञ रचे जाते थे अग्निहोत्र वायु को शुद्ध करता था और ऋतु अनुकूल वर्षा लाकर अन्न की उत्पत्ति का कारण बनता था। अग्निहोत्र करने से (Forma Aldehyde) इत्यादि गैसें उत्पन्न होती हैं जो रोगजनक कृमियों का नाश करती हैं, आजकल की सभ्यता भी अग्नि का प्रयोग करती है। परन्तु यह अग्नि इन्द्राग्नि नहीं, प्रत्युत असुराग्नि है आजकल अग्नि के द्वारा लोगों की जानें ली जाती हैं नगर के नगर जलाये जाते हैं। पिछले विश्वव्यापी युद्ध में ६५ विषैली गैसों का प्रयोग किया गया था अब अमरीका में आठ और गैसें निकली हैं जो उन से भी अधिक विषैली हैं। अमेरिका के प्रोफेसर Lewuis ने एक विषैला धूमर निकाला है जिस को Lewisite कहते हैं यह धूमर जिसके अन्दर जायेगा उसको इतनी दारुण पीड़ा होगी; कि कई लोग पागल हो जायंगे और आत्महत्या कर लेंगे। एक और गैस निकली है जोकि भूमि को ७ साल तक ऊसर बना देती है और उसके थोड़े से कतरे एक घंटे में वृक्ष को सुखा देते हैं इस प्रकार की गैसें अमरीका के रसक्रिया-भवन में एक सप्ताह में ८१० टन बन सकती हैं और इङ्गलैंडके रसक्रिया-भवन में ४१० टन. इस प्रकार की गैसों के नये २ आविष्कार करने के लिये अमेरिका की सरकार ने ३० करोड़ रुपये व्यय करने स्वीकार किये हैं और ४८ हजार मनुष्य इस काम में लगे हुये हैं, यह फल है अग्नि को असुराग्नि बनाने; का। संसार में अशान्ति फैलती है राष्ट्रों में विद्वेष बढ़ता है और विद्वानों की बुद्धि आसुरी और राक्षसी बनती है यदि वेद के इस मन्त्र का प्रतिदिन पाठ किया जाय और अग्नि को इन्द्राग्नि बना कर शांति का साधक बनाया जाय तो सभ्य संसार की अवस्था नर्कीय न रहे किन्तु स्वर्गीय बन जाये।

इन्द्र वरुण

वरुण देवताको भी सभ्य मनुष्य ने पूर्णरूप में वशीभूत किया हुआ है, समुद्र के पेट को चीरकर धूमर नौकाएं चलती हैं, नलकों के द्वारा पानी को ऊपर चढ़ाया जाता है नदियों में से नहरें निकाली जाती हैं। जहां २ नदियों में बड़े २ झरने हैं, वहां बिजली उत्पन्न की जाती है जल चिकित्सा का भी प्रचार हो रहा है, किन्तु वरुण देवता को भी इन्द्र के साथ नहीं जोड़ा गया असुर के साथ ही उसको सम्बन्धित किया गया है अपने स्वार्थ के लिये और अपने गृहों से दुर्गन्ध को दूर करने के लिये धनिक मनुष्य (Flush) की रीति का प्रयोग करते हैं उनके घर का विष्ठा जल के द्वारा नदियों में चला जाता है करोड़ों निर्धन मनुष्य नदी का जल पीकर ही अपना निर्वाह करते हैं जो जल धनिक लोगों द्वारा गन्दा और दुर्गन्धित बनाया जाता है उसको निर्धन लोग पीतेहैं प्रजा के अन्दर असंख्य रोग फैलते हैं; लाखों युवति-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यां विधवा होती हैं। और सहस्रों बालक अनाथ हो जाते हैं; प्राचीनकाल में जब वरुण का सम्बन्ध इन्द्र से या मनुमहाराज ने राज नियम बनाया था कि बहते हुये जल को दुर्गन्धित करना एक दण्डनीय दोष है आर्य लोगों के समग्र तीर्थ जल के समीप हैं। जल को शुद्ध रखने का विशेष प्रयत्न राजा और प्रजा की ओर से होता था न फिलटरों की आवश्यकता होती थी, और नाहीं जून के महीने में पानी को उबालकर पीनेका आदेश वैद्य लोगों की ओर से होता था, साधारण जल ही इतना पवित्र और पाचक होता था कि लेमनेड सोडा और जींजिरेट के द्वारा उदरको भाड़े का टट्टू बनाने की आवश्यकता न पड़ती थी, नदी के पवित्र प्रवाह में स्नान ही आरोग्यता प्रदान करने वाला होता था नदियोँ में नहाने का महात्म इसीलिए बहुत था आजकल गंगा शरीर पावनी नहीं रही क्योंकि हजारों मन विष्ठा बनारस, कलकत्ता प्रयाग और हरिद्वार में उस में डाला जाता है हमारे सनातनी भाइयों को यह चिन्ता तो रहती हैं कि हर की पौड़ी के निकट जो जल आवे वह निर्बाध्य ही अर्थात् पुल के तख्ते उतरें रहे। किन्तु हर की पौड़ी के निकट ही जो विष्ठा उसमे डाला जाता है उस के विरुद्ध प्रतिवादके प्रस्ताव सनातन धर्ममंडल ने कभी स्वीकार नहीं किये, वरुण की पूजा संसार से उठ गई है अविश्वासी संसार को उसका फल यह मिला है कि वरुण देवता रुष्ट हो गये हैं असुर के साथ उन्होंने नाता जोड़ लिया है और सभ्य संसार के नाश करने पर कटिबद्ध होगये हैं; वरुण देवता की आराधना करनी चाहिये। और उनसे याचना करनी चाहिये कि वह एकबार पुनः इन्द्र परमात्मा के चरणों में गिरें ताकि जल संसार के लिये शम हो सके।

इन्द्र सोम सोम वनस्पतियों का राजा है सोम की प्रजा ही प्राकृतिक सौन्दर्य्य को उत्पन्न करनेहारी है। यदि वनस्पतियां न हों तो जगन्माता लक्ष्मी का शृङ्गार आधा भी न रहे, वास्तव में वनस्पतियां ही लक्ष्मी देवी को सुसज्जित करती हैं और उसकी रूप राशि को बढ़ाती हैं वह ही उस के अमिट और अनश्वर यौवन और लावण्य का कारण हैं वनस्पतियों द्वारा ही औक्सीज़न उत्पन्न होती है और प्राणीमात्र का जीवन स्थिर रहता है। सोम ने आजकल असुर की ही शरण ली है जो फल रुधिर को बढ़ाने वाले और शरीर में शक्ति का सञ्चार करने वाले हैं वह ही असुर के शासन में आकर बुद्धिनाशक और पिशाची शक्तियों के सम्वर्धक बन रहे हैं प्राचीन काल में लोग अंगूर और सेब खाते थे; उनकी बुद्धियां सात्विक बनती थीं। विचार के ईंधन से मन की अग्नि प्रज्वलित रहती थी आज वही अंगूर हैं और वही सेव हैं उन को सड़ाया और गलाया जाता है और उनसे मद्य बनाई जाती हैं उस मद्य को पिया जाता है उससे मनुष्य उन्मत्त होजाता है बुद्धि को हाथ से खो बैठता है और राक्षसी कर्म करने लगता है। वही फल इन्द्र के साथ संयुक्त होकर एक प्रभाव उत्पन्न करते हैं और असुर के साथ होकर दूसरा, जब इन्द्र सोम का राज्य था तो लोग ताजी वनस्पतियां खाते थे और उन से शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक बल प्राप्त करते थे आज कल के सभ्य लोग वनस्पति खाने वाले पशु और पक्षियों की हिंसा कर के उनका माँस खाते हैं और उन पशुओं के मृत शरीर के अन्दर जो रोग होते हैं उनको अपने अन्दर धारण करते हैं ताजी वनस्पतियें (Vitamins) या भोजनतत्व बहुत होते हैं आज कल के लोग मसाले डाल कर उन वन-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तियों को इतना भूनते हैं कि भोजनतत्व जल जाते हैं। प्राचीन लोग गोधूम को भून कर खाते थे या मोटा चक्की का आटा खाते थे क्योंकि वह जानते थे भोजन तत्व अधिकतया छिलके में ही हैं। आज कल के लोग गोधूम को मशीन में पीसते हैं और उसका फोक खाते हैं उस फोक के खाने से शक्ति क्षीण होती है पाचनशक्ति का नाश होता है पाचनशक्ति का नाश होने से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आता है और समाज में अशान्ति फैलती है। यदि असुर सोम के स्थान में इन्द्र-सोम का फिर राज्य हो जावे तो लोग बड़े२ नगरों को छोड़ कर प्राकृत सौन्दर्य्य के केन्द्रों में अपना निवास स्थान करें मांसभक्षी और मद्यपी संसार में कोई न रहे और प्रजा के शरीर पुष्टि हों मन बलिष्ठ हों और आत्मायें उत्कृष्ट हों।

इन्द्रपूषणा वायु ही जीवन का आधार है जब वायु का सम्बन्ध इन्द्र के साथ था तो बड़े २ यज्ञ होते थे शुद्ध और सुगन्धित वायु से फेफड़े भरे जाते थे। आज कल पूषणा का सम्बन्ध भी असुर के साथ होगया है इसलिये लोग बड़े २ नगरों और तंग मकानों में रहते हैं जहां शुद्ध वायु का प्रवेश हो कठिन है बड़े २ पुतलीघर हैं जिनका धूमर वायु को विषैली बनाता रहता है इस का परिणाम यह हुआ है कि क्षयादि रोगों की दिन प्रतिदिन वृद्धि होरही है, और जीवित लोग भी मृतों के समान हैं। अब यन्त्रों द्वारा लोगों के फेफड़ों में ओक्सीजन पहुंचाई जाती है यदि यही अवस्था रही तो कोई समय आयेगा जब शुद्ध वायु बोतलों में भर २ विकेगी और निर्धन लोगों के भाग्य में उस का उपयोग होगा ही नहीं; क्या यह अभीष्ट नहीं है कि पूषण इन्द्र की शरण ले; पुतली घरों का नाश हो और सब प्राणी शुद्ध पवित्र वायु का आनन्द ले सकें।

इस वेद मन्त्र में भगवान से प्रार्थना की गई है कि प्रार्थी ऐसी समाज का सभ्य-हो जिस में अग्नि के प्रयोग का दुरुपयोग न किया जाय और उस को संसार में अशान्ति फैलाने का साधन न बनाया जाय, अपितु उस के द्वारा वायु को शुद्ध किया जाय, शरीर में शक्ति का सञ्चार किया जाय, रोगजनक जन्तुओं का नाश कियाजाय, और भूमि को उत्पादक बनाया जाय, वरुण देवता का अपमान न किया जाय, अपितु उस के आरोग्यजनक गुणों से पूरा उपयोग लिया जाय, अन्न और वनस्पतिको ताज़ा ही खाया जावे, और उन में जो भोजनतत्व हैं उन को सड़ाया और गलाया न जावे जिस से हमारा भोजन सात्विक बना रहे; वायु देवता की पवित्रता पर विशेष बल दिया जाये, और कोई ऐसी कृतियां न की जावें जो उन की शुद्धता में बाधक हों।

क्या कोई नकार कर सकता है कि यदि किसी समाज में अग्नि वरुण सोम और पूषणा की पूजा होती हो और इन देवों के आगे शीश नवाये जावें तो वहां शान्ति का निष्कण्टक राज्य होगा। पारस्परिक कलह के संस्कार भी न रहेंगे और प्रजा का शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहेगा।

शान्ति पाठ के पहिले मन्त्र में तो आदर्श समाज की बाह्य अवस्थाओं को उत्तम बनाने की विधि बताई है दूसरे मन्त्र में उसकी आन्तरिक अवस्था को शान्त बनाने के साधनों का निर्देश होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अखण्ड-ज्योति ।

[गीत]

लेखक—श्रीयुत राजाराम शुक्ल

मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।
जिस से कभी न पृथक् हो सकूं बन तद्रूप परम सुख पाऊं ॥

(१)

क्या ये क्षणिक प्रदीप्त-दीप-दल देख देख इन पर ललचाऊं ।
बन कर शलभ-समान मान तज, लघ लघ में लौ पर लौ लाऊं ॥
मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।

(२)

अथवा मोह-निशा में भ्रम-वश, भान भूल टकटकी लगाऊं ।
चारु-चन्द्र-मुख-हित चकोर बन, चुन चुन चिनगारियां पचाऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य मिल जाऊं ।

(३)

मर कर याकि मेघ-माला पर, निशि दिन नाच नाच कर गाऊं ।
देख दिव्य दामिनी-कामिनी, निज स्वामिनी मान अपनाऊं ॥
मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।

(४)

या उस प्रखर प्रभाकर में ही, उल्का पिण्ड समान समाऊं ।
और रहू प्रज्वलित प्रलय तक, यों अपना अस्तित्व गवाँऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य मिल जाऊं ।

(५)

इन सब में परितोष कहां वह, चाहे मन सदोष समझाऊं ।
मिलूं खोज कर ज्योति एक रस, स्वयं अखण्ड ज्योति कहलाऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य-मिल जाऊं ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों के मताधिकार।

लेखक—'प्रकाश'

सार की सभ्य जातियां उन्नति के मार्ग में बड़ी शीघ्रता से कदम बढ़ाये चली जारही हैं। ४० वर्ष पूर्व हमारा देश जिस स्थिति में था उस से बहुत आगे बढ़ चुका है। ४० वर्ष पूर्व की कई बातें, रीति रिवाज इस समय हमें हास्य पूर्ण प्रतीत होते हैं। 'स्त्री शूद्रौना धीयताम्, तथा बाल विवाह आदि अनेक गर्हित प्रथाओं पर समाज का दृढ़ विश्वास था। स्त्रिय मनुष्यों की सम्पत्ति Property समझी जाती थी। प्राचीन आर्य सभ्यता में जो स्त्रियों की उच्च स्थिति थी उसे सारा समाज भूल चुका था। स्त्री जाति को पढ़ने का ठीक ज्ञान Idea तक भी न रहा था। इस लिये एक बार पढ़ती हुई कन्याओं ने कहा था We did not know how pleasant it was to learn" किन्तु जमाने ने उन्नति की: और बहुतसी स्त्रियों ने इस बात को अनुभव किया कि पढ़ने में वास्तव में कितना सुख होता है। शिक्षित होने पर स्त्रियों ने अपनी स्थिति को जाना, अपने अधिकारों को पहिचाना और परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार पुरुषों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त हैं। उसी प्रकार राजनैतिक तथा सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिये स्त्री जाति ने भी बुलन्द आवाज में अपने राजनैतिक अधिकारों की मांग उपस्थित की।

हमारे देश में जहां आधी संख्या पुरुषों की है वहां आधी संख्या स्त्रियों की भी है। राष्ट्र के शासन का यही उद्देश्य होना चाहिये कि उसके सम्पूर्ण निवासियों को अधिक से अधिक उन्नति करने का अवसर प्राप्त हो, तथा सब निवासियों के साथ न्याय हो। यदि किसी राष्ट्र के शासन में ऐसा नहीं होता और एक जन समाज दुसरों के अधिकारों को कुचल देता है अथवा उन्नति में बाधक होता है तो वह शासन किसी प्रकार उचित तथा अपने उद्देश्य को पूरा करने वाला नहीं हो सकता। सब के साथ ठीक न्याय हो इसके लिये यह आवश्यक है राजनैतिक अधिकार पुरुष स्त्री सब को प्राप्त हों। अन्यथा जिस समाज के हिस्से को राजनैतिक अधिकार प्राप्त न होंगे उन्हें वे व्यक्ति कुचल डालेंगे जिन्हें राजनैतिक अधिकार प्राप्त हों। अनेक सभ्य समाजों में भी इन सब बातों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता और प्रत्येक देश निवासी को मताधिकार नहीं प्राप्त होता। जैसा कि हम देखते हैं कि कई सभ्य देशों में अब भी महिला जाति को पुरुषों की भोग्य सामग्री समझा जाता है। समझा जाता है कि स्त्रियों का अपना कोई उद्देश्य नहीं होता। वास्तविक उद्देश्य सिर्फ मनुष्यों का ही होता है। उद्देश्य प्राप्ति में मनुष्यों की सहायता करना यही स्त्रियों का कर्तव्य है। जब मनुष्य काम से अपने घर में थक कर आवे तो उसको आराम देना यहां स्त्रियों का काम है। स्त्री जाति का कैसा तुच्छ उद्देश्य समझा जाता है। और समझा जाता है कि स्त्रियों को शिक्षा भी प्रारम्भिक ही देनी चाहिये ताकि वे अपने अधिकारों को भली प्रकार न समझ सकें। जो थोड़ी बहुत प्रारम्भिक शिक्षा उन्हें दी जाय वह भी इस प्रकार की [गाना, बजाना, पकाना आदि] देनी चाहिये जिस से कि घर में बैठने की ही प्रवृत्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री समाज में बढ़े और घर से बाहर निकल कर वे समाज में प्रकट न हो सकें। कई लोगों का कथन है कि हमने Division of labour के सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण श्रम के दो विभाग कर लिये हैं उन में से एक, घर के अन्दर का काम स्त्रियों के आधीन कर दिया है और दूसरा घर से बाहर का कार्य मनुष्यों ने स्वयं अपने ऊपर लेलिया है। दोनों अपने २ क्षेत्र में स्वतंत्र हैं। यह विचार ऊपर २ से तो कुछ अच्छा अवश्य प्रतीत होता हैं किन्तु सार इस में भी कुछ नहीं। division of l bour श्रमविभाग का विचार तो ठीक है किन्तु यह किसी प्रकार भी उचित नहीं प्रतीत होता कि किसी को बाधित किया जाय कि तुम्हें यही काम करना पड़ेगा। श्रम विभाग में प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को करने या छोड़ने में पूर्ण स्वतंत्र होता है यदि उसे बाधित किया जाय तो वह श्रमविभाग नरह कर (दासता) slavery का बिभाग (division of slavery) होजायगा, अतः स्त्रियों को इस बात के लिये बाधित करना कि वे घर का ही काम करें और बाहर समाज में न आसकें श्रमविभाग नहीं है। इस को वास्तविक अर्थ में श्रम विभाग बनाने केलिये उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का, समाज में प्रकट होने का औरराजनैतिक कार्योंमें हिस्सा लेने का अधिकार देना आवश्यक है। जब तक किसी को शासन कार्य में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं होता तब तक वह स्वतंत्र नहीं रह सकता। उसे अन्य शासन कर्त्ताओं के नीचे दबे रहना पड़ता है। इस लिये मताधिकार उन सब देश वासियों को होना चाहिये जिन्होंने कि राष्ट्र के शासन से शासित होना हो, और जो राष्ट्र की और अपनी भलाई को भली प्रकार विचार सकते हों।

मताधिकार के लिये भिन्न २ देशों में भिन्न २ शर्तें होती हैं। कई देशों में मताधिकार उन व्यक्तियों को प्राप्त होता है जो tax आदि के रूप में कुछ धनकी मात्रा देते हैं। किन्तु यह सिस्टम अनेक दोष पूर्ण है। ऐसा करने से शासन डोर अमीरों (Aristocarats) के हाथ में आजाती है और वे लोग अपने स्वार्थों के लिये अन्य परिश्रमी जनों के स्वार्थों को कुचल डालते हैं। परिश्रमी लोग जो कि वास्तव में देश की स्थिति के कारण और आधार होते हैं, कुचले जाते हैं, और आराम पसन्द तथा श्रमियों की कमाई से अनुचित लाभ उठाने वाले (parasites) समृद्ध होते जाते हैं। इस प्रकार देश की जड़ खोखली होनी शुरू होजाती है। अतः Tax के द्वारा मताधिकार सर्वोत्कृष्ट नहीं है।

कई देशों में मताधिकार उन व्यक्तियों को प्राप्त होता है जो राष्ट्र के लिये कुछ चीज़ उत्पन्न करते हैं। अर्थात् परिश्रमी लोगों को मताधिकार प्राप्त होता है जो लोग वास्तव में मेहनत करके राष्ट्र के लिये कुछ उत्पन्न नहीं करते उन्हें मताधिकार प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार अमीर लोग (Aristocrats) और पुरोहितादि मताधिकार से वंचित रक्खे जाते हैं। इस प्रकार की शासन प्रणाली रूस में प्रचलित हैं। यह सिस्टम प्रथम की अपेक्षा तो कुछ अच्छा है क्योंकि इसमें देश के सारभूत परिश्रमी लोगों के स्वार्थों का अधिक ध्यान रक्खा जाता है किन्तु हमारे लिये यह सिस्टम भी अनुकरणीय नहीं; क्योंकि हमारे यहां केवल Socialists (साम्यवादी लोग ही नहीं रहते। हमारे समाज में (साम्यवादी तथा पूंजीपति) आदि सब प्रकार के जन रहते हैं। अतः हमें सबके स्वार्थों का ध्यान रखना चाहिये। समाज के किसी भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अङ्ग को कुचल डालना उचित नहीं है। इस लिये Vote देने का अधिकार न केवल अमीरों को और परिश्रमी लोगों को ही, किन्तु सब को ही प्राप्त होना चाहिये। जो कोई भी व्यक्ति देश में रहता हो, जिस किसी ने भी देश के बने हुए नियमों से शासित होना हो, उस प्रत्येक व्यक्ति को शासन सम्बन्धी अधिकार प्राप्त होने चाहियें। इसी लिए रूस ने लिखा है :—

"There is but one law which by its nature requires unanimous consent, that is the social compact; for civil association is the most voluntary act in the world; every man being born free and Master for himself; No one can, under any pretext whatever, enslave him without his assent. To decide that the son of a slave is born a slave, is to decide that he is not born a man.

अर्थात् यदि कोई ऐसे नियमों से शासित होता हो जिन नियमों में उसकी स्वीकृति न हो तो वह स्वतन्त्र नहीं रहता। उसका जन्म सिद्ध अधिकार (स्वतन्त्रता) छिन जाता है इस लिये आवश्यक है कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रखने के लिये जो नियम उसके लिये बनाये जायं उनमें उसकी सम्मति अवश्य लेली जाय। इस प्रकार क्या अमीर क्या ग़रीब, क्या पुरुष क्या स्त्री सभी को समान रूप से मताधिकार प्राप्त होना चाहिये।

यदि राष्ट्र के कुछ व्यक्ति-समुदाय को राजनैतिक अधिकारों से बंचित रक्खा जाता है तो उस समूह पर अत्याचार होना बिल्कुल स्वाभाविक है इन राजनैतिक अधिकारों से बंचित रहने के कारण जो जो अत्याचार स्त्री जाति पर हुवे हैं उनका हृदयद्रावक चित्र खींचने के लिये यहां अवसर नहीं है। इन अत्याचारों से बचने के लिये ही स्त्री जाति ने अपने अधिकारों को पहचानने की कोशिश की और अब उनको भली प्रकार समझ कर मताधिकार के लिये बुलन्द आवाज़ में अपनी मांग उपस्थित की। किन्तु कितने शोक की बात है कि अब भी अनेक सज्जन उनकी युक्ति युक्त और आवश्यक मांग को यह कह कर ठुकरा देते हैं कि स्त्रियें अभी योग्य नहीं हुई हैं उनकी दिमाग़ी योग्यता (intellectual capacity) इतनी नहीं हुई है कि वे राष्ट्र के शासन कार्य में हाथ बटा सकें। उनका यह कहना अनुचित तथा अन्याय पूर्ण है। क्योंकि स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने अपने अधिकारों को भली प्रकार समझना शुरू कर दिया है अब उनको दुधमुहें बच्चों की तरह समझना बड़ी भारी भूल है। कई मनुष्यों के भी दिमाग़ बेतरह dull होते हैं वे किसी भी बात को नहीं सोच समझ सकते। उनको तो मत देने का अधिकार प्राप्त होता है, और कहा जाता है कि वे अपने राजनैतिक अधिकारों को समझ लेते हैं और स्त्रियें जो पढ़ी लिखी और विदुषी हैं उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं प्राप्त होता और कहा जाता है कि वे राजनैतिक अधिकारों को नहीं समझ सकतीं। कैसा स्पष्ट अन्याय है? जिस प्रकार सारे पुरुष विद्वान् हों या न हों, अपने राजनैतिक अधिकारों को समझते हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण स्त्रियें भी विदुषी हों या न हों सब अपने राजनैतिक अधिकारों को समझती हैं और उनकी आवश्यकता को अनुभव करती हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस में सन्देह नहीं कि हमारे देश की समाज में स्त्रियें बहुत अधिक मात्रा में शिक्षित नहीं हैं किन्तु उनमें शिक्षा का प्रचार इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि देख कर दंग रह जाना पड़ता है। स्त्री समाज में जो शिक्षा के प्रति कुछ घृणा और उदासीनता सी थी वह बिल्कुल हट चुकी है और शीघ्र से शीघ्र अपने राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिये वे शिक्षा को अपना रही हैं। (स्त्री शिक्षा) की वृद्धि की गति को दिखाने के लिये पिछली आधी शताब्दी का कच्चा चिट्ठा पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं—

बम्बई प्रान्त में १८५४ में ६० कन्या पाठशालायें थीं जिन में ३५०० कन्यायें पढ़ती थीं। १८६६ में (१५ वर्ष में) स्कूलों की संख्या २०६ होगई और उनमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या ६००० होगई। अर्थात् १५ वर्ष में स्कूलों की संख्या और उसमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या दोनों तिगुनी होगई हैं। १८८१ में स्कूलों की संख्या ३४३ होगई और उसमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या २६००० होगई। अर्थात् ११ वर्ष में १४३ स्कूल बढ़ गये और कन्याओं की संख्या फिर लगभग तीनगुनी होगई। अर्थात् १३वें वर्ष पठित कन्याओं की संख्या पहले की अपेक्षा ३ गुनी हो जाती है। अर्थात् ३, ६, २७ इस प्रकार के Geometrical progress से पठित कन्याओं की वृद्धि हो रही है।

मद्रास प्रान्त में १८४१ में स्त्रियों की शिक्षा की ओर प्रयत्न शुरू हुवा १८४५ में वहां पहला कन्याओं का स्कूल खुला। १८५४ में २५६ कन्याओं के स्कूल खुल गये और ८००० कन्यायें उनमें शिक्षा प्राप्त करने लगीं। इस प्रकार सिर्फ ६ वर्षों में २५६ स्कूलों का खुल जाना क्या इस बात का प्रमाण नहीं है कि स्त्रियों में बहुत अधिक पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। १८८१ में स्कूल ५५७ होगये और उनमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या ३५ हजार होगई। इसी प्रकार अन्य सब प्रान्तों में भी स्त्री शिक्षा का प्रचार बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है और कोई आश्चर्य नहीं यदि वे चन्द सालों में ही पुरुषों के बराबर शिक्षिता होजायं। मताधिकार देने से उनमें शिक्षा के लिये और भी अधिक उत्साह होगा।

इस प्रकार हमने देखा कि कन्यायें बड़ी शीघ्रता से (शिक्षा) की ओर पग बढ़ा रही हैं। इस लिये उनको समुचित रूप से अपने अधिकारों को समझ लेने पर भी उन्हें अधिकारों से वंचित रखना (मनुष्यत्व) के ख़िलाफ है। मिस्टर फैरोज़ थौमस ने भारतीय महिलाओं की उन्नति को देख कर लिखा है:—

"The last two decades have witnessed a great advance in the social life also of Indian ladies, and people who knew India thirty or forty years ago, are surprised to hear of woman's literary clubs where papers are read on topics of the day and lectures given, not only in vernacular but in English"

कहने का अभिप्राय यह है कि स्त्रियां पर्याप्त शिक्षिता हो चुकी हैं और आजकल की स्थिति को भी भली भांति जान गई हैं। इसलिये उन्हें अधिकार देना सर्वथा उचित और युक्ति युक्त है।

स्त्रियां केवल प्रारम्भिक शिक्षा पाकर ही सन्तुष्ट नहीं हो जातीं किन्तु मनुष्यों की तरह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उच्च विभाग (B A M. A.) तक शिक्षा प्राप्त करती हैं। उन में से अनेक तो कालेज विभाग में शिक्षण का कार्य भी करती हैं। फिर भी क्या वे इतनी भोली और मूर्ख बनी रह जाती हैं कि उनको अधिकार देना बच्चे के हाथ में तलवार देने के समान समझा जाता है। जो B. A. और M. A. की शिक्षा मनुष्यों को मत देने योग्य बनाती है और जो परिस्थितियें मनुष्यों को शासन करना सिखलाती हैं क्या वही शिक्षा और वेही परिस्थितियें स्त्रियों को इस योग्य बना देतीं कि वे भी मत दे सकें और शासन विभाग में हिस्सा बटा सकें। उनको मताधिकार न देना उन पर स्पष्ट रूप से अत्याचार करना है।

देश में आधी संख्या स्त्रियों की भी है। इस आधी संख्या का प्रभाव शेष आधे मनुष्यसमाज पर पड़ना बहुत स्वाभाविक है स्त्रियों का प्रभाव मनुष्यों की सामाजिक तथा राजनैतिक दोनों अवस्थाओं पर पड़ता है। कई पुरुष समझते हैं कि क्यों कि भारतवर्ष में स्त्रियाँ सर्वथा घरों तक ही परिमित रहती हैं अतः उनका समाज तथा राजनीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता किन्तु यह उनकी बड़ी भारी भूल है स्त्रियों का अप्रत्यक्ष तौर पर समाज और राजनीति दोनों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। देशबन्धु दास का कथन है:—

"Women exercise a very powerfull influence over society, not less so in India then elsewhere. It is a mistake to suppose that the women in India do not command respect, or do not exercise that influence which women exercise in most civilised countries. अशिक्षितावस्था से भी स्त्रियों का अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है। जब वे शिक्षिता हो जायेंगीं और समाज में पढ़ाना लिखाना और भाषण देना आदि सामाजिक कार्य भी शुरू कर देंगी। (जैसा कि अब हो ही गया है) तो समाज पर उनका सीधा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा। तो जब समाज पर स्त्रीजाति का सीधा असर पड़ता है और वे समाज का एक हिस्सा ही बन जाती हैं तो समाज को नियमित करने का अधिकार अर्थात् मताधिकार उनको क्यों न प्राप्त हो? यदि शासन का अधिकार महिलाओं को प्राप्त हो जाय तो उनका प्रभाव राजनीति पर भी ठीक ओर उत्तरदायित्व पूर्ण रूप में पड़ेगा। अब पड़ने वाले प्रभाव के लिये स्त्रियें उत्तरदात्री नहीं हैं क्योंकि उन्हें समाज में अधिकार ही नहीं प्राप्त। स्त्रियों को जब राजनीति में भाग लेने का अधिकार प्राप्त हो जायगा तो राष्ट्र के प्रत्येक नियम आदि के लिये वे अपने को उत्तरदात्री अनुभव करेंगीं। सब प्रकार के सामाजिक आदि अधिकारों का आधारभूत राजनैतिक अधिकार ही होते हैं। जब उनका समान रूप से प्रतिनिधित्व शुरू हो जायगा तो वे अपने उचित और योग्य अधिकारों को राष्ट्र प्रतिनिधि सभा में स्वीकार करवा सकती हैं। इसलिये मताधिकार एक ऐसी कुञ्जी है जिससे कि सर्व प्रकार की दिक्कत हल हो सकती हैं। अतः स्त्रियों को मताधिकार दे देना मानों उन की हर प्रकार की शिकायतें दूर कर देना है। इसलिये स्त्रियों की विकट और पेचीदा समस्याओं को हल करने का एक मात्र साधन मताधिकार है।

कई लोगों का विश्वास है कि यदि स्त्रियें सामाजिक क्षेत्र में घर से बाहर आ जाएंगीं और राजनीति में हिस्सा लेने लगेंगी तो गार्हस्थ सुख बिल्कुल नष्ट हो जायेगा। स्त्रियों का घर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के अन्दरही अन्दर परिमित रहना यही गार्हस्थ सुख का एक मात्र कारण है इसलिये उन्हें बाहर नहीं आने देना चाहिये। किन्तु यह उन लोगों की आशंका व्यर्थ की ही है। क्यों कि गार्हस्थ सुख तब कम हो सकता है यदि उनसे कठोर काम करवाया जाय या उनके अन्दर जो स्वाभाविक कोमलता आदि गुण हैं उन्हें नष्ट करने का उपाय रचा जाय किंतु अपने अधिकारों को समझते हुये वोट देने से उनमें किसी प्रकार की कठोरता आने का भय नहीं है। इसी प्रकार कोई Intellectual profession करने से भी गार्हस्थसुख कम नहीं हो सकता। जिन २ देशों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त है वहां उनका गार्हस्थ जीवन कोई कठोरता पूर्ण नहीं हो गया है। इङ्गलैंड में स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त है। Canada में स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त है वहां के निवासियों के जीवन कठोरता पूर्ण नहीं हो गये हैं।

अनेकों का पहिले विश्वास था कि पढ़ाने लिखाने से भी स्त्रियों में कठोरता आजाती है और स्त्रीधर्म का अभाव उनमें हो जाता है किन्तु अब शनैः २ यह भ्रम दूर होता जाता है और लोगों को विश्वास होता जाता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्रियों के घर में आने से गार्हस्थ सुख घटता नहीं किन्तु बढ़ जाता है। जहां २ पढ़ी लिखी स्त्रियों के कारण गार्हस्थ सुख कम हुआ है वहां २ उनका पढ़ा लिखा होना कारण नहीं है किन्तु उसका कारण पति की अयोग्यता होना है। पति और पत्नी दोनों को समान रूप से योग्य होना चाहिये अन्यथा जो अयोग्य होगा वही दबेगा और अपने जीवन के सुख को नष्ट कर देगा इसी प्रकार स्त्रियों को राजनीति में हिस्सा लेने देने से गार्हस्थसुख कम नहीं होगा। स्त्रियें पार्लियामेन्ट की मैम्बर रहते हुए भी गृहकार्य्य कर सकती हैं। मत देने में और घर के काम में कोई ऐसा विरोध नहीं है कि कोई व्यक्ति एक को करता हुआ दूसरे को न कर सके। हमें स्त्रियों की परिस्थिति को और अधिकारों को समझना चाहिये। और उनको उन उचित अधिकारों के देने में ज़रा भी आना कानी नहीं करनी चाहिये।

प्राचीनकाल में जो भारतीय महिलाओं का आदर्श होता था इसे R. C. Dutt ने अपनी "The civilisation in ancient India" नामक ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया है "And they even had their legitimate influence on politics and administration" अर्थात् स्त्रियों का पौलिटिक्स और शासन पर पूरा प्रभाव रहता था यह समझना बड़ी भारी भूल होगी कि प्राचीनकाल में स्त्रियों को घरों तक ही परिमित रक्खा जाता था। और उन्हें पूर्णतया पति के आधीन होकर ही रहना होता था उनका पारस्परिक सम्बन्ध किस प्रकार का होता था उसे Mr. R C. Dutt ने बहुत ही अच्छे शब्दों में वर्णन किया है। वे लिखते हैं:—

"Concidered as the intellectual companion of their husbands; as their friends; and loving helpers in the Journey of life, as the partners of their religious duties and the centre of their domestic bliss."

अर्थात् पति पत्नी का सम्बन्ध, साथी और प्रियमित्र का होता था और संसारयात्रा में पारस्परिक सहायता करना ही उन दोनों का काम होता था।

हमें फिर से उसी प्रकार के समय को लाने का निश्चय अपने मन में कर लेना चाहिये। यही हम लोगों का आदर्श होना चाहिये। स्त्रियों को जब सर्व प्रकार के राज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नैतिक तथा सामाजिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे तभी यह स्थिति सम्भव है देश के प्रत्येक व्यक्ति को राजनैतिक अधिकार प्राप्त होने चाहियें। एक विशेष प्रकार के व्यक्ति समूह के हाथ में शासन डोर आ जाने से दूसरे अधिकार से वञ्चित व्यक्ति समूह पर अत्याचार होना स्वाभाविक है। अतः क्या अमीर क्या ग़रीब क्या स्त्री क्या पुरुष सबको राजनैतिक अधिकार समान रूप से ही प्राप्त होने चाहिये। कोई व्यक्ति राष्ट्र का अंग है बस इतनी ही कसौटी मताधिकार के लिये पर्याप्त होनी चाहिये। हां, जो राष्ट्र के अंग अपरिपक्व हों या किसी कारण से विकृत हो गए हों उन्हें अधिकार से अवश्य वञ्चित रखना चाहिये। स्त्रियें न तो अपरिपक्व होती हैं और न ही विकृत होगई होती हैं। इसके बच्चों को चाहे वह स्त्री हों या पुरुष अधिकार देना उचित नहीं। क्योंकि वे अपने अधिकार को समझ ही नहीं सकते। और नाहीं उसका भली भांति उपयोग उठा सकते इस लिये महिलाओं को २४, और पुरुषों को २५ वर्ष की उम्रतक राजनैतिक अधिकार नहीं देने चाहिये।

जो मनुष्य पागलहों उन्हें भी सब प्रकार के अधिकारों से वंचित रखना चाहिये क्योंकि वे अपना ही शासन नहीं कर सकते तो राष्ट्रके शासन में भाग कैसे ले सकतेहैं।

कैदी को भी मताधिकार से वंचित रखना चाहिये क्योंकि उसका कैद में जाना ही इसबात का प्रमाण है कि वह देशके नियमों द्वारा प्राप्त अधिकारों का सदुपयोग नहीं कर सकता अतः उसे अधिकार देना व्यर्थ है।

विदेशी (अनागरिक) ने क्योंकि उन नियमों द्वारा शासित ही नहीं होना अतःउस का कोई राष्ट्र के नियमों से सम्बन्ध ही नहीं अतः उन्हें भी मताधिकार नहीं देना चाहिये।

इसी प्रकार भिखारियों को भी मताधिकार नहीं देना चाहिये जैसा कि हमने पहिले ही वर्णन किया है कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को मत देने का अधिकार होना चाहिये। धन या (श्रम) इत्यादि द्वारा मत का अधिकार कुछ मनुष्यों तक ही परिमित नहीं होना चाहिये। मताधिकार की यदि कोई test रक्खी जासकती है तो वह (दिमाग़ी) योग्यता है। एक मत का अधिकार तो सब को (अपवादवालों को छोड़कर) होना चाहिये किन्तु (अधिक सम्मति) का अधिकार विशेष रुप से शिक्षितों को ही कुछ अंश में दिया जासकता है क्योंकि विशेष विद्वानों के प्रतिनिधित्व से राष्ट्र की शासन डोर अच्छे से अच्छे दिमागों के हाथ में आजायगी न कि धनियों के या (श्रमियों) के।

इस प्रकार हमने देखा कि स्त्री पुरुषों को समान रुप से ही सब अधिकार प्राप्त होने चाहिये। किसी पदके लिये योग्यता की परख (दिमागी) योग्यता ही होनी चाहिये उसमें धनी या गरीब, स्त्री या पुरुष इत्यादि २ इस प्रकार के भेद भाव से काम न लिया जाना चाहिये। एवं स्त्रियें भी ऊंचे से ऊंचे राजनैतिक पदों को अपने को योग्य प्रमाणित कर स्वीकार कर सकेंगी। मनुष्यों को उदारता से काम लेना चाहिये। स्त्रीजाति को जिसको कि धर्म शास्त्रों में उत्कृष्ट और पूज्य कहा है हमें अवश्य समानाधिकार देदेने चाहिये। संस्कृत में महिला को अर्द्धांगिनी और अंग्रेज़ी में स्त्री को better half कहा जाता है तो हमें उन्हें अच्छा २ कहते ही नहीं रहना चाहिये। केवल कथन मात्र से ही उनकी पूजा नहीं करनी चाहिये। किन्तु समान रूप से उन्हें राजनैतिक तथा सामाजिक अधिकार देकर कर्म से भी उनकी पूजा करनी चाहिये यही वैदिक आदर्श है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मासावतरण

श्रावण

लेखक – श्री आयुर्वेदाचार्य पं० सन्तलाल वैद्य

सघन—घनों ने अब नादित की दशों दिशाएँ;
अब निज पति[1] लिपटा घन[2]—पट में रहीं निशाएं;
अब वियोगिनी शोक—सरित् के बीच बही है;
हा ! उस पर अब धैर्य्य छुड़ा चञ्चला[3] रही है;
वे उदार बन घन मूसल-धार धरा पर छोड़ कर,
किए मुदित थल स-जल कर, जल-थल-बिल-चर, गगनचर;

* * *

अब दिन-भर, दिन-कर-बिन, दिन दुर्-दिन रहता है;
अब घन-दल रवि राहु सदृश रह रह गहता है;
लखो न—मिल कलुषित—नालों से शुचि—सरित एँ-
कलुषित हुईं, कु-संग पड़ी हों ज्यों बनिताएं !
उमले भूखे—सर, बढ़ी दर्दुर[4]-ध्वनि चहुं ओर अति;
केकी[5]—गण ने दिन छिपे केका[6] की कासार[7]—प्रति !

* * *

विविध-वर्णमय सुर—धनु की वह दिव्य —छटएं;
स-जल, विजल, सित, अ-सित, विविध-विध रम्य घटाएं;
हरित मनोहर शष्य शाटिका कर अवगुण्ठन-
अहो ! अवनि[8] अब मञ्जुलता से मोह रही मन !
बन—उपवन के तृप-बिटप, बेल-वनस्पति-गण सभी-
क्या तुप बिन, सौंदर्य यह पा सकते श्रावण ! कभी ?

---

१ निज-पति – निशा-पति – चन्द्र;
२ घन – अभ्र = बादल;
३ चञ्चला बिजुली;
४ दर्दुर मैंडक
५ केकी – मयूर;
६ केका मयूर-वाणी;
७ कासार – तालाब;
८ अवनि – भूमि;

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हर्ष-विषाद ।

(ले०—आज़ाद)

बाल्यावस्था में अधिक हंसने से माता पिता मना करके कहते थे कि अधिक हंसने से अन्त को रोना पड़ता है किन्तु कौन सुनता था उनकी बातको हंस कर उड़ा देता था। कौन जानता था कि उन के कथन में इतना बड़ा महान सत्य छिपा हुआ है।

अवस्था के साथ ही साथ समय का भी परिवर्तन हुआ। एक ओर घनान्धकार दूसरी ओर प्रकाश। एक ओर प्रचण्ड धूप दूसरी ओर सुशीतल छाया, एक ओर पूर्ण-मासी का चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कला से विराजित, दूसरी ओर कराल राहु निगलजाने के लिये प्रस्तुत, उद्यान में विचरण करते २ देखा। कहीं तो नाना प्रकार के रंग बिरंगे फूल खिला कर वायु मण्डल को सुगन्धित बना रहे हैं—दूसरी ओर सुकोमल पुष्प पृथ्वी पर पड़े २ मुरझा रहे हैं। उस का मर्म अब तक नहीं समझा था किन्तु आज पूरी तरह समझ में आगया।

समझा था-संसार में हंसनेके लिये आया हूँ। जीवन हंसते २ व्यतीत कर दूँगा किन्तु हाय! कौन जानता था कि इसी जीवन में एक दिन रोना भी पड़ेगा। हर्ष और विषाद, हंसना और रोना, इस जगत का नियम है। प्रेमप्रतिमा को विसर्जन कर आज ज्ञान के कपाट खुल गये और समझा कि रोना ही संसार का सार है।

विवाह के पूर्व हृदय में एक तरङ्ग उठी उसी की लहर में दिवारात्रि भासने लगा। उस समय मन में यही विचार किया कि विवाह करूंगा ही नहीं। निश्चिन्त मन से विद्याध्ययन करके स्वदेशकी उन्नति में जीवन व्यतीत कर दूँगा।

किन्तु समाज को उल्लङ्घन करने की शक्ति मुझ में न थी नित्य प्रति ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि हे भगवन! विवाह के पश्चात रोना न पड़े। ईश्वरने वह प्रार्थना सुनी और मुझ को अतुल सुख के अनुभव करने का समय दिया। मनुष्य कायमन से जिस वस्तु की आकांक्षा करता है वह वस्तु उसे अवश्य प्राप्त होती है। किन्तु अतुल रूप राशि लेकर मेरे घर को समुज्ज्वल करेगी यह कल्पना कभी ध्यान में न आई थी दरिद्रकी कुटीर में भला ऐसी शोभा कहां! स्वच्छ सरोवर में जो कमल उत्पन्न होता है वह क्षुद्र जलाशय में क्यों भासमान होने लगा मैंने स्वप्नमेभी ख्याल नहीं किया था कि किसी गृहस्थ की कन्या आकर गृहकार्य्य सुसम्पन्न करेगी। प्राणपण से मेरे माता पिता की सेवा कर अपने भाग्य को सराहेगी। अमूल्य निधि पाकर आत्महारी हो जायगी। मेरे बन्धु बान्धवों को प्रेम की दृष्टि से देखेगी और उन की स्नेहपात्री होकर अपने अमृत मय शब्दों से संसार को स्वर्ग बना देगी।

उद्यान में कितने ही सुन्दर २ पुष्प नित्य प्रति खिलते हैं किन्तु मैंने उनकी ओर न जाकर जङ्गल से मनोनीत वनफूल उठा लाकर उसी को कण्ठहार बनाया। किन्तु विधाता की कृपा से वही वनफूल इतनी शोभा, इतना सौरभ विस्तार करेगा। यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था। मैंने अपने आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को परम सौभाग्यशाली मान कर संसार को सुख सागर बोध किया।

क्रमशः सोलह वर्ष इसी सुख स्वप्न में व्यतीत होगये-रोग, ताप, यन्त्रणा, ज्वाला कोई इस दग्ध हृदय को कातर न कर सका विपत्ति आने पर एक बार उस मुख की ओर देख कर भूल जाता था। स्नेह आदर पाकर मुग्ध हो जाता था कि इतनी शीघ्र मुझको दुःख के अथाह सागर मे डूब जाना पड़ेगा।

एक दिन सन्ध्या होने के किंचित पूर्व देखा कि एक क्षुद्र जलाशय में एक कमल खिला है प्रमत्त मधुकर प्रेम में मग्न होकर मधुपान कर रहा है। हठात् मेघ हो आया। आंधी चलने लगी, लहरें उठीं, वह कमल पूर्ण-रूप से खिलने के पहिले ही छिन्न विछिन्न होकर तालाब के गर्भ मे डूब गया। मधुकर मृतप्राय होकर जल की सतह पर गिर पड़ा। वह दृश्य देख कर हृदय व्यथित हो उठा। हाय! कौन जानता था मेरी भी यही दशा होगी।

मेरे घर के पास एक छोटा सा बन था एक गम्भीर रात्रि के समय एक पक्षी व्याकुल होकर रो रहा था। मन में हुआ कि निश्चय ही कोई चक्रवाक अपनी प्रियतमा चकई के विरह में रो रहा है किन्तु उस ने कहा "नहीं! क्या कभी चक्रवाक को इतना दुःख हो सकता है-चकई रो रही है।" इस उत्तर पर मैं निरुत्तर होगया। हाय! आज उसका उत्तर दे सकता था। किन्तु किस को? सुनने वाला ही न रहा।

वही याद आज हृदय को दग्ध कर रही है। एक एक कर के सभी घटनायें नेत्रों के सन्मुख नाच उठती हैं। ग्रीष्म ऋतु की चांदनी रात्रि में प्रियतमा के संग छत पर सो रहा था। अचानक आकाश रूपी प्रांगण में नक्षत्र एक ओर को जाने लगा। देख कर वह बोली—"मैं भी किसी दिन उस नक्षत्रकी भांति किसी ओर चल दूंगी। क्या तुम मुझे रोक सकोगे?" मेरा हृदय किसी भावी आशङ्का से कांप उठा। मैंने घबड़ा कर कहा "सकूंगा"। प्रेम के आवेश में उसे गले से लगा लिया हाय! मैंने दृढ़तापूर्वक उसे हृदय म क्यों न धारण कर लिया। क्या मुझमें इतनी शक्ति न थी? यदि न थी मरना तो जानता था—क्यों न मर गया? आओ! प्रियतमे आओ! फिर वही प्रश्न! केवल एक बार फिर वही प्रश्न।

प्राणेश्वरी! तुम्हारे साथ एक दिन स्वार्थपरता के सम्बन्ध में चर्चा उठी थी-मैंने दृढ़तापूर्वक कहा था कि वह गुरुतर पाप है। तुमने प्रेम के आवेग में भक्तिभाव से मेरी चरण धूलि मस्तक से लगा ली। मैं ने आशीर्वाद दिया 'सौभाग्यवती होओ तुम को वैधव्य यन्त्रणा न भोगनी पड़े। तुम ने हंस कर उत्तर दिया—"इस से तुम स्वार्थपर हो। किन्तु मैंने आग्रह पूर्वक कहा "नहीं! यद्यपि मुझे तुम्हारे बियोग में कितना ही दुख क्यों न हो! मैं तुम्हें वैधव्य यन्त्रणा से व्याकुल हो रोते हुए न देख सकूंगा। तुमने प्रफुल्लित चित्त होकर कहा तुम्हारे मुख में फूल चन्दन हो। हाय! मेरा आशीर्वाद इतना शीघ्र फलित होगा मुझे स्वप्न में भी आशा न थी। यदि होती तो कदाचित ऐसा आशीर्वाद न देता।

आंखों से आंसुओं की नदियाँ बहा रहा हूं। क्या कभी इसके द्वारा अतीत स्मृति रूपी अग्नि निर्वापित न होगी? यह रावणी चितानल क्या सदा जलती ही रहेगी? इतनी वृष्टि होती है वायु चलती है तथापि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेघ क्यों नहीं अपसारित होता ? हंसने के दिन क्या अब न आयेंगे ? यह विषाद की घड़ी कभी अवसान न होगी ? क्या इसी महाप्रलय में मुझे चिरदिन निमग्न रहना पड़ेगा ? इस निराश जगत् में आज कोई उत्तर नहीं पाता ।

कौन जानता था कि उस शांतिसागर में अशांति का तूफ़ान उठेगा । जीवनरूपी नौका कालरूपी आंधी के थपेड़ों से उलट पुलट हो जायगी । लंगर टूट जायेगा । जीर्ण-शीर्ण नाव अशांतिसागर में बहते २ काल-चक्र के फेर में आकर अतल तल में निमग्न हो जायगी । आज वह भाव कहाँ गया ? आज अकस्मात् हृदय में अग्नि क्यों प्रज्वलित हो उठी ? शान्तकुण्ड अग्निकुण्ड में परिणत हो गया । जिस ओर दृष्टि जाती है अग्नि की लाल लपटें लगी हुई दिखलाई देती हैं । नद, नदी, पृथ्वी, आकाश, गिरि, गुहा, सर्वत्र अग्नि ही अग्नि । अफ़ ! वह देखो ! सूर्य्य का प्रचण्ड ताप मध्यम हो गया । उस के हृदय में भी अग्नि जल रही है, तप्त कांचन की भांति लाल हो उठा है । आकाश की लालिमा मानो उसी अग्नि की साक्षी है । चन्द्रमा के सुधा-भांडार में भी अग्नि प्रज्वलित हो उठी । हे महाकालाग्नि होता ! एक बार निवृत्त होओ यह सर्व-संहारिणी मूर्ति परित्याग कर साक्षात् श्री सच्चिदानन्द, आनन्दकन्द के स्वरूप में प्रकाशित होओ । मैं उसी दिव्य-मूर्ति के भक्तिभाव में लवलीन हो सारी यन्त्रणा ज्वाला भूल जाऊं ।

एक दिन सागर में अपूर्व तरङ्ग विस्तार बड़ी शोभा थी । कितने ही जलचर जीव जन्तु आनन्द से नाच रहे थे । अनन्तसागर के अनन्त प्रवाह में अपूर्व शोभा विकासमान थी । आनन्द वाष्प उद्गत होकर करुणारूपी धारा से भूमि-मण्डल को अभिसिञ्चित कर रहा था । सागर के वक्षःस्थल पर बालारुण निपतित होकर कांचनमय हो उठा था । चन्द्रमा की रश्मि-सम्पात ने उस पर से अमृत का श्रोत बहा दिया । विभ्रांति चकोर उभय दृश्य देखकर मुग्ध हो आनन्द से नाच उठा । सागर वक्ष पर अपने मुखराशि पर अतुल शोभा देखने के लिये तारादल एकत्रित होते एवम् निशानाथ के उदय होते ही घेर कर आनन्द में मग्न हो जाते थे । एक दिन सागर के उल्लास विलास भंगिमा की सीमा परिसीमा नहीं थी । अनन्त सलिल राशि हृदय में धारण कर सौभाग्य से गर्वान्वित हो उसका हृदयपति नियत स्फूर्ति हो उठता था, कौन जानता था कि जलस्रोत उसको विनाशपथ की ओर ले जायेगा । देखते २ असम्भव सम्भव हो गया । काल के संकेत से सागर कहां का कहां चला गया ।

अगाध वारिधितल प्रखर सूर्यताप से उत्तप्त हो गया । अनन्त सलिलराशि के परिवर्तन में अनन्त बालुका कण वायु द्वारा विताड़ित होकर आकाश-मंडल में समाच्छन्न हो गये । अतीतसागर आज महामरु में परिणत हो गया । देखो ! सहारा की मरु-भूमि ने कैसी भीषण आकृति धारण की है । आज उसीके अन्तराल में मोहरूपी मरीचिका कैसी अबाध क्रीड़ा कर रही है । हाय कौन जानता था मेरी भी ठीक यही दशा होगी ।

एक दिन हर्ष से उन्मत्त होकर मैं ने जगत् को अमृतकुण्ड बोध किया था, आज विषादसागर में डूब कर संसार विष के समान दिखलाई देता है । जीवन के अवशिष्ट कालोपरांत रोना पड़ेगा । विधाता के नियम को कौन व्यतिक्रम कर सकता है ? करदो— अपने नियम के निष्पेषण में निष्पेषित करदो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं कुछ भी न कहूँगा। अवनत मस्तक होकर सब सहन करूंगा। वह देखो! पश्चिम दिशा में सूर्य्य की किरणें कैसी खिल उठी हैं। पूर्व में वृष्टि हो रही है, उधर अनन्त आकाश में कैसा इन्द्र धनुष का समावेश हुआ है। इसी हर्ष विषाद के भीतर मेरे हृदय में तत्व-ज्ञान का इन्द्र धनुष विरचित करदो। मैं उसी की शोभा में समाकृष्ट होकर सकल शोक ताप भूल जाऊं।

(क्रमशः)

विपद् के प्रति

लेखक—'मुकुन्द'

—:o:—

विपदे! मेरा हृदय हिलाया।
आनन्दित, पुलकित तन दुख से, दबकर सहसाही मुरझाया॥
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥

सुख के झूले झूल रहा था, सब कष्टों को भूल रहा था।
प्रेम-शूल हृद् हूल रहा था, पर फिर भी अति फूल रहा था॥
मोद-सिन्धु को शक्ति-तरी से, करने चला पार—घबड़ाया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥१॥

तुझे देखते-मान-झुक गया, हृत्तन्त्री का गान रुक गया।
सारा मम-अभिमान चुक गया, रूप-माधुरी-पान मुक गया॥
पृथ्वी खिसक गई पदतल से, आगे अंधकार सा छाया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥२॥

लोग पूछते-"क्या है भाई?", बोला नहीं न बात बनाई।
केवल आती रही रुलाई, किसी प्रकार सान्त्वना पाई॥
फिर भी रहा सिसकता शिशुसा, शोक-समुद्र उमड़ता आया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥३॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बोलूं कभी पुनः चुप होता, उष्ण श्वांस चलती दुख होता ।
उठता कभी, बैठता–रोता, भूख–पिपासा लगती–सोता ॥
देखा वहां स्वप्न में भी तू खड़ी, जागकर दुख लौटाया ॥
विपदे ! मेरा हृदय हिलाया ॥४॥

मोहिनी के आंसू

†

लेखक-श्री० सन्तलाल द्विमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

२

शङ्कर—"बच्चे दोनों ही होनहार, हैं री—कुन्दन की मां ! इनके एक उस्ताद को जूती जोड़ा पहनाया था वह कहताथा कि—"शङ्कर, तेरे भाग खुलने वाले हैं जिस बात को एक बार तेरे लड़के देख सुनलेते हैं, कभी नहीं भूलते । जमायत में ऐसा एक भी तेज़ ज़हन बालक नहीं । अवश्य पास हो जायेंगे, बस, निश्चय रख । नवीं में हुए ही समझ !" सो एक क्या, सभी मास्टर तारीफ करते हैं ।"

सरला—"हां जी, जरूर करते होंगे, तिस पर छोटा तो मेरा कहना कभी भी नहीं टालता, न दोनों कभी किसी से लड़ कर ही आते हैं । प्रेम दोनों में इतना है कि एक टुकड़ा भी कभी कहीं से आता है तो बांटकर खाते हैं । और उसमें मेरा भाग अवश्य रखते हैं और कहने लगते हैं—"मां, दादा का भी रख दें क्या?" जो बहुत ही रोकूं तो रहते हैं, नहीं तो ज़रा से में ज़रा सा तुम्हारा भी रखने को तैय्यार रहते हैं'!

†

☞ सूचना आज कल हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में स्वार्थी-जनों-द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है । यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं । पाठक "ज्योति" के शृङ्खलाबद्ध अङ्कों का अवलोकन करें । प्रत्यङ्क में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा । सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने-न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, वास-मन्डो, लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें । हम इसे 'ज्योति' में इस लिये प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं यह निश्चय हो सके ।

लेखक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

——इस प्रकार दम्पति बातें कर ही रहे थे कि सहसा शङ्कर बाहर की ओर देख कण्टकित हो, बोला—"ओः ! छायां तो बड़ी दूर गई री—कुन्द की मां ! आए अब तक नहीं; इतनी देर रुकने का क्या काम ? आज तो पर्चा लिख कभी के निबट चुके होंगे—री ! क्या बात .....

बात समाप्त भी न हो पाई कि सरला अबला एड़ी से चोटी तक कांप उठी, और लगी आल जंजाल सोचने। इसके उपरांत शङ्कर उठ, बाहर को चला गया। कुछ देर ही होने पाई कि सरला ने छप्पर के पिछाड़ी से पैरों की आहट सुनी, एक मिनट भी न हुआ कि सामने से बाल-मराल युगल को पैरों में झुक कर, चरण छूते देखा। तब तो गद्गद-कण्ठ से बोली—"हैं, माधो !' फिर दूसरे की ओर देख, उसे बग़ल में लेती हुई और माधव को छाती से लगा, बोली—"बड़ी देर लगाई रे !; क्या खेल में लग गए थे ?" तब माधव और कुन्दन उसके उत्तर में एक साथ ही बोल पड़े—"अरी मां !.....

सरला—"दोनों एक ही साथ न बोलो, रे ! एक एक सुनाओ !"

यह सुन कर माधव मौन हुआ, और कुन्दन कहने लगाः—

"अरी मां ! पहले तो इम्तहान हुआ और फिर हमें पण्डित जी चावड़ी बाज़ार में ले गए; वहां आर्य-समाज का जलसा था। हम दोनों ने वहां सुन्दर २ पद्य गाये। सब लोग खुश हुये, बहुत ही खुश हुए।

सरला—"काहे का जलसा था, भय्ये ! और भला तुमने कैसे, क्या गाया ?

कुन्दन—"आज स्वामी दयानन्दजी को प्रबोध हुआ था। मां ! आज शिव-रात्री है—न, इसलिये उत्सव मनाया गया था।"

सरला—"अच्छा, फिर तुमने गाया क्या ?"

कुन्दन—"अच्छा, पहले मुझ से सुनोगी, या माधो से ?"

सरला—(प्रेम-मुग्ध हुई, माधव की ओर देख ग्रीवा के पीछे की ओर से हाथ डाल उसकी ठोढ़ी को गालों तक छीदी उंगलियों से पकड़ती हुई) "तूने क्या गाया—रे तुतलिये !"

माधव—(माता की छाती में मुख रगड़ता हुआ) "एक कविता !"

सरला—"तेरी तोतली-बोली सब समझ गए तब माधव ने इसका उत्तर कुछ न दे, माता की छाती में और भी मुख छुपा लिया। तब सरला ने कहा—"अच्छा सुना तो—गाया क्या ?" अब माधव लज्जा से किंचिद्वाङ्मुख हो, प्राकृत मधुर स्वर से गाने लगाः—

"वही है, भारत-भू, भुवनेश !

भारत-भू, भुवनेश ! वही है—भारत-भू, भुवनेश ! जिसने कौशल-विद्या बल से शिक्षित किये विदेश, योगोत्पादित हैं—जिसके कौशल-विज्ञान-विशेष !

"वही है, भारत-भू, भुवनेश !

अद्भुत-विद्यामय, योगेश्वर करती थी अनिमेष—पुत्र-रत्न उत्पन्न, क्या न यह भू ?; सर्वज्ञ ! परेश !!

वही है—भारत-भू, भुवनेश !

घुरियों में थे, अशन-ज्ञान का भी न जिन्हें था लेश—विज्ञ बना उनको, हा ! भारत स्वयम् बना दुरवेष !

वही है—भारत-भू, भुवनेश !

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काल-ग्रस्त—भारत फिर भी पाता न दुर्दशा-क्लेश,
छूताछूत-विवादरूप जो हो न महाविद्वेष !!
वही है—भारत-भू, भुवनेश !
[कह चुप हुआ]

सरला—(कुन्दन की ओर देख) " अच्छा,
तुम भी सुनाओ !"

कुन्दन—"जो मैं कहूँगा उसका नाम "समाज
संस्थापना" है, कह, सुनाना आरम्भ
कियाः—

१

जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं,
और सत्य-शास्त्र जिन २ को बतलाते हैं।
उन सब का आदि-मूल परमेश्वर ही है,
कैसी स्वामी ने सच्ची बात कही है ॥

२

थी फिरती सब दुनियां भ्रम-पूर्ण भटकती,
ईश्वर के लक्षण थी कुछ के कुछ बकती।
वे सारे वेदोद्धृत कर, बड़े सरल कर,
स्वामी ने ठूंस भरा गागर में सागर ॥

३

"वह शुद्ध, बुद्ध, सच्चिदानन्द अक्षर है,
सर्वान्तर्यामी, अनुपम, सर्वेश्वर है।
वह जन्म-विकार रहित, सर्व व्यापक है,
वह निराकार, विश्वेश, विश्व-स्थापक है ॥

४

"है सर्वशक्तिमय, दया-न्याय करता है,
शरणागत-वत्सल, अभय, विश्व हरता है।
ब्रह्माण्ड-प्रकाशक है, सर्वज्ञ, परमेश्वर"
बतलाया-उसकी ही उपासना कर, नर !

५

है वेद सभी सद्-विद्याओं का पुस्तक,
इसलिए आर्य ! स्वाध्याय-श्रवण से मत थक !!
स्वाध्याय आर्य लोगों का धर्म परम है—
कैसा तृतीय यह नियम अहा ! उत्त

६

बस, "झूंठ छोड़ने—सत्य मानने ही
उद्यत रहना चाहिए सर्वदा जी में
"धर्मानुसार सब कार्यारम्भ उचित है,
पर सत्याऽसत्य-विचार पूर्व समुचित

७

"विश्वोपकार" ही मुख्योद्देश बताया
कैसा समाज का सुन्दर नियम बन
"धर्मानुसार सब से प्रीति से रहना"—
स्वामी का यह पहले ही से है कह

८

समुचित सब को विद्या-प्रचार है करन
समझाया अज्ञानान्धकार है हरना
सन्तुष्ट न अपनी उन्नति हो जाना,
सब की उन्नतिमें है-"उन्नति का प

९

हितकारी नियमों में स्वतन्त्र हो जाना
है अत्युपयोगी नियम दशम समझ
सामाजिक नियमों के पालन में सबहीं
परतन्त्र रहें मानव, सुसभ्य हैं तब

१०

इस समय मुक्त वह समाज-संस्थापक
जिसका निर्मित यह रम्य-नियम गुच्छ
वेदोद्धारक वह संसारोद्धारक था,
सद्धर्म-प्रचारक था, सुख-संचारक थ
(कह चुप हु

सरला "भग्गे ! तुम सासतरी पढ़ें
हो, तुम ही कुछ समझो—न सम
मेरी समझ में तो एक भी अक्षर
नहीं। इतनी देर हुई—ख़ाक-धूल
पड़ी नहीं ! ख़ैर ! चलो, खाने के
खाओ सुबह से भूंख की सुध—न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

की!"—कह, दोनों को रोटी दे, आप कसीदा ले बैठी। और निकालती-निकालती सहसा माधव की ओर देख, बोली—"क्यों रे माधो! इमतिहान की तो कुछ बात ही नहीं सुनाई!"

माधव—आज जैसे ही सब पेपर रहे तो पास ही हुआ समझना!"

सरला—"और कुन्दन?—"
माधव—"भय्ये भी"

यह सुन, कुछ देर चुप रही। तदुपरान्त फिर कुन्दन से बोलीः—

"अच्छा, तुम्हें यह सासतरी* के मीठे २ गीत सिखाए किसने--रे?"

कुन्दन—"जो पण्डित जी हमें घर पर पढ़ाते हैं, उन्होंने"

सरला—"अच्छा, यह बताओ—जहां गाया वहां कुछ पाया भी? आज तो व्रत है, फलाहार सबको थोड़ा थोड़ा दिया ही गया होगा?"

कुन्दन-(खिलखिला कर, हंसा, और बोला-) "अच्छी समझी री मां! अच्छी समझी!! कैसा वहां लेना--कैसा देना?"

माधव—"अच्छा, मां! आज दादा क्या लाए? उन्होंने भी तो व्रत किया है-न"

सरला—"अमरूद, बेर और सिंघाड़े का आटा भुनवा, उसमें गुड़ मिलवाया है, पर खाया अभी कुछ नहीं, तुम्हारी बाट देखते—देखते अभी बाहर गए हैं।"

× × ×

आज कुन्दन और माधवका अन्तिमपरीक्षा-दिन है, इस लिए दोनों बड़े प्रभात ही चल पड़े प्रफुल्लित मन! हाथमें अपना कलमदान! उनमें बनी—सवारी कलमें, उत्कट उत्साह! बस—क्या था? दौड़ते-कूदते स्कूल के निकट आ ही गए। यहां एक अमरूद के नीचे बैठे पुस्तकों के पांच—पांच दश—दश पृष्ठ इधर उधर करने लगे।

यह दोनों भय्ये चौदह तथा सोलह वर्ष की आयु वाले हैं, मालूम होता है इनका निवास—स्थान (गांव) इस स्कूल के २-३॥ मील की दूरी पर ही है, इसीलिए यह दौड़ते-कूदते ऐसी सुबह ही आ जाते हैं कि शहर का कोई भी बालक तक नहीं आने पाता।

\+ + + +

परीक्षा समाप्त हुई, ऐसी सब अध्यापकों को आशा है कि यह दोनों ही उत्तम कक्षा (First Division) में उत्तीर्ण हों! यह दो मास पूर्व प्रवेशिका-परीक्षा (Test Examination) हो चुकी, अब मई मास में पुनः वार्षिक-परीक्षा होगी।

\+ + + +

इधर कार्य्यवश शहर में आया था, किन्तु उसे स्मरण हुआ कि कल के लिए न कलाबत्तू है—न मख़मल। नरी भी आख़िर कल न ली परसों लेनी पड़ेगी। यह सोच-समझ कर चांदनीचौक में सौदा लेने आरहा था, इधर घण्टाघर के पास पण्डित जी से (जो कुन्दन और माधव को पढ़ाया करते हैं) मुठभेड़ होगई। इन्हें देख शङ्कर बड़ी नम्रता से बोला—"चरण छूता हूँ—पण्डित जी!

*इस प्रान्त के देहातों में "संस्कृत" को 'शास्त्री (सासतरी)" कहते हैं।—लेखक।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पं० जी—(उत्तर में) "नमस्ते" (कह, बोले) "शङ्कर, आनन्द में तो है ?

शंकर—(हाथ जोड़े, नम्रता से) 'चरणों की दया है—पांडत जी ! आप के पैरों की छाया में जितनी गुजर जाए वही अच्छी है। गुलाम को कौन दुःख ?—आप जब दयादृष्टि रखते हैं ! कह, चुप हुआ।

पं० जी—अच्छा; शंकर ! कुछ सौदा लेना है क्या ?"

शंकर—' जी हाँ ! एक धोती-जोड़ा, कुछ कलावत्तू, मख़मल वग़ैरह फुटकड़ सामान।

पं० जी—"क्या कुछ वक्त देगा—शंकर ! कुछ कहना सुनना है थोड़ा, मकान पर आना।"

शङ्कर—'अभी साथ ही चलता हूं, हजूर !' कह कर पीछे २ होलिया।

शङ्कर कुछ मालदारों में तो था नहीं, किन्तु अन्य मोचियों की भांति अधिक दारिद्रय-ग्रस्त भी न था ! वैसे रोटी—कपड़े से खुश था। विशेषता थी तो केवल इतनी कि मास्टरों को एक—दो जोड़ा जूता पहना कर तंग न होजाया करता था। रोजगार अच्छा चला हुआ था, इस का कारण था उस का सुशील, सत्यवाद, दुर्व्यसन-होनता एवं सन्तोष। कभी इस वृद्ध ने निन्द्यमद्य को प्रत्यक्ष तक न किया, जिस से अलक्ष्मी की प्राप्ति होती। पशुओं की भांति कभी भी किसी जीव की मृत्यु का कारण यह न हुआ। क्रूर कुक्कुरों की तरह हड्डियां चूसने वाले मनुष्यों को यह स्वप्न में भी "मनुष्य" नहीं समझता था। मांसाशी को 'पिशाच' कहने में कभी भी नहीं हिचकता ! आत्मवत् सर्व भूतों की रक्षा करना जिनानुयायियों से कहीं अधिक श्रेयस्कर धर्मानुकूल एतदर्थ ही परमावश्यक मानता था। प्रायः सभी ग्राम के अधिकतर शहर के भी सेठ साहूकार आदि इसी के काम से खुश रहते थे। अतएव आय कष्ट भी इसे न था।

मालीवाड़े में पण्डित जी का मकान था अपने मकान पर पहुंच पण्डित जी ने कुण्डा खुड़खुड़ाया और जोर से कहा—"श्यामा" ! तब साथ ही अन्दर से उत्तर मिला—"हां जी ! आया, खोलता हूं, पण्डित जी !" देखते ही देखते बैठक का द्वार खुला; पण्डित जी अन्दर घुसे। खूंटी पर कोट टाँग, कुण्डा खोलने वाले बालक से बोले—"अरे श्यामा, टट्टी जाना है गिलास में पानी डाल छोड़ना!" और स्वयम् कुरसी पर बैठ, पजामा उतारते हुए; शङ्कर से इस तरह बातें करने लगे:—

"शङ्कर, तुझे इस वास्ते पहले भी एक बार बुलाया था और अब भी रोक लाया हूँ मेरा विचार यह है कि लड़कों को "डी० ए० वी० कालिज, लाहौर" भेजदें। आर्यधर्म की वहाँ सब बातें सिखलाई जाएगी। लड़के पक्के हिन्दू रहेंगे। खर्च वर्च की चिन्ता न कर। मेरे एक मित्र हैं—पोस्ट मास्टर। वे निस्सन्तान हैं इन की सहायता करेंगे। मुफ्त में तेरे बालक पढ़ जाएगे !"

शंकर—(भ्रमपूर्ण उद्विग्न सा हो) वहां मुसलमान या आर्य तो नहीं बनाते ?"

पं०—(झुंझला कर) "क्या पागलपन कभी कभी तेरे ऊपर छाजाता है-रे !, कहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमें मुसलमान बनाना है ? (ज़ोर से हँस कर) ख़ैर ! यह तो फिर भी कुछ हुई ! एक बात तो तूने ऐसी कही–(ज़रा शिर घुमा कर) बिलकुल बे-समझों जैसी ! , भला—आर्य बुरे हैं–रे !! , (तर्जनी की तर्जना से) अरे, रत्न बनेंगे पगले ! ; अच्छा तुमही बताओ–शंकर ! जब बच्चों को तुम उर्दू पढ़वाने को तैयार हुए थे तब हमने तुम्हें रोका या नहीं ?

शंकर-(शिर के लटके से) "जी-हां !"

पं०—" ……फिर तुम ने अच्छा, मान भी लिया इन्हें संस्कृत ही लेने को तैयार भी किए किन्तु जब विशेष समय पर कोई पंडित पढ़ाने को देखा तो एक ने भी "हां" न की । और हमें जब पता लगा कि शंकर के बच्चों को पढ़ाने के लिए विशेष समय के वास्ते (स्कूल के अतिरिक्त) कोई पंडित स्वीकार ही नहीं करता तो उसी दिन हमने तुझे घर से बुला कर कहा या नहीं कि 'चिन्ता न कर, हम पढ़ाएगे !' फिर भला आर्य बुरे किस तरह !— यह नहीं समझ में आता, शंकर ! ; अच्छा, अब भी जा, किसी ब्राह्मण से पूछले —पढ़ाने से इनकार ही करेगा । हम आर्य थे—इन्हें पढ़ाया, सन्ध्या-हवनादि का उपदेश किया तो तेरी समझ में हम से बुरा कोई न हुआ ! तेरे मुख से तो ऐसा सिद्ध होता है कि–" लड़कों के लिए आर्य बनना भी पाप है ! "; और अच्छा, इन्हें जो उर्दू-फ़ारसी पढ़वाता तो प्रायः ये मुसलमानों को हुक्के भर भर देते या नहीं ! वे गोबध करते और ये उनके स्वयंसेवक तथा सहायक होते, और जीता तो बेटों के संग तू भी बनता !! वाह-रे, वाह ! तूने तो आर्यों को अपने जातीय-जनों से भी निकृष्ट जाना !! "

पंडित जी चुप हुए । पर शंकर की दृष्टि जमीन की ओर लगगई । वह न "हां" करे न "हूँ" ! पत्थर की भांति होगया ! शंकर भयानक जाल में अपना पैर फंसा समझने लगा । उसका हृदय थरथराने लगा । शंकर पक्का शैव था । शिवभक्ति तो वह अपने में होश सम्हालने के पश्चात् उत्तरोत्तर-वृद्ध ही देखता आया । आज वह कैसे सहसा अपने बालकों को ऐसी जगह भेजदे, जहां से लौटते ही लगें वे शिव-मूर्ति को पधरा देने । ओह ! कहां तो वह पवित्र सद्योद्धृत-जल से प्रतिदिन स्नान कराने के निमित्त अपने छप्पर के सामने-बाईं ओर को-बनाए हुए छोटे से पक्के चबूतरे पर-स्वतन्त्र विराजे शिव की तिपाई पर घड़ा भर धरे; और उस की अविरत-धारा से अभिषेक होता देख, हर्ष-पर हो, फूला न समाए! फिर कहां वह अपने ही प्रिय-पुत्रों को ऐसों से–ऐसी जगह शिक्षा प्राप्त करने भेजे कि जिससे वे स्वयं ही उस चबूतरे को तोड़ने वाले, घड़े को फोड़ने वाले, इन सब को मिथ्या-पाखण्ड बताने वाले बने !

मन ही मन शंकर निश्चय करने लगा-"ऐसा कभी नहीं होसकेगा, चाहे बिना पढ़े रह जाएँ । क्या पाप करने वाले मेरे ही पुत्र बनें ? विधर्मी मैं अपने हाथों से ही कैसे बनने दूँ ? न सही—न पढ़े, हमारा तो हमारे घरका ही काम है, मेहनत मज़दूरी कर पेट भरेंगे ।

शंकर इस प्रकार मन ही मन निश्चय कर ही रहा था कि पंडित जी खिन्न-गिरा से बोल पड़े–"अरे कुछ समझ में आई है तो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बोल पड़े, भय्या ! जबरदस्ती तो कुछ है ही नहीं। सौ बार तेरी खुशी का सौदा है !" तब शंकर दबा हुआ सा, धीमे स्वर से शिर नीचे पृथिवी की ओर ही किए बोला-"मैं अपनी घरवाली से पूछ कर कुछ कह सकता हूं,हुजूर ! क्या जाने वह बाहर भेजने के लिए राज़ी न हो ? "

पंडित जी उस का आन्तरिक-भाव समझ गए। क्रोध-शोक के कारण उनमें विह्वलता आने लगी। नेत्रों में उनके लाली छागई। वे उसकी गहरी मूर्खता की प्रत्यक्ष प्रतिमा सामने नाचती देख, कुछ सम्भल, बोले—"अच्छा, ठीक भी है-भया ! जब तेरे घर के चूहे तक राज़ी हों—तब" और शान्त हो, अपने आपको समझाने लगे। इधर शंकर "पालागन" कर, वहां से चलने को उद्यत हुआ। शंकर कुछ ही क़दम चलने पाया था कि पंडित जी सावधान हो, होनहार बच्चों की ओर ध्यान कर, दयार्द्र हो बोल पड़ेः—

"अरे शंकर, कहीं चमरुआ-बुद्धि ही मत दिखा डालना ? सोच-समझ कर, भेजने को राज़ी ही हो जाना। देख, तेरे भाग्य ही मैं बलवान समझूंगा-यदि लड़के चले गये तो, ऐसे मुक़ में किसी का काम नहीं बना करता है। आत्मानुकूल मैं कहने को तैयार हूँ, शङ्कर! लड़के तेरे सम्भव है 'देश-रत्न' बनें। चमकने और देश को चमकाने वाले इन चन्द्र-सूर्यों को कहीं तू ढांपने के लिये बादल न बन जाना ? मेरा वश नहीं, नहीं तो अब तक कभी के बच्चे लाहौर पहुंचे होते—शंकर; खैर ! ईश्वराधीन ही अब इनकी उन्नति है; मुझे तू इनकी जड़ें काटने को कुठार बन जाने वाला दिखाई दे रहा है शंकर !" कह चुप हुए।

शंकर ने सब कुछ सुना, किन्तु उत्तर में पहले शब्दों के अतिरिक्त कुछ न कहा। अन्त में फिर "पालागन" कर, चल पड़ा। मार्ग में (बाज़ार से) एक दो सौदे जो ले सका, लिये और फिर घर की ओर प्रस्थान किया।

सन्ध्या वहां ही हो चुकी थी, निबड़ान्धकार ने मार्ग में ही प्राक्कालीन रावण-राज्य की भांति अपना निश्चल सा राज्य जमा लिया था। शङ्कर को चलते चलते कुछ ही मार्ग कटा था कि पीछे से किञ्चित प्रकाश सा फैलता हुआ प्रतीत हुआ। पीछे को पीठ फेर कर देखा तो "ओह, चन्द्र है ! निकल आया !!" कह, शंकर अप्रसन्न सा हुआ। कारण यह कि आज का चन्द्र निरीक्षणीय नहीं। आज चतुर्थी है। जो हो, चाहे कोई देखना चाहे वा न चाहे, आज तो प्रायः यह दीख ही जाता है। सो ही शंकर को भी दीख पड़ा। एतदर्थ वह तुरन्त खिन्न हुआ।

विचित्र ही ईश्वर की लीला है। यह वही चन्द्र है, आज से दो दिन पूर्व जिसके दर्शनार्थ स्थान २ पर सैकड़ों नर नारियों की नयनसुमन-मालाएं टकटकी लगा रही थीं ! जिस के माहात्म्य से मूढ़-मन मानव-गण अपने अनेक विध शब्दों से इस भांति कोलाहल कर रहे थे :—

प्रथम व्यक्ति—"कहां है ?"
द्वितीय ,, —"वह देखो !"
प्रथम ,, —"नहीं दिखाई देता।"
द्वितीय ,, -(उंगली से दिखाता हुआ) "वह मेरी उंगली के ऊपर—"
प्रथम ,, —"हां, पीपल की बाईं ओर की चोटी पर। ओ ! सुसूक्ष्मकाय है !!"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्सुकता, चपलता आदि मिश्रित शब्द-गुञ्जार था। मानों कारागारमुक्त देश-भक्त के अवलोकनार्थ उत्सुक जनता खड़ी हो! किन्तु आज यह क्या? ओह! इतनी घृणा!! उसी के दर्शन में, एक ही दिन के अन्तर में इतना पाप! यह तो उससे भी बुरी दशा इस चारु चन्द्र की हुई जैसी उसी देशभक्त की स्वार्थपरता देख, होती है।

आज शङ्कर का चित्त स्थिर नहीं है. बड़ी भारी उधेड़ बुन लगी हुई है। घर पहुंचा और भोजन कर, चारपाई पर पड़ गया। गृहणी से भी विशेष बातें न कर सका। हुक्के की नली को पकड़, पास ला, गुड़-गुड़ाने लगा। विलक्षण विलक्षण विचार तरंगें कभी उसे भंवर में डालती थीं कभी किनारे पर ला पटकती थीं। परन्तु किसी से कुछ भी न बोल, आज शंकर चुपचाप पड़, सो रहा।

(क्रमशः)

कुसुमोद्यान

चीन में जलयांवाला बाग

मिस्टर बर्ट्रैण्ड रसल ने विलायत के समाचारपत्र 'न्यू लीडर' में लिखा है जिस में वह बतलाते हैं कि चीनमें जो अत्याचार होरहे हैंवह बहुत भयानक हैं, ब्रिटिश जनता से सत्य को छिपाया जारहा है, अमरीका में सत्य का प्रकाश किया जारहा है इस लिये वहां की प्रजा इङ्गलैंड से विमन होरही है।

झगड़े का आरम्भ

शंघाई के एक जापानी पुतलीघर में मजदूरों ने हड़ताल करदी, एक जापानी ने एक चीनी मजदूर को गोली से मार डाला, प्रतिवाद के रूप में कुछ चीनी विद्यार्थी एक जुलूस बनाकर बाज़ारों में घूमें; पीकिंग की नैशनल युनिवर्सिटी के प्रोफेसरों ने जो बयान निकाला है उसके अनुसार विद्यार्थियों के पास लघुपुस्तकों और विज्ञापनों के अतिरिक्त और कुछ न था, कई विद्यार्थियों को ब्रिटिश पुलिस ने पकड़ लिया जिस पर शेष विद्यार्थी अपने साथियों को छुड़ाने के लिये थाने की ओर चल पड़े; ब्रिटिश अधिकारी बालक और बालिकाएं इस निःशस्त्र सेना से भयभीत होगये और पुलिस को गोली चलाने का हुक्म देदिया गया। परिणाम यह हुआ कि ६ विद्यार्थी तो यमलोक को पधारे और ४० से ऊपर बुरी तरह से घायल होगये। विद्यार्थी ६ दिन तक सत्याग्रह करते रहे और पुलिस गोली चलाती रही। इस प्रकार ७० विद्यर्थी मर गये और ३०० घायल होगये। अपनी कृति को उचित सिद्ध करने के लिये ब्रिटिश अधिकारियों ने यह बयान किया कि विद्यार्थी लोग यह शब्द बोल रहे थे—"विदेशियों को मार डालो"। प्रतीत होता है कि यदि यह शब्द बोले गये तो बोलने वाले गुप्तचर थे।

चीनी विद्यार्थियों का चरित्र

महाशय बर्ट्रैण्ड रसल की सम्मति है कि चीनी विद्यार्थी प्रायः ऐसे ही अच्छे होते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं जैसे उच्च घराने के ब्रिटिश विद्यार्थी, किंतु वह सीधे अधिक होते हैं। उनके आचार्य कन्फ्यूशस ने यह शिक्षा दी है कि स्वाभाविकतया पुरुषप्रकृति भद्र होती है। बड़ा यत्न करने पर भी ईसाई पादरी चीनियों की खोपरी में यह सिद्धान्त नहीं ठूंस सकें कि सब मनुष्य पापी उत्पन्न होते हैं, किन्तु यह घटना सम्भवतया उनको इस सिद्धांत को मनवा देगी।

फिर झगड़े ने क्या रूप पकड़ा।

चीनी प्रजा इस घटना को देखकर व्याकुल होगई और उन्होंने एक बहिष्कार की नींव डाली जो क्रमशः बढ़ रही है। चीन भर में ब्रिटिश और जापानी वस्तुओं का बहिष्कार आरम्भ होगया है, चीन के कई नगरों में एक साथ ही फिसाद होगये; सभ्यसंसार की सामुद्रिक सेनायें शङ्घाई बन्दरगाह में इस उद्देश्य से सुसज्जित उपस्थित हैं कि इन लड़कों और लड़कियों पर गोली चलाएं।

शंघाई का शासन प्रकार

इस दुरावस्था को समझने के लिये यह आवश्यक है कि पाठकों को यह बतलाया जाय कि शङ्घाई में किस प्रकार का राज्य है। शङ्घाई लंडन के आकार का शहर है, यह नगर तीन भागों में विभक्त है। चीनी विभाग, फ्रांसीसी विभाग, और अन्तर्जातीय विभाग। यह झगड़ा अन्तिम विभाग में हुआ है जिस पर धनपतियों का निष्कण्टक राज्य है, उस राज्यप्रणाली में प्रजा के प्रतिनिधियों के लिये कोई स्थान नहीं है, धनपति अधिकतया अंग्रेज तथा जापानी हैं, थोड़े से अमेरिकन भी हैं, ब्रिटिश पुलिस अफसरों को छोड़ कर शेष सब सिक्ख हैं। जब कभी धनपतियों का शङ्घाई सङ्कट में पड़ा है सभ्यसंसार के जंगी बेड़े सहायता के लिये आते रहे हैं। शङ्घाई में विदेशियों के अधिकार का आधार विजय है, उनका वहां उसी प्रकार का अधिकार है जिस प्रकार का कि जर्मनी का १९१४ से लेकर १९१८ तक बैलिजयम पर था। १८४२ में चीनियों को अफीम खरीदने पर बाधित करने के लिये जो कुछ हुआ; विदेशियों का आगमन उसका परिणाम स्वरूप था; वास्तव में उस नगर पर उनका कोई अधिकार नहीं है। वह वहाँ केवल इसलिये विराजमान हैं कि चीनीलोग उनके साथ लड़ने की शक्ति नहीं रखते। शङ्घाई व्यापार और शिल्प का केन्द्र है, और मजदूरों की अवस्था वहां ऐसी शोचनीय है जैसी १०० वर्ष पूर्व इङ्गलैण्डकी थी। छोटे बच्चे सप्ताह में सात दिन १२ घण्टे रोज काम करते हैं, कई बार थक कर काम करते २ सो जाते हैं और ऊंघते २ कलायन्त्रों में जा पड़ते हैं और मर जाते हैं। कलायन्त्रों के इर्द गिर्द कोई बाड़ नहीं है। कुछ बच्चे दियासलाई बनानेका काम करते हैं उन में से बहुत छोटी उमर में ही फौस्फ्रैस के विष से मर जाते हैं। नागरिक सभा के सन्मुख यह प्रस्ताव था कि बच्चों के काम को कुछ नियमित किया जाय। परन्तु कोरम न होसकने के कारण इस पर विचार न हो सका। बड़ी आयु के श्रमियों की अवस्था भी कोई बहुत अच्छी नहीं है। वह दिन में १२ से १३॥ घण्टे तक काम करते हैं और उन का वेतन महीने में १५ शिलिंग से ३० शिलिंग तक है।

न्याय

कहा जाता है कि चीन में जो कुछ किया जा रहा है योरपियनों की जानें बचाने के लिये किया जा रहा है। यह भय निरा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धार है। केवल एक योरपियन अब तक मारा गया है। न्यायविभाग में सब योरपियन लोग हैं इस लिये चीनियों की मृत्यु के लिये किसी योरपियन को उत्तरदाता ठहराना कठिन है

हम नहीं कह सकते कि महाशय रसल के कथन में कितनी सत्यता है किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि लिखनेवाला एकप्रसिद्ध विचारक है जिस के कथन का सभ्यसंसार पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ेगा यदि बृटिश सरकार की ओर से यथोचित और सन्तोषजनक उत्तर शीघ्र न दिया गया।

सत्यार्थप्रकाश

वर्त्तमान काल की कोई आर्य्यभाषा-पुस्तक इतनी नहीं फैली जितनी कि सत्यार्थ-प्रकाश। आर्य्यभाषा में इसकी ८५ हज़ार प्रतियां छप चुकी हैं। इस पुस्तक का अनुवाद बङ्गाली, गुजराती, मरहठी, गुरुमुखी, टैलगू उर्दू, इङ्गलिश में तो आगे ही छप चुका था; तामिल का अनुवाद अब छपा है और जर्मन में अनुवाद हो रहा है। तामिल का अनुवाद करने वाले महाशय एम० आर जम्बूनाथ एय्यर हैं और प्रकाशक महाशय मटेसन हैं; अभी पूर्वार्द्ध का ही अनुवाद छपा है। मू० २) रु०दो आने है, इस अनुवादकी समालोचना करते हुए महाशय के० नतरंजन अपने पत्र इण्डियन सोशल रिफार्मर में ऋषि दयानन्द की पवित्र स्मृति पर कुछ श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं; वह लिखते हैं:—

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द भारतवर्ष के सब से बड़े सामाजिक और धार्मिक संशोधकों में से एक हैं। एक शोधक के निर्भ्रान्त और अचूक बोध से उन्होंने जान लिया कि हिन्दूसमाज किन रोगों से पीड़ित है और प्राचीन शास्त्रों के के आधार को न छोड़ कर उनके ऐसे तर्क-सम्पन्न अर्थ किये कि इस युग की आवश्यकता पूरी होगई; आर्य्यसमाज जिसमें हमारे देश के कुछ सब से बड़े महापुरुष सम्मिलित होगये हैं ऋषि के महान् और आकर्षिक व्यक्तित्व का परिणाम है; उन तमाम लोगों के लिये जो कि धर्म कर्म को छोड़कर पश्चिम के प्रकृतिवाद में डूबे हुए हैं, आर्य्यसमाज की बाइबिल सत्यार्थप्रकाश उत्थान का साधन है। विशेषतया यह उन लोगों की आंखें खोलती है जो कि कर्मकाण्ड के बाह्य रूप पर उसका वास्तविके रूप समझे बिना मर मिटने को उद्यत हैं। मिस्टर जम्बूनाथ एय्यर जो कि आर्य्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने दस वर्ष सत्यार्थप्रकाश के अवलोकन में लगाकर सत्यार्थप्रकाश का तामिल अनुवाद करदिया है। वेद की सतर्क व्याख्या की जितनी आवश्यकता दक्षिण को है उतनी शायद भारत के किसी अन्य भाग को न हो इस लिये इस अनुवाद से एक बड़ी भारी और चिर-अनुभावित कमी पूरी हुई है..... ...
....

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का मुख्य अंग यह है कि चारों संहितायें निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान हैं। सत्यार्थप्रकाश के अर्थ हैं सत्य, अर्थ प्रकाश। ऋषि दयानन्द ने अपने पास से कोई नई बात नहीं बतलाई उन्होंने प्राचीन धर्मग्रन्थों को ही अपने सामने रखकर वर्त्तमान काल की परिवर्त्तित अवस्थाओं के अनुसार धर्म की व्याख्या की है। भूमिका लेखक मिस्टर रङ्ग स्वामी अय्यर लिखते हैं कि ऋषि दयानन्द की वेदव्याख्या युक्ति-युक्त है और भ्रममूलक रसम रिवाज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुक्त है अतएव इस समय के दक्षिण में जो मतमतान्तर हिंदुओं में चले हुए हैं उन सब को हटा कर एक मत बनाने में सहायक हो सकती है। सत्यार्थप्रकाश के द्वारा भारत की अन्य भी कई सामाजिक समस्यायें हल होसकती हैं। दृष्टान्त के रूप में स्त्रीशिक्षा के प्रश्न को ले लो। माता ही घर की निर्माता है और जैसी शिक्षा वह बालक को छोटी आयु में देगी वैसा ही वह बालक आगे जाकर बनेगा। इसी कारण ऋषि दयानन्द अनुरोधपूर्वक स्त्रियों और पुरुषों की शिक्षा पर बल देते हैं, उनका यह भी मत है कि आठ वर्ष की आयु के पीछे सब बालकों और बालिकाओं को बाधित शिक्षा देनी चाहिये और जो संरक्षक अपने बालक और बालिका को पाठशाला में न भेजे उसको दंड मिलना चाहिए। ऋषि का यह भी सिद्धान्त है कि सब जातियों और सब मतों के स्त्री पुरुषों को वेदाध्ययन का अधिकार है। स्वामी दयानन्द ने देश को अधोगति को प्राप्त कराने वाले कई भ्रममूलक विश्वासों का खण्डन किया है और नाम-धारी जादू टोना करने वाले और ज्योतिषियों की पोल खोली है। इन लोगों का उद्देश्य केवल मूर्ख और श्रद्धालु लोगों से रुपया बटोरना है। स्वामी जी महाराज बालविवाह की कुप्रथा का जिसके कारण १५ वर्षकी आयु से पहिले ही एक बालिका की शक्ति का ह्रास होजाता है और जिसका सामाजिक संशोधकों के महत्तापूर्ण यत्नों के होते हुए भी हिन्दू समाज पर बड़ा आधिपत्य है स्पष्ट शब्दों में विरोध किया है। विवाह के लिए सर्वोपरि उचित आयु ब्रह्मचारिणी के लिए २४ वर्ष है और ब्रह्मचारी के लिए ४८ वर्ष, ऐसे विवाह से ही दोनों को पूर्ण सुख की प्राप्ति हो सकती है।

ऋषि दयानन्द की शिक्षा का वह अंग जिसके परिणाम सब से अधिक क्रांतियुक्त हैं उनका वर्ण-व्यवस्था विषयक मत है। ऋषि की सम्मति में वर्णों की व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव से होती है न कि जन्म से। एक शूद्र भी जो कि वर्णाश्रम प्रणाली में सब से नीचा है वह ब्राह्मण बनकर सब से ऊंचा होसक्ता है और एक ब्राह्मण यदि गिर जावे तो शूद्रत्व को प्राप्त हो सक्ता है। वर्ण व्यवस्था की इस उदार व्याख्या के कारण ही आर्यसमाज ने समग्र भारतवर्ष के अछूतों को उस गिरी हुई दुर्वस्था से ऊपर उठाने के प्रशंसायुक्त प्रयत्न किये हैं जिस तक युगों के अत्याचार से वह पहुँच चुके हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन काल का मूलमन्त्र बतला दिया जब कि उन्होंने लिखा–"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है, वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जावे"

....

आर्यसमाज के नियमों की प्रामाणिक व्याख्या करने वाली किसी पुस्तक के तामिल में न होने से आर्यसमाज दक्षिण में जड़ नहीं पकड़ सका। हमें विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश के इस अनुवाद का फल यह होगा कि तामिल नैडू देश में आर्यसमाज के मत की वृद्धि होगी"।

बौद्धकाल में शिल्प

कलकत्ता के The Indian Historical quarterly के जून अंक में महाशय पी० के० आचार्य एक सार गर्भित लेख लिखते हैं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिसमें वह बौद्धों की धर्म्मपुस्तकों में से उद्धरण देकर यह बतलाते हैं कि उस काल में शिल्प की उन्नति कितनी थी ।

पांच प्रकार के घर और उन की रचना

घर पांच प्रकार के हुआ करते थे, विहार अर्धयोग, प्रासाद, हर्म्य और गुहय । आंगन के चारों ओर प्राकार होते थे जो ईन्टों के पत्थर के अथवा लकड़ी के बनते थे। इन प्राकारों से परे बाँस या कांटों की बाड़ होती थी अथवा खाइयें होती थीं, प्रत्येक घर में रहने के कमरे, सोने के कमरे, सामान रखने के कमरे, व्यायामशाला, छते हुए कुएं, स्नानागार और तालाब होते थे। इनके अतिरिक्त रसोईघर, शौचालय, भ्रमणालय और यन्त्रगृह भी होते थे, यन्त्रगृहके ठीक अर्थ मालूम नहीं हैं। होसकता है कि इन मे पानी के नलकों का एंजिन हो अथवा बिजली का एंजिन हो। कई मकान सात मञ्जिलों के होते थे। घरों के बाहर बड़ी२ ड्योढ़ियां होती थीं, गर्म वायु में स्नान करने के लिये एक विशेष प्रकार के बने हुए स्नानागार होते थे जिनमे अंगीठी जलती रहती थी और गर्म पानी के द्वारा पसीना लाया जाता था ।

हमारी मंजूषा

१. क्रूरबेणा—लेखक हरद्वारप्रसाद जालान (आरा निवासी) मूल्य ॥)

यह एक पौराणिक रूपक है इस में अत्याचारी राजाओं के समय में समाज की जो दुरावस्था होजाया करती है उसका पूरा २ चित्र खींचा है और यह दिखलाया है कि खुशामदी मन्त्री भी किस प्रकार राजा और प्रजा के हित का नाश करने वाले होते हैं। नाटक का अभिनय भी हो चुका है। रूपक बड़ा ही मनोरंजक है । भाषा बड़ी सुन्दर है, और पात्र पात्रायें कोई अप्राकृतिक कार्य्य नहीं करते । हम आशा करते हैं कि लेखक महोदय इस प्रकार की और पुस्तकें भी लिखेंगे और मातृभाषा की सेवा करते रहेंगे ।

२. उर्वशी—लेखक कविराज जयगोपाल, प्रकाशक चुन्नीलाल खन्ना । अध्यक्ष शिरोमणि पुस्तकालय मोहनलाल रोड लाहौर । मूल्य १) ।

कौन संस्कृतज्ञ रसिक है जिस ने कवि शिरोमणि कालिदास का विक्रमोर्वशीय नाटक बार बार नहीं पढ़ा ? इस नाटक का अनुवाद इंग्लिश इत्यादि कतिपय विदेशीय भाषाओं में भी होचुका है और पश्चिमीय विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा मुक्तकण्ठ से की है। इस नाटक में स्वर्गीय प्रेम के लौकिक और अलौकिक कई दृश्य दिखलाये हैं। कविराज जयगोपाल ने इस नाटक को उपन्यास के रूप में लिखा है। इस कार्य में उनको बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। नाटक की रोचकता में भेद नहीं आया और उपन्यास ऐसे ढंग से लिखा गया है कि पढ़ने वाले का दिल समाप्त किये बिना छोड़ने को नहीं करता। भाषा ओजस्विनी है। छपाई इत्यादि अति उत्तम हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३. कर्मवीर नाटक—रचयिता पडित देवकीनन्दन भूषण। प्रकाशक श्री व्यास साहित्य मन्दिर ३९माटलेन कलकत्ता, मूल्य सादी जिल्द १॥) रेशमी २)। यह भी एक नाटक है जिस में इतिहास और पौराणिक गाथा दोनों के अंश हैं। इस में पाप के दुष्परिणामों और गिरावट के समय देशसेवकों पर जो अत्याचार किये जाते हैं उनका चित्र बहुत अच्छा खींचा है। साथही अन्तमें धर्मकी ही जय होती है यही दिखलाया है। महात्मा कर्म्मवीर और हरावती के चरित्र संगठित करने में लेखक ने बड़ी योग्यता से काम लिया है। यह नाटक पं० देवकीनन्दन भूषण की "नवीना लेखनी का प्रथम प्रयास" है। हम इस नवीन साहित्य-सेवीका हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि जो लेखनी नवीना होती हुई ऐसा सुन्दर साहित्यरत्न उत्पन्न कर सकती है वह अभ्यस्त होकर साहित्य की सेवा ऐसी रीति से करेगी कि पं० जी का नाम सुप्रसिद्ध कवियों और सिद्धहस्त लेखकों में हो जावेगा।

४. क्रान्तकुमारी राजकुमार अर्थात् प्रिन्स क्रापटकिन की आत्मकहानी—अनुवादक श्री प्यारेमोहन चतुर्वेदी। मुद्रक तथा प्रकाशक प्रताप कार्य्यालय कानपुर। मूल्य १) रुपया।

वर्तमान युग में जो दार्शनिक क्रान्तिकार हुए हैं उन में रूस के प्रिन्स क्रापटकिन का स्थान बड़ा ऊंचा है। आप राजवंश में उत्पन्न हुए, ऐश्वर्य में उत्पन्न हुए और पले, किन्तु सत्ता वादियों के दुर्ग को खोखला करने और सम्पत्ति के मद से उन्मत्त हो कर योरोप में जो अत्याचार किये जाते हैं उनका प्रतिरोध करने में राजकुमार ने जो प्रयत्न किये हैं वह स्वतन्त्रता के इतिहास में स्वर्णीय अक्षरों में सदा अंकित रहेंगे।

राजकुमार की गणना यूरोप के वैज्ञानिकों में भी है। और उस क्षेत्र में भी आप का कार्य्य उच्चकोटि का है। आप एक बहुश्रुत विद्वान् थे। ऐसे महापुरुष की आत्म कहानी का शिक्षाप्रद होना एक स्वाभाविक बात है। भारत के नवयुवकों को इस पुस्तक का स्वाध्याय नियमपूर्वक करना चाहिये ताकि वह सीख सकें, कि जो मनुष्य आत्म-त्याग नहीं कर सकता, साहसी और नम्र नहीं और आपत्तियों में धीर और वीर नहीं रह सकता वह यदि देशसेवा के रङ्गमच पर आवेगा तो दर्शकों को विदूषक के रूप में ही दीखेगा। किसी के लिये उपहास की सामग्री उपस्थित करेगा और कोई उसको करुणा का पात्र समझेगा।

५. तेजी-मंडी का दैनिक, भविष्य फलादेश रचियता काशी निवासी कर्मकाण्ड भूषण पं० जयराम शर्मा ज्योतिषी। वार्षिक मूल्य ५) रुपया।

हम ज्योतिषीजी के इस प्रयास पर बधाई नहीं दे सकते। हमारा देश भ्रममूलक मिथ्या विश्वासों से आगे ही पीड़ित है। फलित ज्योतिष भी भारत के व्यापार का गला घोंटने वाला है। एक नमूना ले लीजिये। ज्योतिषी जी लिखते हैं कि:—

"सूर्योदय के समय से प्रतिदिन पहिले जिस मनुष्य का सूर्यस्तर बाद में चन्द्रस्तर का चलना प्रारम्भ हो तो उसे दिन भर या पन्द्रह रोज तक बराबर भाग्य की वृद्धि, व्यापार में लाभ, और हर एक कार्य की

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिद्धि शीघ्र ही होगी।" इस उद्धरण से पाठकों को ज्योतिषी जी की भाषा की योग्यता का भी ज्ञान हो जावेगा। जिस देश में वाणिज्य व्यापार की आधारशिला में ऐसी कपोल कल्पनाएं हों, वह यदि अधोगति को प्राप्त न हो, तो विधाता की व्यवस्था ही उलट जावे। आशा है कि ज्योतिषी जी हम से अप्रसन्न होकर हमारे विरुद्ध किसी प्रयोगसिद्धि का व्यर्थ प्रयास न करेंगे। क्यों कि प्रयोगों का प्रभाव केवल भक्तों और विश्वासियों पर ही होता है।

६. चनाचबैना—रचियता-पं० ईश्वरीप्रशाद शर्मा। भूतपूर्व मनोरञ्जन सम्पादक, प्रकाशक—शिवपूजन सहाय व्यवस्थापक सरस साहित्य माला आरा (बिहार)। मू० १)।

यह पुस्तक वास्तव मे हास्यरसपूर्ण सरस पद्य माला है। पं० जी हास्य-रस-पूर्ण कवितायें लिखने में सिद्धिहस्त हैं। इस पुस्तक में केवल मनोरञ्जक ही नहीं है किन्तु हमारी जाति की सामाजिक और राजनैतिक कमजोरियों का ऐसा उत्तम कच्चा चिट्ठा अभी तक हमने कहीं और नहीं देखा।

सभी कविताएं शिक्षाप्रद हैं। व्यंगके वाण तो छोड़े गये हैं किन्तु उन वाणों में से एक भी विषैला नहीं। जिस के वाण लगते हैं उसके पेट में भी गुदगुदी उत्पन्न कर देते हैं। वैसे तो सभी कविताएं पाठ्य हैं किन्तु लीला-वतार और जोरू-गुण-गायन में तो लेखक महोदय ने कमाल कर दिया है। पौराणिक शैली के श्लोक बनाये हैं और भाषा में उनका अनुवाद दे दिया है।

यह पुस्तक अपने प्रकार की निराली है और प्रत्येक साहित्यप्रेमी और रसिक हाथ में होनी चाहिये।

विचार प्रवाह

वाइसराय का भाषण।

कई नरम दल के नेताओं के नेत्र वाइसराय महोदय की वक्तृता की ओर लगे हुये थे। वक्तृता हो चुकी किंतु किसी नवीन लोक का निर्माण नहीं हुआ। देश की राजनैतिक अवस्था में कोई क्रांति नहीं हुई। अब वही महाशय बड़ी निराशता का प्रकाश कर रहे हैं। निराशा के लिये स्थान तभी हो सकता है यदि पहले आशा के लिये स्थान हो। लार्ड रेडिंग जब से भारत में पधारे इन्होंने कोई भाषण नहीं दिया जिसका विश्लेषण करने के उपरांत किसी बुद्धिमान श्रोता और पाठक को अपनी आशाओं के लिये कोई आधार मिला हो। शब्दयोजना और वाक्यरचना में श्रीमान् सिद्ध हस्त हैं। किन्तु इन की योग्यता उस प्रकार की है कि शब्द और वाक्य दोनों भड़कीले होते हुये भी निस्सार होते हैं। इसी वक्तृता को ले लीजिये। आप ने कहा कि गवर्नमेन्ट आफ़ इन्डिया ऐक्ट का संशोधन १९२० से पूर्व भी हो सकता है। किंतु साथ ही यह भी कहा कि ऐसा होना भारत के हित के लिये नहीं क्यों कि इस समय यदि कोई राजकीय कमीशन बैठेगी, तो वह यही निर्णय करेगी कि भारतीयों के स्वराज्य के क्षेत्र में कोई वृद्धि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न होनी चाहिये। क्योंकि पिछले सुधारों को उन्होंने सफल बनाकर नहीं बतलाया। क्या सुन्दर युक्ति है? यह तो वही बात हुई जैसा कि एक लड़के को एक घोड़ा दिया जावे और कहा जावे कि यदि तुम इस को ५० मील बिना किसी दुर्घटना के दौड़ा लोगे तो तुमको मोटर मिलेगी किंतु साथ में सड़क ऐसी बतला दी जावे कि जिस में अनगिनत गढ़े हों जिन पर सुन्दर किन्तु गली सड़ी लकड़ी के पटड़े हों। और यदि वह लड़का यह कहे कि या तो मुझे दूसरी सड़क दी जावे और या पटड़े हटा लिये जावें ताकि मैं घोड़ा दौड़ा सकूं तो उसको यह उत्तर दिया जावे कि इसके अर्थ यह समझे जावगे कि वह घोड़ा दौड़ाने की योग्यता ही नहीं रखता, इस लिये मोटर देने पर विचार करना उसके लिये हितकर न होगा।

भारतीयों ने जिस समय सुधारयोजना हुई स्पष्ट कह दिया कि इसके अनुसार भारतीय मन्त्रियों के कर्त्तव्य तो बहुत हैं किन्तु अधिकार कोई नहीं। उनका कर्त्तव्य है कि शिक्षा और स्वास्थ्यरक्षा के विभागों में उन्नति करके दिखलावें, किन्तु आय का जो भाग उनको दिया गया वह वर्तमान अवस्था को स्थिर रखने के लिये भी पर्याप्त नहीं। इस लिये यदि उन्नति न हो तो उनके मुख पर कालिमा, यदि कर लगावें तो उनके मुख पर कालिमा, और यदि गवर्नर से धन मांगे तो इनकार, यदि गवर्नमैन्ट कूटनिति का वर्ताव करे तो उत्तरदायित्व में मन्त्री भी सम्मलित, किन्तु उसके रोकने का अधिकार उनको सर्वथा नहीं। यदि वह प्रजा के सन्मुख अपने दुःख रोवें तो कहा जावे कि इनके पास रहस्य सुरक्षित नहीं रह सकते इस लिये स्वराज्य के योग्य नहीं। यदि चुप रहें तो कह जावे कि प्रजा को साथ रखने की योग्यता ही इनमें नहीं इसलिये स्वराज्य और पर राज्य में कोई भेद नहीं, इस के अतिरिक्त कि पर-राज्य में क्षमता अधिक होती है। मन्त्रियों के ऊपर में गोरे अफ़सर और नीचे भी गोरे अफ़सर और उन गोरे अफसरों के नियत करने में उनको नहीं पूछा गया। और उन को पदच्युत करने का इनको अधिकार नहीं। यदि कोई गोरे अफसर उन के आधीन न रहना चाहें तो उनको समय से पहले ही अनुपात से पैन्शन भी मिल सकती है। ऐसे मातहतों से काम ब्रह्मा भी कठिनाई से ले सकते हैं। साधारण मर्त्यों का तो कहना ही क्या है? यदि इन मातहतों की बात न मानी जावे तो वह सीधे गवर्नर तक पहुँचे और अपनी बात मनवा लें। यदि न डाटा जावे तो सारे उत्पातों का उत्तरदायित्व बेचारे मन्त्री पर? बहुत से भारतवासियों ने पहले ही कह दिया था कि सुधार निराशा-युक्त हैं। जिन अवस्थाओं में भारतीयों की परीक्षा ली जा रही है, उन अवस्थाओं में उत्तीर्ण हो सकना सर्वथा असम्भव है इस लिये ऐसी परीक्षा में सम्मिलित ही न होना अच्छा है। कांग्रेस ने परीक्षकों पर अविश्वास की घोषणा कर के सुधारों का वहिष्कार कर दिया। किन्तु नर्मदल के नेताओं ने लोक मत का तिरस्कार करके भी सहयोग किया। और ऐसा सहयोग किया जिसका दृष्टान्त आत्माभिमानी किसी राष्ट्र के इतिहास में न मिलेगा। सहस्रों देश भक्त बन्दी-गृह में ठूंसे गये। न्यायालय नाटक घर बने किन्तु हमारे मन्त्रियों ने प्रतिवाद में त्यागपत्र न दिये। यह सब कुछ करते हुये भी उन की वास्तविक शासकों के साथ न पटी। अन्त में सुधारों के वास्तविक कार्य क्रम की पड़ताल के लिये एक कमेटी बिठलाई गई। उस कमेटी के सन्मुख भूत और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्तमान सहयोग करने वाले मन्त्री आये। सब ने सर्व सम्मति से यही रोना रोया कि द्वैध-शासन के होते हुये स्वराज्य में न तो शिक्षण प्राप्त हो सकता है और न ही उस के क्षेत्र को विस्तृत किया जा सकता है। संयुक्त प्रान्त के चिन्तामणि और जगत नारायण ने यही कहा; पञ्जाब के हरकिशनलाल भी यही बोले, मध्यप्रान्त के केलकर और चित्तनिवास ने भी यही रोना रोया। बिहार के माधोदास ने भी यह दुःख की कहानी सुनाई। कमेटी के उन सदस्यों ने, जो सरकार के नौकर न थे और जिनके मुखिया सर तेज बहादुर सप्रू थे, जो असहयोग के दिनों में वाइसराय की शासक समिति के सदस्य थे यही रिपोर्ट की कि जब तक द्वैध शासन की समाप्ति नहीं होती, कोई मन्त्री कुछ भी कार्य नहीं कर सकता। अधिकार का जुआ जब सर मुहम्मद शफ़ीके गले से उतरा तो उन्हों ने भी इसी पक्ष का समर्थन किया। किन्तु वाइसराय महोदय कहते हैं कि इस रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इसकी स्वीकारी बिना पारलियामेंट के ऐक्ट के संशोधन के नहीं होसकती। किन्तु यदि सुधारों की गाड़ी द्विचक्र शासन के हटाये बिना चल ही नहीं सकती तो क्यों नहीं ऐक्ट को बदल डालते जब कि स्वयम ही कहते हो कि १६२६ से पूर्व उसका बदलना सम्भव है? वाइसराय महोदय ने कहा कि जिन लोगों ने असहयोग किया वह सहयोग करके दिखलाव तब सुधारों पर पुनर्विचार होसकता है। आगे जिन्हों ने लोकमत की उपेक्षा करके सहयोग किया उनके परामर्श की जो दुर्गति हुई है उस को देख कर अब असहयोगियों से सहयोग की आशा किस मुंह से कर सकते हो? जो काम चिन्तामणि और चितनवीस से सफलता पूर्वक न हुआ उसकी आशा मोतीलाल और केलकर से कैसे कर सकते हो? बात तो साफ़ है। भारत का कल्याण न रैडिंग द्वारा होगा, न वर्कनहेड द्वारा। भारत अपने आप ही अपने सौभाग्य और दुर्भाग्य का निर्माता है। आजकल कांग्रेस का कार्य शिथिल है, हिन्दू मुसलमान एक दूसरे का शिर फोड़ रहे हैं, विदेशी माल धड़ा धड़ देश में आरहा है, ऐसी अवस्था में स्वराज्य की पुकार को कौन सुनेगा? यदि भाई भाई एक हो जावें, विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार होजावे और लोकमत के अन्दर यह शक्ति हो कि अपने तिरस्कार का बदला चुका सके तो आज ही वाइसराय महोदय और भारतीय सचिव के भाषणों की टोन बदल जावे। किसी ने सच कहा है:—

"इस घरको आग लगी घरके चिराग़ से"

पानीपत की दुर्घटना

पानीपत में मुहर्रम के अवसर पर जो कुछ हुआ उसका वृतान्त हमारे पाठक समाचार पत्रों में पढ़ ही चुके होंगे। हिंदुओं के प्रतिष्ठित स्थानीय और प्रान्तीय नेता बड़े बलके साथ कहते हैं कि मुसलमान तहसीलदार ने निरपराधी जाटों के लिये पहिले से जाल बिछाया था और जब वह इस जाल में फंस गये तो उनको मारा और पीटा। यह दोष बड़ा घोर है और स्पष्ट और नियत शब्दों में लगाया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि तहसीलदार को मालूम था कि गंगा स्नान के लिये सहस्रों जाट मुहर्रम के दिन पानीपत में से गुजरेंगे किन्तु न ही उनका पानीपत में आना रोका गया और न ही उन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के लिये किसी दूसरे रास्ते की घोषणा की गई। यह भी कहा जाता है कि हाकिम ज़िला ने जनसमूह को बिना सावधान किये ही उन पर डण्डा बरसाने की आज्ञा देदी। यह भी कहा जाता है कि मुसलमान भी पुलिस के साथ मिल गये, और उन्होंने भी जाटों को मारा। इसके विरुद्ध सरकारी कथन यह है कि जाट फ़िसाद और दंगे के उद्देश्य से इकट्ठे हुये और पुलीस अधिकारियों के कहने पर भी डटे रहे। पुलीस ने बड़े धैर्य्य से कार्य लिया और बिना गोली चलाये काम निकाल लिया। ऐसी अवस्था में उचित तो यह था कि एक निष्पक्ष कमीशन नियत कर दी जाती जो कि अनुसन्धान के पश्चात् निर्णय करती कि तहसीलदार कहां तक दोषी है। दोष सिद्ध हो जाने की अवस्था में उस को दण्ड दिया जाता, अन्यथा उस की निर्दोषता की घोषणा करके उस के पद को बढ़ा दिया जाता। यदि तहसीलदार निर्दोष है तो ऐसा करने से जहाँ हिंदू प्रजा का असन्तोष दूर हो जाता वहां उस की भी सुर्खरूई हो जाती, किन्तु शोक है, कि सरकार ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया है। हिन्दुओं के अन्दर असन्तोष बढ़ रहा है। वह समझते हैं और स्पष्ट कहते हैं कि पञ्जाब में मुसलिम राज्य है हिन्दुओं के साथ यहां न्याय नहीं हो सकता। शासक दल को ऐसे घोर असन्तोष को प्रजा के हृदयों में स्थित नहीं होने देना चाहिये। क्योंकि ऐसा होना न प्रजा के लिये हितकर है और न शासकमण्डल के लिये। असन्तोष की मात्रा का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कौंसिल के वह जाट मैम्बर भी जो सदा सरकार के साथ रहे और मियां फ़ज़ल हुस्सैन के साथ वोट करते रहे, इस समय बिगड़े बैठे हैं। यदि सरकार को अपने इस अशुद्ध निर्णय को लौटाने में लज्जा आती है, तो हम उस की कठिनाई के हल का एक और सहज उपाय बतलाये देते हैं और वह यह कि तहसीलदार हिंदू नेताओं पर मान हानि का अभियोग चला दे तो आप ही दूध का दूध और पानी का पानी हो जावेगा। दोषी जो कोई भी होगा अपनी करनी का फल भोगेगा, सरकार से किसी की शिकायत न रहेगी। और प्रजा का असन्तोष दूर होकर प्रभु मण्डल में उन का विश्वास पुनः स्थापित हो जावेगा।

मियां फ़ज़लहुस्सैन

मियां फ़ज़ल हुस्सैन का व्यक्तित्व भी बड़ा महान है। उनकी योग्यता निर्विवाद है और उसका बड़ा प्रमाण यह है कि पंजाब गवर्न्मेंट अब तक उनके हाथों की कठपुतली रही। पंजाब में हिन्दू मुसलमानों के सम्बन्ध की जो दुरावस्था है उसके लिये बहुत कुछ वही उत्तरदाता हैं। अब एक विचित्र घटना हुई है। सर हबीबउल्लाह जो भारतीय सरकार के शिक्षासदस्य हैं अवकाश पर गये हैं, उनके स्थान पर मियां जी नियत किये गये हैं। मियां साहिब ने पञ्जाब के शिक्षा-मन्त्री के पद से त्यागपत्र देदिया है और वह स्वीकार भी होगया है, उनके स्थान में शेख़ अबदुल क़ादर नियत होगये हैं। प्रश्न यह है कि मियां साहब पंजाब से क्यों गये जब कि सारे कला यन्त्र को चलाने वाले वह थे ? भारतीय सरकार के शिक्षा-सचिव होते हुये वह अपने मुसलमान भाइयों को उतनी नौकरियां नहीं दिला सकते जितनी कि पंजाब में दिला सकते हैं। फिर उन्हों ने पंजाब को छोड़ना स्वीकार क्यों किया ? इस सम्बन्ध में कई स्थापनायें हैं, कोई कहता है कि इसका कारण यह है कि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पंजाब में नये गर्वनर सर मेलकम हेली अपने आप धड़ल्ले के आदमी हैं और शासन की बागडोर मियांसाहब के हाथ में नहीं देसकते एक मियान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं इस लिये गर्वनर महाशय ने मियां साहब को नमस्ते कही है। दूसरे लोगों का यह विचार है कि शिक्षाविभाग में तो मियां साहब ने अपना कार्य समाप्त करलिया अब वह पंजाब की भी शासक सभा के सदस्य होकर अपनी जाति की सेवा करेंगे। जब सर हबीबउल्लाह का अवकाश समाप्त होगा, उसी समय पंजाब सरकार के भूमिकार सचिव सरदार सुन्दरसिंह मंजीठिया रिटायर होंगे और मियां साहब उनके स्थान में नियुक्त होंगे। तीन मास के पीछे इन स्थापनाओं की सत्यता का निर्णय हो जावेगा।

महाशय पटेल

स्वराजपार्टी के लोग कौंसिलें में उनको मलियामेट करने के लिये गये थे। बतलाया गया था कि यह कान्सिल फ़रेब की टट्टियां हैं जिन्होंने संसार को धोखे में रखा हुआ है कि भारतीय प्रजा स्वराज्य की ओर क़दम उठा रही है। इन कौंन्सिलें को तोड़ दिया जावे तो भारतीय सरकार का एकसत्ताराज्य अपने वास्तविक रूप में प्रगट हो जावेगा। और फिर लोग सविनय-अवज्ञा भंगके लिये तय्यार हो सकेंगे। किन्तु गये थे स्वराजी कौंसिलें को तोड़ने और तोड़दिया कौंसिलों ने स्वराज्य यन्त्र को। वही रीछ और कंवल की कहानी। जो मिस्टर पटेल मुम्बई कारपोरेशन की प्रधानी छोड़ने को उद्यत थे किन्तु बाइसराय का स्वागत करने का नाम न लेते थे आज वाइसराय के प्रासाद में पार्टियों में सम्मिलित होते हैं और दिन में दश वार वाइसराय के पास जाने के लिये अपने आप को तैयार बतलाते हैं। समय की गति भी निराली है। हमको समझ में नहीं आताकि आजकल स्वराज्यदल और नरम दल में नीतिभेद क्या है? यह तो माना जा सकता है कि स्वराज्य दल नाकरशाही का नरम दल की अपेक्षा अधिक कट्टर विरोधी है किन्तु, भेद मात्रा का है प्रकार नहीं।

काल विकराल के जबड़ों में

सर सुरेन्द्रनाथ वनर्जी और सर रामकृष्ण भण्डारकर दोनों महोदय पिछले मास में इस असार संसार से चल बसे। अपने २ क्षेत्रों में दोनों ने भारत की अमूल्य सेवाएं की थीं। सर सुरेन्द्रनाथ वर्तमान राजनैतिक आन्दोलन की नींव रखने वालों में से एक थे। कांग्रेस के संस्थापकों में भी उनके नाम का महत्व बहुत है। किसी समय उन को बङ्गाल का बिना मुकट का राजा कहा जाता था। बङ्ग विच्छेद के समय उन्होंने नौकरशाही के साथ वह अहिंसात्मक युद्ध किया जो देश के समकालीन इतिहास में स्वर्णीय अक्षरों से लिखने योग्य है।

इस में सदेह नहीं कि महात्मा गांधी ने कांग्रेस को जब नया रूप दिया और राजनैतिक अस्त्रों में जब एक अस्त्र की वृद्धि की तो सुरेन्द्रनाथ कांग्रेस से पृथक हो गये। उस समय से उन की लोकप्रियता घटने लगी। नौकरशाही ने अवसर से लाभ उठा कर उनको अपनाना आरम्भ किया। किन्तु जो कुछ भी हो, आयु के पिछले भाग के उनके मतभेद शेष भाग की बहुमूल्य सेवाओं को दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते।

डाक्टर भण्डारकर संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान और प्राचीन भारतीय इतिहास के उच्च कोटि के अन्वैषिक थे। आपने इङ्गलिश जानने वाले विद्यार्थियों में संस्कृत का प्रचार करने के लिये संस्कृत की अति उप-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योगी पाठावलियां भी लिखी थीं, एक ऐसे अपूर्व विद्वान की मृत्यु भी सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु की नाईं एक राष्ट्रीय आपत्ति हो है।

मंसूरी आर्यसमाजका नगरकीर्तन

२९ अगस्त से १ सितम्बर तक मसूरी आर्य्यसमाज का वार्षिक महोत्सव होना था। नगरकीर्तन के लिये २९ अगस्त नियत था। विज्ञापन कई दिन पहिले ही लगा दिये गये थे। जब उत्सव बहुत निकट रह गया तो कतिपय मुसलमान महोदय कलेक्टर के पास पधारे ओर उनको कहा कि आर्य्यसमाज का उत्सव यदि रोका न गया तो हमको बड़ा दुःख होगा। और आर्यसमाज का जलूस यदि निकल आया तो फिसाद हो जावेगा। बस फिर क्या था ? कलेक्टर महोदय व्याकुल होगये और तुरन्त आज्ञा दे दी कि आर्यसमाज का नगरकीर्तन बन्द। आप के पास दो डेपुटेशन पहुंचे, एक आर्य-समाजियों का और एक हिंदू सिख और जैनियों का। डेपुटेशनों में कहा कि "महाराज नगरकीर्तन महोत्सव का एक आवश्यक अग है। यह आशा करनी कि आर्य बिना नगरकीर्तन के उत्सव कर लें ऐसा है जैसे कि किसी हिंदू को यह कह देना है कि पुत्री का विवाह कर सकते हो किंतु मधुपर्क विधि को तोड़ देना। आर्यसमाजी शान्ति-प्रिय हैं किसी के साथ लड़ते नहीं। वह भी तो महाराज जार्ज की प्रजा हैं। क्या उनके धार्मिक अधिकारों की रक्षा करना सरकार का कर्त्तव्य नहीं, यदि सरकार गुण्डों से भले आदमियों की रक्षा नहीं कर सकती तो उस का होना न होना एक जैसा है।" कलेक्टर महाशय ने स्वीकार किया कि यह सब कुछ ठीक है किंतु जब मुसलमान नहीं मानते तो वह असमर्थ हैं। कोई विदेशी पास खड़ा होता तोयही समझता कि मंसूरी में मुग़लराज्य पुनः स्थापित होगया है। कलेक्टर महाशय न मालूम क्या समझे बैठे हैं। आर्यसमाज मसूरी ने प्रतिरोध के रूप उत्सव तो बन्द कर ही दिया है। कमिश्नर और गवर्नर को तारें भी दी हैं। कौंसिल में भी यह प्रश्न उठाया जावेगा। यदि इन उपायों से कुछ न बना तो अपने अधिकारों की रक्षा में आर्यसामाजिक अपना सब कुछ न्योछावर करने को उद्यत हो जावेंगे। क्या कलेक्टर महाशय हिमालय के शिखर पर विश्राम करते हुए गुरू के बाग का दृश्य देखना चाहते हैं ? यदि ऐसा ही है तो आश्चर्य नहीं कि भगवान उनकी सुन ले।

क्षमा-प्रार्थना।

कई अनिवार्य्य कारणों से गत कई मासों से ज्योति अपने पूर्ण स्वरूप और समय पर पाठकों की सेवा में उपस्थित नहीं हो सकी है। 'सबै दिन जात न एक समान'। परमात्मा के अटल नियमों के अतिरिक्त मनुष्य कृत जितने भी कार्य हैं उन में परिवर्तन सम्भव है ही परन्तु फिर भी धीर मनुष्य वीरता के साथ विपत्ति का सामना करते हुए अस्खलित पद से अपने निर्दिष्ट पथ पर चलने का यत्न करते रहते हैं। ज्योति की भी यही दशा है। कार्यकर्त्ताओं के निरन्तर रुग्ण होने पर भी यह यथा तथा निकाली गई, किन्तु गत डेढ़ मास से कन्या गुरुकुल यात्रार्थ दिल्ली से बाहर है, ज्योति के प्रबन्ध के लिये एक सम्पूर्ण मनुष्य कोई उपलब्ध नहीं हुआ, अतः प्रेस वालों ने भी शिथिलता की जिसका परिणाम यह हुआ है कि ज्योति अभी तक पाठकोंकी भेंट न हो सकी। आशा है कि इन उपरोक्त कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए हमारे दयार्द्रहृदय पाठक इस अंक और सम्भवतः अगले अंक को देर से प्राप्त होने पर क्षमा करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री जगत्

स्वर्गीय मि० जे० एन० टाटा की भगिनी श्रीमती रतनबाई इदलजी टाटा ने अपनी पुत्री कुमारी हेमाबाई की यादगार में नवसारी में एक महिला संस्था खोलने के लिये २५०००) दान दिया है।

——

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी की सब से बड़ी बहिन श्रीमती हिरण्यमयी देवी का गतमास देहान्त होगया। आपने समाज सुधार में बडा कार्य किया था। प्रसिद्ध महिला शिल्पाश्रम-जहां पर विधवायें निवास करती थीं और जिसने कि सैंकडों विधवाओं को निज निर्वाह करने योग्य बनाया-की स्थापना का श्रेय आप को ही था। आप प्रसिद्ध बंगाली लेखिका थीं और कितने ही वर्ष तक "भारती" का सम्पादन करती रही हैं।

——

इस वर्ष इग्लैंण्ड की सिविल सरविस परीक्षा में कितनी ही स्त्रियां पास हुई हैं। अब वह वाणिज्य, नौसैना तथा राजनैतिक विभागों में उन उच्चपदों पर नियुक्त हो सकेंगी जिन का कि वेतन ४५१०००) रुपया वार्षिक है।

——

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कार्यकत्र सभा ने यह निश्चय किया है कि अब से कोई कन्या कालिज में लड़कों के साथ एक श्रेणी में बैठ कर बी० ए० की पढाई न कर सकेगी वरन इस के लिये उसे लड़कियों के ही कालिज में भरती होना पडेगा। इस निश्चय से कई सज्जनों में बड़ा असंतोष फैला हु[illegible]

कलकत्ता यूनिवर्सिटी की बी० ए० की परीक्षा में इस वष ५८ प्रति शतक विद्यार्थी पास हुये हैं, परन्तु कन्याओं की पास संख्या ७४ प्रति शतक हैं। सब ४२ कन्यायें पास हुई हैं।

——

पैन्सलवैनिया की एक कचहरी ने तीन स्त्रियों को किसी अपराध में जेल जाने का दण्ड दिया परन्तु उनके पतियों ने जाकर जज से कहा कि उनके स्थान पर उन्हें दण्ड दिया जाय क्योंकि यदि स्त्रियों को दण्ड दिया गया तो घर में बाल बच्चों की देख देख करने वाला कोई न रहेगा। न्यायाधीश ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार करली और स्त्रियों को छोड दिया।

——

श्रीमती देवकी अम्मा ने जो कि मद्रास की एक अछूत जाति-थीयो- से सम्बन्ध रखती हैं एम० ए० और ऐल० टी० की परीक्षा पासकी है। गत मास एक सार्वजनिक सभा में उन्हें स्वर्ण पदक दिया गया।

——

इङ्गलैंण्ड राजसभा में श्रमियों की पार्टी में श्रीमती बारबरा बूटन एक प्रसिद्ध सदस्या हैं। आपको यह जानने का आरम्भ से ही बड़ा शौक था कि भिन्न २ श्रेणियों के लोगों में धन का किस राशि में बटवारा हुआ है और वह किसप्रकार अपना निर्वाह करते हैं। इस ओर जांच करने में ख्याति प्राप्त करने के कारण आप का लेबरपार्टी में प्रवेश हुआ। 'राष्ट्रीय सम्पत्ति' आपका विशेष प्रिय विषय है। राज-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभा में लेबरपार्टी की ओर से जो वक्तृत यें होती हैं और उनमें भिन्न २ विषयों सम्बन्धी जो अंक पेश किये जाते हैं वह सब, इन्हीं के द्वारा एकत्र किये जाते हैं। आप की योग्यता का सब से बडा प्रमाण यह है कि गत वर्ष राष्ट्रीय कर्ज़ की जांच के लिये जो १४ सदस्यों की कमेटी बैठी थी उस में आप भी एक थीं। अभी आप की आयु केवल २५ वर्ष के लग भग है।

——

श्रीमती वोर्टन अमरीका में शिल्प की प्रसिद्ध अध्यापिका हैं पोर्टलैंण्ड आर्टस्कूल में आप गत ३०वर्ष से शिक्षिका का कार्य कर रही हैं। आप को २४ अप्रैल १९२५ को अमरीका की एक प्रसिद्ध शिल्पसम्बन्धी संस्था ने अपना सदस्य चुना। शिल्प में निपुणता के लिये यह सब से बड़ा मान है जो किसी को मिल सकता है।

——

नैशनल एकेडमी आफ़ साईन्स अमरीका की एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक सभा है। उसको स्थापित हुये ६२ वर्ष हो गये हैं। श्रीमती डाक्टर फ्लोरैन्स रेना सेबिन पहली स्त्री हैं जिन्हें इसका अभी २ सदस्य चुना गया है। आपने वैज्ञानिक क्षेत्र में बड़े २ काम किये हैं। आपकी योग्यता को ध्यान में रखते हुये उपरोक्त संस्था ने आप को जीवन काल के लिये सदस्य चुना है। यह दोहरा आदर किसी २ को ही प्राप्त होता है।

——

कहा जाता है कि कालीकट तालुके की एक उच्च कुल की हिन्दू स्त्री ने अपने पति के आर्य समाजी बनने तथा अछूत जातियों के साथ कार्य्य करने के कारण आत्महत्या कर ली है।

——

कोलम्बो के पास एक नदी में दो देवियां स्नान करने गई थीं। छोटी बहिन को मगर मच्छ ने पकड़ लिया। परन्तु ज्योंहीं दूसरी ने यह देखा वह बड़ी वीरता से तैर गई और मगरमच्छ के सिर पर घूंसे मार २ कर बहिन को छुड़ा लाई।

——

मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने अपनी पढ़ी लिखी और राज्य कार्य में दक्ष धर्मपत्नी को इस लिये परित्याग कर दिया कि वह उस की स्वच्छन्दता को सहन न कर सके। यह देवी इग्लैंन्ड और फ्रांस में शिक्षित होने के कारण बडी खुली स्वभाव की हैं और विवाह से पूर्व तुर्की स्त्रियों की स्वाधीनता के आन्दोलन की नेत्री रह चुकी थीं।

कुमारी जमिला सिराजुद्दीन एम० ए० पजाब विश्व विद्यालय से स्टेट क्षात्र वृत्ति लेकर लन्डन विश्वविद्यालय की टीचर्स ट्रेनिंग की सख्त परीक्षा मे केवल तीन टर्म्स (बारियों) के कार्य्य के बाद ही उत्तीर्ण होगई हैं। अब वह पेरिस मे फ्रांसीसी भाषा गरमियों की छुट्टियों मे सीख कर फिरलंडन मे बी०यस० सी०परीक्षा की तैय्यारी करेंगी।

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महिला समाज की वर्तमान दशा

ले०—कुमारी शकुन्तला देवी 'हिंदी प्रभाकर'

स सर्व नियन्ता परमेश्वर का कोटिशः धन्यवाद है जिसकी कृपा कटाक्ष से वर्तमान स्त्री समाज अपनी पूर्व विस्तृत स्वतन्त्रता को पाने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु अभी भी उनके भाग्य चन्द्रोदय के होने में कुछ कलायें बाक़ी हैं। उनके दिव्य हार की मुकुलित कलियां अभी तक पूरी नहीं होने पाई हैं। क्योंकि ईश्वर की कृति नियमानुसार है, अनियमानुसार चलने से मनुष्य अपने लक्ष्य पर न पहुंच कर बीच में ही ठुकराता फिरता है। यही नियम स्त्रीसमाज का भी है। वर्तमान समय में जो स्त्री-समाज की दुर्दशा और सुदशा हो रही है उससे कौन सहृदय अपरिचित होगा? वर्तमान समय में यद्यपि लोगों का चित्त शिक्षा की ओर तो झुकने लगा है परन्तु आधुनिक काल में होने वाली अधूरी शिक्षा से जो जो हानियां हो रही हैं वे फिर पुरुषों के प्रफुल्लित हृदयों को मुर्झा देने वाली हैं। इनमें न तो लड़कियों का ही दोष है। और न पाठशालाओं का ही। दोष केवल माता पिता का है कि वे अब तक शिक्षा के गुप्त रहस्य को ठीक नहीं समझ सके हैं। वे नहीं जानते, कि शिक्षा किस चिड़िया का नाम है? फिर वे अपनी सन्तान को किस प्रकार उचित शिक्षा देकर सुमार्ग पर लाकर उनके भविष्य को सुयोग्य बना कर अपनी प्यारी पवित्र भारत भूमि को फिरसे स्वतन्त्रता की प्यारी गोद में क्रीड़ा करवा सकते हैं। परन्तु हन्त! मेरी इस तुच्छ लेखनी में वह शक्ति कहां जो महा कठोर स्त्रियों के हृदय मंदिर को टूटे फूटे घर को फिर से नन्दन कानन के समान आनन्दमय बना सकूं तथा कहां तक लिखते लिखते सामयिक मासिक पत्रों के पन्ने काले करती जाऊं और कब तक मैं आशा कर सकती हूँ कि इस निर्मल जलवाहिनी गंगा यमुना आदि नदियों से पुण्यशाली आर्यवर्त को कलङ्कित तथा अपमानित करने वाली कुलांगनाओं के हृदय वज्र में मैं छेद कर अपने लक्ष्य तक पहुंच अपने जीवन को सफल कर सकूंगी।

हे भारत की दिव्य ललनाओ! क्या तुम नहीं देख सकती हो कि वर्तमान समय में तुमको घोर निद्रा से जाग्रित करने के लिये एक नहीं, दो नहीं किंतु हज़ारों दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्र कैसी मधुर और मनोहर लोरियां गा गाकर तुम को निद्रा से मुक्त करके होश में ला रहे हैं। परन्तु क्या उन का एक अक्षर भी तुम्हारे कर्ण कुहर में प्रवेश नहीं कर रहा है? यदि कर भी रहा है तो क्या है? प्रत्येक व्यक्ति का यही नियम देखा जाता है कि सोते हुए मनुष्य को तो जगा सकते हैं और अशिक्षित को भी शिक्षा दे सकते हैं। परन्तु जैसे जागते हुए भी सोने वालोंको कोई नहीं जगा सकता उसी प्रकार थोड़ी शिक्षा वाले को और अधिक उपदेश नहीं दे सकता।

इस बात का उदाहरण ढूढ़ने के लिये तुमको दूर न जाना पड़ेगा और ना हीं अधिक ढूंढ़ भाल की ही आवश्यकता है। केवल एक बार आंख उठाकर गौर से देखना होगा कि तुम्हारे चारों ओर क्या हो रहा है?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारत के चारों ओर क्यों हाहाकार का कोलाहल मच रहा है ? और देशों की समता से रहा देश क्यों आंख छिपा कर दास बन रहा है ? तुम्हारी संतान आज्ञा-कारिणी क्यों नहीं है ? तथा इससे अधिक और क्या शोक का विषय होगा कि तुम्हारी आंखों के आगे होने वाले अत्याचारों को भी तुम नहीं देख रहीं। यदि देखती भी हो तो उसके लिये तुम कुछ भी नहीं कर सकतीं क्योंकि जब तुमने अपने आप अपना नाम 'अबला' रखवा लिया तो प्राचीन रमणियों को भी कलङ्क लगा दिया। अपने पूर्व उच्च गौरव को मलियामेट ही कर लिया। अपनी मूर्खता के कारण अपने महत्त्व का सर्वनाश करके पुरुषों के चरणों की दासी बन कर भोग विलास की सामग्री बन कर सन्तान उत्पन्न करने की मशीन कहलाने लगीं। पुरुष स्त्रियों के जीते जी दो, दो तीन-तीन विवाह करवा सकते हैं परन्तु स्त्रियें विधवा और असहाय होने पर भी विवाह करवाने की अधिकारिणी नहीं तथा पाप है। चाहे एक रोटी के टुकड़े के लिये घर २ मांगती फिरें, परन्तु व्याह करने से दूर के संबन्धियों की भी नाक नीची होने का डर है, कहां तक गणना की जा सकती है। एक या दो हों तो गणना में आ भी सकते हैं परन्तु प्रति दिन के होने वाले भयङ्कर से भी भयङ्कर अत्याचारों को कोई कहां तक गिन सकता है ? मनुष्य की बुद्धि से भी परे है। क्योंकि प्रकृति की रचना ही ऐसी विचित्र है कि स्त्री-जाति भारत के लिए एक ऐसी है जो जन्मते ही माता पिता के लिए पत्थर के समान भारी है, ज्यों ज्यों बालिका की अवस्था उन्नति करती है त्यों त्यों माता पिता के ऊपर असहनीय बोझ होता जाता है। जब विवाहने के योग्य हो जाती है, तब तो जो भार आकर पड़ता है वह तो अकथनीय है। बहुत से माता पिता तो धनके लालचसे बूढ़ों से धन लेकर व्याह देते हैं। फिर उस के लिए भविष्य की पूर्वापर का तनिक भी विचार नहीं रहता। और बङ्गालादि प्रांतों में तो लड़की का पैदा हो जाना माता पिता का सर्वनाश ही हो जाना है, क्योंकि वहां दहेज की जो कुप्रथा है उससे कौन अपरि-चित है परन्तु ईश्वर भी न्यायकारी है वे लोग लड़कियों से डरते हैं और बङ्गाल में ही अधिक लड़कियें देखी जाती हैं। यह भी विचित्र ही बात है। तथा अब तनिक राज-पूताने की ओर भी दृष्टि डालिये। जिस समय राजपूताने में मुसलमानों का अधिक ज़ोर था। वे राजपूतों की कन्याओं को उठा कर ले जाया करते थे उस समय राजपूतों ने क्या भयंकर स्वरूप धारण किया था। सुनते हैं कि "जब किसी के घर में कोई कन्या उत्पन्न होती थी तो उसे और एक हाथ में तलवार लेकर बाज़ार में चले जाते थे और वहां जाकर कहते थे, कि किसी ने लड़की लेनी हो तो ले लो। यदि कोई स्वी-कार कर लेता था तो उसे दे देते थे। नहीं तो काट कर दो टुकड़े करके फें देते थे। कोई विरले ही किसी के घर में कोई कन्या बचती होगी। अस्तु !

तो क्या ऐसी ऐसी भयङ्कर रोमांचकारी घटनायें स्त्री-समाज के लिये क्या कुछ कम अपमानित हैं ? हा स्त्री-समाज ! तूने क्या पूर्व जन्म में पाप किये थे जिसके बदले तुझे स्त्रीत्व प्राप्त हुआ। तेरे से बढ़कर तो आज कल गाय भैंसों को आदर हैं। वे जिसको दी जाती हैं उसके लिये भविष्य का कुछ तो पूर्वापर सोच लिया जाता है परन्तु तेरे लिए इतना भी नहीं ? क्योंकि तुम निर्बल हो,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अबोल हो तुममें न तो आध्यात्मिक शक्ति ही है और न शारीरिक ही जिस से तुम स्पष्ट कहने का साहस कर सको कि इस कुमार्ग पर चलने से मेरे दिव्य जीवन का भविष्य कैसा होगा? हा स्त्रीजाति! अपने प्यासे जीवन को आँसुओं के जल से ही तृप्त कर तेरा और कोई भी सहायक न होगा। क्यों कि प्रतिदिन के प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में स्त्रियों की दुर्दशा पढ़ पढ़ कर तथा प्रत्यक्ष देखकर कठोर हृदय भी मोम की भांति पिघल जाते हैं परन्तु समझ में नहीं आता कि जिन घरों की लड़कियों और स्त्रियों पर ये अत्याचार हो रहे हैं उनकी क्या दशा होती होगी? जो माता पिता अपनी फूल सी लाड़ली लड़की को क़बर में पैर लटकाने वाले महावृद्ध पुरुष के हाथ सौंप कर अपने जीवन को कृतार्थ समझते हैं क्या उन से बढ़कर कोई चांडाल हो सकता है?

मुझे इस बात की आवश्यकता नहीं कि मैं बारम्बार पूर्व नारियों के जीवनचरित्रों को तुम्हें स्मरण करवाती रहूँ। उदाहरण समझाने के लिये एक दो बार ही कह देना अलं हुआ करता है।

'किं बहुना' अर्थात् बहुत कहने से क्या है जब तुम स्वयम् अपनी ओर देखकर सुधार करने का प्रयत्न करोगी तो तुम्हें पुरुष बाधा नहीं डालेंगे, बल्कि सहायता देंगे। क्योंकि जब तुम उनको दिखा दोगी कि घर ही स्वर्ग है अन्यथा स्वर्ग मिथ्या है तो वे तुम पर अत्यन्त प्रसन्न होंगे और तुम्हारे कार्यों में सहायता देंगे। तुम्हें प्यारी स्वतन्त्रता देवी के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाएँगे। वह अपनी मधुर वीणा से तुम्हारे कर्ण कुहरों में मनमोहक गान आलाप देगी। भारत ललनाएं देवियां बनकर पूजनीय बन जायेंगी।

गृह-प्रबन्ध।

बोलते समय कई व्यक्तियों की जुबान लड़खड़ा जाती है और वह अटक अटक कर बोलते हैं इसी को अंग्रेजी में Stammering कहते हैं। एक अंग्रेज़ी महाशय का तजरुबा है कि इसका एक बड़ा सरल इलाज है परन्तु उसे लगातार जारी रखना पड़ता है उनका कथन है कि वह बहुत बुरी तरह से लड़खड़ा कर बोलते थे परन्तु इस उपाय से अब उन्हें बिलकुल आराम है। उपाय यह है:—"मैं प्रतिदिन बोल २ कर जोर से पढ़ता था, कभी २ मैं अकेला होता था परन्तु बहुधा दूसरों को सुना कर पढ़ा करता था मैं शनैः २ और साफ़ २ पढ़ता था। एक मास में मुझे बड़ा लाभ हुआ और अब तीन मास पीछे मेरा यह रोग सर्वथा जाता रहा है।

—*—

ज्यों २ मनुष्य की आयु बढ़ती जाती है उसकी काम करनेकी शक्ति कम होतीजाती है परन्तु बहुत कम व्यक्ति इस बातको ध्यानमें रखते हैं और वह ५० वर्ष की आयु में भी उतना ही काम करना चाहते हैं जितना कि वह २० वर्ष की अवस्था में करते थे। यह उनकी भूल है। आयु के साथ २ हमारा शरीर अधिक आराम चाहता है। अतः आवश्यक कार्य को छोड़ कर जिसकी एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निश्चित मात्रा करने के लिये हम बाधित हों हमें अन्य कार्यों में कुछ कमी अवश्य करनी चाहिये अन्यथा वृद्धावस्था हमारे लिए नरककुण्ड बन जायगी।

—※—

आजकल बड़े २ नगरों में पीने के लिए जो नलों का पानी मिलता है, कूप के जल से इसे अधिक पवित्र बतलाया जाता है परन्तु यह बात सर्वथा ठीक नहीं। कभी २ नल का पानी कुए के जल जैसा ही, वरन उससे बढ़कर अशुद्ध और अपवित्र हो सक्ता है। इस अपवित्रता का कारण रोगोत्पादक छोटे २ कीटाणुओं का होना है। यह जांचने का कि कोई जल विशेष शुद्ध है अथवा नहीं एक बड़ा सरल उपाय है। बहुत साफ खांड अथवा बूरेकी दो-तीन चुटकी कांचके गिलास में पानी भर कर घोल दो और उसे ढांप कर गरम कमरे में रात भर पड़ा रहने दो। यदि प्रातः देखने पर जल साफ़ का साफ़ बना रहे तो यह पीने योग्य है परन्तु यदि यह धुंधला हो जाय तो अपवित्र है

—※—

बिच्छू का इलाज

जामुन का सिरका क़रीब ४ साल का पुराना हो, जिस जगह बिच्छू ने काटा हो, ठीक उसी जगह, रुई या कपड़े का फाया जामुन के सिरके में गीला कर रख दिया जाय। क़रीब दो-दो मिनट में उस पर थोड़ा थोड़ा सिरका डाला जाय। १५ मिनट में बिच्छू का विष उतर जायगा। डङ्क मारने की जगह पर कुछ दर्द रहेगा। फिर नमक डालकर गरम पानी करे, और जहां तक बिच्छू चढ़ गया हो, वहां तक गरम पानी से सहते २ दो बार धो डाले। बाद में डङ्क मारे की जगह पर गुलाब के इत्र का फाया रखदे। ईश्वर की कृपा से शीघ्र आराम होगा।

"तो क्या यह सब स्वप्न ही था ?"

ले०-सत्यवती मल्लिक श्रीनगर

मैं सेक्रेड हाई स्कूल लाहौर में पढ़ा करती थी, अपनी सहपाठियों से किसी प्रकार से भी कम नहीं थी, विशेषतया फैशन में तो सदा अग्रसर ही रहा करती थी।

मेरे पिता जी की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी थी, तिसपर मैं उनकी एकलौती पुत्री थी! अतः वह सर्वथा चाहते थे कि मैं सदा प्रसन्न रहूं।

वह दिल्ली में बैरिस्टर हैं दूसरे तीसरे महीने मुझे मिलने आया करते, और अवश्य ही रेशमी बढ़िया विलायती करेब की साड़ियां तथा जालीदार ब्लाऊज़ नये ढंग के जाकिट विलायती बूट आदि वस्तुएं साथ लाया करते। किंतु मैं देखते ही कहने लग पड़ती, पिता जी यह कैसी भद्दी सी साड़ा है, अमुक ब्लाऊज़ कैसे मोटे कपड़े का है भला मैं इनका बोझ कैसे सहार सकती हूं। अमुक बूटकी तो एड़ी ऊंची नहीं! मेरा ज़रा भी गम्भीर होते देख पिता जी हंसकर कहते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बेटी ! मैं तो तुम्हें प्रसन्न ही देखना चाहता हूं अपने मन पसन्द की वस्तुएं ही ले लिया करो। अस्तु।

"मैं अब के गर्मी की छुट्टियों में घर आऊं पिता जी ने यह पत्र लिखा था, मैं भी जब से होश सम्हाली घर पर नहीं गई थी, गर्मी के दीर्घावकाश में भी अपनी सिस्टर्स के साथ किसी पहाड़ पर चली जाया करती थी अब के मुझे भी घर जाने का शौक आगया तो मैं पिता जी के कथनानुसार यथासमय घर पहुंच गई।

घर में मेरी एक बूढ़ी दादीके अतिरिक्त और कोई न था। क्योंकि मेरी माता मुझे तीन वर्ष की छोड परलोक सिधार गई थीं। मेरी दादी मुझे बहुत प्यार करती थी, लेकिन उसे मेरा वेशभूषा अखरता था, वह स्वयं ही मोटे और भद्दे वस्त्र पहनती और मुझे कहती- "बेटी ! इतने बारीक वस्त्र धारण करनेसे क्या लाभ कि जिनसे सारा बदन दीखे और कुमारी कन्याओं को इतना केशविन्यास भी नहीं करना चाहिये। रह २ सुइयां लगाकर यह बाल क्यों खराब करती हो ? सादा जीवन होना चाहिये।" मैं उसकी ऐसी निकम्मी बातें सुनकर झुंझला उठती और कहती कि—"मैं ऐसा गंवारपना नहीं पसन्द करती !"

एक बार का ज़िकर है कि मैं दोपहर के समय गाढ़ी नींद में सो रही थी कि मुझे किसी आवाज ने कानों में पड़कर जगादिया। ऐसा मालूम पड़ा जैसे कोई वीणा बजा रहा हो। मैंने चारों ओर उठकर देखा तो गाने बजाने का कोई सामान न था। किंतु मेरी दादी मां एक मशीन सी सामने रख कर चलाती थी और उसके चक्र फिरने से जो घींघीं सा स्वर निकलता था उसी ने मुझे चौंका दिया था। मैंने आश्चर्य हो पूंछा-"मां! यह कौन सी मशीन है ? मैंने तो आगे कभी नहीं देखी ?" उसने उत्तर दिया—"बेटी ! मैं तो मशीन वशीन जानती नहीं यह तो मेरा प्यारा सदा हमारे दुःख में भी सहायता देने वाला चर्ख़ा है। रुई लेकर इस पर कातती हूं और इससे जो सूत तैयार होता है उसके स्वदेशी वस्त्र मैं धारण करती हूं तेरे पिता को भी बचपन में यही पहराती थी, विलायत से आने के बाद ही वह विदेशी अपवित्र वस्त्र पहिनने लग पड़े हैं। क्या पुत्री तुम भी सीखोगी ?" जाने दो मां मेरे से ऐसे भारी व भद्दे काम नहीं हो सकते।" ऐसा कहते हुये मैं जल्दी से पिता जी के कमरे में गई और कहा कि—"चलो आज बड़ा अच्छा दिन है रोशनआरा बाग में चलें।" पिताजी ने ड्राईवर को आज्ञा दी कि मोटर तैयार करे बस देर क्या थी, मैं भी अपनी फाइना करेब की बारीक साड़ी तथा फैन्सी जाकट इत्यादि पहिन कर चली आई।

हम रोशनारा पहुंचे वहां तो कुछ ठण्डी हवा चल रही थी हरी घास देख कर मैं ज़रा उस पर बैठी नौकर ने रेशमी तकिया लाकर देदिया तो मैं उसके सहारे ज़रा लेट गई हवा के धीमे २ झोकों ने मेरी आखों को शीतलता पहुंचा कर बन्द कर दिया।

इतने में मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बहुत से हिन्दू, मुसलमान, सिख, सब आदमी एक स्थान पर बैठे हैं उनके मुख बहुत ही उत्साहित तथा प्रसन्न दिखाई पड़ते थे उनके हृदय में किसी नवीन आशा का संचार हुआ प्रतीत होता था। ऐसा प्रगट होता था मानों आज वह एक हृदय होकर, अपने कष्टनिवारण के लिये, अपनी दासतां (परतंत्रता) की ज़ंज़ीरों को तोड़ने के लिये, ईश्वर से प्रार्थना कर रहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हो। इतने में एक १२ वर्ष की आयु का बड़ा खूबसूरत शकल का लड़का, जिस के होनहार चेहरे से एक विचित्र प्रकार की आब झलक रही थी उठा ! और स्टेज पर कुर्सी के ऊपर जाकर बैठा। सब मनुष्यों की मौन निद्रा को भंग करने के लिये वह कुछ कहने को ही था, कि ठां ! की आवाज़ के साथ ही गोली उसके मस्तिष्क को पार कर गई। वह अधखिला फूल वहीं धड़ाम से गिर पड़ा। लोग दौड़ कर उठे कि देखें किस निर्दयी ने प्यारे मदनमोहन के साथ यह भयानक तथा पाशविक अत्याचार किया है।

परन्तु गोलियों की बौछार ने उन्हें एक कदम आगे न बढ़ने दिया, देखते २ क्षण भर में ऐसा भीषण हत्याकांड हो उठा कि खून नदियां बह उठीं, कई उन में नवविवाहित थे, कई माता पिता के एकमात्र आशा दीपक थे, कई सुकुमारी बहनों के एक मात्रभाई थे ! किन्तु उस अत्याचारी अंग्रेज़ को ज़रा भी दया न आई वह तो हंस २ कर गोलियां चला रहा था।

दृश्य पलटा तो देखा कि मार्शल ला जारी होगया है, हज़ारों बहू बेटियों की भले घरों की स्त्रियों की इज्जत ख़ाक में मिलाई जारही है। उनके मुंह पर गोरों को थूकते देखा ! बड़े २ धनाढ्यों को पेट के बल रेंगते देखा ! मशीनगनें जगह २ चलीं, कालिज के विद्यार्थियों पर तो सरकार की विशेष कृपादृष्टि थी। दो बार दिन में उन्हें कड़ी धूप में खड़ा किया जाता और बेतें लगाये जाते ! कइयों को सनस्ट्रोक होगया लेकिन कौन सुनता था। शाम को आठ बजे के बाद गोली चलती थी, दो पुरुष एक साथ चलें तो गोली ! माता से पुत्र को, बहिन से भाई को, स्त्री को पति से दूर होते देखा. देश में हाहाकार मच गया।

मार खाई, तो होश आई। क्या किया जाय ? इन कठोर शासनकर्त्ताओं से बचने का या बदला लेने का, अपने स्वत्वों को पहिचान कर लेने का क्या उपाय हो सकता है ? यही जटिल प्रश्न था जो कि नेताओं को उकसाता था।

ज़खमी पंजाब की अवस्था को देख कर पूज्य गांधी जी ने मरहम याद दिलवाई। असहयोग की मरहम ने अच्छा प्रभाव डाला। कौलिज के विद्यार्थियों ने कौलिज छोड़े और स्वयंसेवक बन देशसेवा का व्रत लिया, वकीलों ने लाखों हज़ारों, की आय पर लात मार कर देशसेवा में काम लिया।

स्थान २ पर व्याख्यान सुनाई देने लग पड़े:–कि विदेशी वस्त्रोंको त्यागो इन्होंने हमें रसातल पहुंचा दिया है, विदेशी वस्तुओंने ही हमें दास बना रखा है, अब तक अरबों करोड़ों रुपये विदेश जाचुके हैं। अब संभलो और मातृभूमि के चरणों में शीश झुकाकर शुद्ध हाथ से बने वस्त्र पहनो। चर्खे को अपनाओ यही भारत की लाज बचायेगा।

स्वदेशी का इतना प्रचार हुआ कि उन बहुमूल्य बारीक रेशमी तथा सूती जालीदार वस्त्रों के बदले प्रत्येक आर्य्यरमणी, तथा पुरुष, पवित्र खादी के वेश में प्राचीन देवी देवताओं की भांति प्रतीत होने लगे, प्रत्येक युवक व वृद्ध स्वयंसेवक बने।

स्त्रियों तथा कन्याओं में भी उत्साह आया वह भी गले में झोलियां डाल कर कांग्रेस के लिये धन एकत्रित करतीं, विदेशी का प्रतिकार करतीं हुई जुलूस निकालतीं, लोग फूल बरसाते। ऐसा प्रतीत होता, मानों आकाश से देवियां भारत की लाज रखने उतरी हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेरी बूढ़ी दादियां जो मशीन से काता करती थीं, और कहती थीं कि यह दुःख में सहायता करने वाला चर्खा है सचमुच वही दुःखी भारतियों का उद्धार करने वाला बन गया। घर २ में से 'सुदर्शन चक्र' की आवाज़ गूंज उठी, जो कि मान्चेस्टर और लंकाशायर तक भी पहुँची। और वहां भी हलचल मची।

इधर भी विदेशी का बायकाट ज़ोर शोर से हो रहा था, स्वयंसेवक लोग विदेशी की दुकानों पर डट गये। "नहीं बेचने देंगे" यही सुनने में आता था। (मानचेस्टर को काफ़ी धक्का पहुंचा जिस से देश में फिर पकड़ा पकड़ी शुरू हुई) बेचारों को मार भी पड़ती लेकिन न हटते। बड़ी प्रसन्नता से (जेल) स्वराज्य मन्दिर में जाते।

बहनें भ्राताओं को, स्त्रियें पतियों को, मातायें पुत्रोंको वीरवेश तथा तिलक इत्यादि से सुसज्जित करके भेजतीं।

आर्य्यवीर भी हँसते हुये कहते:—
"तलाख़ फ़ज़ूल है कांटों के फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी होमरूल के बदले"॥

जेल भर गए। वीरों से सरकार को भी कुछ थरथराहट हुई बड़े २ नेता भी 'स्वराज्य मन्दिर' में पहुंच गये।

ओ हो! मैं यह कहना तो भूल ही गई कि जलियान वाला दृश्य देखते ही मेरे हृदय पर भी आघात पहुंचा। मेरी भी काया पलटी! मैंने लात मारी अपनी विदेशी साड़ियों को तथा बूटों पर।

मैंने बहुमूल्य विदेशी वस्त्रों से जो बक्स भरे थे क्षण भर में उन पर तेल डालकर उन की होली जलाई। और निश्चित हुई!

मुझे अब सख़्त गर्मी के दिनों में मोटी खद्दर की धोती तथा पैरों में सीधी देशी जूती पहरे हुये, प्रोशैसन में यह गीत गाते जाना कि:—

"मुण्डे साडे बम दे गोले,
झोली पावां तां दिल दया डोले।
हुण लैणा स्वराज चर्खा गांधी दा॥१॥"

बहुत हलकी प्रतीत होती थी। मैंने ठान लिया कि मेरा सारा जीवन ही अब देश के अर्पण होगा।

स्वयम्सेविका बनी घर २ में से कांग्रेस के लिये, तिलक-स्वराज्य-फ़ण्ड के लिये, धन एकत्रित करती। लोगों को स्वदेशी के लिये बाधित करती। शाम सवेरे मां से चर्खा कातना सीखती।

अहा! अब उसका स्वर कैसा मधुर प्रतीत होता था।

पिता-जी को भी बैरिस्टरी छोड़ने पर बाधित किया, उन्होंने भी देश सेवा का व्रत लिया। मुझे अब घर ही स्वर्गधाम प्रतीत होने लगा। देश के लिये प्राण न्यौछावर करने के दिन की मैं प्रतीक्षा करती कि कब सौभाग्य प्राप्त हो और मैं प्यारी मातृभूमि पर बलिदान हो जाऊं।

एक बार पिता जी समाचारपत्र पढ़ रहे थे कि सहसा उनके मुंह से एक आह निकली मैंने उत्सुकता से पूछा क्या हुआ है? शीघ्र कहिये?

उन्होंने गम्भीर भाव से कहा कि गांधी जी भी जेल चले गए। मैं चौंक उठी! बदन धर्रा उठा।

देखा तो मैं रोशनआरा में तकिये के सहारे लेटी हुई हूँ पिता जी ने हंसकर कहा तुम तो खूब सोई हो मैंने उनकी बात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का उत्तर न देकर अपनी विलायती साड़ी देखी तो चीख कर कहा—'सो क्या यह सब स्वप्न ही था।"

पिता जी ने अचम्भित होकर पूछा तो मैंने सब कह सुनाया। वह कहने लगे तुमने स्वप्न ही देखा है। मैं भी बैरिस्टरी करता हूँ। कालिज के विद्यार्थी कालिज में हैं। किसी को स्वदेशी से प्रेम नहीं है।

यद्यपि अब भी मैं विलायती वेश में नहीं हूँ सब कुछ वही है किन्तु जब कभी भी उस दिन की याद पड़ती है तो स्वप्न का सारा दृश्य आंखों के सन्मुख हो जाता है और दिल पर एक चोट सी लगती है तथा एक सर्द आह मेरे हृदय का कंपा जाती है परन्तु न जाने क्योंकर मैं चाहती हुई भी विदेशी वस्तुओं का परित्याग नहीं कर सकती।

मेरी बहिन।

(ले०— 'श्री चन्द')

मुझे उससे घृणा तो थी ही नहीं पर प्रेम भी न था। मुझे क्या पता था कि पतितजीवन दूसरों की सहानुभूति को भी गँवा देता है और दूसरों के प्रेम से भी वञ्चित रहता है पर आज मुझे स्वयम् अनुभव होगया। जब मैं स्कूल जाता था तब बलात् मेरी आंखें उस कोठे पर पड़ती थी और सहसा आवेश आता था पर यह आवेश क्षणिक था क्योंकि मैं सोचता था मैं आवेश किस पर दिखाता हूं, दैव पर, समाज पर, या मानवताहीन उस माता पिता पर जिन के कारण एक व्यक्ति का नहीं अनेक अबलाओं का पतन आंखों दिखाई पड़ता है। यह किस का दोष है? का प्रश्न चित्त को बेचैन किये देता था। मुझे कर्तव्य सूझ न पड़ता था क्योंकि अब सारा आवेश अपने ऊपर ही था। मेरे मुख से शब्द न निकलता था पर हृदय में तो हरदम गूंजता ही रहता था। व्यक्तियों से कुटुम्ब तथा कुटुम्ब से समाज बनता है। फिर क्या मैं समाज में नहीं हूँ? मैं इतना बड़ा होगया पर किस के लिये क्या किया? सचमुच समाज के लिये मेरे जैसे लड़के भारवत हैं। फिर मैं क्योंकर बचा रह सकता हूँ" इत्यादि शनैः शनैः आवेश कर्तव्य के रूप में परिणत होता जाता था। मैं किसी व्यक्ति से सहानुभूति नहीं रखना चाहता था और समस्त पतितसमाज की समस्या सुलझाना चाहता था तब भी एक आन्तरिक प्रेरणा होती थी जिसके कारण मुझे सब से पहिले उसी देवी की याद आ जाती थी। मैं सोचता था कि कभी ऊपर जाऊँ और उसकी राम कहानी सुनूं फिर आगे देखा जावेगा। पर यह काम इतना सरल नहीं था जितना मैंने सोचा था। कई बार सोचा कि आज उसके पास अवश्य पहुंचूंगा पर दस क़दम पीछे से ही पैर बंध से जाते थे। सारे हौसले टूट जाते थे। दशा विचित्र थी। सलाह लूं तो किस से लूं यह एक विकट प्रश्न था। ढाढ़स न बन्धता था कि माता पिता से इस विषय में पूछ ताछ करूं या भाई बन्धुओं से सहानुभूति की आशा रक्खूं। माता पिता से निराश-हृदय अभिन्न-हृदय की खोज में रहता है। जिसके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहारे मनुष्य पतित से पतित तथा महान् से महान् हो जाता है। उस समय मेरी आंसुओं का पोंछने वाला "किरण" याद आया बस, आशा थी तो उसी की। उसी पर कर्तव्य की इतिश्री छोड़ चल दिया और किरण के घर पहुंच गया। जो बातें किसी से नहीं कह सकते उसको सुनने के लिये मित्र ही होते हैं। हृदय को खोल सारी बात बताने पर ही मित्रों को शान्ति होती है। उत्सुक हृदय की चाह तभी पूरी होती है। अतएव मैंने भी सारी बात किरण को सुनाई पहले तो किरण ने समझा कि मखौल है और बोल उठा 'क्या किसी मनचले का साथ मिलगया है ? मैंने उसकी बातको गम्भीरता से काटते हुये कहा "यार ! मख़ौल का भी तो कोई समय होता है" मेरे कथन में रोष था अतएव किरण ने सहसा मेरी बात को मान लिया। और निश्चय कया कि कल शाम के १२ बजे दोनों इकट्ठे चलकर उसकी रामकहानी सुनेंगे। और यथाशक्ति उसको अवश्य बचाने की चेष्टा करेंगे। इसके बाद कितनी देर हम दोनों उसी विषय की बात चीत करते रहे फिर मैं लौट गया।

(२)

गर्मी के दिन थे। भगवान भास्कर अपने प्रखर किरणों से धरणी तपा रहे थे। मानो उन्होंने भी मृत्यलोक के निर्दयी जनसमाज अबलाओं पर अत्याचार करना सीख लिया था। गर्मी के मध्यान्हकाल की भयंकरता प्रसिद्ध है, पर बड़े नगरों में तो तागों और बग्गियों की खड़खड़ाहट, ट्रामवे की घंटियों और मोटरों की आवाजों से नीरवता तथा भयंकरता कहां ? वहां तो संसार का भीषण संग्राम सर्वदा दिखाई पड़ता है। इसी उड़ते धूलों के बीच में हम दोनों व्यक्ति पैदल ही जल्दी २ जा रहे थे। आज हम एक दूसरे के सहारे चलते जाते थे। क्रमशः वह स्थान भी आ गया जिसे देखने को मैं सर्वदा सतृष्ण रहता था। कोठे के नीचे दो मिनट ठहर मैं आगे बढ़ा। मेरा किरण भीमेरे ही साथ था जैसे २ आगे बढ़ते जाते थे गति में शिथिलता आती जाती थी। तथापि किसी तरह कमरे से प्रवेश किया हमारे पैरों की आहट सुनते ही कमरे में रहने वाले सावधान हो गये थे। हम दोनों जाकर खड़े हो एक दूसरे की तरफ देखते थे जो बातें सोची थीं क्रमशः भूली चली जाती थीं उन्हें याद ही कर रहा था कि एक आवाज़ कानों में पड़ी "आइये बैठिये"। मेरा सिर लज्जा से झुक गया। किरण ने भी आंखें नीची कर अपनी आत्म-ग्लानिका परिचय दिया पर मैंने ढाढस रखा और उस देवी के बताये आसन पर आ विराजा। हमारे इन भावों को देख वह देवी भी संभल गई और हम एकटक एक दूसरे को देखने लगे। जो आत्मा कितने ही आये गये लोगों की परवा नहीं करती उसकी आंखों से सहसा अश्रुस्रोत का बहना मुझे आश्चर्य प्रतीत हुआ। इस का क्या कारण था कि वह मुझे देखकर रोने लगी यह बताना कठिन है। मेरा ढाढस का बांध टूटा जान मेरा किरण धीरतापूर्वक कहने लगा। बहन ! हमारे आने से यद्यपि आपको कष्ट हुआ है यह मुझे पता लग गया और आप शायद हमारे आने का अभिप्राय समझ गई होंगी। मैं नहीं समझ सका यह अश्रुस्रोत का प्रवाह क्यों उदित हुआ।

"यह मैं नहीं बता सकती पर इस का कारण आप ही लोग हैं।"

"हां, सम्भव है ऐसा ही हो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मन अज्ञातावस्था में भी अपना काम कर ही देता है। अच्छा, मैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपको अपने आने का कारण बताना चाहता हूँ"।

"कृपया शीघ्र बतलाइये, मैं अत्यन्त उत्सुक हूँ।

"सुनिये, हम केवल आपकी रामकहानी सुनना चाहते हैं। कब से आपने यहां रहना प्रारम्भ किया और क्यों? यदि कोई कष्ट न हो तो यह रामकहानी सुनाने की कृपा करोगी?

यह सुनते ही आंसुओं की धारा बड़े वेग से बहने लगी और उस देवी का मुख गीला होगया। वह कई बार कुछ कहना चाहती थी पर बलात् उसका गला रुन्ध जाता था। मैं भी इस सारे अभिनय को टकटकी लगाकर देख रहा था। मन में सोचता था कि कहां तो कहानी सुनने आये थे यहाँ तो कोई और ही मामला है। फिर मैंने उस देवी से कहा "बहन! चुप रहो रोने धोने से क्या लाभ।" मैं समझता हूं कि हमारे आने से आप को बड़ा कष्ट हुआ। मेरी बात को उस देवी ने काटते हुए कहा "नहीं, नहीं, आपके आने से प्रसन्नता है कष्ट नहीं। मेरे पास प्रतिदिन कितने ही आदमी आते हैं पर आज तक आप लोगों जैसा कोई न मिला जो मुझ जैसी पतित स्त्री को भी बहन समझे इतना कहते २ वह फिर रोने लगी। समस्या बड़ी विकट थी मुझे क्या पता था कि मानव-चरित्र कितना ही पतित हो जावे पर उसकी मनुष्यता में अन्तर नहीं आता। दृष्टान्त से कठिन से कठिन प्रश्नों का भी समाधान सरलतापूर्वक हो जाता है अतएव मुझे उक्त संकल्प पर विश्वास करना ही पड़ा। मैं इस प्रकार के विचारतरङ्गों में गोता लगा रहा था इतने में किरण उस देवी को शान्त कर रहा था। अब उसने अपनी जीवनचर्चा आरम्भ करने से पहले यह कहा—"पतित जीवन की कथा सुनने से क्या लाभ है। मेरा जीवन अनेक प्रकार के पापों से पूर्ण है। पर क्या करूं पेट सब कुछ कराता है। बताओ मैं क्या सुनाऊँ मैंने कुलीनता छोड़ी, अपना तथा कितनों का पतन किया उन्हें इन्द्रियों का गुलाम कर दिया? आशय यह है कि अपना पराया सब कुछ खोया। बोली क्या अब भी मेरे जीवन के विषय में पूछना चाहते हो"?। यह कह कर चुप होगई। मैंने धीरतापूर्वक कहा "बहन अब दुःख से काम न चलेगा। हम तो आपकी जीवनघटना सुनने आये हैं। हमारे लिये आप की यही कृपा पर्याप्त है।" यह सुनते ही उसने एक लम्बी सांस ली और अपनी रामकहानी इस प्रकार कहने लगी।

(३)

मेरा जन्म अग्रवाल वैश्यकुल में हुआ था मैं बहुत छोटी थी मुझे बचपन का हाल पता नहीं। पर समझदार होकर मैंने जो कुछ बातें सुनीं वे इस प्रकार हैं। मेरे पिता बड़े भारी सेठ थे। मेरे जन्म हुए ५ ही वर्ष हुए थे कि मेरे विवाह की बातचीत होने लगी हमारे देश में छोटी से छोटी अवस्था में व्याह अच्छा माना जाता है। उसी प्रथा के अनुसार मेरा विवाह उसी वर्ष आषाढ़ में होगया। मुझ से जो २ विधियें करवाई गईं वे हाथ पकड़ कर। मुझे आज भी पता नहीं कि विवाह में कौन २ सी विधियें होती हैं। हां, मुझे इतना याद तो अवश्य है जब मैं अकेली केवल एक वृद्धा के साथ पालकी में चढ़ाई गई थी और मां का वियोग असह्य जान मैं चिल्ला कर बड़ी दूरतक रोती चली गयी थी। मुझे पता नहीं था कि मां मुझे कहाँ भेज रही है। जब मेरे मांग में सिन्दूर डाल और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बढ़िया साड़ी तथा चूड़ियें पहनाई गई थीं तब तो मुझे खुशी थी पर जब मुझे निकाल दिया गया तब मुझे दुःख बड़ा हुआ। पर मुझे यही पता था कि कुछ दिन के लिये मां ने कहीं भेजा है। मैं एक दुबले पतले ८ साल के लड़के के साथ व्याही गई थी। घर का धनी जान मेरे माता पिता ने भी सन्तोष कर लिया था। पर हाय! साल भर भी न बीता था कि मेरा जीवनसंगी चल बसा। फिर जीवनसंगिनी का जीवन कैसा? उसी दिन मेरे हाथों की चूड़ी फोड़ी गई थीं। पर मैं सच कहती हूँ कि मुझे पता भी नहीं था यह क्यों इतना आडम्बर रचा गया मुझे क्या पता था कि मेरे सौभाग्य की चूड़ियें भी फूट गई हैं। अस्तु। मैं ७ ही वर्ष की थी पर मुझे हर जगह दुरदुराया जाता था। प्रसन्नता और दुरदुराने को तो पशु भी समझ लेता है और चेष्टाओं से वेदना प्रकट कर देता है पर मुझे तो बोलना आता था और रोना भी। पर बोलती तो क्या बोलती रोने लगती थी। पर मेरे रोने की परवा किस को थी। धीरे २ उसी घर में ६ साल बीत गये और उसी प्रकार रो धो कर दिन काटने लगी। अब मुझे पता लगा कि मेरा जीवन तो जीवनसङ्गी उस पतले दुबले लड़के के साथ ही समाप्त हो गया अतएव मैं दुरदुराई जाती हूँ। न तो मेरे कोप की किसी को परवा नाही मेरे खाने की। यह बातें जब कोई दूसरी लड़की सुनाती तो मेरा हृदय कांप उठता था और यौवनावस्था की सब उमंगें पानी के झाग की तरह उद्भव स्थान में ही लीन हो जाती थीं। अस्तु। मैंने कई दिनों तक कुछ न खाया बस एक कोने में पड़े २ आंसुओं से आंचल भिगोया करती थी। सहसा मेरे बुड्ढे ससुर ने मेरी ओर देखकर गिड़गिड़ाते हुए कहा "बाप तो बड़ा सेठ है वहां क्यों नहीं चली जाती! क्यों यहां धरना दिये पड़ी है?" इस शब्द ने विष से भी अधिक मुझपर असर किया। विष खाकर मर जाना सरल है पर प्रतिदिन की मर्मभेदिनी भर्त्सना भली नहीं। यह हृदय में छेद कर देती है जिसका भरना कभी सम्भव नहीं। मैंने भी कह दिया भेज क्यों नहीं देते? काहे को यहां रख छोड़ा है?" यह सुनते ही बुड्ढे ने कई कठोर शब्द कहते हुए अपने मुनीम की ओर देखकर कहा "मुनीम जी! आज इस छोकड़ी को इस के घर छोड़ आना। बड़े सेठ की लड़की ठहरी, हम तो बुड्ढे हैं हमारे घर में इस को कैसा अच्छा लगे। जब तक छोटी थी पाला पोसा बड़ा किया। अब तो यह औरत हो गई है। इस को हमारी परवा ही क्या है"। मुनीम ने भी हां में हां मिला इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया और दूसरे दिन जाने की तैयारी हो गई। साधारण थोड़े से कपड़े मुझे दे दिये गये और बैहल मंगवाई गई और उसमें हम दोनों बैठकर घर को चल दिये। मैं बताना नहीं चाहती कि उसने मेरे साथ किस बुरी तरह का व्यवहार किया और बैहल के भीतर मेरे सतीत्व को नष्ट करने के लिये क्या २ यत्न किये। खैर, जो कुछ भी किया पर उसका फल नहीं निकला उसका परिणाम यह हुआ कि वह मुझे स्टेशन पर ही छोड़ इधर उधर चला गया मैं स्टेशन पर खड़ी इधर उधर उस नर पिशाच को ढूंढ़ती रही, पर उस का कोई फल नहीं निकला। मुझे एक मुसलमान टिकटकलेक्टर ने देखा और कहा कि "आओ तुमको घर पहुंचवा दूँगा" मैं सरलभाव से उसके पीछे हो ली। पर मुझे क्या पता था कि रक्षक भी भक्षक बन सकते हैं। मेरे सतीत्व का वहीं नाश हुआ। मेरा जीवन मुझे ही निस्सार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मालूम होने लगा । अतएव मैंने अपने को दैवाधीन छोड़ चुपचाप बैठी रही । उस दुष्ट राक्षस ने मुझे एक मुल्ला के सुपुर्द किया और उसने मुझे मुसलमान बना लिया । बस लम्बी बात कहने से क्या तभी से मेरा जीवन इस रूप में बदल गया जो आप लोगों के सन्मुख है । ईश्वर करे तो निस्तार संभव है" यह कह कर रोने लगी ।

यह कहानी समाप्त भी न होने पाई थी कि मेरे मन में तरह २ के भाव उत्पन्न हो रहे थे । मुझे अपनी बहिन की याद थी उस का विवाह भी छोटी उम्र में कर दिया गया था । मुझे अब उसके पिता का नाम भी पूछने में लज्जा आ रही है । सुधारक लज्जा से नव गया यही आश्चर्य्य है । तथापि धीरतापूर्वक मैंने उस देवी को चुप करते हुये उसके पिता का नाम पूछा उसने सिसकते स्वर में कहा "धन्नूमल" !

मैं चौंक उठा और मेरा देह रोमांचित हो उठा । मैंने और कुछ पूछना चाहा पर वह नहीं बतला सकी । फिर मैंने उस देवी को आश्वासन देते हुये कहा "बहिन ! तू तो मुझे सगी बहन मालूम होती है । चाहे जो कुछ भी हो, हम तेरे उद्धार का उपाय सोचेंगे । कल आऊंगा, ईश्वर भला ही करें गे ।" यह कह मैं और किरण चल दिये । और घर जाकर अपनी बहिन के ससुर का नाम पूछ लिया और सोचा कि पूछूंगा यह तो उसे क्यों न याद होगा ?

अगले दिन मैं और किरण फिर वहीं पहुँचे जाते ही मैंने उससे उसके ससुर का नाम पूछा उसने दबी आवाज़ से कहा—"श्याम दास".....मैं फूट २ कर रोने लगा । यह दृश्य देख वह चकित रह गई । मैं बेहोश हो गया था । इतने में किरण ने उसको सारी बातें बताईं । उसे भी भाई का मिलन सुन असीम आनन्द हुआ । दोनों भाई बहिनों ने एक दूसरे को पकड़ कर रोया । आज मेरी बहन मेरे घर में है और उसका जीवन पवित्र होता जाता है । इस बात के लिये मुझ से सब रुष्ट हैं । पर मैं कर्तव्य के आगे सिर झुकाना कर्तव्य समझता हूँ और लोकोपवाद की भी परवा नहीं करता । इसके लिये मुझे घर से क्यों न जाना पड़े । आज मैं बिरादरी से पृथक् हूँ मां बाप ने मुझे अलग कमरा दिया है । उसी में मैं रहता हूं और बहन का बनाया भोजन खाता हूँ । वह बचे समय में उसी काम को करती है जिसे मैं करना चाहता था । मैं पढ़ता हूँ मेरे हृदय का बोझ हलका हो गया है । समाज चाहे उनको पतित समझे पर वह भी मनुष्य हैं मानवता से युक्त हैं । अब तो मेरा यह सिद्धान्त है कि मनुष्य कितना भी पतित हो, उठ सकता है । वह मनुष्यता के नाते से हमारा भाई है चाहे वह किसी भी वर्ण का हो । मेरा वही हृदय किरण भी आता जाता है और मेरे विचारों का साथी है । हम एक विचार के तीन ही प्राणी हैं तथापि हम अपने को बलवान समझते हैं और अपने को कर्तव्य पथ का पथिक समझते हैं । सचाई के कारण डरते नहीं यही हमारी प्रसन्नता का कारण है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माताओ और बहिनो ! संगठन करो

भारतवर्ष में धक्का पहुंचानेवाली बाल-मृत्यु ।

(अनुवादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)

समस्त वेदनाओं में से सबसे अधिक दुःख पहुंचाने वाली वा भयंकर वेदना उस माता की होती है जिसे सन्तान का वियोग होता है भले ही वह सन्तान अल्प वयस्क वा अधिक अवस्था वाली हो संसार के किसी अन्यदेश में हम ऐसे क्रन्दन न सुनेंगे जैसे भारत-वर्ष में सुनते हैं । बाल-मृत्यु का एक ही उदाहरण ले लीजिये । भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष में २० लाख बच्चे दिन का प्रकाश देखते ही मृत्यु देवी की गोद में जा बैठते हैं। भारतीय गवर्नमेन्ट की अर्द्ध-Official रिपोर्ट इस विषय पर प्रकाश डालती हुई १९२२, २३ में भारत नामक शीर्षक वाले लेख में स्पष्टरूपेण कहती है—

"हिसाब लगाने पर ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक वर्ष २० लाख से कम भारतीय बच्चे नहीं मरते । उन में जो मृत्यु के मुख में जाने से बच जाते हैं बहुत से अपने बाल काल में स्वास्थ्य विनाशक वातावरण के कारण दुर्बल और कमजोर रहते हैं। प्रस्तुतः यद्यपि अभी तक ठीक संख्या को प्रगट करने के लिये जन्म Registration बहुत ही अशुद्ध है, विश्वासपूर्वक यह कहा जा सकता है कि भारत में नवजात बालकों में से ५ में एक वा शायद ४ में १ पहिले वर्ष में ही मर जाता है। घनी आवादी वाले नगरों में, विशेष कर व्यापारिक नगरों में तो इस मृत्यु संख्या का रेट और भी बढ़ा हुआ है। यह धक्का पहुँचाने वाली है । यदि हम अपने कुछ बड़े शहरों और विशेष कर व्यापारिक नगरों की बाल-मृत्यु को रेट पर विचार करें और उसकी अमेरिका आदि महा द्वीपों के बड़े २ व्यापारिक नगरों की मृत्यु संख्या से मिलान करें तो हमे पता लगेगा कि १९२१ में हमारी बाल-मृत्यु का रेट हृदय-विदारक था । संसार के ८ बड़े शहरों की तुलनात्मक दृष्टि से निम्नलिखित संख्याएं थीं—

१. क्रिस्चियानिया	(१) ५४	प्रति सहस्र
२. न्यूयार्क	(२) ७१	,, ,,
३. लंडन	(३) ८०	,, ,,
४. हेमवर्ग	(४) ९५	,, ,,
५. बर्लिन	(५) १३५	,, ,,
६. कोलोगने	(६) १४०	,, ,,
७ बीना	(७) १४६	,, ,,
८. मुम्बई	(८) ६६६	,, ,,

१९२२ और १९२३ में मुम्बई की बाल मृत्यु का रेट कुछ घटकर ४०० प्रति सहस्र होगया है। परन्तु अन्य नगरों की संख्या से मिलान करने पर यह कमी नहीं के बराबर है ।

भारतवर्ष में इस अधिक मृत्यु संख्या के क्या कारण हैं ? और हम एक राष्ट्र की हैसियत से इसको दूर करने के लिये क्या कर सकते हैं ?

हमारे मतानुसार वे कारण कतिपय अभावतें ।

१. हमारे देश की स्त्रियों में धायपन तथा नर्सिङ्ग के ज्ञान का अभाव ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

२. माताओं तथा नव-जात बालकों के उचित भोजन का अभाव।

३. माताओं द्वारा बालकों की ठीक २ देख भाल रखने का अभाव।

४. बच्चों के प्रति पिताओं तथा अन्य सम्बन्धियों का हद से ज्यादा प्रेम प्रदर्शन।

और इन कारणों की जड़ मे निम्नलिखित कारण भी विद्यमान हैं—

१. बाल-विवाह।

२. स्त्री-शिक्षा का अभाव।

३. देशवासियों की दरिद्र अवस्था।

यदि हम अपनी कृपालु सरकार की इस विषय में उचित कार्य्यवाहियों के लिये प्रतीक्षा करें तो उपर्युक्त कारणों से हम छुटकारा न पासकेंगे। इस में सन्देह नहीं कि कौन्सिलों और असेम्बलो में भारतीय सभासद जैसा कि स्वराज्यवादियों को विश्वास हुआ है इस विषय में कुछ कर सकते हैं, परन्तु यदि जनता स्वयं उन लोगों को सहाय्य प्रदान न करे और उनके साथ सहयोग न करे, वे लोग भी कृतकार्य्य नहीं होंगे। जनता को चाहिये कि वह इस मृत्यु संख्या को जो हमारे राष्ट्रीय पौरुष का पतन कराती है, रोकनेके लिये संकल्प करे। जनता को उचित है कि वह इस प्रश्न को अपने हाथ में लेवे और Legislation के सहयोग से बालमृत्युरूप राक्षस को कोड़े मार कर बाहर निकाल दे जब तक वह हमारे देश से बहुत दूर न निकल जाय तब तक कोड़े लगाते ही रहे।

स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा इस मृत्यु को शीघ्र कम कर सकती हैं इस विषय में आवश्यकरूपेण, उन में कर्त्तव्य पालन का भाव उत्पन्न होना चाहिये। हमारा विश्वास है कि यदि वे (स्त्रियां) एक वार भी दृढ़ संकल्प करलें तो वे परिस्थिति को सुधार सकती हैं। शिक्षित ललनाओं को बाहर मैदान में आकर देश और मनुष्य जाति के हितार्थ अपनी बहिनों का संगठन करना चाहिये। यदि वे ऐसा करें तो वे न केवल मृत्यु-संख्या ही को दूर करेंगी अपितु अपनी वर्तमान दशाओं को सुधार कर, संसार की दृष्टि में अपनी अवस्थाओं तथा अधिकारों को उन्नत बनाने में सफलीभूत होंगी। अपना संगठन स्वयं करने से भारतीय महिलाएं बहुत से कर्य्य कर सकती हैं।

१-कुटुम्बों की बागडोर उनके हाथ में होती है। वे अपने बालकों को जिन पर भारत का भविष्य निर्भर है शिक्षित कर सकती हैं और जिस प्रकार जीजाबाई ने अपने बालक शिवा जी के भावों को जातीय सेवा के सुन्दर विचारों से रङ्ग दिया था उसी प्रकार वे भी अपनी सन्तानों को राष्ट्रीय सेवा-भाव के उन्नत विचार द्वारा प्रोत्साहित कर सकती हैं।

वे अपने कुटम्ब वालों को शिक्षित बना तथा अपना संगठन कर अपने तथा परिवारके पुरुषों के भाग्य को सुधार सकती हैं। ऐसा करने से वे समय तथा उत्साह की रक्षा कर सकती हैं और राष्ट्र के कामों में उनका सदुपयोग कर सकती हैं। हमारी बहनें और माताएं राष्ट्र पर विचार करें। परन्तु शोक! उन्हें तो अपनी स्त्री जाति के दुखों का भी पता नहीं। समस्त भारतवर्ष के दुःख पीड़ित जनता के कष्टों का पता होना तो दूर। अमेरिका, अथवा यूरोप में जब देश की मानरक्षा का प्रश्न उठता है तब स्त्रियां शान्त नहीं बैठतीं, न केवल वे युद्ध में जाकर जूझती हैं, वरन अपनी सन्तानों तथा अन्य कुटुम्बीजनों को देश की मान-मर्य्यादा की रक्षार्थ उस में सजीव भाग लेने के लिये विवश करती हैं?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय ललनाएं क्या करती हैं? उन का गाढ्य एवं कूप मण्डूक वृत्ति देश के लिये कोई भी कार्य्य नहीं करने देती है। अतः स्त्रियों को अवश्य शिक्षा देना चाहिये तथा उन्हें संगठित करना चाहिये।

वे एक अच्छी जाति के उत्पन्न करने में शक्य होगा। वह जाति मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से मजबूत होगी। वे बड़ी सुगमता से इस बात को देख सकती हैं उनके छोटे बालक घर पर ही शिक्षित किये जाते हैं। गृहशिक्षा जो प्रत्येक मानव जीव के चरित्रगठन के लिये परमावश्यक है, उन्हीं के हाथों में होती है।

आज इसका अभाव है। भारतीय सन्मार्ग का परित्याग कर कुमार्ग की ओर ले जाये जा रहे हैं। शारीरिक, मानसिक और सदाचार की दृष्टि से वे दुर्बल हैं तथा उत्साह का तो उनमें लेशमात्र भी अंश नहीं है, यह उनकी भूल नहीं है। यह भूल उन माता और पिताओं की है जो उनके जन्म काल मे एवं बालकपन में उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते हैं। यदि हमारी बहनें और माताएं अपने आप को शिक्षित और संगठित करें तो वे बड़ी सुगमता से इस दशा को सुधार सकती हैं एवम् बलिष्ठ पराक्रमी और सदाचार जाति उत्पन्न करने में शक्य हो सकती हैं इसी जाति की हमारी राष्ट्र की उन्नति के लिये विशेष आवश्यकता है।

बिना किसी विलम्ब और कष्ट के वे अपनी पुत्रियों की विवाह की अवस्था बढ़ायेंगी। उस बच्चे की शारीरिक मानसिक दशा कैसी होगी जिसकी माता केवल १२ वा १३ वर्ष की लड़की हो और जो माता के उत्तरदायित्वों के विषय में कुछ न जानती हो। प्रसव-पीड़ा का सहना और उस अवस्था में बच्चा जनना जिस समय शारीरिक विकास भी पूर्ण न हो माता तथा बच्चे दोनों का अन्त होना है। छोटी माता स्वयं कष्ट सहन करती है और अयोग्य सन्तान को पैदा करती है। इसके साथ ही साथ अशिक्षित और मूर्खा होने के कारण, उसे शिशुपालन के नियमों से जानकारी नहीं होती है अतः बच्चोंको भी बड़ा कष्ट होता है। और सम्भवतः दोनों की अकाल मृत्यु हो जाती है। ये सब बातें दूर होनी चाहियें। इनको दूर करने की यही रीति है कि हिन्दू लड़कियों की विवाह योग्य अवस्थाओं को बढ़ाया जाय। हिन्दू स्त्रियों को चाहिये कि वे १६ वर्ष पहिले अपनी लड़कियों की शादियां करने के विषय में विचार करने की परम्परागत आदत को छोड़दें और उन लड़कियों को शिक्षा प्राप्ति के लिये कन्या गुरुकुलों में भेजदें। यदि वे और कोई काम नहीं कर सकती हैं तो वे कम से कम उन्हें कन्या गुरुकुलों जैसे उत्तम शिक्षणालयों में तो भेज सकती हैं। उस दशा में ही वे देश को इस भयानक भय से बचा सकती हैं।

बाल मृत्यु की संख्या का निर्णय करने में आर्थिक प्रश्न महत्व का प्रश्न है। जब माता पिताओं को पैसा पैदा करने की शक्ति कम है तबही बच्चों की मृत्यु संख्या अधिक होती है। अमेरिका के संयुक्त राज्यों में यह देखा गया है कि निर्धनता के कारण, कुटुम्ब के एक आदमीके स्थान में बहुतों को एक ही कमरे में रहना भीड़ को जन्म देना है तथा यह भीड़ उस कुटुम्ब की जिसके प्रत्येक व्यक्ति के लिये १ से अधिक कमरे हैं बाल मृत्यु संख्या से २॥ गुना मृत्यु संख्या का रेट बढ़ा देती है। गर्भावस्था में माता के घर पर काम करने से मृत्यु संख्या का रेट प्रति हज़ार में बच्चों के पीछे १६ के हिसाब सेबढ़ जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदि वे बाहर मिलों में कारखानों आदि में कार्य्य करें तो यह रेट हज़ार पीछे ७८ के हिसाब से बढ़ जाता है।

यह भी देखा गया है कि जब पिता की आय १२५० डालर व इससे अधिक के स्थान केवल ४५० डालर रह जाती है तो यह रेट तिगुना बढ़ जाता है।

जब हम इस बात पर विचार करने लग जाते हैं कि भारतवर्ष में बहुत से पिताओं की औसत से केवल ३६ रु० मासिक आय है, तब हम न केवल बच्चों की ही वा न अपने देश के नवयुवकों की मृत्यु संख्या के रेट का खासा अन्दाज लगा सकते हैं।

निर्धनता का प्रश्न आसानी से नहीं हल हो सकता है। देश के नेता इस पर ध्यान दे सकते हैं। यदि देश की विदुषी और संगठित देवियां नेताओं को सहायता और सहयोग दें तो बड़ी जल्दी ही यह समस्या हल हो जायगी।

वे उनके राजनैतिक कार्य्यों में भाग लेती हुई उन नेताओं के स्वराज्य के राजनैतिक कार्यों में सहायता प्रदान करने के योग्य होंगी। यह ध्यान रहे कि भारत की आधे से ज्यादा जनसंख्या स्त्रियों की है और भारत में शिक्षा के तथा वास्तविक परिस्थिति के ज्ञानाभाव से वे क्रियात्मकदृष्टि से देश के लिये स्वाधीनता के संग्राम में यह जन संख्या सहायता दे व्यर्थ है। यदि वे अपने आपको शिक्षित तथा सङ्गठित करें और भारत की आज़ादी के लिये अपना कर्त्तव्य पालन करें तो स्वराज्य प्राप्ति शीघ्र ही हो।

इन्हीं कारणों से हम कर्नाटक के भगिनी मण्डल सङ्गठन का, मुम्बई की महिला समाज, अडयार की स्त्री सभा तथा इस प्रकार की अन्य सभाओं का स्वागत करते हैं। हमारी इच्छा है और प्रार्थना है कि काफ़ी संख्या में स्त्रियां उनके कामों में हाथ बटाती हुई तन मन से स्त्री जगत् एवम् भारत की उन्नति के लिये काम करें।

कन्या गुरुकुल समाचार।

देहरादून में:—

गत २ अगस्त को कन्याएं देहरादून सकुशल पहुंची थीं। चूंकि इन की गाड़ियां रिजर्वड थीं अतः इन्हें जगह २ बदलने का कष्ट न उठाना पड़ा। यहां पर यह लोग राजपुर रोड पर एक उत्तम कोठी में निवास कर रही हैं। कोठी में पीछे नहर भी है अतः जल की अधिकता से नहाने धोने का भी बड़ा आराम रहा है। कन्याएं प्रतिदिन भ्रमणार्थ जाया करती हैं और कई मीलों का चक्कर लगाती हैं अतः उन का साधारण स्वास्थ्य बहुत उन्नत प्रतीत होता है।

यद्यपि यात्रा में पाठन का क्रमबद्ध प्रबन्ध नहीं था तथापि प्रति दिवस ४, ५ घंटे नियमबद्ध पठन कराया जाता है ताकि खाली समय में कन्याएं कुचेष्टा न कर सकें और पाठ भी उपस्थित रहे। ताकि परीक्षा के पूर्व फिर से तैयारी कराने में समय नष्ट न हो।

स्वास्थ्य।

यहां पर यद्यपि साधारण स्वास्थ्य अच्छा रहा है किन्तु वर्षा में कई बार भीग जाने से मलेरिया ज्वर से कई कन्याएं दो चार दिन के लिये चारपाई सेवन कर लेती रही हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु एक गुजराती कन्या अधिक रुग्ण हो गई और उसे मेजर जे० यल सेन० एक्सरेज़ संस्था में कार्य्य करने वाले डाक्टर को दिखलाया। उन्होंने ब्रांको निमोनिया बतलाया। तत्क्षण उसके पिता माता को सूचना दे दी गई। परन्तु परम पिता परमात्मा का बड़ा धन्यवाद है कि २१ दिन के बाद इन्हीं डाक्टर जी के इलाज से वह निरोग हो गई है और वायु परिवर्तन तथा आराम के लिये उसे पिता माता घर ले गए हैं।

धन्यवाद के पात्र

हमारे देहरादून आने पर हमारे सामने डाक्टर का प्रश्न उपस्थित हुआ। पूछने पर यहां कोई आर्य्यसमाजी डाक्टर हमें न मिला दूसरे इतनी दूर शहर से आने पर कोई राज़ी भी न था। दो चार दिन व्यवसायी डाक्टर को बुलाया। फीस भी बहुत और झञ्झट भी था, उसने सौ रुपये हमारे यहां रोज आने का प्रस्ताव किया। हम लोग अभी विचार ही रहे थे कि संध्या समय एक दिन दो तीन देवियां बच्चों समेत हमारी कोठी पर आईं और पूछने लगीं यह कन्याएं कहां की हैं? हमने भी उनसे पूछा तो पता लगा कि उनके पति वाइसराय की वांडी गार्ड के डाक्टर हैं और उनके साथ हैं। फिर क्या था 'अन्धे को दो आंखें' आचार्या जी ने उन से नम्रता से प्रार्थना की कि वह अपना कुछ समय कन्या गुरुकुल को भी दें। उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार किया। यह डाक्टर मोहनलाल जी छै महीने दिल्ली और छै महीने देहरादून रहते हैं। यह बड़े प्रेम से कन्याओं का इलाज करते हैं, दवा का भी प्रबन्ध करते हैं दिन में जब आवश्यकता हो, सूचना देने पर आ जाते हैं। यह गुरुकुल के बड़े प्रेमी हैं इन्हीं की सम्मति से हमें मेजर जे० यल सेन. का परिचय पाने का सौभाग्य हुआ। यह महाशय भी बड़े उदारचित्त और दयालु हैं। आर्यसमाज से कुछ भी सम्बन्ध न रहते हुये क्योंकि हमें पता लगा है कि यह ब्रह्मसमाजी हैं—भी इनका प्रेम कन्या गुरुकुल से कुछ कम नहीं। इन्होंने न केवल फ़ीस ही नहीं ली—इनकी एक विज़िट १६) की है बल्कि स्वयम् भी बिना बुलाये अपने मरीज़ को देखने अक्सर आते रहे हैं और बड़े ध्यान से चिकित्सा करते रहे हैं। हम इन दोनों महानुभाव डाक्टरों का बड़ा हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

फिर वापिस दिल्ली को।

कन्याएं ३० सितम्बर को यहां से प्रस्थान करेंगीं और १ अक्टूबर को दिल्ली जा पहुँचेंगीं।

वार्षिक उत्सव तथा नया चुनाव।

कन्या गुरुकुल के वार्षिक उत्सव की तिथियां इस वार १४, १५,१६ नवम्बर १९२५ नियत हुई हैं। क्योंकि आगे पीछे कोई भी तारीखें ऐसी नहीं मिलतीं जिनमें कोई छुट्टी हो और कहीं उत्सव न हो। इसी समय नई कन्याओं का प्रवेश भी किया जायगा। जिन महाशयों को कन्याएं प्रविष्ट करानी हों वह कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ कोठी नं० ४ दरियागंज दिल्ली से छपे हुए प्रवेशपत्र मंगा कर शीघ्र ही भर कर १५ अक्टूबर तक अवश्य भेजें वरना स्थानाभाव से उन की प्रार्थना पर विचार करना कठिन होगा। कन्याओं की आयु ६ से ऊपर और ९ से न्यून होनी चाहिये। इससे भिन्न को प्रविष्ट नहीं किया जायगा अतः प्रयास करना व्यर्थ होगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वार्षिक परीक्षाएं

चूंकि उत्सव के पूर्व परीक्षा लेना आवश्यक है क्योंकि उसी समय श्रेणी विभाग करना होता है तथा संरक्षक भी फल जानने को उत्सुक रहते हैं। अतः वार्षिक परीक्षाएं नवम्बर के प्रथम सप्ताह में होंगी।

—:०:—

मुफ़्त नमूना मंगा कर देखो

मुख विलास पान में खाने का मसाला:— पान में खाके देखो दुनियाँ में नई चीज़ है, इस की सिफ़त को आज़मा कर देखो। क़ीमत बड़ी डिब्बी ३।॥), छोटी डिब्बी १॥≠) फ़ी दरजन।

पं० प्यारेलाल शुक्ल हूलागंज,
कानपुर।

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.

Peter Wathc Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

पं० अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दर्यागंज देहली में छपा।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-rike freshlyplucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed.

s for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
" " Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुर्ते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकबार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ीमत साड़ी बेल रेशम की किनारीदार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बोडी या जाकेट—जनानी चाहे जिस नापको की० ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती हैं हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधिक और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमता से निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥।)

बिजली का फीता—यह बिजली का फीता बच्चों के दांत निकलने के काम आता है की० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त।

पता—सुख संचारक कम्पनी. मथुरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] मार्ग शीर्ष १९८२— दिसम्बर १९२५ [खण्ड ६, संख्या ८

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी० ए०

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची।

विषय	पृष्ठ
१ "लाज बिगारत लाज रखैय।" ले०--श्रीहरि	३४६
२ जीव-विद्या तथा वैदिक-संस्कार ले०-श्री पौ० रामदेव जी आचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी ...	३५०
३ संकेत [कविता] ले०—नयन	३५२
४ पर्दा ले; पौ. सत्यव्रत सिद्धांतालङ्कार	३५३
५ दुःखोद्गार ले०—श्री हरिहर ओझा ...	३६१
६ दिव्य मातृ-शक्ति ले० श्री शिवदयाल मेरठ ...	३६२
७ संसार की बहुमूल्य वस्तु ले०—श्री चतुरसेन शास्त्री ...	३६४
८ मोहनी के आंसू श्रीयुत संतलाल दधिमथ वैद्यराज	३७०
६ कुसुमोद्यान	३७६
१० बनिताविनोद	३८४
११ वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि ले० बलवन्त मिश्र हिंदी आनर्स	३८६
१२ नारी चरित्र पर पुरुषों का प्रभाव ले० श्री कृष्णकुमार मिश्र ...	३८८
१३ मूर्खता ले० श्री रामचन्द्रसिंह हेडमास्टर	३६०
१४ पुत्री शिक्षा माताओं के कर्तव्य ले० श्री पुष्पावती देवी ...	३६४

ग्राहकों के लिये:--

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य--
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं. जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

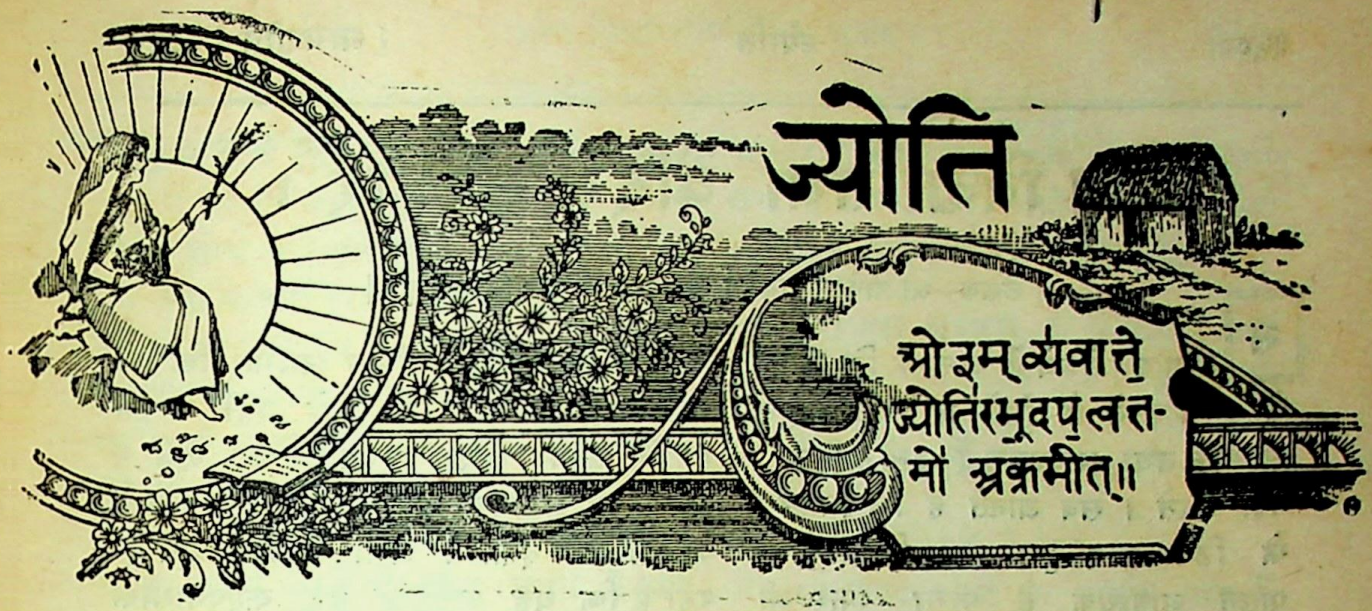

वर्ष ६ | मार्गशीर्ष १९८२—दिसम्बर १९२५ई० | संख्या ८

लाज बिगारत लाज रखैया

(लेखक—"श्रीहरि")

पावस में जल ही जल है, कलपे तलपे पर प्यासा पपैया।
पार अपार समुद्र हुई, पर घाट में आकर डूबती नैया॥
रंक बने मग डोलत हैं, नृप वे जिन को जग लेत बलैया।
"श्रीहरि" बाम भये विधि के अहो लाज बिगारत लाज रखैया॥१॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीव विद्या तथा वैदिक संस्कार ।

[लेखक—श्री प्रोफेसर रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी]

सर्वथा यह देखने में आता है कि जीवन को उच्च करने के लिये जो बातें बहुत सहायक तथा आवश्यक हैं उन्हें भी लोग नहीं करते । सब जानते हैं कि स्वास्थ्य के लिये स्वस्थवृत्त के नियमों का पालन आवश्यक है परन्तु फिर भी स्वास्थ्य की इच्छा रखते हुए भी इन नियमों का पालन नहीं होता। इसका कारण यह है कि मनुष्य के अन्दर स्वाभाविक रुचि सुगम तथा रोचक बातों की ओर है और यह आवश्यक नहीं कि यह बातें लाभदायक भी हों। हैव लौक एलिस (Havelock Ellis) ने भी इस कठिनता को अनुभव करते हुए यह परिणाम निकाला कि जबतक कोई सिद्धांत धर्म का अङ्ग नहीं बना दिया जाता तबतक उसका पालन सम्भव नहीं उदाहरणतया प्रायः बहुत लोग मांसाहार को बुरा तथा हानिकारक समझते हैं परन्तु फिर भी मांस का भक्षण कर ही लेते हैं। जैनियों ने इसे धर्म की दृष्टि से पाप बना दिया और यही कारण है कि कोई भी जैनी मांस नहीं खा सकता, मुसलमान यद्यपि अत्यन्त मांसाहारी हैं परन्तु शूकर को क्यों-कि उन्होंने धर्म की दृष्टि से पाप मान लिया इसलिये कोई मुसलमान शूकर का मांस नहीं खा सकता ।

पाश्चात्य देशों में जीवन विद्या (Eugenics) के लिये कितना शोर मच रहा है परन्तु इसके पालन करने वाले विरले ही हैं। हमारे ऋषियों ने इस विज्ञान का महत्व समझते हुए इसे कार्यरूप में परिणत करने के लिये यही उचित समझा कि इसे धर्म का अङ्ग बना दिया जावे यही कारण है कि जहां आज भारतवर्ष का एक २ बच्चा भी ब्रह्मचर्य्य के अर्थों को समझता है वहां पश्चिमी देशों में अभी यही निश्चय हो रहा है कि यह अवस्था क्या कल्पनात्मक तो नहीं है ।

यह दिखाने के लिये कि हमारे ऋषियों ने कैसी सुन्दरता से जीवन विद्या के नियमों को जीवन में घटाकर जीवन का अंग बना दिया, कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

१—यह अनुभव करते हुए कि माता, पिता की मानसिक तथा शारीरिक अवस्थाका प्रभाव सन्तान पर केवल सन्तान के उत्पन्न हो चुकने पर ही नहीं पड़ता प्रत्युत उत्पत्ति से पहिले २ की अवस्थाओं का भी प्रभाव पड़ता है। इसे Eugenics के वर्तमान विद्वानों ने Ante-Natal influences का नाम दिया है। गर्भावस्था में तो जननी का प्रभाव पर्याप्त होता है इसीलिये ऋषियों ने पुन्सवन संस्कार को भी पर्याप्त महत्व दिया है। वर्तमान काल में पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस प्रभाव को आवश्यक समझा है (Parturient influences).

पुंसवन संस्कार में—

(क) जननी के स्वस्थ होने का विशेष ध्यान रखा जाता है क्योंकि जननीके मस्तिष्क में यह बात बैठा दी जाती है कि यह स्वास्थ्य उसे अपने वास्ते नहीं प्रत्युत उस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिशु के लिये जिस ने उत्पन्न होकर अपने राष्ट्र के लिये आप प्रजा बनना है, जननी स्वार्थ भाव से अपने लिये तो स्वस्थ रहने की चेष्टा न करे परन्तु यह कब हो सकता है कि जब उसे यह दर्शा दिया जावे कि वह एक भावी जाति रत्न की माता बनेगी तो वह अपने उत्तम स्वास्थ्य ग्रहण में कोई त्रुटि या भूल कर जाये। वह इस आशा में इतनी निमग्न हो जाती है कि जब उसे घी में अपना चेहरा देखने को कहा जाता है और उस से पूछते हैं कि 'देवी तू घी में क्या देखती है, तो वह यही उत्तर देती है कि 'मैं इस में प्रजा देखती हूँ, इस संस्कार के करने से जननी को यह बताना है कि अब से वह अपने लिये नहीं जी रही है। किन्तु उस का जीवन उसके संतान के लिये है कैसा शुभ संकल्प है यदि सब माताएं अपने बच्चों के इस उद्देश्य से जियें कि उनकी सन्तानों को राष्ट्र बनाना है तो क्या परिणाम हो सकता है यह समझना कठिन नहीं है।

(ख) इस संस्कार से एक और भी बड़ा लाभ यह है कि पिता को समाज के सन्मुख स्वीकार करना पड़ता है—चूंकि वह भ्रूण का जन्म दाता है। इस लिये उसकी यह हार्दिक अभिलाषा भी है कि यह सन्तान चिरायु हो जिस से उसे सन्तान सम्बन्धी कोई दुःख न प्राप्त हो और वह यहभी प्रतिज्ञा करता है कि सन्तान के सुख तथा आयुवृद्धि के लिये उसकी रक्षा में तत्पर रहेगा।

इस घोषणा का यह परिणाम होता है कि पाश्चात्य देशों की नाईं जननी को यह भय नहीं रहता कि उसका पति और उसके बच्चे का पिता उसे इस गर्भावस्था में कहीं अरक्षित ही छोड़ जावेगा और यह भी अवस्था कभी आनेकी सम्भावना नहीं रहती कि बच्चा संसार के काम करता२ वृद्ध भी होजावे परन्तु उसेयह पता न हो या किसीको यह बताने का साहस न हो कि उस का पिता कान था।

(ग) इस संस्कार से गर्भावस्था की समाज में घोषणा हो जाती है जिससे जननी को यह साहस नहीं पड़ सकता कि कभी गर्भपात का भी विचार कर सके।

२—सीमन्तोन्नयन संस्कार

यह संस्कार छठे या आठवें मास में करते हैं जब कि भ्रूण की बुद्धि का जो एक प्रकार की मानसिक शक्ति ही है प्रादुर्भाव होने लगता है या ओज (physical basis of life) दृढ़ होने लगता है। अर्थात् जब कि भ्रूण का मस्तिष्क उन्नत हो रहा होता है उस समय जननी को भी विशेष तौर पर अपने शिर की सफाई का आदेश किया जाता है। माता को यह भी शिक्षा दी जाती है कि उसे उत्तम २ बातें, स्थानें, चित्रें और महान व्यक्तियें का ध्यान करना चाहिये जिस से बालक की बुद्धि भी वैसी ही उत्तम और स्वच्छ हो जावे।

३-यही नहीं कि गर्भ के पूर्व और गर्भावस्था में ही संस्कारों का प्रभाव हो प्रत्युत ऋषियोंने गर्भान्तर अवस्था (Post natal) पर भी पर्याप्त बल दिया है जैसे माता को आदेश है कि नवजात को स्वच्छ जल भी चुसावे क्योंकि यह अमृत है वास्तव में कभी २ भूल कर दी जाती है कि शिशु को दूध ही दूध दिया जाता है परन्तु शिशु को जल की भी पर्याप्त आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त शिशु के वस्त्र, भोजन, और अन्य बातों की भी शिक्षा दी है।

४-सब से बढ़कर जीवन विद्याके नियमों को गर्भाधान संस्कार में घटाया है। गर्भा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धानके महत्व को समझते हुए इसे कोई कलङ्कित कार्य नहीं बताया प्रत्युत इसकी पवित्रता और इसका उच्च आदर्श सन्मुख रखा है। इस संस्कार को छिपाने का यत्न नहीं किया प्रत्युत समाजको बताया है कि दम्पति अब इतने कलवान और सदाचारी हैं कि वे समाज कोएक उत्तम प्रजा भेट करने के योग्य है और वे इस समाज के सेवा के भाव से प्रेरित होकर बड़े प्रफुल्ल चित्त हैं। उनकी इस प्रसन्नता में समाज के प्रति श्रद्धा, भक्ति और आत्मत्याग है और विषयवासना का ज़राभी अंश नहीं।

इस प्रकार ऋषियों ने जीवन विद्या को उपयोगी बनाया था यह उसके कुछ ही उदाहरण हैं पाश्चात्य देशों में भी इन नियमों का महत्व तभी पहिचाना जावेगा जबकि वहां भी इसे धर्म का अङ्ग बना दिया जावेगा। परन्तु इसके बिना सर्व साधारण जनता से इनके पालन करने की आशा रखना भूल है।

संकेत

(लेखक—नयन।)

लिखें-अब कौन अनोखा लेख !
निष्पापी तन नहीं किसी का,
मान हीन मन नहीं किसी का,
अचल गड़ गयी बुद्धि गगन में, महा भूल की मेख !
लिखें-अब कौन, अनोखा लेख !

२

काशी में शिव-धाम नहीं है,
अवध नगर में राम नहीं है,
चित के चित्रकूट के भीतर, चित्रगुप्त को देख !
लिखें-अब कौन अनोखा लेख !

३

विश्व स्वरूप दिव्य पनघट में,
देखो-नीर भरे घट २ में,
नित नीरव श्रीनयनचन्द्र की, अलख अलख की रेख ?
लिखें-अब कौन अनोखा लेख !

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर्दा।

(ले०–प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी)

यह कहना गलत है कि हिंदू-लोग शुद्धि नहीं किया करते थे, या मुसलमानों को मौका पड़ने पर हिंदू नहीं बना लिया करते थे कौन नहीं जानता कि 'पर्दा' पहले मुसलमान था पर हिन्दुओं ने इसकी शुद्धि कर इसे हिन्दू बना लिया। 'पर्दा' जो पहले कट्टर मुसलमान था, हज़रत मुहम्मद का जैनब से पैदा हुआ इकलौता बेटा था, उस का हिंदुओं ने ऐसा शुद्धि-संस्कार किया कि अब वह कट्टर हिन्दू है, बीसियों घंटे उनके चूल्हे में मज़े से डटा रहता है।

कइयों का कहना है कि जब कभी, जो कोई चाहे, इन हिंदुओं को पकड़ कर मुसलमान बना सकता है। परन्तु नहीं, यह भी हिन्दुओं पर अन्याय-पूर्ण आक्षेप है। देखो, जब से पर्दे को शुद्ध किया है, क्या किसी की मजाल है कि इसे खींचकर उन में से निकाल सके? अब चाहे ईसाई, मुसलमान और कोई तीसरे भी कितना ही सिर क्यों न पटकें, पर्दे को हिन्दुओं ने शुद्ध करके अपनी बिरादरी में शामिल कर लिया है। अब इसे कोई दूसरे धर्म में जाने के लिये नहीं बहका सकता; यदि कोई कोशिश करेगा तो वह धर्म-युद्ध छिड़ेगा, जिस में पहले हिंदू-पुरुष बलि पर चढ़ेंगे और फिर हिंदू-स्त्रिएं अपनी आहुति देकर 'पर्दे' की रक्षा करेंगीं।

परन्तु क्या मालूम जिन्होंने 'मियां-पर्दे' की शुद्धि की हो वे उस समय के हिंदू-नाम धारी आर्य्यसमाजी ही हों। शुद्धिका शास्त्रों में कहां ज़िक्र हैं; कहीं भी नहीं! फिर पर्दे मियां को किसने शुद्ध किया? हिंदुओं को चाहिए कि इसे अर्ध-चन्द्र देकर अपनी बिरादरी से बाहर ढकेल दें। और या उसे शुद्धि करने वाले आर्य्य-समाजियों के हवाले करें, उन्होंने इसका जो कुछ बनाना होगा, बना लेंगे। यदि हमारे शिवजी पर भूल से भी किसी यवन की छाया पड़ जाय, तो उन्हें भी स्नानादि प्रायश्चित करना पड़ता है, फिर इस मियां की क्या मजाल कि सदियों से चौके चूल्हे तक में डटा रहे, और किसी जनेऊ तथा चोटीधारी के कान पर जूं तक न रेंगे। सनातन हिंदू धर्म की रक्षा अभीष्ट हो तो इसका एक क्षण भी बिना चूके एक दम बहिष्कार कर देना चाहिये।

पर्दे को हमारी समाज में दाखिल हुए सदियां बीत चुकी हैं। इस अरसे में इसकी संतति भी सीमा का उल्लङ्घन करके बढ़ी है जहां तहां इसकी औलाद बहुतायत में पाई जाती है। इस यवन का ध्वन्स करने के लिये हमें बड़ी होशियारी से काम करना होगा। इसकी संतति को चुन २ कर अपने समाज के क्षेत्र से बाहर ढकेलना होगा। तब जाकर कहीं धर्म की रक्षा होगी, नहीं तो धर्म-सङ्कट उपस्थित हो जायगा।

* * * *

पर्दे की संतति का अत्यन्ताभाव करने के उद्देश्य से मैं उनकी ढूंढ में चला। पहले तो यह खुद सैकड़ों संतानों को पैदा करने वाला, फिर इस की एक २ संतान आगे भी वही सिलसिला जारी करने वाली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जूं की लीकों को ढूंढ २ कर मारने की दुस्तरता के समान इसका भी ढूंढ २ कर मारना दुःतर पाया। इसे परमात्मा की तरह सर्व-व्यापक और परमाणु की तरह संकुचित छुई-मुई की तरह लज्जाशील तथा बन्दर की तरह निर्लज्ज पाया। इसकी माया अद्भुत देखी। जहां यह मूर्त्तिमान् दिखाई देता था वहां समीप जाकर समझ पड़ने लगा कि यह सिर्फ मरु-मरीचिका की तरह आँखों का धोखा था, जहाँ इसको मनहूस शक्ल दिखने की कोई उम्मीद न थी वहां इसे ढिठाई को चैलेञ्ज देते हुए देखा।

* * *

मैं बम्बई से दिल्ली को आ रहा था। हुशंगाबाद के स्टेशन पर एक मारवाड़ी युवक अपनी नव-विवाहिता वधू के साथ मेरे ही डब्बे में आ चढ़े। युवती के मुख पर पर्दा लटक रहा था परन्तु उसका पेट वायु स्नान कर रहा था। अंग्रेज-स्त्रियों को छाती खोले बाज़ार में फिरते कई वार देखा था। परन्तु यहां एक नयी समाज, मुंह लपेटे पेटखोले दिखाई दी। पति-पत्नी आमने-सामने बैठ गये, लेकिन मियां जी उन दोनों के बीच में खड़े हुए दिखाई दिये। पति-पत्नी के बीच में भी पर्दा! मारवाड़ी महोदय को उनके साथ के एक दोस्त ने कहा व्याह कर बीवी लाये हो, या कपड़ा ढक कर मिठाई लाये हो। मारवाड़ी भाई ठट्ठा मार कर हंस पड़े। अगले स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई। भाई साहब धोती सम्हालते हुए चाय लेने को भागे तो उनकी बीवी मुंह नङ्गा करके बैठ गई। बेचारी का दम घुटा जाता था—खुली सांस लेने लगी—पति महाशय वापिस आये तो पर्दा-साहेब भी उनके साथ ही चले आये, मानो वह उन्हीं के साथ छाया की तरह भागते फिरते थे। मैंने यह दृश्य देखकर, अपनी पाकेट-बुक में नोट कर लिया कि पति-पत्नी के बीच में जो खां साहेब हर समय कमर ताने खड़े रहते हैं इन्हें यहां से दफ़ा किये दूर बगैर काम न चलेगा। इन्हें इतनी तो शर्म होनी ही चाहिये।

* * *

उस दिन मैं हरद्वार में हर की पैड़ी पर घूम रहा था। कई पर्दा-नशीन बहनें स्नान की तैयारी कर रहीं थीं। पास ही उनके रिश्तेदार खड़े हुए थे इसलिये सब पापों को मिटा देने वाले इस ती-र-थ पर आकर भी पर्दा किया हुआ था। कुछ देर बाद वे बहनें उठीं और अपने रिश्तेदारों की तरफ पीठ करके गङ्गा में डुबकियां लगाने लगीं। ज्यों२ वे गोता लगाती जाती थीं त्यों २ उनके पाप गङ्गाजी के सिद्ध-जल से धुलते जाते थे और उनके शरीर पर पड़ा। 'पर्दे' का पाप भी उतरता जाता था। थोड़ी ही देर में यह पाप सर्वथा धुल गया और वे पर्दा हीन, शुद्ध, नग्नरूप में दिखाई देने लगीं। इस अवस्था में जब वे जल से निकलीं तब भी अपने रिश्तेदारों के समीप पहुंचकर उन्होंने मुंह पर पर्दा खींच ही लिया। पर्दे की इस शर्म के पीछे छिपी बेशर्मी को देख कर मैंने धीरे से अपनी नोटबुक जेब में से निकाली और उस में यह दर्ज कर लिया कि इस सत्यानासी पर्दे ने ही भारत की कुलाङ्गनाओं को निर्लज्ज बना दिया हैयदि यह कलङ्कीन होता तो हमारी देवियें अपनी आँखे मूंद कर दुनियां भरको अन्धा न समझने लगतीं पर्दे की इस 'होने' और 'न होने'—दोनों प्रकार की माया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देखकर कुछ देर स्तम्भित सा खड़ा रहा। विचार धारा टूटने पर मैं इसकी करामातें देखने के लिये आगे चल दिया।

* * * *

मुंशी रामप्रसाद की लड़की की शादी थी। मुन्शी जी मेरे बड़े दोस्त थे। मैं उनके घर के सभी व्यक्तियों को खूब अच्छी तरह से जानता था। बस, मुझे तार दे मारा—'फौरन से पेशतर चले आओ'। मैं भी जा धमका। बारात आई, खूब आव-भगत की गई। मुन्शी जी की स्त्री ने लड़के को मिलने के लिये अलग बुलाया। मैं उस समय उन के पास ही बैठा हुआ था। लड़का, लड़के की सास और मैं-बस, हम तीन हीथे लड़के के आते ही उस की सास ने बिजली की तेज़ी से घूंघट खींच लिया और लगी अंदर अन्दर से बातें करने। उसका बोल ज़रा मोटा था, वह पर्दे को भी फाड़ २ कर निकलता था, परन्तु लड़के की सास अब तक अपने को पर्दे में ही छुपा हुआ समझ रही थी। लड़का ज़रा मज़ाक़िया मिज़ाज का था बोला—"माता जी! पर्दे की दो तहें कर लीजिये। मुझे आपकी आवाज बहुत जोर से सुनाई दे रही है।" यह तमाशा देख मेरे तो हंसते २ पेट में बल्लिएं पड़ गईं। मैंने उसी वक्त अपनी डायरी निकाल कर मुन्शी जी की स्त्री का नाम, या कहिये ऐसी सासों का नाम, अपनी फेहरिस्त पर चढ़ा लिया।

* * * *

परसों मैं एक काम से अपने गांव गया हमारे घर के सामने रत्तो नाम की एक बूढ़ी जट्टी का घर है। जब कभी मैं वहां जाता हूँ रत्तो मुझे परौंठे बनाकर खिलाया करती है। घर पहुंच कर मैंने सामने देखा कि रत्तो तम्बू सी बनी चारों तरफ़ से कपड़े से लिपटी बैठी है और उसके सामने वैसी ही गठड़ी सी बनी एक और बुढ़िया है। दोनों बैठी जोर २ से दुनियां भर की गप्पें हाँक रहीं थीं। मैंने रत्तो से पूछा—"रत्तो! यह क्या तमाशा कर रही है?" रत्तो ने मेरे भोलेपन पर हंसकर कहा—"बेटा! मेरी लड़की की इस बुढ़िया के लड़के के साथ शादी हुई है। दोनों समधिनें हैं इसलिए एक दूसरे से शर्म होना जरूरी है न!" मैंने कहा-"हां, ज़रूरी क्यों, बहुत ज़रूरी है। शर्म से डूब मरना जरूरी है। इतना बड़ा पाप कि तुम दोनों के लड़के-लड़की की शादी हो गई!" दोनों बुढ़िया पर्दे के तम्बू में छिपी २ इस बात पर अट्टहास करने लगीं कि मैं इतना पढ़ लिखकर भी इस छोटी सी बात को नहीं समझता था। मैंने उन दोनों बुढ़ियों को हंसते २ कहा-"देखो, मैंने तुम्हारा नाम भी नोट कर लिया है।"

* * * *

बे पढ़ी लिखीं पर्दे का शिकार हैं ही परन्तु अभी पिछले दिनों यह सुनाई दिया कि इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में जमाने की तरक्की को देखकर देश की उन्नति के लिये एक नया सुधार पेश किया गया है। यह सुधार था बी० ए० में पढ़ने वाली लड़कियों को पर्दानशीन बनाने का। लड़के लड़कियों के इस प्रकार खुल्लमखुल्ला मिलने से मशीन का पुर्जा कहींसे ढीला हो जाता शायद इसी ख़याल को लेकर यह 'रि-फ़ौ-र्म' किया गया था। परन्तु क्या दोनों को अलग २ रुई में लपेट रखने से उनपर कोई दाग़ नहीं लग सकेगा। क्या ज़िन्दगी भर दुनियां को गन्दा कह २ कर उससे भागते रहने से मनुष्य की हालत पहले से सुधर जायगी! बस, लेख पर लेख निकलने लगे, सभा पर सभा होने लगी। इलाहाबाद में तो स्त्रियों ने तूफान मचा दिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उच्चशिक्षा ग्रहण करने वाली लड़कियों को-लड़कों के साथ शिक्षा-ग्रहण करने की आज्ञा दिलाकर ही पिण्ड छोड़ा। मेरी नोट बुक में इन सभी का नाम दर्ज है।

पिछले दिनों शिमले में पढ़ी-लिखी स्त्रियोंने भी एक और करतूत कर मारी। पं० मोतीलाल नेहरू की मूंछों की मृत्यु हो गई थी। हिन्दुस्तानी रस्म-रिवाजके अनुसार मोतीलाल जी को बैठा कर स्यापा करना जरूरी था परन्तु बीसवीं सदी की इन पढ़ी-लिखियों ने बाकायदा टेबल-कुर्सी लगाकर आज कल के कायदे के मुआफिक अफसोस का एक रेज्यूलेशन पास कर दिया। यह बेपर्दगी देख कर लाहौर के मियां 'औटलुक' साहेब जल भुन गये, उनकी बिरादरी वाले का जो बहिष्कार कर दिया गया! स्त्रियों की समाज में एक पुरुष को निमन्त्रित करना, सब स्त्रियों का उसके सामने, भाग खड़े होने की जगह बैठे रहना और उसपर भी पर्दा न कर के उसकी तरफ देखते रहना—ये तीनों, 'मुस्लिम-औटलुक'की दृष्टिमें एकसे एकबढ़कर अपराध थे परन्त इन सब को करते हुए भी पढ़ी-लिखी स्त्रियों ने डकार तक न लिया उल्टा बेचारे गुम-राहोंको ठीक रास्ता दिखलाने वाले पीर पर ही झपट पड़ीं और उस की नाकों दम करके छोड़ा! यह घटना भी ज्यों को त्यों डायरी डायरी में दर्ज है।

* * *

ज़माना बहुत आगे बढ़ चुका है। पर्दा तो हटेगा और हट कर ही रहेगा परन्तु पिछली दो घटनाएं हमारे सम्मुख एक और विकट समस्या उपस्थित कर रही हैं। पर्दे को हटाकर स्त्री-पुरुष का समाज में क्या स्थान समझा जायगा? क्या पर्दा मुख पर न डालने मात्र से पर्दे का प्रश्न हल हो जायगा या हमें कुछ और आगे कदम रखना होगा? सामाजिक-जीवन में समाज के अंग स्त्री-पुरुषों का एक दूसरे के प्रति क्या संबन्ध होगा?

इस समय हमारे समाज की यह अवस्था है कि अपनी धर्मपत्नी, बहिन, माता आदि के अतिरिक्त यदि अन्य किसी स्त्री के साथ कोई पुरुष बात चीत करे, अथवा कोई स्त्री अपने पति भाई पिता आदि के अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष के प्रति उन स्वाभाविक सामाजिक-प्रेम के उत्कृष्ट तथा पवित्रतम भावों का परिचय दे जिन्हें प्रत्येक पुरुष तथा स्त्रीके हृदय में स्वयं भगवान् ने अपने हाथों से रखा है तो उन पर 'बदमाश' होनेका सन्देह किया जाता है। हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि पुरुष तथा स्त्री, समाज के क्षेत्र में, ऐसे ही स्वतन्त्र मिल सकें जैसे पुरुष—पुरुषों के साथ तथा स्त्रियें—स्त्रियों के साथ मिलती हैं। अभी तक पुरुषों का समाज सर्वथा अलग है स्त्रियों का सर्वथा अलग है—दोनों का एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि हो सकता है तो केवल पति-पत्नी का, एक ही माता-पिता से उत्पन्न भाई-बहिन का माता-पुत्र और पिता-पुत्री का। इसप्रकार को छोड़ कर किसी दूसरे प्रकार का सम्बन्ध अनुचित होगा, नाजायज होगा बदमाशी का होगा। हमारे यह समझ में ही नहीं आसकता कि यदि किसी पुरुष स्त्री का परस्पर पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं है, एक ही रुधिर का भी सम्बन्ध नहीं है, फिर वह बदमाशी के अतिरिक्त तीसरा सम्बन्ध हो ही कौनसा सकता है। हमारे समाज में यह विचार घर कर गये हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन्हें वेदवाक्यवत् सत्य मानता है और इसीलिये जहां स्त्री पुरुषों में खुले दिखाई देती है, उसके विरुद्ध हृदय में क्रान्ति सी उत्पन्न होती है। फरक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इतना ही है कि कई ईमानदारी से अपने भावों को कह डालते हैं, और कई दबाये रखते हैं युवक दल, तो नई रोशनी से प्रभावित होकर पुरानेबन्धनों को तोड़-फोड़ डालना चाहता हैं परन्तु बुड्ढे खुर्राट जिन के हाथ में समाज की बागडोर है, नौ-जवानों का कुछ चलने नहीं देते। वे विवाहित स्त्री पुरुष के प्रातः काल इकट्ठे सैर करने जाने को निर्लज्जता तथा उद्दण्डता की पराकाष्ठा समझते हैं, फिर वे गैर स्त्री-पुरुष के किसी प्रकार भी परस्पर सम्पर्क में आने को क्यों कर सहने लगे! उनकी सम्मति में इस प्रकार का सम्बन्ध बदमाशी तथा व्यभिचार की चरम सीमा होगी।

इस में सन्देह नहीं कि हमारे समाज की वर्तमान अवस्था उपर्युक्त विचारों की ही पुष्टि करती है। यदि किसी युवक की सामयिक सहायता पाने के कारण कोई युवती उस के प्रति कोमल शब्दों में कृतज्ञता के भाव प्रकट करती है तो वह मूर्ख उस युवती को अपने ऊपर लट्टू हुआ समझने लगता है। उसके हृदय में इस से उच्च किन्हीं मानवीय विचारोंके लिये स्थान ही नहीं दिखाई देता। स्त्रियों को हमारे समाज में पुरुषों से इतनी दूर रखा जाता है कि वे साधारणतम मानवीयभावों को भी प्रकाशित नहीं कर सकतीं। किसी भारी मेले में रास्ता भटक-गई बुढिया को ठीक स्थान पर पहुँचा देने से वह तो जरूरत से ज्यादह धन्यवाद की झड़ी लगा देती है परन्तु एक युवती उसी प्रकार की अवस्था में वैसीही सहायता पाकर कृतज्ञता में जबान तक नहीं हिला सकती। यह नहीं कि उसके हृदय में वे साधारण से कृतज्ञता के भाव उदित ही नहीं होते जो पशुओं तक में पाये जाते हैं; नहीं इस लिये कि कहीं उसके शब्दों का अनर्थ न कर दिया जाय! पुरुषों से स्त्रियों को बहुत दूर रखा जाता है, इस लिये उनका स्त्रियों की ज़रासी भी नज़दीकी का उल्टा अर्थ कर लेना स्वाभाविक है और इसी लिये वृद्धों का स्त्री-पुरुषों को सामाजिक जीवन में अलग २ रखने का उद्योग भी कुछ अंश तक उपर्युक्त ही है। दैनिक-पत्रों में रोज़ घटनाएं छपती हैं। किसी लड़की ने किधर देखा। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, जिस तरफ़ भी नज़र उठी, चली गई। अचानक समीप से जाते हुए युवक पर नज़र पड़ गई। उसने समझा कि उसी पर यह ख़ास कृपा की गई है। ज्यों किस्सा छिड़ा कि उस का अन्त अदालत में हुआ! ऐसी अवस्थाओं के होते हुए क्यों कर वृद्ध-लोग स्त्री-पुरुषों को सामाजिक जीवन में स्वतन्त्रता देने के पक्ष में हो सकते हैं! मुंह पर पड़ा पर्दा उठ जाय तो उठ जाय, वे इस नई-बेपर्दगी के हक़ में नहीं हो सकते।

तो फिर क्या होगा? क्या पर्दे को दूर करने का अभिप्राय मुख पर से बुर्का उतार देना मात्र होगा अथवा इस का अभिप्राय कुछ और गहरा होगा? क्या स्त्रियें पर्दा हटा कर सामाजिक-जीवन में पुरुषों से उतनी ही दूर खड़ी रहेंगी जितनी दूर वे अब तक थीं अथवा उन्हें भी समाज का उसी प्रकार अङ्ग समझा जायगा जिस प्रकार पुरुषों को समझा जाता है इस का उत्तर पाने के लिये इतिहास के कुछ पन्ने उलटने आवश्यक हैं।

मुसल्मानों ने स्त्रियों को सामाजिक जीवनमें कोई स्थान नहीं दिया। उनका समाज पुरुषों का समाज है। पुरुष ही उनके समाज रूपी मस्जिद की आधार शिला, पुरुष ही उसकी ईंट, पुरुष ही उसकी दीवार और पुरुष ही उसके गुम्बज हैं। ऐसी रचना बना कर मुसल्मानों ने समाज का जो स्वरुप बना लिया है वह किसी प्रकार स्पृहणीय नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एक मुसल्मान-भाई से बात करते हुए मैं यही चर्चा कर रहा था कि बोले—' भाई साहेब ! आप कुछ भी कहें, हम मुहज्ज़ब आदमी के लिये अपनी बीबी को खुले बाजार ले जाना गवारा नहीं कर सकते'। मुसलमान लोग स्त्रियों को ऐसी चीज़ समझते हैं जैसे मर्तवान में पड़ा मुरब्बा। उन के यहां स्त्रियें मर्दों की तरह आज़ाद नहीं हैं और इसी लिये उन के समाज की रचना में स्त्रियों का हाथ नहीं है, जो कुछ है वह नाम-मात्र का है। मुसल्मानों के समाज का विकास हुआ परन्तु वह विकास शरीर के फूलने की तरह का था, बढ़ने की तरह का नहीं। मुसल्मानों के विकास को मानव-जाति के शरीर में उत्पन्न हुए एक रोग से उपमा दी जा सकती है। आग और तलवार से उतर कर वे बात ही नहीं करते थे। वे कठोरता, क्रूरता और निदयता के अवतार दिखाई देते हैं। कोमलता, सहृदयता प्रेम आदि जिन गुणों से मनुष्य की वज्र-प्रकृति में मृदुता तथा दैवत्व का सञ्चार होता है, उन से मुस्लिम-समाज सर्वथा वञ्चित रहा है। यदि कहीं मुसलमानी संसार में स्त्रियें हवा लेने को भी निकली हैं तब भी लिपटी हुई, ढकी हुई, चारों तरफ की दुनियां से बिल्कुल अलग, इस दुनियाँ में रहती हुई भी किसी दूसरी दुनियाँ में ! जहां समाज के एक अङ्ग को इस प्रकार काट कर अलग फेंक दिया जाय वहां पहले तो किसी प्रकार की उन्नति होगी ही नहीं और जो होगी भी, वह अधूरी—बिलकुल आधी। सैमेटिक जातियों का सन्देस गगन-व्यापी अग्नि-ज्वालाओं का संदेस है, तलवारों की खटखटाहट का सन्देस है, गर्म खून की उबलती हुई नदियों का सन्देस है क्योंकि उनके सामाजिक-जीवन में स्त्री का स्त्री-रूप से कोई स्थान नहीं है। उनकी समाज को बनाने वाला पुरुष है और उसने सब जगह अपनी कठोर प्रकृति का परिचय दिया है। सैमैटिक जातियों ने समाज के जिस भवन का निर्माण किया है उसके 'नीचे 'आग-खून-तलवार' इन के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं दिखाई देता। इस में सन्देह नहीं कि मुसल्मानों ने विज्ञान तथा दर्शन में किसी समय पर्याप्त उन्नति की थी परन्तु उस उन्नति के स्थिर न रह सकने का मुख्य कारण यही है कि उन्होंने स्त्रियों को ईश्वर-प्रदत्त स्थान से निर्वासित करने का अनुचित उद्योग किया। जब तक स्त्रियों को सामाजिक क्षेत्र में अपना उचित स्थान न मिलेगा, जब तक उन्हें पुरुषों की तरह समाज का जीता-जागता अङ्ग न समझा जायगा, जब तक उन्हें किसी प्रकार के भी पर्दे के पीछे रखा जायगा तब तक समाज, सैमेटिक जातियों के समाज की तरह, अर्धाङ्ग रोग से पीड़ित रहेगा, उन्नति शील नहीं हो सकेगा, मानव-जाति के दैवीय गुणों से शून्य रहेगा।

सैमेटिक जातियों के बिपरीत, आर्य जातियों ने, स्त्री को स्त्री-रूप से, पुरुष की तरह, समाज का अङ्ग मानने का प्रयत्न किया और इसी लिये उन में सर्व-नाश-करी कठोरता तथा नीरसता नहीं पायी जाती। इस समय हमलोग अनेक सैमेटिक संस्कारों के कारण प्राचीन वैदिक विचारों से विमुख होचुके हैं परन्तु किसी समय इसी भारत में गार्गी सी विदुषी देवियें सभाओं में अपनी विद्वत्ता का सिक्का जमाया करती थीं। स्वयंवरों की प्रथा इसी पर्देपर लट्टू हुए देश में प्रचलित थी। उस समय के भारत का सन्देस शान्ति का, आशा का, उत्साह का सन्देस है। उस उपदेश को सदियों बाद आज भी सुनकर हृदय से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'धन्य'—'धन्य' निकलने लगता है। भारत के प्राचीन समाज की रचना में स्त्रियों का उतना ही हिस्सा था जितना पुरुषों का। बुद्धभगवान् के समय तक स्त्रियों को समाज का अङ्ग माना जाता रहा है भिक्षुओं के साथ भिक्षुनियें भी हुआ करती थीं। परन्तु बौद्ध-काल भारत की गिरावट का समय था बुद्ध ने स्त्रियों को समाज में समान-स्थिति देने का प्रयत्न किया परन्तु शायद गिरावट की शक्तियें तेज़ी पर थीं इसलिये उसका पुरुष तथा स्त्रियों को समान-स्थिति देखने का स्वप्न क्रिया में न घटाया जा सका।

युरुप की आर्य्य-जातियों में भी स्त्री को पुरुषों के साथ एक ही स्थिति पर लाने का प्रयत्न किया गया। लूथर ने, पर्दे के पीछे ढकी स्त्री-जाति को आगे घसीट कर पुरुषों के साथ एकही मञ्च पर ला खड़ा किया। इसमें सन्देह नहीं कि आगे चलकर, स्त्री पुरुषों के इस मेल से अनर्थ पैदा होने लगे परन्तु इस का कारण यहीं है कि वे लोग उस मानवीय उच्चता को अनुभव ही न कर सके जहां तक लूथर उन्हें पहुंचाना चाहता था। वर्तमान युरुप में स्त्रियें समाज का अङ्ग समझी जाती हैं और सभ्यता को बढ़ाने में वे भी अपना हिस्सा दे रही हैं परन्तु अभी वहां पर भी वे पूरा हिस्सा नहीं ले रही यदि पुरुषकी सभ्यता को विकसित करने में स्त्रियों का पूरा हिस्सा होता तो गोरी जातियों का निर्बल-जातियों को क्रूरता-पूर्ण-व्यवहारों से सभ्य बनाने का बोझ कभीका हलका होचुका होता। फिर भी युरुप जो कुछ विश्वास कर रहा है उसका उत्तेजन स्त्रियों द्वारा ही मिल रहा है। शक्ति के मद में अन्धा हुआ वह बहुत कुछ नीचता के कार्य भी कर जाता है परन्तु ऐसे काम इसी लिये हो जाते हैं क्योंकि स्त्रियों की रूप में वह स्थिति नहीं है, जो होनी चाहिये। हां, इसके साथ२ हमेंयह भी मानना पड़ता है कि युरुप में स्त्री पुरुषों की इस खुलसे इस प्रकार के अनेक अनर्थ हो जाते हैं जिन्हें बुद्ध तथा लूथर भी नहीं रोक सके। मनुष्य की इसी गिरावट को देख कर सैमैटिक-जाति के लोग समझने लगते हैं कि समाज में से स्त्री को सर्वथा निर्वासित कर देने का उनका विचार बिलकुल ठीक है।

ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार करते हुए हम दो परस्पर विरुद्ध विचारों पर पहुंचते हैं। हम यह भी समझते हैं कि स्त्रियों के बिना समाज अधूरा रह जाता है, उसकी उन्नति एक तरफा रहती है उसका विकास एक तरफा रहता है; इसके साथ २ यह भी देखते कि स्त्रियों को समाज का अङ्ग बना देने से समाज की दोनों मशीनों का पुर्ज़ा कहीं से ढीला हो जाता है। इस द्विविधा में क्या किया जाय ?

स्त्री-पुरुषों के खुला मिलने से कहीं २ खराबी पैदा हो जाती है, इतना कह देने मात्र से कुछ नहीं सिद्ध होता। खराबी तो वहां भी पैदा होती है जहां दोनों को रुई में लपेट कर अलग रखा जाता है। प्रश्न यह है कि इन दोनों अवस्थाओं में से अधिक हानि कर अवस्था कौनसी है। मेरा अनुभव मुझे बतलाता है कि जहां स्त्रियें पुरुषों को अजीब चीज़ नहीं समझती। और ना ही पुरुष स्त्रियों को आसमान में उड़ने वाली बुलबुल समझते हैं। वहाँ का आचार दूसरे लोगोँ से कहीं बढ़कर होता है। मद्रास तथा महाराष्ट्र में मुझे कई साल रहने का मौका मिला है। वहां स्त्रियें पर्दा नहीं करतीं। सिर तक नङ्गा रखती हैं। लड़कों के साथ स्कूल कालिज में पढ़ती हैं। उनमें कोई खराबी नहीं दिखाई देती। वे समाज में उसी प्रकार हिस्सा लेती हैं जैसे पुरुष। वहां की स्त्रियों में आत्मबल है। वे बाज़ार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में से निकलती हुई दुनियां भर से बचती २ नहीं निकलतीं। दूसरी गली के घर में जाते समय उनकी हिफाज़त के लिए दो सिपाही तैनात नहीं करने पड़ते। वे ऐसी निर्भय होकर घूमती फिरती हैं सांस लेती हैं, जैसे पुरुष। आफ्रीका में हबशियों को मैंने देखा है। वे नंगे फिरते हैं—बिलकुल नंगे लंगोटी तक नहीं! इसी अवस्था में स्त्री पुरुष अपने दैनिक कार्य करते हैं। मुझे उन लोगों को देखकर कई वार सन्देह उत्पन्न हुआ कि क्या नंगेपन तथा दुराचार का कोई सम्बन्ध है! यदि होता तो क्या अफ्रीका के नंगधड़ंग हबशी कोट पतलून पहनने वालों के साथ सदाचार की तुलना में रखे जा सकते थे? परन्तु फिर भी सभ्यता की डींग हांकने वालों को अफ्रीका के जंगली लोगों की बातें सुनकर लज्जा से सिर नीचा कर लेना पड़ता है! हबशी लोग नंगे रहते हुए भी पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रहते हैं, विवाह होजाने पर ऋतु गामी रहते हैं!! यदि स्त्री पुरुषों के परस्पर खुला मिलने का परिणाम बदमाशी ही हो तो सब से बड़े बदमाश यह लोग होने चाहियें परन्तु है ठीक इसके उल्टा! युरुप के लोगों में आचार के नियम जरा शिथिल प्रतीत होते हैं इसका कारण स्त्री-पुरुषों का स्वतन्त्र रूप से मिलना नहीं परन्तु वहाँ का प्रकृतिवाद है। जीवन के विषय में उनकी दृष्टि ही ऐसे ढीले असूलों से बनी है कि वे आचार सम्बन्धी बातों को वह महत्व नहीं देते जो हम देते हैं। यह दृष्टिकोण बदल जाय तो स्त्री पुरुषों के खुले हुए भी हमें उनके आचार में कोई गिरावट न दिखाई दे।

इस समय समाज में एक नवीन भाव के जागृत करने की आवश्यकता है। स्त्रियों को हम जिस प्रकार समाज से निर्वासित किये हुए हैं, पर्दे के पीछे ढके हुए हैं, उससे हमारा समाज पुरुषों का ही समाज कहला सकता है, अधूरा ही रह सकता है, उसमें पूर्णता नहीं आ सकती। इस अवस्था को दूर किया जाना जरूरी है। कपड़े का पर्दा हटा देने मात्र से पर्दा नहीं हटेगा, पर्दे को हटाने के लिये स्त्रियों की समाज में स्थिति को ही मूल से बदलना होगा। हमें नवयुवकों तथा नवयुवतियों के स्त्री-पुरुष सम्बन्धी विचारों को सर्वथा परिवर्तित कर कर देना होगा। दोनों अपने को गौरव के साथ समाज का समान रूप से अंग समझने लगे और परस्पर इस प्रकार व्यवहार करने लगे जिस प्रकार पुरुष-पुरुषों के साथ और स्त्रियें-स्त्रियों के साथ करती हैं, तब जाकर समाज का सम-विकास होना प्रारम्भ होगा। इसमें सन्देह नहीं कि हमारा समाज इतना गिरा हुआ है कि ऐसे विचारों को गन्दे नाम देकर उस पर गालियों की बौछार करना प्रारम्भ कर देगा परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि मानव प्रकृति के इस उच्च शिखर पर पहुंच कर ही मनुष्य समाज का कुछ भला हो सकेगा। यह बात पत्थर की लकीर की तरह अमिट समझनी चाहिये कि जब तक समाज में से स्त्रियों को निर्वासित किया जायगा, जब तक पुरुषों की तरह उनके व्यक्तित्व को भी पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जायगा, तब तक हमारा समाज अधूरा ही नहीं प्रत्युत आचार भ्रष्टता की दलदल में धंसा रहेगा और उस में से निकलने का प्रत्येक झटका उसे दो अंगुल और भीतर ढकेल देगा। मैं तो उत्सुकता पूर्ण नेत्रों से अपने समाज के उन दिनों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब इस समाज की देवियें पुरुषों के साथ समानता की वेदी पर आकर मिलेंगी और उनके परस्पर सम्बन्ध कुवासनाओं के दुर्गन्ध से अम्लान होते हुए एक दूसरे की उन्नति में सहायक सिद्ध होने लगेंगे। जिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिन यह दृश्य दिखाई देगा उसदिन किसी स्त्री को पर्दे से मुख ढांपने की ज़रूरत न रहेगी क्योंकि तब संसार भरकी अपने से बड़ी आयु की स्त्रिया को हम अपनी माता की दृष्टि से देखेंगे और अपने बराबर की स्त्रियों को बहिन की दृष्टि से। ऐसी अवस्था में लड़के लड़कियेां के इकठे पढ़ने पर और स्त्रियों के पर्दा हटा कर किसी पुरुष के लेक्चर सुनने पर हमें कुढ़ने की जरूरत न रहेगी क्योंकि तब जिस से डर कर हम पुरुषों तथा स्त्रियों को अलग २ रखना चाहते हैं वह बात ही न रहेगी पुरुष तथा स्त्रियें खुले तौर से समाज में हिस्सा लेंगे परस्पर मिलेंगे परन्तु ऐसे ही जैसे पुरुष-पुरुषों से मिलते हैं और स्त्रियें स्त्रियों से।

"दुःखोद्गार"

(ले०—हरिहर ओझा "हरि")

निगाह डाला चहुं ओर पाया।
दुःखी जनों को कर मींजते हा।
प्रभू तिहारी महिमा न थोरी।
सदा बिहारी गरिमा तिहारी॥
नचा रहा है सब जीव को तू।
फंसा रहा है जग शृङ्खला में॥
नहीं बचे वो भ्रममोह से हैं।
अतः सदा दूर बने रहे हैं॥
विचित्रता देख पड़ी खरारी।
दुखी जनों के दुखियापने में॥
सदा सवेरे तुमको हि टेरें।
अजस्र बोले अति दीन होंके॥
परन्तु हा नाथ सदा वही वो।
सदा दुखी दीन बने रहे वो॥
परन्तु देखा विपरीत होके।
उत्तुंग प्रासाद विभूतियों को॥
सहर्ष माया अभिभूत थे वो।
कदापि तेरी चरचा नहीं थी॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुचैन बंसी सुख की बजी थी।
मनोरमा देह धरी खडी थी ॥
कहो कदा नाथ कदा ढरोगे ,
दुखी जनों की विपदा हरोगे ॥

दिव्य-मातृशक्ति

[लेखकः श्रीयुत शिवदयालु, मेरठ]

१ आर्य पूज्य-मातृशक्त ! महान् आत्माओं की प्रसविनि देवि ! अद्वितीयसौजन्य तथा सौन्दर्य्य की प्रतिमे ! तेरी पूजा*- तेरा सत्कार ही संसार-नाट्य-मञ्च पर महात्माओं का अवतरण है। यह विश्वविमोहक संसार सम्यक् सार युक्त है—स्वर्ग है तो तेरे कारण। मातेश्वरि ! तेरा तिरस्कार- मूर्ख अभिमानियों की आत्म-विडम्बना ही संसार को असार बनाती। स्वर्गधाम को नरक रूप में परिवर्तित करती है।

२ वन्दनीये देवि! तेरी चेतावनी जातियों की जागृति का कारण है। जिस जाति की पुत्रियां जागरण-घण्टिका को बजाती हैं वह ही जाति जागृति नौका पर आरूढ़ हो परतंत्रता रूपी सागर को पार करती हैं। किसी जाति की रमणियों का शंखनाद उस जाति के मृतक-शरीरों में नव-जीवन का संचार करता है। युद्ध-क्षेत्र के बीच जयमाल के प्रदान कराने वाली मातृ-शक्ति ही है। शत्रु-साम्मुख्य करते २ त्रस्त तथा पलायित योद्धाओं को युद्ध-दान के निमित्त पुनः प्रोत्साहित करने वाली वीरांगनाएँ ही हैं। निष्कर्ष मातृशक्ति के विना न मनुष्यों का जन्म है और न जातियों का पुनर्जन्म।

३ पूज्ये भविष्य की मातर ! संसार के भीरू भोले प्राणियों ने तुझको पर्दे में बन्दी किया। तुझको बन्दी नहीं अपितु निज भविष्य तथा स्वाधीनता को बन्दी किया है। आन्तरिक-सुन्दरता का सौजन्य पर्दे के बाहर चमकता है तथा वह वास्तविक प्रेम का सौजन्य—ईश्वर के समान अदृश्य तदपि सर्वत्र विद्यमान है।

४ मातेश्वरि ! तेरा सहयोग सर्वयज्ञों की सफलता है। कौनसा वह धर्म्म-प्रचार उतवा राष्ट्रोन्नति आदि का यज्ञ है तेरे विना जिसकी सफलता का साक्षी संसार का इतिहास हो ? सर्व यज्ञ निष्फल है-धर्म्म प्रचार तथा राष्ट्रोद्धार के महान् कार्य्य तेरी सहायता विना कदाचिदपि सम्पादित नहीं हो सकते।

५ देवि ! तू अर्धाङ्गिनी है। संसार शकट का वामचक्र है तेरे विना संसार-यात्रा—जीवन-यात्रा किस प्रकार सिद्ध हो सकती है। जो जाति अथवा जो देश तेरा तिरस्कार करता है अर्धाङ्ग-रोग से ग्रसित हो मौत के दिन पूरे करता है।

६ श्रद्धेय-शक्ते ! तेरा ही स्वरूप-सरस्वती, लोपामुद्रा, सूर्यराशीकद्रूः, भुवनपुत्री विश्वकर्त्री, आदि देवियाँ वेदमन्त्रों की

* यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः मनु०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषिकायें[1] हुई हैं। विश्वकी इन महती विदूषी देवियों ने ध्यान-योग में अवस्थित हो ईश्वरीय ज्ञान वेद भगवान् के पवित्र मन्त्रों के गूढ़ अर्थों का व्याख्यान किया। दिव्य शक्ते! तू धन्य है!! तूने शूद्र[2] ही उत्पन्न नहीं किये अर्थात् केवल मनुष्यों को जन्म ही नहीं दिया अपितु उन शूद्रों को पुनर्जन्म[3] के निमित्त-द्विजत्व के निमित्त तीन रात्रि पर्य्यन्त स्वकीय विद्या-गर्भ में धारण किया।

७ यज्ञ-ज्वाले! विश्व-तपस्विनी-समाज!! मातृशक्ते!!! तेरे तप और त्याग की पुरुषों के तप त्याग से तुलना करना विडम्बना मात्र है। प्रातः स्मरणीयः सीता सावित्री तारा दमयन्ती पद्मनी जोहन ...मातृ-मण्डल। तेरा बलिदान संसार में आदर्श बलिदान है।

८ मातेश्वरि! उपास्यदेव विश्वनाथ तेरी बार बार परीक्षाः घोर, घोरतर, घोरतम परीक्षा क्यों करते हैं? यदि वास्तव में यह परीक्षा ही है तो देवी इस रहस्य को पुकार कर। पुरुष की अर्धाङ्गिनी देवि! कहीं अभिमानी दुष्ट कृतघ्नी पुरुषों के भीषण पापों के फलों कोतो तू नहीं भोग रही है? मातेश्वरि! तेरे जीवन का प्रत्येक क्षण तप से परिपूर्ण है। कष्टों का भोग तेरे लिये सुख का साज है। कहीं दयालु पिता ने कृपाविष्ट हो पुरुषों को दण्डन दे तेरे ऊपर ही यह कृपा की है? नहीं: सर्वथा नहीं: दयालु पिता पूर्ण न्यायकारी हैं। स्वप्न में भी अन्यथा विचार करना हमारे लिए पाप है। अतः यह एक विचित्र रहस्य है जिसे हमारी बुद्धि समझ नहीं सकती।

९ आश्चर्य्य! कवि-शिरोमणी तुलसीदास [1]तेरी गणना ढोल, गवार आदि के साथ करें और निर्दयी पुरूषों को अधिकार दें कि वह तुझ को मारें; हा निरपराधिनी तुझ को ढ़ोल की नांई पीटें?

१० महदाश्चर्य्य!! वेदमंत्रों की ऋषिकाओं को संसार के प्रत्येक बालक को जन्मते ही शिक्षा देने वाली विद्याधरियों को पण्डित् मन्यमानी शठलोक पठनाधिकार से वञ्चित करने की दुन्दुभि बजावें। शठता की सीमा नहीं रहती जब यह शठराट पवित्र वेद भगवान के नाम पर उस दुन्दुभि को बजाते हैं। 'स्त्रीशूद्रो नाधीयातामिति श्रुते। कौन है वह प्राणी जो मनुष्य होने का अभिमान रखता हो और उसके हृदय में यह शब्द तीरवत न चुभते हों?

११ महत्तमाश्चर्य्य!!! पूर्ण-विद्वान् आजन्म ब्रह्मचारी सुविख्यात आचार्य्य शङ्कर महान् आत्माओं की जन्मदातृ को नरक का द्वार कहै। आचार्य्य शङ्कर। तेरे यशचन्द्र को कलङ्कित करने वाली विपुल कालिमा है। यदि आचार्य्य शंकर की जननी नरक का द्वार है तो शंकर नरक का क्या कहावेगा?

१२ दिव्येश्वरि। तेरा अपमान, तेरा तिरस्कार संसार में कौन कर सकता है? जिन्होंने तेरा अपमान किया संसार के इतिहास में वह अपमान के पात्र हुए। तेरे तिरस्कारकर्त्ता भारतीय आज भीतर बाहर सर्वत्र तिरस्कृत हैं। पराधीन तू नहीं हुई

---

७ १ मन्त्रद्रष्टारो ऋषयो बभूवुः। 'साक्षात्कृतधर्म्माणो ऋषयो बभूवुः'। यस्यवाक्यं स ऋषिः। अर्थात् जिन पूर्ण वेदज्ञ विद्वानों तथा विदुषियों ने ध्यानयोगस्थ हो मन्त्रों के गूढ़ अर्थों को समझ कर व्याख्यान किया वह ऋषि कहलाते हैं।

२ जन्मना जायते शूद्रः कर्मभिर्द्विजोच्यते। मनु०

३ आचार्य्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भ मन्तः तं रात्रीस्तिसृ उदरे विभति तं जातं द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः।

१—ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपितु जिन्होंने तुझको पराधीन किया आज वह ही संसार में पराधीन हैं।

१३ मातेश्वरि! तेरे पुजारी ने—संसार के महान् ऋषिदयानन्द ने ईश्वर के आदेशानुकूल तेरे अधिकारों की पुनः प्रतिष्ठा के निमित्त मरण पर्यन्त प्रयत्न किया। तेरे उचित गौरव को; तेरे सम्मान और समानाधिकार को पुनः पूर्ण प्रतिष्ठित किया।

भवानि! कोपं जहि! प्रसीद!! अनुकम्पय संसार की भावी दिव्यात्माओं का सृजन कर दिव्य-मातृशक्ते!

आर्य्य-जाति को नव-जीवन प्रदान कर
भारत-वर्ष को नव-जन्म; तथा—
संसार का पुनर्जन्म कर।

दिव्यदेवि! नमस्ते!

"शिव"

संसार की बहुमूल्य वस्तु।

[ले० श्रीचतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य]

(१)

भारत से बहुत दूर पश्चिम में एक रानी राज्य करती थी। उस के रूप की सारे देश भर में चर्चा थी। थी भी वह कमाँरी! जो उसे एक बार देख पाता, जी जान से मुग्ध हो जाता था। उसके लावण्य-लोल-सुडौल मुख-मण्डल से आनन्द फूट २ कर झड़ा पड़ता था। जिस ओर उस की आंखें उठ जाती थीं, उस ओर रस बरस जाता था। उसकी वाणी, वीणा की झङ्कार की तरह हृदयको लहरा देती थी। एक बार उस सुन्दरी को देख कर, फिर किसी को देखने की इच्छा नहीं होती थी। संसार में ऐसा कोई भी पुष्प नहीं था, जिस में, उस के उज्वल मुख के समान गन्ध-सौन्दर्य और कोमलता हो और न कोई ऐसा फल ही था, जो उस मूर्त्ति की मधुराई की बराबरी कर सकता, मानो, सिरजनहार ने संसार-भर के पुष्प फल आदि सुन्दर सरस कोमल वस्तु बना कर, सु-अभ्यस्त होकर, तब उस अलभ्य रत्न को सिरजा था।

उस स्वर्ग दुर्लभ पुष्प को, अपने २ हृदय पर सुशोभित करने के लिए, देश भर के युवक समूह लालायित हो उठे, पर उसे पाना सहज बात न थी वह रानी जैसी स्वरूपवती थी, वैसी ही बुद्धिमती भी थी। उसने संसार भर में से, अपने योग्य वर ढूंढ़ निकालने की बड़ी विलक्षण रीति निकाली थी उसकी प्रतिज्ञा थी, कि जो पुरुष "संसार की सब से बहु-मूल्य वस्तु" लादेगा, वही उसका पति हो सकेगा, अन्यथा उसे प्राणदण्ड होगा।

इस प्रतिज्ञा को सुन कर, सैकड़ों कामुक तो चुपचाप कान दबा कर, मन मार कर बैठ रहे और कई एक साहसी जो उसे हृदय से चाहते थे, उसके प्रण-पालन के लिए कमर कस कर तैयार होगये। इस धुन में, कईयों को धन-वैभव सुख सम्पति सब त्यागना पड़ा। कईयों को पर्वत की भयानक गुहाओं में सिंह और चीतों का शिकार बनना पड़ा। कई समुद्र के गर्भ में अलभ्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पदार्थ खोजने जाकर डूब मरे कईयों ने बड़े२ रत्न, मोती, जवाहरात ला २ कर रानी को भेट किये। पर, मनोयोग्य न होने से उन्हें फांसी पर लटकना पड़ा। कोई विफल मनोरथ होकर, बन में मतवाले होकर घूमने लगे। कइयों ने अन्नजल त्याग कर प्राण देदिया। और कई हठी-दुराग्रही उसके द्वार पर सिर पटक २ कर मर गये।

यह सब तो हुआ! पर, रानी किसी को मिलती! ऐसा एक भी व्यक्ति न मिला। केवल, अपने कारण ऐसा अनर्थ होता देख कर, रानी बड़ी क्षुभित हुई, पर, प्रतिज्ञा को कैसे टाल सकती! वह बारम्बार अपनी प्रतिज्ञा को धिक्कार देने लगी धीरे२ यहप्रवाह बन्द सा होचला, और लोग, रानी को पाना दुराशा मात्र समझ कर, मन मार बैठ रहे। और रानी भी अविचल-भाव से राज काज देखने लगी। पर वह, भीतर ही भीतर बड़ी उद्विग्न रहती। इसी प्रकार कई वर्ष बीतगये।

२

कुछ काल बाद एक विदेशी युवा यात्री आया और उसने रानी की प्रशंसा तथा प्रतिज्ञा सुनी। उसके मन में, उस उच्चाशया रानी को प्राप्त करने की बड़ी उत्कण्ठा लगी। लोगों ने बहुत समझाया, कि क्यों अपनी जान खोने चला है! पर, उस ने एक न मानी। वह रानी के अभिवाञ्छित पदार्थ की खोज में चल निकला। बड़े २ देश विदेश की यात्रा की। नाना प्रकार की बहु-मूल्य वस्तुएं देखीं। पर, उसके मन को एक भी न रुचीं।

एक दिन घूमते फिरते वह ऐसे स्थान पार जा पहुंचा, जहां एक अपराधी को फांसी लग रही थी। उसने देखा, बड़ी भीड़ खड़ी है और अपराधी आंखों से पट्टी बाँध कर लाया जा रहा है। वह महा उद्दण्ड डाकू था; उसके कठोर कर्मों की, उपस्थित मंडली में बड़ी २ आलोचनाएं हो रही थीं। कोई तो, इस बात की आलोचना कर रहा था, कि उसने कितने मकान, शहर आग लगा कर भस्म कर दिये! कोई उसकी हत्या की गणना कर रहा था। कोई इस बात की विवेचना कर रहा था, कि उसने कितने अमीरों को लूट कर बर्बाद कर दिया! और कोई दयार्द्र "हाय! बेचारे का जीवन क्षण मात्र है!" इसी की करुणापूर्ण आलोचना कर रहा था।

जब उसकी पट्टी खोली गई, तो उसने देखा, अपार भीड़ में ज़ञ्जीरों से विवश वह खड़ा है। एक बार' उसने संसार को त्रासित करने वाली भयङ्कर अपनी बाहुओं की ओर देखा; जो इस समय तलवार से सुशोभित होने की जगह, दुःखदायी ज़ञ्जीरों से कस रही थीं। जिन पैरों के धमाके से राजा और अमीरों के कलेजे दहल जाते थे, वे पैर। उस समय भारी बेड़ियों के विवश हो रहे थे, जिस हुंकार को सुनकर स्त्रियों के गर्भ गिर जाया करते थे। आज उस हुंकार के स्थान में उस के मुख से, एक हलकी सी आह निकली। उसने शून्य दृष्टि से अन्तिम बार संसार के सारे विभव को देखा। जिस दृष्टि में संसार को त्रासित करने की सामर्थ थी, वही दृष्टि अत्यन्त त्रासित होकर संसार को देख रही थी। अचानक, वह किसी वस्तु को देखकर चिल्ला उठा। वह वस्तु एक पांच वर्ष का बच्चा था। जो वहीं उसके मृत्यु क्षेत्र के पास आनन्द से गेंद खेल रहा था। उसे देखते ही अधीर होकर, वह अधिकारी से गिड़-गिड़ा कर विनय करने लगा, कि ईश्वर के लिए उसे एक मिनट के लिये टिकटी से उतार कर, बन्धन मुक्त कर दें। उसने जिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ढंङ्ग से यह तुच्छ प्रार्थना की, उसे देखकर सब को दया आई। अध्यक्ष ने उसे मुक्त कर दिया; केवल भाग जाने के डर से बेड़ी न खोलीं। वह दौड़ कर तुरन्त उस बच्चे के पास गया और उसे गोद में उठा कर छाती से लगा लिया। उसके मुख से यह शब्द निकले, प्यारे बच्चे! तुझे मेरा यह महा भयङ्कर मृत्यु-क्षेत्र आनन्दमय क्रीडा-स्थल हो रहा है। जब मैं तेरी बराबर था तब मैं भी ऐसी ही गेंद से, इसी प्रकार किलोलें किया करता था। और मेरी मां मुझे कुछ खिलाने को पकड़ने चलतीं, तो दौड कर, छिप कर उसे अत्यन्त सुखी करता था। मेरे नटखटपने से वह बहुत ही दुःखी होती। पर, जब कभी मैं बीमार पड़ जाता और चुपचाप पडा रहता, तब वह प्यासी की तरह, फिर मुझे ऊधम मचाते देखने के लिए अधीर हो जाती थी। और जब मैं चारपाई से उठ कर कूदने दौड़ने लगता, तो उसके सुख की सीमा न रहती, इस प्रकार, मेरे बचपन की स्वच्छन्द लहरों में ब्रह्मज्ञानी की तरह, उसे दुःख सुख एक ही पदार्थ बोध होता था। आज, तू धन्य है! तेरी पवित्र आत्मा को संसार के ताप से कुछ भी सम्पर्क नहीं है। यह कहते २, उसकी आँखों में, भर २ दो मोती से आंसू भर आए हमारा नव-युवक यह सब व्यापार देख रहा था। उसने आनन्द से गद्गद हो कर कहा—"अहा! इन आंसुओं से बढ़ कर बहुमूल्य पदार्थ और क्या होगा? जो एक महापापी के नेत्रों से अपने जीवन के अन्तिम लहमों में, पश्चात्ताप से, पवित्र बचपन की याद में बहें।" यह कह कर उस ने वे दोनों आंसू भक्ति-पूर्वक अपने हाथों पर ले लिये और उन्हें रानी के पास ले चला।

३

रानी ने समाचार सुनकर उसे अपने सामने बुलाया और आप पर्दे में उस के उपहार को देखने की लालसा से आ बैठी। युवक ने अत्यन्त करुणोत्पादक स्वर से, यह कटु कथा सुनाई, कि सुननेवालों के हृदय पिघल उठे। रानी ने मनोयोग पूर्वक सब कथा सुनी। और सहानुभूति सूचक स्वर में कहा—"निस्सन्देह, तुम ऊच्चाशय और परिश्रमी मालूम होते हो। पर तुम जो पदार्थ लाये हो, वह वास्तव में सब से अच्छा नहीं कहा जा सकता। यद्यपि उस का उत्तमता में कोई सन्देह नहीं। इसीलिए तुम्हें प्राण दान दिया जाता है, कि तुम एक बार फिर अपने भाग्य को आजमाओ।"

हृदय को अत्यन्त दृढ़ करके, फिर वह अभीष्ट सिद्धि को चल खड़ा हुआ। जिस समय की यह बात है उन दिनों रेल की सवारी न थी; न चौड़ी २ सड़कें थीं। किसी ने कह दिया था, कि दूर देश भारत में, ऐसा अमूल्य पदार्थ मिलेगा। भारत की ही सुध उसने बाँधली। बड़ी २ खाड़ी, झंखाड़, जङ्गल, वन, नदी, नालों को पार कर, सिंह और चीतों से अपने को बचाता हुआ, भूख-प्यास को सहन कर, भारत में पहुंचा। भारत में पैर रखते ही, उसने एक अद्भुत चमत्कार देखा। उसने देखा एक चिता धक् २ जल रही है। चारों-ओर, सैकड़ों नर-नारी चुपचाप नीरव भाव से खड़े हुए, मनुष्य की क्षणभङ्गुरता पर सोच रहे हैं। उन सब के आगे आज ही की अनाथिनी हुई, पाले से मारी हुई कुमुदनी की तरह, एक देवी-रूप युवती एकाग्र-मन से, चिता की ओर हाथ जोड़े स्थिर-भाव से खड़ी है। उस के बाल बिखर रहे हैं; वस्त्रों की उसे सुध नहीं है। उस के नेत्रों में आशा सुख और प्रणय की कभी मधुर मिश्री घुलती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रही होगी। पर, इस समय हाय! वह बड़ी ही भयङ्कर हो रही है। उसके कोमल कपोलों पर, प्रभात की ऊषा-काल की सी पिलाई छा रही है। उस की दशा वर्णनातीत है। मानों विधाता के निर्दयी हाथों ने उस अर्द्ध-विकसित पुष्प को, बड़ी ही निर्दयता से कुचल फेंका हो। तथापि, एक अनुपम-श्री, उस अशोभा में शोभा की झलक दिखा रही है। उस मूर्त्ति में चपलता नहीं है सुघड़ता नहीं हैं मधुरता नहीं है; सरसता नहीं है; पर, फिर भी उस देखते रहने को जी होता है। इस का कारण यही है, इन सब के स्थान पर, उस मूर्त्ति में पवित्रता की उज्ज्वल-ज्योति प्रतिष्ठित है। हो न हो, इसी कारण, उसदेवी को माता कहने को जी चाहता है। उपस्थित मण्डली में युवा-वृद्ध-बाल-नर-नारी, सभी एक-दम चिल्ला उठे,-"सती माता की जय" अग्नि की ज्वाला पूर्ण वेग से धधक उठी; फिर, ध्वनि उठी —'सती माता की जय" अग्नि की ज्वाला देखते २ आकाश को छूने लगी। एक गम्भीर-गर्जन के साथ, फिर "सती माता की जय" ध्वनि हुई अब समय आगया था, कि संसार आत्म-त्याग का सर्वोत्कृष्ट-दृश्य देखे। सती ने धीर-भाव से चिता की ओर पद बढ़ाया; साथ ही, शंख, भेरी, दुन्दुभी और घड़ियाल की ध्वनि आकाश तक गूंज उठी। सती ने एक बार उस चिता की प्रदक्षिणा की और धम से उस में कूद पड़ी। और अपने पति के अधजले चरणों से लिपट गई। उस समय वायु का वेग बढ़ चला; आकाश मैला हो गया; सूर्य का प्रकाश धीमा पड़ गया। मानों, उस क्षण में विश्व का तेज, सती के पवित्र शरीर में आ विराजा था। चारों तरफ से अग्नि की लपटोंने, दौड़कर उसका स्वागत किया। और उसने प्रेम-पूर्वक उस विश्व-ध्वंसिनी-ज्वाला का आलिङ्गन किया। सती की जय-घोष से, दशों दिशा व्याप्त होगई। पल-भर में वह स्वर्ण की तेजोमयी-मूर्त्ति, उस स्वर्ण के तेजोमय-सिंहासन पर बैठ कर आँखों से ओझल होगई। प्रेम का, भक्ति का, आत्म-त्याग का, गौरव का, यह अविचल, अटुट, अनुपम दृश्य देख कर, हमारे युवक के नेत्रों में आँसू भर आये। ऐसा कठिन व्रत, उस ने काहे को देखा था! उस ने कहा, संसार में इस से अधिक मूल्यवान् पदार्थ क्या होगा! यह कह कर, एक मुट्ठी भस्म उठा कर, युवक वहीं फिर दूर देश रानी की सेवा में लौट चला।

मार्ग की बड़ी २ कठिनाइयों को सहकर, वह अन्त में वहाँ पहुंचा। रानी ने बड़ी प्रसन्नता से उसे महल में लिया। युवक ने पहुंच कर, ऐसे शब्दों में उस दृश्य का वर्णन किया, कि सुनने वालों के कलेजे उमड़ आये। सारे श्रोताओं ने पत्थर की मूर्त्ति की भांति, अविचल-भाव से सती की पवित्र कथा सुनी। तदनन्तर, युवक ने वह मुट्ठी भरी धूलि उठाकर, रानी के सन्मुख रखदी। रानी की आँखों में आंसू छलछला आये थे। उस समय उसकी मुख श्री, ओसभरे गुलाब के समान शोभायमान होरही थी। उसने बड़ी भक्ति औरश्रद्धापूर्वक वह भस्म माथे पर चढ़ाई। और स्नेह तथा कृतज्ञता के स्वर में उसने कहा,—परम अनुग्रही युवक! तुम्हारे उद्योग से मैं सन्तुष्ट हूँ। तुम उच्चाशय हो! उच्च-हृदय के अधिष्ठाता हो! और सच्चे खोजी हो! पर, तुम अभी तक अभीष्ट पदार्थ नहीं लासके हो। पर, निश्चय जानो, कि तुम शीघ्र ही अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकोगे। लाओ! अपना हाथ मुझे दो, जिस से मेरे वचन पर तुम प्रतीति कर सको। यह कह कर अपने कोमल कर-कमलों में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रानी ने, युवक का हाथ लेकर आदर पूर्वक तनिक दबा दिया।

(४)

युवक का हृदय मानों बोझ से दब गया सम्हल कर वह उठा। एक लम्बी साँस उसने ली और चुपचाप उठकर चला आया। जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया, रानी एक टक उसे देखती रही। तब भी उस की आँखों में, आँसुओं के दो बड़े २ मोती सुशोभित थे। युवक सीधा भारत वर्ष की सुध बांध कर चला। मार्ग के क्लेशों का कुछ ठिकाना नहीं था; पर, उस का हृदय अटल-अचल था। इस बार वह घूमता फिरता, एक समर-क्षेत्र में आ पहुँचा। उस समय ज्येष्ठ मास की दुपहरी झलझला रही थी— चारों तरफ आग बरस रही थी, पेड़ का दूर २ तक चिह्न भी नहीं था। मीलों बालू को छोड़ कर कुछ नज़र नहीं आता था। गर्म हवा के झोंके, तन को-मन को झुलसाये डालते थे। किसी जीवित जीव का वहां नाम भी नहीं था। संसार की सर्वोत्तम जाति मनुष्य की, वहां बड़ी भयङ्कर दशा थी। प्रायः सभी निर्जीव थे। किन्हीं की अँतड़ियों को गीदड़ खींच २ कर खारहे थे; किन्हीं की पगड़ी को आंत समझ कर, चील आकाश को ले उड़ी थी। दूसरी, झपट्टा मार कर उस से छीनना चाहती थी। कहीं किसी शव पर कौवा बैठा २, उसकी आँखे निकालने को चोंच चला रहा था। किसी का सिर उसके धड़ से दूर पड़ा, धूल में लोट रहा था। किसी नर-केसरी के हाथ में, तलवार दबी की दबी रह गई थी। और उसकी बत्तीसी के बीच में, होंठ ऐसा गुँथ गया था, कि छुड़ाना कठिन था। सर्वत्र, निस्तब्धता का राज्य था। जब ये जीवित रहे होंगे, तब कैसी विभीषिका रही होगी! परस्पर की हिंसा की ज्वाला का प्रवाह कैसा भयावह रहा होगा उनकी लाशें सूर्य की किरणों में सड़ कर बड़ी दुर्गन्ध फैला रही थीं। हमारा युवक यह दृश्य देख कर भौंचक-सा रह गया। यह हिंसा-द्वेष का परिणाम! यह लोभ-ईर्षा का कटुफल! यह उस देवाधि देव की अनुपम कारीगरी का, ओछे मनुष्यों द्वारा इस प्रकार निठुराई से कुचले जाना, आज से प्रथम युवकने नहीं देखा था। शान्ति! शान्ति को लोग कितना चाहते हैं, पर, इस नीरव शान्ति से, हमारे युवक का मस्तिष्क भिन्ना उठा। यह क्यों? कदाचित् इसलिए, कि उस शान्ति के साथ, स्वार्थ, ईर्ष्या और विद्वेष की गन्ध आती थी। उस शान्ति से, युवक का छोटासा दयामय हृदय, महा-अशान्त हो उठा। अत्यन्त कातर होकर, युवक पैर बढ़ा २ कर आगे जाने लगा। उसे बड़ी इच्छा थी, कि वह जाने कि यह कौन स्थान है। पर, किस से पूंछे! निर्दयी, अधर्मी मानव-जाति की कठोरता ने, परम-पिता की लहलहाती बाग़ बहारी को, ऐसे अमानुषी भाव से कुचला था, कि एक भी फूल समूचा न बचा था। मन ही मन दुखी हो, युवा वहां से खिसक ने ही को था, कि एक धीमी कराहने की आवाज, उसके कान में पड़ी। उस कराहने में बड़ी वेदना भरी थी। उस ध्वनि से स्पष्ट ज्ञात होता था, कोई प्राणी अभी २ मृत्यु से भेंट कर रहा है।

शब्द को लक्ष्य करके, युवा वहां पहुंचा, तो क्या देखता है, कि एक युवा सिपाही उल्टा मुंह किये, धरती में लोट रहा है। सूर्य की तेज किरणें उसे झुलसा रही हैं। उस क मुख पर, मृत्यु के चिन्ह प्रकट हो रहे थे उसके शरीर पर असङ्ख्य घाव थे शरीर उसका छलनी हुआ पड़ा था, बड़े कष्ट से वह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्वास ले रहा था। वह रोम २ में दुख का विष उपजाने वाली कराहने की ध्वनि उसी मनुष्य की थी। युवा ने झपट कर अपने आँचल से उसके मुख पर छाया की। और प्रबोध देने की चेष्टा करने लगा। धीरे २ उसे चेत हो आया चेत होते ही एक अपरिचित व्यक्ति को सन्मुख देखकर उसके मुर्दा शरीर में विद्युत् का वेग छागया और पास पड़ा तलवार उठाला; और "अधर्मी! पामर-यवन!! ठहर!" कह कर, उसने वार कर ही तो डाला! पर, युवक उछल कर बच ही तो गया और कहा "बहादुर! मैं तेरा शत्रु नहीं हूँ एक मुसाफिर हूं।" तब उसने नजर उठा कर, स्थिर दृष्टि से आगन्तुक की ओर देखा और कहा, "अतिथि! तुम अतिथि हो? इस अवस्था में तुम्हारी क्या सेवा करूं! देखते ही हो मैं मरणोन्मुख हो रहा हूं। बोलो, तुम्हारी कुछ सेवा करसकता हूं" युवा उसकी उदारता और उच्चाशय पर अचम्भित हो गया। फिर पूछने पर पता लगा, कि यह "राजपूताना है और यह पुरुषसिंह 'राजपूत' है। राजपूतों के आत्मत्याग और देश प्रेम की, युवक ने बहुत सी कहानियाँ सुन रक्खी थीं आज यह सब देख भी लिया। एक बड़े, विकट युद्ध में, जो तातार देश की प्रबल सेना से हुआ है, यह उसी में घायल हुआ है। वह किसी का नौकर सिपाही नहीं था वरन् एक ग्रामीण किसान था। देश पर शत्रु चढ़ आये हैं, यह सुनकर, अपने देश पर आत्म-बलिदान करने को, वह युद्धक्षेत्र में आया था। राजपूतजाति की विजय हुई, सही! किन्तु वह वीर वीरगति को प्राप्त हुआ। उसकी देशभक्ति और आत्मगौरव को देख कर और उसकी जात्या भिमान की बात सुन कर, युवक दंग रह गया। वह उस पर—उसके हृदय के सौन्दर्य पर मोहित हो गया उसकी इच्छा थी, कि कुछ बातें करें; पर, अब समय नहीं था। उत्तेजना के मारे, उस के घावों से रक्त बहने लगा। धीरे २ वह हत प्रभ होता गया। उसने अनुनय की दृष्टि से युवक की ओर देखा। इसका अभिप्राय यह था, कि अतिथि के प्रति जो भूल से उद्दण्ड बर्ताव हुआ है उसके लिए वह अनुताप कर रहा है। युवा के नेत्रों में आँसू भर आये अन्त में उसके हृदय के घाव से एक रक्त की बूंद निकली। और यही उसके जीवन की अन्तिम बूंद थी। इस बूंद के साथ ही, उसके प्राण-पखेरू उड़ चले। युवक ने बड़े आदर-पूर्वक, उस बूंद को अपने हाथों पर ले लिया और उस रानी के पास ले चला जब वह वापिस रानी के पास पहुंचा, तब उसकी बुरी दशा थी; कपड़े फटकर चिथड़े हो गये थे डाढ़ी के बाल बढ़कर आपस में उलझ गये थे, और सूरत भूत सी हो गई थी। रानी ने प्रेमपूर्वक, दर्बार करके उस का स्वागत किया। धीरे २ उसने सारी कहानी कह सुनाई। चारों ओर धन्य २ की पुकार मच गई। रानी ने उसे क्षौर कराकर, सुन्दर राजसी ठाठसे राज सिंहासन पर जा बैठाया और उसके चरण धोकर जल मस्तक पर छिड़का। एक स्फटिक का बहुमूल्य पत्थर लाकर स्वर्ण से लिख दिया, कि—

'वह रक्त की अंतिम बिंदु (बुंद) जो देश की रक्षा के लिए निकले, संसार की सब से अमूल्य वस्तु है।"

——

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोहिनी के आँसू

ले०—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

‡

ठीक दो मास के पश्चात्, आज कुन्दन को ज्वर ने छोड़ा है। इस बीच जैसे- जैसे कष्ट इन दम्पतियों ने सहे हैं, उन का उल्लेख कौन करे? कोई देव-देवता न छोड़ा होगा जिसकी पूजा मनता यथाबल न मानी हो! रात का जागरण, दिन भर का अनशन, चौसठ घड़ी की चिन्ता ने जायापतियों के वर्ण बिगाड़ दिए! शरीरों को निबल कर दिया। खर्च से हाथ तंग हो गया! यह सब कुछ होने पर भी--सरला और शङ्कर—प्रसन्न-चित्त हुए देव-देवताओं का गुण-गान करने लगे।

शंकर--(गुड़गुड़ीकी नली को मुंह से निकाल) "कुन्दन की मां! भोले-भण्डारी बड़े ही दयालु हैं। देखो, सब कुछ हुआ बड़े २ दुःख सहे; परन्तु जैसी दया अन्त में दिखाई—उसे देख क्या हम इन सब को दुःख गिनें?"

सरला—[कुन्दन के तैल-मर्द्दन करती हुई, बीच में तर्जनी अङ्गुष्ठ से आंचल को माथे की ओर थोड़ा खींच] "इस जन्म में जो धर्म न होसका है, तो पाप भी नहीं किया है। न किसी की चोरी ही की है। न चाहते हैं कि किसी के दिल को ही दुःख पहुंचे! इस लिए यही समझ में आता है कि पिछले जन्म के कर्म का ही फल है! कुछ शेष भोग भोगे हैं!! कुछ हो, महादेव स्वामी ने पूरी रक्षा की है! देव-देवताओं ने मुहं उजला कर दिया! इसी सोमवार से मैं तो शिवजी महाराज का व्रत आरम्भ कर दूँगी।"

शंकर—(चिलम लौटाकर, तवा निकाल, फिर से तम्बाकू और तवा रख, घुटने के सहारे से 'महादेव-देवन के देव!' कह, उठा और बोला) "आग है-न?"

सरला—(उंगली से अंगीठी को बता) "उस में होगी"।

शङ्कर उसमें से अग्नि निकाल, चिलम भर फिर वहीं बैठा। और कुन्दन की

---

‡

☞ सूचना आज कल हिन्दीसाहित्य-क्षेत्र में स्वार्थी जनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक "ज्योति" के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा॰ रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओर देख, बोला–"इसका तो नया ही जन्म हुआ है !"

सरला—(कुन्दन की दुर्बल देह पर एक विशेष दृष्टि डाल कुछ देर में बोली) "देखो-न, माथे की हड्डी बाहर को, खोपड़ी की पीछे को, गाल अन्दर को, और बांस (पृष्ठ वंश की हड्डी) कितनी ऊपर को निकली है। पसलियों ने बाहर हो कर, कैसी ....

कुन्दन बीच में ही बात काट कर बोला अरी मां! जैसे हम हाज़िरी देन को या बेत खानेको लाइन लगाते हैं वैसे इन (पसलियें) की लाइन लगा है!"

सरला—(स्वामी की ओर देख, बोली) 'सुना?'

शंकर—(दो--तीन बार शिर हिला "हाँ, मस्तनाथ हैं लम्डे को कुछ ग़म-फ़िक्र थोड़े हा हैं!"

कुन्दन फिर बोला—"अम्मां-री! देख, पेट भी इन में कहीं चला गया! छुपसा गया! जैसे माष्टरजी को देख, जिसके याद नहीं, वहलड़का जमायत में छुपता है!!"

शङ्कर इस बार हंस पड़ा। परन्तु सरला कुछ कृत्रिम-कोप कर बोली "बस-रे बस बड़े! चुप भी हो; इस में भी स्कूल ही आ-बड़ा!!"

कुछ काल के अनन्तर शङ्कर गुड़गुड़ी की धूआं नाक--मुहँ से छोड़ता, बोला—"क्या बताऊं-री कुन्दन की माँ!"

सरला—(सहसा उद्विग्न हो, क्षुब्धस्वर में) "क्यों--जी? क्या बात?"

शङ्कर[कुछ देर मौन रह] "अरी, पास पैसा नहीं, हाथ तंग हो रहा है।"

सरला—"न हो, घबराने का क्या काम है? अब हमें करना भी क्या है?"

शङ्कर—[स्थिर-दृष्टि से सरला की ओर देख] "अभी भूल गई—री?"

सरला—[सम्भ्रान्त-सी हो] "क्या...?" कहा परन्तु कुछ ही क्षण होने पाया कि सहसा कुछ स्मरण हो आया, जिससे उसका समस्त-गात्र कण्टकित हो उठा और संक्षुब्ध-स्वर में बोली--]"ओह! भूलेंगे कैसे? जन्म भर भी नहीं भूलते!"

शंकर—[सावधान हो] "हां! देखो तो-जिस समय महाराज [की मानता कुबूल की कि उबर जैसे था ही नहीं! फिर दिन दूना-रात चौगुना सुख ही सुख होता आया! वे तो अनन्त बल के स्वामी हैं, कुछ डरना भी चाहिए!"

इस समय सरला का हृदय सहसा भार से दब-सा गया। वह शीघ्र ही उत्तर में बोली:--

"नहीं-नहीं, ढील का काम नहीं; फिर सब कुछ उनकी ही दया-मया से होजा-एगा।" और भुजा से बाजू और गले से हंसली उतार, देती हुई बोली-"लो सब कुछ पीछे और यह पहले।"

शंकर—[गम्भीर-स्वर से] "हैं?" कह, कुछ देर निश्चल-निर्वाक् रह बोला" तो क्या . .. .?

परञ्च सरला ने बात समाप्त न होने दी, पहले ही कहा।

"क्या....कुछ नहा, चौथे दिन सोमवार है, आजही कहीं इन्हें धर, रुपये लाओ। और सोम से पूर्व ही तयार करादो, बस! यही उत्तम है!"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शंकर--[मन्द-स्वर में] "अच्छा !" कह, गृहणी के मृदुल-मञ्जुल-पाणि-पल्लवों से ग्रहण कर उत्साहित हो, बोला-'नन्हे कुम्हार का लम्डा और नन्हा दोनों दो-दिन में तयार कर देंगे। ईंटें, मिट्टी और चूना इनके रुपये लाकर आज ही डलवालूं।"

सरला--[स्वामी की ओर देख] "हाँ जी ! शिवजी महाराज दया करेंगे तो यह सब फिर दो-ही महीने में अपने हो सकेंगे। काम बराबर चल पड़े, फिर क्या है कुछ सोच नहीं ! जाओ !" कह, फिर बोली "अच्छा गोल छतरी, गुमटी वाली बन-वाना, सुन्दर लगेगी। तीनों तरफ कि यारों की जोड़ियाँ हों, जिससे कुत्ते-बिल्ल आदि न घुस पाएं। छोटी-छोटी पैड़ियाँ हों, बाल-बच्चे जिससे सुख से चढ़ सकें हमारे आस-पास कोई शिवालय भी न था भोले-बाबा कैसे घट में आ विराजे?"

शंकर--[गम्भीर हो, वहाँ से उठ, बोला--] "देखिए, जो हो सकेगा ! जैसी महाराज की इच्छा होगी !"

दिन भर में अनेक बार अनेक चित्रविचित्र मेघ दलों का इधर-उधर जाना निष्फल रहा, जिस प्रकार निर्धनों के विचार दल ! जलभरी घटाओं को देख, ग्रामीणजन टकटकी लगा, मनोभाव प्रकट किए कि--"अब वारे-न्यारे हुए" परञ्च सब व्यर्थ हुए। कहां प्रचण्डतर--प्राग्वायु के आगे विचारी निराधार घटाएं ठहर सकें? आशा दुराशा--मात्र ही रही। 'भाद्र मास में पहाड़ (उत्तर) की वायु चले तो सौ कोसों से वर्षा खेंच, ला-सके !' यह श्रुति-परम्परा अतथ्य कैसे हो ? फिर घटाओं का क्या दोष ? परन्तु फिर भी देश दशा देख कर विवशता में भी कुछ बूंदे डाल ही जाती हैं। जैसे सार्वजनिक सभा में कर्म-वीर देश-भक्त की वक्तृता द्वारा कर्मवीर देश भक्तों का भयावह लोम हर्षण अत्याचार-सहन सुन, उपस्थित धनी मानी एवं, अकर्मण्य भी आस पास के बैठने वालों के समक्ष दो अश्रु-बिन्दु टपका हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं--'बस, इतना ही वश है, यही हो सकता है !'

--इस दिन शंकर ने अनेक बार चाहा कि--'शहर चलूं, सौदा लाऊं !' किन्तु बादलों की ओर देख, विचार स्थगित कर देता था। छत्री घर में एक ही थी, वही लड़के स्कूल ले गए। खैर ! छप्पर के नीचे (घर में) बैठा कालक्षेप करता रहा।

* * * *

लाला रामप्रसाद जी ने चौबारे की खिड़की में से, आंगन की ओर मुंह निकाल खांस कर, "अरे, मिन्टू ! मिन्टू रे !" पुकारा पुकार सुन, बैठक की दरीची खोल, लाला शिव प्रशाद जी, बाहर निकल; द्वार शिला (देहली) पर खड़े हो बोले--"क्यों भय्ये रामप्रकाश ! कुछ काम है-क्या ? मिन्टू तम्बाकू कूट रहा है। सीरे में हाथ हैं।"

रामप्रसाद--"नहीं-जी ! काम तो ऐसा कुछ नहीं। बड़ी मां जी कह रही हैं--लम्डा अभी तक नहीं आया !'

शिव०--"तो क्या देखने को इसे भेजना है?"

राम०--"हां, कह रहीं हैं-जरा पीर के पीपल तक हो आए। गांव में आकर, कहीं लग गया हो खेल में ?"

--शिव प्रसाद जी उत्तर में 'अच्छी बात' कह, उलटे बैठक में आ, भृत्य से बोले-"जा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रे मिन्टू! जरा पीर के पीपल तक तो हो आ। कहीं खेल देख गांव में ठहर गया हो?'

मिन्टू—"कौन भय्ये, हरप्रसाद?'

शिव—"हाँ! जा—ऐसे ही चला जा। क्या हाथ धोएगा"

—मिन्टू 'अच्छा जी' कह, मूसली का सिरा ऊंखली पर टेक, कोनी ऊपर उठाये चल पड़ा। चौपाल से थोड़ा ही आगे निकला कि बस्ता सिर पर धरे, दबात हाथ में लिए हरप्रसाद को आते देखा और बोला—"भय्ये आज देर क्यों?' दबे पांव ही पीछे हट, हरप्रसाद—ज़रा दूर से बातें कर, मुझ से न लगना'

मिन्टू—"क्यों?"

हर०—"शङ्कर मोची के लम्डे ने मेरा बस्ता छू लिया, और मैंने पता न होने से, उसे उठा लिया। लाला जी घर तो नहीं हैं, हुए तो ज़रूर मारेंगे!" "ऊं ऊं" कर डब डबाई हुई आंखों ने गोल-गालों पर दो बूंद भी तो डाल दीं!

मिन्टू—तो सही पर मारेंगे काहे को? जान कर ऐसा थोड़ा ही हुआ है? रोओ—नां, सीधे घर चले चलो"

—हर प्रशाद उसी मरी सी चाल से चलता हुआ, एक-एक नयन से ३-३ अश्रु-बिन्दु डालता हुआ, घर पहुंचा। ज्यों घर में प्रविष्ट होने लगा—त्यों ही बैठक में से लाला शिवप्रसाद जी देख बोल पड़े:-

"आगए भय्ये!"

—हरप्रसाद "हां" न करने पाया कि फिर लाला शिवप्रशाद जी ने प्रश्न किया—"रोते क्यों हो?"

—हर प्रशाद ने धीरे से कहा "नहीं" कह, शीघ्रतया अन्दर घुस गया। आंगन में पहुंचे किताबें एक ओर धर, नहाने वाली शिला पर बस्ता पटक, आप जीने में ५-६ सीढ़ियां चढ़ पुकारने लगा—"अरी मां"

—बड़ी मां खिड़की में से आंगन की ओर झुकीं। नाड़ टेढ़ी कर जीने की ओर देख बोलीं—"क्यों रे वहां क्यों?"

हर०—"[दबे स्वर से] 'यहां ओओ, बड़ी मां!"

बड़ी मां 'टट्टी के हाथ' समझ लोटा पानी का ले, आईं और पास जा बोलीं—"क्यों—क्या हाथ धोने हैं?"

हर०—(एक सीढ़ी और भी नीचे उत्तर,मुंह, फुला कर, गुनगुने स्वर से) "नहीं तो हाथ नहीं धोने"

बड़ी मां—"तो—?"

हर०—"न्हिला दो"

बड़ी माँ—"क्यों?"

हर०—"छूआ गया"

—बड़ी मां क्रोध से लाल हो चिल्ला उठी —"किस से?....यही करके आता है!"

हर०—"ऊं-ऊं" कर, कुछ आंसू चुआ बोला —"शङ्कर मोची के लम्डे ने बस्ता छू लिया और बे-खबरी से मैंने उसे उठा लिया!"

वृद्धा विष्णु की उपासना करने वाली, धो धो कर लकड़ियां जलाने वाली थी। सुनते ही क्रोधानल से और अधिक लाल हो उठी। उसका हृदय क्रोध के मारे धंधकने लगा। नेत्र रक्त हो गए। चिल्ला कर सब को सुनाती हुई बोली—"शंकर के लम्डे आसमान पर चढ़ेंगे! डिपटी बनेंगे! कुछ कहना ही नहीं—नबाबी छा रही है!!"

वृद्धा की क्रोध-भरी धर्षणा सुन, उधर से शिवप्रसाद देहली (द्वार-शिला) पर,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

'इधर रामप्रसाद ऊपर खिड़की की राह से झुक, बोले—"क्यों-क्यों" क्या बात है ?"

वृधा और भी क्रोध से चिल्ला कर, शंकर का घर हाथ से बताती हुई बोली—"छू लिया शङ्कर के लम्डेां ने"

रामप्रसाद हर प्रसाद की ओर रक्त नेत्र कर, उसे झिड़क कर बोले-"तेरा उन से काम क्या ? वे तो तेरी जमायत में भी नहीं हैं"।

रोनी-शकल बना, हरप्रसाद ने कहा—उनके पैर से बस्ता छूया गया !"

रामप्रसाद उठे। वेग से जूता पहन जीने में आ बोले—"अलग हो, नीचे उतरने पर, स्वयं आंगन में आ, अपने बड़े भय्ये से कहने लगे—"शंकर वालेां ने छू लिया। आगे भी एक दो बार ऐसा कर चुके हैं।"

शिव. अच्छा, जाओ। आज अच्छी तरह धमका दो।

रामप्रसाद सुन, अपनी बेंत ले, चलने को उद्यत हुए। और पास खड़े हरप्रसाद से 'कहां हैं रे, वे' कहां। हरप्रसाद ने 'रास्ते में आ रहे हैं' उत्तर दिया। बस, रामप्रसाद सुन, सर्पट चले।

[लाला रामप्रसाद के तो कोई सन्तान हुई ही नहा। ला० शिवप्रसाद ज़ी की नौ सन्तानों में से यह एक जीवित है। अतः सब ही घरके इसे बड़ा प्यार करते थे। घर में भी मालदार हैं। गांव में कोई भी ज़रा लड़के को कुछ कहदे तो सब घर के जन मरने-मारने को तयार हो जाते हैं। ख़ास कर लाला रामप्रसाद, इस लिए कि स्वभाव बड़ा तेज़ है। एक साथ ही बिगड़ उठते हैं। क्रोध एक बार इन्हें आजाए, फिर जाना ही नहीं चाहता ! तिस समय ज्ञान चक्षु सर्वथा बन्द हो जाते हैं ! वैसे तो कोप का यह स्वभाव भी है परन्तु रामप्रसाद की प्रकृति इसी प्रकार की है कि 'बलवान के समक्ष चूं न करना, और निर्बल को खाने के लिए तयार हो जाना ! ठीक आधुनिक वैश्यों के स्वभाव से स्वभाव समता रखने वाला रहा !!!

शङ्कर गुड़गुड़ी की नली को परे को फेर अंगड़ाई तोड़ता हुआ उठा। सोचने लगा—"अब तो बाज़ार का क्या वक्त रहा है ? जो जाऊं भी तो कैसे ? लम्डे छत्री लेगए, अभी तक लौटे नहीं। न जाने क्या बात है—कहां खेलते रहे ? खैर अब तो कल ही सही।"

कुछ क्षण उपरान्त वहां से हुक्का उठा, गुड़गड़ाता हुआ, अभी-अब बनवाए अपने बरगद वृक्ष के पास के शिवालय तक पहुंचा वहां खड़े कुछ भी मिनट न होने पाई कि थोड़ी दूर पर नर नारियों का हो-हल्ला सुनाई दिया। उसके निमित्त शंकर के हृदय में उत्कण्ठासी हुई। वह एक हाथ से गुड़गुड़ी का मध्य-देश पकड़े, दूसरे से उसकी नलिका (नै) को मुंह में लगाए, गुड़गुड़ाता हुआ आगे बढ़ा। बेड़े से बाहर ही निकला कि सहसा उसका काय कण्टकित हो उठा ! हृदय बड़े जोर से हिलने लगा। कण्ठ घुटने लगा। भयानक ! आपत्ति की अशङ्का उसके हृदयरूढ़ हुई। सोचा-"कहीं लड़के ही न रोते हों"

वह कुछ ही दूर अस्तपाद चला था। मनुष्य समुदाय के निकट पहुंचने से पूर्व ही वहां के लोग शङ्कर को देख बोल पड़े:—

अब, आए कर, सर्वनाश कर दिया लड़कों का 'मार' मार कर ! चमड़ी उधड़ गई !!"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

—शंकर एक के पश्चात् एक शब्द सुन, मूर्च्छित सा होने लगा! हुक्का हाथ से छूट पड़ा! मूंह से कुछ शब्द न निकले! क्या करे-जितना पाप हृदय ने सोचा था, उस से कई अंशों में अधिक हो, सामने आया! टाङ्गें उसकी कांपने लगीं! वह मनुष्यों के बीच में घुस गया। मछली की भांति तड़फते हुए बच्चों को उठा लिया। छोटे को गोदी ले, बड़े को छाती से चिपटा, क्रोध-शोक से विह्वल हुआ, उन्हें पुचकारता हुआ बोला-'चुप हो जाओ न बच्चे! बताओ तो-क्या बात? किन्तु उन बच्चों की देह शिथिल होचुकी थी। सुबकियों ने उनका कण्ठ घोट लिया था। हृदय उनके दब घुट से रहे थे। अतएव ज़बान भी बन्द होगई थी। वे दोनों, दोनों हाथों से जोर से शंकर के चिपट गए। एक ने छाती में, और दूसरे ने पेट में मुंह छुपा लिया और सुबकियों से रुद्ध वाक् हुए अश्रु-धारा के विपुल प्रवाह से शंकर का कुरता तर कर दिया! कम्पायमान करों से शंकर गात्र से वे अधिक चिपटने की चेष्टा करने लगे। जैसे राष्ट्र विप्लव के समय, धर्म और न्याय के विदा होने पर, प्राण-संशय देख, असहाय-प्राणी प्राण परित्राणार्थ रक्षा-स्थान-पा, छुपता है! जैसे आसुरी राज्य में धर्म और न्याय धर्मात्मा की शरण कामना करते हों!!

—चाहे वे बाल मराल-युगल बोलने में अशक्त हुए थे, परन्तु बात क्या छुपने वाली थी? उसी भीड़ में से गूंज उठी-"बस्ता छूने के अपराध में, लाल के छोटे भय्ये ने, मारा! बेदर्द होकर, अगणित बेतों की 'मार' मार कर, ततय्ये की तरह नचा दिया! बेहोश तड़फते हुए, अबोध बालकों की चमड़ी उधेड़ली! हाय, दया नहीं आई! ईश्वर ने उन्हें ज़ोर वाले बनाया है तभी वे निरपराध, निर्बलों, की जान भी निकाल सकते हैं!!!"

—सारे मोचीवाड़े में दुहाई पड़ गई। शंकर को ही सब बुरा बताने, धमकाने लगे-"क्या जाने, क्या पढा पढा कर 'डिपटी' बनाएगा? ले, ज़रासी बात पर बच्चों को पिटते, पिटते बेहोश, अधमुए हुए अब देखले!!"

—बच्चों के जरा से दुःख की सम्भावनायें जायापती दोनों अपने प्राणों तक को आड़ की जगह लगाने को तयार, परन्तु इस समय यह सब घृत-घूंट की तरह पीलिया। इन्होंने यही उत्तम समझा कि इस समय चुप ही होना चाहिए!

--दिन कर का अस्त होना भी निश्चित था और रात का आगमन भी। जैसे-जैसे १० बजने से अधिकरात जाने लगी-अड़ोसी पड़ोसी भी इधर उधर से-अपना, अपना काम बन्द कर-खबर लेने के लिए आनेलगे तिस समय देखते थे-सपत्नीक शंकर को चारपाई पर पड़े तीव्र ज्वर के कारण उछलते, प्रलाप करते!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

व्रत का माहात्म्य

ज्योति के पाठकों ने समाचार पत्रों में महात्मा गांधी के हाल में ही सात दिन का व्रत रखने का सम्वाद पढ़ा होगा। अब पता लगा है कि अपने साबरमती आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों के प्रमाद पर उन्होंने यह व्रत लिया था। इस सम्बन्ध में १० दिसम्बर के 'यंग इन्डिया' में महादेव देसाई जी इस प्रकार लिखते हैं:—

"गत सप्ताह अपने नवीन व्रत के सम्बन्ध में महात्मा गांधी जी ने इस व्रत का कारण बतलाया था। यह व्रत उन लड़कों के लिए जिन के कारण किया गया जितना लाभदायक है उतना ही विद्यार्थी मात्र के लिये तथा उनके लिये है जो कि लड़के लड़कियाँ का संरक्षण करते हैं। मैं इस व्रत के महत्व को गान्धी जी के शब्दों में ही संक्षेप से प्रगट करता हूँ।

दिसम्बर की पहली तारीख की प्रातः काल व्रत समाप्त करने से पूर्व उन्होंने लड़कों को अपनी चारपाई के पास बुलाया और निम्न लिखित उपदेश धीरे २ हृदय द्रावक स्वर में कहा:—

'गत मंगलवार को याद करो जिस दिन मैंने व्रत लिया था। मैंने यह काम क्यों किया मेरे लिये तीन मार्ग खुले हुए थे:—

(१) दण्ड विधान—मैं शारीरिक दण्ड का विधान करके सरल मार्ग को ग्रहण कर सकता था प्रायः करके अध्यापक लोग जब अपने शिष्यों के दोषों को पकडते हैं तो उन्हें शारीरिक दण्ड देकर यह समझते हैं कि उन्होंने बड़ा उत्तम काम किया है। मैं भी कभी अध्यापक रह चुका हूँ परन्तु अब मुझे इतने काम हैं कि मैं तुम्हें आज कल पढ़ा नहीं सकता बतौर अध्यापक के मुझे और कोई चारा न था सिवा इसके कि मैं इस स्वीकृत प्रणाली को परित्याग करूं क्योंकि मुझे अनुभव से यह ज्ञात है कि यह तरीका गलत और हानिकारक है।

(२) उदासीनता—मैं तुम्हें तुम्हारे भाग्य के भरोसे पर छोड़ सकता था। अध्यापक लोग प्रायः ऐसा ही करते हैं उनका यह कथन था लड़के अपना पाठ अच्छा याद करके लावें और जो कुछ बताया जाय उसे बना सकें यही पर्याप्त है। उनके निजी आचार के सम्बन्ध में मुझे क्या करना है? यदि मेरा सम्बन्ध भी हो तो मैं उन पर दृष्टि कैसे रख सक्ता हूं। यह उदासीनता मुझे भाती नहीं।

(३) प्रेम का व्यवहार—तुम्हरा आचरण ही मुझे रक्षणीयनिधि है। इस लिये मुझे चाहिये कि मैं तुम्हारे जीवन में प्रविष्ट होकर, तुम्हारे भावों की तह में घुस कर, तुम्हारी इच्छाओं और मनोद्वेगों को पहिचान कर तुम्हारी गलतियों को तुम्हें सुझाने में और दुराचरण के हटाने में तुम्हारा सहायक बनूं। क्योंकि आन्तरिक शुद्धि ही शिक्षा की सीढ़ी है जिस पर चढ़ना आवश्वक है उसके बाद और बातें स्वयं सीखी जा सक्ती हैं मैंने तुम्हारे मध्य में प्रमाद देखा तो मैं क्या करता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुम्हें दण्ड देना अयुक्त था किन्तु अध्यापकों में मुख्य होने के कारण मैंने यह व्रत लेकर अपने ऊपर ही दण्ड लेना स्वीकार किया है।

इन शान्त विचार शील दिनों में मैंने बहुत कुछ सीखा है परन्तु तुमने क्या सीखा है? क्या तुम मुझे यह विश्वास दिला सकते हो कि तुम अपनी इस ग़लती को फिर नहीं दुहराओगे? तुम फिर ग़लती तो कर सक्ते हो लेकिन याद रखना कि अगर तुमने प्रमाद न छोड़ा तो इस व्रत का असर तुम्हारे ऊपर कुछ न होगा। सचाई ही सब से बढ़ कर उपाय है। किसी भी दशा में झूंठ न बोलो। कुछ भी छिपाओ मत। अपने अध्यापकों और बड़ों को अपना विश्वासपात्र समझो और उन से दिल खोल कर हरऐक बात कहा करो। किसी के प्रति बुरा भाव न रखो। किसी की पीठ पीछे बुराई कभी न करो और सब से बढ़ कर यह बात है कि "अपनी अन्तरात्मा के प्रति सत्यवादी बनो" ताकि तुम किसी के प्रति झूंठे न बनसको। जीवन की छोटी २ सी भी घटनाओं में सत्य का व्यवहार करने में ही पवित्र जीवन का रहस्य है।

तुम ने देखा होगा कि ऐसे समयों में मुझे इस भजन "वैष्णव जन तो उसे कहिये" से आत्मिकबल मिलता है। यह भजन ही मुझे उन्नति करने के लिये काफी है चाहे मैं भगवद्गीता क्यों न भूल जाऊं। परन्तु सच तो यह है कि केवल एक ही वस्तु है जोकि बहुत सहज है परन्तु शायद तुम उसे न समझ सको लेकिन मेरा तो वह पथदर्शक रहा है। वह है यह भाव कि सच परमात्मा है और झूंठ बोलना नास्तिक पन है।"

आशाहै कि सब शिक्षकवर्ग तथा विद्यार्थी इस अमूल्य उपदेश को मनन करके महात्मा जी की शिक्षा से लाभ उठायेंगे और अपने २ शिक्षणालयों में शारीरिक दण्ड के स्थान पर आत्मा पर प्रभाव डाल कर सुधार के सिद्धान्त को वर्तने का यत्न करेंगे।

(२) महात्मा गांधी का उपवास नियम

महात्मा गांधी उपवास का शरीर पर असर विषयके सम्बन्ध में लिखते हुये उपवासके कुछ नियम बतलाते हैं जिन्हें ज्योति के पाठकों के लाभार्थ यहां वर्णन करना उचित है। वह कहते हैं:—एक साधारण मनुष्य की दृष्टि से और शारीरिक बल की रक्षा की दृष्टि से मैं उन लोगों के लिये जो किसी भी कारण से व्रत रखना चाहते हों यह नियम बतलाना चाहता हूं:—

१. व्रत वाले दिन के प्रारम्भ से ही शारीरिक बल और मानसिक शक्तियों की रक्षा करो।

२. उपवास के समय तक खाने का ध्यान भी न करो।

३. जितना पी सको ठंडा पानी पियो चाहे सोडा या निमक डाल कर या वैसे ही लेकिन थोड़ा २ शुरू में पानी को उबाल कर छान कर ठंडा रखना चाहिये निमक और सोडे से घबराओ मत क्योंकि बहुत से पानी में यह चीजें प्रायः घुली हुई रहती हैं

४. प्रतिदिन गर्म पानी से नहाओ।

५. उपवास के दिनों में प्रतिदिन एनीमा करते रहो तो जो गन्द प्रतिदिन मिलेगी उस पर तुम्हें आश्चर्य्य होगा।

६. जहां तक सम्भव हो खुली हवा में सोया करो।

७. निकलते हुये सूर्य्य की धूप में सेंको। धूप और हवा भी पानी की भांति बहुत ही शुद्धि करने वाली हैं।

८. उपवास का ध्यान छोड़कर दूसरी ओर ध्यान लगाओ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

९. चाहे किसी सम्बन्ध में तुमने व्रत रक्खा हो इस अमूल्य समय में सृष्टिकर्ता का ध्यान करो उसका तुम्हारा क्या सम्बन्ध है, उसकी अन्य सृष्टि को देखो तो तुम्हें वह बातें मालूम होंगी जिनका तुम्हें स्वप्न में भी ध्यान न था।

डाक्टर लोगों से क्षमा मांगते हुये अपने अनुभव तथा इसी प्रकार के मित्रों के अनुभव से मैं निःसंकोच होकर कहता हूँ कि इन दशाओं में व्रत करोः—

(१) अगर तुम्हें कब्ज हो तो।
(२) अगर तुम में खून की कमी हो तो।
(३) यदि ज्वर हो तो।
(४) यदि अजीर्ण हो तो।
(५) यदि सिरदर्द हो तो।
(६) यदि बाई का दर्द हो तो।
(७) यदि जोड़ों में दर्द हो तो।
(८) यदि तुम्हें क्रोध आया हो या मानसिक व्यथा हो तो।
(९) यदि मन उदास हो तो।
(१०) यदि मन में अत्यन्त आलहाद हो तो।

ऐसा करने से तुम्हें दवाइयां नहीं खानी पड़ेंगी। केवल तभी खाओ जब तुम्हें भूख लगे जब तुमने भोजन उपार्जन कर लिया हो।

एक प्राचीन पुस्तकालय का आविष्कार

कविराज भूपदेव मुकर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के लेकचरार हैं वह कलकत्ते के फार्वर्ड नामक पत्र में लिखते हैं कि:—

मैं अपने देशभक्त और शिक्षित भाइयों के सन्मुख एक प्राचीन पुस्तकालय का संक्षिप्त परन्तु रोचक वर्णन रखता हूँ। इस पुस्तकालय में असंख्यात बहु मूल्य और मुश्किल से मिलने वाले ग्रन्थ और हस्तलिपियां हैं जो भोजपत्र पर लिखे हुये हैं। यह धर्मशास्त्र दर्शन, आलेख्य विज्ञान, इतिहास, चिकित्सा, नक्षत्रविद्या रेखाओं की परख तथा अन्य कई विषयों पर हैं। यह पुस्तकें भारत की प्राय, सभी भाषाओं में हैं। कुछ ऐसी तो वैदिक काल की मालूम पड़ती हैं। यह विश्वास है कि भारत वर्ष के अन्य किसी पुस्तकालय में ऐसी उपयोगी और अलभ्य पुस्तकें नहीं हैं।

इस पुस्तकालय के मालिक एक डाक्टर सैयद मुहम्मद क़ासिम जागीरदार निज़ाम हैदराबाद के कुत्ता हस्पताल के अध्यक्ष पत्थर घाटी हैदराबाद निवासी हैं। यह पुस्तकालय बड़ा प्राचीन है और विजयपुर राज्य स्थापित होने के बहुत पूर्व बनाया गया था।

वर्तमान मालिक के पुरखा विजयपुर राज्य के पुरोहित थे और राज्य के मुख्य आमात्य भी रहा करते थे अतः इस पुस्तकालय के रक्षक थे। इन पुस्तकों में से कइयों के विषय बड़े अद्भुत हैं। इन में से कुछ विषय यह हैं:—

(१) मुर्दे को औषधियों में रखने की विधि—इसका वर्णन इतना उत्तम है और इस प्रकार का स्वदेशी है कि यह विश्वास हो जाता हैं कि मिश्र वासियों ने यह विद्या यहां से सीखी थी।
(२) बेतार बर्की के तार—यह कहा जाता है कि हजारों मील की दूरी पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर बातचीत एक ख़ास तरह की बनाई हुई पत्थर की की रकाबियों द्वारा की जाती थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(३) रुई उत्पन्न करने की विधि = ऐसे तरीके बताए गए हैं जिन से जिस रंग की रुई चाहो, पैदा करलो।

(४) भू-गर्भ विद्या + ऐसी क्रियाओं का वर्णन है जिनके द्वारा पृथ्वी के तह के भीतर छिपी हुई वस्तुओं का ज्ञान होना सम्भव है ताकि कीमती पत्थरों, धातुओं, छिपे हुए खजाने, धसे हुए शहरों इत्यादि की ठीक जगह का पता लगाना बड़ा सुगम हो।

(५) एक विचित्र शीशा—ऐसी विधियां दी हुई हैं जिन से एक शीशा तैयार करके समुद्र की तह के ऊपर रख कर देखो तो उसके अन्दर की सभी वस्तुएं साफ़ साफ़ दीख पड़ेंगी।

(६) पाले का गिरना—ऐसे तरीके बतलाये गए हैं जिनके द्वारा गर्म देशों में पाला गिराया जा सकता है और सर्द मुल्कों में उसे गिरने से रोका जा सकता है।

(७) बड़े २ पहाड़ों का ढा देना।

(८) पानी की धार को नीचे से ऊंचे पर ले जाना।

(९) आग बिना धातुओं को द्रवीभूत करना

(१०) हजारों वर्षों तक पानी को गर्म रखना इसमें शक नहीं कि इसी प्रकार का कोई तरीका प्राचीन भारतीय इञ्जनीयर लोग बर्तते थे। जब कि दिल्ली और आगरे के मशहूर गर्म पानी के झरने बनाए गए थे। इन्हें आधुनिक बेपरवाह इन्जनीयरों ने जब से नष्ट कर दिया तो उन्हें फिर बना ही न सके।

(११) नीच धातु को सोना और चांदी में परिवर्तित करना यह हमारे लिये नई बात नहीं रही। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के लिए यह साधारण सी बात थी! हमारे देश भाइयों को इसके कई तरीके अब भी मालूम हैं। हां, यह अभ्यास में नहीं लाई जाती यह दूसरी बात है।

(१२) कीमती पत्थरों और मोतियों को द्रवी भूत करके उन्हें इच्छानुसार शकल, आकार और रङ्ग में ढालना।

कहा जाता है कि यह पुस्तकालय इतना बड़ा है कि इसकी पुस्तकें सुधार कर रखने और झाड़ने में यदि छै मनुष्य लगें तो महीनों तक का काम है। इसके वर्तमान मालिक के लिए इसकी सूची तैयार कराना भी असम्भव कहा जाता है। यह आश्चर्य की बात है कि इतने बहुमूल्य पुस्तकों का संग्रह इतने दिनों तक एक व्यक्ति का निजी सम्पत्ति बनकर पड़ा रहा।

अन्त में लेखक ने जनता से अपील की है कि भारतीय जनता या भारतीय राज्य कोई इसे खरीद लें वरना विदेशी उठा ले जावेंगे जैसे कि आगे हो चुका है।

संसार के माता पिताओं पर मुकद्दमा।

ले०—प्रो० सांझी राम जी M, Sc,A. [अमरीका]

बच्चों की सारी जिम्मेवारी माता-पिता के ऊपर है। जो बच्चे माता पिता की असावधानी के कारण जीवन-पथ में भटक जाते हैं उनके सर्व-नाश के पाप का बोझ माता-पिता के ऊपर ही है। हमारे देश में इस जिम्मेवारी को नहीं समझा जाता। अमरीका में माता-पिता को बच्चों के जीवन बनाने की जिम्मेवारी समझानेकेअनेक उपाय किये जाते हैं। कुछ साल हुए वहां एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाटक खेला गया था जो इस दृष्टि से बड़ा भावपूर्ण था। नाटक के सभी पात्र बच्चे थे। अदालत का खेल रचा गया था। जज, नाजिर, मुन्शी, वकील- मुकदमा करने वाले सभी बच्चे थे। अपराधी माता-पिता थे वह मुकदमा इस प्रकार चलाया गया था।

* * *

* ना ट क *

इस नाटक में सब बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। उनमें से एक न्यायाधीश, एक नाजिर; एक मुन्शी; कुछ मुद्दई; कुछ मुद्दाला. कुछ दोनों ओर के गवाह और एक आदर्श माता का काम करते हैं इस नाटक में पड़ोस के माता पिता को निमन्त्रित किया जाता है। न्यायाधीश न्याय-भवन में एक मञ्च पर कुर्सी लगाकर बैठता है उस के सामने एक कुर्सी लगी होती है जिस पर कुछ कागज और बायबल रक्खी होती है। न्यायाधीश के बांई तरफ; मञ्च के नीचे. नाजिर तथा मुन्शी मेज कुर्सी लगा कर बैठते हैं। दांई तरफ सरकारी वकील बैठता है—उस के सामने उसकी कानूनी पुस्तकों का ढेर लगा होता है। इस वकील के समीप मुद्दाला बैठ जाते हैं मुन्शी साहिब के नजदीक मुद्दालों के सामने मुद्दई लोग पंक्ति लगा कतार बांधकर बैठ जाते हैं।

सब लोग नियत समय पर अपनी २ जगह आकर बैठ जाते हैं। न्यायाधीश सब से कुछ मिनट पीछे आते हैं। उनके आने की सूचना पाकर न्याय-भवन में "न्यायाधीश आ रहे हैं" की घोषणा की जाती है। जब वे भवन में प्रविष्ट होते हैं। तब सब लोग सम्मान पूर्वक शान्ति से खड़े हो जाते हैं और जब तक वे बैठ नहीं जाते तब तक सभी खड़े रहते हैं। अदालत की कार्यवाही निम्न प्रकार से शुरु होती है

* कार्य वाही *

नाजिर—(मेज़ पर थपथपा कर) सुनो ! सुनो !! सुनो !!! अदालत का इन्साफ शुरू होता है।

मुन्शी—सारी दुनिया के बच्चों का मुकद्दमा उनके माता पिता तथा अध्यापकों के विरुद्ध इस अदालत में पेश हुआ है।

जज—क्या मुद्दइयों का वकील इस मुकदमे को पेश करने के लिए तैयार है ?

मुद्दइयों का वकील—गरीब परवर ! मैं तमाम दुनियां के बच्चों की खातिर इस अदालत में इन्साफ़ के लिये दावा दायर करता हूँ।

जज—आप मुकद्दमा समझाओ और बयान दो।

वकील—मैं दुनियां भर की माताओं, पिताओं और उस्तादों को अपने बच्चों के प्रति असावधानता, ध्यानशून्यता तथा अपने पैतृक-कर्तव्य के निबाहने में असफलता के अपराध का दोषी ठहराता हूँ। हमारे गवाह शहादत में यही कहेंगे।

जज—गवाहों को सामने पेश करो।

(नाज़िर गवाहों को क्रमशः बुलाता है)

पहला गवाह—(लड़का) (जज की तरफ) दीनदयाल ! मैं एक अय्याश माता का पुत्र हूँ। मुझे रहने को एक आलीशान मकान, पहनने को उत्तमोत्तम वस्त्र तथा दिल बहलाने को कई प्रकार के शुग़ल मिलते हैं। शरीर का भोजन मेरे सन्मुख हर समय तैयार रहता है परन्तु मेरी आत्मा उचित भोजन न मिलने से भूखी मर रही है। परमात्मा तो केवल नाम ही को हमारे घर में सुना जाता है और बायबल के कभी दर्शन भी नहीं हुए। मैं अपने दुःख अपनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माता को सुनाने के लिये उसके सन्मुख कभी नहीं जाता क्योंकि जब कभी मैंने उसे अपनी दुःखभरी कहानी सुनाई है, वह उस पर हंस पड़ी है और मखौल करके मुझे शर्मिन्दा करती रही है। मेरा जीवन मुझे शून्य तथा निस्सार मालूम पड़ता है। घर में गोलियें तथा दवाइयें बदबू मार रही हैं क्योंकि मेरी मां अय्याश है।

दूसरा गवाह—जनाबे-आली ! मैं एक धैर्य-हीन माता की सन्तान हूँ। वह हमेशा या तो गुस्से के शिखर पर चढ़ी रहती है या चिन्ता के गढ़े में गिरी रहती है। मुझे मालूम ही नहीं होता कि इन दोनों अवस्थाओं में से बदतर अवस्था कौन सी है? मैं अपने मित्रों को घर भी नहीं ला सकता क्योंकि उनका शोर मेरी माँ को घबराहट पैदा करता है। इसी लिये मुझे घर में कोई आनन्द नहीं मिलता और बाहर आवारागर्दी किया करता हूँ। मैंने सुना है कि धर्म से संसार में शान्ति का सञ्चार होता है। मैं चाहता हूँ कि मेरी माता को भी धर्म नसीब हो क्योंकि वह बेचारी बड़ी अधीर है।

तीसरा गवाह—हजूर ! मेरी माँ उपदेशिका है। वह कमरे में बैठी हमेशा कुछ लिखती रहती है और किसी को नज़दीक नहीं फटकने देती क्योंकि इस से उसके लिखने में बाधा पड़ती है। वह आप तो सभाओं में आने-जाने में मस्त रहती है और मुझे हमेशा नौकरों के सुपुर्द कर जाती है। इस से मुझे अनेक दुष्कर्मों तथा दुर्विचारों का शिकार बनना पड़ता है। उसे ख़बर तक नहीं कि मैं कैसे जीवन बिता रहा हूँ। मेरी मां बहुत पढ़ी हुई है और मालूम होता है कि वह दिमाग़ ही दिमाग़ है, उस में दिल है ही नहीं। तात्पर्य यह है कि मैं बदनसीब हूं क्योंकि मेरी मां उपदेशिका है।

चौथा गवाह—(लड़की) भगवन् ! मेरी मां सौदागर है। वह अपने व्यापार में बहुत कामयाब है, इसका मुझे अभिमान है परन्तु मेरे विचार में उसे अपनी लड़कियों से उतनी वाकफ़ीयत नहीं जितनी अपने हिसाब-किताब से है। हमारा तमाम घर एक टाइम-टेबल पर चल रहा है। मुझे कई बार यह अनुभव हुआ है कि मैं भी घर में एक 'टाइम-पीस' ही हूं जिसे एक बार चाबी लगादी तो चौबीस घण्टे बस काम ठीक समय पर होते रहे। अम्मा हर वक्त लेने देने के ख्याल में डूबी रहती हैं और मैं मारे डरके उनके नज़दीक तक नहीं फटक सकती। यदि मैं पास पहुंच जाऊं तो फ़ौरन धमका कर पीछे धकेल देती हैं और कहती हैं—"याद रखो ! मेरे एक मिनट की कीमत एक रुपया है!" मुझे समझ नहीं पड़ता कि धन बच्चों की ख़ातिर है या बच्चे धन की ख़ातिर ! मैं कभी २ उदास तथा निराश हो जाती हूं क्योंकि मेरी माँ एक सौदागर है।

पांचवां गवाह—मेरे माई-बाप ! मैं मातृ-हीन बालिका हूँ। मेरा पिता है, चाची और दादी है। सभी अच्छे स्वभाव के हैं, मेरी माता का रिक्तस्थान पूरा करना चाहते हैं, परन्तु माता का स्थान कौन ले सकता है? घर में द्वैध-शासन बना रहता है। बाप कहता है कि बेशक दुकान जाकर मिठाई खा आओ परन्तु दादी कहती है ख़बरदार ! फिर जाओगी !!! मुझे उन लड़कियों के साथ स्पर्धा होती है जिनकी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माताएं ज़िन्दा हैं। मेरी एक अध्यापिका है जिसके सामने मैं अपने दिल का रोना-रोया चाहती थी परन्तु जब मैंने उस से बात-चीत छेड़ी तो उसने कुछ ख्याल ही नहीं किया। हौसला हार कर मैंने फिर कोशिश ही नहीं की। मैंने यह भी चाहा कि मैं फिर गिर्जे में दाख़िल हो जाऊं। अध्यापिका-साहिबा ने पीछा छुड़ाने के लिये कहा कि तुम अभी बहुत नादान हो [शायद मैं चढ़ावा चढ़ाने को असमर्थ थी]। आज मैं बड़ी हो गई हूँ वह मुझे चाहती है, परन्तु मुझे वहां जाने से स्वाभाविक घृणा उत्पन्न हो गई है क्योंकि अपनी अध्यापिका से मुझे असन्तोष पैदा हो चुका है और वह मेरी माता की रिक्त जगह को पूरा नहीं कर सकती।

छटा गवाह—प्रभो! मैं एक आदर्श माता की पुत्री हूँ। मेरी माँ गिर्जे जाती है, क्लबों में शामिल होती है और हरएक समाज में यथा-शक्ति हिस्सा लेती हुई बड़ी व्यग्र रहती है परन्तु जब कभी मैं उस से मिलना चाहती हूं वह फौरन आ उपस्थित होती है। मैं उस से अपना कोई भेद छुपा कर नहीं रखती क्योंकि मेरी मां मेरी सहेली का काम भी करती है। मुझे अपने दिल का भेद उसे बताने में हमेशा आनन्द मालूम होता है। वह हर समय धर्म का डङ्का तो नहीं बजाती रहती परन्तु फिर भी वह परमात्मा की जोत घर में इस प्रकार जगाये रखती है कि हमें भगवान् की सर्व व्यापकता का सदा ज्ञान रहता है। वह मेरी सहेलियों को कई वार सप्रेम घर में बुलाती है और उन से ऐसे ढंग से बात करती है कि माता के बिना हमें आनन्द ही नहीं आता। हम सब को वह बजाय माता के एक सहेली सी प्रतीत होती हैं। इस में शक नहीं कि वह कभी २ मुझे किसी २ बात में रोक भी देती है परन्तु किसी भले काम में हरगिज़ रुकावट नहीं डालती। बस, आप देख लीजिये कि अगर कल मैं वैसी युवती न बन कर दिखा सकूं जैसी वह मुझे बनाना चाहती है तो उस में उस का कोई दोष न होगा। लेकिन मेरा दृढ़ संकल्प है कि मेरी माँ मुझे जो कुछ बनाना चाहती है, मैं ज़रूर वह बन कर रहूँगी क्योंकि मैं एक आदर्श माता की पुत्री हूँ।

[बयान समाप्त हो चुकने पर]

जज्ज—[मुद्दाअलेहों के वकीलों की तरफ़ देख कर]—तुम ने गवाहों के बयान सुन लिये हैं। क्या तुम्हें अपने अपने पक्ष की सफ़ाई में कुछ कहना है?

मुद्दाअलेहों का वकील—[खड़ा हो कर] पूजनीय देव! इस मुकद्दमे में सब मुद्दाअलेहों के वकील इन अपराधों को स्वीकार करते हैं और आदालत से रहम की अपील करते हैं।

जज्ज—[मुद्दाअलेहों की तरफ़ देखकर] अदालत ने इन इल्ज़ामों को सुना है। तुम ने अपने बच्चों के प्रति असावधानता, ध्यान-शून्यता तथा अपने कर्तव्य के निवाहने में असफलता दिखलायी है इस लिये तुम्हें इन अपराधों का दोषी ठहराया जाता है। सृष्टि कर्ता भगवान् ने तुम्हें इन धर्मों के पालन करने की ज़िम्मेवारी सौंपी है। क्या तुम कोई उपयुक्त कारण दे सकते हो जिस से तुम्हें कानून की पूरी २ सज़ा न दी जाय?

आदर्श माता—प्रतिष्ठित जज्ज साहेब! (आँखों में आँसू भर कर) मैं इन बहिनों के हक में, जो इतनी देर अन्धों की तरह रही हैं और अब जिन की अदालत की कार्यवाही से आँखें खुल गई हैं, अर्ज़ करती हूँ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माताओं, पिताओं तथा अध्यापकों को अपने बच्चों के मुख से अपनी अयोग्यता तथा असफलता की कथा सुनने से बढ़ कर और कोई सज़ा नहीं दी जा सकती। इस कारण मैं फिर दरख़ास्त करती हूं कि बच्चों के मुख से जो योग्यता पूर्ण बातें निकली हैं उन की ख़ातिर इन माताओं पर रहम किया जाय।

जज्ज—यह सच है कि बच्चों की महज़ शहादत ही माता-पिताओं के लिये गौरव या शर्म का कारण हो सकती है। गौरव उस अवस्था में यदि वे आगे के लिये समझ जाँय वरना 'लानत' तो कहीं गई ही नहीं। इस लिये हरेक मुल्क के माता, पिता तथा अध्यापक को आज से विदित हो कि बच्चों का पैदाइशी अधिकार; भलीभांति जीवन व्यतीत करने में, मुहब्बत के घूंट पीने में और आनन्द के अवसर उपलब्ध करने में अटूट है।

(बाइबल को खोल कर)

Math. 18: 6 में से पढ़ता हूँ। सुनो, सुप्रीम-कोर्ट का इस पर क्या फ़ैसला है:—

"Whose shall cause one of these little ones that believes on me to stumble, it is profitable for him that a great millstone should be hanged about his neck and that he should be sunk in the depth of the sea."

लेकिन...(एक क्षण चुप रह कर) ..... [सब खड़े हो गये].....यही फ़ैसला यहां देने की ज़रूरत नहीं रही क्योंकि पछतावे तथा क्षमा-याचना की गहराई समुद्र के पानियों की गहरायी से गहरी है लेकिन मैं यह फ़ैसला दिये बग़ैर नहीं रह सकता कि तुम दुनियां के माता-पिता तथा अध्यापकों को इस सच्चाई पर विचार करना चाहिये कि दुनियाँ में सब से बड़ा वस्तु बच्चे की मुहब्बत वा भरोसा है।

[जज्ज बैठ जाता है]

नाज़िर—अदालत बरख़ास्त होती है!

* * *

इस नाटक को पढ़ कर यह स्पष्टतया विदित होता है कि माता--पिता तथा अध्यापक लोग अपनी पदवी से कहीं गिरे हुए हैं। भगवान् ने इन तीनों को अपना काम सुपुर्द किया था परन्तु वे अपनी ज़िम्मेवारी को भूल कर झूठे, पोले ढोल की आवाज़ की तरफ़ खिंचे जा रहे हैं। यह तो नाटक था, परन्तु यदि बालकों में सच मुच समझने वा समझाने की शक्ति होती तो माता-पिता तथा अध्यापक अपनी ऐसी शोचनीय हालत का क्या उत्तर देते? *

अलंकार

* नोट—प्रो० साँझीरामजी बीसवीं सदी का जीवन शास्त्र नामक अप्रकाशित पुस्तक से।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्रीजगत्

गोंडाल में स्त्री शिक्षा

काठिया बाड़ में गोंडाल रियासत ही ने स्त्री शिक्षा में सब से पहिले कदम बढ़ाया है। यहां पर स्त्री शिक्षा का प्रचार करने के लिये अङ्गरेज़ी तीसरी श्रेणी से ऊपर अध्ययन करने वाली प्रत्येक लड़की को राज्य की ओर से क्षात्रवृत्ति मिलती है और जो लड़की मेंट्रीक्यूलेशन पास करे उसे ५००) रुपये इनाम मिलता है।

१९१७ में गांवों में कन्याओं की शिक्षा अनिवार्य्य करदी गई। पाश्चात्य देशों में अनिवार्य्य शिक्षा प्रणाली हैऔर भारत के कई देशी राज्यों में भी है परन्तु यह सौभाग्य केवल गोंडाल राज्य को ही प्राप्त है कि उसने केवल कन्याओं की शिक्षा को अनिवार्य्य बनाया है उनका यह भाव है कि मातायें ही जाति के बच्चे बनाती है अतः उनका उन्नत होना अति आवश्यक है।

भारत वर्ष में स्त्रियों की संख्या

भारतवर्ष में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम है किन्तु इस के विपरीत युरोप के देशों में इसका बिल्कुल उलट है। प्रति एक हज़ार पुरुष हो तो स्त्रियों की संख्या भारत में ९४५ ही है जब कि इङ्गलैन्ड और वेल्ज में १०६८ है, और फ्रांस, इटली, और आस्ट्रिया में १०३६ है। शोक जनक बात तो यह है कि यह संख्या दिन पर दिन घट रही है। इसका कारण यह नहीं है कि यहां लड़कियां कम संख्या में पैदा होती हैं बल्कि यहां युरोप के देशों की अपेक्षा अधिक लड़कियां पैदा होती हैं। केवल एक मात्र कारण यह है कि यहां की लड़कियां १०-२० की और ३०-५० की अवस्था में अधिक मृत्युका ग्रास बनती हैं। भारत की स्त्रियों को इधर ध्यान देना चाहिये।

स्त्रियों के लिये मुफ्त पुस्तकालय

भारतवर्ष में केवल बम्बई में ही म्युनिसिपैल्टी की ओर से स्त्रियों के लिये मुफ्त वाचनालय और पुस्तकालय खोला गया है। यह विचार सब से प्रथम एक देवी के ही मस्तिष्क में आया था वहीं से उन्नत हुआ था। यह देवी मिसेज कृष्णा बाई गुर्जर है जिन्होंने दोवर्ष पूर्व बम्बई की म्युनिसिपल कमेटी के सामने यह प्रस्ताव रक्खा था।

व्यवसाय में भारतीय स्त्रियां।

श्रम जीवी स्त्रियों को गर्भावस्था में प्रसूत होने से कुछ समय पूर्व और कुछ समय पीछे तक मेहनत से बचना चाहिये और इन्हे उन दिनों का वेतन भी मिलना चाहिये यह नियम बनने वाला था किन्तु मिलों के मालिक तथा सर्कार भी इसे पास होने नहीं देरही हैं। चाय बागो में काम करने वाली स्त्रियों को यह अलाउन्स मिलने लगा है। किन्तु मालिक लोग विरोधी हैं। भारत में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बच्चों को अफीम खिलाने की प्रथा है ताकि बच्चा चुपचाप पडा रहे अतः एक वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु संख्या भी भयानक है। अर्थात् प्रति सहस्र में ४०० या ६००।

इसके अतिरिक्त उन में शिक्षा छोड़ कर अक्षर ज्ञान भी नहीं है वैसे तो सारे भारत में ही पांच फीसदी भी स्त्रियां पढ़ी नहीं हैं किन्तु श्रम जीवियों में तो सौ में एक भी ऐसी नहीं उन में संगठन भी नहीं है और निरक्षर होने के कारण उनकी अवस्था के उन्नत होने की भी निकट भविष्य में कोई सम्भावना नहीं है।

मुसलमान स्त्रियों में जागृति

मुसल्मान स्त्रियों को स्वतन्त्र करने का उपाय चारों ओर होरहा है। ट्यूनिस में एक सभा है जो स्त्रियों को उत्तम शिक्षा देती है उस में एक स्त्री ने बिना बुर्के के प्लेट फार्म पर खड़े होकर स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन किया। तुर्किस्तान और फारस में भी स्त्रियां अपना अधिकार जमा रही हैं। अफगानिस्तान का अमीर भी इस उन्नति में शरीक होना चाहता है और १९१८ में मुसलिम स्त्रियों का सम्मेलन हुआ था जिस में ४०० देवियां फरीदकोट, लाहौर, इलाहाबाद लखनऊ, भूपालादि देशों से एकत्र हुई थीं और स्त्रियों के लिये विश्वविद्यालय की याचना की थी। जनवरी १९२२ में मिश्र देश की राजकुमारी ने वहां की देवियों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी थी। उत्तरीय अफ्रीका में भी सर्वत्र ही मुसल्मान देवियाँ जागृत होरही हैं।

पूना का सेवा सदन

पूना के सेवा सदन की रिपोर्ट है कि एक हजार से ऊपर लड़कियां और स्त्रियां वहां किसी न किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं जिन विषयों की शिक्षा वहां दी जाती हैं उन में से मुख्य २ ये हैं मराठी तथा अङ्गरेजी मराठी, नार्मल ट्रेनिग, व्यवसाय, फर्स्ट एड, तथा नर्सिंग, दायी गीरी और डाक्टरी इत्यादि आधी के लगभग देवियां विधवा हैं। २५ प्रति शतक विवाहिता देवियां हैं। इस से पता लगता है कि सेवा सदन स्त्री जाति की आवश्यक्ता को कैसे पूर्ण कर रहा है क्योंकि इस प्रकार की संस्था अन्यत्र दूसरी नहीं है।

स्मृति।

माता के आंचल में छिप कर मन्द मन्द मुसकाता था।
पीन पयोधर चूस चूस हिय को हरदम हुलसाता था॥
उसी स्मृति में पड़ कर अब भी स्तन युग शव के चाट रहा।
वीर विश्वविजयी लोगों के गीत गान कर भाट कहा॥

जगदीशचन्द्र शास्त्री 'चन्द्र'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि।

ले०—श्री बलवन्त मिश्र हिन्दी आनर्स।

इस समय प्रचलित पाठ्य प्रणाली दो प्रकार की देखी जाती है। एक ऐसी संस्था जहां लड़के या लड़कियां रात दिन पाठशाला ही में अपना समय व्यतीत करते हैं। दूसरे ऐसे स्कूल और कालेज जहाँ लड़के और लड़कियां केवल दिन में निश्चित समय के लिए अध्ययनार्थ जाते हैं माता-पिता अपने बालकों और बालिकाओं को पाठशाला में इसी विचार से भेजते हैं जिस से वे विद्या पढ़ कर अपना और अपने सम्बन्धियों का तथा अन्य लोगों का उपकार कर सकें। अधिकाँश ध्येय यही पाठशाला में भेजने का है। पर इस समय बालक और बालिकाओं को भेज कर और उनकी पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात् उनके माता-पिता अपने हृदय में संतोष नहीं पाते बल्कि कुछ घबराहट की बातें उनके हृदय में आ जाती हैं। इसका कारण क्या है? इस विषय पर विचार करने की इच्छा बार बार होती है कि क्या त्रुटि है और किस में त्रुटि है। बालकों में अथवा माता-पिता में। या अध्यापकों में। यह विषय बड़े ही अनुभव और विद्वत्ता पूर्वक प्रतिपादन किया जा सकता है इसके लिए तो कोई विद्वान अध्यापक हो जो पृथिवी की सारी शिक्षा-संस्थाओं में घूम २ कर अनुभव प्राप्त करें तब अपना विचार प्रकट करें तो पढ़ने वालों का कल्याण हो। मेरा अनुभव बहुत ही थोड़ा है विद्वत्ता भी इतनी अधिक नहीं पर थोड़ा सा अनुभव पाठकों के सामने रखता हूँ शायद पसन्द आवे। यहां तीन विषयों पर कुछ लिखना है (१) दण्ड विधान (२) व्यवहार और (३) शिक्षा-पाठ्य प्रणाली।

१-दण्ड विधान पाठशाला में भिन्न भिन्न प्रकृति के विद्यार्थी और कन्यायें आती हैं किसी का संस्कार अच्छा है किसी का बुरा बुरा संस्कार कैसे सुधरेगा इस में तो बड़ी ही कठिनाई है पर आज कल तो अच्छे संस्कार भी पाठशाला में बुरे हो जाते हैं अन्य कारणों के अतिरिक्त अध्यापक और अध्यापिकाओं का बिना विचार और क्रोध में आकर दण्ड देना है। अक्सर पाठ याद करने पर क्रोध में आकर दण्ड देने का समय आता है मेरे अनुभव में क्रोध के समय कभी न दण्ड देना चाहिए इसका असर उलटा पड़ता है न तो अच्छी तरह पाठ ही याद होता है न कुछ! बल्कि विद्यार्थियों का दिल अध्यापक की तरफ़ से ख़राब हो जाता है कोई भी विषय पढ़ाना हो उसमें प्रेम की आवश्यक्ता अधिक है पहले तो वह विषय स्वयं तैयार होने चाहिए जिस पाठ को पढ़ाना हो उस पर खूब विचार करना चाहिए। बच्चों को प्रेम पूर्वक शान्ति के साथ समझाना चाहिए। थोड़ा काम हो थोड़ा पाठ क्यों न पढ़ाया जाय पर वह बिल्कुल पक्का पढ़ाया जाय जल्दी बाजी से नतीजा खराब होगा। मैं तो देखता हूं जितनी सख्ती से बच्चों से पेश आवे उतना ही वह और उछलते कूदते और शोर मचाते हैं। अपना अधिकार दिखाना और लड़ाई करना बकवाद करना अध्यापक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का काम नहीं वह तो प्रेम से लड़कों और लड़कियों को अपने बन्धन में बांधले तब तो बात नहीं सब व्यर्थ! यहाँ पर उन शिष्यों से जिन का संस्कार खराब हो गया है कुछ सख्ती से पेश आना चाहिए जहां तक हो सके थप्पड़बेंत का प्रयोग कम करना चाहिए उनके लिए बात की मार मारनी चाहिए ऐसा करने से उनका सुधार होगा मार खाने से तो बड़े ही धृष्ट हो जाते हैं। और उनका जन्म भर सुधार नहीं होता-

(२) व्यवहार-इसकी चर्चा दण्ड विधान में ही थोड़ी होचुकी पर थोड़ा अनुभव सिद्ध विचार और सामने रखता हूँ। क्लास में बच्चों के साथ प्रेम का व्यवहार मुख्य विषय रखना चाहिए पर शासन और प्रभाव कभी न छोड़ना चाहिए। क्रोध कम करना चाहिए। प्रसन्न मन से क्लास में जाने से समय प्रसन्नता से व्यतीत होगा। पाठशाला से बाहर के लिए हमेशा मित्रता का सम्बन्ध रखना चाहिए हाँ अगर कोई बुरी प्रवृत्ति दिखाई दे तो उस पर शासन-प्रेम-तथा अन्य अन्य उपायों द्वारा उचित राय देनी चाहिए। जिन शिष्यों का घर समीप हो और जिन से सुविधो से मिलसकें उनके माता पिता से मिल कर बच्चे के गुण से उन्हें परिचित कराना उन से सदव्यवहार करना और प्रेम पूर्वक निस्वार्थ भाव से मिलना यह भी एक बड़ा ही अच्छा विषय हो सकता है जहां तक हो सके निष्कपट और निस्वार्थ भाव का व्यवहार ही सफल होगा अब अन्त में पाठ्य प्रणाल पर भी कुछ लिखता हूँ आज कल का कोस देख कर बालकों और अधापकों का मन धैर्य को छोड़े देता है पर धीरज रख कर काम करने से सदा आनन्द होगा। कोई भी विषय हो जैसे हिन्दी ही को लीजिए। हिन्दी पढाने का यही मतलब है कि बच्चों को ज्ञान हर एक प्रकार से हो जाय पत्र लिखना, डिक्टेशन लिखना पद्य कंठस्थ होना, सुन्दर और स्वच्छ लिखना पढ़ना इत्यादि। इन विषयों पर अधिक ध्यान देना चाहिए और पुस्तक की योग्यता छुड़ाकर बालकों में ऐसी शक्ति डालनी चाहिए जो ज़बानी सब बातें प्रकट करसकें। कोई भी विषय हो उसमें पूरी योग्यता रहने से कामयाबी अधिक होगी पर क़ायदा से हमेशा फ़ायदा होगा।

यह तो उन अध्यापकों और विद्यार्थियों के विषय की बात अब थोड़ा सा माता पिता के विषय मे कुछ विचार करना चाहिए जो लड़का समझदार है और होशयार है उसके सामने आपस का व्यवहार बड़े ही अच्छे ढंग से रखना चाहिए। अन्त में मेरी अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं से विनीत प्रार्थना है कि शिष्य और शिष्यायें के साथ सदा प्रेम के साथ वर्ताव करें मारपीट और सख्ती का जमाना गया सदा प्रेम से काम लेने में बड़ी हो अच्छी बात है अन्यथा सिवाय कष्ट और दुख के कुछ हाथ नहीं आयेगा यह विषय बडा कठिन है। प्राचीन सभ्यता का संस्मरण करते ही सब बातें सामने दिखाइ देने लगती हैं। इसके लिए सच्चे शिष्य एकलव्य और गुरु द्रोणाचार्य ऐसे शिक्षकों का काम है पर कुछ तो होना चाहिए। भगवान से प्रार्थना है कि अध्यापकों, अध्यापिकाओं का जीवन पवित्र करें और साथ हो शिष्यों की श्रद्धा-शक्ति बढ़ावें। और क्या कभी फ़िर आज कल के अधिकांश माता पिता अपने बच्चे को एक झंझट समझ कर स्कूल में भेजते हैं जिससे शोर गुल से जी छुटे और घर पर आते ही घबड़ाने लगते हैं। दिनरात पैसे के चक्कर में पड़े रहते हैं यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बात उन माता पिता के लिए है जिन्हे रुपये पैसे और सामान की कमी नहीं योग्यता भी जिनकी अधिक है पर उन्हें अपने चक्कर से इतनी भी फुरसत नहीं मिलती कि बच्चे से कुछ बात चीत भी कर सकें । मेरी तुच्छ सम्मति में उन्हें कम से कम ऐसा समय निकालना चाहिए जिस में वह अपने बच्चों और लड़कियों का निरीक्षण कर सकें इस से विशेष लाभ की संभावना है । बच्चों को पाठशाला में भेज देते हैं वे न मालूम क्या करते हैं इसका कुछ भी ध्यान नहीं रखते हाँ परीक्षा में पास हुआ या फेल इसके लिए अधिक ध्यान रहता है । कुछ लड़के तो अक्सर ऐसे होते हैं जो घर से चलकर पाठशाला के नाम और और विषयों में मन देते हैं जिस से बड़ी ख़राबी होती है । उनके खाने पीने और खेलकूद, मनोरञ्जन सभी बातें में स्वतन्त्रता देनी चाहिए घर का समय विभागा अलग बनाना चाहिए

नारी चरित्र पर पुरुषों का प्रभाव ।

ले०—श्रीयुत कृष्णकुमार मिश्र

जिस दिन से भारत ने अपनी आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता खोकर गुलामी मोल ली उसी दिन से उस का सारा आदर्श मानो लुप्त प्रायः हो गया । भारत के सामाजिक नियमों में शिथिलता आ गई । नैतिक पतन होगया इसी तरह धार्मिक रीति रिवाज के रूप में भी ऐसा परिवर्तन हुआ कि वर्तमान धर्म उसी प्राचीन धर्म का रूपान्तर है यह मानने को भी जी नहीं चाहता । हम आज समाज के उन महानुभावों का ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं, जो लोग समाज के हित के लिए ही जी रहे हैं और जिन्हें समाज की दुर्दशा कांटे के समान चुभा करती है ।

आइये मित्रों ! मिलजुल कर इस बात पर विचार करें कि हमारी समाज जो आज विधवाविवाह रोकने के लिए चिन्तित हो रही है वह क्या उसको रोकने के वास्तविक उपायों की तरफ अग्रसर हो रही है या यों ही भटकाती फिरती है । हम पाठकों को यह बतला देना चाहते हैं कि हम विधवा विवाह के कट्टर विरोधी है और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि समाज की पवित्रता की रक्षा हो सकती है तो केवल इस को दूर रखने ही से हो सकती है । आज पर्यन्त यह भारतवर्ष उन सती माताओं के ही कारण अपना मस्तक उन्नत रख सका है जिन्होंने सतीत्व के बदले प्राणों की आहुति तक दे दी है । आज भी इस की इस पतित अवस्था में भी यदि इसके पास कोई गौरव की सामिग्री है तो वही एक मात्र भारत जननियों का सतीत्व ! परन्तु हम इसी के साथ यह भी मानते हैं कि केवल बिधवा विवाह का विरोध अर्थात् सतीत्व की दुहाई ही इस विकराल प्रथा को रोकने के लिये यथेष्ट नहीं । यह सिद्धान्त की बात है कि यदि समाज वा धर्म में से किसी प्रथा को दूर करना अथवा उसके प्रवेश को रोकना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होंगी। तथा कोई नवीन प्रथा समाज में प्रवेश करानी होगी। तो उस समाज को जनता को बड़े २ स्वार्थ त्याग करने होंगे। तब कहीं सफलता प्राप्त हो सकेगी अन्यथा नहीं। भारत के इतिहास में इसके अगणित प्रमाण आज पर्यन्त अङ्कित हैं। जब बढ़ती हुई हिंसा के विरुद्ध भगवान् महावीर तथा बुद्ध देव ने धार्मिक संसार में आवाज़ उठाई तो उन्हें सारे ऐहिक सुखों को तिलांजलि देकर; भिक्षुक वृत्ति धारण करके जीवन व्यतीत करना पड़ा। इसी तरह इसलाम के धार्मिक नेता मुहम्मद साहब ने जब भारत वर्ष में इसलाम धर्म का प्रचार करना चाहा तब उन्हें बड़े २ विरोधी दलों और कटकों का सामना करना पड़ा। बगैर स्वार्थत्याग के संसार में किसी महान कार्य की सिद्धि असम्भव है। हम पूछना चाहते हैं कि क्या हिंदूसमाज की पुरुष-जनता जो अपनी माताओं और बहिनों के उस आदर्श चरित्र को निष्कलंक और अक्षय रखने के लिये व्यग्र है, कुछ भी स्वार्थत्याग करने को तैयार है? यदि उनमें थोड़ासा भी स्वार्थ त्याग का भाव नहीं है तो भारत को हिंदू नारियों से उन्हें किसी प्रकार के स्वार्थत्याग की कामना करने का कोई अधिकार नहीं है परन्तु यदि पुरुष समाज अपना थोड़ा सा भी स्वार्थत्याग करने के लिये प्रस्तुत हो जाय तो हमारी माताओं और बहिनों को किसी प्रकार के स्वार्थत्याग का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। हिन्दूनारी जाति के रक्त में स्वार्थ त्याग का बीज बोया हुआ है, उसे केवल सींचने की आवश्यकता है। तपस्या और स्वार्थत्याग की इच्छा आज भी बड़े २ ऋषि मुनियों और यशस्वी राजाओं की गृहदेवियों के पवित्र चरित्र से मिल सकती है।

हाय! आज भी अनेक हिंदू रमणियां घर में पाव भर अन्न के होते हुए भी उसकी रोटियां बनाकर पति को खिला देती हैं और पति के यह पूछने पर कि तुम ने खा लिया? मुस्कराते हुए मुख से उत्तर देती हैं कि मैं बहुत पहिले ही खा चुकी।' मुख कुम्हलाया हुआ मालूम न हो, कहीं स्वामी सच्ची बात जान लेंगे तो उन्हें कष्ट होगा। इसी लिए सारी बातें छिपाई जाती हैं, किसी दूसरे कारण से नहीं। क्या अभी कोई इस संसार की पुरुष-जाति स्वार्थत्याग में हिंदू नारि जाति के सामने सिर ऊंचा कर सकती है? परन्तु मित्रो! हिंदू-रमणियों के मनः समय की महिमा का अन्त यहीं नहीं होता बल्कि उनके अगाध हृदय की पवित्र भाव-तरंगों को गिनने के लिए हमें और एक सीढ़ी ऊंचा चढ़ना होगा।

आओ पाठको! हम एक बार ब्रह्मचारिणी बालविधवाओं के परमपवित्र, आदर्श एवं निर्मल चरित्र पर भी दृष्टि डालें। किन्तु सावधान! तुम्हारी मलिन दृष्टि कहीं उनके उज्ज्वल सतीत्व-तेज को देखने में असमर्थ न हो। इस लिये साथ ही साथ पुरुष जाति के कुत्सित चरित्रों पर भी दृष्टि डालते जावो। हाय! आज भी ४०-४०, ५०-५० और ६०-६० वर्ष के बूढ़े अपनी विषय वासनाओं की क्रूरता-वेदी पर देश की १२-१२, १४-१४ वर्ष की सुकुमार बालिकाओं का (अपनी राक्षसी लालसा को चरितार्थ करने के लिए) बलिदान कर देते हैं। वे बेचारी अबोध कन्यायें, सब कुछ जानते और समझते हुये भी, चूं तक नहीं करतीं और अपने सारे सुखों की आहुति उस बूढ़े की (जिस की लकड़ियां श्मशान में पहुंच चुकी हैं) कुवासना ज्वाला में देदेती हैं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और वे ही वृद्ध उन बालिकाओं को अपने मरण के बाद ब्रह्मचारिणी रहने का उपदेश देकर सुख स्वप्न देखते हैं ! बलिहारी ऐसे उपदेशकों की आप तो मृत्यु के मुख में प्रवेश करते २ भी अपनी राक्षसी मनोवृत्तियों का दमन नहीं कर सकते परन्तु एक नव-योवना अथवा अल्पवयस्का बालिका से जिस की काम वासना की तृप्ति आज पर्यन्त नहीं हुई हैं, पातिव्रत धर्म रक्षा की प्रत्याशा करते हैं। बलिहारी आप की बुद्धि को पवित्र नारि जाति के सन्मुख कैसा घृणित आदर्श है। पन्द्रह वर्ष की विधवा पुत्र बधू तो बाहर सोती और रात भर चिन्ता तथा दुःख से उद्विग्न रहती हैं और साठवर्ष के ससुर जी १२ और १४ वर्ष की नवविवाहिता बधू के साथ रङ्ग महल में सुहाग की रात मनाते रहते हैं। हायरे स्वार्थी पुरुष जाति ! यदि तेरा [illegible] होगा तो किस का है [illegible] के पतिने [illegible] अधःपतन न हि[illegible] गा ? जिस दिन स्त्री स्वर्ग यात्रा की, उसी दिन से नारियों की कठिन तपस्या का आरम्भ हुआ। बेचारी बलिका ने उसी दिन से सारे ऐहिक सुखों को तिलांजलि देदी। सारे शृङ्गारों को मृतक की खाल की भांति उतार कर फेंक दिया। सारे स्वादिष्ट भोजनों का उपभोग उसी समय से छूट गया ! केवल स्वादिष्ट भोजन ही क्यों, ईश्वर दत्त पांचों इन्द्रियों के सारे भोग विलासों की भेंट चढ़ा दी गई। एक मामूली सी फटी साढ़ी में ही जीवन व्यतीत करने का सङ्कल्प कर लिया गया। हायरी क्रूर वृत्ति पुरुष जाति ! कैसा भीषण तेरा व्यापार है। बंगला के प्रसिद्ध नाटक रचियता श्री द्विजेन्द्र लाल राय ने सत्य लिखा है कि यदि शास्त्रों की रचना का भार स्त्रियों पर होता तो आज धार्मिक संसार में एक विचित्र ही परिवर्तन दिखाई पड़ता। इस में तो सन्देह नहीं कि कहीं कहीं हिन्दू शास्त्रों में पुरुषों को बहु विवाह की आज्ञा दी गई हुई पाई जाती है। शायद इस समय इस विषय [illegible] टिप्पणी करना धर्म वि[illegible] र टीका इस लिये हम [illegible] द्ध समझा जाय। पुरुष [illegible] हां केवल यही कहेंगे कि जो जाति १२ और १४ वर्ष की अक्षत योनि विधवा बालिकाओं को आजन्म ब्रह्मचारिणी रहने का उपदेश दे सकते हैं वह स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत क्यों नहीं ग्रहण कर सकते ? प्रकृति इस बात को बतलाती है कि मनुष्य के सामने जैसा आदर्श रखा जायगा उसके हृदय में वैसा ही भाव पैदा होगा। जब पुरुष जाति नारी जाति के सामने ब्रह्मचर्य्य का उच्च आदर्श उपस्थित नहीं कर सकता तब स्त्रियों से कठिन ब्रह्मचर्य्य पालन की आशा करने का उसे अधिकार ही क्या है ?

मूर्खता।

ले०-श्रीयुत रामचन्द्रसिंह हेडमास्टर स्टेट स्कूल नोहर।

शाम का समय था। उधर भगवान भास्कर दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात् पश्चिम दिशा में विश्राम की तैय्यारी कर रहे थे, इधर वैद्य जी पसीने से लथपथ औषधालय को वापिस आरहे थे, आधा मार्ग भी नहीं तय किये थे कि एक युवक ने लपक कर कहा-"जेयराम जी कीवैद्य जी किधर से आगमन हो रहा है ? वैद्य जी (बनारसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रेशमी चादर को सम्भालते हुए) "क्या कहें भाई सांस लेने को भी फुर्सत नहीं है। आजकल बीमारियों के मारे नाक में दम है।

आठों पहर झमेला लगा रहता है।

युवक ने मुसकराते हुएकहा--"तब तो खूब पौबारह होती होगी?" वैद्य जी ने झेपते हुए कहा—"ना, भाई मैं तो यह काम पुण्यार्थ करता हूं। मुझे भला रूपयों पैसों से क्या काम, पर हाँ, यदि चाहूं तो इन्हें राह के कंकड़ों सा इकट्ठा कर सकता हूँ।

इसके पश्चात् वैद्यजी और भी कितने राग आलाप गये जिसका अनुभव प्रत्येक पाठक पाठिकाओं को होगा जिन्हें ऐसे वैद्य-भूषणोंसे वार्तालाप करने का संयोग हुआ होगा पर युवक भी एक काइयां था, और साथ ही साथ वैद्य जी के लड़कपन का सहपाठी। ताना मारते हुए बोला—"भाई, मैं तो काशी में रह भाड़ ही झोंकता रहा यह तो तुम्हें मालूम ही है कि एड़ी का पसीना सिर कर हिन्दी मिडिल पास किया था इसके बाद दश साल तक हजारों रुपये और सब से बढ़ कर तन्दुरस्ती जो हजार नियामत है-का स्वाहा कर बी० ए० किया। पर आज कौडी २ के लाले पड़े हुए हैं। तुम जो मिडिल में लगातार तीन साल तक फेल हुए। सिर रगड़ते २ मर जाते थे पर रेखा गणित की एक शकल भी याद न होती थी। आज अमन चैन की बंशी बजाते हो, रुपया पैसा कंकड़ों सा इकट्ठा कर सकते हो। इसे मैं समयकी बलिहारी न कहूँतो क्या कहूं।

वैद्य जी पानी २ हो गये क्योंकि इस समय कुछ ग्रामीण इकट्ठा हो गये थे "मिडल में तीन साल तक लगातार फेल हुए। सिर रगड़ते २ मर जाते थे पर एक शकल भी याद न होती थी। ये वाक्य बार २ इनके स्मृत सागर मे प्रति बिम्बित हो जाते थे और हजार बिच्छूओं के डङ्क से भी अधिक पीड़ा पहुंचाते थे वैद्य जी ग्रामीण बक वादी पण्डितों सा झेपने वाले जीव न थे। कड़क कर बोले-"जनाब, कोरे बी०ए०,एम० ए० करने से क्या होता है। कुछ आत्मिक ज्ञान और सांसारिक अनुभव भी होना चाहिये आप इतने दिन तकमग़जपच्ची करते रहे तो क्या मैं हाथ पर हाथ धरे चुपचाप बैठा रहा? संसार के कोने २ छान डाले। हिमालय की तराई में जाकर बड़े २ साधु महात्माओं का दर्शन किया। उनसे जड़ी बूंटी ली। स्वयं योगसाधन का अभ्यास किया।

इसके सिवाय वैद्यक की पुस्तकों का अध्ययन कर वैद्यभूषण वैद्यशास्त्री की उपाधि तथा और भी कितने से होमियो पैथिक के सार्टीफिकेट प्राप्त किये। तब कहीं इस योग्य हुआ हूँ कि अब कुछ समाज की सेवा कर सकता हूँ।" युवक ने मुस्कराते हुए कहा-"क्या कहना है, वैद्यभूषण जी। आप के योग्य और वैद्यक का अनुपम संमिश्रण तो सोना में सुगन्धि वाली उक्ति चरितार्थ करता है। इच्छा होती हैं, कि इस पन्चमेल मिठाई का मैं भी रसास्वादन करूं।

आम सड़क पर इस प्रकार की छेड़ छाड़ से वैद्य जी के हृदय में गहरी चोट लगी। प्रतिरोधकी ज्वाला हृदयमें भभकउठी मन ही मन यह कहते हुए औषधालय का रास्ता लिया-"बच्चू, हाथ लगे तो भूंज डालूंगा कच्चे ही खा डालूंगा। बी० ए० करलेने से जमीन पर पैर नहीं पड़ता है।"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(२)

भगवान भास्कर का पदार्पण हो गया है। उनकी किरणें पेड़ पहाड़ खंदक खाई नदी नाले सब जगह पहुंच गई हैं नहीं पहुंची हैं तो केवल एक मकान के अन्दर जिसकी चार दिवारियां हिमाचल की श्रेणियां सी इन्हें रोके हुई हैं और जिसमें एक युवती अपने नव जात शिशु को गोद में लिये मन ही मन देवी-दुर्गा को इस प्रकार मना रही है-"भगवान, यदि इस बार हमारा लाल निरोग हो जायगा तो मैं सत्यनारायण की कथा सुनूंगी। काली को खसी चढ़ाऊंगी ब्राह्मणों को खिलाऊंगी। हरि हर क्षेत्र और भृगुक्षेत्र पैदल जा कर जल चढ़ाऊंगी

इसी समय सास ने आकर कहा-"बहू, देखती नहीं, नव युवक बाबू डाक्टर बाबू के साथ खड़े हुए हैं। और तुमने अब तक केवाड़ भी नहीं खोला हैं।

बहू ने झटपट किवाड़ खोली और गठरी सी बन एक कोने में दबक गई। डाक्टर साहब ने आकर देखा कि चारपाई पड़ी है। जिसके एक पार्श्व में जूठे बर्तन पड़े हैं जिनसे चावल के दाने गणेश वाहनों की कृपा से इधर उधर बिखरे पड़े हैं और दूसरे पार्श्व में दही की हंडियां पड़ी हुई हैं जिनमें मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। किवाड़ के पल्ले तले सात दिन का बहारा हुआ कूड़ाकर्कट पड़ा हुआ है और नवजात शिशु एक मैले कुचैले वस्त्र पर पड़ा हुआ जीवन की शेष घड़ियां गिन रहा है। उसकी आंखे कह रहीं हैं—"महिला समाज, जिस निर्दयता जेहालत से तुम लोग हमें मार रही हो उसका प्रायश्चित शास्त्र में कहीं नहीं है। यदि तुमने पालन पोषण की बुद्धि और शक्ति नहीं है तो हमें व्यर्थ क्यों उत्पन्न करती हो।"

नवयुवक बाबूने बालक को गोदमें उठाया। डाक्टर साहेब ने देख भालकर कहा—"लड़के का दस्त कितने दिन से बन्द है?"

सास ने घूंघट की ओट से कहा—"बालक तो दिन भर हगा ही करता था। परसों वैद्य जी को बुलवाया था उन्होंने एक ऐसी दवाई दी है कि कल से इसका हगना बिलकुल बन्द है बच्चा खूब भलाचंगा है, दिन भर चुपचाप सोया रहता है। हां बीच में कभी२ चिहुक पड़ता है तो आंखे तन जाती हैं यही एक डर की बात है।"

डाक्टर साहब ने नव युवक बाबू की ओर देख कर कहा-"लड़के कुछ गटरपटर के साथ अफीम दे दी गई है। दशा शोचनीय है। अब केवल एक ही उपाय है कि यन्त्र के द्वारा इसका पैखाना निकाला जाय नवयुवक ने कहा-"हम भला क्या कह सकते हैं? आप जैसा उचित समझे करें।"

डाक्टर साहेब ज्योंही अपना यन्त्र तन्त्र ठीक कर काम करने को उतारू हुए त्यों ही सास ने नाक भौं चढ़ाकर कहा-"आज तक तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। मेरे ही घर नया काम क्यों शुरू होगा। सारा गांव तो पड़ा ही है।"

अड़ोस पड़ोस की स्त्रियों ने भी सास की हां में हां मिलाई उधर गठरी ने भी पांव फैलाये और नवयुवक बाबू की गोद से बालक को छीन कोने में जा फिर दबक लगाई डाक्टर और नवयुवक बाबू ने लाख समझाया पर किसी के हृदय में एक न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समाया सब ओर से आवाज़ आई "ऐसा नहीं हो सकता।"

ज़ियाहठ प्रसिद्ध है। भला इनके सामने किस की चल सकती है। युवक बाबू की एक न चली। उनकी आशा लता पर तुषार पड़ गया। एक बार तो मन में आया कि बलात्कार से सारा काम कर दिया जाय, पर फिर मन में यह शङ्का हुई-"यदि तीन तेरह हुआ तो फिर कौन जिम्मेवार होगा तू तो मित्र के नाते सारा काम कर रहा है तेरा अपना घर भी तो नहीं है। लाचार हो कर कहा-"डाक्टर साहेब, और कोई उपाय कीजिये।"

डाक्टर साहेब एक अनुभवी आदमी थे। यह काम करते २ केश पक गये थे। दवाई देते हुए बोले-"वक्त पर दी जायगी तो यह भी रंगत लायगी। आगे हरि-इच्छा।"

डाक्टर साहेब को गये अभी दश मिनट भी नहीं हुए थे कि वैद्यराज जी अंग्रेजी फैशन के कोट पहने और, हाथ में मिर्जापुरी बांस की छड़ी लिये आँगन में आधमके देखते ही स्त्रियों ने मधुमक्खियों की तरह चारो ओर से घेर लिया। सास ने अपनी राम कहानी आद्योपान्त व्यंग और ओजस्वी भाषा मेंपरतंत्र देश के व्याख्यान दाता सदृश्य सुना डाली। वैद्यजी ने शिकार फंसा हुआ जान कर बड़े हाव भाव से कहना प्रारम्भ किया "मैंने तो अभी मोहनिया की मां से सुना। दौड़ा हुआ आया कि चल कर बच्चू को आड़े हाथ लूं। पर भाग्य अच्छे थे कि बच गये भला इनके पास सिवाय कुनैन टिंचरायडिंग और कुछ चमक दमक औज़ार के और रक्खा ही क्या है। कोई बिमार पड़ता है कुनैन की गोली देदेते हैं। किसी को चोट लगती है टिंचरायडिंग लेप देते हैं। किसी को फोड़ा फूंसी निकलती है चीड़ फाड़ कर देते हैं। यह भी सब अपनी करनी नहीं हैं। दूसरों के हाथ शिकार होवे तो दुनियाँ ही करले"।

एक स्त्री जो वैद्य जी की प्रचारिका थी, बोली-"और तो और नवयुवक बाबू के सिर पर न जाने कौनसा भूत सवार हुआ है कि दूसरे के घर में दखल देते फिरते हैं"।

वैद्य—"तुम लोगों को मालूम नहीं है। नवयुवक बाबू हम से द्वेष करते हैं। जहां पर काम शुरू करते हैं वहीं वे अडंगा लगाते हैं। यश के लिये देशोपकार का डींग हांकते हैं। बिना गुण किसी को पूछ तांछ होने लगे तो "गुण न हेरायो, गुणग्राही हेरायो है" वाली उक्ति चरितार्थ होजाय। देखो तो भला, लड़का कैसे टुकर २ ताकता है। इस पर तुर्रा, यह कि यंत्र तंत्र द्वारा दस्त निकाला जाय। राम, राम, ये कलयुगी पाखंडी तो धर्म कर्म सब डुबोना चाहते हैं वैद्य जी। इस प्रकार के बात जाल में फांस कर रफ्फूचक्कर हुए।

अबोध बालक ने एक आह भरी, जो घट घट वासी परमात्मा के सिवाय किसी के समझ में न आई।

(४)

आधीरात का समय है। झिम २ बून्दे पड़ रही हैं। प्रकृति प्रसुप्ता है, संसार के प्राणीमात्र निद्रादेवी की विश्राममयी अंकस्थली में विश्राम कर रहे हैं पर एक महिला जिस की अवस्था ढल चली है पांव बढ़ाती हुई चली जारही है। चलते २ एक हवेली के द्वार पर ठहर जाती है और पुकारने लगती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है-"ओ वैद्य जी-ओ वैद्य जी, अन्दर से एक नौकर ने आवाज़ दी-कौन है री कौन"?

महिला—"मैं हूँ।

नौकर—"कौन? रमो की महतारी"।

महिला—"हां"।

नौकर—"अरी, ऐसी अन्धेरी रात में और इस समय कैसे आई है?

महिला—"अरे हमारे लाल का बुरा हाल है। वैद्यजी को जरा जगादे"।

वैद्यजी ने धीरे से कहा—"ओ, रघुवा२, कहदे कि वैद्य जी कल शाम से कहीं रोगी को देखने गये हैं। कल सुबह तक आ जायेंगे"।

महिला सुनते ही सन्न होगई। उसके छाती पर सांप रेंगने लगा। आशा रूपी घड़ा निराशा रूपी सागर में डूबने उतराने लगा। कहीं आस अवलम्बन न देखकर गिरते पड़ते नवयुवक बाबू के घर आई और आंसू बहाते हुए बच्चे की दीन दशा कहने लगी। युवक की आंखों में आंसू छल छला आये और चुप चाप बुढ़िया के पीछे २ होलिये। अभी घर के दरवाजे पर भी नहीं पहुंचे थे कि अन्दर से एक साथ ही रोने की आवाज आई जो बच्चे के प्राणान्त होने की सूचना थी।

महिला मूर्छित हो जमीन पर गिरपड़ी। युवक पक्षा घात के मारे सा जहां का तहां ही खड़ा रह गया।

इस प्रकार मां का कलेजा पति पत्नी के मधुर मिलन का फल, राष्ट्र का भावी सुपुत्र मूर्खता की वेदी पर बलिदान होगया। पर यह मूर्खता किस की थी। इसका निर्णय विज्ञ पाठक पाठिकायें स्वयं करें।

पुत्री शिक्षा तथा माताओं के कर्तव्य।

ले०—श्रीयुत पुष्पावती देवी।

श्लोक—

माता शत्रु पिता बैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा॥

बहनों पाठिकाओं मैंने पिछले अंक में 'धर्म पर विश्वास' विषय पर कुछ विचार प्रकट किये थे आशा है आपने उस से कुछ लाभ उठाया होगा। अब मैं आपका ध्यान 'पुत्री शिक्षा तथा माताओं के कर्तव्य' की ओर दिलाना चाहती हूँ। आशा है इस से कुछ शिक्षा प्राप्त कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगी। आजकल भारतवर्ष में चारों ओर देशोन्नति के लिये हलचल मची हुई है अनेक सभा सोसायटियें हो रही हैं देश हित चिन्तक बड़े २ व्याख्यान दाताओं के देश सुधार के लिये बड़े जोर व शोर से व्याख्यान होते हैं। यद्यपि अपनी बुद्धि अनुसार सब ही इस भारत की अशान्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

को शान्त करना चाहते हैं। कोई स्वदेशी के प्रचार में लीन है कोई एकता की डोरी से जकड़ने में और कोई चरखा कातने में भारतोन्नति समझते हैं यह सब विषय अवश्य ही अत्यन्त लाभप्रद तथा उन्नति के अंग प्रत्यंग हैं तथापि इन सब विचारों का मूल इन से भी बढ़ कर उन्नति का मार्ग पुत्री शिक्षा है जिस के बिना पूर्ण उन्नति होना कठिन ही नहीं वरन् एक प्रकार से असंभव सा है। क्योंकि देश की सभ्यता का पता स्त्रियों की योग्यता से लग जाता है इस लिये पहिले कन्याओं को अखंड ब्रह्मचर्य्य विद्या धर्म साहस धैर्य्य शीलता व गम्भीरता का केन्द्र बनाओ पुत्री शिक्षा की जड़ स्त्री शिक्षा है क्योंकि होनहार व योग्य सन्तान का बनाना शिक्षावती माता के ही हाथ में है भारतवर्ष में ऐसी सन्तान की आवश्यक्ता है जो धर्म प्रचार में निर्भय तथा साहसी होकर आगे कदम बढ़ाती चली जाय और यह सब आप ही पर निर्भर है। आदि काल से यही नियम चला आ रहा है कि जिस देश की स्त्रियें उपरोक्त गुणों से विभूषित हैं उन की सन्तान अपनी मातृभूमि तथा धर्म पर सर्वस्व अर्पण कर देती है।

पहिले इस भारत भूमि पर भी ऐसी ही देवियां शोभित थीं जो अपने प्रिय धर्म व देश पर अपनी आत्मा के टूकड़ों को न्योछावर कर देती थीं। उनकी सन्तान भी धर्म व मातृ भूमि पर तन, मन धन अर्पण करना अपना कर्तव्य समझती थी शोक है कि आज उन्हीं की सन्तति के उपरोक्त गुण शून्य होने से भारत रसातल को चला गया है। वह भारत माता की सशिक्षता देवियां अब कहां लोप हो गई जिनके पुत्रों का मान देश देशान्तरों में होता था जिनका नाम लेने से अब भी हृदय गद्गद हो जाता है। अब गृह लक्ष्मियों के हृदय में अविद्या-अंधकार ने डेरा डाला है। जब तक यह अविद्या रूपी निद्रा को न त्यागेंगी तब तक भारत का उन्नति शिखर पर पहुंचना असम्भव ही है।

उस दयालु जगदीश्वर ने हम स्त्री जाति पर फिर भी हमारी दुर्दशा देख दया की कि ऋषी दयानन्द जैसे परम योगी राज को हमारे सुधार के लिये भेजा जिस महर्षि की कृपा से आज हमको स्थान २ पर कन्या पाठशाला व कन्या गुरुकुल दृष्टिगोचर होते हैं जिन में पुत्री शिक्षा का व धार्मिकता का अति उत्तमता से प्रचार हो रहा है॥ मगर मातायें! आह! उसी घोर निद्रा में सो रही हैं उन की तनिक भी निद्रा भंग न हुई हमारी बहुतसी परोपकारिणी बहिनें तथा कतिपय भद्रपुरुष अपना तन मन धन विद्या में अर्पण कर रहे हैं पाठशालायें खुलवाते हैं अध्यापिकायें रक्खी जाती हैं। परन्तु आप उसमें बाधा डालती हैं पूरी शिक्षा प्राप्त नहीं होने पाती कि उनका पढ़ाना बन्द कर देती हैं।

आपका कर्तव्य तो यह है कि आप भी अवकाशानुसार उसे में कुछ भाग लो व पुत्रियों का उत्साह बढ़ावो। न कि उसका जड़ काटने पर उतारू होओ जो स्त्रियें अपने धर्म की देश की बच्चों की रक्षा नहीं कर सक्ती उनसे उन्नति की क्या आशा की जाय वह तो अपना घर तक नष्ट करने पर कदम रखे हुए हैं फिर कोई गुरू या आचार्य आपके घरों को कदापि नहीं बना सक्ते हैं।

आप कहेंगी कि यह क्या कह रही है हम अपना घर क्यों नष्ट करने लगे। परन्तु आप ध्यान से देखिये मैं सच कह रही हूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि आप घर व देश दोनों को सन्तान के साथ २ नष्ट कर रही हैं। वह किस तरह नष्ट होते हैं सुनिये—

आप अपनी कन्याओं को जब वह ६ या ७ वर्ष की हुई तब पाठशाला भेजकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेती हो फिर आपको उनका जीवन धार्मिक या विदुषी बनाने की कोई चिंता नहीं होती। यह चिंता किसे होती है उन्हें जो बहिनें धर्मात्मा व परोपकारिणी होती हैं और इन्हीं की शिक्षा में अपना जीवन अर्पण कर देना मुख्य ध्येय समझती हैं। अब भी यह पवित्र भूमि ऐसी गुणानुरक्त बहिनों से खाली नहीं है। परन्तु प्रतिशत चार बहिने ही ऐसी होती हैं जो अपना तन मन धन धर्म और परोपकार एवं विद्या में लगादें यदि आप इसका आदर्श देखना चाहें तो आदर्श रूप बदायू की आर्य्य कन्या संस्कृत पाठशाला पर दृष्टि डालिये और देखिये कि इसके साथ स्वर्ग वासी मु० शकटमल जी ने क्या २ कष्ट सहन नहीं किये। इसी की सेवा में तन मन धन सब कुछ अर्पण कर गये। स्वयं तो स्वर्गवासी हुए परन्तु सदैव के लिये आर्य्य कन्याओं को अति सुशिक्षित बनाने का पूर्ण प्रबन्ध कर गये जिसको प्रबन्ध उनकी परम प्रिय धर्म पत्नी धर्म रूपा श्री मती पार्वती देवी जी अति उत्तमता से चला रही हैं इस पाठशाला में इस समय १०४ कन्याएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। यहां पर धार्मिक शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है और बड़ी २ आवश्यक परिक्षायें विद्या विनोदनी, विदुषी आदि पास कराई जाती हैं जिन से कि गृहस्थिके कार्यों में भी पूर्ण योग्यता हो जाती है।

आप अपनी दशा को देखिये कि यदि आपके प्रति वर्ष १ बच्चा उत्पन्न होता है तो ५ वर्ष में ५ बच्चे होजाते हैं अब आप को उनके पालन पोषण से तनिक भी अवकाश नहीं मिलता और आप यथोचित पालन न कर घबरा उठती हैं। यह दृश्य मैंने अपनी आंखों से देखा है कि एक स्त्री के प्रतिवर्ष बच्चा होने के कारण ७ वर्ष में ७ बच्चे थे और सबही अनसमझ छोटे २ जब कभी मैं उस के गृह जाती थी तो देखती थी कि कोई खाना मांगता है कोई पानी चाहता है कोई दूध के के लिये रोरहा है तो कोई गोदी के लिये ही बिलख रहा है। कोई पाखाने जाने को खींच रहा है कि इधर दो बच्चे आपस में किसी वस्तु पर लडते झगड़ते हैं यहां तक कि बेचारी माता को इन के कारण भोजन करने तक का भी होश नहीं मिलता। तब घबरा कर कहती थी कि हे ईश्वर! तू इन में से किसी को उठाले तू मुझे ही क्यों दिये चला जाता है जिसे चाहिये उसे दे मैं ऐसी सन्तान से बड़ी दुखी हूं।

आप समझ गई होंगी कि भारत वर्ष में बहुत सी माताओं की क्या दशा है जो अपने बच्चों से दुखी हो कहती है कि अरे कम्बख्तों जरा बाहर ही निकल जाओ किसी तरह मेरा पीछा तो छोड़ो। अब इस का निर्णय मैं आप ही पर छोड़ती हूं कि इस में दोष किस का है क्यों कि मुझे कुछ और भी कहना है। अस्तु,

जब आप ४-६ बच्चों से ही घबरा जाती हैं तो जिस माता की गोद में १०४ कन्यायें खेलती हैं उन की क्या दशा होगी। उन्हें तो एक सेकेन्ड भी सुख न मिलता होगा, परन्तु नहीं आप देखिये कि वह किस उत्तमता से उसका पालन व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शिक्षा कर रही हैं । यद्यपि बहुत कन्यायें ४-५ वर्ष तक की हैं परन्तु कभी कोई कन्या न लड़ती है न झगड़ती है वरन् एक दूसरे की संगिनी व परस्पर प्रेम सहित रहती हैं फिर भी बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जो उपरोक्त श्रीमती जी की वृद्धावस्था में कष्ट दायक हैं परन्तु वह धैर्य्य के साथ धर्मोन्नति के लिये सब कष्ट सहन कर उनकी रक्षा व शिक्षा में तन, मन धन से तत्पर हैं यह निस्वार्थ भाव से कन्याओं पर निरन्तर प्रेम करती हैं जिसके परिणाम में कन्यायें भी इन्हें माता से अधिक पूज्य मानती व प्रेम करती हैं ।

अब मैं आपका ध्यान दूसरी ओर लगाना चाहती हूं आप पाठशाला से साधारण सी परीक्षा पास करने पर ही पुत्री को उठा लेती हैं उनकी पूरी शिक्षा नहीं होने पाती कि उनके विवाह की चिन्ता आ घेरती है यह क्यों ? इस लिये कि आप अपने फ़र्ज़ से अदा होना चाहती हैं । परन्तु क्या यह उचित है कि जो रसोई २ घंटे में होती है उसे अत्यन्त आवश्यकीय कार्य के कारण १ घंटे में ही कच्ची बना कर रखदें क्या कभी आपने ऐसा किया है ? यदि नहीं, तो जब आप इस छोटे से कार्य में असावधानी नहीं करतीं तो कन्या जो कि आप की आत्मा है उसके सर्व नाश पर क्यों उद्यत हो । बहुत सी बहिनें कहती हैं कि हम घर पर ही शिक्षा दिला लेंगे परन्तु ऐसी कोई बहिन ही देखने में आई होगी । हां, इतना अवश्य देखा है कि जो ब्रह्मचर्य व विद्या का समय है उसमें विवाह आदि कर दिये जाते हैं और उनका चित्त विद्या आदि से हट कर गहने कपड़े तथा फैशन की ओर झुक जाते हैं ।

विवाह भी किस उत्तमता से होते हैं, कि गुण कर्म आदि का तो लेश मात्र भी ध्यान नहीं वरन ऐसा ढूंढ़ा जाता है कि लड़का खूबसूरत धनवान हो और बहुत हुई तो यह कि एम० ए० बी० ए० पास है रोटी कमा खायगा । लेकिन क्या कभी आपने यह भी देखा कि घर की धार्मिक श्रद्धा कितनी है धर्म से कितनी रुचि है वह अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहता है और आपकी कन्या का और उस का मेल मिलता है या नहीं । भला यह कैसे जाना जासकता है क्योंकि कच्ची अवस्था में तो विवाह स्थिर होजाते हैं ।

क्या यही अपूर्ण कन्यायें भारत वर्ष की और कुल की त्रुटि को पूर्ण कर सकती हैं, जिन की बुद्धि परिपक्व होने से प्रथम ही उनके कोमल कन्धों पर गृहस्थ रूप महान बोझलाद दिया गया है । भला सिवाय इसके कि जैसा आप को या सास आदि को करते देखती हैं वैसा ही करने लगें बुद्धि से वह कुछ उन्नति के कार्य नहीं कर सक्ती हैं कारण कि वह विद्या बुद्धि में अपूर्ण हैं । पूर्ण 'विदुषी' होने दीजिये तब देखिये कि आज भी द्रौपदी, सीता व मन्दालसा आदि बन सकती हैं या नहीं । वह विवाह शब्द सुनने की अधिकारिणी भी नहीं होती कि ९-१० वर्ष की दुधमुहीं बच्ची का विवाह कर माता बनाने की तय्यारी में लग जाती हो । अतः जैसा कर्तव्य आप पूर्ण करती हैं वैसा ही वह भी करेंगी । और यह सिलसिला बिना तोड़े ऐसा ही रहेगा । आप यह कहेंगी कि हम भी तो छोटी अवस्था में विवाही गई थी, किन्तु आपकी कन्याओं जैसी बल्कि अधिक अवस्था वाली मुसलमान कन्यायें भी विवाही जाती हैं । लेकिन उन में धार्मिक शिक्षा के न होने से वह कैसी अधोगति को प्राप्त होती है इस लिये शिक्षा की कितनी आवश्यकता है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्यारी माताओं व बहिनें ! तुम्हें सुनते २ बहुत दिवस होगये अब तो कुछ कर दिखलाने का समय है, इस डूबती हुई हिन्दू जाति के बचाने का समय है। ब्रह्मचारिणी तेज धारिणी दुर्गा देवी की गर्जना सुनाने की आवश्यकता है न कि जच्चा बनने की जच्चाओं की कृपा से ही तो हम जैसी देवियां पैदा हुई जिन्हें देश और जाति के नाम पर आश्चर्य होता है। कहती है 'बहिनी हम तो आज कल की बातों को न जाने न करें। जैसा बड़ी बूढियें से देखती आई हैं वैसा ही करती हैं'। आहा ! कैसा दृढ़ निश्चय है पशु भी तो ठीक आप ही की तरह दृढ़ निश्चयी होते हैं वह तो विवेक शून्य हैं परंतु आप ! आपने तो विवेक विद्या पर जंग लगादी है जिस से वह उपयोग में ही नहीं आती। मेरी प्रार्थना है कि कृपा कर इस मोर्चे को छुड़ा विद्या व धर्म विचार में कुछ समय लगाइये तब देखिये कि आप को कैसा आनन्द आता है।

देखिये जनक जी ने सीता जी को कैसी धार्मिक शिक्षा दी थी जिसके बल पर सीता को योग्य वर न मिलने पर आजन्म क्वारी रखने का प्रण किया था। सीता के स्वयम्बर समय जबकि योग्य वर मिलने कठिन न थे। देवता राक्षस क्षत्री, ब्राह्मण आदि सब बुलाये थे तब इस समय जब कि अपनी बिरादरी में योग्य बर नहीं मिलते इस जाति बन्धन को क्यों नहीं त्याग देती। आप की कन्यायें गुण कर्म स्वभाव न मिलने के कारण बड़े कष्टों से जीवन व्यतीत कर रही हैं, उनके कष्टों को दूर करना ही आपका मुख्य कर्त्तव्य है।

कन्या गुरुकुल समाचार।

स्वास्थ्य।

ब्रह्मचारिणियों का साधारण स्वास्थ्य बहुत उत्तम है किंतु दुर्भाग्य वश उत्सव के एक सप्ताह बाद ही एक दो ब्रह्मचारिणियों को चेचक निकलनी आरम्भ हुई उन्हें प्रथक रखा गया और इस छूत की बीमारी को बढ़ने से रोकने के लिये जिन २ कन्याओं को टीके का निशान न था उनहें टीका करा दिया गया। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि जनता के लगातार कई दिवस तक गुरुकुल को खुले तौर से घूम घाम कर देखने की खुली छुट्टी होने के कारण इस रोग के कीटाणु यहां प्रविष्ट होचुके थे अतः रोगियें की संख्या बढ़ने लगी। १० कन्याओं को यह रोग हुआ तब तो हेल्थ आफिसर को रिपोर्ट हुई समग्र अध्यापिकाओं, कर्मचारियें तथा कन्याओं को टीके कराये गये, सारी कोठी फिनायल से धुलाई गई और कन्याओं को रोगियों से बिल्कुल अलग रखा गया है यहां तक कि वहां के बर्तन आदि भी अलग हैं। कुल रोगी कन्यायें १५ हैं।

रोगी कन्याओं में से तीन को बहुत तेज़ माता निकली थीं बाकी को बहुत ही हल्की अब प्रायः सभी स्वस्थ हैं और हंसती खेलती हैं किन्तु डाक्टर की आज्ञानुसार उन्हें छै हफ्ते प्रथक रहना पड़ा है जिस से उनकी पढ़ाई में कुछ कमी हो जायगी परन्तु उसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूरी करने का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा। उत्सव का लाभ कन्याओं को और कुछ हुआ या नहीं यह भगवान जाने परन्तु यह हानि अवश्य हुई है।

पाठ क्रम।

यद्यपि यहां पर अब भी सुयोग्य अध्यापिकाओं की आवश्यकता बनी हुई है तथापि ब्रह्मचारिणियों का पठन पाठन सुचारू रूप से चल रहा है। और यह अनुभव किया जा रहा है कि पाठ विधि के अनुकूल ही समग्र श्रेणियों की पढ़ाई वर्ष के अन्त तक पूर्ण हो जाय। इसके लिये वर्तमान अध्यापिकायें अपने समय से बाहर भी अपने आराम के घंटों को भी कन्याओं के अर्पण कर रही हैं। अतः पढ़ाई बहुत उत्तम हो रही है।

आश्रम।

यद्यपि अध्यापिकाओं की कमी है तथापि हर्ष का विषय है कि इस समय आश्रम में सहायता देने वाली देवियां और नौकरानियां पर्य्याप्त संख्या में मिल गई हैं अतः छोटी और अबोध बालिकाओं के लिये बहुत उत्तम प्रबन्ध है। उन के वस्त्र स्वच्छ रखने, सिर साफ रखने तथा गुन्थ करने बिस्तरे ठीक रखने का बड़ा भारी ध्यान रक्खा जा रहा है।

गुरुकुल की दिनचर्य्या ब्रह्मचारिणियों तथा सभी कर्मचारीगण ४ बजे प्रातः की घंटी पर उठते हैं। चूंकि नल का पानी बहुत ठंडा हो गया है अतः छोटी २ बालिकायें, कमज़ोर व्यक्तियां तो गर्म जल से स्नान करती हैं बाकी स्वेच्छानुसार ठंडे या गर्म ताजे पानी से स्नान करती हैं। स्नान के बाद जो कन्यायें पहिले तैय्यार हो जाती हैं वह स्वस्तिवाचन शान्ति पाठ करके भजन गाती हैं और हवन की घंटी के बजने तक गाती हुई यज्ञशाला में प्रवेश करती हैं।

७ बजने से पूर्व ही हवन संध्या समाप्त कर सूर्य्य के दर्शन होते हैं उसी समय पाठ याद करने बैठती हैं और ९ बजने पर भोजन करने जाती हैं। १० बजे तक तैयार होकर प्रार्थना का भजन गाने बाद विद्यालय प्रारंभ होता है जोकि ४ बजे तक रहता है बीच में ३० मिनट के लिये दूध पीने का समय मिलता है। पिछले घंटों में सिलाई आदि होती है।

व्यायाम और खेल।

हर्ष का विषय है कि इस उत्सव पर ५००) रु० कन्याओं के लिये व्यायाम की सामग्री मंगाने के हेतु प्राप्त हुए थे अतः क्रीड़ाक्षेत्र में इतने धन से सामान लगाया जा रहा है। एक झूला तैय्यार हो गया है जो लोहे के मजबूत खम्भों को लगाकर कुण्डों में रस्सी डालकर बना है। इस में छै कन्यायें प्रथक २ झूल सकती हैं। इसी प्रकार का एक और भी बन रहा है। एक सीढ़ियोंदार झूला भी तैयार हो रहा है और कूदने के लिये भी लोहे के स्तम्भ में रस्सियां डालने वाला भी व्यायाम स्तम्भ आ गया है। अब कन्याओं के लिये खेल और व्यायाम की कमी न रहेगी।

पुस्तकालय।

कन्या गुरुकुल के पुस्तकालय में अभी तक अत्यन्त आवश्यक पुस्तकें भी उपस्थित न थीं किन्तु इस कमी की पूर्ति शीघ्र हो जायगी क्योंकि लाहौर के श्री पण्डित ठाकुर दत्त शर्मा जी के दान से सम्पूर्ण आर्ष ग्रन्थ मंगाने का आर्डर जा चुका है और हमारे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पास ५००) रुपया और भी एक महाशय का है जिस धन से आर्ष ग्रन्थों से भिन्न अन्य उपयोगी आर्य्य भाषा तथा संस्कृत की पुस्तकें मंगाने का प्रयत्न हो रहा है इन पुस्तकों के आजाने पर गुरुकुल का पुस्तकालय भी उत्तम हो जायेगा।

ज्योति के परिवर्तन में प्रायः सभी पत्र पत्रिकायें आजाती हैं अतः यहां का वाचनालय प्रारम्भ से ही बहुत उत्तम है।

ट्रेनिंग क्लास।

ट्रेनिंग क्लास खुल गया कई देवियां आने के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार कर रही हैं दो एक आभी गई हैं। आर्य्य भाषा का कुछ ज्ञान रखने वाली देवियों के लिये दो वर्ष का कोर्स रख कर उन्हें 'प्रयाग विद्या पीठ' की या योग्यतानुसार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की परिक्षायें दिलाकर और साथ में ही शिक्षण की रीति सिखलाकर छोटी श्रेणियों के लिये उत्तम अध्यापिकायें तैय्यार करने का विचार हो रहा है। किन्तु गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली बहुत कठिन है और ४थ श्रेणी से ही संस्कृत, और इतिहास बढ़ाया जाता है। अतः उसको पढ़ाने वाली मिलने में कठिनता हो रही है जो मैट्रिक या एफ० ए० पास संस्कृत और हिन्दी का ज्ञान रखने वाली देवियां यहां पर रहते हुये किसी संस्कृत की उच्च परीक्षा का विचार रखती हों तो यदि यहाँ पर कुछ काम भी करें पढें तो उनके लिये भी प्रबन्ध किया जायगा उन्हें क्षात्रवृत्ति भी दी जावेगी जो देवियां अपनी उन्नति इस प्रकार करना चाहें तो पत्र व्यवहार शीघ्र करें।

कन्या गुरुकुल की मुख्य पत्रिका ज्योति के लिये हम कई मास से संरक्षकों से अपील करते आ रहे हैं। हमें यह सूचना देते हुये बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे कई सँरक्षकों की प्रबल इच्छा है कि इसे बन्द नहीं करना चाहिये। अतः वह इसकी सहायता में स्वयं दान भेज रहे हैं। ग्राहक भी बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। कई एक जो स्वयं आर्य्य भाषा नही पढ़ सकते उन्हों ने अपने मित्रों के नाम इसे मंगवा दिया है। अतः उन सब संरक्षकों को जिन्हों ने अभी तक इधर ध्यान नहीं दिया है आगे बढ़ना चाहिये और शीघ्र ही इस यज्ञ में आहुती डाल कर पुण्य लेना चाहिये। इस मास ज्योति के ग्राहकों की संख्या खूब बढ़ी है प्रत्येक पाठक पाठिकाओं को एक २ दो २ चार २ ग्राहक अवश्य बना देने चाहियें ताकि वैशाख से पूर्व ही ग्राहक पर्य्याप्त हो जावें अगले अंक में दान की सूची तथा ग्राहक वृद्धि बतलावेंगे। आशा है तब तक हमारे पाठक पाठिकायें यथा शक्ति इस सूची की वृद्धि करके हमें उत्साहित करेंगे

चिकित्सा का प्रबन्ध

गुरुकुल के लिये चिकित्सक को स्थायी रूप से रखने का प्रबन्ध हो गया था किन्तु रोगी होजाने के कारण डाक्टर महाशय अभी तक अपने स्थान पर नहीं आ सके हैं तब तक रिक्त स्थान में ५०) मासिक अलाउन्स देकर डाक्टर का प्रबन्ध कर लिया गया है जो प्रति दिन गुरुकुल में आते हैं और सभीके साधारण स्वास्थ्य का निरीक्षण तथा सफाई आदि की देख रेख भी करते हैं भोजन तथा जल की शुद्धि आदि भी देखते है रोगियों की चिकित्सा तो करते ही हैं। रोगियों के नर्स करने का भी बड़ा उत्तम प्रबन्ध हो गया है। अतः संरक्षकों को स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तायें न होनी चाहिये।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार प्रवाह

भारत में ब्रिटिश शासन

आज कल ग्रेटब्रिटेन में जिस दल का शासन हो रहा है, उसके एक सदस्य का नाम है—सर जोयसन हिक्स। आप कान्जर्वेटिव दल के प्रधान नेताओं में से एक हैं और वर्तमान मन्त्रिमण्डल में गृह-सचिव के महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हैं। लङ्काशायर में भाषण करते हुए, आपने यह शब्द कहे थे।

"हमने भारत की विजय भारतीयों की भलाई के लिये नहीं की थी। मैं जानता हूं कि मिशनरियों की सभाओं में यह कहा जाता है कि हमने भारत की विजय भारतीयों को उच्च बनाने के लिये की थी। परन्तु यह झूट है। हमने भारत की विजय ग्रेटब्रिटेन के माल को खपाने के लिये की थी। हमने तलवार के जोर से भारत को जीता था और तलवारके जोरसे ही उसको अपने आधीन रखेंगे। (शर्म की आवाज) यदि इसपर शर्म कहते हो तो कहो। पर मैं सच्ची बात कहरहा हूँ। भारतमें मिशिनरी काम को पसन्द करता हूँ। और मैंने एक किस्म का काम किया भी है। पर मैं इतना झूटा नहीं हूँ कि यह कहूँ कि हम भारत पर भारतीयों के भले के लिये काम कर रहे हैं। हम भारत पर इस लिये राज्य कर रहे। कि ग्रेटब्रिटेन के और विशेषतः लङ्काशायर के कपड़े के माल के लिये बाजार मिल सके।"

सर हिक्स के इन शब्दों पर प्रत्येक भारतीय को गम्भीरता से विचार करना चाहिये। जो लोग अब तक यह समझते हैं कि भारत पर अंग्रेजों का शासन ईश्वर की तरफ से भारतीयों की भलाई के लिये स्थापित हुआ है, उन्हें इससे सचेत हो जाना चाहिये। सर हिक्स जैसे जिम्मेवार आदमी ने जो बातें कहीं उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। केवल उन्हीं को नहीं सभी ब्रिटिस शासकों के भारतीय शासन के सम्बन्ध में यही विचार हैं। इतना ही भेद है कि सर हिक्स जैसे हिम्मती लोग बहुत हैं, जो कि सचाई को असली रूप में प्रगट कर सकें। और लोग सचाई को शब्दों के ढकने से ढक देने का प्रयत्न करते हैं। हमें सर हिक्स का कृतज्ञ होना चाहिये कि उन्होंने अपनी शासन नीति को स्पष्ट रूप से हमारे सामने पेश कर दिया है।

सर हिक्स के इन वाक्यों को पढ़ कर यह भी आसानी से समझ में आ जाता है कि महात्मा गांधी के चरखा आन्दोलन का कितना महत्त्व है। महात्मा खद्दर के प्रचार और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश के मूल पर कुठाराघात करना चाहते हैं। पर हम स्वराज्य के लिये इतना भी त्याग करने को तैयार नहीं। क्या सर हिक्स के के यह शब्द भारतियों की आंखे खोलने में समर्थ होंगे?

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय

कलकत्ता के पादरी फ्रेड्रिक फिशर साहब हाल ही में दक्षिण अफ्रीका से लौट कर आये हैं। एक पत्र प्रतिनिधि से बातचीत करते हुवे आपने निम्नलिखित बात कही हैं "दक्षिण अफ्रीका में अवस्था बहुत ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खराब हो गई है। जितना जातीय विद्वेष मैंने दक्षिण अफ्रीका में पाया है, उतना अन्य किसी देश में नहीं पाया। उदाहरण के तौर पर ट्रांसवाल को लीजिये। वहां पर बिना खास लाइसैंस लिये कोई भारतीय ट्रेन पर नहीं चढ़ सकता। लाइसैंस का देना न देना गोरे आदमी के हाथ में होता है।

भारतीय दुकानदार को हुक्म दिया जा सकता है कि वह अपनी दुकान एक स्थान से उठाकर और स्थान पर ले जावें। भारतीयों को सम्पत्ति पर स्थिर अधिकार नहीं प्राप्त हो सकता। इसके कारण उन्हें बहुत हानि उठानी पड़ती है। वे स्थिर तौर पर कहीं रुपया नहीं लगा सकते। क्योंकि किसी भी क्षण उन्हें उस स्थान को छोड़ने के लिये बाधित किया जा सकता है। विशेषतः ट्रांसवाल में भारतीय लोग सम्पत्ति पर अधिकार नहीं रख सकते यहाँ तक कि बेटे पर भी उनका अपना हक नहीं होता। शहर के किसी रद्दी हिस्से में उनके रहने के लिये अलग स्थान निश्चित कर दिया जाता है, और सभी को वहीं पर रहना पड़ता है। परन्तु उस हिस्से पर भी उनका स्थिर अधिकार नहीं होता। ट्रांसवाल में भारतीयों की वही हालत है जो कि पुराने रूस में यहूदियों की थी।

ट्राम गाड़ी में भी भारतियों को अनेक बाधाओं का सामान करना पड़ता है। दूसरी मञ्जिलपर पर केवल पिछले तीन स्थान भारतीयों के लिये अलग किये हुवे होते हैं। यदि कोई भारतीय स्त्री बच्चों को गोद में लिये हुवे ट्राम की दूसरी मञ्जिल पर चढ़ जाये और भारतीयों के लिये निश्चित स्थान पहले से भरे हुवे हों। तो उसे नीचे उतरना पड़ता है अन्य स्थान खाली होने पर भी उसे बैठने नहीं दिया जाता है। सब भारतीयों को कुली कहा जाता है। पाठ्य पुस्तकों के अन्दर भी भारतीयों को कुली लिखा गया है। भारतीयों को नाटक देखने की इजाजत नहीं है। वे किसी सार्वजनिक पुस्तकालय में पुस्तक या समाचार पत्र तक नहीं पढ़ सकते। भारतीयों को होटलों में भी जाने की इजाजत नहीं है।" एण्टि एशियाटिक बिल के सम्बन्ध में फिशर साहब ने कहा कि यह बिल वस्तुतः असह्य है। इसका उद्देश्य केवल यह है कि सम्पूर्ण दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों का रहना इस प्रकार असम्भव बना दिया जाय, कि वे स्वयं अफ्रीका छोड़ कर भारत को वापिस लौट जांय।

ब्रिटिश साम्राज्य के एक उपनिवेश में भारतीयों के साथ यह सम्मान का व्यवहार होता है! उपर्युक्त बयान किसी भारतीय का नहीं है, अपितु एक अंग्रेज का है। इन बातों के होते हुवे भी भारतीयों को यह उपदेश किया जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्य का उद्देश्य संसार में स्वाधीनता, समानता और लोकसत्ता को स्थापित करना है। अनेक भारतीय भी इस भूल में पड़ गये हैं कि भारत के लिये ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकना सम्भव है। इन बातों से ऐसे लोगों की शिक्षा लेना चाहिये। ब्रिटेन के गोरे निवासियों और काले भारतीयों के हितों में इतना भेद है कि उनका साथ रह सकना सर्वथा असम्भव है। ब्रिटेन का हित इस में ही है कि कमजोर भारत को सभ्य तरीकों से लूट कर शक्ति हीन कर दिया जाय। इस अवस्था में यदि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों से ऐसा व्यवहार हो, तो आश्चर्य ही क्या है?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वराज्यदल की स्थिति।

इसमें कोईसंदेह नहीं कि बड़ी व्यवस्थापिका सभा (कौंसिल आफ स्टेट) के नवीन निर्वाचन में स्वराज्यदल के सदस्यों की संख्या बढ़ गई है। पुरानी कौंसिल में राष्ट्रहित के विरोधी सदस्यों की संख्या बहुत अधिक थी, उनके स्थान पर नवीन निर्वाचन में कुछ देशभक्त स्वराज्यवादी सदस्य निर्वाचित हो सके हैं। यह होते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि बड़ी व्यवस्थापिका सभा के निर्वाचन में स्वराज्यदल को आशातीत सफलता नहीं हुई। स्वराज्यदल की ओर से बहुत कम उम्मेदवार खड़े किये गए और जो किये गए उन में से भी बहुतों को सफलता नहीं हो सकी। यही नहीं, म्यूनिसिपल और जिला बोर्डों के निर्वाचन में भी स्वराज्यदल को बुरी तरह पराजय हो रही है। संयुक्तप्रान्त के निर्वाचन इस बात को स्पष्टरूप से सिद्ध करते हैं। इलाहाबाद और लखनऊ जैसे राष्ट्रवादी नगरों में स्वराज्यदल का मुंह की खानी पड़ी है। कौंसिल आफ स्टेट के विषय में तो यह कहा जा सकता था कि उसके निर्वाचक प्रायः धनी और पूंजीपति लोग हैं, वे स्वराज्यदल को पसन्द नहीं करते। परन्तु जिला और म्युनिसिपल बोर्डों के सम्बन्ध में नहीं हैं, उनके निर्वाचकों में साधारण जनता की संख्या पर्याप्त है। इन बोर्डों में स्वराज्यदल का असफल होना स्पष्टतया प्रदर्शित करता है कि अब स्वराज्यदल की लोकप्रियता बहुत कुछ नष्ट हो गई है। इस परिवर्तन के दो बड़े कारण हैं। प्रथम यह कि जातिगत और साम्प्रदायिक झगड़े बहुत बढ़ गए हैं। जनता राष्ट्रीयता के भावों से इतनी प्रेरित नहीं होती जितनी कि जातिगत भावों से। यही एक कारण है कि म्यूनिसिपल बोर्डों में हिन्दू महासभा के उम्मेदवारों ने स्वराज्यदल के उम्मेदवारों को पराजित कर दिया है। परन्तु इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण कारण एक और है स्वराज्य दल की लोकप्रियता और शक्ति इस बात पर आश्रित थी कि उसने कौंसिलों द्वारा शीघ्र स्वराज्य प्राप्त कराने की आशा जनता को दिलाई थी। उसने कौंसिलों में यह कहकर प्रवेश किया था कि नवीन कौंसिलों द्वारा ब्रिटिश शासन को असम्भव कर दिया जायगा। सुधार वापिस हो जाएंगे और नौकरशाही का नंगा स्वरूप देखकर जनता सविनय आशाभंग और कर न देने के लिए तैयार हो जायगी। इन्हीं ऊंची आशाओं से पिछले निर्वाचन में स्वराज्यदल को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई थी। परन्तु कौंसिलों में जाकर स्वराज्यदल अपनी प्रतिज्ञा पर कायम न रह सका। उसने न केवल बाधानीति को ही मुल्तवी कर दिया, किन्तु स्पष्टतः सरकार से सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया प्रस्ताव उपस्थित करने से शुरू कर सरकारी पद ग्रहण करना भी स्वराज्यदल के कार्य्यक्रम में सम्मिलित हो गया। जिन प्रान्तों में स्वराज्यदल ने अपने कार्य्यक्रम का पूर्णरूप से अनुसरण भी किया और उसे सुधार कर रद्द कराने में सफलता भी हुई, वहां की सविनय कानून भङ्ग आदि शुरू न हो सके। धीरे २ जनता का स्वराज्यदल के कार्यक्रम पर विश्वास हटने लगा और यही कारण है कि आज स्थानीय बोर्डों तक में स्वाराज्यदल को पराजित होना पड़ रहा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रतियोगी सहयोग ।

देश की वर्तमान अवस्थाओं में सविनय कानून का भङ्ग या सत्याग्रह का प्रचलित करना असम्भव देखकर और यह समझ कर कि केवल बाधानीति से देश को कुछ लाभ नहीं हो सकता। श्रीयुत केलकर और जय कर ने मुनियोगी सहयोग का आन्दोलन प्रारम्भ किया है मुनियोगी सहयोग का अर्थ है जहां पर सम्भव हो सरकार के साथ सहयोग किया जाय और जहां पर आवश्यक हो, सरकार का विरोध किया जाय। इस मत के अनुसरण करने वालों का कहना है कि पिछले दो सालों में स्वराज्य दल निरन्तर प्रतियोगी सहयोग की तरफ बढ़ता रहा है। यद्यपि वह निरन्तर बाधानीति को सम्मुख रख कर कौंसिलों में आया था, तथापि अब वह बाधा निति को सर्वथा छोड़ चुका है। सरकारी प्रस्ताओं में संशोधन करना। उनका समर्थन करना, स्वयं प्रस्ताव पेश करना, सरकारी सम्मितियों का सदस्य होना, सरकारी पदों का ग्रहण करना आदि-सब कुछ अब स्वराज्य दल की नीति के अन्तर्गत है। यह उचित भी है, क्योंकि निरन्तर बाधानीति की उपयोगिता उसी अवस्था में थी, जबकि देश सत्याग्रह के लिये तैय्यार होता। परन्तु महात्मा गांधी तक वर्तमान समय में सत्याग्रह को अक्रियात्मक समझते हैं और यहां तक कहते हैं कि निकट-भविष्य में या इतने समय तक जिसका कि अभी से अन्दाजा लगाया जा सके, देश सत्याग्रह के लिये तैय्यार नहीं हो सकता। इस अवस्था में कौंसिलों के अन्दर बाधानीति का अनुसरण करना सर्वथा व्यर्थ है। अतः यही उचित है कि जिस नीति की ओर स्वराज्यदल पिछले दो वर्षों में धीरे धीरे कदम उठाता रहा है, अब उसको पूर्ण रूप से स्वीकृत करले। श्रीयुत केलकर और जयकर के इन विचारों से स्वराज्यदल के प्रधान नेता पं० मोतीलालनेहरू सहमत नहीं हैं। वे प्रतियोगी सहयोग के सर्वथा विरुद्ध हैं। और सत्याग्रह। सविनय कानून भंग आदि के नाम पर जनता से अपील कर इस नवीन आन्दोलन को पीस देना चाहते हैं दोनों तरफ से जोरशोर के साथ गृहकलह अभी प्रारम्भ ही हुआ था कि बम्बई में मन्त्रणा करके स्वराज्यदल ने अपने आन्तिरिक युद्ध को कानपुर कांग्रेस तक के लिये स्थगित कर दिया। परन्तु शीघ्र ही इस कलह का फिर से प्रारम्भ होगा। हम समझते हैं कि कौंसिलों के अन्दर प्रतियोगी सहयोग की नीति का अवलम्बन करने के सिवा स्वराज्यदल को कोई चारा नहीं है। यह ठीक है कि कौंसिलों से भारत की कोई भलाई नहीं हो सकती परन्तु कौंसिलों में निरन्तर बाधानीति के अनुसरण से भी कोई लाभ नहीं है या तो कौंसिलों का बहिष्कार कर सर्वसाधारण जनता में रचनात्मक कार्य को प्रारम्भ किया जाय, यदि कौंसिलों में जाना ही है, तो वहां व्यर्थ की बाधानीति को छोड़ कर उनका उपयोग करना अधिक अच्छा है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुरते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकवार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ी० साड़ी बेल रेशम की किनारी दार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमतासे निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

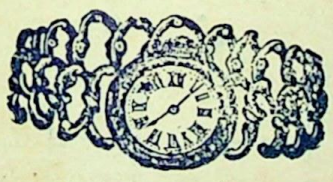

न० ३२ यह बिल्कुल ही नई फैशन की चीज है इसके बीचो में एक छोटी सी जेबी घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी को घड़ी और गहने का गहना है, पातल पर सोने को गिल्ट वालीं का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १) रु० ॥

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही ज़री के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—ज़नानी चाहे जिस नाप की क़ीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूची-पत्र मगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता:—

सुख संचारक कम्पनी,

मथुरा.

पं० नअन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दरियागंज देहली में छपा।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

A SELECTION IN OUR OFFICE CLOCKS

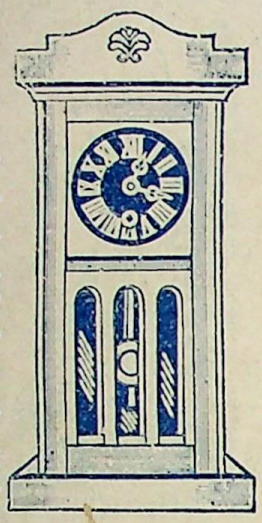

THE MODERN REGULATOR

One of our best Office clocks recently Imported.

The only Office Clocks, which is unequalled in the clock world. Made in wall nut superior case and with perfect mechanism. Give you correct time and guaranteed for five years.

WRITE NOW.

Price Rs. 5 Only

CAPTAIN WATCH Co., P. B. 165, MADRAS.

OUR STOCK TAKING SALE !
LOSE NOT THIS CHANCE !

To purchasers of the patent German Alarm Time-piece we are giving away one of our 18 carat Rolled Gold wrist watch with full leather as illustrated. Both these are guaranteed for five years Keeps correct time & handy. Both should be purchased at a time.

Rs. 10

Rs. 10

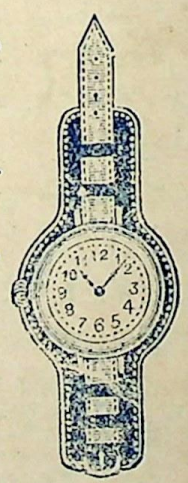

PURCHASED IF SEPARATELY { The German Alarm Time piece Rs. 5. 18 carat Rolled Gold wrist watch Rs. 7.

TRT ONCE ONLY A FEW MORE.

CAN BE HELD FROM

THE ENGLISH EMPORIUM,

P. B. 105. MADRAS.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वर्ष ६] पौष-माघ १९८२—जनवरी फरवरी १९२६ Regd. No. L. 1240. [खण्ड ६, संख्या ९,१०

वार्षिक मूल्य ४॥) सम्पादिका— विद्यावती सेठ बी०ए० स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

विषय सूची।

विषय		पृष्ठ
१	स्मृति ले०—श्रीहरि	...४०५
२	दयानन्द दिग्विजय	...४०६
	ले०—श्री प्रो० रामदेवी जी आचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी	
३	पुण्य पथ ले०—सत्याचरण सत्य	...४१०
४	यज्ञ में हिंसा	...४११
	ले०—श्री०स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी आचार्य्य उपदेशक म. वि. लाहोर	
५	समझ की खूबी ले० जीवन	...४१३
६	संतोष ...	....४१४
	ले०—श्रीराजनारायणजी चतुर्वेदी आज़ाद	
७	मोहनो के आंसू	...४१८
	ले०—श्रीयुत दधिमथ वैद्यराज	
८	हिंदूपति के समर्थन में	...४३०
	ले०—श्री० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम.ए. सम्पादक प्रभात	
९	निद्रा ...	...४३२
	ले०—श्री०श्री०प्रो० सांझीराम जी एम० एस० सी०	...४३२
१०	वसन्त वर्णन ...	...४३६
	ले० श्रीमती सरलादेवी विदुषी विशारदा	
११	स्त्रियों का साम्राज	...४४५
	ले०—श्रीमती विद्यावती सेठ आचार्या कन्या गुरुकुल	
१२	वैज्ञानिक संसार	...४४८
१३	कुसुमोद्यान ...	....४५३
१४	विचार प्रवाह ...	...४५९
१५	प्रश्नोत्तर ...	...४७३
	ले०-श्री बुद्धिसागर वर्मा B.A, विशारद	
१६	ओसबिन्दु ...	...४७४
	ले०—श्री रामनारायण मोहले बी. ए.	
१७	हमारी मंजूषा ...	...४७५
१८	अभ्यर्थना (कविता) ले० "मुकन्द"	...४७८
१९	वनितविनोद ...	....४८३
२०	कन्या गुरुकुल समाचार	...४८३

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहक को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस कों वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

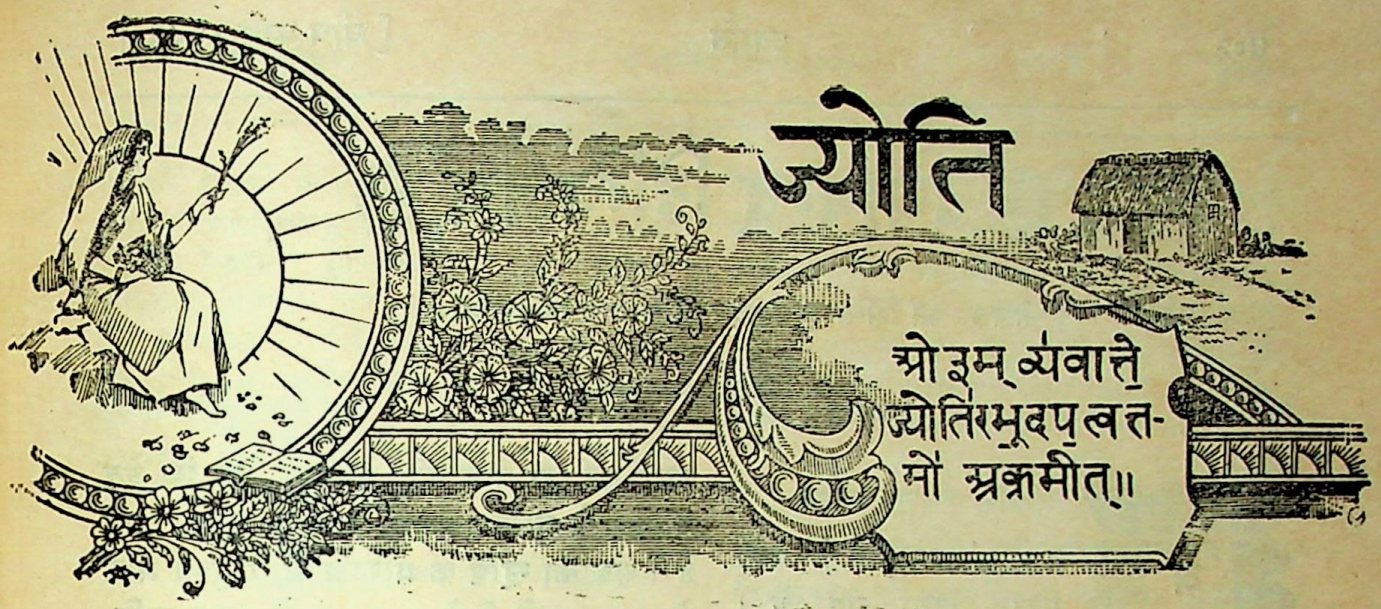

वर्ष ६ | पौष-माघ १९८२—जनवरी-फर्वरी १९२६ ई० | संख्या ९-१०

स्मृति

हे अतीत की प्रणयिनि ! तेरा, आवाहन जब करता हूं।
नेत्र मूंदकर परम प्रेम से, सुखद ध्यान जब धरता हूं॥
वायुवेग से आकर तब तू, मुझे साथ ले जाती है।
उस अतीत के अंतस्तल में, मेरा मन बिलमाती है॥

चिरसंगिनी बनी तू सम्पति, खोई हुई दिखाती है।
जीवन की सारी घटनायें, एक एक कर लाती है॥
कभी नयनघन से पावस बन, अश्रु प्रवाह बहाती है।
फिर बसंत लक्ष्मी सी आकर, मेरा सुमन खिलाती है॥

श्रीहरि।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दयानन्द दिग्विजय

लेखक—श्री प्रिन्सिपल रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी

वेद में संकल्पशक्ति को बड़ा महत्व दिया गया है। स्थान २ पर इसकी प्राप्ति के लिये प्रार्थना की गई है। जिस मनुष्य की संकल्पशक्ति दृढ़ हो वह संसार में अपने उद्देश्य की पूर्त्ति करने में सदा सफल होता है। साधारण व्यक्ति और महापुरुषों में बड़ा अन्तर यही है कि साधारण व्यक्ति अपने जीवन को सङ्कल्पमय नहीं बनाते। उनके जीवन का कोई निश्चित सङ्कल्प नहीं होता, परन्तु महापुरुष अपने जीवन का संकल्प निश्चित कर लेते हैं और उसी सङ्कल्प को पूरा करने में अपने जीवन की सारी क्रियाओं को केन्द्रित कर देते हैं। इसी लिये संसार में वे आक्रान्तियां पैदा करते हैं और उनकी सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। महापुरुषों के जीवन इसी बात को दर्शाते हैं। जिस समय स्वामी दयानन्द संसार में अवतीर्ण हुये उस समय वेदों का गौरव सर्वथा लुप्त हो चुका था। पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके पद-चिन्हों पर चलने वाले भारतीय विद्वानों का यह विचार था कि उपनिषदों और गीता में अध्यात्म-विद्या सम्बन्धी ऊंचे दर्जे का ज्ञान उपलब्ध हो सकता है परन्तु वेद गड़रियों के गीत हैं। जंगली लोगों के जांगलिक भावों के प्रतिबिम्ब हैं। इनमें किसी भी प्रकार का ऊंचे दर्जे का ज्ञान नहीं है। स्वामी दयानन्द ने डंके की चोट पर इस बात की घोषणा की कि वेद संसार के पुस्तकालय में सबसे उत्तम ज्ञान है। वेद को सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये परमात्मा ने चार ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किया। सब विद्याओं के मूल मन्त्र इस में मिलते हैं। विज्ञान तथा तत्व ज्ञान का स्रोत भी वेद ही हैं। प्राकृतिक तथा अध्यात्मविद्याओं का भण्डार भी वेद ही हैं। उस समय के विचारकों तथा विद्वानों ने स्वामी दयानन्द के इन विचारों की अवहेलना की और इन की मखौल उड़ाई। परन्तु हम देखते हैं कि उन्हीं विद्वानों की पुस्तकों में स्थान २ पर स्वामी दयानन्द के विचारों की पुष्टि पाई जाती है। मैक्समूलर पाश्चात्य विद्वानों का शिरोमणि समझा जाता है और इन्होंने वेद के विषय में पर्याप्त अध्ययन किया है। जहां कई स्थानों पर इन्होंने वेद को जंगली लोगों का ज्ञान बताया है वहाँ कई अन्य स्थलों पर उनको बाधित होकर वेदों में वह ज्ञान मानना पड़ा है जिसकी घोषणा कि स्वामी दयानन्द ने की थी। जादू तो वह जो शिर पर चढ़के बोले। मोक्षमूलर लिखता है कि—

These startling out-bursts of Philosophic thought seem indeed to require the admission of a long continued effort of meditation and speculation before so complete a rupture with the old conception of physical gods

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

could have become possible... nor must we forget that there always have been privileged individuals whose mind was untrammelled by the thought of the great mass of the people and *who saw and proclaimed* as if inspired by a power not themselves, truth far beyoned the reach of their fellow-men.

Six systems of Philosophy.

अर्थात् वेद 'नासदीय सूक्त' पर लिखते हुये मोक्षमूलर साहब लिखते हैं कि इस सूक्त के विचार इतने उच्च हैं कि जिन व्यक्तियों ने इनका निर्माण किया था उन्होंने बड़े गहरे ध्यान के अनन्तर इनको लिखा होगा ..... हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिये कि कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कि भविष्य की बात को भी देखते हैं और जिनके विचार मानवीय बुद्धि से प्रेरित नहीं होते। इस उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मोक्षमूलर की सम्मति में वेद का यह सूक्त मानवीय बुद्धि की कृति नहीं है परन्तु दैवी प्रेरणा है।

उपरोक्त प्रोफेसर आगे चलकर उसी पुस्तक में लिखते हैं :—

Still it was achieved and what-ever is the age when the collection of our Rigveda Sanhita was finished, it was before that age that the conception had been formed that there is but one, one being neither male nor female. A being raised high above all the conditions and limitations of personality and of human nature and nevertheless the being that was really meant by all such names as Indra, Agni, matariswan many even by the name Parjapati, Lord of creatures. In fact Vedic Poets had arrived at a conception of god hood which was reached once more by some of the Christian Philosophers of Alexandria, but which even at present is beyoned the reach of many who call them-selves Christians.

अर्थात् ऋग्वेद संहिता के निर्माण का काल चाहे कोई हो परन्तु इतना निश्चित है कि ऋग्वेद की समाप्ति से पूर्व एक परमात्म पूजा का सिद्धांत प्राचीन ऋषियों को ज्ञात हो चुका था वे। एक ऐसी वस्तु की सत्ताको अङ्गीकार करने लग गये थे जो कि मानवीय कमजोरियों से ऊपर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है। जिस को कि वे इन्द्र, अग्नि मातरिश्वा, प्रजापति इत्यादि भिन्न २ नाम से पुकारते थे। वस्तुतः वैदिक ऋषि परमात्मा के स्वरूप के विषय में उस उच्चता तक पहुंच चुके थे जितनी उच्चता तक कि सिकन्दरया के कई ईसाई तत्ववेत्ता अपने समय में पहुंचे थे। उपरोक्त दोनों उद्धरण स्पष्टतया इस बात को प्रमाणित करते हैं कि स्वामी दयानन्द के वेद विषयक विचारों का प्रभाव योरोप के विद्वानों के विचारों तथा लेखों पर पड़ चुका है। इसलिये स्थान २ पर वे कुछ अव्यक्त शब्दों में वेदों के कई हिस्सों को परमात्मा का ज्ञान मानते और वेद में तौहीद के सिद्धांत की विद्यमानता को स्वीकार करने के लिये बाधित हुए हैं।

स्वामी दयानन्द के विचारों ने यहीं तक क्रांति नहीं की किन्तु हम देखते हैं कि उनकी तीव्र समालोचना ने अन्य मतों की धर्म पुस्तकों की व्याख्याओं को ही बदल दिया है। मुसलमानों ने अपनी धर्म पुस्तक की व्याख्या स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के प्रकाश में की। इसी प्रकार सनातन धर्मियों के नेताओं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ने भी स्वामी दयानन्द के विचारों के प्रकाश में अपने विचारों और सिद्धाँतों में परिवर्तन किये। १९२४ ई० के सितम्बर मास में लंडन के इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट में सब धर्मों की एक कानफ्रैंस हुई। जिस में भिन्न २ धर्म के नेताओं ने योरुप के विद्वानों के सामने अपने सिद्धांतों को रक्खा।

इस कान्फ्रेन्स की रिपोर्ट Religions of the Empire, नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई है। जिस में से कुछ उद्धरण हम नीचे देते हैं।

हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि बनकर सनातन धर्म पालिनी सभा के भूतपूर्व मन्त्री सैन्ट्रल हिन्दू कालिज के प्रोफेसर १८९८, भारत धर्म महामण्डल के मन्त्री १९०३-४, तथा भालवर रियासत के विदेशी मन्त्री पण्डित श्यामशङ्कर एम, ए गये थे।

Nowhere in Sanskîrt or Prakîrt Litrature do we come accross the term Hindu. The Persians called the people living in India (beyoned the river Sindhu, Indus) 'Hindus' as vaguely as the sanskîrt writers called the people living North-West of India "Yavanas" अर्थात् सारे संस्कृत साहित्य में हमें हिन्दू शब्द उपलब्ध नहीं होता। परशियन लोगों ने सिन्धु नदी के पार रहने वाले लोगों का नाम हिन्दु रक्ख दिया था जिस प्रकार कि संस्कृत लेखकों ने भारत के उत्तर पश्चिम में रहने वालों का नाम यवन रख लिया था।

"Sanatana Dharm" or "Saswat Dharms" (Ancient or Paternal religion) or Arya Dharm (Religion of the Aryas) do not literally signify what the words are now conventionally taken to indicate, *i, e.* Orthodox Hinduism

अर्थात् सनातन धर्म, शाश्वत् धर्म, आर्य धर्म का वह तात्पर्य नहीं है जो कि वर्तमान में हिन्दू धर्म का है।

हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुये वे लिखते हैं कि;

The four original castes (Viz Brahaman, Khastriya, Vaishya and Sudra) were first instituted according to the Division of Guna and Karm, as it is said in the Gita.

अर्थात् वर्णव्यवस्था गुण और कर्म के आधार पर है। यहां पाठक स्पष्ट तौर से देख सकते हैं कि जन्म का निर्देश भी नहीं किया गया। क्या यह भगवान् दयानन्द के विचारों की विजय नहीं है।

अस्पृश्यता हुए (Untouchability) के विषय में लिखते हैं। पं० श्यामशङ्कर लिखते हैं कि Untouchability was carried to ex-streme limits, much beyoned the rules of the earliar religious books. But in the West it is not generally kown that *untouchability did not strictly apply to the lower castes as such, but to uncleanliness of any person of high or low castes.* अर्थात् वर्तमान समय में अस्पृश्यता बहुत बढ़ा दी गई है पश्चिम के लोगों को साधारण तौर से यह मालूम नहीं कि अछूतपने का सम्बन्ध छोटी जातियों से ही नहीं है परन्तु जो भी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैला रहे वह अछूत है चाहे वह किसी भी वर्ण का है।

स्वामी दयानन्द की स्पिरिट इन पंक्तियों में कितना स्पष्ट बोल रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार से हिन्दुओं के विचारों में परिवर्तन पैदा होरहा है। इस परिवर्तन का श्रेय स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को ही है। अब हम देखेंगे कि स्वामी के विचारों ने मुसलमान दुनियां में कितनी हलचल पैदा की है।

मुसलमानों के प्रतिनिधि विख्यात मुसलमान नेता तथा मुस्लिम मिशनरी ख्वाजा कमालउद्दीन साहब थे। इनके निबन्ध के कुछ उद्धरण हम नीचे देते हैं।

कुरान के स्वर्ग, नरक तथा हूरो-गिलमा के सिद्धान्त पर प्रतिपक्षी ने प्रायः आक्षेप किया है। उस आक्षेप को दूर करने के लिये ख्वाजा साहिब जो उत्तर देते हैं वह सुनने योग्य है। वह कहते हैं:—

Freedom from grief, fear, toil and anxiety is the chief characteristic of the Quranic paradise a truth repeated again and again in the Quoran. Undoubtedly the Quoran speaks of gardens trees, milk, honey, fruits and numerous others things, but these are not of this life; they are metaphorical expressions. अर्थात् दुःख डर तथा चिन्ता से मुक्ति का नाम ही स्वर्ग है। यह ठीक है कि कुरान में लिखा है कि स्वर्ग, में बाग वृक्ष, दूध, शहद, फल तथा अन्य बहुतसी वस्तुयें मिलती हैं। परन्तु यह सब अलङ्कार है। नकि वास्तविक हैं।

स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वर्ग की व्याख्या करते हुये लिखा है 'सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का नाम है'। क्या स्वर्ग के उपरोक्त लक्षण में स्वामी दयानन्द के विचारों की छाया नहीं है?

हूरों के विषय में लिखते हुये ख्वाजा साहब लिखते हैं:—The Hories, upon which so much stress is laid by our adverse critics, are no other than our own female folks, with hearts pure and eyes restrained from evil. अर्थात हमारे प्रतिपक्षी हूरों के विषय में बहुत आक्षेप करते हैं। ये हूरें हमारे ही घर की बहू बेटियां हैं जिन के हृदयपवित्र हैं और आंखें लज्जा शील हैं।

इस में भी मनु के इस श्लोक के भाव की छाया है 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तुन पूज्यन्ते सर्वातत्राऽ फलाः क्रियाः।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द के विचारों ने संसार में एक विप्लव पैदा कर दिया है और उनके विचारों के प्रकाश में अन्य मतावलम्बी अपने ग्रन्थों की व्याख्या को बदल रहे हैं। स्वामी दयानन्द के विचारों का ठप्पा केवल समकालीन विचारों पर ही नहीं पड़ा किंतु भविष्य में भी स्वामी दयानन्द के विचार संसार में एक बड़ी आक्रान्ति पैदा करेंगे और स्वामी के विचारों के साथ २ वेद की सचाईयां संसार के कोने २ में फैल जायेंगी। क्योंकि वर्तमान सदी वेद का सब से बड़ा भाष्यकार भगवान् दयानन्द ही हैं।

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रणय पथ

ले० सत्याचरण 'सत्य'

[१]

विश्वमञ्च पर प्रेम पुजारी,
हृदय खोल कर आते हैं।
मृग तृष्णा की प्रेम जलधि में,
गोता गहन लगाते हैं॥

[२]

आशा की मृदु सूक्ष्म रज्जु पर,
तृषित दृष्टि अवलम्बित हो।
सुख वैभव के भव्य स्वप्न में,
मुसकाते हैं पुलकित हो॥

(३)

कभी सु-आशा कभी निराशा,
सित प्रकाश के मण्डल में।
तमोराशि से पूर्ण परिव्रत,
निबिड़ निशा के अञ्चल में॥

(४)

जीवन की प्रगाढ़ निद्रा में,
अतुल ज्योति सम दर्शन पर।
प्रणय सूत्र रत सरस हृदय को,
न्यौछावर करते उन पर॥

(५)

निशित कण्टकाकीर्ण मार्ग है,
दिव्य वह्नि की ज्वाला है।
कठिन क्लेश दारुण से पूरित,
'प्रणय पन्थ' सुनिराला है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यज्ञ में हिंसा

ले०—श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आचार्य उपदेशक महाविद्यालय लाहौर

अश्वालभं गवालभं संन्यासं पल पैत्रकम्।
देवराच्च सुतोत्पत्तिं कलौ पंच विवर्जयेत्॥
[पाराशर स्मृति]

इस श्लोक को-जिसमें अश्व तथा गौ के कलियुग में मारने का निषेध किया है लिख कर ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में जो उत्तर लिखा है वह इस प्रकार है:--

"जब अश्वालंभ अर्थात् घोड़े को मार के अथवा गवालंभ गाय को मार के होम करना ही वेद विहित नहीं है, तो उसका कलियुग में निषेध करना वेद विरुद्ध क्यों नहीं?" ऋषि जी वेद के आधार पर अश्व और गौ मारने का सर्वदा ही निषेध करते हैं।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषम्।
तंत्वा सीसेन विध्यामो यथा नोगांमवीरहा

भावार्थ, जो गौः, अश्वः, पुरुष अथवा अवीर (दुःख न देने वाले) को मारे उसे सीसे की गोली से विध करो।

याज्ञकों ने भी जहां पशु मारने की क्रिया लिखी है वहां जिस प्रतीक का विनियोग किया है वह भी मारने का निषेध करती है। उनकी प्रतीक है "स्वधिते मैनं हिंसी" तो भी याज्ञक इस मन्त्र को पढ़कर इससे सर्वथा प्रतिकूल आचार करते हैं।

वेद को छोड़कर आज मैं शतपथ ब्राह्मण का एक पाठ पाठकों की भेट करता हूँ जिससे पाठकों को विश्वास हो जायगा कि शतपथ भी आचार्य्य दयानन्द का ही पक्ष पोषक है।

भृगुर्हवैवारुणिः। वरुणं पितरं विद्यापानिमेने तद्ध वरुणो विदां चकारिति वैमा विद्यया मन्यत इति॥१॥

स होवाच। प्राङ् पुत्रक व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्बूहि दक्षिण व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्बूहि प्रत्यग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्बूहुदग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्बूहि तयोः पूर्वयोरुत्तर मन्ववांतर देशं व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तन्मा आचक्षीथा इति॥२॥

सह ततएव प्राङ् प्रवव्राज। एदु पुरुषैः पुरुषान्पर्वाषासा पर्वशः संव्रश्चं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति स होवाच भीष्मवत भोः पुरुषान्वा एतत् पुरुषाः पर्वण्येषां पर्वशः संव्रश्चं पर्वशो व्यभक्षतेति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मान मुष्मिंल्लोकेऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहाऽइति स होवाचास्ताह प्रायश्चित्ती३ रित्यस्तीति का-ति पिता ते वेदेति॥३॥

सह ततएव दक्षिण प्रववाज। एदु पुरुषैः पुरुषान्पर्वा ण्येषां पर्वशः संकर्तं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदँ ममेति स होवाच भीष्मंवत भोः पुरुषान्वा एतत्पुरुषाः पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्तं पर्वशो व्यभक्षतेति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ते होचुरित्थं वाइमेऽस्मान मुष्मिंल्लोकेऽ सचन्त तान्वय मिदमिह प्रति सचामहा ऽइति स होवाचास्तीह प्रायश्चित्ती३ रित्य स्तीति का-ति पितैव ते वेदेति ॥४॥

सह तत्एव प्रत्यङ् पूवब्राज । एदु पुरुषैः पुरुषांस्तूष्णीमासीनास्तूष्णी मासीना अदन्तीति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मान्मु ष्मिँल्लोके ऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहाऽइति स होवाचास्ती ३ पायश्चित्ती ३ रित्यस्तीति का-ति पितैव ते वेदेति ॥५॥

सह ततएवोदङ् प्रवब्राज । एदु पुरुषैः पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्यमानानस होवाच भीष्मं बत भोः पुरुषान्वाऽएतत्पुरु षा आक्रन्दयत आक्रन्दयन्तो ऽदन्तीति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मानमु० ॥६॥

सहतत् एवैतयोः पूर्वयोः । उत्तरमन्व- वान्तर देशं प्रवब्राजेदु स्त्रियो कल्याणीचाति कल्याणीचतेऽअन्तरेण पुरुषः कृष्णः पिंगाक्षो दण्डपाणिस्तेस्थौत ँ हेनं दृष्ट्वाभा विवेद सहेत्य संविवेशत ँ ह पितो वाचाधीष्व स्वाध्यायं कस्मान्नुस्वाध्यायँ नाधीशऽइति स होवाच किमध्येष्ये न किंचनास्तीति तद्वरुणो विदांचकारा द्राग्वाऽति ॥७॥

स होवाच । यान्वैतप्राच्यां दिश्यद्राक्षीः पुरुषैः पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संव्रश्चं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेमि वनस्प- तयो वैतेऽअभूवन्त्स यद्वनस्पतीनां ँ स- मिधमादधाति तेनवनस्पतिन वरुद्धे तेनवन- स्पतीनां लोकं जयति ॥८॥

अथयानेतद्दक्षिणायां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्त पर्वाशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति पशवोवै ते ऽअभूवन्त्सयत्पयसाजुहोति तेन पशूनवरुन्द्धे तेन पशूनां लोकं जयति ॥९॥

अथ यान्येतत्प्रतीच्यां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषांस्तूष्णीमासीनां स्तूष्णीमासी नैरद्यमानानोषधयो वैता अभूवन्त्स यतृणेना- वज्यो तयति तेनौषधीरवरुन्द्धे तेनौषधीनां लोकं जयति ॥१०॥

अथ यानेतदुदीच्यां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्य मानानापो वैता अभूवन्त्स यदपः प्रत्यानयति तेनापोऽव- रुन्द्धे तेनापोलोकं जयति ॥ ११ ॥

अथ यऽएते । स्त्रियावद्राक्षीः कल्याणीं चातिकल्याणीं च सयाकल्याणीं सा श्रद्धा स यत्पूर्वामाहुतिं जुहोति तेन श्रद्धामवरुन्द्धे तेन श्रद्धा जयत्यथ यातीं कल्याणी सा श्रद्धा यदुत्तरामाहुतिं जुहोति तेना श्रद्धामवरुन्द्धे तेनाश्रद्धाँ जयति ॥१२॥

अथ य एने सेऽन्तरेण पुरुषः । कृष्णः पिंगाक्षो दण्डपाणिरस्थात्क्रोधो वैसेऽभूत्स यत्स्रुच्यप आनीय निनयति तेन क्रोधमव- रुन्द्धे तेन क्रोधं जयति सयएवं विद्वानग्नि होत्रं जुहोति तेन सर्गं जयति सर्वमवरुन्द्ध ॥१३॥ ब्राह्मणम् ॥४॥ [६ १]

भावार्थ-॥ भृगु अपने पिता वरुण के पास शिक्षार्थ गया वरुण ने कहा प्रथम पूर्वादि दिशाओं में जाओ और जो कुछ वहाँ देखो आकर बताओ। उसने ऐसा ही किया। वह पूर्व में गया तो देखा एक पुरुष पुरुष के अंगों को विभक्त करता है, दक्षिण में एक पुरुष पुरुष के अगों के टुकड़े कर रहा है, पश्चिम में चुप चाप पुरुष को खारहा है, उत्तर में क्रन्दन करते हुए को खाता है। अवांतर दिशामें स्वरूपा स्त्री और कृष्णवर्ण पिंगज्ञ दण्डधर पुरुष को देखा जब पिता के पास आया तो वरुण ने पूछा क्या कुछ देखा? उसनेक्रमशः वर्णन करके दुःख

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रगट किया पिता ने कहा—सब कुछ ठीक है। उसने पिता से कहा आप समझाएं क्या तत्व है? वरुण ने कहा जो पुरुष के अंगों को विभक्त करना था वह वृक्ष की समिधाएं हैं, जो काट-कर बनाई जाती हैं। जो अंगों के टुकड़े करना था वह दुग्ध है। जो पशु के स्तनों से निकाला जाता है। तीसरे सूक्ष्म औषधियाँ चतुर्थ जल है स्त्री और पुरुष श्रद्धा और क्रोध हैं। यह समाधान सुनकर भृगु बड़ा प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण अन्तमें कि—फल का वर्णन करता है।

"स य एवं विद्वान अग्निहोत्रं जुहोति तेन सर्वं जयति सर्वं मवरुंधे'

जो इस प्रकार जानकर अग्निहोत्र करता है वह सर्वत्र विजयी होता है और सब को अवरोध करता है।

इस ब्राह्मण में साफ २ वर्णन है कि किसी अवस्था में यज्ञ के लिए पशुबध नहीं है। प्रथम ऐसे शब्दों का प्रयोग था जिनसे मांस व पशु मारने का विचार उत्पन्न हो सकता था परन्तु पश्चात् स्वयम् ही मूलकार ने उन शब्दों को साफ कर दिया है। वह काटना वृक्षों का और पशुओं का पय ही व्यवहार में लाने का विधान करता है, पशु मांस वा रुधिर का सर्वथा निषेध करता है और फल में बल से लिखता है जो कि कोई इस प्रकार जानकर यज्ञ करे वही विजयी होता है। इस लिए हम बलपूर्वक कहते हैं कि यज्ञ में पशु हिंसा नहीं है।

समझ की खूबी

[१]

चुने २ लच्छेदार शब्दों की सहायता से, चाहते विपक्षी को रुलाना है रुआब से।
'जीवन' परंतु जहां खोज होती त्याग की है, वहाँ नहीं होता काम केवल किताबसे।
आवश्यकता है जहां आज 'चंद' 'भूषण' की, लाज जाति-देश की न बचेगी जनाब से।
चढ़े हुए चोखे चौपदे पै बात झाड़ रहे, पैर किंतु नीचे नहीं डालेंगे रिकाब से।

[२]

देते हैं निदेश गहो आयुध न देर करो, आप दीखते हैं परेशान चक्षु चोट से।
चाहते हैं बहे रक्तधारा रणक्षेत्र बीच, किंतु आप बाहर नहीं होते हैं कोट से।
'जीवन' इन ढोंगियों से हमें बचावें ईश, जो हैं कटि कसे हुए लालच लंगोट से।
मारेंगे मरेंगे नहीं आकर मैदान मध्य, खेलेंगे शिकार सदा टट्टी हो की ओट से।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[३]

आप खुद खोजने का कष्ट भी करेंगे नहीं, अन्य का बताया हुआ मार्ग नापसन्द है।
भाई को लगाते गले होता है उदास चित्त, स्वागत विदेशियों का देता महानंद है।
'जीवन' जिन्हें है लगी द्वेष की लगन भारी, देश की लगन से जिन्हें घृणा अमंद है।
ऐसे हैं अनेकों जहां अभी जयचंद कहां, कैसे कहें नहीं हिंद भाग्य द्वार बंद है।

[४]

ऋषिवत हैं रिशवत-ग्रहण में सङ्कोच नहीं, उदर उदार नित्य पावन विशाल है।
बात हैं बनाते यही बहुत हमारे लिए, जीते कोई पक्ष किंतु यहां गोटी लाल है।
'जीवन' पचाने वाला चन्दा को पचाता ही है, लीलता न मीनों को क्या नकली मराल?
चोटी को बचावें कैसे मिलेगी लँगोटी नहीं, चूर किए देता चित्त रोटी का सवालहै।

[५]

जाती है जगाई आग यत्न से बुझाई हुई, कहा जाता स्वाहा २ बोलो सानुराग है
और अभी चिता जहां जोरी गई हाल में थी, कहा जाता भूलने को हाय वही बाग़ है।
'जीवन' विसारें खुशीराम को बताओ कैसे, मिटा नहीं अभी खूनेमदन का दाग़ है।
थाम लो कलेजा और फैसला सुनादो तुम्हीं, ठीक त्याग शत्रु का या बंधु से विराग है?

[६]

'जीवन' न फन्दे में ऐसों के फँस जाना, जो हैं भेद बीज डाले देते प्रेम-खेत में।
देखो हमें फूट व्यस्त देख हैं विहँस रहे, बैरी बैठे हुए कूट नीति के निकेत में।
आओ धावा करें कूट फूट-किला टूट जावे, दावा फेर देंगे फलगुच्छ दिखा वेंत में।
तभी है प्रशंसा मित्र क्षीर-नीर सम होके, विश्व को बतादें पद्म-पुष्प खिला रेत में।

—जीवन

संतोष।

ले०--श्री राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद'

पृथ्वी पर विपुल वारि राशि विद्यमान हैं किंतु चातक का उस ओर तनिक भी लक्ष्य नहीं है। मेघ-निःसृत वारि-बिंदु से ही उसकी तृष्णा निवारित होती है, चित्त परितृप्त होता है। मास के अन्त में पूर्ण राशि के सुधापान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसकी तृप्ति होती है। मनुष्य की प्रकृति भी ठीक इसी प्रकार है। सौभाग्य से मैंने जिसे पत्नीरूप में ग्रहण किया था उसके चरित्र में यही गुण समधिक विकाश प्राप्त हुआ था। इसी अल्प संतोष द्वारा उसने सिद्धि लाभ की थी।

सम्पत्तिशाली मनुष्य की अपेक्षा जो संसार के भार से दबे हुए हैं जिन को संसारयात्रा के कठिन मंज़िल को पार करने की चिंता लगी हुई है वह इस गुण का कहां तक समादर करते हैं यह लिखकर बतलाना कठिन है ऐसी गुणवती भार्या पाकर वह अम्लान बदन से संसार के समस्त क्लेश सह सकते हैं, एवम् संसार की अवस्था उन्नत करने में सक्षम हो सकते हैं। यदि कोई संसार में सुखी होने की इच्छा रखता हो तो मैं उसे अकपट हृदय से यह सलाह दे सकता हूँ कि वह ऐसी ही गुणवती भार्या का पाणिग्रहण करे अन्य गुणों के प्रति लक्ष्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मैं नितान्त हत भाग्य हूँ नहीं तो इस भांति क्षोभानल में दग्ध न होना पड़ता। पहिले जिस समय संसार क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय उसका महत्व देखकर स्तमित हो गया। मुख पर चिन्ता की काली छाया छा गई--हृदय में रह रहकर चिन्ता की लहरें उठने लगीं कि इतनी अल्प आय से क्योंकर संसार संचालन करूंगा। किन्तु उस देवी ने मेरे हार्दिक भाव समझ हंस कर कहा —चिन्ता किस बात की—तुम जितना लाओगे मैं उसी से संसार चला लूंगी। देखना! लक्ष्मी स्वयं आयेगी, उस समय हृदय में कितना साहस, कितना बल हो आया था—नहीं कह सकता। निराशा के अथाह समुद्र में डूब रहा था। सहसा किसी ने आशा के उच्च मंच पर बैठा दिया। उसी घड़ी, उसी क्षण से शरीर के नस २ में जागृति की लहर बहने लगी। नई उमंग से फिर संसार क्षेत्र में कार्य्य आरम्भ किया।

रेल के ज़नाने कम्पार्टमेंट में दो समवयस्का एक साथ यात्रा कर रही थीं। उन में एक तो नाना प्रकार के बहुमूल्य अलंकार व आभूषणों से भूषित और दूसरी मामूली जेवरों से सुसज्जित थी। पहली तो इतनी सौभाग्यशालिनी होकर भी म्लान मुख नीरव —किन्तु दूसरी सरलता व आनन्द में निमग्न। प्रत्येक आरोही के संग हंस २ कर बातें करती थी। पहली स्त्री को देख दूसरी ने कुछ विस्मित होकर पूंछा कि "बहन, तुम इतने समीप बैठ कर भी मुझ से बातें क्यों नहीं करतीं? तुम्हारा मुख इतना मलीन क्यों है? मैं तुमको बिना हंसाये न छोड़ूंगी।"

पहली—(मुस्कराकर कातरभाव से) क्या बताऊं बहन! हंसी कहां से लाऊं? तुम्हारी तरह यदि मेरा भी भाग्य होता तो हंस २ कर ढेर लगा देती!

दूसरी—(साश्चर्य्य) यह क्या बहन! तुम इतने सुख सम्पत्ति की अधिकारिणी हो! मुझ गरीबनी से तुम्हारी तुलना क्योंकर हो सकती है!

पहली—(दीर्घ निश्वास खींच कर) माता पिता चाहे कितने ही धनी क्यों न हों-यदि प्रेम नहीं तो सब वृथा है। स्त्री के लियेपति प्रेम ही गहना है, आभूषण है एवं जीवन का सुख है। इस लिये मेरी अपेक्षा तुम सहस्रगुणा अधिक सौभाग्यवती हो। तुम्हारे पास सांसारिक दृष्टि से धन नहीं है बहुमूल्य अलङ्कार नहीं हैं-किन्तु फिर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी कुछ दुख नहीं है। पति प्रेम का आस्वादन न करने से तुम्हारे मुख पर भी इतनी हंसी इतनी प्रफुल्लता न रहती। क्षुधा शान्त होने पर अमृत भी विष के समान हो जाता है। तुमको अलङ्कार की क्या आवश्यकता है?

इस घटना के पश्चात् जब जेवर बनवाने की बात चलती तो वह हंस कर उत्तर दिया करती:—मुझे भूख नहीं है, मैं तुम्हारा माल पुआ नहीं चाहती।

क्षुधा की निवृत्ति क्योंकर हुई यह विवाह से पूर्व एक दिन पुरोहित जी ने गदगद स्वर से कहा था—बेटा! मैं अब वृद्ध हो गया हूं अधिक दिन कदाचित न जियूंगा आज जी में आया कि तुम से एक बात कहता जाऊं। देखो, भूलना मत, मैंने अपने जीवन मे अनेक विवाह करवाये हैं। कितनों को हंसते हुए देखा है और कितनों को रोते हुये भी देखा है। जगत में मनुष्य सदा अपनी अपेक्षा उत्तम वस्तु ही ढूंढता है। और उसे पाकर अपने भाग्य को सराहता है। सम्भव है तुम राज कन्या की ओर निहार रहे हो किन्तु वह तुम्हारी ओर दृष्टिपात भी नहीं करती। किसी अन्य राजकुमार की ओर निहार रही है, और वह देखो! दूसरी तरफ एक गृहस्थ कन्या तुम्हारे रूप पर विमुग्ध होकर कैसे सतृष्ण भाव से तुम को देख रही है। तुम्हारा उसकी ओर तनिक भी लक्ष्य नहीं है। कहो! अब तुम किसको चाहते हो? यदि रोने की इच्छा हो तो आओ! तुम्हारा उस राजकुमारी से मिलन करादें और यदि जीवन को सुखमय बनाने की आकांक्षा हो तो उस गृहस्थ कन्या की उपेक्षा मत करो। तुम पुरुष हो। मानसिक दुःख क्षोभ एवं दुश्चिन्ता को सहस्रों उपाय से दूर कर सकते हो किन्तु नारी जाति के लिये स्वामी भिन्न और कोई उपाय नहीं है। पति प्रेम की तृष्णा निवृत न होने से उसके लिये सब वृथा है। नारी जाति को उसी सुख की आवश्यकता है। जो मनुष्य प्रेम रूपी मदिरा पिलाकर रमणी को वशीभूत करता है पतिव्रता स्त्री का स्वामी कहलाने योग्य है।

मैंने कुछ हंसकर उत्तर दिया "आपकी राय मे जो जितनी कुरूपा हो वह उतनी ही अधिक पतिव्रता होगी। सौंदर्य के प्रति आपको इतनी घृणा क्यों है? पुरोहित महाशय तनिक गम्भीर होकर बोले—तुम बालक हो, मेरी बात का मर्म ग्रहण नहीं कर सकते। सौंदर्य्य के लिये सौन्दर्य्य की आवश्यकता है।

राजकुमारी के लिए राजकुमार ही चाहिये। काग और इस का सम्मिलन नहीं हो सकता। इस नियम को व्यतिक्रम करने से एक ओर क्षोभ दूसरी ओर अशान्ति उत्पन्न होती है। अतुल रूप वाली रमणी से विवाह करके उसके हृदय मे क्षोभ उत्पादन करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं हैं। क्या उसके द्वारा सुखशान्ति प्राप्त करने की इच्छा रखते हो? स्वार्थी मनुष्य इस पर ध्यान नहीं देता। इसी से संसार में नित्य प्रति नाना प्रकार के अनर्थों की उत्पत्ति होती है।

मैंने फिर कहा—प्रकृति व प्रवृति अच्छी न होने से कुरूपा भी अपने को परम रूपवती समझ कर योग्य स्वामी का अनादर करती है। अस्तु, जो कुछ हो, आपके साथ मुझे तर्क करने की इच्छा नहीं है। केवल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इतना ही पूछना चाहता हूं कि इस विवाह से सुखी हो सकूंगा ?

उन्होंने उत्तर दिया "हां ! अवश्य हो सकोगे वह तुम से विवाह कर अपने को परम सौभाग्यवती समझेगी। तुम विद्वान हो, तुमने जो विद्या प्राप्त की वह शहर में सामान्य समझी जाने पर भी ग्रामवासियों के लिए आदरणीय वस्तु होगी। तुम विद्वान गुणवान एव स्वरूपवान हो तुम्हारे गुणों की प्रशंसा अपरजनों के सुनकर उसके हर्ष का सीमा न रहेगी। उच्चवंशीय होने के साथ २ जिस समय तुम्हारी उच्च शिक्षा की प्रशंसा उसके कानों में पड़ेगी उस समय तुम से बढ़ कर भाग्यशाली संसार में कौन होगा।

पुरोहित महाशय से यह भविष्यत बाणी सुन कर यही समझा था कि कदाचित अपने स्वार्थ के लिये ही ऐसा कर रहे हैं किन्तु जिस समय उनका कथन अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुआ तो उनके प्रति कितनी श्रद्धा व कृतज्ञता उत्पन्न हुई थी उसका वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता।

आनन्दमयी के प्रभाव से विषाद एवं क्षोभ द्वारा कभी दुखित होना नहीं पड़ा। निराशारूपी अन्धकार उसी आनन्दमयी की ज्योति से निराकृत हो गया, इस भाव-मय जगत के मध्य में भाव एवं कल्पना के आवेग से अवश हो गया हूँ। गंभीर मेघ गर्जन में वीणा की झङ्कार सुनी है। अमा-निशा रूपी अन्धकार में प्रकृति सुन्दरी को हंसते हुए देखा है। इस प्रशान्त जगत के मध्य आनन्द-समाधि में मग्न था। बाहरी व्यापार समाधि भंग करने में सक्षम न हो सका। प्रेम रूपी हास्य से आनन्दरूपी धारा पतितियत बहती रही। समझा था इसी भांति समस्त जीवन व्यतीत कर दूंगा। शांति तट पर जीवन रूपी निकुंज बन में प्राण विहङ्ग इसी भांति चिर दिन प्रेम राग गाता रहेगा। विषाद रूपी व्याध-वहां प्रवेश न कर सकेगा। भाव में यहां तक मग्न हो गया कि जीवन श्रोतकी ओर लक्ष्य करने का ध्यान ही नहीं हुआ। आज उसी भाव राज्य में आकर विषाद सागर के तट पर बैठा हुआ रुदन कर रहा हूं। अतीत स्मृति का ध्यान आते ही हृदय कांप उठता है। हृदय पाषाण से भी अधिक कठोर हो जाने पर यह दुःख उसके लिये असह्य है। मुझे सान्त्वना या प्रबोध की आकांक्षा नहीं है। इच्छा है तो यही कि काल श्रोत मुझे अनन्त सागर की ओर कब खींच ले जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोहिनी के आंसू।

ले० —श्रीयुत् सन्तलाल दाधिमप वैद्यराज।

(गतांक से आगे)

‡

सरला ने हर बार रोका, परन्तु शंकर को अपने चौथेपन का हर समय ख्याल रहने लग गया था बात बात में वह अपनी मृत्यु का स्मरण करने लग गया था, इस लिए उस से रुका न गया आर इसी कारण सरला ने कुछ अधिक असहमत न हुई। जैसे जैसे सूर्य देव का उदयाऽस्त होता रहा वैसे वैसे ही विवाह दिन भी निकट आने लगा। इस समय तक दोनों बालक १८ और २० वर्ष की आयु के हुए। इन चार वर्षों के मध्य में दिन रात जैसा वृहदन्तर पड़ गया!

—निस्सन्देह शरीर से दोनों हृष्ट पुष्ट हो गए, बलवान-बुद्धिमान हुए, किन्तु पिता के आगे अभी बालक ही बने हुए हैं। वैसे तो भला उन पर शंकर नाराज़ ही क्यों हो? दिन भर वे दुकान का काम करते रहें, शेष समय दोनों सेवा मे बितादें। पर फिर भी यदि शंकर उन्हें किसी बात पर झिड़क देता बिल्कुल बच्चों की भान्ति रोने को बैठ जाएँ। वैसे स्वस्थ्य बड़ा उत्तम हो भी क्यों नहीं—अनेकविध लोक-विपत्तियां पढ़ाई में होतीं देख, चार वर्ष से स्कूल से हटा लिया। तब से पढ़ाई की चिन्ता नहीं। मन लगा कर जो काम सीखने पर डटे, कुछ विद्या-बल था, बस-गिलोय और नीम चढ़ी' 'सोना और सुवासित' दानी और निरभिमानी' दो गुण ऊंचे! उत्तरोत्तर कौशल से प्रसिद्ध कैसे न होते?

जब कोई काम बनाते तो पिता को दिखा पूंछते :—

"क्यों जी, ऐसे ही करें-न" तब तो शंकर उसमें अपनी समझ काम न करती देख, लज्जित सा हो, हक्का बक्का-सा हो रहता! वह यह न समझता कि मैं अन्त्यज

‡

सूचना आजकल हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में स्वार्थीजनों द्वारा अत्याधिक कण्टकाकीर्ण कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक 'ज्योति के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश औषधालय, घास मण्डी लुधियाना के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हूँ, प्रारब्ध का औत्कर्ष्य देख, शांति सुधा पी-पी कर, परम सन्तुष्ट होता। पहले कमाने वाला शँकर एकाकी ही था, अब उसी घर में एकसे-एक बढ़कर दो और हुए। त्रिगुण आय होन से शंकर के घर के आगे आज एक भैंस और गय्या खड़ी हुई अपने आप पूंछ के फटकारे से मक्खियां उड़ा रही है! पास पड़ोसियों को—सारे बड़े को छाछ लाभ सबको सुख !!

इन चार वर्षों मे शङ्कर की गृह गरिमा, उसके सजातीय जनों की विचार शक्ति के बाहर हो चली। सीधे साधे भोले भाले शँकर के सजातीय, उसके वैभव के अनुमान लगाने में अशक्त हुए। अटकल में कोई कुछ विचार छोड़ता है, कोई कुछ। शँकर भी लोगों के भ्रम को ताड़ गया, वह मन ही मन इस से खुश होता! कहता कि—अच्छा है भ्रम बना रहना उचित है!" पूछने पर लोगों को शंकर कहता कि—"भय्ये, ढोल की पोल सब ओर से बन्द रहे, तभी उसका बोल दूर तक जाता है! तभी लोगों को भला लगता है! शुभ-कार्यों में सब से प्रथम बुलाया भी तभी जाता है! भय्ये, पोल से बढ़कर दुनिया और क्या है?"

* * * *

मेरठ प्लेटफार्म से बाहर हो, गड्डे किराए कर, उन पर कुल सामान लदवा, उसी पर बच्चों को बिठाल, स्वयं बरातियों के संग शंकर पैदल चल पड़ा। चौदह पन्द्रह कोश की दूरी पर वह ग्राम था जहां इन्हें मध्यान्ह ढलते ढलते अवश्य पहुंच जाना था। प्रसन्नता और त्वरा सहित यह लोग चलते चलते मध्यान्होत्तर (चार बजे के समय) वहाँ प्राप्त हुए। ग्राम के इस ओर ही गड्डे ठहराए। बरातियों ने अपनी २ गठरी खोल, कपड़े बदले। सब तैयार हो चल पड़े। गांव के उस ओर मोचियों के घर थे। वहां प्राप्त होने के लिए, मार्ग गांव के मध्य में से जाता था। यह सब भी गड्डों को आगे किए गांव के बीच से चले। अहा! वह दृश्य कैसा रम्य प्रतीत होता था—अपने-अपने हाथ के बनाए जूते; गाढ़े की धोतियां, गाढ़े के ही कुरते, गाढ़े की ही कमरियाँ, पगड़ियाँ! कुछ एक नवयुवकों ने बसन्त का साम्राज्य देख कर, बसन्ती हाथों (?)—से विशेष शोभा बढ़ादी! प्रेमोल्लसित—हृदय हो, यह पगड़ियाँ सब अपने हाथों रंगी हैं—ऐसा प्रतीत होता है! सम्भव है, मनु भगवान के

"सर्वं परवशं दुःखं, सर्वमात्मवशं-सुखम्!"—

इस परमोपदेश ने इन के हृन्नवनों में स्थान प्राप्त किया हो? हाथों में तैल-धूआँ से कृष्णीकृत वंश यष्टिकाएँ! क्यों न हो—उद्योगियों का ही तो यह दल है, आलस्य पुञ्जों का नहीं! अस्तु! गाँव के उस ओर चट्टान में जा, डेरे डाले!

* * *

प्रायः इस गाँव में क्षत्रियों का बलवान संघ है। आज यहाँ के एक प्रतिष्ठित राजपूत ठाकुर साहिब की पुत्री का विवाह है। बरात आने वाली है। ठाकुर साहिब एवं अन्यान्य सम्बन्धी जन बरात की प्रतीक्षा में त्वरा-युक्त प्रबन्ध-लीन होरहे थे कि नाई ने आकर, इस प्रकार सन्देश सुनायाः—

"अन्नदाता जी, गाँव में से बरात गुज़र गई!"

ठाकुर—(विस्मय से) "किस की?"

नाई—(बेड़े की ओर कर संकेत कर) "इन मोचियों की"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ठाकुर—(सहसा उत्तेजित हो) "गुज़र गई ? ओह ! आख़िर ढेढ़ हो तो हैं- न (फिर नाई से) "क्यों रे, प्रताप कहाँ है ?"

नाई—"बाहर सामियाना बाँध रहे हैं।"

ठाकुर साहिब यह सुन, बाहर निकले और बिगड़ कर, प्रतापसिंह से बोले-" क्यों रे, तुम कुछ भी ध्यान नहीं रखते ? तुम्हारे सरदार गाँव में से निकल चुके ! "

प्रताप—(अपने अग्रज बन्धु की ओर देख) " कौन ? "

ठाकुर—" ढेढ़ बरात निकाल लेगए ! "

प्रताप—(मोचियों की ओर अङ्गुली संकेत कर) " इन की ? "

ठाकुर—" हाँ, इन की बरात ! '

प्रताप—(क्रोध से अरुण हो) ' जो आज यह न समझे तो कल को शिर पर से राह करेंगे ! "

ठाकुर—" और क्या ? " (फिर कुछ सोच) " चलो, अभी मार मार कर, शिर गञ्जा करदो ! होश ठिकाने आजाएँ ! "

* * *

शंकर सजातियों के संग एक छोटी सी दरी पर, बैठा हुक्का पी रहा था। हुक्का पीने वाले हुक्केको चारोंओर से घेरे मण्डलाकार बैठे थे। सानन्द बातें करते थे कि अचानक शंकर की कमरमें 'धड़' से एक लट्ठी पड़ी जिसके मारे शंकर की कमर लचक गई। किन्तु साहस कर झट शंकर खड़ा हुआ और देखा कि पीछे पन्द्रह राजपूत लकड़ियां ताने खड़े हैं। त्रस्त हो, हाथ जोड़, बोलाः—

" क्यों--अन्नदाता जी, हम तो आप के बाल बच्चे हैं !

—इसी अन्तर में प्रताप सिंहने एक लट्ठी और उठाई कि वीरेन्द्रसिंहने उसे रोक, कहा-"पूंछो तो, लम्डे का बाप कौन है ? " तब शंकर कांपता हुआ बोला--हुजूर के पैरों की ख़ाक का है, माई बाप ! कौन ग़लती हुई ? कह झुक पैरों में शिर रखने लगा। ठाकुर वीरेन्द्र सिंह वृद्ध शंकर की ओर देख दयार्द्र हो, अपनी हाथ की लकड़ी से ज़रा उसे ठुकरा कर, बोले-"उठ, उठ ! यह कहो-इधर (घर के आगे) से बे-पूंछे बरात ले आने को तुम्हें किसने कहा था ? "

शंकर गिरी हुई पगड़ी उठा कर, बगल में ले, कम्पित कर-बद्ध-गिड़ गिड़ा कर--बोला--"न किसी ने कहा, न रोका ही हुजूर ! " (फिर पैरों की ओर झुक) " अब तो माफ़ करो, माई बाप ! "

ठाकुर वीरेन्द्र सिंह नाक फुला, उस में से क्रोध-तप्त वायु को बाहर निकाल, बोले—"ढेढ कहीं के, जो जी चाहे कर लेते हैं ! " और प्रताप का हाथ पकड़ सहागत-जनों को भी संगले गाँवकी ओर लौट चले।

पीछे से शंकर ने आस पास के बरातियों से पूछा -"अरे, कुछ और तो गजब नहीं कर बैठे हो ? " परञ्च कुछ एक भोले बराती इस बात को समझे भी नहीं थे कि ' गाँव के अन्दर से बरात नहीं लानी चाहिए थी। आज ठाकुर साहिब की लड़की का विवाह है। और इनका मकान रास्ते के सामने ही है, जिधर से हम आगए ! " विचारे त्रस्त-हृदय सब बोल पड़े--"नहीं तो।"

—शंकर सुन, "तो बस, गांव के अन्दर से नहीं, आना चाहिए था ! " कह, झपट कर बच्चों को देखने, गड्ढों की ओर चला परञ्च वे बाहर जंगल गए हुए थे !

* * *

गङ्गा—" तू मुझे छंग (संग) ही ले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चलना, जब तू छुछलाल (सुसराल) चले।
सरस्वती—(झिड़कती हुई) "अच्छा-अच्छा, पगली !"

इस प्रकार जब दोनों बहनें सात और दश वर्ष की थीं, तब इन्हें इस तरह बातें करतीं इनकी माता देख, खूब ही हंसा करती पर भविष्य का कुछ पता न था। पिता न होने पर भी पितृवत् इनके चचा के द्वारा इनका लालन पालन हुआ था, वह अबतक फतेहपुरी, दिल्ली' में एक जूतों के व्यापारी के यहां ठेके पर काम करता रहा। उसने यही उत्तम समझा।

इधर दोनों बहिनों में भी प्रेम की मात्रा उतनी ही थी, जितनी दोनों भैय्यों (कुन्दन माधव) में। इस समय इनकी अवस्था बारह और पन्द्रह वर्ष की थी। जोड़ी ऐसी बनी जैसी शंकर को सम्भावना भी न थी। अहा ! सारे ही सुख के साज सजे !

सरस्वती घर की इञ्चार्ज हुई। रसोई का काम, लीपना, बुहारना, घर की सफाई, घर के सारे सामान की घटा-बढ़ी की चिन्ता आदि सब बातें सरला अपने से उसमें कहीं अधिक उत्तम देखने लगी। गङ्गा केवल अपनी बड़ी बहिन, जो अचानक जिठानी बन गई है, और सास, इन दोनों को नहाते समय गात मल देती, और शयन काल में इन की देह दबादेती; बस, बारह २ घंटे के पश्चात दो ड्यूटियां देकर, शेष समय में बच्चों वाले खेल खेलकर, हसा-हंसाकर पेट फुला डालती। उस समय सरला का मनोमन्दिर संतोष से कैसा परिपूर्ण हुआ—जैसे धर्मात्माओं का उनकी इच्छानुकूल धर्मराज्य की स्थापना से भरता है! जिस भांति कर्मवीर सफलता प्राप्त कर, अपने को कृतकृत्य मानता है, शंकर भी वैसे ही कृतकृत्य सा हो बैठा !

अब शंकर ने सारी चिन्ताएं छोड़ दीं हिंदी अभ्यास अच्छा होने के कारण स्थूलाक्षरों की रामायण ले, पढ़ता रहता है। हुक्का पीता रहता है। अब चिलमें भी नहीं भरनी पड़तीं, इसलिए कि गंगा तम्बाकू जलने नहीं देती, पहले ही ताजा कर रख देती है।

शौक लगा, सास से दोनों बहनों ने कसीदा निकालने का काम सीखना आरम्भ किया। बुद्धि दोनों की सुतीक्ष्ण थी अतः कुछ ही दिनों में नैपुण्य प्राप्त किया। अब तो तीनों मिल बैठतीं और "कौन संझा तक अधिक काम करे ?" यों परस्पर दत्तचित्त हो, प्रतिस्पर्धा से बहुत कुछ काम कर डालतीं !

शंकर ने मकान की तंगी देख, दो कोठे और बनवा दिये। आगे उनके छप्पर डलवा, अन्दर सफेदी करवा, दोनों के रहने के लिए तैयार करवादिये। एक दिनकी बात है, शंकर खाना खाते कुन्दन और माधवसे कहने लगा-'भय्ये, काम तो ऐसे ही होता रहेगा, तुम दोनों बहुओं को दो २ घन्टे दिन में पढ़ाया करो। देखो न, साल भर इन्हें यहां रहते हो गया अभी भी 'जिनावर' कहती हैं, 'जानवर' कहना ही नहीं आता ! 'मखमल'का 'मुखमल' कहती रहती हैं। भय्ये, इनकी पशुता दूर करो !" यह सुन दोनों लज्जित हुए परन्तु "गङ्गा को आना ही था-भागीरथ को यशोलाभ !"—इस जनश्रुति के अनुसार अब स्वतन्त्रता सी प्राप्त हुई। चाहते तो पहले ही थे परन्तु अब स्पष्टतया पिता की आज्ञा मिल गई, एतदर्थ अपूर्व—औत्सुक्य-परता छागई!

दूसरे दिन की बात है, शंकर किसी कार्य-वश शहर गया था वहां से याद कर दो वर्ण-माला की पुस्तकें ले आया और दोनों बहुओं को दे, बोला—"अक्षर सीखना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुरु करो और इन्हें झटपट समाप्त करने की चेष्टा करो। जब चिट्ठी पत्री लिखने, रामायण पढ़ने लगोगी, तब दोनों को सोने की आरसियां और सोने की अंगूठियां बनवा दूंगा।"

अब बहुओं की प्रसन्नता का क्या ठिकाना? दोनों की सुतीक्ष्ण बुद्धियां, चढ़ता उत्साह, पीछे से लोभ का धक्का, सामने से प्रियतम मनोहर मूर्तियें का बैठकर, पढ़ाना! फिर क्या था—कुछ ही दिनों में जा, रामायण के हाथ मारा!!—एक दिन रात के १० बजने के समय अपने छोटे से परन्तु सुभूषित एवं सुसज्जित कमरे में गंगा ने डबल बत्ती वाली सामने दीवार पर लगी 'दीवारगिरी' तेज कर, कमरे में धूप-सा प्रकाश फैलाया हुआ था। गङ्गा स्वयं हलके अंगूरी वर्ण की धोती पहिने, दीवारगिरी की ओर मुख कर आराम कुर्सी पर निशंक लेटी हुई, अपने स्वाभाविक मृदुल मनोहर स्वर को और भी मन्द—मधुर बना, आज के पाठ को पढ़ने लगी। उस के प्राकृत-स्वर में मधुरता, मनोहरता एवं आकर्षण कुछ कम नहीं था। तिस पर स्वतन्त्र ध्यान से गाई हुई चौपाई, माता के पास भोजन करते हुए माधव के कान तक पहुंची। उसने माधव को उसी समय कमरे में उपस्थित होने को बाध्य किया। उसने हृत्तन्त्री के तार हिला दिये। वह सहसा व्यग्र हो उठा। इधर उधर ग्रास ले पानी पी चट अपने कमरे की ओर चला धीरे से द्वार के किवाड़ खिसका, धीरे ही निश्शब्द-पाद कुर्सी के पीछे जा छुपा, उसने तिरछे होकर झाँका भी—उस समय गङ्गा का मुखाम्भोज, डबलबत्ती वाली 'दीवरगिरी' का पूर्ण प्रकाश पड़ने से, बाल-सूर्य-सम तमतमा रहा था। वह आज्ञानावस्था में उसी तरह निश्शङ्क हुई लेटी रही और चौपाई पढ़ती रही। उस काल वह इस चौपाई को बड़े ही धैर्य के साथ, सुदीर्घ, सुस्पष्ट, एवं सुमधुर-स्वर में गा रही थी:—

"जय जय जय गिरिराज-किशो·····री।
जय महेश-मुखचन···चन्द····· ॥

—तब पीछे से माधव ने:-

"····· ····· ····!
····· ····चन्द्र-चको···री ॥"

कह, पूरी कर दी। अब तो गंगा झट उठ खड़ी हुई। माधव की ओर देख लज्जित सी हुई। होटों पर शुष्क हंसी ला, बोली:—

"कितनी देर के खड़े हो?"

यह सुन, माधव ने उसके मुख की ओर दृष्टि डाली। उसे उसके मुख-मयङ्क पर तब कुछ और ही आभा प्रतीत होने लगी। धोती की चौड़ी-काली-किनारी ने उस के गौर-मुख-मण्डल के चारों ओर हो, अकथनीय शोभा बढ़ादी थी। उसे देख माधव उस समय सारे संसार को भूल गया। आप उस कुर्सी पर बैठ गया और उस का हाथ अपने हाथ में ले, खैंच, पास ला बोला:-

"अभी ही तो"

गङ्गा—"तो ऐसे चुप के से क्यों आए?"

माधव—"हम ने सुना, चलती, चलती गाड़ी खाँचे में अटक गई, सो निकाल ने चले आए। क्यों, न आते क्या?"

तिस पर गङ्गा लज्जित हो, बोली-- "वाह! आते क्यों-न?"

माधव—"तो अच्छा, आगे पढ़ो। पर पढ़ना वैसे ही स्वर से"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गङ्गा—[दो-तीन बार शिर हिला, होंठ पिच का] "न, पढ़ दूंगी। वैसे शरम आती है।"

माधव—(शिर के संकेत से) "वाह! शरम कैसी? दादा भी तो ऐसे ही पढ़ते हैं--न?"

गङ्गा—"उन्हें देखही मुझे गाना आया है। परन्तु मिले हुए अक्षर अभी मुझ से साफ़ नहीं पढ़े जाते। अब यही 'चन्द्र चकोरी' शब्द था—तीसरी बार पढ़ने से साफ़ होता!"

माधव—"यह कमी भी हट जाएगी। अच्छा, अब उसी तरह फिर सुनाओ तो, खाना खाते समय जब तुम्हारी चौपाई सुनी थी ईश्वर जाने, हम तो तभी हृदय-हीन-से हो गए थे!"

गङ्गा—[एक दम अपना शिर माधव के वक्ष पर रख] "अजी-हाँ!

तब माधव उस का अधरोष्ठ ज़रा पकड़े कर, बोला—

"सच ही, सच!"

कुछ क्षण के उपरान्त स्वामी की छाती में छुपे हुए मुख को ज़रा रगड़ कर, गङ्गा बोली—"तुम चाहते नहीं कि मैं पढ़ जाऊं"

तब माधव अपने दोनों हाथों से उस के मुख-मयंक को ऊपर को प्रकाश के सामने अपने मुख के पास खेंच, ला, बोला:—

'हट!"

गङ्गा—(बल से छुड़ा कर) "सच ही, दादा जी ने कहा—तब पढ़ाने लगे हो।"

माधव—"अरी, जी में तो बहुत पहले से थी पर ....

बात समाप्त न होने दी, बीच में ही चट गङ्गा बोल पड़ी "देखो, बहिन जी अंग्रेज़ी पढ़ रही हैं। चौथी किताब भी आधी से अधिक खतम कर चुकीं!"

माधव—"अरी, अंग्रेजी में क्या धरा है? उस में ऐसी किताबें थोड़ा ही हैं-जैसी रामायण!"

गंगा—(गुनगुना कर) "नहीं, जरूर पढ़ूंगी"

माधव—(शीघ्रता से) "अच्छा, फिर कल से ही सही।"

गंगा तिस पर "अच्छी बात" कह, आगे रामायण का पाठ पढ़ने लगी। पढ़ने के कुछ देर पश्चात् पुस्तक सिराहने धर, अपने पलंग पर चित लेटे माधव के वक्ष पर, आप भी चित्त हो, शिर धर, बोली—"अच्छा, एक बात पूछती हूं, उत्तर दोगे?"

माधव—(सम्भ्रान्त-सा हो) "क्या बात?"

गम्भीरता से गंगा ने कहा—"तुम मुझे धमकाते क्यों नहीं। मास्टर तो धमकाते हैं, मारते हैं, तुम्हें भी मारना चाहिए?"

अब की बार माधव हृदय से हंस पड़ा। उसके दोनों हाथ अपने गले में डाल बल-पूर्वक उसका मुंह अपने मुख के पास ला स्निग्ध-कपोलों पर प्रेमाङ्कुल कर, बोला—"तुम्हें क्या धमकाऊं? कुछ काम भी धमकाने का करो?"

गङ्गा निश्चल-निर्वाक् हो, बहुत देर तक वैसे ही पड़ी रही।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

* * *

यह न अपना आदर गिनती है, न निरादर। जनता के न चाहने पर भी वर्ष में एक दौरा इस प्रान्त में लगा ही लेती है! निर्धन धनवान का, विद्वान् मूर्ख का, बालक जवान वा बूढ़े का स्त्री वा पुरुष का न विचार है। तेरा अभद्राऽगमन सुन, गाँव, कस्बे और शहर खाली हो जाते हैं।

हा अदेहे, दुष्ट, जनपदोध्वंसिनि! (प्लेग!) क्या यम की मृत्यु हुई वा वह असाध्य-व्याधि ग्रस्त हो अपने कार्य करने में अशक्त हुआ? तू किस के रिक्त स्थान पर नियुक्त हुई है? वा यमकी स्वयं से बका बनी है? निर्दयतरे! मानव रक्तचूषक दुश्शासकों[1] को भी तूने मात दिखादी! कम से कम वे निर्धनों के आगे तो लाचार हैं! मुर्गों से छोटे जीवों के तो वे ग्राहक नहीं होते! तूतो घर के चूहों तक की ग्राहक है!

निर्घृणतरे! ईश्वराज्ञा से यदि तू भारत के मनुष्यों की वृद्ध-संख्या को न्यून करने के लिए भी नियुक्त हुई हो तो संस्कारों के रोकने का भी तेरा निन्द्य कर्म क्यों है? तेरे भय से भीत जन तेरे हत-शवों की अन्येष्टि तक न कर पाते हैं। हा! दाह जैसे संस्कारों के रोकने में न जाने तेरा क्या अभीष्ट है? सम्भव है तू अपने निर्घृणतरस्वभाव का परिचय करा रही हो? गर्हिते! जनता कैसे न समझेगी कि "नगर-रक्षक" उपाधिधारी अधिकारी तेरे ही चेले हैं! तूने ही उन्हें शव दुर्दशा करने का पाठ पढ़ाया है!!

अवश्य शंकर वृद्ध था। परन्तु देह-बल में तरुणों का भी मान माईक था! चौंसठवाँ वर्ष होने से ही क्या है-वार्द्धक्य लक्षण एक न दीख पड़ता था! सरला को दोनों पुत्र नेत्रों की भांति सहायता देंगे, टांगों के सदृश चलाएंगे, हाथों के समान आवश्यकताऐं पूरी करेंगे, सही। परन्तु उसका हृदेश तो हृदय-हीन-सा होगया! पाणि-ग्रहण के समय उपाध्याय ने अग्नियोग से दोनों के अन्तस्तल (हृदय) को एक कर दिया था!!

शंकर कभी गृहणी को छोड़ विदेश न गया था क्योंकि सरला उसके बिना रह न सकती थी; परन्तु अब तो काल-पाश-बद्ध शंकर निर्मोह हो, अबला सरला को पुत्रों के आधार पर अकेली छोड़, सदा के लिए वियुक्त हुआ! शंकर के परलोक-प्रयाण करने पर, सच पूछें तो सरला का जीवन निस्सार होगया! यह सब किया महामारीने!!

आज तीसरा दिन है। प्रेम-वश शंकरने दो गुथलियों में कुछ भेजा है-ऐसा प्रतीत होता है। बड़ी माधव के शिर पर है तो छोटी कभी सरला के गले में और कभी कुन्दन के गले में लटक जाती है। यह जो भी कुछ भेजा है, भेजा है तब जब सब अन्तिम रुलाई रोचुके! आ-जन्म के सञ्चित अश्रु बहाचुके! सन्तोष ने जब कुछ सहारा पहुंचा दिया! सरला का रिक्त हृदेश पा, जब धैर्य्य ने घरकर लिया!

गुथलियों को टटोला। अरे, इस में तो उस भीम-देह की अस्थियां हैं। दूसरी में भस्म! ओ! यह क्या हुआ? होता क्या-ऐसा प्रतीत होता है, जैसे विचारे वृद्ध को वियोग जन्य-प्रचण्ड अनल ने बलात् भस्म किया हो? अवश्य उस की अन्तरात्मा तक भी लपट पहुंची होगी? जिस से विचारा वृद्ध इनके गले लटूम कर यह बताता है कि "हमारे इस सन्ताप को परम-पावनी श्री भागीरथी दूर करने में समर्थ है। अब भी वियोगाऽनल दग्ध मेरी अस्थियों को सन्तोष-

१-नगर के रक्षा-विभाग के अधिकारियों।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शान्ति-प्रद सुधा-सम गंग-नीर में यदि तुम छोड़, आओगे ! तो सम्भावना है कि अननुमेय शान्ति-सुधा का समास्वादन कर, परम सुख का अनुभव कर सकूं, यह मुझे पूर्ण-- विश्वास है ! " सो प्रतीत तो ऐसा ही होता है कि शंकर के हार्दिक भाव को समझ पतित पावनी श्री भगवती भागीरथी की ओर प्रस्थान किया हो।

* * *

उषा-काल से बहुत पूर्व ही गढ़मुक्तेश्वर स्टेशन से गंगा तट के लिए, आने जाने का फी सवारी पांच पांच आने तांगा किराये कर, थोड़ी देर में ही भव्य दर्शना भगवती श्री भागीरथी के पुन्य तट पर प्राप्त हुए। श्री मन्दाकिनी का वह किनारा, कार्तिक मास, शुक्ला चतुर्दशी की वह चन्द्र-चन्द्रिकाम्बरा रम्य-रात्रि, प्रातःकाल, खुली वायु के झोंके, ऐसे समय में इतने कठिन शीत से दावानल शांत हो सकता है, परञ्च वह सन्ताप नहीं जिस से संतप्त हो तीनों अत्युष्ण एवम् सुदीर्घ उच्छ्वास छोड़ रहे थे। आहें निकाल रहे थे! अरुणोदय की प्रतीक्षा करते, तीनों एक ठौर बैठे रहे। उनके उस आंतरिक संताप का विवरण कौन करे ? जो—'अरुणोदय के साथ साथ शङ्कर का जो कुछ दग्धावशेष लिए बैठे हैं, वह भी सदा के लिए जुदा होने वाला है !' यह ध्यान करने से उत्तरोत्तर वृद्धिगत होता जा रहा था ?

जितने यह लोग शौचादिक से निवृत्त हो, एकत्रित हुए तब तक बाल-सूर्य का अरुणाभास स्पष्ट विदित होने लगा। अब तो इधर उधर से पंडे लोगों ने यजमानों की खोज करनी आरम्भ की। एक ने पास आकर, इन से भी पूंछा:—'कह से आए"?

कुन्दन—"देहली से"

पन्डा—"तो आइए, आगे को आजाइए"

यह सुन, तीनों आगे पीछे हो, झोंपड़ी के सामने से निकल, धारा के अत्यन्त समीप प्राप्त हुए। कपड़े उतार, नंगे हुए। सरला ने भी धोती बदली। उस समय वे बज्रपात के सदृश अपने दुस्सह-दुःख को श्रीभागीरथी की रम्य धारा में विचित्र तरल तरंगें देख भूले से थे। वे उस त्रिपथगा की काल तरल तर तरंगें प्रत्यक्ष संताप हरती हुई सी देख रहे थे। स्नानाऽर्थ जो उद्यत हुए तो उस से पूर्व ही उन में से एक पंडे ने पूंछा—"कौन जात (जाति) हो ?"

कुन्दन—"मोची हैं, जी !"

उपस्थित पण्डों की मण्डली ने रक्त-नेत्र कर, आवेश पूर्ण स्वर में कड़क कर कहा—"अरे ! तुम्हारा नाश हो, तुम्हें सूझता नहीं ? कहां घुसे ही चले आए ?"

कुन्दन—"हम बिलकुल अजान हैं, जी ! जिधर कहो, बैठ जाएं ? यह दादा जी के फूल डालने ....

बात समाप्त न होने दी कि बीच में ही दांत पीस, चिल्ला कर, एक पण्डे ने कहा—"जाओ, गरो एक तरफ कहीं ? पटकने को और कहीं ठौर नहीं मिली ?"

सरला—(नम्रता से) "जी, हम तो परदेशी हैं। नाराज न हो।"

पण्डा मंडली—"अच्छा, अच्छा; जाओ, बाबा आफत दूर भी करो। उधर कहीं डाल दो !!"

यह सुन, तीनों ने फिर अपने अपने कपड़े उठाए और वहां से कुछ दूर पर जा, उसी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकार पहन ओढ़ तीनों आगे पीछे भगवती श्री भागीरथी के अनुप्रवाह—तट ही तट (रेलवे पुल की ओर) चलने लगे। मार्ग में माधव ने चलते चलते पूंछा—"क्यों री मां हम दादा के फूल भी न बहा सकेंगे ? नहा भी न सकेंगे ?"

सरला—"देखो, भैये ! जहाँ से श्री गंगा माई आई हैं, और जहां तक जाएंगीं, सब जगह क्या थे ड़े ही पण्डे-लोग होंगे ? जहां कोई न होगा, वहां बहाएंगे, नहायेंगे !"

इस भांति अपने अनुपम बाल लालों को समझाती हुई, बड़ी दूर जा, जहां मनुष्य मात्र यथार्थ में न था उस तट पर दोनों को संग लिए, प्राप्त हुई। पहले सब ने स्नान किए, फिर सजल-नयनों से पुष्प बहाने को उद्यत हुए।

× × ×

घर वही, वही बेड़ा और वही गांव परन्तु वही बात नहीं, जो अब से दो सप्ताह पूर्व थी। यहां आते ही भयानक काँड देखने सुनने में आने लगा। सरला दोनों को बुला पास बिठाल, अनवरुद्ध अश्रु-मौक्तिक-माला नयन-नलिनों से छोड़ती हुई, बोली—"भैये, यहां न रहना चाहिये। चाहे अपने मामा के चलो या कहीं और ?"

कुन्दन—(माधव की ओर देख) 'भैये, जो कुछ विधाता ने किया वह तो हुआ ही। पर मां अब ठीक ही कह रही है। चलो, अब इस आग से निकल चलो। मामा बिना और अब ठिकाना भी कहां है ?"

—माधव कुछ उत्तर न दे सका। उसका गला रुंध गया। आंखें डबडबा आईं। अंत में पुक्का फाड़कर, बच्चों की भांति माता के छुटने पर शिर टेक, फूट फूट कर रोने लगा। कुन्दन अनाथ बालक की यह दशा देख कहां तक शांत स्थिरचित्त रह सकता था ? अपने दोनों हाथों से उसका शिर पकड़, "चुप रहो भैये, चुप रहो !" एक दो बार कह, पहले धीरे २ फिर गला पकड़ कर आप भी रोने लगा। दोनों अनाथ बालकों का यह आर्तनाद देख सरला भी दोनों को छाती के पास खेंच जोर जोर से विलाप करती, कुररी-सी करुण क्रन्दन करने लगी। इस हृदय-विदारक आर्त-क्रन्दन को सुन एक दो पड़ोसी भी, जो अभी नहीं उठ भगे थे, उन के पास जा, उन्हें समझाने बुझाने लगे। परन्तु सदा बलवान की जय होती है ! ऐसे प्रचण्ड शोक वेग से कौन मानव-हृदय प्रति युद्ध कर विजयी हो सकेगा ? अंत में समझाना भूल गये और वे भी रोने लगे। उसी तरह शोकनद में निमग्न हुये बहुत काल के पश्चात्, जब शोक-वेग समुद्रबाढ़ के उतार के सदृश, कम हुआ तब कुन्दन वैसेही माता के वक्ष में मुंह छुपाये बिलबिलाता बोला—"हम नहीं रहेंगे इस घर में, मां ! चलो मामा के। वही इस समय हमारे··· ··"

सब कहने न पाया कि विचल हो, फिर पुक्का फाड़कर रो पड़ा। दोनों का शोक वेग कुछ ही कम हुआ था कि फिर कुन्दन के क्रंदन से गला फाड़ सब रो पड़े !

कुछ काल में जब स्वस्थ हुये तो गांव से एक मील की दूरी पर झोंपड़ियों का प्रबन्ध कर, जब तक १३ दिन पूरे न हो जाएं और दश दिन यहीं काटने का वहां विचार किया

× × ×

आज शङ्कर के १३ दिन हो चुके। अब बहुत कुछ चित्त ने धैर्य धारण कर लिया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जैसे हर घड़ी कोई न कोई रो देता था। अब वह बात नहीं। कुन्दन ने सरला की अनुमति से माधव को आज सन्ध्या की ट्रेन से मेरठ रवाना किया कि—दोनों बहुओं को ले आवे। और आप सब सामान गड्डों पर लदवा, मामा के यहां प्रस्थान किया। जब मामा एक रोज़ को बीच में आए थे तो कह चले थे कि पीछे २ आ जाओ मैं मकान आदि का प्रबन्ध करता हूँ।

उधर से माधव भी अपनी भाभी एवम् गृहणी को लिये गुड़गावां प्लेटफार्म से बाहर हो तांगा कर गांव की ओर चल पड़ा। छः सात मील की दूरी पर स्टेशन से यह गांव था। प्रातः दश बजे के चले; मध्यान्ह एक बजे के अनुमान घर पहुंचे। बहुओं ने प्रवेश से पूर्व ही आर्त-नाद करना प्रारम्भ किया, किन्तु फिर भी सरला धैर्य्य वाली थी—हृदय से सब को लगाए, समय बिताने लगी।

* * *

अभी दो मास भी व्यतीत न होने पाए हैं पिछली चोट का दर्द अभी कहां दूर हुआ है? वह कौन सा दिन गया है, जिसमें शकर की स्मृति में किसी न किसी ने आंसू न बहाए हों? यह कब इन नव-गृहस्थों में अनुभव किया था कि—दुःख के पीछे ही दुःख आया करता है! किन्तु भावी बलवती है। आज सरला को तीन दिन से तीव्र-ज्वर आ रहा है। खांसी-बलगम, दोनों पसलियों में दद! क्या ख़बर है दोनों बच्चों को कि माता को क्या हो रहा? कल सरला के भय्ये की सुसराल से अशुभ सूचना आई थी, जिस से वह तभी अजमेर को रवाना हो गया। न गांव में हकीम, न वैद्य-डाक्टर। क्या करें? बिचारे सपत्नीक दोनों, चारपाई के इधर-उधर बैठे रहे। 'सेक' के अतिरिक्त और कुछ भी उनके वश की बात नहीं थी।

ऊपर से रात होने को हुई। सरला ने प्रलाप (करना) आरम्भ किया। रोते-तड़फते दोनों ही रात भर चारपाई के इर्द-गिर्द बैठे रहे। यह दृढ़ विचार किया कि—प्रातः गुड़गांवा से डाक्टर लाएंगे। इधर अर्द्ध-रात्रि पीछे कफ [बलगम] ने कण्ठ को रोक लिया। प्रातः चार बजे के समय श्वास के साथ 'घड़ घड़'घड़' होने लगी। परन्तु बिचारे दोनों भय्ये क्या जानें कि यह कफ़ की 'घबराहट' क्या सन्देश दे रही है?

हा! अन्त में वही हुआ, जो होना था। 'घड़घड़ाहट' सहसा बंद हुई। अन्याग्नि का भान्ति उसका जाज्वल्यमान हृदयगार सहसा शान्त हुआ!! उस दुखिया के दुःखों का एक बार ही अन्त हुआ!!!

चारों के आर्तनाद ने गांव के आंसू बहा दिए। ग्राम की रमणी-जनों ने भी आंचल में छिपे नेत्रों द्वारा आंसू बहा समवेदना प्रकट की! परञ्च हा! यह दारुण-बज्रपात कैसे भी न रुक सका! बराबर ३ घन्टे तक दीन, अनाथ से, बिचारे सपत्नीक भ्रातृ युगल सरला शव के समीप बैठे, रोते चिल्लाते रहे। अन्त में कुन्दन उठा; अश्रु पोंछ, बाहर निकला। और—"कोई भी समर्थ नहीं!" कह, दुर्दैव की लीला का अद्भुत दृश्य देखने लगा। अन्त में पार्श्ववर्ति (पड़ास के) घर से एक रमणी आई है उसे देख, कुन्दन रोकर बोला—"देखो तो, श्वास तो आता नहीं। कुछ बाकी है या नहीं? रमणी घर में जाकर, दूर से ही उस की मुखाऽकृति देखकर बोली—"इस में क्या धरा है, चांद! समर्थ होकर, बावले न बनो!" कुन्दन—"हां—जी! (नाक साफ कर) आज ही का दिन देखने समर्थ हुए थे!"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रमणी—"बावले हो, मा-बाप सदा रहे हैं? इसकी मिट्टी ठिकाने लगाओ चंदे!"

कुन्दन सुन, फिर बाहर निकला। इधर उधर देख, लौट कर आ, विकृत्य—विसंज्ञ-जैसे पड़े हुए माधव को बोला—"उठो, भय्ये! वहां तक ले चलने के लिए भी तुम और हम ही हैं। यहां! कोई तीसरा स-जातीय-जन भी नहीं!!

प्रारब्ध फिरी तो ऐसी फिरी कि उठा कर ले चलने के लिए जहां तीसरा (सजातीय पुरुष नहीं वहां सरला का देह-पात हुआ। मामा तीन दिनों से अजमेर गया। वहां केवल ३ ही घर। जिनमें से एक में दो विधवाएं, दूसरे में एक नन्हा सा अष्टवर्षीय बालक! तीसरे घर में उन का मामा सो अनुपस्थित। कुन्दन—"क्यों—भय्ये, कहां ले-चलें? हम तो जानते भी नहीं, किधर है श्मशान?"

माधव—(कुछ शान्त हो आंखें पोंछ कर-जो हड़ के कुछ आगे एक दिन मुरदा जलता देखा था"

कुन्दन-चलो, फिर वहीं चलेंगे!"

* * * *

छतरी के पास से ज़रा ऊपर को उकस,-आज कौन?" फिर सामने की पाल पर चढ़, टक टकी लगाकर,— "ऐं···पुजारी जी!'

पुजारी-(स्वाफी को खींचोड़, उसी प्रकार स्वर से) "पुजारीजी को टीले (पाल) पर चढ़ाएगा? पागल नहीं तो! शोर ही शोर ख़ामांख़ा के लिए!!"

गोबिंद—"नहीं, मख़ौल नहीं। जरा आओतो"

पुजारी—(एक हाथ में चिलम लिए, दूसरे से स्वाफी लपेट, आकाश की ओर मुख कर, मुख से ऊपर चिलम कर, नीचे से उसमें फूंक मारते हुए) "आजा, गरम होले! जरा-सी-कंकरी है, जाती रहेगी!!

साधु—"आ जाओ, गुरू। नारायण-के दम लगालो।

गोबिंद--पुजारी के न आने पर, अन्य से) अरे राम-जी! ज़रा तूही यहां तक आ, भले-आदमी! देख तो·····

रामजी (बीच ही में) "भाई अब तो आस (आशा) लगी हुई है। भला चाहे तो आजा, नहीं तो झींखेगा!"

किसी के भी न आने पर, स्वयं नीचे उतर, उस सुलफा मंडली में आ-बैठा-और बोला-- "यार पुजारी! आज कोई गांव में मरी है! कहीं सुनी तो नहीं।"

पुजारी--'तू क्या सुनता? सुनाई ही तुझे अगले जन्म में दिया करेगा! (बार से आई चिलम को ले) मरी है न, चमारी, दिल्ली वाली!"

गोबिंद-"तो क्या यहां फुकवाओगे?"

पुजारी-(एक हाथ ऊंची ज्वाला निकलती चिलम को दे)

"यहां, आए हैं, क्या?"

गोबिंद-"और तुम्हें रो क्यों रहा था, इत्ती (इतनी) देर से?"

पुजारी--"अच्छा? झटपट पी कर, चलो। हटाओ, उन्हें।

"कह, स्वयम जूता पहन, चल पड़े। इधर धूआं का कुल्ला साधू जी की दाढ़ी में मार

'अब इसमें क्या धरा है?'-कह; चिलम औंधी कर प्रथम रामजी तदनुसार गोबिन्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्पश्चात् साधु, सब आगे पीछे चल दिए। वहां पहुंच गोबिंद ने जा, ललकाराः-

"अरे, यह तो मरी ही है, पर अपनी और इस की दुर्दशा कराने यहां क्यों आए?"

कुन्दन धर्षणा सुन, पीठ पीछे चार मनुष्य खड़े देख, त्रस्त हो बोला--"क्यों-जी?"
गोबिन्द—(औद्धत्य से) "क्यों-जी' के बच्चे! (उंगली से ॥१ मील की दूरी का श्मशान दिखा) उधर ले जाओ।"

पुजारी-(अपने सहागत-जनों से) "अरे, एक तो यह बालक, दूसरे विदेशी, जानते नहीं! (फिर कुन्दन से) भाई बच्चो! यहां तो ब्राह्मण-बनिएं-उज्जल जात (जाति)-आती हैं। तुम्हारा (वही दूसरा १॥ मील की दूरी वाला श्मशान उंगली से दिखा) वहां है।"

कुन्दन खड़ा हो,, पड़ी हुई लकड़ियों को दिखा, दीनता से बोला-"अजी, यह तो यहां गिर गईं। हमारे पास तीसरा मनुष्य नहीं। क्या करें, वहां कैसे ले जा सकेंगे?"
साधु- (यह दशा देख, दयार्द्र हो) "तीसरे नारायण-के हम भय्ये! चल!"
रामजी--(आर्द्र हृदय से अपना सूती धुस्सा गोबिन्द को देकर) "चलो, भाई!")

पुजारी- (धीरे से उसे झट ही हाथ से रोक) "नीचों की मुरदनी में जाना पाप बताया है, सासतरों (शास्त्रों) ने!" (कान के पास यों कहा, तब रामजी ने अपना धुस्सा उलटा ले, धीरे से ही उत्तर दिया। "खैर, जाने दो")

उस समय साधु से न रुका गया। वह अरथी*की ओर संकेत कर,कुन्दन से बोला-"भय्या ओ! पहले इनको उठाले चलें। फिर सब लकड़ियां गड्ढा लाकर, मैं पहुंचा दूँगा अभी क्षण में। तुम वहीं बैठे रहना। घबराने का क्या काम है?"

माधव ने दीर्घ श्वास छोड़ कर कहा "पहले दादा तुम चले। मां, अब तुम भी जाती हो, पर देख जाओ, सामने ही तुम्हारे कैसी दुर्दशा हो रही है?" कहा, और मुख फाड़ रोने लगा। कुन्दन इस प्रकार अनाथ बालक को करुण-क्रन्दन करते देख, उसके पास जा बोला-"बावले माधव! चुप न करोगे क्या-?"तथा शोक-वश को रोकता हुआ उसे छाती से लगा-"चुप हो, मुन्ने! चुप हो! क्या बनता है, रोने से?" कह, समझाने लगा। परन्तु स्वयं ऐसा कहां बलिष्ठ था जो शोक-वेग से द्वन्द्व-युद्ध कर, विजय पाता? अन्त में स्वयं भी 'हाय, मय्या!..... .....

हमारी कौन..... .....फूट फूट कर, गला फाड़ कर रो पड़ा। दोनों का आर्तनाद सुन, इन चारों के हृदय भी कैसे स्थैर्य्य रख सकते थे, आंसू बहा ही दिए।

[अपूर्ण]

१—नारायण-के" का सपुट बात में लगाने का अभ्यास होता है।

१— शव की होली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिन्दू पति के समर्थन में

(In defence of Hindu Husband)

ले०—श्रीयुत प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, एम. ए. सम्पादक 'प्रभात'

बहुत दिन हुये मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि एक बार विलायत में यह प्रश्न उठा था कि वहां की युरोपीय स्त्रियें काले (ऐशिया वासी) पतियों को क्यों अधिक तर पसन्द करती हैं, इस के उत्तर में वहां की स्त्रियों की ओर से कहा गया था कि काले लोग पति के कर्त्तव्य को निबाहना जानते हैं। मुझे पूरे शब्द याद नहीं रहे हैं पर भाव इससे कुछ मिलता जुलता था। मुझे सब से पहिली तो हैरानी इस बात पर थी कि विलायत की स्त्रियां काले पतियों को अधिक चाहती हैं। बहुत कम लोग हैं जिन्हें इस बात का विश्वास आसके फिर भी यह वास्तविक सत्य है। विलायत की स्त्रियां चाहे वे किसी देश की हों हिन्दुस्तानियों से बहुधा विवाह प्रसन्नतापूर्वक करती हैं, परन्तु इन से भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि एशिया या हिन्दुस्तान के लोग पति के कर्त्तव्य को अधिक निबाहते हैं। सम्भव है कि जिस लेडीने ऐसा जवाब दिया हो उसके ध्यान में कुछ ऐसे दृष्टान्त हों जिस में किसी हिन्दुस्तानी ने किसी पाश्चात्य देशीय प्रेमिका पर मोहित होकर विवाह किया हो और उस पर सब कुछ वार दिया हो परन्तु सामान्य दृष्टि से देखा जावे तो पूर्वीय देशों के पति सब से अधिक बदनाम इस लिये हैं कि वे अपनी स्त्रियों के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं पालन करते। बार २ हमें पश्चिम के लेखक और उपदेशक यही सुनाते हैं कि तुम लोग स्त्रियों का आदर करना नहीं जानते। पूर्वीय देश के पति स्त्री को केवल अपनी सेवा का साधन समझ कर उसके प्रति दासी का सा व्यवहार करते हैं। यहां तक कि पूर्वीय देशों में स्त्री का जीवन है ही केवल पति के लिये, हिन्दू स्त्री को पतिव्रता होने का उपदेश बार २ दिया जाता है और उसे बतलाया जाता है कि पति को ही ईश्वर समझे परन्तु पति को पत्नीव्रत का आदेश कभी नहीं किया जाता, इस लिये हिन्दू पत्नी के समर्थन में उसके गौरव के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु हिन्दू पति का समर्थन क्यों कर हो सकता है? पति के रूप में एक हिन्दू का कुछ भी महत्व नहीं।

इस लेख में यही विवेचना करनी है कि क्या हिन्दू पति के समर्थन में कुछ भी कहा जा सकता है या नहीं? जहां तक संसारिक सुख और सहयोग का सवाल है पूर्वीय या हिन्दू स्त्री की दशा शोचनीय है, हिन्दू पति इस दृष्टि से एक युरोपीय पति से कहीं निकृष्ट है। युरोपीय पत्नी खान-पान में अपने पति के बराबर है। दोनों साथ २ खायेंगे उनका भोजन एक सा होगा। यह बात रहन सहन और वस्त्रभूषा के विषय में है। बल्कि बहुधा तो पति का बड़ा कर्त्तव्य सांसारिक विषयों में स्त्री की इच्छा की पूर्ति मात्र होता है, और वह रात दिन कमाता है इस लिये कि स्त्री की इच्छाओं की पूर्ति कर सके और वह गुलाम सा बना रहता है। सामाजिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आमोद-प्रमोद की दृष्टि से भी स्त्री का दर्जा पति के बराबर या कुछ ऊंचा ही है। सिनेमा, थियेटर, पबलिक लेकचर, बालरूम सब में पत्नी भी पति के साथ ही जायगी, फलतः युरोपीय सभ्यता में पति कोई सांसारिक भोग नहीं भोग सकता जिस में पत्नी का हिस्सा न हो, बल्कि स्त्री वहां सांसारिक भोगों और सुखों में पति से बढ़ कर है। हिन्दू पत्नी की दशा ठीक इससे विपरीत है। वह विचारी कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खा सकता। कोई भोग नहीं भोग सकती। वह सब कुछ करती है तो अपने पति के लिये और पति से बचा हुआ जो कुछ हो उसे यज्ञावशेष के समान खा लेती है। यदि वह थोड़ा शृङ्गार करती है तो वह भी पति के लिये है। पाश्चात्य स्त्री के समान दर्शकों से प्रशंसा पाने के लिये नहीं है सामाजिक आमोद-प्रमोद से तो उस विचारी का कोई सम्बन्ध ही नहीं है, इस दृष्टि से युरोपीय पत्नी की अवस्था हिन्दू पत्नी की अपेक्षा कहीं उत्तम और बढ़ कर है। और इस लिये यह कहा जा सकता है कि हिन्दू पति एक युरोपीय पति की तुलना में घट कर है।

परन्तु यह केवल वहीं तक सच है जहां तक सांसारिक भोग और ऐन्द्रियिक सुख का सम्बन्ध है। निस्सन्देह इस दृष्टि से हिंदू पति अपने कर्त्तव्य से गिरा हुआ है और उसके समर्थन में कुछ नहीं कहा जा सकता। परन्तु पति कर्त्तव्य की एक दूसरी—इस से भी बढ़ कर—पहलू है हिंदू पति का मुख्य आदर्श अपनी पत्नी के प्रति उस की रक्षा करना सब से बढ़ कर उसके मान का रक्षा करना है। यहाँ तक कि हिंदू पति के मान और गौरव की केन्द्र उस की पत्नी है। उस की पत्नी एक प्रकार से उसके आत्म गौरव, प्रतिष्ठा और मान मर्यादा का सजीव मूर्त्त सशरीर रूप है। इस लिये एक ग्रामीण कहावत अब भी चली आती है कि "जिस की स्त्री नहीं उस की इज़्ज़त ही क्या"। वह घर के भीतर बेशक पीड़ित हो और उसे बढ़िया भोजन वस्त्र न मिलते हों परंतु वह फिर भी अपने पति का गौरव सम्मान रूप है। हिंदू पति इस बात को सह लेता है कि उस की पत्नी भोजन वस्त्र के कष्ट में बनी रहे परंतु अपनी पत्नी की मान मर्यादा पर ज़रा सीआंच आते ही वह क्या न कर डालेगा? बात की बात में प्राणों पर भी खेल जायगा। यदि स्वयं उसे कोई बुरा भला कहदे, अपमानित कर देना वह शायद सह लेगा परंतु अपनी पत्नी के विरुद्ध किसी को आंख उठाते भी देख कर उस का ख़ून उबल जायगा, उसकी सारी वीरता जाग उठेगी और उस में सिंह या हाथी का बल आ जायगा, क्यों कि वह समझता है-'स्त्री की रक्षा'। यह उस का पवित्र व्रत है, यह रक्षा शारीरिक, सांसारिक अर्थ में नहीं किंतु आत्मिक अर्थ में। और इस को वह अपने प्राण न्यौछावर करके भी करेगा। स्त्री की मानरक्षा के लिये साधारण रीति पर एक हिंदू पति जितना बड़ा आत्म समर्पण कर सकता है, जिस प्रकार वीर बन कर प्राणों को भी न्यौछावर कर सकता है वह साधारणतया एक युरोपीय पति नहीं कर सकता, हिंदू पति के सामने सांसारिक सुख सामग्री स्त्री के लिये उपस्थित कर देना उतना बड़ा कर्त्तव्य नहीं है जितना कि उस-की मान रक्षा करना। और हिंदू पति जब एक अबला स्त्री का हाथ पकड़ता है तब वह उस की मानरक्षा का व्रत ग्रहण करता है और उस पति के जीते जी उस स्त्री की ओर कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता, कोई उसका बाल बांका नहीं कर सकता। इस लिये उत्तम भोजन न मिले पर भी सुन्दर वस्त्रालङ्कार न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

होने पर भी वह गर्व्विता है सौभाग्यवती या सुहागिन है ! पर पति के न होने पर वही दुःखिता और अभागिनी है जिस के ऊपर से रक्षा का हाथ उठ गया है।

इस लिये सर्वथा यह कह देना कि हिंदू पति स्त्री के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं निवाहता या केवल इस लिये, कि स्त्रियों को इस देश में सांसारिक सुख भोग की सामग्री उतनी प्राप्त नहीं होती, यह समझ लेना कि उन का इस देश में आदर नहीं है बड़ी भारी भूल है। स्त्री की मानरक्षा, स्त्री के गौरव को हिंदू पति जिस प्राणपन से निवाहना जानता है उस का उदाहरण कहीं ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकता। हिंदू विवाह सम्बन्ध के अद्भुत सौंदर्य का गौरव यदि बहुत अंश तक हिंदू पत्नी को प्राप्त है तो किसी अंश तक हिंदू पति को भी अवश्य प्राप्त है।

निद्रा

ले०—प्रो० श्री सांभीराम जी एम० एस० सी०

["बीसवीं सदी का जीवन शास्त्र" नामक अपनी अप्रकाशित पुस्तक से]

पूरी निद्रा* बच्चों का वृद्धि तथा स्वास्थ्य के लिये उतनी ही आवश्यक है जितनी कि मुनासिब खूराक, ताज़ी हवा, तथा प्रकाश। अगर कोई माता अपने बच्चे को नियमित समय पर सुलाने का ध्यान रखती है तो वह अपने बच्चे को फुर्तीले अंगों वाला, और स्वस्थ्य दिमाग़ वाला बनाती है। निद्रा में शरीर की थकावट उतरती है और नवीन शक्ति संचित होती है। अतिरिक्त इसके शरीर में तन्तु‡ की मरम्मत होती है और शरीर की वृद्धि होती है।

भिन्न २ आयु के लिय निद्रा के समय की भिन्न २ मात्रा का होना आवश्यक है। इस लिये भारतीय माताओं के वास्ते निम्नलिखित फहरिस्त लाभदायक होगी:—

आयु	आवश्यक निद्रा (घन्टों में)
१ म मास	२२
२ य मास	२० से २२ तक
३ य मास	१८ से २० तक
६ ठा मास	१६ { ६ बजे सायं से ६ बजे प्रातः तक २ घण्टे मध्यान्ह से पूर्व २ घण्टे मध्यान्ह के पश्चात्
१ साल	१४ { ६ बजे सायं से ६बजेप्रातःतक १ घण्टा मध्यान्ह से पूर्व १ घण्टा मध्यान्ह के पश्चात्
२ साल	{ सुबह की नींद कुछ छूट जाय तो छूट जाये. परन्तु दोपहर के बाद न छूटे।
४ साल से ५॥ तक	१३ घन्टे से १४ घन्टे तक
७ साल : :	१२॥ घन्टे
१० साल : :	१२ घण्टे

*Publice Health Rpt, IV Edition; sup. no. 10, Minnesota Farmers. Library.

‡Body tissues.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

११ साल : : १२॥ घन्टे
१६ " के पश्चात् कम से कम ८ घन्टे

इस स्थान पर यह बताना अनुचित न होगा कि उपरोक्त अङ्क ठीक २ लेखानुसार हमेशा प्रयुक्त नहीं हो सकते। परन्तु उनके लगभग पहुंच कर जितना लाभ हो सके उतना ही प्राप्त कर लेना चाहिए। अमेरिका के लोग ऐसी फेहरिस्त से कैसे लाभ उठाते हैं इसके लिये "चाइलड वेल फेयर मेगज़ीन" का अनुवाद उदाहरणार्थ दिया जाता है।

*सेन्टपाल मिनिसोता की माताओं का आन्दोलन

हम ..... स्कूल के बच्चों के माता पिता इस बात को अनुभव करते हुए कि हमारे बच्चों की अच्छी सेहत कभी कायम नहीं रह सकती जब तक कि उन्हें काफी वा बाक़ायदा निद्रा न दी जाय। इसलिये हम अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुये निद्रा के विषय में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास करते हैं :—

(१) कि हम अपने बारह वर्ष की आयु तक के बच्चों को ८॥ बजे तक और १२ वर्ष से १५ वर्ष के बच्चों को ९ बजे से पहिले पहिले बिस्तरों पर लिटा देंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि ऐसा करने से हमारे स्कूलों के स्वास्थ्य तथा विद्या के स्टेन्डर्ड में वृद्धि होगी।

(२) कि हम अपने बच्चों की निद्रा के लिये स्वास्थ्याधिकारियों (मेडिकल ओथोरिटीज़) से निर्दिष्ट निम्नलिखित कम से कम आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं।

आयु (वर्ष)	(निद्रा घंटों में)
४ : : :	१२
५—७ तक : :	११—१२ तक
८—११ तक : :	१०—११ तक
१२—१४ तक :	१० घन्टे

प्रायः माताएं बच्चे की तीसरे पहर की नींद के महत्व को नहीं जानतीं और वे समझती हैं कि यदि तीसरे पहर एक घन्टा बच्चा कम सोवे तो रात्रि को एक घन्टा नियमित समय से पूर्व (अर्थात् यदि दो बजे की जगह तीन बजे सुलाया जावे और ४ बजे की जगह ५ बजे तक सोने दिया जाय) सुला देने से निद्रा पूरी हो जायगी। यह बात साधारण दृष्टि से तो युक्ति युक्त प्रतीत होती है परन्तु अनुभव के सरासर विरुद्ध है क्योंकि इस प्रकार के सुलाने से चार से पांच तक नींद की जगह बेचैनी हो जाती है अर्थात् बजाय लाभ के स्पष्ट हानि होती है।

बच्चे को अकेला ही सुलाना चाहिये। हिंडोले (झूला) में नहीं। परन्तु एक सन्दूक जैसे स्थान में सुलाना चाहिये सन्दूक जैसी चीज़ से यह अभिप्राय है कि एक छोटी चौकी जिसके चारों ओर से किनारे ऊंचे उठे हों ताकि बच्चा गिर न जाय। हिंडोले में जो बच्चे को हुलारा पड़ता रहता है उससे वही रोग होता है जो मनुष्य को जहाज की यात्रा में पीड़ित करता है। इसे अंगरेजी में सी सिकनैस कहते हैं। सन्दूक जैसी स्थिर शय्या पर लिटाने से नींद खूब आयेगी। यदि नींद में खराबी हो तो उसका कारण प्रायः भूख, प्यास, अपचन, कब्ज़ी, जुकाम अधिक आहार और ठण्ढ आदि समझना चाहिये।

कई नीम हकीम तजरबः से कोरी माताएं सुन सुनाकर ही बच्चों के जुकाम

*Child Welfare Mag. (America); Vol. XVIII No. II July 1924, Pages 512.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जुलाम व आंखों से पानी के बहने तथा ग-ठिया की बीमारियों में अफीम का प्रयोग करती हैं। फिर ऐसी भी माताएं हैं जो बच्चे को निद्रा न आने पर सुलाने के लिए अफीम खिलाती हैं। इन अवस्था में बच्चों को कई प्रकार की हानि होती हैं। उदाहरण के तौर पर अफीम के नशे में समय पर रोग का पता न लगना, खून का कम हो जाना, अनावश्यक नशे का लग जाना इत्यादि। योरोपियन देशों में बच्चों को अफीम खिलाना कानूनन मना किया जा रहा है, परन्तु भारत में अफीम के प्रयोग की प्रथा शोचनीय है।

जीवन तथा इस का उद्देश (१)

ले० – श्री डाक्टर राधाकृष्ण जी वी. एस, सी. एम. बी बीएस

भूमिका

प्रत्येक विज्ञान के अनुसार जीवन के उद्देश की भिन्न २ व्याख्या की जा सकती है। जैसे धर्म में यह मुक्ति है, समाज शास्त्र में समाज की उन्नति इत्याद। परन्तु, आज हम ने यह देखना है कि जीवन-विद्या (Biology) में यह उद्देश्य क्या है ?

हम प्रति दिन देखते हैं कि पशु, पक्षी, मनुष्य, उत्पन्न होते हैं और मर जाते हैं। यह अवस्था वनस्पतियों की भी है, क्यों कि यद्यपि वृक्षों की आयु लम्बी है परन्तु उन की भी मृत्यु होती ही रहती है जैसे चने का पौदा धरती में उत्पन्न होता है और कुछ साल के पीछे सूख कर मर जाता है। सब से लम्बी आयु वाला बड़ का वृक्ष है। परन्तु कलकत्ता के वनस्पति उधान (Botanical gardon) में वह भी अब मृत्यु के समीप ही है। इस से स्पष्ट है कि वनस्पति, पशु, पक्षी, मनुष्य इत्यादि का शरीर नाशवान है इस लिये जीवन का उद्देश्य इस अनित्य शरीर का रक्षण तथा पोषण नहीं है क्योंकि उद्देश्य कोई स्थिर और नित्य होना चाहिये।

इतना समझ लेने पर यह अवश्य विचार उठता है कि यदि शरीर संबन्धी उद्देश नहीं है तो फिर शरीर का क्या कार्य है ? इस पर अधिक लिखने की आवश्यक्ता इस लिये नहीं कि यह जानना सुगम ही है कि किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये कुछ साधन भी होने चाहियें। यह हमारा शरीर हम पर इस लिये नहीं ठूंसा गया कि हम इस को पालते पोसते रहें और अन्त में यह अग्नि या धरती मे सिपुर्द हो जाते प्रत्युत यह किसी अन्य उद्देश्य को पूरा करने के लिये ही हमें मिला है अर्थात् एक सहायक पदार्थ या साधन है।

उदेश्य क्या है ? यह जानने के लिये हमें शरीर की उत्पत्ति तथा रचना पर कुछ विचार करना पड़ेगा। शरीर की उत्पत्ति एक अत्यन्त सूक्ष्म अणु (जिस से केवल सूक्ष्म दर्शन-यंत्र से ही देख सक्ते हैं) से बननी आरंभ होती है। यह अणु माता तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिता के उत्पादक अणुओं के संयोग से बनता और जननी के रक्त से पुष्ट होकर परिपक्व होता है, तथा वृद्धि प्राप्त करता है। इस अणु से शरीर का रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, त्वचा इत्यादि सब अंग बनते हैं और यह अणु स्वयमेव उत्पादक अणु ही रहता है। इस अणु से इसी प्रकार पुनः शरीर उत्पन्न होता है और यह अणु ही रहता हुआ पिता से पुत्र, और पुत्र से पौत्र में चला चलता है। निम्न चित्र इसे स्पष्ट कर देगा:—

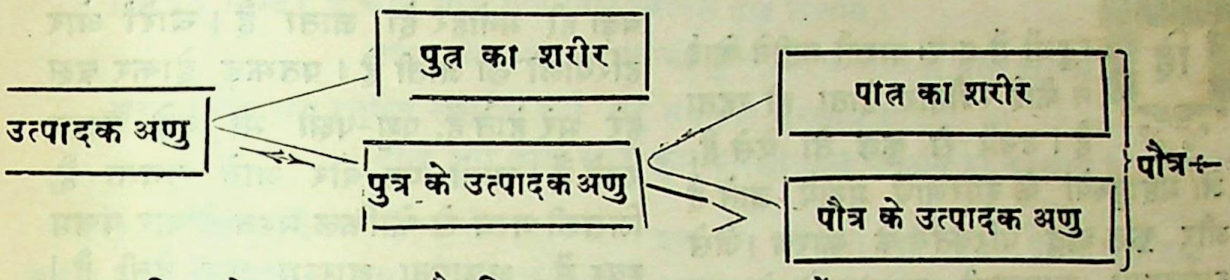

इस चित्र से पता लगता है कि वास्तव में पिता से पुत्र और सन्तान को परम्परा से उत्पादक अणु मिलते हैं और शरीर इन अणुओं की रक्षा तथा पोषण के लिए एक खोल सा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर इन उत्पादक अणुओं की रक्षा तथा पोषण करके और इन्हें सन्तान में पहुंचा कर अर्थात् अपना काम समाप्त करके नष्ट हो जाता है। इस से स्पष्ट है कि शरीर सन्तान उत्पत्ति का एक सहायक या साधन है और सन्तान उत्पत्ति ही लक्ष्य है। उद्देश्य स्थिर होना चाहिये और यह अणु नित्य है। अतः जीवन का उद्देश्य जीवन विद्या के अनुसार सन्तान उत्पत्ति है।

यह परिणाम इस लिये ठीक है कि जब हम सब जीवित वनस्पति तथा जन्तुओं के शरीर की रचना की तुलनात्मक निरीक्षण करते हैं तो यही सिद्धांत उन में भी पाया जाता है (जिनकी युक्तियां यहां देना उचित प्रतीत नहीं होता)

उपरोक्त वर्णन से निम्न बातों का पता लगता है:—

१. जीवन का उद्देश्य सन्तान उत्पत्ति है।
२. इस उद्देश्य के पूरा करने में निम्न साधन हैं:—

क माता तथा पिता का शरीर जिन से जिन से अणु मिलते हैं।

ख किसी व्यक्ति का अपना शरीर जो अणुओं का रक्षक, पोषक तथा वाहक है।

यह उद्देश्य ऐसा है जो भली तथा बुरी प्रकार दोनों रीतियों से पूरा होता है और कौन नहीं जानता कि उत्तम रीति से पूरा होना बुरी रीति की अपेक्षा सर्वथा और सर्वदा अच्छा है। अतः उत्तम सन्तानके लिये निम्न अवस्थायें होनी चाहियें:—

१. माता तथा पिता का उत्तम शरीर।
२ व्यक्ति का अपना उत्तम शरीर।
३. उत्तम उत्पादक अणु।
१. वंश की उत्तम अर्थात् शारीरिक अवस्था के लिए वंशीय स्वास्थवृत (Racial Hygiene) का ज्ञान हो चाहिये तथा
२. अपने शरीर के लिये वैयक्तिक तथा गृह स्वास्थवृत (Personal and Domestic Hygiene) का और
३. उत्तम उत्पादक अणुओं के लिये ब्रह्मचर्य तथा उत्तम आचार और विचार के सिद्धांत पता होने चाहियें।

(क्रमशः)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बसन्त-वर्णन

लेखिका—श्रीमती सरलादेवी विदुषी "विशारदा

हिन्दुओं में प्रायः बारहों महीने कोई न कोई त्यौहार होता ही रहता है। उनमें से कुछ तो ऐसे हैं, जो महापुरुषों के स्मरणार्थ मनाये जाते हैं और कुछ ऋतु परिवर्तन के कारण। जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी, दयानन्द बोधोत्सव, होली, दिवाली और बसन्त अधिकांश ऋतु परिवर्तन के समय ही मनाये जाते हैं। इन में से मैं बसन्त पर ही कुछ लिखूंगी। माघ सुदी ५ का नाम 'बसन्त पंचमी' या 'श्री पंचमी' है। इसी दिन से बसन्त का आरम्भ माना जाता है। इस ऋतु में प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोहर हो जाता है। चारों ओर हरियाली छा जाती है। पतझड़ होकर वृक्ष हरे भरे होते हैं, पशु-पक्षी भी बड़े प्रसन्न रहते हैं। आमों पर बौर आने लगता है, जिसकी गन्ध से कोकिल मस्त होकर पंचम स्वर में अलापना आरम्भ कर देती है। सरोवर में कमल खिलते और उन पर भौंरे गुनगुनाते हैं। वायु पुष्प-पराग से सुगन्धित हो जाता है, सूर्य्य उत्तरायण-पथ का पथिक बन जाता है। दिन बढ़ने और रात घटने लगती है। पं० रामचन्द्र जी शुक्ल ने बसन्त का वर्णन बड़ा ही अच्छा किया है:—

बन बाग तड़ाग लसैं चहुं ओर ।
लसैं नव-पल्लव सों लहरैं लहि कै तरु मन्द समीर झकोर ॥
कहूँ नव-किंशुक जाल सों लाल लखात घने बनखंड के छोर ।
परैं जहँ खेत सुनात तहां श्रमलीन किसानन को कल रोर ॥
लिपे खरिहानन में सुथरे पथ पार पयार के दूह लखात ।
मढ़े नव-मंजुल मौरन सों सहकार न आँगन मांहि समात ॥
भरी छबि सों छलकाय रहे मृदु सौरभ लै बगरावत बात ।
चरैं बहु ढोर कछारन में जहं गावत ग्वाल नचावत गात ॥
लदे कलियान औ फूलन सों कचनार रहे कहुं डार नवाय ।
भरो जहँ नीर धरा रस भीजि कै दीनी है दूब की गोट चढ़ाय ॥
रह्यो कलगान विहंगन को अति मोद भरो चहुं ओर सों आय ।
कढ़ैं लघु जन्तु अनेक भगैं पुनि पास की झाड़िन को झहराय ॥
डोलत हैं बहु भृङ्ग पतंग सरीसृप मंगल मोद मनाय ।
भागत झाड़िन सों कढ़ि तीतर पास कहूँ कछु आहट पाय ॥
बागन के फल पै कहुं कीर हैं भागत चौंच चलाय चलाय ।
धावत हैं धरिबे हित कीटन चाष घनी चित चाह चढ़ाय ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूकि उठै कबहूं कल कंठ सों कोकिल कानन में रस नाय।
गीध गिरैं छिति पै कछु देखत, चील रहीं नभ में मंडराय॥
श्यामल रेख धरे तन पै इत सों उत दौरि कै जाति गिलाय।
निर्मल ताल के तीर कहूँ बक बैठे हैं मीन पै ध्यान लगाय॥
चित्रित मन्दिर पै चढ़ि मोर रह्यो निज चित्रित पंख दिखाय।
ब्याह के बाजन बाजन की धुनि दूरि के गाँव में देति सुनाय॥
वस्तुन सो सब शान्ति समृद्धि रही बहु रूपन में दरसाय।
देखि इतो सुख साज कुमार रह्यो हिय में अति ही हरखाय॥

इस से सिद्ध होता है प्राचीन काल में भारत भूमि में यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया जाता था। उस समय देश धन-धान्य, सुख-समृद्धि सम्पन्न था। व्यापार और कलाकौशल की अच्छी उन्नति थी, संसार के बाज़ारों में भारत का माल दिखाई देता था, हर प्रकार से निश्चिन्तता थी। इस अवसर पर ऋषि एक बड़ा यज्ञ किया करते थे, उस में नवान्नों की तैयारी पर प्रसन्नता प्रदर्शित की जाती थी। यज्ञ से वायु शुद्ध होता और ऋतु बदलने के कारण होने वाले रोगों की निवृत्ति हो जाती थी। तत्कालीन राजा प्रजा के साथ मिलकर ऐसे उत्सव मनाते थे, उदाहरणतः चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में 'चन्द्रिकोत्सव' विशेष रूप से मनाया जाता था। नगर में बन्दनवार और चन्दोवे बांधे जाते थे, हाथी घोड़े रथादि सजाये जाते। एक बार नीतिज्ञ चाणक्य के चातुर्य से नहीं मनाया गया था, उस के लिए निम्न लिखित शब्दों में दुःख प्रकाश किया गया थाः—

गज रथ बाजि सजे नहीं, बंधीं न बन्दनवार।
तने वितान न कहुँ नगर, रंजित कहूं न द्वार॥
नरनारी डोलत न कहुं फूल माल गल डार।
नृत्य वाद धुनि गीत नहिं, सुनिय श्रवण मंझार॥

महाकवि कालिदास के समय में बसन्तोत्सव मनाने की प्रथा प्रचलित थीः—

इस में कामदेव की पूजा होती थी, उस समय भारत में स्वराज्य प्राप्त था, नर-नारियों के मानस में नयी २ उमंगे तरंगित होती थीं, किन्तु आज कल भूखे भारत की यह बात नहीं है। अब न खाने को अन्न है और न पहिनने को वस्त्र। फिर भला वसन्तोत्सव कहां? भारत के लगभग आधे मनुष्यों को पेट भर अन्न भी नहीं जुड़ता और करोड़ों जन भूखों मरते हैं। विलियम डिग्बी ने लिखा है "चार करोड़ भारतवासियों को पेट भर अन्न न मिलने का बहुत पुराना रोग है, वे जनवरी से दिसम्बर तक नहीं जानते कि पेट भर भोजन किस चिड़िया का नाम है उन की दाह नहीं बुझती, उनकी भूख का कीड़ा नहीं, मरता"। आगे मि० ग्रियर्सन कहते हैं- "ज़िला गया में क़रीब २ सब मज़दूरों को और १० फी सदी काश्तकार या कुल ४५ फ़ीसदी मनुष्यों को पेट भर अन्न और ठीक वस्त्र नहीं मिलता। गया के ज़िले में कोई ख़ास त्रुटि नहीं है जो हालत गया के मजदूरों की है वही समस्त भारत की है इस हिसाब से यह सिद्ध हुआ कि १० करोड़ भारतवासी भूखों मरते हैं"। भारतीयों की दैनिक आमदनी की औसत प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन की दो पैसे होती है। यहां १० वर्ष में लगभग दो करोड़ जन अकाल से मर गये। और पचास लाख भीख मांगने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाले हैं, विलायत में यदि कोई भीख माँगे तो उस को दण्ड मिलता है, अमेरिका में बिना ३००) दिखाये कोई जहाज़ से उस भूमि में पैर नहीं रख सकता, क्योंकि कहीं वह भीख न मांगने लगे, और देशों में काम करने वाले नहीं मिलते, किन्तु भारत में हजारों की संख्या में बेगारी मिलते हैं। जब खाने पहिनने को ही धन नहीं, तो फिर अब उत्सव ही कहां से मनाये जा सकते हैं? भूखों तो भक्ति भी नहीं हो सकती?

भूखे भक्ति न होय गुपाला।
यह लो अपनी कंठी माला॥

आज यहाँ यह कहने वाली:—

सरस आम की मंजरी हरितपीत कुछ लाल।
है सर्वस्व बसन्त तू शोभा तुही रसाल॥१॥
प्रथम दरस तेरो भयो मोंहि आज हो आय।
विनवति हौं तू हूजियो ऋतु को मंगलदाय॥२॥

—नारियाँ कहाँ से आवें? इन सूखे मुखों, सूखी हड्डियों और सूखे हृदयों में हषन, प्रहसन, मोहन और विकषन कहाँ से हों? हाँ मूर्छन पग पग पर विद्यमान है। आज तो किसी कवि के शब्दों में यही कहना पड़ता है:—

हाय! हम कैसे बसन्त मनावें।

हारसिंगार उजार भये हैं, ढाकहु ना पतियावें।
जरमन रंग कुरंग भयो है, रंग कहाँ से लावें॥
वैर विरोध परस्पर फैल्यो अरि सम घात लगावें
कैसे गले खुलि के हम मिलि हैं सोच
संकोच सतावें॥

भूखे भगति न होय गुपाला राग रंगकस भावें,
पिपराई सगरे तन छाई क्यों पट पीत रंगावें
चुकत न देश दुःख अब रोये मनको काहि सुनावें
रोवत रोवत गरि परि आयो मधुर गीत-
किमि गावें॥

हृदय से

अरे हृदय! तुम आज दुःखी हो, क्यों इतने रोते हो।
क्या वियोग से दुखी हुए हो, क्यों अधीर होते हो॥
सुखद मिलन के समय कहो क्यों, हर्ष मुदित हो जाते?
इस रोने हंसने में क्या तुम, मजा हृदय हो पाते॥

—धर्म्मचन्द खेमका "चन्द्र" रंगून

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभ्यता को सम्बोधन

ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, सम्पादक "अलङ्कार"

हे पिशाचिनी! मैं तेरे रक्त-रञ्जित नखाग्रों को देखकर दुखी हो रहा हूं और तुझे दूर से घृणा भरी आंखों से देख रहा हूँ। मैं समझता था कि यह संसार मनुष्य की भोग्य वस्तु है, परन्तु हे सभ्यते! तूने मेरे विश्वास को तोड़ दिया है। जब से तेरा मनहूस मुख देखा है तब से जगत के सार-मनुष्य-का निरन्तर तिरस्कार हो रहा है, उसे हरेक कोने से अर्ध-चन्द्र देकर धकेला जा रहा है। तेरे आने से पहले मेरे प्यारे भारत के गाँव आबाद थे, जहां तहां पुरुष, स्त्री और बच्चे बसन्ती खेतों में घूमते दिखाई देते थे; मेरे देश के गांवों में रौनक थी, उन में रहने को जी करता था। परन्तु हे रौद्ररूपे! आज तेरे प्रवेश के अनन्तर मुझे गावों के गाँव खाली, सुनसान दिखाई दे रहे हैं। जो दो चार मूर्तियां झोंपड़ियों में बैठी हैं वे भूखी हैं, नङ्गी हैं, गृह शून्य हैं! मैंने पूछा ये आबाद घर क्यों बरबाद हो गए? यहां रहने वाले कहां उजड़ गए? पता चला कि उन्हें तेरी रक्त-पिपासा को बुझाने के लिए बलिदान का बकरा बनाकर तेरे उन मन्दिरों में पहुंचा दिया गया है जिन्हें 'शहर' के नाम से पुकारा जाता है। हे मनुष्य-द्राहिणी! तेरी मानव समाज के प्रति भयङ्कर शत्रुता है। तूने मनुष्य का रुधिरपान करने के लिये कल्पना-देवी' को भी लजा देने वाले उपायों का अवलम्बन किया है। तेरे 'शहर' नाम-धारी मन्दिरों में तेरी अनेक मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। ओह! कैसा डरावना चेहरा है! पुराणों के राक्षस और राक्षसियां भी तेरी तुलना में देव और देवियां जान पड़ते हैं। सैकड़ों फीट लम्बे तेरे मुख से घण्टों तक काला ही काला धुआं निकला करता है। हे विकराल स्वरूपे! तेरा पेट ही बूचड़खाना है। तू जीते ही बलि-पशु को अपनी विशाल उदर-दरीमें हड़प कर लेती है। अन्दर पहुंच कर वह न मरता ही है, न जीता ही है;—क्या क्रूरता की सीमा इससे भी परे जा सकती है?

* * * *

हे सभ्यते! तेरा मनुष्य से इतना द्रोह! कभी २ ऐसा मालूम पड़ने लगता है कि तू मनुष्य को सर्वथा निर्वासित करके ही दम लेगी! मैं तो पढ़कर आया था कि मनुष्य 'भोक्ता' है, प्रकृति का राजा है, प्रकृति मनुष्य के लिये है, यहाँ आकर यह देखा कि तूने उसे अपना 'भोग्य' बना लिया है, अपनी बेजान मशीन का पुर्ज़ा बना लिया है! आज मनुष्य के लिए कुछ नहीं, मनुष्य किसी के लिये, शायद तेरे लिए, जीता मालूम देता है। यह सम्पूर्ण विश्व का वैभव, हे डायिन! तू ने अपने लिये रोक रखा है। तू 'मनुष्य' को अपने शब्द-कोष में से मसलकर मिटा डालने की कोशिश कर रही है। मनुष्य की जहां २ जरूरत थी, वहां २ से तूने उसे हटा दिया है। मनुष्य कपड़ा बुनता था, अब तू उसके बगैर ही बुनने लगी है; मनुष्य खेती करता था अब तू यह काम भी उससे छीन रही है; मनुष्य अपनी कारीगरी से छोटी मोटी चीजें बनाता था, तू ने वह काम भी संभाल लिया है। संसार की प्रत्येक घटना से तू मनुष्य के हाथ को अलहदा करती चली जा रही है। सजीव मनुष्य के स्थान पर अपने निर्जीव प्रतिनिधि खड़े करने में तुझे आशा-तीत सफलता प्राप्त हो रही है। तूने मनुष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर ऐसा नशा सवार कर दिया है कि वह अपने इस 'पराजय' की अवस्था को 'विजय' के नाम से पुकार रहा है! क्या यह मनुष्य की विजय है वा तेरी?—ओह! डूबने के अन्तिम क्षण में भी अफीमची अपने को तैरता हुआ समझ रहा है! क्या नशा इस से भी अधिक चढ़ सकता है? अरे मूर्ख मनुष्य! 'प्रकृति पर विजय' पाने की डींग मारना छोड़ दे। तू तो दिनों दिन पीछे ही कदम रखता चला जा रहा है। सारा मैदान तेरे हाथ से छिन गया है। आंखें रखते हुये भी अन्धे! इसी को तू अपनी विजय समझ रहा है?

* * * *

'प्रकृति पर विजय' अहा! कैसे मधुर शब्द हैं। समुद्र-मन्थन का सार 'अमृत' था। वर्तमान-सभ्यता का चिर-प्रतीक्षित मृदु फल यह 'प्रकृति विजय' है! परन्तु इस 'प्रकृति-विजय' के मोहन रूप पर से कभी पर्दा उठा कर भी देखा है? हे सभ्यता पिशाचिनी! तेरे मोह-जाल में फंसकर मानव-जगत उलझ रहा है। संसार के त्राण के लिये, धर्म के संरक्षण के लिये तेरे यथार्थ स्वरूप को प्रकट करता हूं, ज़रा पर्दा उठा कर तेरी शक्ल दुनियां को दिखाता हूँ, दुःख मत मानना!!

* * * *

शिमले की ऊंची चोटी पर सैकड़ों मजदूर एक विशाल-भवन के निर्माण करने में लगे हुए हैं। इसे बनाने में दस साल बीत चुके हैं। कहते हैं, यह एक राजा का महल बन रहा है। इस राजा की लाखों रुपया महीना निजू आमदनी है। राजा जब से गद्दी नशीन हुआ है तभी से बीमार रहता है। उसका मेदा कमज़ोर है, हाज़मा ठीक नहीं, आंखें काम नहीं देतीं; चलता मुशकिल से है। उसके राज्य में बीसियों का खून चूसा जाता है, पचासों को भूखा मारा जाता है, सैकड़ों को बेगार में पकड़ा जाता है, हज़ारों पर जुल्म किया जाता है और यह सब इस लिये कि यह जिन्दा मुर्दार शिमले की ठण्ढी हवा में इस जमीन के ऊपर कुछ अधिक दिन तक अपने बोझ को कायम रख सके। राजा का विशाल-भवन बन रहा है, बड़ा सुन्दर है, परन्तु इस भवन की गहरी खुदी हुई नीवों में गरीबों के खून के कतरे गिर चुके हैं। इसकी चमकीली सफेद दीवारों के पीछे छिपी एक२ ईट में मकान के स्वामी के पाप देह-धारण कर सदा के लिये बैठ चुके हैं। बदसूरत औरत, मन लुभावने वस्त्र तथा आभूषण पहनकर अपने पर रीझ रही है! लाखों को भुलाकर, ओह! उन किसानों को बिलकुल भुलाकर जिनके मुखों से दाना २ छीन कर यह महल खड़ा किया जा रहा है, शिमले की इस ऊंची चोटी पर 'प्रकृति के विजय' की गगन-भेदी दुन्दुभि पिट रही है। अरे मूर्ख मनुष्य! यह तेरा विजय नहीं यह तो तेरा पराजय है। देख! जिन के अंगों में बल है, जो जीवित है, उन के सामने से षटरस सम्पन्न भोजन की थाली को उठा लिया गया है। जो भोग नहीं सकते, जीते हुये भी मुर्दा हैं उनके चरणों में विश्व की श्री लोट पोट हो रही है। हे मायाविनी! तू परले दर्जे की छलिन है। मनुष्य की अन्तरात्मा का कतरा २ तूने सोख लिया है। अब इस अधमरे के इर्द-गिर्द तू ने ब्रह्मांड के चमत्कारों को लाकर ढेर कर दिया है। अरी! इसकी आत्मशक्ति को तो तू पी गई। इन चमत्कारों को लेकर यह क्या करेगा?—परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! पिसे हुवों को पीसने के इस महाघोर पाप को 'प्रकृति पर विजय'

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का नाम दिया जाता है। मायाविनी सभ्यते! तेरे बिकराल-स्वरूप की यह पहली झाँकी है

* * *

भारत के प्राय सभी वाइसराय, व्यक्ति रूप से, कोमल और दयालु हृदय के रहे हैं। सुनते हैं कि लार्ड हार्डिञ्ज को जब दिल्ली में बम्ब लगा था तब कुछ राजभक्तों ने म्यान में से तलवारें खींच वाइसराय के चरणों पर रख कर कहा था कि आज्ञा हो तो इसी क्षण दिल्ली को वीरान कर दिया जाय। असह्य वेदना से पीड़ित लार्ड हार्डिञ्ज के जिस हृदय से 'आह' तक नहीं निकली थी उस में इस बात को सुनकर पीड़ा उत्पन्न होने लगी। उसका हृदय कोमल था, वह अपने लिये निरपराधियों का खून बहता हुआ नहीं देख सकता था। परन्तु हे बज्र हृदय सभ्यते! तेरे चुङ्गल में फंसकर लार्ड हार्डिञ्ज पांच वर्ष तक लगातार भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों में कसने का प्राणपन से यत्न करता रहा। लार्ड चैम्सफौर्ड बड़ा अच्छा आदमी था। उसके वैय्यक्तिक जीवन पर कौन दाग लगा सकता है? परन्तु हे सभ्यते! उसी तेरे लाडले पुत्र के शासन काल मे निहत्थों को इस तरह भून दिया गया जिस प्रकार चनों को भाड़ में भून दिया जाता है लार्ड रीडिंग न्याय की पताकाएं फहराता हुआ इस देश में पहुंचा परन्तु हे कलङ्किनी! तेरे सहवास से वह भी अपने माथे पर कलङ्क का टीका लगा कर ही यहां से वापिस हुआ! क्या व्यक्ति रूप से तीनों में कोई एक भी बुरा आदमी था? नहीं! परन्तु हे मनुष्यत्वापहारिणी सभ्यते! तूने इन्हें छूते ही मनुष्य न रहने दिया; तूने अपनी माया से इन्हें एक दम अपनी मशीन का पुर्ज़ा बना लिया। यही लोग जो अपने देश को पराये हाथों देख सिर के बाल नोंच २ कर पागल हो जाते, अपने देश में दूसरों को पैर पसारते देख उन्हें चोर या लुटेरा कहते और उनके पञ्जे से देश को छुड़ाये बगैर चैन तक न लेते, हे सभ्यते! बतला, क्या ये बड़े २ राजनीति धुरन्धर तुझे ही परमेश्वर मान कर मेरे देश की लूट में मजे से सब से बड़ा हिस्सा नहीं लेते रहे? हे गर्हितकृत्ये! तुझ में कोई ऐसा काला-जादू मालूम पड़ता है जिस से तू अच्छे से अच्छे व्यक्ति को बुरे से बुरा और कोमल से कोमल को कठोर से कठोर बना देती है। क्या मैं नहीं जानता कि दुनियां भर की क्रूर से क्रूर सरकारें नर्म से नर्म दिल वाले व्यक्तियों के समुदायों से बनी हुई हैं? ओह! क्या अन्धेर है! मनुष्य जो कुछ नहीं चाहता वही उसे करना पड़ता है। हृदय में प्रेम का समुद्र उमड़ते हुए भी हाथ से तलवार चलानी पड़ती है, दिल में खून के आंसू बहाते हुए भी होंठ खोल कर ज़बरदस्ती हंसना पड़ता है! हे क्रूरे! यह सब कुछ इस सत्वशून्य मनुष्य को इस लिये करना पड़ता है क्योंकि तू उसे खोखला बना गई है, उसके आत्मा को चाट गई है! हाय! इतना अत्याचार!!-परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! इसी घोरतम पाप को, इसी आत्महत्या को, 'प्रकृति पर विजय, का नाम दिया जाता है। अत्याचारिणी सभ्यते! तेरे विकराल स्वरूप की यह दूसरी झांकी है!!

* * *

सजे हुए बाज़ार कैसे सुन्दर प्रतीत होते हैं। मेलों के समय सारे शहर की दुकानें संसार के ऐश्वर्य से भरी हुई दिखाई देती हैं। एक २ वस्तु दर्शक को बांध कर खड़ा कर लेती है। परन्तु हे आडम्बर प्रिये! मैंने इन चमकीली चीजों के परमाणु परमाणु में प्रविष्ट होकर तेरा दिल दहलाने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वाला स्वरूप देखा है। ये बाजार नहीं, जूआ घर हैं; ये दुकानें नहीं, जुआरियों के अड्डे हैं। यहां पर बैठे हुए ये दुकानदार पले दर्जे के ठग हैं। एक ग़रीब मजदूर दिन भर पसीना बहा कर कमाई के चार आने गांठ में बान्धे हुए जब बाज़ार में से निकल जाता है तब इन सैकड़ों लखपतियों के महा-मस्तिष्क उस बेचारे के चार आने खींच निकाल कर अपनी २ जेब में रख लेने की विकट समस्या को हल करने में जुट जाते हैं। पैसे २ को जूए में जीतकर, पाई २ को ठगकर, कौड़ी २ का डाका मार कर ही तो इन्हों ने अपनी हवेली को खड़ा किया है; व्यापार इसी का तो नाम है, वे चौबीसों घण्टे इस ताक में न बैठे रहें तो क्या करें? क्या इन व्यापारियों, सेठों, साहूकारों में जीवन को सरस बना देने वाली वह चीज़ नहीं जिसे 'दिल' कहते हैं? ग़रीबों की तीखी 'आह' का बाण इन के सीनों में दर्द पैदा नहीं करता, क्या दिन-रात के इस जुए से, इस लूट से ये सुख की करवट सोते हैं? ओह! इन में दिल न होता तो ये अपने तुतलाते बच्चे को गोद में उठा कर न चूमते, इन के सीने में दर्द की जगह न होती तो खुद मुसीबत में पड़ कर न कराहते, रात को सुख की नींदे सोते होते तो दिन को इतना न बुड़ बुड़ाते! परन्तु क्या करें, हे सभ्यता पिशाचिनी! तेरे फन्दे में फंस कर ये बेचारे निर्जीव हो जाते हैं, तेरी मशीन के पुर्जे बन जाते हैं। तू अपने चञ्चल शृङ्गार से भोले मनुष्य की 'आत्मा' को चुरा लेने में सिद्ध-हस्त है। यह मूर्ख तेरी चालों में आकर अपनी प्रियतम वस्तु को, अपनेपनको, तेरे चरणों में समर्पित कर देता है। तूने मनुष्य के अमूल्य रत्न को लूट लिया है। यह मूढ़ तेरे लगाये मट्टी के ढेर को अपनी सम्पत्ति समझ रहा है और उस की रक्षा के लिये अपने सगे भाई के गले पर तेज़ छुरी लिये खड़ा है। हे वज्र-हृदये! यह सब तेरा ही किया हुआ है,-- परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! इसी घोरतम दासता को, इसी आत्म-विक्रय को 'प्रकृति पर विजय' का नाम दिया जाता है। हे सत्यानासिनी सभ्यते! तेरे कुत्सित स्वरूप की यह तीसरी झाँकी है!!

* *

मैंने बड़े २ विद्वानों को देखा। उन का दिमाग़ क्या था, एक ख़ासा पुस्तकालय था। हर समय यही बोला करते थे, 'इस पुस्तक में यह लिखा है, उस पुस्तक में वह लिखा है'। उनके दिमाग़ पर से किताबों के भारी बोझ को उठा कर मैंने अलहदा रख दिया तो उन्हें नख से शिख तक कोरा पाया। उनके 'जीवन' पर उन की 'विद्या' की कोई छाप न देखी। कई ऐसे मिले जिन्हों ने दिमाग़ को भी किसी तरह की तकलीफ़ नहीं दी थी। उन से जो कुछ पूछो उसी के लिये किसी 'लायब्रेरी' को दौड़ने लगते! किताब बन्द करदी तो दिमाग़ बन्द होगया, किताब गुम गई तो दिमाग़ गुम होगया, किताब जल गई तो दिमाग़ जल गया! किताबों के बगैर उन के दिमाग़ की कोई गति ही नहीं। ऐसे भी देखे जो छपी हुई चीज़ को परमात्मा समझते थे। छपा हुआ कुछ मिल जाना चाहिये, उनकी अकड़ को तोड़ने के लिये वह काफ़ी है! ऐसे अन्धे-सुझाखों को चकमा देने के लिये छापे खानों को बढ़ते देखा, अख़बारों को मिंजाइयों की तरह जन्मते देखा, किताबों के धड़ाधड़ ढेर लगते देखा। हे सभ्यता पिशाचिनी! तू मनुष्य की आंखों में किस कदर धूल झोंक रहा है। अपने चारों तरफ लगे हुए अख़बारों और किताबों के पहाड़ को देख कर यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नादान मनुष्य अपनी विद्वत्ता पर नाचने लगता है परन्तु हे मायाविनी! उसे क्या मालूम कि यही अखबारों और किताबों के ढेर उसकी मूर्खता के प्रतिबिम्ब हैं, उसी के उत्पन्न किये कूड़े-कर्कट के ढेर हैं। हे दुष्टे! तूने विद्यादेवी का खून किया है, तेरे हाथ 'सरस्वती' के रुधिर से रंगे हुए हैं, परन्तु फिर भी इस मूर्ख मनुष्य का मस्तक तेरी आराधना में झुका हुआ है। तूने 'ज्ञान' का नाश करके पुस्तकालय, वाचनालय और छापेखाने खोल दिये हैं, 'सौन्दर्य' का मुंह काला करके पाऊडरों और लैवेन्डरों की पूजा चलादी है, 'प्रेम' का मीठा रस निचोड़ कर उसे विलासियों के हाथ का खिलौना बना दिया है, 'संगीत' का गला घोंट कर ग्रामोफोन, थियेटर और सिनेमा को जगह देदी है, 'प्रकृति' को अजायब घर और चिड़ियाघर में कैद कर दिया है, 'धर्म' को मन्दिर, मस्जिद और गिर्जे में बेड़ी पहना कर बैठाल दिया है! हाय! आज मैं इस दुनियाँ में जीवन को ढूंढ रहा हूं, आत्मा की खोज कर रहा हूं, परन्तु मुझे मृत्यु के अतिरिक्त अन्य कुछ दिखाई नहीं देता। चारों तरफ मृत्यु का ताण्डव-नृत्य होरहा है, लाशों का ढ़ेर लगा हुआ है, ससार एक विशाल श्मशान बना हुआ है! हे चाण्डालिनी सभ्यते! यह सब तेरा ही किया हुआ है,—परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! हे मूर्ख मनुष्य! इसी अपने सर्वस्व-संहार को तू 'प्रकृति पर विजय' के नाम से पुकारता है? सभ्यते! तेरे रौद्र रूप की यह चौथी झाँकी है!!

* * *

हे सभ्यते! मुझे बड़े २ मकानों से द्वेष नहीं, मैं शासन-व्यवस्था को घृणा की दृष्टि से नहीं देखता, बाज़ारों की चमचमाहट मेरे हृदय को नहीं दुखाती, पुस्तकों का बढ़ना मुझे अशान्त नहीं करता; मैं तो आहें इस लिये भर रहा हूँ क्योंकि ये सब कार्य मुझे खोखले दिखाई दे रहे हैं। तू बाहर की धनी है, अन्दर की निर्धन। तेरी रचना में ढोल की आवाज़ सुनाई देती है वीणा की मीठी झन्कार नहीं; ईंट और पत्थरों का निस्सार संग्रह दिखाई देता है, मोतियों की मृदुमाला नहीं; योजनों लम्बी सड़ी हुई लोथ मालूम पड़ती है, अविनश्वर अदृश्य आत्मा नहीं; राशि बहुत है मात्रा नहीं। कोमल हृदय के अनेक मनुष्यों के मिलने से संसार में कोमलता की वृद्धि होनी चाहिये थी परन्तु सभ्यते! तेरे राज्य में मनुष्य जितने मिलते हैं उतना ही मनुष्यता के ऊंचे आदर्शों से अपने को खाली पाते हैं। व्यक्ति रूप से जो मनुष्य की मूर्ति होते हैं, मिल कर वे ही अन्याय तथा अत्याचार के अवतार बन जाते हैं, जिन के हृदय में दया का समुद्र उमड़ पड़ता है, तेरे सूखे समाज के सगठन में आकर वेही नृशंसता के स्वरूप बन जाते हैं। बहुत से मनुष्यों के मिलने से 'मनुष्य-समाज' बनना चाहिये परन्तु आज बहुत से 'मनुष्य' जब मिलते हैं तो तेरे जादू से 'पशु' बन जाते हैं। लोक में दो और दो मिल कर चार हुआ करते हैं परन्तु तेरे राज्य में दो मिल कर शून्य हो जाते हैं। सभ्यते! तेरा राज्य जितना बढ़ता जारहा है, मनुष्य उतना ही लुटा जा रहा है, भिखारी बन रहा है, अपने अमूल्य रत्नों को खो रहा है! हे विकराल रूपे! तेरे इस भयंकर स्वरूप को देख कर मानव समाज का हृदय धक् २ हो रहा है, उसका आशा-सूर्य निराशा के घनघोर बादलों में डूबा जा रहा है। कहते हैं, कृष्ण भगवान् ने अर्जुन को अपने नाना रूप दिखाकर विस्मित कर दिया था; आज मैंने भी धर्म की ग्लानि तथा अधर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का अभ्युत्थान होते देख कर साधुओं के परित्राण तथा सभ्यता पिशाचिनी का विनाश करने के लिये उसके महारौद्र रूप की केवल चार झांकियों को प्रगट किया है। हे शोणित प्रिये! तेरे रक्त-रञ्जित हाथों को देख कर सारा मानव समाज आज दुःखी हो रहा है और तुझे दूर से घृणाभरी आँखों से देख रहा है!!

* * *

जब मैं सोचता हूँ कि सभ्यता पिशाचिनी का बहिष्कार किस प्रकार हो तो मेरा ध्यान एक दम अपने परम पावन देश की मातृशक्ति की तरफ खिंच जाता है। जिस प्रकार सूखे खेत को शुद्ध जल की धारा लहलहा देती है, जिस प्रकार जेठ-हाड़ की कड़ी गर्मी को मलयानल मन्द २ झोंकों से शान्त कर देता है, जिस प्रकार धीमे २ प्रकाश दे रही दिये की बत्ती को घी की दो बूंदें जगा देती है, जिस प्रकार मशीन की कर्कश रगड़ को तेल का स्नेह बन्द कर देता है, उसी प्रकार मातृ-शक्ति का जादू खोखलेपन को भर देता है, शुष्क नीरस संसार को हरा भरा बना देता है, जीवन को नया रूप दे देता है। हे मातृशक्ति! तू सचमुच अन्दर की धनी है। तू वीणा की मधुर झन्कार है, मोतियों की मञ्जु माला है, अविनश्वर अदृश्य आत्मा है! दया की देवि! विधाता ने तेरा लावण्यभरा शरीर—निःस्वार्थ भाव, प्रेम, न्याय, परोपकार, सहिष्णुता के चुने चुने परमाणुओं से बनाया है,—तू ही अपने कोमल करों से विश्व के सूक्ष्म आत्म-सूत्र को जीवन की बारीक सुई में पिरो सकती है। यह जीवन तुझ से शुरू होता है, तेरी गोद में पलता है, तेरे कर-कमलों की छाया में बड़ा होता है, उन्हीं में खेलता है परन्तु फिर जाने कैसे सभ्यता पिशाचिनी के फन्दे में फंस कर तेरे बगीचे में लगी आत्म-बीज की कोमल २ कोपलों को-सत्य को, न्याय को, प्रेम को, दया को-अपने पावों तले कुचलने लगता है। हे देवि! अपने पुत्र की सुधि लो, अपने प्रेम के चुम्बक से इसे अपनी ओर खींच कर अपनी छाती से लगा लो। मैं तुम्हारे पुराने इतिहास को याद कर अपने देश के भाग्याकाश की ओर नज़र उठा कर देखता हूं और घनेघने बादलों को धीरे २ हटते देख रहा हूँ। अनेकों वार तुमने सभ्यता पिशाचिनी के 'आत्म-तत्व' पर होते हमलों को वीरता से रोका है। हे मातृशक्ति! सीता का रूप धारण कर तुम ने रावणकार में परिणत दानव-शक्ति का संहार किया था, द्रौपदी के शरीर में आकर तुमने दुष्ट दुर्योधन में अवतरित असुरता का वंशोच्छेद किया था, कलियुग में 'सभ्यता' का सौभाग्य नाम धारण करने वाली उसी पिशाचिनी को क्या तुम ऐसे ही छोड़ दोगी? मुझे पुरुषों में विश्वास नहीं रहा। पुरुषों ने ही तो अपने को सभ्यता के हाथों में बेच दिया है—पुरुषों ने हा तो 'आत्म-तत्व' का तिरस्कार किया है! हे परम पुनीत भारतदेश-की मातृशक्ति! तुम सृष्टि-सृजन-हारे परमात्मदेव की एकमात्र प्रतिनिधि हो, नव-जीवन का सन्देस लाने वाली दूतिनी हो, उषःकाल के बाल-सूर्य्य की तमोहन्त्री मीठी किरण हो, मैं अपने देश के कल्याण के लिये तुम्हारा आह्वान करता हूं! देवि! तुम देर से सो रही हो, अपनी असीम शक्तियों को भूली बैठी हो! मोह निद्रा को हटाओ और अपने दैवीय गुणों का भारत के खोखले शरीर में सञ्चार करो। माता के रूप में, पत्नीक के रूप में, बहिन के रूप में--जिस रूप में भी हो भारत के जर्जरित कलेवर को 'आत्म-रस' से भर दो, उसे अन्दर का धनी बनादो!

———

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों का साम्राज्य

लेखिका—श्रीमती विद्यावती सेठ आचार्य्या कन्या गुरुकुल इन्द्रपूस्थ

ओ३म् सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञीश्वश्र्वां भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥

ऋ० मं० १० । अ० ७ । सू० ८५ । मं० ४६

"यद्यपि वह आधिपत्य जमाने में संकोच करती हैं और यद्यपिइस प्रकार की दासत्व शृंखला प्रेम के नवविकसित फूलों से गुंथी हुई भी होती है तथापि-हम चाहे जिस प्रकार इसको छिपाने की कोशिश करें परंतु यह सच है कि स्त्रियां हम पर हमेशः आधिपत्य रखती हैं" (टामसमोर)

"आह ! क्या ही सौभाग्य की बात है कि ये स्त्रियां अपनी शक्तियों को प्रायः करके अधिकतर व्यवहार में नहीं लाती हैं यदि वह अधिक वर्तें तो हम में उन्हें रोकने की शक्ति नहीं है। वह जरा भी इच्छा प्रगट करें बस पुरुष तत्क्षण उनके पैरों पर गिरने लगते हैं, चाहे वह वृद्ध हों या कुरूपा हों सब एक ही बात है। यह मैं यथार्थ सत्य कह रहा हूं। कोई भी देवी जो बिल्कुल कुबड़ी न हो और उसे उचित अवसर मिले तो वह जिसे चाहे वर सक्ती है। हम तो केवल इतना ही धन्यवाद करते हैं कि ये प्रियतमायें खेतहर पशुओं की भांति अपनी शक्ति से परिचित नहीं हैं। यदि वह चाहें तो वह हमें सर्वथा दबा सक्ती हैं।" (थैकरी)

स्त्रियों की शक्ति कैसी विचित्र और अदम्य है। यद्यपि वह लहरों की तरह वह जाने वाली और बदलने वाली होती हैं तथापि वह समुद्र की भाँति शक्तिशालनी हैं। यद्यपि वह शीतल मन्द सुगन्ध वायु की भांति शान्त और नम्र हैं लेकिन वह विकट आँधी की भांति विकराल और दुर्दमनीय भी हैं। कुछ लोग इन देवियों को राजनैतिक अधिकार देने के पक्षपाती हो रहे हैं लेकिन इस क्षेत्र में इनकी जितनी शक्ति में कुछ न्यूनता रह भी गई है वह घरेलू जीवन में जितनी शक्ति यह बर्त लेती हैं उस से पूर्ण हो गई है, नहीं २ वह बढ़कर निकल गई है। लोग यदि स्त्रियों की शक्ति को छिपाना भी चाहें तो वह नहीं छिपा सक्ते क्योंकि वह शुरु से ही संसार में स्वेच्छाचारी सम्राट की शक्ति के समान आधिपत्य जमाये हुये हैं। और डाक्टर जानसन को जब यह कहा गया कि स्त्रियों को मताधिकार दिया जाय तो उन्हों ने इस भाव को बहुत तुच्छ समझ कर इसका निरादर कर दिया क्योंकि उनकी सम्मति में स्त्रियां तो हमेशः से सर्व शक्तिमती हैं। यह सर्वतन्त्र स्वतः-सिद्ध सिद्धान्त है कि "जो पालने को झुलाती है वही संसार पर राज्य करती है" और यह निर्विवाद है किसमग्र संसार के मनुष्य के आचार विचार को बनाने रूप शक्ति किसी न्यायाधीश या मताधिकार प्राप्त सज्जन की शक्ति से कहीं बढ़ कर है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभी काल में पुरुषों ने स्त्रियों के इस आधियत्य को स्वीकार किया है और उस की शक्ति के आगे शिर झुकाया है। क्षत्रिय योद्धा अपनी माता, पत्नी तथा बहिनों और कन्याओं के उत्तेजना पूर्ण मुस्कराहट के समाश्वासन से प्रेरित होकर बिना आगा पीछा सोचे एकाएक रणक्षेत्र में जा कूदते हैं या द्वन्द्व युद्ध के आह्वान को स्वीकार करते हैं। देवी सरस्वती की बीणा का मधुर राग आलापने वाली मानवी कोकिला की उपस्थिति में चारण और भाट अपनी बीणा से वह सुरीला राग निकालते हैं जो कि अन्यथा असम्भव था। कामदेव की पत्नी रति समान देवी के सौन्दर्य को हृदय पटल पर धारण कर कुशल शिल्पी का हृदय उच्च पवित्र मनोवेशों से झंकारित हो जाता है और वह जैसा अनुपम चित्र खचित कर देता है वह अन्य किसी को सन्मुख रख कर करना असम्भव है। स्त्री प्रेम में आसक्त माँझी लोग अपार सागर को मंझा कर युद्धाग्नि को प्रदीप्त करते हैं या बहुत २ दूर देशों से अमूल्य रत्नों को भर कर लाते हैं। इतना ही नहीं। बड़े महान दार्शनिक तत्वों की खोज में लगे हुये जीवन, काल और भाग्य आदि दुर्जेय समस्याओं की सिद्धि में असफल हुये ज्ञानी लोग अपने संतप्त हृदय को स्त्री की मधुर मुस्कयान से प्रशान्त करने में कृतकृत्य हुये हैं। यहां तक कि स्त्री के पवित्र चरित्र और पुण्यतम विनय से वशीभूत आप्त उपदेष्टा लोग धर्म की वेदी पर से ऐसे उच्च भावों को प्रगट करते हैं जोकि अन्यथा बिल्कुल असभव थे। कवि भवभूति उत्तर राम चरित में वर्णन करते हैं कि किस पवित्र भाव से राजर्षि जनक अरुंधती देवी को प्रणाम करते हैं। पाठक जरा शब्दों पर ध्यान दें :-

यया पूतं मन्यो निधिरपि पवित्रस्य महसः।
पतिस्ते पूर्वेषामपि खलु गुरुणां गुरुतमः॥
त्रिलोकी माङ्गल्यामवतितल लीलेन शिरसा।
जगद्वन्द्यां देवी मुषसमिव वन्दे भगवतीम्॥

वह कहते हैं कि उषा के तुल्य आनन्द और प्रकाश देनेवाली त्रिलोक के लिये मंगल दायनी भगवती देवी जो आप हैं जिनके पति बनने से तुम्हारे स्वामी वशिष्ठ जो कि सर्व प्राचीन गुरुओं के भी श्रेष्ठ गुरु हैं और पवित्र ब्रह्म तेज की राशि हैं वह भी अपने को पवित्र मानते हैं उन को मैं पृथ्वी पर शिर झुकाकर प्रणाम करता हूं। देखिये कैसा महत्व है। कैसा गौरव है। क्या इससे बढ़ कर दर्जा किसी प्राणी का हो सकता है?

वास्तव में बात यह है कि पुरुष जाति पर स्त्री जाति का कितना और कैसा आधिपत्य है यह कहना बड़ा मुशकिल है और अत्युक्त दोषारोपण करने का स्थल तक बन जाता है। परन्तु आहा! कैसा शक्तिशाली कैसा स्थायी और कैसा सर्वतन्त्र यह प्रभाव है। उस के मुस्कयान की ज्योत्स्ना में ही वह पलते समृद्धिशाली बनते और एक से एक बढ़ कर कार्य्य कर दिखाते हैं और उसी की भृकुटि चढ़ाने रूप अंधकार में वह सहम कर सूख जाते हैं। देवी स्वरूप माता, पत्नी तथा बहिन व पुत्री की सहायता और सहानुभूति के बिना परमात्मा के सर्वोत्तम पदार्थ भी हमारे लिये तुच्छ बन जाते हैं। यदि पुरुष देवियों के विश्वास पात्र हैं और यथार्थ में बन सके हैं तो वह चाहे निद्रा में भी हों तो भी खतरे से बाहर हैं। किन्तु यदि वह तिरस्कार और लानत के पात्र बन गये हैं तो वह चाहे जितने साव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धान क्यों न बने कभी भी गिरावट से बच नहीं सक्ते। जब उन्हें देवी का सहारा रहता है और वह पुरुषकी ओर आशा लगाती है तो उनमें ही परिश्रम और युद्ध करने की अपूर्व शक्ति प्रादुर्भूत हो जाती है लेकिन यदि वह स्त्री-शक्ति उन से दूर हट कर खड़ी होती है और अलग २ रहती है तो उनका बल तिनके की तरह टूट जाता है चाहे उन्हें संसार के सारे मनुष्य मान्य की दृष्टि से देखें लेकिन उनमें गौरवका संचार नहीं होता लेकिन किसी देवी की दृष्टि में मान पाना दिमाग़ में अद्भुत शक्ति संचार कर देता है। यदि हमारी गृहणियां सच्चरित्रा पतिव्रता हैं तो हमारी जीवनतन्त्री मधुर सुरस स्वर से पूरित हो राग रागिणी आलापती हैं और हमारे जीवन की कालिमा रात्रि में भी तारों की चांदनी रहती ही है किन्तु हाय! यदि वही देवी दुश्चरित्रा हो कर हम से दग़ा करती है जो हमारे सामने सारा संसार नाचने लगता और रौरव नर्क के निविड़ अंधकार में पड़कर हम धक्के खाते और गिरते रहते हैं।

बिना पुरुषों के जाने हुये वह उनके ऊपर आधिपत्य रखती है बिना उनके विशेष इच्छा शक्ति के भी वह उनकी स्वामिनी रहती है। उस के आश्वासन से ही हमारे चिन्ता युक्त जीवन के अरण्य में वसन्त का आगमन होता है और उनकी निराशता के समुद्र में हंसी की तरंगें लहराने लगती हैं।

स्त्रियों की इस शक्ति स्त्रोत के क्या है?

१ पुरुष जातिपर स्त्रियोंकी यह शक्तिमत्त प्रकृति के अन्य तत्वों की भांति-अपने निश्चित नियमों में आवद्ध है। जिसका यदि हम चाहें तो विश्लेषण कर सक्ते हैं। निस्सन्देह सब से प्रारम्भिक स्रोत इसका तो इस बात में है कि परमात्मा ने स्त्री और पुरुष दोनों जातियों में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध बना रखा है। स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर सम्बद्ध युगल हैं। परमात्मा ने उन्हें ऐसा ही बना दिया है अतः वह उसकी इच्छा को बदल नहीं सक्ती। स्त्री पुरुष में परस्पर आकर्षणशक्ति है जो एक दूसरे को खींचती हैं चाहें वह ज्ञान में या अनजान में हो यह इच्छा शक्ति तथा चुनाव का क्षेत्र ही नहीं है।

२ सौंदर्यशक्ति

यह एक दूसरी शक्ति है जोकि स्त्रियों के हाथ में है और जिसके द्वारा भी वह अपना आधिपत्य रखती हैं। एवोल्यूशन थियोरी वाले अर्थात विकासत् वाद वाले तो यह मानते हैं कि परमात्मा ने सृष्टि उत्पन्न करते समय स्त्रियों को पुरुषों से पीछे बनाया और यतः परमात्मा का हाथ सुघढ अधिक हो चुका था अतः पीछे बनी हुई स्त्री जाति पुरुष जाति की अपेक्षा अधिक सुन्दर बनी। उत्पत्ति का क्रम सर्वदा नीचे से उच्च पदार्थ की ओर, सरल से कठिन, और सुन्दर से अधिक सुन्दर की ओर है। अस्तु यतः प्राचीन और अर्वाचीन सभी दार्शनिक अपने २ ढंग से स्त्री के सौन्दर्य को मानते हैं अतः यह भी मानना चाहिये कि सौन्दर्य की शक्ति कम नहीं है।

३ स्त्री की पराधीनता और विश्वास।

यह एक बड़े महत्व का विषय है क्योंकि आधुनिक सभ्यता में स्त्री की पराधीनता जितनी बुरी समझी जाती है और इस पर जितने कटाक्ष होते हैं उतने शायद ही किसी बात पर होते हैं; तब यह कहना कि यह स्त्रियों की शक्ति है क्या ही उलटी बात है? परन्तु विज्ञ पाठक और पाठिकाओं! ज़रा धैर्य्य से इस विषय का मनन कीजिये और जो मैं आगे कहती हूं उसे ध्यान से पढ़िए किसी महापुरुष का कथन है कि "स्त्रियों की आकर्षण-शक्ति इसी में है कि वह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपनी कमजोरी दिखला कर निरन्तर ही पुरुषों की उदारता को उत्तेजना देती रहती हैं जिसके कारण न केवल वह उन्हें उच्च ही बनाती हैं वरन् मनुष्यमें उच्चतम भावोंको भी उत्पन्न करती हैं। कमजोरी का स्वीकार करना अपने आप एक ऐन्द्रजालिक शक्ति रखता है।" हां तो स्त्रियों के पराधीन मन में भी वह हृदयग्राही शक्ति है जिसका प्रभाव हट नहीं सकता। उनका पराधीनत्व ही उनकी शक्ति जताने तथा स्थिर रखने का प्रमाणपत्र है। जिस प्रकार वृक्ष के साथ बेल लपटी रहती है उसी के सहारे बढ़ती फूलती फलती है, और यदि यह सहारा हटा लिया जावे तो यह सूखकर नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। इसी प्रकार स्त्री पुरुष पर सहारा, पथप्रदर्शन, रक्षा, तथा पोषण के लिए निर्भर रहती है। उसके बिना उसका अस्तित्व नहीं रह सकता। पिता, भाई, पति, देवर, पुत्र किसी का सहारा अवश्य चाहिए, यही उनके जीवन का सार है। इसी में उनके महत्व का रहस्य छिपा हुआ है। पुरुष अपनी करुणा की पात्र स्त्री जाति की किसी भी आवश्यकता को निषेध ही नहीं कर सकता। यही विचार शेक्शपीयर जैसे महानुभाव कवियों को हुआ जब उसने यह शब्द लिखेः—

The men who bears an honourable mind Will scorn to treat a women lawlessly. कोई धर्मात्मा पुरुष किसी स्त्री के प्रति अत्याचार नहीं कर सकता। इसी प्रकार वाल्मीकि जी भी कहते हैं कि—"अवध्या सर्व भूतानां प्रमदाः क्षम्यतामिति" पुरुष का बल तो उसकी इच्छा शक्ति के ऊपर है किन्तु एक साध्वी स्त्री का बल उसका विशुद्ध प्रेम है। यदि यह सिद्धान्त उलट जावे तो अप्राकृतिक स्त्री पुरुष हो जाते हैं जिन्हें हम सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अतः स्त्रियों का आधिपत्य प्रेम और माधुर्य में ही है। चाहे लता और वृक्ष का उदाहरण पूर्णतया स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में न घटता हो तथापि इस में कोई शक नहीं कि 'न स्त्री स्वातन्त्र्य महंति' यह स्त्रियों का स्थिर गुण है। जो दुष्ट हृदय वाली आत्मावलम्बी स्त्रियां अपनी स्वाधीनता जतलाती हुई पुरुष के प्रेम के सहारे के बिना अपने पैरों खड़े होना पसन्द करती हैं वह उनके विरोधियों के कैम्प में हैं अतः वह आवश्यकता के समय निस्सहाय—बिना परवाह की तथा अनावश्यक की भांति जीवन बिताती रहती हैं। वह साध्वी स्त्री नहीं है जो प्रेम का बदला न दे जो सहाय की आकांक्षा न रक्खे। करुणा, माधुर्य, सहारे रहना, आत्म-त्याग विश्वास यही तो स्त्रियों के सच्चे गुण हैं और इन्हीं के द्वारा ही स्त्रियों का साम्राज्य स्थिर तथा चिरस्थाई रहता है, इनकी ढल ओढ़कर वह हमेशा अजेय रहती हैं। अतः भारतीय महिलाओं को अपने इन शस्त्रों की रक्षा करके इन्हें संभाल कर रखना चाहिये।

वैज्ञानिक संसार।

भूमि का जलना।

क्या कभी हमारे पाठकों ने भूमि को जलते देखा है? कहीं इस प्रश्न पर हमें पागल तो न समझा जायगा? कोयलों में आग लगती है, लकड़ी जलती है और तेल भी जलता है, परन्तु यह भूमि का जलना, कैसा? आज हम भूमि के जलने की कुछ वास्तविक घटना का वर्णन करेंगे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुछ वर्ष बीते, वर्कडेल के निकट एक किसान ने बिना बुझे हुए चूने का ढेर लगा दिया। इस पर जल पड़ने से इतना ताप उत्पन्न हुआ कि इसके नीचे की भूमि में जो कि महीनों की कड़ी धूप से खूब सूख गई थी, आग लग गई। वायु के चलने से आग तीन एकड़ भूमि में भड़क उठी और इसे कितने ही फुट नीचे तक जला दिया।

दो बीते, इसी प्रकार की अग्नि इंगलैंड के एक स्थान पर भड़क उठी। यह लकड़ियों के एक ढेर के जलने से आरम्भ हुई और एक वृक्ष की जड़ों में पहुंच गई। पाँच सप्ताह पीछे वृक्ष गिरकर भूमि पर गिर पड़ा। तब पता लगा कि आस पास की सारी जमीन में आग लगी हुई है। यह आग इतनी भड़की कि जबतक सर्दियों की वर्षा ने इसे बुझा न दिया यह बराबर जलती रही।

इस प्रकार की सब से बड़ी आग अमरीका के वाशिंगटन रियासत में सीटल के निकट लकड़ी के बुरादे में जो कि १० एकड़ भूमि पर फैला हुआ था, लग कर आरम्भ हुई। अग्नि भूमि के खूब नीचे तक पहुंच गई और इतना धुआं निकला कि जिसने मीलों तक वायु को विषमय बना दिया।

क्या कल वर्षा होगी।

कई स्थानों पर जहां लगातार वर्षा होती रहती है लोग इससे इतना तंग आ जाते हैं कि वह यह जानने को बड़े उत्सुक हो उठते हैं कि आने वाला दिन भी खुला होगा कि नहीं। क्या ऐसा जानने का कोई सुगम उपाय है?

सूर्यास्त के समय से दो घन्टा पीछे घरों से बाहर निकल कर देखो कि घास पर कोई ओस तो नहीं पड़ी। यदि काफी मात्रा में ओस पड़ी हो तो समझ लो कि अगले दिन वर्षा न होगी। परन्तु ओस के न होने से यह न समझ लेना चाहिये कि अगले दिन अवश्य वर्षा होगी। कई कारण हो सकते हैं जो कि ओस पड़ने को रोक सकते हैं। अतः अन्य चिन्हों की ओर भी ध्यान देना चाहिये।

सायंकाल के समय छुपते समय यदि सूर्य लाल रंग का हो तो अगला दिन खूब खुला रहेगा। परन्तु इस चिन्ह से परिणाम निकालने में बड़ी सावधानी की आवश्यक्ता है। यदि लालिमा सूर्य से बहुत दूर तक ऊपर की ओर आकाश में फैली हो तो यह आंधी अथवा वर्षा का सूचक है। रात्रि को लाल रंग वाला चिन्ह तभी खुले दिन का द्योतक है यदि लाल रंग बहुत अधिक न हो। यह गोल पंखे की भांति फैला होना चाहिये, इसके सिरे टूटे फूटे न होकर स्पष्ट होने चाहियें।

पीले अथवा तांबे के रंग का सूर्यास्त इस बात का द्योतक है कि वर्षा निकट है। यदि दिन में वर्षा होती रही हो परन्तु, दोपहर पीछे आकाश में स्पष्ट २ इन्द्रधनुष के दर्शन हों तो पन्द्रह आने सम्भावना है कि दूसरे दिन वर्षा न होगी। और यदि प्रातःकाल भी सूर्योदय का रंग खाकी हो तो दिन खूब खुला रहेगा यह निश्चय जानो लाल सूर्योदय वर्षा का सूचक है

दृष्टिहीन गायक

ब्रिटेनवासी प्रायः पक्षि-प्रिय होते हैं अतः रोयल सोसाइटी द्वारा जंगली पक्षियों की रक्षा के हेतु तथा उनके प्रति जो क्रूरता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का व्यवहार किया जाता है उनके निवारणार्थ प्रयत्न किया जा रहा है।

अद्यपि देशके कई प्रान्तोंमें बनवासी पक्षी जाल-बद्ध किये जाते हैं और नगरों में लाकर खिलाड़ियों द्वारा गाने की बाज़ियां लगा कर कई कष्टप्रद व्यवहार से सताये जाते हैं। प्रायः यह क्रूरता उनके अविचार का फल है किन्तु कभी २ यह व्यवहार निश्चित रूप से घृणोत्पादक होता है जो अक्षम्य है इन बाज़ियों में लिन्यट और चिफिञ्च नाम की सुरीली चिड़ियाँ को छोटे २ पिंजड़ों में बन्द करके दिवाल पर टांग देते हैं और इन पिंजड़ोँ पर इस प्रकार काले कपड़े उढ़ा दिये जाते हैं कि बहुत थोड़ी रोशनी अन्दर जाय। तब उन के मालिक उनके गान की लम्बाई पर तथा स्वरोँ की गणना और स्पष्टता पर शर्त लगाते हैं।

ऐसी बाज़ियों में जिस पक्षी की दृष्टि रोशनी न होने को कारण मन्द पड़ गई हो वे ही ज्यादा गाते और इनाम ले जाते हैं। इस अनुभव से कई एक मालिक अपने गायक पक्षियों की दृष्टि नाश कर देते हैं। यह अमानुषिक कार्य कोई ऐसे तरीके से किया जाता है कि जहां पक्षी दृष्टि बिहीन हो जाता है वहां उसकी आंख देखने वाले को बिलकुल स्वाभाविक प्रतीत होती है। कोई नहीं परख सकता कि यह अन्धा है। इसी कारण यह क्रूर कर्म जल्दी जाना नहीं जाता फिर भी अभियुक्त यदि पकड़ा जाता है तो दण्ड पाता है।

प्राकृतिक मणि।

(कृमि चक्षु के रंग)

प्यन्सिल नैनिआ के लिन्कननं विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस० एफ़० आरन 'साइनृफिक अमेरिकन' में लिखते हैं, कि प्रचलित विश्वास के प्रतिकूल रंग रूप में सब से सुन्दर खनिज धातुएं नहीं होतीं चाहे वह कितनी ही चिरस्थायी एवम् मूल्यवान् और शृंगारोपयोगी हों। और इसी भाँति सब से अधिक रंगों की चमक दमक न तो खानिज पदार्थों में न वनस्पति में, न फल फूलों में, न गर्म देश के पक्षियों के पंखों में, न सामुद्रिक सीप इत्यादि में और न ही बसन्त तथा हेमन्त के सुन्दर आकाश में होती है।

सब से अधिक स्वाभाविक रंग चमक दमक, निर्मलता, गहराई और प्रकाश तो कृमि की चक्षुओं में ही मिलता है।

बहुतोँ को यह कथन आश्चर्यजनक तथा तक-सिद्ध प्रतीत होंगी परन्तु जिज्ञासु के लिए यह एक प्रस्तुत सत्य है। केवल अपने सूक्ष्म वीक्षण यन्त्र को भिन्न २ छोटे २ कृमियों की आंखों पर डालने से ही यह बात स्पष्ट पता लग जायगी।

कोई हीरा, लाल, पुखराज, पन्ना वा मोती मनुष्य की आंख को वह ऐसी चमक पूर्ण अभायुक्त रंग नहीं देता जैसा कि कोई दो परों वाली मक्खियों में, तितलियों में बोट में वा घास के फुदकने वाले कीड़ों की आखों में दृष्टि गोचर होता है।

यह कथन घोड़े तथा हरिण पर बैठने वाली और हरे रंग के सिर वाली मक्खियों के विषय में विशेषरूप से उपयुक्त है। इनमें से कुछ एक जाति की मक्खियों की आखें केवल काली होती हैं परन्तु अन्य जातियों में इन्द्रधनुष के प्रत्येक रंग की आभा दिखाई देती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऐसी भी मक्खियां होती हैं जिनके पर सूर्य्य के सात रंगों की चमक को मात करते हैं।

यदि किसी प्रकार कृमियों की यह आंखें चिर काल तक सुरक्षित रक्खी जा सकें—नन्हे २ काड़े और अन्य कृमि इन को घुन की भान्ति खराब कर देते हैं—तो मणि प्रिय रमणियां और रसिकजन खनिज मखियें को छोड़ इन ही के पीछे दीवाने हो जायें।

चींटियों की गुप्त बातें

मनुष्यों की कितनी ही ऐसी छिपी जातियां हैं जिनकी रस्म रिवाज़ का हमें बहुत कम पता है किन्तु चींटियों के रहन सहन और आपस के बर्ताव का हमें बहुत कुछ ज्ञान है। फिर भी इस नन्हे से जीव की आपस की बोलचाल का समझना दुष्कर प्रतीत हुवा है।

म्युनिच के प्रोफेसर इडमन अपने क्रिया भवन में चींटियों के एक दलका जो कि एक कृत्रिम पहाड़ी पर बसती थीं अनुभव करते रहे हैं। उन्हों ने भोजन सामग्री की ढूढ़ खोज को ही चींटियों की एक दूसरेसे बात चीत का अवसर निश्चित कर अपने अध्ययन का ध्येय बनाया।

खाने की चीज़ का एक कारण पा जाने पर एक चींटी पहिले अपने आप उसे खींच ले जाने का उद्योग करने लगी परन्तु जब यह असम्भव प्रतीत हुआ तो वह छोटे से छोटे रास्ते से पहाड़ी पर सहायता लाने के लिये लौट गई।

चींटी पहाड़ी के ऊपर एक प्रकार का पहरेदारों का कमरा था जहां पर इस तरह की जल्दी बुलाहट के लिये चींटी दल हर समय तैय्यार रहता था। स्काउट—जिसको खाना मिला था अन्दर जाकर प्रत्येक चींटी अपने मुख के ऊपर के सींग सदृश्य बालों को मिलाकर सुसंवाद सुनाती है। चींटियां तितर बितर हाकर इधर उधर घूमती हैं। इतने में स्काउट चींटी फिर दिखाई देती है। अब स्काउट चींटी सबसे आगे चलती है पीछे चींटियों की लम्बी पांत चलती है। जब वस्तु मिल जाती है तो उसको सब नन्हें २ कणों में विभाग कर लेते हैं।

'साइन्स' नामक पत्र में लिखता हुआ वैज्ञानिक वर्णन करता है कि कैसे उसने खाद्य पदार्थ के ऐसे स्थान पर कण छिटका दिये जहां पर कि स्काउट चींटी उनको ढूंढ़ सक्ती थी और कैसे उस नन्हीं सी चींटी ने जब २३ बार चींटी—पहाड़ी पर फेरे करके एक एक बचे हुये कण को पहुंचा न लिया विश्राम नहीं लिया।

पौधों को देख कर समय की पहिचान।

कुछ भिन्न २ पौधों और फूलों के स्वभाव के थोड़े से ज्ञान से यदि किसी की घड़ी बन्द होगई हो वा पास न हो और गांवों में दौरा कर रहा हो तो सरलरीति से समयका अनुमान कर सक्ता है।

Goats beard अर्थात् कैनस का चौड़े २ पत्तों के बीच में जो चोटी वाला फूल खिलता है वह तड़के ३ बजे खिलता है और अपना मुख ११ बजे दिन के छिपा लेता है।

Cats ear के प्रायः सड़कों के किनारे छोटे २ फूल निकले होते हैं और प्रसिद्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Convolous ६ बजे सवेरे खिलते हैं। प्रायः बहुत से जंगली फूलों के उठने का समय यही हैं। ऐन ७ बजे scarlet Junpernel आंख खोल देता है और एक घटे के बाद howkweed और Chickweed अपनी आंख खोलने का समय बताते हैं।

ठीक दोपहर को Nipplewort सेा जाता है उसके बाद दो बजे Purple-Sandwort सेाता है। तत्पश्चात् एक घण्टे बाद ३ बजे गेंदा आराम करता है और कमल ४ बजे शाम को बन्द हो जाते हैं।

प्रकृति के किसी अद्भुत कार्य्य क्रम के आधीन से प्रत्येक पौधे के कार्य्य का समय वा घण्टा भौंरों की आवश्यक्ता के अनुसार निश्चित होते हैं। इन असली भौंरे के बिना कहां कली और कहां फूल फल।

छत्रधारी चींटियां।

लण्डन के चिड़ियाघर में एक छतरी वाली चींटियों का उपनिवेश रानी और उसकी समस्त प्रजा सहित आया है।

यह रानी एक वास्तविक रानी है और सिवाय अंडे देने के उसको कुछ काम नहीं करना पड़ता। जितने अधिक अंडे वह देती है उतनी ही सर्वप्रिय बनती है। इसके उपलक्ष्य में वह हर समय अपने भक्तों से सेवित रहती है।

भोजन भी उस को बैठे बिठाये ला दिया जाता है परन्तु उसकी वेश भूषा की सजावट की सारी कुटुम्ब को चिन्ता रहती है क्योंकि इस रानी चींटी का डील डौल अपनी सबसे दीर्घकाय प्रजा चींटी से भी २० व ३० गुना बड़ा होता है प्रत्येक चींटी को उसके शृंगार भवन में कुछ न कुछ कार्य्य करना होता है।

छतरी वाली चींटी प्रायः अमेरिका में रहती हैं। यह जब अपने निवास में लगाने के लिये पत्तियां ले जाती हैं तब उनको सिरके ऊपर उठा कर चलती हैं जैसे कोई छतरी ले जाता है इस से इनका यह नाम पड़ा है। इनके बड़ा बल होता है। चार चींटी मिल कर अंडे के बराबर की मिट्टी का डाला खींच ले जाती हैं। घोंसला बड़े क्रमानुसार रक्खा जाता है और कोई सुस्त चींटी वहां नहीं जाने पाती। रानी एक बार चुनी जाकर बहुत कम बदली जाती हैं किन्तु यदि बदलने ही की आवश्यक्ता होती है तो प्रस्तुत रानी को एक ख़ास प्रकार की खाने की चीजें दी जाती हैं जिस से वह एक नया "रानी अंडा" देने के योग्य बनता है। यह नयी रानी अपनी मां का स्थान लेती है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान।

माया राज्य।

आश्चर्यजनक पुरातन अन्वेषण।

मैक्सिको के प्रशान्त महासागरिक तीर पर पश्चिम की ओर एक सहस्र योजन तक माया राज्य का विस्तृत विस्तार था। इसके अन्तर्गत माया राज्य की सभ्यता के तीन बड़े २ मुख्य केन्द्र मिले हैं। इनमें अगणित शिलाखण्ड और शिला लेख और नानाविधि अंकित प्रसाद मिलते हैं। किसी माया राजा का समाधि मण्डप भी दृष्टिगोचर हुआ है। इस मण्डप की दीवारों पर एक से एक उत्तम कौशल सूचक ६ चित्र दिखाई पड़ते हैं। मैक्सिको में प्राचीन मायाओं के वंशज आज भी सहस्रों रोमन कैथलिक पादरियों से प्रभावित होने पर भी अपनी उन्हीं प्रतिमाओं की पूजा करते हुवे पाये जाते हैं। मि० ब्लूम को। जोकि अन्वेषकों में से एक थे। ऐसा प्रमाण मिला है जो कि यह सिद्ध करता है कि उस प्राचीन समय में भी माया जाति में ऐसे दन्तकार थे जोकि आजकल के डाक्टरों (Dentists) का अपनी कार्यकुशलता से मात करते थे। यह तो पूर्णरूप से निश्चित है कि माया लोग मट्टी के बर्तन बनाने में संसार की सब जातियों से अग्र गण्य थे।

मैक्सिको की 'शिहाज़ स्टेट' में 'इन्कैन्टो रैन्च' के पास टोशिबा नामक स्थान में प्राचीन सभ्यता का प्रथम केन्द्र प्राप्त हुआ है। इस से पहिले यहां कोई प्राचीन गवेषणिक नहीं पहुंचे थे। यहां के देशनिवासियों के अतिरिक्त बहुत कम लोग यहां आये होंगे। यह नगर टुलिहा नदी के किनारे एक अत्यन्त रमणीक स्थल पर बसा हुआ है। इसके स्तूप ऐसी जगह पर हैं जहां पत्थर की एक बड़ा दीवार सी नदी के मार्ग को रोकती हुई स्वाभाविक पुल का काम देती है। नदी बड़े बेग से इस दीवार से टकराती है और अपने मार्ग को बन्द पाकर दीवार के नीचे से निकल जाती है। इस रमणीय स्थान पर माया लोगों ने अपना एक बड़ा सुन्दर नगर बसाया था। खण्डरों के के खोजने पर अन्वेषकों को पहिले पहल प्रायः १२ फुट ऊंचे पत्थर के शिलाखण्ड मिले इनमें से कोई भी अंकित न था। प्रथम स्तूप की चोटी जहाँ कभी एक मन्दिर होता था। पर चढ़ने से इन्हें पता लगा कि एक १५०० वर्ष पुराने घर की छत भीतर धस गई है। बड़ी कठिनाइयों के पश्चात खोजकों ने बड़ी होशियारी से ऊपर के एक और कमरे में प्रवेश किया। यहां पर उनकी आशा फलवती हुई। यहां पर इन्हें सनिर्मित मिट्टी के चित्र विचित्र बर्तनों का एक समूह मिला जिन पर काले और नारङ्गी रङ्ग से नाना विधि के चित्र बनाये गये थे। इनमें से कुछ को छोडकर बाकी प्रायः चिटके हुवे थे। फिर टूटी हुई छत के हिस्सों को हटा कर एक और प्रकार के बर्तना का समूह मिला। इनमें प्रत्येक बर्तन के नीचे गोल २ तीन पैर लगे हुये थे और इनके भीतर झुंझने की भान्ति कङ्कड़ डाले हुये थे जो कि हिलाने से बजते थे।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहिले बर्तनों में एक गोल पेन्दा सा लगा हुआ था जैसा कि आज कल बहुत से प्यालों अथवा कटोरों में लगा रहता है।

इन कमरों के देखते भालते हुये कूड़े में से मि० ब्लूम को एक दान्त मिला। बड़े ध्यान स देखने पर ज्ञात हुआ कि दान्त के अन्दर एक प्रकार का काला मसाला भराहुआ है जो कि १५०० वर्ष के उपरान्त भी बिना किसीप्रकार खुरने भुरने के ज्यूं का त्यूं बना है। यह एक छेद म जो कि माया लोगों की एक विशेषता थी और जिसे वह सुन्दरता का सूचक समझते थे भरा हुआ था।

यह एक बड़ा प्रबल तथा अद्भुत प्रमाण है कि आज से १५०० वर्ष पूर्व माया लोग बिना आधुनिक शस्त्रों और बूटियों के ही बड़े दक्ष दन्तकार थे। मि० ब्लूम के बिचार में छेद के बनाने की बिधि, दर्द मारने के साधन और भीतरी नसों को तकलीफ दिये बिना, खराब न होने वाला मसाला बड़े भारी रहस्य हैं। भीतर का मसाला लोहे का बना हुआ है।

कई दिन के नितान्त श्रम और खोज के पश्चात् "ओकोसिंगो" की तराई में "कोपन हन युरास के खण्डहरों से भी बढ़ कर माया सभ्यता के विस्तृत विस्तारसूचक पांच सब से बड़े नवीन नगर मिले। जिनको देशी लोग 'चकालचिब' 'सेन्टा श्यरिसा' 'कोलोलटी', 'सैन ऐन्टानियो' और कन-पाम्टाई' के नाम से पुकारते हैं। जब यह लोग आकोसिंगो नगर में घुसे तो मिस्टर लाफार्ज–जो कि सदा इस खोज में रहते थे कि उन देशियों की अपेक्षा जिन्हें वह पहले देख चुके हैं अधिक सजे हुए देशा दिखलाई पड़ें। घोड़े पर से कूद कर चबूतरे के ऊपर स्थित एक स्तम्भ के पास, जिसका कि उन्होंने बहुत दूर से लक्ष किया था, जा पहुंचे। यह एक माया वेदी का टुकड़ा था जिस पर १५० मूर्तिरूप अक्षर खुदे हुए थे। इन पुरातत्ववेत्ताओं ने एक दिन में नगर के अलग २ भागों में ६ भिन्न २ स्मारकों का पता लगाया जिन्हें देशी लोग भुवननिर्माण के कार्य में काम लाते रहे हैं।

एक चौखुन्टी वेदी एक घर में देहली के स्थान पर लगी हुई थी। मीनार के दो टुकड़े एक घर में दीवारों का काम देते थे। तीन मूर्तियां जिन पर लेख खुदे हुए थे एक गिरजे में कूड़ा करकट गिराने के स्थान में फेंकी हुई मिलीं। एक वेदी बहुत बुरी तरह टूटी हुई मिली। ऊपर के टुकड़ों को जिस में एक गोल छेद था, पहाड़ी की चोटी के ऊपर ले जाकर और उसके गोल छेद में एक क्रास फंसा कर एक कबर का निशाना बनाया गया था। दूसरे टुकड़े का मालिक इसे एक तालाब के किनारे लगाने लगा था। इन पर माया सम्वत् जो कि ४२१ ई० सम्वत् के लगभग था खुदा हुआ था। ऊंचे बन्द लगाकर उपत्यका के दोनों बीच में चोटियों को समतल करके दाहनी ओर कोलोलटी और बाई ओर कनपोम्टाई नगर बसाये गए थे। सेन्ट श्यरिसा जो कि टिब्बों और चबूतरों का एक समूह है, ओकोसिंगो के पास है। सैन अन्टोनियो जो कि अधिक मूल्यवान है वह तराई के दूसरे सिरे पर है। और टोनिनो बायीं ओर आको-सिंगो और सैन अन्टोनियो के बीच में है।

खोजकों ने टोनिनो में लगातार चार दिन के परिश्रम के पश्चात् १८ मनुष्य–मूर्तियां निकालीं जो कि रेतीले पत्थर पर खुदी हुई थीं। यह प्रायः स्वाभाविक कद अथवा इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से एक फिट ऊंची थी और राजाओं तथा बड़े बड़े पुरोहितों की थीं। इनकी वेश-भूषा से ऐसा प्रतीत होता है कि यह खड़े होकर पूजा में मग्न हैं। इनके हाथों में पत्थर की छड़ियां हैं जिन पर सितारों की पंक्तियां खुदी हुई हैं। इन मूर्तियों के अंग अलंकार युक्त हैं। इन पर एक तिथि खुदी हुई मिलती है जो कि इस की सम्वत् के अनुसार १६ मई सन् ४३२ बनती है। इन मूर्तियों के सम्बन्ध में यह एक विशेष बात है कि खड़ी हुई सब मूर्तियों के शिर कटे हुए हैं वेदी के ऊपर मूर्तियों के चेहरे तथा अन्य अंग भी किसी चीज़ से छीले हुये जान पड़ते हैं। यह दुष्टता स्पेन के पुराने पादरियों द्वारा ही की गई मालूम होती है। इनका उद्देश्य देशी लोगों को अपने स्मारकों को रखने तथा अपनी पुरानी वेदियों पर अपने ढंग से पूजा करने से रोकना था।

कापिटन तराई की एक बड़ी विशेषता वहां का एक यन्त्रकला का बड़ा भारी नमूना है जो कि प्राचीन माया लोगों की दक्षता को सूचित करता है। तराई के चारों ओर ऊंचे २ बन्द बनाये गये हैं जिस से कि दरिया अथवा नदियां पहाड़ों की जड़ों को खोखला न कर सकें। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि १५०० वर्ष पहिले भी मनुष्य यन्त्र कला के उन तरीकों को काम में लाते थे जिन्हें आज कल के इंजीनियर काम में लाते हैं। कापिटन के चुर्गीघर में एक ऐसी वस्तु मिली है जोकि आजकल भी सब को चकित करती है। यह एक पत्थर है जिस पर कि मट्टी की तह जमी हुई थी। मट्टी साफ करने पर एक योधा की मूर्ति निकली जिसके हाथ में नेज़ा है। मि० ब्लूम के विचार में यह प्राचीन माया राजा चिनाज़ या बीन की मूर्ति है। स्यनान के मुख्य खण्डहरों में एक बहुत बड़ी रंगभूमि या क्रीडा क्षेत्र है जिस में पत्थर के कितने ही स्मारक हैं। पुराने माया इन्जिनियरों ने इस रंगभूमि को बनाते समय पहाड़ी की आकृति से विशेष लाभ उठाया है।

धर्म और विज्ञान

जनवरी के 'माडर्न रिव्यू' में दिये गये प्रबुद्ध भारत के विचार के अनुसार वह समय आ पहुंचा है जब कि धर्म और विज्ञान परस्पर मित्रता के रूप में गले मिलें। इस युग में इन के बीच की शत्रुता और झगड़ों को-जिन्होंने एक दूसरे के बीच बड़ी भारी खाई खींच रक्खी थी-अब अवश्य घुल मिल जाना चाहिये और दोनों मित्र की तरह एक दूसरे पर विश्वास करके सत्य की खोज—जोकि दोनों का एक ही लक्ष्य है-के लिये एक दूसरे की सहायता करना चाहिये। हमारी समझ में इस झगड़े का कारण केवल ना समझी है जोकि यदि आपस में एक दूसरे के कार्य्यों और उपयोगों को भली प्रकार विचारने पर तुरन्त उड़ जायगी।

यह प्रमाणित किया जा सकता है कि धर्म और विज्ञान का-यद्यपि यह भिन्न२ मार्गों से चलते हैं परन्तु उद्देश्य एक ही है। सच कहो तो धर्म हमारे सन्मुख जो आदर्श रखता है वह विज्ञान के अन्तिम फल से विपरीत नहीं है। यह दोनों एक ही वस्तु के अलग अलग दृष्टि कोण से देखे हुये भिन्न २ रुप हैं। विज्ञान के आधुनिक अन्वेषणों द्वारा जीव की चेतनता तथा सारे ब्रह्माण्ड के ऊपर एक अखण्ड शक्ति की विद्यमानता का समर्थन हमारे कथन की सत्यता प्रमाणित करता है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जब कि वैदिक ऋषियों ने अपनी वज्र तुल्य कड़कती हुई बाणी से कहा कि वह महा प्रभु सच्चिदानन्द स्वरूप है तो उन्होंने अपनी आन्तरिक शक्ति के अनुभव रुप उसी सत्य के विषय में भविष्य बाणी की जिसको कि विज्ञान ने अभी जाना है। अतः जो हम दर्शाना चाहते हैं वह यह है कि कोई भी धर्म जोकि सत्य की नींव पर ठहरा हुआ है, फैल रहा है और उदारता पूर्ण है विज्ञान से भय भीत नहीं हो सक्ता। यह तो केवल संकीर्ण और अन्धपरम्परा से आच्छादित गिरजों और मन्दिरों का धर्म है जोकि विज्ञान की उन्नति पर भय सूचक झूठी चिल्लाहट करता है

"गौरांग खतरा"

The World to-marrow में प्रोफसर वार्ड लिखते हैं:—

उपनिवेशिक राज्य काल का अन्त आगया है। अब कोई जाति किसी अन्य जाति के आधिपत्य को स्वीकार नहीं करेगी। इस प्रकार अब दूसरों का भला नहीं किया जा सक्ता। यदि गौरांग जाति में कोई राज नीति शेष रह गयी है तब उसे इस प्रयत्न को खुल्लम खुल्ला छोड़ देना चाहिये और यह जानने का यत्न करना चाहिये कि मनुष्य जीवन के प्रत्येक भाग आत्मनिर्णय (Self determination) का क्या अर्थ है? यह यत्न न केवल योरोप निवासियों के ही लिये होना चाहिये वरन संसार के प्रत्येक कोने में फैल जाना चाहिये।

इस यत्न का यह स्पष्ट अभिप्राय होगा कि निज स्वार्थ के लिये लाभ और दूसरों के धन हरण के विचार को तिलांजली देनी होगी। यह सब जानते हैं कि तीव्र संघर्ष का केन्द्र वही स्थान है जहां कि स्वार्थ भाव सर्वोपरि है। यदि गोरों को चीन, भारत अथवा फिलपाईन द्वीप में निज स्वार्थ न हो तो इन देशों को स्वतन्त्रता देने में कोई आपत्ति नहीं रहती। यदि हम इस विचारसे सहमत नहीं हो सक्ते कि पृथिवी मनुष्य मात्र की उन्नति के लिये है, यदि हम इसको आपस में एक दूसरे की सहायता के लिये भोग नहीं कर सक्ते तब हमें भविष्य में जातियों में घोर संग्राम के लिये तय्यार रहना चाहिये। यदि हम संसार की आर्थिक बुनियाद को ठीक २ नहीं बना सक्ते, मनुष्य मात्र से मैत्री का भाव केवल शब्द मात्र ही रहेगा। और मनुष्य के मनों में जो मेल की संभावना विद्यमान है वह केवल कल्पना मात्र ही रहेगी।

इन दो मूल सिद्धान्तों की उन्नति और पुष्टि के लिये कि-स्वराज्य सब जातियों का जन्मसिद्ध अधिकार है और कि पृथिवी सब को मिल कर भोग करने की सामग्री है-यह परम आवश्यक है कि योरोप के बड़े २ राज्य इस बात की घोषणा करें कि अमुक निश्चित तिथि तक सब पराधीन जातियां स्वतन्त्र कर दी जायेंगी और इस अधिकार परिवर्तन की विधि भी साफ २ बतला दी जाय तथा सब संसार की एक आर्थिक महा सभा बुलाई जाय जो कि यह निश्चय करे कि सब की आवश्यकता अनुसार किस प्रकार आवश्यक वस्तुओं की वृद्धि और उनका बंटवारा किया जा सक्ता है। जब तक यह दो बातें नहीं की जाती भिन्न २ जातियों के बीच से कलह और द्वेष दूर नहीं होसक्ता।

धनुर्विद्या और स्त्रियां

धनुर्विद्या और गतका जोकि प्राचीन काल में शत्रु के संहार के लिये काम आते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज कल जीवित हैं परन्तु अब इनका रूप खेल का हो गया और खेल भी इस प्रकार के जोकि स्त्री जाति को रुचिकर हो। जब अपनी मानरक्षा के लिये तलवार द्वारा द्वन्द युद्ध का प्रचार बन्द हो गया तो गतके ने इनका स्थान लिया जिससे कि कुमारों की शरीर को सीधी रख सके और आंखसे ठीक२ निशाना लगा सकें। आज कल अमरीका के के कितने ही नगरों में ऐसी स्त्री सभायें हैं जहाँ की कितनी ही अमीर स्त्रियां गतका खेलने में विशेष आनन्द लेती हैं। अमरीका के प्राचीन निवासियें का विषयुक्त तीर तो केवल अजायब घरों में ही दिखलाई देता है परन्तु धनुर्विद्या समितियें द्वारा पास किया हुआ तीर और कमान आज फुटबाल हाकी इत्यादि खेलों के विक्रेताओं से मिल सकता है। परन्तु इस से आजकल शत्रु के हृदय को निशाना नहीं बनाया जा सकता, वरन् इसके लिये भी तुम्हें बना बनाया निशाना ही खरीदना पड़ेगा।

आजकल धनुर्विद्या बड़ी प्रिय बन रही है। (Woman citizen)

गुरुकुल।

जब से महात्मा गांधी ने आर्यसमाज पर अपनी सम्मति प्रकट की थी तब से राजनैतिक क्षेत्र में आर्यसमाजियें के प्रति कुछ विद्वेष सा फैल रहा था। परन्तु इस प्रकार अनुदार चित्त जनों को महात्मा गांधी जी के २२ जनवरी १९२६ के 'नव जीवन' में गुरुकुल शीर्षक के शब्दों पर ध्यान देने की बड़ी भारी आवश्यकता है। और आर्यसमाजियें को भी अपनी शक्ति का परिचय पाकर उसे स्थिर तथा उन्नत करने की ओर लगना चाहिए। ज्योति के प्रेमियें के लिये महात्माजी के उद्गार ज्यों के त्यों दिये जाते हैं:—

गुरुकुल शब्द एक पारिभाषिक शब्द हो गया है और उसका केवल अमुक प्रकार के आर्यसमाजी विद्यालयों के लिए ही प्रयोग किया जाता है। इन गुरुकुलों के सम्बन्ध में एक भाई लिखते हैं:—

"मैं गत ६ वर्षों से होमरूल, असहयोग हलचलों में शामिल होता आ रहा हूँ और उनका अनुभव कर रहा हूँ; और उतना ही आर्यसमाजियें का अनुभव करने का भी प्रयत्न करता हूँ क्योंकि मेरी यह मान्यता है कि यदि कुछ जीवन कहीं दिखाई देता है तो वह इसी में है। ज्यों ज्यों मैं असहयोग में गहरा उतरता जाता हूं और नवजीवन पढ़ता जाता हूँ त्यों त्यों मेरी श्रद्धा उस में दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। यहां देहली में देखा तो यहां के कन्या गुरुकुल की मुख्य अधिष्ठात्री देवी (विद्यावती सेठ, बी० ए०) भी खादी में बड़ी श्रद्धा रखती हैं और आप की परम भक्त हैं। हरद्वार गुरुकुल में देखा तो वहां के मुख्य अधिष्ठाता स्वयम् कात रहे थे और वे खुद अपने हाथ के कते सूत का बना हुआ कपड़ा पहनने की आशा रखते हैं। अभी जो खादी वे पहनते हैं उस का सूत उनकी माता ने काता था। इस लिए वह भी घर का ही था। कांगड़ी का भी यही हाल है। सूपा गुरुकुल का तो अभी आरम्भ ही है फिर भी वहां इसी दिशा में प्रयत्न किया जा रहा है। यहां (हरद्वार में) ऋषिकुल देखा तो उसमें इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है। अस्पृश्यों के बारे में पूछ ताछ की तो उत्तर मिला कि उनको छू सकते हैं लेकिन जब तक वे दूसरा जन्म न लें तबतक अध्ययन इत्यादि के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिये उनको यहां कोई स्थान नहीं है। यह सुन कर मुझे बड़ा दुख हुआ। सनातनधर्म माने जाने वाले धर्म ने क्या कर दिया है?

अस्पृश्यों के सम्बन्ध में आर्यसमाज बड़ा प्रयत्न कर रही है। दक्षिण में एक इडपा जाति है, उसे ब्राह्मणों से ६४ गज दूर चलना पड़ता है। इस सीमा के अन्दर यदि कोई ब्राह्मण का घर हो तो चौका चूल्हा निकाल देना पड़ता है और यदि इस सीमा में कोई इडपा आ जाय तो भी यही होता है। इन लोगों में भी आर्यसमाजी काम कर रहे हैं।

ऊपर कही गई बातों को आप अच्छी तरह जानते हैं और आर्यसमाजियों के प्रति आपको प्रेम भी है। लेकिन प्रेमपूर्वक आप ने जो उनके दोष बताये थे उससे आपके अनुयायियों में बड़ी गलतफ़हमी फैली हुई है और वे उनके प्रति घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब भी आप इस संस्था के यदि दोष हों तो दोष और गुण हों तो गुण वर्तमानपत्र द्वारा जाहिर करेंगे तो बड़ा उपकार होगा और लोगों की गलतफ़हमी दूर होगी। आपने जो दोष बताये हैं उनका मैं सप्रेम स्वीकार करता हूँ लेकिन उनके गुणों को अधिक मानता हूँ। मैं समाजी नहीं हूँ लेकिन प्रेमी हूँ और आपके नवजीवन से मेरा प्रेम अधिक बढ़ता जा रहा है। जब आखिर अखिर आप सूरत जिले में गये थे उस समय आप सूपा गुरुकुल की मुलाकात को भी गये थे। आपके साथ जान वाले भाइयों ने मुनसाड का न कुछ रिपोर्ट भी लिया था लेकिन उन्होंने सूपा गुरुकुल का नाम (कहीं छूत न लग जाय इस डर से या मैं नहीं जानता कि किस कारण से) भी न आने दिया था।"

मैं जानता हूं कि मुझे किसी के भी प्रति घृणा नहीं है, फिर आर्य्य समाजियों के प्रति कैसे हो सकती है? मैं हमेशा से आर्य्य समाजियों के सम्बन्ध में आया हूं और वह सम्बन्ध आज भी कायम है। हमारा सम्बन्ध या प्रेम जरा भी कम नहीं हुआ है इस लिए यदि मेरे लिखने से किसी के दिल में उनके प्रति घृणा उत्पन्न हुई हो तो मेरे लिए यह आश्चर्य और दुःख की बात है। आर्यसमाजियों की कृतियों के सम्बन्ध में यदि कोई मतभेद हो तो उससे उनकी देश सेवा भुलाई नहीं जा सकती है। उन्होंने जनता में नया जीवन डाला है। उन्होंने हिंदू धर्म में घुसे हुए कुछ दोषों का दर्शन कराया है, उन्होंने साहस किया है, स्त्री शिक्षा में बड़ा भारी हिस्सा दिया है। दलितों की सेवा की है, संस्कृत और हिंदी के अध्ययन को तरजीह दी है। ऋषि दयानन्द ने लड़कपन में ही माता के साथ सत्याग्रह करके जनता को ब्रह्मचर्य का पाठ सिखाया है, और इसका पवित्र स्मरण हमेशा ही ताजा रहेगा। विद्या देवी जी के खादी प्रेम को मैं जानता हूं। उन्हें एक बुनना जानने वाली बहन भेजने का प्रयत्न कर रहा हूं। कांगड़ी गुरुकुल का और मेरा सम्बन्ध पुराना है। स्वामीजी की प्रेरणा से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने खुद मिहनत करके दक्षिण अफ्रीका में मुझे कुछ धन भेजा था उसे मैं किसी प्रकार नहीं भुला सकता हूँ। वहां के अध्यापक खादी प्रेमी है यह भी मैं जानता हूँ। सूपा गुरुकुल का उल्लेख यदि नवजीवन में न आ सका तो उसका कारण लापरवाही नहीं है, घृणा तो हो ही नहीं सकती है। उल्लेख के अभाव की जबाब देही या तो मुझ पर या महादेव देसाई पर ही होसकती है। मैं तो यह जानता हूँ कि इसके लिए मैं जबाबदेह नहीं हूं और महादेव को

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घृणा हो यह मैं असम्भव वस्तु मानता हूँ। लेकिन जहाँ हवागाड़ी की तरह सफर हो रही हो वहां किसी बात का उल्लेख करना रह जाय तो यह संभव है। सूपा गुरुकुल के प्रयत्न को मैं प्रशंसनीय प्रयत्न मानता हूँ। उसके अधिष्ठाता के उत्साह के प्रति मेरा ध्यान आकर्षित हुआ था। उन्हीं के उत्साह के वश होकर मैंने वहां जाना स्वीकार किया था। मैंने यह देखा था कि वहां खादी के लिये अच्छा प्रयत्न किया जा रहाथा। मैं यह मानता हूं कि गुरुकुल भी शिक्षाविषय में अपनी तरफ से अच्छा हिस्सा दे रहे हैं। मैं उसकी उन्नति चाहता हूँ।

(नवजीवन)

मोहनदास करमचन्द गांधी

विचार प्रवाह

वायकोम सत्याग्रह

लगभग दो ढाई मास हुये, एसोसियेटेड प्रेस ने यह समाचार पत्रों में प्रकाशित किया था-"को चीन के समाचारों से विदित होता है, कि केरल अछूतोद्धार समिति ने वाय कोम में सत्याग्रह समाप्त करने और वहां पर "पिकेटिंग" बन्द कर देने का निश्चय कर लिया है। कारण यह है कि सरकार ने मन्दिर की चारों सड़कें सब जातियों के लोगों के लिये खोल दी हैं। केवल ऐसे हिस्सों पर अछूतों को जाने का अधिकार नहीं मिला है, जो मन्दिर के साथ लगे हुवे हैं। इन हिस्सों के चारों ओर मन्दिर की ओर से दीवार बनाई जारही है, और ये मन्दिर की ही सम्पत्ति समझे जावेंगे। इन हिस्सों में जाने का अधिकार उन्हीं को होगा, जिन्हें वर्त्तमान समय में मन्दिर प्रवेश का अधिकार प्राप्त है। अब अछूतोद्धार समिति ने निश्चय किया है कि मन्दिरों में अब्राह्मणों के प्रवेश के प्रश्न को उठाया जाय।"

वायकोम सत्याग्रह की इस अपूर्व सफलता पर हम सत्याग्रहियों को बधाई देते हैं। चिरकाल तक निरन्तर संघर्ष के पश्चात् उन्हें यह सफलता प्राप्त हुई। इस से न केवल अछूतोद्धार के कार्य को बहुत अधिक प्रोत्साहना मिली है। अपितु सत्याग्रह की अपूर्व शक्ति भी प्रमाणित होगई है। हमें आशा है कि वायकाम में जिस कार्य का प्रारम्भ हुवा है, वह एक दिन भारत व्यापी आन्दोलन बन जायगा। अछूत कहे जाने वाले लोग अपने अधिकारों के लिये युद्ध करेंगे और विजय प्राप्त करके ही दम लेंगे। प्रसन्नता की बात है कि अछूतों की सहायता के लिये आर्य समाज के प्रचारक बड़े उत्साह से कार्य कर रहे हैं। उन्हें केवल ईसाइयों और मुसलमानों के पञ्जों से बचा रहे हैं, परन्तु उनके उद्धार के लिये भी निरन्तर उद्योग कर रहे हैं। आर्य समाजी हुवे २ अछूतों के अधिकारों के लिये संघर्ष होरहा है। ईसाई या मुसलमान होजाने पर अछूतों को अधिकार मिल जाते हैं, अभी तक आर्य्य समाजी होने पर उन्हें उनसे वञ्चित ही रखा जाता है। इसी लिये काल पाथी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदि स्थानों पर सत्याग्रह तक की तैयारियां की जारही है । यह सब कुछ उचित है। हम इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि आर्य्य समाजी बन जाने पर भी अछूतों को वे सब अधिकार अवश्य मिल जाने चाहिये जो कि उन्हें ईसाई या मुसलमान बनने पर मिल जाते हैं । इस के लिये आन्दोलन वा सत्याग्रह—सब कुछ होना चाहिये । पर साथ में यह भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि आर्य समाज 'अछूतपन' को ही अनुचित समझता है । उसके मत में हिन्दू धर्म के अन्दर 'अछूतपन' को कोई स्थान ही नहीं है। इस लिये उसे यह प्रयत्न करना बहुत जरूरी है कि अछूतों को अन्य लोगों के समान अधिकार दिये जावें काल पाथी में अब तक आर्य्य समाज के प्रचारक इस बात का यत्न कर रहे हैं, कि आर्य्य समाजी बने हुवे अछूतों को अन्यों के समान अधिकार दिये जावें । इस के स्थान पर यदि यह आन्दोलन प्रारम्भ किया जावे कि अछूतों ही को अन्य लोगों के समान अधिकार दिये जावे, तो अधिक लाभ हैं । यह बात जहां वैदिक धर्म के अधिक अनुकूल है, वहां अधिक उपयोगी भी है । इसी के द्वारा वास्तविक अछूतोद्धार किया जासकेगा । कालपाथी के कार्य्य कर्त्ताओं की कठिनाई का हम अनुभव करते हैं । हम जानते हैं कि कार्यकर्त्ताओं और धन की कमी तथा ईसाइयों और मुसलमानों से सख्त मुकाबला होने के कारण उन्हें अपनी वर्तमान कार्य प्रणाली का अनुसरण करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है, परन्तु अपने कार्य क्षेत्र को अधिक विस्तृत कर देने से उन्हें सहायता भी अधिक प्राप्त होसकती है । वायकोम सत्याग्रह की सफलता एक तरह से आर्य समाज की ही विजय है । यदि इस के सत्याग्रह आन्दोलन को और अधिक फैलाया जाय । तो छूतोद्धार के कार्य में बहुत सफलता हो सकती है।

असली कालकोठरी

श्रीयुत एडवर्ड थाम्पसन ने एक नवीन पुस्तक लिखी है, जिस का नाम है, 'दि अदर साइड आफ दि मैडल' यानी तकमे का दूसरा पार्श्व' यह पुस्तक अनेक दृष्टियों से बहुत महत्त्व की है . अब तक सन सत्तावन के गदर की सारी जिम्मेवारी भारतीयों पर पर ही फेंकी जाती है, और यह भी कहा जाता है, कि भारतीयों ने अंग्रेजों पर बड़े क्रूर अत्याचार किये । प्रमाण के लिये सिराजुद्दौला की काल कोठरी उत्तर कानपुर का घातक कुआं पेश किये जाते हैं। इनके द्वारा अंग्रेज युवकों के हृदयों में भारतीयों के प्रतिद्वेष उत्पन्न किया जाता है । यदि ये घटनायें सत्य होती, तब तो कोई विशेष हानि नथी, परन्तु आश्चर्य यह है कि ये घटनायें या तो सर्वथा असत्य हैं और या बहुत बढ़ कर लिखी गई है अनेक बङ्गाली विद्वान कालकोठरी की घटना को निराधार सिद्ध कर चुके हैं । यह होने पर भी यह घटनायें इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में ज्यों की त्यों लिखी है और शिक्षित भारतीयों का विश्वास इस पर कम नहीं हुवा है। गदर के समय अंग्रेजों ने भारतीयों पर जो नृशंत अत्याचार किये हैं, उन पर कोई ध्यान भी नहीं देता । उन्हें कोई जानता तक नहीं। अब श्री एडवर्ड थाम्पसन की पुस्तक से लोगों की आंख खुलेंगी । उन्हें मालूम होगा कि असली काल कोठरी कलकत्ते में न हो कर अमृतसर में थी, और असली घातक कुआं डांडन कानपुर में न होकर अगनाला में था और इन दोनों में भारतीयों का अंग्रेजों ने पैशाचिक क्रुरता के साथ घात किया था। घटनाओं को विस्तार के साथ लिखने का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहां पर स्थान नहीं है। जो लोग श्रीयुत थाम्पसन की पुस्तक पढ़ सकते हैं। अवश्य पढ़ें। इस लिये नहीं कि हम अंग्रेजों के प्रति द्वेष का प्रचार करना चाहते हैं। परन्तु इस लिये कि ऐतिहासिक सत्यता सर्वविदित होसके। झूठे इतिहास से भारतीय नवयुवक जितने गुलाम बन रहे हैं। उतने और किसी चीजसे नहीं। उनमें अपना जातीय अभिमान नष्ट हो रहा है और अंग्रेज़ जाति के प्रति अनुचित सम्मान और श्रद्धा उत्पन्न हो रही है। भारत के शिक्षित लोग अंग्रेजों के अन्दर दैवीय गुणों का अवलोकन करते हैं। उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने में अभिमान समझते हैं। इतिहास का इससे अधिक दुरुपयोग नहीं किया जासकता।

लोकार्नो पैक्ट

यूरोप में लोकार्नो नाम का एक नगर है पिछले दिनों वहां पर इङ्गलैण्ड, फ्रांस, इटली, जैचोस्लाविका आदि शान्तिशाली राष्ट्रों के प्रतिनिधि एकत्रित हुवे थे। गत महायुद्ध के इन विजेता राष्ट्रों ने उस नगर में जर्मनी के साथ एक समझौता किया था, इसी लिये वह समझौता लोकार्नो पैक्ट कहलाता है। इस पैक्ट के अनुसार जर्मनी ने राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) का सदस्य होना स्वीकृत कर लिया है। साथ ही हरजाने आदि के सम्बन्ध में भी मित्रराष्ट्रों का जर्मनी के साथ समझौता होगया है। लोकार्नो पैक्ट पर इङ्गलैण्ड तथा अन्य मित्रराष्ट्रों के राजनीतिज्ञ बड़ी खुशियां मना रहे हैं। मि० चैम्परलेन को इसके लिये सब ओर से बधाइयां दी जारही हैं। जनता को बताया जारहा है कि लोकार्नो पैक्ट द्वारा संसार में युद्ध की सम्भावना और कम होगई है। जिन उच्च सिद्धान्तों के लिये गत महायुद्ध लड़ा गया था और जिन को सन्मुख रख कर राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई थी। उनको कार्य्यरूप में परिणत करने में यह एक नवीन कदम है। परन्तु यदि अधिक गम्भीरता से देखा जाय तो लोकार्नो पैक्ट द्वारा युद्ध सम्भावना कम न होकर और बढ़ गई है। इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ रूस के साथ जिस भावी संघर्ष की अभी से कल्पना कर रहे हैं, यह उसी के लिये तैय्यारी है। अन्तरार्शष्ट्रीय राजनीति के विद्यर्थियों से यह छिपा नहीं है कि भावी महायुद्ध का केन्द्र यूरोप न होकर एशिया होगा। यद्यपि गत महायुद्ध भी साम्राज्यवाद की प्रवृत्तियों के संघर्षके कारण उत्पन्न हुआथा परन्तु उसमें इङ्गलैण्ड का जगत्व्यापी साम्राज्यवाद नष्ट नहीं हुवा उसमें आष्ट्रिया-हंगरी के आधीन अनेक राष्ट्रीयताओं को ही स्वतन्त्र होने का अवसर मिल सका। जर्मनी ने इङ्गलैण्ड के साम्राज्यवाद का मुकाबला करना चाहा था, परन्तु उसे सफलता नहीं हुई। इसका यह अभिप्राय नहीं कि संसारके अन्य राष्ट्र इङ्गलैण्ड की बढ़ती हुई साम्राज्य लिप्सी को चुपचाप सहन कर रहे हैं। फ्रांस, अमेरिका, जैचोस्लाविका आदि सब देशों को साम्राज्यवाद का रोग एक ही प्रकार से हुवा है। इनको अपना साम्राज्य फैलाने के लिये एशिया और अफ्रीका में ही अवसर है। अतः इन महाद्वीपों में इन सब राष्ट्रों के हित आपस में टक्कर खाते हैं। परन्तु एक भारी कठिनता यह है कि एशिया के राष्ट्र भी अब नींद से जगने लगे हैं। वे भी होश संभाल रहे हैं और अपने अपने घर को व्यवस्थित करने लगे हैं इस पर भी मुश्किल यह है कि जापान और एशिया जो कि एशियाई शक्ति हैं और स्वयं भी साम्राज्य लिप्सु है

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इन यूरोपियन शक्तियों का विरोध करने के लिये तत्पर हैं। पिछले दिनों रूस और जापान में एक सन्धि हुई थी, उसका यही प्रयोजन था। स्पष्ट है कि भावी में एशिया के साम्राज्यवाद पर जो महायुद्ध होगा, उस में रूस और जापान एक तरफ होंगे और यूरोपियन राष्ट्र दूसरी तरफ। इसी लिये इंगलैण्ड अपने पक्ष को खूब मजबूत कर रहा है और लोकार्नो पैक्ट द्वारा उस ने जर्मनी को भी अपने साथ बांध लिया है। इस दृष्टि से निस्सन्देह इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञों को खुशी मानने का अवसर है। परन्तु यह नहीं कहा जासकता कि जर्मनी कब तक इस गुट में शामिल रह सकेगा। जर्मनी का बहुतसा लोकमत इस पैक्ट के विरुद्ध है। सेनापति लूडनडोर्फ ने इस पैक्ट को जर्मनी के लिये लज्जास्पद और अपमान जनक बतलाया है। इसी विरोध के कारण जर्मनी के प्रधानमंत्री श्री लूथर ने त्यागपत्र भी पेश किया था। अभिप्राय यह है कि जर्मनी का लोकमत अपने पुराणे शत्रुओं के साथ इस तरह हाथ मिलाने और उनकी कठपुतली बनने को तैय्यार नहीं है। केवल आर्थिक आवश्यकताओं से बाधित होकर जर्मन सरकार को इस पैक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े हैं। उधर रूस के राजनीतिज्ञों ने भी इसके लिये जर्मनी को ताना देना शुरु किया है। रूस और जर्मनी में कुछ समय व्यतीत हुवा सन्धि हुई थी। लोकार्नो पैक्ट के अनुसार राष्ट्रसङ्घ में सम्मिलित होकर जर्मनी इस बात के लिये बाधित है कि वह संघ के आदेशानुसार अवसर पड़ने पर रूस के साथ युद्ध करे। क्यों कि रूस सङ्घ का सदस्य नहीं है। इस हालत में रूस और जर्मनी की सन्धि का अभिप्राय ही क्या है? अतः रूस के राजनीतिज्ञों का लोकार्नो पैक्ट पर हस्ताक्षर करके जर्मनी ने विश्वासघात किया है, यह कहना सर्वथा न्यायसंगत है।

जर्मनी इङ्गलैण्ड वा अन्य मित्रराष्ट्रों का कब तक साथ निभा सकेगा, यह कह सकना कठिन है। परन्तु सम्भवाना यही है कि यह साथ क्षणस्थायी होरहेगा। जर्मनी और फ्रांस का पारस्परिक विरोध एक पैक्ट द्वारा दूर नहीं हो सकता। जर्मनी ब्रिटेन के साथ अपने पुराणे हित विरोध और साम्राज्यवाद में स्पर्धा को इतनी शीघ्र नहीं भुला सकता। क्या आश्चर्य है कि भावी महायुद्ध के शुरु होते ही जर्मनी उसी प्रकार इङ्गलेण्ड के गुट्ट से अलग होजावे जिस तरह गत महायुद्ध में इटली जर्मनी के गुट्ट से पृथक् होगया था।

इटली में एकसत्तात्मक शासन

३० नवम्बर को रोम से निम्नलिखित समाचार आया था "इटली की व्यवस्थापिका सभा ने बिना किसी विवाद के इस सरकारी प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया है कि प्रधानमंत्री व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी न होकर राजा के प्रति उत्तरदायी हो।" इस प्रस्ताव के अनुसार इटली से लोकतंत्र राजाका अन्त होगया है। अब श्री० मुसुलोनी राजा के प्रति जिम्मेवार हो कर अर्थात् पूर्णतया स्वेच्छाचारी और सर्वथा अनुत्तरदायी होकर इटलीका शासन करेंगे। गतमहायुद्धकी समाप्ति पर गगन भेदी आवाजों के साथ दुनियां को बतलाया जारहा था कि यह युद्ध स्वतन्त्रता, समानता और लोकसत्ता के लिये लड़ा गया है। इटली भी इन्हीं लोकसत्ता के सिपाहियों में से एक था परन्तु अब? आश्चर्य जनक परिवर्तन है। मित्रराष्ट्रों के वे ऊच्च सिद्धान्त कहाँ गये? राष्ट्रपति विलसन के १४ सिद्धान्त केवल का-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गज पर ही लिखे रह गये। मुसुलोनी अपनी महत्त्वाकांक्षा की उच्चतम सीमा को पहुंच गया है। अब उसका पतन प्रारम्भ होगा। परन्तु यह पतन धीरे धीरे नहीं अपितु, एक दम और अचानक होगा। क्रान्ति से होगा। इसके चिन्ह दिखाई पड़ने लग गये हैं। इटली में गुप्त समितियां लगी हुई हैं। जातिकारी मुसुलोनी के विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हैं। रूस की क्रांति से पूंजीपतियों और भूपपतियों की सत्ता का नाश हुवा था। इटली की इस क्रान्ति से किस का नाश होगा? क्या संसार व्यापी फैसोट प्रवृत्तियों का?

राष्ट्रीय सप्ताह।

कानपुर में राष्ट्रीय सप्ताह बड़े समारोह के साथ मनाया गया। लाखों आदमी एकत्रित हुवे। राष्ट्रीय महासभा के सिवाय दर्जनों सम्मेलन और महासभाओं के अधिवेशन हुवे। यदि भीड़ की दृष्टि से देखा जाय, तो इस में कोई शक नहीं कि राष्ट्रीय सप्ताह अपूर्व सफलता के साथ समाप्त हुवा। परन्तु लाखों के इस जनसमुद्र में कुछ बातें स्पष्ट रूप से दिखाई देरहीं थी। राष्ट्रीय सप्ताह में राष्ट्रीयता का सर्वथा अभाव था! राष्ट्रीयता की चिन्ह भूत खादी बहुत कम दिखाई पड़ती थी। प्रतिनिधियों तक के शरीरों पर विदेशी वस्त्र शोभायमान थे। गांधी टोपी के स्थान पर मलमल की पगड़ियां और विलायती फैल्ट कैप दिखाई दे रही थीं। तिलक-नगर में आर्य समाज का जूलूस निकला, सनातनियों का जलूस निकला, मुसलमानों का जलूस निकला, परन्तु कांग्रेसका जलूस! वह शायद सभानेत्री के आने पर पहले ही निकल चुका था। उस की राष्ट्रीय सप्ताह में कोई जरूरत नहीं समझी गई-या उसकी इच्छा ही किसी के दिल में उत्पन्न न हुई तिलक-नगर में एक संगीत मण्डली गारही थी-' वेदों का डङ्का दुनियां में बजवा देंगे ' चारों तरफ घिरी हुई जनता कहती थी-' बोलो! वैदिक धर्म की जय '। दूसरी टोली गारही थी-' इस्लाम के लिये सिर तक कटा देंगे"। घिरी हुई जनता हर्ष से कहती थी-' अल्लाहो! अकबर' इसी तरह सब जगह साम्प्रदायिक-या जातिगत भजन और जयनाद सुनाई पड़ रहे थे। स्वराज्य की लहर या राष्ट्रीयता का नाद कहीं भी न सुनाई पड़ता था। कानपुर के उस भारी जनसमूह में घूमते हुवे एक दर्शक के लिये यह समझना कठिन था कि यह राष्ट्रीयता का समारोह है। कांग्रेस पिण्डाल में जाइये, वहां आप स्वराज्य-प्राप्ति के उपायों को सुनेंगे। मालूम होगा कि आप भारत की राष्ट्रीय महासभा में बैठे हैं। पर वहां से बहार निकल कर देखिये, जातिगत विद्वेष और साम्प्रदापिक भावों से सारा वायुमण्डल परिपूर्ण है। आर्य स्वराज्य-सभा के प्लेटफार्म पर मुसलमानों के विरुद्ध आग उगली जारही है, सनातन धर्म महामण्डल में आर्य समाज को गालियां सुनाई जारही हैं और अलीगढ़ की मुस्लीम लीग में भारत पर इस्लामी हुकूमत को फिर स्थापित करने के सुपने लिये जारहे हैं? आज राष्ट्रीय प्रप्ताह की यह दशा है! जब १९२१ के राष्ट्रीय सप्ताह से १९२५के राष्ट्रीय सप्ताह की तुलना कीजिये, आकाश और पाताल का अन्तर है ४वर्षों में भारत और का और होगया है। प्रतिक्रिया की एक वेगवती लहर सारे भारत पर चल रही है। देखें, इस लहर को गुजारने में कितना समय लगता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राष्ट्रीय महासभा।

इस वर्ष राष्ट्रीय महासभा के सभापति पद को एक भारतीय महिला ने सुशोभित किया था। राष्ट्रीय महासभा के इतिहास में यह पहला ही अवसर था, जब कि एक भारतीय महिला ने इस उच्च पद को ग्रहण किया श्रीमती सरोजिनी नायडू ने सभानेत्री के कार्य का बड़ी योग्यता से सञ्चालन किया। उनका प्रारम्भिक भाषण बहुत ही योग्यता से पूर्ण था। सरोजिनी देवी की अपूर्व प्रतिभा और कवित्व शक्ति का अद्भुत चमत्कार उस में स्पष्टरूप से दिखाई पड़ रहा था। सभानेत्री ने भारत की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर बहुत उत्तम प्रकाश डाला। देश के सम्मुख नवीन कार्य निर्दिष्ट करते हुवे आपने ग्रामसुधार पर बहुत जोर दिया। ग्रामों के सुधार के लिये सच्चे देश भक्त कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है, जो कि निःस्वार्थ भाव से कार्य करने के लिये तैय्यार हों। ग्रामसुधार के बिना भारत का उद्धार नहीं होसकता। भारत की वास्तविक जनता ग्रामों में ही निवास करती है। और उसमें राजनीतिक जीवन उत्पन्न किये बिना स्वराज्य मिलना सम्भव नहीं है। स्वराज्य दलने कौंसिलों में जो कार्य किया है, उसकी भी सभानेत्री महोदया ने बहुत प्रसंसा की। कौंसिलों के भारी कार्यक्रम के सम्बन्ध में आपने कहा कि देश की तरफ से संयुक्त मांग सरकार के सम्मुख रखी जा चुकी है। अब सरकार की बारी है कि वह उसका जवाब दे। हमारी भावी नीति सरकार के इसी उत्तर पर आश्रित है। यदि वो उत्तर संतोष जनक हो, तब तो अपनी वर्तमान नीति को दुहराने की हमें आवश्यकता होगी। और यदि बड़ी व्यवस्थापिक सभा के आगामी पत्र के अन्त तक हमें कोई उत्तर न मिले और या सन्तोषजनक उत्तर न मिले, तो राष्ट्रीय महासभा को निश्चय करना चाहिये कि कौंसिलों के सब सदस्य कौंसिलों को छोड़ कर बाहर चले आवें और कैलाश से कन्या कुमारी तक, तथा सिन्धु से ब्रह्म पुत्रा तक सम्पूर्ण देश को सरकार के साथ संघर्ष के लिये तैय्यार करें।

इसी प्रकार हिन्दू मुसलिम समस्या प्रवासी भारतवासी आदि सभी विषयों पर सभानेत्री के विचार अत्यन्त उपयुक्त और समयोचित थे।। सभानेत्री के भाषण से श्रोताओं के अन्दर नवीन उत्साह का संचार हुवा।

मुख्य प्रस्ताव।

राष्ट्रीय महासभा का मुख्य प्रस्ताव पं० मोतीलाल जी नेहरु ने पेश किया। प्रस्ताव बहुत लम्बा है, परन्तु उसके भाव को संक्षेप में इस प्रकार प्रगट किया जासकता है- "यह कांग्रेस सविनय आज्ञा भंग और सत्याग्रह में अपना विश्वास प्रगट करती है और समझती है कि सत्याग्रह ही स्वराज्य प्राप्ति का एक मात्र उपाय है, परन्तु देश अभी इसके लिये तैयार नहीं है। इस लिय कांग्रेस निश्चित करती है कि—

(क) जनता को सत्याग्रह के लिये तैयार करने के लिये राजनीतिक कार्य को हाथ में लिया जाय।

(ख) इस राजनीतिक कार्य का सिद्धान्त आत्म विश्वास को रखा जाय। इस सिद्धान्त के अनुसार निम्नलिखित कार्यक्रम को राजनीतिक कार्य्य के लिये स्वीकृत किया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

१—देश के अन्दर चरखे और खद्दर का प्रचार जातीगत एकता, अछूतोदार, शराब आदि मादक द्रव्यों का निषेध, श्रमियों और पूंजीपतियों तथा किसानों और जमींदारों में ठीक सम्बन्धों की स्थापना और भारतनिवासी तथा प्रवासी भारतियों के राष्ट्रीय, आर्थिक, व्यावसायिक और व्यापारिक हितों की रक्षा करना।

२—विदेशों में भारत के सम्बन्ध में ठीक ठीक खबरों का पहुंचाना।

३—व्यवस्थापिका सभाओं में राजनीतिक कार्य का आधार १८ फरवरी १९२३ और ८ सितम्बर १९२५ की राष्ट्रीय मांगों को बनाया जाय। इसके लिये

(१)—स्वराज्य दल शीघ्र ही सरकार को इस राष्ट्रीय मांग का उत्तर देने के लियेप्रेरित करेगा। यदि सरकार ने फरवरी मास (१९२६) के अन्त तक कोई उत्तर न दिया, अथवा यदि सरकार का उत्तर कांग्रेस की कार्यकारणी समिति के अनुसार सन्तोषजनक न हुवा, तो स्वराज्य दल के सदस्य सब व्यवस्थापिका सभाओं से बाहर चले आवेंगे।

(२)—इसके बाद स्वराज्यदल के सदस्य विशेष अवस्थाओं के बिना व्यवस्थापिका सभा में सम्मिलित न होंगे।

(३) कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक बुलायगी, जो कि देश में करने के लिये एक कार्यक्रम तैयार करेगी। यही कमेटी यह भी निश्चय करेगी कि अगले निर्वाचन में कांग्रेस के उम्मीदवार किन शर्तों पर चुनाव के लिये खड़े हों। परन्तु यह शर्त स्थिर समझनी चाहिये कि सरकार से सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर सरकार की कृपा से प्राप्त कर स्वराज्यदल के उम्मीदवार स्वीकृत न करेंगे।

(४) यदि सरकार का उत्तर सन्तोषजनक हुआ तब भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ही भावी नीति का निर्धारण करेगी।'

पं० नेहरू जी के प्रस्ताव पर अनेक संशोधन पेश किये गये। परन्तु इनमें से मुख्य संशोधन 'प्रतियोगी सहयोग' की नीति के अनुयायियों की तरफ से पं० मदनमोहन मालवीय जी ने पेश किया बहुत बड़े बहुमत के साथ राष्ट्रीय महासभा ने मूल प्रस्ताव को स्वीकृत किया। जिस नीति का अनुकरण प्रारम्भ से ही स्वराज्यदल को करना चाहिये था, उसका निश्चय अब कानपुर में किया गया है। कौंसिलों द्वारा कुछ भी प्राप्त कर सकना असम्भव है। असहयोगीदल प्रारम्भ से ही यह कह रहा हैं। परन्तु स्वराज्यदल अपनी बाधानीति से सुधार के ढकोसले को तोड़ने की आशा रखता था। वह आशा पूरी नहीं हुई और कौंसिलों के कार्य की अनुपयोगिता जनता के सम्मुख स्पष्ट हो गई। इस हालत में यही उचित था कि कौंसिलों को छोड़ कर देश में वास्तविक कार्य को अपने हाथों में लिया जाय। प्रसन्नता की बात है कि कानपुर में यही निश्चय किया गया है। हमें पूरा विश्वास है कि फरवरी मास के अन्त तक भी सरकार राष्ट्रीय मांग का कोई उत्तर नहीं देगी। यदि सरकार के प्रमुखों के भाषणों को ही उत्तर समझा जाय, तब तो उसके सन्तोषजनक न होने में सन्देह ही क्या है? बड़ी व्यवस्थापिका सभा का उद्घाटन करते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुये वायसराय ने और पिछले दिनों भारत-मन्त्री ने जो भाषण किये हैं, उनसे लिबरल दल तक भी सन्तुष्ट नहीं हैं। ब्रिटिश लोग शक्ति के उपासक हैं, शक्ति से दबते हैं, शक्ति के सामने सिर झुकाते हैं। एसेम्बली में पेश की गई शक्ति हीन माँगों की सरकार जरा भी परवाह नहीं करती। इस हालत में यह निश्चित है कि सरकार राष्ट्रीय मांग का कोई भी उत्तर न देगी। यदि फरवरी मास के बाद स्वराज्यदल ने कौंसिलें का खाला कर दिया और देश में विधायक कार्यक्रम का प्रारम्भ कर दिया तो निस्सन्देह बहुत बड़ी बात होगी। कौंसिलें से किसी भी तरह की आशा रखना मृगतृष्णा के समान है। उन का मोह त्याग कर, तथा दूसरों को भी उनका दुरुपयोग न करने देकर यदि देश को सत्याग्रह के लिये तैय्यार किया जाय तो कानपुर का यह प्रस्ताव इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

प्रतियोगी-सहयोग।

कानपुरमें प्रतियोगी-सहयोग की बुरी तरह पराजय हुई। परन्तु प्रतियोगी सहयोग के नेता इस से निराश नहीं हैं। वे इसे सुचिन्ह समझते हैं। श्रीयुत केलकर ने बात चीत करते हुवे कहा था कि जो स्थिति गया में स्वराज्यवादियों की थी, वही अब हमारी है तब वे परिवर्तन वादी थे, अब हम परिवर्तन वादी हैं। शीघ्र ही हम इन नये अपरिवर्तन वादियों को पराजित करने में सफल होंगे। इसी के अनुसार श्री केलकर, जयकर, मुञ्जे आदि नेताओं ने प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिया है। प्रतियोगी सहयोग के प्रचार के ही लिये नेताओं ने व्यवस्थापिका सभाओं से त्याग पत्र दे दिये हैं। श्रीयुत केलकर की आशा व भविष्यवाणी ठीक हो सक्ती है। पर उसके लिये एक शर्त है। यदि पं० नेहरू जी तथा उनके अनुयायी स्वराज्यदल ने अपने प्रस्ताव के अनुसार कार्य किया, यदि उन्हों ने देश में फिर से सत्याग्रह आन्दोलन को चलाने का दृढ़ निश्चय कर लिया तब तो श्री० केलकर को निराश ही होना पड़ेगा। देश कौंसिलों की निरर्थकता को खूब समझता है। साधारण जनता अब भी पहले ही की तरह कुर्बानी के लिये तैय्यार है। पर उनके लिये नेता चाहियें। नेता उत्साह शून्य हैं, निराश हैं या जातिगत झगड़ों में लगे हुवे हैं। यदि नेहरू जी इस अचेतनता को दूर कर १९२१ के दिन ला सके अथवा अपने अनुयायियों को कम से कम सच्चे दिल से ग्रामसुधार आदि के विधायक कार्यक्रम में प्रवृत्त कर सके, तब तो उनकी विजय निश्चय है। नहीं तो श्री० केलकर की भविष्य वाणी ही ठीक होगी। या तो स्वराज्यदल को उन पर चढ़ना होगा, या नीचे गिरना होगा। वह बीच में नहीं खड़ा रह सकता। प्रतियोगी-सहयोग नीचे की तरफ जाता है, पर यदि उनपर जाना असम्भव हुवा तो यह अवश्यभावी है। पं० मालवीय जी कांग्रेस में बार बार प्रतिनिधियों से कह रहे थे कि स्वराज्य दल कहता बहुत है, करता कम है। वादे बड़े बड़े कर लेता है, पर उन्हें पूरा नहीं करता। अब तक निस्सन्देह स्वराज्यदल ने यही किया है। यदि आगे भी उसने यही किया, तब तो 'प्रतियोगी-सहयोग की विजय अनिवार्य है। कौंसिलों में स्वराज्यदल की वर्तमान नीति देर तक नहीं चल सकती उसे ऊपर या नीचे-किसी तरफ आवश्य जाना पड़ेगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कांग्रेस की भाषा-हिन्दुस्तानी

इस वर्ष राष्ट्रीय महासभा ने एक बहुत ही महत्त्व पूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किया है। वह है-हिन्दुस्तानी को कांग्रेस की भाषा बनाने का प्रस्ताव। भारत की राष्ट्रीयता पर इस से बड़ा कलङ्क और कौन सा हो सकता था कि उसकी राष्ट्रीय महासभा की भाषा अंग्रेजी समझी जाय। उसके कार्य्यालय का कार्य विदेशी भाषा में हो और नेतागण अंग्रेजी में देश के भाग्यों का निर्णय करें। प्रसन्नता की बात है कि इतनी देर बाद अब इस ओर ध्यान दिया गया है और हिन्दुस्तानी—जोकि देवनागरी और उर्दू लिपियों में लिखी जा सकेगी-कांग्रेस की भाषा के रूप में स्वीकृत कर लिया गया है। परन्तु प्रस्ताव अब स्वीकृत हुवा है, वह भी पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं है। इसमें प्रान्तीय भाषाओं के सिवाय अंग्रेजी की भी काफी गुञ्जाइश रखी गई है। हिन्दुस्तानी को ही पूर्ण अधिकार का कुछ सज्जनों ने इस आधार पर विरोध किया कि बङ्गाल मद्रास आदि प्रान्तों की हिन्दुस्तानी मातृ भाषा नहीं है पर क्या इन सज्जनों से पूछ सकते हैं कि क्या अंग्रेजी आपकी मातृ भाषा है? हिन्दुस्तानी का तो अन्य प्रान्तीय भाषाओं से पर्याप्त घनिष्ट सम्बन्ध है। अंग्रेजी तो प्रत्येक भारतीय के लिये पूर्णतया विदेशी है। परन्तु उसके प्रयोग में किसी को संकोच वा आशङ्का नहीं होती। जितनी देर में हमारे बड़े बड़े नेताओं ने अंग्रेजी का अभ्यास किया है, हिन्दुस्तानी का अभ्यास करने में इस का $\frac{1}{20}$ भाग भी नहीं लगता फिर भी उन्हें उस में कठिनता होती है। अस्तु जो प्रस्ताव इस कांग्रेस ने हिन्दुस्तानी भाषा के सम्बन्ध में स्वीकृत किया है यदि उसका भी भावी में पालन किया जाय तो बहुत उन्नति की सम्भावना है।

प्रवासी भारतवासी

डा० अब्दुल रहमान के नेतृत्व में दक्षिणीय अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों का जो डेपुटेशन इस समय भारत में भ्रमण कर रहा है। वह भी कानपुर कांग्रेस में सम्मिलित हुवा था। कांग्रेस ने अपने प्रवासी भाइयों के प्रति समुचित शब्दों में समवेदना प्रकट की और 'एरियाज़ रिजर्वेशन बिल' आदि विधानों का जो कि भारतीयों के साधारण मानवीय अधिकारों का भी अपहरण करने के लिये इस समय दक्षिण अफ्रीका की लोकसभा में प्रस्तुत हैं, घोर विरोध किया। इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए महात्मा गांधी ने बहुत ही मर्म भेदी व्याख्यान दिया। महात्मा जी के भाषण के कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—"भारतीयों का बहिष्कार करने के लिये जो कुछ भी किया जा सकता है, दक्षिण अफ्रीका की सरकार कर रही है। यह डेपुटेशन आप की सहायता मांगने के लिये आया है, और इस प्रस्ताव द्वारा हम पूर्ण सहायता देने का निश्चय करते है। अतः यह प्रस्ताव स्वीकृत करने से पूर्व आपको जान लेना चाहिये कि आप क्या स्वीकृत कर रहे हैं। यदि दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया, तो भारत को आर्थिक तथा अन्य भांति की सहायता के लिये तैयार होना होगा। यद्यपि मैं देखने में बहुत कमजोर मालूम पड़ता हूं, पर दक्षिण अफ्रीका की खातिर सत्याग्रह करने के लिये मुझ में काफी शक्ति है। मैं आप को कहना चाहता हूँ कि 'एरियाज़ रिज़र्वेशन बिल' दक्षिण अफ्रीका में हमारे भाइयों के सिर पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

डैमोक्लीज़ की तलवार की तरह लटक रहा है मैं इस प्लेटफार्म से दक्षिण अफ्रीका के राजनीतिज्ञों को कहता हूँ कि यदि उन्होंने भारतीयों के साथ प्रारम्भिक माने गये न्याय तक करने में ज़रा भी संकोच किया तो वे अपनी बाइबल से इन्कार कर रहे होंगे और अपने ईश्वर की सत्ता तक से इन्कार कर रहे होंगे।

निस्सन्देह प्रवासी भारत वासियों का ही एक ऐसा प्रश्न है। जिस पर भारत के सब राजनीतिक दल एक मत हैं। क्या नरम और क्या गरम, क्या सहयोगी और क्या असहयोगी – सब इस प्रश्न पर सहमत हैं। भारतीयों को जाने दीजिये भारतीय सरकार भी इस प्रश्न पर भारतीयों के साथ पूर्ण सहमति रखती है। बड़ी व्यवस्थापिका सभा में भाषण करते हुए वायसराय ने स्पष्ट शब्दों में दक्षिण अफ्रीकन सरकारकी भारत विरोधिनी नीति की निन्दा की थी। वायसराय ने इसी भाषण में यहां तक कहा था कि दक्षिण-अफ्रीकन सरकार जिस नीति का अनुसरण कर रही है, वह ब्रिटिश साम्राज्य को एक सूत्र में बांधने वाले भावों के प्रतिकूल है! इस प्रकार सरकार और जनता सभी लोग प्रवासी भारवासियों के कष्टों को चिन्तित भाव से देख रहे हैं पर सब निःसहाय हैं। भारतीय सरकार का विरोध भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत दो तिहाई जनता की सरकार अशक्त है। एक साधारण उपनिवेश के विरुद्ध उसकी सब शक्तियां व्यर्थ हैं। इस से अधिक भारत का अपमान और क्या हो सकता है?

इस अवस्था में भारत को क्या करना चाहिये? दक्षिण अफ्रीका का विरोध करने का केवल एक ही तरीका है और वह तरीका है बदले का। कलकत्ता कार्पोरेशन ने इसके लिये मार्गप्रदर्शन का कार्य्य किया है। कार्पोरेशन ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया है कि जिस के अनुसार दक्षिण अफ्रीका के किसी गोरे निवासी को कलकत्ता कार्पोरेशन में कोई नौकरी नहीं मिलेगी और न ही उनको किसी प्रकार के ठेके दिये जावेंगे। इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में बने किसी माल को कलकत्ता कार्पोरेशन न खरीदेगा और न प्रयोग करेगा।

बड़ी व्यवस्थापिका सभा में भी इसी प्रकार बदले का एक प्रस्ताव श्रीयुत गयाप्रसाद सिंह ने उपस्थित किया है। यद्यपि गृहसदस्य के अनुरोध से अभी उस पर विचार नहीं हुआ परन्तु, शीघ्रही वह प्रस्ताव पेश किया जायगा और आशा करनी चाहिये कि वह स्वीकृत भी हो जायगा। भारत के पास बदले के सिवाय इस समय कोई उपाय नहीं है। यद्यपि बदला भी स्वराज्य न होने के कारण बहुत समर्थ नहीं हो सकता, पर उसके सिवाय वर्तमान अवस्थाओं में अन्य कोई उपाय भी नहीं है।

कम्यूनिष्ट कान्फरेन्स

इस वर्ष कानपुर में अन्य अनेक सम्मेलनों और कान्फ्रेंसों के साथ 'प्रथम कम्यूनिस्ट कान्फ्रेंस' का भी अधिवेशन हुआ है, पत्रों में इस अधिवेशन की विशेष चर्चा नहीं हुई। कानपुर में भी बहुत कम जनता इस में सम्मिलित हुई। एक साधारण से शामियाने में कुछ सौ आदमियों की उपस्थिति में अखिल भारतीय प्रथम कम्यूनिष्ट कान्फरेन्स की गई। बड़े बड़े नेता इसमें शामिल नहीं हुवे। बहुतों ने इसे कुछ मनचलों की हिलचुल मात्र समझा। अब तक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तक भारत में कम्यूनिष्ट दल की जो अवस्था है, उसको देखते हुवे और अधिक आशा भी नहीं की जा सकती। परन्तु हमारा विश्वास है कि शीघ्र ही वह दिन आयगा जब 'कम्यूनिष्ट दल' भारत का सब से अधिक शक्तिशाली राजनीतिक दल बन जायगा। भारत में अमीरी और गरीबी का बड़ा भारी सवाल है। यहां के ताल्लुकेदार और राजा अब भी १४वीं सदी के हाकिम बने हुवे हैं। वे जनता को अपनी जूतियों से भी बदतर समझते हैं। गरीबों के पेट काट कर अपने विकिय शरीर को पालने में उन्हें जरा भी सङ्कोच नहीं होता। जेठ की गर्मी और माघ की कड़ी सर्दी में की गई किसानों की सारी मेहनत कुछ मोटे पेट वाले जमींदारों के पेट में चली जाती है। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि भारत की साधारण जनता सरकारी अधिकारियों की अपेक्षा अपने जमीदारों और ताल्लुकेदारों से अधिक तकलीफ पाती है। आजकल-जबकि सम्पूर्ण देश में सब प्रकार के दमन और अनुचित अधिकारों के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन चल रहा है तब इन धनपतियों के दमन और अत्याचार को किस प्रकार सहा जा सकता है। आजकल के जातिगत आन्दोलनों का मूल बहुत कुछ वर्तमान जागृति भी है। इसी जागृति का परिणाम है कि जागृत हिन्दू मुसलमानों के दबाव को नहीं सह सकते, पञ्जाब के गरीब मुसलमान साहूकार हिन्दुओं के दबाव को नहीं सह सकते, दक्षिण के अछूत और अ-ब्राह्मण ब्राह्मणों के अनुचित अधिकार को नहीं देख सकते। जागृति एक क्षेत्र में नहीं हुवा करती वह सर्वतोमुखी होती है। जब जनता में ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध भाव उत्पन्न होंगे, वे अपने राजनीतिक अधिकारों का अनुभव करेंगे-तब अन्य अत्याचारों को वे आसानी से नहीं सह लेंगे। इस लिये इस जागृति के काल में भारत की वास्तविक उन्नति के लिये किसानों को जमींदारों के विरुद्ध और श्रमियों को पूंजीपतियों के विरुद्ध अपने अधिकारों की रक्षा के लिये तैयार होना चाहिये। भारत का स्वराज्य इसके बिना प्राप्त नहीं होसकता। जमींदार और पूंजीपति ब्रिटिश राज्य के आधार स्तम्भ हैं। अमीर लोग स्वभाविक रूप से परिवर्तन पसन्द नहीं करते। इससे उनको हितों का विघात होता हैं। फिर उन की आय का आधार ही गरीबों पर अत्याचार है। स्वराज्य में वे ये अत्याचार न कर सकेंगे। इस लिये भारत में ब्रिटिश राज्य के सच्चे मित्र ये धन के स्वामी लोग ही हैं। अतः यहां साधारण जनता में कम्यूनिष्ट विचारों के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिये कि भारतीय स्वराज्य कभी भी जमींदारों और पूंजीपतियों का स्वराज्य नहीं हो सकता। अवश्य ही यहां पर भी रूस की तरह राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त होगी। यह नहीं होसकता कि भारत में राजनीतिक स्वराज्य तो स्थापित होजावे, पर आर्थिक और व्यवसायिक दृष्टि से भारतीय जनता गुलाम ही बनी रहे। इन विचारों को सम्मुख रखते हुवे हमें विश्वास है कि भारत में कम्यूनिष्ट या साम्यवादी आन्दोलन के लिये बड़ा क्षेत्र है। यदि ठीक तरीके से इस आन्दोलन को सञ्चालित किया जाय, तो अवश्य ही बहुत कार्य किया जा सकता है। अजमेर के प्रतिनिधियों के निर्वाचन के झगड़े में पड़ कर पहली बार ही कम्यूनिष्ट लोगों ने अपने को बदनाम कर लिया। यह अच्छा नहीं हुवा। यदि वे अधिक बुद्धिमत्ता से कार्य करते, तो अधिक लोक प्रियता प्राप्त कर सकते। यद्यपि कानपुर में तो नहीं, पर इस के बाद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब कम्यूनिष्ट पार्टी ने अपने कार्य को सुचारु रीति से प्रारम्भ कर दिया है। दिल्ली से कम्यूनिष्ट दल के प्रधान मन्त्री ने विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसके अनुसार वर्तमान समय में दल किसानों और श्रमियों को संगठित करने का प्रयत्न करेगा। हम इस कार्य में साम्यवादियों की हृदय से सफलता चाहते हैं।

वायसराय का भाषण।

बड़ी व्यवस्थापिका सभा का उद्घाटन करते हुए वायसराय ने जो भाषण दिया है। वह उनके पहले भाषणों की तरह सारहीन और निराशाजनक है। राष्ट्रीय मांग को जिस उत्तर के लिये स्वराज्य दल बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहा है, उसे वायसराय ने पूरी तरह ठुकरा दिया है। वायसराय यह चाहते हैं कि भारत के सब राजनीतिक दल हाथ जोड़ कर, घुटने टेक कर सरकार के सम्मुख खड़े होजायें और विनम्रस्वर से मिल कर प्रार्थना करें कि' हे हजूर माई बाप! हम पर कृपा करो, हम दीन हैं, हमें स्वराज्य का एक टुकड़ा और दे दो। यह करने पर ही वे संतुष्ट होंगे और समझेंगे कि अब भारतीयों ने सहयोग के लिये उत्कण्ठा प्रगट की है। असहयोग स्थगित किया जा चुका है, निरन्तर वाधारीति का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा कर कौंसिलों में गई हुई स्वराज्य पार्टी ने परोक्षतः सहयोग का प्रारम्भ कर दिया है। लार्ड मेस्टन के शब्दों में भारत में आराम के साथ दिन कट रहे हैं। विद्यार्थी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, सब सरकारी पद भरे हुवे हैं। किसान खेतों में शान्ति से हल चला रहे हैं। सब आराम हैं, चैन है। पर वायसराय महोदय को, इस से भी संतुष्टि नहीं। वे तो भारत की राजनीतिक जागृति को पूरी तरह कुचला हुआ देखना चाहते हैं। कठिनता यही है कि राजनीतिक जागृति दम्भ से शान्त नहीं हुवा करती। यह ऐसी आग है. जिसको बुझाने का जितना भी यत्न किया जाय, वह बढ़ती ही जाती है। इस समय भारत की राष्ट्रीय महासभा ने सरकार को जो अन्तिम अवसर दिया है, यदि उसका फायदा न उठाया गया, तो निसन्देह १९२१ के दिनों की फिर पुनरावृत्ति होगी।

रायल कमीशन।

वायसराय ने अपने भाषण में एक रायल कमीशन की नियुक्ति की सूचना दी है, जो भारत में कृषि-सुधार की समस्या पर विचार करेगा। हमारी सरकार को आजकल कृषि सुधार की बड़ी फिकर है। भारत के अगले वायसराय भी कृषि के विशेषज्ञ बनाये गये हैं, उन्होंने अभी से कृषि सुधार की दुहाई देनी भी प्रारम्भ करदी है। भारत को कृषि प्रधान देश समझा जाता है। निस्सन्देह ब्रिटिश शासकों के प्रयत्न से भारत आज कृषि प्रधान देश बन गया है। परन्तु भारत सदा से कृषि प्रधान देश नहीं रहा है। पुराने समयों में यहां पर कृषि की तरह अन्य व्यवसाय भी बहुत उन्नत रहे हैं। भारत का वस्त्रव्यवसाय, नौकानयन आदि संसार भर में प्रसिद्ध रहा है। अब भी इस देश में व्यवसायों की उन्नति की पूरी गुञ्जाइश है। यहां कच्चा माल प्रभूतमात्रा में पैदा होता है। कोयले की भी यहां कमी नहीं है, फिर सञ्चालक शक्ति को उत्पन्न करने के लिये प्रकृति की तरफ़ से बड़े बड़े जलप्रपात हमको प्राप्त हैं, जिनसे विद्युत उत्पन्न कर बहुत सी शक्ति उत्पन्न की जा सकती है। यहां बेकार श्रमीजनता की माँग भी बहुत अधिक है, ये श्रमी बहुत बुद्धिमान और कार्यदक्ष हैं। इन अवस्थाओं के होते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हुवे कोई कारण नहीं समझ आता, जिस से कि इस देश को व्यवसाय-प्रधान बनाने का यत्न न किया जाय। यदि व्यवसायिक उन्नति के लिये रोयल कमीशन की उन्नति होती तब हमें कुछ सन्तोष भी होता। पर कृषि की उन्नति के लिये रोयल कमीशन की क्या ज़रूरत है, यह हमें समझ में नहीं आता। कृषि के ह्रास के क्या कारण हैं, यह विषय प्रायः सर्वविदित है। उसके लिये किसी विशेष अनुसन्धान की आवश्यकता नहीं है। सच बात तो यह है कि बृटिश शासक भारत को स्थिर रूप से दीप प्रधान रखना चाहते हैं। वे भारत को कच्चे पदार्थों की पूर्ति के लिये एक विस्तृत क्षेत्र बना देना चाहते हैं। इसी के लिये यह सब प्रयत्न किया जारहा है। फिर उनकी यह भी इच्छा है कि सर्वसाधारण जनता का ध्यान स्वराज्य से हट जाय और जनता बृटिश सरकार को अपना सच्चा हितचिन्तक समझने लगे। पर शोक यही है कि अब भारतीय लोग और अधिक धोखे में नहीं आसकते।

आर्य समाज की विजय

पाठकों को मालूम होगा कि पालघाट के सिटी मजिस्ट्रेट के सम्मुख एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुकदमा चल रहा था। जो अछूत मुसलमान या ईसाई हो जाते हैं, वे खुली तरह हिजातियों के साथ निषिद्ध सड़कों पर आ जा सकते हैं। परन्तु यदि कोई अछूत आर्य समाजी हो जाय, तो उसको यह अधिकार नहीं मिलता था। मि० सङ्करन, जो कि पहले अछूत समझे जाते थे, आर्यसमाजी होगये और उन्होंने भी अन्य जातियों की तरह निषिद्ध सड़कों पर चलना शुरू किया। इस पर उनके ऊपर मुकदमा चलाया गया। प्रसन्नता की बात है कि सिटी मजिस्ट्रेट ने यह निर्णय देदिया है कि आर्यसमाज द्वारा शुद्ध किये गये अछूत अन्य द्विजातियों व मुसलमान ईसाइयों की तरह निषिद्ध सड़कों पर जासकते हैं। इस निर्णय से दक्षिणीय भारत में आयसमाज के लिये बहुत बड़ा मैदान खुल गया है। अब अछूतों को मुसलमान या ईसाई बनने का कोई प्रलोभन न रहेगा और वे अपने मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिये निःसङ्कोच आर्यसमाज की शरण में आसकेंगे।

टङ्कारा
में
श्री महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी की धूम

गत सप्ताह महर्षि की जन्म भूमि टङ्कारा नगर में पांच दिन तक बड़े समारोह से शताब्दी महोत्सव मनाया गया। यद्यपि मार्ग कुछ विकट है और तीन चार गाड़ियां भी बदलनी पड़ती हैं तथापि यात्रियों की आकृति से विदित होता था कि उनके चित्त कितने प्रफुल्लित हैं। जिस श्रद्धा और विश्वास को साथ लेकर पौराणिक जन गङ्गा यमुनादि तीर्थों पर स्नान करने जाते हैं। उससे भी कहीं अधिक श्रद्धा और भक्ति के सूत्र में आबद्ध आर्य्यजन महर्षि जन्म भूमि तीर्थ में प्रवेश कर रहे थे। इस आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव वे ही कर सकते हैं, जिन्होंने इस परम पुनीत गङ्गा में स्नान किया है।

यद्यपि भारत के लाल की जन्मदातृ मां टङ्कारा की तत्कालीन दशा जानना अति दुष्कर है तथापि इस वर्तमान काल में भी नगरके विशाल, फाटक दीर्घ प्राचीर (फ़सील) इसकी उत्तमता का परिचय देते हैं कि किसी समय मोरवी स्टेट की राजधानी यही थी।

उत्सव का कार्य क्रम।

प्रथम दिवस ७ फ़रवरी को मुख्य मण्डप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में वृहद यज्ञ हुआ, इस के पश्चात् नगर कीर्तन किया गया और नगर कीर्तन के साथ २ अत्यन्त सत्कार पूर्वक मोरवी नरेश तथा वीरपुराधीश को स्टेशन से टङ्कारा शहर में लाया गया।

आपने जो शताब्दी महोत्सव में महती सहायता प्रदान की थी उसके उपलक्ष्य में आपको शताब्दी सभा ने अभिनन्दन पत्र दिया पश्चात् आपने धन्यवाद प्रगट करते हुए अपने भाषण में कहा कि मुझे बड़ा अभिमान है कि ऐसे महान् पुरुष ने मेरी स्टेट में जन्म लिया। इसके पश्चात् कई एक भाषण तथा भजन हुये।

शेष चार दिनों में कार्यक्रम अति मनोरञ्जक रहा भाषण प्रायः गुजराती भाषा में होते थे परन्तु गुर्जर भाषा में संस्कृत मिश्रित होने के कारण बहुत कुछ समझ में आ जाती थी और कई एक सन्यासी महात्माओं के उपदेश आर्य्य भाषा में होते थे। वर्ण व्यवस्थादि पर कई एक प्रस्ताव भी पास हुए, यह सब कार्य्यवाही मुख्य मण्डप में होती थी, दूसरे मंडपों में भी समय २ पर परिषदें होती रहीं। बीच २ में दो दिन महिला परिषदें हुई, यह परिषदे कई एक बम्बई तथा बड़ोदा की योग्य देवियों की अध्यक्षता होती में रहीं। इस में कई भाषण आर्य्य भाषा में हुए, इससे स्त्रियों पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा।

अन्तिम शिवरात्रि के दिन महर्षि के सम्बन्धी आदियों तथा ऋषिगृह का परिचय कराया गया, जिस में महर्षि के वंश का केवल एक ही पुरुष जीवित था जो कि उन की बहिन के लड़केका पोता था दूसरे १०५ वर्ष के बूढ़े यवन जातीय इब्राहीम पटेल थे जो कि उन के घरके पास रहते थे, इस वृद्ध पुरुष से पूरा पता मिला कि महर्षि की जन्म भूमि टंकारा है आपने कहा कि मैं *ऊन्धरे वाले छोकरे मूल शंकर को जानता हूं मेरे साथ खेलता था और बड़ा झगड़ालू था पश्चात् महर्षि के वंशजमहाशय पोपट लाल ने ऋषि के वंश की वंशावली सुनाई जोकि महर्षि के घरसे निकला थी इससे जनता को और भी निश्चय हो गया कि महर्षि का जन्म भूमि वास्तव में टङ्कारा है। इस प्रकार से सफलता पूर्वक शताब्दी महोत्सव यज्ञ पूर्ण हुआ।

टंकारा

में आर्यसमाज की स्थापना।

शोक जब जगत् को प्रकाशित करने वाली ज्योति का प्रादुर्भाव टङ्कारा के अन्दर हुआ था उस समय त्याग की मूर्ति टङ्कारा भूमि ने चारों दिशाओं में ज्योति को भेजा किन्तु स्वयं अन्धकार में रह गई, अथवा यही कारण है कि प्रसुप्त मन्द ज्योति अपने पूर्ण यावन में आई तो इसका सर्वदा के लिये परित्याग करके देशान्तर को चली गई और फिर कभी मुंह नहीं दिखाया। पाठक! इस बात को पढ़ कर विस्मयान्वित होंगे कि महर्षि की जन्मभूमि में अब तक आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी, अब शताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज की स्थापना हुई, पोपटलाल जी मन्त्री और कई ब्राह्मण जातीय जन सभासद हुये साथ ही एक संस्कृत पाठशाला की नींव भी डाली

* ऊन्धरा गुजराती भाषा में चूहे को कहते हैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गई। महर्षि की शताब्दी महोत्सव ने टङ्कारा निवासी जनता को कितना प्रभावित और जाग्रत किया यह दर्शक जनही अनुभव करते हैं। वास्तव में महात्मा ऋषि लोग सब को बांट कर फिर स्वयं उप भोग करते हैं। भारतवर्ष के गांव २ में आर्य समाज स्थापित हुई किन्तु टङ्कारा में १०१ वर्ष के पश्चात् आर्यसमाज स्थापित हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि टङ्कारा भूमि फले। ओर फूलो और चिरकाल तक यश की भागी बनी रहे एक नहीं किन्तु अनेकों दयानन्दों को उत्पन्न करने वाली भूमि सिद्ध हो।

प्रश्नोत्तर

ले०—बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०

१. नर्क क्या है ?	दुष्टा भार्या का सहवास।
२. स्वर्ग की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है?	सत्कर्म, सद्वचन और सत्यमनन से।
३. शत्रु कौन है ?	पापकर्म और असंयत इन्द्रियसमूह।
४. मित्र कौन है ?	इन्द्रिय निग्रह।
५. जीते जी कौन मर गया ?	जो भगवद्भक्ति से विमुख हुआ।
६. विकट जाल कौनसा है ?	साँसारिक मायामोह का बन्धन।
७. नेत्र होते हुए भी अन्धा कौन हो जाता है ?	जो कामदेव के वशीभूत होकर स्त्रियों के पीछे मारा २ फिरता है।
८. कठिन रोगग्रस्त कौन है ?	भौतिक शरीर और लोकेष्णा में फंसी हुई आत्मा।
९. कठिन रोग की औषधि क्या है ?	भले बुरे की पहिचान।
१०. बहुमूल्य आभूषण कौन सा है ?	सत्याचरण और कर्तव्यपालन।
११. पुण्य तीर्थ कौन सा है ?	अन्तःकरण की पवित्रता और गुरुजनों की सेवा।
१२ संसार से बाहर कौन है ?	जिसका हृदय परमपिता की सच्ची भक्ति में संलग्न है।
१३. मूर्ख कौन है ?	जिसे भले बुरे का ज्ञान नहीं ?
१४. जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिये	पापाचरण से बचा कर।
१५. आयुपर्यन्त क्या करना चाहिय ?	विद्या की खोज और पुस्तकावलोकन।
१६. बुद्धि किस बात का पता नहीं लगा सकती	ईश्वर की माया, मनुष्य का भाग्य, त्रिया-चरित्र और धूर्तों की जालसाज़ी।
१७. सब से कठिन क्या है ?	निराशा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ओस बिंदु

लेखक पं० श्याम नारायण मोहले बी०ए०

रवि उदय होने न पाया था अभी ईशान में।
निस्तब्धता थी छा रही चहुं ओर प्रकृत्योद्यान में ॥ १ ॥

शीतल पवन स्पर्श से थीं कुसुम डाली झूमतीं।
या कामिनीं कामान्ध हो निज प्रेमियों को चूमती ॥ २ ॥

संयोग जा निकला किधर ? एक वाटिका के बीच में।
कुछ दृष्टि आईं ओस बूंदें नव लता के बीच में ॥ ३ ॥

थी बिंदुकायें प्रकृति को मुक्तावली पहना रहीं।
या गोपिकायें कुञ्जनों में प्रेम रास रचा रहीं ॥ ४ ॥

भूल जाति निज चपलता दामिनी यदि देखती।
अभिमान अपनी स्वच्छता पर कामिनी भी छोड़ती ॥ ५ ॥

पर एक सम सौरभ किसी का जगत् में रहता नहीं।
है मान पाकर कौन वह अपमान जो सहता नहीं ॥ ६ ॥

बढ़ता गया क्रमशः अधिक ज्यों तेज सूर्य प्रकाश में।
होने लगीं जल बिंदुकायें खिन्न तीव्र विकाश में ॥ ७ ॥

जल बिंदु ही को खा गई पोषक धरा की रवि किरण।
बस जन्म जो लेता यहां होता अवश उस का मरण ॥ ८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारी मंजूषा

दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह—(सस्ती साहित्य माला) लेखक महात्मा गान्धी, अनुवादक श्री वैजनाथ जगन्नाथ मोयदे, प्रकाशक सस्ता साहित्य प्रकाशक-मण्डल अजमेर, पृष्ठ संख्या २७२ मूल्य ।≡)

अजमेर में कतिपय देशहितैषी सज्जनों ने मातृभाषा की उन्नति के लिये उपरोक्त मंडल की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश्य सर्व साधारण और शिक्षित-समुदाय स्त्री और बालक सब के लिये उपयोगी, अच्छी और सस्ती पुस्तकें प्रकाशित करना है। इस संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें केवल लागत मात्र पर दीजायेंगी। उपरोक्त पुस्तक इसका उदाहरण है। हम हिन्दी भाषा की इस सेवा के लिये संचालकों के कृतज्ञ हैं और आशा करते हैं कि प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी इस मण्डल की पुस्तकों का ग्राहक बन अपने ज्ञान की वृद्धि के इस सुअवसर पर अवश्य लाभ उठावेगें।

पुस्तक के विषय में कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह संसार के इतिहास में एक सदा स्मरणीय घटना है। ८ वर्ष तक यह सत्य युद्ध चलता रहा और अन्त में भारतीय वीर सैनिकों ने महात्मा गांधी के नेत्रत्व में अपने पक्ष की सत्यता, निज स्वार्थत्याग, दृढ़ता और तप से अनेक कष्ट और बाधायें झेलते हुए विजय प्राप्त की इस युद्ध का इतिहास कितना रोमाञ्चकारी उत्साह वर्धक और मनोरञ्जक है यह प्रस्तुत पुस्तक के पाठ से ही पता लग सकता है। पुस्तक की बड़ी भारी विशेषता यह है कि इस सत्याग्रह का नेता स्वयं ही इसका लेखक है। अतः अफ्रीका के सत्याग्रह की इच्छा वास्तविक इतिहास है। इसके पाठ से हमें भारतीय राजनैतिक कार्यक्षेत्र में काम करने की कितनी सहायता मिलेगी यह कहना अनावश्यक है। भारत प्रेमी प्रत्येक नवयुवक को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये।

भारत रमणीरत्न—लेखक श्री भाई परमानन्द जी प्रकाशक आकाशवाणी पुस्तकालय लाहौर, पृष्ठ संख्या २१७ मूल्य ॥।≡)

कुछ वर्ष व्यतीत हुए भाई जी ने एक पुस्तक लिखी थी जो कि देश सेवा में आत्म बलिदान नाम से प्रकाशित हुई थी। इसी पुस्तक का परिवर्तित, परिवर्द्धित और संशोधित संस्करण अब उपरोक्त नाम से प्रकाशित हुआ है।

भाईजी ने यथा सम्भव पुस्तकको स्त्री उपयोगी बनाने का यत्न किया है। अतः पुस्तक की वर्णनशैली तथा भाषा बड़ी सरल है। भारत इतिहास की मुख्य २ घटनाओं को उदाहरण रूप लेकर लेखक ने यह बतलाने की चेष्टा की है कि इसमें देवियों का कितना भाग है। यदि यह कहा जाय कि यह पुस्तक इतिहासिक भारतीयों नारियों के कृत्यों निस्वार्थपरिता, उत्साह प्रेम और देश प्रेम की गाथा है तो अनुचित न होगा पुस्तक इतिहास है, जीवन चरित्र है, कथा है। स्त्रियों और कन्याओं के विशेष लाभ की है।

हिन्दू संगठन-लेखक भाई परमानन्द जी और प्रकाशक आकाशवानी पुस्तकालय लाहौर। पृष्ठ २१३ मूल्य १)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आज भारत के राजनैतिक तथा सामाजिक आकाश में हिन्दू-संगठन एक बड़ा आवश्यकीय प्रश्न है। भारतीय सत्याग्रह की असफलता के कारणों में से हिन्दूजाति का असंगठन होना एक मुख्य कारण है। हमें भारतीय संग्राम में विजय प्राप्त नहीं हो सकती जब तक कि हिन्दू अपने आपसके वैरभाव, ईर्षा, द्वेष, को छोड़कर संगठित नहीं होते। इस संगठन आन्दोलन के नेताओं में भाई परमानन्द जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पञ्जाब में भाई जी हिन्दू संगठन आन्दोलन के प्राण हैं यह कहना अनुचित नहीं। इस पुस्तक में इसके लेखक ने हिन्दू-सँगठन के इतिहास, इसकी आवश्यकता और इसकी प्राप्ति के उपायों पर अपने विचार प्रगट किये हैं जो कि प्रत्येक नर नारी को जिसके हृदय में हिन्दू जाति से तथा देश से प्रेम है पढ़ने और मनन करने योग्य है। पुस्तक उपयोगी और शिक्षादायक है।

आदर्श पति-लेखक श्रीयुत सन्तरामजी बी० ए० प्रकाशक श्री राजपाल सरस्वती आश्रम लाहौर, पृष्ठ १०० मूल्य ॥)

लेखक द्वारा लिखित 'आदर्श पत्नी' नामक पुस्तक की समालोचना ज्योति में प्रकाशक हो चुकी है। यह पुस्तक भी उसी ढंग पर लिखी गई है। हमारा गृहस्थ जीवन आज कल कितना दुखमय हो रहा है यह गृहस्थ आश्रम को हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना है। इसी के आधार पर वह अन्य आश्रम की स्थिति मानते हैं जितना उच्च, शुद्धि और पवित्र हमारा गृहस्थ जीवक होगा उतना ही हमारे अन्य आश्रम शुद्ध होंगे और हमारा सामाजिक जीवन उच्च होगा। इस सत्य की दृष्टि से हमारा वर्तमान गृहस्थ जीवन कितना गिरा हुआ है यह सब जानते हैं। बहुत कम ऐसे परिवार हैं जिन्हें हम सुखी परिवार कह सक्ते हैं और इस का मुख्य कारण गृहस्थ जीवन के कर्णाधार पति पत्नी की अनुभव हीनता है। वह यह नहीं जानते कि किस प्रकार हमें गृहस्थ जीवन में प्रवेशकर वर्तना चाहिये। वह अपने एक दूसरे का तथा अन्य सम्बन्धियों, मित्रों पड़ोसियों आदि से व्यवहार करने में कई प्रकार की भूलें कर जाते हैं जिससे कि उन का जीवन दुखमय बना रहता है। इस का विशेष कारण पति पत्नी का आपस में एक दूसरे को ठीक २ न समझना है। इस पुस्तक में लेखक ने इसी भूल की सुधार करने की चेष्टा की है पति को किस प्रकार अपना आचरण करना चाहिये यह बतलाया गया है। उस को अपना साधारण तथा व्यक्तिगत स्वभाव कैसा बनाना चाहिये डाह रूपी नाग से कैसे बचना चाहिये, आमदनी का कैसे प्रयोग करना चाहिये, मनोरञ्जन, स्वार्थ, सन्तान इत्यादि के सम्बन्ध में किस प्रकार चलना चाहिये इत्यादि अनेक २ बातें सूत्र रूप से बड़ी मनोरञ्जनक शैली में वर्णन की हैं। निज ग्रह को सुखमय और कण्टक रहित बनाने की इच्छा रखने वाले पुरुषों को पुस्तक का अवश्य पाठ करना चाहिये, इस में उन्हें कई प्रकार क्रियात्मक ढंग मिलेंगे जिनपर चलना अवश्य हितकर होगा।

वाल्मीक मुनि का जीवन चरित्र-लेखक भाई परमानन्द जी, प्रकाशक महाशय राजपाल सरस्वती आश्रम, अनारकली लाहौर पृष्ठ १९२ मूल्य ॥।)

रामायण के लेखक बाल्मीक के नाम से कौन हिन्दु अपरिचित है। यह पुस्तक उसी आदि कवि की जीवनी तथा उसके ग्रन्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रामायण की सरल, उपयोगी आलोचना है। किस प्रकार एक अज्ञात नीच कुल में जन्म लेकर, लुटेरे, और डाकुओं का जीवन व्यतीत कर महात्माओं के संसर्ग से बाल्मीक ऋषिपद को प्राप्त हुये यह मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद कहानी इस पुस्तक में दी गई है। आज कल की अछूतोद्धार समस्या को सुलझाने के लिये बाल्मीक के जीवन का मनन बड़ा उपयोगी है। पहले ६८ पृष्ठ में लेखक ने इतिहास से यह बतलाया है कि किस प्रकार अपने निज शुभ कर्मों द्वारा मनुष्य उच्च पद को प्राप्त करते रहे हैं और किसी प्रकार हिन्दू धर्म में व्यैक्तिक उन्नति का मार्ग बन्द नहीं रहा वरन देश काल और पात्र की योग्यता को ध्यान में रखकर हमारे पूर्वज सदा ही इसको सरल और सुगम बनाते आये हैं फिर इसी सिद्धान्त की पुष्टी में बाल्मीक का जीवन वृतान्त विस्तृत जितना भी मिल सका दिया गया है। शुद्धि हिन्दू संगठन तथा वर्णाश्रम धर्म पर भी प्रकाश डाला है अन्त में रामायण की आलोचनात्मक समीक्षा है जो कि बड़ी शिक्षादायक और मनोरञ्जक है। पुस्तक पठनीय है।

सैनिक--साप्ताहिक पत्र, सम्पादक श्री कृष्णदत पालीवाल, वार्षिक मूल्य ३)

यह हिन्दी भाषा का एक उच्च कोटि का साप्ताहिकपत्र है जोकि आगरासे प्रकाशित होता है प्रताप और प्रभाके पुराने सम्पादक हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक, निस्वार्थ देश प्रेमी श्रीयुत पालीवाल जी इसके सम्पादक हैं। अतः यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस का सम्पादान योग्यता पूर्वक होता है। राजनैतिक प्रश्नों पर उत्तम विचार पूर्ण और सारगर्भित लेखों और टिप्पणियों के अतिरिक्त इस पत्र की बड़ी विशेषता यह है कि इस में किसानों के हितकी अनेक बातें रहती हैं। उनके सम्बन्ध में देश में क्या हो रहा है, उनकी सामाजिक तथा आर्थिक दशा किस प्रकार सुधर सक्ती है। उन की क्या २ आवश्यक्ता हैं इत्यादि विषयों की इस पत्र में खूब चर्चा रहती है।

गत दिसम्बर में सैनिक का विशेषांक निकला है। इस अङ्क के सभी लेख विचार पूर्ण पठनीय हैं। गरीबों और अमीरों की लड़ाई, रिआया और सरकार की लड़ाई, गोरों और कालों की लड़ाई, कांग्रेस और नौकरशाही की लड़ाई, प्रेम और पीड़ा की लड़ाई, झांसी की रानी और अंग्रेजों की लड़ाई इत्यादि लेखों के शीर्षक ही इन के विस्तृत क्षेत्र, मनोरञ्जकता और उन्मादता को सूचित करते हैं। कोई दो दर्जन चित्र अङ्क की सुन्दरता को प्रकट करते हैं। अङ्क शिक्षाप्रद और संग्रहणीय हैं। हम पालीवाल जी को ऐसा उत्तम अङ्क निकालने पर बधाई देते हैं।

हम पत्र का हर्षपूर्वक स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि यह युवक सैनिक चिरकाल तक देश, जाति तथा मातृभाषा की सेवा करता रहेगा।

प्रताप का कांग्रेस अंक—कानपुर के सहयोगी प्रताप का गत कांग्रेस के अवसर पर एक विशेष अङ्क प्रकाशित हुआ। जिस में कि कांग्रेस का जन्म से लेकर आज तक का सचित्र इतिहास दिया गया। इस के अतिरिक्त कितने ही और शिक्षाप्रद और उपयोगी लेख प्रकाशित हुए। जिन में श्री प्रेमचन्द्र जी का इसलामी सभ्यता, भाई परमानन्द का प्रवासी भारतवासी तथा श्री नन्दकिशोर जी का अमीर अमानुल्ला खां विशेष उल्लेखनीय है। एक सचित्र लेख कानपुर नगर पर भी है जिसमें इस नगर सम्बन्धी जानने योग्य बातों का वर्णन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। यह विशेष अंक सहयोगी की कीर्ति तथा शान के ठीक अनुकूल निकला है।

सरल रोगी परिचर्या शिक्षा।

अनुवादक श्रीयुत वैद्य सत्येश्वरानन्द लखेड़ा प्रकाशक पं० क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा मूल्य २) है।

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। लखेड़ा महाशय ने इसे बंगला भाषा के "शुश्रूषा" नामी पुस्तक से अनुवाद किया है। हिन्दी भाषा में ऐसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव था उस कमी को पूरा करने से लखेड़ा महाशय धन्यवादार्ह हैं साथ ही साथ सुख संचारक कम्पनी के मालिक पं० क्षेत्रपाल शर्मा भी धन्यवाद के पात्र हैं। जिन की सहायता से लखेड़ा महाशय इस पुस्तक को प्रकाशित करने में समर्थ हुए हैं। पुस्तक सर्वसाधारण के काम की है। रोगी की सेवा किस प्रकार से करनी चाहिये? तथा रुग्णावस्था में पथ्यापथ्य का विचार तथा द्रव्यों के गुण दोष का विवेचन बहुत ही सरल तथा स्पष्ट भाषा में किया गया है। जिससे हर एक मनुष्य जो थोड़ा सा भी पढ़ा है, लाभ उठा सकता है। मेरे विचार में हर एक गृहस्थ को इसकी एक प्रति अपने घर में रखनी चाहिये, और उससे लाभ उठाना चाहिय।

अभ्यर्थना

धारण करें हम वस्तुएं भगवान् स्वदेशी।
महल में हों जेल में ध्रुव-ध्यान स्वदेशी॥
वसन स्वदेशी से आन बान स्वदेशी।
भरा रहे हृदय में भी अभिमान स्वदेशी॥
पात्र स्वदेशी में खान-पान स्वदेशी।
ढंग स्वदेशी से गायें गान स्वदेशी॥
ईंट स्वदेशी बने मकान स्वदेशी।
हो तीस कोटि करों में कृपाण स्वदेशी॥
भारत-जनों में जगे ज्ञान स्वदेशी।
यज्ञोपवीत, हार हो परिधान स्वदेशी॥
बात सुनें हों पवित्र-कान स्वदेशी।
हृदय में भव्य-भाव हो निर्माण स्वदेशी॥
गद् गद् हों सुने सतत आख्यान स्वदेशी।
हाथ में लिए हैं निशान स्वदेशी॥
करें नित्य चित्त में अरमान स्वदेशी।
मरने पै मिले कफ़न व मकान स्वदेशी॥

"मुकुन्दु"

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वनिता विनोद

स्त्री जगत।

रियासत मोरवी में महाराज ने स्त्रियों के लिये सहवास की न्यून से न्यून आयु १६ वर्ष निश्चित की है। यह कानून मोरवी नरेश की प्रजा वत्सलता और राज्य की जागृती का प्रमाण है।

पंजाब कौंसिल ने स्त्रियों को वोट देने का अधिकार दे दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि स्त्रियां यदि चाहें तो वह मन्त्री पद तक पहुंच सक्ती हैं।

भोपाल की बेगम साहिबा ने इंगलैण्ड में महिलाओं की एक सभा में बोलते हुए कहा कि भोपाल राज्य में कानून शराब रोकने से लोगों की दशा सुधरी है। शराब हिन्दू और मुसलमान दोनों के धर्म के विरुद्ध है। शराब बन्द कर देने से राज्य को थोड़ी सी आर्थिक हानि अवश्य हुई है किन्तु प्रजा के अपार लाभ के सामने यह हानि नहीं के बराबर है।

बम्बई के मैशन होटल के एक गोरे मैनेजर ने अपनी मोटर से एक हिन्दुस्तानी स्त्री कुचल डाली। अदालत ने उसे १५०) रु० जुर्माने का दण्ड दिया! इसी गोरे ने एक भारतीय मज़दूर स्त्री को लात मारी थी। इस अपराध में उस पर १००) रु० जुर्माना हुआ। स्त्रियों की जान का कितना मूल्य है? यह बात दी गई सज़ा से स्वयम् स्पष्ट है।

हिन्दू विधवा लीग लखनऊ द्वारा जनवरी से लेकर दिसम्बर सन् १९२१ तक सात प्रतिष्ठित घरों की विधवाओं की शादियां हुईं जिनमें ३ कायस्थ, २ ब्राह्मण और २ खत्री जाति की थीं।

गत बड़े दिनों में अलीगढ़ में मुसलिम महाविद्यालय के भवन में श्रीमती जोहरा-फैज़ी की अध्यक्षता में भारतीय स्त्री सम्मेलन हुआ उसमें मुसलिम स्त्रियों के हित के अनेक प्रस्ताव पास हुये जैसा कि लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य की जाय, उनके सामाजिक बन्धनों को ढीला किया जाय इत्यादि एक परदा सहभोज हुआ जिसमें ५०० महिलायें सम्मिलित हुई यह पर्दा सहभोज ही प्रगट करता है कि अभी हमारी मुस्लिम महिलायें सामाजिक उन्नतिसे कितनी दूर हैं।

बड़ोदा में अखिल भारतीय व्यायामिक खेल तथा कर्तब हुये। जिसमें महारानी कन्या विद्यालय तथा महाविद्यालय की छात्राओं ने भी भाग लिया।

एक अमरीकन वृद्धा की अभी २ मृत्यु हुई है जो १०० वर्ष की आयु में भी अपनी आजीविका के लिये स्वयंश्रम करती थी। वह अपनी छोटी सी किश्ती को स्वय ही खेती थी। और उसमें बैठ शिकार किया करती थी।

जापानके भिन्न २ महिला सभाओं ने एक अखिल देशीय महिला सभा बनाई है जिसका उद्देश्य जापानी स्त्रियों को उनके अधिकारों, विशेष कर राजनैतिक अधिकारों की शिक्षा देना है। इसके लिये कितने ही व्याख्यान दिये जाते हैं। आशा की जाती है कि शीघ्रही जापानी स्त्रियों को कौन्सलोंके लिये मताधिकार प्राप्त हो जायगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

म० जौनवेल ने जो कि सीरिया के नये कमिश्नर नियत हुये हैं एक सीरियन पुरोहित की धर्मपत्नीको बैरुत नगर के चौक में अपने हाथसे तमग़ेसे अलंकृत किया। देवी के इस मान का कारण वह साहस है जो कि उसने एक हवाई जहाज़ से गिरे हुये सूचना पत्र को रशिया के किले में घिरे हुये सिपाहियों तक पहुंचाने में प्रगट किया। इस कार्य्य के करते समय वह गोली से ज़खमी भी हुई।

जापान में निपन स्त्री महाविद्यालय और टोकियो स्त्री महाविद्यालय दो स्त्रियाँ के प्रसिद्ध कालिज हैं। इन दोनों और जिसन ज्योगक्कू नामक विद्यालय को विश्वविद्यालय में परिणित करने के लिये २२ लाख रुपया एकत्र करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न हो रहा है।

लेडी ह्नीवुड ने अभी २ लण्डन में वाशिंगटन को खरीदा है। ६ वर्ष पहिले होटल के मुख्य प्रबन्धक का काम आरम्भ किया था और वह आज ८ होटलों की प्रबन्धक है। जब उसने काम आरम्भ किया तो उसे केवल इतना ही तजरुबा था कि वह एक बड़े भारी कुल में खाने पिलाने का कार्य करती थी।

श्रीमती फ्लोरन्स केसलर जो कि राज का काम करने वाली एक गृहस्थी महिला है लास एन्गलिस के बैंक की डारेक्टर चुनी गयी है।

श्रीमती उमानेहरु के इलाहाबाद के गत म्युन्सिपल चुनाव में असफल रहनेपर सरकार ने उन्हें अपनी ओर कमेटी के लिये नियुक्त कर दिया परन्तु श्रीमती जी ने इस नियुक्ति को अस्वीकार कर दिया। आप का कहना है कि जब मुझे जनता का विश्वास प्राप्त करने में सफलता नहीं हुई तो मैं किस मुंह से जन-ता की कमेटी में बैठ सकती हूँ। श्रीमती जी ने मनुष्य सेवा का उच्च आदर्श हमारे सामने रखा है वह पुरुषों के लिये भी अनुकरणीय होना चाहिये।

अलीगढ़ में भारतीय मुसलमानों की एक शिक्षा परिषद हुई थी। इसमें महिलाओं के लिए भी एक ओर चिकों के पीछे बैठने का प्रबन्ध किया गया था। परन्तु ठीक समय पर उन्हें सूचना दी गई कि अब वह प्रबन्ध हटा दिया गया है और वह परिषद में सम्मिलित न हो सकेंगी। इस का बम्बई की श्रीमती अतिया बेगम ने गैलिरीसे खड़े होकर बड़े बड़े शब्दों में विरोध किया। तब वहां काफी हल्ला मच गया जो कि प्रधान के श्री० अतिया बेगम को बेदी पर आकर बोलने की आज्ञा देने से शान्त हुआ। श्रीमती ने अपने भाषण में कहा कि इस्लाम में ऐसी स्त्रियां हो चुकी हैं जिन्होंने कि राज्ञी लेख का कवि और सन्त के रूप में अपनी उच्चता को प्रगट किया है। उसने युवक मुसलमानों से अपील की कि वह अपनी माताओं और बहिनों पर किये जाने वाले अत्याचारों को रोकें और अलीगढ़ ने स्त्री उन्नति के लिये कुछ भी नहीं किया। क्या मुसलमान इस अपील पर ध्यान देंगे।

तुर्की महिला सभा ने सरकार से प्रार्थना की है कि उन्हें तुर्की राजनैतिक विप्लव तुर्किस्तान में स्त्रियों की अवस्था बच्चों को किस तरह पालना चाहिये और घर का प्रबन्ध कैसे करना चाहिये इत्यादि विषयों पर मसजिदों में व्याख्यान देने की आज्ञा दी जाय। उन्होंने यह भी कहा है कि मैजिक लालटेन द्वारा जो चलती फिरती तसवीर दिखाई जाती हैं इन की निरीक्षिका एक स्त्री को बनाया जाय जिससे कि वह देख सके कि कोई तसवीर बिगाड़ने वाली तो नहीं दिखलाई जाती।

CC-0. Gurukul Kangri University, Haridwar Collection. Digitized by eGangotri Foundation USA

ब्रह्मचर्य्य

ले०—बू० शांति देवी कन्या गुरुकुल देहली।

पूज्य पाठिकाओ! आज कल भारतवर्ष की बहुत ही दशा गिर चुकी है इसका कारण केवल यही है कि ब्रह्मचर्य्य का अभाव। ब्रह्मचर्य के पालन करने से ही हमारे प्राचीन समय के आर्य नर-नारी इतने तेजस्वी और बलवान होते थे किन्तु इसके पालन न करने से हमारी आज इतनी अवस्था गिर गई कि जिस का वर्णन नहीं किया जा सकता। अब कुछ समय से यह तो चारों ओर सुनाई देता है कि ब्रह्मचर्य्य धारण करो परन्तु अब तक भी हमारी बहिनों का ध्यान इस ओर अच्छी तरह नहीं है कि ब्रह्मचर्य्य पालन करना चाहिये। इसलिये सब से पहले आपको यह जानना आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य किसको कहते हैं और उससे क्या लाभ होते हैं? ब्रह्मचर्य्य उसे कहते हैं, कि जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अथवा वेद विद्या के लिये तथा आचार्य कुल में जाकर विद्या ग्रहण करने के लिये प्रयत्न करे। ब्रह्मचर्य्य ही जीवन की जड़ है और इसका नाश ही मृत्यु है। "स्वामी दयानन्द जो कहते हैं" कि—न तस्य किंचिद प्राप्यमिति विद्धि नराधिप, वह्वयः कोट्यस्तु ऋषीणां च ब्रह्मलोके वसन्त्युत ॥१॥ सत्येरतानां सततंदन्तानामुर्द्धरेतसाम् ब्रह्मचर्य्य दहद्राजन् सर्वपापान्युपासितम् ॥२॥

अर्थात्—उसको कोई भी शुभ गुण अप्राप्त नहीं होता ऐसा तू जान कि जिसके प्रताप से अनेक करोड़ ऋषि ब्रह्मलोक अर्थात् सर्वानन्द स्वरूप परमात्मा में वास करते हैं और इस लोक में भी अनेक सुखों को प्राप्त होते हैं ॥१॥

जो निरन्तर सत्य में रमण, जितेन्द्रिय, शान्तात्मा, उत्कृष्ट, शुभगुण, स्वभावयुक्त और रोगरहित, पराक्रम सहित शरीर ब्रह्मचर्य्य अर्थात् वेदादि सत्यशास्त्र और परमात्मा की उपासना का अभ्यास कर्मादि करते हैं उनके वे सब उत्तम गुण बुरे काम और दुःखों को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सब सुखों की प्राप्ति कराने हारे होते हैं। और इन्हीं के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक उत्तम विद्यार्थी हो सकते हैं ब्रह्मचर्य्य के पालन से मनुष्य का बल बढ़ता है और उसको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पदार्थों की प्राप्ति होती है। इनके पालन करने में पहिले कुछ कठिनता मालूम पड़ती है परन्तु अन्त में इसका परिणाम अत्यन्त फलदायक होता है। देखो! ब्रह्मचर्य्य के कारण ही प्राचीन समय में ऐसे वीर योधा उत्पन्न हुए थे जिसको सुनकर हमारे दिलों में विश्वास नहीं होता और सुनकर हमारे दिल आश्चर्य्यमय हो जाते हैं, यह आपने सुना होगा कि मेघनाद कहा करते थे कि मुझको कोई भी नहीं मार सकता। लेकिन उसको भी ब्रह्मचारी लक्ष्मण जी ने ब्रह्मचर्य्य के बल से एक क्षण में मार डाला ब्रह्मचर्य्य के पालन न करने से मनुष्य बल हीन होकर स्वयम् ही नाश होजाता है।

ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में हमें वैसे ही दृढ़ रहना चाहिये कि जैसे वेदवती ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में दृढ़ रही थी इसका वर्णन कुछ संक्षेप में इस प्रकार है कि वह बन में रहकर तपस्या किया करती थी और अत्यन्त ही सुन्दरी थी। इसको देखकर रावण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का मन मोहित हो गया और उसको फंदे में फंसाने के लिये उसके पास गया। उस को बहुत लालच दिया। जब देखा कि वह नहीं मानती है, तब राजा रावण उसके केशों को पकड़ कर ले जाने लगा किंतु उस समय वेदवति ने अपने ब्रह्मचर्य्य के बल से केशों को छुड़ाया और रावण से कहा कि हे! अधम तूने मेरा ब्रह्मचर्य्य व्रत खण्डन किया है इस कारण मैं अब कदापि नहीं जीऊंगी। ऐसा कह कर पास ही जो अग्नि कुण्ड था वह उसमें कूद पड़ी।

प्रिय बहिनों तथा पाठिकाओं? इसी प्रकार हमें भी ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में दृढ़ रहना चाहिये। इस से भी बढ़ कर एक और उदाहरण उपस्थित है जो कि आप सब को मालूम है वह है महर्षि स्वामी दयानन्द जी का। जब कि संसार की दशा बहुत गिर चुकी थी, और सब लोग स्त्रियों को पांव की जूती समझते थे और स्त्रीशूद्रौनाधीयताम् इस मन्त्र से शूद्र और स्त्रियों को विद्या से वंचित रखते थे। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द जी ने भारत वर्ष में आकर सब को एकसा अधिकार दिया और ब्रह्मचर्य्य के पालन करने के साथ ही साथ 'यथेमां वाचं कल्याणी माव दानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय'। इस मन्त्र का भी प्रचार किया। स्वामीजी कहा करते थे कि ब्रह्मचर्य्य करो तब लोग कहा करते थे कि आपतो कहते हैं कि ब्रह्मचर्य्य करो परन्तु आप में तो कोई विशेष शक्ति नहीं है ऐसा सुनकर स्वामी जी ने भी समय पाकर लोगों को दिखाया कि ब्रह्मचर्य्य क्या है, एक बार कलक्टर की गाड़ी कहीं जा रही थी उस समय स्वामी जी ने गाड़ी को अपने बाहुबलसे ऐसा रोका कि सब लोगों ने अत्यन्त ज़ोर लगाया परन्तु उस गाड़ी को कोई भी नहीं चला सका जब पीछे लौट कर देखा तो मालूम हुआ कि स्वामी दयानन्द जी ने गाड़ी पकड़ी हुई है। यह देख कर सब लोग धन्य २ कहने लगे। और एक बार स्वामी जी ने अत्यन्त जाड़ों के दिनों में पृथिवी पर बैठ करके अंगूठों को पृथिवी पर टेक कर ऐसा पसीना टपकाया कि सब लोग देख कर आश्चर्य में हो गये। पाठिकाओ? यह सब ब्रह्मचर्य्य का ही बल है। ब्रह्मचर्य्य की जितनी जड़ मज़बूत होगी उतना ही मनुष्य का जीवन दृढ़ होगा और जितनी जड़ कमजोर होगी उतना ही जीवन कमजोर होगा। ब्रह्मचारी का अर्थ है:—ब्रह्म का अर्थ वेद है। चारी का अर्थ पढ़ने वाला अर्थात वेद पढ़ने वाला॥ इस लिये ब्रह्मचर्य्य नियम का पालन करना अत्यावश्यक है जो नियम पालन करता है वह सदा सब वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है॥ ब्रह्मचर्य्यस्य च गुणं शृणु त्वं सुधाधिया, आजन्म भरगाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह॥ ६॥

भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं कि तुम ब्रह्मचर्य्य के गुणों को सुनो आजकल जो ब्रह्मचारी होता है उसको कोई दुःख नहीं होता ब्रह्मचर्य्य के हीन होने से आज कल भारत की ऐसी दशा हो रही है और संसार मे चारों ओर रोग ही रोग फैल रहा है। प्रिय बहिनों। इतनी गिरी हुई दशा से उठो? भारत का उद्धार करो, सोई हुई निद्रा से जागो जिस से हमारी तथा दूसरों की भी उन्नति हो। आशा है कि हमारे पाठक तथा पाठिकायें इससे लाभ उठावेंगे और इस पुण्य भूमि भारत को उन्नत करने का यत्न करेंगी मेरा फिर भी यही अन्तिम निवेदन कि ऋषि संदेश को पालन करो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य ।

ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य इधर एक मास से बहुत उत्तम है। दुर्भाग्यवश चेचक का रोग जो कुल में फैल गया था उसका प्रभाव यद्यपि बहुत दिन रहा तथापि सभी रोगी कन्याएं स्वस्थ हो गईं और सभी पठन-पाठन में लग गई हैं। जो कन्याएं ६ सप्ताह तक पृथक् रहने के कारण पाठ में पीछे रह गई थीं उनके से उनके स्वास्थ्य को लक्ष्य में रखकर विशेष परिश्रम कराया जा रहा है ताकि वह पाठ में बराबर चल सकें।

पिछले टाइफाइड के केस के जो ३ कन्याएं स्वास्थ्य लाभ करने जलवायु परिवर्तनार्थ अपने २ घर चली गई थीं उन में से दोनों गुजराती कन्याएं तो वापिस आ गई हैं और पठन-पाठन में दत्तचित्त हैं।

पठन पाठन और चर्खा ।

विद्यालय अभी १० बजे से ३ बजे तक लगता है किन्तु श्रेणी वार क्रम से उसके बाद चर्खा क्लास होता है और कन्यायें प्रतिदिन चर्खा चलाना सीखती हैं। इस कार्य के लिये एक पञ्जाबी वृद्धा देवी नियुक्त की गई है।

जिन २ श्रेणियों की कन्याएं बिलकुल चर्खा चलाना नहीं जानती थीं वह भी तार निकालने लगी हैं।

व्यायाम और क्रीड़ा क्षेत्र ।

क्रीड़ा-क्षेत्र बिलकुल तैयार है झूले तथा कूदने फांदने और व्यायाम के सामान सब तैयार होकर लगा दिये जा चुके हैं। तीन बजे के बाद से अध्यापिकाओं के निरीक्षण में कन्यायें क्रीड़ा-क्षेत्र में खेलती हैं। अभी एक झूला और तैयार हो रहा है क्रीड़ा-क्षेत्र के सुसज्जित होने से कन्याओं के स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ा है। अब नियमित-रूप से प्रतिदिन व्यायाम होती रहती है।

आचार्या जी की यात्रा ।

गुजराती उत्साही आर्य पुरुषों के अतुल उत्साह से इसवर्ष महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया यहाँ से श्री आचार्याजी तथा दो अध्यापिकाएं कुमारी चन्द्रवती देवी जी तथा कुमारी सीतादेवी जी भी जन्मभूमि महोत्सव के लिये टंकारा गई थीं। कुमारी चन्द्रवती जी तथा कुमारी सीतादेवी जी उत्सव समाप्ति पर कुल में लौट आई किन्तु श्री आचार्या जी अब तक कतिपय अनिवार्य बाधाओं के कारण बड़ौदा में ठहरी हुई हैं और वहाँ सेशान्ति निकेतनादि कुछ एक संस्थाओं को देखती हुई १०—१५ दिन पश्चात कुलमें लौट आयेंगी। आजकल स्थानापन आचार्या श्रीमती राधारानी जी मुख्याधिष्ठात्री हैं।

चिकित्सालय ।

श्री डाक्टर तुलसीराम जी तथा डाक्टर चुनीलाल जी के पुरुषार्थ से चिकित्सालय का कार्यशुरू से ही सुचारु रूप से चला आरहा था किंतु विगत यात्रा में दो तीन ब्रह्मचारिणियों को टाइफाइड हो जाने से स्थाई रूप से डाक्टर रखने का विचार किया गया इसके लिये डा० जैगोपाल जीरामनगर गुजरांवाला गुरुकुल की सेवा करने के लिये तय्यार थे किन्तु दुर्भाग्यवश वे कुछ अस्वस्थ हो गये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और अब तक भी आने का पूर्ण विचार न कर सके।

कुछ मासों से श्री डाक्टर चुनीलाल जी ने स्थाई रूप से चिकित्सालय का काम अपने जुम्मे ले लिया था और प्रतिदिन २ घण्टे चिकित्सालय को दिया करते थे किंतु हाल ही में उनका स्थानान्तर लाहौर हो गया है डाक्टर जी का कुल प्रेम तथा समाज सेवा प्रशंसनीय है। उनके कुल विदा होने पर उन्हें कुल की ओर से एक अभिनन्दन पत्र तथा सह भेज दिया गया। डाक्टर जी की इससेवा के लिये हम उन्हें धन्यवाद दिये बिना न रहेंगे।

सम्प्रति कृपापूर्वक श्री डाक्टर तुलसी-राम जी ने पुनः चिकित्सालय का कार्य ले लिया है। यद्यपि डाक्टर जी का निवास स्थान कुल से अधिक दूर है और उन्हें आने में बड़ी कठिनता पड़ती है किन्तु कुल के प्रेम में आबद्ध होकर चिकित्सालय का निरीक्षण तथा चिकित्सादि का कार्य्य कर जाते हैं और चिकित्सालय का कार्य पूर्ववत् भली प्रकार चल रहा है। डाक्टर जी की इस प्रशंसनीय सेवा के लिये हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

बसन्तोत्सव—इस वर्ष विशेष रूप से बसन्तोत्सव मनाया गया। प्रातःकाल वृहद् यज्ञ किया गया और बाद को अध्यापिकाओं तथा ब्रह्मचारिणियों की सभा हुई जिसमें मनोहर भजन तथा उपदेश हुए। उसके पश्चात् सहभोज हुआ और मध्याह्न काल में अध्यापिकाएं कुछ ब्रह्मचारिणियों सहित यमुना तट की ओर भ्रमण करने गईं।

ऋषिबोधोत्सव—गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सन्ध्या समय वृहद् यज्ञ तथा सभा की गई और बहुत सी ब्रह्मचारिणियों ने "ऋषिजीवन कथा" तथा उसी उपलक्ष्य में व्याख्यान दिये। कुल के चारों ओर रोशनी की गई। यद्यपि हवा बीच बीच में बाधक बनती थी तथापि उस "जीवन ज्योति" रात में प्रकाश न होना भी आश्चार्यान्वित था अतः दीपकों की टिमटि-माहट से कुल जगमगा रहा था।

ऋतु—सर्दियां गुजर रही हैं। आज कल प्रातः उतनी ठण्डक नहीं जितनी कि गत मास थी। प्रायः अधिक ब्रह्मचारिणी प्रातःकाल हवन में बिना गर्म चादरों के ही बैठती हैं। उद्यान में वसन्त की दिव्य छटा दिखाई पड़ने लगी है। वृक्षों पर नये हरे पत्ते निकल रहे हैं तथा गेंदे आदि के फूल खिल रहे हैं। बसन्त के कारण उद्यान की अपूर्व शोभा बढ़ रही है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुरते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकवार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ी० साड़ी बेल रेशम की किनारी दार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है क़ी० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमतासे निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं क़ी० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फ़ी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

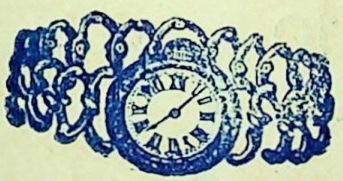

न० ३२ यह बिल्कुल ही नई फैशन की चीज है इसके बीच में एक छोटी सी जेब घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भीं इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी की घड़ी और गहने का गहना है, पीतल पर सोने की गिल्ट वालीं का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०) रु० ॥

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही ज़री के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—ज़नानी चाहे जिस नाप की क़ीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूची-पत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पताः—

सुख संचारक कम्पनी,

मथुरा.

प० नअन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दरियागंज देहली में छपा।

और बाबू विश्वनाथ पिंदर व पब्लिशर ने ज्योति कार्य्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

A SELECTION IN OUR OFFICE CLOCKS

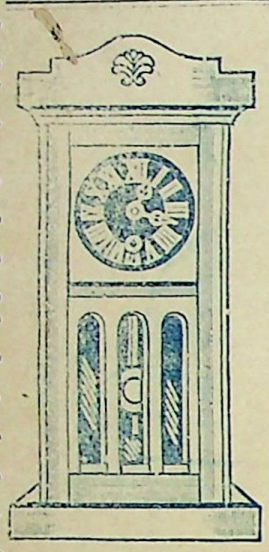

THE MODERN REGULATOR

One of our best Office clocks recently Imported.

The only Office Clocks, which is unequalled in the clock world. Made in wall nut superior case and with perfect mechanism. Give you correct time and guaranteed for five years.

WRITE NOW.

Price Rs. 5 Only

CAPTAIN WATCH Co., P. B. 165, MADRAS.

OUR STOCK TAKING SALE !
LOSE NOT THIS CHANCE !

To purchasers of the patent German Alarm Time-piece we are giving away one of our 18 carat Rolled Gold wrist watch with full leather as illustrated. Both these are guaranteed for five years Keeps correct time & handy. Both should be purchased at a time.

Rs. 10 — Rs. 10

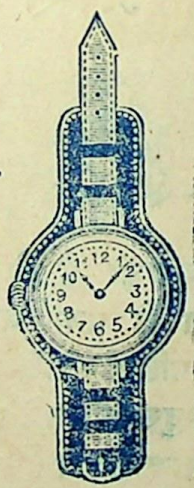

PURCHASED F SEPARATELY { The German Alarm Time piece Rs. 5. 18 carat Rolled Gold wrist watch Rs. 7.

TRT ONCE **ONLY A FEW MORE**

CAN BE HELD FROM

THE ENGLISH EMPORIUM,

P. B. 105. **MADRAS.**

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Library

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६]. चैत्र १९८२—अप्रेल १९२६ [खण्ड ६, संख्या १२

वार्षिकमूल्य ४॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी० ए० स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) विदेश का मूल्य ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषय सूची ।

विषय	पृष्ठ
१. व्यापक ले०—जगदीशचन्द्र शास्त्री	५४१
२. प्राचीन भारत में सम्पत्ति का अधिकार ले०—"आर्य्य महिला"	५४२
३ विरह वेदना—ले०—श्रीराजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद' ...	५४४
४. मत भेद ले०—श्री कुंवरसिंह	५४७
५. पाठविधि और ऋषि दयानन्द ले०—जगदीशचन्द्र शास्त्री	५४६
६-किस भाँति सङ्गठन हो ? ले०—पर्वताय पाषाण	५५३
७-मोहनी के आँसू ले०—श्री सन्तलाल वैद्यराज	५५४
८. दयानन्दाष्टक ले०—श्री पं० ओंकाराम भट्ट	५६०
९. कुसुमोद्यान	
१०. हमारी मञ्जूषा	
११. वनिता विनोद	५७१
१ स्त्री-जगत्	
२ स्त्रियों का कर्त्तव्य	
३ जीवन की एक विशेष घटना	
४ अछूतोद्धार	
५ कुमारी स्लेड	
१२—कन्या, गुरुकुल समाचार	५८२
१३—विचार प्रवाह	५८४

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी ।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है ।
६ मास के लिये २॥) है ।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है ।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है ।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है ।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता । नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है ।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है । बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं ।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये । जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे । पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये ।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें । वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है । पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है । आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे ।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये ।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये । यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये । परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी ।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

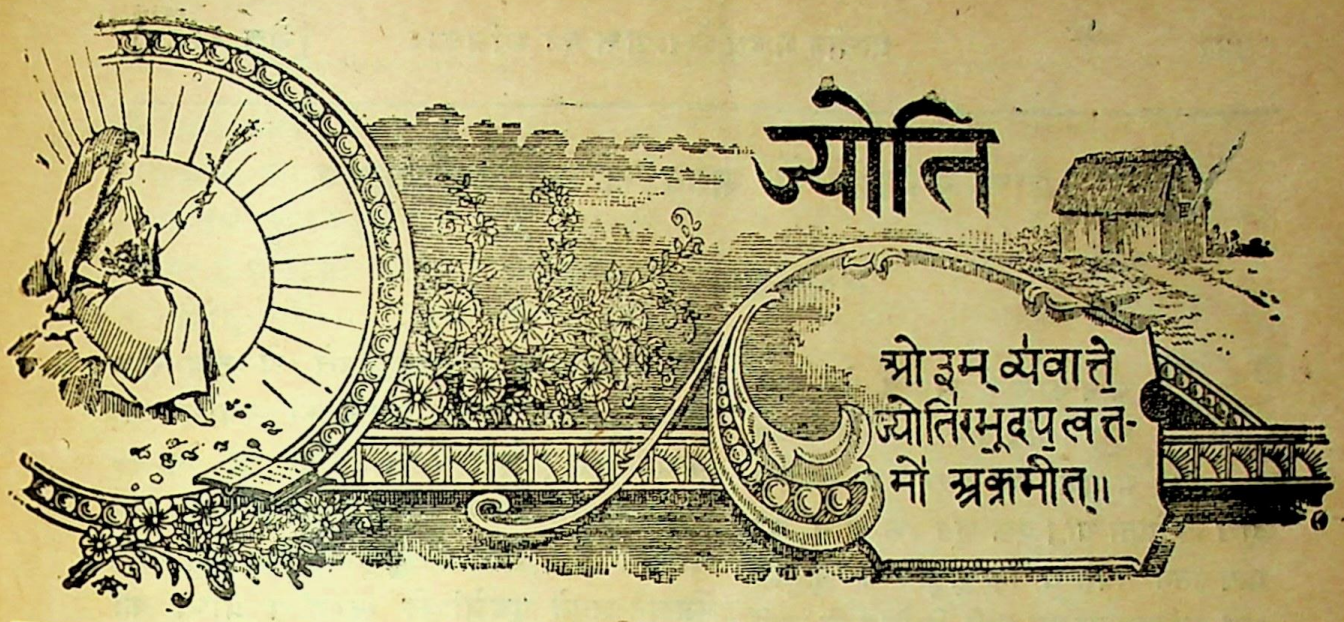

वर्ष ६ | चैत्र १९८२ —अप्रेल १९२६ ई० | संख्या १२

* व्यापक *

(१)

विश्वरूप में तू विराट है,
तेजराशि का अतुल खान है।
कीट, कीट में व्याप्त, आप्त है,
वेदज्ञान का तू निधान है ॥

(२)

मक्षि शून्य वन सघन मध्य में,
डालि वृन्द जब डोलती रहें।
पक्षि संघ मिल चह चहा करें,
श्रान्त पान्थ सब शान्ति को सहें ॥

(३)

उस सघन विजन देश में विभो!
जब प्रकृति तव-ध्यान-तन्मना।
विश्व को अमित गीत में मिला,
बालवृद्ध सब एक सा बना ॥

(४)

धन्य है उस अनन्त शक्ति को,
है उपास्य इस विश्व में वही।
भांति भांति के रूप में रमा,
गान अपना मुझे सुना रही ॥

जगदीशचन्द्र शास्त्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राचीन भारत में सम्पत्ति का अधिकार

ले०—आर्य महिला

प्राचीन काल में समाज को एक सूत्र में बांध कर एकता के बन्धन में जकड़ कर रखना रक्त-सम्बन्ध द्वारा ही होता था। एक खून के होने का भाव इतना प्रबल था कि कुटुम्ब के कुटुम्ब और जातियां परस्पर इसी सिमेन्ट से जुड़ी रहती थीं। एक आत्मा चार छै पीढ़ियाँ तक एक ही कुटुम्ब में प्रभावशाली रहती थीं। सपिंडता का भाव इतनी पीढ़ियों तक चलता जाता था और शारीरिक ऐक्य के होने से सम्पत्ति का अधिकार, खान, पान तथा परमात्मा की भक्ति के ढंग भी वही रहते थे। श्री माधवाचार्य्य ने देवलस्मृति का प्रमाण देते हुये लिखा है कि "यदि एक ही कुटुम्ब के सदस्य एक गृह में या अलग २ एक-कुटुम्ब बन कर रहते हैं तो उन की चौथी पीढ़ी तक दायभाग का हिस्सा लगता है। चार पीढ़ी तक उस कुटुम्ब के लोग एक पिंड के होगे इस के पश्चात् उन में सपिंडता नहीं रहती अतः ऋषियों ने कहा है कि सपिंडता के न रहने से उनकी सम्पत्ति का भी बंट वारा होजाना चाहिये।"

सम्मिलित—कुटुम्बप्रथा की मुख्य २ बातें सम्मिलित धार्मिक कार्य्य, सम्मिलित भोजन, सम्मिलित आय और व्यय और न्यायालय के सम्मुख भी एक व्यक्तित्व का भाव यही हैं जो सबसे बड़ा बूढ़ा या सब से योग्य व्यक्ति होता था वही अपने कुटुम्ब का नेता बनता था और लोग चाहे कितने ही बूढ़े क्यों न हों स्वतन्त्ररूप से सम्पत्ति के आय व्यय के जिम्मेवार नहीं हो सकते थे। जब तक पिता माता जीवित रहते थे तब तक संतान को धन के व्यय करने की स्वाधीनता न थी। नारद स्मृति में लिखा है कि—"पत्नी, पुत्र, दास और सेवक यह सब परतन्त्र हैं। लेकिन कुटुम्ब का मुखिया जिसने अपने पूर्वजों से सम्पत्ति प्राप्त की है वही उसके आय व्यय के लिये स्वतन्त्र जिम्मेवार है।"

लेकिन यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि इन दशाओं में कोई व्यक्ति विशेष सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होता था वरन एक कुटुम्ब। इस लिये मुखिया के अधिकार भी तो अत्यन्त परिमित रहते थे। कुछ सम्पत्ति जैसे कि उधार लिया हुआ धन जमा किया हुआ धन तथा सम्मिलित सम्पत्ति इत्यादि ऐसे धन समझे जाते थे जो अत्यन्त दुरावस्था में भी जुदा नहीं किये जा सकते थे। पितृ पितामह से प्राप्त सम्पत्ति का उपभोग तो सन्तान कर सकती थी किन्तु उसे दान नहीं दे सकी थी और न बेंच सकी थी। स्मृति चन्द्रिका में लिखा है कि यज्ञावसिष्ठ, पृथ्वी, लिखित सनदें, भोजन, जल और स्त्रियाँ हजार पीढ़ियों तक भी प्रथक् नहीं की जा सकतीं। स्थावर सम्पत्ति के सम्बन्ध में कोई भी कार्य्य करना हो सभी उत्तराधिकारियों की सम्मति से किया जाना चाहिये। मिताक्षरा में लिखा है कि—यदि जमीन को जुदा २ करना हो तो वह पड़ोसी किसानों, जाति बांधवों, पड़ोस में रहने वालों और उत्तराधिकारियों की सम्मति बिना नहीं किया जा सकता। अत्यन्त दुरावस्था पड़ने पर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ही ऐसा करना न्याय संगत है। कुटुम्ब के अधिकारों को भली भांति सुरक्षित रखते हुये ही धर्मार्थ जमीन का दान देना न्याययुक्त हो सकता हैं। ऐसा मालूम होता है कि हमारे यहां क्यों, ज्येष्ठता (प्रथम जो पैदा हुआ है वही कुटुम्ब का मुखिया रहेगा) यह रिवाज की प्रथा प्रचलित थी क्योंकि कुटुम्ब के कार्य्य कर्ताओं में एकता और अपृथकता का भाव का होना ऐसी केन्द्रित शक्ति की अपेक्षा करता है। पहिले पिता, फिर माता उसके बाद बड़ा पुत्र ही कुटुम्ब का मुखिया प्राचीन समय में हुआ करता था जो सब से बड़ा होता था वह छोटों के भरण पोषण का भार उठाने को बाध्य होता था। और छोटे उसे मान्य की दृष्टि से देखा करते थे। नाबालिग (अल्प आयु वाले) बच्चों की बड़ी सावधानी से रक्षा की जाती थी, इतना ही नहीं बुड्ढों, असमर्थों और अंगहीन कुटुम्बियों की पूर्णतया रक्षा के लिये सम्मिलित कुटुम्ब बाध्य होता था। युरोप में जो आज कल दीनों की सहायता, तथा बुढ़ापे के लिये ज़िन्दगी बीमा कराने या दुर्घटना के लिये धन संग्रह के फंड खुले हैं उनके स्थान में हमारे यहाँ नित्य प्रति कुटुम्ब के दैनिक कार्य्य ही ऐसे होते थे जिन से यह आवश्यकतायें बखूबी पूरी हो जाया करती थीं। यदि भेद था तो केवल यह कि जहाँ पाश्चात्य देशों में धन ही सहायकर्त्ता और असहाय का सम्बन्ध जोड़ता है वहां हमारे यहाँ धर्म भाव और आध्यात्मिक उन्नति भी साथ २ जोड़ने वाले होते थे। वर्तमान समय में कुछ ऐसे तरीके प्रचलित हैं जिन से आन्तरिक भाव में यह बात विद्यमान रहती है कि कुटुम्बों को बनावटी तरीके से कम कर दिया जाय, क्षीण शक्ति वालों को प्रथक रख दिया जाय और अनिच्छित लोगों को हटा दिया जाय। लेकिन हमारे प्राचीन भारत में जो न्यायाधीश थे उनके मस्तिष्क से न केवल यह भाव दूर ही थे वरन् वह प्राणि सम्बन्धी और आर्थिक भावों के साथ २ धार्मिक और आध्यात्मिक भावों को भी प्रधानता देते थे। बौद्धायन सूत्र अध्याय २ ३। ३६-४० में लिखा है कि न्यायाधीशों को नाबालिगों के हिस्सों और उसपर सूद जो मिले उस की भी बड़े ध्यान से रक्षा करनी चाहिये। जो लोग न्यायालयों में नहीं जा सकते अर्थात् अंधे, महामूढ़, दुराचारी तथा ऐसे रोगी जो स्वस्थ नहीं हो सकते इत्यादिकों को भोजन, वस्त्र, और शरण देकर उन की रक्षा करनी चाहिये। जो लोग कर्तव्य विमुख हैं अथवा कार्य्य छोड़ बैठे हैं उनकी रक्षा करनी चाहिये।

लेकिन यह अवस्था बहुत देर नहीं रही किन्तु थोड़े काल के बाद वयोवृद्धता का स्थान सम्पत्ति के बराबर २ अंश करने के भाव ने लेलिया। मनुजी ने अपने पुत्रों में बराबर २ सम्पत्ति बांटी अतः ययोवृद्धता के भाव जो मनुस्मृति में पाये जाते हैं वह वैदिक सभ्यता से पूर्व के हैं ऐसा कई पाश्चात्य विद्वानों का मत है। बहुत देर तक तो यह प्रथा चलती रही कि बड़े पुत्र को कुछ अधिक भाग दिया जाय लेकिन आपस्तम्भ ने इस के विरुद्ध आन्दोलन किया और यह बतलाया कि सम्पत्ति का अधिकार सब पुत्रों को बराबर २ है। आपस्तम्भ II, ६, १४, १५, १ में लिखा है कि इसलिये सभी पुत्र जो कि धर्मात्मा हों वह सम्पत्ति के अधिकारी हैं लेकिन जो उड़ाऊ खाऊ हो वह चाहे बड़ा पुत्र भी हो तो भी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नहीं बन सकता। वह अपने जीवन काल ही में अपने सब पुत्रों को बराबर अपना भाग बाँट दे लेकिन जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नपुंसक, पागल या चांडाल हों उनको हिस्सा न दे"।

प्राचीन काल में एक कुटुम्ब केवल आर्थिक दृष्टि से ही एक न था वरन शिक्षा दीक्षा के आधार पर भी निर्भर था। नवयुवकों को उच्च आदर्शों की ओर ले जाने तथा आलसियों और आवारागर्दों के ऊपर रुकावट डालने का भी यह बड़ी उत्तम और प्रभावशाली साधन होता था। छोटे भाइयों को बड़े भाई की निजी उपार्जित सम्पति का भी भाग मिलता था यदि वह अपनी शिक्षा में उचित उन्नति करते थे।

"यदि विद्यानुपालिनः"। (मनु ९।२०४) वह सब भाई जो स्वभावतः बर्जित कार्यों को करते हों उनको दाय भाग न मिले। (मनु ९।२१४)। लेकिन इस बात में बड़ा भेद था कि कोई असमर्थ हो या दुराचारी हो। असमर्थों को हिस्सा तो नहीं मिलता था परन्तु उन्हें गुजारा मिलता था, लेकिन दुराचारियों को कुछ भी नहीं। परन्तु जहां दुराचारियों के कोई अधिकार नहीं रहता था वहां उनकी पत्नियों तथा सन्तानों को दाय भाग और भरण पोषण का अधिकार भी प्राप्त था देखो (नारद स्मृति १३ २१-२२)। दूसरी तरफ विवाह बिना सन्तानोत्पत्ति करनेवालों· स्वधर्म त्यागने वालो, साधुओं, सन्यासियों और आजन्म ब्रह्मचारियों तथा नास्तिकों से दाय भाग का अधिकार छीन लिया जाता था। जिस सिद्धान्त के आधार पर यह नियम बनाया गया था वह यह था कि सम्पत्ति यज्ञों के लिये होती है अतः जो लोग यज्ञों को नहीं कर सकते उनका कोई अधिकार नहीं कि वह दाय भाग को प्राप्त हों। उन्हें केवल भरण पोषण का ही अधिकार है। "यज्ञार्थ विहितं वित्तं" इस लिये वह उपयुक्त धार्मिक पात्र के पास ही रहें, स्त्री मूर्ख और धर्मच्युत जनों के हाथ में न रहे यह माधवाचार्य्य का मत है।

[शेष फिर]

विरह---वेदना।

(मधुर---मिलन)

लेखक—श्री० राजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद'

स्त्री रूपी रत्न की प्राप्ति हुई, मरुभूमि मनोरम कानन में परिवर्तन हो गयी। सम्मिलन ही सौन्दर्य्य की उत्पत्ति, पवित्रता उसका सौरभ, अमृत उसकी परिणति है। प्रेम सिन्धु का मन्थन करने से जिस अमृत की उत्पत्ति हुई थी यह वही अमृत है इसका महात्म्य गान कवि की शक्ति के परे है। जिसने इसका आस्वा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दन नहीं किया वह इसे हृदयङ्गम करने में असमर्थ है।

देवताओं की लीला मनुष्य की शिक्षा के लिये होती है किन्तु वह शिक्षा ग्रहण करना सहज नहीं है। क्षणिक भाव हो सकता है, चित्त विचलित हो सकता है किन्तु इतना ही यथेष्ट नहीं है। सम्मिलन का ध्यान व्रज की याद दिलाता है। राधा-गोविन्द की पवित्र स्मृति हृदय में जागृत हो उठती है। यमुना की प्रबल तरंगों में प्रेम रूपी तूफ़ान उठा। मयूर मयूरी का नृत्य दिखला व्रज में चिर वसंत स्थापित कर नन्दन कानन को परास्त कर दिया।

सम्मिलन के अपूर्व्व महात्मा का दर्शन कराया है श्री हर गौरि ने! जय हो तुम्हारी!! तुम्हीं ने प्रेम की समाधि योग का मार्ग दिखाया है। ज्ञान व पवित्रता की उन्नति भूमि में शांति समाहित भाव का अन्त दिखलाया है। ज्ञान के साथ प्रेम का अपूर्व सम्मिलन दिखलाया है। तुम्हारी जय ध्वनि चराचर विश्व-जगत में प्रति ध्वनित हो उठे।

हे मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज! हे जगदम्बे जनक नन्दिनी! तुम अयोध्या के देवता और तुम वहां की अधिष्ठात्री देवी हो। तुम्हारे चरणों में अनेकानेक प्रणाम! तुम ने संसार को प्रेम शिक्षा देने के लिये ही तो नरतन में अवतार लिया था। तुम्हारा आविर्भूत न होने से क्या नारि जाति के लिये पत्नी को छाया की भांति पति का अनुसरण करने का महात्मा प्राचीन कवि वर्णन करते। मां! राजप्रसाद के सुख सम्पत्ति, ऐश्वर्य्य को लात मार कर दीन हीन वेश में पति का अनुसरण करना, कांटों से परिपूर्ण पथ पर चलने में आनन्द अनुभव करना। शीत, ग्रीष्म और वृष्टि की परवाह न करने का महत्व तुम्हारे सिवा कौन बतला सकता है? भीषण मरुभूमि, उत्तप्त पृथ्वी भी तुम्हारा पथ अविरुद्ध नहीं करती। भगवान भुवन भास्कर का प्रचंड ताप भी तुम्हें कातर न कर सका। तृष्णा की भीषणा ज्वाला भी तुम्हें विचलित न कर सकी। हां-सच तो! तृष्णा से तुम क्योंकर विचलित होतीं तुम तो प्रेम निधि का अनुसरण कर रही थीं--तुम्हारे हृदय में तो गंगा या यमुना की पवित्र धारा बह रही है। तुम्हें क्या क्लेश हो सकता है? सम्मिलन रूपी आनन्द के आस्वासन द्वारा ही क्या इतना कष्ट सहन किया था। नहीं! क्योंकि जिस समय दुष्ट रावण ने तुम्हें हरण कर तुम्हारे हृदय में विरहाग्नि प्रज्वलित की थी उस समय किस भांति तुमने जीवन धारण किया था? मां तुम्हारे लिये मिलन अथवा विरह क्या! तुम्हारे हृदय में तो पूज्य पति की मनोहर मूर्त्ति चिर-विराजित थी। तुम उसी पवित्र मूर्ति के ध्यान में विरह कानन में भी मिलनरूपी अमृत का आस्वादन करती थी। मां! सम्मिलन में वियोग का नाम नहीं। क्या यही दिखाने के लिये तुमने अवतार लिया था?

दयाभाव

आह! आप बीती लिखते २ क्या लिख गया। संसार सागर में अकेला ही डूबता उतराता था किन्तु किसने आकर हृदय में अग्नि प्रज्वलित करदी पहिले तो प्रकृति की ओर दृष्टिपात भी नहीं करता था किन्तु आज उसकी छटा वर्णन करने में लेखनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विश्राम करने का नाम ही नहीं लेती। सुना है, कि बाल्यकाल में माता की गोद में अठखेलियां करता। चंद्रमा की इच्छा करता। जिस वस्तु को मां न दे सकी उसे विधि के विधान ने लाकर सौंप दिया। उद्यान में पुष्प को खिलते देख कर चित्त प्रफुल्लित हो जाता था किन्तु तोड़ने जाकर उसकी शोभा देख कर अवाक हो गया। हृदयने कहा-"तोड़ो"—बुद्धि ने कहा—नहा- अभी अर्द्ध विकसित कली है!

एक दिन विद्यालय से घर आ रहा था। राह में फुटपाथ पर एक मनुष्य अचेतावस्था में पड़ा हुआ था। बोलने की शक्ति नहीं थी बार २ जीभ निकालते हुए देखकर प्यासा होने का अनुमान किया। एक विद्यार्थी की सहायता से जल पिलाया। चैतन्य होने पर घर ले आया। उसकी अवस्था देखकर पत्नी ने रो दिया। आह! वह मधुर दृश्य आज भी नेत्रों के सन्मुख नाच रहा है। उसी दिन समझा कि वह साक्षात करूणामयी देवी है।

देवी की सेवा सुश्रुषा से रोगी ने आरोग्यता लाभ की। वह जाति का अहीर था। स्वस्थ होने पर एक दिन उसने कहा कि माँ! संसार में मेरा कोई नहीं है — जब तक जीवित रहूँगा तब तक तुम्हारा पुत्र होकर रहूँगा। देवी ने प्रसन्नता पूर्वक पुत्रवत् उसका लालन पालन करना आरम्भ किया।

उपरोक्त घटना को कई वर्ष व्यतीत हो गये। पत्नी को कोई सन्तान नहीं थी। अहीर बालक ही एक मात्र पुत्रस्नेह का भागी था। उसे महेन्द्र कहकर पुकारती थीं! उसके लालन पालन करने में ही आनन्द बोध करती थीं! किन्तु दुर्दैव से वह भी न देखा गया! अचानक महामारी रोग ने महेन्द्र को इस असार संसार से उठा लिया। देवी के सुख साधन का एक मात्र साधन भी उससे न देखा गया।

जीवन के प्रणय परिच्छेद का इस प्रकार अन्त होगया। कौन जानता था? हृदयेश्वरी तुमने इस हृदय में नन्दन कानन की उत्पत्ति की शाखा को प्रेमवारि से सींचा? किन्तु आज वही नन्दन कानन श्मशान भूमि में परिणत हो गया। कौन जानता था। कि मुझे शेष जीवन दारूण क्षोभानल में दग्ध होना पड़ेगा' प्राणेश्वरी! तुमने कैसी निदारूण मर्म्म यातना देकर यहां से प्रस्थान किया। हाय! आज तुम कहां हो!!

आवेग

क्षद्र मरुभूमि के निकट मेरी सामान्य कुटी अवस्थित थी। भाव रूपी कुसुम अभी प्रस्फूटित नहीं हुआ था? आशा रूपीं नदी अभी प्रवाहित नहीं हुई थी। गम्भीरता नाम का कोई शब्द संसार में है या नहीं, नहीं जानता था, आवेग का अवलोकन कभी नहीं किया था। अभी तक यही सोचता था कि संसार में केवल वालुका राशि के गढ़ प्रस्तुत कर क्रीड़ा कौतुक, आमोद-प्रमोद करने आया हूं। हृदय में कभी भय का सञ्चार नहीं हुआ, निराशा की आंधी का थपेड़ा नहीं खाया। कर्म्म फल भोगने के निमित्त आया हूँ भोग कर चला जाऊंगा। मन की आकांक्षा जताने की आवश्यकता ही क्या है?

सहसा प्रभात संगति का मधुर गान श्रवण किया। समझा कि गन्तव्य स्थान पर आ पहुंचा। नेत्र खोल कर देखा कि किसी अपूर्व रम्य जगत में आ गया हूँ। सहसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मालूम हुआ कि किसी की सुकोमल गोद में शयन कर रहा हूँ। उसी दिन समझा कि यह जगत बालू की भीति नहीं है। उस दिन से फिर वो मरुभूमि न देख सका। उसी दिन से इस आनन्दमय जगत का अधिवासी हुआ। उसी दिन से प्रेमावेग में पड़कर उस के गाम्भीर्य में डूब गया।

कौन जानता था कि देखते ही देखते एक दिन विषाद सागर में डूब जाना होगा? इस क्षणिक स्वप्न में भूल कर निराशा रूपी अन्धकार में पविष्ट हुआ। अतीति स्मृति के चितानल में कब तक दग्ध होना पड़ेगा॥

यह चितानल क्या निर्वापित न होगी? यह महापातकी कर्म फल कब तक भोगूंगा? हेसन्तापहारी प्रभो? इस शोकानल से रक्षा करो तुम्हारे सिवा हतभाग्य का और कोई उपाय नहीं है॥

(समाप्त)

मतभेद

ले०—श्रीयुत कुंवरसिंह शाहपुर

इस महान् विश्व में प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति का एकसा होना कुछ असम्भव सा प्रतीत होता है। प्रायः मनुष्यों की प्रकृतियां भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं। यदि किसी को मीठा प्रिय है तो किसीको कडुवा। तात्पर्य्य यह कि साधारणतया मनुष्य भिन्न भिन्न प्रकृति ले के इस पृथ्वी पर जन्म लेता है। यह बहुत कम देखने में आता है कि दो मनुष्यों की प्रकृतियां पूर्णतया मेल खाती हों। यहां तक तो ईश्वरीय लीला हुई कि उसने मनुष्यों की प्रकृतियां भिन्न भिन्न बनाई हैं। परन्तु कुछ मनुष्य तो जान बूझ कर अपनी प्रकृति बना लेते हैं। वह जिस किसी वस्तु को नहीं चाहते उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। वे कहने लगते हैं मुझे इसे छूते घृणा मालूम होती है देखने की कौन कहे। वे यह नहीं सोचते कि यह भी तो उसी महान प्रभु की बनाई हुई है। जिसने इनकी मनभावनी वस्तु बनाई है।

बाबू रामटहल जिला आजमगढ़ के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। ईश्वर की कृपा से आपको किसी वस्तु की कमी नहीं। आपके बड़े कुटुम्ब के अतिरिक्त तीन पुत्र और दो पुत्रियां हैं। आपके बड़े पुत्र का ब्याह नवगांव जिला हमीरपुर के एक रईस की पुत्री से हुआ है। बहू का नाम श्यामा है। श्यामा सर्व गुण सम्पन्ना। पतिभक्ता रमणी है। सब गुणों से विभूषित होने पर भी विचारी का रंग कुछ साँवला है। इसके लिये वह विचारी क्या करे? यह तो ईश्वर प्रदत्त वस्तु है।

---

* यह गद्यकाव्य बंगला के 'वियोग वेदना' नामक पुस्तक से सहायता लेकर लिखा गया है अतः मैं उक्त पुस्तक के लेखक का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है। सांवली होने पर भी श्यामा बड़ी सुन्दर है। यदि उसे स्नेह का आगार कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। छोटे बड़े समस्त कुटुम्बी उसके स्वभाव से बड़े ही प्रसन्न रहते हैं। पर कभी कभी उसके देवर लोग उसके सांवले रङ्ग की हंसी भी उड़ाया करते हैं।

सन्ध्या का समय है। सूर्य्यभगवान के अस्ताचल जाने में अभी कुछ समय का विलम्ब है। ऐसे ही समय हरिकिशन बाबू रामटहल के मंझले पुत्र "भाभी भाभी" कहते अन्दर आये। ये कालेज में शिक्षा पा रहे हैं। अभी हाल ही घर आये हैं। ये बड़े हंस मुख गौर वर्ण और एकहरे शरीर के सुन्दर युवा हैं। अभी आपका ब्याह नहीं हुआ है। इधर उधर के बातों के उपरान्त इन्होंने अपनी भाभी से कहा "क्यों भाभी भला काला भी कोई रङ्ग है? बुरा न मानना सच कहता हूँ मुझे काला रङ्ग देखते ही बुखार सा चढ़ आता है।"

श्यामा—क्यों न ऐसा कहोगे। तुम स्वयं तो गोर वर्ण के हो इसी लिये ऐसा कहते हो, पर मैं क्या कहूं मेरा तो वही बुखार चढ़ आने वाला काला रङ्ग है। बार बार क्यों तुम इसकी मीमांसा मुझ से कराने आते हो? घर में और लोग भी तो हैं उनसे क्यों नहीं पूछते? मुझसे इसी लिये पूछते हो कि तुम्हारे घर में मैं ही अकेली काले रङ्ग की हूँ!

हरिकिशन—वाह भाभी तू तो बड़ी जल्दी बुरा मान गई। मैंने तो वैसे ही अपने मन की बात कहा थी कुछ तुम्हें चिढ़ाने के लिये नहीं।

श्यामा—नहीं भइया! बुरा तो नहीं माना। यह तो ईश्वर की दी हुई बात है। यदि बुरा भी मानू तो अब इसे बदल तो नहीं सकती। अब मैं काले से गोरी नहीं होने की। परन्तु भइया गौरे या काले चमड़े से क्या मनुष्य का हृदय देखना चाहिये कि वह काला या गोरा। मेरी समझ मे काले चमड़े वालों को उनके रूप का घमंड नहीं होता उनका हृदय शीशे की भाँति स्वच्छ होता है परन्तु गोरे चमड़े वाले अपने रूप के ही घमंड में चूर रहते हैं उनका हृदय उतना स्वच्छ कभी भी नहीं हो सकता उनकी तो यही गति होती है कि "विष रस भरा कनक घट जैसे"! क्यों भइया राम, कृष्ण भी तो काले चमड़े वाले थे! तुम लोग उन्हें क्यों पूजते हो उनको घृणाकी दृष्टिसे क्यों नही देखते! उनको सदैव क्यों स्मरण किया करते हो! उनकी याद आने से तुम्हें बुखार तो नहीं चढ़ आता! उनके गुणों की ओर ही क्यों ध्यान देते हो उनके चमड़े का ख्याल क्यों नहीं करते।

हरिकिशन—वाह भाभी तुमने तो बड़ी अच्छी वक्तृता झाड़ी, मैं तो हैरान था कि तुम कहीं ये सब बात रट तो नहीं लाई हो! तुमने तो अपने मत का खूब ही समर्थन किया, पर मैं इतने परभी तुमसे सहमत नहीं! हमारा तुम्हारा अब भी मत भेद है!

श्यामा—ईश्वर ने चाहा तो भइया कभी तो सहमत हो जावोगे।

* * * *

बाबू हरिकिशन का ब्याह हुये डेढ़ महीना व्यतीत हो गया। अब वे घर पर ही

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहते हैं। उन की सुशीला देवी श्यामा देवी से भी काली है पर वे भी श्यामा देवी की तरह सुशिक्षिता और गुण सम्पन्ना रमणी हैं! वे अपने पतिदेव बाबू हरिकिशन को देव तुल्य समझती हैं। श्यामादेवी और उनका बड़ा ही हेल मेल है! वे श्यामा देवी को बड़ी भगिनी के सदृश मानती और उनका आदर सत्कार करती हैं! श्यामादेवी का तो कहना ही क्या सुशीला उनको प्राणों से भी प्रिय है!

एक दिवस श्यामा और सुशीला में किसी विषय पर बात हो रही थीं अकस्मात वही काले और गोरे का विषय फिर छिड़ गया! श्यामा ने उसी समय हरिकिशन को बुला भेजा और हंसते हुये उनसे पूछा, "क्यों भइया काले को देख कर अब तुम्हें बुखार तो नहीं चढ़ता?

हरिकिशन ने झेंपते हुए उत्तर दिया—नहीं भाभी अब मैं तुमसे पूर्णरूप से सहमत हूँ! अब मेरा कोई मतभेद नहीं!

श्यामा ने हस कर कहा—यह ईश्वर की इच्छा और तुम्हारा अनुभव मात्र है!

इस पर सब हंस पड़े!!

पाठविधि और ऋषि दयानन्द

ले०—श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री

पाठविधि अर्थात् शिक्षाप्रणाली पर आर्य्यजगत् में एक बड़ा मतभेद है बड़े २ विद्वान् इसकी पेचीदगी में भूलभुलैयां की तरह भूले हुए हैं। वास्तव में शिक्षाप्रणाली मनुष्य के प्रारम्भिक जीवन की मूल है, यदि उसकी रक्षा यथारीति से गुण दोष के ज्ञान के साथ की गई तो सम्भव है कि उसके आधार से खड़े होकर छोटे २ पौदे भी एक न एक दिन एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेंगे।

ऋषि दयानन्द का जीवन आदर्श था। उन्होंने आदर्शवाद के आगे किसी बात की परवा नहीं की। इस विषय में उनके लिए राजा और रङ्क सभी एक कोटि के थे। ऋषि की लिखी पुस्तकों से हमें उसके विचारों का ज्ञान होता है परन्तु उसके जीवन से उसके क्रियात्मक जीवन का। बात भी ठीक है जो दूसरे को सच्चा बनाना चाहता है उसके लिये सर्वोत्तम साधन स्वयं सच्चा बनना है किन्तु जो केवल प्लेटफार्म पर गरज कर लच्छेदार भाषा में भाषण देकर जनता को मन्त्र मुग्ध कर लेते हैं वह निस्सन्देह जनता को मुग्ध कर लेंगे परन्तु उन्हें क्रियात्मक जीवन के विषम साँचे में ढालना उनके बस की बात नहीं। अन्य सुधारकों तथा ऋषि में यही भेद जान पड़ता है कि वह कहते थे पर करते नहीं थे। और यही कारण था कि वह अपने उद्देश्य को सफल नहीं कर सके।

ऋषि को आदर्श पिय मानते हुए हमें उनके जीवन की छानबीन करनी पड़ेगी। इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि को मार्गदर्शक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई ठीक नहीं मिला और मिला भी तो चिरकाल के बाद। हम ऋषि के जीवन का स्वाध्याय करते हुये यह भूल जाते हैं कि मिनट २ में भी विद्याध्ययन से ज्ञान की वृद्धि होती है। ऋषि का जीवन सङ्कटमय बीता और आदिसे अंत तक भांति भांति की घटनाओं से पूर्ण था।

उनके जीवन के क्रमशः पांच विभाग हो सकते हैं—

जिनमें १—१४—१४—२२—२२—३६ ३६—३८—३९—६२।

उपर्युक्त पांचों विभागों में ३९ वर्ष तक का भाग विद्याध्ययन में बीता! प्रारम्भ के १४ वर्षों तक ऋषि ने मूलशङ्कर की अवस्था में ही यजुर्वेद तक पिता जी से पढ़ लिया था। उस समय की पाठविधि में यह कोई दोष में नहीं गिना जाता था कि १४ वर्ष के बालक को वेद किस प्रकार पढ़ाया जावे तदनुसार कुछ सारस्वतादि साधारण व्याकरण पढ़कर ऋषि ने इस प्रथम भाग को यजुर्वेद के पठन पर्य्यन्त लगाया? जीवन के द्वितीय भाग में मूलशङ्कर के घर में कई घटनाएं हुई। भगिनी तथा चाचा की मृत्यु अकालमृत्यु थी तो भी किसी का साहस मृत्यु से उन्हें लौटा लेने का नहीं। घर के आबाल-वृद्ध सभी रोते थे पर मूलशंकर के हृदय में नाना प्रकार की तरङ्गें उठ रही थी, वह जीवन मरण की कठिन पहेली को समझने का यत्न कर रहा था और जीवन की नश्वरता को ध्यान में रख अमरत्व की बूटी खोजना चाहता था। इसी प्रकार के कार्यों में ऋषि ने ८ वर्ष व्यतीत कर दिये। तीसरा भाग संकटमय है और इसको १४ वर्ष की कठिन तपस्या कह सकते हैं, क्योंकि ऋषि ने पर्वतों के विषम भागों में, कंटकाकीर्ण घने रास्तों में नंगे पैर चल कर सच्चे गुरु की खोज की। उनके हृदय में विद्यार्थियों के प्रति अपार करुणा थी अन्यथा मठ मठ में गुरु भरे पड़े थे। पढ़ना पढ़ाना उनका प्रधान काम था। ऋषि एक युवक था और उसने संस्कृत विद्या के नाश का अतीव अनुभव किया। संसार में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो पास की प्राप्त वस्तु का उपभोग यथावत आनन्द के साथ नहीं कर सकते अतएव यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं कि सहस्रों छात्र जो अपना जीवन लघु-कौमुदी में लगा देते हैं इस महान् हानि को अनुभव नहीं कर सके।

चौथा जीवन केवल ३ साल का है और सब से छोटा होते हुए भी सब से बड़ा है। उसमें अन्धे गुरु से आंख वाले ने शिक्षा ली थी। गुरु भी खोज में थे पर उन की विद्या का पात्र ही कोई नहीं था। वेदों के नाश का ध्यान कर मन ही मन जी मरोड़ कर रह जाते पर क्या करते कोई योग्य शिष्य नहीं मिला। वृद्धावस्था में अन्धे गुरू की मनोकामना सिद्ध हुई कि उनको आँख वाला शिष्य मिला।

कैसा स्वर्णीय अवसर था जब गुरु और शिष्य की विषम जोड़ी मिली। साईस घोड़े की नस नस पहचानता है अतएव गुरु को भी चीन्हने में देर न लगी और तीन ही साल में दयानन्द का ज्ञानकोष गुरु की भांति अक्षय हो गया।

अन्तिम जीवन के २६ सालों में ऋषि ने प्रचार का कार्य्य किया और पाठविधि का निर्माण काल यही होने पर भी वह आदर्श बाद की दृष्टि से हमारा ध्येय नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह तो ऋषि के जीवन से स्पष्ट ही है कि गुरु विरजानन्द के पास आने से पूर्व वे अनार्ष पुस्तकें पढ़ते थे और यह गुरु विरजानन्द का ही प्रथम उपदेश था कि अनार्ष ग्रन्थों को नहीं पढना चाहिये। और विदाई के समय उन्होंने अपने शिष्य को भी यही उपदेश दिया था।

"मनुष्य कृत ग्रन्थों में देवताओं और ऋषियों की निन्दा है, ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना"।

सचमुच ऋषि ने इस कसौटी को आमरण नहीं छोड़ा अतएव उन्होंने वेद के सदृश मान्य ब्राह्मण तथा उपनिषद और स्मृतिग्रन्थों का आदर करते हुए अनार्ष ग्रन्थों के लिये कटु से कटु शब्दों का प्रयोग किया। उन के हृदय में एक बड़ी वेदना थी कि जनता भेड़ों की भांति इधर उधर भटकरही है, वह उद्देश्य से च्युत होरही है। वास्तव में जनता लौकिक ग्रन्थों के चक्कर में पड़ वेदों को बिलकुल भूल गई थी पुराण और भागवत की कथा तो गली गली में होती थी पर वेदों के दर्शन करने वाले भी दुर्लभ थे। सब अपनी २ धुन में मस्त थे।

व्याकरण पढ़ने वालों ने लौकिक व्याकरण के पढ़ने में अपना सारा जीवन लगा दिया था पर वेदों का थोड़ा व्याकरण भी कोई न जानता था। यह 'संस्कृत का मध्ययुग' कहलाये तो कोई अनुचित नहीं होगा। यह काल महाभारत से लेकर स्वामी शंकराचार्य्य के समय तक कहला सकता है। इस काल में लौकिक व्याकरण के उत्तमोत्तम ग्रन्थ शेखर, मनोरमादियों का निर्माण हुआ। काव्य के उत्तमोत्तम ग्रन्थ रचे गये। कालिदास, भारवि, माघ, और श्रीहर्ष जैसे बड़े २ विद्वान कवियें ने जन्म लिया परन्तु यह सारी उनकी भूल थी क्योंकि वे मार्ग भ्रष्ट होकर अकस्मात् किसी मार्ग को पकड़ चुके थे, उन के सभी अनुयायी उनके मत का समर्थन करते रहे और कई कट्टर आर्य समाज के शत्रु अब भी अपनी थोथी दलीलों से अपने मत को पुष्ट करने का यत्न करेंगे, पर सचाई सचाई ही है।

गत दिवाली पर (प्रकाश) हिन्दी के ऋष्यङ्क में लाहौर के औरेण्टियल कालिज के प्रोफेसर महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शास्त्री ने लिखा था "यदि दयानन्द न होता तो आज वेदों का सर्वथा लोप होगया होता।" अस्तु! इसका आशय यह कदापि नहीं कि वे मूर्ख थे। और उनके ग्रन्थों को जला देना चाहिये। हम शब्दों की ओर दौड़ते हैं पर परिस्थिति और अवसर का बिलकुल ध्यान नहीं करते। स्वामी जी ने किस परिस्थिति में इन बातों को कठोर शब्दों में लिखा था यह उनकी लिखी हुई अन्यधर्मों की समालोचना से स्पष्ट होजायगा। स्वामी जी के सामने सहस्रों विद्यार्थियें के जीवनमरण का प्रश्न था उनको विद्यार्थियें की इस प्रवृत्ति को देख कर आन्तरिक वेदना होती थी।

एक ओर मनु भगवान् का निम्न श्लोक और दूसरी ओर समाज की यह प्रवृत्ति।

"योऽनधीत्य द्विजो वेदान्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय।"

जो द्विज वेद को न पढ़कर अन्य पुस्तकों में परिश्रम करते हैं वे जीते जी शूद्र बन जाते हैं। इन्हीं बातों का ध्यान रखकर ऋषि ने

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संस्कृत भाषा का पठन क्रम लिखते हुए सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में निम्न-लिखित प्रणाली का दिग्दर्शन करा दिया।

३ वर्ष व्याकरण शास्त्र

१ वर्ष { ८ मास, ४ ,, वैदिककोश(निरुक्त)

१ वर्ष मनुस्मृति, रामायण, महाभारतादि
२ ,, षट्शास्त्र
६ ,, ब्राह्मणग्रन्थ तथा वेद
३ ,, आयुर्वेद
५ ,, सैनिकविद्या, गानविद्या, राजविद्या शिल्प आदि

२१ वर्ष

उपर्युक्त रीति से संस्कृत का पूर्ण ज्ञान २१ वर्ष में प्राप्त हो सकता है परन्तु स्वामी जी ने यह प्रणाली राष्ट्रभाषा संस्कृत मानकर बनाई है अन्यथा यदि वह हिन्दी आर्यभाषा को राष्ट्रभाषा बनाकर लिखते तो पहिले के वर्षों में हिन्दी के लिये अवश्य कोई न कोई समय निश्चित होता। किसी भाषा के व्याकरण व ज्ञान से पूर्व उस भाषा का सामान्यज्ञान होना परमावश्यक है परन्तु वर्त्तमान विश्वविद्यालयों की पाठ विधि में कई त्रुटियां है और यही कारण है कि बड़े २ व्याकरणाचार्य संस्कृत की कुछ पंक्तियों के लिखते हुए भी व्याकरण की मोटी २ अशुद्धियें कर जाते हैं। यह बात विश्व विद्यालयों के लिये कितनी अपमानजनक है कि व्याकरणाचार्य केवल व्याकरण के ज्ञान में चूर हों उन्हें भाषा से कोई प्रयोजन नहीं और साहित्याचार्य लौकिक साहित्य की सभी पुस्तकों को पढ़ कर भी वेद के ज्ञान से शून्य हों।

संस्कृत के पण्डितों की परिभाषा यही है कि वह शास्त्रार्थ करना जानते हों और असत्य को सत्य सिद्ध करने का अन्त तक दुराग्रह करते जांये। अस्तु! स्वामीजी की बतायी पद्धति हमारे समक्ष है और हमें इसमें थोड़ा सा संशोधन करना पड़ेगा अर्थात् आरम्भ के दो वर्ष राष्ट्रभाषा के लिये छोड़ने पड़ेंगे और पुनः १ वर्ष संस्कृतभाषा सीखने के लिये। मुझे पाठविधि के विषय में कहते हुए न तो गुरुकुल कांगड़ी की वर्तमान पाठविधि की पुष्टि करनी है न गुरुकुल वृन्दावन की।

मेरी दृष्टि में पाठ विधि एकही ठीक है वह उपर्युक्त संशोधन के साथ अपने आचार्य की बनायी विधि ही पसन्द है। अब यह संचालकों की इच्छा पर है कि वे इन विषयों को पृथक् २ पढ़ावें या एक साथ। विषय हमारे समक्ष हैं, और इनका मिश्रण करना हमारे अधिकार की बात है परन्तु ध्यान रहे कि ऋषि का उद्देश्य न बिगड़े। वेदों का अध्ययन करना हमारा परम-धर्म है। दूसरी बात यह है कि हमारी शिक्षापद्धति नवयुवकों को बेकार न बनादे। यह कौन कह सकता है कि स्वतन्त्रता अभी कितनी दूर है, पर गुलामी के नाम पर यदि शिक्षा दी गई तो शिक्षा का महत्त्व धूल में मिल जायगा। यह मार्ग इतना पेचीदा नहीं है जितना कि हम समझते हैं। नवयुवकों की बेकारी का प्रश्न उन विद्यालयों के लिये अवश्य जटिल हैं जिनके छात्रों का ध्येय ऐश, आराम से जीवन बिताना है परन्तु जिन विद्यालयों के छात्रों का ध्येय सादा जीवन है उनसे बेकारी दूर भागती है। छोटे कामों में अपने लिये उनको नौकरों की मोहताजी नहीं, वे कार्य करने में स्वयं शक्त हैं। पाठविधि के साथ हमें वह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि हमारे नवयुवक किसी भी पेशे को बुरा न समझें। व्यापार की दृष्टि से कोई काम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छोटा नहीं है और किसी भी काम में हमें घृणा नहा करनी चाहिये। परतन्त्र अभागे देशों में तो बेपढ़े व्यापारी आर दूकानदारों की कमी नहीं पर स्वतन्त्र देशों में वे व्यापार के अधिकारी नहीं और यही कारण है कि हमलोग परिश्रम करने पर भी व्यापार में सफल नही होते और दूसरे देशों के लोग हमारे ही धनसे मालामाल होजाते हैं।

शिक्षा की इन विशेषताओं के साथ मैं पाठकों का ध्यान उस आदर्शवादी, निस्पृह, सन्यासो की ओर आकर्षित करता हूँ जिस आदर्श को हम भी ध्येय बनाते हुए अपना दुखमय जीवन भी सुखमय बना सकेगें।

देश के नवयुवको! यह पाठविधि ऋषि ने तुम्हारे हित के लिये बनाई है, यदि अब भी नहीं चेतोगे और वर्तमान स्कूल, कालिजों की थोथी शिक्षा की धुनमें रहोगे तो भारत सर्वदा विदेशियों से पादाक्रान्त रहेगा डूबते हुए नाविको अब भी सभल जाओ। तुम्हारे लिये ऋषि ने सच्चा मार्ग खोल दिया है। तुम पतित नहीं पर सर्वगुण-सम्पन्न हो, तुम बाहर का सुख, समृद्धि देख-कर फूले नहीं समाते, जरा देखो अन्दर और वहां कितना स्वर्गीय सुख है। कितना अतुल ऐश्वर्य जगमगा रहा है। अपने को मत भूलो और पूर्वजों की जीवनी देखो तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा। इति।

---

* किस भांति संगठन हो *

[श्रीयुत पर्वतीय पाषाण]

सद्भाव से जहांपर खिलता न मन-सुमन हो,
शुचि वेद का जहांपर होता न अध्ययन हो।
देवासुरी रणस्थल हर झोंपड़ी, भवन हो,
दुर्भिक्ष रोग दानव करता जहां शयन हो?
भाई व भाइयों में कटता जहां सगन हो,
फिर उस जगह परस्पर किस भांति संगठनहो

* * * *

अपस्वार्थ का जहां पर बहता प्रबल पवन हो,
निर्दोष-प्राणियों का होता जहां हनन हो-
बलहीन का सबल से होता जहां दमन हो,
अन्धेर के नगर में चौपट्ट का अयन हो।
जप-तप अनेक करके होता न दुःख दलन हो,
फिर उस जगह हमारा किस भांति संगठन हो?

* * * *

नारी-समाज का तो अतिशय जहां पतन हो,
बहुओं व बेटियों का बिकना जहां चलन हो।
विधवा, अनाथ, शिशुदल होता जहां यवन हो,
कीड़े समान जिसका जीवन तथा मरन हो॥
जब दो सहोदरों में पारस्परिक जलन हो,
हम हिंदुओं का फिर हा! किस भांति संगठनहो

नोट – यह कविता "हृदय" से उद्धृत की गई है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोहिनी के आंसू।

लेखकः—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

आज सन्ध्या के ७ बजे ही कार्य-वश दुकान बंद कर, माधव समेत कुन्दन घर की ओर तैयार हुए। मार्ग में दोनों को मियां अब्दुररहमान ने आते देखा। वह शीघ्र ही मस्जिद से निकल, घर की ओर धीमी चाल से चलने लगा। उतनी देर में वे पास ही आगए। तब "कहिए, जनाब! मिजाज़ शरीफ़?" कह, हाथ मिलाने को बढ़ाए। इधर कुन्दन ने भी-"इनायत है। आप सुनाइएगा-ख़ैरियतहै?" कह सोल्लास पाणि पीड़न किया।

अब्दुररहमान—"नवाज़िस है!" कह, इधर उधरकी बातें करने लगा। इसी अन्तर में थोड़ा देर में कुन्दन के हृदय में कुछ गुदगुदी-सी होने लगी। उससे रहा न गया। वह लज्जित-सा हो, क्षीण-स्वर में कहने लगा "आप .....।" कहने ही पाया कि जिव्हा लड़ खड़ा गई। चालाक अब्दुररहमान तुरन्त ताड़ गया। वह अपने भाव को छिपा कर बोला—"फ़रमाइए फ़रमाइये?"

कुन्दन—(संकोच से) "....नहीं, वैसे आपसे कुछ नहीं कहता था। यहाँ की रिवाज को देखता हूं।"

इस बार अब्दुररहमान-खूब समझ गया। अपने भाव को वह चर्वित-पान के थूकने के बहाने और भी गहरा छिपा बोला—"जैसे।"

कुन्दन साहस कर बोला—"यही कि आप लोग दुकान के अन्दर तक चले जाते हैं, और यहां के लाला लोग कुछ नहीं कहते उनकी घिन (नफ़रत) काफूर हो रही है!"

अब्दुररहमान—"जनाब, यह टेढ़ा सवाल है!" कह, हाथ पकड़े, पास ही अपने मकान के सामने ले जा, बोला-"ठहरिए, बैठक का कुन्डा खोलता हूँ।"

---

‡

सूचना आजकल हिन्दी साहित्य—क्षेत्र में स्वार्थीजनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक 'ज्योति' के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी लुधियाना के पते पर अपनी सकारण शुभ सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुन्दन—" अजी, ज़रा काम था "

अब्दुर—(स्मित-पूर्व) "अम्मियां, बीबी ने बुलाया होगा कहीं ? आइए, डरिए नहीं। बहुत-से-बहुत ज़रा ख़फ़ा होलेंगी ! "

धूर्त की बातें सुन, कुन्दन लज्जित हुआ। इस लिए कि-अनुज माधव समीप ही खड़ा था। कुछ जवाब नहीं दिया। इतनी ही देरमें झट से अन्दर से कुन्डा खोल, " आइएगा हुज़ूर-आली ! " कह, रूमाल से मख़मली गदेली वाली दो कुरसियाँ झाड़, विमल कर, बिछा दीं। कुन्दन और माधव, बिजुली से सुप्रकाशित, देदीप्यमान कमनीय कमरे के बाहर के विभाग में उन कुरसियों को खींच, बैठ गये,। इधर, अब्दुररहमान भी अपनी चेयर को पास खींच, बैठे और बोले:—

" भाई साहिब, सुनिए-वे लाला लोग हैं, हिन्दू हैं। हमारा और उनका तो बराबरी का सा मुआमला है। वे हमसे एक बार नफ़रत करें, हम हज़ार बार दुदकार दें। बाकी वे तुम लोगोंसे तो तअल्लुक़ात नहीं रखसकते हिन्दू ' हिन्दू ' को ही नहीं चाहता, फिर भला नीच क़ौम को तो कैसे पास बिठालें ? तोबाह, तोबाह ! यह तंग दिली तो हम में ही नहीं है। हम हर एकको गले लगालेते हैं।"

यह सुन, कुन्दन शान्त हो रहा, परन्तु माधव के हृदय को इन दुर्वचनों ने व्रणित किया। गम्भीरता रखते रखते-भी बिन चाही उत्तेजना उस में आही गई। वह सम्हल, बोला —

"मुवाफ़ी दीजिए, एक बात कहता हूँ।"

अब्दु०—(दाढ़ों में फंसी छालियां निकालता दो तीन बार इधर-उधर, (शिर हिला) " नहीं नहीं, फ़रमाइएगा। "

माधव— 'काम तो हमारा और आपका बिलकुल एक ही है, कुछ भी फ़र्क़ नहीं। "

अब्दुर०—(कुटिल कटाक्ष कर) " ऊ.. हां, जनाब !, पर काम एक होने से क्या है ? एक जैसे नहीं समझे जाते। तुममें हममें वैसे फ़र्क़ बड़ा है ! "

माधव—" वह क्या ?-"

अब्दुर० - " लीजिए, आज हम आपको समझा ही देते हैं। (कह, सावधान हो, फिर बोला) आप में हम में ज़मीं-आसमान-जैसा फ़र्क़ है, साहिब ! देखिए-तुम्हारे चोटी ज़रूर होगी। हमारे नहीं है ! खुदा जाने-हमारे आगे हिन्दू बड़े चकराते हैं ! देखिएगा-इस से भी बड़ा फ़र्क़ और दिखाता हूँ-जिस गाय को हिन्दू और हिन्दूओं की नक़ल करने वाली आप-जैसी क़ौमें पूजती हैं, उसी को हम हिन्दूओं के आगे काट, काट कर बेचते रहते हैं। जिन बैलों और बच्छे-बच्छियों को हिन्दू और नक़ली-हिन्दू दिल से प्यारे समझते हैं, उन्हीं का गोश्त काट-काट कर—जहाँ जहां हलवाईयों की दुकानों पर हिन्दू लोग खाना खाते हैं वहां वहां—उन्हीं की आंखों के आगे—हम बेचते रहते हैं। * उन्हीं (बच्छों बच्छियों) को दो बालिश्त चमड़े के कल तुम्हारे आगे ही लाला साहिब ने खुशी से हंसते-हंसते सवा छः रुपये दिए हैं—यह कल

* दिल्ली में, व पञ्जाब के अनेक शहरों में और भी अनेक स्थानों पर हलवाई की दुकानों के पास प्रायः मांस की दुकानें देखी गई हैं-लेखक।

१-'नक़ली-हिन्दू' शब्द व्यंग से कुन्दन की ओर ही संकेत है। वा अछूतों की ओर।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप देख ही रहे थे। और लो—जिन ठाकुरों-ठाकुरों को सब हिन्दू और नक़ली-हिन्दू पूजते, उनके आगे माथा रगड़ते फिरते हैं, हमारा मौक़ा लगे तो हम तोड़ने, फोड़ने और उन पर कारूरा (मूत्र) करने तक को तैयार रहते हैं। जब जब हमारा मौक़ा लगा—(मूर्तियां) तोड़ फोड़ कर टुकड़े कर डालीं। सैंकड़ों मन्दिरों को तोड़ कर, मसजिदें बनवालीं, जिन्हें न अब तक हिन्दू भूले हैं, और असलियत रखते होंगे तो न आगे भूलेंगे। जहां कहीं हमारा ज्यादह ज़ोर रहा—इन के दरवाजों के आगे, घरों के अन्दर क़ब्रें बनवादीं, जिन्हें अब तक यह लोग पूज रहे हैं *। इनके कोठों और चौबारों की दीवारों और आलों में, कूचों के किनारों और चबूतरों पर यह लोग, अब तक मुतवातिर 'दीया' जलाते हैं, सय्यद-बादशाह की उस जगह पूजा करते हैं,* क्यों—नहीं क्या ? मतलब यह कि हम सिर्फ़ एक खुदा को सिर झुकाते हैं, आप लोग ईंट-पत्थर और क़ब्रें पूज कर, हिन्दुओं की नक़ल करते हैं। दर, असल न आप का कोई मज़हब है और न आपकी कोई ज़ात !"

कुन्दन—किं-वक्तव्य-विमूढ़ हो, मूर्तिवत् निश्चल—निर्वाक् हुआ बैठा रहा। यों बल पाकर, अब्दुर रहमान फिर कहने लगा:—"वेद को यह सब से अच्छी, पाक किताब मानते हैं। उसे नंगे पाओं ढोल ढमके के साथ बाज़ारों में लिये घूमते हैं। जब हमें वह मिलता है तो हम उससे टट्टी के × × × साफ़ कर फैंकते हैं। जब हमारी हुकूमत (राज्य-सत्ता थी—इनकी वेद वगैरह मज़हबी किताबें, बगल के जनेऊ छीन, जला-जला कर मुद्दत तक पानी गरम (हमाम में) किया है। उस वक्त हमने इनके मुंह में थूका है। गाय का गोश्त भर दिया है *। इनके चन्दन चाटे हैं। इनकी जवान लड़कियें खूबसूरत औरतें जो देखीं, इन से छीन लीं। और अपने में मिलालीं गांव के गांव इनके ज़बरन अपने में मिलाए हैं, और हमने उनका ईंट पत्थर का पूजना सदा के लिए छुड़वाकर, एकखुदापाक़ की इबादत करनी उन्हें सिखा दी ज्यादह क्या खूबी वाला ज़बरदस्त हमारा मज़हब है. जिसके न क़ुबूल करने पर 'हक़ीक़त का सर धड़ से जुदा करने में गुरु-गोविन्द सिंह के जिन्दे बच्चों को दीवार में खड़े-चिनवा देने में देर नहीं लगाई, जिन्हें पंजाब अब तक रोता है*। फिर भला हमारे मज़हब से हिन्दू घिन कर सकते हैं कभी नहीं। अब भी जहां हमारी ज्यादह आबादी है, इनकी जवान लड़कियें, बच्चे औरतों को पाक़ नहीं छोड़ते।

यह तो आप भी जानते हैं कि हम पाखाने के हाथ नहीं धोते। अगर लाला लोग एक दफ़ा टट्टी जाएं तो ५, ६ दफ़ा मिट्टी से रगड़-रगड़ धोते हैं, तुम भी उन्हीं की भाँति कई बार मिट्टी से रगड़ रगड़ धोते हो, मगर हम से हाथ मिलाते उन्हें कोई परहेज़ नहीं।" कह, खिल खिला कर हंस पड़ा।

कुन्दन सुन, मन-ही मन-कहने लगा—"पाख़ाने के 'हाथ' ही क्या—अपना देश (* * *) भी टट्टी जाकर तुम नहीं धोते ! पर समय की खूबी है"। वैसे मौन रहा। सच तो यह कि दोनों भैय्ये सुन, पश्चात्ताप करने लगे कि "कहां आ बैठे?"

* यह नज़ारा भी दिल्ली-अमरोहा आदि यवन प्रधान बस्तियों में देखने ही योग्य हैं।

* हा लिखना पड़ता है-ले०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु बाल्य-भाव से माधव अप्रसन्नता प्रकट कर, बोलाः-" चलो, भय्ये ! देरी होती है "

अब्दुर०—(माधव की अप्रसन्नता देख) " अजी, जनाब ! और क्या आप हमारे ही यहाँ रहने लगे हैं, जाएंगे तो सही । पर दिल में कहीं नाराज़ नहीं होना ? "

माधव अपने देवों, वेदों एवं धर्म के प्रति निन्दित और घृणित शब्द प्रयोग करते देख, पछताने लगा था-कि कहां आ बैठे ? परन्तु दिखाने में उस भाव को छिपा कर, " नहीं-नहीं " कह, शिर हिला दिया ।

अब्दुर०— ' नहीं-नहीं की बात नहीं । सुनिए-अब घर बीती सुनाता हूँ । पहले हम भी मोची ही थे मुज़फ्फ़रनगर की तरफ़ के हम हैं । यह तीसरी पुश्त की बात है-हमारे दादा तीन भाई थे । वे यहीं रहा करते थे । उन दिनों (उसी पास की मस्जिद को दिखा) इसी मस्जिद में एक जईफ मौलवी रहा करते थे । वे बड़े ही बिचारे नेक दिल और आलिम थे । एक दिन की बात है— हमारे छोटे दादा से एक हिन्दू, बनियां छूया गया । तिस पर उसने उनको अपने कहारों से इतना पिटवाया-इतना पिटवाया, ओफ़ ! देखने वाले तोबाह करने लगगए । उस वक्त उन मौलवी साहिब को बड़ा रहम आया उन्होंने हमारे दादाओं को पास बुला कर समझाया । आख़िर उन्होंने इस्लाम मजहब को अख्तियार किया । हमारे बड़े दादा फिर भी अलग रहे । ख़ैर ! उन दोनों में से एक की औलाद हम हैं, हमारे छोटे दादा की औलाद में से हमारे भाई और हैं वे हौज़क़ाजी के पास सब तरह का गोश्त बेचते हैं । काम तो वे और भी कर सकते थे मगर हिन्दुओं के बुरे बरताव से उन्हें नफ़रत हुई-यहां तक उन के दिल में ज़हर घुला रहा कि- कई साल तक उन्होंने सिर्फ गाय का ही गोश्त- बड़ी कसरत के साथ-बेचा । ख़ैर ! अब तो उनमें से एक ने चमड़े की थोक फ़रोसी के लिए दुकान भी करली है । सो भाई जान यह बुरा मानने की बात नहीं । चाहे तुम जबरदस्ती हिन्दू बने जाओ- असिल में हिंदुओं से तुम्हारा कोई कौमी ताअल्लुक़ नहीं ।"

—अब तक तो कुन्दन—माधव अप्रसन्न थे, परन्तु जब उसने अपनी पूर्व-कथा सुनाई तब तो बद्ध हृदय हो, एकान्त चित से मीमांसा करने पर उतरे । जिस अप्रसन्नता के कारण उनके मुख पर अवहेलात्मिका घृणाबोधिनी स्पष्ट-रेखाएं छागईं थीं-वह कपूर हुईं । अब तो विचारों की झंझावात से घिरे, इस प्रकार बातें करने लगे कुन्दन— "नहीं" साहिब ! है तो ताअल्लुक । देखिए- व्रत पूजा देवताओं की मानना, सब हिंदुओं जैसी ही हैं ! ॥

—अब्दुररहमान ने समझ लिया कि—,आप चक्कर में !, किन्तु अपना भाव दबा, हंस कर ठट्ठा बना, कहाः—

"वाह, क्या खूब ? मियां ! तुम अपने आप हिन्दुओं की खुशामद करते रहो, वे तुम्हारी छायां से नफरत करते रहेंगे । हमें बहुत अच्छी तरह जानते हैं । देखिए- भैंस बकरी, घोड़े गधे, कुत्ते ख़रगोश वगैरह जानवर भी तुमसे अच्छे ! इस लिए कि हिंदू लोग उन्हें अपने घरों के अन्दर पालते हैं, रखते हैं, पुचकारते हैं । रोटी टुकड़ा देना हो तो प्यार से पुचकार कर अपने हाथ से उन्हें खिलाते हैं । कुम्हार अपने गधों सेभी मुहब्बत करेंगे, पर तुमसे नहीं ! भले-भले हिन्दू-लोग भी—खास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर व्याहमें—गधों को छूते हैं, पूजते हैं*। पर तुम्हें कोई भी हिन्दू कभी नहीं छू सकता! भाई, चाहे चोटी रक्खो, बरत (वत) करो, राम राम शिव-शिव (शिव शिव) करो, देवी (देवो) भैरों (भैरव) पूजो। उन्हें रिझाने के लिये कुछ भी नक़ल करके उन्हें दिखाओ। मगर जहां कहीं तुमसे वे ज़रा छूए और उन्होंने कपड़ों समेत गुशल किया! तुम इन्सानों से हैवान अच्छे! सच समझना यार! जो तुम खुदापाक से दुआ भी मांग कर लगा लोगे—तब भी वे तुम्हें नहीं छूने के हैं!" कह, ज़ोर से खिल खिलाकर, हंस पड़ा।

——कुछ समय ठहर कर, फिर कहने लगा—"हमतो सब भुगते हुए हैं। देखिए—हमारे साथ सकड़े से कूए पर वे पानी भरेंगे, जिस में बराबर हम चमड़े की डोलचियां (चाहे वे गो चर्म ही की क्यों न हों?) डालते-खेचते रहें, जिनके पानी की छींटें सीधी इनके बरतनों में पहुंचती रहती हैं—पर तुम लोग इनके चौड़े-से-चौड़े कूए पर भी चढ़ नहीं सकते, तुम्हारे पास चाहे लोहे के डोल, पीतल की टोकनियां ही क्यों न हों? तुम्हारे कूए अलग; जिस में तुम गुशल करो वह तालाब या जोहड़ अलग; या जिस तालाब या जोहड़ के जिस तरफ तुम गुशल करो, वहां हिंदू न फटकेंगे और जहां वे न्हाते हों, तुम अपनी छाया नहीं डाल सकते अगर किसी न्हाए बाह्मन पर तुम्हारी कहीं छाया पड़ जाए तो वे तुम्हारा सर तुड़वादें! तुम्हारे कानों में उनके वेद सासतर (शास्त्र) का अचानक एक भी हरूफ गिर जाए कभी, और उनकी हुकूमत हो, तो वे तुम्हारे कानों में गलवा कर सिक्का भरवादें! ऐसी सजा दें जिससे फिर तुम कुछ भी कभी न सुन सको! इतमीनान के लिए तवारीख देखो—ऐसा ही पीछे हुआ। ज़रा आंखों के साथ दिमाग का कनेक्शन करके देखो—गांव में तुम्हारे मकान अलग मुर्दों के लिये कब्रस्तान को—जलाने वाली जगह को—क्या कहते हैं—शम···शप···कुन्दन—"शमशान"।

अब्दुररहमान—"हां···शमशान अलग इनके भगवान की मूर्तियों को तुम आंखों से देख नहीं सकते। शादी गमी में न यह तुम्हारे, न तुम इनके। बन्दा बसर है अगर तुम्हारा इनके यहां खाना खाने का मौका आभी पड़े, तो तुम्हें दर—नाली के पास—बिठाल कर, मिट्टी के बरतनों, पत्तों में खिलाएंगे। उस वक्त रोटी तो खैर उन्होंने फेंकी और चट तुमने ओट ली। मगर जब पानी या दाल देने हैं तब तो ऐसे देते हैं, जैसे गन्दी-नाली में डालते हों! तिस पर भी जिस बरतन से डालते हैं, उसे भी तुमसा समझते हैं यानी उसे भी मांझ लेते हैं, रगड़ कर। अगर गन्दी-नाली का पानी पैर पर गिर जाए तब तो सिर्फ पैर ही धोते हैं और जो तुम्हारे छूए बरतन से भी उछल कर कोई बूंद इनके पैरों पर गिर पड़े तो कपड़ों समेत न्हाते हैं!! हां, एक बात है—आब-दस्त लेते वक्त जिस उंगली को पाखाना

* पंजाब-और मरु देश में यह प्रथा है कि विवाह में घुड़चढ़ी से पूर्व गधे को सुन्दर चुंदड़ो उढ़ा कर, नाल पहनाकर, घोड़ी चढ़ने से पूर्व आदर से अवश्य-मेव उससे पाद-स्पर्श कराते हैं। सम्भव है कभी बुजुर्ग चढ़ते हों?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छू (लग) जाता है, उस हाथ को पांच छः बार मिट्टी से रगड़ कर धोते हैं अगर तुमसे कहीं ये छूए जाएं तो जिस्म को कई बार मिट्टी में रगड कर नहीं धोते सिर्फ़ एक ही बार कपड़ों समेत न्हा लेते हैं। यानी गू (पाखाने) के बनिस्बत इतनी कुछ तुम्हारी इज्जत है!!···तोबाह—तोबाह!" कह बड़े वेग से हंस पड़ा। साथ में इन दोनों को भी हंसना पड़ा।—कुन्दन कुछ देर के पश्चात बोला—"क्यों जी, मुसलमानों के लिए मांस खाना ज़रूरी है?"

अब्दु०—'अम्मियां' यह तो अपने अपने दिल की बात है। बहुतेरे हमारे भाई बिलकुल नहीं छूते, बहुतेरे हिन्दू—बड़े बड़े पण्डित, ब्राह्मन—खाते हैं। यह ख़ूब सवाल किया। दर असल गोश्त बड़ा कुव्वत-बख्श है। और 'घास चरने' में क्या धरा है? (एक मिनट चुप रह कर) खुदा की शान है! घास खाने वाले बकरी, दुम्बे, भेड़ वगैरह जानवरों की तरह बहुत से इन्सान भी जिन्दगी बसर करते ही हैं! हज़ारों की तादाद में, बल्कि कई गुने ज्यादह ऐसे हैं जो इस्लाम के झन्डे के तले रहते हुए भी नहीं खाते।

माधव—"क्यों—जी, शराबभी पीते हैं?

अब्दु०—"ओफ़! ऐसा करना हमारे यहां बहुत बुरा कहा है!" इसके अनन्तर कुछ देर तक कमरे में सन्नाटा रहा। फिर अब्दुररहमान ने कहा—"सच तो यह है, मियां! दुनियां के अन्दर एक इस्लाम मज़हब ही ऐसा है, जो नीच से—भी—नीच कौम को गले लगालेता है। कोई भी हो, इसके झण्डे के तले एक दफा आजाए, फिर भाई—भाई की तरह मोहब्बत हो जाती है! (कुछ सोच कर) थोड़े दिनों से हिन्दुओं में भी एक फ़िरक़ा चला है, जिसका नाम है—आर्य-समाज'। मगर उस में धोखेबाज़ी, खुदग़रजी बड़ी है। वह अपने में दिखाने को तो मिला-लेते हैं, पर अन्दरूनी तौर से रखते हैं सब नफ़रत।"

माधव—"यह कैसे, जी!"

अब्दु०—"उनकी बातें साफ बताती हैं। जैसे एक मोची को उन्होंने शुद्ध कर अपने में मिलाया, तो उस वक्त तो उस के हाथ से लड्डू पट्ट किसी ने खाए, किसी ने आँखें बचा जेब में डाल लिए। लेकिन फिर वहाँ यह बात नहीं कि उस मोची के चूल्हे आगे जो पक्के, वह भी मोहब्बत से सब मिल खाएँ, सो नहीं। फिर तो अपने अपने चौके में अपना अपना दाल-भात! किसी का छू तक नहीं सकते 'छूत' का 'भूत' वहां से भी दूर नहीं! और दूसरे हम एक बात और बतादें कि इस वक्त जितनी समाजें हैं, और उनके जितने प्रेजी-डेन्ट हैं, उन प्रेजीडेन्टों और समाजों में कोई एक आधी ऐसी समाज या एक आधा प्रधान होगा जिसने अपनी ज़िन्दगी भर में किसी चूहड़े या भंगी को शुद्ध कर, उसके साथ सब बिरादराना रस्में बरतीं हों! कई समाजें ऐसी हैं कि जब से खुली हैं; एक भी किसी भङ्गी या चूहड़े को शुद्ध न कर सकीं! कोरी बातें!! इससे भी बड़ी बात यह कि जो उस मोची या किसी 'शोधित' के लड़की हुई, तब या तो उसी तरह का 'शोधित' वरना उसे और भी आर्या ब्याह लेने की हिम्मत कर लेता है। परन्तु जो उसके कोई लड़का है या उसे खुद को औरत की ज़रूरत है तो वह आर्या में पूरी नहीं हो सकती। फिर चाहे मरते दम तक लंगोटा बांधे फिरे, या उन्हीं की औरतें भगाकर, लड़कियां भगा कर, फिर इधर इसलाम के राज्य में आ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाए या रन्डियों के यहां खे खाता फिरे पर वहां कुछ नहीं।"

कुन्दन—(दीर्घ श्वास ले अगड़ाई तोड़) "यह बड़ी खराबी की बात है।

अब्दु०—'जी हां, जितने यतीमखाने आर्यों ने खोले हुए हैं उनकी लड़कियां तो उसके औहदेदारों के रिश्तेदारों; मित्रों. सिफ़ारिश की लबालब डाली लाने वालों में बट जाती हैं ? ठिकाने लग जाती हैं। और जब 'लड़के' अट्ठारह साल के आजाद हो कर निकलते हैं तो ९० फी सदी कुपढ़, हरामखोर, मिट्टी के माधो 'बेकार' होते हैं; बस, वे फिर चकलों में चक्कर काटते हैं या अपनी समझदारी से उसी (यतीमखाने) की लड़कियां रात-बिरात में भगाते हैं या दुनिया में ऐसे गुजारा न देख कर, पीछे ईसाई या मुसलमान बनते हैं। चाहे दूसरी तरह यों कहें कि—ईसाई मुसलमानों को आर्य यतीमखानों से काम करने के लिए पले पलाये मिल जाते हैं।

—इसके उपरान्त सब निर्वाक्, निश्चल बैठे रहे। फिर कुन्दन ने कहाः- अच्छा—जी, चलें!,,

अब्दुर०—"मैं भला कह सकता हूँ।,-

—इतने में सब उठ खड़े हुए। दोनों भय्ये हाथ मिला चलने लगे। चलते हुओं को अब्दुररहमान ने कहाः—'जरा घर में बैठ कर सोचियेगा। और देख लीजियेगा। कहां तक की तै खोलकर पेश का हैं?.. उत्तर में दोनों कुछहंस पड़े। और चल पड़े।

दयानन्दाष्टक

ले० श्री पं० टीकाराम जी भट्ट बिशारद हल्दौर

दोहा

दिनकर अस्ताचल गये, दे दोषाकर राज।
खुल खेले खद्योत खल, चमका नखत समाज ॥ १ ॥
कल मुख दीपक जल उठे, जागे दम्भी लैम्प।
नाची थी चल चञ्चला, नृप-मन्डल के कैम्प ॥ २ ॥

छप्पय

लखि दोषाकर दम्भ, उमगती ऊषा आई।
आते हैं रविदेव, सूचना यह शुभ लाई ॥
अग्नि शिखा ध्वनि साध, उच्च-स्वर बांग लगाई।
उठो! उठो! वरवीर, करो उनकी पहुनाई।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दयानन्द-युग आगया, ज्ञान-मान-सम्पन्न हो ।
आडम्बर उड़ जायगा, दम्भ ढोंग अवसन्न हो ॥ १ ॥

* * *

दयानन्द-आदित्य उगा, भारत-नभ ऊपर ।
अन्धड़ ने सब साज, भगा हा हा हू हू कर ॥
मत-मजहब नक्षत्र, न कृत्रिम कान्ति दिखाते ।
दम्भी जीव-उलूक, न हू हू हूक सुनाते ॥
ज्ञान-प्रभा फैली अहा ! हृदय-कमल विकसित हुये ।
चक्रवाक-जन मग्न हैं, रजनीचर बिस्मित हुए ॥ २ ॥

* * *

गये फरिश्ते भाग, अर्श का मिला न पाया ।
जड़-पूजन जड़ कटी, मान चेतन ने पाया ॥
गुरुडम-कुल की पोल, खोल कर खूब दिखाई ।
गुरु द्वारों में हुई आज, जनता की भाई ॥
नर नारायण पुत्र हैं, यह मत ही निर्भ्रान्त है ।
जन्म जात सब शूद्र है, यही सत्य सिद्धान्त है ॥ ३ ॥

* * *

नर-नारी से ईश, विश्व की रचना करते ।
फिर भी नर-नृशंस, स्वत्व नारिन का हरते ॥
ज्ञान मान सम्पन्न नहीं थे, इन्हें बनाते ।
अशुचि अवगुण सनी, जननि की जाति बताते ॥
वेद-भानु की ज्योति से, अबलाओं को बल मिला ।
उनके मानस विमल का सुरभित बुद्धि पंकज खिला ॥ ४ ॥

* * *

धृष्ट, धूर्त, ठग, जार, साधु का रूप बनाकर ।
हरते थे धनमान, धर्म का ढोंग दिखाकर ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शठता के अवतार, बने थे पीर पुजारी ।
जिनके जाल विशाल, फंसे थे नर अरु नारी ॥
इन्द्रिय लोलुप थे बने, नृप-चन्द्र-सूर्य मनु-वंस ।
ब्रह्मचर्य यम-नियम थे, मानस सर के वरहंस ॥ ५ ॥

* * *

अपना भाषा वेश सभी था अहो भुलाया ।
घर का गाढा छोड, विदेशी मिल-मल भाया ॥
हिन्दी गन्दी जंची, देववाणी को भूल ।
फस इंगलिश मिस फंद, कमल भौरें से फूल ॥
प्रभा-सु-वैदिक ज्ञान की हमें मिली तत्काल जब ।
देखा घर का कोष जो नहिं एत्थर हैं लाल सब ॥ ६ ॥

* * *

मिले दया आनन्द, मार्ग वह हमें दिखाया ।
भारत का दुर्दश्य दिखा भरपेट रुलाया ॥
बतलाकर सदुपाय, मिटाया शोक हमारा ।
वैदिक-पथ यदि चलो, होय उद्धार तुम्हारा ॥
यही ईश का ज्ञान है, यही द्वार भव मुक्ति का ।
जिसने इसको पा लिया, उसे सोच क्या मुक्तिका ॥ ७ ॥

* * *

अब तक चलते रहे जरा अब सोचो भाई ।
देखो तो मुंह मोड, राह कितनी चल पाई ॥
है अब कितनी शेष और आगे तय करनी ।
अरु किस किस गम्भीर नदी की धारा तरनी ॥
आई जन्म-शताब्दी, स्वच्छ पंथ दरसावनी ।
दयानन्द सरसावनी, गुरु गौरव नौका बनी ॥ ८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुसुमोद्यान

गुरुकुल और खादी

श्रीपूज्य महात्मा गांधी जी ने १५ अप्रेल के हिन्दी नवजीवन में लिखा है :—

श्री सेठ जमुनालाल जी बज़ाज हरिद्वार से लिखते हैं :—

"दो दिन गुरुकुल कांगड़ी में रहा। वहां मुझे बड़ा सन्तोष हुआ कि खादी के वायु-मण्डल का अच्छा विस्तार किया जा सकता है। श्री रामदेवजी, देवशर्माजी, सत्यकेतु जी सेठी जी आदि बहुत से महाशय खादी और चरखे के प्रचार के पक्ष में हैं। बहुत ही थोड़ा प्रयत्न करने से मैं यहां चर्खासंघ के कुछ सभासद बना सका हूँ उनके नामों की सूची साथ है। मुझे आशा है कि दूसरे और भी बहुत से सभासद होंगे। गुरुकुल में आपके श्रद्धा और भक्ति का परिमाण अच्छा है। गुरुकुल कन्या महाविद्यालय देहली में भी चरखा शुरू कर दिया गया है और दिन प्रतिदिन उसमें उन्नति होने की आशा है।"

जमुनालाल जी की भेजी हुई सूची में ४० नाम हैं। नाम तो यहां नहीं दिये जा सकते। परन्तु उसका पृथक्करण अवश्य ध्यान देने योग्य है। उसमें प्रथम सभासद तो गुरुकुल के आचार्य हैं। पांच उपाध्याय हैं, सात नये स्नातक और वेदालङ्कार तथा विद्यालङ्कार उपाधि भूषित हैं। पांच चतुर्दश श्रेणी के ब्रह्मचारी हैं, चार द्वादश श्रेणी के और पांच एकादश श्रेणी के ब्रह्मचारी हैं, गुरुकुल में दो बहिन सभासद हुई हैं और देहली में तीन—विद्यावती सेठ (बी० ए०) आचार्या कन्या गुरुकुल और दूसरी दो अध्यापिका सीता देवी तथा चन्द्रवती देवी जी।

पंजाब के खादी निरीक्षक लिखते हैं :—

"आर्य समाजियों की तरफ़ से मुलतान छावनी में एक गुरुकुल है उसमें १४० विद्यार्थी हैं। उनके व्यवस्थापक ने सब विद्यार्थियों को खादी के ही कपड़े देने का निश्चय किया है। पहिले देशी मिलों के कपड़े उन्हें दिये जाते थे और उस में क़रीब २५८०) रु० खर्च होते थे। परन्तु अब हम लोगों ने उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का भार अपने सिर लिया है और पहला हफ्ता दे भी दिया है और आनन्द की बात तो यह है कि उनके बजट में कोई रक़म बढ़ाये बिना ही उनको पूरे कपड़े दिये जा सकेंगे।

मुज़फ़रगढ़ में आर्य समाजियों का एक अनाथालय है और इसी ज़िले में एक गांव में गुरुकुल भी है। इन दोनों संस्थाओं को हमारी खादी एजन्सी उनकी आवश्यकतानुसार खादी पहुँचाती है।

इन सब संस्थाओं को मैं धन्यवाद देता हूँ।

(नवजीवन) मो० क० गांधी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारतीय महिलायें

भारतीय देवियों की गुणगाथा करना सरल बात नहीं है। वैदिक मैगेज़ीन लिखता है कि:-

सर सी० पी० रामास्वामी अयर, ला मेम्बर मद्रास ने राइट आनरेबिल श्रीनिवास शास्त्री की अध्यक्षता में अभी एक निबन्ध पढ़ा जिसके बीच में उन्होंने प्राचीन भारतीय महिलाओं की योग्यता, कार्य कुशलता, तथा निपुणता का वर्णन करते हुए कहा कि:-

वैदिक कालीन देवियां

हमारी सभ्यता को बड़े ध्यान से अध्ययन करने वाले ऐतिहासिक भी इस विषय में बड़ी भारी ग़लतियां कर गये हैं। चूंकि उन्होंने अकस्मात् प्राप्त हुई इक्का दुक्का बातों पर ही अपना आधार रखा है। पाणिनी की अष्टाध्यायी केवल व्याकरण ही नहीं है बरन एक बड़ा भारी कोष है, स्पष्टतया तत्कालीन विचारों का इतिहास है और समाज की प्रारम्भिक दशा का क्रमबद्ध इतिहास है। जब महर्षि पाणिनि ने अपनी यह आश्चर्य जनक पुस्तक लिखी उस समय 'कठी' 'वह्वृची' आदि शब्दों की विद्यमानता इस बात की सूचक है कि स्त्रियां वेदों की कठशाखा का अध्ययन करती थीं, और बहुतेरी देवियां बहुत से वेद मन्त्रों के अर्थ करती थीं। पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'पत्नी' शब्द की परिभाषा अर्थात् 'पत्युर्नो यज्ञ संयोगे' इस बात का स्पष्ट सूचक है कि यज्ञों में- जोकि प्राचीन भारत में नैतिक जीवन के बड़े भारी मुख्य अंग माने जाते थे स्त्री पुरुषों के समान अधिकार और समान कर्त्तव्य थे।

वर्तमान समय में परिस्थितियों के भिन्न होने से हम यह नहीं समझते सकते कि उस समय राजा दुष्यन्त के दर्बार में शकुन्तला का उपस्थित होना कितना स्वभाविक था। दमयन्ती पति की खोज में अकेले किस प्रकार यात्रा करती रही? और उत्तर राम चरित्र में महारानियों के महर्षि बाल्मीक के आश्रम में पधारने का वर्णन कैसे किया जा सका? हमारे साहित्य के पंडित ही जानते हैं कि यह सर्वसम्मत बात है कि नाटकों के खेलों के समय देवियां भी उपस्थित होती थीं; देवताओं के मन्दिरों में वह स्वच्छन्दता से जाया आया करती थीं और सच तो यह है कि महाभारत के ज़माने में भी जबकि इन कि स्वच्छन्दता पर रुकावट पड़ती नज़र आने लगी थी-यह कहा जाता है कि वह खुले मुंह घूमती थी और उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी। भारतीय साहित्य का तीक्ष्ण दृष्टि पंडित किन्तु हमारी सभ्यता का निष्पक्ष आलोचक सर मोनियर विलियम्स रामायण में कैकेयी, कौशल्या और मन्दोदरी के वर्णनों को तथा महाभारत में द्रौपदी दमयन्ती के चरित्रों को उद्धृत करते हुए यह स्वीकार करता है कि यह देवियाँ हमें हेलन या पेनिलोप की अपेक्षा अधिक हृदय ग्राही और विदुषी प्रतीत होती हैं और वह गान्धारी की मार्मिक पति भक्ति का विशेष रूप से उल्लेख करते हैं जो अपने अन्धे पति के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रगट करती हुई आंखों में पट्टी बांधकर निकला करती थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बौद्ध कालीन देवियां

महाराज अशोक का चचेरा भाई संघ मित्र लंकापुरी में गया था और वहाँ पर उसने दर्शन शास्त्र की एक पाठशाला खोली जिस में बहुत सी लंका की देवियां निपुणता प्राप्त करती रहीं।

कवि और वैज्ञानिक

भारत का सुप्रसिद्ध ज्योतिषी वराह मिहिर एक खना नायक देवी का शिष्य बना था। इस देवी ने लंका की वहीं बसने वाली जातियों से ज्योतिष के प्रारम्भिक सिद्धान्त की शिक्षा प्राप्त की थी पीछे से उसे परिवर्द्धित किया था। अन्त में जब दोनो ने अपने २ गवेषणों को पूर्ण कर लिया तो परस्पर विवाह करके विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक प्रसिद्ध रत्न वराह के घर रहने लगे थे।

रोटी कमाने वाली स्त्रियां

हिन्दु रिपब्लिक' लिखता है कि स्त्रियों के लिये काम करना नई बात नहीं है। अति प्राचीन काल से स्त्री जाति ने अपने हिस्से का कार्य हमेशः ही किया है और प्रायः करके आवश्यकता पड़ने पर दूसरा भी कार्य किया है जिन में बहुत सी वह बातें भी शामिल हैं जिन्हें आज कल के पण्डित शारीरिक और मानसिक दशा की दृष्टि से स्त्रियों को करने के अयोग्य सिद्ध करते हैं।

पुराने सिद्धान्त के अनुकूल जिसे आजकल भी बहुत से लोग यथार्थ मानते हैं- आदर्श कुटुम्ब वह समझा जाता था जिसका केन्द्र एक ही रोटी कमाने वाला हो अर्थात पति और पिता। पत्नी का कर्तव्य कुछ २ उच्च घरानों को छोड़ सभी कुलों में यह था कि घर के शारीरिक बल से सम्बन्ध सभी कार्य करे और पति के साथ बच्चों के पालने पोषणे और चरित्र संगठन में भी भाग लेवे।

परन्तु चाहे कभी यह सिद्धान्त यथार्थ सिद्ध होता हो आजकल यह ठीक नहीं हो रहा है। आज दिन ८५००००० देवियां केवल अमरीका के संयुक्त प्रान्त में ही कमाने के काम में लगी हुई हैं। सारे देशों में जितने काम करने वालों की जनसंख्या है उस के $\frac{1}{4}$वां भाग यह स्त्रियाँ हैं और दिन प्रति दिन इन की संख्या तथा औसत भी बढ़ती जाती है। १८८० में इन की औसत १४.७ प्रति शतक थी तो १९२० में २७.१ प्रति शतक हो गई। आज दिन घरेलू नौकरों में स्त्रियों की संख्या ६४.२ प्रति शतक है, पेशों वालों में ४७.४ प्रति शतक, क्लर्कों में ४५.६ प्रति शतक। चार छोटे बड़े शहरों को मिला कर जहां ४०००० स्त्रियां काम करती थी कमाने वाली स्त्रियों का भागो $\frac{3}{4}$था अर्थात् चौहद वर्ष से ऊपर आयु वाल सब स्त्रियों की कुल संख्या मिला कर उनका औसत ३८ प्रति शतक था।

कहा जाता तो यह है कि काम करने वाली देवियां प्रायः करके वह कन्यायें हैं जो विवाह से पूर्व के कुछ वर्ष कमाने में लगा देती हैं। लेकिन मनुष्य गणना विभाग ने जो तालिका बनाई है कि और श्रम विभाग की जो रिपोर्ट है वह इस बात को ज़रा भी प्रमाणित नहीं करती। यह सच है कि ३५००००० देवियाँ रोटी कमाने में लगी हुई हैं जिन की आयु २५ वर्ष से कम है और इन का बड़ा भारी भाग अविवाहित भी हैं। लेकिन यह तो कुल संख्या का $\frac{2}{5}$ भाग ही बनती हैं। ८५००००० में से लगभग ३० लाख तो विवाहित ही हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कंघियों का फैशन

हम सब लोग कङ्घियों को नित्य प्रति देखते और वर्तते हैं किन्तु इन का प्रचार कब हुआ कैसे हुआ यह बहुत कम लोग जानते होंगे। अतः ज्योति के पाठकों के विनोदार्थ हम चेम्बर्स जर्नल से इस सम्बन्ध में कुछ उद्धृत करते हैं:—

कङ्घियों के सब से प्राचीन नमूने जो कि मिले हैं और वृटिश तथा युरोप के इजाइब घरों में रखे गये हैं वह ईसा के जन्म से ४०००० वर्ष पूर्व के हैं जब कि मिश्र देश में द्वितीय राजवंश राज्य करता था। वह सब प्रायः काठ की बनी हैं (कभी २ हड्डी, हाथी दाँत या सोने की भी होती थीं) जिनके लम्बे भद्दे दांत बहुत छिदरे होते थे। जिन कंघियों में एक दो दांत होते थे उन के ऊपर नकशी भी की जाती थी। कभी तो पवित्र बैल की या किसी न किसी देवताकी तस्वीर खींची हुई होती थी। पैरिस के इजाइब घर में एक ऐसा नमूना है जो कि अर्ध चन्द्राकार है और ऐसा मालूम होता है कि आज कल की तरह शायद सिर में लगाने के कंघों का नमूना होगा न कि केवल बाल साफ़ करने का एक यन्त्र मात्र।

इस युगों से चली हुई प्रथा का लेखकों के प्रमाणों से हमें यह भी ज्ञान होता है कि स्पार्टा तथा युनान देशों के लोगों में बहुत प्रचार था। उनका कई ढंग से अपने बाल सजाने पर अधिक ध्यान था और न केवल स्त्रियाँ ही बाल सजाती थीं वरन् यह भी इतिहास बतांता है कि जब पुरुष लोग युद्ध में जाते थे तब योद्धाओं का यह नियम था कि वह एक स्थान पर ठहरते थे, बड़ी सावधानी से बालों को कंघी करते थे और इसे एक धार्मिक संस्कार सा मानते थे।

इसके कछ समयके बाद इतिहास बतलाता है कि रोम की देवियाँ अपने बालोंको विविध भांति सजाने तथा बालों को इस भांति बनाने के लिये कि वह नकली शिर-कवच सुगमता से धारण कर सके बहुत प्रकार की काठ, हड्डी, दांत सोने, चाँदी, पुखराज आदि कीबनी हुई विविध शकलों की कंघियाँ वर्त्ता करती थीं। इस जमाने की जितनी कंघियां पाई गई हैं और सुरक्षित हैं उनमें से बहुतेरी उस समय की हैं जब कि ब्रिटेन में रोम का अधिपत्य था। उन की शकलें तथा जिस चीज़ की वह बनी है वह वस्तु भिन्न २ प्रकार की हैं। एक नमूना जो कि गिल्ड-हाल इजाइबघर में बहुत अच्छी तरह रखा गया है उस का हत्था काठ का है। बहुत वर्ष हुये वह स्टाक एकसचेन्ज के समीप खंडरों के खोदने से मिली थी।

इस के बाद मध्य कालीन समय तक जो कंघियां साधारण लोगों में वर्त्ती जाती थीं वह भद्दे दांतों वाली होती थीं और उन की शकलें तथा ढंग बहुत सुन्दर नहीं होते थे। उस समय के सर्दार लोग बेशक बड़ी सुन्दर कंघियां वर्तते थे जिनपर खेलोंके या भांति २ के फूलों और फलोंके तथा कहानियोंके चित्र खिचें हुये होते थ। वह बहुत भारी होती थीं और बालों में लगानेके अयोग्य होती थीं।

अट्ठारहवीं शताब्दि के अन्त पर कछुवे की हड्डी की कंघियां बनी जाने लगी थीं जो कि अब भी उन घरानों में तथा इजाइब घरों में सुरक्षित रखी हुई हैं। यह बालों के सजाने के काम में भी आती थीं। वह इटली तथा स्पेन से आती थीं क्योंकि वहां की देवियाँ ने सब से पहिले इस सुन्दर नमूने को धारण करना स्वीकार किया था।

CC-0. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्पेन की उस ज़माने की कई कंघियें आज कल जो बालोंको सजाने के लिये तथा स्थान२ पर घुंघुरों को स्थिर रखने या सुन्दर बुर्के को स्थान पर रखने के लिये वर्ती जाती है उनके बहुत ही समान होती थीं। वह बड़े लम्बे दांतें वाली, बहुत सी चित्रकारी वाली होती थीं और चूंकि उनकी चौड़ाई बहुत ही होती थी अतः ६ या १० इन्च लम्बी होती थीं। उन पर लकीरे बहुत होती थीं, बहुतेरों पर बड़े सुन्दर २ गाथाओं के चित्र खिंचे रहते थे या तले पर सुन्दर वृक्षों के नमूने रहते थे।

लेकिन एक युरोप देश ही अकेला नहीं है जहां कि कङ्घियां पहिनी जाती हैं और बनती हैं। पूर्वीय देशों के कुछ बहुत प्राचीन कङ्घियेाँ के नमूने भी रखे हुये हैं। वह बहुत सुन्दर हैं और प्रायः सभी पर कनशी बहुत भारी है और पाश्चात्य लोगों की रुचि के लिये बहुत गहन है। खास करके भारतीय कङ्घियां तो अपनी नकशी के लिये ही मशहूर हैं। चीन में भी अति प्राचीन भद्दी नकशी के समय २ बहुत सुन्दर और दुर्लभ आलेख्य की नकशी के नमूने भी मिलते हैं। जापानी यद्यपि कलाओं की सुन्दरता के लिये विख्यात हैं तथापि बड़े भारी नकशी की या बड़ी ऊंची दीवालों वाली कंघियां नहीं बनाते। उनकी पीठ हमेशा छोटी होती है इसलिये कमल के फूल, चेरी फूल, पत्तों की लहरिया, छपकुली, आदि लम्बे प्रकार के नमूनों को ही वह खींचते हैं।

चाहे पूर्व हो या पश्चिम कंघियां सर्वत्र पाई जाती हैं। अचम्भे की बात तो यह है कि स्त्रियों के पहिनने या सजावट के साधनों में से जो सर्वत्र प्रचरित वस्तु है वह कंघी है। लडंनकी बड़ी फैशनेबुल लेडी साहिबाओं के पास बाल साफ करने तथा सजावट के लिये लिये भी कंघियां हैं। पैरिस की बड़ी फैशन वाली लेडी बालोंको कछुवों की हड्डी की हीरे जड़ी सुन्दर कंघी धारण करती हैं। भारतीय महिलाओं के पास भी सोने या हाथी दांत की कंघियां होती हैं, जापानी देवियें के पास शंख, हाथी दाँत या जेड नामक पत्थर या लाख के रंग से रंगी हुई कंघियां होती हैं और अफ्रीका आदि जातियों की देवियां यद्यपि अपने कपड़ों के सम्बन्ध में फैशन करना जानती ही नहीं तथापि अपने बालों को सुधारने के लिये मछली की हड्डी या नाक की हड्डीया भद्दी लकड़ी की बनी हुई कंघी को बर्तती हैं।

हमारी मंजूषा

मंगल प्रभात—लेखक श्रीयुत चण्डा प्रशाद जी "हृदयेश" प्रकाशक। 'चांद' कार्यालय इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ७२४ सुन्दर सुदृढ कपड़े की जिल्द बँधी पुस्तक का मूल्य ५)।

यह पुस्तक प्रकाशक के शब्दों में एक मौलिक सामाजिक उपन्यास है। हम यदि इसमें एक शब्द और बढ़ाकर इसे 'मौलिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास' कहें तो चार शब्दों में पुस्तक का रूप और उद्देश्य आजाता है। हमने 'मनोवैज्ञानिक' शब्द जोड़ा है और हमारे विचार में यही इस उपन्यास की मुख्यता है। हृदयेशजी ने मानव हृदय के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भावचित्रण और भावनाओं के विश्लेषण में जिस पाण्डित्य का परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है। योगी, यति, ब्रह्मचारी, गृहस्थी, धर्मात्मा और पापात्मा, स्त्री और पुरुष, युवा, बाल, वृद्ध इत्यादि किस प्रकार कब और किन विचारों से उत्तेजित होकर शुभ अथवा अशुभ काम में प्रवृत्त होते हैं इस की मानसिक विवेचना बड़ी योग्यता और सरलता से इस पुस्तक के पाठ से हमारी समझ में आ सकती है। मनुष्य के हृदयस्थ गूढतम भावों को इतनी सरलता, कोमलता और हृदयता से अङ्कित किया है कि चतुर चित्रकारकी चातुरी की सराहना किये बिना नहीं बनता।

पुस्तक मौलिक है इसमें सन्देह नहीं। सामाजिक समस्याओं को उपस्थित करने और उनके समाधान का ढंग निराला ही है। बाल विवाह, अनमेल विवाह समाज का स्त्रीजाति के प्रतिकूर अत्याचार, व्यवहार, और उसका दारुण परिणाम धर्म के रूपमें पाप का साक्षात्कार इत्यादि सामाजिक समस्यायें हैं जो हमारी जाति की जड़ को खोखला कर रहीं हैं धर्म की दुहाई देकर हमें इन के सुलझाने से अपितु उन पर विचार करने मात्र से रोका जाता है। इन धर्म की दुहाई देने वालों धर्म के ठेकेदारों के मानसिक भावों को—जब कि वह मुख से इन कुरीतियों के दूरीकरण का विरोध करते परन्तु मन में कुछ और विचारते हैं—प्रगट और चित्रित कर लेखक ने इन लोगों की स्वार्थमय वासनाओं का जो दिगदर्शन कराया है वह ध्यान देने योग्य है। धर्मभ्रष्ट राधा का जो क्रमप्राप्त स्वाभाविक पतन दिखलाया है वह किस न्यायप्रिय समाज-दुख-पीड़ित व्यक्ति के हृदय को दो टूक न कर देगा? बम्बई में वेश्या बन जाने पर और [illegible] को बसन्त कुमार द्वारा "जघन्य व्यवसाय" शब्दों से सम्बोधन किये जाने पर राधा कहती है "जघन्य व्यवसाय? नहीं, मैं इसे जघन्य व्यवसाय नहीं मानती हूं। पर वह यदि जघन्य व्यवसाय है भी तो भी इसे स्वीकार कर मैं सुखी हूँ, जो समाज असहाय युवती को निर्बल बालपति के साथ बरबश बांध देता है जो रमणी के हृदय की समस्त आकांक्षाओं को अपनी दारुण व्यवस्था से कुचल डालना चाहता है, जिस समय सास ससुर अपनी पुत्र वधु पर असह्य अत्याचार करते हैं, वह समाज कौन से मुंह से वेश्या वृत्ति को जघन्य कर्म कहता है? हमारे क्या हृदय नहीं है? उस हृदय में क्या आकांक्षा, आशा, वासना और पिपासा नहीं है? पर समाज हमारे उस हृदय को अत्याचार की अग्नि में भस्मसात करता है और जब हम उस अग्नि की वेदना को न सहकर इस विशाल विश्व की रंगभूमि में अपने हृदय की परिशान्ति के लिये शैतान का प्रश्रय लेती हैं तब वह हमारे कर्म को जघन्य कर्म कहता है? कैसी निर्लज्जता है? कैसी नीचता है? कैसी कपट लीला है? जघन्यकर्मा शैतान उत्पीड़ित के रक्षा कर्म को जघन्य कहता है, इस से बढ़कर नीच निर्लज्जता और क्या हो सकती है?" कैसे मर्मभेदी शब्द हैं पर कितने सत्य!

भारत की सामाजिक कुरीतियों में विवश वैधव्य एक जटिल समस्या है। बाल विवाह का यह अवश्यम्भावि परिणाम है। कितने समाज सुधारक विधवा विवाह को ही इसका एक मात्र उपाय समझते हैं। हमें प्रसन्नता है कि लेखक ने इस साधारण प्रचलित परन्तु दोषपूर्ण उपाय का अवलम्ब नहीं लिया। बसन्तकुमार एक धर्म-रत्न नवयुवक है उसका जीवन तपोमय है। पाप से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उसे घृणा है । कर्तव्य का वह पुजारी है । वह बाल विधवा सुभद्रा की रूप माधुरी पर आसक्त हो जाता है, परन्तु अपनी इस वासना को पाप वासना समझता हुआ उसको प्रति क्षण दबाने का यत्न करता है । किस प्रकार धर्म और पाप का युद्ध इसके हृदय में भयंकर मार काट पैदा करता है यह लेखक ने बड़े विस्तार से अङ्कित किया है । तीव्र वासना के अग्निकुण्ड में वह जलता है । यदि लेखक चाहता तो सुभद्रा से उसका विवाह करवा कर उसके हृदय को भस्म करने वाली आग पर जल के छींटे छिड़क सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया । तापसी सुभद्रा को पुरुषों की वासना पर न्योछावर नहीं किया । यदि वह ऐसा करता तो कतिपय समाज सुधारकों की दृष्टि में किसी प्रकार भी अनुचित न था । लेखक ने इस विवाह को इस जटिल समस्या का एक मात्र सब प्रकार उचित समाधान न मानकर हमारे सन्मुख एक और कहीं उत्तम और पुण्यतम मार्ग रखा है, और वह मार्ग देश, जाति और दुखियों की निःस्वार्थ सेवा है । इस महान सागर में मानव हृदय की तीव्र से तीव्र वासनायें शान्त हो सकती हैं । यह ठीक है कि स्वर्गीय पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर से पहिले विधवाओं के सन्मुख विवाह का प्रलोभन नहीं था । परन्तु उनका तपोमय जीवन केवल घर की चार दीवारी के भीतर निज कुटम्बियों की सेवा ही में व्यतीत होता था जो कि उनकी आकांक्षाओं और शक्तियों के लिये कोई पर्याप्त क्षेत्र न था । शक्ति के क्षेत्र को समाज सेवाके रूप में विस्तृत कर लेखक ने विधवा समस्या को जो आदर्श हमारे सन्मुख रखा है आशा है उस पर पूर्ण विचार किया जायगा ।

पुस्तक में केवल कुरीतियों पर ही विचार नहीं । किसी भी प्रकार की कुरीतियों को दूर करने की तीव्र इच्छा और कृत्यों में सदा का वास मनुष्य के हृदय में चाहें संयम तप और सेवा के भाव अवश्य उत्पन्न करदे पर वह उसका पूरा विकाश नहीं करता । पाप को दूर करना ही उपयुक्त नहीं वरन धर्म का सञ्चार भी अत्यन्तावश्यक है । मानव हृदय को उच्च, उत्तम और प्रशस्त बनाने के लिये उसका विशुद्ध, सुखमय और शान्त जलवायु में निवास उतना ही आवश्यक है जितना कि दुर्गन्धयुक्त, भ्रष्ट और गन्दे स्थान से परे रहना । लेखक ने पुस्तक में विशुद्ध प्रेम, तपोमय जीवन, निस्वार्थ सेवा बालस्नेह इत्यादि अनेक सुन्दर, कोमल और मधुर दृश्यों को चित्रित कर उपन्यास को आशामय शान्ति और सुख का कानन बना दिया है ।

पुस्तक की भाषा शुद्ध, परिमार्जित और सरस है । शोक कि हम इसे सरल नहीं कह सक्ते । भाषा में कठिन, बहुत कम प्रयोग में आने वाले शब्दों और वाक्यों की इतनी भरमार है कि वह पढ़ते समय मन पर एक प्रकार का बोझ डालते हैं । लिखने की शैली में एक और दोष है । किसी भी विषय की विवेचना और विश्लेषण करते समय लेखक इतना विस्तार में चला जाता है कि कई बार मन ऊब जाता है । यह सत्य है कि लेखक के इस वर्णन में पाठक को अपने भावों का प्रतिरूप दिखलाई देता है परन्तु, आत्मसम्मान भी मनुष्य हृदय का एक गुण है । वह यह समझता है कि मैं भी कुछ हूँ । यदि लेखक प्रत्येक विषय, दृश्य अथवा घटना का इतना विस्तृत वर्णन न करके उसकी पूर्ति पाठकों पर छोड़ देता तो जहां लेखन शैली से बोझल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पन दूर हो जाता वहां इस में सरल सरसता भी अधिक आ जाती।

अन्त में हमें इतना ही कहना है कि यह उपन्यास हिन्दी भाषा में एक अमूल्य वृद्धि है। हमारे साहित्य में इसको उच्च स्थान मिलेगा। इसका उद्देश्य उच्च और महान है और इस की प्राप्ति के लिये बतलाये हुये साधन निर्मल और शुद्ध हैं। हम श्री चण्डी प्रसाद जी को उनकी इस कृति पर बधाई देते हैं। (र० न०)

२. किरण—अंग्रेजी की गल्पोंका अनुवाद। अनुवादक श्रीयुत ब्रजजीवनदासगुप्त प्रकाशक' 'सञ्जीवन ग्रन्थमाला' कार्यालय बुलानाला काशी। मूल्य ॥।) पृष्ट संख्या १२७ मोटे एन्टिक पेपर पर, छपाई साफ।

इस में अधिकतर अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक ए कोनेन डायल की लिखी गल्पों का संग्रह है। कुल मिलाकर पांच गल्पें हैं। गल्पें अधिकतर भावपूर्ण हैं। मानव जीवन के संस्कारों के प्रतिचित्र प्रायः प्रत्येक गल्प में वर्तमान हैं। अनुवाद साधारणतया अच्छा है। कहीं कहीं वामुहाविरा और रोचक है। पर कहीं कहीं मनगढन्त शब्दों की योजना खटकती है। जैसे उसका सिर रेशमी तकिये पर उठंगा हुआ था इत्यादि।

३ जच्चा— संपादिका-कृष्णाकुमारी। लेखक कविराज श्री प्रतापसिंह वैद्य विशारद। प्रकाशक गंगा-पुस्तकमाला, उसी की महिला मणि माला की यह आठवीं मणि है। मूल्य ।॥=)। पृष्ट संख्या १५७ आकार मझोला छपाई सफाई अच्छी।

यह पुस्तक नाम ही से प्रसिद्ध है। इसमें स्त्रियों के मासिक धर्म से लेकर प्रसवपर्यन्त उन्हें आचार व्यवहार की उचित एवं उपयुक्त शिक्षा दी गई है। पुस्तक के अन्त में उपयोगी औषधियों के प्रयोग बताये गये हैं।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि स्त्रियां इस विषय में बिलकुल बेखबर रखी जाती हैं, तथा साधारण सी भूल चूक से उनका आगामी जीवन रौरव नर्क बनजाता है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं स्त्रियों के लिये लिखी गई है। वर्णन शैली बड़ी सुन्दर और विशद है। भाषा रोचक है। पुस्तक की उपादेयता को देखते हुए मूल्य भी अनुचित नहीं है। हम स्त्री संसार से सोग्रह अनुरोध करते हैं कि वे स्वयं पढ़ें और अपनी बालिकाओं को इस विषय की उचित शिक्षा दें। हम लेखक महोदय को उनके इस स्तुत्य परिश्रम के लिये धन्यवाद देते हैं।

४ रंगभूमि—उपन्यास—लेखक श्रीयुत प्रेमचन्द जी। सम्पादक श्री दुलारेलाल भार्गव प्रकाशक गंगा पुस्तक माला। दो भाग बिना जिल्द का मूल्य ५) पृष्ट संख्या ६३० छपाई सफाई मनोरंजक।

यह गंगा पुस्तक माला का चालीसवां पुष्प है। आरम्भ में दो पृष्ट का सम्पादकीय वक्तव्य है। और लेखक का सादा चित्र। यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि मुंशी प्रेमचन्द जी हिन्दी संसार के कितने सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित लेखक हैं। हमें गर्व है कि हिन्दी भाषा की कोख ने रवीन्द्र, रैनाल्ड जैसा एक उपन्यास लेखक पैदा कर दिखाया है। मुंशीजी का यह गद्य काव्य हिन्दी संसार का चिरस्थायी रत्न है। इसकी समालोचना में जो कुछ लिखा जाय थोड़ा है। भाषा और भाव की दृष्टि से पुस्तक बहुत रुचिर सरस है। हमने तो इतनी सरस भाषा के इतने गंभीर दार्शनिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विचार कहीं पढ़े नहीं। सोफिया, सूरदास दोनों ही सहृदय हैं। दोनों ही भावुक हैं, पर दोनों के चरित्र में जमीन और आसमान का अन्तर है। दार्शनिक विचार की गूढ़ गुत्थियों को जितना सुलझाने का सोफिया ने प्रयत्न किया है, उसके जीवनकी विचार शृंखला उतनी ही जटिल और अविस्पष्ट हो गई है। दूसरी तरफ सूरदास उतना ही सादा सुस्पष्ट कर्त्तव्योचित धारणाओं का स्वामी है। उसके जीवन की प्रत्येक तन्त्री कर्त्तव्य का निनाद कर रही है। राजा महेन्द्र कुमार जैसे विभवप्रिय को नीचा दिखाना नहीं सन्मार्ग पर लाने के लिए उसे कुछ परिश्रम नहीं करना पड़ा। मनुष्य अपनी प्रकृति का कितना दास होता है इसके उदाहरण कुंवर भरत सिंह, राजा महेन्द्र कुमार हैं। विनय के सोफिया के प्रति उत्कट प्रेम और परीक्षा में कर्त्तव्य युक्त होना मनुष्य जीवन की महत्ता और अवसाद के उत्कट प्रमाण हैं।

व्यावहारिक बुद्धि विचक्षण जानसेवक, विलासों की उत्कट दासी मिसेज़ जानसेवक, धर्म के आडम्बर प्रिय जीवन वाला जान सेवक का पिता, बातूनी नायकराम, ताहिर अली आदि अपने २ पार्ट के उत्कृष्ट सम्पादक हैं। रंगभूमि राजनीति धर्मनीति, समाज नीति का उदात्त अभिनय स्थान है। कहीं कृत्रिमता नहीं। कहीं विषय विशृंखलता नहीं। एक सा अचूक अनवरत प्रवाह है। हम इन थोड़े शब्दों में मुंशी जी की इस कृति को सफल, और उन्हें संसार पारदर्शी कह कर विश्राम लेना चाहते हैं, और हिन्दी संसार से आशा करते हैं कि उनमें यदि कोई उपन्यास प्रेमी न हो तो भी, इसे अवश्य पढ़ेंगे। उदयशंकर भट्ट

वनिता विनोद

स्त्री जगत।

नर्सों और दाइयों की रजिस्ट्री।

मद्रास प्रान्त में एक कानून बनाया गया है जिसके द्वारा नर्सों और दाइयों की रजिस्ट्री कराना आवश्यक बन गया है। अब से तीन वर्ष के बाद जो नर्सें या दाइयां परीक्षोत्तीर्ण होकर या ट्रेनिंग लेकर अपना नाम रजिस्टर नहीं कराएंगी तो उन्हें किसी सर्कारी या अर्ध—सर्कारी हॅस्पतालों में कोई नौकरी नहीं मिलेगी। इस से तीन साल के बाद बच्चा जनाने सम्बन्धी सहायता में बड़ी उन्नति होगी।

तुर्किस्तान में एक देवी मेयर के पद पर।

श्रीमती कुदरत खानुम एक ६० वर्ष की वृद्धा महिला हैं जो कि सर्व सम्मति से तुर्किस्तान के एक गांव जिरमत की मेयर चुनी गई हैं। तुरकिस्तान में अभी पहिले पहिल ही मेयर का पद स्थिर हुआ है और उसकी पहिली अधिष्ठात्री एक देवी बनी हैं। यह देवी विधवा हैं और पढ़ना लिखना बिलकुल नहीं जानतीं। लेकिन उन्हें ग्राम के सारे नियम कंठस्थ हैं। अपनी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आजीविकार्थ यह अपनी बहू तथा दो पोतियाँ कीमदद से खेती का सारा कार्य भी करती हैं। इनकी इस कार्य कुशलता से तुर्किस्तान के नारी मण्डल में मुसलमान स्त्रियों के लिये मताधिकार प्राप्त करने का आन्दोलन बड़ा उत्साह प्राप्त कर रहा है।

पुरुष पर्दे में।

अफरीका में तौरे रेगज़ एक जंगली जाति है जिसकी विशेषता यह है कि यद्यपि इस जाति के पुरुष युद्ध करने में बड़े कुशल हैं और बड़े वीर्यशाली और पराक्रमी हैं लेकिन इन में स्त्रियां ही सारा शासन कार्य और सब आवश्यकीय अधिकारों को करती हैं। पुरुष का नाम भी पिता पर न रखा जाकर माता पर रक्खा जाता है। इन में पुत्र सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होता वरन् पुत्री ही उत्तराधिकारी मानी जाती है। पुरुष एक पत्नीव्रत धारण करते हैं किन्तु स्त्रियों को छै पतियों के करने का अधिकार है। और वहां पर पुरुष लोग मुंह ढांप कर निकलते हैं।

लेडी चैटर्जी और फेक्टरी कार्य

लेडी चैटर्जी एम० ए० डी०यस०सी० ने अभी लंडन की रायल सोसाइटी आफ़ आर्टस के सन्मुख एक निबन्ध पढ़ा है जिस में उद्योग धन्धों में लगे हुए भारतीय स्त्रियों और बच्चों की दशा का बड़ा उत्तम चित्र खींचा है और यह प्रगट होता है कि इस दशा पर उन्होंने गहरी दृष्टि डाली है और इस बात पर जोर लगाया है कि फैक्टरियों में स्त्रियां निरीक्षिका नियुक्त की जावें, कामों में लगे हुए व्यक्तियों के लिये पढ़ाई के भी घंटे रखे जावें और आराम के भी, उन्होंने यह भी कहा कि जाति का तथा व्यक्तियों का भी हित ध्यान में रखकर यह आवश्यक है कि सेवा की शर्तें कानूनद्वारा निश्चित हों और क्रियात्मक रूप से बर्ती भी जावें और उनके स्वास्थ तथा सतीत्व की रक्षा का भी उचित प्रबन्ध हो।

उड़िया प्रान्त की एक महिला श्रीमती निशानायक ने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की शिक्षिका की परीक्षा पास की है। प्रान्त में इस परीक्षा में जो पास हुये हैं उन में से यह पहिली महिला है।

जगन्नाथ पुरी में हिन्दू महासभा के आधीन बाबू गोप-बन्धूदासने एक विधवा आश्रम इस प्रकार का खोला है कि तीर्थ स्थान में जितनी भी विधवा हों अथवा अन्य भी अनाश्रय स्त्रियां हों उनको यहां आश्रय मिला करे।

चीनी स्त्रियों में ९० फीं सदी स्त्रियां अशिक्षिता हैं क्योंकि उनमें पुरानी स्त्रियों को तो पढ़ने लिखने की कुछ आवश्यक्ता ही नहीं मालूम होती थी। भारत की स्त्रियों कीस्थिति इससे भी खराब है। यहां एक प्रतिशतक स्त्री ऐसी है जो लिखना पढ़ना जानती है।

स्त्रियों के कर्त्तव्य

ले०—सुशीला देवी गुप्ता पटियाला।

उस सर्वशक्तिमान् कृपालू परमपिता परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है कि जिस की असीम कृपा से हमें अपने भूले हुये पूर्व कर्त्तव्यों का ध्यान जागृत हो रहा है। हमारा अज्ञानान्धकार दूर होकर ज्ञान का सञ्चार हृदय में उल्लास पैदा कर रहा है। और हमें अपनी दुर्दशा और अनभिज्ञता पर दृष्टिपात करनेकी सामर्थ्य होने लगी है।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परन्तु शोक ! कि अभी हमें वास्तविक कर्त्तव्य का ज्ञान अच्छी तरह विदित नहीं हुआ है। बहिनों गृहस्थ एक राज्य का भार है, जैसे राजा के ऊपर एक प्रजा का भार होता है। अगर राजा अपने राजकार्य को उचित रीति से पालन नहीं करे तो उसके राज्य के नष्ट होने की सम्भावना है और उसके राज्य में कभी शान्ति स्थापित नहीं होती। इसी तरह अगर हम भी अपने राज्य कार्य्य में थोड़ी सी त्रुटि करदें तो हमारे गृहस्थ रूपी राज्य में कभी शान्ति नहीं होती। गृह किसे कहते हैं ? जिस में गृहणी हो जिस घर में गृहणी नहीं वह घर नहीं, यदि गृह में दस बीस मनुष्य हों तो भी उस गृह के कार्य्य में यह बात नहीं आती जो एक स्त्री के होने से होती है। गृहस्थ का भार उठाने की शक्ति गृहणी में ही होती है पुरुष इस कार्य्य के करने में सर्वदा अयोग्य देखे गये हैं।

जो स्त्री गृहस्थी के कार्य्य में योग्यता नहीं रखती, गृहस्थी का ज्ञान सम्पादन करने का प्रयत्न नहीं करती, वह गृहणी कहलाने योग्य नहीं। गृहस्थी का मुख्य कार्य्य गृह व्यवस्था है। अर्थात् घर का काम काज करना बाल बच्चों की देख भाल करना उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करना, पति की सहायता करना, अपने से बड़ों की सेवा करना, गृह में शांति स्थापित रखना यथा लाभ सन्तोष रखना, यह बातें कुछ सरल नहीं हैं। इन कामों के लिये बुद्धि विद्या विचार की आवश्यकता है। गृह में कलह और दुःखों का मूल आलस्य और अशिक्षितता है। आलसी स्त्रियां कभी अपने गृह की उन्नति करके अपने कुटुम्बी लोगों को प्रसन्न नहीं कर सकतीं, स्त्रियां यदि आलस्य त्याग करके गृहस्थी के कामों में यथेष्ठ मन लगावें एवं हर समय परिश्रम से अपने परिवार वालों की सेवा करती रहें तो निश्चय है कि आजकल की भांति सास ससुर से बहू का विद्वेष न होने पावे।

आजकल के बड़े घरों की कन्यायें प्रायः विलासी और घर के काम काज करने में आलसी देखी जाती हैं, बहुत सी स्त्रियां गृहकार्य्य एवं रसोई करने के व्यापार को छोटे गृहों का कार्य्य समझती हैं"। ऐसा करने से गृह में विशृंखलता और चारों ओर अशांति का ही कारण हो जाता है। आलसी मनुष्य का मन और स्वास्थ्य बड़ी जल्दी खराब हो जाते हैं, वर्त्तमान जो हिस्टिरिया और सूतिका रोग हो रहे हैं वह इसी आलस्य का कारण है।

इस आलस्य में पड़कर स्त्री को अपनी ज़िन्दगी में सच्चा आनन्द उठाना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है, इस लिये हे बहिना ! सबसे पहिले अपने कर्त्तव्य पर विचार करने को इस दुष्ट आलस्य का परित्याग करना चाहिये।

भगिनिगणों ! संसार में जितने दुःख कष्ट और विपदा हैं उन सब को सहन करके गृहस्थ को सुख निकेतन बना डालना ही स्त्रियों का कर्त्तव्य है। दुःख चाहे कितना ही पड़े परन्तु तुम अपने धैर्य्य को कदापि नहीं छोड़ो कभी भी अधीर होकर अपने विचार बुद्धि को न गवांओ जिससे कि अपने कर्त्तव्य को भूल जाओ।

तुम्हारे सास स्वसुर व परिवार के लोग चाहे तुम्हारे साथ सदव्यवहार नहीं करें किन्तु तुम उस से क्षुब्ध न होओ और प्रयत्न करो कि जिस से उन्हें कुछः कहने का अवसर ही न प्राप्त हो। बहिनों अगर तुम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने इस कर्त्तव्य का पालन सच्चे मन से करोगी तो ईश्वर तुम्हारे कष्टों को अवश्य हरण करेंगे।

अगर तुमने अपने धैर्य्य को त्याग दिया और असंतोष से उसका पालन नहीं किया तो ईश्वर भी तुम से असन्तुष्ट हो जायेंगे। अतएव तुम को सर्वदा अपने धैर्य्य को अपना भ्राता समझना चाहिये। कभी इसका अपमान नहीं करना चाहिये। स्त्री में चतुराई अवश्य होनी चाहिये जो स्त्री चतुराई से काम नहीं लेती उन्हें अत्यन्त दुख भोगना पड़ता है स्त्री चाहे जितनी सुन्दर हो परन्तु अगर उसमें चतुराई नहीं हो तो उसे कोई प्यार नहीं करता उसका बड़ा निरादर होता है वह आदर की पात्री नहीं रहती। हर एक कार्य्य में चतुराई की आवश्यकता है इस चतुराई के द्वारा स्त्रियाँ अपने गृह को स्वर्ग बना लेती हैं, इस विषय में मैं एक चतुर बहू का वृतान्त लिखती हूं। जिसने अपनी चतुरता से अपनी कलह कारिणी सास को भी सरल स्वभाव वाली बना लिया था।

"एक ग्राम में एक ब्राह्मणी रहती थी उस के दो पुत्र थे बड़े का नाम केसरी और छोटे का नाम कपूर था, कपूर की बहू का नाम सुशीला था, उसका जैसा नाम था वैसी ही वह बुद्धिमती भी थी। गृह के समस्त कामों को ऐसे समयों में विभाजित कर दिया कि सास को भी लज्जित होना पड़ता था परन्तु सास मूर्खता वश इस को अभिमानी समझ कर अपने आप भी दण्ड देती थी और अपने पुत्र कपूर से भी दण्ड दिलवाना चाहती थी यह दोनों माता तथा पुत्र उसको दण्ड देने पर सन्नद्ध हुये परन्तु उस सुशीला बहू ने कारण जान कार्य्य की ऐसी युक्ति रची कि सास के सब कारण नष्ट हो गये परन्तु तब भी सास ने अपनी कुटिलता नहीं त्यागी और नित्य नवीन कारण विचारती रही एक दिन सासु ने बहू को कपूर लेने के लिये बाज़ार भेजा और सोचा कि देखूं अब इस की बुद्धिमता कि यह बनिये से कपूर किस तरह माँगती है क्योंकि इसके पति का नाम कपूर है और पति का नाम लेना वर्जित। यह सोचकर बहू के पीछे २ उसके जेठ को भेजा कि सुनकर आओ कि यह बनिये से क्या कहती है? जेठ छुपकर के देखने लगा कि यह कैसे कपूर माँगती है बहू ने बनिये के पास जाकर किस बुद्धिमानी से कहा। उसने कहा—

शंख से उज्ज्वल शशिवरण,
आवे सुगन्ध सुवास।
वह बनिये मोहे तौलिदे,
लेन पठायी सास॥

बनिये ने कुछ देर सोच कर कहा, कि कपूर चाहिये तब बनिये ने पुड़िया बांधकर कपूर दे दिया जिसे लेकर वह बुद्धिमती चलदी। मार्ग में अपने जेठ को खड़ा देखकर आगे न जा सकी और एक स्थान पर बैठ गई घर पहुंचने के लिये उसे कुछ देर हो गई। तनन्तर यह घर पहुंची इसे देखकर सास बड़ी क्रोधित हुई कि आज तैने इतना समय कहाँ लगाया और अपशब्दों का उपयोग करने लगी। बहू ने हाथ जोड़कर कहा कि माता जी मेरी बिनय सुन लीजिये।

बैशाखे ऊपर लगे ग्रीषम को है मास।
सो ठाड़े थे गैल में, कैसे आती मात॥

प्यारी बहिनों देखो उस विदुषी बहू ने जेठ शब्द तक अपने मुख से उच्चारण नहीं किया। इस दोहे को सुनकर उसकी सास लज्जित हुई और अपनी मूर्खता पर पश्चा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताप करने लगी कि मैंने व्यर्थ ऐसी बुद्धिमती बहू को दुःख दिया ऐसी चातुर्य्यता देखकर जेठ की ईर्ष्या नष्ट हो गई और उसका आदर होकर चारो तरफ़ बड़ाई फैलगई।"

प्यारी बहिनों इस मोहिनी आभूषण को अङ्ग पर धारण कर अपनी तथा अपने कुटुम्ब की शोभा बढ़ाती रहो और अपने कर्त्तव्य को उचित रीति से पालन करती हुई अपनी नष्ट हुई मर्यादा को फिर से जागृत कर दो।

जीवन की एक विशेष घटना।

[लेखिका—अञ्जना देवी आर्य श्रीनगर]

आज पाठशाला में छुट्टी थी, इस लिये आज मैंने घर पर कुछ कन्याओं को बुला कर गणित तथा सीना पिरोना सिखाना चाहा, कन्यायें दिव्य समय पर पहुँच गई मैंने उनको गणित सिखाया पश्चात् सिलाई का समय आया तो कन्याओं ने कहा, कि हमें आप कुछ शिक्षा संबन्धी कथा आदि सुनावें, ताकि काम भी हो जावे और शिक्षा भी मिले मैंने कहा—अच्छा सुनो (एक कन्या जिसका नाम विमला है)

बिमला—अध्यापिका जी मैंने सुना है, कि आप पहिले इसाई थीं ?

मैं—हाँ तुम ठीक कहती हो, परन्तु उससे पहिले मैं हिंदू भी थी।

बिमला—अध्यापिका जी आपने कैसे धर्म परिवर्तन किया था और क्यों किया था ?

मैं—हिंदू समाज के उलटे, बुरे, बन्धनों से पीड़ित होकर ?

बिमला—अध्यापिका जी, क्या आप हमें इस विषय में बतलायेंगी ?

मैं—(एक लम्बी आह भर कर) क्यों नहीं सुनो मैं तुम्हें सुनाती हूँ छोटी आयु का तो मैं हाल जानती नहीं, पर यह जानती हूं कि मेरे पिता काशी में रहते थे मन्दिरों में कथा आदि किया करते थे, मैं कोई छः वर्ष की थी, जब मेरा विवाह होगया था, मेरे विवाह के पश्चात् मैंने फिर अपनी माता का घर नहीं देखा मेरे पति की आयु तीस पैंतीस वर्ष की थी मेरे विवाह के पूर्व ही से उन को क्षयरोग हो गया था, अतः एक वर्ष के भीतर ही परलोक की यात्रा को चल दिये। सास ने फकीरीबाना पहिना दिया, हाथ की चूड़ियां फोड़ दीं, बस मुसीबत का दिन शुरु हुआ, खुशी के बदले रोना नसीब हुआ अब मुझे कोई पूछता तक न था कुत्तों की तरह सदां दुतकारा करते थे मैं छोटी थी, मुझे क्या पता, कि मुझपर क्या मुसीबत आई है, इस लिये जब लड़कियों को हंसते खेलते देखती, तो मेरा दिल भी खेलने को चाहता पर मुझे कोई पास तक न आने देती, इस पर मैं प्रायः सारा दिन रोया करती थी जब मैं कुछ बड़ी हुई तो सास ने घर का हर एक काम मेरे सुपुर्द किया। अब मैं रात दिन काम में लगी रहती कपड़े धोती झाड़ू देती भोजन बनाती, पानी भरती अर्थात् सारा गृह कार्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करती, परन्तु फिर भी मुझ से कोई भली प्रकार बात न करता, उलटा सदा ही दुत्कारा करते थे। मैं जितना प्रसन्न करना चाहती, वह उतना ही रुष्ट रहा करते इस पर मुझे बहुत दुख होता था मैं रात सोचा करती कि मैंने क्या किया जो ईश्वर ने मुझे नरक प्रदान किया, इससे अधिक तो नरक की यन्त्रणा न होती होगी।

अब मेरी आयु करीब चौदह वर्ष की थी मैं अब मानापमान समझती थी इसी से मुझे अब दिन प्रति दिन अधिक दुख प्रतीत होता था।

एक दिन मैं पानी लेने तालाब पर गई तो मुझे एक ईसाई स्त्री मिली मुझे देखकर प्रेम से बोली—तुम किस जगह रहती हो, तुम्हारा नाम क्या है मैंने उसे अपना नाम, स्थान बता दिया, मैंने जब से होश संभाली थी,तब से मेरे साथ कभी कोई प्रेम से न बोलता था। इस लिये उसके मीठे संबोधन से मुझे आंसू आ गये, और पैरों पड़ी। मुझे रोते देखकर वह बोली-तुम क्यों रोती हो?

मैं—मुझे विधवा कहते हैं, परन्तु मैं जानती नहीं, कि मेरा कब विवाह हुआ, और कब मैं विधवा बनी और जो मेरे साथ वर्ताव हुआ करता था, मैंने सब कह दिया उसने प्रेम दर्शाते हुए कहा यही तो हिंदू समाज में दुःख है कि लड़कियां जानती नहीं कि विवाह क्या होता है, तो विवाह कर आजन्म दुखी बना देते हैं हमारे में यही तो खूबियां हैं कि हम लड़कियों को बीस पचीस वर्ष तक पढ़ाते हैं, बाद में उनकी इच्छानुसार विवाह कर देते हैं; इसी प्रकार उसने मुझे बहुत बातें बताईं और फिर बोली—कि फिर मैं इसी समय में इसी स्थान पै तुम्हें कल मिलूंगी यह कहकर वह मुझे सान्त्वना देती हुई चली गई। मैं सारी रात सोचती रही, कि क्या ही अच्छा धर्म है क्या ही स्त्रियोंको स्वतन्त्रता है ओह? मैं कितना दुख उठा रही हूं दूसरे दिन मैं फिर पानी लेने तालाब पै गई, वह स्त्री आज फिर मिली आज भी उसने मुझे अपनी बहुत बातें बताई, अब वह मुझे नित्यही मिला करती थी। मैं भी उसके मिलने से सारा दुख भूल जाती थीं। एक दिन उसने मुझे कहा-तुम हमारे साथ चलो हम तुम्हें भी अपने धर्म में शामिल, कर लेवेंगी फिर तुम इस नरक की भयानक यत्रणा से सदा के लिये छूट जाओगी पहले तो मैं झिझकी पर कवि के कथनानुसार—

बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति॥

मैं उनके साथ चल पड़ी वह मुझे चर्च में ले गई और मुझे ईसाई बना लिया गया मुझे वह नित्य बाईबिल में से ईसामसीह की कथायें सुनाया करती थीं, मै वहां सुख से दिन काटने लगी।

वह मुझे अपनी भेषभूषा सिखाती थी मुझे इङ्गलिश सिखाती थी इसी प्रकार तीन चार वर्ष तक मैं उनके धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करती रही अन्त में एक दिन मुझ से प्रश्न हुआ, कि तुम विवाह करना चाहती हो, या मिशन का काम करोगी। मैंने मिशन का कार्य्य लिया, अतः मैं एक योरोपियन मिशनरी के साथ प्रचार के लिये बाहर निकली इसी प्रकार दो चार वर्ष तक मैं प्रचार करती रही, एक दिन हम दोनों एक मुहल्ले में पहुंची वहां कुछ स्त्रियां बैठी हुई थीं। हमने वहां जाकर वार्तालाप आरम्भ किया बहिनो! क्या कर रही हो? उन्हों ने पीछे हमें खड़े देखकर बैठने को स्थान दिया हम बैठ गईं,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तो फिर बोलीं—हम तुम्हें एक गाना सुनाती हैं, यह कहकर गाना शुरू किया—

"मरियम के बेटे ईसा सुनना....."

इतना कह ही पाई थी, कि एक स्त्री जिसका नाम बेदवती था बोली—आपके गाने से कुछ लाभ न होगा। आप बाता से कहें?

मैं—कहिये क्या पूछती हैं।

बेदवती—मरियम कौन थी?

मैं—ईसा मसीह की माँ थी।

बेद—मसीह कौन था?

"मैं—खुदा का बेटा था, हमारे दुख दूर करने आया था।"

बेद—अर्थात् मरियम खुदा की औरत थी?

मैं—नहीं खुदा की तो कोई स्त्री नहीं था।

बेद०—आप स्वयम् तो कह रही हैं, कि मसीह मरियम का पुत्र, और खुदा का भी पुत्र था।

मैं—नहीं? चूंकि कुमारी मरियम से उत्पन्न हुआ था, इस से ईसामसीह को हम खुदा का पुत्र मानते हैं (यह सुन सब स्त्री ज़ोर से हस पड़ीं)।

बेद०—आप गलती कर रही हैं कभी यह हो सकता है कि कुमारी कन्या के पुत्र हो, यह बात सिर्फ पाप छिपाने के लिये कही गई है।

मैं—नहींजी! एक दूसरे पुरुष को जिसके साथ उसकी सगाई हो चुकी थी, रात को स्वप्न में खुदा ने कहा—कि जो मरियम के सन्तान होगा, वह पाक है, क्योंकि उसका देने वाला मैं हूँ। (फिर सब हस पड़ीं)

बेद०—अच्छा इस बात को छोड़ दो? अच्छा, क्या सिर्फ मसीह ही खुदा का पुत्र है, हम सब नहीं है?

मैं—हैं तो सही? परन्तु मसीह हमारे पाप दूर करने आया था।

बेद०—क्या बात को पलट दिया है? कहदो पहिले जो कुछ कहा वह ठीक नहीं है, खैर, जो मसीह हमारे पाप ले गया तो फिर पाप क्यों नज़र आरहा है? तब फिर नज़र न आना चाहिये था, यह तो उल्टा दिन प्रति दिन बढ़ ही रहा है।

मैं—हो सकता है, सारे पाप दूर न हुये हों। कुछ २ दूर होगये होंगे ही।

बेद०—तो फिर मसीह की क्या बड़ाई रह गई? क्या हमारे ऋषि महर्षि ऐसे न थे? यह तो मानी हुई बात है, जो नेक होगा, नेकी ही फैलायेगा महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र पढ़ा, तो आंख खुल जायगी। क्या उच्च जीवन था?

मैं—परन्तु जो ईसामसीह में ईमान नहीं लाते, वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते।

बेद०—तो आपका मतलब है, कि सब ईसाई पाप से मुक्त हो गये, और मर कर अवश्य मोक्ष को प्राप्त करेंगे?

मैं—नहीं सब तो नहीं जिनके चरित्र अच्छे होंगे?

बेद०—तो इसी प्रकार हम भी मानते हैं, जो शुद्ध चरित्र होगा वही मोक्ष प्राप्त करेगा।

मैं—नहीं, जब खुदा के सामने हिसाब होगा, तो सिफारिश मसीह करेंगे, जो मसीह के प्रेमी होंगे वह स्वर्ग प्राप्त करेंगे।

बेद—जब कर्मों के आधार पर स्वर्ग, नर्क प्राप्त होता है तो फिर मसीह की क्या आवश्यक्ता है कि हमारे कर्मों की वकालत करे? अच्छा जो मसीह पहिले से उत्पन्न हो के मर भी गये हैं उनका क्या फैसला होगा?

मैं—कर्मों के आधार पे।

तो फिर हमारा भी वैसे ही होगा?

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैं—नहीं आपका नहीं। आपका नहा हो सकता जब तक कि मसीह पै ईमान न लाओ।

वेद—ठीक, अब फिर गलती रास्ता पकड़ा। कि चाहे कर्म कैसे बुरे हों सिर्फ मसीह पर ईमान लाने से मोक्ष प्राप्त होगा।

मैं—(अपनी सखिन से) सिस्टर कुछ तुम भी कहो मैं तो थक गई हूँ। मुझे पसीना पोंछते देख वेद ने कहा पंखा करूं?

मैं—(शर्मा कर) नहीं रहने दो।

मेरी साथिन—और न सही हम लोग हमदर्द तो बहुत हैं देखो जिन्हे तुम कुंए पै चढ़ते नहीं देते, पास बिठाने से नफरत करते हो हम उनको कितने प्रेम से अपनाते हैं? हमने पाठशालायें खोलीं? हस्पताल खोले? क्या२ नहीं किया, तुम लोगों के सुधारने को मारी मारी फिरती हैं।

वेद—आप यह सब कुछ अपने स्वार्थ से करती हैं, मुहब्बत आप लोगों में थ जो है वह दुनियाँ जानती है, पादरी लोग, दूसरे पादरियों को जिन्दा आरे से चिरवाते, आग में जलवाते रहे हैं।

मैं—खैर, हिन्दू क्या अपने भाइयों के प्रति कर रहे हैं!

वेद०—क्यों नहीं कर रहे, जिन के पास धन है सदाव्रत लगवाते हैं, धर्मशालायें खुलवाते हैं, कुए तालाब खुदवाते हैं, हमारे वेदों में जो मनुष्य के प्रति कर्म लिखे हैं आप के कहीं नहीं, रही छूआ छूत की बात, सो कमियां हर एक जाति में रही हैं। जो कमियां हैं, उनका हम सुधार करते हैं, दुनियाँ में नेक बद हर एक जातीय लोग होते हैं, जो नेक हैं, वह नेकी फैलाते हैं जो बुरे हैं, वह बुराई, भले उनका सुधार करते हैं। आपको क्या२ गिनाऊं, हमारे यहां सन्यासी विरक्त भाव से देश में धर्म प्रचारका कार्य करते हैं, वैद्यों का बिना मूल्य औषधि बेचना कहां है विद्यालय, अनाथालय, विधवाश्रमादि देश जाति की सेवा करते हैं। आज गुरुकुलों में जो उच्च आदर्श की शिक्षा दी जाती है, क्या वही आदर्श शिक्षा का तुम लोगों के कालेज रखते हैं! कभी नहीं। किन्तु मैं कहूँगी कि जितने विद्यार्थी आपकी शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा ग्रहण करते हैं, वही देश जाति की प्रायः गिरावट का मुख्य कारण हो रहे हैं, यदि कोई निर्पक्ष रूप से आपके बाइबल आदि धर्म ग्रन्थों के साथ वेदों की तुलना करे, तो ठीक सूर्य और दीपक का सामना होगा, फिर यदि वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है, तो कैसे सिर्फ आपके मसीह पै ईमान लावे स्वर्ग मिल सकेगा।

मैं—(पसीना पोंछती हुई) अच्छा फिर कल मिलूंगी। चली आई मैं वहां से। अब वह मसीह जिसके नाम पर मैं जान देना चाहती थी मामूली मालूम होने लगा। बार२ उसकी बातें याद आतीं, तो दिल में ख्याल होता कि इन को अज़माना चाहिये ऐसा सोच सत्यार्थप्रकाश लेकर पढ़ने लगी।

मैं सहारनपुर जा रही थी, कि मार्ग में मेरी चिर परिचित वही ईसाई स्त्री स्टेशन पर मिली मैं खद्दर की सफेद धोती पहरे थी मुझे देखते वह अवाक रह गई और बोली बहिन यह पहनावा कब से आरम्भ हुआ है?

मैं—जब से आप का साथ छूटा

वह बोली—फिर हिन्दू?

मैं—हां अपवित्रता छोड़ पवित्र हुई हूं। बहो ओ-बहिन साफ़ कहो तुमसे यह आशा नहीं थी!

मैं—जब से मेरी वेदवती से बहस हुई उसी दिन से मेरा मन कुछ खिन्न था। मैं सत्य असत्य का निर्णय करने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने लगी फिर जब सत्य पता लग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गया तो समाज मन्दिर में जाकर प्रार्थना की उन्होंने कृपाकर मेरा उद्धार किया। वह कुछ कहना ही चाहती थी, कि गाड़ी चल पड़ी और उसके मन की बात मन में रह गई, मैं सहारनपुर आकर आप भी पढ़ती रही और इस पाठशाला में पढ़ाती भी रही। आज सात वर्ष से यहीं हूं।

बिमला—अध्यापिका जी आज तो बहुत उत्तम शिक्षा मिली, यह कहकर चली गई। मेरे मन में भाव उत्पन्न हुआ कि अपनी घटना जाति की सेवा में अर्पण करूं ताकि कुछ लाभ हो सके।

अछूतोद्धार

ले०—भानुदत्त 'ऋषि' हिन्दी प्रभाकर

रात्रि का समय है, चारों ओर निस्तब्धता छा रही है। अन्धकार का राज्य है। नगर का प्रत्येक घर रोशनी से जगमगा रहा है। नगर के बाहर एक टूटी फूटी झोंपड़ी है। वहां सड़क के लैम्प की मन्द किरणों के सिवाय किसी प्रकार की भी रोशनी दिखाई नहीं देती। इसी झोंपड़ी में एक मनुष्य अपनी स्त्री से कह रहा है—हाय क्या करूं ? सारा दिन काम की तलाश में फिरता रहा, भीख मांगी जो कुछ भी हो सकता था किया; परन्तु किसी ने एक पैसा भी न दिया। सभी मुझे नीच जाति का होने से दुत्कारते हैं। रमेश [वक्ता का पुत्र] को चेचक निकली हुई है उसके बचने में भी सन्देह है। इसे कल शाम से होश भी नहीं आयी हाय ! इसके मुंह में एक घूंट दूध भी न दे सका। लड़की अलग भूख से कराह रही है। तू भी तीन रोज से बीमार है। क्या करूं ? सारे शहर में एक पण्डित बधावाराम का घर और है : सुनते हैं कि वह बहुत सज्जन तथा दयालु पुरुष हैं। सबेरे वहीं जाऊंगा। इतने में ही रुग्ण बालक ने ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "अरे कुछ खाने को दो"। परन्तु वहां क्या था ? जो देते। माता पिता पत्थर सा दिल लेकर अपनी किस्मत को कोसने लगे।

सबेरा होते ही रमेश की मां ने रमेश के पिता से पण्डित जी के घर जाने के लिये कहा। पण्डित जी उस समय मन्दिर में पूजा करने जा रहे थे। उन्होंने अपने सामने एक चमार को आते देख कर अपशकुन समझा और अत्यन्त क्रोधित हुए। इतने में रमेश का बाप अति दीनतावश उन के पैर छूने के लिये आगे बढ़ा। पण्डित जी ने उसे आगे बढ़ते देखकर पास ही पड़ा हुआ डण्डा उठा लिया और इसके सिर पर ज़ोर से दे मारा। और कहा, "सबेरे सबेरे चमार का दर्शन हुआ है; न मालूम सारा दिन भोजन भी मिलेगा या नहीं।"

रमेश के बाप के सिर से खून की धारा बह निकली। उसने अपने सिर का फटा, साफा सिर पर बांधा और किस्मत को रोता हुआ घर वापिस चला आया। घर में भूखे बच्चों की चीत्कार सुन सुन कर उस का हृदय फटने लगा। वह चुपचाप घर से बाहर सड़क के किनारे घुटनों में मुंह छिपा रोने लगा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इतने में ही सड़क पर से जाते हुए एक पादरी ने उसे रोते हुए देखा और कहा:—

"तुम को क्या हुआ हाय ?"

रमेश के बाप ने सिर उठा कर देखा कि एक साहिब खड़ा है। उसने समझा शायद इसे ही ईश्वर ने मेरी सहायता के लिये भेजा है। उसने अपना सारा हाल पादरी को कह सुनाया।

पादरी उसके साथ उसके यहां गया। डाक्टर को बुलवाया, दवाई की व्यवस्था की और खाने के लिए कुछ मोल लेने चला। इतने में रमेश के बाप ने कहा, "तुम कुछ लेने मत जाओ। जो कुछ देना हो नकद दे दो हम ले आवेंगे। तुम्हारे हाथ का खाने से हमारी बिरादरी वाले हमें अपनी बिरादरी से निकाल देंगे।

पादरी ने उसे समझाया कि तू बीमार है, तू चलेगा तो तुझे ग़श आ जावेगी। तू इन बिरादरी वालों की परवाह करता है जो तुझे दुत्कारते हैं और तेरा मदद तक नहीं करते ? यह कह कर साहिब दूध और कुछ रोटियां ले आया। बच्चों को दूध दिया और रमेश की मां ने भी रोटियां खाईं। रमेश का बाप इसी विचार मे डोलता रहा कि खाऊं तो धर्म जाता है न खाऊं तो प्राण। उसने तीन दिन इसी सोच विचार में व्यतीत किये। वह अपने मन में कहने लगा कि "यह कैसा अच्छा आदमी है मेरे बच्चे की कितनी सेवा की है और उसे मरते मरते बचाया है। मेरी विपत्ति में किसी भी भाई बन्धु ने मेरी सुध नहीं ली। यह अवश्य ही कोई दैवी पुरुष है।" ३ दिन के व्रत के पश्चात् उसने मुंह में ग्रास डाला बच्चे की हालत अब आगे से कुछ अच्छी हो गई थी। डाक्टर रोज आकर देख जाता और दवाई देने को बता जाता। दिन में एक बार पादरी साहिब भी सहायता के लिये उपस्थित हो जाते। ईश्वर की कृपा से रमेश को पूरा आराम हो गया। और कमजोरी भी दस बारह दिन में दूर हो गई। साहिब ने रमेश के बाप को हाईस्कूल में घन्टा बजाने की नौकरी दिलवादी और रमेश को स्कूल में दाखिल करा दिया। हैडमास्टर से कहकर उस की फ़ीस माफ करा दी और उसे पुस्तकें मोल ले दीं।

रमेश का पिता इन सब बातों से पादरी का अत्यन्त कृतज्ञ हुआ और उसने एक दिन पादरी से कहा—"मैं क्या मेरी सात पीढ़ी में कोई भी तुम्हारे इस उपकार का बदला न दे सकेगा। परन्तु यदि मेरे योग्य कोई सेवा हुआ करे तो आज्ञा कर दिया करें।" इस पर साहिब ने कहा "अब तुम्हारी बिरादरी वाला आदमी तुमको अपना बिरादरी में सामिल नहीं करेगा, इस वास्ते तुम हमारी बिरादरी में सामिल हो जावो।"

रमेश का पिता कुछ उत्तर न दे सका। वह इतना कृतघ्न न था। कि साहिब को इन्कार कर देता। उसने साहिब से कहा—"जो आज्ञा"।

इतवार को सवेरे २ पादरी इसके घर पर आया और उन्हें एक गाड़ी में बिठाकर गिरजे में ले गया और उन्हें क्रिश्चियन धर्मावलम्बी बना लिया।

रमेश बड़ा चतुर बालक था। कुछ ही दिनों के परिश्रम के पश्चात् उसे वज़ीफ़ा मिलने लगा और मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में वह सब प्रथम निकला। बाप ने चाहा कि उसे नौकरी करावे; परन्तु पादरी ने कहा कि तुम इसे चार साल और पढ़ने दो।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुम्हारा इस में कुछ भी खर्च न होगा और उसे दो या तीन सौ मासिक की नौकरी मिल जावेगी। रमेश के पिता का गुजारा खूब अच्छी तरह हो जाता है। अब जब कभी वह अपनी पुरानी दशा को स्मरण करता है तभी अपनी पुरानी हिन्दू जाति को कोसता है। जहां कहीं भी वह कोई दीन दुःखिया देखता है उसकी सेवा तथा हर प्रकार से सहायता करता है और उसे ईसाई धर्म्म का उपदेश देता है।

हाय! कैसे कष्ट की बात है कि हम अपने भाइयों से प्रेम के बदले घृणा करते हैं। जिस से वह गौ ब्राह्मण की रक्षा छोड़ कर उसके घातक तथा द्वेषी बन जाते हैं। इस प्रकार केवल यह लोग ही हम से वियुक्त नहीं होते, प्रत्युत और २ मनुष्यों को भी विधर्मी बनाते हैं।

हा भारतीय नवयुवको! क्या अब भी अपनी जाति को न संभालोगे और उसे ऐसे घुनों से न बचाओगे?

—०—

कुमारी स्लेड

यूरोपीय सभ्यता के कष्ट

आश्रम में शांति मिली

सत्याग्रह आश्रममें आयी हुई फरांसीसी सेनापति की पुत्री कुमारी स्लेड अहमदाबाद महिला सभा का निमंत्रण पाकर वहां गयी थीं वहां श्रीमती विद्यागौरी, श्रीमती नील कण्ठ प्रभृति से उनकी बातचीत हुई। भारत में आनेके बाद वे पहले पहल इस स्थान में गयी थी। बातचीतके सिलसिले में उन्होंने कहा—"इंगलैण्ड में मुझे शांति न मिली और यूरोपीय सभ्यता के कारण मुझे बड़ा दुःख हुआ। यूरोपीय महासमर की समाप्ति पर मुझे अनुभव हुआ कि आराम और आवश्यकताओं की वृद्धि ही जीवन के इस संग्राम का कारण है। मुझे यह मालूम होता है कि पाश्चात्य सभ्यता ही सारी बुराइयों की जड़ है।

दिन दिन मेरे मन की बेचैनी बढ़ती गयी इसी बीच मुझे महात्मा गांधी के उपदेशों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा जीवन की सरलता की उनकी अपील से मेरा हृदय आकृष्ट हुआ। मैंने गान्धीजी को लिखा और उन्होंने मुझे पहले घर पर जीवन के कड़े नियमों का पालन करने की आज्ञा दी। जब वह समय खतम हुआ तो मैं भारत आयी। यहांमैं आश्रममें पूर्ण शांतिके साथ रह रही हूं और मेरे मनको विश्राम मिला है।"

उन्होंने यह भी कहा—"मेरे माता पिता मेरे इस कार्य से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं, तथा मेरी माता जी ने तो खाली समय में घर पर चरखा कातना आरम्भ कर दिया है।"

पूंछने पर उन्होंने उत्तर दिया "अपने शेष जीवनमें मैं क्या करूंगी यह मैंने गांधी जी पर ही छोड़ दिया है। वे जो कुछ आज्ञा देंगे वही करूंगी। एक वर्षतक मैं कोई काम न करके आश्रम में ही अपने को कामके लिये तैयार करूंगी। उसके बाद मेरा विचार ग्रामों में कुछ करने का है। मैं भारत से प्रेम करती हूं और भारत की प्रत्येक वस्तु मुझे हृदय से प्रिय है। भारतीय जीवन की सादगी ने मुझे आकृष्ट किया और आश्रमके जीवन ने मुझे अनन्त शांति प्रदान की।

मुझे गांधी जी के बाबत जो कुछ मालूम हुआ वह सब श्री रोमेला की मार्फत मालूम हुआ। इससे अधिक मैं अपने पूर्व जीवनके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहती।"

(आज)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कन्या गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य

लग भग एक मास से ऋतु परिवर्तन के कारण ज्वर का प्रकोप थोड़ा बहुत समय २ पर यहां पर भी होता रहा है। किन्तु दो सप्ताह हुये तो रोगी शाला में ब्रह्मचारिणियों की अधिकता हो गई थी और दो तीन कन्याओं को टाइफाइड ज्वर हो रहा था परमात्मा का बड़ा धन्यवाद है कि अब मलेरिया ज्वर भी कम हो गया है और टाइफाइड के दोनों केस अच्छे हो रहे हैं। चेचक भी तीन कन्याओं को निकली थी परन्तु बहुत हल्की थी। उन्हें अलग रखा गया और वह अब बिल्कुल स्वस्थ हैं। और अब अन्य किसी को नहीं निकली क्योंकि सभी के टीका हो गया है।

पठन पाठन

विद्यालय आज कल प्रातः ६॥ बजे से ११-३० तक लगता है और दोपहर को २ बजे से ५ बजे तक कन्यायें पढ़े हुये पाठ का अध्ययन करती हैं। चूंकि धूप बड़ी तेज है अतः ५॥ बजे से पूर्व क्रीड़ा क्षेत्र में जाना डाक्टरों ने रोका हुआ है। ठीक ५॥ खेल शुरू होते हैं और ६॥ पर हवन संध्या, उसके बाद भोजन और ९ बजे शयन करती हैं। रात्रि को पढ़ना बन्द हो गया है।

षाण्मासिक परीक्षायें मई के अन्तिम सप्ताह में प्रारम्भ होंगी, अतः कन्यायें तैयारी में लगी हुई हैं।

चूर्खा और सिलाई।

कार्य्य कर्तृ देवियों की कमी के कारण चर्खा और सिलाई एक मास से बन्द है। क्योंकि सिखाने वाली देवियों की ड्यूटी अन्य कार्य्यों तथा रोगीचर्य्या आदि में लगी हुई है।

अध्यापिकाओं की कमी

यों तो अध्यापिकाओं की कमी हमेशः बनी रहती है परन्तु आज कल विशेष रूप से कमी है। एक ही अध्यापिका को एक से अधिक श्रेणी एक साथ देखनी पड़ती है। श्रीमती बुद्धिमतीदेवी एक मास से इस कमी को पूर्ण कर रही थी आवश्यक कार्य होने से वहभी चली गई हैं अतः पाठन कार्य्य में विघ्न हो रहा है।

जब तक कमी पूरी नहीं होती तब तक आवश्यकता है कि जो भी पढ़ी लिखी देवियां गृहस्थी भी हों और उनका लक्ष्य अध्यापिका बनना न भी हो तो भी देश की कन्याओं के हितार्थ अपने समय का कुछ भाग कन्या गुरुकुल की सेवा में लगावें, और अपनी उच्च शिक्षा से कन्याओं की शिक्षा में सहायता प्रदान करें। चूंकि हमारे दुर्भाग्य से हमारी स्त्री जाति में शिक्षा का प्रचार बहुत नहीं है और पठित देवियों की संख्या थोड़ी होती है और मांग बहुत है अतः प्रत्येक शिक्षितादेवी का आज कल मुख्य कर्तव्य है कि जहां कहीं वह हों और कन्यागुरुकुल कीमांग उनके कान में पड़े तो वह तुरन्त इसको दो चार महीने वर्ष में देने के लिये कटिबद्ध हो जायें और इस पुण्य कार्य में हाथ बटावें यदि ऐसा हो जाय तो दो चार वर्षोंमें ही त्रुटि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूरी हो सकेगी क्योंकि ऊंची श्रेणी की कन्यायें तैय्यार हो हो कर जब निकलने लगेंगी और कुल का ऋण चुकाना शुरू करेंगी तब कुल को फिर इतना कष्ट न होगा।

आवश्यक्ता।

इस समय कन्या गुरुकुल को कम से कम दो ज्यूनियर और दो सीनियर ट्रेंड या हिन्दी की अन्य कोई परीक्षा पास, अनुभवी सदाचारिणी देवियों की ज़रूरत है जो हिंदी, गणित, भूगोल, ड्राइंग तथा इतिहास भिन्न २ श्रेणियों को पढ़ा सकें।

एक विशारद या प्राज्ञ पास या उसकी योग्यता वाली संस्कृत अध्यापिका की भी आवश्यक्ता है। वेतन योग्यतानुसार अन्य पाठशालाओं की अपेक्षा कुछ अधिक भी दिया जा सकेगा। आने का मार्ग व्यय भी दे दिया जावेगा और रहने को स्थान भी।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर शीघ्र करना चाहिये।

आचार्य्या कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
कोठी नं० ४ दरियागंज
दिल्ली

कन्या गुरुकुल के लिये स्थायी भवन।

कन्या गुरुकुल का वर्तमान भवन किराये की कोठी में है और ३२५) मासिक तो किराये के ही देने पड़ते हैं इसके अतिरिक्त ऊपरसे और भी मरम्मत, सफैदी आदि सभी व्यय कुल को करने पड़ते हैं। तिस पर भी टिनशेड, छप्पर आदि भी गुरुकुल ने डाले हैं और फिर भी स्थान की तंगी बहुत है। यदि अपना स्थान होता तो छप्पर आदि में भी गुज़ारा करने पर वर्ष का ४ हज़ार रुपया तो इस तरह न व्यय होता। आज तीन वर्ष होने लगे हैं और अभी तक स्थान का निश्चय नहीं हुआ है। यदि अपनी जगह होती तो इन्ही १२ हज़ार रुपयों तथा और जो टीन शेड आदि में लागत लगी है उस से अपने स्थायी भवन का अधिकांश भाग तैयार हो गया होता। परन्तु सारे आर्य्य समाज की एकमात्र कन्याओं की संस्था कन्या गुरुकुल के लिये स्थान ही नहीं मिलता बड़े खेद और लज़्जा की बात है।

कन्या गुरुकुल को दिल्ली से हटाने का प्रश्न

कन्या गुरुकुल की संरक्षक सभा के मंत्री ने इस सम्बन्ध में एक सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है उसे हम ज्योति द्वारा संरक्षकों की सेवा में प्रस्तुत करते हैं और आशा करते हैं कि सब संरक्षक शीघ्र ही पत्र द्वारा सम्मति देकर कृतार्थ करेंगे।

सूचना।

कन्यागुरुकुल देहली की कन्याओं के संरक्षकों से प्रार्थना है कि वे कृपा करके अपनी सम्मति शीघ्र प्रकाशित करें कि इस गुरुकुल को देहली में ही रक्खा जावे अथवा किसी अन्य स्थान में ले जाया जावे। यदि अन्य स्थान में ले जाने के पक्ष में हों तो हरीद्वार या राजपुर (जो देहरादून और मसूरी के बीच में है) यह दो स्थान ही तजबीज किये जा रहे हैं अतः इन में से कौनसा स्थान उन को पसन्द है। देहली में रखने के विरुद्ध मुख्य २ बातें नीचे लिखी जाती हैं:-

१ ग्रीष्म ऋतु में गरमी बहुत होती है वर्षा में जाड़ा बुखार (Malaria) बहुत फैलता है। जिस कोठी में इस समय गुरुकुल है वहाँ मच्छड़ बहुत हैं तथा यह पर्याप्त भी नहीं है। कमी को पूरा करने के वास्ते कुछ टीन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के मकानात बनाए हुए हैं जिन की छत पर फूस और नीचे लकड़ी के तख्ते लगाने पर भी गरमी बहुत रहती है और स्वास्थ्य पर असर हुए बग़ैर नहीं रह सकता । प्रायः कन्यायें इसी कारण ज्वर ग्रस्त हो जाती ह और उन की स्वास्थ्य और पढ़ाई की हानि होती है ।

२-देहली में गुरुकुलके वास्ते भूमि मिलना कठिन होता है । यदि मिल भी जावे तो शहर के निकट तो मूल्य बहुत होगा यदि जङ्गल में मिले तो कन्याओं की रक्षा का भार अधिक हो जाता है ।

३-देश की वर्तमान स्थिति में देहली में कन्याओं की रक्षा का भी प्रश्न जटिल प्रतीत होता है । कार्य्यकर्त्ताओं को इस के वास्ते जो परेशानी होती होगी वह तो स्वयम वे ही अनुभव कर सकते हैं ।

उपरोक्त बातें बाहर से दृष्टि डालने से मालूम होती हैं और कितनी कठनाइयाँ यहां है वह तो प्रबन्ध करने वाले ही जानते हैं । अतः स्थायी भवन का प्रबन्ध कराने के हेतु शीघ्र ही प्रयत्न करने की बड़ी भारी आवश्यकता है । और यह तब तक नहीं होता जब तक चारों ओर से इस के लिये आन्दोलन न किया जावे । इस विषय में हमारी बात चीत श्री आचार्य्य रामदेव जी से हुई हैं । और उनकी सम्मति से ही आप सब संरक्षक भाइयों की सम्मति मांगी जाती है । ताकि यदि संरक्षक महाशय भी देहली से गुरुकुल अन्यत्र लेजाने के पक्ष में हों तो गुरुकुल की कार्य्य कारिणी सभा में यह प्रस्ताव उपस्थित करने का उद्योग किया जावे ।

पृथ्वी सिंह
मन्त्री, क० गु० संरक्षक-सभा

❀ विचार प्रवाह ❀

कलकत्ते का दंगा ।

कलकत्ता इस समय विप्लव की अवस्था में है । शहर का सब कारोबार बन्द है । ट्राम कार और मोटरों का आना जाना ही बन्द है । हर एक को हर दम जान का खतरा बना रहता है । राह चलते आदमी कत्ल कर देना तो मामूली सी बात हो गई है । आज लगभग एक मास होने को आया है परन्तु दंगा अभी भीषण रूप में है । पुलिस के किये कुछ नहीं बना । सैनिक सहायता भी विफल हो गई । क्या सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत के अमन चैन की दावेदार सरकार एक शहर के कुछ गुण्डों के उत्पात का दमन नहीं कर सकती ? आश्चर्य है !

उत्तरदायी स्वराज्य के हामी भारतीय नेताओं के लिये जहाँ यह परीक्षा का समय है वहां विदेशी सरकार की शान्ति स्थापना की योग्यता का भी सवाल है । ब्रिटिश सरकार की नपुंसकता व बेपर्वाही का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है । जब बड़े बाज़ार में मस्जिद के पास पुलिस के थाने के नजदीक ही अशान्ति की चिनगारियां नज़र आई थीं उस समय पुलिस किस कुंभ कर्णी नींद में सो रही थी ?

दंगा होने के ७-८ दिन बाद तक सैनिक सहायता की उपेक्षा भी अमन के लिये शासकों की जान बूझ कर बे परवाही करने का द्योतक है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दङ्गे का सारा दोष हम एंग्लो इन्डियन पत्रों के अनुसार अपने हिन्दू मुस्लिम भाइयों पर थोप देते यदि इसका रूप अब तक एक सार्वजनिक विक्षोभ का होता। परन्तु हमें यह देख कर सन्तोष होता है कि दोनों कौमों के भद्र नागरिकों में कोई विद्रोह के भाव नज़र नहीं आये। विश्वस्त-रूप से मालूम हुआ है कि स्थान स्थान पर हिन्दू भाइयों ने जान को ख़तरे में डालते हुए भी मुसलमानों को आपत्ति से बचाया और कई मुसलमानों ने भी हिन्दुओं को मुसलमान गुण्डों के हथकण्डों से निकाला। बड़ा बाजार के मारवाड़ियों व बंगालियों ने तो खुले तौर पर आक्रान्त मुसलमानों को आश्रय दिया। अतः जिस तरह और दंगे होते हैं यह भी केवल कुछ छटे हुए गुण्डों का ही दंगा है। इनके दमन करने का उत्तरदातृत्व पुलिस का ही है। पुलिस का कर्त्तव्य है कि वह लोगों के जान माल की रक्षा करे। यदि इसमें वह असमर्थ है तो उसकी क्या ज़रूरत है?

ऐसी पुलीस की क्या आवश्यक्ता है जो अपने न्याय्य अधिकारों को मांगने के लिये खड़ी हुई निहत्थी भोली प्रजा को तो गोली बारूद से भून डाले और जब असली काम आये तो हाथ से हाथ मलती रहे।

हमें दुःख इतना ही है कि अभी तक हम में धार्मिक असहिष्णुता कूट २ कर भरी हुई है। इसके अतिरिक्त अभी तक हमारे नेताओं में नेतृत्व का मादा नहीं आया। अभी० उन्हें अपने पर ही विश्वास नहीं तो जनता का नेतृत्व क्या करेंगे? कलकत्ते के दंगे ने हमारे राजनैतिक नेताओं की अकिञ्चनता को भी स्पष्ट कर दिया है।

धन्यवाद के पात्र वह हैं जो शान्ति पूर्वक आत्म रक्षा कर रहे हैं। सन्तोष यही है कि हिन्दुओं ने भी आत्म रक्षा का पाठ पढ़ लिया है।

पंजाब हिन्दू कान्फ्रेंस

अम्बाले में डा० मुञ्जे के सभापतित्व में पञ्जाब हिन्दू कान्फ्रेंस हो गई। डा० मुञ्जे का भाषण बहुत महत्व पूर्ण हुआ। आपकी विशेषता यह है कि आपके शब्दों में विशेष बल होता है। आपके भाव सत्य और स्पष्ट होते हैं। अतः कुछ कटुता का आ जाना स्वभाविक है। हिन्दू मुसलिम एकता के विषय में आपने महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित एकता को एक झूठे स्वप्न की तरह बतलाया। कुछ ही अर्से में इस्लाम अपने सत्य स्वरूप में प्रगट हुआ। मालावार के मोपलाओं ने हैदर और टीपू सुल्तान के अवाशिष्ट कार्य को पूरा करने की ठानी। कोहाट के भीषण हत्याकाण्ड से तो यह कार्य्यक्रम एक निश्चित रूप में आ गया। वहां के मुसलमानों ने सुलाहनामें की जो शर्तें पेश की थीं उस से स्पष्ट मालूम होता था कि इस मारकाट का अभिप्राय कुछ गहरा है। यह केवल मुसलमानो का काफिरों को मारने का शौक ही नहीं है। शर्तें यह थीं कि या तो सब हिन्दू मुसलमान हो जायें और मुसलमानों के साथ कन्याओं का बिवाह सम्बन्ध करें नहीं तो कोहाट से भाग जांय।

डा० मुञ्जेका कथन है कि यह शर्तें अधिकांश मुसलमानों की दिली इच्छा का प्रतिबिम्ब मात्र है।

डा० मुञ्जे के शब्द कठोर अवश्य हैं परन्तु दुर्भाग्य से प्रत्येक हिंदू इसकी सत्यता को अनुभव करने लगा है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के आन्दोलन में मुसलमानों का उपेक्षा भाव भी बिना कारण के नहीं है। प्रायः मुसलमान 'स्वराज्य' का अभिप्राय 'हिन्दू-राज्य' से लेने लगते हैं। इस अवस्था में हिन्दू राज्य और ब्रिटिश राज्य दोनों विदेशी राज्य हैं। अतः 'स्वराज्य' हो या 'ब्रिटिश राज्य उनकी दृष्टि में समान है। शायद वह तो 'इस्लाम राज्य' को ही स्वराज्य समझें। हमें उनकी मनोवृत्ति पर-यदि सचमुच यह उनकी मनोवृत्ति है-भारी दुःख है। इस बीसवीं सदी में भी भारतीय मुसलमान इतने पिछड़े हुए हैं कि उन्हें यह नहीं पता कि वर्त्तमान राष्ट्रीय निर्माण में मज़हब का कोई स्थान नहीं, धार्मिक अत्याचारों का जमाना गया। धर्म के नाम पर विधर्मियों को मारना बहशी पना है।

बिना किन्ही पुष्ट प्रमाणों के हम यह स्थापना तो नहीं करना चाहते कि भारत के मुसलमान भारत में इस्लाम राज्य स्थापित करना चाहते हैं। आर इसके लिये वह प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु यह अवश्य कहेंगे कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन में मुसलमानों का पूर्ण सहयोग न देना भारतीय मुसलमानों की बुद्धिमत्ता नहीं है। यह उपेक्षा उन्हीं के लिये अपयश का कारण बनेगी। हम चाहते हैं कि मुसलमान डा० मुञ्जे के वास्तविक आशय को समझें और धार्मिक असहिष्णुता छोड़ कर स्वतन्त्रता के युद्ध में कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें। साथ ही हिन्दू भी आत्मरक्षा करते हुये मुसलमान भाइयों का पूरा सहयोग लेने का प्रयत्न करें।

अन्त में आपने हिन्दुओं को यह भी कहा कि वह अपनी संकीर्णता को दूर करें। अछूतपने को हटायें। जात पांत के झगड़ों को दूर करें। डा० मुञ्जे का यह भी कथन है कि इस आपत्ति काल में अनुलोम-प्रतिलोम की विवाह मर्यादा को भी ढीला कर देना चाहिये। इसे आपद्धर्म रूप से हम स्वीकार करते हैं।

अन्त में हम यही कहेंगे कि पञ्जाब के हिन्दू और मुसलमान डा० मुञ्जे के यथार्थ आशयको ही लें। नहीं तो उनके शब्दों द्वारा उलझा हुई परिस्थिति सुलझने के स्थान में और भी उलझ जायगी।

आर्यसमाज और सर्कार।

आर्य समाज चारों ओर से विधर्मियों से घिरा हुआ है। उस पर सरकार भी उठते हुए आर्य समाज को अभी से कुचल देना चाहती है। हाल ही में मंसूरी, रोहतक आदि में उत्सवों के अवसर पर समाजों के नगरकीर्त्तन बन्द कर दिये गये। प्रधान युक्त यह दी गई कि दंगे का डर है। क्यूंकि फ़तहपुर, अजमेर आदि स्थानों पर नगर-कीर्तन के समय मुसलमानों ने उपद्रव किया इस से अन्यत्र भी उपद्रव के कारण होने से यह बन्द किये जाने लगे। आज यदि हमारे नगरकीर्त्तनों से मुसलमानों में उत्तेजना पैदा होजाती है? तो कल वह हमारे आर्य्य होने से बिगड़ उठेंगे? उसका जिम्मेवार कौन होगा? क्या सरकार हमारा आर्य होना बन्द कर देगी? हम सरकार की इस अन्याय पूर्ण रीति का घोर विरोध करते हैं, और आशा करते हैं कि सरकार सार्वजनिक असन्तोष से प्रथम ही अपने निश्चय को पलट देगी। सरकार मुसलमानों को उभार कर आर्य समाजियों को दबाना चाहती है। सरकार इस अदूरदर्शिता का फल भोगेगी। यह वही अदूरदर्शिता है जो दो साल पहिले पूज्य महात्माजी ने की थी।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महात्मा जी ने सरकार के विरुद्ध मुसलमानों के धार्मिक भावों को उत्तेजित किया था आज वही उत्तेजित धार्मिक कट्टरता सरकार का हथियार बन कर महात्मा जी के गले की फाँसी बन हुई है। सरकार उसी हथियार से आर्य समाज पर भी हाथ साफ़ करना चाहती है। सरकार को समझ रखना चाहिये। यही खूनी हथियार कभी सरकार के खून का भी प्यासा हो सकता है इतिहास सिद्ध कर चुका है कि मुसलमानों के धार्मिक जोश को उभारना साँप को दूध पिलाना है। जिन हाथों से आज मन्दिर टूट रहे हैं वह कभी गिरजा घरों पर भी चल सकते हैं। जो छुरियां आज हिन्दू काफिरों के गलों पर चल रही हैं उनका रुख क्रिस्तान काफिरों की ओर नहीं हो सकता यह दावा कौन कर सक्ता है? अस्तु हमें सरकार से कुछ नहीं कहना। सरकार तो प्रबल का ही पक्ष लेती है। हमको तो अपने आपको शक्ति सम्पन्न करना। "प्रकर्ष तन्त्रा हि रणे जयश्री!" सब दलों के आर्य समाजियों को अपने २ भेद भाव दूर कर सरकार के इस अन्याय का प्रतिकार करना चाहिये भेद भाव दूर करने का इससे अच्छा अवसर और नहीं मिलेगा, इसस्वर्णीय अवसर को खो देना बड़ी भारी भूल होगी। अन्त में हम हर एक आर्य समाजी से विशेषतया आर्य समाजी नेताओं से यही अपील करना चाहते हैं कि वह अपनी शक्ति को पहिचाने और एक होकर संसार को दिखादें कि आर्य समाज अपने प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द का सच्चा शिष्य है। प्रार्थनाओं और विरोधक प्रस्तावों का जमाना गया। अब कुछ क्रियात्मक प्रतिकार करने का समय है। सब शक्तियाँ को एकत्र कर किसी एक जगह अहिंसात्मक सत्याग्रह को प्रारम्भ करने के लिये हमें कटि बद्ध हो जाना चाहिये।

पहिले पहल उसी जिले व प्रान्त के आर्य पुरुषों को सत्याग्रह प्रारम्भ करना चाहिये जहां नगरकीर्तन बन्द हुआ हो। हमें पूरी आशा है कि हम अपने न्याय बल से अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

"यतो धर्म स्ततो जयः"

साबरमती का समझौता

साबरमती के योगी की कुटियामें स्वराजी और प्रति सहयोगियों के नेताओं ने सब भेद भाव मिटा दिये—यह समाचार कौन भारतीय हर्ष से न सुनेगा। प्रतिसहयोगी दल स्वराज्य दल का ही भाग था। दोनों दलों में कोई मौलिक भेद नहीं था। मतभेद केवल मंत्रीत्व व अन्य सरकारी पदाधिकार स्वीकार करने में ही था। उसका निपटारा भी इस समझौते से हो गया कि जिस प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य उस प्रान्त के मन्त्रीत्व को शक्तिसम्पन्न और जिम्मेदारी का पद समझेंगे वहां पं० मोतीलाल और जयकर की सहमति से मन्त्री पद भी स्वीकार किया जा सकेगा। अन्यथा नहीं। समझौते के शब्द बहुत सरल हैं। परन्तु उनका भाव बहुत गहरा है। और परिणाम बहुत रहस्यमय है।

पहिले तो यही सवाल उठता है कि यह समझौता इस अवसर पर इतनी शीघ्रता से किस लिये किया गया? इसका उद्देश्य बहुत सम्भव नवीन राष्ट्रीय दल से टक्कर लेने का हो सक्ता है। यह भी हो सक्ता है कि स्वराज्य दल की घटती हुई शक्ति ने मोतीलाल जी को सुलहनामें के लिये बाधित कर दिया हो? परन्तु प्रतिसहयोगी दल समझौते पर कैसे उतारू हुआ? यह प्रश्न कुछ टेढ़ा सा प्रतीत होता है। नवीन राष्ट्रीय दल के कार्यक्रम से पूरी सहमति रखते हुए भी सहयोगी दल उससे न मिलकर किन कारणों से स्वराजियों की ओर झुका इसका अभी तक स्पष्टीकरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहीं हुआ। जयकर ने खुले तौर पर राष्ट्रीय दल से एकमत प्रकाशित किया है। तथापि उसमें शामिल न होकर स्वराजियें से मेल जोल करने का क्या रहस्य है अभी तक अज्ञात है।

कारणों के अस्पष्ट होने से परिणाम का रूप भी स्पष्ट नहीं हुआ। किसका हाथ ऊपर रहा? कौन विजयी रहा? वह भी केवल समझौते के शब्दों को देख कर निश्चय से नहीं कहा जा सक्ता। प्रति सहयोगी दल भी विजयी कहा जा सक्ता है क्योंकि कम से कम असहयोग के स्थान पर समझौते में प्रति सहयोग की नीति को सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया गया है। स्वराजियें की यह सिद्धान्त विषयक हार उनके नाम पर सदा के लिये कलंक का टीका बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त राष्ट्र सभा के माने हुए असहयोग सिद्धान्त की अवहेलना के लिये भी स्वराजियें के सरदार पं० मोतीलाल जी ही जिम्मेवार होंगे। हां एक तरह से प्रतिसहयोगियें की भी हार हुई। क्योंकि मन्त्री पद के लिये तभी स्वीकृति हो सकती है यदि व्यवस्थापक सभा के सदस्य उसे अधिकार और शक्तिसम्पन्न समझें। और वर्तमान सुधारों के अनुसार मन्त्रीत्व केवल एक खिलौना ही है। अतः मंत्री पद ग्रहण करने का अवसर ही कभी न आयेगा और प्रति सहयोगियों का मत कभी क्रियारूप में आ न सकेगा। अस्तु हार जीत का सवाल नहीं। यह तो परिणाम से ही पता लगेगा। परन्तु यह हम साफ़ देख रहे हैं कि इसका परिणाम शुभ नहीं होगा।

जो कुछ भी हो यह तो स्पष्ट हो गया कि असहयोग की नीति के दावेदार स्वराजी असहयोगी नहीं प्रति सहयोगी हैं। हमें दुःख है कि एक समझौते पर पहुंचने के लिये राष्ट्रीय महासभा के माने हुए सिद्धान्तों को स्वराजियों ने ठुकरा दिया। परन्तु इतना हमें अवश्य सन्तोष है कि स्वराज्य दल का वास्तविकरूप जनता के सामने आगया। अब वह असहयोगी नहीं प्रति सहयोगी हैं। अभिप्राय यह कि उन्हें वर्तमान सरकार पर फिर विश्वास हो गया और वर्तमान सुधारों के मायाजाल में स्वराजियों की भोली भाली चिड़िया भी फंस गई।

कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा

महाशय पृथ्वीसिंह जी मन्त्री संरक्षक सभा कन्यागुरुकुल लिखते हैं कि कृपा करके निम्न लिखित बात को "ज्योति" में स्थान देकर कृतार्थ करें:—

"कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा के नियम संरक्षकों की सेवा में भेजे हुए तीन मास से अधिक बीत चुके परन्तु बहुत कम सज्जनों ने अभीतक अपना एक रुपया चन्दा भेजा है। सभा का अबतक का खर्च आमदनी से कहीं ज्यादा हो चुका है। वर्ष भर में केवल एक रुपया चन्दा कोई बड़ी बात नहीं। संरक्षकों का इस ओर ध्यान न देना प्रकट करता है कि उनको इस सभा से उदासीनता है। धन के बिना कोई कार्य्य चलना असम्भव है यदि संरक्षक महाशय चाहते हैं कि यह सभा उस उद्देश्य की पूर्ति में कुछ सहायक हो जिसको लक्ष्य में रखकर उन्होंने इसकी स्थापना की है तो उनका कर्त्तव्य है कि इसको दृढ़ बनावें। क्या मैं आशा करूं कि जिन सज्जनों ने अभी अपना चन्दा नहीं भेजा है वह शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

दुःखकी बात है कि गतमार्च मास में सभा की अन्तरङ्ग में किसी भी सदस्य ने सम्मिलित होने की चेष्टा नहीं की—केवल बाबू रामचन्द स्टेशन मास्टर पधारे थे। परन्तु वह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सभा के नियत समय के कई घण्टे पीछे पहुंच सके। देहली में रहने वाले सदस्यों की अनुपस्थिति बहुत दुःख देने वाली है। यदि सदस्य महाशय इतनी उदासीनता प्रगट करेंगे तो सभा कुछ सफलता प्राप्त नहीं कर सकती।

हिन्दू मुस्लिम सम्बध पर पं० मालवीय

दिल्ली में अभी महामना पंडित मालवीय जी ने हिन्दू मुस्लिम जनता के पारस्परिक मत भेदों पर ऐतिहासिक दृष्टि डालते हुये यह बतलाया है कि यह मत भेद क्यों होते हैं? इन की उत्पत्ति कैसे हुई और दोनों दलों के लोगों की नेताओं तथा जन साधारण की इस में कितनी जिम्मेवारी है? उन्होंने संक्षेप से और आवेग-रहित होकर सारी दशा का अध्ययन करके उन सब बातों पर प्रकाश डाला है जो बार २ लोगों के सन्मुख आती हैं और दोनों दलों को उत्तेजित करती हैं और कभी घातक दृश्यों को दिखलाया करती हैं।

मालवीयजी ने किसी एक दल को दोषी नहीं ठहराया और यह भी नहीं किया है कि अपने से विभिन्न मतवालों के ऊपर दोषारोपण किये हैं। उन्होंने अपने मधुर शब्दों में सभी लोगों को सचेत किया है कि वह पारस्परिक सम्बन्ध को कडुवा न बनावें और न "परमेश्वर के साथ प्रेम का दिखावा करके अपने भाइयोंसे द्वेष करें"। उन्होंने दुख भरे दिल से हिन्दू मुस्लिम जनता से पूंछा कि क्या तुममें कोई ऐसा है जो कि इन झगड़ों को रोकना नहीं चाहता? क्या कोई ईश्वर से न डरने वाला ऐसा व्यक्ति है जो कि इन झगड़ों को ज़ारी रखना चाहे? यदि, नहीं तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि गुण्डो नामधारी अगंगि झगड़ालुओं को जोकि उत्तेजना के अवसर पर घूम २ कर ऊधम उठाते हैं—ठीक रास्ते पर लाने का यत्न करते रहें। उन्होंने ठीक कहा कि परमात्मा के आगे तो वही मनुष्य दोषी हैं। जोकि असहिष्णुता और झगड़ों के बीज बोते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह मुसल्मान जो एक हिन्दू पर किसी मसजिद से ईंट फैंकता है सब से अधिक उस प्रार्थना मन्दिर को भ्रष्ट करने वाला है। जिन व्यक्तियों की मुक्ति पारस्परिक बन्धुत्वमें ही है वह धर्म और दीनका नाम लेकर एक दूसरे का गला घोंटते रहते हैं। परमात्मा तो सब का एक ही है चाहे मत भिन्न २ प्रकार के हैं। जब कि यह देश सभी सम्प्रदायों का है और जहां पर हिंदू, मुसल्मान या ईसाई राज्य की सम्भावना नहीं है और जब तक एकता न हो तब तक स्वराज्य भी नहीं मिल सकता तब यहां पर परस्पर में विरोध और क्लेश क्यों हो? निश्चय है कि इन झगड़ों की मुख्य जिम्मेवारी उन गुण्डों पर नहीं है जो कि समय २ पर दुष्ट कार्य्यों के करने के साधन बन जाते हैं। यह उन लोगों का काम है जिन्हें कि अपनी शिक्षा और अपनी ट्रेनिंग से अधिक सभ्य और अधिक ज्ञानी होना चाहिये। यदि ध्यान से देखा जाय तो इन झगड़ों की जड़ में यह बात है कि प्रारम्भ में किसी पद, ओहदे या अधिकार के लिये साधारण स्पर्धा शुरू होती है उसके बाद उसको धर्म के नाम पर अधिक घृणित और अधिक दुःखदायी बनाकर अक्षम्य अपराध किये जाते हैं।

झगड़े की जड़ के खास कारणों पर विचार करते हुये आपने कहा कि शुद्धि, संगठन और मस्जिदों के सामने राजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बजाना यही मुख्य बातें मुसलमानों के मिज़ाज को बिगाड़ रही हैं और इन्हीं के कारण उत्पथ पर जाने वाले मुस्लिम नेता लोग पहिले तो चुपके २ परन्तु अब खिलाफत कान्फ्रेन्स के बाद खुले तौर से अपने मतावलम्बियों को उत्तेजित करते हैं। क्या इन बातों में कोई भी ऐसी बात है जिस के कारण हमारे जोशीले मुस्लिम नवयुवक हिन्दुओं को अपना 'भाई' कह कर सम्बोधन करने से इन्कार करें? पंडित जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि एक धर्म से दूसरे में जाना लालच, ज़बरदस्ती तथा ठगी से तो होना नहीं चाहिये। लेकिन जब सभी धर्म इस रीति को मानते और करते हैं और प्राचीन समय में भी हिन्दू इसे करते आये हैं तो अब शुद्धि के विरुद्ध आन्दोलन क्यों है? शुद्धि के माने यह हैं कि जो लोग कभी हिन्दू थे और अब पुनः हिन्दू होना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दू धर्म में ले लिया जाय। अब जब कि सभी मतावलम्बी प्रायः दूसरे मतके लोगों को अपने मत में लाते रहते हैं तो हिन्दू बनाने में ही आपत्ति क्यों उठायी जाय?

संगठन के विषय में आपने कहा कि यह एकता लाने के अभिप्राय से किया जा रहा है और सभी जाति के लोगों को अत्याचार से बचाना इसका उद्देश्य है। मस्जिदों के सन्मुख बाजा बजाने के सम्बंध में आपने कहा कि यह हमारे मुसलमान भाइयों की नयी शिकायत बिल्कुल निस्सार है। यह बिल्कुल बच्चों वाली बात है और निराधार है। वर्षों से मस्जिदों के आगे बाजा बजता आया है। दिल्ली में जामामस्जिद और फतेहपुरी में बाजा बन्द हो जाता है। लेकिन ४० वर्ष पूर्व जामा मस्जिद के सामने भी बैण्ड बाजा बजता था। इन दोनों के अतिरिक्त सैकड़ों और मस्जिदें हैं जिनके आगे अब भी बाजा बजता है। स्वयं एकता—सम्मेलन में मुसलमानों के धार्मिक नेताओं ने मस्जिदों के आगे बाजा बजने पर एतराज़ नहीं किया। मौलाना शबीर अहमद तो मस्जिदों के आगे बाजा बनाने की रीति रहे ऐसा प्रस्ताव भी करने वाले थे। परन्तु समय नहीं रहा था सो नहीं पेश हुआ इत्यादि २। अन्त में आपने एक क्रियात्मक विधि इन झगड़ों के निपटारे की बताई और पंडितों और मौलवीयों से अपील की जिनके कारण झगड़े उठखड़ होते हैं उन पर विचार करने के लिये दोनों मतों के लोगों की एकसमिति बनायें जो प्रचिलित रीतियों तथा अन्य अवश्यकीय बातों पर ध्यान रखती हुई झगड़ों के निबटारे का फैसला करे और दोनों पक्ष उस की निष्पत्ति को मानने पर बाध्य हों।

महात्मा गांधी और संस्कृत भाषा

१३ मई के यंग इन्डिया में संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुये महात्मा गांधी कहते हैं कि—"धार्मिक कार्य्यों में मेरे विचार में संस्कृत की उपेक्षा नहीं की जा सक्ती। अनुवाद चाहे कितने शुद्ध क्यों न हों स्वयं मन्त्रों का स्थान नहीं ले सक्ते, क्योंकि उनका अपना निजी आशय और ही है। दूसरी बात यह है कि अगर हम उन मन्त्रों को जो सैकड़ों वर्षों से संस्कृत में ही पढ़े जाते हैं आज प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद द्वारा ही पढ़ें तो हम उनके महत्व को घटाने वाले होंगे।

लेकिन मेरा स्पष्ट आशय यह है कि जो लोग मन्त्र पढ़ें या जो विधियां करें तो उन्हें प्रत्येक मंत्र के आशय और रीतियों का तात्पर्य्य अवश्य ज्ञात होना चाहिये। संस्कृत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भाषा के साधारण ज्ञान के बिना एक हिन्दू मनुष्य की शिक्षा ही अपूर्ण समझनी चाहिये। यदि संस्कृत शिक्षा का प्रचार न हो और संस्कृत में लोग ठीक रीति से पांडित्य प्राप्त न करेंगे तो हिन्दू धर्म का ही लोप हो जायगा। वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा हमने संस्कृत को क्लिष्ट बना छोड़ा है वास्तव में वह ऐसी है नहीं। परन्तु यदि होती भी तो धर्म का पालन तो और भी कठिन है। अतः जो लोग धार्मिक बुद्धि वाले हैं उन्हें चाहिये कि संस्कृत सीखने में चाहे कुछ साधन कठिन भी करने पड़ें तौ भी उन्हें सरल ही मानें।

ज्योति का ७ वां वर्ष।

इस अंक के बाद मई का अंक ज्योति के ७ वें वर्ष का प्रथम अंक होगा। ज्योति के पाठक और पाठिकाओं को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि ज्योति को स्थायी बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है और यथा सम्भव उसे और भी अधिक उपयोगी, मनोरंजक और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की प्रचारिका बनाने पर बल लगाया जा रहा है। यद्यपि सांसारिक प्रलोभनों द्वारा यह आर्य्य जनता के चित्त को आकर्षण कर नहीं कर सकेगी क्योंकि इसका उद्देश्य न तो व्यापार की दृष्टि से धनोपार्जन का साधन बनना है जैसा कि आजकल के बहुतेरे पत्र पत्रिकाओं का है और न शृंगार रस सम्बन्धी लेख या चित्रों आदि का प्रयोग करके लोगों को अपनी ओर खींचना है—तथापि जो लोग स्वात्विक वृत्ति वाले हैं और वर्त्तमान समाज में भोगेच्छा प्रवृत्ति तथा तामसी वृत्तियों के कुपरिणामों से अच्छी तरह परिचित हैं और अपने घर की देवियों तथा भद्र पुरुषों पर अच्छे संस्कार डालना चाहते हैं उनके पवित्र हृदयों को यह अवश्य अपनी ओर खींचेंगी। और हमें पूर्ण आशा है कि ज्योति आज नहीं तो कल प्रत्येक आर्य्य देवी और भद्र पुरुष के घर में अवश्य फैलकर अज्ञानान्धकार को विनष्ट करेगी।

क्षमा याचना।

हमें खेद है कि कई अनिवार्य कारणों से ज्योति इस वर्ष कभी २ समय पर प्रकाशित न हो सकी और यह अप्रैल मास की ज्योति भी देर से प्रकाशित है। इसी कारण मई की ज्योति को भी मई १५ के स्थान में मई की समाप्ति तक ग्राहकों की सेवा में अवश्य पहुंचाने का यत्न किया जायगा। और भविष्य में यथा समय इसे प्रकाशित करने पर और अधिक ध्यान रक्खा जायगा। आशा है कि सदय हृदय ग्राहक लोग इस देरी को क्षमा करेंगे। और हमारे साथ सहयोग करते हुए ग्राहकों की संख्या बढ़ाकर इसे बलिष्ट बनाने में पुरुषार्थ करेंगे। जिन लोगों का चन्दा मई में समाप्त होता है उन्हें मई का अंक वी०पी जायगा। अतः ग्राहक लोग कृपा करके अवश्य वी० पी० छुड़ा कर अनुग्रहीत करें।

आर्ष पाठावली

का

द्वितीय संस्करण

हाथों हाथ बिक रहा है।

यह पुस्तक स्त्रियों के पढ़ने के लिये बड़ी उपयोगी है। पुत्री पाठशालाओं में धर्म शिक्षा तथा इनाम के लिये इससे अच्छी और सुन्दर पुस्तक न मिलेगी।

शीघ्र आर्डर भेजिये।

प्रचारार्थ मू० घटा दिया है। एक प्रति ॥)

इकट्ठा लेने वालों कमीशन भी मिलेगा

मैनेजर ज्योति

कोठी नं० ४, दरयागंज दिल्ली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रियों और कन्याओं के लिये

अपूर्व कार्ड !!

इनाम के लिये बड़ी अच्छी चीज़ !

आर्य्य भाषा में

सलाई के काम सीखने

के लिये

इतने सरल, सस्ते और उत्तम नमूने

हमारे यहां आज तक कहीं भी किसी ने नहीं बनाये।

जल्दी आर्डर भेज कर मंगाओ

सुचारू सूची शिल्प पत्रावली

पत्र नं० १	—सलाई का प्रारम्भिक प्रयोग	मूल्य	।)
पत्र नं० २	— सादी बड़ी बनयाइन	,,	=)॥
पत्र नं० ३	—पुरुषों का कुर्त्ता	,,	=)॥
पत्र नं० ४	— बालकों की ऊनी जर्जी दुरंगी	,,	=)
,, ५	— पुरुषों का लम्बा मोज़ा	,,	=)॥
,, ६	—पुरुषों का सरल दस्ताना	,,	=)॥
,, ७	—फूलदार कालर (दुरंगा)	,,	=)
,,	पुरुषों का बुन्दकी दार मोजा	,,	=)॥

मिलने का पता :—**ज्योति कार्य्यालय,**

कोठी नं० ४, दर्यागंज, दिल्ली।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

110475

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियाँ, जाकट और कुरते बहुत ही खूबसूरत फ़ैसी बनावट के मिलते हैं। एक बार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फौरन वापिस भेजकर कीमत वापिस मंगा लीजिये। फी॰साड़ी बेल रेशम कीकिनारी दार ७। ८) ९) १०) १२)जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं, और बालों का उखड़ २ कर गिरना बन्द होता है की०॥)

बच्चों के गले के लाकिट-ये लाकिट दांत सुगमता सेनिकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की०॥)

बालसुधा--गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शी० ॥)

महासुगंधित तैल--माथे को सुगंधित और ठंढा करने वाला तैल कीमत १)

बालकों के फैंसी कुरते-इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है। हर एक रंग के कीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

बेडी या जाकेट--जनानी चाहे जिस नाप की कीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता:—

सुख-संचारक कम्पनी

मथुरा.

ब्रासलेट वाच।

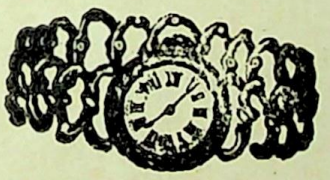

न० ३२ यह बिलकुल ही नई फैशन की चीज़ है इसके बाच में एक छोटी सी जेबघड़ी है। और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज से बनाई गई हैं कि चाह जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी। हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी की घड़ी और गहने का गहना है, पीतल पर सोने की गिलट वाली का दाम ८) जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०। रु०।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपने बच्चे को फुटबाल खिलाओ।

तुम्हारा बच्चा बहुत मोटा ताज़ा और खुश मिज़ाज होगा यदि तुम हम से उसके लिये फुटबाल खरीदोगे!

11047S

खेल के सब तरह के सामान का स्टाक हमारे यहां है।
जल्द आर्डर भेजिये।

बी० डी० गुप्ता, ऐण्ड को०

पंच कुई रोड
दिल्ली।

पं० [illegible] के प्रबन्ध से सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पब्लिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Compiled
1999-2000

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA